कर्णपर्व का सूचीपत्र

Index to Karan Parv



महाभारत

६०४ का ५०७

शल्यपर्व्व व गदापर्व्व

श्रीवेदव्यास रचित संस्कृतमूल

॥ हिन्दी और अंग्रेजी अनुवादसहित ॥

THE MAHABHARAT

SHALYA PARV

The Sanskrit text of Maharshi Vyas
with complete English and Hindi translations.

जिसको

रामकृष्ण कम्पनी मुरादाबादने
"सत्यप्रभाकर प्रेसमें" छपवाकर प्रकाशितकिया

Published by
Ram Krishn & Co. of Moradabad

पुस्तक मिलनेका पता-
रामकृष्ण कम्पनी
मुरादाबाद;

To be had of the publishers
Ram Krishn & Co.
Moradabad.

महाभारत.



शल्यपर्व

नारायण नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम ॥
देवीं सरस्वतीञ्चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

जनमेजय उवाच । एवं निपातिते कर्णे समरे सव्यसाचिना । अल्पावशिष्टाः कुरव किमकुर्वत वै द्विज ॥ १ ॥ उदीर्य्यमाणञ्च बलं दृष्ट्वा राजा सुयोधन । पाण्डवै प्राप्तकालञ्च किम्प्रापद्यत कौरव ॥ २ ॥ एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं तदाचक्ष्व द्विजोत्तम । नहि तृप्यामि पूर्वेषां शृण्वानश्चरितं महत् ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततः कर्णे हते राजन् धार्त्तराष्ट्र सुयोधन । भृशं शोकार्णवे मग्नो निराशः सर्वतोऽभवत् ॥ ४ ॥ हा कर्ण हा कर्ण इति शोचमान पुनः पुन । कृच्छ्रात् स्वशिबिरं प्रायाद्धतशेषैर्नृप

श्रीनारायणजीको नरोत्तम नरको और सरस्वतीदेवीको नमस्कारकरके जयनाम इतिहासको वर्णन करते हैं जनमेजय बोला कि हे ब्राह्मण इसप्रकार अर्जुनके हाथ मे युद्धमें कर्णके गिरानेपर थोडेसे बचेहुये कौरवों ने क्याकिया । १ । कौरव दुर्योधनने अपनी सेनाको साहस रहित देखकर समयके अनुसार पाण्डवों के साथ कौनसा कर्म्म किया । २ । हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ मै यह सुनना चाहताहू आप इसको वर्णन कीजिये क्योंकि मैं अपने प्राचीन वृद्धोंके चरित्रों के सुनने म तृप्त नहीं होताहूं । ३ । वैशम्पायन बोले हेराजा फिर कर्णके मरनेपर धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्य्योधन बडे शोक समुद्रमें डूबकर सब प्रकार से दुःखीहुआ । ४ । हाय कर्ण हाय कर्ण इसप्रकार बारम्बार शोचता मरनेसे बचेहुये शेषराजाओं समेत बडे दुःखसे अपने डेरेकोआया । ५ । सूतपुत्र कर्णके मरनेका स्मरणकरते और शास्त्र

SHALYA PARV
CHAPTER I

Having bowed down to Narayan, Nar the best of males, and the goddess of learning, an account of the great war is given. Janamejaya said, "What did the rest of the Kauravas do at the fall of Karan F What did Duryodhan do when he saw his own army lose heart? I wish to hear all this, best of Brahmans, for I am not yet satisfied with hearing the exploits of my fore fathers. Vaishampayan, said "At the death of Karan, Duryodhan was plunged in the ocean of grief Crying out 'Alas Karan alas Karat !' in the excess of grief, he went away to his camp with the rest of the warriors 5. Remembering Karan's

मह ॥ ५ ॥ स समाश्वास्यमानोऽपि हेतुभिः शास्त्रनिश्चितैः । राजभिः
सूतपुत्रश्च स्मरन् ॥ ६ ॥ स दैवं बलवन्मत्वा भवितव्यञ्च पार्थिवः । संग्रामे निश्चयं
कृत्वा पुनर्युद्धाय निर्ययौ ॥ ७ ॥ शल्यं सेनापतिं कृत्वा विधिवद्राजपुङ्गवः । रणाय
निर्ययौ राजन् हतशेषैर्नृपैः सह ॥ ८ ॥ ततः सुतुमुलं युद्धं कुरुपाण्डवसेनयोः । बभूव
तत्रयेषु देवासुरसमो महान् ॥ ९ ॥ ततः शल्यो महाराज कृत्वा कदनमाहवे ।
हतसैन्योऽथ मध्याह्ने धर्मराजेन पातितः ॥ १० ॥ ततो दुर्योधनो राजा हतबन्धु रणा
जिरात् । अपसृत्य ह्रदं घोरं विवेश रिपुजाद्भयात् ॥ ११ ॥ अथापराह्णे तस्याह्नः
परिवार्य महारथैः । ह्रदादाहूय वेगेन भीमसेनेन पातितः ॥ १२ ॥ तस्मिन् हते महेष्वासे
हतशिष्टास्त्रयो रथाः संरब्धा निशि राजेन्द्र जघ्नुः पाञ्चाल सैनिकान् ॥ १३ ॥ ततः
पूर्वाह्णसमये शिबिरादेत्य सञ्जयः । प्रविवेश पुरं दीनो दुःखशोकसमन्वितः ॥ १४ ॥

निश्चित हेतुओंसे राजाओं के समझानेपर भी दुर्योधनने सुखको नहींपाया ।६। वह
राजा दैवइच्छा को बलवान मानकर युद्धके निमित्त निश्चय करके फिर युद्धकरने
के लिये निकला । ७ । हे राजा वह राजाओं में श्रेष्ठ दुर्योधन विधिपूर्वक शल्य
को सेनापति करके मरनेसे बचेहुये शेषराजाओं समेत युद्धके लिये चला । ८ । हे
भरतर्षभ इसके अनन्तर कौरवीय और पाण्डवीय सेनाकायुद्ध देवासुर युद्धके समान
महाकठिनहुआ । ९ । हे महाराज तब राजा शल्य युद्धमें सेनाका नाश करके
अपनी सेनाके मरजानेके पीछे मध्याह्न के समय धर्म्मराज के हाथसे मारागया
। १० । इसके पीछे राजा दुर्योधन उन लोगोंको जिनके कि बान्धव मारेगये युद्ध
भूमिसे हटाकर शत्रुओं के भयसे बड़े गम्भीर तड़ागमें प्रवेश करगया । ११ । इसके
पीछे उसदिनके तीसरे पहरमें महारथियों से घेरकर ह्रदसे बुलाकर बड़े वेग पूर्वक
भीमसेनके हाथसे गिरायागया । १२ । हे राजेन्द्र उस बड़े धनुषधारीके मरनेपर शेष
बचेहुये महारथियों ने रात्रिके समय पाञ्चाल देशी सेनाके लोगोंको मारा । १३ ।
उसके पीछे दुःख और शोचसे संयुक्त संजय प्रातःकाल के समय अपने डेरेसे
चलकर महादुःखित चित्त होकर पुरमें आया । १४ । वह सूत संजयपुरमें प्रवेश

death Duryodhan was not consoled in spite of the exertions of the kings. Knowing Fate to be all powerful, he came out again to fight. Having installed Shalya as the commander of his armies, he came out with the rest of the warriors to fight. The two armies then fought like gods and asurs. Having slain a large number of warriors, Shalya was slain by Yudhishthir at midday. 10. Then taking with him the kinsmen of the slain warriors, Duryodhan entered a deep lake for the fear of foes. In the third part of the day he was challenged to fight by Bhim and other warriors, and forced to come out of water, he was slain by Bhim. The rest of the Kauravas slew the Panchal warriors at night. Then Sanjaya much grieved and dejected, came out of his tent in the morning and entered the city very unhappy. He entered

प्रविश्य च पुरं सूतो भुजावुच्छ्रित्य दुःखितः । वेपमानस्ततो राज्ञः प्रविवेश निवेशनम् ॥ १५
चुक्रोश च नरव्याघ्र हा राजन्निति दुःखितः । अहो बत विनष्टाः स्मो निधनेन महात्मनः
॥१६॥अहो सुबलवान् कालो गतिश्च परमा तथा । शक्रतुल्यबलाः सर्वे यत्रावध्यन्त
पाण्डवैः ॥ १७ ॥ दृष्ट्वैव च पुरो राजन् जनः सर्वः स सञ्जयम् । क्लेशेन महता
युक्तं सर्वतो राजसत्तम । प्ररुरोद भृशोद्विग्नो हा राजन्निति सस्वरम् ॥ १८ ॥
आकुमारं नरव्याघ्र तत् पुरं वै समन्ततः । आर्त्तनादं ततश्चक्रे श्रुत्वा विनिहतं नृपम्
॥ १९ ॥ धावतश्चाप्यपश्याम तत्र स्त्रीपुरुषांस्तथा । नष्टचित्तान् निवोन्मत्तान्, शोकेन
भृशपीड़ितान् ॥ २० ॥ तथा स विह्वलः सूतः प्रविश्य नृपतिक्षयम् । ददर्श नृपतिश्रेष्ठं
प्रज्ञाचक्षुषमीश्वरम् ॥२१ ॥ दृष्ट्वा चासीनमनघं समन्तात् परिवारितम् । स्नुषाभिर्
भरतश्रेष्ठ गान्धार्या विदुरेण च तथान्यैश्च सुहृद्भिश्च ज्ञातिभिश्च हितैः सदा ॥ २२ ॥
तमेव चार्थं ध्यायन्तं कर्णस्य निधनं प्रति । रुदन्नेवाब्रवीद्वाक्यं राजानं जनमेजय

करके महाक्लेशितमन अपनी भुजाओंको ऊपर करके कांपता हुआ फिर राजमन्दिर में आया । १५ । हे नरोत्तम वह अत्यन्त दुःखी हाय राजा हाय राजा यह कहताहुआ रोदन करनेलगा बड़े कष्टकी बातहै कि हम महात्मा मरनेसे नाश हो गये । १६ । आश्चर्य है कि काल बड़ा बली है इसीप्रकार उनकी गतिभी टेढ़ी है जिस स्थान पर कि इन्द्रके समान महापराक्रमी सब शूरवीर पाण्डवों के हाथ से मारेगये । १७ । हे राजाओंमें श्रेष्ठ जनमेजय वह सब मनुष्यों के समूह नगरमें संजयको देखतेही सब तरओरको बड़े दुःखोंसे संयुक्तहुये हे नरोत्तमकुमार बालकों तक अत्यन्त व्याकुल वह सब नगर चारोंओरसे हायराजा हायराजा इस प्रकार ऊंचे स्वरों से पुकारता रोदन करनेलगा इसकेपीछे राजाको मराहुआ सुनकर सबने महापीड़ाके शब्दकिये ।१९। उस समय वहां हमने उन स्त्री पुरुषों को भी दौड़ता हुआ देखा जोकि नाशवान चित्त उन्मत्त और शोक से महापीड़ामान थे । २० । इसप्रकार महाव्याकुल मन उस सूतने राजमन्दिर में प्रवेश करके राजाओं में श्रेष्ठ ज्ञानरूपी नेत्र रखनेवाले निष्पाप चारोंओर का पुत्र वधुओं समेत गान्धारी विदुर और अन्य इष्टमित्र और जातवालों से घिरेहुये कर्णके मरनेके विषय में उसी प्रयोजन को ध्यानकरते बैठेहुये महाराज धृतराष्ट्र को देखा हे जनमेजय

the city with upraised arms and trembling body and came to the royal palace. 15. He went out crying, " Alas king! We are undone and have lost you " The people were much grieved at the sight of Sanjaya and the young and old began to weep crying, " Alas king," They were much grieved to hear of the king's death Men and women were seen running in all directions with grief and dismay. Having entered the royal palace in very dejected spirits, he saw the king surrounded by sons, kinsmen, Gandhari, Vidur and other friends, talking about

॥ २३ ॥ नातिहृष्टमनाः सूतो बाष्पसंदिग्धया गिरा । सञ्जयोऽहं नरव्याघ्र नमस्ते भरतर्षभ ॥ २४ ॥ मद्राधिपो हतः शल्यः शकुनिः सौबलस्तथा । उलूकः पुरुषव्याघ्र कैतव्यो दृढविक्रमः ॥ २५ ॥ संशप्तका हताः सर्वे काम्बोजाश्च शकैः सह । म्लेच्छाश्च पार्वतीयाश्च यवनाश्च निपातिताः ॥ २६ ॥ प्राच्या हता महाराज दाक्षिणात्याश्च सर्वशः । उदीच्या निहताः सर्वे प्रतीच्याश्च नराधिप ॥ २७ ॥ राजानो राजपुत्राश्च सर्वतो निहता नृप । दुर्योधनो हतो राजा यथोक्तं पाण्डवेन ह ॥ २८ ॥ भग्नसक्थो महाराज शेते पांशुषु रूषितः । धृष्टद्युम्नो हतो राजन् शिखण्डी चापराजितः ॥ २९ ॥ उत्तमौजा युधामन्युस्तथा राजन् प्रभद्रकाः । पाञ्चालाश्च नरव्याघ्राश्चेदयश्च निषूदिताः ॥ ३० ॥ तव पुत्रा हताः सर्वे द्रौपदेयाश्च भारत । कर्णपुत्रो हतः शूरो वृषसेनो महाबलः ॥ ३१ ॥ नरा विनिहताः सर्वे गजाश्च विनिपातिताः । रथिनश्च नरव्याघ्र

वह दुःखी चित्त सूत अश्रुपातों से युक्त गद्गद वाणी से रोताहुआ राजा धृतराष्ट्र से यह वचन बोला कि हे नरोत्तम मैं संजय हूं हे भरतर्षभ तुमको नमस्कारहै । २४ । मद्रदेशका राजा शल्य मारागया उसीप्रकार सौबलका पुत्र शकुनी मारा गया हे पुरुषोत्तम दृढ़ पराक्रमी कैतव्य उलूक और शकुनी समेत सब काम्बोज देशी और संशप्तक मारेगये और म्लेच्छ पहाड़ी और यवन मारेगये । २६ । हे महाराज राजा धृतराष्ट्र सब पूर्वीय दक्षिणीय उत्तरीय और पाश्चिमीय राजा लोग मारेगये । २७ । इनके सिवाय सब राजा और राजकुमार मारे गये और राजा दुर्योधन भी उसीप्रकारसे मारागया जैसे किपांडव भीमसेन ने सभामें प्रतिज्ञा करीथी । २८ । हे महाराज वह टूटी जंघामें धूलमें पड़ा सोताहै धृष्टद्युम्न और अपराजित शिखण्डी भी मारागया । २९ । इसीप्रकार नरोत्तमउत्तमौजा, युधामन्यु, प्रभद्रक नाम क्षत्री पांचालदेशी और चंदेरीदेशी मारेगये । ३० । हे भरतवंशी आपके सब पुत्र और द्रौपदी के सब बेटे मारेगये और कर्णका पुत्र बड़ा शूरवीर वृषसेन मारागये । ३१ । सब मनुष्य मारेगये हाथी नाशहुये रथसवार

Karan. With tears in his eyes and voice choked with grief, he said to Dhritrashtra, " I am Sanjaya, sire, and bow at your feet. 24 Shalya the king of Madra is slain and so is Shakuni the son of Saval. The Cambojas and Sansaptks, with Kaitavya, Uluk, Shakuni, mlechas, hill men and Yavans, are slain The warriors of the East, South, North and West are also no more. The other kings and princes too are dead and Bhim has fulfilled his promise by slaying Duryodhan in the manner mentioned by him in the court. He lies in dust with his thigh broken Dhrishtadyumn and invincivile Shikhandi are also slain. 30. All your sons and those of Draupadi are slain, with Vrishasen the brave son of Karan. All the men, elephants, cars and horses were destroyed in battle. A few only of the tents are the

हयाश्च पतिता युधि ॥ ३२ ॥ किञ्चिच्छेषञ्च शिबिरं तावकानां कृतं प्रभो । पाण्डवानां कुरूणाञ्च समासाद्य परस्परम् ॥ ३३ ॥ प्रायः स्त्रीशेषमभवज्जगत् कालेन मोहितम् । सप्त पाण्डवतः शेषा धार्तराष्ट्रास्तथा त्रय ॥ ३४ ॥ ते चैव भ्रातरः पञ्च वासुदेवाथ सात्यकि । कृपश्च कृतवर्मा च द्रौणिश्च जयतांवर ॥ ३५ ॥ तवाप्येते महाराज रथिनो नृपसत्तम । अक्षौहिणीनां सर्वासां समेतानां जनेश्वर ॥ ३६ ॥ एते शेषा महाराज सर्वेऽन्ये निधनंगताः कालेन निहतं जगत् भरतर्षभ । दुर्योधनं वै पुरतः कृत्वा वैरं च भारत ॥ ३७ ॥ वैशम्पायन उवाच । एतच्छ्रुत्वा वचः क्रूरं धृतराष्ट्रो जनेश्वरः । निपपात महाराज गतसत्वो महीतले ॥ ३८ ॥ तस्मिन्निपतिते भूमौ विदुरोपि महायशाः । निपपात महाराज राजव्यसनकर्षितः ॥ ३९ ॥ गान्धारी च नृपश्रेष्ठ सर्वाश्च कुरुयोषितः । पतिताः सहसा भूमौ श्रुत्वा क्रूरं वचः स्मृताः ॥ ४० ॥ नि संज्ञं पतितं

और घोड़े युद्धमें गिरपड़े । ३२ । हे समर्थ परस्पर सम्मुख होकर आपके बेटे पांडवोंके और कौरवोंके कुछ डेरे बाकी रहे । ३३ । यह संसार बहुधा कालसे मोहित स्त्रियोंका शेष रखनेवाला हुआ पांडवोंकी ओर से सात और आपकी ओर के तीन शेष रहगये हैं । ३४ । अर्थात् वह पांचों भाई वासुदेवजी और सात्यकी और आपकी ओर विजयी लोगों में श्रेष्ठ कृपाचार्य्य कृतवर्मा और अश्वत्थामा शेषरहे हैं । ३५ । हे राजाओंमें श्रेष्ठ महाराजा धृतराष्ट्र इकट्ठी होनेवाली आपकी सब अक्षौहिणियों में आपके यह तीनरथी जीवत रहेहैं । ३६ । हे भरतर्षभ महाराज धृतराष्ट्र यही केवल बचे हैं और सब नाशहोगये हे भरतवंशी निश्चयकरके शत्रुता पूर्वक दुर्योधनको आगे करके सब जगत कालसे मारागया । ३७ । वैशम्पायन बोले हे महाराज वह राजा धृतराष्ट्र इन कठिन और महादुखदायी वचनकोसुनकर अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । ३८ । उस धृतराष्ट्र के पृथ्वीपर गिरनेपर शोक और दुःखसे पीड़ामान बड़े यशमान विदुरजीभी गिरपड़े ३९ हेराजेन्द्र गान्धारी आदि सब कौरवों की स्त्रियांभी उन कठोर वचनोंको सुनकर अकस्मात पृथ्वीपर गिरपड़ीं । ४० । तब राजमण्डल निरर्थक वचनों से युक्त अचेत होकर पृथ्वीपर ऐसे गिर

remnants of the war between your sons and the Pandavas. Women only remain, with the exception of seven on their side and three of yours. The five Pandav brothers, with Vasudev and Satyaki, on the side of the Pandavas, and Kripacharya, Kritvarma and Ashwathama remain from among your warriors. 35. Out of all your assembled akshauhinis three warriors remain, the rest are destroyed. Duryodhan's enmity has caused the destruction of the world." On hearing this Dhritrashtra fell down senseless. Vidur too, afflicted with grief and sorrow, became insensible. Gandhari and other Kaurav women lost their senses. The entire royal family lay on earth like a pictur

भूमौ तदासीद्राजमण्डलम् । प्रलापयुक्ता महती चित्रन्यस्त पृष्ठे यथा ॥ ४१ ॥
कृच्छ्रेण तु ततो राजा धृतराष्ट्रो महीपति । शनैरलभत प्राणान् पुत्रव्यसनकर्षित
॥ ४२ ॥ लब्ध्वा तु स नृप सज्ञां वेपमान सुदु खित । उदीक्ष्य च दिश सर्वा
क्षत्तार वाक्यमब्रवीत् ॥ ४३ । विद्वन् क्षत्तर्महाप्राज्ञ त्वं गतिर्भरतर्षभ । ममानाथस्य
सुभृश पुत्रैर्हीनस्य सर्वदा ॥ ४४ ॥ एवमुक्त्वा ततो भूयो विसज्ञो निपपात ह । त
तथा पतित दृष्ट्वा बान्धवा येऽस्य केचन ।४५। शीतैस्ते सिषिचुस्तायैर्विव्यजुर्व्यजने
रपि स तु दीर्घेण कालेन प्रत्याश्वस्तो महीपति ॥४६ । तूष्णीं दध्यौ महीपाल पुत्र
व्यसनकर्षित । निश्वसन् जिह्मग इव कुम्भक्षिप्तो विशाम्पते ॥ ४७ ॥ सञ्जयोऽप्यरु
दत्तत्र दृष्ट्वा राजानमातुरम् तथा सर्वा स्त्रियश्चैव गान्धारी च यशस्विनी ॥४८॥
ततो दीर्घेण कालेन विदुर वाक्यमब्रवीत् । धृतराष्ट्रो नरश्रेष्ठ मुह्यमानो मुहुर्मुहु
॥ ४९ ॥ गच्छन्तु योषित सर्वा गान्धारी च यशस्विनी । तथेमे सुहृद सर्वे भ्रश्यते
मे मनोभृशम ॥ ५० ॥ एवमुक्तस्तत क्षत्ता ता स्त्रियो भरतर्षभ । विसर्जयामास
शनैर्वेपमान पुन पुन । ५१ ॥ निश्चक्रमुस्तत सर्वास्ता स्त्रियो भरतर्षभ । सुहृदश्च

पट्टा जैसे कि पेड वस्त्रपर खिचाहुआ चित्र होता है ।४१। उसके पीछे पुत्रके दुःख से राजा धृतराष्ट्र ने बडे दु ख पूर्वक धीरे धीरे प्राणोंको प्राप्त किया । ४२ । फिर वह राजा सचेतनताको पाकर कम्पता हुआ महादु खी सब दिशाओं को देखकर विदुरजीसे यह वचन बोला । ४३ । हे बुद्धिमान् बडे ज्ञानी भरतर्षभ विदुरजी मुझ सब पुत्रों से विहीन और अनाथ के तुम्हीं गतिहो । ४४ । इस प्रकार कहकर फिर अचेत होकर गिरपडा इस रीति से पडेहुये उस धृतराष्ट्रको देखकर । ४५ । उस के बान्धवने उसको शीतल जलोंसे सींचा और व्यजनोंसे हवाभी की फिर वह राजा बहुत देरके पीछे चैतन्यहुआ । ४६ । हे राजा मटके मे डालेहुये सर्पकी समान श्वासलेने और पुत्रके शोकसे पीडामान और मौन उस राजाने ध्यानकिया । ४७ । फिर वहां राजाको दु.खी देखकर सञ्जयभी रोया उसीप्रकार यशवन्ती गान्धारी और सब अन्य स्त्रियां भी रोदन करनेलगीं । ४८ । इस के पीछे वारं वार मोहित राजा धृतराष्ट्र बहुत देरके पीछे विदुरजी से यह वचन बोला । ४९ । कि सब स्त्रियां और यशवान गान्धारी और मेरे सब सुहृद जनलोग यहां से चले जायँ मेराचित्त अत्यन्त मूर्च्छित होताहै । ५० । हे भरतर्षभ इसके पीछे उसके उस

painted on a canvass. Prince Dhritrashtra gradually regained consciousness With trembling body, feeling in all directions, he said to Vidur 'Wise Vidur, being deprived of sons and help, I have only you for refuge ' Having said this the king again became insensible. His kinsmen sprinkled him over with cold water and fanned him long before he regained consciousness 46. Hissing like a serpent pent up in a jar the king meditated silently over the grief of his son's death Sanjaya

ततः सर्वं दृष्ट्वा राजानमातुरम् ॥ ५२ ॥ ततो नरपतिं जन्तु लब्धसंज्ञं परन्तप । अथैव सञ्जयो दीनो शोचमानं भृशातुरम् ॥ ५३ ॥ प्राञ्जलिर्निःश्वसन्तञ्च तं नरेन्द्रं मुहुर्मुहुः । समाश्वासयत क्षत्ता वचसा मधुरेण ह ॥ ५४ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि धृतराष्ट्रसम्मोहे प्रथमो ऽध्यायः १ ॥

वैशम्पायन उवाच । विसृष्टास्वथ नारीषु धृतराष्ट्रोऽम्बिकासुतः । विललाप महाराज दुःखाद्दुःखतरं गतः ॥१॥ सधूममिव निःश्वस्य करौ धुन्वन् पुनः पुनः । विचिन्त्य च महाराज ततो वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । अहो बत महद्दुःखं यदहं

वचनको सुनकर विदुरजीने उन वारम्वार कम्पायमान स्त्रियोंको बड़े धीरजसे बिदाकिया । ५१ । तब सब स्त्रियां उस स्थान से निकल गई । और सब सुहृद लोगभी राजाको देखकर चलेगये ।५२। इसके पीछे संजयने उस राजाको सचेतता युक्त महादुःखी और रोदन करनेवाला देखा उस वारम्वार श्वास लेनेवाले महाराजको विदुरजीने हाथ जोड़कर मधुरवाणी से विश्वास कराया ॥ ५४ ।

अध्याय २ ॥

वैशम्पायन बोले हे महाराज तब स्त्रियों के बिदाकरदेने पर अम्बिका के पुत्र धृतराष्ट्रने विलाप किया और महादुःखको पाया । १। हे महाराज वारम्वार अपने हाथोंको कँपाते उस धृतराष्ट्रने उष्ण श्वासाओंको लेकर और बहुत चिन्ता करके यह वचन कहा । २ । हे सूत यह महादुःख और दुःखका स्थान है जो मैं

wept to see king in that state. Gandhari and other women too, wept over his grief. Then Dhritrashtra said to Vidur, " Let all the women and Gandhari depart from here. Leave me alone, for I am fainting with grief. " At this Vidur Consoled the women and sent them away. The women and kinsmen left the king alone. Seeing the king shed tears in great distress, Vidur respecifully consoled him " 54.

CHARTER II

Vaishampayan said, " At the departure of the women, Dhritrashtra wept for grief. With trembling hands and deep sighs, he said in great distress, " It grieves me much to hear that the Pandavas are all

पाण्डवानामजे । क्षेमिणश्चाव्ययांश्चैव त्वत्तः सूत शृणोमि वै ॥ ३ ॥ वज्रसारमयं नूनं हृदयं सुदृढं मम । यच्छ्रुत्वा निहतान् पुत्रान् दीर्य्यते न सहस्रधा ॥ ४ ॥ चिन्तयित्वा वचस्तेषां बालक्रीडाश्च सञ्जय । अद्य श्रुत्वा हतान् पुत्रान् भृशं मे दीर्य्यते मनः ॥ ५ ॥ अन्धत्वाद्यदि तेषान्तु न मे रूपनिदर्शनम् । पुत्रस्नेहकृता प्रीतिर्नित्यमेतेषु धारिता ॥ ६ ॥ बालभावमतिक्रान्तान् यौवनस्थांश्च तानहम् । मध्यप्राप्तांस्तथा श्रुत्वा हृष्ट आसं तदानघ ॥ ७ ॥ तानद्य निहतान् श्रुत्वा हतैश्वर्यान् हतौजसः । न लभे वै क्वचिच्छान्ति पुत्राधिभिरभिप्लुतः ॥ ८ ॥ एह्येहि पुत्र राजेन्द्र ममानाथस्य साम्प्रतम् त्वयाहीनो महाबाहो कान्नु यास्याम्यहं गतिम् ॥ ९ ॥ कथं त्वं पृथिवीपालां स्त्यक्त्वा तात समागतान् । शेषे विनिहतो भूमौ प्राकृतः कुनृपो यथा ॥ १० ॥ गतिर्भूत्वा महाराज ज्ञातीनां सुहृदां तथा । अन्धं वृद्धञ्च मां वीर विहाय क्वाभिगच्छसि ॥ ११ ॥

तुमरो पांडवोंको कुशल पूर्वक अविनाशी सुनताहूं । ३ । निश्चय करके मेराहृदय वज्रके समान कठोरहै जो पुत्रोंको मराहुआ सुनकर हजारों टुकड़े नहींहोताहै ।४। हे संजय उन्होंकी बालक्रीड़ा और अवस्थाको शोचकर और अब बेटोंको मृतक सुनकर मेराचित्त अत्यन्त फटता है । ५ । जो अन्धेपने से मुझको उनके रूपका दर्शन नहीं होताथा परन्तु पुत्रतासे उत्पन्नहुई प्रीति सदैव उनपर नियतथी । ६ । हे निष्पाप मैं उनको बाल्यावस्थाके व्यतीत करनेवाले और तरुण सुनकर अत्यन्त प्रसन्न होताथा । ७ । अब उन पुत्रोंके दुःख समुद्र में डूबाहुआ मैं उन बड़े तेज स्वियोंको ऐश्वर्य्य से रहित और मराहुआ सुनकर कहीं शान्ती को नहीं पाता हूं । ८ । हे राजेन्द्र पुत्र अब मुझ अनाथ के सम्मुख आवो, हे महाबाहु मैं तुम से रहितहोकर किसगतिको पाऊंगा ।९। हे तात तुम किसप्रकार मिलेहुये राजाओं को छोड़कर प्राकृत नीच मन्त्री रखनेवाले राजाके समान मृतकहोकर पृथ्वीपर सोतेहो । १० । हे महाराज वीर तुम जातवाले और सुहृद्जनोंके गति होकरमुझ अन्धे और वृद्धको त्यागकर कहां जाओगे ।११। हेराजा तेरी वह कृपाप्रीति और

safe and sound Surely my heart is very hard for it does not split into a thousand parts on hearing the news of the death of my sons. My mind is in great distress to hear of the death of my sons, when I remember their playful boyhood. 5. I loved them much, though I could not see them on account of blindness. I felt much joy when I heard that they had passed their boyhood and turned youths. On hearing of the death of those glorious ones I am plunged in the ocean of grief and can find no peace in my mind. Come to me my princely son. To what state shall I be reduced without you ? Why do you sleep in death like a king having foolish ministers, when you had so many good warriors to protect you ?10 Being the refuge of your friends and clan, where are you going, leaving me old and blind ?

सा कृपा सा च ते प्रीतिः साचं राजन् सुमानिता । कथं विनिहतः पार्थैः संयुगेष्वपराजितः ॥ १२ ॥ को नु मामुत्थिते काले तात तातेति वक्ष्यति । महाराजेति सततं लोकनाथेति चासकृत् ॥ १३ ॥ परिष्वज्य च मां कण्ठे स्नेहेनाक्लिन्नलोचनः । अनु शाधीति कौरव्य तत् साधु वदमेव च ॥ १४ ॥ ननु नामाहमश्रौषं वचनं तव पुत्रक । भूयसी मम पृथ्वीयं यथा पार्थस्य नो तथा ॥ १५ ॥ भगदत्तः कृपः शल्य आवन्त्योऽथ जयद्रथः । भूरिश्रवाः शलश्चैव सोमदत्तोऽथ बाह्लिकः ॥ १६ ॥ अश्वत्थामा च भोजश्च मागधश्च महाबलः । बृहद्बलश्च काशीशः शकुनिश्चापि सौबलः ॥ १७ ॥ म्लेच्छाश्च बहुसाहस्राः शकाश्च यवनैः सह । सुदक्षिणश्च काम्बोजस्त्रिगर्त्ताधिपतिस्तथा ॥ १८ ॥ भीष्मः पितामहश्चैव भारद्वाजोऽथ गौतमः श्रुतायुश्चाच्युतायुश्च शतायुश्चैव वीर्यवान् ॥ १९ ॥ जलसन्धोऽथाष्यश्रृङ्गी राक्षसश्चाप्यलायुधः । अलम्बुषो महाबाहुः सुबाहुश्च महारथः ॥ २० ॥ एते चान्ये च बहवो राजानो राजसत्तम । मदर्थं मुद्यताः सर्वे प्राणां

शिष्टाचारयुक्त, युद्धों में अजेय होकर तुम पाण्डवों के हाथ से कैसे मारेगये । १२ । समयपर उठनेवाला होकर मुझको बारम्बार कौनकहैगा कि हे तात हे महाराज और हे लोकनाथ । १३ । प्रीति से आर्द्रनेत्र होकर तुम कण्ठ से मिलकर मुझसे शिक्षाकरो हे कौरव उस शुभवचन को मुझसे कहो । १४ । हे पुत्र निश्चय करके मैंने तेरे इस वचन को सुना कि यह बहुत पृथ्वी जैसे मेरी है वैसे कुन्तीके पुत्रकी नहीं है । १५ । भगदत्त, कृपाचार्य, शल्य, अवन्तिदेशका राजा, जयद्रथ, शल सोमदत्त बाह्लीक । १६ । अश्वत्थामा, कृतवर्मा, महाबली मगधका राजा, वृहद्बल काशी का राजा सुबलका पुत्र राजाशकुनी । १७ । बहुत से हजारों म्लेच्छ यवन समेत शक, सुदक्षिण, काम्बोज, राजा त्रिगर्त । १८ । भीष्मपितामह, भारद्वाज, द्रोणाचार्य, गौतम कृपाचार्य पराक्रमी श्रुतायु, अच्युतायु, शतायु । १९ । जलसन्ध, आष्यश्रृंगी, अलायुध राक्षस महाबाहु अलंबुष, महारथी सुबाहु । २० । हे

In spite of your mercy, love, good manners and invincibility, how were you slain by the Pandavas ? Rising betimes, who will call me father and Maharaj. *Shedding tears of affection and embracing me, you often* said, " What are your orders ?" Address me in the same sweet words once more. I have often heard you say, " The kingdom does not belong to the son of Kunti as it does to me. 15 Bhagdatta, Kripāchārya, Shālya, the princes of Avanti, Jayadrath, Shāla, Somdatta, Vahlik, Ashwatthama, the brave king of Magadh, Brahadval, the king of Kāshi, Shakuni the son of Suval, thousands of mlechas, Yavans and Shaks, Sudakshim, Kamboj, the king of Trigart, Bhishm the grandfather, Drona, Kripacharya, brave Shrutayu, Achyutayu, Shatayu, Jalasandh, Aishyashringi, Alayudh the rakshas, brave Alambush, Suvahu and other great kings are ready to lay down their

स्त्यक्त्वा महारणे ॥ २१ ॥ तेषां मध्ये स्थितो युद्धे भ्रातृभिः परिवारितः । योधयिष्यामि पार्थान् पाञ्चालांश्चैव सर्वशः ॥ २२ ॥ चेदींश्च नृपशार्दूल द्रौपदेयांश्च संयुगे । सात्यकिं कुन्तिभोजं च राक्षसं च घटोत्कचम् ॥ २३ ॥ एकोऽप्येषां महाराज समर्थः सन्निवारणे । समरे पाण्डवेयानां संक्रुद्धो ह्यभिधावताम् ॥ २४ ॥ किं पुनः सहिता वीराः कृतवैराश्च पाण्डवैः । अथ वा सर्व एवैते पाण्डवस्यानुयायिभिः । योत्स्यन्ते सह राजेन्द्र हनिष्यन्ति च तान्मृधे ॥ २५ ॥ कर्णस्त्वेको मयासार्द्धं निहनिष्यति पाण्डवान् । २६ ॥ ततो नृपतयो वीराः स्थास्यन्ति मम शासने । यश्च तेषां प्रणेता वै वासुदेवो महाबलः ॥ न स सन्नह्यते राजन्निति मामब्रवीद्वचः ॥ २७ ॥ तस्याहं वदतः सूत बहुशो मम सन्निधौ । शक्तितो ह्यनुपश्यामि निहतान् पाण्डवान्मृधे ॥ २८ ॥ तेषां मध्ये स्थिता यत्र हन्यन्ते मम पुत्रकाः । व्यायच्छमानाः समरे किमन्यद्भागधेयतः ॥ २९ ॥ भीष्मश्च निहतो यत्र लोकनाथः प्रतापवान् । शिखण्डिनं समासाद्य मृगेन्द्र इव

राजर्षि यह सब राजा और अन्य बहुतसे राजा सब बड़े युद्धमें प्राणों को त्याग करके मेरे निमित्त तैयार हैं । २१ । उन्होंके मध्य में नियत और भाइयोंसे संयुक्त मैं युद्ध में सब पाण्डव और पाञ्चालों से युद्ध करूंगा । २२ । हे राजाओं में श्रेष्ठ मैं युद्धमें चन्देरी देशी राजा द्रौपदीके पुत्र सात्यकि कुन्तभोज और घटोत्कच राक्षस के साथ युद्ध करूंगा हे महाराज मैं क्रोधयुक्त अकेलाभी युद्ध में सम्मुख दौड़नेवाले इन पांडवोंके हटाने में समर्थहूं । २४ । फिर पाण्डवों के साथ शत्रुता करनेव ले सब वीरलोग साथ होकर क्यों न समर्थ होंगे हे राजेन्द्र अथवा यहसब सबलोग पांडवोंके आगे पीछेवाले सब शूरवीरोंसे लड़ेंगे और उनको युद्ध में मारेंगे । २५ । अकेला कर्णही मेरे साथ होकर पांडवोंको मारेगा इसकेपीछे राजा लोग मेरी आज्ञामें नियतहोंगे और जो उन्हों का स्वामी और रक्षक वासुदेव है हे राजा वह शस्त्रोंको नहीं धारणकरेगा उसने उसने यह प्रतिज्ञा करली है । २७ । हे सूत मैंने बहुधा अपने सम्मुख कहतेहुये उसके वचनको सुनाकि युद्ध में शक्तिसे पांडवों को मृतक देखताहूं । २८ । उन्होंके मध्यमें युद्ध के उपाय

lives for my sake Surrounded by them and my brothers, I shall fight with the Pandavas and Panchals. I shall fight with the warriors of Chanderi the sons of Draupadi, Satyaki, Kuntbhoj and Ghatotkach. I can alone withstand all the Pandavas coming together, why 's all I [illegible] not able to do it when assisted by so many warriors? These men will fight with the followers of the Pandavas and will slay them in battle 5. Karan alone can slay the Pandavas. Then the kings will obey me Vasudev the leader the Pandavas will not bear arms as he has promised to do so" I myself heard often from him that the shakti would cause the death of the Pandavas. Most of my sons were slain by Bhim. What could be the

सम्मुखम् ॥ ३० ॥ द्रोणश्च ब्राह्मणो यत्र सर्वशस्त्रास्त्रपारगः । निहतः पाण्डवैः सङ्ख्ये किमन्यद्भागधेयतः ॥ ३१ ॥ भूरिश्रवा हतो यत्र सोमदत्तश्च संयुगे । बाह्लीकश्च महाराज किमन्यद्भागधेयतः ॥ ३२ ॥ भगदत्तो हतो यत्र गजयुद्धविशारदः । जयद्रथश्च निहतः किमन्यद्भागधेयतः ॥ ३३ ॥ सुदक्षिणो हतो यत्र जलसन्धश्च पौरवः । श्रुतायुश्चाच्युतायुश्च किमन्यद्भागधेयतः ॥ ३४ ॥ महाबलस्तथा पाण्ड्यः सर्वशस्त्रभृतां वरः । निहतः पाण्डवैः सङ्ख्ये किमन्यद्भागधेयतः ॥ ३५ ॥ बृहद्बलो हतो यत्र मागधश्च महाबलः । उग्रायुधश्च विक्रान्तः प्रतिमानं धनुष्मताम् ॥ ३६ ॥ आवन्त्यौ निहतौ यत्र त्रैगर्तश्च नराधिपः । संशप्तकाश्च बहवः किमन्यद्भागधेयतः ॥ ३७ ॥ अलम्बुषस्तथा राजा राक्षसश्चाप्यलायुधः । आर्ष्यशृङ्गिश्च निहतः किमन्यद्भागधेयतः ॥ ३८ ॥ नारायणा हता यत्र गोपाला युद्धदुर्मदाः । म्लेच्छाश्च बहुसाहस्राः किमन्यद्भागधेयतः ॥ ३९॥ शकुनिः सौबलो यत्र कैतव्यश्च महाबलः । निहतः सबलो

करनेवाले मेरे पुत्र नरनाथके पुत्र भीष्मसेनके हाथसे बहुत युद्ध अधिकतर मरतेहैं इसमें प्रारब्धके सिवाय दूसरी बात क्याहै । २९ । जिस स्थानपर लोकनाथ प्रताप वान भीष्मजी शिखण्डीको सम्मुख पाकर ऐसे मारेगये जैसे कि शृगालोंको पाकर महामृगेन्द्र सिंह माराजाता है । ३० । जिस स्थानपर सब अस्त्र शस्त्रोंमें कुशल द्रोणाचार्य ब्राह्मण पाण्डवों के हाथसे मारेगये तो प्रारब्धसे दूसरी कौन बात है । ३१ । इसयुद्धमें भूरिश्रवा सोमदत्त और महाराज बाह्लीक मारेगये और हाथियों के युद्धमें कुशल भगदत्त मारागया और जयद्रथ मारागया इसमें प्रारब्धके सिवाय कौनसी बातहै । ३३ । सुदक्षिण पौरव जलसन्ध मारागया वहां प्रारब्ध से दूसरी बात क्या है कि श्रुतायु और अच्युतायु मारेगये । ३४ । और उसीप्रकार सबशस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ महाबली पाण्ड्य युद्धमें पाण्डवोंके हाथसे मारागया वहां प्रारब्ध से दूसरी बात क्याहै । ३५ । जिस स्थानपर महाबली बृहद्बल मागध और धनुष धारियों का ध्वजारूप पराक्रमी उग्रायुध दोनों अवन्तिदेश के राजा और राजा त्रिगर्त मारेगये और बहुत से संशप्तक मारेगये वहां प्रारब्ध से दूसरी बात क्या है । ३७ । उसीप्रकार राजा अलंबुष और अलायुध राक्षस और आर्ष्यशृङ्गी मार

cause of this other than Fate? None but Fate caused the death of glorious Bhishm who was slain by Shikhandi and others as a lion by jackals 30. It was the working of Fate that caused the death of Dronacharya, Bhurishrava, Somdatta, Prince Vahlik, Bhagdatta who was clever in elephant war, Jayadrath, Sudakshin, Paurav, Jalasandh, Shrutayu, Achyutayu and Pandya. 35 It was on account of Fate that Vrihadval, Ugrayudh, the two princes of Avanti and the kings of Trigart were slain. Many Sansaptakas were slain as well as Alamvush, Alayudh, Arshyashring, the Gopal and Narayan warriors and thousands of mlechas. All this was done by Fate. Who

धीर किमन्यद्भागधेयत ॥ ४० ॥ यत्र शूरा महात्मानः सर्वेऽस्त्रकुशला युधि । बहवो निहता सूत महेन्द्रसमविक्रमाः ॥ ४१ ॥ नानादेशसमावृत्ताः क्षत्रिया यत्र संजय । निहता समरे सर्वे किमन्यद्भागधेयत. ॥ ४२ ॥ पुत्राश्च मे विनिहता पौत्राश्चैव महाबला । वयस्या भ्रातरश्चैव किमन्यद्भागधेयत. ॥ ४३ ॥ भागधेयसमायुक्तो ध्रुवमुत्पद्यते नर । यस्तु भाग्यसमायुक्त स शुभं प्राप्नुयान्नर ॥ ४४ ॥ अह वियुक्त स्वैर्भाग्यैः पुत्रैश्चैवेह सञ्जय । कथमद्य भविष्यामि वृद्ध शत्रुवश गत. ॥ ४५ ॥ नान्यदत्र पर मन्ये वनवासादृते प्रभो । सोऽह वन गमिष्यामि निर्बन्धुर्ज्ञातिसंक्षये ॥ ४६ ॥ न हि मेऽन्यद्भवेच्छ्रेयो वनाभ्यवगमादृते । इमामवस्थां प्राप्तस्य लूनपक्षस्य सञ्जय ॥ ४७ ॥ दुर्योधनो हतो यत्र शल्यश्च निहतो युधि । दुःशासनो विशस्तश्च विकर्णश्च महाबल ॥ ४८ ॥ कथ हि भीमसेनस्य श्रोष्येऽहं शब्दमुत्तमम । एकेन समरे येन हतं पुत्रशतं

गया वहां प्रारब्धसे दूसरी बात क्याहै । ३८ । जिसस्थानमें युद्ध दुर्मद गोपाल और नारायण नाम शूरवीर मारेगये और हजारों म्लेच्छ मारेगये वहां प्रारब्ध से दूसरी बात क्याहै । ३९ । जिस स्थानपर सौबलका पुत्र महाबली वीर शकुनी कैतव्य सेना समेत मारागयावहां प्रारब्धसे दूसरीबात क्याहै । ४० । हे सूत संजय जिस स्थानपर शूरमहात्मा और सब अस्त्र शस्त्रों में कुशल महाइन्द्र के समान पराक्रमी नानाप्रकार के देशोंके स्वामी बहुत से क्षत्री युद्धमें मारेगये वहां प्रारब्ध से दूसरी बात क्याहै । ४२ । मेरे महाबली पुत्र और पौत्र समान अवस्थाके भाई मारेगये वहां दूसरीबात क्याहै । ४३ । निश्चय करकेमनुष्य प्रारब्धको साथलेकर उत्पन्न होताहै जो प्रारब्धवान्है वह सुखकोपाताहै । ४४ । हे सञ्जय अपनेप्रारब्ध और पुत्रों से रहित शत्रुओं की आधीनता में वर्त्तमान वृद्ध मैं अब कैसेरहूंगा ।४५। हे समर्थ यहां वनवास के सिवाय दूसरी बात श्रेष्ठ नहीं मानताहूं सो पुत्रों और अपने जातके लोगोंसे रहित मैं जातवालों के नाशहोने पर वनको जाऊंगा ४६ । वनमें जानेके सिवाय कोई दूसरीबात मेरेकल्याणकी नहींहै हेसञ्जय जोकि मैंपरकटेहुए पक्षीके समान इस दशाको पानेवालाहूं । ४७ । जिस युद्धमें दुर्योधन, शल्य, महाबली दुश्शासन, शल्य और महाबली विकर्ण मारागया तब मैं भीमसेन

else, except Fate, could cause the death of Shakuni and Kaitavya and their armies? 40. Was it not Fate that caused the death of so many warriors powerful like Indra, with my sons, grandsons and their companions? Man's destiny comes with his birth and the fortunate only are happy. Being old and deprived of sons by Fate, how shall I be able to live oppressed by foes? 45. I see no course better than living in forests after this great destruction of sons and kinsmen. No life other than that of forests, can do me good, when I am like a wingless bird. How shall I bear the harsh words of Bhim who has

मम ॥ ४९ ॥ असकृद्वदतस्तस्य दुर्योधनवधेन च । दुःखशोकाभिसन्तप्तो न श्रोष्ये परुषा गिरः ॥ ५० ॥ वैशम्पायन उवाच । एवं स शोकसन्तप्तः पार्थिवो हतबान्धवः । मुहुर्मुहुर्मुह्यमानः पुत्राधिभिरभिप्लुतः ॥ ५१ ॥ विलप्य सुचिरं कालं धृतराष्ट्रोऽम्बिकासुतः । दीर्घमुष्णं स निःश्वस्य चिन्तयित्वा पराभवम् ॥ ५२ ॥ शोकेन महताविष्टः सन्तप्तो भरतर्षभ । पुनर्गावल्गणिं सूतं पर्यपृच्छद्यथातथम् ॥ ५३ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । भीष्मद्रोणौ हतौ श्रुत्वा सूतपुत्रं च पातितम् । सेनापतिं प्रणेतारं किम कुर्वन्ति मामकाः ॥ ५४ ॥ यं यं सेनाप्रणेतारं युधि कुर्वन्ति मामकाः । अचिरेणैव कालेन तं तं निघ्नन्ति पाण्डवाः ॥ ५५ ॥ एवमेव हतो भीष्म पश्यतां च किरीटिना । एवमेव हतो द्रोणः सर्वेषामेव पश्यताम् ॥ ५६ ॥ एवमेव हतः कर्णः सूतपुत्रः प्रतापवान् । सराजकानां सर्वेषां पश्यतां च किरीटिना ॥ ५७ ॥

के कठोर शब्दों को कैसे सुनूंगा जिस अकेले ने युद्ध में मेरे सौ पुत्रोंको मारा । ४९ । दुर्योधनके मरनेसे दुःखी और शोकसे अत्यन्त संतप्त होकर मैं उस बारम्बार वार्त्तालाप करनेवाले भीमसेनके कठोर वचनोंको नहीं सुनूंगा । ५० । वैशम्पायन बोले कि जिसके बान्धव मारेगये वह राजा इसप्रकार शोक से तपा हुआ बारम्बार अचेत पुत्रोंके शोकमें डूबेहुये । ५१ । अम्बिकाके पुत्र भरतर्षभ बडेशोक से पूर्ण हुये धृतराष्ट्रने बड़ी देरतक विलापकर लम्बी श्वासा लेकरे अपनी पराजय को शोचकरके फिर गावल्गण के पुत्र सूत संजयसे वृत्तान्त पूछा । ५३ । धृतराष्ट्र बोलेकि मेरेपुत्रोंने भीष्म द्रोणाचार्यको मृतक और सेनाके स्वामी कर्णको गिरायाहुआ सुनकर किसको सेनापति किया । ५४ । मेरेपुत्रोंने जिसे जिसको स्वामी और सेनापति बनाया पाण्डवोंने थोड़ेही समयमें उस उस को मारा । ५५ । युद्धके मस्तक पर वर्त्तमान भीष्मजी तुम्हारे देखतेहुये मारेगये इसीप्रकार द्रोणाचार्य भी सबके देखते मारेगये । ५६ । ऐसेही राजाओं समेत तुम सबके देखते सूतका पुत्र प्रतापवान् कर्ण अर्जुन के हाथसे मारागया । ५७ । मुझको प्रथमही महात्मा विदुरजीने समझाया था कि यह सवसृष्टी दुर्योधनसे अपराधसे नाशको पावेगी

slain Duryodhan, Shalya, Dushasan, Shal and Vikarn Full of sorrow and grief for the death of Duryodhan, I shall not be able to hear the words of Bhim." 50. Vaishampayan continued that Dhritrashtra, full of sorrow and grief for the death of Duryodhan and heaving deep sighs on account of his defeat, asked the Sut to give all the account in detail, saying, "Whom did my sons instal as commander of their armies after the death of Bhishm, Drona and Karan? All the commanders of our army were slain by the Pandavas one after another 55. Bhimsen and Dronacharya were slain by the Pandavas in your presence Karan too, was slain by Arjun before your very eyes. Vidur had predicted the destruction

एवमप्युक्तो ऽस्मि विदुरेण महात्मना । दुर्योधनापराधेन प्रजेयं विनशिष्यति ॥ ५८ ॥
कैश्चिन्न सम्यक् पश्यन्ति मूढाः समवेक्ष्य च । तदिदं मम मूढस्य तथा भूतं वचस्तु
तत् ॥ ५९ ॥ यदब्रवीत् स धर्मात्मा विदुरः सर्वधर्मवित् । तत्तथा समनुप्राप्तं वचनं
सत्यवादिनः ॥ ६० ॥ दैवोपहतचित्तेन यन्मया न कृतं पुरा । अनयस्य फलं तस्य ब्रूहि
गावल्गणे पुनः ॥ ६१ ॥ को वै मुखमनीकानामासीत् कर्णे निपातिते । अर्जुनं
वासुदेवञ्च को वा प्रत्युद्ययौ रथी ॥ ६२ ॥ केऽरक्षन् दक्षिणञ्चक्रं मद्रराजस्य संयुगे ।
वामञ्च योद्धुकामस्य के वा वीरस्य पृष्ठतः ॥ ६३ ॥ कथञ्च वः समेतानां मद्रराजो
महाबलः । निहतः पाण्डवैः सङ्ख्ये पुत्रो वा मम सञ्जय ॥ ६४ ॥ ब्रूहि सर्वं यथातत्त्वं
भारतानां महाक्षयम् । यथा च निहतः सङ्ख्ये पुत्रो दुर्योधनो मम ॥ ६५ ॥ पाञ्चालाश्च
यथा सर्वे निहताः सपदानुगाः । धृष्टद्युम्नः शिखण्डी च द्रौपद्याः पञ्च चात्मजाः
॥ ६६ ॥ पाण्डवाश्च यथा युक्तास्तथोभौ सात्वतौ युधि । कृपश्च कृतवर्मा च

। ५८ । पर कोई अज्ञानी बहुत विचारकर अच्छीरीतिपर ध्यान नहीं करते हैं वा
कच्चा विचार मुझ अज्ञानीकाही है वह वचन वैसाहीहुआ । ५९ । सब धर्मों के
जाननेवाले उन विदुरजी ने जो जो कहाथा वह सत्य कहाहुआ वचन उसीप्रकारसे
प्रत्यक्षहुआ । ६० । पूर्वसमय में दैवसे हतचित्त मैंने जो उनके वचनोंको नहींकिया
उसी अन्याय का यह फल वर्तमानहुआ है संजय अब फिर कहो । ६१ । कर्ण
के गिरानेपर सेनाओंका मुख्य कौनहुआ और कौन रथी अर्जुन और वासुदेवजी
के सम्मुखगया । ६२ । युद्धमें युद्धाकांक्षी शल्यके दाहिनेचक्र को किसने रक्षित
किया और किसने उस वीरके वामचक्रकी रक्षाकी और किसने पीछे से रक्षाकरी
। ६३ । हे संजय तुमलोगों के एकत्र स्थित होनेपर महाबली शल्य और मेरापुत्र
युद्धमें कैसे पाण्डवों के हाथसे मारागया । ६४ । भरतवंशियोंके उससब बड़े नाश
को मुख्यता से कहो जिसप्रकार युद्धमें मेरापुत्र दुर्योधन मारागया । ६५ । और
जैसे सब पांचाल धृष्टद्युम्न शिखण्डी अपने पीछे चलनेवालों समेत और द्रौपदी के
पांचोंपुत्र मारेगये । ६६ । और जैसे कि सब पाण्डव दोनों यादव कृपाचार्य कृतवर्मा

of the warriors by the fault of Duryodhan I made a mistake because I gave no heed to his words which have proved true. Vidur, who knows all about dharm, had spoken true. 60. This is the result of my not giving ear to his words. Pray tell me, Sanjaya, how it happened Who was the next leader after Karan, to face Arjun and Vasudev in battle. Who protected the right wheel, the left wheel and rear of Shalya ? How were Shalya and Duryodhan slain by the Pandavas in spite of all our warriors? Describe the great destructive battle in which my son was slain. How were the Panchals, Dhrishtadyumn and Shikhandi, with their followers and the sons of Draupadi slain. How did all the Pandavas, with the Yadavas, Kripacharya,

भारद्वाजस्य चात्मजः ॥ ६७ ॥ यथया यादृशेनैव युद्धं वृत्तमभूत्ततः। अखिलं श्रोतुमिच्छामि कुशलो ह्यसि सञ्जय ॥ ६८ ॥

इति श्रीमहाभारते शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि धृतराष्ट्रविलापे द्वितीयोऽध्यायः २ ॥

सञ्जय उवाच। शृणु राजन्नवहितो यथा वृत्तो जनक्षयः। कुरूणां पाण्डवानां च समासाद्य परस्परम् ॥ १ ॥ निहते सूतपुत्रे तु पाण्डवेन महात्मना। विद्रुतेषु च सैन्येषु समानीतेषु चासकृत् ॥ २ ॥ घोरे मनुष्यदेहानां माजौ नरवरक्षये, यत्तत् कर्णे हते पार्थः सिंहनादमथाकरोत्। तदा तव सुतान्राजन् प्राविशत् सुमहद्भयम् ॥ ३ ॥ न सन्धातुमनीकानि न चैवाथ पराक्रमे। आसीद्बुद्धिर्हते कर्णे तव राजन् कस्यचित् ॥ ४ ॥ वणिजो नावि भग्नायामगाधे विप्लवा इव। अपारे पारमिच्छन्तो

और भरद्वाजका पौत्र अश्वत्थामा यह सब युद्धमें बचे ।६७ इसके पीछे जिसप्रकार जो जैसा युद्धहुआ उस सबको सुना चाहताहूं हे संजय तुम वर्णन करने में बड़े कुशल हो ६८ ॥

अध्याय ३ ।

संजय बोले कि हे राजा सावधान होकर सुनो जैसे कि युद्धभूमि में मनुष्यों के शरीरोंका अत्यन्त घोर नाश वा राजाओं की हानिहोजाने और कर्णके मरनेपर पाण्डवों ने सिंहनाद किये तब आपके पुत्रों में बड़ाभारी भय उत्पन्न हुआ । ३ । कर्णके मरनेपर आपके किसी शूरवीरकी भी सेनाओंकी चढ़ाई और शीघ्र पराक्रम करने के साहस की बुद्धी नहींहुई । ४ । जैसे कि नौका रहित अथाह जल में नौकाके टूटनेपर व्यापारी लोग अपार जलके पारहोनेकी इच्छा रखनेवाले होते हैं उसीप्रकार अर्जुनके हाथसे सेनापति कर्णके मरनेपर आपके लोग रक्षाके चाहनेवाले

Kritvarma and Ashwathama escape destruction? Pray tell me, Sanjaya, in full detail, how it all happened." 68.

CHAPTER III

Sanjaya said, "Hear it carefully, king, how at the death of Karan and other warriors the Pandavas roared and the Kauravas fled for fear. None of your great warriors intended to face the Pandavas at the death of Karan. Your men sought protection after the death of Karan, as merchants wish for land when their ship is wrecked in the midst

हते द्वीपे किरीटिना ॥ ५ ॥ सूतपुत्रे हते राजन् वित्रस्ताः शरविक्षताः । अनाथा नाथ मिच्छन्तो मृगाः सिंहार्दिता इव । भग्नशृङ्गा इव वृषाः शीर्णदंष्ट्रा इवोरगाः ॥ ६ ॥ प्रत्युपायाम सायाह्ने निर्जिता सव्यसाचिना । हतप्रवीरा विध्वस्ता निकृत्ता निशितैः शरैः सूतपुत्रे हते राजन् पुत्रास्ते प्राद्रवन् भियात् ॥ ७ ॥ विशस्त्रकवचाः सर्वे कान्दिशीका विचेतसः अन्योऽन्यमभि निघ्नन्तो वीक्षमाणा भयार्दिता ॥ ८ ॥ मामेव नूनं बीभत्सुर्मामेव च वृकोदरः । अभियातीति मन्वानाः पेतुर्मम्लुश्च भारत ॥ ९ ॥ हयानन्ये रथानन्ये गजानन्ये महारथाः । आरुह्य जवसम्पन्नान् पादातान् प्रजहुर्भयात् ॥ १० ॥ कुञ्जरैः स्यन्दना भग्ना सादिनश्च महारथैः । पदातिसंघाश्चाश्वौघैः पलायद्भिर्भृशं हताः ॥ ११ ॥ व्यालतस्करसंकीर्णे सार्थहीना यथा वने । तथा त्वदीया निहते सूतपुत्रे तदाभवन् ॥ १२ ॥ हतारोहास्तथा नागाश्छि

हुये ५। हेराजा सूतपुत्रके मरनेपर भयभीत शस्त्रोंसे घायल आपके अनाथ लोग नाथके ऐसेचाहनेवाले हुये जैसेकि सिंहोंसे पीड़ामान हाथीटूटीशाखावाले बैल और टूटीडाढ़वाला सर्प रक्षाको चाहते हैं। सायंकालके समय अर्जुनसे पराजित मृतकवीरवाले, तीक्ष्ण बाणोंसे घायल होकर लोग हटआये। ७। हे राजा-कर्णके मरतेही शस्त्र और कवचों से रहित अचेत भयभीत और परस्परमें मर्दन करनेवाले और भयसेव्याकुल होकर देखनेवाले आपकेपुत्र महाभयातुर होकरभागे। ८। और यहनिश्चय जानकर कि अर्जुन और भीम हमारेही सम्मुख आतेहैं यह मानते हुये महा व्याकुलतासे गिरकर मृतक प्रायहोगये। ९। किसी महारथीने घोड़ोंपर किसीने हाथियों पर किसी ने रथोंपर चढ़कर बड़े वेगसे भयभीत होकर अपने पदातियों को त्यागकिया। १०। हाथियोंसे रथ महारथियों से अश्व सवार और भयसे व्याकुल भागनेवाले घोड़ों से पदातियों के समूह मारेगये। ११। जैसे कि सर्प और चोरोंसे भरेहुये वनमें अपने संगके लोगोंसे पृथक्होकर मनुष्योंकी जोदशाहोतीहैहेराजा उसीप्रकार कर्णके मरनेपर आपके शूरवीरों कोभी वहीदशाहुई। १२। अथवा जैसेकि मृतक सवारवाले, हाथी

of waters. 5. Terrified at the death of Karan and wounded by weapons your men wished for a protector like elephants attacked by a lion, oxen with broken horns or serpents with broken teeth. Wounded and defeated by Arjun's arrows, your men retreated by the evening. Deprived of arms and armour, foolishly charging one another and terrified, your sons fled in terror. Believing that Arjun and Bhim were everywhere encountering them, they were nearly dead. They rode their horses, elephants and cars and fled in terror, leaving their foot. 10. Cars, horses and men were destroyed by the flying warriors. Your men were in confusion like those who are separated from their companions in a forest full of thieves and serpents. At the death of Karan, they were like riderless elephants or like men with broken

भंद्रलोकस्थमास्वरा । सर्वं पार्थमयं लोकमपश्यन् वै भयातुराः ॥ १३ ॥ तान् प्रेक्ष्य
द्रवतः सर्वान् भीमसेनभयार्दितान् । दुर्य्योधनोऽथ स्व सूतं हाहा कृत्वेदमब्रवीत् १५॥
नातिक्रमिष्यते पार्थो धनुष्पाणिमवस्थितम् । जघने युध्यमानं मां शनैरश्वान् प्रचोदय
॥ १६ ॥ समरे युध्यमानं हि कौन्तेयो मां न संशयः नोत्सहेदप्यतिक्रान्तुं वेलामिव
महार्णव ॥ १७ ॥ अद्यार्जुनं सगोविन्दं मानिनञ्च वृकोदरम् । निहत्य शिष्टान् शत्रूंश्च
कर्णस्यानृण्यमाप्नुयाम् ॥ १८ ॥ तच्छ्रुत्वा कुरुराजस्य शूरार्य्यसदृशं वचः । सूतो हेम
परिच्छन्नाञ्छनैरश्वानचोदयत् ॥ १९ ॥ गजाश्वरथहीनाश्च पादाताश्चैव मारिष ।
पञ्चविंशति साहस्राः प्राद्रवञ्छनकैरिव ॥ २० ॥ तान् भीमसेनः संक्रुद्धो धृष्टद्युम्नश्च
पार्षतः । बलेन चतुरङ्गेन परिक्षिप्याहनच्छरैः ॥ २१ ॥ प्रत्ययुध्यन्त ते सर्वे भीमसेन

और हाथवाले मनुष्य होतेहैं इसीप्रकार आपके सबमनुष्य संसार भरकाही अर्जुन रूप देखतेहुये भयसे पीड़ामानहुये । १३ । भीमसेनके भयसे पीड़ित होकर भागता हुआ सबको देखकर और उनहजारों शूरोंकोभी भागते देखकर दुर्योधन ने बड़ा हाहाकार करके फिर अपने सारथीसे यह वचन कहा । १५ । कि अर्जुन सबसेना के मारने को मुझ धनुषधारी के होतेहुये नहीं आसक्ताहै इसमे अपने घोड़ोंको रोको । १६ । मैं निस्सन्देह उस युद्धकरनेवाले अर्जुन को अवश्य मारूंगा वह मुझको ऐसे उल्लघन नहीं करसक्ता है जैसे कि महासमुद्र अपनी मर्य्यादा नहीं उल्लघन करसक्ता है । १७ । अब मैं श्रीकृष्णजी समेत अर्जुन को वा बड़े अहङ्कारी भीमसेनको और इसी प्रकार सब बाकी बचेहुये शत्रुओं को मारकर कर्ण के ऋण से उद्धार हूंगा । १८ । सारथिने कौरवों के राजा दुर्योधन के उस वचनको,जो कि शूर और श्रेष्ठ लोगोंके कहने के समान था सुनकर सुवर्ण के सामानों से आच्छादित घोड़ों को बड़े धीरेपने से चलायमान किया ।१९। हेश्रेष्ठ फिर रथघोड़े और हाथियों से रहित आपके पच्चीस हजार पदाती युद्धके निमित्त नियतहुये । २० । फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन और धृष्टद्युम्न ने चतुरंगिणी सेना समेत उन पदातियोंको घेरकर मारा । २१ । वहसब भीमसेन और धृष्टद्युम्न

arms, they thought that they saw Arjun everywhere and were confused with terror. Being them running away for fear of Bhim, Duryodhan said to the driver, "Arjun cannot destroy the whole army as long as I am alive, Check your horses so that I may slay him. He cannot withstand me as the ocean can not pass over the coast Having slain Shri Krishn with Arjun and the rest of the enemies, together with Bhim, I shall satisfy the debt of Karan " Hearing the warlike language of Duryodhan, the driver gently drove the gold decked horses. Destitute of horses and elephants, twenty five thousands of your warriors stood by him. 20 Then Bhim and Dhrishtadyumn, much enraged, surrounded them with their armies and slew them.

सपार्षतम् । पार्थपार्षतयोश्चान्ये जगृहुस्तत्र नामनी ॥ २२ ॥ अक्रुध्यत रणे भीमस्तैर्मृधे पर्युपस्थितैः । सोऽवतीर्य रथात्तूर्णं गदापाणिरयुध्यत ॥ २३ ॥ न तानरथस्थो भूमिष्ठान्धर्मापेक्षी वृकोदरः । योधयामास कौन्तेयो भुजवीर्यं समाश्रितः ॥ २४ ॥ जातरूपपरिच्छन्नां प्रगृह्य महतीं गदाम् । न्यवधीत्तावकान् सर्वान्दण्डपाणिरिवान्तकः ॥ २५ पदातयोऽपि संरब्धास्त्यक्तजीवितबान्धवाः । भीममभ्यद्रवन् संख्ये पतङ्गा ज्वलनं यथा ॥ २६ ॥ आसाद्य भीमसेनं ते संरब्धा युद्धदुर्मदाः । विनेशुः सहसा दृष्ट्वा भूतग्रामा इवान्तकम् ॥ २७ ॥ श्येनवद्व्यचरद्भीमः खड्गेन गदया तथा । पंचविंशतिसाहस्रांस्तावकानामपोथयत् ॥ २८ ॥ हत्वा तत् पुरुषानीकं भीमः सत्यपराक्रमः । धृष्टद्युम्नं पुरस्कृत्य पुनस्तस्थौ महाबलः ॥ २९ ॥ माद्रीपुत्रौ तु शकुनिं सात्य

क सम्मुख होकर युद्ध करनेलगे और किसी ने पाण्डव और धृष्टद्युम्न के नामोंको लेकर पुकारा ॥ २२ । तबउन सम्मुख आयेहुये पदातियों से युद्ध में भीमसेन क्रोधरूप हुये और बड़ी शीघ्रता से अपने रथसे उतर हाथमें गदा लेकर युद्ध करने लगा । २३ । अपने भुजबल में दृढ़रूप धर्मको चाहनेवाले रथमें सवार कुन्तीकेपुत्र भीमसेन ने रथपर चढ़कर उन पदातियों से युद्ध नहीं किया ।२४।हाथ में दण्डधारी यमराज के समान भीमसेन ने सुवर्ण से मण्डित अपनी गदाको हाथमें लेकर पदाती होकर आपके सब पदातियों को मारा । २५ । फिर वह सब पदाती भी अपने प्यारे जीवनको त्याग करके युद्धमें भीमसेनके सम्मुख ऐसे गये जैसेकि अग्नि में पतंग जाते हैं । २६ । वह सबलोग युद्धमें क्रोधयुक्त युद्धदुर्मद भीमसेन को पाकर अकस्मात् ऐसे नाशहोगये जैसे कि जीवोंके समूह मृत्युको देखकर नाशहोजाते हैं । २७ । फिर बाजकी समान गदा हाथमें लिये घूमनेवाले भीमसेनने आपके पच्चीस हजार पदातियोंको मारा ।२८ फिर वह महापराक्रमी अतुलबली भीमसेन उस पदातियों की सेनाको मारकर धृष्टद्युम्नको अग्रे करके बराबर नियत हुआ । २९ । महारथी नकुल सहदेव और सात्यकी शकुनीके सम्मुख हुये और बड़े प्रसन्नचित्त होकर दुर्योधनकी सेनाको मारते हुये बड़ी शीघ्रता से सम्मुख

They faced Bhim and Dhrishtadyumn in battle and challenged them to fight. Bhim was enraged at this and coming down from his car, he fought them with his mace. Firm on his duty and relying on the strenght of his arms, he did not like to slay them from his car. Like Yam the wielder of staff, Bhim, taking his golden mace in his hand, slew your foot soldiers. Not caring for their life; they faced Bhim as insects fall into fire. 26. They were destroyed by Bhim as if they had faced Death himself. Roaming like a hawk, mace in hand, Bhim slew twenty five thousands of your foot. Having slain the foot soldiers, Bhim stood by Dhrishtadyumn. Nakul, Sahadev and Satyaki faced Shakuni and slew the army of Duryodhan with cheerful

किरन् महारथ । अथैनानभ्यवर्तन्त हन्तुकामा महाबला ॥ ३० ॥ तस्याश्वान्
राजन् सुपङ्क्ते निहत्य शितैः शरैः । समभ्यधावत्परितस्तत्र युद्धमभून्महत् ॥ ३१ ॥
ततो धनञ्जयो राजन् रथानीकमगाहत । विश्रुतं त्रिषु लोकेषु गाण्डीवं विक्षिपन्धनुः
॥ ३२ ॥ कृष्णसारथिमायान्तं दृष्ट्वा श्वेतहयं रथम् । अर्जुनञ्चापि योद्धारं त्वदीया
प्राद्रवन् भयात् ॥ ३३ ॥ विप्रहीनरथाश्चान्ये शरैश्च परिवारिता । पञ्चविंशतिका
हता पार्थमार्च्छन् पदातय ॥ ३४ ॥ हत्वा तत् पुरुषानीकं पञ्चालानां महारथ
॥ ३५ ॥ भीमसेनं पुरस्कृत्य नचिरात् प्रत्यपद्यत ॥ ३६ ॥ पारावतसवर्णाश्व कोविदार
कृतध्वज । धृष्टद्युम्नं रणे दृष्ट्वा त्वदीया प्राद्रवन् भयात् ॥ ३७ ॥ गान्धारराज
शीघ्रास्त्रमनुसृत्य यशस्विनौ । नचिरात् प्रत्यदृश्येतां माद्रीपुत्रौ ससात्यकी ॥ ३८ ॥ चेकि
तान शिखण्डी च द्रौपदेयाश्च मारिष । हत्वा त्वदीयं सुमहत् सैन्यं शङ्खांस्तथाधमन्

दौड़े । ३० । अर्थात् वह अपने तीक्ष्ण बाणोंसे बहुतसे सवारों को मारकर शीघ्रता से उसके सम्मुख दौड़े और बड़ा युद्धहुआ । ३१ । हे प्रभु फिर अर्जुन ने भी आपकी रथवाली सेनासे सम्मुख जाकर तीनों लोकों में प्रसिद्ध अपनेगांडीव धनुष को टंकारा । ३२ । आपके युद्धकर्त्ता शूरवीर उस रथ को जिस में कि श्रीकृष्णजी सारथी और श्वेत घोड़ों से युक्त था देखकर और युद्ध करनेवाले अर्जुनकोभी देखकर भागे । ३३ । रथोंसे रहित और बाणों से पीड़ामान पच्चीस हजार पदातियों ने कालको पाया । ३४ । पांचालोंका महारथी अत्यन्त साहसी पुरुषोत्तम श्रीमान् धृष्टद्युम्न उनको मारकर । ३५ । थोड़ेही कालमें भीमसेन को आगे करके दिखाई दिया । ३६ । तब आपके शूरवीर उस कपोत वर्ण घोड़े और कोविदाररूपी ध्वजाधारी धृष्टद्युम्न को युद्धमें देखकर भयभीत होकर भागे । ३७ । और यशस्वी नकुल और सहदेवउस शीघ्र अस्त्रोंके चलानेवाले गान्धारपतिको स्मरण करके सात्यकि समेत थोड़ीही देरमें दृष्टिपड़े । ३८ । हेश्रेष्ठ इसी प्रकार चेकितान शिखण्डी और द्रौपदी के पुत्रोंने आपकी बड़ी सेनाको मारकर बड़े शंखोंको बजाया । ३९ । फिर वह आपके शूरवीरों को मुख मोड़कर भागतेहुये

minds They slew numerous horsemen and fought a hard fight Arjun too, entered the field of battle and twanged his Gandiv bow 32 Seeing the car driven by Sri Krishn and drawn by white horses, your warriors fled away from Arjun. Destitute of cars and wounded by arrows, the twenty five thousands of foot soldiers met their death. Having slain them, the brave leader of the Panchals, Dhrishtadyumn was accompanied by Bhim Your warriors fled at the sight of Dhrishtadyumn the possessor of pigeon-cloured horses and kobdar standard. *Nakul and Sahadev, with Satyaki, hastened to face Shakuni.* Similarly, Chekitan, Shikhandi and the sons of Draupadi blew their conchs after slaying your warriors. Seeing your son turn face,

॥ ३९ ॥ ते सर्वांस्तावकान् प्रेक्ष्य द्रवतो वै पराङ्मुखान् । अभ्यधावन्त निघ्नन्तो वृषान् जित्वा वृषा इव ॥ ४० ॥ सेनावशेषं तं दृष्ट्वा तव पुत्रस्य पाण्डव । रथस्थितं सव्यसाची चुकोप बलवान्नृप । ४१ ॥ तत एनं शरै राजन् सहसा समवाकिरत् ॥ ४२ ॥ रजसा चोद्धतेनाथ न स्म किञ्चन दृश्यते ॥ ४३ ॥ अन्धकारीकृते लोके रजोभूते महीतले । दिशः सर्वा महाराज तावकाः प्राद्रवन् भयात् ॥ ४४ ॥ भज्यमानेषु सैन्येषु कुरुराजो विशाम्पतिः । परेषामात्मनश्चैव समन्तात् समुपाद्रवत् ॥ ४५ ॥ ततो दुर्योधन सर्वानाजुहावाथ पाण्डवान् । युद्धाय भरतश्रेष्ठ देवानिव पुरा बलिः ॥ ४६ ॥ ते एनमभिगर्जन्तं सहिताः समुपाद्रवन् । नानाशस्त्रसृजः क्रुद्धा भर्त्सयन्तो मुहुर्मुहुः ॥ ४७ ॥ दुर्योधनोऽप्यसम्भ्रान्तस्तानरीन् व्यधमच्छरैः । तत्र चविशस्तनः क्रुद्धः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ४८ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम तव पुत्रस्य पौरुषम् । यदेक-सहितान्सर्वान् रणे युद्धत पाण्डवान् ॥ ४९ ॥ दुर्योधन स्वकं सैन्यमपश्यद्भृश विक्षतम् । ५० ॥ ततो

देखकर ऐसे सम्मुख आकर वर्त्तमान हुये जैसे कि बैलोंको विजय करके क्रोधयुक्त बैल वर्त्तमान होते हैं ।४०। हेराजा इसके पीछे महा पराक्रमी पाण्डव अर्जुन आपकी बाकी बचीहुई सेनाको देखकर क्रोधयुक्त हुआ । ४१ । बाणों की वर्षा करके उससेना को ढकदिया फिर अन्धकार होजाने पर कुछ दिखाई नहीं दिया । ४२ । हेमहाराज लोकके हत तेज होने और पृथ्वी को धूलयुक्त होनेपर आपके सब शूरवीर भयभीत होकरभागे । ४४ । हे राजा सेनाके छिन्न भिन्न होनेपर आपका पुत्रदुर्य्योधन सम्मुखआनेवाले शत्रुओंकी ओरकोदौड़ा । ४५ । इसकेपीछे दुर्य्योधन ने सब पाण्डवोंको युद्धके लिये ऐसे बुलाया जैसे कि हे भारतर्षभ पूर्व्व समय में राजा बलिने देवताओंको बुलाया था । ४६ । नाना प्रकार के शस्त्रोंसे युक्त क्रोध युक्त बारम्बार घुड़की देते और गर्जना करतेहुये एक साथही उसके सम्मुखगये ।४७। इसकेपीछे यहां भयसे अव्याकुल चित्त क्रोधयुक्त दुर्य्योधनने अपने तीक्ष्ण बाणों से हजारों सेनाके लोगों को मारा । ४८ । उस स्थानपर हमने आपके पुत्र की अपूर्व्व वीरताको देखा कि अकेलाही उनसब इकट्ठे होनेवाले पाण्डवों से

they stood like bulls after conquering other bulls. 40 Seeing the rest of your army before him, brave Arjun was enraged He covered the whole army with the shower of arrows. Nothing was to be seen in the dark. At the slaughter of their people, while the field was enveloped in dust, your warriors turned back. 44 At the dispersion of the army, your son Duryodhan rushed against the foes. He challenged the Pandavas to fight as Bali had done the gods. They came on together, daunting and roaring in anger. Intrepid in danger, Duryodhan slew thousands of warriors with his sharp arrows. We saw there the wonderful prowess of your son who alone fought with many

पलयत्स्व राजेन्द्र कृतबुद्धिस्तवात्मज । हर्षयन्निव तान् योधानिदं वचनमब्रवीत्
॥ ५१ ॥ न त देश प्रपश्यामि पृथिव्यां पर्वतेषु च । यत्र यातान्न वो हन्यु पाण्डवा
किं सृतेन व ॥ ५२ ॥ स्वल्पञ्चापि बलं तेषां कृष्णौ च भृशविक्षतौ । यदि सर्वेऽत्र
तिष्ठामो ध्रुवो नो विजयो भवेत् ॥ ५३ ॥ विप्रयातांस्तु वो भिन्नान् पाण्डवा कृतकि
ल्बिषान् । अनुसृत्य हनिष्यन्ति श्रेयो न समरे वध ॥ ५४ ॥ सुख सांग्रामिको मृत्यु
क्षत्रधर्मेण युध्यत । मृतो दु ख न जानीते प्रेत्य चानन्त्यमश्नुते ॥ ५५ ॥ शृण्वन्तु क्षत्रिया
सर्वे यावन्तो वै समागता । द्विषतो भीमसेनस्य वशमेष्यथ ॥ ५६ ॥ पितामह
हैराचरितं न धर्मं हातुमर्हथ ॥ ५७ ॥ न च कर्मास्ति पापीय क्षत्रियस्य पलायनात्
॥ ५८ ॥ न युद्धधर्माच्छ्रेयान् हि पन्था स्वर्गस्य कौरवा । सुचिरेणार्जितांल्लोकान्

युद्धकरने लगा । ५० । इसके पीछे उस महात्माने अपनी सेनाको अत्यन्त दुखी देखा हे राजा उससमय आपका बुद्धिमानपुत्र उन दुखी शूरवीरों को खड़ा करके उनको प्रसन्न करताहुआ यह वचन बोला । ५१ । किमैं उसदेशको नहीं देखताहूं जहांपर तुम भयसे पीडित होकर जाओ और वहां पाण्डवों के हाथसे बचने पाओ तुमको भागने से क्यालाभहै । ५२ । उनकी सेना बहुतकमरहगई है और श्रीकृष्ण अर्जुन अत्यन्त घायलहै यदि तुम सबठहरो तोमेरी पूरीविजय है । ५३ । जो तुम भागोगे या पृथक्होगे तो पांडवलोग अपराधी जानकर तुमलोगों को पीछाकरके मारेंगे इससे हमारा और तुम्हारा युद्धमेंही मरने श्रेष्ठहै । ५४ । क्षत्री धर्मसे युद्धमें लड़नेवालों की मृत्युकाहोना सुखरूप है क्योंकि मरने के दुःखों को नहीं भोगताहै शीघ्रही मरकर अविनाशी गतिको पाताहै । ५५ । तुमजितने क्षत्री इकट्ठे हुयेहो सब चित्तलगाकर सुनो देखो भागनेसे एकतो क्रोधरूप हमारेशत्रु भीमसेनके आधीनहोगे दूसरे इस संसार में अपकीर्त्तिपाकर स्वर्ग वासी न होगे इसहेतुसे तुम लोगोंको अपने पूर्वजोंके कियेहुके धर्मका त्यागना उचित नहीं है । ५७ । भागने से अधिक और कोई पापरूप क्षत्रीका धर्मनहीं है हे कौरव लोगों युद्धसे बढ़कर

warriors of the Pandavas 50 Seeing his warriors in great distress he said to them, "I see no place where you can hide yourself and be safe from the Pandavas What is the use of your runnig away ? Their army is exceedingly reduced in number and Krishn and Aajun are badly wounded I can yet win a complete victory, if you stand firmly They will chase you, if you run away or disperse. It is therefore better to die fighting. A kshatrya falling down in battle, does not feel the pangs of death and soon attains to an indestructible state 55 Hear me attentively all the warriors here assembled If you run away from battle you will fall a prey to Bhim and shall forego heaven There is no greater sin for a kshatrya than his running away from battle and no duty is more preferable to him than fighting You

स्वर्गो योध समश्नुते ॥ ५९ ॥ तस्य तद्वचनं राज्ञ पूजयित्वा महारथाः । पुनरेवाभ्य
वर्त्तन्त क्षत्रिया, पाण्डवान् प्रति । पराजयममृष्यन्त. कृतचित्ताश्च विक्रमे ॥ ६० ॥
तत प्रववृते युद्धं पुनरेव सुदारुणम् । तावकानां परेषाञ्च देवासुररणोपमम् । युधि
ष्ठिरपुरोगाश्च सर्वसैन्येन पाण्डवान् । अन्वधावन्महाराज पुत्रो दुर्योधनस्तव ॥ ६१ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि कौरव विलापे तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

सञ्जय उवाच । पतितान्रथनीडांश्च रथांश्चापि महात्मनाम् । रणे विनिहतान्
दृष्ट्वा नागान् पत्तींश्च मारिष ॥ १ ॥ आयोधनञ्चाति घोरं रुद्रस्याक्रीडसन्निभम्

क्षत्रियोंका कोई उत्तमधर्म नहीं है हे शूरवीरो जो मरजाओगे तो
थोड़ेही दिनोंमें शोभलोकों को भोगोगे । ५९ । महारथी क्षत्रि
उस राजादुर्योधनके वचन, की प्रशंसा करके फिर भी पराजयको
सहनेवाले पराक्रममें प्रवृत्तचित्तहोकर पाण्डवोंके सम्मुख वर्त्तमानहुये । ६०
उसके पीछे फिरभी आपके युद्धकर्त्ता और दूसरे प्रति पक्षी लोगों का
भय कारी देवासुरों के युद्ध के समान युद्ध जारीहुआ हे महाराज आपका बे
दुर्योधन सब सेना समेत उन पाण्डवों के सम्मुख दौड़ा जिनका कि अग्रवर्त्ती
युधिष्ठिर था ६१ ॥

अध्याय ४ ॥

हे भरतवंशी गिरेहुये रथों के नीड़ और महात्माओं के रथोंको और युद्ध
मरेहुये हाथी और पत्तियों को देखकर । १ । और रुद्रजी के विहार क्रीड़ास्थान

will gain heaven in case of death. They praised Duryodhan's words and again attacked the Pandavas. The battle was again very dreadful like that between the gods and asurs Your son, Duryodhan rushed against the Pandavas who were led by Yudhishthir." 61.

CHAPTER IV

Seeing the cars of the great warriors, elephants and foot soldiers destroyed in battle, the with field of battle like the pleasure-ground to Rudra, thousands of kings fallen in disgrace by Arjun's prowess, seen also yourson defeated and dejected, your armies dispersed and crying

अप्रख्यांस गतानान्तु राज्ञां शतसहस्रशः ॥ २ ॥ विमुखे तव पुत्रे तु शोकोपहतचेतसि
भृशोद्विग्नेषु सैन्येषु दृष्ट्वा पार्थस्य विक्रमम् ॥ ३ ॥ ध्यायमानेषु सैन्येषु दुःख प्राप्तेषु
भारत । बलानां मथ्यमानानां श्रुत्वा निनदमुत्तमम् ॥ ४ ॥ अभिज्ञानं नरेन्द्राणां विकृतं
प्रेक्ष्य संयुगे । कृपाविष्टः कृपो राजन् वयः शीलसमन्वितः ॥ ५ ॥ अब्रवीत् तत्र तेजस्वी
सोऽभिसृत्य जनाधिपम् । दुर्योधनं मन्युवशाद्वचनं वचनक्षमः ॥ ६ ॥ दुर्योधन
निबोधेदं यत्त्वा वक्ष्यामि भारत । श्रुत्वा कुरु महाराज यदि ते रोचतेऽनघ ॥७॥
न युद्धधर्माच्छ्रेयान् वै पन्था राजेन्द्र विद्यते । यं समाश्रित्य युध्यन्ते क्षत्रियाः क्षत्रि
यर्षभ ॥ ८ ॥ पुत्रो भ्राता पिता चैव स्वस्रीयो मातुलस्तथा । सम्बन्धिबान्धवाश्चैव
योध्या वै क्षत्रजीविना ॥ ९ ॥ वधे चैव परो धर्मस्तथाधर्मः पलायने । तस्मात्घोरां
समापन्ना जीविकां जीवितार्थिनः ॥ १० ॥ तत्र त्वां प्रति वक्ष्यामि किञ्चिदेव हितं वचः
हते भीष्मे च द्रोणे च कर्णे चैव महारथे ॥ ११ ॥ जयद्रथे च निहते तव भ्रातृषु

समान बड़ी भयानक युद्धभूमिको वा अपकीर्ति पानेवाले सैकड़ों हजारों राजाओं
को । २ । और अर्जुनके पराक्रम को देखकर आपके बेटेके मुख फेरने शोक से
घायल चित्तहोने सेनाओंके अत्यन्त व्याकुलहोने । ३ । सेनाके दुःखीध्यान करने
वाले होनेपर मथीहुई सेनाओं के कठिनशब्दको सुनकर ।४। और युद्धमें राजाओं
की पहिचानों के चिह्नों को टूटाहुआ देखकर और आयु और शीलस्वभाव
से युक्त कृपासे पूर्ण वह तेजस्वी वार्त्तालापमें कुशल गुरु कृपाचार्य्यजी । ५ । राजा
के पास आकर बड़े क्रोधयुक्त होकर उस दुर्य्योधनसे बोले ।६। कि हे भरतर्षभजो
मैं तुमसे कहताहूं उसको समझो हे महाराज उसको सुनकर जो तुमको अच्छा
लगे उसको करना । ७ । हे राजेन्द्र निश्चय करके धर्मयुद्ध से अधिक कोईकल्याण
करनेवाला मार्ग नहींहै हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ उत्तम क्षत्रियलोग भी उसी मार्ग में
नियत होकर लड़ते है । ८ । बेटा भाई पिता भानजा, मामा नातेदार भाई बन्धु
के साथ लड़नेके योग्यहै । ९ । मरने में श्रेष्ठ धर्म्म है और भागना महाअधर्म्म है
इसी हेतुसे जीवनकी इच्छा रखनेवाले क्षत्रियोंने भयकारी घोर जीविकाको प्राप्त
किया है । १० । यहां मैं तुमसे कुछ हित करनेवाला वचन कहताहूं कि भीष्म
द्रोणाचार्य्य महारथी कर्ण । ११ । जयद्रथ आपके बहुतसे भाई और आपके बेटे

n distress and the standards of kings broken down aged Kripacharya, full of mercy, glory, good manners, power of speech and and anger, said to Duryodhan. "Hear me attentively, king, and then do as you like Surely nothing can be better than a just war for just warriors Sons, brothers, fathers, sister's sons uncles, and kinsmen may be fought with It is the duty of a kshatrya to die fighting, while there can be no sin greater than running away from batil. It is therefore that kshatryas have adopted this mode of living 10 I shall now give you some salutary advice Whom should we make our leader when Bhishm,

चानघ । लक्ष्मणे तव पुत्रे च किं शेष पर्युपास्महे ॥ १२ ॥ येषु मां समासज्य राज्ये
मतिमकुर्महि । ते सन्त्यज्य तनूर्वीरा शूरा ब्रह्मविदां गतिम् ॥ १३ ॥ वय त्विद
विनाभूता गुणवद्भिर्महारथैः कृपण वर्त्तयिष्याम पातयित्वा नृपान् बहून् ॥ १४ ॥
सर्वेरपि च जीवद्भि वीरैस्सुर्न पराजित । कृष्णनेत्रो महाबाहु र्देवैरपि दुरासद ॥ १५
इन्द्रकार्मुक वज्राभ मिन्द्रकेतु मिवोच्छ्रितम् । वानर केतुमासाद्य सञ्चचाल म
चमूः ॥ १६ ॥ सिंहनादेन भीमस्य पाञ्चजन्य स्वनेन च । गाण्डीवस्य निर्घोषात्
संहृष्यन्ति मनांसि न ॥ १७ ॥ चरन्तीव महाविद्युन्मुष्णन्ती नयनप्रभाम् । अला
मिव चाविद्ध गाण्डीव समदृश्यत ॥ १८ ॥ जाम्बूनद विचित्रञ्च धूयमानं महद्ध
दृश्यते दिक्षु सर्वासु विद्युदभ्रघनेष्विव ॥ १९ ॥ श्वेताश्च वेगसम्पन्ना शशिकाशस
मप्रभा । पिबन्त इव चाकाशं रथे युक्तास्तु वाजिन ॥ २० ॥ उह्यमानाश्च कृष्णे

लक्ष्मण के मरनेपर किम शेष बचेहुय प्रधान की वर्त्तमानता करें । १२ । हमजि
के ऊपर भार रखकर राज्य में अपना प्रबन्ध जारी करतेथे उन शूरवीरोंने शरी
को त्याग करके ब्रह्मज्ञानियों की गतियोंको पाया । १३ । हम उन प्रसंसनी
महारथियों के बिना बहुत से राजाओं को गिरनेपर दुःखी हैं । १४ । श्रीकृष्णव
प्रधान रखनेवाला महाबाहु अर्जुन देवताओंसे भी दुःखसे सम्मुखता के योग
और सब जीवधारियों से अजेय है । १५ । इन्द्रधनुष और वज्ररूप इन्द्रध्वजा
समान ऊंची वानरध्वजा को पाकर वह बड़ी सेना कम्पायमान हुई ।१६। भीमसे
के सिंहनाद पांचजन्य शंखका शब्द और गाण्डीव धनुषके शब्दों से हमारे चि
व्याकुल होते हैं ।१७। चक्षुके प्रकाशको चुराता घूमता और बड़ी बिजलीकेसम
आलातचक्रके समान घूमता गाण्डीव धनुष दिखाई पड़ा । १८ । सुवर्णजा
धनुष बड़ा दिशाओं में चलायमान ऐसे दिखाईपड़ा जैसे कि बादलों में बिज
दिखाई देतीहै । १९ । श्वेतचन्द्रमा के समान प्रकाशमान] अपनी तीव्रतासे 'यु
घोड़े आकाशको पानकरते रथमें संयुक्त हैं ।२० जैसे कि वायुसेयुक्त बादलहों

Drona, brave Karan, Jayadrath, with many of your brothers a
your son Lakshman, are slain Our great statesmen are slain in batt
-Without those great warriors, we have had to suffer the loss of ma
kings. Led by Shri Krishn, Arjun is a worthy match for gods a
is invincible by all other beings. 15. The armies disperse at the sig
of his bow and ape-banner like the bow and banner of Indra, O
hearts tremble with the sounds of Bhim's roar, the blasts of Panc
Janya conch and the twang of Gandiv bow, which dazzles the sig
with its circular movement and speed and brightness like that
lightning The gold-decked bow was seen in all directions like lightn
in the midst of clouds White like the moon, his horses seem
touch the sky with their speed 20. Shri Krishn drives the g

वायुनेव बलाहकाः । जाम्बूनदविचित्राङ्गा वहन्ते चार्जुनं रणे ॥ २१ ॥ तावकं तद्बलं
राजन्नर्जुनोऽस्त्रविदांवरः । गहनं शिशिरे कक्षं ददाहाग्निरिवोत्थितः ॥ २२ ॥ गाहमान
मनेकानि महेन्द्रमिव शुभ्रभम् । धनञ्जयमपश्याम चतुर्दंष्ट्रमिव द्विपम् ॥ २३ ॥ विक्षो
भयंतं सेनान्ते त्रासयन्तञ्च पार्थिवान् । धनञ्जयमपश्याम नलिनीमिव कुञ्जरम्
। २४ ॥ त्रासयन्तं तथा योधान् धनुर्घोषेण पाण्डवम् । भूय एवमपश्याम सिंहं मृग
गणानिव ॥ २५ ॥ सर्वलोकमहेष्वासौ वृषभौ सर्वधन्विनाम् । आमुक्तकवचौ कृष्णौ लोक
मध्ये व्यराजताम् ॥ २६ ॥ अद्य सप्तदशाहानि वर्त्तमानस्य भारत । संग्रामस्यातिघो
रस्य वध्यतांचाभितो युधि ॥ २७ ॥ वायुनेव विधूतानि तवानीकानि सर्वशः । शारद
मोघजालानि व्यशीर्य्यन्त समन्ततः ॥ २८ ॥ तां नावमिव पर्य्यस्तां वातभ्रान्तां महा
र्णवे । तव सेनां महाराज सव्यसाची व्यकम्पयत् ॥ २९ ॥ क्व नु ते सूत पुत्रो

उसीप्रकार श्रीकृष्णजीकी सवारीसे युक्त सुवर्णजटित अङ्गवाले घोड़े युद्धमें अर्जुनको लेचलते हैं। २१ । हे राजा अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ अर्जुन ने युद्धभूमिमें उस आपकी सेनाको ऐसे भस्मकरादिया जैसे कि उठाहुआ अग्नि बड़े घने शुष्कवनको भस्म करदेताहै । २२ । हमने चारदांत रखनेवाले हाथीके समान सेनाओंके मँझानेवाले महाइन्द्रके समान महाशोभान अर्जुनको देखा । २३ । जैसे कि कमलके वनको हाथी छिन्नभिन्न करदेताहै उसीप्रकार आपकी सेनाके छिन्नभिन्न करने वाले और राजाओं को भयभीत करनेवाले अर्जुन को देखा । २४ । और जैसे कि सिंह मृगोंके समूहोंको भयभीत करताहै उसीप्रकार धनुषके शब्द से डरानेवाले अर्जुन को फिर देखा । २५ । सब लोकके बड़े धनुषधारियों में श्रेष्ठ कवचधारी श्रीकृष्ण और अर्जुनलोकमें शोभायमानहुये । २६ । हे भरतवंशी अब युद्धमें चारोंओरके मरनेवालों के महाघोरयुद्धों के सत्रहदिन व्यतीतहुये । २७ । आपकी सब सेना चारोंओरमे ऐसे पृथक् २ होगई जैसे कि वायुसे शरद्ऋतुके बादलोंके समूह पृथक् २ होजाते हैं। २८ । हे महाराज अर्जुने आपकी सेनाको ऐसे अत्यन्त कम्पायमान किया जैसे कि समुद्रमेंवायुसे घूमनेवाली और चारोंओर मे डूबनेवाली नौका होतीहै तेरा सेनापति कर्ण कहांगया और पीछे चलनेवालों

decked horses of Arjun as the wind does the clouds. Arjun the best of warriors destroyed your army as fire does a dry forest. We saw Arjun crush your army like the four tusked elephant of Indra. He trampled down your army and terrified the warriors as an elephant crushes a forest of lotus. He terrified your warriors with the twang of his bow as a lion does a herd of deer. 25. Shri Krishn and Arjun the best of warriors looked glorious in the field. The war has been raging for the last seventeen days and your armies are dispersed like the clouds by wind. Arjun shook your warriors as a storm at sea does a boat. Where is Karan the commander of your

भूत क्व नु द्रोणः सहानुगः । अहं क्व च क्व चात्मा ते हार्दिक्यश्च तथा क्व नु दु शासनश्च भ्राता ते भ्रातृभिः सहितः क्व नु ॥ ३० ॥ बाणगोचरसंप्राप्तं प्रेक्ष्य चैव जयद्रथम् । सम्बन्धिनस्तथा भ्रा॰ न सहायान्मातुलांस्तथा ॥ ३१ ॥ सर्वान् विक्रम मिषतो लोकस्याक्रम्य मूर्द्धनि । जयद्रथो हतो राजा किन्नुशेषमुपास्महे ॥ ३२ ॥ को वेह स पुमानस्ति यो विजेष्यति पाण्डवम् ॥ ३३ ॥ तस्य चास्त्राणि दिव्यानि विविधानि महात्मनः । गाण्डीवस्य च निर्घोषो वीर्याणि हरते हि नः ॥ ३४ ॥ नष्टचन्द्रा यथा रात्रिः सेनेयं हतनायका । नागभग्नद्रुमा शुष्का नदीवाकुलतांगता ॥ ३५ ॥ ध्वजिन्यां हतनेत्रायां यथेष्टं श्वेतवाहनः । चरिष्यति महाबाहुः कक्षेष्विव संज्वलन् ॥ ३६ ॥ सात्यकेश्चैव यो वेगो भीमसेनस्य चोभयोः । दारयेत गिरीन् सर्वान् शोषयेत च सागरान् ॥ ३७ ॥ उवाच वाक्यं यद्भीमः सभामध्ये विशाम्पते । कृतं च

समेत द्रोणाचार्य कहांगये मैं कहां और तेरा शरीर कहां कृतवर्मा कहां और भाइयों समेत तेरा भाई दुश्शासन कहांहै।३०। बाणोंके लक्ष्यों में वर्त्तमान जयद्रथको देखकर उसीप्रकार नाते रिश्तेदार भाई साथी और मामा आदिकों को देख कर किसकी वर्त्तमानता करें । ३१ । सब के देखते पराक्रम करके सब लोकके मस्तकपर उल्लंघन करके राजा जयद्रथ को मारा फिर और कौन से शेष बचेहुये की वर्त्तमानता करें । ३२ । यहां ऐसा कौनसा मनुष्यहै जो पांडव अर्जुनको विजय कर सक्ता है उसमहात्माके अस्त्र बड़े दिव्य और नानाप्रकार के हैं और गांडीव धनुष का शब्द हमारे बल पराक्रमों को हरताहै । ३४ । जैसे कि चन्द्रमासे रहित रात्रि अशोभित होती है उसप्रकारकी यह सेनाहै जिसका कि प्रधान मारागया और जैसे हाथीसे तोड़ेहुये वृक्षवाली नदी होती है उसीप्रकारसे इस सेनाने भी महाव्याकुलता को पाया । ३५ । जिसका कि प्रधान मारागयाहै उस सेनामें महाबाहु अर्जुन स्वेच्छाचारी होकर ऐसे घूमेगा जैसे कि सूखे वनमें ज्वलित अग्नि घूमती है । ३६ । सात्यकि और भीमसेन इन दोनोंका जो वेगहै वह सब पर्वतोंको तोड़कर समुद्रों कोभी शुष्ककरसक्ता है । ३७ । हे राजा भीमसेनने सभाके मध्यमें

armies ? Where are Drona and his followers ? Where are you and I, Kritvarma and Dushasan, with your other brothers ? 30. Having looked at the death of Jayadrath and other kinsmen, whom shall we rely upon. Who is here to conquer Arjun. He has powerful weapons and the sound of Gandiv bow deprives us of prowess. By the fall of its commander the army looks ominous like a moonless night or like a river whose trees are broken down by an elephant 35. At the fall of the commander of the army, Arjun will roam like fire in a dry forest. The prowess of Satyaki and Bhim can break through the mountains and soak the ocean dry. Bhim has fulfilled all the vows he made in court, and will do so again. Protected by the

सकलं तेन भूयश्च करिष्यति ॥३८॥ प्रमुखस्थे तदा कर्णे बलं पाण्डवरक्षितम् । दुरासद तथा गुप्तं दृढ गाण्डीवधन्वना ॥ ३९ ॥ युष्माभिस्तानि चीर्णानि यान्यसाधूनि साधुषु । अकारणकृतान्येव तेषां वः फलमागतम् ॥४०॥ आत्मनोर्थे त्वया लोको यत्नतः सर्व आहृतः । स ते संशयितस्तात आत्माच भरतर्षभ ॥ ४१ ॥ रक्ष दुर्य्योधनात्मानमात्मा सर्वस्य भाजनम् । भिन्ने हि भाजने तात दिशो गच्छति तद्गतम् ॥ ४२ ॥ हीयमानेन वै सन्धिः पर्य्येष्टव्यः समेनच । विग्रहो वर्द्धमानेन नीतिरेषा बृहस्पतेः ॥ ४३ ॥ ते वयं पाण्डुपुत्रेभ्यो हीनाश्च बलशक्तितः । तदत्र पाण्डवैः सार्द्धं सन्धिं मन्ये क्षमं प्रभो ॥ ४४ ॥ न जानीते हि यः श्रेयः श्रेयश्चैवावमन्यते । स क्षिप्रं भ्रश्यते राज्यान्न च श्रेयोनुविन्दति ॥ ४५ ॥ प्रणिपत्य हि राजानं राज्यं यदि लभेमहि । श्रेयः स्यान्न तु नृपते राजन् गन्तुं पराभवम् ॥ ४६ ॥ वैचित्रवीर्य्यवचनात् कृपाशीलो युधिष्ठिरः ।

जो जो वचन कहेथे वहसब सत्य किये और आगे भी करेगा । ३८ । तबकर्ण के सम्मुख नियत होनेपर गांडीवधनुषधारी से प्रयत्नकृत और रक्षित वह पाण्डवीय सेना कठिनता से सम्मुखता के योग्य और रक्षितहुई तुमने भी वहकर्म किये जो कि साधुओं के मध्यमें नीचकर्म्म गिनेजाते हैं और वहसब कर्म्म तुमने निर्हेतुक किये इसी से उनका फल तुमको प्राप्तहुआ है । ४० । हे भरतर्षभ तुमने उपायों से सब पृथ्वी को विजय किया है तात वह सब पृथ्वी और तेरा शरीर सन्देहों में प्राप्तहै । ४१ । हे दुर्य्योधन आत्माकी रक्षाकर आत्माही सबका पात्रहै हे तात पात्रके खण्डित होनेपर उसमें की सब वस्तु इधर उधर दशोंदिशाओं में बहजाती हैं । ४२ । विनाश पानेवाले दुर्बल मनुष्य को सन्धि करलेना योग्यहै और वृद्धि युक्त को युद्ध करना योग्य है यह बृहस्पतिजी की नीति है । ४३ । हे समर्थ सो हम अपने बलपराक्रममें पाण्डवोंसे न्यूनहैं सो यहां अब पाण्डवोंसे सन्धिकरनाही मैं उचित मानताहूं । ४४ । जो कल्याणको नहींजानताहै और कल्याणका अपमान करताहै वह शीघ्रही राज्यसे तीक्ष्ण और रहित होकर कल्याण को नहीं पाताहै । ४५ । जो हम राजाको झुककर राज्यको पावें तो हमारा कल्याणहोय हे राजा अज्ञानतासे पराजय पानेके योग्यनहीं है । ४६ । दयावान राजा युधिष्ठिर राजा

bearer of Gandiv, the Pandav army was able to cope with Karan. You committed many sinful deeds by your selfishness and are now reaping the fruit of your doings. 40. The land so cunningly conquered by you and your body itself are in danger. Save yourself, Duryodhan, because self is the vessel which contains all and at the breaking of it things run away in all directions. A weak person should try to secure peace, though a strong man may engage in fighting. This is the opinion of Vrihaspati. We should make peace with the Pandavas, because we are inferior to them in prowess. He who does not think of his own good, loses his kingdom and all. 45. Our good

विनियुञ्जीत राज्ये त्वां गोविन्दवचनेन च ॥ ४७ ॥ यद्ब्रूयाद्धि हृषीकेशो राजानमपराजितम् । अर्जुनं भीमसेनञ्च सर्वं कुर्युरसंशयम् ॥ ४८ ॥ नातिक्रमिष्यते कृष्णो वचनं कौरवस्य च । धृतराष्ट्रस्य मन्येऽहं नापि कृष्णस्य पाण्डवः ॥ ४९ ॥ एतत् क्षेममहं मन्ये तव पार्थैर्न विग्रहम् । न त्वां ब्रवीमि कार्पण्यात् न प्राणपरिरक्षणात् । पथ्यं राजन् ब्रवीमि त्वां तत्परासुः स्मरिष्यसि ॥ ५० ॥ इति वृद्धो विलप्यैतत् कृपः शारद्वतो वचः । दीर्घमुष्णञ्च निश्वस्य शुशोच च मुमोह च ॥ ५१ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि कृपाचार्यवाक्ये चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

धृतराष्ट्र और गोविन्दजीके वचनोंसेतुमकोराज्यसे संयुक्तकरेगा । ४७ । इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजी अजेयराजा युधिष्ठिरसे और अर्जुन भीमसेन सेभीजो कुछकहेंगे वह सब उनके कहनेको निस्सन्देह करेंगे । ४८ । श्रीकृष्णजी कौरव धृतराष्ट्रके वचनको उल्लंघन नहीं करेंगे और पाण्डव भी श्रीकृष्णजी के वचनको उल्लंघननहीं करेगा यह मैं निश्चय मानताहूं । ४९ । मैं पाण्डवोंके साथ तेरी सन्धिको शुभ कल्याणकारी मानता हूं शत्रुताको नहीं मानता हूं मैं असूरता और प्राणों की रक्षा के अर्थ तुमसे नहीं कहता हूं मैं केवल तेरे कल्याण के अर्थ उपकारी वचन कहताहूं नहीं तो तू युद्धभूमिमें पड़ाहुआ होकर मेरे वचनों को स्मरण करेगा इस प्रकार वह वृद्ध शारद्वत कृपाचार्यजी यह विलाप करके लम्बी और उष्णश्वासाओं को छोड़कर महाअचेत होगये ५१ ॥

lies in bowing to the king. We should not suffer defeat by our own folly Merciful Yudhishthir will do as he is told by Dhritrashtra and Govind and will give you your kingdom Yudhishthir, Bhim and Arjun will do without hesitation, what they are told to do by Govind. Shri Krishn will not refuse the request of Dhritrashtra. Your peace with the Pandavas will be good for you. It is not that I ascribe cowardice or fear to you, but I believe that your good lies in peace. You will remember my words, if you donot mind them, when you will be lying on the field of battle. Having said this, old Kripacharya, heaving deep sighs, became senseless" 51.

सञ्जय उवाच। एवमुक्तस्ततो राजा गौतमेन यशस्विना। निःश्वस्य दीर्घमुष्णञ्च तूष्णीमासीद्विशाम्पते ॥ १ ॥ ततो मुहूर्त्तं स ध्यात्वा धार्त्तराष्ट्रो महामनाः। कृपं शारद्वतं वाक्यमित्युवाच परन्तपः ॥ २ ॥ यत् किञ्चित् सुहृदा वाच्यं तत् सर्वं श्रावितो ह्यहम्। कृतञ्च भवता सर्वं प्राणान्सन्त्यज्य युध्यता ॥ ३ ॥ गाहमानमनीकानि युध्यमानं महारथैः। पाण्डवैरतितेजोभिर्लोकस्त्वामनुदृष्टवान् ॥ ४ ॥ सुहृदा यदिदं वाक्यं भवता श्रावितो ह्यहम्। न मां प्रीणाति तत् सर्वं मुमूर्षोरिव भेषजम् ॥५॥ हेतुकारणसंयुक्तं हितं वचनमुत्तमम्। उच्यमानं महाबाहो न मे विप्राग्र्य रोचते ॥ ६ ॥ राज्याद्विनिकृतोऽस्माभिः कथं सोऽस्मासु विश्वसेत्। अक्षद्यूतेन नृपतिर्जितोऽस्माभिर्महाधनः। स कथं मम वाक्यानि श्रद्दध्याद्भूय एव तु ॥ ७ ॥ तथा दौत्येन सम्प्राप्तः कृष्णः पार्थहिते रतः। विप्रलब्धो हृषीकेशस्तच्च कर्माविचारितम्। स च मे

॥ अध्याय ५ ॥

संजय बोले कि राजा यशवान् गौतम कृपाचार्य्य के ऐसे वचनोंको सुनकर राजादुर्योधनभी लम्बी और उष्णश्वासाओंको लेकर मौनहोगया। १। वह शत्रुओं का तपानेवाला महासाहसी दुर्योधन एक मुहूर्त्त ध्यान करके शारद्वत कृपाचार्य्य से यह वचनबोला। २। कि जो कुछ शुभचिन्तकों को कहना योग्यहै वह सववातें मैंने सुनीहैं उन सबकहनेवाले शुभचिन्तकोंने भी प्राणोंको त्यागकर आपकेसाथ युद्धकिया। ३। महातेजस्वी महारथी पांडवोंकेसाथ लड़नेवाले और सेनाओं के मँम्तानेवाले तुमको सबलोकोंने देखा। ४। मुझको जो आप शुभचिन्तकोंने ऐसे वचन सुनाये हैं यहसब आपलोगों के वचन मुझे ऐसेमसन्न नहीं करते हैं जैसे कि मरने के इच्छावानको औषधी प्रसन्न नहींकरती ।५। हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ महाबाहु सहेतुक हितकारी वचनों से मुझको प्रसन्नता नहीं प्राप्त होती है यह बड़ाधनाढ्य राजायुधिष्ठिर पाशों के द्यूतमें हमसे पराजित हुआ है और राज्यसे भी रहित कियागया है वह हमारे ऊपर कैसे विश्वासकरेगा। ७। अर्थात् वह हमारे वचनों पर कैसे श्रद्धाकरेगा इसीप्रकार दूत होकर आनेवाले और पांडवों की वृद्धि में प्रीति करनेवाले इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजीभी ।८।

CHAPTER V

Sanjaya said, "Having heard the words of Kripacharya, Duryodhan heaved deep sighs and became silent. He thought for a while and then said, "I have heard your salutary advice. My well wishers have fought and died. All the people have seen you fighting with the Pandavas. Your advice does not please me like medicine to a sick man 5. I am not pleased with your advice, because Yudhishthir was deprived of his wealth and kingdom in gambling and will not trust us. Shri Krishn too, who came to me as an ambassador of peace was deceived by us. He is not likely to put his trust in

वचनं ब्राह्मण कथमेवाभिपत्स्यते ॥ ९ ॥ विललाप हि यत् कृष्णा सभामध्ये समेयुषी न तन्मर्षयते कृष्णो न राज्यहरणं तथा ॥ १० ॥ एकप्राणावुभौ कृष्णावन्योन्यप्रतिसंहतौ । पुरा यच्छ्रुतमेवासीदद्य पश्यामि तत् प्रभो ॥ ११ ॥ स्वस्रीयस्य हतं श्रुत्वा दुःखं स्वपिति केशवः । कृतागसो वयं तस्य स मदर्थं कथं क्षमेत् ॥ १२ ॥ अभिमन्योर्विनाशेन न शर्म लभतेऽर्जुनः । स कथं मद्धिते यत्नं प्रकरिष्यति याचितः ॥ १३ ॥ मध्यमः पाण्डवस्तीक्ष्णो भीमसेनो महाबलः । प्रतिज्ञातञ्च तेनोग्रं स भज्येत न संनमेत् ॥ १४ ॥ उभौ तौ बद्धनिस्त्रिंशावुभौ चावद्धकङ्कटौ । कृतवैरावुभौ वीरौ यमावपि यमोपमौ ॥ १५ ॥ धृष्टद्युम्न शिखण्डी च कृतवैरौ मया सह । तौ कथं मद्धितं यत्नं प्रकुर्यातां द्विजोत्तम ॥ १६ ॥ दुःशासनेन यत् कृष्णा एकवस्त्रा रजस्वला । परिक्लिष्टा सभामध्ये सर्वलोकस्य पश्यतः ॥ १७ ॥ तथा विवसनां दीनां स्मरन्त्यद्यापि

ठगगये उसकर्षको आपने नहीं विचरा है ब्राह्मण वह किसप्रकार से मेरे वचनों को अंगीकार करेगा । ९ । जो द्रौपदीने सभाके मध्यमें विलापकियाहै उसकोऔर उसप्रकारके राज्यहरणको श्रीकृष्णजी कभी नहीं सहेंगे । १० । श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों एकप्राण और मित्रहैं ऐसा पूर्वसमय में हमने सुनाहै हेप्रभु अब मैं उस को देखताहूं । ११ । केशवजी अपने भानजेको मृतक सुनकर दुःखसे सोतेहैं हम उसके अपराधीहैं वह हमारे निमित्त ऐसा कैसे करेंगे और अर्जुनभी अभिमन्यु के नाशमान होनेसे आनन्दको नहींपाताहै वह प्रार्थना करनेसे भी मेरी वृद्धि में कैसे उपाय करेगा । १३ । मँझला पांडव महाबली भीमसेन बड़ा तीव्र है उस ने उग्र प्रतिज्ञाकरी है वह अवश्य शत्रुताकरेगा कभी शांतीको नहीं पावेगा । १४ । वह नकुल और सहदेव दोनों वीर खड्ग और कवचधारी दोनों शत्रुता करने वाले और अश्विनीकुमारोंके समान हैं ।१५ । और धृष्टद्युम्न वा शिखण्डी मेरेसाथ शत्रुता करनेवाले हैं हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ वह दोनों मेरी वृद्धिमें कैसेउपाय करसके हैं । १६ । दुःशासनने सबलोकोंके देखतेहुये एकवस्त्र रखनेवाली रजस्वला द्रौपदी को जो सभाकेमध्यमें दुःखीकिया।१७। उसबातको अबतक वह पाण्डव स्मरण करके

me. S'ri Krishn will not forgive the wrongs done to Draupadi 10. Shri Krishn and Arjun are one soul and two bodies. I have heard it from old men and seen it myself. He is much grieved at Abhimanyu's death. Having suffered wrong from us, he may not do any thing for us. Arjun too, is displeased with us on account of Abhimanyu's death. Brave Bhim is infuriated He has vowed to destroy us and will not act otherwise. Both the warriors, Nakul and Sahadev, armed with sword and armour, are like Ashwini kumars in prowess and have bitter enmity with us. 15. Dhrishtadyumn and Shikhandi are my enemies and I can expect no good from them. 16. In the presence of all courtiers, Dushasan insulted Drupadi who was only covered with

पाण्डवा । ■ निवारयितु शक्या सग्रामात्त पाण्डवा । १८ । यदा च द्रौपदी कृष्णा मद्विनाशाय दु खिता । उग्र तप तप कृष्णा भर्तृणामर्थसिद्धये । स्थण्डिले नित्यदा शेते यावद्वैरस्य यातनम् ॥ १९ ॥ निक्षिप्य मान दर्पञ्च वासुदेवसहोदरा । कृष्णाया प्रेष्यवद्भूत्वा शुश्रूषा कुरुते सदा ॥ २० । इति सर्वं समुन्नद्ध न निर्वाति कथञ्चन ॥ २१ ॥ अभिमन्योर्विनाशेन सन्धय स कथ मया ॥ २२ ॥ कथञ्च नाम भुक्त्वेमा पृथिवीं सागराम्बराम् । पाण्डवाना प्रसादेन भुञ्जे राज्यमकण्टकम् । २३ ॥ उपर्युपरि वै राज्ञा ज्वलित्वा भास्करो यथा । युधिष्ठिर कथ पश्चादनुयास्यामि दासवत् ॥ २४ ॥ कथ भुक्त्वा स्वयम्भोगान् दत्त्वा दायाश्च पुष्कलान् कृपण वर्त्तयिष्यामि कृपणे सह जीविकाम् ॥ २५ ॥ नाभ्यसूयामि ते वाक्यमुक्त स्निग्ध हित त्वया । न तु

दु खरो पाती है वह शत्रुओंके तपानेवाले पाण्डव युद्धमे हटानेके योग्य नहीं है । १८ । जब द्रौपदीका दु ख दिखानवाला तब उसबड़े दुःखी कृष्णा द्रौपदीनेमेरे नाश और अपने सुहृदोंके प्रयोजनकी सिद्धीके निमित्त बडे तपकोंकियाहै और तबतक सदैव पृथ्वीपर शयन करती है जबतक कि शत्रुताका अन्त होगा ।१९। वासुदेवजीकी सगीबहिन अपनी प्रधानता और अहंकारको त्यागकर और द्रौपदी सदैव दासीरूपहोकर सेवाकरती है यहसब अच्छीरीतिसे क्रोधमें भरेहुये हैं किसीप्रकारसे भी शांतीको नहीं पासक्ते । २१ । अभिमन्युके नाश हानेसे किस प्रकार वह युधिष्ठिर मेरेसाथ सन्धिकरने को योग्यहोगा और प्रकट है कि इस सागराम्बरा पृथ्वीको भोगकर । २२ । फिर किसप्रकारसे पाण्डवोंकी कृपापाकर इसको भोगूंगा और मैं किसरीतिसे राज्यको करूंगा निश्चय करके सूर्यकेसमानसब राजाओं के ऊपर प्रकाशमान होकर फिर कैसे मे दासके समान होकर युधिष्ठिरके पीछे चलूंगा ।२४। अपने आप बडे बडे भोगोंको भोगकर और देनेके योग्य अनेकदानोंको देकर किसप्रकार से नीचोंकेसाथ नीच जीविकामे अपना निर्वाहकरूंगा।२५।मैं आपके वचनोंकी निन्दानहींकरताहू आपने मधुर स्वच्छ और प्रियकारी वचन कहे हैं मैं किसी दशामें भी समयके अनुसार सन्धिको श्रेष्ठ नहीं

a single cloth. The Pandavas still remember those wrongs and will not desist from fighting Draupadi performed a severe asceticism for our destruction on account of the wrongs we had done her. She will sleep on earth as long as her enemies exist. Vasudev's sister serves Draupadi like a maidservant without any touch of pride and both are much displeased with us 21. Yudhishthir will not make peace with us, for we have slain Abhimanyu Having ruled over this wide world, I would not be a king by the favour of the Pandavas. Having shone like the Sun, I would never like to follow Yudhishthir Having lived a life of ease and given donations, I would not pass my life like ordinary men 25 I donot blame you for your words which were sweet and salutary but I do not think peace advisable. I like to fight and not to

सन्धिमहं मन्ये प्राप्तकालं कथञ्चन ॥ २६ ॥ सुनीतमनुपश्यामि सुयुद्धेन परन्तप। नायं क्लीबयितुं कालः संयोद्धुं काल एव नः ॥ २७ ॥ इष्टं मे बहुभिर्यज्ञैर्दत्ता विप्रेषु दक्षिणा। प्राप्ताः कामाः श्रुता वेदाः शत्रूणां मूर्ध्नि च स्थितम् ॥ २८ ॥ भृत्या मे सुभृतास्तात दीनश्चाभ्युद्धृतो जनः। नोत्सहेऽद्य द्विजश्रेष्ठ पाण्डवान् वक्तुमीदृशम् ॥ २९ ॥ जितानि परराष्ट्राणि स्वराष्ट्रमनुपालितम्। भुक्ताश्च विविधा भोगास्त्रिवर्गः सेवितो मया। पितृणां गतमानृण्यं क्षत्रधर्मस्य चोभयोः ॥ ३० ॥ न ध्रुवं सुखमस्तीह कुतो राज्यं कुतो यशः। इह कीर्तिर्विधातव्या सा च युद्धेन नान्यथा ॥ ३१ ॥ गृहे यत् क्षत्रियस्यापि निधनं तद्विगर्हितम्। अधर्मः सुमहानेष यच्छय्यामरणं गृहे ॥ ३२ ॥ अरण्ये यो विमुञ्चेत संग्रामे वा तनुं नरः। क्रतूनाहृत्य महतो महिमानं स गच्छति ॥ ३३ ॥ कृपणं विलपन्नार्तो जरयाभिपरिप्लुतः। म्रियते रुदतां मध्ये ज्ञातीनां न स

मानताहूं । २६ । शत्रुओंके तपानेवाले मैं युद्ध में अच्छी नीतिको देखताहूं यह समय युद्ध करनेकाहै नपुंसकबनने का नहीं है । २७ । मैंने बहुतसे यज्ञोंसे पूजन किये और ब्राह्मणों का दक्षिणा दी सब अभीष्टों को प्राप्त किया वेदों को श्रवण किया शत्रुओंके मस्तकपर नियतहुआ और दासोंका पोषणकरके मैंने दुखीलोगोंकोभी दुःखोंसे छुटाया है ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ मैं पाण्डवों से ऐसा कहनेको उत्साह नहीं करताहूं ।२९। दूसरों के देशोंको विजयकिया अपने देशका पोषणकिया नानाप्रकार के भोगभोगे और मैंने धर्म अर्थ काम इनतीनों वर्गों का भी सेवनकिया क्षत्रीधर्म और पितृलोग इनदोनोंके ऋणोंसे भी उऋणता प्राप्तकरी । ३० । इसलोक में सुख अविनाशीनहीं है राज्य और यशकहां है यहां केवल कीर्तिही प्राप्त करनेके योग्यहै परन्तु वह कीर्ति युद्धसे प्राप्तहोती है दूसरे प्रकारसे नहीं होतीहै । ३१ । घरमें जो क्षत्रीकी मृत्यु है वहभी निन्दाके योग्यहै घरमें शय्यापर मरना महा अधर्म है ॥ ३२ । जो मनुष्य वनमें अथवा युद्ध में शरीर को त्यागकरता है वह यज्ञोंके फलोंको पाकर बड़ी वृद्धताको पाताहै । ३३ । वृद्धावस्थासेयुक्त रोगीमनुष्य दुःखकी बातोंको करता और रोताहुआ रुदनकरने वाले जातवालों में जो मरता है वह पुरुषनहीं है । ३४ । हे अभी नानाप्रकारके

sit idle like a eunuch. I have performed sacrifices and given donations I have satisfied my desires, heard the Vedas, crushed enemies, maintained servants and relieved the needy. I have no mind to beg the Pandavas for peace. I have conquered kings, ruled my kingdom, lived in luxury and satisfied the debts of warriors and pitris.30. Happiness is not stationary in this world, how can kingdom and fame be? Fame is worth acquiring in the world and the only way of acquiring it is by war. To die in his house is not good for a warrior. He who dies fighting or in a forest reaps the merit of performing sacrifices. One who dies of sickness or old age, wept over by kinsmen, is not a man

पूरुष: ॥ ३४ ॥ त्यक्त्वा तु विविधान् भोगान् प्राप्तानां परमांगतिम्। अपीदानीं सुयुद्धेन गच्छेयं शक्रलोकताम् ॥ ३५ ॥ शूराणामार्य्यवृत्तानां संग्रामेष्वनिवर्त्तिनाम्। धीमतां सत्यसन्धानां सर्वेषां क्रतुयाजिनाम् ॥ शस्त्रावभृथपूतानां ध्रुवं वासस्त्रिविष्टपे ॥ ३६ ॥ मुदा नूनं प्रपश्यन्ति युद्धे ह्यप्सरसाङ्गणाः। पश्यन्ति नूनं पितरः पूजितान् सुरसंसदि। अप्सरोभिः परिवृतान् मोदमानांस्त्रिविष्टपे ॥ ३८ ॥ पन्थानममरैर्यातं शूरैश्चाप्यनिवर्त्तिभिः। अपि तैः संगतं मार्गं वयमप्यारुहेमहि ॥ ३९ ॥ पितामहेन वृद्धेन तथाचार्य्येण धीमता। जयद्रथेन कर्णेन तथा दुःशासनेन च ॥ ४० ॥ घटमाना मदर्थेस्मिन् हताः शूरा नराधिपाः। शेरते लोहिताक्ताङ्गाः पृथिव्यां शरविक्षताः ॥ ४१ ॥ उत्तमास्त्रविदः शूरा यथोक्तक्रतुयाजिनः। त्यक्त्वा प्राणान् यथान्यायमिन्द्रसद्मस्वधिष्ठिताः ॥ ४२ ॥ तैस्त्वयं रचितः पन्था दुर्गमो हि पुनर्भवेत्। सम्पतद्भिर्महावेगैर्यास्यद्भिरिह सद्गतिम् ॥ ४३ ॥ ये मदर्थे हताः शूरास्तेषां कृतमनुस्मरन्। ऋणं तत्

भोगोंको त्यागकर के शुभयुद्धसे परमगति पानेवाले पुरुषों के लोकों को और सदैव इन्द्रकेही पास रहूंगा निश्चयकरके शूरवीर श्रेष्ठ चलन युद्धमें मुख नफेरने वाले बुद्धिमान सत्यसंकल्प सबयज्ञों के करनेवाले और शस्त्ररूपी यज्ञ स्नान से पवित्र पुरुषोंका निवास स्वर्ग में है निश्चय बात है कि युद्धमें अप्सराओं के समूह आनन्दपूर्वक देखते हैं । ३७ । और यह भी निश्चयहै कि पितृलोग उन देवताओंकी सभामें पूजित अप्सराओं से व्याप्त उनस्वर्गमें आनन्द करनेवालों को देखते हैं देवताओं से चलायाहुआ मार्ग दूसरों से अधिककर्म करनेवाले उनशूरों सेभी प्राप्त कियागया है हम उसमार्गमें चढ़नाचाहते हैं । ३९ । वृद्धभीष्मपितामह उसीप्रकार वृद्ध बुद्धिमान द्रोणाचार्य्य जयद्रथ कर्ण और दुश्शासनभी वह मार्ग प्राप्तकिया । ४० । इस मेरे प्रयोजन के लिये उपाय करनेवाले शूरवीर राजालोग मारेगये वह सबलोग रुधिरमें लिप्तवाणों से विदीर्णअंग पृथ्वीपर सोते हैं । ४१ । उत्तम अस्त्रोंके ज्ञाता महाशूर वेदोक्त रीतिसे यज्ञकरनेवाले न्याय के अनुसार युद्धमें प्राणोंको त्यागकरके इन्द्रभवनमें नियत हैं । ४२ । चढ़ाई करनेवाले बड़े वेगवान् और इसलोक में सद्गतिको पानेवाले उनलोगों से यह दुष्प्राप्य मार्ग त्यागया है जो कि फिर कठिनतासे प्राप्तहोगा ।४३। जो शूर मेरे निमित्त मारेगये

I shall leave all the worldly enjoyments to remain for ever in the region of Indra where the brave and holy go. The groups of apsaras are looking this way from heaven. The way of the godly is trodden by the brave, and I wish to go the way which old Bhishm, Dronacharya, Jayadrath, Karan and Dushasan have gone. 40. The heroes who have died for me are lying on earth in bleeding bodies. The good warriors having lost their lives have gone to the region of Indra This difficult way is trodden only by the brave. I remember the deeds

प्रतिकुर्वाणो न राज्ये मन आदधे ॥४४॥ घातयित्वा वयस्यांश्च भ्रातॄनथ पितामहान् । जीवितं यदि रक्षेयं लोको मां गर्हयेद्ध्रुवम् ॥ ४५ ॥ कीदृशं तद्भवेद्राज्यं मम हीनस्य बन्धुभिः । सखिभिश्च सुहृद्भिश्च प्रणिपत्य च पाण्डवम् । ४६ ॥ सोऽहमेतादृशं कृत्वा जगतोऽस्य पराभवम् । सुयुद्धेन ततः स्वर्गं प्राप्स्यामि न तदन्यथा ॥ ४७ ॥ एवं दुर्योधनेनोक्तं सर्वे सम्पूज्य तद्वचः । साधु साध्विति राजानं क्षत्रियाः सम्बभाषिरे ॥ ४८॥ पराजयमशोचन्तः कृतचित्ताश्च विक्रमे । सर्वे सुनिश्चिता योद्धुमुदग्रमनसोऽभवन् ॥ ४९ ॥ ततो वाहान् समाश्वास्य सर्वे युद्धाभिनन्दिनः । ऊने द्वियोजने गत्वा प्रत्यतिष्ठन्त कौरवाः ॥ ५० ॥ आकाशे विद्रुमे पुण्ये प्रस्थे हिमवतः शुभे । अरुणां सरस्वतीं प्राप्य पपुः सस्नुश्च तज्जलम् । तव पुत्राः कृतोत्साहाः पर्यवर्तन्त ते ततः ॥५१॥ पर्यवस्थाप्य चात्मानमन्योन्येन पुनस्तदा । सर्वे राजन् न्यवर्तन्त क्षत्रियाः कालचोदिताः ॥ ५२ ॥ इति शल्यपर्वणि दुर्योधन वाक्ये पञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

उनके कर्मको स्मरण करता और उनके ऋणोंसे अऋण होने के निमित्त राज्यमें अपना चित्त नहीं करता हूं । ४४ । समान अवस्थावाले भाई और पिता पितामहादिकों को गिराकर जो अपने जीवनकी रक्षाकरूंगा तो निश्चयकरके सब संसार मेरी निन्दाकरेगा । ४५ । पाण्डवको झुककर मित्र शुभचिन्तक और बान्धवों से रहित मुझ राजाका वह राज्य कैसा होगा ।४६। सो मैं इसप्रकार से इस संसार के नाशको करके उत्तम युद्ध के द्वारास्वर्गको पाऊंगा यह विपरीत नहीं है । ४७ । इसप्रकार से उस के वचनोंको सुनकर उसकी प्रशंसा करके सब क्षत्री लोग राजासे यह वचन बोले कि धन्य है धन्य है । ४८ । वह सब पराजयके न सोचने वाले पराक्रम करने म महत्तचित्त युद्धकरने में निश्चय करके बड़े साहसीहुये ।४९। इसके पीछे युद्धको स्वीकार करनेवाले सब कौरवों ने सवारियों को विश्वास देकर कुछ कम दो योजन पर जाकर नियत हो । ५० । चारोंओरसे मकानमान् वृक्षोंसे रहित पवित्र हिमाचल पर्व्वतके सुन्दर शुभ शिखरपर अरुणवर्णा सरस्वती को पाकर उस में स्नान किया और उसके जलको भी पानकिया । ५१ । तब फिर आपके पुत्रके द्वारा साहस रखनेवाले वह सब शूरवीर परस्पर चित्तको स्थिर करके वहांसे लौटे अर्थात् हेराजा कालकी प्रेरणासे सबक्षत्री लौटआये । ५२ ॥

of those who have died for my sake and wish no longer to rule the land without relieving myself of their debts All the world will blame me, if I shall rule the land after the fall of my kinsmen.45. How can I bow down to the Pandav for the sake of kingdom Having caused destruction of the world, I shall die fighting" Having heard these words the warriors praised him Desirous of fighting, their courage became doubly strong The Kauravas stood at a distance of two miles on their respective cars 50. They bathed in the red waters of the Saraswati and drank of its waters Then they returned to fight by the instigation of Time " 52.

सञ्जय उवाच । अथ हैमवते प्रस्थे स्थिता युद्धाभिनन्दिनः । सर्व एव महाराज योधास्तत्र समागता ॥ १ ॥ शल्यश्च चित्रसेनश्च शकुनिश्च महारथ । अश्वत्थामा कृपश्चैव कृतवर्मा च सात्वत ॥ २ । सुषेणोऽरिष्टसेनश्च धृतसेनश्च वीर्यवान् । जयत्सेनश्च राजानस्ते रात्रिमुषितास्तत ॥ ३॥ रणे कर्णे हते वीरे त्रासिता जितकाशिभिः । नालभन् शर्म ते पुत्रा हिमवन्तमृते गिरिम् ॥ ४॥ तेऽब्रुवन् सहितास्तत्र राजानं शल्य सन्निधौ । कृतयत्ना रणे राजन् सम्पूज्य विधिवत्तदा ॥ ५ ॥ कृत्वा सेनाप्रणेतारं परांस्त्वं योद्धुमर्हसि । येनाभिगुप्ताः संग्रामे जयेमासुहृदो वयम् ॥६। ततो दुर्योधनः स्थित्वा रथे रथवरोत्तमम् । सर्वयुद्धविधानज्ञमन्तकप्रतिमं युधि ॥७॥ स्वङ्गं प्रच्छन्नशिरसं कम्बुग्रीवं प्रियंवदम् । व्याकोशपद्मपत्राक्षं व्याघ्रास्यं मेरुगौरवम् ॥ स्थाणोर्वृषस्य सदृशं स्कन्धनेत्रगतिस्वनैः । पुष्टश्लिष्टायतभुजं सुविस्तीर्णघनोरसम् ॥ ९ ॥ जवे बल

अध्याय ६ ।

सञ्जय बोले हे महाराज इसके पीछे उस हिमालयके प्रस्थपर युद्धको उत्तम माननेवाले सब शूरवीर इकट्ठे हुये । १ । महारथी शल्य, चित्रसेन, शकुनि, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, यादव कृतवर्मा, । २ । पराक्रमी सुषेण, अरिष्टसेन, धृतसेन और जयत्सेन नाम यह सब राजा लोग रात्रि में निवासी हुये इसके पीछे । ३ । युद्धमें वीरकर्ण के मारेजानेपर विजयसे शोभा पानेवाले पाण्डवों से भयभीत आपके पुत्रों ने विना हिमाचल पर्वतके आनन्दको नहीं पाया । ४ । हे राजा तब वहां युद्ध में उपाय करनेवाले वहलोग एक साथही शल्य के सम्मुख विधिपूर्वक प्रशंसा करतेहुये राजासे यह वचनबोले ।५। कि आप अभी अपना सेनापति नियतकरके शत्रुओंसे लड़ने के योग्यहो और ऐसा सेनापति करिये जिससे कि हमलोग युद्धमें रक्षितहोकर शत्रुओंको विजयकरें । ६ । तबतो दुर्योधन उत्तम रथमें नियत होकर अश्वत्थामाजी से बोला कि जो युद्धों में सबप्रकारके युद्धों के चमत्कारों के जाननेवाले युद्धमें कालके समान ।७ । उत्तम अगोंसे गुप्त शिरवाला कम्बुग्रीव प्रियभाषी प्रसन्नचित्त कमलके समान नेत्र व्याघ्रके समान मुख रखनेवाला मेरु पर्व्वतके समान गौरवता रखनेवाला । ८ । स्कन्ध गति और शब्दसे नन्दीगणके समान हृष्टपुष्ट दिलष्ट आयत भुजावाला और बहुत बड़ेसघन वक्षस्स्थलवाला । ९ ।

CHAPTER VI

Sanjaya said, " The warriors assembled at the foot of the Himalayas. Brave Shalya, Chitrasen, Shakuni, Ashwathama, Kripacharya Kritvarma, Susben, Dhritsen and Jayatsen, rested for the night After the death of Karan Your sons terrified of the Pandavas, were ill at ease Then praising Shalya in the midst of the assembled warriors, they said. 5 " You are fit to be the leader of the armies to conquer our foes." Then Duryodhan said to Ashwathama the

च सभृशमरुणानुजवातयोः । आदित्यस्यार्चिषा तुल्यं बुध्या चोशनसा समम ॥ १० ॥ कान्तिरूपमुखैश्वर्यैस्त्रिभिश्चन्द्रमसा समम । काञ्चनोत्पलसंघाते सदृश श्लिष्टसन्धिकम । ११ ॥ सुवृत्तोरुकटीजंघ सुपाद स्वंगुलीनखम । स्मृत्वा स्मृत्वैव तु गुणान्धात्रा यत्नाद्विनिर्मितम् ॥ १२ ॥ सर्वलक्षणसम्पन्नं निपुणं श्रुतिसागरम । जेतारं तरसारीणामजेयं शत्रुभिर्बलात् ॥१३॥ दशांग यश्चतुष्पादमिष्वस्त्रं वेदतत्त्वत । सांगांश्च चतुरो वेदान् सम्यगाख्यानपञ्चमान् ॥ १४ ॥ आराध्य त्र्यम्बकं यत्नाद्व्रतैरुग्रैर्महातपाः । अयोनिजायामुत्पन्नो द्रोणेनायोनिजेन य ॥ १५ ॥ तमप्रतिमकर्माणं रूपेणाप्रतिमं भुवि । पारगं सर्वविद्यानां गुणार्णवमनिन्दितम् ॥ १६ ॥ तमभ्येत्यात्मजस्तुभ्यमश्वत्थामानमब्रवीत् । यं पुरस्कृत्य सहिता युधि जेष्याम पाण्डवान् ॥ १७॥

तीव्रता और बलमें वायु और गरुडके समान तेजमें सूर्यके समान और बुद्धि में शुक्रजी के समान । १० । कान्तिरूप; और मुख इनतीनों ऐश्वर्यों से चन्द्रमाके सदृश सुनहरी कमल समूहों के समान स्वच्छ अंगके जोड़ । ११ । गोल टांग कमर और जंघावाला सुन्दरचरण उंगली और नख रखनेवाला है ईश्वर ने बारम्बार गुणों को स्मरण करके उपायसे उत्पन्न किया है । १२ । और अन्य सब लक्षणों से युक्त वह सावधान वेदोंका समुद्र और वेगोंमें शत्रुओंका विजय करनेवाला बल पराक्रमके द्वारा शत्रुओंसे अजेयहै । १३ । जो दशभाग और चारचरण रखनेवाले बाण और अस्त्रोंको मूलसमेत जानता है और अंगों समेत चारोंवेद जिन में पांचवां इतिहासहै उनसबको अच्छीरीतिस पढ़ा । १४ । वह बड़ा तेजस्वी उपायके द्वारा उग्रव्रतोंसे शिवजीको आराधनकरके योनिसे जन्म न होनेवाले द्रोणाचार्य ने उसस्त्रीमें उत्पन्नहुआ जो कि योनिसे उत्पन्न नहीं है । १५ । आपका पुत्र उस अनुपम कर्म्म और रूपमें पृथ्वीपर अनादृश्य सर्वविद्याओंमें पूर्ण गुणोंके समुद्र शत्रुओं के विजय करनेवाले । १६ । अश्वत्थामाकेपास जाकर यही शीघ्रतासे उनसे बोला कि हम साथहोकर जिसको अग्रगामीकरके पांडवोंको विजयकरें । १७।

skilful warrior like Death in the field of battle, of great arms, valour and brave, like Garur in strength and prowess, glorious like the Sun and like Shukra in wisdom, 10 Like the moon in the splendour of face, with limbs like lotus flowers, round legs, waists and thighs, with handsome feet, fingers and nails, he has been created by God with all the good qualities Possessed of all lucky marks, he is clever, and learned in the Vedas, that conqueror of foes by his matchless prowess is invincible by enemies He knows the proper uses of all weapons and has studied the four Vedas with History. Born from the glorious austerities and worshipper of Shiva, without a woman, Dronacharya gave birth to Ashwathama in a woman who was born of no woman 15. Your son went to Ashwathama the conqueror of foes and said, " Son

गुरुपुत्रोऽद्य सर्वेषामस्माकं परमा गतिः। भवांस्तस्मान्नियोगात्ते कोऽस्तु सेनापतिर्मम ॥ १८॥ द्रौणिरुवाच। अयं कुलेन वीर्येण तेजसा यशसा श्रिया। सर्वैर्गुणैः समुदितः शल्यो नोऽस्तु चमूपतिः ॥ १९ ॥ भागिनेयान्निजांस्त्यक्त्वा कृतज्ञोऽस्मानुपागतः। महासेनो महाबाहुर्महासेन इवापरः ॥ २०॥ एनं सेनापतिं कृत्वा नृपतिं नृपसत्तम। शक्यः प्राप्तुं जयोऽस्माभिर्देवैः स्कन्दमिवाजितम् ॥ २१ ॥ तथोक्ते द्रोणपुत्रेण सर्व एव नराधिपाः। परिवार्य स्थिताः शल्यं जयशब्दांश्च चक्रिरे। युद्धाय च मतिं चक्रुरावेशं च परं ययुः ॥ २२ ॥ ततो दुर्योधनः शल्यं भूमौ स्थित्वा रथे स्थितम्। उवाच प्राञ्जलिर्भूत्वा द्रोणभीष्मसमं रणे ॥ २३ ॥ अयं सः कालः संप्राप्तो मित्राणां मित्रवत्सल। यत्र मित्रममित्रं वा परीक्षन्ते बुधा जनाः ॥ २४ ॥ स भवानस्तु नः शूरः

उसको आप बताइये आप गुरूजीके पुत्रहैं इस हेतुसे आपकी आज्ञासे उसका निर्णय होना चाहिये कि मेरा सेनापति कौन होय। १८। अश्वत्थामा जी बोले कि कुल तेज बल यश लक्ष्मी और सब गुणों से पूर्ण यह शल्य हमारा सेनापति होय। १९। उपकारका ज्ञाता बड़ी सेनाका स्वामी महाबाहु दूसरे स्वामि कार्तिकके समान यह शल्य अपने निजभानजों को त्यागकरके हमारेपास आया। २०। हे उत्तम राजा लोगो इस शल्य राजाको अपना सेनापति बनाकर हम लोगऐसे शत्रुओं के विजय करनेको योग्यहैं जैसे कि स्वामिकार्तिकजी को सेनापति बनाके देवताओंको विजय प्राप्तहुई। २१। अश्वत्थामा के इसप्रकार के वचनोंको सुनकर सब महारथी राजा शल्यको घेरकर चारोंओरको खड़ेहुये और विजयके शब्दोंको किया। २२। युद्ध में सबने बुद्धिकी और उत्तम निवासस्थान को प्राप्त किया इसके पीछे दुर्योधन उस रथसवार युद्ध में द्रोणाचार्य और भीष्मके समान शल्यको हाथ जोड़कर बोला। २३। हे मित्रोंके प्यारे अब मित्रोंका वह समय वर्तमान हुआहै जिसमें कि बुद्धिमान लोग अपने मित्र और शत्रुओंकी परीक्षा लेते हैं। २४। हेशूर आप हमारी सेनाके सुखदर सेनापति हूजिये। २५। जिससे कि हमलोग युद्धकरनेवाले पांडवोंको सम्मुख पाकर विजय

of Acharya, pray let me know whom I should make the leader of my armies." Ashwathama said, "Let this Shalya endued with glory, fame, strength and all the good qualities, be the leader of our armies. This lord of great armies like a second Kartik, has left his sister's sons to come to us out of gratitude. 20, With Shalya to lead us, we shall conquer our enemies as the army of gods was victorious under the leadership of Kartik." On hearing Ashwathama's words, all the warriors stood round Shalya. They sent forth cries of victory and were ready to fight. Then with clasped hands Duryodhan said to Shalya, " Dear friend, it is now time for us to test our friends and foes. Be

प्रणेता वाहिनीमुखे । रणञ्च याते भवति पाण्डवा मन्दचेतस ॥ २५ ॥ भविष्यन्ति सहामात्या पाञ्चालाश्च निरुद्यमा । शल्य उवाच । यत्तु मां मन्यसे राजन् कुरुराज करोमि तत् । त्वत् प्रियार्थे हि मे सर्वं प्राणा राज्यं धनानि च ॥ २७ ॥ दुर्य्योधन उवाच । सैनापत्येन वरये त्वमहं मातुलातुलम् । सोऽस्मान् पाहि युधां श्रेष्ठ स्कन्दो देवानवाहवे ॥ २८ ॥ अभिषिच्यस्व राजेन्द्र देवानामिव पावकि । जहि शत्रून् रणे वीर महेन्द्रो दानवानिव ॥ २९ ॥

इतिश्री शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि दुर्योधनवाक्ये षष्ठोऽध्याय ६ ॥

करें आपकेयुद्ध करनेपर निर्बुद्धी पांडव अपने मंत्री और पांचालों समेत उपायोंसे रहितहोंगे ।२६। शल्यबोला कि हेराजा जोतुम मुझको मानतेहो हेकौरवराजमैं इसको करूंगा। क्योंकि मेरे तन धन प्राण और राज्य सब तेरेही हितके निमित्तहैं । २७ । दुर्योधनबोला हे मामाजी मैं आप श्रेष्ठ पुरुषको सेनापति बनाना चाहताहूं सो आप युद्धमें हमारी ऐसी रक्षाकरो जैसे कि स्वामिकार्तिकजीने युद्धमें देवताओंकी रक्षाकरी थी । २८ । हे राजेन्द्र ऐसे अभिषिक्तहोजाओ जैसे कि देवताओंके सेनापति अग्निरूप शिवजीके पुत्र स्वामिकार्तिकजीने अभिषेचनपायाथा और शत्रुओंको ऐसे मारो जैसे कि महाइन्द्र दानवों को मारताहै ॥२९ ॥

a leader to our armies 25 We shall win the Pandavas under your leadership The foolish Pandavas and their allies the Panchals will be powerless against you." Shalya said, ' I shall do what you say, Prince for I have dedicated my life and property to you." Duryodhan said, ' I wish to instal you as the commander of my armies and you will protect us as Kartik did the army of gods We shall anoint you to be our leader as the gods did Kartik Slay the foes as Indra slays the danavas ' 29

सञ्जय उवाच । एतच्छ्रुत्वा वचो राज्ञो मद्रराजः प्रतापवान् । दुर्योधनं तदा राजन् वाक्यमेतदुवाच ह ॥ १ ॥ दुर्योधन महाबाहो शृणु वाक्यविदाम्वर । यावेतौ मन्यसे कृष्णौ रथस्थौ रथिनाम्वरौ ॥ २ ॥ न मे तुल्यावुभावेतौ बाहुवीर्ये कथञ्चन उद्यतां पृथिवीं सर्वां ससुरासुरमानवाम् । योधयेयं रणमुखे संक्रुद्धः किमु पाण्डवान् ॥३ ॥ विजेष्ये च रणे पार्थान् सोमकांश्च समागतान् । अहं सेनाप्रणेता ते भविष्यामि न संशयः ।४ ।। तञ्च व्यूहं विधास्यामि न तरिष्यन्ति यं परे । इति सत्यं ब्रवीम्येष दुर्योधन न संशयः ॥ ५ ॥ एवमुक्तस्ततो राजा मद्राधिपतिमञ्जसा । अभ्यषिञ्चत सेनाया मध्ये भारतसत्तम । विधिना शास्त्रदृष्टेन हृष्टरूपो विशाम्पते ॥ ७ ॥ अभिषिक्ते ततस्तस्मिन् सिंहनादो महानभूत् । तव सैन्येष्ववाद्यन्त वादित्राणि च भारत हृष्टाश्चासंस्तदा योधा मद्रकाश्च महारथा । तुष्टुवुश्चैव राजानं शल्यमाहवशोभिनम्

अध्याय ७ ॥

संजय बोले कि हे राजा तब प्रतापवान् राजा मद्रने राजादुर्योधन के वचन को सुनकर इस वचनको कहा । १ । हे महाबाहु राजादुर्योधन इस वचनको सुनो जिन इनरथ सवार श्रीकृष्ण और अर्जुनको तू रथियों में श्रेष्ठ मानताहै । २ । यह दोनों भुजबलमें किसीप्रकार से भी मेरे समान नहीं हैं क्रोधयुक्त होकर मैं युद्ध के मुखपर देवता असुर और मनुष्यों समेत युद्धमें सन्नद्ध होकर सब पृथ्वीके मनुष्यों से युद्ध करसक्ताहूं फिर पाण्डवों से कैसे नहीं लड़सक्ता । ३ । युद्धमें सम्मुख आनेवाले पाण्डव और सोमकोंको विजय करूंगा मैं निस्सन्देह तेरा सेनापति हूंगा ।४ और ऐसे व्यूहको रचूंगा जिसको कि शत्रुपक्षीलोग नहीं तरसक्ते हेदुर्योधन यह मैं निस्सन्देह सत्य सत्यही कहताहूं । ५ । इसके अनन्तर इसप्रकार कहेहुये राजाने शीघ्रही मद्रके राजाको सेनामें अभिषेककराया हे भरतर्षभ राजा प्रसन्नरूप उसप्रसन्नरूप दुर्योधन ने शास्त्रोक्त विधि के अनुसार ऐसाकिया । ७। इसके पीछे उस के अभिषेक करनेपर बड़े सिंहनाद हुये और आपकी सेना में बाजेबजे । ८ । इसके अनन्तर मद्रदेशी महारथी शूरवीर लोग बहुत प्रसन्नहुये और

CHAPTER VII

Sanjaya said, " On hearing the words of Duryodhan, glorious king of Madra, said, " Hear me, valiant Duryodhan : *Shri Krishn* and Arjun whom you call the best of warriors, are not my equals in the strength of arms. I can withstand gods, asurs and men, when I am enraged in the field of battle. I shall conquer the Pandavas and Somaks and shall be the leader of your armies. I shall form a phalanx impregnable by the enemies. You may rely on my word " 5. At this Shalya was made commander of the armies, with proper ceremonies. Your warriors roared loud roars and beat musical instruments. The

॥ ९ ॥ अय राजंश्चिरंजीव जहि शत्रून् समागतान् । तव बाहुबलं प्राप्य धार्तराष्ट्रा महाबला ॥ १० ॥ निखिलां पृथिवीं सर्वां प्रशासन्तु हतद्विषः । त्वं हि शक्तो रणे जेतुंससुरासुरमानवान् । मर्त्यधर्माण इह तु किमु सोमकसृञ्जयाः ॥ ११ ॥ एवं संस्तूयमानस्तु मद्राणामधिपो बली । हर्षं प्राप मदा वीरो दुरापमकृतात्मभिः ॥१२॥ शल्य उवाच । अद्य चाहं रणे सर्वान् पाञ्चालान् सह पाण्डवैः । निहनिष्यामि वा राजन् स्वर्गं यास्यामि वा हतः ॥ १३ ॥ अद्य पश्यन्तु मां लोका विचरन्तमभीतवत् । अद्य पाण्डुसुताः सर्वे वासुदेवःससात्यकिः ॥ १४ ॥ पाञ्चालाश्चेदयश्चैव, द्रौपदेयाश्च सर्वश । धृष्टद्युम्नः शिखण्डी च सर्वे चापि प्रभद्रकाः ॥ १५ ॥ विक्रमं मम पश्यन्तु धनुषश्च महाबलम् । लाघवञ्चास्त्रवीर्यञ्च भुजयोश्च बलं युधि ॥ १६ ॥ अद्य पश्यन्तु मे पार्थाः सिद्धाश्च सह चारणैः । यादृशं मे बलं बाह्वोः सम्पदस्त्रेषु या च मे ॥१७॥

युद्धको शोभा देनेवाले राजाशल्य की प्रशंसाकी । ९ । कि हे राजा तेरी विजय होय और तुम सन्मुख आनेवाले शत्रुओं को मारो और महाबली धृतराष्ट्र के पुत्र आपके भुजबल को पाकर । १० । शत्रुओं से रहित होकर इस पृथ्वीपर राज्य करो निश्चयकरके तुम युद्ध में देवता असुर और मनुष्यों के विजय करने को समर्थहो फिर यहां मरण धर्मवाले सोमक और सृञ्जयलोग क्या पदार्थ हैं ।११। इसप्रकारसे प्रशंसित होनेपर मद्रदेशका स्वामी राजाशल्य बहुत प्रसन्नहुआ । १२ । शल्य बोला कि हेराजा अबमैं युद्धमें सब पांचालोंको पाण्डवों समेत मारूंगा अथवा मरकर स्वर्गको जाऊंगा । १३ । अबलोग निर्भयके समान मुझ घूमनेवाले को देखें अबसब पाण्डव सात्यकि समेत वासुदेवजी । १४ । पांचालदेशी, चन्देरी देशी, और द्रौपदी के पुत्र, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और सब प्रभद्रकभी । १५ । मेरे पराक्रमको और धनुषके बडे पराक्रमको देखो और युद्धमें मेरेभुजबलकी हस्तलाघवता और अस्त्रबल को देखो ।१६ । अबसब पाण्डव सिद्ध चारणों समेत मेरी भुजाओं में जैसाबल है और जैसे कि शस्त्रों में मेरी निपुणता है उसको देखें । १७ । अब पाण्डवों के

people of Madra were very glad and praised Shalya, saying, "May you gain victory over the enemies! May the sons of Dhritrashtra get themselves rid of their enemies and rule the land. Surely you can conquer gods, asuras and men. The Somaks and Srinjayas are no match for you 11. Shalya the king of Madra was much pleased at this and said, " I shall slay all the Panchals and Pandavas or shall die fighting People will see me roaming fearlessly. The Pandavas, with Satyaki and Vasudev, the Panchals, the Chanderis, the sons of Draupadi, Dhrishtadyumn, Shikhandi, and the Prabhadraks will see the strength of my arms and my dexterity in using weapons. Let the Pandavas see my prowess and face me in the field of battle. I shall surpass Drona, Bhishm and Karan in prowess and shall destroy the army of the

अथ मे विक्रमं दृष्ट्वा पाण्डवानां महारथाः । प्रतीकारपरा भूत्वा चेष्टन्तो विविधाः क्रियाः ॥ १८ ॥ अथ सैन्यानि पाण्डूनां द्रावयिष्ये समन्ततः । द्रोणभीष्मावति विभो सूतपुत्रञ्च संयुगे । विचरिष्ये रणे युध्यन् प्रियार्थं तव कौरव ॥ १९ ॥ सञ्जय उवाच । अभिषिक्ते तदा शल्ये तव सैन्येषु मानद । न कर्णव्यसनं किंचित् मेनिरे भरतर्षभ ॥ २० ॥ हृष्टाः सुमनसश्चैव बभूवुस्तत्र सैनिकाः । मेनिरे निहतान् पार्थान् मद्रराज वशंगतान् ॥ २१ ॥ प्रहर्षं प्राप्य सेना तु तावकी भरतर्षभ । तां रात्रिं सुखिनी सुप्ता स्वस्थचित्ता च साभवत् ॥ २२ ॥ सैन्यस्य तव तं शब्दं श्रुत्वा राजा युधिष्ठिरः । वार्ष्णेयमब्रवीद्वाक्यं सर्वक्षत्रस्य शृण्वतः ॥ २३ ॥ मद्रराजः कृतः शल्यो धार्तराष्ट्रेण माधव । सेनापतिर्महेष्वासः सर्वसैन्येषु पूजितः ॥ २४ ॥ एतज्ज्ञात्वा यथा भूतं कुरु माधव यत् क्षमम् । भवान्नेता च गोप्ता च विधत्स्व यदनन्तरम् ॥ २५ ॥ तमब्रवीन्महाराज वासुदेवो जनाधिपम् । आर्तायनिमहं जाने यथातत्त्वेन भारत ॥ २६ ॥ वीर्यवं

महारथी मेरे पराक्रम को देखकर और सम्मुखता में सहायक होकर नानाप्रकार के कर्मकरो । १८ । हे समर्थ कौरव अब मैं युद्धमें द्रोणाचार्य भीष्म और कर्णको बहुंघनकर पाण्डवों की सेनाओं को चारोंओरसे भगाऊंगा और तेरे हितके लिये युद्धभूमि में लड़ताहुआ घूमूंगा । १९ । संजय बोले कि हेबड़ाई देनेवाले भरतर्षभ उससमय शल्यके सेनापति होनेपर आपकी सेनामें किसीनेभी कर्णके दुःखको नहीं माना । २० । और सेनाकेलोग बहुत प्रसन्न चित्तहुये और पाण्डवों को राजामद्र के आधीन माना । २१ । हे भरतर्षभ फिर आपकी सेना बड़ी प्रसन्नताको पाकर उसरात्रिमें सुखसे सोनेवाली होकर चित्तसे सावधानहुई । २२ । राजा युधिष्ठिर सेनाके सब शब्दको सुनकर सब क्षत्रियोंके समक्षमें श्रीकृष्णजी से यह वचनबोला । २३ । हे माधवजी दुर्योधन ने बड़े धनुषधारी सब सेनाओं पूजित मद्रके राजा शल्यको अपना सेनापति कियाहै । २४ । हे माधवजी यह जैसा हुआहै उसको जानकर जो उचितहोय उसको करिये आप हमारेस्वामी और रक्षक हैं इससे जैसा जानिये वैसा बड़ी शीघ्रतासे करना योग्यहै । २५ । हे महाराज यह सुनकर वासुदेवजी राजा युधिष्ठिर से बोले कि हे भरतर्षभ मैं शल्यको मुख्यता समेत जानता

Pandavas. Fighting in your cause, I shall roam in the field of battle." Sanjaya continued, "None of your warriors missed Karan, when Shalya was installed as the commander of your armies. 20 The people of the army were much pleased and thought that Shalya would conquer the Pandavas. Your warriors slept composedly during that night. Hearing loud shouts of the Kauravas, Yudhishthir said to Vasudev in the presence of his warriors, "Duryodhan has made mighty Shalya the commander of his armies. Do what you deem needful, Madhav, for you are our lord and protector." 25. To this Vasudev replied, "I know the prowess of Shalya well. He is a

शूरश्च महातेजा महात्मा च विशेषतः । कृती च चित्रयोधी च संयुक्तो लाघवेन च ॥ २७॥ यादृग्भीष्मो यथा द्रोणो यादृक्कर्णश्च संयुगे । तादृशस्तद्विशिष्टो वा मद्रराजो मतो मम ॥ २८ ॥ युध्यमानस्य तस्याजौ चिन्तयन्नेव भारत । योद्धारं नाधिगच्छामि तुल्यरूपं जनाधिप ॥ २९ ॥ शिखण्ड्यर्जुनभीमानां सात्वतस्य च भारत । धृष्टद्युम्नस्य च तथा बलेनाभ्यधिको रणे ॥ ३० ॥ मद्रराजो महाराज सिंहद्विरदविक्रमः । विचरिष्यत्यभीः काले कालः क्रुद्धः प्रजास्विव ॥ ३१ ॥ तस्याद्य न प्रपश्यामि प्रतियोद्धारमाहवे । त्वामृते पुरुषव्याघ्र शार्दूलसमविक्रमम् ॥ ३२ ॥ सदेवलोके कृत्स्नेऽस्मिन्नान्यस्त्वत्तः पुमान् भवेत् । मद्रराजं रणे क्रुद्धं यो हन्यात् कुरुनन्दन ॥ ३३ ॥ अहन्यहनि युध्यन्तं क्षोभयन्तं बलं तव । तस्माज्जहि रणे शल्यं मघवानिव शम्बरम् ॥ ३४ ॥ अजेयश्चाप्यसौ वीरो धार्तराष्ट्रेण सत्कृतः । तवैव विजयो नूनं हते मद्रेश्वरे युधि ॥ ३५ ॥ तस्मिन् हते हतं

हूं । २६ । वह अधिकतम पराक्रमी महात्मा बड़ातेजस्वी अभ्यस्त अपूर्व युद्धकर्ता और हस्तलाघवता से संयुक्त है । २७ । युद्ध में जैसे कि भीष्म द्रोणाचार्य और कर्णथे मेरे मत से राजामद्रभी उनके समान अथवा उनसे भी अधिक है । २८ । हे भरतवंशी राजा युधिष्ठिर मैं सोचता हुआ भी उस युद्धभूमि में लड़ने वाले शूरवीर शल्यके समान किसीको भी उससे लड़ने के योग्य नहीं पाता । २९ । हे भरतवंशी वह शल्य बलमें इन शिखण्डी अर्जुन भीमसेन सात्यकी और धृष्टद्युम्न से भी अधिक है । ३० । हे महाराज सिंह और हाथी के समान पराक्रमी निर्भय राजामद्र समय पर ऐसा घूमेगा जैसे कि क्रोधयुक्त काल संसारकी सृष्टि में घूमताहै । ३१ । हे पुरुषोत्तम अब मैं युद्धमें तुम शार्दूलके समान पराक्रमी के सिवाय उसकी सम्मुखता करनेवाला नहीं देखताहूं । ३२ । हे कौरवनन्दन देवताओं समेत इस सम्पूर्ण सृष्टिमें तुमसे अधिक दूसरा पुरुष नहीं है जोकि युद्ध में क्रोधयुक्त हुये राजामद्र को मारे । ३३ । इस हेतुसे युद्धभूमि में प्रतिदिन युद्ध करनेवाले और अपनी सेनाके छिन्नभिन्न करनेवाले शल्यराजको युद्धमें ऐसेमारो जैसे कि इन्द्रने शम्बरको माराथा । ३४ । यह वीर अजेय और दुर्योधन से प्रशंसा के साथ प्रतिष्ठा पानेवाला है युद्ध में इस राजामद्रके मरनेपर तेरीही विजय है । ३५ ।

matchless warrior and has wonderful dexterity of hand. *He is equal* or even superior to Bhishm, Drona and Karan in prowess. I think there is no warrior of your army capable of being a match to him. *He* is superior to Shikhandi, *Arjun, Bhim, Satyaki and Dhrishtadyumn.* 30. Full of prowess like a lion or an elephant, he will roam like Death in the field of battle. None in the world of gods and men *can slay the king of Madra,* with the exception of you. You must slay Shalya the destroyer of your armies as Indra had slain Shambar. That invincible warrior is much respected by Duryodhan. The victory is yours, if you can slay him, 35. All the *army of Duryo-*

सर्वं धार्त्तराष्ट्रस्य बलं महत् । एतत् श्रुत्वा महाराज वचनं मम साम्प्रतम् । प्रत्युद्याहि
रणे पार्थ मद्रराजं महारथम् ॥ ३६ ॥ जहि चैनं महाबाहो वासवो नमुचिं यथा ॥ ३७ ॥
न चैवात्र दया कार्या मातुलोयं ममेति वै । क्षत्रधर्मं पुरस्कृत्य जहि मद्रजनेश्वरम्
॥ ३८ ॥ भीष्मद्रोणार्णवं तीर्त्वा कर्णपातालसम्भवम् । मा निमज्जस्व सगणः शल्य
मासाद्य गोष्पदम् ॥ ३९ ॥ यच्च ते तपसो वीर्यं यच्च क्षात्रबलं तव । तद्दर्शय रणे
सर्वं जहि चैनं महारथम् ॥ ४० ॥ एतावदुक्त्वा वचनं केशवः परवीरहा । जगाम
शिबिरं सायं पूज्यमानोथ पाण्डवैः ॥ ४१ ॥ केशवे तु तदा याते धर्मराजो युधिष्ठिरः ।
विसृज्य सर्वान् भ्रातॄंश्च पाञ्चालानथ सोमकान् । सुष्वाप रजनीं तान्तु विशल्य इव
कुञ्जरः ॥ ४२ ॥ ते च सर्वे महेष्वासाः पाञ्चालाः पाण्डवास्तथा । कर्णस्य निधने
हृष्टाः सुषुपुस्तां निशान्तदा ॥ ४३ ॥ गतज्वरं महेष्वासं तीर्णपारं महारथम् । वसुध

हे पाण्डव उस के मरनेपर दुर्योधन की सब बड़ी सेना मृतकरूप है हे महाराज अब तुम मेरे इस वचनको सुनकर युद्ध में महारथी शल्य के सम्मुखजावो । ३६ । हे महाबाहु इसको ऐसे मारो जैसे कि इन्द्रने नमुचिको माराथा । ३७ । इस पर अपना मामा जानकर दया न करना चाहिये तुम क्षत्री धर्मको आगे कर के राजामद्र को मारो । ३८ । कर्ण रूप पाताल से उत्पन्न होनेवाले भीष्म और द्रोणाचार्य रूपी समुद्र को तरकर सेना समूह समेत इस गोपदके समान शल्यरूपी जलको पाकर इस में मतडूबो । ३९ । अपने तपके बलको और क्षत्रीपनेके बलको दिखलाओ और इस महारथी को मारो । ४० । इस के पीछे पाण्डवोंसे पूजित शत्रुओं के वीरोंके मारनेवाले केशवजी इस वचनको कहकर सायंकाल के समय अपने डेरेको गये । ४१ । फिर केशवजी के चलेजाने पर धर्मराज युधिष्ठिर सब भाई पांचाल और सेनाके लोगोंको विदा कर के बिना घायल हाथीके समान उस रात्रि में सोया । ४२ । और कर्णके मरनेसे बड़े प्रसन्नचित्त वह सब पाण्डव और पांचाल भी आनन्दसे सोये । ४३ । हे श्रेष्ठ सूतपुत्र के मरनेपर पाण्डवों की

---

dhan will be lifeless at his death. Acting upon my advice, you should face Shalya and slay him as Indra had done Namuchi. 37. Donot spare him because he is your uncle. Think of your duty as a warrior and slay him. Having crossed the Ocean, with Karan as its bed and Bhishm and Drona as its billows, you need not drown yourself in the shallow water of Shalya. Show the strength of your asceticism and kshatryahood and slay him." 40. Having said this, Vasudev the destroyer of foes, went to his tent at the close of the day. At the departure of Keshav, Yudhishthir dismissed his brothers and other warriors for the night and himself slept soundly like an unwounded elephant. The Pandavas and the Panchals too, reposed

पाण्डवेयानां सैन्यं प्रमुदितं निशि । सूतपुत्रस्य निधने जयं लब्ध्वा च भारत ॥४४॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि शल्यसेनापत्याभिषेके सप्तमोऽध्यायः ७ ॥

सञ्जय उवाच । व्यतीतायां रजन्यान्तु राजा दुर्योधनस्तदा । अब्रवीत्तावकान् सर्वान् सन्नह्यन्तां महारथाः ॥ १ ॥ राज्ञस्तु मतमाज्ञाय समनह्यत सा चमूः । अयोजयन् रथांस्तूर्णं पर्यधावंस्तथापरे ॥ २ ॥ अकल्प्यन्त च मातङ्गाः समनह्यन्त पत्तयः । वादित्राणाञ्च निनदः प्रादुरासीद्विशाम्पते ॥ ३ ॥ बोधनार्थं हि सैन्यानां योधानां चाप्युदीर्यताम् ॥ ४ ॥ ततो बलानि सर्वाणि समाविष्टानि भारत । सन्नद्धान्येव दृश्यन्ते मृत्युं कृत्वा निवर्तनम् ॥ ५ ॥ शल्यं सेनापतिं कृत्वा मद्रराजं महारथाः । प्रविभज्य

सेनावाले जो कि बड़े धनुषधारी और पारहोनेवाले होकर महारथी थे विजय को पाकर तापसे रहित अत्यन्त प्रसन्न हुये । ४५ ।

अध्याय ८ ॥

संजय बोले कि फिर रात्रिके व्यतीत होनेपर दुर्योधन आपके सब शूरवीरोंसे बोला हे महारथियो सन्नद्ध होकर अलंकृत हो जावो तब राजा के विचार को जानकर वह सेना अलंकृत हुई और शीघ्रही रथोंको जोड़ कर उसीप्रकार से शूरवीर लोग चारोंओरसे दौड़े । २ । हाथी अलंकृत होकर पतियां सन्नद्ध हुईं बाजोंके शब्द प्रकटहुये । ३ । हे भरतवंशी इसके पीछे युद्धके निमित्त शूरवीर सेनाके लोगोंकी वार्त्तालाप करतेहुये शेषबचीहुई सबसेना मृत्युको लौटाकर टूटपड़ी । ५ । महारथी लोग मद्रके राजाशल्यको सेनापति करके और सबसेनाको विभागकरके

in sweet sleep at the death of Karan. The fever of the Pandav warriors abated and they felt joyful at the death of Karan."

CHAPTFR VIII

Sanjaya said, "At the end of the night, Duryodhan thus addressed his warriors, "Prepare for battle, brave men." The army was made ready at the king's word and mounted their cars. The elephants and foot soldiers prepared themselves with the beat of musical instruments. The warriors, careless of life returned to fight. 5. With Shalya to lead, the armies were divided into various parts and became

बलं सर्वमनीकेषु व्यवस्थिताः ॥ ६ ॥ ततः सर्वे समागम्य पुत्रेण तव सैनिकाः । कृपश्च कृतवर्मा च द्रौणिः शल्योथ सौबलः ॥ ७ ॥ अन्ये च पार्थिवाः शेषाः समयं चक्रिरे तदा । न न एकेन योद्धव्यं कथञ्चिदपि पाण्डवैः ॥ ८ ॥ यो ह्येकः पाण्डवैर्युध्येद्यो वा युध्यन्तमुत्सृजेत् । स पञ्चभिर्भवेद्युक्तः पातकैश्चोपपातकैः अन्योन्यं परिरक्षद्भिर्योद्धव्यं सहितैश्च नः ॥९॥ एवं ते समयं कृत्वा सर्वे तत्र महारथाः । मद्रराजं पुरस्कृत्य तूर्णमभ्यद्रवन् परान् ॥ १० ॥ तथैव पाण्डवाः सर्वे व्यूह्य सैन्यं महारणे । अभ्ययुः कौरवान् राजन् योत्स्यमानाः समन्ततः ॥ ११ ॥ तद्बलं भरतश्रेष्ठ क्षुब्धार्णवसमस्वनम् समुद्धूतार्णवाकारमुद्धूतरथकुञ्जरम् ॥ १२ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । द्रोणस्य भीष्मस्य च वै राधेयस्य मया श्रुतम् । पातनं शंस मे भूयः शल्यस्याथ सुतस्य मे ॥ १३ ॥ कथं रणे हतः शल्यो धर्मराजेन सञ्जय । भीमसेनेन बलिना पुत्रो दुर्योधनो मम

अनेकनाम भागोंसे युक्तहुये । ६ । और वह सेनाभी आकर नियतहुई इस के पीछे कृपाचार्य्य कृतवर्म्मा अश्वत्थामा शल्य शकुनि और अन्य अन्य शेष बचेहुये राजाओं ने अपनी अपनी सब सेनाओं समेत इकट्ठे होकर आपके पुत्रसे मिलकर यह सलाह करी । ७ । कि किसीदशामें भी एक मनुष्यको पांडवों के साथ युद्ध नकरना चाहिये । ८ । जो अकेला पाण्डवों के साथ युद्ध करे अथवा जो अकेले लड़ने वाले को त्याग करे वह पातक और उपपातकनाम पांच पापोंसे संयुक्तहोय परस्पर रक्षाकरनेवाले और साथ रहनेवाले हमलोगों को लड़नाचाहिये । ९ । वहां वहसब महारथी इसप्रकारसे नियमकरके और राजामद्रको आगे करके शीघ्रही शत्रुओंके सम्मुख गये ।१० । हे राजा इसीप्रकार सब पाण्डवभी अपनी सब सेनाको अलंकृत करके बड़े युद्धमें युद्धाभिलाषी होकर चारोंओर से कौरवों के सम्मुखगये । ११ । हे भरतर्षभ वह सेना जिसमें रथ और हाथी चढ़ाई करनेवाले थे व्याकुल समुद्र के समान शब्दायमान उठेहुये समुद्र के रूपहुई । १२। धृतराष्ट्र बोले कि मैंने द्रोणाचार्य्य भीष्म और कर्णका गिराना सुना फिर अब तुम शल्य और मेरे पुत्रका गिराना मुझसे कहो । १३ । हे संजय युद्ध में शल्य

ready for action. Then Kripacharya, Kritvarma Ashwathama, Shalya Shakuni and other warrior kings, with their attendants proposed to your son that none of their warriors should fight singly with the Pandavas and that he who broke this rule was to be left to his own fate as a sinful wretch, without receiving any aid from his allies. Having come to this resolution, the warriors soon faced the enemy. The Pandavas too arrayed their armies and rushed to the field of battle. The army of elephants and cars, made a noise like that of the ocean in a storm." Dhritrashtra said, "I have heard of the fall of Drona, Bhishm and Karan. Pray tell me of the death of Shalya and

॥१४॥ सञ्जय उवाच । क्षयं मनुष्यदेहानां तथा नागाश्वसंक्षयम । शृणु राजन् स्थिरो भूत्वा संग्रामे शंसतो मम ॥ १५ ॥ आशा बलवती राजन पुत्राणान्ते मभवत्तदा । हते द्रोणे च भीष्मे च सूतपुत्रे च पातिते । शल्यः पार्थान्रणे सर्वान्निहनिष्यति मारिष ॥ १६ ॥ तामाशां हृदये कृत्वा समाश्वस्य च भारत । मद्रराजञ्च समरे समाश्रित्य महारथम् । नाथवन्त तदात्मानममन्यत सुतस्तव ॥ १८ ॥ यदा कर्णे हते पार्थाः सिंहनादं प्रचक्रिरे । तदा राजन् धार्त्तराष्ट्रानाविवेश महद्भयम् ॥ १९ ॥ तान् समाश्वास्य तु तदा मद्रराजः प्रतापवान् । व्यूह्य व्यूहं महाराज सर्वतोभद्रमृद्धिमत् ॥ २० ॥ प्रत्युद्यौ रणे पार्थान्मद्रराजः प्रतापवान् । विधुन्वन् कार्मुकं चित्रं वेगवद्भारसाधनम् ॥२१॥ रथप्रवरमास्थाय सैन्धवाश्वं महारथः । तस्य सीता, महाराज रथस्थाशोभयद्रथम् ॥ २२ ॥ स तेन संवृतो वीरो रथेनामित्रकर्षणः । तस्थौ शूरो महाराज पुत्राणान्ते

किंसप्रकारसे धर्मराजके हाथसे मारागया और भीमने मेरे पुत्रको कैसे मारा १४ संजय बोले कि हे राजा उसयुद्ध में जो घोड़े हाथी आदिके शरीरों के नाशहुये उनको सावधान होकर सुनो । १५ । भीष्म द्रोणाचार्य्य आर कर्णके गिराने पर आपके पुत्रोंको बड़ीप्रबल आशाहुई थी कि शल्य युद्धमें सब पाण्डवों को मारेगा । १६ । हे श्रेष्ठ भरतर्षभ उस आशाको हृदयमें धरकर बड़ेविश्वास युक्त होकर । १७ । और युद्धमें महारथी राजामद्रके आश्रित होकर आपके पुत्रने अपने को सनाथ माना । १८ । हे राजा जब कर्णके मरनेपर पाण्डवोंने सिंहनाद किये तब धृतराष्ट्रके पुत्रोंको महाभय उत्पन्नहुआ । १९ । हेमहाराज उस समय प्रतापवान राजामद्र उनको विश्वास युक्त करके और सब सामान से अलंकृत सर्वतोभद्रनाम व्यूहको रचकर । २० प्रतापवान् महारथी शल्य अत्यन्त उत्तम सिन्धुदेशी घोड़ों के उत्तम रथपर सवार होकर रत्नों से जटित बड़ेभार के सहनेवाले महावेगवान् धनुपको चलायमान करता हुआ पाण्डवों के सम्मुख गया हेमहाराज वहांजाकर उसके नियत रथके सारथीने उस रथ समेत सिन्धुदेशी घोड़ोंको शोभायमानकिया

---

my son. *How was Shalya slain by Yudhishthir ?*" Sanjaya said, "Hear of the great destruction of horses and elephants. 15. At the fall of Bhishm, Drona and Karan, your sons had a strong hope that Shalya would slay the Pandavas. With this hope in their minds and relying on the promise of Shalya, your son thought himself well-protected. The Kauravas were much afraid, when the Pandavas roared at the fall of Karan. The king of Madra consoled them and formed the armies into an array known as the best of all. 20. Mighty Shalya mounted his good car, drawn by the horses of Sindhu breed, and moving his huge bow decked with precious stones, he faced the Pandavas. His driver drove his car drawn by the horses of

मयप्रणत् ॥ २३ ॥ प्रयाणे मद्रराजोऽभून्मुखं व्यूहस्य दंशितः । मद्रकैः सहितो वीरैः कर्णपुत्रैश्च दुर्जयैः ॥ २४ ॥ सव्येऽभूत् कृतवर्मा च त्रिगर्तैः परिवारितः । गौतमो दक्षिणे पार्श्वे,शकैश्च यवनैः सह ॥ २५ ॥ अश्वत्थामा पृष्ठतोऽभूत् काम्बोजैः परिवारितः । दुर्योधनोऽभवन्मध्ये रक्षितः कुरुपुङ्गवैः ॥ २६ ॥ हयानीकेन महता सौबलश्चापि संवृतः । प्रययौ सर्वसैन्येन कैतव्यश्च महारथः ॥ २७ ॥ पाण्डवाश्च, महेष्वासा व्यूह्य सैन्यमरिन्दमाः । त्रिधा भूत्वा महाराज तव सैन्यमुपाद्रवन् ॥ २८ धृष्टद्युम्नः शिखण्डी च सात्यकिश्च महारथः । शल्यस्य वाहिनीं तूर्णमभिदुद्रुवुराहवे ॥ २९ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा स्वेनानीकेन संवृतः । शल्यमेवाभिदुद्राव जिघांसुर्भरतर्षभ ॥ ३०—।

। २२ । हे राजा शत्रुओंको पीड़ा देनेवाला शूरवीर उस रथपर सवार वह राजा शल्य आप के पुत्रों के भयको दूरकरताहुआ युद्धभूमिमें नियतहुआ । २३ । उस युद्धमें कवचधारी शस्त्रोंसे युक्त वह राजा शल्य मद्रदेशी वीर और कठिनतासे विजय होनेवाले कर्णके पुत्रोंसमेत व्यूहका मुखहुआ । २४ । त्रिगर्त्तदेशियों से वेष्टित कृतवर्म्मा वाम भागपर नियतहुआ और शक और यवनों समेत कृपाचार्य दक्षिण भागपर नियतहुये । २५ । और काम्बोज देशियोंको सायलेकर अश्वत्थामा पीछे की ओर हुये उत्तमकौरवोंसे रक्षित दुर्योधन मध्यमें नियतहुआ । २६ । और घोड़ोंकी बड़ी सेनासे युक्त महारथी शकुनी और कैतव्य सब सेना समेत चले । २७ । तब वह बड़े धनुषधारी निर्दोष पाण्डव सेना को अलंकृत और तीनभाग करके आपकी सेना के सम्मुख दौड़े । २८ । महारथी धृष्टद्युम्न शिखंडी और सात्यकी यह सब बड़ी शीघ्रता से शल्यकी सेना के सम्मुख दौड़े । २९ । हे भरतर्षभ अपनी सेना से युक्त मारनेका अभिलाषी राजा युधिष्ठिर शल्यके सम्मुख दौड़ा । ३० । और शत्रुओंका मारनेवाला अर्जुन वेगयुक्त होकर बड़े धनुष धारी कृतवर्मा और संसप्तकों के समूहोंके सम्मुखगया । ३१ । हे राजेन्द्र युद्धमें

Sindhu breed and stationed it in the field of battle Shalya the destroyer of foes, mounted on that car, dispelled the fear of your sons as he stationed himself in the field. With the sons of Karan by his side, the invincible warrior king of Madra stood at the entrance of the array Kritvarma, with the people of Trigart, stood on his left and Kripacharya with the Shakas and Yavans stood on the right 25 Ashwathama with the warriors of Camboj stood on the rear and Duryodhan, guarded by the Kauravas, stood in the middle. Shakuni and Kaitavya were followed by a large number of cavalry The (Pandavas, dividing their armies into three parts, rushed against your army Brave Dhrishtadyumn, Shikhandi and Satyaki hastened to face Shalya's army, and Yudhishthir, with his army, desirous, of slaying faced Shalya. 30 Arjun, the destroyer of foes in his fury

हार्दिक्यस्तु महेष्वासमर्जुन. संशप्तकगणाश्चैव वेगितोऽभिप्रदुद्रुवे ॥ ३१ ॥ गौतमं भीमसेनो वै सोमकाश्च महारथा । अभ्यवर्त्तन्त राजेन्द्र जिघांसन्तः परान्युधि ॥ ३२॥ माद्रीपुत्रौ तु शकुनिमुलूकञ्च महारथम् । ससैन्यौ सहसेनौ तु उपतस्थतुराहवे ॥ ३३ ॥ तथैवायुतशो योधास्तावका. पाण्डवान्रणे । अभ्यवर्त्तन्त संक्रुद्धा विविधायुधपाणय. ॥ ३४ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । हते भीष्मे महेष्वासे द्रोणे कर्णे महारथे । कुरुष्वल्पावशिष्टेषु पाण्डवेषु संयुगे ॥ ३५॥ सुसंरब्धेषु पार्थेषु पराक्रान्तेषु सञ्जय । मामकानां परेषाञ्च किं शिष्टमभवद्बलम् ॥ ३६ ॥ सञ्जय उवाच । यथा वयं परे राजन् युद्धायसमवस्थिता । यावच्चासीद्बलं शिष्टं संग्रामे तन्निबोधमे ॥ १६ ॥ एकादश सहस्राणि रथानां भरतर्षभ । दश दन्तिसहस्राणि सप्त चैव शतानि च ॥ ३८ ॥ पूर्णे शतसहस्रे द्वे हयानां भरतर्षभ । नरकोट्य•तथा तिस्रो बलमेतत्तवाभवत् ॥ ३९॥

शत्रुओंके मारने के इच्छावान महारथी सोमकनाम क्षत्री और भीमसेन कृपाचार्य के सम्मुखगये । ३२ । और सेनासमेत वह नकुल और सहदेव युद्धमें उन सेनासमेत नियत होनेवाले महारथी शकुनि और उलूकके सम्मुख नियतहुये । ३३ । इसी प्रकार नानाप्रकारके शस्त्र हाथ में रखनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त हजारों आपके शूरवीर युद्ध में पाण्डवोंके सम्मुख हुये । ३४ । धृतराष्ट्र बोले कि युद्ध में महारथी महाधनुषधारी भीष्म द्रोणाचार्य्य और कर्ण के मरने, और कौरवीय पाण्डवीय सेनाके थोड़े लोगों के शेषरहनेपर । ३५ । और पाण्डवोंके अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर चढ़ाई करनेपर हमारेमित्र और दूसरोंकी सेना कितनी बाकीरही । ३६ । संजय बोले कि हेराजा जैसे प्रकारसे हम और हमारे प्रतिपक्षी युद्धके निमित्त सम्मुख नियतहुये और युद्धसे जितनी सेना बाकीरही उसको मुझसेसुनिये । ३७ । हे भरतर्षभ रथोंकी संख्या ग्यारह हजार हाथियोंकी दशहजार सातसौ । ३८ । घोड़ोंकी, पूर्ण संख्या दोहजार यहआपकी सेना बारहकोटि पदातियोंसमेत शेषरही और रथोंकी संख्या छाहजार हाथी छाहजार घोड़े दशहजार औरदो करोड़पदाति

faced Kritvarma and the Sanspataks Bhimsen with the army of Somaks faced Kripacharya. Nakul and Sahadev, with their armies, faced Shakuni and Uluk. Thousands of your armed warriors faced the Pandavas. Dhritrashtra said, "At the fall of Bhishm, Drona and Karan, when a small portion of the armies of the Kauravas and Pandavas remained and the Pandavas attacked us in fury, the armies of both sides must have been wonderfully reduced Pray tell me how many were left." 36. Sanjaya said, "Hear how the Kauravas and Pandavas opposed one another and what portion of the armies was left: the number of cars was eleven thousands, elephants were ten thousands and seven hundreds in rumlor, horses were two thousands and there were twenty millions of foot forming

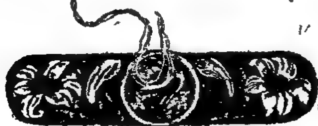
रथानां षट् सहस्राणि षट् सहस्राश्च कुञ्जराः दश चाश्वसहस्राणि पत्ति कोटी च भारत ॥ ४० ॥ एतद्बलं पाण्डवानामभवच्छेषमाहवे । एत एव समाजग्मुर्युद्धाय भरतर्षभ ॥ ४१ ॥ एवं विभज्य राजेन्द्र मद्रराजमते स्थिताः पाण्डवान् प्रत्युदीयाम जयगृध्नाः प्रमन्यवः ॥ ४२ ॥ तथैव पाण्डवाः शूराः समरे जितकाशिनः । उपयाता नरव्याघ्राः पाञ्चालाश्च यशस्विनः ॥ ४३ ॥ एव मेव महाराज परस्परवधैषिणः । उपयाता नरव्याघ्राः पूर्वां सन्ध्यां प्रति प्रभो ॥ ४४ ॥ ततः प्रववृते युद्धं घोररूपं भयानकम् । तावकानां परेषाञ्च निघ्नतामितरेतरम् ॥ ४५ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि व्यूहनिर्माणे अष्टमोऽध्यायः ८ ॥

यह पाण्डवोंकी सेना बाकीरही हे भरतवंशी यहसब मिलकर युद्धके निमित्तआये ।४१। हेराजेन्द्र इसप्रकार राजामद्रके मनमें नियत विजयके लोभी क्रोधयुक्त हमलोग सेनाको विभाग करके पाण्डवों के सम्मुख गये । ४२ । इसीप्रकार विजयसे शोभा पानेवाले शूरपांडव और यशवान् नरोत्तम पांचाल सम्मुखआये । ४३ । हेमहा राज इसप्रकार परस्पर विजयाभिलाषी नरोत्तमलोग प्रातःकालकी संध्याकेसमय सम्मुखहुये ।४४।इसके पीछे परस्पर मारनेवाले पांडव और आपकेपुत्रोंका युद्ध महा घोररूप होकर भयानक जारीहुआ ४५ ॥

---

part of your army. The Pandav army consisted of six thousands of elephants, as many cars, ten thousand horse and twenty millions foot, Thus the king of Madra divided our army desirous of gaining victory over the Pandavas. The Pandavas and Panchals too, attaked us to gain victory Thus the battle betwwen the Pandavas and your sons was very terrible" 45



सञ्जय उवाच । ततः प्रवृत्ते युद्धं कुरूणां भयवर्द्धनम् । सृञ्जयैः सह राजेन्द्र
घोरं देवासुरोपमम् ॥ १ ॥ नरा रथगजौघाश्च सादिनश्च सहस्रशः । वाजिनश्च परा
क्रान्ताः समाजग्मुः परस्परम् ॥ २ ॥ नागानां भीमरूपाणां द्रवतां निस्वनो महान् ।
अश्रूयत यथा काले जलदानां नभस्तले ॥ ३ ॥ नागैरभ्याहताः केचित्सरथा रथिनो
भवन् । अद्रवन्त रणे वीरा द्राव्यमाणा मदोत्कटैः ॥ ४ ॥ हयौघान् पादरक्षांश्च रथि
नस्तत्र शिक्षिताः । शरैः सम्प्रेषयामासुः परलोकाय भारत ॥ ५ ॥ सादिनः शिक्षिता
राजन् परिवार्य महारथान् । विचरन्तो रणेऽभ्यघ्नन् प्रासशक्त्यृष्टिभिस्तथा ॥ ६ ॥
धन्विनः पुरुषाः केचित् परिवार्य महारथान् । एकं बहव आसाद्य प्रेषयेयुर्यमक्षयम्
॥ ७ ॥ नागं रथवराश्चान्ये परिवार्य महारथाः । सोत्तरायुधिनं जघ्नुर्द्रवमाणं महा
रथम् ॥ ८ ॥ तथा च रथिनं क्रुद्धं विकिरन्तं शरान् बहून् । नागा जघ्नुर्महाराज परि

अध्याय ९ ॥

हे राजा फिर कौरवोंका युद्ध जो सृंजियोंके साथ जारीहुआ वह घोरभयका बढ़ानेवाला देवासुर युद्धके समानथा चढ़ाई करनेवाले हजारों मनुष्य और रथ घोड़ोंके समूह अश्वसवार और घोड़े परस्पर में भिड़े । २ । भयानकरूप हाथियोंके भागने के ऐसे शब्द सुनेगये जैसे कि समयपर आकाश में बादलों के शब्द होते हैं । ३ । हाथियों से घायल कितनेही रथसवार रथों समेत गिरपड़े और युद्ध में मतवाले हाथियों से भगायेहुये वीरभागे । ४ । हे भरतवंशी वहां शिक्षित वाले रथसवारों ने घोड़ोंके समूहों को और चरणरक्षकों को बाणोंसे परलोक में भेजा । ५ । और इसीप्रकार युद्ध में घूमनेवाले शिक्षित अश्वसवारों ने महारथियों को प्रास शक्ति और दुधारे खड्गोंसेमारा और कितनेही धनुषधारी मनुष्यों ने महारथियों को घेरकर बहुतोंने एकको पाकर यमलोक में भेजा । ७ । और रथियोंमें श्रेष्ठ दूसरे महारथियों ने हाथीको घेरकर मारा हे महाराज इसी प्रकार मौके से लड़नेवाले महारथी को । ८ । और बहुत बाणोंसे लड़नेवाले क्रोधयुक्त रथीको

CHAPTER IX

The Kauravas fought with the Sunjayas a dreadful battle like that of the gods and danavas. Thousands of men, cars and horse met together. The dreadful elephants made a tremendous noise like that of thunder. Many car-warriors fell down wounded by elephants or ran away in terror. The well-trained car-warriors sent horses and *guards to the region of Yam with their arrows.* 5. *The trained horse*men too, slew great warriors with javelins and swords. The armies surrounded great warriors and many of them put single warriors to death. Some good *car-warriors surrounded* and killed elephants. Similarly, elephants surrounded and slew the good fighting men. The riders of elephants and cars met and slew the riders of elephants and

बायं समन्ततः ॥ ९ ॥ नागो नागमभिद्रुत्य रथी च रथिनं रणे । शक्तितोमरनाराचै
र्निजघ्नुस्तत्र भारत ॥ १० ॥ पादातानवमृद्नन्तो रथवारणवाजिनः । रणमध्ये व्यद
श्यन्त कुर्वन्तो महदाकुलम् ॥ ११ । हयाश्च पर्यधावन्त चामरैरुपशोभिताः । हंसा
हिमवतः प्रस्थे पिबन्त इव मेदिनीम् ॥ १२ ॥ तेषान्तु वाजिनां भूमिः खुरैश्चित्रा वि
शाम्पते । अशोभत यथा नारी करजैः क्षतविक्षता ॥ १३ ॥ वाजिनां खुरशब्देन रथ
नेमिस्वनेन च । पत्तीनाञ्चापि शब्देन नागानां बृंहितेन च ॥ १४ ॥ वादित्राणाञ्च
घोषेण शङ्खानां निस्वनेन च । अभवन्नादिता भूमिर्निर्घातैरिव भारत ॥ १५ ॥ धनुषां
कूजमानानां निस्त्रिंशानाञ्च दीप्यताम् । कवचानां प्रभाभिश्च न प्राज्ञायत किञ्चन
॥ १६ ॥ बहवो बाहवश्छिन्ना नागराजकरोपमाः । उद्वेष्टन्ते विवेष्टन्ते वेगं
कुर्वन्ति दारुणम् ॥ १७ ॥ शिरसाञ्च महाराज पततां वसुधातले । च्युतानामिव

हाथियोंनेचारोंओरसे घेरकरमारा।९।हेभरतवंशी हाथीनें हाथीको सम्मुख होकर माग और रथीने रथीको शक्ति तोमर और नाराचों से मारा । १० । रथ हाथी और घोड़े पदातियोंको मर्दनकरते बड़ी व्याकुलताको उत्पन्नकरते युद्धमें दिखाईपड़े । ११ । और चामरोंसे शोभायमान घोड़े मानों पृथ्वीको पानकरते चारोंओर को ऐसे दौड़े जैसे कि हिमालयके शिखरपर हंस दौड़ते हैं । १२ । हे राजा उन घोड़ों के खुरोंसे चिन्हित पृथ्वी ऐसे शोभायमान हुई जैसे कि स्त्री हाथों के नखोंसे विदीर्ण होती है ।१३। घोड़ों के खुरोंके शब्द रथनेमियोंके शब्द पत्तियोंके शब्द हाथियों की चिग्घाड़ बाजों के शब्द और शंखों के शब्दों से पृथ्वी ऐसी शब्दायमान हुई हे भरतवंशी जैसे कि परस्पर अघात करनेवाली हवाओंके पृथ्वी पर गिरने से उत्पन्न होनेवाले शब्द होते हैं । १५ । उस समय शब्द करने वाले धनुष प्रकाशित खड्ग और शरीर के कवचों के प्रकाशों से कुछ नहीं जानागया। १६ । गजराज की सूंड के समान टूटी हुई बहुतसी भुजा व्याकुल और अधिक चेष्टा करती हुई भयानक वेगोंको करती थीं ।१७। हे महाराज पृथ्वी

cars respectively with their javelins, tomars and darts.' 10 Cars, elephants and horses crushed the foot soldiers and caused consternation among them. Horses, decked with *chamars*, ran in all directions like swans over hills, as if they would drink the earth The ground marked with the horses, hoofs looked like a woman scratched by finger nails Filled with the noise of hoofs, wheels, cries, grunts and conchs, the field rang as if with a storm of wind 15. Loud sounding bows, bright swords and shining armours were to be seen everywhere. Arms like the trunks of elephants made various movements at their fall The heads of the warriors fell down with a crash like that of the falling palm-tree fruits The ground covered with blood-stained heads looked glorious as if strewn over with lotus flowers of golden hue,

तालेभ्य फलानां श्रूयते स्वनः ॥ १८ ॥ शिरोभिः पतितैर्भाति रुधिरार्द्रैर्वसुन्धरा । तपनीयनिभैः काले नलिनैरिव भारत ॥ १९ ॥ उद्वृत्तनयनैस्तैस्तु गतसत्त्वैः सुविक्षतैः व्यभ्राजत मही राजन् पुण्डरीकैरिवावृता ॥ २० ॥ बाहुभिश्चन्दनादिग्धैः सकेयूरैर्महाधनैः । पतितैर्भाति वसुधा यथा शक्रध्वजैस्तथा ॥ २१ ॥ ऊरुभिश्च नरेन्द्राणां विनिकृत्तैर्महाहवे । हस्तिहस्तोपमैरन्यैः संवृतं तद्रणाङ्गनम् ॥ २२ ॥ कबन्धशतसङ्कीर्णं छत्रचामरसङ्कुलम् । सेनावनं तच्छुशुभे वनं पुष्पाचितं यथा ॥ २३ ॥ तत्र योधा महाराज विचरन्तो ह्यभीतवत् । दृश्यन्ते रुधिराक्ताङ्गाः पुष्पिता इव किंशुकाः ॥ २४ ॥ मातङ्गाश्चाप्यदृश्यन्त शरतोमरपीडिताः । पतन्तस्तत्र तत्रैव छिन्नाभ्रसदृशा रणे ॥ २५ ॥ गजानीकं महाराज वध्यमानं महात्मभिः । व्यदीर्यत दिशः सर्वा वातनुन्ना घना इव ॥ २६ ॥ ते गजा मेघसङ्काशाः पेतुरुर्व्यां समन्ततः ।

पर गिरतेहुये शिरों के ऐसे शब्द सुनेगये जैसे कि ताल के वृक्षोंसे गिरतेहुये फलों के शब्द होते हैं । १८ । रुधिर से लिप्त पड़ेहुये शिरोंसे पृथ्वी ऐसे प्रकाशमान हुई जैसे कि समयपर सुनहरी कमलों से शोभित होती है । १९ । हे राजा फैलेहुये नेत्र निर्जीव और अत्यन्त घायल उन नरोंसे युक्तहोकर वह पृथ्वीऐसे शोभायमानहुई जैसे कि कमलोंसे शोभित होती है । २० । चन्दनसेलिप्त बहुमूल्य रत्नमयी केयूर रखनेवाली पड़ीहुई भुजाओंसे पृथ्वीऐसे प्रकाशयुक्तहुई जैसे कि इन्द्रकी ध्वजाओं से । २१ । बड़े युद्धमें काटीहुई महाराजाओंकी जंघाओं से शोभाती है और हाथीकी सूंड़के समान दूसरी जंघाओंसे वह युद्धभूमि व्याप्त होगई । २२ । सैकड़ों घोड़ोंसे आच्छादित छत्र चामरों से व्याकुल वह सेनारूप वन ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि फूलोंसे चिताहुआ वन होताहै ।२३। हेमहाराज वहां निर्भयके समान घूमनेवाले शूरवीर रुधिरसे लिप्त अंग ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि प्रफुल्लित किंशुकके वृक्ष होते हैं ।२४। बाण और तोमरों से पीड़ित हाथी भी जहां तहां टूटेहुये बादलोंके समान गिरतेहुये दृष्टपड़े । २५ । और महात्माओं के हाथसे घायलहुई वह हाथियों की सेना सब दिशाओंमें ऐसे छिन्न भिन्न होगई जैसेकि वायुसे छिन्न भिन्न बादल होते हैं ।२६। अर्थात् वह बादलके स्वरूप

The lifeless bodies, with open eyes, made the ground look like a forest of lotus. 20. Decked with sandal paste and valuable ornaments, the arms lay down on earth like Indra's banners. The thighs of the warriors lay like the trunks of elephants. With horses, umbrellas and chamars, the battle field looked like a forest in bloom. Warriors, with bleeding bodies, roaming there, looked like Kinshuk trees in bloom. Elephants wounded by arrows and tomars fell down like clouds. 25. The army of elephants, wounded by the arrows of the warriors, dispersed like clouds by the wind. The cloud-like

ह्यानां सादिभिः सार्द्धं पतितानां रक्ततः ॥ २८ ॥ सञ्जज्ञे रणभूमौ तु हस्त्यस्थिशर्करा ॥ २९ ॥ भुजनक्राधनु छत्रहंसा गदोडुपा ॥३०॥ कवचोष्णी षसम्पन्ना पताकारुचिरद्रुमा । चक्रचक्रावलीजुष्टा त्रिवेणुदण्डकावृता ॥ ३१ ॥ शूराणां हर्षजननी भीरूणां भयवर्द्धनी । प्रावर्तत नदी रौद्रा कुरुसृञ्जयसंकुला ॥ ३२ ॥ तां नदीं पितृलोकाय वहन्तीमतिभैरवाम । तं रुर्वाहननौभिस्ते शूराः परिघबाहवः ॥ ३३ ॥ वर्त्तमाने तथा युद्धे निर्मर्यादे विशाम्पते । चतुरङ्गक्षये घोरे पूर्वं देवासुरोपमे ॥ ३४ ॥ ह्याक्रोशन् बान्धवानाम्ये तत्र तत्र परन्तप । क्रोशद्भिर्बान्धवैश्चान्ये भयार्त्ता निपातिरे ॥ ३५ ॥ निर्मर्यादे तथा युद्धे वर्त्तमाने भयानके ।

हाथी चारोंओर से ऐसे गिरपड़े हे समर्थ जैसे कि प्रलयकाल में वज्रसे टूटे हुये पहाड़ गिरते हैं ।२७। सवारों समेत पृथ्वीपर पड़ेहुये घोड़ोंके समूह जहां तहां पर्वत के समान दिखाईदिये ।२८। फिर युद्धभूमिमेंपरलोककी ओर को वहनेवाली नदी उत्पन्न हुई जिस में रुधिर जल रथ भवँर ध्वजा वृक्ष हाड़ कंकड़ भुजा नक्र धनुष झिरने हाथी पर्वत घोड़े पाषाण वसा कीच छत्र हंस और गदा उडुपथी। ३० । वह नदी कवच और पगड़ियोंसे पूर्ण और पताकारूपी सुन्दरवृक्ष रखनेवाली रथके पहिये रूप चक्रवाली से पूर्ण त्रिवेणुरूप दण्डके से संयुक्त शूरों की प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाली और भयभीतों के भयोंकी बढ़ानेवाली कौरव और सृञ्जियों से व्याकुल महारुद्र नदी जारी हुई । ३२ । परिघरूप भुजारखनेवाले वह शूरलोग पितृलोक के निमित्त वहनेवाली उस बड़ी भयानक नदी को सवारी रूप नौकाओंके द्वारा तरे । ३३ । हेराजा इसप्रकार उस अमर्यादारूप युद्धके जारी होने पर जो कि पूर्वसमय में होनेवाले देवासुर युद्धके समान था और घोर चतुरंगिणी सेनाके नाशवान होनेपर जहां तहां अन्य बान्धव पुकारे पुकारनेवाले उन बान्धवों के कारण से भयसे पीड़ावान दूसरे शूरवीर निपत हुये । ३५ । इस

elephants fell down here and there like hills struck down by vajra The horses with their riders lay down here and there like hills, Then a river of blood flowed down, leading to the next world, having blood for water, cars for eddies, banners for trees, bones for pebbles, arms for fish, bows for waterfalls, elephants for hills, horses for stones, fat for mire, umbrellas for cranes and maces for boats. 30. It was full of armours, turbans, banners and wheels and other parts of cars, causing terror to the timid and joy to the brave, and was full of the Kauravas and Srinjayas. With their club-like arms, the warriors crossed that dreadful river by means of their cars. When the battle was raging furiously, like that between gods and asurs, without rule, the war-

अर्जुनो भीमसेनश्च मोहयाञ्चक्रतु पराम् ॥ ३६ ॥ सा वध्यमाना महती, सेना तव जनाधिप । अमुह्यत्तत्र तत्रैव योषिन्मदवशादिव ॥ ३७ ॥ मोहयित्वा च तां, सेनां भीमसेनधनञ्जयौ । दध्मतुर्वारिजौ तत्र सिंहनादांश्च नेदतु ॥ ३८ । श्रुत्वैव तु महाशब्द धृष्टद्युम्न शिखण्डिनौ । धर्मराज पुरस्कृत्य मद्रराजमभिद्रुतौ ॥ ३९ ॥ तत्रा श्चर्यमपश्याम घोररूप विशाम्पते । शल्येन स ता. शूरा यद्युध्यन्त भागशः ॥ ४० ॥ माद्रीपुत्रौतु रभसौ कृतास्त्रौ युद्धदुर्मदौ । अभ्ययातां त्वरायुक्तौ जिगीषन्तौ बलं तव ॥४१॥ ततो न्यवर्तत बल तावक भरतर्षभ । शरै प्रणुन्न बहुधा पाण्डवै र्जितकाशिभि ॥४२॥ वध्यमाना चमू सा तु पुत्राणां प्रेक्षतां तव । भेजे दिशो महाराज प्रणुन्नादृढ धन्विभि. ॥४३॥ हाहाकारो महान् जज्ञे योधानां तव भारत । तिष्ठ तिष्ठेति वाक्चासीद्द्रावितानां महात्मनाम् । क्षत्रियाणां तदान्योन्यसंयुगे जयमिच्छताम् ॥४४॥

प्रकार उस अमर्य्याद भयानक युद्धके वर्त्तमान होनेपर अर्जुन और भीमसेन ने शत्रुओंको अचेत किया । ३६ । तब हेराजा वह आपकी बड़ी सेना महाघायल होकर जहां तहां ऐसी अचेत हुई जैसे कि नशेकी दशा में स्त्री अचेत होजाती है । ३७ । वहां भीमसेन और अर्जुन ने उस सेनाको अचेत करके शङ्खोंको बजाकर सिंहनादों को किया । ३८ । फिर बड़े शब्दको सुनतेही धृष्टद्युम्न और शिखण्डी धर्मराजको आगेकरके राजामद्रके सम्मुख गये । ३९ । हे राजा तब वहां हमने एक भयानक रूप आश्चर्यको देखा जो शल्य से भिड़ेहुये शूरभागी होकर युद्ध करनेलगे । ४० । फिर वेगवान् अस्त्रज्ञ युद्धदुर्मद शीघ्रता से युक्त आपकी सेनाके विजय करने के अभिलाषी नकुल और सहदेव सम्मुख गये । ४१ । हे भरतर्षभ इसके पीछे वह आपकी सेना लौटी जो कि विजय से शोभित पांडवों के बाणों से अत्यन्त घायलथी । ४२ । फिर उस घायल सेनाने आपके पुत्रों के देखतेहुये दिशाओं को सेवन किया वह सब सेना बाणोंकी वर्षासे अत्यन्त संयुक्तथी ।४३।हे राजा तब आपके शूरवीरों का बड़ा हाहाकार उत्पन्न हुआ और युद्धमें परस्पर विजयाभिलाषी महात्मा पांडवों समेत क्षत्रियों के तिष्ठशब्दहुये ।४४ । इसकेपीछे

more called out for help to their kinsmen and friends and stood there in terror, 35. In that battle without rule, Arjun and *Bhim* made the enemies lose their senses Your great army, O king, became insensible with wounds like a drunken woman *Having* made your warriors insensible, Bhim and Arjun blew their conchs and roared loud roars. On hearing their sounds, Shikhandi and Dhrishtadyumn, led by Yudhishthir, faced Shalya, The latter dispersed them to the amazement of all 40 Then brave Nakul and Sahadev, desirous of fighting, faced Shalya. Your army, wounded by the arrows of the Pandavas, turned back and dispersed in all directions in the presence of your son Then there were cries of dismay among the warriors,

माद्रवन्मेव मग्माले पाण्डवैस्तव सैनिकाः । त्यक्त्वा युद्धे प्रियान् पुत्रान् भ्रातॄनथ पितामहान् । मातुलान् भागिनेयांश्च तथा सम्बन्धिबान्धवान् ॥ ४५ ॥ हयान् द्विपां स्त्वरयन्तो योधा जग्मुः सहस्रशः । आत्मत्राणकृतोत्साहास्तावका भरतर्षभ ॥ ४६ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि संकुलयुद्धे नवमोऽध्यायः ९ ॥

सञ्जय उवाच । तत् प्रभग्नं बलं दृष्ट्वा मद्रराजः प्रतापवान् उवाच सारथिं तूर्णं चोदयाश्वान् मनोजवान् ॥ १ ॥ एष तिष्ठति वै राजा पाण्डुपुत्रो युधिष्ठिरः । छत्रेण ध्रियमाणेन पाण्डरेण विराजता ॥ २ ॥ अत्र मां प्रापय क्षिप्रं पश्य मे सारथे

पांडवोंके हाथ पराजित आपकी सेनाकेलोग युद्धमें अपने प्यारेपुत्र भाई और पिता बाबाओंको त्याग करके । ४५ । घोड़े हाथियोंको शीघ्र चलानेवाले शूरवीर मामा भानजे आदि नातेदारोंको छोड़२कर चारोंओरसे चलदिये अर्थात् हे भरतर्षभ आपके शूरवीर अपनी रक्षामें उत्साह करनेवाले हुये । ४६ ॥

अध्याय १० ॥

सञ्जय बोले कि प्रतापवान् राजामद्र उस पराजितहुई सेनाको देखकरअपने सारथीसे बोला कि मनके समान इन शीघ्रगामी घोड़ों का शीघ्रता से चलायमान करो यह पाण्डुका पुत्र राजा युधिष्ठिर श्वेत शोभायमान छत्र को धारण किये शोभायमान होकर नियत है । २ । हे सारथी वहां जल्दीसे मुझको पहुंचा कर मेरे बलको देख अब युद्ध में पाण्डव लोग मेरे आगे नियत होनेको समर्थ नहीं

while the Pandav warriors cried out 'Stay, stay' Your warriors, defeated by the Pandavas, ran away, leaving their sons, brothers, fathers and grandfathers behind them 45 They ran away in their swift cars, leaving uncles, sisters' sons and other kinsmen and thinking of their own safety alone." 46.

CHAPTER X.

Sanjaya said, "Seeing the army defeated, Shalya said to the driver, "Drive the horses fast. Yonder stands Yudhishthir under his white umbrella. Take me there at once and see my strength. The Pandavas will not be able to stand before me"

बलम् । न समर्थो हि मे पार्थो स्थातुमद्य पुरो युधि ।३॥ एवमुक्तस्ततः प्रायान्मद्रराजस्य सारथिः। यत्र राजा सत्यसन्धो धर्मराजो युधिष्ठिरः ॥ ४ ॥ आपतच्च सहसा पाण्डवानां महद्बलम् । दधारैको रणे शल्यो वेलोद्धूतमिवार्णवम् ॥ ५ ॥ पाण्डवानां बलौघस्तु शल्यमासाद्य मारिष । व्यतिष्ठत तदा युद्धे सिन्धोर्वेग इवाचलम् ॥ ६ ॥ मद्रराजन्तु समरे दृष्ट्वा युद्धाय विष्ठितम् । कुरवः सन्यवर्त्तन्त मृत्युं कृत्वा निवर्त्तनम् ॥ ७ ॥ तेषु राजन्निवृत्तेषु व्यूढानीकेषु भागशः । प्रावर्त्तत महारौद्रः संग्रामः शोणितोदकः ॥ ८ ॥ समार्च्छच्चित्रसेनन्तु नकुलो युद्धदुर्मदः । तौ परस्परमासाद्य चित्रकार्मुकधारिणौ । मेघाविव यथोद्वृत्तौ दक्षिणोत्तरवर्षिणौ ॥ १० ॥ शरतोयैः सिषिचतुस्तौ परस्परमाहवे । नान्तरं तत्र पश्यामि पाण्डवस्येतरस्य वा ॥ ११ ॥ उभौ कृतास्त्रौ बलिनौ रथचर्य्याविशारदौ । परस्परवधे यत्तौ छिद्रान्वेषणतत्परौ ।

है । ३ । इस प्रकार के वचन को सुनकर वह राजा मद्रका सारथी वहांहीकोचला जहां कि सत्यसंकल्प धर्मराज राजा युधिष्ठिर था । ४ । और वह पांडवों की सेना भी अकस्मात् लड़ाई करनेवाली हुई और अकेले शल्यनेही युद्ध में उन सबको ऐसे रोका जैसे कि उठेहुये समुद्रको मर्यादा रोकती है । ५ । हे श्रेष्ठ तब पाण्डवोंकी सेनाका समूह शल्यको पाकर युद्धमें ऐसे नियत हुआ जैसे कि पर्वत को पाकर समुद्रका वेग नियत होताहै । ६ । फिर युद्धके निमित्त युद्धभूमि में नियत राजामद्रको देखकर मृत्युको पीछे करके सब कौरव लौटे । ७। हेराजा वह भागकी हुई लोग उन अलंकृत सेनाओं के लौटने पर रुधिररूप जल रखनेवाला महा रौद्र युद्ध प्रारम्भ हुआ । ८ । युद्धमें दुर्मद नकुल ने चित्रसेनको सम्मुख पाया उन दोनों अपूर्व्व धनुषधारियोंने परस्पर सम्मुख होकर । ९ । युद्धमें बाणरूपी जलोंसे परस्पर ऐसे सींचा जैसे कि दक्षिण और उत्तरसे उठेहुये वर्षाकरनेवाले दो बादल होतेहैं ।१०।वहां हमने पाण्डवों के अथवा अन्य लोगोंके अन्तरको नहीं देखा।११। वह दोनों अस्त्रज्ञ बलवान रथचर्या में सावधान परस्पर मारने में उपाय करने वाले छिद्रोंके अन्वेषण में महतत्पर । १२ । हे महाराज फिर चित्रसेन ने पीत

On hearing this, the driver drove the car to the place where Yudhishthir was. The Pandav army attacked Shalya, but he checked it as the coast checks the rising ocean. 5 The Pandav army resisted Shalya as a hill resists the ocean. Then seeing the king of Madra stand firmly in the field of battle, the Kaurav warriors came back without fear of life The divisions of the Pandav the army met the returning warriors and produced a river of blood Nakul was attacked by Chitrasen and the two warriors showered arrows over each other like rain 10. The Kauravas and the Pandavas were mixed together. The two skilful warriors, clever in driving cars, looked for each other's defects —Chitrasen cut down Nakul's bow, near the handle, with a

॥ १२ ॥ चित्रसेनस्तु भल्लेन पीतेन निशितेन च । नकुलस्य महाराज मुष्टिदेशेऽच्छिनद्धनुः ॥ तथैन छिन्नधन्वानं रुक्मपुङ्खैः शिलाशितैः । त्रिभिः शरैरसम्भ्रान्तो ललाटे वै समार्पयत् ॥ १४ ॥ हयांश्चास्य शरैस्तीक्ष्णैः प्रेषयामास मृत्यवे । तथा ध्वजं सारथिञ्च त्रिभिस्त्रिभिरपातयत् ॥ १५ ॥ स शत्रुभुजनिर्मुक्तैर्ललाटस्थैस्त्रिभिः शरैः । नकुलः शुशुभे राजंस्त्रिशृङ्ग इव पर्वतः ॥ १६ ॥ स छिन्नधन्वा विरथः खड्गमादाय चर्म च । रथादवातरद्वीरः शैलाग्रादिव केसरी । पद्भ्यामापततस्तस्य शरवृष्टिं समासृजत् ॥ १७ ॥ नकुलोऽप्यग्रसत्तां वै चर्मणा लघुविक्रमः । चित्रसेनरथं प्राप्य चित्रयोधी जितश्रमः ॥१८॥आरुरोह महाबाहुः सर्वसैन्यस्य पश्यतः ॥१९॥सकुण्डलं समुकुटं सुनसं स्वायतेक्षणम् । चित्रसेनशिरः कायादपाहरत पाण्डवः । सपपात रथोपस्थे दिवाकरसमप्रभः ॥ २० ॥ चित्रसेनं विशस्तन्तु दृष्ट्वा तत्र महारथाः । साधुवादस्वनांश्चक्रु

र्यो तीक्ष्णधार भल्लसे नकुलके वह धनुषको मूठके स्थानपर काटा । १३ । फिर भयसे उत्पन्न व्याकुलतासे रहित ने इसटूटे धनुषवाले को सुनहरी पुंख और तेजधार तीन बाणों से ललाटपर घायल किया । १४ । और उसके घोड़ों को भी अपने तीक्ष्ण बाणों से कालवशकिया इस प्रकार ध्वजा और सारथीकोभी तीन तीन बाणों से गिराया।१५।हेराजा वह नकुल शत्रुकी भुजासे छूटेहुये ललाटपर नियत तीनबाणों से तीन शिखरवाले पर्व्वत के समान शोभायमानहुआ । १६ । वह टूटे धनुष रथसे विहीन होकर वीर नकुल ढाल तलवारको लेकर रथ से ऐसे उतरा जैसे कि पर्व्वत के शिखर से केसरी सिंह उतरता है ।१७। तब उसने उस पदाती आनेवाले के ऊपर बाणों की वर्षाकरी उस तेज पराक्रमी नकुलने भी बल के द्वारा उस बाणवृष्टि को निष्फल किया फिर अपूर्व शूरवीर थकावटको जीतनेवाला महाबाहु नकुल चित्रसेन के रथको पाकर सब सेना के देखतेहुये उसपर चढ़ा । १८ । महाजाकर उस नकुल ने सुन्दरमुख बड़े नत्र कुण्डल और मुकुटधारी चित्रसेनके शिरको उसके शरीरसे जुदाकिया वह सूर्य्य के समान महातेजस्वी रथके बैठने के स्थानपर गिरपड़ा । २० । फिर वहां महारथियों ने मारेहुये चित्रसेन को

sharp arrow of yellow colour, and wounded him on the forehead with three sharp arrows fitted with gold feathers, He slew his horses and cut down the banner and driver with three arrows each 15. Wounded by three arrows standing on his forehead Nakul looked like a three peaked mountain Deprived of his bow and car, Nakul came down from the car, with shield and sword, as a lion comes down from a hill, Then he showered arrows over Nakul and the latter made them useless by his skill Then Nakul approached the car of Chitrasen and mounted it 18 He cut off Chitrasen's head, adorned with beautiful face, large eyes ear rings and diadem and the latter's body fell down from his seat in the car 20 The brave warriors, seeing

सिंहनादांश्च पुष्कलान् ॥ २१ ॥ निशाम्य भ्रातरं दृष्ट्वा कर्णपुत्रौ महारथौ । सुषेणः सत्यसेनश्च मुञ्चन्तौ निशिताञ्छरान् ॥ २२ ॥ ततोऽभ्यधावतां तूर्णं पाण्डवं रथिनां वरौ । जिघांसन्तौ यथा नागं व्याघ्रौ राजन् महावने ॥ २३ ॥ तावभ्यवर्षतां सौ तावभ्येन महारथम् । शरौघान् सम्यगस्यन्तौ जीमूतौ सलिलं यथा ॥ २४ ॥ स शरैः सततो विद्धः प्रहृष्ट इव पाण्डवः । अन्यत् कार्मुकमादाय रथमारुह्य वीर्यवान् अतिष्ठत् रणे वीरः क्रुद्ध इव यथान्तकः ॥ २५ ॥ तस्य तौ भ्रातरौ राजन् शरैः संनतपर्वभिः । रथं विशकलीकर्तुं समारब्धौ विशाम्पते ॥ २६ ॥ ततः प्रहस्य नकुलश्चतुर्भिश्चतुरो रणे । जघान निशितैस्तीक्ष्णैः सत्यसेनस्य वाजिनः ॥ २७ ॥ ततः सन्धाय नाराचं रुक्मपुङ्खं शिलाशितम् । धनुश्चिच्छेद राजेन्द्र सत्यसेनस्य पाण्डवः ॥ २८ ॥ अथान्यं रथमास्थाय धनुरादाय चापरम् । सत्यसेनः सुषेणश्च पाण्डवं पर्यधावताम् ॥ २९ ॥ अविध्यत्तावसंभ्रान्तो माद्रीपुत्रः प्रतापवान् । द्वाभ्यां द्वाभ्यां महा

देखकर धन्य धन्य शब्दोंसे प्रशंसा करी और बड़े सिंहनादोंको किया।२१। कर्णके पुत्र महारथी सुषेण और सत्यसेन मरेहुये अपने भाई को देखकर नाना प्रकार के बाणोंको छोड़ते । २२ । शीघ्रही रथियोंमें श्रेष्ठ पाण्डव नकुलको मारने के अभिलाषीहोकर ऐसे सम्मुख दौड़े जैसे कि महावनमें हाथी के मारने के अभिलाषी दोव्याघ्र दौड़ते हैं । २३ । वह दोनों बाण समूहों को अच्छीरीति से छोड़के इस महारथी के ऊपर ऐसे वर्षा करनेवाले हुये जैसे किदो बादल जलकी वर्षा करतेहैं ।२४। सबओरके बाणोंने घायल और अत्यन्त प्रसन्न पराक्रमी नकुल दूसरे धनुष लेकर और रथपर चढ़कर क्रोधयुक्त कालके समान युद्ध में नियत हुआ । २५ । हे राजा उनदोनों भाइयोंने टेढ़ पर्व वाले बाणों से उस के रथको खण्ड २ करना प्रारम्भ किया । २६ । उसके पीछे नकुलने हँसकर अपने तीक्ष्णधार चारबाणों से सत्यसेनके चारों घोड़ोंको मारा । २७ । फिर सुनहरी पुंख तीक्ष्ण धार नाराचको धनुष पर चढ़ाकर सत्यसेन के धनुषको भी काटा । २८ । इसके पीछे दूसरे रथमें सवारहोकर दूसरे धनुष को लेकर सत्यसेन और सुषेण नकुल के सम्मुख दौड़े । २९ । हे महाराज भयजनित व्याकुलता से रहित प्रतापवान् नकुल ने युद्ध के

Chitrasen dead, applauded Nakul and roared like lions. Karan's sons, Sushen and Satyasen, seeing their brother Chitrasen dead, rushed on to slay Nakul like *two lions rushing against an elephant.* They showered on him their arrows like rain. Wounded by arrows, brave Nakul took up another bow and stood with it in the field of battle like Death in rage. 25 The two brothers began to break through his car. Then Nakul, with a smile, slew the four horses of Satyasen with four arrows, and with another sharp arrow cut his bow. Mounting another car, Satyasen and Sushen rushed against Nakul, Free

राजन् भ्रातृभ्यां रणमूर्धनि । ३० ॥ सुषेणस्तु ततः क्रुद्धः पाण्डवस्य महद्धनुः । चिच्छेद
प्रहसन् युद्धे क्षुरप्रेण महारथः ॥ ३१ ॥ अथान्यद्धनुरादाय नकुलः क्रोधमूर्छितः ।
सुषेणं पञ्चभिर्विद्ध्वा ध्वजमेकेन चिच्छिदे ॥ ३२ ॥ सत्यसेनस्य च धनुर्हस्तावापञ्च
मारिष । चिच्छेद तरसा युद्धे तत उच्चुक्रुशुर्जनाः ॥ ३३ ॥ अथान्यद्धनुरादाय
धनुर्धरं भारसाधनम् । शरैः संछादयामास, समन्तात् पाण्डुनन्दनम् ॥ ३४ ॥ सन्नि
वार्य तु तान् बाणान् नकुलः परवीरहा । सत्यसेनं सुषेणञ्च द्वाभ्यां द्वाभ्यामविध्यत
॥ ३५ ॥ तावेनं प्रत्यविध्येतां पृथक् पृथगजिह्मगैः । सारथिञ्चास्य राजेन्द्र शितैर्विवि
धतुः शरैः ॥ ३६ ॥ सत्यसेनो रथेषान्तु नकुलस्य धनुस्तथा पृथक् क्षुराभ्यां चिच्छेद
कृतहस्तः प्रतापवान् ॥ ३७ ॥ स रथेऽतिरथस्तिष्ठन् रथशक्तिं परामृशत् । स्वर्णदण्डामकुण्ठाग्रां
तैलधौतां सुनिर्मलाम् ॥ ३८ ॥ लेलिहानामिव विभो नागकन्यां महाविषाम् । समु
द्यम्य च चिक्षेप सत्यसेनस्य संयुगे ॥ ३९ ॥ सा तस्य हृदयं संख्ये बिभेद शतधा

पुत्रपर दो २ बाणोंसे उनदोनों को छेदा । ३० । इसके पीछे क्रोधयुक्त महारथी
हँसतेहुये सुषेणने अपने क्षुरप्रसे नकुलके बड़े धनुषको काटा । ३१ । तब पीछे
क्रोधसे मूर्छित नकुलने दूसरे धनुषको लेकर पांच बाणोंसे सुषेणको छेदा एक
बाणसे ध्वजाको काटा । ३२ । और बड़े वेगसे युद्धमें सत्यसेन के धनुष और
हस्तत्राणकोभी काटा इसहेतुसेलोगोंने बड़ाउच्चशब्दकिया । ३३ । इसकेपीछे शत्रु
के मारनेवाले भारके साधनेवाले दूसरे धनुष को लेकर बाणों की वर्षासे उसने
पाण्डुनन्दन नकुलको सब ओरसे आच्छादित करदिया । ३४ । शत्रुओंके मारने
वाले नकुलने उन बाणोंको हटाकर सत्यसेन और सुषेणको दो २ बाणोंसे छेदा
।३५। हे राजा उन दोनों ने भी अपने जुदे २ बाणों से उसको छेदा और उसके
सारथीको तीक्ष्णबाणोंसे घायलकिया ।३६। फिर हस्तलाघवी प्रतापवान् सत्यसेन
ने नकुलके धनुष और रथके ईषादण्ड को पृथक २ बाणोंसे काटा ।३७। उस रथ
पर नियत अतिरथी ने सुनहरीदण्ड स्वच्छधार तैलसे धोईहुई बड़ी निर्मल रथ
शक्ति जो कि ओठोंकी चाटनेवाली बड़ी जहरीलीनागकन्या के समानथी उसको
उठाकर युद्धमें सत्यसेनके ऊपर छोड़ा ।३९। हेराजा उस शक्तिने युद्धमें सत्यसेन
के हृदय के सौखण्ड करदिये तबवह अचेत और निर्जीवहोकर रथसे पृथ्वीपर गिर

from anxiety of fear, Nakul pierced them with two arrows. 30. Then Sushen, with a smile, cut Nakul's bow. Insensible with anger, Nakul took up another bow and pierced Sushen with five arrows. He cut also Satyasen's banner, handguard and bow. The people cried in dismay. He took up another hard bow and covered Nakul with arrows Nakul checked their arrows and pierced them with two. They too, pierced him and his driver with their sharp arrows.36, Satyasen cut down the bow and yoke of Nakul. Nakul hurled at Satyasen a sharp, clean and well-oiled spear like a poisonous snake. The spear broke Satyasen's heart into

नृप। स पपात रथाद्भूमिं गतसत्त्वाल्पचेतनः ॥ ४० ॥ भ्रातरं निहतं दृष्ट्वा सुषेणः

णस्तु ततः क्रुद्धः पाण्डवं विंशत्याशाभिः। सुतसोमञ्च विंशत्या बाह्वोरुरसि चा- यत् ॥ ४५ ॥ ततः क्रुद्धो महाराज नकुलः परवीरहा। शरैस्तस्य दिशः सर्वाश्छादयामास वेगवान् ॥ ४६ ॥ ततो गृहीत्वा तीक्ष्णाग्रमर्द्धचन्द्रं सुतेजनम्। स वेगयुक्तं विक्षेप कर्णपुत्रस्य संयुगे ॥ ४७ ॥ तस्य तेन शिरः कायाज्जहार नृपसत्तम। पश्यतां सर्वसैन्यानां तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ४८ ॥ स हतः प्रापतद्राजन्नकुलेन महात्मना। नदीवेगादिवारुग्णस्तीरजः पादपो महान् ॥ ४९ ॥ कर्णपुत्रवधं दृष्ट्वा नकुलस्य च विक्रमम्।

पड़ा। ४० । क्रोधसे मूर्च्छामान सुषेण अपने इस भाईको भी माराहुआ देखकर तीक्ष्णवाणों से पदाती नकुलपर वर्षा करनेलगा। ४१ । फिर युद्धमें पिताको चाहता हुआ सुतसोम उसके पासगया इसके पीछे भरतर्षभ नकुल सुतसोम के रथपर सवार होकर। ४२। ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि पर्वत पर नियत केसरी सिंह होता है उसने दूसरे धनुषको लेकर सुषेणसे अच्छा युद्धकिया। ४३ । उन दोनों बड़े महारथियों ने परस्पर सम्मुख होकर बाणों की वर्षा से परस्पर मारने में उपाय किये। ४४ । इसके पीछे क्रोधयुक्त सुषेण ने पाण्डवको और सुतसोम को तीन तीन बाणों से उसकी छाती और भुजाओं पर घायल किया। ४५ । इसके पीछे शत्रुहन्ता क्रोधयुक्त वेगवान नकुलने बाणोंसे उसकी दिशाओंको ढकदिया। ४६ । उसके पीछे तीक्ष्ण नोक सुन्दर वेतवाले वेगवान् अर्द्धचन्द्र नाम बाणको लेकर युद्धमें कर्णकेपुत्रपर फेंका॥४७॥हे राजाओंमें श्रेष्ठ सब सेनाके लोगोंके देखते उस बाणसे उस के शिरको काटडाला यह आश्चर्यसा हुआ॥४८॥फिर उस महात्मा नकुल के हाथसे माराहुआ वह वीर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बड़ा भारी नदीके तटका वृक्ष नदीके वेगसे गिर पड़ताहै। ४९। हे भरतर्षभ आपकी सेना कर्णके पुत्रोंके मरण

a hundred parts and he fell down senseless from his car. 40. Enraged Sushen showered arrows over Nakul. Sut-om went to his father Nakul and took him upon his car. Mounting his son's car, Nakul looked glorious like a lion standing on a hill. He took up another bow and fought with Sushen. Both the warriors tried to slay each other with their arrows. Then Sushen wounded Nakul and his son with three arrows each on the arms and breast. 45. Nakul covered him with arrows and discharged at him a crescent shaped arrow and with it cut off his head to the amazement of all. Struck by Nakul's arrows, Sushen fell down like a riverside tree uprooted by the force of

प्रदुद्राव भयात् सेना तावकी भरतर्षभ ॥ ५० ॥ तान्तु सेनां महाराज, मद्रराजः प्रतापवान् । अपालयद्रणे शूरः सेनापतिररिन्दम ॥ ५१ ॥ अभीतस्थौ महाराज व्यवस्थाप्य च वाहिनीम् । सिंहनादं भृशं कृत्वा धनुः शब्दञ्च दारुणम् ॥ ५२ ॥ तावकाः समरे राजन् रक्षिता दृढधन्वना । प्रत्युद्ययुररातींस्ते समन्ताद्विगतव्यथाः ॥ ५३ ॥ मद्रराजं महेष्वासं परिवार्य्य समन्ततः । स्थिता राजन् महात्मानो योद्धुकामाः समन्ततः ॥ ५४ ॥ सात्यकिर्भीमसेनश्च माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ । युधिष्ठिरं पुरस्कृत्य ह्रीनिषेधमरिन्दमम् ॥ ५५ ॥ परिवार्य्य रणे वीराः सिंहनादं प्रचक्रिरे । बाणशब्दरवांश्चोग्रान् क्ष्वेडांश्च विविधा मुहुः ॥ ५६ ॥ तथैव तावकाः सर्वे मद्राधिपतिमञ्जसा । परिवार्य्य सुसंरब्धाः पुनर्युद्धमरोचयन् ॥ ५७ ॥ ततः प्रववृते युद्धं भीरूणां भयवर्द्धनम् । तावकानां परेषाञ्च मृत्युं कृत्वा निवर्त्तनम् ॥ ५८ ॥ यथा देवासुरं युद्धं पूर्व्वमासीद्विशाम्पते । अभीतानां

को और नकुलके पराक्रमको देखकर भयभीतहोकर भागी । ५० । उस समय शत्रुओंके विजय करनेवाले प्रतापवान् शूरसेनापति, राजामद्रने युद्धमें उस सेनाको रक्षित किया । ५१ । और आप उस सेनाको नियत करके धनुषके भयानक शब्द और बड़े सिंहनादको करके निर्भय होकर नियत हुआ । ५२ । हे राजा युद्धमें दृढ़ धनुषधारी से रक्षित और पीड़ासे रहित वह सबलोग शत्रुओं के सम्मुख गये ।५३। और युद्धाभिलाषी वह साहसी शूरवीर उस बड़े धनुषधारी राजाको चारोंओरसे मध्यवर्त्ती करके उनके चारोंओर नियत हुये । ५४ । सात्यकि पाण्डव भीमसेन नकुल और सहदेव इन सबवीरोंने लज्जावान शत्रुओं के विजय करनेवाले युधिष्ठिरको आगेकरके ।५५। और चारोंओरसे अपना मध्यवर्त्ती करके सिंहनादकिये और वारम्वार बाणोंके उग्र शब्द और नानाप्रकार के सिंहनादों को किया । ५६ । इसीप्रकार क्रोधयुक्त आपके शूरवीरों ने बड़े वेगसे राजा मद्र को अपना मध्यवर्त्ती करके फिर युद्ध करना स्वीकार किया । ५७ । इसके अनन्तर मृत्यु को पीछे करके आपके शूरवीर और प्रतिपक्षियों के वह युद्ध जारीहुवे जोकि भयभीतों के भयके बढ़ानेवाले थे । ५८ । हे राजा जैसे कि पूर्व समयमें देवासुर

water. Seeing the death of Karan's sons and Nakul's prowess, your army dispersed in terror. 50 Glorious Shalya, the destroyer of foes and commander of armies, protected the armies. Having comforted the warriors, he stood making a dreadful noise with his bow, uttering leonine roars. Protected by him the warriors opposed the enemy. They came round the great archer prince and protected him on all sides Satyaki, Bhim, Nakul, Sahadev and others, led by Yudhishthir and desirous of conquering, roared like lions all round their leader. They twanged their bows and roared. 56. In the same manner, your warriors came round the king of Madra and again prepared to fight Your warriors, fearless of their lives, and the Pandavas fought a

तथा राजन् यमराष्ट्रविवर्द्धनम् ॥ ५९ ॥ ततः कपिध्वजो राजन् हत्वा संशप्तकान्रणे अभ्यधावत तां सेनां कौरवीं पाण्डुनन्दन ॥ ६० ॥ तथैव पाण्डवाः सर्वे धृष्टद्युम्नपुरोगमाः अभ्यधावन्त तां सेनां विसृजन्तः शिताञ्छरान् ॥ ६१ ॥ पाण्डवैरवकीर्णानां सम्मोहः समजायत । न च जज्ञुरनीकानि दिशो वा विदिशस्तथा ॥ ६२ ॥ आपूर्यमाणा निशितैः शरैः पाण्डवचोदितैः । हतप्रवीरा विध्वस्ता कीर्य्यमाणा समन्ततः ॥ ६३ ॥ कौरव्यवध्यत चमूः पाण्डुपुत्रैर्महारथैः । तथैव पाण्डवी सेना शरै राजन् समन्ततः । रणेऽहन्यत पुत्रैस्ते शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ६४ ॥ ते सेने भृशसन्तप्ते वध्यमाने परस्परम् । व्याकुले समपद्येतां वर्षासु सरिताविव ॥ ६५ ॥ आविवेश ततस्तीव्रं तावकानां महद्भयम् । पाण्डवानां च राजेन्द्र तथाभूते महाहवे ॥ ६६ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि संकुलयुद्धे दशमोऽध्यायः १० ॥

नाम संग्राम हुआ था उसी प्रकार इन निर्भय लोगों के युद्ध यमराजके देशके बढ़ानेवाले हुये । ५९ । हे राजा इसके पीछे वानर ध्वजाधारी पाण्डुनन्दन अर्जुन युद्ध में संसप्तकों को मारकर उस कौरवीय सेनाके सम्मुख गया ।६०। इसीप्रकार सब पांडव जिनमें अग्रगामी धृष्टद्युम्नथा तीक्ष्णबाणोंको को छोड़तेहुये उस सेनाके सम्मुखआये । ६१ । पांडवोंसे घिरेहुये उन लोगोंका ऐसा बड़ा मोह उत्पन्न हुआ कि सब सेना ने दिशा और विदिशाओं को नहीं पहिचाना । ६२ । पांडवों से चलायमान तीक्ष्णधार बाणोंसे पूर्ण बहुत मृतक शूरोंवाली पराजित चारोंओर से चलायमान । ६३ । वह कौरवीयसेना महारथी पांडवों के हाथ से मारीगई है राजा इसीप्रकार आपके पुत्रों के बाणों से पांडवोंकी भी हजारों सेना युद्ध में चारोंओर से मारीगई । ६४ । वह दोनों सेना अत्यन्त पीड़ित और घायल होकर ऐसी व्याकुल हुई जैसे कि वर्षाऋतुमें दो नदियां व्याकुल होती हैं । ६५ । हे राजेन्द्र इसके पीछे उस प्रकारके बड़े युद्धमें आपके पुत्र और पांडवों में बड़ा भय उत्पन्न हुआ ६६ ॥

battle which caused terror to the timid. Their fighting, like that of gods and asurs, swelled the population of the region of Yam. Ape-bannered Arjun, having slain the Sansaptaks, opposed the Kurus army. 60. The Pandavas, led by Dhrishtadyuman, came on discharging their arrows. Surrounded by the Pandavas, your warriors were confused and could not distinguish the directions. The Kaurav army was destroyed by the arrows of the Pandavas, and the latter were slain by the armies of your son. Much wounded and distressed, the armies were agitated like *two rivers*, causing *fear among* your sons and the Pandavas." 66.

सञ्जय उवाच । तस्मिन् विलुलिते सैन्ये वध्यमाने परस्परम् । द्रवमाणेषु योधेषु निनदत्सु च दन्तिषु ॥ १ ॥ कूजतां स्तनतां चैव पदातीनां महाहवे । विद्रुतेषु महाराज हयेषु बहुधा तदा ॥ २ ॥ प्रक्षये दारुणे जाते संहारे सर्वदेहिनाम् । नानाशस्त्रसमावाये व्यतिषिक्तरथद्विपे ॥ ३ ॥ हर्षणे युद्धशौण्डानां भीरूणां भयवर्द्धने । गाहमानेषु योधेषु परस्परवधैषिषु ॥ ४ ॥ प्राणदाने महाघोरे वर्त्तमाने दुरोदरे । संग्रामे घोररूपे तु यमराष्ट्रविवर्द्धने ॥५॥ पाण्डवा तावकं सैन्यं व्यधमन्त शितैः शरैः । तथैव तावका योधा जघ्नुः पाण्डवसैनिकान् ॥ ६ । तस्मिंस्तथा वर्त्तमाने युद्धे भीरुभयावहे पूर्वाह्णे चैव संप्राप्ते भास्करोदयनं प्रति ॥ ७ । लब्धलक्ष्याः परे राजन् रक्षितास्तु महात्मना । अयोधयंस्तव बलं मृत्युं कृत्वा निवर्त्तनम् ॥ ८ ॥ बलिभिः पाण्डवैर्दृप्तैर्लब्धलक्ष्यैः प्रहारिभिः । कौरव्यसीदत् पृतना मृगीवाग्निसमाकुला ॥ ९ ॥ तां दृष्ट्वा

अध्याय ११ ।

संजय बोले कि उससमय परस्पर युद्ध करनेवाली वह दोनों सेना शूरवीरों के भागने हाथियों के चिंघाड़ने पुकारने गर्जने पदातियोंके भागने बहुत प्रकार से घोड़ोंके भागने सब जीवोंके भयकारी बड़े नाशके वर्त्तमान होने । ४ । और युद्ध में मतवाले पुरुषों के प्रसन्न करनेवाले भयभीतोंके भय बढ़ानेवाले रथ और हाथियों से युक्त नानाप्रकार के भिड़ने परस्पर मारनेके अभिलाषी शूरवीरों के सेना में प्रवेश करने और बड़े घोर जीव नाशरूपी द्यूतके होनेपर पाण्डवोंने यम राजके देशके बढ़ानेवाले घोररूप युद्ध में तीक्ष्ण बाणों से आपकी सेना को छिन्न भिन्न करदिया उसीप्रकार आपके वीरोंनेभी पांडवोंकी सेनाके लोगों को मारा ।६। भयभीतों के भयके उत्पन्न करनेवाले उस युद्धके जारीहोने पर सूर्योदय के पीछे दिनके प्रथमभाग के वर्त्तमान होनेपर महात्मा से रक्षित लक्ष्यभेदन करनेवाले प्रतिपक्षी मृत्युको पीछे करके आपकी सेना से युद्ध करनेलगे । ८ । उन बलवान अहंकारी लक्ष्यभेदी और प्रहार करनेवाले पाण्डवों से कौरवीयसेना ऐसे पीड़ामान हुई जैसे कि अग्निसे व्याकुल मृगी । ९ । और जैसे कि निर्बल गौ कीच में फँसी

CHAPTER XI

Sanjaya said," Both the armies came together. There was a great noise of the warriors running away: the shrieks of elephants, the cries of foot soldiers, the stampede of horses and the dreadful destruction pleasing to the brave and terrifying the timid. The armies of elephants and horses met in battle; destruction of life was dreadful and the Pandavas routed your army with their arrows Your warriors too, destroyed the Pandav army. 6. When the battle, terrifying to the timid, was going on in the first part of the day, the archers of the opposite party fought with your army. The powerful archers of the Pandavas wounded your warriors and terrified them like deer in a burning forest. Seeing them

सीदतीं सेनां पङ्के गामिव दुर्बलाम् । जिजिहीर्षुस्ततः शल्यः प्रायात् पाण्डुचमूं प्रति
॥ १० ॥ मद्रराजस्तु संक्रुद्धो गृहीत्वा धनुरुत्तमम् । अभ्यद्रवत् संग्रामे पाण्डवानाततायिनः ॥ ११ ॥ पाण्डवापि महाराज समरे जितकाशिनः । मद्रराजं समासाद्य विव्यधुर्निशितैः शरैः ॥ १२ ॥ ततः शरशतैस्तीक्ष्णैर्मद्रराजो महाबलः । अर्दयामास तां सेनां
धर्मराजस्य पश्यतः ॥ १३ ॥ प्रादुरासंस्ततो राजन्निमित्तान्यनेकशः । चचाल शब्दं
कुर्वाणा मही चापि सपर्वता ॥ १४ ॥ सदण्डशूलदीताग्रा दीर्यमाणाः समन्ततः ।
उल्का भूमिं दिवः पेतुराहत्य रविमण्डलम् ॥ १५ ॥ मृगाश्च महिषाश्चापि पक्षिणश्च
विशाम्पते । अपसव्यं तदा चक्रुः सेनां ते बहुशो नृप ॥ १६ ॥ भृगुसूनुधरापुत्रौ शशि
जेन समन्वितौ । चरमं पाण्डुपुत्राणां पुरस्तात् सर्वभूभुजाम् ॥ १७ ॥ शस्त्राग्रेष्वभवज्ज्वाला नेत्राण्याहत्य धर्षिणी । शिरःस्वलीयन्त भृशं काकोलूकाश्च केतुषु ॥ १८ ॥

पीड़ित होती है तब इस प्रकार से पीड़ामान सेनाको देखकर उनके छुड़ाने का अभिलाषी राजा-शल्य पाण्डवीय सेनाके सम्मुख गया । १० । अर्थात् अत्यन्त क्रोधयुक्त राजामद्र उत्तम धनुषको लेकर युद्धमें मारनेका अभिलाषी होकर पांडवों के सम्मुख गया । ११ । हे महाराज युद्धमें विजयी शोभायमान पांडवोंने भी राजा मद्रको पाकर तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे घायल किया । १२ । इसके पीछे बड़े पराक्रमी राजा मद्रने सैकड़ों बाणों से उस सेनाको धर्मराजके देखतेहुये पीड़ामान किया । १३ । हेराजा इस के अनन्तर बहुतसे अशुभ लक्षणों के चिन्ह प्रकटहुये और पर्वतों समेत शब्द करनेवाली पृथ्वी भी कम्पायमान हुई । १४ । चारोंओर से फटनेवाली दण्ड और शूल रखनेवाली प्रकाशित उल्का सूर्यमण्डल को भेद कर स्वर्गसे पृथ्वीपर गिरी । १५ । हेराजा बहुधा मृग भैंसे और पक्षियोंने भी आपकी सेनाको दक्षिण किया । १६ । शुक्र और मंगल बुधसे संयुक्तहुये यह शकुन पांडवों के पीछे और अन्य सब राजाओंके आगेहुये और नेत्रोंको घायल करके बरसनेवाली ज्वाला शस्त्रों की नोकोंपर प्रकटहुई और काक उलूक ध्वजा और शिरोंपर बैठगये । १८ । उसकेपीछे सेनाके समूहों में घूमनेवालोंका महाउग्र

like a week cow stuck in mud the king of Madra, desirous of rescuing his men, faced the Pandavas-10. He opposed them with his bow. The Pandav warriors too, wounded him. Glorious king of Madra wounded the Pandav warriors in the presence of Yudhishthir. There were many bad omens and the earth with her mountains shook. Bright meteors fell down on earth from the sky. 15. Deer, buffaloes and birds circled round your army. *Shukra* approached the planets *Mangal* and *Budh*. These omens appeared behind the Pandavas and before other kings. The fire sparks, dazzling the eye, appeared at the points of the weapons, crows and owls sat over the banners. Then there was a severe battle between the two armies. The Kauravas with their

ततस्तद्युद्धमत्युग्रमभवत् संघचारणाम् ॥ १९ ॥ तत सर्वाण्यनीकानि सन्निपत्य जनाधिप । अभ्ययु कौरवा राजन् पाण्डवानामनीकिनीम् ॥ २० ॥ शल्यस्तु शरवर्षेण वर्षयन्निव सहस्रदृक् । अभ्यवर्षददीनात्मा कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् ॥ २१ ॥ भीमसेनं शरैश्चापि रुक्मपुङ्खै शिलाशितैः । द्रौपदेयास्तथा सर्वान् माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ २२॥ धृष्टद्युम्नञ्च शैनेयं शिखण्डिनमथापि च । एकैकं दशभिर्बाणैर्विव्याध च महाबल ॥ २३ ॥ ततोऽसृजद्बाणवर्षं घर्मान्ते मघवानिव ॥ २४ ॥ तत प्रभद्रका राजन् सोमकाश्च सहस्रश । पतिता पात्यमानाश्च दृश्यन्ते शल्यसायकैः ॥ २५ ॥ भ्रमराणामिव व्राता शलभानामिव व्रजा । ह्रादिन्य इव मेघेभ्य शल्यस्य न्यपतन् शरा ॥ २६ ॥ द्विरदास्तुरगाश्चार्त्ता पत्तयो रथिनस्तथा । शल्यस्य बाणैर्न्यपतन् बभ्रमु व्यनदंस्तथा ॥ २७ ॥ आविष्ट इव मन्युना मद्रेशो पौरुषेण च । प्राच्छादयदरीन् संख्ये कालसृष्ट इवान्तक । विनर्दमानो मद्रेशो मेघह्रादो महाबल ॥ २८॥ सा वध्यमाना शल्येन

युद्धहुआ । १९ । इसके पीछे कौरव सब सेनाओंपर चढ़ाई करनेवाले होकर पांडवों की सेनाके सम्मुख गये । २० । फिर प्रसन्नचित्त शल्य बाणोंकी वर्षाकरता कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिरपर वर्षा करने लगा । २१ । बड़े पराक्रमी ने सुनहरी पुंखवाले और तीक्ष्णधारवाले दश २ बाणों से भीमसेन और सब द्रुपदके पुत्रों समेत नकुल सहदेव धृष्टद्युम्न सात्यकि और शिखण्डी को भी घायल किया । २३ । इसके पीछे ऐसी बाणोंकी वर्षाकरी जैसे कि वर्षा ऋतु में इन्द्र करता है । २४ । हेराज इसके पीछे हजारों सोमक और प्रभद्रक न म सभी शल्यके बाणों से गिरतेहुये ऐसे दिखाईपड़े जैसे कि भौंरोंके झुंड और टीड़ियों के समूह दीखते हैं और जैसे कि बादलों से बिजली गिरती है उसी प्रकार शल्यके बाण गिरे । २६ । हाथी घोड़े पति रथी यह सब पीड़ामान शल्यके बाणों से महाव्याकुल घूमते और शब्दों को करते गिरपड़े । २७ । राजामद्र क्रोध और शूरता में पूर्ण होकर कालसृष्टि में अन्तके समान गर्जने बादल के समान शब्दायमान बड़े बलवान राजा मद्रने युद्धमें शत्रुओं को अच्छीरीतिसे आच्छादितकिया शल्यके हाथसे घायल पाण्डवीय सेना

---

armies opposed the Pandavas 20 Then Shalya showered his arrows over Yudhishthir He wounded Bhism, the sons of Drupad, Nakul Sahadev, Dhrishtadyumn, Satyaki and Shikhandi with his gold-decked arrows Then thousands of Somaks and Prabhadraks were seen falling down by Shalya's arrows like flights of locusts or lightning Elephants, horses foot and car warriors fell down shrieking, wounded by Shalya's arrows. The brave king of Madra, roaring like thunder covered the foes with his arrows. Wounded by Shalya, the Pandav army ran to Yudhishthir Then brave Shalya, having destroyed your army with his arrows, wounded

पाण्डवानामनीकिनी । अजातशत्रु कौन्तेय मभ्यधावद्युधिष्ठिरम् ॥ २९ ॥ तां समर्दं तत सत्य ह्युग्रस्य शितै शरैः । शरवर्षेण महता युधिष्ठिरमपीडयत् ॥ ३० ॥ समापतन्तं पत्यश्वैः क्रुद्धो राजा युधिष्ठिर । अवारयच्छरैस्तीक्ष्णैर्मत्त द्विपमिवांकुशैः ॥ ३१ ॥ तस्य शल्य शरं घोरं मुमोचाशीविषोपमम् । स निर्भिद्य महात्मान वेगेन न्यपतच्च गाम् ॥ ३२ ॥ ततो वृकोदरः क्रुद्ध शल्यं विव्याध सप्तभिः । पञ्चभिः सहदेवस्तु नकुलो दशभिः शरैः ॥ ३३ ॥ द्रौपदेयाश्च शत्रुघ्नं शूरमार्त्तायनिं शरैः । अभ्यवर्षन्महाभागा मेघा इव महीधरम् । ३४ ॥ ततो दृष्ट्वा तुद्यमानं शल्यं पार्थैः समन्ततः । कृतवर्मा कृपश्चैव संक्रुद्धावभ्यधावताम् ॥३५॥ उलूकश्च महावीर्यः शकुनिश्चापि सौबलः । स्मयमानस्तु शनकैरश्वत्थामा महारथः । तव पुत्राश्च कार्त्स्न्येन जुगुपुः शल्यमाहवे ॥ ३६ ॥ भीमसेन त्रिभिर्विध्वा कृतवर्मा शिलीमुखैः । बाणवर्षेण महता क्रुद्धरूपमवार

कुन्तीके पुत्र अजातशत्रु युधिष्ठिर की ओर दौड़ी । २९ । इससे पीछे बड़े पराक्रमी शल्य ने तीक्ष्णवाणों से उस सेनाको युद्धमें मर्दन करके बड़ी बाणों की वर्षा से युधिष्ठिर को पीड़ामान किया ।३०। क्रोधयुक्त राजा युधिष्ठिरने पति और घोड़ों समेत उस आर्तहुये शल्यको तीक्ष्णवाणों से ऐसे रोका जैसे कि अंकुशों से मतवाले हाथीको रोकते हैं । ३१ । शल्यने विषैले सर्पके समान घोरवाण उसके ऊपर छोड़ा वह बाण महात्मा युधिष्ठिरको छेदकर बड़ी तीव्रता से पृथ्वीपर गिरा । ३२ । इसके पीछे क्रोधयुक्त भीमसेन ने शल्यको सात बाणों से घायल किया सहदेव ने पांचसे और नकुलने दशवाणोंसे घायल किया । ३३ । और द्रौपदीके पुत्र उस शत्रुओं के मारनवाले शल्य पर बाणों की ऐसी वर्षा करनेलगे जैसे कि बादल पर्वत पर करते हैं । ३४ । इस के पीछे चारोंओर को पांडवों के हाथसे पीड़ामान् शल्यको देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतवर्मा और कृपाचार्य सम्मुख दौड़े । ३५ । और बड़ा पराक्रमी उलूक और सौबलका पुत्र शकुनी यह सब सम्मुखगये । फिर युद्धमें महाबली अश्वत्थामा और आपके सब पुत्रोंने धीरेपने से मिलकर शल्यकी रक्षाकरी । ३६ । कृतवर्मा ने शिली मुख नाम तीनवाणों से

Yudhishthir 30 Yudhishthir, checked the advance of Shalya as an elephant is checked with goads Shalya discharged at him an arrow like a poisonous serpent, which pierced him and fell down on the ground Bhim then wounded Shalya with seven arrows. Sahadev and Nakul wounded him with five and ten arrows respectively. The sons of Draupadi showered their arrows on Shalya like rain Seeing Shalya wounded by the Pandavas from all sides Kritvarma and Kripacharya rushed to help him. Brave Ulūk and Shakuni the son of

घ्नीं ॥ ३७ ॥ धृष्टद्युम्नं कृपः क्रुद्धो बाणवर्षैरताडयत् । द्रौपदेयांश्च शकुनिर्यमौ च द्रौणिरभ्ययात् ॥ ३८ ॥ दुर्योधनो युधांश्रेष्ठ आहवे केशवार्जुनौ । समभ्ययादुग्रतेजाः शरैश्चाप्यहनद्बली ॥ ३९ ॥ एवं द्वन्द्वशतान्यासंस्त्वदीयानां परैः सह । घोररूपाणि चित्राणि तत्र तत्र विशाम्पते ॥ ४० ॥ ऋक्षवर्णान् जघानाश्वान् भोजो भीमस्य संयुगे । सोऽवतीर्य रथोपस्थाद्धताश्वः पाण्डुनन्दनः । कालो दण्डमिवोद्यम्य गदापाणिरयुध्यत ॥ ४१ ॥ प्रमुखे सहदेवस्य जघानाश्वांश्च मद्रराट् । ततः शल्यस्य तनयं सहदेवोऽसिनावधीत् ॥ ४२ ॥ गौतमः पुनराचार्यो धृष्टद्युम्नमयोधयत् । असम्भ्रान्तमसम्भ्रान्तो यत्नवान् यत्नवत्तरम् ॥ ४३ ॥ द्रौपदेयांस्तथा वीरानेकैकं दशभिः शरैः । अविध्यदाचार्यसुतो नातिक्रुद्धः स्मयन्निव ॥ ४४ ॥ पुनश्च भीमसेनस्य जघानाश्वांस्तथाहवे । सोऽवतीर्य रथात्तूर्णं हताश्वः पाण्डुनन्दनः ॥ ४५ ॥ कालो दण्डमिवोद्यम्य गदां क्रुद्धो

भीमसेन को छेदकर बड़ी बाणों की वृष्टिसे से उस क्रोधरूपको रोका । ३७ । इसके पीछे क्रोधयुक्तने बाणोंकी वर्षासे धृष्टद्युम्न को पीड़ामान किया शकुनी द्रौपदीके पुत्रोंके और अश्वत्थामा नकुल और सहदेव के सम्मुख गया । ३८ । युद्ध कर्त्ताओं में श्रेष्ठ बड़ा तेजस्वी पराक्रमी दुर्योधन युद्धमें अर्जुन और केशव जीके सम्मुख गया और बाणों सेभी घायल किया । ३९ । हे राजा इसप्रकार जहां तहां आपके शूरवीरों के सैकड़ों द्वन्द्वयुद्ध शत्रुओं के साथ महा घोररूप और अपूर्वहुये । ४० । भोजवंशी कृतवर्मा ने युद्धमें भीमसेनके रीछ वर्ण घोड़ों को मारा मृतक घोड़ेवाले उस पांडुननन्दन भीमसेनने रथकी बैठकसे उतरकर कालदंडके समान हाथमें गदाको लेकर युद्धकिया । ४१ । राजामद्र ने सहदेवके सम्मुख उन घोड़ोंको मारा फिर सहदेवने शल्यके पुत्रको खड्गसे मारा । ४२ । और कृपाचार्य धृष्टद्युम्न से युद्ध करनेलगे भयजनित व्याकुलता से रहित उपाय करनेवाले आचार्यके पुत्र गुरुजी उस भ्रांती से रहित उपाय करनेवाले धृष्टद्युम्न से अच्छेप्रकार से लड़ न्यून क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने मन्द मुसकान के साथ द्रौपदी के प्रत्येक शूरवीर पुत्र को दश दश बाणों से घायल किया । ४४ । इसके पीछे भीमसेन के घोड़ों को मारा मृतक घोड़ेवाले बड़े पराक्रमी उस पाण्डुनन्दन

Saval faced the Pandavas. Then Ashwathama and your sons guarded Shalya. Kritvarma pierced Bhim with three arrows and then checked him with many more. He wounded Dhrishtadyumn too Shakuni opposed the sons of Kunti and Ashwathama opposed Nakul and Sahadev. Glorious Duryodhan faced Arjun and Keshav and wounded them with arrows. Thus your warriors fought many duels with the Pandavas. 40. Kritvarma slew Bhim's horses. Bhim got down from his car and fought with his mace which was like the staff of Yam. The king of Madra then slew Sahadeva's horses and the latter slew Shalya's son with his sword. Kripacharya fought with Dhrishtadyumn. The two great warriors fought well. Then Ashwa

महाबल । पोथयामास तुरंगान् रथञ्च कृतवर्मणः । कृतवर्मा त्ववप्लुत्य रथात्तस्माद् पाक्रामत् ॥ ४६ ॥ शल्योऽपि राजन् संक्रुद्धो निघ्नन् सोमकपाण्डवान् । पुनरेव शितैर्बाणैर्युधिष्ठिरमपीडयत् ॥ ४७ ॥ तस्य भीमो रणे क्रुद्धः संदश्य दशनच्छदम् । विनाशायाभिसन्धाय गदामादत्तवीर्यवान् ॥४८॥ यमदण्डप्रतीकाशां कालरात्रिमिवोद्यताम् । गजवाजिमनुष्याणां प्राणान्तकरणीमपि ॥ ४९ ॥ हेमपट्टपरिक्षिप्तामुल्कां प्रज्वलितामिव । शैक्यां व्यालीमिवात्युग्रां वज्रकल्पामयोमयीम् ॥ ५० ॥ चन्दनागुरुपङ्काक्तां प्रमदामीप्सितामिव । वसामेदोसृग्दिग्धाङ्गीं जिह्वां वैवस्वतीमिव ॥ ५१ ॥ पटुघण्टारवशतां वासवीमशनीमिव । निर्मुक्ताशीविषाकारां पृक्तां गजमदैरपि ॥ ५२ ॥ त्रासनीं रिपुसैन्यानां स्वसैन्यपरिहर्षणीम् । मनुष्यलोके विख्यातां गिरिशृङ्गविदारणीम् ॥५३॥

भीमसेनने शीघ्रही रथसे उतरकर कालदण्ड के समान गदा को उठाकर कृतवर्मा के रथ और घोड़ों को चूर्ण किया कृतवर्माभी उस रथ से कूदकर हटगया । ४६ । हेराजा फिर सोमक और पाण्डवों को मारते अत्यन्त क्रोधयुक्त शल्यने भी तीक्ष्ण बाणों से युधिष्ठिर को फिर पीडामान किया । ४७ । क्रोधयुक्त दांतोंको पीसकर पराक्रमी भीमसेन ने युद्धमें उसके नाश के निमित्त अवकाश देखकर गदाको लिया । ४८ । जो कि यमराजके दण्डरूप कालरात्रि के समान ऊंची हाथी घोड़े और मनुष्यों के प्राणों की नाश करनेवाला सुवर्ण के वस्त्रोंसे मढ़ीहुई ज्वलित उल्काके समान शैय्यामें रहनेवाली सर्पिणी के समान बड़ी उग्र वज्रके समान ।५०। लोहमयी चन्दन और अगरसे लिप्त स्वेच्छाचारी तरुण स्त्रीके समान वसा रुधिरसे लिप्त अङ्ग वैवस्वती देवी की जिह्वाके समान । ५१ । सैकड़ों सुंदर घण्टों के समान शब्दायमान इन्द्र वज्र के समान कांचली से छुटे विषधर सर्पकी समान हाथीके मदों से सम्बन्ध रखनेवाली । ५२ । शत्रुओं की सेनाओंको भयभीत करनेवाली अपनी सेनाओंकी प्रसन्न करनेवाली त्रिलोकी में विख्यात पर्वतोंके शिखरोंकी तोड़नेवालीथी । ५३ । जैसे कि बलवान

them wounded Draupadi's sons with ten arrows each and then slew Bhim's horses. Bhim the son of Pandu got down from his car and with his mace smashed the car and horses of Ashwathama. Kritavarma jumped down from his car 46 Then slaying the Somakas and Pandavas, enraged Shalya again wounded Yudhishthir with his arrows. Brave Bhim gnashing his teeth in anger took up his mace like the staff of Yama or the night of Death slayer of elephants horses and men, covered with gold cloth bright like a spark of fire, made in Shaikya dreadful like a snake or serpent, made of iron, decked with sandal paste and agur, self willed like a young woman like the tongue of Vaivaswati, stained in blood and fat ringing with beautiful bells, like vajra or like a snake freed from its skin and dispeller of the madness of elephants

यथा कैलासभवने महेश्वरसखं बली । आह्वयामास कौन्तेयः संक्रुद्धमलकाधिपम्
। ५४ । यया मायामयान् दृप्तान् सुबहून् गन्धमादने । जघान गुह्यकान् क्रुद्धो मन्दा
रार्थे महाबलः । वार्यमाणोऽपि बहुभिर्द्रौपद्याः प्रियमास्थितः ॥ ५५ ॥ तां वज्रमणि
रत्नाढ्यामष्टास्रिं वज्रगौरवाम् । समुद्यम्य महाबाहुः शल्यमभ्यद्रवद्रणे ॥५६॥ गदया
युद्धकुशलस्तया दारुणनादया । पोथयामास शल्यस्य चतुरोऽश्वान्महाजवान् ।५७॥ततः
शल्यो रणे क्रुद्धः पीने वक्षसि तोमरम् । निचखान नदन् वीरो वर्म भित्त्वा च सोऽभ्य
गात् ॥५८॥वृकोदरस्त्वसम्भ्रान्तस्तमेवोद्धृत्य तोमरम् । यन्तारं मद्रराजस्य निर्बिभेद ततो
हृदि ॥ ५९ ॥ स भिन्नमर्मा रुधिरं वमन् वित्रस्तमानसः । पपाताभिमुखो दीनो मद्ररा
जस्त्वपाक्रमत् । ६०॥कृतप्रतिकृतं दृष्ट्वा शल्यो विस्मितमानसः । गदामाश्रित्य धीरात्मा

भीमसेन ने कैलाश भवन में शिवजीके मित्र अत्यन्त क्रोधयुक्त कुबेरजी को
बुलाया । ५४ । और मन्दिरके लिये मायारूप अहंकारी बहुत से गुह्यकों को गंध
मादन पर्वतपर मारा बहुत से रुकेहुये और द्रौपदी के हितमें नियत होकर भीमसेन
ने ऐसा पराक्रम किया । ५५ । वह महाबाहु वज्रमणि और रत्नोंसे जटित अष्ट
कोण रखनेवाली वज्रके समान महाभारी उसगदाको उठाकर युद्ध में शल्य के
सम्मुख गया । ५६ । उस युद्ध कुशल ने इस भयकारी शब्दवाली गदासे शल्य
के चित्तके समान शीघ्रगामी चारों घोड़ोंको मारा । ५७ । इसके पीछे युद्धमेंक्रोध
युक्त गर्भतेहुये वीर शल्यने तोमरको भीमसेनकी बड़ी छातीपर मारा वह उसके
कवच को काटकर गिरपड़ा । ५८ । फिर भयजनित व्याकुलता रहित भीम
सेनने उसी तोमरको उठाकर राजा मद्र के सारथीको छातीपर छेदा वह टूटे
कवच चित्तमें भयभीत रुधिर को वमन करता । ५९ । महादुःखी होकर सम्मु
खही गिरपड़ा और राजा मद्र हटगया आश्चर्य चित्त धैर्यमती बुद्धिवाले राजाशल्य
ने । ६० । कर्म के बदले कर्म को देखकर गदाको लेकर शत्रुको देखा उसके

52. It was the terror of foes, giver of joy to friends, of world wide fame breaker of mountain peaks, with which mighty Bhim challenged Kuver the friend of Shiv and killed many Guhyaks at Gandhmadan for the sake of the flowers to please Draupadi, and with which he did many deeds of prowess although he was opposed by many. 55. Such was the heavy octagonal mace studded with precious jewels and hard as vajra, which Bhim used to oppose Shalya. With it he slew the four horses of Shalya, swift like the mind. Enraged Shalya, with a roar, struck a tomar at the breast of Bhim. It cut through Bhim's armour and fell down on the ground. Without any anxiety or fear, Bhim took up the same tomar and pierced with it the breast of Shalya's driver who fell down dead, vomitting blood. The king of Madra, see

प्रत्यमित्रमवैक्षत ॥ ६१ ॥ ततः सुमनसः पार्था भीमसेनमपूजयन् । तद्दृष्ट्वा कर्म संग्रामे घोरमक्लिष्टकर्मणः ॥ ६२ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि संकुलयुद्धे एकादशोऽध्यायः ११ ॥

सञ्जय उवाच । पतितं प्रेक्ष्य यन्तारं शल्यः सर्वायसीं गदाम् । आदाय तरसा
राजंस्तस्थौ गिरिरिवाचलः ॥ १ ॥ तं दीप्तमिव कालाग्निं पाशहस्तमिवान्तकम् । स
शृङ्गमिव कैलासं सवज्रमिव वासवम् ॥ २ ॥ सशूलमिव हर्यक्षं वने मत्तमिव द्विपम् ।
जवेनाभ्यपतद्भीमः प्रगृह्य महतीं गदाम् ॥ ३ ॥ ततः शङ्खप्रणादश्च तूर्याणां च सह
स्रशः । सिंहनादश्च सञ्जज्ञे शूराणां हर्षवर्धनः ॥ ४ ॥ प्रेक्षन्तः सर्वतस्तौ हि योधा
योधमहाद्विपौ । तावकाश्च परे चैव साधुसाध्वित्यपूजयन् ॥ ५ ॥ न हि मद्राधिपादन्यो

पीछे प्रसन्नचित्त पांडवोंने युद्धमें असाधारण कर्मवाले भीमसेनके उसकर्मको देखकर उसकी प्रशंसा करी ६२।

अध्याय १२ ॥

संजय बोले कि हे राजा तब शल्य सारथीको गिराहुआ देखकर केवल लोहमयी गदाको तीव्रतासे लेकर पर्वतके समान निश्चय होकर नियतहुआ । १ । भीमसेन तीव्रतासे बड़ी गदाको लेकर प्रकाशित कालाग्निके समान पाशधारी यमराज शिखरधारी कैलास के समान वज्रधारी इन्द्रके शूलधारी रुद्रके और वनके मतवाले हाथीके समान शल्य के सम्मुख दूटा । ३ । उसके पीछे शंखादि हजारों बाजोंके कठिन शब्द और शूरोंकी प्रसन्नताके बढ़ानेवाले सिंहनाद उत्पन्न हुये । ४ । सब ओरसे उस रणभूमिके बड़ेहाथीरूप भीमसेन और शल्यको देखकर आपके और पांडवोंके शूरोंने धन्य धन्य शब्दकिया । ५ । युद्ध में शल्य और

ing that fair reply to his blow, opposed with his mace. The Pandavas applauded the matchless prowess of Bhim. 62.

CHAPTER XII

Sanjaya said, " Seeing his driver fallen down, Shalya at once took up his iron mace and stood like a hill. Bhim too, came down upon Shalya, glorious like the fire of pralaya, Yam, Kailas, Indra, Rudra or elephant. Then there were heard sounds of thousands of musical instruments and leonine roars, giving joy to the warriors. The Pandavas

रामाद्वा यदुनन्दनात् । सोढुमुत्सहते वेगं भीमसेनस्य संयुगे ॥ ६ ॥ तथा मद्राधिप
स्यापि गदावेगं महात्मनः । सोढुमुत्सहते नान्यो योधो युधि वृकोदरात् ॥ ७ ॥ तौ
वृषाविव नर्दन्तौ मण्डलानि विचेरतुः । आवल्गितपदौ वीरौ मद्रराजवृकोदरौ ॥ ८ ॥
मण्डलावर्तमार्गेषु गदाविहरणेषु च । निर्विशेषमभूद्युद्धं तयोः पुरुषसिंहयोः ॥९॥ तप्त
हेममयैः शुभ्रैर्बभूव भयवर्द्धिनी । अग्निज्वालैरिवाबद्धा पट्टैः शल्यस्य सा गदा ॥१०॥
तथैव चरतो मार्गान् मण्डलेषु महात्मनः । विद्युदभ्रप्रतीकाशा भीमस्य शुशुभे गदा
॥ ११ ॥ ताडिता मद्रराजेन भीमस्य गदया गदा । दह्यमाने रथे राजन् ससृजे पाव
कार्चिषः ॥ १२ ॥ तथा भीमेन शल्यस्य ताडिता गदया गदा । अङ्गारवर्षं मुमुचे
तदद्भुतमिवाभवत् ॥ १३ ॥ दन्तैरिव महानागौ शृङ्गैरिव महर्षभौ । तोत्त्रैरिव
तदान्योन्यं गदाग्राभ्यां निजघ्नतुः ॥ १४ ॥ तौ गदानिहतैर्गात्रैः क्षणेन रुधिरोक्षितौ ।

यदुनंदन बलदेवजीके सिवाय दूसरा मनुष्य भीमसेन के वेगके सहन को समर्थ
नहीं होसक्ता है ।६। उसी प्रकार युद्धमें भीमसेनके सिवाय दूसरा शूरवीर महात्मा
शल्यकी गदाके वेगके सहने को उत्साह नहीं करसक्ता है ७। वह चेष्टा करनेवाले
वृषभकेतुल्य गर्जनेवाले गदाधारी शल्य और भीमसेन मण्डलोंको घूमे ।८।
मंडल घूमने के मार्ग और गदाके प्रहारों में उनदोनों पुरुषोत्तमों का युद्ध समान
हुआ ।९।शल्यकी घुमाई हुई वह गदा तपायेहुये सुवर्णकी बनीहुई प्रज्वलित अग्नि
के समान उज्वल वस्त्रोंसे भयकी बढानेवाली हुई ।१०। इसीप्रकार मण्डलों
में मार्गोंके घूमनेवाले महात्मा भीमसेन की गदा बिजली बादल से समान शोभा
यमान हुई ।११। हे राजा राजामद्रकी गदासे घायल आकाश में चलनेवाले
के समान भीमसेनकी गदाने अग्निकी ज्वालाओं को छोड़ा ।१२। इसी प्रकार
भीमसेनकी गदा से घायल शल्यकी गदा अंगारों की वर्षा करनेवाली हुई वह
आश्चर्यमाहुआ ।१३। जैसे दोबड़े हाथी दांतों से और बड़े बैल सींगोंसे प्रहार
करैं उसीप्रकार उनदोनोंनेभी परस्पर गदाओं से प्रहार किया फिर वहदोनों क्षण
मात्रमेंही रुधिरमे लिप्तशरीर गदा से घायल अंग ऐसे देखने के योग्यहुये जैसे

and Kauravas cheered Bhim and Shalya who stood in the field of battle like elephants. 5. None except Shalya and Baldev the Yadav could withstand the velocity of Bhim; similarly, none except Bhim could have the courage to bear the blows of Shalya's mace. Shalya and Bhim, with their maces, moved in circles like two bulls. Both the warriors were equal in their movement and the use of the mace. The mace hurled by Shalya, decked with burnished gold and covered with cloth bright as fire, was the terror of foes. 10. Similarly, the mace of Bhim, who moved in circles, flashed like lightning in the midst of clouds. Bhim's mace struck by that of Shalya in the air, shed sparks of fire. Similarly Shalya's mace dropped fire as it stuck Bhim's

प्रेक्षणीयतराकारौ पुष्पिताविव किंशुकौ ॥ १५ ॥ गदया मद्रराजेन सव्यदक्षिणमाहतः ।
भीमसेनो महाबाहुर्न चचालाचलोपमः ॥ १६ ॥ तथा भीमगदावेगैस्ताड्यमानो मुहु
र्मुहुः । शल्यो न विव्यथे राजन् दन्तिनेव महागिरिः ॥ १७ ॥ शुश्रुवे दिक्षु सर्वासु
तयोः पुरुषसिंहयोः । गदानिपातसंह्रादो वज्रयोरिव निस्वनः ॥ १८ ॥ निवृत्य तु महा
वीर्यौ समुद्यतमहागदौ । पुनरन्तरमार्गस्थौ मण्डलानि विचेरतुः ॥ १९ ॥ अथा
भ्येत्य पदान्यष्टौ सन्निपातोऽभवत्तयोः । उद्यम्य लोहदण्डाभ्यामतिमानुषकर्मणोः ॥ २० ॥
प्रार्थयानौ तदान्योन्यं मण्डलानि विचेरतुः । क्रियाविशेषं कृतिनौ दर्शयामासतुस्तदा
॥ २१ ॥ अथोद्यम्य गदे घोरे सशृङ्गाविव पर्वतौ । तावाजघ्नतुरन्योन्यं यथा भूमिचले
ऽचलौ ॥ २२ ॥ तौ परस्परवेगाच्च गदाभ्यां भृशविक्षतौ । युगपत् पेततुर्वीरावुभाविन्द्र
ध्वजाविव ॥ २३ ॥ उभयोः सेनयोर्वीरास्तदा हाहाकृतोऽभवन् । भृशं मर्मण्यभिहता

कि किंशुकके दो वृक्ष होते हैं ॥ १५ ॥ शल्यकी गदा से वाम और दक्षिणओर से घायल वह पर्वतके समान भीमसेन कंपायमान नहीं हुआ ॥ १६ ॥ उसी प्रकार भीमसेनकी वेगयुक्त गदा से बारम्बार घायल शल्यभी ऐसे पीड़ामान नहीं हुआ जैसे कि हाथी से घायल पर्व्वत पीड़ामान नहीं होता ॥ १७ ॥ उन दोनों पुरुषोत्तमों की गदाओंके आघातित शब्द जो कि वज्र के शब्द की समान थे दशों दिशाओं में सुनेगये ॥ १८ ॥ गदा ऊंची करनेवाले बड़े पराक्रमी वह दोनों लौटकर फिर मार्गोंमें नियत होकर मण्डलों को घूमे ॥ १९ ॥ इसके पीछे आठचरण पास आकर और गदाको उठाकर बुद्धिसे बाहर कर्म करनेवाले उन दोनों की लड़ाई लोहके दंडोंसे हुई ॥ २० ॥ तब वह दोनों बड़े कुशल महा अभ्यासी विजय के चाहनेवाले दोनों मण्डलों को घूमे उससमय दोनों ने अपने अपने मुख्य कर्म्मों को दिखाया ॥ २१ ॥ इसके पीछे उन दोनों ने शिखरधारी पर्वतोंके समान घोर गदाओं को उठाकर परस्पर में ऐसे घायल किया जैसे कि भूकम्प में दो पर्व्वत परस्पर घायल करते हैं ॥ २२ ॥ वह दोनों वीर परस्पर क्रोधयुक्त गदाओं से अत्यन्त घायल इन्द्र ध्वजा के समान एक साथ ही गिरपड़े ॥ २३ ॥ तब दोनों

mace and the people were amazed. They fought with their maces as two elephants fight with their tusks or as two bulls fight with their horns. With their bodies wounded by mace blows, they looked like Kinshuk trees in bloom. 15. Wounded by Shalya's mace from the right and left, Bhim remained motionless like a hill. Similarly, Shalya too, wounded by Bhim's mace remained unshaken like a hill struck by an elephant. The sounds of the blows of their bows were heard in all directions. With upraised mace, the two warriors moved in circles. Then moving eight paces forward, the two wonder-working warriors fought with iron clubs. 20. Then they moved in circles, wishing to gain victory and showing their skill. Then they raised their maces like

शुभावास्तां सुविह्वलौ ॥ २४ ॥ ततः स्वरथमारोप्य मद्राणामृषभं बली । कृपोवाह:
कृपःशल्यं तूर्णमायोधनाद्य ॥२५॥ क्षीवद्विह्वलत्वात् निमेषात् पुनरुत्थितः । भीम
सेनो गदापाणिः समाह्वयत मद्रपम् । २६ ॥ ततस्तु तावका शूरा नानाशस्त्रसमा
युताः । नानावादित्रशब्देन पाण्डुसेनामयोधयन् ॥ २७ ॥ भुजावुच्छ्रित्य शस्त्रञ्च शब्देन
महता ततः । अभ्यद्रवन्महाराज दुर्योधनपुरोगमा ॥ २८ । तदनीकमभिप्रेक्ष्य ततो
पाण्डु नन्दनाः । प्रययुः सिंहनादेन दुर्योधनकुरान्मान् ॥ २९ ॥ तेषामापततां तूर्णं
पुत्रस्ते भरतर्षभ । प्रासेन चेकितानं वै विव्याध हृदये भृशम् ॥३०॥ स पपात रथोपस्थे
तव पुत्रेण ताडितः रुधिरौघपरिक्लिन्नः प्रविश्य विपुलं तमः ॥ ३१ ॥ चेकितानं तु दृष्ट्वा
पाण्डवानां महारथाः । असक्तमभ्यवर्षन्त शरवर्षाणि भागशः । ३२ ॥ तावकानामनी

सेनाओंके वीर लोग हाहाकार करनेलगे मर्म स्थलों में अत्यन्त घायल दोनों अचेत होगये । २४ । इसके पीछे पराक्रमी कृपाचार्य राजामद्रको अपने रथपर बैठाकर युद्धभूमि से दूर लेगये । २५ । भीमसेन नशाकरनेवाले के समान एक निमिष मेंही अचेततामें सचेत होकर उठा और गदा हाथमें लेकर राजामद्रको बुलाया । २६ । इसके पीछे नानाप्रकारके शस्त्रों से संयुक्त आपके शूरवीरों ने नानाबाजों समेत पाण्डवी सेनासे युद्ध किया । २७ । हे महाराज इसके अनन्तर वह सब शूरवीर जिनका अग्रवर्त्ती दुर्योधनथा दोनों भुजा और शस्त्रों को ऊंचा करके बड़े शब्दों समेत सम्मुख गये । २८ । फिर वह पाण्डुनन्दन उससेना को सम्मुख देखकर सिंहनादों समेत दुर्योधनादिकके सम्मुखगये । २९ । हेभरतर्षभ आपके पुत्रने शीघ्रही उनआते हुओंके मध्यमें चेकितानको प्रास से हृदयपर कठिन घायलकिया । ३० । आपके पुत्रसे घायल रुधिरसे लिप्त वह चेकितान बड़ी अचेतताको पाकर रथके बैठनेके स्थानपर गिरपड़ा । ३१ । पांडवोंके महारथियोंने चेकितानको घायल और अचेत देखकर बारीसे बाणोंकी वर्षाको बरसाया । ३२ ।

hill-tops and wounded each other like two hills falling over each other in an earthquake. Wounded by each other's maces, they fell down simultaneously like Indra's banners. The warriors of both armies cried in dismay. Wounded in the vital parts, they became insensible. Then Kripacharya took up Shalya on his car and removed him far from the field. 25. Like an intoxicated man, Bhim came to his senses in a moment and challenged the king of Madra to receive the blows of his mace. Your warriors, with the beat of musical instruments, fought bravely with the Pandav army. The warriors, led by Duryodhan, went to fight with upraised arms. The sons of Pandu opposed the Kaurav warriors. Your son wounded Chekitan on the breast. 30. Wounded by Duryodhan, Chekitan, with bleeding body fainted on his car. The Pandav warriors seeing Chekitan insensible,

केपु पाण्डवा जितकाशिन । व्यचरन्त महाराज प्रेक्षणीयाः समन्ततः ॥३३॥ कृपश्च
कृतवर्मा च सौबलश्च महाबलः । अयोधयन् धर्मराजं मद्रराजपुरस्कृताः ॥ ३४ ॥
त्रिसाहस्रा रथा राजंस्तव पुत्रेण चोदिताः । अयोधयन्त विजयं द्रौणिपुत्रपुरस्कृताः
॥ ३५ ॥ विजये धृतसङ्कल्पा समभित्यक्त जीविताः प्राविशंस्तावकाः राजन् हंसा
इव महत् सरः ॥ ३६ । ततो युद्धमभूद्घोरं परस्पर वधैषिणाम् । अन्योऽन्यवधसं
युक्तमन्योन्यप्रीति वर्द्धनम ॥ ३८ ॥ तस्मिन् प्रवृत्ते संग्रामे राजन् वीरवरक्षये।
अनिलेनेरित घोरमुत्तस्थौ पार्थिवं रजः ॥ ३९ ॥ श्रवणान्नामधेयानां पाण्डवानाञ्च
कीर्त्तनात् । परस्पर विजानीमो ये चायुध्यन्नभीतवत् ॥ ४० ॥ तद्रज पुरुषव्याघ्र
शोणितेन प्रशामितम् । दिशश्च विमला राजंस्तस्मिंस्तमसि नाशिते ॥४१ ॥ तथा
प्रवृत्ते संग्रामे भीमरूपे भयानके । तावकानां परेषाञ्च नासीत् कश्चित् पराङ्मुख
॥ ४२ ॥ ब्रह्मलोकपरा भूत्वा प्रार्थयन्तो जयं युधि । सुयुद्धेन पराक्रान्ता नराः स्वर्ग

हे महाराज विजय से शोभायमान और चारोंओरसे दर्शनीय पांडव लोग आपकी सेनामें घूमनेलगे । ३३ । बड़े पराक्रमी कृपाचार्य, कृतवर्मा और शकुनी ने जिनमें अग्रवर्त्ती राजामद्रथा उन सबने धर्म्मराज से युद्ध किया ।३४। हे, राजा आपके पुत्रकी प्रेरणासे उन तीनहजार रथियोंने जिनके अग्रवर्त्ती अश्वत्थामा थे अर्जुनसे युद्धकिया । ३५ । विजयमें संकल्प करनेवाले और युद्धमें जीवन को त्यागनेवाले आपके शूरवीरों ने सेनामें ऐसे प्रवेश किया जैसे कि हंस बड़े सरोवरमें प्रवेश करते हैं । ३६ । इसके पीछे परस्पर मारनेके अभिलाषी उन वीरों का महाघोर युद्धहुआ जोकि परस्पर मारने की अभिलाषासे युक्त और अन्योन्य प्रीति बढ़ानेवालाथा । ३८ । हे श्रेष्ठ राजा वीरोंके नाशकारी उस युद्धके जारी होनेपर हवासे उड़ाईहुई घोर धूल पृथ्वी से उठी । ३९ । पांडवों के कहने और नामोंके सुननेसे हमने परस्परमें उनको जाना जोनिर्भयके समान युद्ध करतेथे।४०। हे पुरुषोत्तम वह धूल रुधिरसे शान्तहोगई उस अंधेरेके दूरहोनेपर साफ २ दिशा विदितहुई । ४१ । इसप्रकार भयभीतों के भय के बढ़ानेवाले घोर युद्धके वर्त्तमान होनेपर आपके और प्रतिपक्षियों के शूरवीरोंमें से किसीने मुखको नहींमोड़ा।४२।

showered their arrows and roamed victoriously in the midst of your army. Glorious Kripacharya, Kritvarma and Shakuni, led by Shalya, fought with Yudhishthir. Urged by your son, three thousand warriors led by Ashwathama, fought with Arjun. 35. Your warriors careless of their lives entered the field of battle as swans enter a lake. Then desirous of slaying one another, they fought very hard to please their friends. A severe storm of dust arose from that destructive battle. We could distinguish the Pandavas and our warriors by calling their name. 40. Then the dust subsided, the darkness disappeared and the directions became clear. When the battle, terrifying to the timid,

मर्माण्यत्र ॥ ४३ ॥ भर्तृपिण्डविमोक्षार्थं मित्रकार्य्यविनिश्चिताः । स्वर्गसंसक्तमनसो योधा युयुधिरे तदा ॥ ४४ ॥ नानारूपाणि शस्त्राणि विसृजन्तो महारथाः । अन्योन्यमभिगर्जन्त प्रहरन्त परस्परम् ॥ ४५ ॥ हत विध्यत गृन्हीत प्रहरध्व निकृन्तत । इति स्म वाचः श्रूयन्ते तव सैन्यस्य वै रणे ॥ ४६ ॥ ततो शल्यो महाराज धर्मराजं युधिष्ठिरम । विव्याध निशितैर्बाणैर्हन्तुकामो महारथम् ॥ ४७ ॥ तस्य पार्थो महाराज नाराचान् वै चतुर्दश । मर्माण्युद्दिश्य मर्मज्ञो निचखान् हसन्निव ॥४८। आवार्य्य पाण्डवं बाणैर्हन्तुकामो महायशा । विव्याध समरे क्रुद्धो बहुभिः कङ्कपत्रिभिः ।४९॥ अथ भूयो महाराज शरेणानतपर्वणा । युधिष्ठिर समाजघ्ने सर्वसैन्यस्य पश्यत ॥ ५० ॥ धर्मराजोपि संक्रुद्धो मद्रराज महायशा । विव्याध निशितैर्बाणैः कङ्कबर्हिणवाजितैः ॥ ५१॥ चन्द्रसेनञ्च सप्तत्या सूतञ्च नवभिः शरैः । द्रुमसेनञ्चतु षष्ट्या

युद्धभूमिमें शुभयुद्धसे विजय के अभिलापी और स्वर्गके चाहनेवाले लोग ब्रह्मलोक के अभिलापी होकर चढ़ाई करनेवाले हुये । ४३ । तब स्वामीके कार्य्य में निश्चय करनेवाले और स्वर्गमें प्रवृत्तचित्त शूरवीर स्वामीके अन्नोदकके विमोक्षार्थ युद्ध करनेलगे । ४४ । महारथी लोग नानाप्रकार के शस्त्रोंको छोड़तेहुये परस्पर सम्मुख गर्जतेहुये युद्ध में प्रवृत्तहुये और प्रहार करनेलगे । ४५ । उससमय आप की और उनकी सेनामें मारो छेदो पकड़ो प्रहारकरो यहीशब्द सुनेगये । ४६ । हेमहाराज इसके पीछे मारने के अभिलापी शल्यने महारथी धर्मराज युधिष्ठिरको तजधार बाणों से घायलकिया । ४७ । फिर मर्मके ज्ञाता हंसतेहुये युधिष्ठिरने मर्मो को लक्ष्यकरके चौदह नाराचोंकोमारा । ४८ । फिर युद्धमें क्रोधयुक्त राजा मद्रने कंकपक्षवाले बहुतसे बाणोंसे युधिष्ठिरको ढककर घायलकिया।४९। हेमहाराज फिर सबसेनाके देखते टेढ़े पर्ववाले बाणोंसेभी युधिष्ठिरको घायलकिया । ५० । क्रोधयुक्त बड़ेयशवान धर्मराजनेभी तीक्ष्णधार कंकऔर मोरपक्षसे जटित बाणोंसे राजामद्रको घायलकिया ।५१ । इसको घायलकरके महारथीने चन्द्रसेनको सत्तर

was thus raging, none of the warriors of both sides turned face De sirous of fighting and going to heaven, the warriors attacked one an other Intent on going to heaven through fighting, they tried to make amends for the food which they got from their masters. They encountered one another with loud roars and discharged their weapons Pierce, seize and slay were the words heard from both armies. 46 Shalya intent on slaying Yudhishthir, wounded him with sharp arrows Yudhishthir, with a smile, wounded him with fourteen darts on the vital parts The enraged king of Madra hid and wounded his adversary with his arrows. He again wounded Yudhishthir with pointed darts, 50 Yudhishthir was enraged at this and wounded the king of Madra with arrows fitted with Kank and peacock feathers. Then

निजघान महारथ ॥ ५२ ॥ चक्ररक्षे हते शल्य पाण्डवेन महात्मना । निजघान ततो राजश्चेदीन् वै पञ्चविंशति ॥ ५३ ॥ सात्यकिं पञ्चविंशत्या भीमसेनञ्च शप्तभि । माद्रीपुत्रौ शतेनाजौ विव्याध निशितैः शरैः ॥ ५४ ॥ एवं विचरतस्तस्य संग्रामे राजसत्तम । संप्रैषयच्छितान् पार्थः शरानाशीविषोपमान् ॥ ५५ ॥ ध्वजाग्रञ्चास्य समरे कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । प्रमुखे वर्त्तमानस्य भल्लेनापाहरद्रथात् ॥ ५६ ॥ पाण्डुपुत्रेण वै तस्य केतु छिन्न महाहवे । निपतन्तमपश्याम गिरिशृङ्गमिवाहतम् ॥ ५७ ॥ ध्वज निपतित दृष्ट्वा पाण्डवञ्च व्यवस्थितम् । संक्रुद्धो मद्रराजोऽभूच्छरवर्षं मुमोच ह ॥ ५८ ॥ शल्य सायकवर्षेण पर्जन्य इव वृष्टिमान् । अभ्यवर्षदमेयात्मा क्षत्रियान् क्षत्रियर्षभ ॥ ५९ ॥ सात्यकिं भीमसेनञ्च माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ । एकैकं पञ्चभिर्विद्ध्वा युधिष्ठिरमपीडयत् ॥ ६० ॥ ततो बाणमय जाल वितत पाण्डवोरसि । अपश्याम महाराज

बाणसे सारथीको नौबाणसे और द्रुमसेनको चौंसट बाणोंसे घायल किया ।५२। हे राजा महात्मा पांडव के हाथ से चक्र के रक्षक के मरने पर शल्यने पच्चीस चन्देरी देशियों को मारा । ५३ । रणभूमि में पच्चीस बाणसे सात्यकिको साठ बाणसे भीमसेनको और सौ बाणोंसे नकुलऔर सहदेवको घायलकिया ५४। क्षत्रियोंके नाश करनेवाले पाण्डवने विषैले सर्पोंके समान बाणों को उस इसप्रकार घूमने वाले के ऊपर फेंके । ५५ । कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरनें इस सम्मुख वर्त्तमानकी ध्वजाको रथके युद्ध द्वारा जुदाकिया । ५६ । हँसतेहुये पाण्डवने इसप्रकार से उसकी ध्वजा को काटा और हमने पर्वतके टूटे शिखरके समान उसको गिरतेहुये देखा । ५७ । मद्रका राजा गिरीहुईध्वजाको और सम्मुख वर्त्तमान युधिष्ठिरको देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर बाणोंकी वर्षा करने लगा ।५८। क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ बड़ा साहसी शल्य वर्षा करनेवाले बादलों के समान बाणों की वर्षासे क्षत्रियों पर वर्षा करनेलगा । ५९ । और उसने सात्यकि, भीमसेन, युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव इनकोपांच बाणों से छेदकर युधिष्ठिर को पीड़ामान किया । ६० । इसने पीछे युधिष्ठिर की

the brave warrior wounded Chandrasen with seventy darts, his coachman with nine and Drumsen with sixty four. At the fall of his wheel guards by the great Pandav, Shalya slew twenty five Chandari warriors. Then he wounded Satyaki with twenty five arrows, Bhim with seven and Nakul and Sahadev with a hundred. The Pandavas discharged at him arrows like poisonous snakes, Yudhishthir cut down his adversary's standard from his car. We saw the standard, cut down by the Pandav, falling like a mountain peak. Seeing his standard fallen and Yudhishthir before him, Shalya showered on him his arrows. Brave Shalya the best of warriors sent forth on warriors a flight of arrows like rain. Having wounded Satyaki, Bhim, Yudhishthir, Nakul and Sahadev, he wounded Yudhishthir again. We saw his arrows piercing

मेघजालमिवोद्गतम् ॥६१॥ तस्य शल्यो रणे क्रुद्धो बाणैः सन्नतपर्वभिः । दिशः प्रच्छादयामास प्रदिशश्च महारथ ॥ ६२ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा बाणजालेन पीडितः । बभूव हतविक्रान्तो जम्भो वृत्रहणा यथा ॥ ६३ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि शल्ययुधिष्ठिरयुद्धे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

सञ्जय उवाच । पीडिते धर्मराजे तु मद्रराजेन मारिष । सात्यकिर्भीमसेनश्च माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ । परिवार्य्य रथैः शल्यं पीडयामासुराहवे ॥ १ ॥ तमेकं बहुभिर्दृष्ट्वा पीड्यमानं महारथैः । साधुवादो महान् जज्ञे सिद्धाश्चासन् प्रहर्षिताः । आश्चर्यमित्यभाषन्त मुनयश्चापि सङ्गताः ॥ ३ ॥ भीमसेनो रणे शल्यं शल्यभूतं पराक्रमे ।

छातीपर चढेहुये मेघ जालकी समान फलेहुये बाण जालों को देखा । ६१ । युद्धमें क्रोधयुक्त महारथी शल्यने गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे उसकी दिशा और विदिशाओं को ढकदिया । ६२ । इसके पीछे बाणजालों से पीडामान राजा युधिष्ठिर पराक्रम से ऐसे रहित होगया जैसे कि इन्द्रके हाथसे जम्भासुर हुआथा । ६३ ।

अध्याय १२ ॥

सञ्जय बोले हे श्रेष्ठ राजामद्रकेहाथसे धर्मराजके पीडामानहोनेपर सात्यकि भीमसेन और माद्रीकेपुत्रोंने रथोंसे शल्यको घेरकर युद्धमें पीडामान किया । १ । बहुतसे महारथियों के हाथसे उस अकेले को पीडामान देखकर । २ । बड़ा धन्यवाद का शब्द उत्पन्नहुआ और सिद्धलोग बहुत प्रसन्नहुये और मिलेहुये मुनियों ने भी आश्चर्य माना । ३ । भीमसेन ने पराक्रम में शल्यरूप शल्यको युद्धमें

through Yudhishthir's breast like clouds. Brave Shalya hid him with *arrows in all directions. Wounded by arrows, Yudhishthir lost heart* like Jambh wounded by Indra. 63

CHAPTER XII

Sanjaya said: Yudhishthir being wounded by Shalya, Bhim, Satyaki and the sons of Madra surrounded the latter with their cars and wounded him in battle. People applauded and cheered, sidhas were pleased and the assembled munis were amazed. Bhim pierced valiant Shalya with one arrow and then wounded him with seven more. Satyaki wounded him with a hundred arrows for the sake of

एकेन विद्ध्वा बाणेन पुनर्विव्याध सप्तभिः ॥४। सात्यकिश्च शतेनैनं धर्मपुत्रप्रियेप्सया। मद्रेश्वरमथाकीर्य्य सिंहनादमथानदत् ॥ ५ ॥ नकुलः पञ्चभिश्चैनं सहदेवश्च सप्तभिः। विद्ध्वा तं तु ततस्तूर्णं पुनर्विव्याध सप्तभिः ॥ ६ ॥ स तु शूरो रणे यत्तः पीडितस्तैर्महारथैः। विकृष्य कार्मुकं घोरं वेगघ्नं भारसाधनम् ॥ ७ ॥ सात्यकिं पञ्चविंशत्या शल्यो विव्याध मारिष। भीमसेनं त्रिसप्तत्या नकुलं सप्तभिस्तथा ॥ ८ ॥ ततः सविशिखं चापं सहदेवस्य धन्विनः। छित्त्वा भल्लेन समरे विव्याधैनं त्रिसप्तभिः ॥ ९ ॥ सहदेवस्तु समरे मातुलं भूरिवर्चसम्। सज्यमन्यद्धनुः कृत्वा पञ्चभिः समताडयत् शरैराशीविषाकारैर्ज्वलज्ज्वलनसन्निभैः॥१०॥ सारथिं चास्य समरे शरेणानतपर्वणा। विव्याध भृशसंक्रुद्धस्तञ्च भूयस्त्रिभिः शरैः ॥ ११ ॥ भीमसेनस्तु सप्तत्या सात्यकिर्नवभिः शरैः। धर्मराजस्तथा षष्ट्या गात्रे शल्यं समार्पयत् ॥१२॥ ततः शल्यो महाराज निर्विद्धस्तैर्महारथैः। सुस्राव रुधिरं गात्रैर्गैरिकं पर्वतो यथा ॥ १३ ॥

एकबाण से घायलकरके फिर सातबाणोंसेछेदा फिर सात्यकी—धर्मपुत्रकी इच्छासे सौबाणों से राजामद्रको ढककर सिंहनादको गर्जा । ५ । नकुल ने पांचबाण से और सहदेव ने सात बाणोंसे उसको छेदकर फिर शीघ्रही उसको पांचबाणों से छेदा । ६ । फिर उन महारथियोंसे पीड़ामान युद्धमें उपाय करनेवाले शूरशल्य ने वेगके नाशक और भारकेधारण करनेवाले घोरधनुष को खैंचकर । ७ । सात्यकी को पच्चीसबाण से- भीमसेन को तिहत्तर–बाणसे और नकुलको सातबाणसे घायल किया । ८ । इसकेपीछे शल्यनेधनुषधारी सहदेव के धनुष को विशिख नाम बाणसमेत भल्लसे काटकर उसको इक्कीस बाणसे छेदा । ९ । इसके पीछे सहदेवने दूसरे धनुषको तैयार करके बड़े तेजस्वी मामाको उन पांच बाणों से घायल किया जो कि विषभरे सर्पके समान और प्रज्वलित अग्निके समान थे फिर अत्यन्त क्रोधयुक्तने टेढ़े पर्ववाले बाणसे उस के सारथीको अत्यन्तछेदा और उसको भी तीनबाणों से घायल किया । ११ । भीमसेन ने सत्तर बाणसे सात्यकि ने नौबाणोंसे और धर्मराजने साठ बाणोंसे शल्यको अङ्गोंपर घायल किया । १२ । हे महाराज फिर उन महारथियों के हाथसे घायल हुये शल्यने अपने अंगोंसे रुधिर

Yudhishthir and roared a loud roar. 5. Nakul wounded him with five and Sahadev with fourteen Wounded by those brave warriors, valiant Shalya drew his hard bow and wounded Satyaki with twenty five arrows, Bhim with seventythree and Nakul with seven. Then he cut down the *bow and arrows* of Sahadev and wounded him with twenty one darts. Sahadev took up another bow and wounded his uncle with five arrows, poisonous like serpents and bright like fire. And, in his rage he pierced him with three arrows and his driver with one. Bhim wounded him with seventy arrows, Satyaki wounded him with nine and Yudhishthir with sixty. Wounded by their arrows,

तांश्च सर्वान् महेष्वासान् पञ्चभिः पञ्चभिः शरैः । विव्याध ... शल्यः ... त्वरन्
धर्मपुत्रस्य ... ॥ १४ ॥ ततोऽपरेण भल्लेन धर्मपुत्रस्य ... धनुः ... सर्व
... हि महाराज ॥ १५ ॥ ... पुत्रो ... ।
... प्राच्छादयच्छरैः ॥ १६ ॥ स ... ।
धर्मपुत्रस्य साश्वकेः । युधिष्ठिरमथाविध्यद्दशभिर्निशितैः शरैः ॥ १७ ॥ सात्यकि-
... धर्मपुत्रे प्रपीडिते । मद्राणामधिपं शूरं शरौघैः समवारयत्
॥ १८ ॥ स सात्यकेः प्रचिच्छेद क्षुरप्रेण महद्धनुः । भीमसेनमुखांस्तांश्च त्रिभिस्त्रिभि र
ताडयत् ॥ १९ ॥ तस्य क्रुद्धो महाराज सात्यकिः सत्यविक्रमः । तोमरं प्रेषयामास
... महाधनम् ॥ २० ॥ भीमसेनोऽथ नाराचं ज्वलन्तमिव पन्नगम् । नकुल
... शक्तिं सहदेवो गदां शुभाम् ॥ २१ ॥ धर्मराज शतघ्नीं तु जिघांसुः शल्यमाहवे ।
तानापततः सहसा पञ्चानां [redacted] भुजच्युतान् ... समरे शल्यनिवार

को पहिले गिराया और कि पश्चात् पाण्डवोंको गिराना ... तब उसने पांच २ बाणा
से उन सब बड़े २ धनुषधारियोंको वेगसे छेदा यह आश्चर्यसा हुआ । १४ । हे श्रेष्ठ
फिर उसमहारथीने युद्धमें दूसरे भल्लसे धर्मपुत्रके धनुषको काटा । १५ । फिर धर्मपुत्र
ने भी दूसरे धनुषको लेकर शल्यको ... सारथी ध्वजा और रथके साथ ढक
दिया । ... वाणोंसे ढकहुये उस शल्यने तब धार दशवाणसे युधिष्ठिरको
छेदा । १७ । फिर वाणोंसे धर्मपुत्रके पीड़ित होनेपर क्रोधयुक्त सात्यकिने मद्र
देशियों के राजाको बाण समूहसे ... । १८ । उसने ... सात्यकि
के बड़े धनुषको काटा और उन भीमसेन ... को तीन २ बाणसे पीड़ित किया
। १९ । हे महाराज ... सत्ययुक्त सात्यकिने ... दण्डवाले बहुमूल्य
तोमरको उसपर चलाया । २० । फिर भीमसेनने ज्वलित सर्पके समान नाराचको
नकुलने शक्तिको और सहदेवने शुभगदाको चलाया । २१ । युद्धमें शल्यके मारने
की इच्छासे धर्मराजने शतघ्नी को चलाया पांचोंके हाथसे छोड़ेहुए और आते
हुए अस्त्रोंको ... शीघ्र ... राजाशल्यने रोका । २२ शल्यने सात्यकिके चलाये

... in ... drops of ... water To ... he pierced all those warriors with five arrows each and with one arrow, he cut down Yudhishthir's bow 15 Yudhishthir took up another bow and covered Shalya's horses and car with his arrows Then Satyaki covered the king of Madra and wounded Bhim and others with three arrows each ... Satyaki of true prowess discharged at him a tomar 20 Then Bhim discharged a dart ... like a serpent, Nakul discharged a ... and Sahadev hurled a mace Desirous of ... Shalya Yudhishthir discharged a shataghni S... the five ... the five and coming towards him Shalya ... all He ... Satyaki's tomar with a dart

स मद्रराट् ॥ २३ ॥ सात्यकिप्रहितं शल्यो भल्लैश्चिच्छेद तोमरम् । भीमेन प्रहितञ्चापि
शरं कनकभूषणम् । द्विधा चिच्छेद कृतहस्तः प्रतापवान् ॥ २४ ॥ नकुलप्रेषितां शक्तिं
हेमदण्डां भयावहाम् । गदाञ्च सहदेवेन शरौघैः समवारयत् ॥ २५ ॥ शराभ्याञ्च
शतघ्नीं तां राज्ञश्चिच्छेद भारत । पश्यतां पाण्डुपुत्राणां सिंहनादं ननाद च । नामृष्य
त्तु शैनेयः शत्रोरभिजयमाहवे ॥ २६ ॥ अथान्यद्धनुरादाय सात्यकिः क्रोधमूर्च्छितः ।
द्वाभ्यां मद्रेश्वरं विद्ध्वा सारथिञ्च त्रिभिः शरैः ॥ २७ ॥ ततः शल्यो महाराज सर्वां
स्तान् दशभिः शरैः । विव्याध सुभृशं क्रुद्धस्तोत्रैरिव महाद्विपान् ॥ २८ ॥ ते वार्य
माणाः समरे मद्रराजेन भारत । न शेकुः प्रमुखे स्थातुं तस्य शत्रुनिसूदनाः ॥ २९ ॥
ततो दुर्य्योधनो राजा दृष्ट्वा शल्यस्य विक्रमम् । निहतान् पाण्डवान् मेने पाञ्चालानथ
सृञ्जयान् ॥ ३० ॥ ततो राजन्महाबाहुर्भीमसेनः प्रतापवान् । सन्त्यज्य मनसा प्राणान्
मद्राधिपमयोधयत् ॥ ३१ ॥ नकुलः सहदेवश्च सात्यकिश्च महाबलः । परिवार्य तदा

हुये तोमरको भल्लसे काटा हस्तलाघवी प्रतापवान् शल्यने भीमसेन के चलाये हुये
सुवर्ण से अलंकृत वाणको भी युद्धमें दो खण्ड किया । २४ । और नकुलकी
चलाई हुई महाभय कारी शक्तिको और सहदेवकी फेंकीहुई गदाको वाणों के
समूहों से काटा ।२५। हेभरतवंशी दो वाणोंने राजाकी उस शतघ्नीको काटा और
सब पांडवों के देखते सिंहनादोंसे गर्जा सात्यकिने युद्धमें शत्रुकी विजयको नहीं
सहा । २६ । तब क्रोधसे मूर्च्छावान सात्यकिने दूसरे धनुषको लेकर दोवाणसे
शल्यको घायल करके तीन वाणसे सारथीको घायल किया । २७ । इसके पीछे
क्रोधभरे शल्यने उन सब को दशवाणों से ऐसा कठिन घायल किया जैसे कि
अंकुशों से बड़े हाथियों को करते हैं । २८ । वह शत्रुओं के मारनेवाले महारथी
युद्धमें राजामद्र से रोकेहुये होकर उसके सम्मुख नियत होनेको समर्थ नहींहुये
। २९ । इसके पीछे राजादुर्योधन ने शल्यके पराक्रमको देखकर पाण्डव पांचाल
और सृंजियोंको मृतकरूप माना । ३० । हे राजा फिर प्रतापवान महाबाहु भीम
सेनने चित्त से जीवनको त्याग करके राजा मद्रसे युद्धकिया । ३१ । और बड़े

He dexterously cut Bhim's arrow into two and cut down Nakul's dreadful spear and Sahadeva's mace with his arrows 25. He cut down Yudhishthir's shataghni with two arrows and roared loud roars in the presence of all the Pandavas. Satyaki could not bear this and in excessive rage, wounded him with two arrows and the driver with three. Then Shalya wounded them all with ten arrows as elephants are wounded by goads. Those great warriors checked by the king of Madra, could oppose him no longer. Seeing Shalya's prowess, Duryodhan thought that the Pandavas, Panchals and Srinjayayas will be no more. 30. Then glorious Bhim, fearless of life, fought with the king of Madra. Brave Nakul, Sahdev and Satyaki, surrounded Shalya

शल्यं समन्ताद्व्यकिरञ्छरैः ॥ ३२ ॥ स चतुर्भिर्महेष्वासैः पाण्डवानां महारथैः । वृत
स्तान् योधयामास मद्रराजः प्रतापवान् ॥ ३३ ॥ तस्य धर्मसुतो राजन् क्षुरप्रेण र
णे चक्ररक्षं जघानाशु मद्रराजस्य पार्थिवः ॥ ३४ ॥ तस्मिंस्तु निहते शूरे चक्ररक्षे
महारथे । मद्रराजोऽपि बलवान् सैनिकांस्तानकिरञ्छरैः ॥ ३५ ॥ समाच्छन्नांस्ततस्तांस्तु
राजन् वीक्ष्य स सैनिकान् । चिन्तयामास समरे धर्मराजो युधिष्ठिरः ॥ ३६ ॥ कथं
नूनं भवेत् सत्यं तन्माधववचो महत् । न हि क्रुद्धो रणे राजा क्षपयेत बलं मम ॥ ३७ ॥
ततः सरथनागाश्वाः पाण्डवाः पाण्डुपूर्वज । मद्रेश्वरं समासेदुः पीडयन्तः समन्ततः
॥ ३८ ॥ नानाशस्त्रौघबहुलां शस्त्रवृष्टिं समुत्थिताम् । व्यधमत् समरे राजा महाभ्राणीव
मारुतः ॥ ३९ ॥ ततः कनकपुङ्खां तां शल्यक्षिप्तां वियद्गताम् । शरवृष्टिमपश्याम शल
भानामिवायतिम् ॥ ४० ॥ ते शरा मद्रराजेन प्रेषिता रणमूर्धनि । सम्पतन्तः स्म

पराक्रमी नकुल सहदेव और सात्यकि ने शल्यको घेरकर चारों ओरको बाणों से आच्छादित करदिया । ३२ । फिर पांडवों के बड़े धनुषधारी महारथियों से घिरेहुये उस प्रतापवान राजामद्र ने सबसे युद्धकिया । ३३ । हे राजा तब धर्मपुत्र युधिष्ठिरने बड़े युद्ध में अपने क्षुरप्रसे उस राजामद्रके चक्र रक्षकको शीघ्रता से मारा । ३४ । फिर उस शूर महारथी चक्ररक्षकके मारेजानेपर बड़े बलवान राजा मद्रने बाणोंसे सेनाके सब लोगोंका ढकदिया ।३५।इसके पीछे धर्मराज युधिष्ठिरने युद्धमें बाणों से ढकेहुये उन सेनाके लोगों को देखकर चिन्ताकरी कि माधवजीका वह वचन कैसे निश्चय करके सत्यहोय कि हे पांडवोंके बड़ेभाई युद्धमें क्रोधयुक्त राजाशल्य मेरी सेनाका नाश नहीं करेगा । ३७ । इसके अनन्तर चारों ओरसे पीड़ित करते पांडवों ने रथ हाथी और घोड़ों समेत जाकर राजा मद्रको प्राप्त किया । ३८ । राजाने नानाप्रकार के शस्त्रों समेत उठीहुई बाणवृष्टिको युद्धमें ऐसे छिन्नभिन्न किया जैसे कि वायु बड़े बड़े बादलों को अलग करदेता है । ३९ । इसके पीछे सरपजनित आकाशमें वर्त्तमान सुनहरी पुंखों के बाणवृष्टिको शल भाओं के समूहों के समान देखा युद्धके मुखपर राजामद्रके चलायेहुये वह बाण

from all sides and wounded them with their arrows Surrounded by the great Pandav warriors glorious Madra opposed them all. Yudhishthir slew his wheel guard. At his death Shalya covered all the warriors with arrows. Seeing them so covered with arrows, he feared that the prediction of Madhav to the effect that Shalya would not be able to destroy the Pandav army, was not going to be correct. Then wounding and slaying from all sides, the Pandavas opposed Shalya with their elephants, cars and horses The king dispersed the shower of their weapons as the wind does the clouds. The darts of Shalya were to be seen like locusts in the air or like flights of birds 40. The gold-decked arrows of Shalya beautified the sky, covering the warriors

सञ्जय उवाच । अर्जुनो द्रौणिना विद्धो युद्धे बहुभिराशुगैः तस्य चानुचरैः शूरैस्त्रिगर्त्तानां महारथैः ॥ १ ॥ द्रौणिं विव्याध समरे त्रिभिरेव शिलीमुखैः । तथेतरान्महेष्वासान् द्वाभ्यां द्वाभ्यां धनञ्जयः ॥ २ ॥ भूयश्चैव महाबाहुः शरवर्षैरवाकिरत् । शरकण्टकितास्ते तु तावका भरतर्षभ । न जहुः समरे पार्थं वध्यमानाः शितैः शरैः ॥ ३ ॥ तेऽर्जुनं शरवर्षेण द्रोणपुत्रपुरोगमाः । अयोधयन्त समरे परिवार्य महारथम् ॥ ४ ॥ तैस्तु क्षिप्ताः शरा राजन् कार्त्तस्वरविभूषिताः । अर्जुनस्य रथोपस्थं पूरयामासु रञ्जसा ॥ ५ ॥ तथा कृष्णौ महेष्वासौ वृषभौ सर्वधन्विनाम् । शरैर्वीक्ष्य वितुन्नाङ्गौ प्रहृष्टा युद्धदुर्मदाः ॥ ६ ॥ कूबरो रथचक्राणि ईषा योक्त्राणि वा विभो । युगं चैवानुकर्षश्च शरभूतमभूत्तदा ॥७॥ नैतादृशं दृष्टपूर्वं राजन्नैवापि च श्रुतम् । यादृशं तत्र पार्थस्य तावकाः सम्प्रचक्रिरे ॥ ८ ॥ स रथः सर्वतो भाति चित्रपुङ्खैः शितैः शरैः ।

अध्याय १४ ॥

सञ्जय बोले कि युद्ध में अश्वत्थामा और उसके आगे पीछेवाले त्रिगर्त देशियोंके शूर महारथियोंके बाणोंसे छिदेहुये अर्जुनने । १ । युद्धमें तीन शिलीमुखबाणोंसे अश्वत्थामाको घायल किया उसीप्रकार अन्य शूरवीरोंकोभी अर्जुन ने दोदो बाणों से छेदा । २ । हे महाराज फिर बाणों की वर्षा से आच्छादित करदिया हे भरतर्षभ बाणों से विदीर्ण उन आपके शूरवीरोंने जोकि तेजबाणों से पीड़ामान थे अर्जुनको पाकर त्याग नहीं किया । ३ । वह महारथी जिनके अग्रवर्ती अश्वत्थामाजी थे उन्होंने रथोंके समूहों में अर्जुनको घेरकर युद्धकिया । ४ । हे राजा उनके छोड़हुये सुवर्णसे अलंकृत बाणोंने वेगसे अर्जुन के रथके बैठने के स्थानको भरदिया । ५ । उसीप्रकार सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ बड़े धनुषधारी श्रीकृष्ण और अर्जुनको बाणोंसे घायल अङ्ग देखकर युद्धमें दुर्मद शूरवीर प्रसन्न हुये । ६ । हे समर्थ तब कूबर रथचक्र, रथ, ईषा, युग, अनुकर्ष यह सब रथके अङ्ग बाणरूप होगये । ७ । हे राजा पूर्वसमयमें वहां आपके शूरवीरों ने जैसीदशा अर्जुनकी करी वैसी दशा पूर्वसमय में न देखीगई न सुनीगई । ८ । वह रथ पुंख युक्त तीक्ष्णबाणों से सब ओरको ऐसा दिखाई देताथा जैसे कि पृथ्वीपर सैकड़ों

CHAPTER XIV

Sanjaya said, "Pierced by the arrows of Ashwathama and the warriors of Trigart, Arjun wounded the former with three arrows and the rest with two arrows each. He covered them with his arrows. Wounded by them your warriors opposed Arjun well. Led by Ashwathama, they surrounded Arjun with their cars and filled Arjun's car with their arrows. 5. Seeing Arjun and Krishna wounded with darts, the brave warriors were pleased. Arrows were on all parts of the car. Arjun was never before seen or heard to be in such a plight. His car looked like a celestial car shining with thousands of meteors. Then Arjun

उल्काशनि संप्रदीप्तं विमानमिव भूतले ॥ ९ ॥ ततोऽर्जुनो महाराज शरैः सन्नतपर्वभिः अवाकिरत्वां पृतनां मेघो वृष्ट्या यथाचलम् ॥ १० ॥ ते वध्यमानाः समरे पार्थनामाङ्कितैः शरैः । पार्थभूतममन्यन्त प्रेक्षमाणास्तथाविधाम् ॥ ११॥ ततोऽद्भुतशरज्वालो धनुःशब्दानिलो महान् । सैन्येन्धनं ददाहाशु तावकं पार्थपावकः ॥ १२ ॥ चक्राणां पततां चापि युगानाञ्च धरातले । तूणीराणां पताकानां ध्वजानाञ्च रथैः सह ॥ १३ ॥ ईसानामनुकर्षाणां त्रिवेणूनाञ्च भारत । अक्षाणामथ योक्त्राणां प्रतोदानां च सर्वश ॥१४॥ शिरसां पततां चैव कुण्डलोष्णीषधारिणाम् । भुजानाञ्च महाराज स्कन्धानां च सह स्रशः ॥ १५ ॥ छत्राणां व्यजनैः सार्द्धं मुकुटानां च राशयः । समदृश्यन्त पार्थस्य रथमार्गेषु भारत ॥ १६ ॥ ततः क्रुद्धस्य पार्थस्य रथमार्गे विशांपते । अगम्यरूपा पृथिवी मांसशोणितकर्दमा ॥ १७ ॥ बभूव भरतश्रेष्ठ रुद्रस्याक्रीडनं यथा । भीरूणां त्रासजननी शूराणां हर्षवर्द्धनी ॥ १८ ॥ हत्वा तु समरे पार्थः सहस्रे द्वे परन्तप । रथानां

उल्काओंसे प्रकाशमान विमान होताहै । ९ । हे महाराज फिर अर्जुनने गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे उनकी सेनाको ऐसा ढकदिया जैसे बादल अपनी वर्षा से पर्वत को ढक देताहै । १० । युद्धमें उन बाणोंसे जिनपर कि अर्जुनका नाम चिन्हितथा घायल और उसप्रकारके अर्जुनको देखतेहुये उनलोगोंने लोकको अर्जुनरूप माना । ११ । उस अर्जुनरूपी अग्नि ने जिसकी क्रोधरूपी ज्वालासे उत्पन्न होनेवाले बाण इत्यादि और धनुषके बड़े शब्दथे उस अग्निने शीघ्रही सेनारूपी ईंधन को भस्मकिया । १२ । हे भरतवंशी महाबाहु धृतराष्ट्र अर्जुनके रथमार्गों में पृथ्वी पर गिरते चक्र रथ युग तूणीर और रथोंसमेत पताका ध्वजा । १३ । ईषा, अनुकर्ष त्रिवेणु, अक्ष, योक्त्र और सबप्रकारके चाबुक । १४ । कुण्डल और वेष्टनधारी गिरेहुये शिर सहस्रोंभुजा और जंघा । १५ व्यजनोंसमेत छत्र और मुकुटोंकेढेर चारोंओर दिखाई पड़े । १६ । हे राजा इसके पीछे क्रोधयुक्त अर्जुनके रथमार्ग में पृथ्वी दुर्गम्य और मांस रुधिरकी कीच रखनेवाली होगई । १७ । हे भरतर्षभ वह रणभूमिमें रुद्रजीके क्रीडास्थान के समान भयभीतों का भय बढ़ानेवाली और शूरवीरोंकी प्रसन्नता बढ़ानेवाली हुई । १८ । फिर शत्रुओंका तप्तकरनेवाला अर्जुन युद्धमें कवच

rained his arrows over your army. 10 Wounded by the arrows embossed with Arjun's name, they thought that all the world was full of Arjuns. Arising from the fire of Arjun's wrath, the arrows like a storm of wind, burnt your army as fire does dry wood. Car wheels, yokes, quivers, standards, whips, ear-rings, with thousands of well-decked arms, fans, umbrellas and heaps of diadems were to be seen all over the path traced by Arjun's car. 16 The ground became impregnable with flesh and blood. It was like the pleasure ground of Rudra dreadful to the timid and pleasing to the brave. Having slain two thousand car-warriors, Arjun shone like smokeless fire. He looked

सपरूथानां विधूमोऽग्निरिव ज्वलन् ॥ १९ ॥ यथा हि भगवानग्निर्जगद्दग्ध्वा चराच
रम् । विधूमो दृश्यते राजंस्तथा पार्थो महारथः ॥ २० ॥ द्रौणिस्तु समरे दृष्ट्वा पांड
वस्य पराक्रमम् । रथेनातिपताकेन पाण्डवं प्रत्यवारयत् ॥ २१ ॥ तावुभौ पुरुषव्याघ्रौ
श्वेताश्वौ रथिनाम्वरौ । समीयतुस्तथा तूर्णं परस्परवधैषिणौ ॥ २२ ॥ तयोरासीन्महा
राज बाणवर्षं सुदारुणम् । जीमूतयोर्यथा वृष्टिस्तपान्ते भरतर्षभ ॥ २३ ॥ अन्योन्यस्प
र्द्धिनौ तौ तु शरैः सन्नतपर्वभिः । ततक्षतुर्मृधेऽन्योन्यं शृङ्गाभ्यां वृषभाविव ॥ २४ ॥
तयोर्युद्धं महाराज चिरं सममिवाभवत् । अस्त्राणां सङ्गमश्चैव घोरस्तत्राभवत् पुन
॥ २५ ॥ ततोऽर्जुनं द्वादशभी रुक्मपुंखैः सुतेजनैः । वासुदेवञ्च दशभिर्द्रौणिर्विव्याध
भारत ॥ २६ ॥ ततः प्रहस्य बीभत्सुर्व्याक्षिपद्गाण्डिवं धनुः । मानयित्वा मुहूर्त्तं तु गुरु
पुत्रं महाहवे ॥ २७ ॥ व्यश्वसूतरथञ्चक्रे सव्यसाची महारथः । मृदुपूर्वं ततश्चैनं त्रिभि
र्विव्याध सायकैः ॥ २८ ॥ हताश्वे तु रथे तिष्ठन् द्रोणपुत्रस्तदाऽयसम् । मुषलं पाण्डु

धारी दोहजार रथियोंको मारकर निर्धूम अग्निके समान प्रकाशमान हुआ । १९ । हे राजा जैसे कि प्रलयकाल में भगवान् अग्नि सब जड़ चैतन्योंको भस्मकरके निर्धूम दिखाई देते हैं उसीप्रकार कुन्तीका पुत्र अर्जुन दिखाई पड़ा । २० । फिर अश्वत्थामाने युद्धमें अर्जुनके पराक्रमको देखकर बड़ी पताकावाले रथसमेत अर्जुन को रोका । २१ । तब परस्पर मारने के अभिलाषी धनुषधारियों में श्रेष्ठ वह दोनों पुरुषोत्तम परस्पर सम्मुख हुये । २२ । हे महाराज उन दोनोंकी बाणवृष्टि ऐसी बड़ी भयकारी हुई जैसे कि वर्षाऋतुमें वर्षा करनेवाले दोबादलोंकी होतीहै।२३। तब परस्पर ईर्षा करनेवाले उन दोनोंने गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे ऐसे परस्पर घायल किया जैसे कि सींगोंसे दो बैल परस्पर घायल करते हैं । २४ । हे महाराज उन दोनोंका युद्ध देरतक सीधाहुआ इसके पीछे वहां शस्त्रोंका घोरभयङ्करहुआ । २५ । तब अश्वत्थामा ने सुनहरी पुंख और सुन्दरधारवाले बारह बाणों से अर्जुनको और दश बाणोंसे वासुदेवजीको घायल किया । २६ । इसके पीछे अर्जुनने बहुत हँसकर गाण्डीव धनुष को टंकारा और उस बड़े युद्धमें एक मुहूर्त्त गुरुका पुत्र मानकर । २७ । महारथी अर्जुनने घोड़े सारथी और ध्वजासे रहित किया इसके पीछे बड़ी मृदुतासे तीनसायकोंसेभी उसको घायल किया । २८ । तब मृतक घोड़े

like the fire of pralaya which destroys all 20. Seeing Arjun's prowess, Ashwathama checked him with his car. The two warriors then opposed each other and showered arrows like rain. They wounded each other as two bulls do with their horns. Their battle was terrible and there was a great collection of weapons 25 Then Ashwathama wounded Arjun with twelve and Vasudev with ten arrows. Then Arjun twanged the gandiv bow with a smile and deprived the preceptor's son of horses, driver and banner and mildly hit him with three arrows. Ashwathama smiling, sent forth a club at Arjun, who,s eing

पुष्पाय त्वक्षेप परिघोपमम् ॥ २९ ॥ तमापतन्तं सहसा हेमपट्टविभूषितम् । चिच्छेद
सप्तधा वीर पार्थः शत्रुनिबर्हणः ॥ ३० ॥ स छिन्नं मुषलं दृष्ट्वा द्रौणिः परमकोपनः ।
आददे परिघं घोरं नगेन्द्रशिखरोपमम् । चिक्षेप चैव पार्थाय द्रौणिर्युद्धविशारदः ॥ ३१ ॥
तमन्तकमिव क्रुद्धं परिघं प्रेक्ष्य पाण्डवः । अर्जुनस्त्वरितो जघ्ने पञ्चभिः सायकोत्तमैः
॥ ३२ ॥ स छिन्नः पतितो भूमौ पार्थबाणैर्महामृधे । दारयन् पृथिवीन्द्राणां मनः शब्देन
च भारत ॥ ३३ ॥ ततोऽपरैस्त्रिभिर्बाणैर्द्रौणिं विव्याध पाण्डवः । सोऽतिविद्धो बलवता
पार्थेन सुमहाबलः । न संभ्रान्तस्तदा द्रौणिः पौरुषे स्वे व्यवस्थितः ॥ ३४ ॥ सुरथं तु
ततो राजन् भारद्वाजो महारथः । अवाकिरच्छरव्रातैः सर्वक्षत्रस्य पश्यतः ॥ ३५ ॥
तमभ्यधावत् सुरथोऽपि पाञ्चालानां महारथः । रथेन मेघघोषेण द्रौणिमेवाभ्ययाचत
॥ ३६ ॥ विकर्षन् वै धनुः श्रेष्ठं सर्वभारसहं दृढम् । ज्वलनाशीविषनिभैः शरैश्चैनमवा-
किरत् ॥ ३७ ॥ सुरथं तु ततः क्रुद्धमापतन्तं महारथम् । चुकोप समरे द्रौणिर्दण्डा-
हतो यथा उरगः

बाले स्पपर नियत मन्दमुसकान करते अश्वत्थामा ने परिघाके समान मुशलको
अर्जुन के ऊपर फेंका । २९ । शत्रुओं के मारनेवाले वीर अर्जुनने उस सुवर्णमयी
पट्टसे अलंकृत अकस्मात् आतेहुये मूषलको सातखण्डकिये । ३० । बड़े क्रोधयुक्त
अश्वत्थामा ने मूषलको टूटाहुआ देखकर हिमालय के शिखरकेसमान महाघोर
परिघको हाथमेंलिया युद्धमें सावधान अश्वत्थामाने उसको अर्जुन के ऊपर फेंका
। ३१ । पाण्डुनन्दन अर्जुनने उस कालरूप क्रोधभरी हुई परिघको देखकर शीघ्र
ही पांच उत्तम बाणोंसे खण्डखण्ड किया । ३२ हे भरतर्षभ बड़े युद्धमें अर्जुनके बाणों
से टूटीहुई वह परिघ पृथ्वीके बड़ेराजाओं के चित्तोंको विदीर्ण करतीहुई पृथ्वी
परही गिरपड़ी । ३३ । उसके पीछे अर्जुनने अन्य तीनबाणों से अश्वत्थामाको
घायल किया तब बलवान् अर्जुन के हाथसे अत्यन्त घायल वह बड़े पराक्रमी
अश्वत्थामाजी अपनी वीरतामें नियतहुये । ३४ इसके पीछे महारथी भारद्वाज अश्व-
त्थामाने सुरथनाम राजाको सब क्षत्रियोंके देखतेहुये बाणोंके समूहोंसे ढकदिया । ३५ ।
इसके अनन्तर पांचालोंका महारथी सुरथ युद्धमें बादल के समान शब्दाय-
मान रथकी सवारीसे अश्वत्थामाके सम्मुख दौड़ता हुआ । ३६ । तब भारके सहने-
वाले उत्तम दृढ धनुषको खैंचते हुये उसने अग्नि और सर्प के समान बाणों से

the go'd decked rish coming tov ards him, cut it into seven parts 30.
Seeing it thus broken into pie s, he took up a huge *parigh* and
hurled it at *Arjun*. But the latter cut this also into two. Cut down
by Arjun's arrows the *parigh* fell down on earth, rending the heart of
the warriors Arjun hit Ashwatthama again with three arrows, the
latter stood in his glory on receiving the wounds. He covered Surath
by his arrows 35. Then Surath, the Panchal warrior, faced Ashwatthama
ma on his car and covered him with arrows like fire or serpents. Seeing
him advance in his rage, Ashwathama was enraged like a serpent

हत इवोरगः ॥ ३८ ॥ त्रिशिखां भ्रुकुटीं कृत्वा सृक्कणीपरिसंलिहन् । संवीक्ष्य सुरथं
रोषाद्धनुर्ज्यामवमृज्य च । मुमोच तीक्ष्णं नाराचं यमदण्डोपमं युधि ॥ ३९ ॥ स तस्य
हृदयं भित्वा प्रविवेशातिवेगितः । शक्राशनिरिवोत्सृष्टो विदार्य धरणीतलम् ॥ ४० ॥
ततः स पतितो भूमौ नाराचेन समाहतः । वज्रेणेव तथा शृङ्गं पर्वतस्य विदारितम्
॥ ४१ ॥ तस्मिंस्तु निहते वीरे द्रोणपुत्रः प्रतापवान् । आरुरोह रथं तूर्णं तमेव रथिनां
वरः ॥ ४२ ॥ ततः सज्जो महाराज द्रौणिराहवदुर्मदः । अर्जुनं योधयामास संशप्तक
वृतो रणे ॥ ४३ ॥ तद्युद्धं सुमहच्चासीदेकस्य बहुभिः सह । मध्यन्दिनगते सूर्ये यम
राष्ट्रविवर्द्धनम् ॥ ४४ ॥ तत्राश्चर्य्यमपश्याम दृष्ट्वा तेषां पराक्रमम् । यदेको युगपद्वी
रान् समयोधयदर्जुनः ॥ ४५ ॥ विमर्दस्तु महानासीदर्जुनस्य परैः सह । शतक्रतोर्यथा
पूर्वं महत्या दैत्यसेनया ॥ ४६ ॥ इति शल्यवधपर्वणि संकुलयुद्धे चतुर्दशोध्याय १४ ॥

उसको ढकादिया । ३७ । आतेहुये महारथी सुरथको क्रोधयुक्त देखकर अश्वत्थामा
ने दण्डसे घायल सर्पके समान युद्धमें क्रोधकिया । ३८ । होठोंको चाटते
अश्वत्थामाने भृकुटीको तीन शिखावली करके बड़े क्रोधसे उसवीर सुरथको
देखकर धनुषकी प्रत्यंचाको चढ़ाकर यमदण्डके समान प्रकाशित तीक्ष्ण नाराच
को छोड़ा । ३९ । इन्द्रवज्रके समान छोड़ाहुआ वह नाराच उसके हृदयको तोड़
पृथ्वी को चीरकर बड़े वेगसे प्रवेश करगया । ४० । इसके पीछे नाराचसे विदीर्ण
वह वीर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वज्रसे फटनेवाले पहाड़का शिखर गिरता
है । ४१ । उस वीर के मरनेपर रथियोंमें श्रेष्ठ प्रतापवान अश्वत्थामा शीघ्रही उसी
रथपर सवारहुये । ४२ । हे महाराज फिर युद्धदुर्मद महाअलङ्कृत युद्धमें संसप्तकों
समेत अश्वत्थामा ने फिर अर्जुन से युद्धकिया । ४३ । वहां मध्याह्नवर्त्ती सूर्यके
वर्त्तमान होनेपर एकका बहुतों के साथ वह बड़ा युद्धहुआ जोकि यमराज के
देशका बढ़ानेवाला था । ४४ । वहां हमने उन्हों के पराक्रमको देखकर बड़ा
आश्चर्य किया जो अकेला अर्जुन एक साथ होनेवाले बहुतसे वीरोंसे लड़ा । ४५ ।
एक का बहुतोंके साथ ऐसा बड़ा युद्धहुआ जैसे कि पूर्वसमयमें इन्द्रका युद्ध
दैत्यों की बड़ी सेनाके साथ हुआथा ४६ ॥

wounded by a stick. Surath advanced towards him. Ashwathama discharged at him an arrow like a venomous snake. The arrows having pierced through his breast entered the ground with great force. 40 Wounded by that arrow he fell down like a crag detached from a hill. Having slain him, Ashwathama soon mounted his car, and followed by the Sansaptaks, he fought with Arjun. The battle was severe at noon and increased the population of the region of Yam. We were amazed to see the prowess of Arjun who alone fought with many and his battle was like that of Indra with gods in the days of old." 46

सञ्जय उवाच । दुर्योधनो महाराज धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः । चक्रतु सुमहद्युद्धं शरशक्तिसमाकुलम् ॥ १ ॥ तयोरासन्महाराज शरधाराः सहस्रशः । अम्बुदानां यथा काले जलधाराः समन्ततः ॥ २ ॥ राजातु पार्षतं विद्ध्वा शरैः पञ्चभिराशुगैः । द्रोणहन्तारमुग्रेषु पुनर्विव्याध सप्तभिः ॥ ३ ॥ धृष्टद्युम्नस्तु समरे बलवान् दृढविक्रमः । सप्तत्या विशिखानां वै दुर्योधनमपीडयत् ॥ ४ ॥ पीडितं प्रेक्ष्य राजानं सोदर्या भरतर्षभ । महत्या सेनया सार्धं परिवव्रुः स्म पार्षतम् ॥ ५ ॥ स तैः परिवृतः शूरः सर्वतोऽतिरथैर्भृशम् । व्यचरत् समरे राजन् दर्शयन्नस्त्रलाघवम् ॥ ६ ॥ शिखण्डी कृतवर्माणं गौतमञ्च महारथम् । प्रभद्रकैः समायुक्तो योधयामास धन्विनौ ॥ ७ ॥ तत्रापि सुमहद्युद्धं घोररूपं विशाम्पते । प्राणान् सन्त्यजतां युद्धे प्राणद्यूताभिदेवने ॥ ८ ॥ शल्यः शरवर्षाणि विमुञ्चन् सर्वतो दिशम् । पाण्डवान् पीडयामास ससात्यकिवृकोदरान्

अध्याय १५ ॥

संजय बोले हे महाराज दुर्योधन और धृष्टद्युम्न ने भी बड़ा युद्धकिया वह युद्धभी बाण और शक्तियों से व्याप्तथा । १ । हे महाराज उन दोनोंकी बाणधारा ऐसे प्रकटहुई जैसे कि समयपर चारों ओर से बादलों की जलधारा होतीहै । २ । फिर राजा दुर्योधन ने शीघ्रगामी पांचबाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायलकरके उग्रबाण रखनेवाले द्रोणाचार्य के मारनेवाले धृष्टद्युम्न को सातबाणोंसे छेदा । ३ । फिर बलवान् दृढ पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने युद्धमें दुर्योधन को सत्तर विशिखोंसे पीड़ामान किया । ४ । हे भरतर्षभ तब उसके सगे भाइयों ने राजाको पीड़ामान देखकर बड़ी सेनासमेत घेरलिया । ५ । उससमय सबओरको उन अतिरथियों से घिराहुआ वह शूर युद्धमें अस्त्रोंकी तीव्रता दिखाता हुआ अच्छेप्रकार से भ्रमण करनलगा । ६ । प्रभद्रकनाम क्षत्रियों से संयुक्त शिखण्डी ने धनुषधारी महारथी कृपाचार्य और कृतवर्मासे युद्धकिया । ७ । हे राजा प्राणोंके द्यूतरूपी युद्धमें प्राणों के त्यागनेवाले उनलोगोंका घोररूप महायुद्धहुआ । ८ । फिर दिशाओं में बाणवृष्टिको करतेहुवे

CHAPTER XV

Sanjaya said, " Duryodhan and Dhrishtadyumn fought well with arrows and spears They showered their darts like rain Duryodhan wounded Dhrishtadyumn the slayer of Drona with five arrows and again hit him with seven more. The latter wounded the former with seventy . Duryodhan's own brothers seeing him so afflicted, surrounded him with their cars 5 Surrounded by those great warriors that brave warrior showed his skill in the use of weapons. Sikhandi followed by the Prabhadraks, fought with Kripacharya and Kritvarma Engaged in the game of life and death, they fought a dreadful fight Showering his arrows, Shalya wounded Satyaki and Bhim the great warriors of the Pandavas Similarly, Nakul and Sahadev, full of

॥ ९ ॥ तथोभौ च यमौ युद्धे यमतुल्यपराक्रमौ । योधयामास राजेन्द्र धैर्येण च बलेन च ॥ १० ॥ शल्यसायकनुन्नानां पाण्डवानां महामृधे । त्रातारं नाध्यगच्छन्त केचित्तत्र महारथाः ॥ ११ ॥ ततस्तु नकुलः शूरो धर्मराजे प्रपीडिते । अभिदुद्राव वेगेन मातुलं माद्रिनन्दनः ॥ १२ ॥ आच्छाद्य समरे शल्यं नकुलः परवीरहा । विव्याध चैनं दशभिः स्मयमानस्तनान्तरे ॥ १३ ॥ सर्वपारशवैर्बाणैः कर्मारपरिमार्जितैः । स्वर्णपुंखैः शिलाधौतैर्धनुर्यन्त्रप्रचोदितैः ॥ १४ ॥ शल्यस्तु पीडितस्तेन स्वस्रीयेण महात्मना । नकुलं पीडयामास पत्रिभिर्नतपर्वभिः ॥ १५ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा भीमसेनोऽथ सात्यकिः । सहदेवश्च माद्रेयो मद्रराजमुपाद्रवन् ॥ १६ ॥ तान[illegible] यवाशु पूरयाणान्रथस्वनैः । दिशश्च विदिशश्चैव कम्पयानांश्च मेदिनीम् । प्रतिजग्राह समरे सेनापतिरमित्रजित् ॥ १७ ॥ युधिष्ठिरं त्रिभिर्विद्ध्वा भीमसेनञ्च सप्तभिः । सात्यकिञ्च शतेनाजौ सहदेवं त्रिभिः शरैः ॥ १८ ॥ ततस्तु सशरञ्चापं नकुलस्य महात्मनः । मद्रेश्वरः क्षुरप्रेण तदा चिच्छेद

शल्यने पांडवोंको सात्यकि और भीमसेन समेत पीड़ितकिया । ९ । हे राजेन्द्र इसी प्रकार अश्विनीकुमारोंके समान पराक्रमी उनदोनों नकुल और सहदेवसे भी बल पराक्रम और अस्त्रोंकी सामर्थ्यके द्वारा युद्धकिया । १० । उसबड़े युद्धमें किसी महारथीने शल्यके शायकोंसे घायल पांडवोंके रक्षकको नहींपाया । ११ । उसके पीछे माद्रीनन्दन शूर नकुल धर्मराजके अत्यन्त पीड़ामान होनेपर तीव्रतासे मामाजी के सम्मुखगया । १२ । शत्रुओं के मारनेवाले मन्दमुसकान करते नकुल ने युद्धमें इस शल्यको ढककर उन बड़े उग्र दशबाणोंसे छातीपर घायलकिया । १३ । जोकि लोहमयी कारीगरके हाथसे साफ सुनहरी पुंख तेजधार धनुषरूपी यंत्रसे प्रेरणा किये हुयेथे । १४ । फिर उस महात्मा भानजेके हाथसे पीड़ामान शल्यने टेढ़ेपर्ववाले बाणोंसे नकुलको पीड़ामान किया । १५ । इसके पीछे राजायुधिष्ठिर भीमसेन सात्यकि माद्रीनन्दन सहदेव यह सब राजमद्रके सम्मुखगये । १६ । दिशाओंको रथों के शब्दों से पूर्ण करते और पृथ्वीको कँपाते शीघ्र आतेहुये उन वीरों को । १७ । युद्धमें शत्रु विजयी सेनापति शल्यने रोका । तीनबाणसे युधिष्ठिरको पांचसे भीमसेनको सात्यकि को सौबाणोंसे और सहदेवको तीनबाणोंसे छेदा । १८ । हेश्रेष्ठ

prowess like the Ashwinikumars, fought a good fight. 10. The Pandav warriors, wounded by Shalya's arrows, could find no protector. Seeing Yudhishthir much afflicted, Nakul the son of Madri opposed his uncle. He wounded Shalya on the breast, with ten arrows made entirely of iron, well cleaned, sharp pointed and shot from the machinery of his bow. Wounded by his nephew, Shalya wounded him with his darts 15. Then Yudhishthir, Bhim, Satyaki and Sahadev opposed Shalya. Filling the directions with the sounds of their car wheels and shaking the earth, those great warriors were checked by Shalya, who wounded Yudhishthir with three arrows,

मारिष । मद्रराजरथं तं त्रिच्छिन्नं धनुः शल्यस्य सायकैः ॥ २० ॥ अथान्यद्धनुरादाय माद्रीपुत्रो महारथः । मद्रराजरथं तूर्णं पूरयामास पत्रिभिः ॥ २१ ॥ युधिष्ठिरस्तु मद्रेशं सहदेवश्च मारिष । दशभिर्दशभिर्बाणैरुरस्येनमविध्यताम् ॥ २२ ॥ भीमसेनस्तु तं षष्ट्या सात्यकिर्नवभिः शरैः । मद्रराजमभिद्रुत्य जघ्नतुः कङ्कपत्रिभिः ॥ २३ ॥ मद्रराजस्ततः क्रुद्धः सात्यकिं नवभिः शरैः । विव्याध भूयः सप्तत्या शराणां नतपर्वणाम् ॥ २४ ॥ अथास्य सशरं चापं मुष्टौ चिच्छेद मारिष । हयांश्च चतुरः संख्ये प्रेषयामास मृत्यवे ॥ २५ ॥ विरथं सात्यकिं कृत्वा मद्रराजो महारथः । विशिखानां शतेनैनमाजघान समन्ततः ॥ २६ ॥ माद्रीपुत्रौ च संरब्धौ [illegible] भीमसेनं च पाण्डवम् । युधिष्ठिरं च कौरव्य विव्याध दशभिः शरैः ॥ २७ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम मद्रराजस्य पौरुषम् । यदेनं सहिताः पार्था नाभ्यवर्तन्त संयुगे ॥ २८ ॥ अथान्यं रथमास्थाय सात्यकिः सत्यविक्रमः । पीडितान्

फिर भी राजामद्रने महात्मा नकुलके धनुषबाण को तुरंतसे काटा तब शल्य के सायकों से कटाहुआ वह धनुष गिरपड़ा । २० । इसके पीछे महारथी नकुलने दूसरे धनुषको लेकर शीघ्रही राजामद्रके रथको बाणोंसे भरदिया । २१ । हे श्रेष्ठ फिर युधिष्ठिर और सहदेवने दश २ बाणोंसे इस मद्रके राजाकी छाती पर घायल किया । २२ । और भीमसेनने राजामद्रके सम्मुख आकर कंकपक्षयुक्त साठबाणोंसे और सात्यकी ने दश बाणों से उसको घायल किया । २३ । इसके पीछे क्रोधयुक्त राजामद्र ने सात्यकी को टेढ़े पर्ववाले नौ और सत्तरबाणों से घायलकिया । २४ । इसके अनन्तर इसके धनुषको भी बाण समेत मूठके स्थानपर काटकर चारोंघोड़ों को भी कालके वशकिया । २५ । महारथी राजामद्र ने सात्यकि को विरथ देख कर सौ विशिखों से उसको चारों ओर से घायल किया ।२६। हे कौरव फिरक्रोध से पूर्णने माद्रीके दोनोंपुत्र भीमसेन और युधिष्ठिरको दशदशबाणों से घायल किया । २७ । वहां हमने राजामद्रके अपूर्व पराक्रमको देखा कि सब पांडव मिलकर भी उसके साथ युद्धमें सम्मुख नहीं हुये ।२८। इसके पीछे बलवान् सत्य पराक्रमी

Bhim with a hundred and Sahadev with three He cut down Nahul's bow with a dart 20 He took up another bow and filled Shalya's car with arrows. Yudhishthir and Sahadev wounded him with ten arrows each on the breast. Bhim and Satyaki wounded him with seven and ten arrows respectively Shalya, much enraged, wounded Satyaki with seventy nine arrows and having cut his bow, slew his horses too, 25 The brave king of Madra, seeing Satyaki deprived of the use of his car, wounded him from all sides He wounded the two sons of Madra, with Bhim and Yudhishthir, each with ten arrows. Than we saw the matchless prowess of the king of Madra whom all the Pandavas together could not oppose. Brave Satyaki mounted another car and seeing the Pandavas afflicted by Shalya, faced the latter.

पाण्डवान् दृष्ट्वा मद्रराजवशङ्गतान् । अभिदुद्राव वेगेन मद्राणामधिपं बली ॥ २९ ॥ आपतन्तं रथं तस्य शल्यः समितिशोभनः । प्रत्युद्ययौ रथेनैव मत्तो मत्तमिव द्विपम् ॥ ३० ॥ स सन्निपातस्तुमुलो बभूवाद्भुतदर्शनः । सात्यकेश्चैव शूरस्य मद्राणामधिपस्य च । यादृशो वै पुरा वृत्तः शम्बरामरराजयोः ॥ ३२ ॥ सात्यकिं प्रेक्ष्य समरे मद्रराजं व्यवस्थितम् । विव्याध दशभिर्बाणैस्तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ ३३ ॥ मद्रराजस्तु सुभृशं विद्धस्तेन महात्मना । सात्यकिं प्रतिविव्याध चित्रपुङ्खैः शितैः शरैः ॥ ३४ ॥ ततः पार्था महेष्वासाः सात्वताभिसृतं नृपम् । अभ्यद्रवन् रथैस्तूर्णं मातुलं वधकाङ्क्षया ॥ ३५ ॥ तत आसीत् परामर्दस्तुमुलः शोणितोदकः । शूराणां युध्यमानानां सिंहानामिव नर्दताम् ॥ ३६ ॥ तेषामासीन्महाराज व्यतिक्षेपः परस्परम् । सिंहानामामिषेप्सूनां कूजतामिव संयुगे ॥ ३७ ॥ तेषां बाणसहस्रौघैराकीर्णा वसुधाभवत् । अन्तरीक्षञ्च सहसा बाणभूतमभूत्तदा ॥ ३८ ॥ शरान्धकारं बहुधा कृतं तत्र समन्ततः अभ्रच्छायेव सञ्जज्ञे

सात्यकि दूसरे रथपर नियत होकर राजामद्रके आधीन और पीड़ामान पांडवों को देखकर तीव्रता से शल्यके सम्मुखगया । २९ । युद्धका शोभा देनेवाला शल्य रथकी सवारीमें उस आयेहुये रथीके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथी के सम्मुख होताहै । ३० । शूर सात्यकि का और राजामद्रका वह युद्ध ऐसा कठिन हुआ । ३१ । जैसा कि पूर्व समयमें सम्बर और देवराजकायुद्ध हुआथा । ३२ । सात्यकि ने युद्धमें सम्मुख वर्त्तमान राजामद्रको देखकर दशबाणों से घायल करके तिष्ठ शब्दकिया । ३३ । फिर उस महात्माके हाथसे कठिनघायल राजामद्रने अपूर्व पुंखवाले तीक्ष्ण बाणों से सात्यकिको घायल किया । ३४ । इसके पीछे बड़े धनुषधारी पांडव सृञ्जय और यादव रथोंकी सवारीमें मामाके मारने की इच्छाओं से शीघ्र सम्मुखगये । ३५ । उसके पीछे सिंहके समान गर्जने वाले शूरवीरोंका महाकठिन युद्ध रुधिररूपी जल रखनेवाला जारी हुआ । ३६ । हे महाराज युद्धमें मांसके अभिलाषी सिंहोंके समान गर्जनेवाले उन वीरों की परस्पर चढ़ाई बहुत अच्छी हुई । ३७ । उन्हों के बाणों से हजारों समूहों से पृथ्वी आच्छादित होगई और अन्तरिक्षभी अकस्मात् बाणरूप होगया । ३८ । वहांबाणों

Shalya opposed him as one mad elephant does another. 30. The battle between Satyaki and Shalya was hard like that of Shamvar and Indra in the days of old. Seeing Shalya before him, Satyaki wounded him, with ten arrows and said "Stay, stay." Hard pressed by him, Shalya wounded Satyaki with sharp arrows. The great Pandav archers, with the Srinjayas and Yadavas, came in their cars to oppose Shalya. 35 Then the warriors fought hard with leonine roars Like lions, greedy for flesh, they attacked one another. The ground was covered with their arrows. The clouds of arrows made the air dark as if overcast with clouds. The gold

चौमुक्तैर्महात्मभिः ।३९॥ तत्र राजञ्छरैर्मुक्तैर्निर्मुक्तैरिव पन्नगैः । स्वर्णपुंखैः प्रकाशद्भिर्व्यरोचन्त दिशस्तदा ॥४०॥ तत्राद्भुत परञ्चक्रे शल्यः शत्रुनिबर्हणः । यदेकः समरे शूरो योधयामास वै बहून् ॥४१॥ मद्रराजभुजोत्सृष्टैः कङ्कबर्हिणवाजितैः । सपताद्भिः शरैर्घोरैरवाकीर्यत मेदिनी ॥४२॥ तत्र शल्यरथं राजन् विचरन्तं महाहवे । अपश्याम यथा पूर्वं शक्रस्यासुरसंक्षये ॥४३॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि संकुलयुद्धे पञ्चदशो ध्यायः,१५ ॥

सञ्जय उवाच । तत सैन्यास्तव विभो मद्रराजपुरस्कृताः । पुनरभ्यद्रवन् पार्थान् वेगेन महता रणे॥१॥पीडितास्तावका सर्वे प्रधावन्तो रणोत्कटाः । क्षणेनैव पार्थांस्ते बहु

ओरसे अनेक प्रकारके वाणोंका अन्धकार करनेपर महात्माओंके छोड़े हुये वाणोंसे बादलों से कीसी छाया उत्पन्न होगई । ३९ । हे राजा वहां सुनहरी पुंखवाले प्रकाशमान कांचली से छुटे सर्पोंके समान छोड़े हुये वाणों से दिशा शोभायमान हुई ।४०। शत्रुओं के मारनेवाले शल्यने वड़ा अपूर्व कर्मकिया जो अकेलेही शूरवीर ने युद्धमें बहुतोंके साथ लड़ाईकरी । ४१ । राजामद्रकी भुजासे छोड़े हुये कंक और मोरके परोंसे जटित गिरते हुये घोरवाणोंसे पृथ्वी आच्छादित होगई । ४२ । वहां बड़े युद्ध में शल्यके घूमते हुये रथको ऐसे प्रकारका देखा जैसे कि पूर्व समयमें असुरोंके नाश में इन्द्रका रथ हुआथा ४३ ॥

अध्याय १६ ॥

संजय बोले कि हे समर्थ इसकपीछे आपकी सेनाके लोग जिनका अग्रवर्ती राजामद्रथा। वही तीव्रता से फिर पांडवोंके सम्मुख गये । १ । युद्धमें मतवाले और

decked arrows, bright like serpents freed from skins, beautified the land everywhere 40. Shalya the destroyer of foes did deeds of wonder Alone he fought with many and covered the earth with arrows fitted with vulture and peacock quills We saw Shalya's car roaming in the field of battle like that of Indra at the time of his destroying the asurs " 43.

CHAPTER XVI

Sanjaya said, " Then the warriors of your army, headed by the King of Madra, again opposed the Pandavas and dispersed them with

रात् समलोडयन् ॥ २ ॥ ते वध्यमाना कुरुभिः पाण्डवा नावतस्थिरे निवार्य्यमाणा
भीमेन पश्यतोः कृष्णपार्थयोः ॥३॥ ततो धनञ्जयः क्रुद्धः कृपं सह पदानुगैः । अवाकि
रच्छरौघेण कृतवर्माणमेव च ॥ ४ ॥ शकुनिं सहदेवश्च ससैन्यं समवारयत् । नकुलः
पार्श्वतः स्थित्वा मद्रराजमवैक्षत ॥ ५ ॥ द्रौपदेयाश्च नरेन्द्रांश्च भूयिष्ठान् समवारयन् ।
द्रोणपुत्रञ्च पाञ्चाल्यः शिखण्डी समवारयत् ॥ ६ ॥ भीमसेनस्तु राजानं गदापाणि
रवारयत् । शल्यन्तु सह सैन्येन कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ॥७॥ ततः समभवद्युद्धं संसक्तं
तत्र तत्र ह । तावकानां परेषाञ्च संग्रामेष्वनिवर्त्तिनाम् ॥ ८ ॥ तत्र पश्यामहे कर्म
शल्यस्यातिमहद्रणे । यदेकः सर्वसैन्यानि पाण्डवानामयुध्यत ॥ ९ ॥ व्यदृश्यन्त तदा
शल्यो युधिष्ठिरसमीपतः । रणे चन्द्रमसोऽभ्यासे शनैश्चर इव ग्रहः ॥ १० ॥ पीडयित्वा
तु राजानं शरैराशीविषोपमैः । अभ्यधावत् पुनर्भीमं शरवर्षैरवाकिरत् ॥ ११ ॥ तस्य

पीड़ामान दौड़ते हुये आप के उन सब शूरवीरोंने आधिक्यता से क्षणभरमें ही पांडवोंको छिन्न भिन्न करदिया । २ । कौरवोंसेपायक मह पांडव श्रीकृष्ण और अर्जुनके देखते भीमसेनसे रोकेहुयेभी युद्ध में नियत नहीं । ३ । उसके पीछे क्रोध युक्त अर्जुनने कृपाचार्य और कृतवर्मा को उनके साथियों समेत बाण समूहोंसे ढक दिया । ४ सहदेव ने शकुनी को उसकी सेना समेत हटाया नकुलने एक भागमें नियत होकर राजामद्रको देखा । ५। और द्रौपदीके पुत्रोंने भी बहुतसे राजाओंको रोका पांचालदेशी शिखण्डीने अश्वत्थामाको रोका । ६ । और गदाधारी भीमसेन ने राजादुर्योधनको रोका कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरने सेनासमेत शल्यको रोका । ७। इसके पीछे युद्धसे न लौटनेवाले आपके शूरवीर और शत्रुपक्षियों के शूरवीरों का युद्ध जहां तहां बहुत कठिन हुआ । ८। वहां हमने युद्धमें शल्यके बहुत बड़े कर्मको देखा जोकि अकेलेनेही पांडवों की सब सेनाओं से युद्ध किया । ९ । तब शल्य उस युद्धमें युधिष्ठिरके समक्ष में ऐसा दिखाई पड़ा जैसे कि चन्द्रमा का सम्मुख शनीचर नक्षत्र दिखाईदेता है।१०। फिर विषैले सर्पकी समान बाणोंसेर जा को पीड़ामान करके भीमसेनके सम्मुख दौड़ा और बाणों की वर्षा से ढकदिया

the flights of their arrows Wounded by the Kauravas, the Pandavas could not stay in spite of the exertions of Bhim and fled away in the presence of Krishn and Arjun. Then Arjun hid Kripacharya, Kritvarma and their follwers with arrows. Sahadev checked Shakuni and his army and Nakul opposed Shalya. 5 The sons of Draupadi checked many kings, and Shikhandi checked Ashwathama. Bhim the mace bearer checked Duryodhan and Yudhishthir checked Shalya and his army Then your warriors fought hard with the Pandavas Then we saw Shalya's prowess. He alone fought against many He was seen opposing Yudhishthir as Saturn does the moon. 10 Having wounded the king with his darts like venomous serpents he rushed

तल्लाघवं ददृशुः तथैव च कृतास्त्रताम् । अपूजयन्ननीकानि परेषां तावकानि च ॥१२॥
पीड्यमानास्तु शल्येन पाण्डवा भृशविक्षताः । प्राद्रवन्त रणं हित्वा क्रोशमाने युधिष्ठिरे
॥ १३॥ वध्यमानेष्वनीकेषु मद्रराजेन पाण्डवः । अमर्षवशमापन्नो धर्मराजो युधिष्ठिरः
॥ १४ ॥ ततः पौरुषमास्थाय मद्रराजमपीडयत् । जयो वास्तु वधो वेति कृतबुद्धिर्म
हारथः ॥ १५ ॥ समाहूयाब्रवीत् सर्वान् भ्रातॄन् कृष्णञ्च माधवम् । भीष्मो द्रोणश्च
कर्णश्च ये चान्ये पृथिवीक्षितः ॥ १६ ॥ कौरवार्थे पराक्रान्ताः संग्रामे निधनं गताः
यथाभागं यथोत्साहं भवन्तः कृतपौरुषाः ॥ १७ ॥ भागोऽवशिष्ट एकोऽयं मम शल्यो
महारथः । सोऽहमद्य युधा जेतुमाशंसे मद्रकेश्वरम् । तत्र यन्मानसं मह्यं तत् सर्वं निग
दामि वः ॥ १८ ॥ चक्ररक्षाविमौ शूरौ मम माद्रवतीसुतौ । अजेयौ वासवेनापि समरे
वीरसम्मतौ ॥ १९ ॥ साध्विमौ मातुलं युद्धे क्षत्रधर्मपुरस्कृतौ । मदर्थं प्रति युध्येतां
मानार्हौ सत्यसङ्गरौ ॥२०॥ मां वा शल्यो रणे हन्ता तं वाहं भद्रमस्तु वः । इति सत्या

। ११ । आपकी और दूसरों की सेनाओं ने उसकी हस्तलाघवता और अस्त्रज्ञताकी प्रशंसा करी । १२ । फिर शल्यके हाथसे पीड़ामान अत्यन्त घायल पांडव युधिष्ठिरको पुकारतेहुये युद्धको छोड़भागे । १३ । राजामद्रके हाथसे सेनाओंके घायल होनेपर धर्मराज पाण्डव युधिष्ठिर क्रोधके वशीभूत हुये । १४ । इसके पीछे विजय होय व पराजयहोय यह निश्चय करनेवाले युधिष्ठिरने वीरता में नियत होकर राजामद्रको पीड़ामान किया । १५ । सबभाई और माधव श्रीकृष्णजी को बुलाकर बोला कि भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कर्ण आदिक जो अन्य राजालोग थे।१६। कौरवों के निमित्त उपाय करनेवाले उन लोगों ने युद्धमें नाशको पाया आपलोग भाग और उत्साहके समान पराक्रम करनेवाले । १७ । यह महारथी अकेला शल्य मेरा भाग शेषहै सो मैं अब युद्धके द्वारा राजामद्रको विजय करने की आशा करता हूं अब जो मेरे चित्तकी इच्छा है वह सब आपसे कहता हूं । १८ । माद्रीके पुत्र और नकुल और सहदेव मेरे चक्रके रक्षकहोयँ जोकि युद्धमें इन्द्रसेभी अजेयहो कर वीरों के प्रशंसित हैं । १९ । अच्छा है यह युद्ध में क्षत्रीधर्म को आगेकरनेवाले सत्य-

against Bhim and wounded him with his arrows. The warriors of both sides praised his dexterity of hand. Exceedingly wounded by Shalya's arrows, they ran away calling Yudhishthir for help. Yudhishthir was enraged to see his army wounded by Shalya. Standing firmly for victory or defeat, Yudhishthir wounded Shalya. 15. He gathered his brothers and Shri Krishn and said, " Bhishm, Drona, Karan and others have died fighting for the Kauravas. You have slain them all. Shalya alone remains as my share and I mean to conquer him. I therefore say to you what passes in my mind. Let Nakul and Sahadev invincible by Indra, guard my wheels and let them fight with their uncle Shalya like good kshatriyas. 20. Either Shalya will slay

मिमां वाणीं लोकवीरा निबोधत ॥ २१ ॥ योत्स्येऽहं मातुलेनाद्य क्षत्रधर्मेण पार्थिवा स्वयं समभिसन्धाय विजयायेतराय वा ॥ २२ ॥ तस्य मेऽभ्यधिकं शस्त्राण्युपकरणानि च । संयुज्यन्तु रथे क्षिप्रं शास्त्रवद्रथयोजका. ॥ २३ ॥ शैनेयो दक्षिणं चक्रं धृष्टद्युम्न स्तथोत्तरम् । पृष्ठगोपो भवत्वद्य मम पार्थो धनञ्जयः ॥ २४ ॥ पुरःसरो ममाद्यास्तु भीमः शस्त्रभृतांवर. । एवमभ्यधिक; शल्याद्भविष्यामि महामृधे ॥ २५ ॥ एवमुक्ता स्तथा चक्रु. सर्वे राज्ञ. प्रियैषिण ॥ २६ ॥ तत्र प्रहर्ष. सैन्यानां पुनरासीत् तदा नृप । पाञ्चालानां सोमकानां मत्स्यानाञ्च विशेषत ॥ २७ ॥ प्रतिज्ञां तां महाराजा, कृत्वा समभ्ययात् । तत. शङ्खांश्च भेरीश्च शतशश्चैव पुष्कलान् । अवादयन्त पाञ्चालाः सिंहनादांश्च नेदिरे ॥ २८ ॥ तेऽभ्यधावन्त संरब्धा मद्रराजन्तरस्विनं । महता हर्षजे नाथ नादेन कुरुपुङ्गवा ॥ २९ ॥ ह्रादेन गजघण्टानां शङ्खानां निनदेन च । तूर्य्यशब्देन

घाके योग्य सत्यसंकल्प नकुल और सहदेव मेरे निमित्त मामा से युद्धकरें । २० । शल्य युद्धमें मुझको मारेगा अथवा मैं उसको मारूंगा तुम्हारा कल्याणहोय हे लोकवीर राजालोगो तुम मेरे इस सत्य सत्य वचनको जानो । २१ । मैं क्षत्री धर्म से मामाके साथ लडूंगा मैं विजय व पराजय को निश्चय करके रहूंगा । २२ । अब मेरे सब शस्त्र और सामानों को रथ जोड़नेवाले मनुष्य बहुत शीघ्रता से शास्त्रके अनुसार रथपर रक्खें । २३ । सात्यकि दक्षिणी चक्रकी और धृष्टद्युम्न उत्तरचक्र की रक्षाकरें अब मेरे पृष्ठका रक्षक पांडव अर्जुन होय । २४ । और अग्र वर्त्ती शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ बलवान् भीमसेन होय इसप्रकार शल्य से युद्ध में अधिक हूंगा । २५ । इस प्रकार के वचन सुनकर राजाके हित चाहनेवाले सब लोगोंने उसीप्रकार किया २६। इसके पीछे सेना में बड़ी प्रसन्नता उत्पन्नहुई विशेष करके पांचाल सोमक और मत्स्यदेशी लोगोंकी प्रसन्नता बहुत प्रकटहुई । २७ । तब राजायुधिष्ठिर प्रतिज्ञाको करके शल्यके सम्मुखगया उसकेपीछे पांचालोंने सैकड़ों शंख और उत्तम भेरियोंको बजाया और सिंहनादोंकोकिया।२८। और क्रोधयुक्त होकर उस राजामद्र के सम्मुख दौड़े फिर श्रेष्ठ कौरव प्रसन्नतासे उत्पन्न बड़े

me or I shall slay him' I shall fight with my uncle like a brave man for victory or defeat. Let them put all the requisites on my car. Let Satyaki protect my right wheel and Dhrishtadyumn the left one 'Let Arjun protect my back and Bhim the fore runner of my warriors lead the way. Thus I shall become superior to Shalya." 25 Having heard this, all the well wishers of the king did as they were told to do. The people of the army, specially the Panchals, Somaks and Matsyas, were much pleased. Having formed this resolution, Yudhishthir faced Shalya and the Panchals sounded conchs and drums and roared leonine roars They attacked the king of Madra in anger The Kauravas ringing the earth with

महता नादयन्तश्च मेदिनीम् ॥ ३० ॥ तान् प्रत्यगृह्णनात् पुत्रस्ते मद्रराजश्च वीर्यवान् । महामेघानिव बहून् शैलावस्तोदयावुभौ ॥ ३१ ॥ शल्यस्तु समरश्लाघी धर्मराजमरिन्दमम् । ववर्ष शरवर्षेण वर्षेण मघवानिव ॥ ३२ ॥ तथैव कुरुराजोऽपि प्रगृह्य रुचिरं धनुः । द्रोणोपदेशान् विविधान् दर्शयानो महामनाः ॥ ३३ ॥ ववर्ष शरवर्षाणि चित्रं लघु च सुष्ठु च । न चास्य विवरं कश्चिद्ददर्श चरतो रणे ॥ ३४ ॥ तावुभौ विविधैर्बाणैस्ततक्षाते परस्परम् । शार्दूलावामिषप्रेप्सू पराक्रान्ताविवाहवे ॥ ३५ ॥ भीमस्तु तव पुत्रेण रणशौण्डेन सङ्गतः । पाञ्चाल्यः सात्यकिश्चैव माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ । शकुनिप्रमुखान् वीरान् प्रत्यगृह्णन् समन्ततः । ३६ । तदासीत्तुमुलं युद्धं पुनरेव जयैषिणाम् । तावका नां परेषाञ्च राजन् दुर्मन्त्रिते तव ॥३७॥ दुर्योधनस्तु भीमस्य शरेणानतपर्वणा । चिच्छेद

शब्दवाले हाथियों के घंटे और शंखों के शब्द और तूरी बाजेके बडे शब्द से पृथ्वीको शब्दायमान करते सम्मुख हुये।३०।उससमय आपके पुत्र और पराक्रमीराजा मद्रने उन सब पांडवोंको ऐसे रोका जैसे कि अस्ताचल और उदयाचल पर्वत बहुतसे बड़े२ बादलों को रोकते हैं । ३१ । फिर युद्धमें प्रशंसनीय शल्य बाणोंकी वर्षा से शत्रुओं के विजय करनेवाले धर्मराजपर वर्षा करनेलगा जैसे कि जल की वर्षा इन्द्र बरसाता है । ३२ । उसीप्रकार बड़े स हसी कौरवराजनेभीद्रोणाचार्य की नानाशिक्षाओं को दिखलाते बाणों की वर्षा को बरसाया । ३३ । वह बाण वृष्टि अपूर्व तीक्ष्ण और मनोहरथी और युद्ध में घूमतेहुये उसके छिद्रको किसी ने नहींदेखा ।३४। उन दोनोंने नानाप्रकार के बाणोंसे परस्पर ऐसे घायल किया जैसे कि मांसके अभिलाषी युद्धमें पराक्रम करनेवाले दो शार्दूल होतेहैं । ३५ ।फिर भीमसेन उस युद्धमें कुशल आपके पुत्रसे लड़ा धृष्टद्युम्न, सात्यकि पांडव नकुल और सहदेवने शकुनी आदिक वीरोंको चारोंओर से रोका । ३६ । हे राजा आपकी कुमन्त्रता होनेपर विजयाभिलाषी आपके पुत्र और प्रतिपक्षियों का फिर युद्ध जारीहुआ । ३७ । दुर्योधन ने टेढ़े पर्ववाले बाण से भीमसेनकी उसध्वजा

elephant bells, conchs and trumpets, faced them,30 Then your son and Shalya checked the Pandavas as high hills check clouds. Brave Shalya showered his arrows over Yudhishthir the destroyer of foes The Kaurav prince gave proof of the superior training which he had received from Drona and showered arrows. That shower of arrows was matchless, sharp and interesting None could see any defect in him, while he was roaming in the field of battle. They wounded one another with arrows like two lions greedy for flesh Then Bhim fought with your son and Dhrishtadyumn, Satyaki, Nakul, and Sahadev checked your warriors. There was a very dreadful battle between the two parties on account of your evil policy Duryodhan cut down the gold decked standard of *Bhim bright like the Sun* The

आदित्य संग्रामे ध्वजं हेमविभूषितम् ॥ ३८ ॥ स किङ्किणीकजालेन महता चारुदर्शन
पपात रुचिरः संख्ये भीमसेनस्य मारिष ॥ ३९ ॥ पुनश्चापि धनुश्चित्रं गजराजकरोप
मम् । क्षुरेण सितधारेण प्रचकर्त नराधिप ॥४०॥ स छिन्नधन्वा तेजस्वी रथशक्त्या सुतं
तव बिभेदोरसि विक्रम्य स रथोपस्थ आविशत् ॥४१॥ तस्मिन् मोहमनुप्राप्ते पुनरेव वृको
दरः । यन्तुरहरत् शिरः कायात् क्षुरप्रेणाहरत्तदा ॥ ४२ ॥ हतसूता हयास्तस्य रथमा
दाय भारत । व्यद्रवन्त दिशो राजन् हाहाकारस्ततोऽभवत् ॥ ४३ ॥ तमभ्यधावत् त्रा
णार्थं द्रोणपुत्रो महारथः । कृपश्च कृतवर्मा च पुत्रं तव परीप्सवः ॥ ४४ ॥ तस्मिन्
विलुलिते सैन्ये त्रस्तास्तस्य पदानुगाः । गाण्डीवधन्वा विस्फार्य धनुस्तानहनच्छरैः
॥४५॥ युधिष्ठिरस्तु मद्रेशमभ्यधावदमर्षितः । स्वयं संचोदयन्नश्वान् दन्तवर्णान् मनोजवान्
॥ ४६ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम कुन्तीपुत्रे युधिष्ठिरे । पुरा भूत्वा मृदुर्दान्तो यत्तदा दारु

को जोकि सूर्यके समान प्रकाशमान और सुवर्णसे अलंकृतथी काटा।३८। हेमदाई
देनेवाले भीमसेनकी वह ध्वजा जोकि क्षुद्रघंटिकाओं के बड़ेजालसे सुन्दर दर्शन
और चित्त रोचक थी युद्धभूमि में गिरपड़ी ।३९। फिर राजाने उसके उस धनुषको
जो कि रत्नोंसे जटित और गजराजकी सूँड़के समान था तीक्ष्णधारवाले क्षुरप्रसे
काटा । ४० । उसटूटे धनुषवाले तेजस्वी पराक्रमीने रथशक्तिसे आपकेपुत्रकोछाती
पर छेदा तब वह रथके बैठने के स्थानपर गिरपड़ा । ४१ । तब उसके अचेतहोनेपर
भीमसेनने क्षुरप्रसे उसके सारथीके शिरकोकाटा । ४२ । हे भरतवंशीराजा धृत
राष्ट्र तब उसके वह घोड़े जिसका कि सारथी मारागया रथको लेकर दिशाओं
को भागे उस हेतुसे बड़ा हाहाकार हुआ । ४३ । बड़ा बलवान् अश्वत्थामा कृपा
चार्य,कृतवर्मा, आपकेपुत्रके चाहनेवाले यहसब रक्षाके निमित्त उसकी ओरको
दौड़े ४४। उस सेनाके चलायमान होनेपर उसके पीछे आनेवाले- लोग भयभीत
हुये तब गाण्डीव धनुषधारीने धनुषको टंकारकर उनको बाणोंसेमारा । ४५ । फिर
क्रोधयुक्त युधिष्ठिर चित्तके समान शीघ्रगामी अपने श्वेतवर्ण के घोड़ेको चलाय
मान करता राजामद्रके सम्मुख दौड़ा । ४६ । वहां हमने कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिर में

standard of Bhim, fitted with small bells and pleasing to the eye, fell down on the ground. The king cut also his gem bedecked bow, like the trunk of an elephant, with his sharp edged arrow. 40. Bhim pierced your son's breast with a spear and he fell down on his seat in the car. Then Bhim cut down the head of his driver with an arrow. The driverless horses ran away with the car and there were cries of dismay raised from all the warriors. Mighty Ashwathama Kripacharya, Kritvarma and his other well-wishers ran out to help him. During that hubbub his followers were confused and the wielder of Gandiv hit them with his arrows. Then Yudhishthir in his car drawn by white horses, swift like the mind, attacked the king of

लोभयत् ॥ ४७ ॥ विवृताक्षस्तु कौन्तेयो वेपमानश्च मन्युना । चिच्छेद योधान्निशितै र्भल्लैः शतसहस्रश: ॥ ४८ ॥ यां यां प्रत्युद्ययौ सेनां तां तां ज्येष्ठः स पाण्डवः । शरैरपातयद्राजन् गिरीन् वज्रैरिवोत्तमैः ॥ ४९ ॥ साश्वसूतध्वजरथान् रथिनः पातयन् बहून् । आक्रीडदेको बलवान् पवनस्तोयदानिव ॥ ५० ॥ साश्वारोहांश्च तुरगान् पत्तींश्चैव सहस्रश: । व्यापादयत संग्रामे क्रुद्धो रुद्रः पशूनिव ॥ ५१ ॥ शून्यमायोधनं कृत्वा शरवर्षैः समन्ततः । अभ्यद्रवत मद्रेशं तिष्ठ शल्येति चाब्रवीत् ॥ ५२ ॥ तस्य तच्चरितं दृष्ट्वा संग्रामे भीमकर्मणः । वित्रेसुस्तावकाः सर्वे शल्यस्त्वेनं समभ्ययात् ॥ ५३ ॥ ततस्तौ तु सुसंरब्धौ प्रध्माप्य सलिलोद्भवौ । समाहूय तदान्योन्यं भर्त्सयन्तौ समीयतुः ॥ ५४ ॥ शल्यस्तु शरवर्षेण युधिष्ठिरमवाकिरत् । मद्रराजञ्च कौन्तेयः शरवर्षैरवाकि

अपूर्व चमत्कार को देखा कि जो प्रथम मृदु और जितेन्द्री होकर फिर कठिन हुआ । ४७ । फिर फैलेनेत्र क्रोधसे कम्पायमान कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिरने तीक्ष्णधार भल्लों से लाखों शूरवीरोंको मारा । ४८ । हे राजा वह बड़ा पाण्डव जिस सेनाके सम्मुख गया उस सेनाको बाणोंसे ऐसा गिराया जैसे कि उत्तम वज्रों से पर्वतों को गिराते हैं । ४९ । अकेला पराक्रमी घोड़े सारथी ध्वजा और रथसमेत बहुतसे रथ सवारों को गिराता ऐसा क्रीड़ा करनेवाला हुआ जैसे वायु बादलोंको गिराकर क्रीड़ा करनेवाला होता है । ५० । उसने युद्धमें अश्वसवार घोड़े और पत्तियों को ऐसे हजारों प्रकारसे नाशकिया जैसे कि क्रोधरूप रुद्रजी पशुओंका नाश करते हैं ।५१। चारोंओर बाणोंकी वर्षासे रणभूमिको निर्जन करके राजा मद्रके सम्मुख जाकर तिष्ठशब्दों को किया ।५२। आपके सब शूरवीर उग्रभयकारी कर्मकर्त्ता युधिष्ठिरके उसकर्मको युद्धमें देखकर भयभीतहुये फिर शल्य उसके सम्मुख गया । ५३ । तब वह दोनों अत्यन्त क्रोधयुक्त शङ्खोंको बजाकर परस्पर बुलाते, और घुड़कतेहुये सम्मुखहुये । ५४ । तब शल्यने बाणोंकी वर्षासे युधिष्ठिरको पीड़ामान किया और कुन्तीकेपुत्रने भी बाणों की वृष्टियों से राजाशल्यको ढकदिया । ५५ ।

Madra Then we saw the wonderful prowess of Yudhishthir who, mild in the beginning was hard at last. Then with eyes dilated in anger, he killed thousands of warriors with his arrows. He slew the warriors with his arrows, in whatever direction he went,, as mountains fall down by vajra. Making horses, drivers, banners and cars fall down with his arrows, he dispersed them as the wind does the clouds 50 He destroyed the horse and foot in thousands of ways as Rudra destroys animals Annihilating the people of the army, he faced the king of Madra and said to him, Stay, stay ; Seeing the prowess and the dreadful deeds, the warriors were terrified Shalya again opposed him They attacked and challenged each other with the blasts of conchs and wounded each other with their

रत् ॥ ५५ ॥ व्यदृश्येतां तदा राजन् कङ्कपत्रैर्भिरावृते उद्भिन्नरुधिरौ शूरौ मद्रराज युधिष्ठिरौ ॥ ५६ ॥ पुष्पिताविव रेजातुर्वने शाल्मलिकिंशुकौ । दीप्यमानौ महात्मानौ मेदतुर्युद्धदुर्मदौ ॥ ५७ ॥ दृष्ट्वा सर्वाणि सैन्यानि नाध्यवस्यस्ततोऽर्जयम् । हत्वा मद्राधिपं पार्थो भोक्ष्यतेऽद्य वसुन्धराम् । शल्यो वा पाण्डवं हत्वा दद्याद्दुर्योधनाय गाम् ॥ ५९ ॥ इतीव निश्चयो नाभूद्योधानां तत्र भारत । प्रदक्षिणमभूत् सर्वं धर्मरा जस्य युध्यत ॥ ६० ॥ ततः शरशतं शल्यो मुमोचाशु युधिष्ठिरे । धनुश्चास्य शिता ग्रेण बाणेन निरकृन्तत ॥ ६१ ॥ सोऽन्यत् कार्मुकमादाय शल्यं शरशतैस्त्रिभिः । अवि ध्यत् कार्मुकञ्चास्य क्षुरेण निरकृन्तत ॥ ६२ ॥ अथास्य निजघानाश्वांश्चतुरो नतप र्वभिः । द्वाभ्यामतितीक्ष्णाभ्यामुभौ च पार्ष्णिसारथी ॥ ६३ ॥ ततोऽस्य दीप्यमानेन पीतेन निशितेन च । प्रमुखे वर्त्तमानस्य भल्लेनापाहरद्ध्वजम् । ततः प्रभग्नं तत् सैन्यं दौर्य्योधनमरिन्दम ॥ ६४ ॥ ततो मद्राधिपं द्रौणिरभ्यधावत्तथाकृतम् । आरोप्य स्वर

तब शल्य और युधिष्ठिर दोनोंवीर बाणोंसे छिदेहुये रुधिरसे पूर्ण शरीर दिखाई पड़े । ५६ । वनमें प्रफुल्लित शाल्मली और किंशुकनाम वृक्षोंके समान दोनों शोभायमानहुये उन प्रकाशमान प्राणोंके घ । । दुर्मद दोनों को देखकर सब सेनाके लोगोंने विजय को नहीं निश्चय किया अर्थात् यह सङ्कल्प विकल्प करने लगे कि अब न जानिये पांडव शल्यको मारकर पृथ्वीको भोगेगा व पाण्डव को मारकर शल्य इस पृथ्वी को भोगेगा, अथवा शल्य पाण्डवको मारकर इस सब पृथ्वीको धनके अर्पदेगा ।५९। हे भरतर्षभ वहां शूरवीरोंको यह निश्चय नहीं हुआ युद्ध करनेवाले धर्म्मराज के सब लक्षणादिक दाहिनेहुये । ६० । इसके पीछे शल्यने सौ बाणोंको युधिष्ठिरपर छोड़ा और उसके धनुषको तीक्ष्णधार वाले छुरसेकाटा ।६१। उसने दूसरे धनुषको लेकर शल्यको तीनसौ बाणोंसेछेदा और छुरसेहि उसके धनुषकोकाटा ।६२।फिर टेढ़ेपर्व्ववाले बाणोंसे उसके चारोंघोड़ों को मारा और तीक्ष्ण दोबाणों से दोनों आगे पीछे वालों समेत सारथी को मारा । ६३ । फिर प्रकाशित पीतरंग तीक्ष्णधार बाण से और भल्लसे उसकी ध्वजा को काटा हे शत्रुओं के विजय करनेवाले इसके अनन्तर वह दुर्योधन

arrows. 55. The bodies of both Shalya and Yudhishthir were pierced all through with arrows and looked like Kins'uk or Shalmali trees in bloom. None of the warriors could draw conclusion of victory from their battle, i. e. they did not know whether Shalya would slay Yudhishthir or the latter would slay the former. Good omens appeared to the right of Yudhishthir during the battle. 60. Then Shalya discharged a hundred arrows at Yudhishthir and cut his bow with a dart. He took up another bow and wounded Shalya with three hundred arrows, cutting his bow with an arrow and breaking his standard with another. At this Duryodhan's army dispersed. Ashwa-

यन्चैनं रथरथाय प्रयुयुधे ॥ ६६॥ मुहूर्त्तमिव तौ गत्वा नर्दमाने युधिष्ठिरे । स्थित्वा ततो मद्रपतिरन्यं स्यन्दनमास्थित. ॥ ६७ ॥ विधिवत् कल्पितं दिव्यं महाम्बुदनिनादितम् । सज्जयन्त्रोपकरणं द्विषतां लोमहर्षणम् ॥ ६८ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि शल्ययुधिष्ठिरयुद्धे षोडशो ऽध्यायः १६ ॥

सञ्जय उवाच । अथान्यद्धनुरादाय बलवद्वेगवत्तरम् । युधिष्ठिरं मद्रपतिर्विद्ध्वा सिंह इवानदत् ॥ १ ॥ ततः स शरवर्षेण पर्जन्य इव वृष्टिमान् । अभ्यवर्षदमेयात्मा क्षत्रियान् क्षत्रियर्षभः ॥ २ ॥ सात्यकिं दशभिर्विद्ध्वा भीमसेनं त्रिभिस्तथा । सहदेवं त्रिभिर्विद्ध्वा युधिष्ठिरमपीडयत् ॥ ३॥ तांस्तानन्यान्महेष्वासान् साश्वान् सरथकुञ्ज

की सेना छिन्न भिन्न होगई । ६५ । उसके पीछे अश्वत्थामाजी उस वृषापाले शल्यकी ओर दौड़े और उसको अपने रथपर बैठाकर शीघ्रता से चलदिये । ६६ । वहदोनों एक मुहूर्त चलकर युधिष्ठिरके गर्जने पर निवृत्तहुये तब राजा शल्य उस दूसरे रथपर सवार हुआ । ६७ । जोकि विधिके अनुसार अलंकृत घड़े बादल के समान शब्दायमान बड़े बड़े अस्त्र शस्त्र यन्त्रोंसे पूर्ण और शत्रुओं के रोमांचों का खड़ा करने वाला था ६८ ॥

अध्याय १७ ।

सञ्जय बोले कि इसके अनंतर पराक्रमी राजाशल्य बड़े वेगवान दूसरे धनुष का लेकर युधिष्ठिरको छेदताहुआ सिंहके समान गर्जा । १ । फिर वह साहसी क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ शल्य वर्षाके बादलों के समान बाणोंकी वर्षा से क्षत्रियोंके ऊपर वर्षा करनेलगा । २ । सात्यकि को दशबाण से भीमसेन को तीनबाणसे सहदेवको भी तीनबाण से छेदकर उसने युधिष्ठिरको पीड़ामान किया ।३। विशिखनाम बाणों

athama rushed towards Shalya and took him on his car They opposed Yudhishthir for a time and then Shalya mounted another car, properly furnished, rumbling like thunder, full of arms and weapons and terrifying the foes." 68.

CHAPTER XVII

Sanjaya said "Then Shalya took up another hard and strong bow and roared a lion's roar after wounding Yudhishthir. Then he showered arrows like rain over the kshatryas He wounded

र्दः। अर्दयामास विशिखैरुल्काभिरिव कुञ्जरान् ॥ ४ ॥ कुञ्जरान् कुञ्जरारोहान श्वानश्वप्रयायिनः। रथांश्च रथिभिः सार्धं जघान रथिनांवर ॥ ५ ॥ बाहूंश्चिच्छेद च तथा सायुधान् केतनानि च। चकार च महीं योधैस्तीर्णां वेदीं कुशैरिव ॥६॥ तथा तमरिसैन्यानि घ्नन्तं मृत्युमिवान्तकम्। परिवव्रुर्भृशं क्रुद्धा पाण्डुपाञ्चालसोमकाः ॥ ७ ॥ तं भीमसेनश्च शिनेश्च नप्ता माद्र्याश्च पुत्रौ पुरुषप्रवीरौ। समागतं भीमबलेन राज्ञा पर्यापुरन्योन्यमथाह्वयन्त ॥ ८ ॥ ततस्तु शूरा समरे नरेन्द्र मद्रेश्वरं प्राप्य युधांवरिष्ठम्। आवार्य चैनं समरे नृवीरं जघ्नुः शरैः पत्रिभिरुग्रवेगैः ॥ ९ ॥ संरक्षितो भीमसेनेन राजा माद्रीसुताभ्यामथ माधवेन। मद्राधिपं पत्रिभिरुग्रवेगैस्स्तनान्तरे धर्मसुतो निजघ्ने ॥ १० ॥ ततो रणे तावकानां रथौघाः समीक्ष्य मद्राधिपतिं शरा

से उन बड़े धनुषधारियोंको घोड़े रथ और कुञ्जरों समेत ऐसा पीड़ामान किया जैसे कि उल्काओं से हाथियों को पीड़ित करते हैं ।४। उस रथियोंमें श्रेष्ठनेहाथी हाथीके सवार घोड़े घोड़ोंकेसवार और रथोंको रथ सवारों समेत मारा ।५। और शस्त्रवाले हाथ और ध्वजाओं समेत ध्वजाओंको काटा और पृथ्वीको शूरवीरों से ऐसा आच्छादित करदिया जैसे कि यज्ञकी वेदीको कुशाओं से आच्छादित करते हैं ।६। अत्यन्त क्रोधयुक्त पाण्डव पांचाल और सोमकोंने उसप्रकार कालके समान शत्रुओं की सेनाके मारनेवाले शल्यको चारोंओर से घेरलिया ।७। इसके पीछे पुरुषोत्तम नकुल सहदेव सात्यकि और भीमसेनने भयकारी बलवाले राजा युधिष्ठिरसे भिड़ेहुये समर्थ शल्यको परस्पर बुलाया ।८। इसके पीछे शूरोंने उन शूरवीरों में श्रेष्ठ नरवीर महाराज शल्यको पाकर और युद्धमें उसको घेरकर बड़े वेगवान् बाणोंसे घायल किया । ९ । भीमसेन,नकुल, सहदेव और सात्यकिसेअच्छे प्रकार रक्षित धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर ने बड़े वेगवान् बाणों से राजामद्रको छातीपर घायल किया । १० । इसके पीछे अच्छी अलंकृत बड़े उत्तम आपके रथियों के समूहोंने युद्धमें राजामद्रको बाणोंसे पीड़ामान देखकर दुर्य्योधनके मतसे शल्यको

Satyaki with ten arrows Bhim and Sahadev with three each and Yudhishthir with many. He hit them and their horses, cars and yokes as elephants are attacked by sparks of fire He cut down the elephants, cars and horses with their riders 5. He dexterously cut down the standards and filled the earth with the bodies of warriors as altars are spread over with Kusha grass The Pandavas, Panchals and Somaks, much enraged, surrounded Shalya, the destroyer of foes Then Nakul, Satyaki, Sahadev and Bhim challenged Shalya who was engaged in fighting with Yudhishthir. Surrounding brave Shalya in the field of battle, they wounded him with sharp arrows. Protected by Bhim, Nakul, Sahadev and Satyaki, Yudhishthir wounded Shalya on the breast 10 Your great warriors seeing king Shalya

चैम । नराः सर्वे परिवव्रुः सुसज्जा दुर्योधनस्यानुमते समन्तात् ॥ ११ ॥ ततो द्रुतं मद्रजनाधिपो रणे युधिष्ठिरं सप्तभिरभ्यविध्यत् । तञ्चापि पार्थो नवभिः पृषत्कैर्विव्याध राजंस्तुमुले महात्मा ॥ १२ ॥ आकर्णपूर्णायतसंप्रयुक्तैः शरैस्तथा संयति तैलधौतैः । अन्योन्यमाच्छादयतां महारथौ मद्राधिपश्चापि युधिष्ठिरश्च ॥ १३ ॥ ततस्तु तूर्णं समरे महारथौ परस्परस्यान्तरमीक्षमाणौ । शरैर्भृशं विव्यधतुर्नृपोत्तमौ महाबलौ शत्रुभिरप्रधृष्यौ ॥ १४ ॥ तयोर्धनुर्ज्यातलनिस्वनो महान् महेन्द्रवज्राशनितुल्यनिस्वनः । परस्परं बाणगणैर्महात्मनोः प्रवर्षतोर्मद्रपपाण्डुवीरयोः ॥ १५ ॥ तौ चेरतुर्व्याघ्रशिशुप्रकाशौ महावनेष्वामिषगृद्धिनाविव । विषाणिनौ नागवराविवोत्कटौ ततक्षतुः संयुगजातदर्पौ ॥ १६ ॥ ततस्तु मद्राधिपतिर्महात्मा युधिष्ठिरं भीमबलं प्रसह्य । विव्याध वीरं हृदयेऽतिवेगं शरेण सूर्याग्निसमप्रभेण ॥ १७ ॥ ततोऽतिविद्धोऽथ युधिष्ठिरस्तदा सुसंप्रयुक्तेन शरेण राजन् । जघान मद्राधिपतिं महात्मा मुदञ्च लेभे

आगे से अध्यवर्ची किया । ११ । इसके पीछे राजामद्रने युद्धमें युधिष्ठिरको शीघ्रता पूर्वक सातवाणों से घायल किया हे महाराज महात्मा युधिष्ठिरने भी तुमुल युद्ध में पृषत्कनाम नौ बाणों से उसको घायल किया । १२ । तब युद्धमें दोनों महारथी युधिष्ठिर और शल्यने कानतक खैंचकर छोड़हुये तेलसे साफ किये हुये बाणोंसे परस्पर ढकादिया ।१३। फिर परस्पर अवकाश ढूंढनेवाले शत्रुओं से निर्भय बड़े बलवान् महारथी राजाओं में श्रेष्ठ दोनोंने शीघ्रता बाणोंसे कठिन घायल किया ।१४।परस्पर बाण समूहों समेत धनुष खैंचनेवाले महात्मा राजाशल्य और युधिष्ठिर की प्रत्यंचाके ऐसे बड़े शब्दहुये जो कि महाइन्द्रके वज्रके समान शब्दायमान थे । १५ । वह दोनों महावन में मांसाभिलाषी व्याघ्रों के बच्चों के समान घूमनेवाले हुये और युद्धमें अहङ्कारी दोनोंने बड़े दन्ती हाथियों के समान परस्पर घायल किया । १६ उसके पीछे महात्मा राजामद्रने भयानक पराक्रम वाले राजा युधिष्ठिर को रोककर सूर्याग्निके समान प्रकाशित बाणोंसेउसबड़े वेगवान् वीरको हृदयपर घायल किया । १७ । हे राजा इसके पीछे अत्यंत घायल युधिष्ठिरने भी अच्छे प्रकार चलाये हुये बाण से राजामद्र को घायल किया और बहुत आनन्द को

thus surrounded by the enemies, came round him by Duryodhan's order. Shalya wounded Yudhishthir with seven arrows and the latter pierced the former with nine darts. Both the warriors covered each other with well oiled arrows and wounded each other. The sounds of their bowstrings were like those of the vajra of Indra. 15. They roamed like young lions in search of flesh and wounded each other like two large-tusked elephants. Having checked Yudhishthir, the king of Madra wounded him on the breast with arrows bright like the Sun or fire. Yudhishthir wounded Shalya with a well-aimed arrow and rejoiced at his success. Shalya with eyes red

ऋषयः कुरुनाथ ॥ १८ ॥ ततो मुहूर्तादिव पार्थिवेन्द्रो लब्ध्वा संज्ञां क्रोधसंरक्तनेत्रः । शतेन पार्थं त्वरितो जघान सहस्रनेत्रप्रतिमप्रभावः ॥ १९ ॥ त्वरंस्ततो धर्मसुतो महात्मा शल्यस्य क्रुद्धो नवभिः पृषत्कैः । भित्त्वा ह्युरस्तपनीयञ्च वर्म जघान षड्भिस्त्वपरैः पृषत्कैः ॥ २० ॥ ततस्तु मद्राधिपतिः प्रहृष्टो धनुर्विकृष्य व्यसृजन् पृषत्कान् । द्वाभ्यां क्षुराभ्याञ्च तथैव राज्ञश्चिच्छेद चापं कुरुपुङ्गवस्य ॥ २१ ॥ नवं ततोऽन्यत् समरे प्रगृह्य राजा धनुर्घोरतरं महात्मा । शल्यं हि विव्याध शरैः समन्तात् यथा महेन्द्रो नमुचिं शिताग्रैः ॥ २२ ॥ ततस्तु शल्यो नवभिः पृषत्कैर्भीमस्य राज्ञश्च युधिष्ठिरस्य । निकृत्य रौक्मे पटुवर्मणी तयोर्विदारयामास भुजौ महात्मा ॥ २३ ॥ ततोऽपरेण ज्वलनार्कतेजसा क्षुरेण राज्ञो धनुरुन्ममाथ । कृपश्च तस्यैव जघान सूतं षड्भिः शरैः सोऽभिमुखं पपात ॥ २४ ॥ मद्राधिपश्चापि युधिष्ठिरस्य शरैश्चतुर्भिर्निजघान वाहान् । वाहांश्च हत्वा व्यकरोन्महात्मा योधक्षयं धर्मसुतस्य राज्ञः ॥ २५ ॥ तथाकृते राजनि भीमसेना

पोंसा ॥ १८ ॥ इसके पीछे इन्द्रके समान प्रभाव वाले क्रोधसे रक्त नेत्र महाराज शल्य ने एक मुहूर्तही में सचेतता को पाकर सौ बाण से शीघ्रही पाण्डव को घायल किया ॥ १९ ॥ तब शीघ्रता करते धर्म्मपुत्र महात्मा ने क्रोधयुक्त होकर पृषत्कनाम नौबाणों से शल्यकी छाती और सुवर्ण के कवच को छेदकर दूसरे छःपृषत्कोंसे भी घायल किया ॥ २० ॥ इसके पीछे बड़े प्रसन्न राजामद्रने धनुषको खैंचकर पृषत्कोंको छोड़ा और कौरवोंमें श्रेष्ठ राजायुधिष्ठिरके धनुष दोबाणोंसे काटा ॥ २१ ॥ इसप्रकार युद्ध में महात्मा राजायुधिष्ठिर ने भी बड़े घोर दूसरे नवीन धनुषको लेकर तीक्ष्णनोक वाले बाणों से शल्यको चारों ओर से ऐसे घायल किया जैसे कि महाइन्द्र ने नमुचि असुर को घायल किया था ॥ २२ ॥ तब महात्मा शल्य ने नौपृषत्कोंसे भीमसेन और राजा युधिष्ठिरके सुन्दर सुवर्णमयी कवचों को काटकर इन दोनों की भुजाओं को घायल किया ॥ २३ ॥ इसके पीछे सूर्याग्नि के समान प्रकाशित क्षुर से राजा के धनुष को तोड़ा और कृपाचार्य्य ने छः बाणों से उसके सारथी को मारा तब वह सारथी सम्मुख गिरपड़ा ॥ २४ ॥ राजामद्र ने

in anger coming soon to consciousness wounded the Pandav with a hundred arrows. Yudhishthir in his rage wounded Shalya with nine arrows and pierced his armour with six more. 20. Then cheerfully shooting arrows, he cut down Yudhishthir's bow with two darts. Yudhishthir took up another new bow and wounded Shalya with sharp pointed arrows as Indra had done Namuchi. Shalya pierced through the gold armours of Yudhishthir and Bhim and wounded them on the arms. 23. Then he cut down the king's bow with a bright dart. Kripacharya slew his driver and made him fall down from the car. The king of Madra slew the four horses of Yudhishthir and destroyed the warriors of Yudhishthir. 25. At this Bhim

मद्राधिपस्याशु ततो महात्मा । छित्वा धनुर्भल्लवता शरेण द्वाभ्यामविध्यत् सुभृशं नरेन्द्रम् ॥ २६ ॥ अथापरेण स्य जहार यन्तुः कायाच्छिरः सन्नहनीयमध्यात् । जघान वाहांश्चतुरः स शीघ्रं ततो भृशं कुपितो भीमसेन ॥ २७ ॥ तमग्रणी सर्वधनुर्धराणामेकं चरन्तं समरेऽतिवेगम् । भीम शतेनव्यकिरच्छराणां माद्रीपुत्र सहदेवस्तथैव । तै सायकैर्मोहितं वीक्ष्य शल्यं भीम शरैरस्य चकर्त वर्म । २८ ॥ स भीमसेनेन निकृत्तवर्मा मद्राधिपश्चर्म सहस्रतारम् ॥ २९ । प्रगृह्य खड्गञ्च रथान्महात्मा प्रस्कन्द्य कुन्तीसुतमभ्यधावत् । छित्वा रथेषां नकुलस्य सोथ युधिष्ठिरं भीमबलोऽभ्यधावत् ॥ ३० ॥ तञ्चापि राजानमथोत्पतन्तं क्रुद्धं यथैवान्तकमापतन्तम् । धृष्टद्युम्नो द्रौपदेयाः शिखण्डी शिनेश्च नप्ता सहसा परीयुः । ३१ ॥ अथास्य चर्माप्रतिमं न्यकृन्तद्भीमो महात्मा दशभिः पृषत्कैः । खड्गञ्च भल्लैर्निचकर्त मुष्टौ नदन् प्रहृष्टस्तव सैन्यमध्ये ॥ ३२ ॥ तत् कर्म भीमस्य समीक्ष्य हृष्टास्ते पाण्डवानां प्रवरा रथौघाः नादं प्रच

भी चारोंओरसे युधिष्ठिरके चक्र घोड़ों का मारकर उस धर्मराजके, शूरवीरोंका बड़ा विनाश किया । २५ । राजा के उस दशावाला करनेपर महात्मा भीमसेन नेशीघ्रही तीक्ष्णभीत्लसे राजा मद्रके धनुषको काटकर दो बाणोंसे राजा को कठिन घायल किया । २६ । फिर उपाय पूर्वक दूसरे बाणसे उसके सारथी के शिर को देह से जुदा किया और महाक्रोधित होकर उस कुन्तीपुत्र ने शीघ्रही चारों घोड़ों को भी मारा । २७ । और सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ उस भीमसेनने, युद्धमें अकेले घूमनेवाले बड़े वेगवान को सौबाणों से घायल किया इसीप्रकार माद्रीके पुत्र सहदेवने भी भीमसेन के सायकों से शल्यको मोहित देखकर बाणों से उस के कवचको काटा । २८ । भीमसेन और सहदेवके हाथसे टूटे कवचवाला महात्मा राजामद्र हजार नक्षत्र रखनेवाली ढाल । २९ । और खड्गको लेकर रथसे कूदके कुन्तीके पुत्रके सम्मुख दौड़ा फिर बड़ेभयकारी पराक्रमवाला नकुलके रथके ईषादंड को काटकर युधिष्ठिर के सम्मुख दौड़ा । ३० । तदनन्तर धृष्टद्युम्न द्रौपदी के पुत्र शिखंडी और सात्यकी भी अकस्मात् उस क्रोधयुक्त उछलते और कालके समान आतेहुये राजा शल्यके सम्मुखहुये । ३१ । तब अत्यन्त प्रसन्न और गर्जते महात्मा

cut down Shalya's bow and wounded him with two arrows. He cut down the head of his driver and in his rage slew his four horses. Bhim the best of archers wounded him with a hundred arrows. In the same manner, Sahadev the son of Madri, seeing Shalya wounded by the arrows of Shalya, pierced through his armour with two arrows. With his armour pierced by Sahadev, Shalya took up his many mooned shield and sword and jumping down from his car, rushed against him. He cut down the yoke of Nakul's car and rushed at Yudhishthir. 30 Then Dhrishtadyumn, the sons of Draupadi, and Satyaki too, faced king Shalya who was coming like Death

सुवर्णपुङ्खरमयन्तः । अध्मापयन् दध्मुः शशिसन्निकाशान् ॥ ३३ ॥ तेनाथ शब्देन विभी
षणेन तवाभिपन्नं बलमप्रहृष्टम् । स्वेदाभिभूतं रुधिरोक्षिताङ्गं विसञ्ज्ञकल्पञ्च तथा
विषण्णम् ॥ ३४ ॥ स मद्रराजः सहसावकीर्णो भीमाग्रगैः पाण्डवयोधमुख्यैः । युधिष्ठि
रस्याभिमुखं जवेन सिंहो यथा मृगहेतोः प्रयातः ॥ ३५ ॥ स धर्मराजो निहताश्वसूत
क्रोधेन दीप्तज्वलनप्रकाशः । दृष्ट्वा तु मद्राधिपतिं स्म तूर्णं समभ्यधावत्तमरिं बलेन
॥ ३६ ॥ गोविन्दवाक्यं त्वरितं विचिन्त्य दध्रे मतिं शल्यविनाशनाय । स धर्मराजोऽभि
हताश्वसूते रथे तिष्ठन् शक्तिमथाभिकाङ्क्षन् ॥ ३७ ॥ तच्चापि शल्यस्य निशम्य कर्म
महात्मनो भागमथावशिष्टम् । स्मृत्वा मनः शल्यवधे यतात्मा यथोक्तमिन्द्रावरजस्य
चक्रे ॥ ३८ ॥ स धर्मराजो मणिहेमदण्डां जग्राह शक्तिं कनकप्रकाशाम् । नेत्रे च

भीमसेन ने दश क्षुरप्रों से उसकी अनुपम ढालको काटा और आपकी सेना में गर्जतेहुये उसने खड्गको भी पकड़ने की मूठपर काटा । ३२ । उन पाण्डवों के अत्यन्त उत्तम और प्रसन्नचित्त रथ समूहों ने भीमसेन के उस कर्मको देखकर बड़े आश्चर्यित होकर शब्दकिये और चन्द्रमाके समान प्रकाशित शंखों को बजाया । ३३ । फिर उस भयकारी शब्दसे आपकी अजेय सेनाके समूह व्याकुल रुधिर से लिप्त शरीर और अचेत होकर नाशमान हुये । ३४ । भीमसेन जिनका अग्रवर्ती था उन पाण्डवों के श्रेष्ठ शूरवीरों से घायल वह राजामद्र अकस्मात् तीव्रता से युधिष्ठिरके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि मृगके पकड़ने को सिंह जाता है । ३५ । मृतक घोड़े और सारथीवाले क्रोधमें ज्वलित रूप अग्निके समान प्रकाशित उस धर्मराजने बलसे सम्मुख दौड़नेवाले अपने शत्रु शल्यको देखकर । ३६ । शीघ्रही गोविन्दजी के वचनको विचारकर शल्यके मारनेका विचार किया मृतक घोड़े और सारथीवाले रथपर नियत उस धर्मराजने शक्तिको चाहा । ३७ । उस स्थानपर भी महात्मा युधिष्ठिरने महात्मा शल्यके कर्मको देखकर और शेष बचे हुये अपनेही भागको विचार करके शल्यके मारने में ऐसे चित्त किया जैसे कि श्रीकृष्णजी ने कहाथा । ३८ । उस धर्मराज ने मणि और सुवर्ण से जटित दण्ड

Bhim, with a cheerful roar, cut his shield and sword The Pandavas wondered at Bhim's prowess and blew their white conchs. Your warriors were perplexed on hearing that noise and fainted with the loss of blood. Wounded by the Pandavas led by Bhim, Shalya hastened to face Yudhishthir as a lion faces deer 35 Glorious Yudhishthir in rage, seeing his adversary advance towards him, remembered the words of Govind and thought of slaying Shalya. He took up a spear on his car. Seeing Shalya before him and remembering that it was his own duty to slay him, Yudhishthir thought of slaying him according to the prediction of Krishn He took up a jewelled spear and opening his eyes wide

दीप्ते सहसा विवृत्य मद्राधिपं क्रुद्धमना निरैक्षत् ॥ ३९ ॥ निरीक्षितो वै नरदेव राज्ञा पूतात्मना निर्हृतकल्मषेण । अभून्न यद्भस्मसान्मद्रराजस्तदद्भुतं मे प्रतिभाति राजन् ॥ ४० ॥ ततस्तु शक्तिं रुचिरोग्रदण्डां मणिप्रवालोज्ज्वलितां प्रदीप्ताम् । चिक्षेप वेगात् सुभृशं महात्मा मद्राधिपाय प्रवरः कुरूणाम् ॥ ४१ ॥ दीप्तामथैनां महसा बलेन सविस्फुलिङ्गां सहसा पतन्तीम् । प्रैक्षन्त सर्वे कुरवः समेता दिवो युगान्ते महतीमिवोल्काम् ॥ ४२ ॥ तां कालरात्रीमिव पाशहस्तां यमस्य धात्रीमिव चोग्ररूपाम् । स ब्रह्मदण्डप्रतिमाममोघां ससर्ज यत्तो युधि धर्मराजः ॥ ४३ ॥ गन्धस्रगग्र्यासनपानभोजनैरभ्यर्चितां पाण्डुसुतैः प्रयत्नात् । संवर्तकाग्निप्रतिमां ज्वलन्तीं कृत्यामथर्वाङ्गिरसीमिवोग्राम् ॥ ४४ ॥ ईशानहेतोः प्रतिनिर्मितां तां त्वष्ट्रा रिपूणामसुदेहभक्षाम् । भूम्यन्तरिक्षादिजलाशयानि प्रसह्य भूतानि निहन्तुमीशाम् ॥ ४५ ॥ घण्टापताकामणिवज्रभाजं वैदूर्यचित्रां तपनीयदण्डाम् । त्वष्ट्रा प्रयत्नान्नियमेन क्लृप्तां ब्रह्मद्विषामन्त

पूर्वक सुवर्ण के समान प्रकाशित शक्ती को लिया और अकस्मात प्रकाशवान नेत्रोंको खोलकर क्रोध से पूर्ण चित्तने राजामद्रको देखा । ३९ । उस पवित्रात्मा और पापोंसे रहित नरदेव राजा युधिष्ठिरसे देखाहुआ यह शल्य अत्यन्त भस्म नहीं हुआ हे राजा यही मुझको बड़ा आश्चर्य होताहै । ४० । इसके पीछे कौरवों में अत्यन्त श्रेष्ठ महात्मा युधिष्ठिरने उस सुन्दर उग्रदंडवाली, मणियों से जटित अग्निरूप अत्यन्त प्रकाशित शक्तिको बड़े वेगसे राजामद्रके ऊपरफेंका । ४१। उस के पीछे सब इकट्ठेहुये कौरवों ने उस प्रकाशित और स्फुलिंग संयुक्त अकस्मात् बड़े वेगसे गिरतीहुई शक्तिको ऐसे देखा जैसे कि प्रलयकाल के समय आकाशमें बड़ी उल्काओं को देखते हैं । ४२ । पाशधारी कालरात्रिके समान यमराजकी उग्ररूप धात्री के समान ब्रह्मदण्डकी सूरत उस सफल शक्तिको युद्धमें उपाय करने वाले धर्मराजने छोड़ा । ४३ । जो कि पाण्डवोंकी ओरसे बड़े उपाय पूर्वक सुगंध माला, आसन, भोजन और पानसे पूजित सम्वर्त्तकनाम अग्निके स्वरूप ज्वलित रूप अथर्वांगिरसी नाम उग्रकृत्याके समान ।४४। शिवजी के लिये त्वष्टा देवताकी बनाईहुई शत्रुओंके प्राण और शरीरों की भक्षण करनेवाली और हटकरके पृथ्वी

in rage, looked at the king of Madra It is a wonder that Shalya was not burnt down by the angry gaze of Yudhishthir, *40*. Then Yudhishthir hurled at Shalya the bright spear studded with jewels The kauravas saw the spear falling like a meteor Yudhishthir discharged it like the staff of Yam. It was kept carefully by the Pandavas amid sweet scents and garlands and was worshipped by them It was made by Twashta for Saiv and was the destroyer of the lives and bodies of foes as well as capable of slaying aquatic animals. Fitted with bells, banners and garlands, decked with jewels, fitted with a golden staff and made with great application by Twashta it

करीमभेत्ताम ॥ ४६ ॥ यत्नप्रयत्नाद्विनिर्मितां मन्त्रैश्च घोरैरभिमन्त्र्य यत्नात् । ससर्ज मार्गेण च तां वरेण वधाय मद्राधिपतेस्तदानीम् ॥ ४७ ॥ हतोऽसि पापेत्यभिगर्जमानो रुद्रोऽन्धकायान्तकरं यथेषुम् । प्रसार्य बाहुं सुदृढं सुपाणिं क्रोधेन नृत्यन्निव धर्मराजः ॥ ४८ ॥ तां सर्वशक्त्या प्रहितां स शक्तिं युधिष्ठिरेणाप्रतिवार्यवीर्याम् । प्रतिग्रहायाभिननर्द शल्यः सम्यग्घुतामग्निरिवाज्यधाराम् ॥ ४९ ॥ सा तस्य मर्माणि विदार्य शुभ्रमुरो विशालञ्च तथैव वर्म । विवेश गां तोयमिवाप्रसक्ता यशो विशालं नृपतेर्दहन्ती ॥ ५० ॥ नासाक्षिकर्णास्यविनिःसृतेन प्रस्यन्दता च व्रणसम्भवेन । संसिक्तगात्रो रुधिरेण सोऽभूत् क्रौञ्चो यथा स्कन्दहतो महाद्रिः ॥ ५१ ॥ प्रसार्य बाहू च रथाद्गतो गां स छिन्नवर्मा कुरुनन्दनेन । महेन्द्रवाहप्रतिमो महात्मा वज्राहतं शृङ्गमिवाचलस्य ॥ ५२ ॥ बाहू प्रसार्याभिमुखो धर्मराजस्य मद्रराट् । ततो निपतितो

अन्तरिक्ष आदिकों के रहनेवाले और जलमें रहनेवाले जीवोंके मारने में समर्थ । ४६ । घंटा, पताका और मणि वज्रकी माला रखनेवाली वैदूर्य से जटित स्वर्णमयी व्रतधारी बड़ेनियम और उपायके द्वारा त्वष्टा देवताकी बनाईहुई ब्राह्मणों से शत्रुता करनेवालों की नाश करनेवाली सफल । ४७ । बल और बड़े उपाय से उस वेगवान शक्तिको घोर मन्त्रोंसे संयुक्त करके उसराजा मद्रके मारनेके निमित्त उत्तम रीति से छोड़ा । ४७ । जैसे कि शिवजीने अन्धकके नाश करनेवाले बाणको छोड़ाथा उसीप्रकार क्रोधसे नाचतेहुये और हे पापी माराहै इस प्रकार गर्जतेहुये युधिष्ठिरने बहुत दृढ़ सुन्दर हाथवाली भुजाको फैलाकर छोड़ा । ४८ युधिष्ठिरकी सब सामर्थ्यसे छोड़ीहुई अपूर्व पराक्रम और घृतकी धारासे अच्छेप्रकार ‍हो. होमीहुई अग्निके समान उस सुन्दर शक्तिको पकड़ने के निमित्त सम्मुख गर्जा । ४९ । वह शक्ति उसके सब मर्मस्थलों समेत उज्वल और बड़ी छातीको फाड़कर राजाके बड़े यशको विख्यात करती हुई पृथ्वी और जलमें प्रवेश करगई । ५० । तब वह शल्य नाक आंख कान और मुखसे निकलनेवाली चेष्टा करनेवाले घाव से उत्पन्न होनेवाले रुधिरसे अच्छे प्रकार भिगाहुआहोकर जैसे कि स्वामिकार्तिक जीके हाथसे घायल क्रौंचनाम बड़ा पर्वत हुआथा । ५१ । उसीप्रकार वह महात्मा

was the destroyer of the enemies of Brahmans, 46 Yudhishthir hurled it with great force and read over it mantras to slay Shalya. Dancing in anger like Shiv at the time of discharging arrow to slay Andhak, and crying out, "I have slain three," Yudhishthir discharged it from his outstretched hand Hurled with great force, like fire fed by libations, the spear came upon Shalya, who advanced to seize it with a roar, But it broke through his breast and entered the ground with great force, 50 Moving his limbs and dropping down blood from his body, Shalya was wounded as Kraunch was by Kartik. Wounded in the vital parts by Yudhishthir's spear,

सुमार्वमिन्द्रध्वज इवोच्छ्रितः ॥ ५३ ॥ स तथा भिन्नसर्वाङ्गो रुधिरेण समुक्षितः। प्रत्युद्गत इव प्रेम्णा भूम्या स नरपुङ्गवः ॥ ५४ ॥ चिरंभुक्ता वसुमती प्रियां कान्तामिव प्रभुः। सर्वैरङ्गैः समाश्लिष्य प्रसुप्त इव सोऽभवत् ॥ ५५ ॥ धर्म्ये धर्मात्मना युद्धे निहतो धर्मसूनुना। सम्यग्घुत इव स्विष्टः प्रशान्तोऽग्निरिवाध्वरे ॥ ५६ ॥ शक्त्या विभिन्नहृदयं विप्रमुक्तायुधध्वजम्। प्रशान्तमपि मद्रेशं लक्ष्मीर्नैव व्यमुञ्चत ॥ ५७ ॥ ततो युधिष्ठिरश्चापमादायेन्द्रधनुः प्रभम्। व्यधमद् द्विषतः संख्ये खगराडिव पन्नगान्। देहांश्च निशितैर्भल्लै रिपूणां नाशयत् क्षणात् ॥ ५९ ॥ ततः पार्थस्य बाणौघैरावृताः सैनिकास्तव। निमीलिताक्षाः क्षिण्वन्तो भृशमन्योन्यमर्दिताः। स्यन्दन्तो रुधिरं देहैर्विशस्त्रायुधजीविताः ॥ ६० ॥ ततः शल्येऽनिपतिते मद्रराजानुजो युवा। भ्रातुः सर्वैः

इन्द्रके गजराजकी मूरत और युधिष्ठिरकी शक्ति से टूटे मर्मस्थलवाला शल्य भुजाओं को पसारकर रथसे पृथ्वीपर ऐसे गिरा जैसे कि वज्रसे ताड़ित पर्वतका शिखर होताहै। ५२। इसके पीछे मद्रका राजा धर्मराज के सम्मुख भुजाओं को पसारकर इन्द्रकी ध्वजा के समान ऊंचा पृथ्वी पर गिरपड़ा। ५३। इसप्रकार सब अंगोंसे घायल रुधिरसे भराहुआ वह नरोत्तम शल्य प्रीतिमें सम्मुख जानेवाले के समान पृथ्वीपर गिरपड़ा। ५४। वह प्रभु पृथ्वीको अपनी प्यारी स्त्रीके समान बहुत कालतक भोगकर गिराहुआ शोभायमान। ५५। सब अंगोंसे प्यारी स्त्रीके साथ छातीपर मिलकर शयन करनेवाले के समान धर्मात्मा धर्मपुत्र के हाथ से धर्मरूपी युद्धमें मरनेवाला इसप्रकार शान्त हुआ जिसप्रकार यज्ञमें अच्छे प्रकार होमीहुई स्विष्टनाम अग्नि देवता होते हैं। ५६। शक्ति से फटा हृदय टूटे शस्त्र और ध्वजावाले मृतक राजा मद्रको इस दशामेंभी शोभा ने नहीं छोड़ा। ५७। इसके पीछे युधिष्ठिरने इन्द्रधनुषके समान प्रकाशवान धनुषको लेकर युद्ध में शत्रुओं को ऐसे छिन्न भिन्न किया जैसे गरुड़ सर्पोंको करता है और तेज धार भल्लों से शत्रुओं के शरीरोंको एकक्षणमात्रमें नाश करदिया। ५९। इसके पीछे पाण्डवोंके बाण समूहोंसे ढकेहुये बंदनेत्र आपकी सेनाके लोग शस्त्रों को चलाते परस्पर कठिन

Shalya fell down on earth like a mountain peak struck down by vajra. He fell down with outstretched hands like Indra's banners. With all the parts of his body dropping blood, Shalya fell down as if going forward to meet a friend. He fell down on earth as if it were over his beloved wife. 66. With all the parts of the body touching the ground like the body of a beloved woman, he found rest by the hands of Yudhishthir like god Swashti over the fire with libations. With his breast, arms and banner broken, Shalya looked glorious even in death. Taking up his strong bow and powerful arrows, Yudhishthir began to destroy the enemies. 59. Covered with arrows, with eyes shut, your warriors were severely wounded with weapons, and shedding

भ्रातुस्तुल्यो रथी पाण्डवमभ्ययात् ॥ ६१ ॥ विव्याध च नरश्रेष्ठो नाराचैर्बहुभिस्त्वरन्
हतस्यापचितिं भ्रातुश्चिकीर्षुर्युद्धदुर्मदः ॥ ६२ ॥ तं विव्याधाशुगैः षड्भिर्धर्मराजस्त्वर
न्निव । कार्मुकञ्चास्य चिच्छेद क्षुराभ्यां ध्वजमेव च ॥ ६३ ॥ ततोऽस्य दीप्यमानेन सुदृढेन
शितेन च । प्रमुखे वर्त्तमानस्य भल्लेनापाहरच्छिरः ॥ ६४ ॥ सकुण्डलं तद्ददृशे पत
मानं शिरो रथात् । पुण्यक्षयमिव प्राप्य पतन्तं स्वर्गवासिनम् ॥ ६५ ॥ तस्यापकृष्टशी
र्षन्तु शरीरं पतितं रथात् । रुधिरेणावसिक्ताङ्गं दृष्ट्वा सैन्यमभज्यत ॥ ६६ ॥ विचि
त्रकवचे तस्मिन् हते मद्रनृपानुजे । हाहाकारं विकुर्वाणाः कुरवो विप्रदुद्रुवुः ॥ ६७ ॥
शल्यानुजं हतं दृष्ट्वा तावकास्त्यक्तजीविताः । वित्रेसुः पाण्डवभयाद्रजोध्वस्तास्तथा
भृशम् ॥ ६८ ॥ तांस्तथा भज्यमानांस्तु कौरवान् भरतर्षभ । शिनेर्नप्ता किरन् बाणैरभ्य
वर्त्तत सात्यकिः ॥ ६९ ॥ तमायान्तं महेष्वासमप्रसह्यं दुरासदम् । हार्दिक्यस्त्वरितो

मर्दितहुये और शरीरों से रुधिरों को छोड़ते शस्त्र और जीवन से जुदेहुये । ६० । इस के पीछे शल्य के गिरनेपर राजामद्रका छोटा तरुण अवस्था वाला सब गुणों में भाई के समान रथी पाण्डव युधिष्ठिर के सम्मुख गया । ६१ । और शीघ्रता करनेवाले नरोत्तम ने बहुत नाराचों से घायल किया वह युद्ध में दुर्मद मृतक भाईका बदला लेनेका अभिलाषी हुआ । ६२ । फिर शीघ्रता करनेवाले धर्मराजने छः बाणोंसे उसको घायल किया बाणोंसे ही उस के धनुष ध्वजा को काटकर प्रकाशमान अत्यन्तदृढ और तीक्ष्ण भल्लसे उस सम्मुख वर्त्तमानके शिर को काटा । ६४ । तब वह कुण्डलधारी शिर रथसे गिरताहुआ ऐसा दिखाई पड़ा जैसे कि शुभकर्म फलके नाशको पाकर स्वर्गसे च्युत मनुष्य होताहै ।६५। फिर शिरसे रहित उसका शरीर रथसे गिरपड़ा रुधिरसे लिप्त शरीरको देखकर सेना छिन्न भिन्न होगई ।६६ उस अपूर्व कवचधारी शल्यके छोटे भाईके मरनेपर हाहाकार करनेवाले कौरव भागे । ६७ । तब शल्यके छोटेभाई को मराहुआ देखकर आपके शूरवीर जीवनके त्यागनेवाले पुत्र अत्यन्त खिन्न शरीर पाण्डव युधिष्ठिर के भयसे भयभीत होगये । ६८। हे भरतर्षभ शिनीका पौत्र सात्यकी बाणोंसे इसप्रकार छिन्नभिन्न होनेवाले कौरवोंके सम्मुख वर्त्तमानहुआ । ६९ । तब शीघ्रता करनेवाले

blood from their bodies, were deprived of weapons and lives. Then at the fall of Shalya, his younger brother, a young man and as good a warrior as his brother, faced Yudhishthir and wounded him with many arrows He tried hard to avenge his brother's death. Yudhishthir wounded him with six arrows and then cut his bow and beautiful head, with one arrow each. The head, decked with earrings, falling down from the car looked like one falling down from heaven at the expiration of merits. 65. His headless body fell down from the car and the armies dispersed at the sight of it. At the death of Shalya's younger brother, the Kauravas fled with cries. Covered with blood and dust your war

राजन्प्रत्यगृह्णादभीतवत् ॥ ७० ॥ तौ समेतौ महात्मानौ वार्ष्णेयावपराजितौ ।
हार्दिक्यः सात्यकिश्चैव सिंहाविव मदोत्कटौ ॥ ७१ ॥ इषुभिर्विमलाभासैश्छादयन्तौ
परस्परम् । अर्चिर्भिरिव सूर्यस्य दिवाकरसमप्रभौ ॥ ७२ ॥ चापमार्गबलोद्धूतान्
मार्गणान् वृष्णिसिंहयोः । आकाशे समपश्याम पतङ्गानिव शीघ्रगान् ॥ ७३ ॥ सात्यकिं
दशभिर्विद्ध्वा हयांश्चास्य त्रिभिः शरैः । चापमेकेन चिच्छेद हार्दिक्यो नतपर्वणा
॥ ७४ ॥ तन्निकृत्तं धनुःश्रेष्ठमपास्य शिनिपुङ्गवः । अन्यदादत्त वेगेन वेगवत्तरमायु
धम् ॥ ७५ ॥ तदादाय धनुःश्रेष्ठं वरिष्ठः सर्वधन्विनाम् । हार्दिक्यं दशभिर्बाणैः प्रत्य
विध्यत् स्तनान्तरे ॥ ७६ ॥ ततो रथं युगेषां च छित्त्वा भल्लैः सुसंयतैः । अश्वांस्त
स्यावधीत्तूर्णमुभौ पार्ष्णिसारथी ॥ ७७ ॥ ततस्तं विरथं दृष्ट्वा कृपः शारद्वतः प्रभो ।
अपोवाह ततः क्षिप्रं रथमारोप्य वीर्यवान् ॥ ७८ ॥ मद्रराजे हते राजन् विरथे कृत

कृतवर्माने निर्भयके समान उस बड़े धनुषधारी सहन के अयोग्य कठिनतासे सम्मुख
आके करनेवाले सन्मुख आनेहुये सात्यकीको रोका । ७० । वह दोनों महात्मा, बड़े अजेय
सिंहोंके समान मदोन्मत्त यादव कृतवर्मा और सात्यकी सम्मुख हुए । ७१ ।
सूर्यके समान तेजस्वी वह दोनों शुद्ध प्रकाशमान बाणोंसे परस्पर ऐसे ढकने
वाले हुए जैसे कि सूर्य की किरणों से ढकजाते हैं । ७२ । हमने उन दोनों उत्तम
यादवोंके धनुष मार्ग और बलसे उठेहुये आकाश में वर्तमान बाणों के शीघ्र
गामी पक्षियों के समान देखा । ७३ । कृतवर्मा ने दशबाण से सात्यकीको और
तीन बाणोंसे उसके घोड़ोंको घायलकरके टेढ़े पर्ववाले एक बाणसे उसके धनुष
को काटा सात्यकी ने उस टूटेहुये उत्तम धनुषको डालकर शीघ्रता से
दूसरे दृढ़ धनुषको लिया ।७४।७५। धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ सात्यकीने उस धनुषको लेकर
दश बाणों से कृतवर्मा को छाती पर किया । ७६ । इसके पीछे रथयुग
और ईशादण्डको अपने श्रेष्ठ चलाये हुये भल्लो से काटकर शीघ्रही उसके घोड़े
सारथी और पीछे चलनेवाले को मारा । ७७ । हे प्रभु तब पराक्रमी शारद्वत कृपा
चार्य उसको विरथ देखकर शीघ्रता से अपने रथपर चढ़ाकर दूर लेगये । ७८ ।

riors fled away afraid of Yudhishthir. Satyaki the grandson of Shini, faced the dispersing Kauravas and covered them with arrows. 70. *Kritvarma opposed valiant Satyaki who was coming on fearlessly.* The two Yadavas, Kritvarma and Satyaki, invincible and of lion's prowess, covered each other with arrows like the rays of the Sun. We saw their arrows flying like birds. Kritvarma wounded Satyaki with ten arrows and his horses with three and cut his bow with one more. Satyaki dropped the broken bow and took up another. 75. Satyaki the best of archers wounded Kritvarma with ten arrows on the breast and cutting down the parts of his car, slew the driver, horses and followers. Seeing him deprived of car, Kripacharya took him far away from the field of battle. At the fall of the king of

भेणि। दुर्योधनबलं सर्वं पुनरासीत् पराङ्मुखम् ॥ ७९ ॥ तस्मिन्नेव मुहूर्ते तु ... वृते। घनन्तु हतभूयिष्ठं तत्रासीत् पराङ्मुखम् ॥ ८० ॥ ततो मुहूर्त्तात्तेऽपश्यन् रजो भौमं समुत्थितम्। विविधैः शोणितस्रावैः प्रशान्तं पुरुषर्षभ ॥ ८१ ॥ ततो दुर्योधनो दृष्ट्वा भग्नं स्वबलमन्तिकात्। जवेनापततः पार्थानेकः सर्वानवारयत् ॥ ८२ ॥ पाण्डवान् सरथान् दृष्ट्वा धृष्टद्युम्नञ्च पार्षतं आनर्त्तञ्च दुराधर्षं शितैर्बाणैरवाकिरत् ॥ ८३ ॥ तं परे नाभ्यवर्त्तन्त मर्त्त्या मृत्युमिवागतम्। अथान्यं रथमास्थाय हार्दिक्योऽपि न्यवर्त्तत ॥ ८४ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा त्वरमाणो महारथः। चतुर्भिर्निजघान वाहान् पत्त्रिभिः कृतवर्मणः। विव्याध गौतमञ्चापि षड्भिर्भल्लैः सुतेजनैः ॥ ८५ ॥ अश्वत्थामा ततो राज्ञा हताश्वं विरथीकृतम्। तमपोवाह हार्दिक्यं स्वरथेन युधिष्ठिरात् ॥ ८६ ॥ ततः शारद्वतोऽष्टाभिः प्रत्यविध्यद्युधिष्ठिरम्। विव्याध चाश्वान्निशितै

हे राजा राजा मद्रके मरने और कृतवर्माके विरथ होनेपर दुर्योधन की सब सेना फिर मुख फेरनेवाली हुई। ७९। इसहेतुसे और धूलसे सेनाके ढकजानेपर दूसरे पक्षवाले नहीं जानगये तब यह बहुत मारीहुई सेना मुखोंको फेरगई। ८०। हे पुरुषोत्तम इसके पीछे उनलोगोंने एक मुहूर्त्तमेंही उठीहुई पृथ्वीकी धूलको नाना प्रकार के रुधिरों के बहनेसे छिड़का हुआ देखा। ८१। उससमय दुर्योधनने सम्मुख से अपनी सेनाको छिन्न भिन्न देखकर तीव्रतासे आनेवाले सब पाण्डवों को अकेलेने ही रोका। ८२। रथ सवार पांडवों को धृष्टद्युम्नको और अजेय सात्यकि को तीक्ष्णबाणों से रोका। ८३। उससमय शत्रुलोग उसकेसम्मुख ऐसे नहीं हुयेजैसे कि मरण धर्म्मवाले जीव आयेहुये कालके सम्मुख नहीं वर्त्तमान होते हैं इसके पीछे कृतवर्मा भी दूसरे रथपर सवार होकर लौटा। ८४। तब शीघ्रता करनेवाले महारथी राजा युधिष्ठिर ने चारबाणों से कृतवर्मा के घोड़ोंको मारकर कृपाचार्यको भी सुन्दर वेगवाले छः भल्लों से घायल किया। ८५। इसके पीछे अश्वत्थामा भी राजा के आघातसे घोड़े और रथसे विहीन कृतवर्मा को अपने रथ के द्वारा युधिष्ठिरके सम्मुख से हटालेगया। ८६। इसके पीछे कृपाचार्य नेभी छःबाणों

Madra and destruction of Kritvarma's car, Duryodhan's army turned back. Covered with dust, the army, whose warriors had been slain in large numbers, turned face. 80. Then the dust subsided by the sprinkling of blood. Seeing his army disposed, Duryodhan alone checked all the Pandavas 82. He checked the Pandavas, Dhrishtadyumn and invincible Satyaki. The foes could not face him as mortals cannot oppose Death! Kritvarma too, mounted another car and turned back. Then Yudhishthir slew Kritvarma's horses with four darts and wounded Kripacharya with six more. 85 Ashwathama took him on his car and removed him away from the presence of Yudhishthir. Then Kripacharya too, wounded Yudhishthir with six arrows

स्यापरतभिः शिलीमुखैः ॥ ८७ ॥ एवमेतन्महाराज युद्धशेषमवर्त्तत । तव दुर्मन्त्रिते राजन् सहपुत्रस्य भारत ॥ ८८ ॥ मद्रेश्वरे महेष्वासवरे निहते संग्राममध्ये कुरुपुंगवेन पार्थाः समेताः परमप्रहृष्टाः शंखान् प्रदध्मुर्हतमीक्ष्य शल्यम् ॥ ८९ ॥ युधिष्ठिरञ्च प्रशशंसुराजौ पुरा सुरा वृत्रवधे यथेन्द्रम । चक्रुश्च नानाविधवाद्यशब्दान् निनादयन्तो वसुधां समन्तात् ॥ ९० ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि शल्यवधे सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

सञ्जय उवाच । शल्ये तु निहते राजन् मद्रराजपदानुगाः । रथाः सप्तशता वीरा निर्ययुर्महतो बलात् ॥ १ ॥ दुर्योधनस्तु द्विरदमारुह्याचलसन्निभम् । छत्रेण ध्रियमा

से युधिष्ठिर को घायल किया और उसी प्रकारतेजधार आठ शिलीमुखनाम बाणों से घोड़ोंको भी घायल किया । ८७ । हे भरतवंशी महाराज राजा धृतराष्ट्र पुत्रसमेत आपकी कुमन्त्रतासे यह शेष लोगोंका युद्ध वर्तमान हुआ । ८८ । युद्ध में श्रेष्ठ कौरवके हाथसे उस धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ शल्यके मारेजाने पर, अत्यन्त प्रसन्न चित्त पाण्डव लोगोंने इकट्ठे होकर शंखोंको बजाया । ८९ । और युद्धभूमि में युधिष्ठिरकी ऐसी प्रशंसाकरी जैसे कि पूर्वसमय में वृत्रासुरके मारने पर देवताओं ने इन्द्रकी प्रशंसा करीथी फिर उनलोगोंने चारोंओरसे पृथ्वी को शब्दायमान करके नानाप्रकार बाजोंको बजाया ९० ॥

अध्याय १८ ।

संजय बोले हे राजा शल्यके मरनेपर उस राजामद्रके आगे पीछे चलने वाले सातसौ महारथी वीर बड़ी सेनाको साथ लेकर बाहर निकले । १ । फिर वीर

and his horses with eight. The great distruction of the remainder of your forces was caused by your evil policy and that of your son. At the death of Shalya by the great archer, the Pandavas blew their conchs and prai-ed Yudhishthir as the gods had eulogised Indra at the death of Vritrasur. They sounded many musical instruments and filled the earth with their sounds." 90.

CHAPTER XVIII

Sanjaya said, "At the death of Madra seven hundreds of his followers came out to fight, Mounting a huge elephant, with umbrellas

येन वीज्यमानश्च चामरैः । न गन्तव्यं न गन्तव्यमिति मद्रानवारयत् ॥ २ ॥ दुर्योध
नेन ते वीरा वार्यमाणाः पुनः पुनः । युधिष्ठिरं जिघांसन्तः पाण्डूनां प्राविशन् बलम्
॥ ३ ॥ ते तु शूरा महाराज कृतचित्ताः सुयोधने । धनुः शब्दं महत् कृत्वा सहायुध्यन्त
पाण्डवैः ॥ ४ ॥ श्रुत्वा च निहतं शल्यं धर्मपुत्रञ्च पीडितम् । मद्रराजप्रियासक्तैर्मद्र
कानां महारथैः ॥ ५ ॥ आजगाम ततः पार्थो गाण्डीवं विक्षिपन् धनुः । पूरयन् रथघोषेण
दिशः सर्वा महारथः ॥ ६ ॥ ततोऽर्जुनश्च भीमश्च माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ । सात्यकिश्च
नरव्याघ्रो द्रौपदेयाश्च सर्वशः ॥ ७ ॥ धृष्टद्युम्नः शिखण्डी च पाञ्चालाः सहसोमकैः
युधिष्ठिरं परीप्सन्तः समन्तात् पर्यवारयन् ॥ ८ ॥ ते समन्तात् परिवृताः पाण्डवाः
पुरुषर्षभाः । क्षोभयन्ति स्म तां सेनां मकराः सागरं यथा । वृक्षानिव महावाताः कम्प
यन्ति स्म तावकान् ॥ ९ ॥ पुरोवातेन गंगेव क्षोभ्यमाणा महानदी । व्यक्षोभत तदा

पर धारण किये छत्रों से और चामरोंसे युक्त दुर्योधनने पर्वताकार हाथीपर चढ़कर मद्र देशियोंको निषेध किया कि तुमको न जाना चाहिये न जाना चाहिये । २ । दुर्योधन से बारम्बार रोकेहुये वह वीर युधिष्ठिर के मारनेके अभिलाषी होकर पांडवों की सेनामें पहुंचे । ३ । हे महाराज फिर लड़नेमें प्रवृत्त चित्त वह शूरवीर धनुषों के बड़े शब्दोंको करके पांडवों से युद्ध करनेलगे । ४ । शल्यको मृतक और धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरको राजामद्रके हितकारी मद्रदेशी महारथियों से पीड़ामान सुन कर । ५ । अर्जुन अपने गांडीव धनुषको टंकारताआया वह महारथी अर्जुन सब दिशाओं को शब्दों से पूर्णकरता युद्धमें आपहुँचा ।६ उसकेपीछे पांडव अर्जुनभीम सेन नकुल सहदेव नरोत्तम सात्यकी द्रौपदी के सब पुत्र । ७ । धृष्टद्युम्न शिखंडी और सोमकोंसमेत सब पांचाल इन सब युधिष्ठिर के चाहनेवाले लोगोंने राजा युधिष्ठिरको मध्यवर्ती किया । ८ । चारोंओरसे घिरेहुये उन पुरुषोत्तम पांडवोंने उस सब सेनाको ऐसे छिन्न भिन्न किया जैसे कि समुद्रको मगर छिन्न भिन्नकरताहै और आप के पुत्रोंको ऐसे कंपायमान किया जैसे कि वृक्षोंको बड़ी तीव्र वायु कंपायमान करतीहै । ९ । हेराजा तब पांडवी सेना भी फिर ऐसे उथल पुथल हुई

---

and chamars, Duryodhan asked the Madra warriors not to go. Though checked by Duryodhan, those warriors, desirous of slaying Yudhishthir, entered the army. Intent on dying, they fought with the Pandavas amid the hard sounds of bows. Hearing that Shalya was dead and that his followers were afflicting Yudhishthir, Arjun came on twanging his Gandav bow and filling the directions with its sounds. 6. Then the Pandavas, Arjun, Bhim, Nakul and Sahadev Satyaki the best of men, all the sons of Draupadi, the Panchals with Dhrishtadyumn, Saikhandi and the Somaks and other well wishers came round Yudhishthir. They dispersed your army as a crocodile, agitates the ocean and shook your army as the wind shakes large

राजन् पाण्डूना ध्वजिनी पुन ॥ १० ॥ प्रस्कन्ध सेना महतीं महात्मानो महारथा । क्वयक्कुकुरुसत्तम क्व स राजा युधिष्ठिरः ॥ ११॥ भ्रातर पाण्डवा शूरा दृश्यन्ते नह केचन । पाञ्चाला वा महावीर्याः शिखण्डी च महारथ धृष्टद्युम्नोथ शैनयो द्रौपदेया महारथा ॥ १२ ॥ एव तान् वादिन शूरान् द्रौपदेया महारथा । अभ्यघ्नन् युध्यमानांश्च मद्रराजपदानुगान् ॥ १३॥ रथैर्विमथिता केचित् केचिच्छिन्नैर्महाध्वजै । प्रत्यदृश्यन्त समरे तावका निहता शरै ॥ १४ ॥ आलोक्य पाण्डवान् युधे योधा वीरान् सहस्रश. । वार्यमाणा ययुर्वीरास्तव पुत्रेण भारत ॥ १५ ॥ दुर्योधनस्तु तान् वीरान् वारयामास सान्त्वयन् । न चास्य शासनं कश्चित्तत्र चक्रे महारथ ॥ १६ ॥ ततो गान्धारराजस्य पुत्र शकुनिरब्रवीत् । दुर्योधन महाराज वचन वचनक्षमः ॥ १७ । किन्न न. प्रेक्षमाणाना मद्राणां हन्यते बलम् । न युक्तमेतत् समरे त्वयि

जैसे सम्मुखकी वायु से गंगानदी व्याकुल होतीहै । १० । महात्मा महारथी लोग वहीं सेनामें प्रवेश करके जहां तहां पुकारे कि वह राजायुधिष्ठिर कहांहै । ११ । और उसके बड़ेशूरवीर भाई कहांहैं यहां कोई दिखाई नहीं देतेहैं धृष्टद्युम्न सात्यकी की द्रौपदीके सब पुत्र बड़ेपराक्रमी पांचाल और महारथी शिखंडी कहां हैं । १२ । इसप्रकार वार्त्तालाप करनेवाले उन शूरोंको द्रौपदी के महारथी पुत्रोंने और युयुधानने घायल किया । १३ । राजामद्र के पीछे चलनेवाले कितनेही तोबाणों मारेगे और कितनेही टूटीहुई बड़ी ध्वजाओं से विनाश हुये युद्धमें आप के शूर वीर शत्रुओं के हाथसे मरेहुये दिखाई पड़े ।१४। हेभरतवंशी वह लोग युद्धमें पांडवों को और चारोंओर से शूरवीरोंको देखकर आपके पुत्र से रुके हुये हाकर बड़ी तीव्रता पूर्वक गये १५ । और क्रोधके दूरकरने के लिये दुर्योधनने मधुर वचन कहकर उन वीरोंको रोका तब वहां किसी महारथी ने उसकी आज्ञा को नहीं किया । १६ । इसके पीछे गांधार देशके राजाका पुत्र व वार्त्ताप में कुशल शकुनि दुर्योधन से बोला ।१७ । कि हे भरतवंशी यह क्याबात है कि जो हमारे देखतेहुये मद्रदेशियों की सेना मारीजाती है युद्धमें तेरे नियत होनेपर यहबात उचित

trees. Your army was agitated like the river Ganges in a storm of wind. 10. The brave warriors cried out, "Where is Yudhishthir? Where are his brave brothers? None is seen here Where are Dhrishtadyumn, Satyaki, the sons of Draupadi the brave Panchals and valiant Shikhandi? Thus crying they were wounded by the sons of Draupadi and Yuyudhan The followers of Shalya, wounded by arrows and their banners broken, met their death Your warriors were destroyed by the enemies Seeing the Pandav warriors all round them and checked by your son, they faced the enemy in battle 15. Duryodhan tried to pacify their anger by sweet words but they would not

निहन्ति भारत ॥ १८ ॥ सहितैर्नामयोद्धव्यमित्येवं समयः कृतः । अथ कस्मात् परा नेवं घ्नतो मर्षयसे नृप ॥ १९ ॥ दुर्योधन उवाच । वार्यमाणा मया पूर्वं नैते चक्रु र्वचो मम । एतेहि संहिता सर्वे प्रस्कन्नाः पाण्डुवाहिनीम् ॥ २० ॥ शकुनिरुवाच । न भर्तुः शासनं वीरा रणे कुर्वन्त्यमर्षिनः । अलं क्रोद्धुं तथैतेषां नायं काल उपेक्षितुम् ॥ २१ ॥ याम सर्वेऽत्र संभूय सवाजिरथकुञ्जराः । परित्रातुं महेष्वासान् मद्रराजपदा नुगान् ॥ २२ ॥ अन्योन्यं परिरक्षामो यत्नेन महता नृप । एवं सर्वेऽनुसञ्चिन्त्य प्रययु र्यत्र सैनिकाः ॥ २३ ॥ एवमुक्तस्ततो राजा बलेन महता वृतः । प्रययौ सिंहनादेन कम्प यन्निव मेदिनीम् ॥ २४ ॥ हत विध्यत गृह्णीत प्रहरध्वं निकृन्तत । इत्यासीत्तुमुल शब्दस्तव सैन्यस्य भारत ॥ २५ ॥ पाण्डवास्तु रणे दृष्ट्वा मद्रराजपदानुगान् । सहि तानभ्यवर्तन्त गुल्ममास्थाय मध्यमम् ॥ २६ ॥ ते मुहूर्ताद्रणे वीरा हस्ताहस्ति विशां

और योग्य नहीं है । १८ । इन के साथ होकर भी युद्ध करना चाहिये क्योंकि तुमने नियम कियाहै हे राजा फिर किस हेतुसे मारनेवाले दूसरे मनुष्योंको क्षमा करताहै । १९ । दुर्योधन बोला कि प्रथम मेरे रोकने परभी मेरे वचन को नहीं किया यह सब पांडवी सेना में प्रवेश करके मारेगये । २० । शकुनि ने कहा कि युद्धमें क्रोध युक्त वीर स्वामीकी आज्ञाको नहीं करते हैं क्रोधको दूर करिये यह समय उन वीरों के त्यागनेका नहीं है । २१ । घोड़े रथ और हाथियों समेत हम सब निश्चय करके राजामद्र के पीछे चलनेवाले बड़े धनुषधारियों की रक्षाके लिये चलें । २२ । हेराजा बड़े उपायों से परस्पर रक्षाकरें ऐसा विचार कर वह सब वहांगये जहांपर कि वह सेनाके लोगथे । २३ । इसकेपीछे बड़ी सेना समेत राजादुर्योधन पृथ्वीको सिंहनादों से कँपाताहुआ चलदिया । २४ । हे भरतवंशी फिर आपकी सेनाका यह कठिन शब्द हुआ कि मारो छेदो पकड़ो प्रहारकरो शिरों को काटो । २५ । फिर पाण्डव राजामद्रके पीछे चलनेवालोंको एक साथ देखकर मध्यवर्ती गुल्मनाम सेनाके भाग में नियत होकर सम्मुख वर्त्तमान हुये । २६ । हे राजा राजामद्र के

hear him. Then wise Shakuni said to Duryodhan, "Why are the armies of Madra being destroyed in our presence? It should not be in your presence. You should assist them in fighting. Why do you look on their destruction?" Duryodhan said, "They did not hear me and entered the Pandav army to meet their destruction." 20. Shakuni said, "Enraged warriors in battle are apt to disobey their superiors. You must not be angry and leave them in the lurch. Let us follow the friends of Shalya and assist them with our cars, horses and elephants. Let us protect them well." Having come to this resolution, they all went there where those warriors were. Duryodhan went on shaking the earth with his leonine roars. The cries of your warriors were, "Slay, pierce, seize, charge and behead!" 25. The

पते। निहता प्रत्यदृश्यन्त मद्रराजपदानुगाः ॥ २७ ॥ ततो नः सम्प्रयातानां हतमद्रा-स्तरस्विनः । हृष्टाः किलकिलाशब्दमकुर्वन् सहिताः परे ॥ २८ ॥ अथो त्थितानि कबन्धानि समदृश्यन्त सर्वशः । पपात महती चोल्का मध्येनादित्यमण्डलात् ॥ २९ ॥ रथैर्भग्नैर्युगाक्षैश्च निहतैश्च महारथैः । अश्वैर्निपतितैश्चैव संछन्नाभूद्वसुन्धरा ॥ ३० ॥ वातायमानैस्तुरगैर्युगासक्तैस्ततस्ततः । अदृश्यन्त महाराज योधास्तत्र रणाजिरे ॥३१॥ भग्नचक्रान्रथान् केचिदवहंस्तुरगा रणे । रथार्धं केचिदादाय दिशो दश विबभ्रमुः ॥ ३२ ॥ तत्र तत्र व्यदृश्यन्त योक्त्रैः श्लिष्टाः स्म वाजिनः । रथिनः पतमानाश्च व्यदृश्यन्त नृपोत्तम । गगनात् प्रच्युताः सिद्धाः पुण्यानामिव संक्षये ॥ ३३ ॥ निहतेषु च शूरेषु मद्रराजानुगेषु वै ॥ ३४ ॥ अस्मानापततश्चैव दृष्ट्वा पार्था महारथाः । अभ्यवर्तन्त वेगेन जयगृध्राः प्रहारिणः ॥ ३५ ॥ बाणशब्दरवान् कृत्वा विमिश्राञ्शङ्खनि

पीछे चलनेवाले वह वीर युद्ध में एक मुहूर्त मात्रमेंही मरेहुये दिखाई पड़े । २७। इसकेपीछे हमारे जानेपर मद्रदेशियोंके मारनेवाले वेगवान प्रसन्नचित्त प्रतिपक्षियों ने एक साथही किलकिला शब्दकिया । २८ । सब ओर से उठे हुये धड़ दिखाई पड़े और सूर्यमण्डल के मध्यसे बड़ी उल्का पातहुई । २९ । टूटेरथ युगाक्ष मृतक महारथी और पड़ेहुये हाथियों से पृथ्वी आच्छादित होगई । ३० । हे महा राज वहां युद्धभूमि में शूरवीर वायु के समान शीघ्रगामी और जहां तहां युगोंसे चिपटे हुए घोड़ों समेत दिखाई दिये । ३१ । युद्धमें कितनेही घोड़े टूटे पहियों वाले रथोंको लचले और कितनेही आधेरथों को लेकर दशों दिशाओं को भागे । ३२ । जहां तहां योक्त्रों से चिपटे हुये घोड़े दृष्टिपड़े हे राजाओं में श्रेष्ठ कहीं गिरते हुये रथी ऐसे दृष्टिगोचर हुये जैसे कि शुभकर्म फलों के समाप्तहोने पर आकाश से गिरेहुये सिद्ध दिखाई देते हैं । ३३ । राजामद्रके पीछे चलनेवाले शूरवीरोंके मरनेपर । ३४ । विजय के लोभी प्रहार करनेवाले महारथी पांडव हमलोगों को आताहुआ देखकर तीव्रता से सम्मुख वर्त्तमान हुये । ३५ । शंखों के शब्दों से संयुक्त बाणोंका शब्द करते हम लोगोंको पाकर लक्ष्यभेदन करनेवाले

Pandavas seeing the followers of the king of Madra together, formed themselves into an array and faced them. The Madras were found defeated in an instant, and at our approach the Pandav warriors raised cheerful cries. The headless bodies rose everywhere and meteors were detached from the Sun's orb. The ground was covered with broken cars, dead warriors and fallen elephants. 30 The warriors were seen clinging to the yokes of cars or to the swift horses. Horses dragged the cars with broken wheels and took away their warriors in all directions. Horses clung to yokes and the falling warriors were seen like sidhas falling down from heaven at the expiry of their merits. At the fall of the followers of Madra, the Pandavas

स्वनैः । अन्मोन्यतु पुनरासाद्य क्षत्रबलधराः महारथाः । शरासनानि धुन्वानाः सिंहनादान् प्रचुक्रुशुः ॥ ३६ ॥ ततो हतमभिप्रेक्ष्य मद्रराजबलं महत् । मद्रराजञ्च समरे दृष्ट्वा शूरं निपातितम् । दुर्योधनबलं सर्वं पुनरासीत् पराङ्मुखम् ॥ ३७ ॥ वध्यमानं महाराज पाण्डवैर्जितकाशिभिः । दिशो भेजेऽथ सम्भ्रान्तं त्रासितं दृढधन्विभिः ॥ ३८ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि दुर्योधनसैन्यापयाने अष्टादशोऽध्यायः १८ ।

सञ्जय उवाच । पतिते युधि दुर्धर्षे मद्रराजे महारथे । तावकास्तव पुत्राश्च प्रायशो विमुखा ऽभवन् ॥ १ ॥ वणिजो नावि भग्नायां यथागाधेऽप्लवेऽर्णवे । अपारे पारमिच्छन्तो हते शूरे महात्मना ॥ २ ॥ मद्रराजे महाराज वित्रस्ताः शरविक्षताः । अनाथा नाथमिच्छन्तो

प्रहार करनेवाले और धनुषके चलायमान करनेवालों ने सिंहनादोंको किया ।३६। उसके पीछे राजामद्रकी बड़ी सेनाको मराहुआ देखकर और, युद्ध शूरवीर राजामद्र को युद्ध भूमि में गिरा हुआ देख कर दुर्योधन की सब सेना फिर मुख फेरनेवाली हुई । ३७ । हे महाराज विजय से शोभायमान दृढ़ धनुषधारी पांडवोंसे घायल भयसे व्याकुल भयभीत सेनाने दिशाओंको सेवन किया ३८।

अध्याय १९ ॥

संजयबोले कि युद्धमें अजेय महारथी राजामद्रके मरनेपर आपके पुत्र और युद्धकर्त्ता लोग बहुधा मुख फेरनेवाले हुये । १ । जैसे कि अथाह और बिना नौका वाले समुद्रमें नौकाके टूटनेपर व्यापारी लोग पारपानेके अभिलाषी होतेहैं वैसी

desirous of victory opposed us for a long time. Mixing the sounds of bowstring with those of conchs, they attacked us with leonine roars. 36. Seeing the great army of Madra destroyed and their king fallen down, all the army of Duryodhan turned back. Wounded by the victorious Pandavas and terrified, we ran away in all directions." 38.

CHAPTER XIX

Sanjaya said, "At the fall of invincible Shalya, your sons and warriors turned back. Like traders anxious to cross the ocean at the wreck of their boat, your warriors desired for protection at the

मृगाः सिंहार्दिता इव ॥ ३ ॥ वृषा यथा भग्नशृंगा भग्नदंष्ट्रा गजा इव । मध्याह्ने प्रत्यपायाम निर्जिता अजातशत्रुणा । ४ ॥ न संधातु मनीकानि न च राजन् पराक्रमे । आसीद्बुद्धिर्हते शल्ये तव योधस्य कस्यचित् ॥५॥ भीष्मे द्रोणे च निहते सूतपुत्रे च भारत । यद्दुःखं तव योधानां भयं चासीद्विशां पते । तद्भयं स च नः शोको भूय एवाऽभ्यवर्त्तत ॥ ६ ॥ निराशास्तु जये तस्मिन् हते शल्ये महारथे ॥ ७ ॥ हतप्रवीरा विध्वस्ता निकृत्ताश्च शितैः शरैः । मद्रराजे हते राजन् योधास्ते प्राद्रवन् भयात् ॥ ८ ॥ अश्वानन्ये गजानन्ये रथानन्ये महारथाः । आरुह्य जवसम्पन्नाः पदाताः प्राद्रवन् भयात् ॥९॥ द्विसाहस्राश्च मातंगा गिरिरूपाः प्रहारिणः संप्राद्रवन् हते शल्ये अंकुशांगुष्ठचोदिताः ॥ १० ॥ ते रणाद्भरतश्रेष्ठ तावकाः प्राद्रवन् दिशः । धावन्तश्चाप्यदृश्यन्त श्वसमानाः शराहताः ॥ ११ ॥ तान् प्रभग्नान् द्रुतान्

प्रकार महात्मा युधिष्ठिरके हाथसे शूर शल्य के मारेजानेपर अपारमें पारके चाहने वालेहुये । २ । हे महाराज वह भयभीत बाणोंसे घायल अनाथ होकर इस प्रकार नाथों के चाहनेवालेहुये जिस प्रकार सिंहसे पीड़ामान् मृग । ३ । टूटे सींगवाले बैल और टूटे दांतोंवाले हाथी होतेहैं उसीप्रकार अजात शत्रु युधिष्ठिरसे विजय किये हुये हमलोग भी मध्याह्नके समय हटआये । ४ । हे राजा शल्यके मरनेपर आपके किसी शूरवीर का साहस सेना इकट्ठी करने और पराक्रम करने में नहीं हुआ । ५ । हे भरतवंशी भीष्म द्रोणाचार्य और कर्ण के मरनेपर आपके शूर लोगोंको जो दुःख और भयहुआथा हे राजा वही अब हुआ हमारा वहभय और शोकफिर वर्त्तमान हुआ । ६ । महारथी शल्यके मरनेपर उस विजयमें अनाशाहुई । ७ । हे राजा राजामद्रके मरनेपर वह शूरवीर जो कि तीक्ष्णबाणोंसे घायल पराजित हुये और जिनके बड़ेवीर मारेगये थे सब भयभीत होकर भागे । ८ । कोई महारथी घोड़ों पर कोई रथोंपर कोई हाथियोंपर सवारहोकर भागे । और पदातीही तीव्रतासे भागे ॥९॥ शल्यके मरनेपर पर्वतकेरूप प्रहार करनेवाले दोहजार हाथी अंकुश और अंगूठे से चलायमान होकर भागे । १० । हे भरतर्षभ वह आपके शूरवीर युद्धके दिशाओं को भागे और बाणोंसे घायल श्वासलेते और दौड़तेहुये दिखाई पड़े । ११ । विजय

death of Shalya. Terrified and wounded, they missed a protector like deer attacked by a lion. Like oxen with broken horns or like elephants with broken tusks, we were defeated and routed by Yudhishthir at midday. None of your warriors could have the heart to show his prowess after the de[illegible] of Shalya 5 They were in the same danger and fear as they were at the death of Bhishm, Drona and Karna. We were hopeless of victory at the death of Shalya. The wounded and defeated warriors, whose chiefs were dead, fled in fear. They fled with the horses, elephants or cars or on foot. Two thousands of elephants, urged by goads and toes, fled away. 10

दृष्ट्वा हतोत्साहान् पराजितान् । अभ्यवर्तन्त पाञ्चालाः पाण्डवाश्च जयैषिण ॥१२॥ बाणशब्दरवांश्चापि सिंहनादांश्च पुष्कलान् । शंखशब्दांश्च शूराणां दारुणान् समपद्यत ॥ १३ ॥ दृष्ट्वा तु कौरवं सैन्यं भयत्रस्तं प्रविद्रुतम् । अन्योन्यं समभाषन्त पाञ्चालाः पाण्डवैः सह ॥ १४ ॥ अद्य राजा सत्यधृतिर्जितामित्रो युधिष्ठिरः । अद्य दुर्योधनो हीनो दीप्तया नृपतिश्रिया । १५॥ अद्य श्रुत्वा हतं पुत्रं धृतराष्ट्रो जनेश्वरः । विह्वलः पतितो भूमौ किल्बिषं प्रतिपद्यताम् ॥ १६ ॥ अद्य जानातु कौन्तेयं समर्थं सर्वधन्विनाम् । अद्यात्मानन्तु दुर्मेधा गर्हयिष्यति पापकृत ॥ १७ ॥ अद्य क्षत्तुर्वचः सत्यं स्मरतो ब्रुवतो हितम् । अद्य प्रभृति पार्थांश्च प्रेष्यभूत उपाचरन् । विजानातु नृपो दुःखं यत् प्राप्तं पाण्डुनन्दनैः ॥ १८ ॥ अद्य कृष्णस्य माहात्म्यं जानातु स महीपतिः । अद्यार्जुनधनुर्घोषं घोरं जानातु संयुगे । अस्त्राणाञ्च बलं सर्वं बाह्वोश्च बलमाहवे ॥ २० ॥ जय

के अभिलाषी पांचाल और पांडव उन अत्साहसी पराजित छिन्न भिन्न और भागे हुओंको देखकर पीछे दौड़े । १२ । शूरवीरों के बाणोंके उत्तम शब्द सिंहनाद और शंखोंके शब्द महाभयकारी प्रकट हुये । १३ । पाण्डवों समेत पांचाल लोग उन कौरवीय सेनाके लोगोंको भय भीत और भागेहुये देखकर परस्पर में यह वचन बोले ।१४। कि अब सच्चे धैर्य्यवाला राजा युधिष्ठिरको मृतक शत्रुओंवालाहै अब दुर्योधन प्रकाशवान् राजलक्ष्मी से रहितहुआ।१५। अब राजा धृतराष्ट्रपुत्रको मराहुआ सुनकर पृथ्वी पर पड़ाहुआ अचेत होकर रोगग्रस्त होगा । १६ । अब अर्जुन को सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ और समर्थ जानो अब वह पापकर्मी दुर्बुद्धी अपनीही निन्दा करेगा । १७ । अब हितकारी वचनके कहनेवाले विदुरजी के वचनों को स्मरणकरेगा अब से लेकर नौकरके समान युधिष्ठिरकी उपासन करता राजा धृतराष्ट्र उसदुःखको जानेगा जो पांडवोंने पायाथा । १८ । अब राजा श्रीकृष्णकेभी माहात्म्यको जानेगा अब युद्धमें अर्जुन के धनुषके घोर शब्द को और लड़ाईमें दोनोंभुजा और अस्त्रों के सब बलको जानेगा । २० । जैसे कि

Your warriors ran away from the field of battle, wounded and sighing. The Panchals and Pandavas, desirous of victory, checked the routed Kauravas. There were dreadful sounds from the leonine roars, conchs and bows of the warriors. The Panchals and the Pandavas, seeing the Kauravas terror striken and flying, said among themselves, "Yudhishthir of true prowess is now without enemies and Duryodhan has lost his wealth. 15. Prince Dhritrashtra will now be beset with faintness and disease on hearing of the death of his sons. He will know that Arjun is the best of archers and will blame his own evil policy. He will now remember the salutary advice of Vidur and will consider it derogatory to his dignity to attend on Yudhishthir like a servant. He will know the greatness

ज्ञास्यति भीमस्य बलं घोरं महात्मनः । हतं दुर्योधने युद्धे शक्रेणवासुरे बले ॥ २१ ॥ यत् कृतं भीमसेनेन दुःशासनवधे तदा । नान्यः कर्तास्ति लोकेऽस्मिन्नृते भीमं महाबलम् ॥ २२ ॥ ज्ञास्यतामद्य ज्येष्ठस्य पाण्डवस्य पराक्रमम् । मद्रराजं हते श्रुत्वा देवैरपि दुरासदम् ॥ २३ ॥ अथ ज्ञास्यति संग्रामे माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ । निहते सौबले शूरे गान्धारेषु च सर्वशः ॥ २४ ॥ कथं तेषां जयो न स्यात् येषां योद्धा धनञ्जयः । सात्यकिर्भीमसेनश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः ॥ २५ ॥ द्रौपदीतनयाः पञ्च माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ । शिखण्डी च महेष्वासो राजा चैव युधिष्ठिरः ॥ २६ ॥ येषां च जगतो नाथो नाथः कृष्णो जनार्दनः । कथं तेषां जयो न स्याद्येषां धर्मो व्यपाश्रयः ॥ २७ ॥ भीष्मं द्रोणं च कर्णं च मद्रराजानमेव च । तथान्यान्नृपतीन् सर्वान् शतशोऽथ सहस्रशः ॥ २८ ॥ कोऽन्यः शक्तो रणे जेतुमृते पार्थात् युधिष्ठिरात् । यस्य नाथो हृषीकेशः

इन्द्रके हाथसे बलिनाम असुर मारागया इसीप्रकार युद्धमें अब मद्रराजके मरने पर महात्मा भीमसेन के घोर पराक्रमको जानेगा । २१ । जिस भीमसेनने दुःशासनके मारने में जो कर्म किया उस कर्मको महात्मा भीमसेन के सिवाय दूसरा कौन मनुष्य करसक्ता है । २२ । देवताओं से भी अजेय राजामद्र को मृतक सुन कर बड़े पांडव के पराक्रमको भी जानेगा । २३ । और शूरवीर शकुनि और सब गान्धार देशियों के मरनेपर युद्धमें पांडव नकुल और सहदेवको भी जानेगा । २४ । उन लोगोंकी विजय कैसे नहीं होसक्ती जिन्हों के शूरवीर अर्जुन सात्यकि भीमसेन धृष्टद्युम्न । २५ । द्रौपदी के पांचों पुत्र पांडव नकुल सहदेव महाधनुष धारी शिखण्डी और राजा युधिष्ठिरहैं । २६ । और सब जगत्‌के स्वामी दुष्टसंहारी श्रीकृष्णजी जिन्होंके नाथ हैं और धर्म जिन्होंका आश्रय स्थान है उन्हों की विजय कैसे नहीं होसक्ती । २७ । भीष्म द्रोणाचार्य कर्ण राजामद्र और अन्य सैकड़ों हजारों राजाओंको युद्धमें विजय करनेको पाण्डव युधिष्ठिर के सिवाय कौन समर्थ है सदैव धर्म और यशके भंडार इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजी जिसके

of Shri Krishna as well as Arjun's strength of arms in the field of battle 20. He will know the prowess of Bhim on hearing the death of Salya like Bali slain by Indra. Who else can do a deed such as was done by Bhim in slaying Dushasan? Hearing the death of the king of Madra, invincible by Indra, he will know the prowess of the eldest Pandav. He will know of the prowess of Nakul and Sahadev when he will hear of the death of Shakuni and the Panchals. Why should they not win who have Arjun, Satyaki, Bhim, Dhrishtadyumn, the five sons of Draupadi, Nakul and Sahadev, the great archer Shikhandi and prince Yudhishthir for their warriors? 26 They are sure to win who have Shri Krishn the destroyer of the wicked for their protector and Dharm for their refuge. Bhishm,

सदा धर्मयशोनिधिः ॥ २९ ॥ इत्येवं वदमानास्ते हर्षेण महता युताः । प्रजग्मुस्तावकान्
पुत्रे सृञ्जयाः पृष्ठतोन्वयुः ॥ ३० ॥ धनञ्जयो रथानीकमभ्यवर्त्तत वीर्यवान् । माद्रीपुत्रौ च शकुनिं सात्यकिश्च महारथः ॥ ३१ ॥ तान् प्रेक्ष्य द्रवतः सर्वान् भीमसेनभयार्दितान् । दुर्योधनस्तदा सूतमब्रवीद्विस्मयन्निव ॥ ३२ ॥ मामतिक्रमते पार्थो धनुष्पाणिरवस्थितः । जघने सर्वसैन्यानां ममाश्वान् प्रतिपादय ॥ ३३ ॥ जघने वर्त्तमानं हि कौन्तेयो मां धनञ्जयः । नोत्सहेत व्यतिक्रान्तुं वेलामिव महोदधिः ॥ ३४ ॥ पश्य सैन्यं महत् सूत पाण्डवैः समभिद्रुतम् । सैन्यरेणुं समुद्भूतं पश्यस्वैनं समन्ततः ॥ ३५ ॥ सिंहनादांश्च बहुशः शृणु घोरान्महाभयान् । तस्माद्याहि शनैः सूत जघनं परिपालयन् ॥ ३६ ॥ मयि स्थिते च समरे युध्यमाने च पाण्डवम् । पुनरावर्त्तते तूर्णं मामकं बलमोजसा ॥ ३७ ॥ तच्छ्रुत्वा तव पुत्रस्य शूराग्र्यसदृशं वचः । सार

स्वामी हैं । २९ । इसप्रकार वार्त्तालाप करते बड़े आनन्द से युक्त अन्तःकरण से अत्यन्त प्रफुल्लित वह लोग आपके भागेहुये शूरवीरोंके पीछे चले । ३० । पराक्रमी अर्जुन रथकी सेना के सम्मुख वर्त्तमान हुआ और महारथी सात्यकि नकुल और सहदेव यह तीनों सकुनीके सम्मुखहुये । ३१ । तब दुर्योधन उन सबको भीमसेन के भयसे पीड़ामान और भागता हुआ देखकर आश्चर्य करता हुआ अपने सारथीसे बोला । ३२ । कि धनुष हाथमें लिये सम्मुख नियत अर्जुन मुझको उलंघन करताहै सब सेनाओंके मध्य में मेरे घोड़ोंको पहुंचाओ । ३३ । कुन्तीका पुत्र अर्जुन मुझ सेनाके मध्य में वर्त्तमान हुयेके उल्लंघन करनेको ऐसे उत्साह नहीं करेगा जैसे कि महासमुद्र मर्यादा को नहीं उल्लंघन करसक्ता है । ३४ । हेसूत पांडवों से पराजितहुई सेनाको देखो और चारोंओरसे इससेनाकी उठीहुई धूल को देखो । ३५ । और बड़े भयकारी घोर सिंहनादोंको सुनो इसहेतुसे हेसूत सेना के मध्यको रक्षा करताहुआ धीरे २ चल । ३६ । सेनामें मेरे नियतहोने और पांडवों के रोकनेपर शीघ्रही मेरी सेना तीव्रतासे फिरलौटेगी । ३७ । सारथीने आपके पुत्रके

Drona, Karan, Shalya and thousands of other kings could not be conquered except by Yudhishthir who has Shri Krishn for his master." Thus talking, your warriors followed them 30. Valiant Arjun led the army, Satyaki, Nakul and Sahadev opposed Shakuni. Seeing them distressed and flying, Duryodhan, much amazed, said to his charioteer, "Arjun with his bow is overstepping me. Drive my horses in the midst of the armies and Arjun will not be able to overstep me as the ocean cannot pass over the coast. Look at the army defeated by the Pandavas and the dust rising from them. Hear the sharp leonine roars. Drive the horses slowly in the midst of the army. My army will again return to duty on seeing my car in the midst of the army." Hearing the brave words of your son, the driver drove the horses decked

पिहिंगसंछन्नान् शनैरश्वानचोदयत् ॥ ३८॥ गजाश्वरथविहीनास्त्यक्तात्मानः पदातयः।
एकविंशतिसाहस्राः संयुगायावतस्थिरे ॥ ३९ ॥ नानादेशसमुद्भूता नानानगरवासिनः।
अवस्थितास्तदा योधाः प्रार्थयन्तो महद्यशः ॥ ४० ॥ तेषामापततां तत्र संहृष्टानां
परस्परम् संमर्दः सुमहान् यज्ञे घोररूपो भयानकः ॥ ४१ ॥ भीमसेनस्तदा राजन्
धृष्टद्युम्नश्च पार्थिवः। बलेन चतुरङ्गेण नानादेश्यानवारयत् ॥ ४२ ॥ भीममेवाभ्यवर्तन्त
रणेऽन्ये तु पदातयः। प्रक्ष्वेडास्फोटसंहृष्टा वीरलोकं यियासवः ॥ ४३ ॥ आसाद्य भीम
सेनन्तु संरब्धा युद्धदुर्मदाः। धार्तराष्ट्रा विनेदुर्हि नान्यदकथयन् कथाम् ॥ ४४ ॥
परिवार्य रणे भीमं निजघ्नुस्ते समन्ततः। स वध्यमानः समरे पदातिगणसंवृतः
न चचाल ततः स्थानान्मैनाक इव पर्वतः ॥ ४५ ॥ ते तु क्रुद्धा महाराज पाण्डवानां

उसशूर और श्रेष्ठ पुरुषों के योग्य वचनको सुनकर सुवर्णके समानसे ढकेहुये घोड़ोंको धीरेपनेसे चलायमान किया । ३८ । हाथी घोड़े और रथियोंसे रहित देह की प्रीतिको त्यागनेवाले इक्कीस हजार पदाती युद्ध करने को नियतहुये । ३९ । तब नाना देशोंमें उत्पन्न होनेवाले अपूर्व नगरोंमें रहनेवाले शूरवीर बड़े यशको चाहते नियतहुये । ४० । वहां उन प्रसन्नचित्त आनेवालोंका वह परस्परबड़ा युद्ध उत्पन्नहुआ जो कि घोररूप और भयानक था । ४१ । हेराजा तब भीमसेन और धृष्टद्युम्न ने चतुरंगिणी सेनासमेत उन नानादेश निवासियों को रोका ।४२ । फिर सिंहनाद और भुजदंडों के शब्दों समेत अत्यन्त प्रसन्न वीर लोकोंके अनेक अभिलाषी अन्य पदाती भीमसेन के सम्मुख वर्तमान हुये । ४३ । क्रोधयुक्त युद्ध दुर्मद धृतराष्ट्र के पुत्र भीमसेनको पाकर गर्जना करनेलगे और दूसरी कथाको नहीं कहा ४४। उन सबने युद्धमें भीमसेन को घेरकर चारोंओर से घायल किया इसके पीछे युद्धमें पदाती समूहोंसे घिराहुआ और घायल वह भीमसेन अपने नियत स्थानसे वैसे चलायमान नहींहुआ जैसे कि मैनाक पर्वत निश्चल होता है । ४५ । हे महाराज फिर पाण्डवोंके महारथी क्रोधयुक्तहुये और मारनेमें प्रवृत्त

with gold tr ppings. Destitute of elephants and horses and carel as of their lives, twenty one thousands of warriors stayed for battle. The warriors of different countries were engaged in fighting 40. The fighting was dreadful to the extreme Bhimsen and Dhrishtadyumn checked those warriors of different countries 42. 42. Then with leonine roars and the beating of arms, the cheerful warriors desirous of going to the region of heroes, opp sed Bhim on foot. The enraged sons of Dhritrashtra roared at the sight of Bhim and did nothing else. Surrounding Bhim in the field of battle they wounded him from all sides. Surrounded by the foot soldiers and wounded by meh, Bhim did not move from his place like a hill. 45. Then the Pandav warriors were enraged and checked other warriors.

महारथम् । निगृहीतं प्रयत्नेन योधांश्च न्यायवारयन् ॥ ४६ ॥ ततः क्रुद्धो रणे भीमस्तैः पदातिभिरावृतः । सोऽवतीर्य रथात्तूर्णं पदाति समुपस्थितः । जातरूपप्रतिच्छन्नां प्रगृह्य महतीं गदाम् ॥ ४८ ॥ अवधीत्तावकान् योधान् दण्डपाणिरिवान्तकः । रथाश्वद्विपहीनांस्तु तान् भीमो गदया बली ॥ ४९ ॥ एकविंशतिसाहस्रान् पदातीनवपोथयत् हत्वा तत् पुरुषानीकं भीमः सत्यपराक्रमः ॥ ५० ॥ धृष्टद्युम्नं पुरस्कृत्य नचिरात् प्रत्यदृश्यत पादाता निहता भूमौ शिश्यिरे रुधिरोक्षिताः । सम्भग्ना इव वातेन कर्णिकाराः सुपुष्पिताः ॥ ५१ ॥ नानापुष्पस्रजोपेता नानाकुण्डलधारिणः । नानाजात्या हतास्तत्र नानादेशसमागताः ॥ ५२ ॥ पताकाध्वजसंछन्नं पदातीनां महद्बलम् । निकृत्तं विबभौ रौद्रं घोररूपं भयानकम् ॥ ५३ ॥ युधिष्ठिरपुरोगास्तु सहसैन्या महारथाः । अभ्यधावन् महात्मानं पुत्रं दुर्योधनं तव ॥ ५४ ॥ ते सर्वे तावकान् दृष्ट्वा महेष्वासान् पराङ्मुखान् । नाभ्यवर्तन्त ते पुत्रं वेलेव मकरालयम् ॥ ५५ ॥ तदद्भुतमपश्याम तव पुत्रस्य पौरुषम्

होकर अन्य २ शूरवीरों को रोका । ४६ । तब भीमसेन युद्ध में उनचारों ओरको नियत पदातियोंके कारणसे क्रोधयुक्त हुआ और शीघ्रही रथसे उतर सुवर्णसे मढ़ी हुई बड़ी गदाको लेकर आपभी पदाती होकर नियतहुआ ।४८। और दण्डधारी कालकेसमान होकर आपके शूरवीरोंसमेत रथ घोड़ेसेरहित पदातियों को मारा । ४९ । अर्थात् उस युद्धमें इक्कीस हजार पदातियोंको मारकर रुधिरलिप्त शरीरसे शोभायमान हुआ । ५० । और थोड़ेही समयमें धृष्टद्युम्नको आगेकरके दृष्टिगोचर हुआ और वह सब पदाती पृथक रुधिरसे लिप्तहोकर पृथ्वीपर शयन करगये जैसे कि पुष्पित कर्णकारके वृक्ष वायुसे टूटकर गिरेहोयँ उसी प्रकार नानाप्रकार के पुष्पोंसे संयुक्त नानाप्रकारके कुण्डल रखनेवाले नानाजाति के बहुत प्रकार के देशों से आनेवाले शूरवीर मारेगये । ५२ । पताका और ध्वजाओं से ढकीहुई पदातियों की बड़ी सेनाके लोग लेटेहुये महाघोर रूप और भयानक होकर शोभायमानहुये । ५३ । और सब सेनाके लोग और महारथी जिनके अग्रवर्ती युधिष्ठिरथे वह सब आपके पुत्र महात्मा दुर्योधनके सम्मुख दौड़े ।५४। उन सबनेबड़े धनुषधारी और मुख फिरेहुये आपके शूरवीरोंको देखकर आप के पुत्र को ऐसे उल्लंघन नहीं किया जैसे कि समुद्रको मर्यादा नहीं उल्लंघन करसक्ती । ५५ ।

Then Bhim was enraged on account of the attack and soon coming down from his car, he stood on foot with his mace Like Death, with his staff, he slew the foot soldiers who had no cars and horses. He slew the twenty one thousands of warriors and looked glorious with his blood staind body. 50. In a short time he was seen with Dhrishtadyumn and foot soldiers lay on earth with bleeding bodies like Kinshuk trees in bloom struck down by the wind. Decked with ear-rings the warriors of various countries lay dead there The foot soldiers, with their standards and banners looked dreadful as

यदेकं सहिताः पार्था न शेकुरतिवर्तितुम् ॥ ५६ ॥ नातिदूरापयातन्तु कृतबुद्धिं पला
यने । दुर्य्योधनः स्वकं सैन्यमब्रवीद्भृशविक्षतम् ॥ ५७ ॥ न तं देशं प्रपश्यामि पृथिव्यां
पर्वतेषु वा । यत्र यातान्न वो हन्युः पाण्डवाः किं सृतेन वः । ५८ ॥ अल्पञ्च बलं
तेषां कृष्णौ च भृशविक्षतौ । यदि सर्वेऽत्र तिष्ठामो ध्रुवं नो विजयो भवेत् ॥ ५९ ॥
विप्रयातांस्तु वो भिन्नान् पाण्डवाः कृतकिल्बिषाः । अनुसृत्य हनिष्यन्ति श्रेयो नः
समरे स्थितम् ॥ ६० ॥ शृणुध्वं क्षत्रियाः सर्वे यावन्तोऽत्र समागताः । यदा शूरञ्च
भीरुञ्च मारयन्तकः सदा । को नु मूढो न युध्येत पुरुषः क्षत्रियब्रुवः ॥ ६२ ॥ श्रेयो
नो भीमसेनस्य क्रुद्धस्य प्रमुखेस्थितम् । सुखसांग्रामिको मृत्युः क्षत्रधर्मेण युध्यताम्
॥ ६३ ॥ जित्वेह सुखमाप्नोति हतः प्रेत्य महाफलम् । न युद्धधर्माच्छ्रेयान् हि पन्थाः

वहां हमने आपके पुत्रकी उस अपूर्व वीरता को देखा जो सब पाण्डव उस अकेले
को युद्धमें उल्लंघन करनेको समर्थ नहीं हुये । ५६ । बहुतदूर न जानेवाले भागनेमें
प्रवृत्तचित्त अत्यंत घायल अपनी सेनासे यह वचन कहा । ५७ । कि मैं पृथ्वी और
पर्वतोंमें भी उस देशको नहीं देखता हूं जहांपर जानेवाले तुम लोगों को
पाण्डव नहीं मारें भागनेसे क्या प्रयोजन है । ५८ । उन्होंकी सेनाथोड़ी है और
श्रीकृष्ण समेत अर्जुन अत्यन्त घायल है जो हम सब यहां नियतहोजायँ तो
अवश्य हमारी विजयहोय । ५९ । अनहित करनेवाले पाण्डव भागेहुये और
छिन्नभिन्न होनेवाले तुमलोगों को पीछे करके मारेंगे इससे युद्धमेंही हमारा मरना
श्रेष्ठ है । ६० । जितने क्षत्री यहां इकट्ठे हैं वह सब सुनो जब कि काल
सदैव शूर और भयभीतोंकोभी मारता है तो कौन अज्ञान पुरुष असक्त समीहोकर
युद्ध नहीं करे । ६१ । क्रोधयुक्त भीमसेनके सन्मुख हमारा कल्याण नियत है
क्षत्रीधर्म में लड़नेवालों का युद्धमेंहीमरना सुखदायी है । ६३ । मनुष्य को घरमें
भी कभी मरना है क्षत्रीधर्मसे लड़नेवाले की मृत्यु सनातन है यहां विजय करके
सुखको पाता है और मराहुआ परलोकमें बड़े फलको पाता है हे कौरव निश्चय

they lay on the ground. The army led by Yudhish'hir rushed against Duryodhan Seeing your warriors turn back, they could not overstep him as the Ocean can not pass over its boundary. Then we saw the wonderful bravery of your son whom all the Pandavas together could not overstep. 66 Then he said to his wounded warriors who intended flight, " I donot see a place on hills or plains where you can be safe from the Pandavas. What will you gain by flight ? Their army is small and Shri Krishn and Arjun are wounded. We are sure to win if we withstand them The Pandav warriors will chase you in your flight. It is therefore good to die fighting. Let all the assembled warriors hear me Death overtakes the brave and the coward, seeing this, who among warriors is foolish enough to

स्वर्गद्वारं कौरवाः । प्राप्नुवन्ति तान् लोकान् हता युद्धे प्रयाल्पयथ ॥ ६५ ॥ श्रुत्वा तु वचनं तस्य पूजयित्वा च पार्थिवाः । पुनरेवाभ्यवर्तन्त पाण्डवानाततायिनः ॥ ६६ ॥ तानापतत एवाशु व्यूढानीकाः प्रहारिणः । प्रत्युद्ययुस्तदा पार्था जयगृध्राः प्रमन्यवः ॥ ६७ ॥ धनञ्जयो रथेनाजावभ्यवर्तत वीर्य्यवान् । विश्रुतं त्रिषु लोकेषु गाण्डीवं व्याक्षिपन्धनुः ॥ ६८ ॥ माद्रीपुत्रौ तु शकुनिं सात्यकिश्च महाबलः । जवेनाभ्यपतन् वीरा यतो वै तावकं बलम् ॥ ६९ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि संकुलयुद्धे ऊनविंशोऽध्यायः १९ ॥

करके स्वर्गका मार्ग धर्मयुद्धसे उत्तम कोई नहीं है युद्ध में मरनेवाला थोडेही समयमें प्राप्त होनेवाले लोकोंको भोगता है । ६५ । राजालोग उसके वचनको सुनकर और बड़ी प्रशंसा करके शस्त्रोंको धारण करके फिर पाण्डवों के सम्मुख आकर वर्त्तमानहुये । ६६ । अलंकृत सेना समेत शस्त्रधारी विजय के आकांक्षी और क्रोधयुक्त वह पाण्डव शीघ्रही उन आनेवालों के सम्मुखगये । ६७ । पराक्रमी अर्जुन रथकी सवारी से युद्धभूमि में वर्त्तमान हुआ और तीनोंलोकमें विख्यात गांडीव धनुषको टंकारा बड़ा पराक्रमी सात्यकि नकुल और सहदेव यह तीनोंवीर शीघ्रता से उस ओर शकुनी के सम्मुखगये जिधरको कि आपकी सेनाथी ६९।

not to fight. Our goo... battle is good for war ... to die in ... should we not die fig... ... are happy if we gain victory and attain heaven in case of death. The easiest way to heaven lies ... s direct ... Pand... his car ... Bravo Satyaki, Nakul and Sahadev oppose Shakuni and his army." 69.



सञ्जय उवाच । सन्निवृत्ते बलौघे तु शाल्वो म्लेच्छगणाधिपः । अभ्यवर्तत संक्रुद्धः पाण्डूनां सुमहद्बलम् ॥ १ ॥ आस्थाय सुमहानागं प्रभिन्नं पर्वतोपमम् । दृप्तमैरावणप्रख्यममित्रगणमर्दनम् ॥ २ ॥ योसौ महान् भद्रकुले प्रसूतः सुपूजितो धार्तराष्ट्रेण नित्यम् । सुकल्पितः शास्त्रविनिश्चयज्ञैः सदोपवाह्यः समरेषु राजन् । तमास्थितो राजवरो बभूव यथोदयस्थः सविता क्षपान्ते ॥ ३ ॥ स तेन नागप्रवरेण राजन्नभ्युद्ययौ पाण्डुसुतान् समन्तात् । शितैः पृषत्कैर्विददार चापि महेन्द्रवज्रप्रतिमैः सुघोरैः ॥ ४ ॥ ततः शरान् वै सृजतो महारणे योधांश्च राजन्नयतो यमाय । नास्यान्तरं ददृशुः स्वे परे वा यथा पुरा वज्रधरस्य दैत्या । ऐरावणस्थस्य चमूविमर्दे दैत्या पुरा वासवस्येव राजन् ॥ ५ ॥ ते पाण्डवाः सोमकसृञ्जयाश्च तमेव नागं ददृशुः समन्तात् । सहस्रशो वै विचरन्तमेकं यथा महेन्द्रस्य गजं समीपे ॥ ६ ॥ संद्राव्यमाणन्तु

अध्याय २० ॥

संजय बोले कि सेना के समूहके लौटनेपर म्लेच्छों के समूहों का राजा महा क्रोधयुक्त शाल्व पाण्डवों की बड़ी सेना के सम्मुख गया । १ । मतवाले पर्वताकार अहंकारी ऐरावत के समान शत्रुओं के समूहों के मर्दन करनेवाले बड़े हाथी पर सवार । २ । जो भद्रनाम बड़े कुलमें उत्पन्न सदैव दुर्य्योधन से पूजितथा शास्त्र के निश्चय जाननेवाले मनुष्यों से अलंकृत हाथी युद्धमें जिसकी सदैव सवारी था हेराजा वह राजाओं में श्रेष्ठ हाथीपर नियत होकर उस प्रकारका विदित होताथा जैसे कि प्रातःकाल के समय उदयाचल पर नियत सूर्य होताहै । ३। उस अत्यन्त उत्तम हाथीकी सवारी से उन इकट्ठे होनेवाले पाण्डवों के सम्मुख गया और उसने बड़े तेजवान् वेगवान इन्द्र वज्रके समान व महाघोर पृषत्कों से पाण्डवों को घायलकिया । ४ । इसके पीछे बड़े युद्धमें बाणोंको छोड़नेवाले और शूरवीरोंको यमलोकमें पहुंचाने वाले उस राजाका छिद्र अपने और दूसरे शूरवीरों ने भी ऐसे नहीं देखा जैसे कि पूर्वसमयमें ऐरावत हाथीपर सवार सेनाके मर्दन करनेवाले वज्रधारी इन्द्रके छिद्रोंको देवताओं ने और असुरों ने नहीं देखाथा ।५। उन पाण्डव सोमक और सृञ्जियों ने चारों ओर को हजारों प्रकार से घूमनेवाले

CHAPTER,XX

Sanjaya said, " At the return of the armies, the king of mlechas Shalwa much enraged, faced the Pandav army. He was mounted on a mad elephant huge as a hill or Airavat, of Bhadra family, kept long by Duryodhan for the purpose of war. Mounted on that elephant, the king looked glorious like the morning Sun and faced the Pandavas. He wounded them with his vajra like arrows. Fighting there none could make out any weakness in him as none could find out the defects of Indra while mounted on Airavat in the war of gods and asura. The Pandavas Somaks and Srinjayas saw

बलं परेषां परीतकल्पं विषमैः समन्तात् नैवावतस्थुः समे मृधे भयाद्भिद्यमानास्तु परस्परं तदा ॥ ७ ॥ ततः प्रभग्ना सहसा महाचमूः सा पाण्डवी तेन नराधिपेन । दिशो दशसूः सहसा प्रधाविता गजेन्द्रवेगं तमपारयन्ती ॥ ८ ॥ दृष्ट्वा च तां वेगवतीं प्रभग्नां सर्वे त्वदीया युधि योधमुख्याः । अभ्यर्चयन्तस्तु नराधिपं तं दध्मुः शङ्खाञ्छशिसन्निकाशान् ॥ ९ ॥ श्रुत्वा निनादं त्वथ कौरवाणां हर्षाद्विमुक्तं सह शङ्खशब्दैः । सेनापतिः पाण्डवसृञ्जयानां पाञ्चालपुत्रो न ममर्ष कोपात् ॥ १० ॥ ततस्तु तं वै द्विरदं महात्मा प्रत्युद्ययौ त्वरमाणो जयाय । जम्भो यथा शक्रसमागमे वै नागेन्द्रमैरावतमिन्द्रवाह्यम् ॥ ११ ॥ तमापतन्तं सहसा च दृष्ट्वा पाञ्चालराजं युधि राजसिंहः । तं वै द्विपं प्रेषयामास तूर्णं वधाय राजन् द्रुपदात्मजस्य ॥ १२ ॥ स तं द्विपं सहसाभ्यापतन्तमविध्यदर्कप्रतिमैः पृषत्कैः । कर्मारधौतैर्निशितैर्ज्वलद्भिर्नाराचमुख्यैस्त्रिभिरुग्रवेगैः

उस अकेले हाथीको सम्मुख ऐसे देखा जैसे कि सब इन्द्रके हाथीको देखाथा ॥ ६ ॥ तब प्रतिपक्षियों की सेना चारोंओरसे भागीहुई और मरणमाप दिखाई पड़ी और युद्ध में परस्पर अत्यन्त मर्दन पायेहुये भयसे नियत नहीं हुये ॥ ७ ॥ फिर पांडवों की वह बड़ी सेना उस राजा के हाथसे अकस्मात् पराजितहुई और गजेन्द्र के उस वेगके पारको न पाकर अकस्मात् चारों ओरको दौड़ी ॥ ८ ॥ आपके सब उत्तम शूरवीरों ने युद्धमें उस वेगवान् सेनाको पराजितहुई देखकर उसराजाकी प्रशंसा करी और चन्द्रवर्ण श्वेत शंखोंको बजाया ॥ ९ ॥ पांडव और सृञ्जियों के सेनापति धृष्टद्युम्नने कौरवोंकी वह शंखों के द्वाराकीहुई गर्जना सुनकर सहन नहीं किया ॥ १० ॥ इसकेपीछे शीघ्रता करनेवाला महात्मा धृष्टद्युम्न विजयके निमित्त उस हाथीके सम्मुख ऐसेगया जैसेकि इन्द्रके सम्मुख जृंभनाम असुर इन्द्रकी सवारी के गजराज ऐरावत के सम्मुख गयाथा ॥ ११ ॥ उसराजाओंमें श्रेष्ठने उसअकस्मात् आतेहुये धृष्टद्युम्नको देखकर शीघ्रतासे अपने उस हाथीको द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्नके मारनेके निमित्त चलायमान किया ॥ १२ ॥ उस धृष्टद्युम्नने अग्निके रूप कारीगर के हाथसे सफा कियेहुये तेजधार प्रकाशित और बड़े वेगवान् उत्तम पृषत्क नाम

the elephant moving in all directions like Airavat. 6. Then the army of the foes was to be seen dead or flying in all directions and could not stay for fear. The Pandav army was defeated by that king and ran away in all directions. Seeing the Pandav army routed your warriors praised the king and blew white conches. Dhrishtadyumn the commander of the Pandav forces, could not bear to hear the blasts of their conchs. 10. To gain victory, Dhrishtadyumn attacked the elephant as Jambh had opposed Airavat the elephant of Indra. The king seeing Dhrishtadyumn advance towards himself urged his elephant at him. Dhrishtadyumn wounded the elephant coming towards him with three well-cleaned arrows. He again wounded the elephant with

वेगैः ॥ १३ ॥ ततो परान् पञ्च शितान् महात्मा नाराचमुख्यान् विससर्ज कुम्भे । स तैस्तु विद्धः परमद्विपो रणे तदा पराहृत्य भृशं प्रदुद्रुवे ॥ १४ ॥ तं नागराजं सहसा प्रणुन्नं विद्राव्यमाणञ्च निगृह्य शाल्वः । तोत्राङ्कुशैः प्रेषयामास तूर्णं पाञ्चालराजस्य रथं प्रदिश्य ॥ १५ ॥ दृष्ट्वा तमायान्तं सहसा तु नागं धृष्टद्युम्नः स्वरथाच्छीघ्रमेव । गदां प्रगृह्याशु जवेन वीरो भूमिं प्रपन्नो भयविह्वलाङ्गः ॥ १६ ॥ स तं रथं हेमविभूषिताङ्गं साश्वं ससूतं सहसा विमृद्य । उत्क्षिप्य हस्तेन महाद्विपोऽयं विपोथयामास वसुन्धरातले ॥ १७ ॥ पाञ्चालराजस्य सुतं स दृष्ट्वा तदार्दितं नागवरेण तेन । तमभ्यधावत् सहसा जवेन भीमः शिखण्डी च शिनेश्च नप्ता ॥ १८ ॥ शरैश्च वेगं सहसा निगृह्य तथाभ्यतो ह्यागततो गजस्य । स संगृहीतो रथिभिर्गजो वै चचाल तैर्वार्यमाणश्च संख्ये ॥ १९ ॥ ततः पृषत्कान् प्रववर्ष राजा सूर्यो यथा रश्मिजालान्

तीक्ष्णबाणों से उस अकस्मात् आनेहुये हाथी को घायल किया । १३ । इसके पीछे उसी महात्माने अन्य पांच नाराचों को उस हाथी के कुम्भपर छोड़ा तब वह उत्तम हाथी युद्ध में उन बाणों से अत्यन्त घायल और घूमकर तीव्रता से भागा । १४ । फिर शाल्व ने अकस्मात् भागे हुये और चलायमान उस गजराज को लौटाकर धृष्टद्युम्नके रथको जतलाकर शीघ्र चाबुक और अंकुशों के द्वारा भेजा । १५ । फिर अकस्मात् आतेहुये उस हाथीको देखकर भयसे व्याकुल शरीर वीर धृष्टद्युम्न शीघ्रही अपनी गदाको रथमें लेकर तीव्रता पूर्वक पृथ्वी पर वर्तमान हुआ । १६ । उसबड़े गर्जतेहुये हाथी ने उस सुवर्ण से अलंकृत रथको घोड़े और सारथी समेत अकस्मात् सूंड़ से उठाकर पृथ्वीपर चूर्ण करडाला । १७ । तब उस उत्तम हाथी से पीड़ामान राजा द्रुपद के पुत्रको देखकर भीमसेन सात्यकि और शिखण्डी यह तीनों अकस्मात् बड़ी तेजी से उसकी ओर दौड़े । १८ । और अकस्मात् उस आनेवाले हाथी के वेगको रोका वह हाथी उन रथियों से युद्ध में घेरा और रुकाहुआ कम्पायमानहुआ । १९ । इसके पीछे राजा शाल्व पृषत्कों की चारोंओर

five arrows on the forehead and made him turn face. Shalwa brought back the elephant and urged him with whips and goads at the car of Dhrishtadyumn. 15. Seeing that elephant advance towards him, Dhrishtadyumn jumped down from his car with his mace. The elephant crushed into pieces the car, driver and horses by dashing it to the ground with her trunk. Seeing Dhrishtadyumn troubled by the elephant, Bhim, Satyaki and Shikhandi rushed towards him and checked the elephant. Surrounded by them, the elephants tremble. They showered upon them his arrows like the rays of the Sun. he 20 Seeing that deed of Shalwa, the Panchals, Matsyas and Srinjays checked the elephant from all sides Drupad's son advanced against

समन्तात् तैराशुगैर्वध्यमाना रथौघा प्रदुद्रुवुस्तत्र ततस्ततः सर्वे ॥२०॥ तत् कर्म शाल्वस्य समीक्ष्य सर्वे पाञ्चालमत्स्या नृप सृञ्जयाश्च । हाहाकारैर्नादयन्त स्म युद्धे द्विपं समं तावुरुवन्नरोत्तमाः ॥२१॥ पाञ्चालराजस्त्वरितस्तु शूरो गदां प्रगृह्याचलशृङ्गकल्पाम् । ससम्भ्रमं भारत शत्रुघाती जवेन वीरोऽनुससार नागम् ॥ २२ ॥ ततस्तु नागं धरणीधराभं मदं स्रवन्तं जलदप्रकाशम् । गदां समासाद्य भृशं जघान पाञ्चालराजस्य सुतस्तरस्वी ॥२३॥ स भिन्नकुम्भः सहसा विनद्य मुखात् प्रभूतं क्षतजं विमुञ्चन् । पपात नागो धरणीधराभः क्षितिप्रकम्पे चलितो यथाद्रिः ॥२४॥ निपात्यमाने तु तदा गजेन्द्रे हाहाकृते तव पुत्रस्य सैन्ये । स शाल्वराजस्य शिनिप्रवीरो जहार भल्लेन शिरः शितेन ॥ २५॥ हृतोत्तमाङ्गो युधि सात्वतेन पपात भूमौ सह नागराजा । यथाद्रिशृङ्गं सुमहत् प्रणुन्नं वज्रेण देवाधिपचोदितेन ॥ २६ ॥

इति श्रीमहाभारते शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि शाल्ववधे विंशोऽध्यायः २० ॥

से ऐसी वर्षा करनेलगा जैसे कि किरणों के जालको सूर्य बरसाता है उन शीघ्रगामी बाणों से घायल रथों के समूह एक साथही जहां तहां भागे । २० । हे राजा नरोंमें उत्तम और हाहाकारों से शब्द करनेवाले सब पाञ्चाल मत्स्य और सृञ्जय देशियों ने शाल्व के उस कर्मको देखकर उस हाथी को चारोंओरसे रोका । २१ । हे भरतवंशी वह शत्रुओं का मारनेवाला शूरवीर द्रुपदका पुत्र शीघ्रही भ्रान्ती से रहित पर्व्वतके शिखरकी समान गदाको लेकर तीव्रतासे हाथी की ओर चला । २२ । फिर धृष्टद्युम्नने उस गदाको लेकर उस पर्व्वताकार बादल के समान मदझाड़नेवाले हाथीको बहुत घायलकिया । २३ । वह पर्व्वतसम हाथी टूटाकुंभ अकस्मात् गर्जकर मुखसे बहुत रुधिर को छोड़ता ऐसे गिरपड़ा जैसे कि भूकम्प होनेसे पर्व्वत गिरता है ।२४। तब गजराज के गिराने और आपके पुत्रकी सेना के हाहाकार करनेपर उन शिनियों में बड़े वीर सात्यकि ने राजा शाल्व के शिरको भल्लसे काटा । २५ । युद्धमें यादव के हाथसे कटाशिर वह राजा गजराज समेत पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि देवराज के चलायमान वज्र से टूटा पर्वत का बड़ा शिखर होताहै । २६ ।

it with his mace and wounded the huge beast. Wounded and vomiting blood from its mouth, the elephant fell down like a hill by an earthquake. At the fall of the elephant, when your warriors were crying out with grief, Satyaki beheaded Shalwa with a sharp arrow. With his head cut off by the Yadav, the king and his elephant fell down like a hill struck by the vajra of Indra. 26

सञ्जय उवाच । तस्मिंस्तु निहते शूरे शाल्वे समितिशोभने । तवाभज्यद्बलं वेगाद्वातेनेव महाद्रुमः ॥ १ ॥ तत् प्रभग्नं बलं दृष्ट्वा कृतवर्मा महारथ । दधार समरे शूरः शत्रुसैन्यं महाबलः ॥ २ ॥ सन्निवृत्तास्तु ते वीरा दृष्ट्वा सात्वतमाहवे । शैलोपमं स्थितं राजन् कीर्यमाणं शरैर्युधि । ततः प्रववृते युद्धं कुरूणां पाण्डवैः सह निवृत्तानां महाराज मृत्युं कृत्वा निवर्त्तनम् ॥ ४ ॥ तत्राश्चर्यं महायुद्धं सात्वतस्य परैः सह । यदेको वारयामास पाण्डुसेनां दुरासदम् ॥ ५ ॥ तेषामन्योन्यसुहृदां कृते कर्मणि दुष्करे । सिंहनादः प्रहृष्टानां दिवस्पृक् सुमहानभूत् ॥ ६ ॥ तेन शब्देन वित्रस्तान् पाञ्चालान् भरतर्षभ । शिनेर्नप्ता महाबाहुरुपायात् सात्यकिः ॥ ७ ॥ स समासाद्य राजानं क्षेमकीर्तिं महाबलम् । सप्तभिर्निशितैर्बाणैरनयद्यमसादनम् ॥ ८ ॥ तमायान्तं महाबाहुं प्रक्षिपन्तं शिताञ्छरान् । जवेनाभ्यपतद्धीमान् हार्दिक्यः शिनिपुङ्गवम् ॥ ९ ॥ तौ सिंहाविव

अध्याय २१ ॥

संजय बोले कि उस युद्धके शोभा देनेवाले शूर शाल्वके मरनेपर आपकी सेना शीघ्रतासे ऐसी पृथक्-२ हुई जैसे कि वायुसे बड़े वृक्ष पृथक् होजाते है । १ । बड़े बलवान् शूरवीर महारथी कृतवर्म्मा ने उस सेना को पृथक् हुआ देखकर युद्धमेंही रोका २ हे राजा वह वीर उस पर्वत के समान युद्धमें नियत बाणों से ढके हुये यादवको युद्ध में देखकर लौटे । ३ । इसके अनन्तर मृत्युको पीछेको लौटनेवाले कौरवों का युद्ध पांडवोंके साथ जारीहुआ । ४ । वहां यादव का युद्ध प्रतिपक्षियों के साथ अपूर्व हुआ जो अकेलेनेही कठिनतासे रोकने के योग्य पांडवीसेनाको रोका । ५ । परस्पर शुभचिन्तक लोगोंके उस कठिन कर्म्म करनेपर अत्यन्ततासे उनलोगों के सिंहनाद आकाश अथवा स्वर्ग के भी स्पर्श करनेवाले हुये । ६ । हे भरतर्षभ उस शब्दको सुनकर पांचालदशी भयभीत हुये फिर शिनी का पौत्र महाबाहु सात्यकि उसके सम्मुख वर्त्तमानहुआ । ७ । उसने बड़े पराक्रमी राजा क्षेमकीर्त्ति को पाकर तेज धारवाले सातबाणों से यमलोक में पहुँचाया । ८ । तब बुद्धिमान कृतवर्म्मा से उस तेजबाणों के फेकनेवाले आतेहुये महाबाहु सात्यकि के सम्मुख दौड़ा । ९ । अत्यन्त उत्तम शस्त्रों के धारण करनेवाले रथियों में श्रेष्ठ

CHAPTER XXI

Sanjaya said, "At the fall of valiant Shalwa your warriors dispersed like trees in a storm of wind. Brave Kritvarma checked the dispersion, for seeing the Yadav firm like a hill under the rain of arrows, they came back to fight. Then the Kauravas fought fearlessly with the Pandavas The Yadav fought a wounderful battle with the foes, for alone he checked the great Pandav army. 5. The leonine roars of his friends touched the sky. The Panchals were terrified with their cries and Satyaki the grandson of shini opposed him. Finding Prince Kshemkirti before him, he slew him with seven

नर्दन्तौ चाभिवनौ द्वीपिनाविव वने । अन्योन्यमभिधावन्तौ शस्त्रप्रवरधारिणौ ॥ १० ॥ पाण्डवाः
सह पाञ्चालैर्योधाश्चान्ये नृपोत्तम । प्रेक्षकाः समपद्यन्त तयोर्घोरे समागमे ॥ ११ ॥ नारा
चैर्वत्सदन्तैश्च वृष्ण्यन्धकमहारथौ । अभिजघ्नतुरन्योन्यं प्रहृष्टाविव कुञ्जरौ ॥ १२ ॥
चरन्तौ विविधान्मार्गान् हार्दिक्यशिनिपुङ्गवौ । मुहुरन्तर्दधाते तौ बाणवृष्ट्या परस्परम्
॥ १३ ॥ चापवेगबलोद्धूतान्मार्गणान् वृष्णिसिंहयोः आकाशे समपश्याम पतंगानिव
शीघ्रगान् ॥ १४ ॥ तमेकं सत्यकर्माणमासाद्य हृदिकात्मजः । अविध्यन्निशितैर्बाणैश्चतु
र्भिश्चतुरो हयान् ॥ १५ ॥ स दीर्घबाहुः संक्रुद्धस्तोत्त्रार्दित इव द्विपः । अष्टाभिः कृतव
र्माणमविध्यत् परमेषुभिः । १६ ॥ ततः पूर्णायतोत्सृष्टैः कृतवर्मा शिलाशितैः । सात्यकिं
त्रिभिराहत्य धनुरेकेन चिच्छिदे ॥ १७ ॥ निकृत्तं तद्धनुः श्रेष्ठमपास्य शिनिपुङ्गवः ।
अन्यदादत्त वेगेन शैनेयः सशरं धनुः ॥ १८ ॥ तदादाय धनुः श्रेष्ठं वरिष्ठः सर्वधन्विं

धनुषधारी सिंहों के समान गर्जनेवाले दोनों सम्मुख दौडे । १० । उन दोनों के घोर संग्राम में पाण्डव आदिक उत्तम २ राजालोग और पाञ्चालों समेत अन्य अन्य शूरवीर देखनेवाले हुये । ११ । अत्यंत प्रसन्न हाथीके समान उस वृष्णी और अन्धक कुलके महारथियों ने नाराच और वत्सदन्तनाम बाणों से परस्पर घायल किया । १२ । नानाप्रकारके मार्गोंको घूमनेवाले वह दोनों कृतवर्मा और सात्यकि परस्परकी बाणवृष्टी से बारम्बार गुप्तहोगये । १३ । हमने उन वृष्णियों में श्रेष्ठोंके धनुषोंकी तीव्रता और बलसे ऊंचे फेंके हुये बाणोंको आकाश में शीघ्रगामी पक्षियों के समान देखा । १४ । हार्दिक्यके पुत्र कृतवर्माने उस अकेले सत्यकर्मीको पाकर तेजधार चारबाणोंसे उसके चारोंघोडोंको घायल किया । १५ । उस लम्बी भुजावाले अत्यन्त क्रोधयुक्त चाबुक से पीडामान हाथी के समतुल्य ने आठ उत्तम बाणोंने कृतवर्मा को घायल किया । १६ । उसके पीछे कृतवर्माने अच्छेप्रकार खैंचकर तेजधार तीन बाणोंसे सात्यकि को घायल करके एकबाण से धनुषको काटा । १७ । फिर शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकि ने उस टूटे धनुषको डाल कर बड़ेवेगसे बाणसमेत दूसरे धनुषको हाथमें लिया । १८ । सब धनुषधारियों में

arrows Then wise kritvarma rushed against Satyaki who was discharging his arrows fast. The two great archers opposed each other roaring like lions 10. The Pandavas, the Panchals and other kings looked on them as they fought. The two heroes of Vrishni and Andhak families wounded each other with their sharp arrows Moving in different directions, they covered each other with the showers of their arrows. We saw the flights of their arrows in the air like the flights of their arrows in the air like the flights of birds, Kritvarma wounded the four horses of Satyaki with four arrows 15 Enraged like an elephant pierced with goads, he wounded Kritvarma with eight arrows. Having wounded Satyaki with three arrows

नाम । आरोप्य वै महावीर्यो महाबुद्धिर्महाबल ॥ १९ ॥ अमृष्यमाणो धनुषश्छेदनं कृतवर्मणा । कुपितोऽतिरथ शीघ्रं कृतवर्माणमभ्ययात् ॥ २० ॥ ततस्तु निशितैर्बाणैर्दशभि शिनिपुङ्गव. । जघान सूतमश्वांश्च ध्वजञ्च कृतवर्मण ॥ २१ ॥ ततो राजन् महेष्वास कृतवर्मा महारथः । हताश्वसूतं संप्रेक्ष्य रथं हेमपरिष्कृतम् ॥ २२ ॥ रोषेण महताविष्टः शूलमुद्यम्य मारिष । चिक्षेप भुजवेगेन जिघांसु शिनिपुङ्गवम् ॥ २३ ॥ तच्छूल सात्वतो ह्याजौ निर्भिद्य निशितै शरै । चूर्णितं पातयामास मोहयन्निव माधवम् । ततोऽपरेण भल्लेन हृद्येनं समताडयत् ॥ २४ ॥ स युद्धे युयुधानेन हताश्वो हत सारथि । कृतवर्मा कृतास्त्रेण धरणीमन्वपद्यत ॥ २५ ॥ तस्मिन् सात्यकिना वीरे द्वैरथे विरथीकृते । समपद्यत सर्वेषां सैन्यानां सुमहद्भयम ॥ २६ ॥ पुत्रस्य तव चात्यर्थं विषाद. समपद्यत । हतसूते हताश्वे तु विरथे कृतवर्मणि ॥ २७ ॥ हताश्वञ्च समा

श्रेष्ठ बड़ा पराक्रमी बुद्धिमान बलवान और कृतवर्मा के हाथसे धनुषके तोड़ने को न सहनेवाला क्रोधयुक्त अतिरथी सात्यकि उस उत्तम लियेहुये धनुष को चढ़ा कर शीघ्रही कृतवर्मा के सम्मुख गया । २० । वहां जाकर सात्यकि ने अत्यन्त तेजधार दशबाणों से कृतवर्म्मा के ध्वजासमेत सारथी और घोड़ों को मारा । २१ । इसके पीछे बड़े धनुषधारी महारथी बड़े क्रोधयुक्त सात्यकिके मारने के इच्छावान कृतवर्मा ने सुवर्णके समानवाले रथको मृतक घोड़े सारथीवाला देखकर शूलको उठाकर अपनी भुजाके वेगसे फेंका । २३ । युद्धभूमि में माधव को मोहित करता यादव कृतवर्म्मा के फेंकेहुये उस शूलको सात्यकि ने तेजधार बाणों से काटकर चूर्ण करके गिराया इसके पीछे दूसरे भल्ल से उसको कठिन घायल किया ।२४। उस शुभ युद्धमें बड़े अस्त्रज्ञ सात्यकि के हाथसे मृतकघोड़े और सारथीवाले कृतवर्म्मा ने पृथ्वीको प्राप्तकिया ।२५। उस द्वैरथ युद्धमें सात्यकिके हाथ से वीर कृतवर्म्मा के विरथ करने पर सब सेनाओं को बड़ाभय वर्त्तमान हुआ । २६ । और आपका पुत्रभी महाव्याकुल हुआ हे राजा मृत सारथी के मरने और कृतवर्मा के विरथ होनेपर उस शत्रुओं के विजयी को मृतक सारथी और

kritvarma cut his bow with one arrow Satyaki the best of Shinis dropped the broken bow and at once took up another... Not bearing the breakage of his bow by Kritvarma, Satyaki opposed him with the drawn bow. 20. With ten arrows he cut and killed Kritvarma's standard, driver and horses Desirous of slaying brave Satyaki, and seeing his gold n car destitute of horses and driver, Kritvarma hurled at his adversary a spear with great force Seeing the spear coming towards him Satyaki cut it into pieces with his sharp arrow and wounded his adversary with another. With his horses and driver slain by Satyaki, Kritvarma come down on the ground. 25, There was a great consternation among the armies, when Kritvarma was

संदृश्य हतसूतमरिन्दमम् । अभ्यधावत् कृपो राजन् जिघांसुः शिनिपुङ्गवम् ॥ २८ ॥ तमारोप्य रथोपस्थे मिषतां सर्वधन्विनाम् । अपोवाह महाबाहुस्तूर्णमायोधनादितः ॥ २९ ॥ शैनेयाधिष्ठिते राजन् विरथे कृतवर्मणि । दुर्योधनबलं सर्वं पुनरासीत् पराङ्मुखम् ॥ ३० ॥ तत् परे नावबुध्यन्त सैन्ये तु रजसावृते । तावकाः प्रद्रुता राजन् दुर्योधनमृते नृपम् ॥ ३१ ॥ दुर्योधनस्तु संप्रेक्ष्य भग्नं स्वबलमन्तिकात् । जवेनाभ्यपतत् तूर्णं सर्वांश्चैको न्यवारयत् ॥ ३२ ॥ पाण्डूंश्च सर्वान् संक्रुद्धो धृष्टद्युम्नञ्च पार्षतम् । शिखण्डिनं द्रौपदेयान् पाञ्चालानाञ्च ये गणाः ॥ ३३ ॥ केकयान् सोमकांश्चैव पाञ्चालांश्चैव मारिष । असम्भ्रमं दुराधर्षः शितैर्बाणैरवारयत् ॥ ३४ ॥ अतिष्ठदाहवे यत्तात् पुत्रस्तव महाबलः । यथा यज्ञे महानग्निर्मन्त्रपूतः प्रकाशवान् । तथा दुर्यो

घाड़वाला देखकर सात्यकि के मारनेके अभिलाषी कृपाचार्य्य सम्मुख दौड़े । २८ । और सब धनुषधारियों के देखते हुये उस महाबाहु को रथके बैठने के स्थान में बैठाकर शीघ्रही युद्धभूमि से दूरलेगये । २९ । हे राजा सात्यकिके नियतहोने और कृतवर्मा के विरथ होनेपर दुर्योधनकी सब सेना फिर मुखोंको फेरगई । ३० । सेना की धूल से ढकेहुये मानो पक्षियों ने उसको नहीं जाना हे राजा उस समय सिवाय राजा दुर्योधनके और सब आपके शूरवीरभागे । ३१ । फिर दुर्योधनने सम्मुख से अपनी सेना को देखकर शीघ्रता से शीघ्रही सम्मुख आकर अकेलेनेही सबको रोंका । ३२ । और अत्यन्त क्रोधयुक्त ने सब पाण्डव धृष्टद्युम्न द्रौपदी के पुत्र पांचालोंकी सेनाओं के समूह केकय सोमक और सृञ्जियों को तीक्ष्णबाणों से रोका ।३४। आपका पुत्र बड़ा बलवान सावधान और अजेय युद्ध में भ्रान्ती से रहित होकर नियत हुआ राजा दुर्योधन सब ओरसे तपाता हुआ युद्धमें उस प्रकार नियत हुआ जैसे कि यज्ञ में मन्त्रसेपवित्र बड़ा अग्नि होता है । ३५ । और प्रतिपक्षीलोग युद्धमें उसके सम्मुख ऐसे नहीं वर्त्तमान हुये जैसे कि मृत्यु के

deprived of his car by Satyaki Your son too was in great distress. Seeing Kritvarma deprived of car, driver and horses, Kripacharja rushed on to slay Satyaki. He took Kritvarma upon his car in the presence of all the warriors and took him far away from the field of battle, Duryodhan's army again turned face on seeing Satyaki's prowess in depriving Kritvarma of his car. 30. He was covered with the dust raised by the army. All the Kaurav warriors ran away with the exception of Duryodhan Seeing his army routed, Duryodhan alone checked the Pandav army, including Dhrishtadyumn, the sons of Draupadi and the Panchal, Kaikaya, Somak and Srinjaya warriors, with his sharp arrows. Your son, powerful, careful and invincible, stood resolutely there. He stood in his glory like fire poured over by the libations of a sacrifice The enemies could no-

धर्मो राजा सङ्ग्रामे स्वधृताऽभवत् ॥ ३४ ॥ न परे भाग्यपत्र मर्त्या मृत्युमिवाहवे ।
अथान्यं रथमास्थाय हार्दिक्यः समपद्यत ॥ ३६ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यदुर्योधनसंकुलयुद्धे एकविंशोऽध्यायः २१ ॥

सञ्जय उवाच । पुत्रस्तु ते महाराज रथस्थो रथिनांवरः । दुरुत्सहो बभौ युद्धे यथा रुद्रः प्रतापवान् ॥ १ ॥ तस्य बाणसहस्रैस्तु प्रच्छन्ना ह्यभवन्मही । परांश्च सिषिचे बाणैर्धाराभिरिव पर्वतान् ॥ २ ॥ न च सोऽस्ति पुमान् कश्चित् पाण्डवानां महाहवे । हयो गजो रथो वापि योऽस्य बाणैरविक्षतः ॥ ३ ॥ यं यं हि समरे योधं प्रपश्यामि विशाम्पते । स स बाणैश्चितोऽभूद्वै पुत्रेण तव भारत ॥ ४ ॥ यथा सैन्येन रजसा समुद्धूतेन वाहिनी । प्रत्यदृश्यत सञ्छन्ना तथा बाणैर्महात्मनः ॥ ५ ॥ बाणस्य आगे मर्त्यलोकके रहनेवाले नहीं ठहरसकते होते इसके पीछे कृतवर्मा दूसरे रथपर सवार होकर युद्धभूमि में आया ३६ ॥

अध्याय २२ ॥

संजय बोले हे महाराज, रथियों में श्रेष्ठ रथमें सवार आपका पुत्र युद्धमें उत्साहवाला ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि प्रतापवान् रुद्र जी नियत होकर शोभित होते हैं । १ । उसके हजारों बाणोंसे पृथ्वी आच्छादित होगई उसने शत्रुओं को बाणोंसे ऐसे सींचा जैसे कि धाराओं से बादल पहाड़ों को सींचता है । २ । पांडवों के सेनासागर में ऐसा कोई मनुष्य घोड़ा हाथी और रथ नहीं था जो कि उसके बाणों से विदीर्ण न हुआ हो ।३। हे भरतवंशी राजाधृतराष्ट्र हमने जिस जिस शूरवीरको युद्धमें देखा वह वह आपके बेटे के बाणों से छिदाहुआ था । ४ । जिसप्रकार सेनाकी उठीहुई धूलसे सेना ढकीहुई दिखाईपड़ी उसीप्रकार महात्माके

withstand him as mortals cannot oppose Death Kritvarma mounted another car and came into the field of battle " 36

CHAPTER XXII

Sanjaya said " Your son the best of car warriors, mounted on his car, doing prowess in battle, looked glorious like Rudra The earth was covered with thousands of his arrows which he showered like rain over the enemies No horse, elephant or car of the Pandavas remained untouched by his arrows All the warriors, that we saw there, were wounded by the arrows of your son. The whole army

तामपश्याम पृथिवीं पृथिवीपते । दुर्योधनेन प्रकृतां क्षिप्रहस्तेन धन्विना ॥ ६ ॥ तेषु
योधसहस्रेषु तावकेषु परेषु च । एको दुर्योधनस्त्वासीत् स पुमानिति मे मतिः ॥ ७ ॥
तत्राद्भुतमपश्याम तव पुत्रस्य विक्रमम् । यदेनं सहिताः पार्था नाभ्यवर्तन्त भारत
॥ ८ ॥ युधिष्ठिरं शतेनाजौ विव्याध भरतर्षभ । भीमसेनञ्च सप्तत्या सहदेवञ्च
सप्तभिः ॥ ९ ॥ नकुलञ्च चतुःषष्ट्या धृष्टद्युम्नञ्च पञ्चभिः । सप्तभिर्द्रौपदेयांश्च
त्रिभिर्विव्याध सात्यकिम् । धनुश्चिच्छेद भल्लेन सहदेवस्य मारिष ॥ १० ॥ तदपास्य
धनुश्छिन्नं माद्रीपुत्रः प्रतापवान् । अभ्यधावत राजानं प्रगृह्यान्यन्महद्धनुः । ततो
दुर्योधनं संख्ये विव्याध दशभिः शरैः ॥ ११ ॥ नकुलस्तु ततो वीरो राजानं नवभिः
शरैः । घोररूपैर्महेष्वासो विव्याध च ननाद च ॥ १२ ॥ सात्यकिश्चापि राजानं शरेणानतपर्वणा । द्रौपदेयास्त्रिसप्तत्या धर्मराजश्च पञ्चभिः । अशीत्या भीमसेनश्च शरै राजा

दुर्योधनके बाणोंसे भी ढकीहुईथी । ५ । हे राजा हस्तलाघवी धनुषधारी दुर्योधन के हाथसे बाणरूप कीहुई पृथ्वी को हमने देखा । ६ । आपके और प्रतिपक्षियोंके हजारों शूरवीरोंके मध्य में वह अकेला दुर्योधनही पुरुषसिंह हुआ यह मेरामत है । ७ । हे भरतवंशी वहां हमने आपके पुत्र के इस अपूर्व पराक्रमको देखा जो सब मिलकरभी पांडव लोग उसके सम्मुख वर्त्तमान नहीं हुये । ८ । हे भरतर्षभ उसने युद्धभूमि में युधिष्ठिरको सौबाणसे भीमसेनको सत्तरबाणसे सहदेवको सातबाण से ।९। नकुलको चौंसठ बाणसे धृष्टद्युम्नको पांचबाणसे द्रौपदीके पुत्रोंको सातसे और सात्यकि को तीनबाण से घायल किया हे श्रेष्ठ उसने भल्लसे सहदेवके धनुष को काटा । १० । तब प्रतापवान माद्रीका पुत्र उस टूटे धनुषको डालकर दूसरे धनुष को लेकर राजाके सम्मुख दौड़ा और दशबाणों से दुर्योधन को घायल किया । ११ । इसके पीछे वीर नकुल घोररूप बड़े नौबाणों से राजाको घायल करके बड़ी ध्वनि से गर्जा । १२ । सात्यकिने भी टेढ़े पर्ववाले एकबाणसे द्रौपदीके पुत्रों तिहत्तर बाणों से धर्म राजने पांच बाणसे और भीमसेनने अस्सी बाणों से राजा

was covered by Duryodhan's arrows as with the storm of dust 5. We saw the earth all arrows with the dexterity of Duryodhan. Among your warriors and those of the enemies, Duryodhan was the only lion-hearted man in my opinion We saw the wonderful prowess of Duryodhan, for all the Pandavas together could not withstand him. He wounded Yudhishthir with a hundred arrows, Bhim with seventy, Sahadev with seven, Nakul with sixty four Dhrishtadyumn with five, the sons of Draupadi with seven and Satyaki with three. He cut Sahadeva's bow with a dart 10. The glorious son of Madri laid aside the broken bow and taking up another, rushed against the king. He wounded the king with ten arrows *Brave* Nakul wounded him with nine sharp arrows and roared a loud roar

समार्दयत् ॥ १३ ॥ समन्तात् कीर्यमाणस्तु बाणैर्धन्विभिः । न चचाल महाराज सर्वसैन्यस्य पश्यतः ॥ १४ ॥ लाघवं सौष्ठवञ्चापि वीर्यञ्चैव महात्मनः । अति सर्वाणि भूतानि ददृशुः सर्वमानवाः ॥ १५ ॥ धार्तराष्ट्रा हि राजेन्द्र यात्वा तु स्वल्पमन्तरम् । अपश्यमाना राजानं पर्यवर्तन्त दंशिताः ॥ १६ ॥ तेषामापततां घोरस्तुमुलः समजायत । क्षुब्धस्य हि समुद्रस्य प्रावृट्काले यथा स्वनः ॥ १७ ॥ समासाद्य रणे ते तु राजानमपराजितम् । प्रत्युद्ययुर्महेष्वासाः पाण्डवानाततायिनः ॥ १८ ॥ भीमसेनं रणे क्रुद्धं द्रोणपुत्रो न्यवारयत् ॥ १९ ततो बाणैर्महाराज प्रमुक्तैः सर्वतो दिशम् । नाज्ञा-यन्त रणे वीरा न दिशः प्रदिशस्तथा ॥ २० ॥ तावुभौ क्रूरकर्माणावुभौ भारत दुःसहौ । घोररूपमयुध्येतां कृतप्रतिकृतैषिणौ । त्रासयन्तौ जगत् सर्वं ज्याक्षेपकठिनत्वचौ ॥ २१ ॥ शकुनिस्तु रणे वीरो युधिष्ठिरमताडयत् । तस्याश्वांश्चतुरो हत्वा सुबलस्य सुतो बली ।

को पीडामान किया । १३ । चारोंओर महात्माओं के बाणोंकी वर्षा से ढकाहुआ दुर्योधन सब सेनाके देखतेहुये कम्पायमान नहीं हुआ । १४ । सब मनुष्योंने महात्मा की हस्तलाघवता सौष्ठवता और बलको भी सब जीवधारियों से अधिक देखा । १५ । हे राजेन्द्र थोड़े अन्तरको न देखनेवाले कवचधारी आपके पुत्र राजा के चारोंओर आकर वर्त्तमानहुये । १६ । उन चढ़ाई करनेवालेके ऐसे घोर शब्द उत्पन्न हुये । जैसे कि वर्षाऋतु में वेगमें आनेवाले समुद्रके शब्द होते हैं । १७ । फिर वह बड़े धनुषधारी युद्धमें अजेय राजाको पाकर शस्त्रधारी पांडवोंके सन्मुख गये । १८ । अश्वत्थामाने क्रोधयुक्त भीमसेनको युद्धमें रोका । १९ । हे महाराज इसके पीछे सब दिशाओं से छोड़ेहुये बाणों के कारण से वीरोंने दिशा विदिशाओं को नहीं जाना । २० । उन दोनों निर्दयकर्मी कठिनतासे सहने के योग्य अस्त्रों के काटनेवालोंने घोररूप युद्ध किया जो कि प्रत्यञ्चाके आघात से कठिन चर्म रखनेवाले और सब दिशाओंको भयसे पूर्ण करनेवाले थे । २१ । इसके अनन्तर, वीरशकुनी ने युद्धमें युधिष्ठिरको घायलकिया युद्धमें सब सेनाओंको कम्पायमान करता हुआ

Satyaki too, wounded him, with one arrow, the sons of Droupadi wounded him with three each and Yudhishthir and Bhim did the same with five and eighty arrows respectively. Covered with arrows from all sides, Duryodhan did not shake in the midst of warriors. His dexterity was above all. 15. The warriors surrounded him on all sides. The sounds of their encounter were like those of the Ocean in a storm. The great archers with the invincible prince opposed the Pandavas. Ashwathama checked Bhim in battle. The warriors could see nothing but arrows in all directions. 20. The two cruel warriors fought hard and filled the directions with the sounds of their bowstrings and caused fear. Then brave Shakuni, wounded Yudhishthir and having slain the four horses, shook

महिद्रवकार बलवान् सर्वसैन्यानि कम्पयन् ॥२२॥ एतस्मिन्नन्तरे वीर राजानमपराजितम्
अपोवाह रथेनाजौ सहदेव प्रतापवान् ॥ २३ ॥ अथान्य रथमास्थाय
धर्मराजो युधिष्ठिर । शकुनिं नवभिर्विद्ध्वा पुनर्विव्याध पञ्चभिः । ननाद च महानादं
प्रवर सर्वधन्विनाम् । २४ तद्युद्धमभवच्चित्रं घोररूपं च मारिष प्रेक्षकप्रीतिजननं सिद्ध
चारणसेवितम् ।२५ उलूकस्तु महेष्वासं नकुलं युद्धदुर्मदम् । अभ्यद्रवदमेयात्मा शरवर्षैः
समन्ततः ॥२६॥ तथैव नकुलः शूर सौबलस्य सुतं रणे । शरवर्षेण महता समन्तात् पर्य
वारयत् ॥ २७ ॥ तौ तत्र समरे वीरौ कुलपुत्रौ महारथौ । योधयन्तावपश्येतां परस्परे
कृतागसौ ॥ २८ ॥ तथैव कृतवर्मा तु शैनेयं शत्रुतापनम् । योधयन् शुशुभे राजन् बलं
शक्रं इवाहवे । २९ ॥ दुर्योधनो धनुश्छित्त्वा धृष्टद्युम्नस्य संयुगे । अथैनं छिन्नधन्वानं
विव्याध निशितैः शरैः । ३० ॥ धृष्टद्युम्नोऽपि समरे प्रगृह्य परमायुधम् । राजानं योध
यामास पश्यतां सर्वधन्विनाम् ॥ ३१ ॥ तयोर्युद्धं महच्चासीत् संग्रामे भरतर्षभ । प्रभि
न्नयोर्यथा सक्तं मत्तयोर्वरहस्तिनो ॥ ३२ ॥ गौतमस्तु रणे क्रुद्धो द्रौपदेयान् महाब

सुबलके पुत्रने उसके चारों घोड़ोंको मारकर कठोर शब्दकिया २२ । इसी
अन्तरमें प्रतापवान् सहदेव युद्धमें अजेयवीर राजाको रथके द्वारा दूरलेगया । २३ ।
इसके पीछे धर्मराज युधिष्ठिरने दूसरे रथपर सवार होकर नौबाणों से शकुनीको
घायल करके फिर पांचबाणसे घायल किया और सब धनुष धारियों में अत्यंत
श्रेष्ठ बड़े शब्दसे गर्जा । २४ । हे श्रेष्ठ वह युद्ध अपूर्व भयकारी रूप देखनेवालों
की प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला और सिद्धचारणों से सेवित हुआ । २५ । फिर बड़ा
साहसी उलूक चारोंओरसे बाणोंकी वृष्टियों समेत उस बड़े धनुषधारी युद्धदुर्मद
नकुलके सम्मुखगया । २६ । उसीप्रकार शूरवीर नकुलने युद्धमें शकुनीके पुत्रको
बाणोंकी वर्षा के द्वारा चारोंओरसे रोका । २७ । उसयुद्ध में वह दोनोंवीर कुलीन
महारथी परस्पर अपराध करनेवाले लड़तेहुये दिखाई पड़े । २८ । उसीप्रकार शत्रुओं
को तपानेवाला सात्यकि कृतवर्मासे लड़ताहुआ ऐसा शोभायमान हुआ हे राजा
जैसे कि युद्ध में बलिसे लड़ता हुआ इन्द्र शोभित हुआ था । २९ । इसके पीछे
दुर्योधनने युद्ध में धृष्टद्युम्न के धनुषको काटकर इस टूटे धनुषवाले को तीक्ष्ण
धारबाणोंसे घायल किया । ३० तब धृष्टद्युम्न भी युद्धमें उत्तम शस्त्रको लेकर सब
धनुषधारियों के देखते राजा से युद्ध करनेलगा । ३१ । हे भरतर्षभ इसकेपीछे युद्ध
भूमि में ऐसा बड़ाभारी युद्धहुआ जैसे मद झाड़नेवाले दो मतवाले हाथियोंका
युद्ध होताहै । ३२ । इसके पीछे युद्धमें क्रोधयुक्त वीर कृपाचार्यने बड़े बलवान

the armies with his harsh roars In the meantime, glorious Sahadev
took Yudhishthir on his car and removed him far away from the
scene of action Then Yudhishthir mounted another car and wound
ed Shakuni with nine and five arrows respectively, and roared a
loud roar The battle was dreadful and pleasant to look at and was
witnessed by Sidhas and Charans Then brave Uluk, showering
arrows, faced valiant Nakul Nakul checked the son of Shakuni
with the shower of his arrows ,27 The two noble warriors were
seen fighting with great skill Satyaki, fighting with Kritvarma,

श्चान्। विव्याध बहुभिः शूरैः शरैः सन्नतपर्वभिः ॥ ३३ ॥ तस्य तैरभवद्युद्धमिन्द्रियै-
रिव देहिन । घोररूपमसंवार्यं निर्मर्यादमतीव च ॥ ३४ ॥ ते च तं पीडयामासुरि-
न्द्रियाणीव बालिशम् । स च तान् प्रतिसंरब्धः प्रत्ययोधयदाहवे ॥ ३५ ॥ एवंचित्रम-
भूद्युद्धं तस्य तैः सह भारत । उत्थायोत्थाय च यथा देहिनामिन्द्रियैर्विभो ॥ ३६ ॥ नरा-
श्चैव नरैः सार्धं दन्तिनो दन्तिभिस्तथा । हया हयैः समासक्ता रथिनो रथिभिस्तथा ।
संकुलञ्चाभवद्भूयो घोररूपं विशाम्पते ॥ ३८ ॥ इदञ्चित्रमिदं घोरमिदं रौद्रमिति
प्रभो । युद्धान्यासन्महाराज घोराणि च बहूनि च ॥ ३९ ॥ ते समासाद्य समरे परस्पर-
मरिन्दमा । विव्यधुश्चैव जघ्नुश्च समासाद्य महाहवे ॥ ४० ॥ तेषां शस्त्रसमुद्भूतं रज-
स्तीव्रमदृश्यत । वातेनोद्धूतं राजन् धावद्भिश्चाश्वसादिभिः ॥ ४१ ॥ रथनेमिसमुद्भूत

द्रौपदीके पुत्रोंको गुप्त ग्रन्थीवाले बहुत बाणोंसे घायल किया ।३३। इनका उनके साथ ऐसा युद्ध हुआ जैसे कि शरीरवालेका युद्ध इन्द्रियोंके साथ होता है घोररूप बन्धुओंका अयोग्य और बेमर्यादा युद्ध वर्तमान हुआ । ३४ । परन्तु उनको ऐसा पीड्यमान नहीं किया जैसे कि इन्द्रियां बालकको पीड़ित नहीं करतीं क्रोधयुक्त होकर उन्होंने युद्ध में उनके साथ युद्ध किया । ३५ । हे भरतवंशी इसप्रकार उनका उन्हों के साथ ऐसा अपूर्वयुद्ध हुआ जैसे कि शरीरवालेका युद्ध उठउठकर इन्द्रियों से होता है । ३६ । मनुष्य मनुष्योंके साथ हाथी हाथियोंके साथ घोड़े घोड़ोंके साथ और रथी रथियोंके साथ भिड़गये इस रीतिसे वह युद्ध महाघोररूप और संकुल हुआ ।३८। हे प्रभु महाराज यह अपूर्व है घोर है रुद्र है इसप्रकारके बहुत घोरयुद्ध हुये ।३९। उन शत्रुओं के विजय करनेवालों ने युद्धमें परस्पर एकएक को पाकर घायल किया और मारा । ४० । हे राजा तब उन्हों के शस्त्रों से प्रकट होनेवाली बड़ी धूल दिखाई पड़ी और बहुतसे अश्वसवारोंकी हवासे ऊंची उठी । ४१ । रथकी नेमियोंसे और

looked glorious like Indra fighting with Bali. Then Duryodhan cut Dhrishtadyumna's bow and wounded him with sharp arrows 30 Dhrishtadyumn too, fought hard with the king There was a severe struggle between them like that of two mad elephants Kripacharya wounded the sons of Draupadi with sharp arrows. Their battle was like that between body and limbs The fighting was without rule, but he could not distress them as the organs of senses cannot overpower a child They fought hard with him 35 Their battle was wonderful like that between body and organs . Men met with men, elephants with elephants, horses with horses and cars with cars. The battle then became dreadful and general Those destroyers of foes wounded and slew one another 40. There was a great storm of dust with movements of horsmen, cars and elephants, hiding the Sun The Sun's orb covered with that dust, became dark and the warriors

निघ्नतसैन्यानि द्विपानाम् । रजः सन्ध्याभ्रकपिलं दिवाकरपथं ययौ ॥ ४२ ॥ रजसा तेन संपृक्ते भास्करे निष्प्रभीकृते । समाच्छादितमभवद्भूमिस्ते च शूरा महारथाः ॥ ४३ ॥ मुहूर्तादिव संवृत्तं नीरजस्कं समन्ततः । वीरशोणितसिक्तायां भूमौ भरतसत्तम ॥ ४४ ॥ उपाशाम्यत्ततस्तीव्रं तद्रजो घोरदर्शनम् । ततोऽपश्यं महाराज द्वन्द्वयुद्धानि भारत ॥ ४५ ॥ यथा प्राग्यं यथाश्रेष्ठं मध्याह्ने वै सुदारुणम् । वर्मणां तत्र राजेन्द्र व्यदृश्यन्तोज्ज्वलाः प्रभाः ॥ ४६ ॥ शब्दः सुतुमुलः संख्ये शराणां पततामभूत् । महावेणुवनस्येव दह्यमानस्य सर्वतः ॥ ४७ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि संकुलयुद्धे द्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

सञ्जय उवाच । वर्तमाने तथा युद्धे घोररूपे भयानके । अभज्यत बलं तत्र तव पुत्रस्य पाण्डवैः ॥ १ ॥ तां तु यत्नेन महता संनिवार्य महारथान् । पुत्रास्ते योधमा

हाथियों की श्वासाओं से उडनेवाली सायंकालकी सी अरुणतासे युक्त धूर्य के मार्गमें गई । ४२ । उस धूलसे ढकाहुआ सूर्य प्रकाश से रहितहुआ तब पृथ्वी और वह महारथी शूर ढकगये ।४३। हे भरतर्षभ फिर एक मुहूर्तमेंही चारोंओर से सब स्वच्छ होगया क्योंकि वीरोंके रुधिरसे आर्द्र पृथ्वीपर ।४४। वह घोरदर्शन कठिन धूल शांतहोगई हे भरतवंशी महाराज फिर द्वन्द्वनाम युद्धोंको देखा ।४५। मध्याह्न के समय बल पराक्रमके समान बड़ा भयकारी घोर युद्धहुआ हे राजेन्द्र तब वहां कवचोंके स्वच्छप्रकाश दिखाई पड़े ।४६। और युद्धमें गिरनेवाले बाणोंके ऐसेकठोर शब्दहुये जैसे कि पर्वतपर जलतेहुये बांसोंके बड़े२ वनोंके शब्दहोते हैं ॥ ४७ ॥

अध्याय २३ ।

संजय बोले कि इसप्रकार वहां घोररूप भयकारी आपके बेटोंकायुद्ध पांडवों के साथ वर्तमान होनेपर सेना छिन्न भिन्नहुई । १ । फिर आपके पुत्रने बड़े उपायों

became invisible. Then the dust storm cleared and subsided with the blood shed and duels were fought. There was a severe struggle at midday and the armours shone bright There were hard sounds of the fall of arrows like those of the forest of bamboos burning on a hill. ' 47

CHAPTER XXIII

Sanjaya said " When your sons were fighting a dreadful battle

प्रासुः पाण्डवानामनीकिनीम् ॥ २ ॥ निवृत्ताः सह सायोधास्तव पुत्रप्रियैषिणः । संनि-
वृत्तेषु तेष्वेव युद्धमासीत् सुदारुणम् ॥ ३ ॥ तावकानां परेषां च देवासुररणोपमम् ।
परेषां तव सैन्ये वा नासीत् कश्चित् पराङ्मुखः ॥ ४ ॥ अनुमानेन युध्यन्ते संज्ञाभिश्च
परस्परम् । तेषां क्षयो महानासीत् युध्यतामितरेतरम् ॥ ५ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा
क्रोधेन महता युतः । जिगीषमाणः संग्रामे धार्तराष्ट्रान् सराजकान् ॥ ६ ॥ त्रिभिः
शारद्वतं विद्ध्वा रुक्मपुङ्खैः शिलाशितैः । चतुर्भिर्निजघानाश्वान् बाणैः कृतवर्मणः ॥ ७ ॥
अश्वत्थामा च हार्दिक्यमपोवाह यशस्विनम् । अथ शारद्वतोऽष्टाभिः प्रत्यविध्यद्युधि-
ष्ठिरम् ॥ ८ ॥ ततो दुर्योधनो राजा रथान् सप्त शतान् रणे । प्रेषयद्यत्र राजा वै धर्मपुत्रो
युधिष्ठिरः ॥ ९ ॥ ते रथा रथिभिर्युक्ता मनोमारुतरंहसः । अभ्यद्रवन्त संग्रामे कौन्ते-
यस्य रथं प्रति ॥ १० ॥ ते समन्तात् महाराज परिवार्य युधिष्ठिरम् । अदृश्यं सायकै-

से उन महारथियों को रोककर पांडवोंकी सेनासे युद्धकिया । २ । आपके पुत्रको विजय चाहनेवाले शूरवीर अकस्मात् लौटे और उन्हीं के लौटनेपर । ३ । आपके शूरवीर और दूसरोंके शूरवीरों का युद्ध देवासुर संग्रामके समान बड़ा भयानक हुआ दूसरो में और आपकी सेनामें किसीने भी मुखको नहीं मोड़ा । ४ । ध्यान और नामोंके द्वारा परस्पर लड़तेथे तब उन परस्पर युद्ध करनेवाले वीरोंका बड़ा विनाश हुआ । ५ । इसके पीछे बड़े क्रोधभरे युद्धमें राजाओं समेत धृतराष्ट्रके पुत्रों के विजय करने के अभिलाषी राजायुधिष्ठिरने । ६ । सुनहरी पुंख तीक्ष्णधार तीन बाणोंसे कृपाचार्यको घायलकरके चार नाराचोंसे कृतवर्माके घोड़ोंकोमारा । ७ । अश्वत्थामाभी उस यशमान कृतवर्माको युद्धभूमि से दूरलेगये इसकेपीछे कृपाचार्यने आठबाणों से युधिष्ठिरको घायल किया । ८ । तब राजादुर्योधनने सातसौ रथियों को युद्ध में उस स्थानपर भेजा जहांपर कि वह धर्म्मपुत्र राजायुधिष्ठिर था । ९ । शीघ्र वायुके समान शीघ्रगामी वह रथ रथियों समेत युद्धमें युधिष्ठिर रथकी ओरगये । १० । हे महाराज उन सब रथियोंने चारोंओर से युधिष्ठिरको

with the Pandavas, their army was routed. Your son again rallied the army with great exertion and fought with the Pandavas. Your son's well-wishers came back all of a sudden and then the battle was dreadful like that between the gods and asuras. The warriors on both sides fought unflinchingly. They fought by guess, calling out their names, and there was a great destruction of warriors on both sides. Yudhishthir desirous of gaining victory over your sons, much enraged, wounded Kripacharya and slew Kritvarma's horses with four darts. Ashwathama took Kritvarma far away from the field of battle. Then Kripacharya wounded Yudhishthir with eight arrows. Duryodhan sent seven hundred car-warriors to attack Yudhishthir and they rushed against him with the speed of the wind. 10. They

मेघा इव दिवाकरम् ॥ ११ ॥ ते दृष्ट्वा धर्मराजानं कौरवैरावृतं नृप । नामृष्यन्त
सुसंरब्धाः शिखण्डिप्रमुखा रथाः ॥ १२ ॥ रथैरश्ववरैर्युक्तैः किङ्किणीजालसंवृतैः ।
आजग्मुरभिरक्षन्तः कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् ॥ १३ ॥ ततः प्रववृते रौद्रः संग्रामः शोणितो-
दकः । पाण्डवानां कुरूणाञ्च यमराष्ट्रविवर्द्धनः ॥ १४ ॥ रथान् सप्त शतान् हत्वा कुरू-
णामाततायिनाम् । पाण्डवाः सह पाञ्चालैः पुनरेवाभ्यवारयन् ॥ १५ ॥ तत्र युद्धं मह-
द्धासीत्तव पुत्रस्य पाण्डवैः । न च नस्तादृशं दृष्टं नैव चापि परिश्रुतम् ॥ १६ ॥ वर्त-
माने तथा युद्धे निर्मर्यादे समन्ततः । वध्यमानेषु योधेषु तावकेष्वितरेषु च ॥ १७ ॥
विनदत्सु च योधेषु शङ्खवर्यैश्च पूरितैः । उत्कृष्टैः सिंहनादैश्च गर्जितेन च धन्विनाम्
॥ १८ ॥ अतिप्रवृद्धे युद्धे च छिद्यमानेषु मर्मसु । धावमानेषु योधेषु जयगृद्धिषु मारिष
॥ १९ ॥ संहारे सर्वतो जाते पृथिव्यां शोकसम्भवे । बह्वीनामुत्तमस्त्रीणां सीमन्तो-
द्धरणे तदा ॥ २० ॥ निर्मर्यादे तदा युद्धे वर्त्तमाने सुदारुणे । प्रादुरासन् विनाशाय

घेरकर सायकोंसे ऐसा गुप्तकरदिया जैसे कि सूर्यको बादल गुप्तकर देतेहैं। ११ उन अत्यन्त क्रोधयुक्त शिखण्डी आदिक रथियों ने कौरवों से इस प्रकार घिरे हुये युधिष्ठिरको देखकर सहन नहीं किया । १२ । उत्तम घोड़ोंसे युक्त क्षुद्रघंटिकाओं से अलंकृत रथों की सवारीसे ओपहुंचे और कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर को चारोंओर से रक्षित करनेवाले हुये । १३ । इसके पीछे पांडव और कौरवोंका वह युद्धजारी हुआ जोकि रुद्ररूप रुधिररूपी जलसे युक्त यमराजके देशको बढ़ानेवालाथा । १४ । पांचालोंसमेत पांडवों ने सातसौ रथियोंको मारकर कौरवों के युद्धकर्त्ताओं को रोका । १५ । वहांभी और आपके पुत्रके ऐसा बड़ा युद्धहुआ जैसा न देखाथा न सुनाथा । १६ । इसप्रकार चारोंओरोंको वेमर्याद युद्धके जारीहोने पर और आपके और दूसरों के शूरवीरों के मरनेपर । १७ । और उत्तम शंखों के बजने ऊंचे सिंहनाद होने धनुषधारियोंकी गर्जनाके साथ शूरवीरोंके गर्जनेपर । १८ । बड़े युद्धोंमें मर्मस्थलों के घायल होने और विजयाभिलाषी शूरवीरों के दौड़नेपर । १९ । सबओर से पृथ्वीपर शोकके उत्पन्न करनेवाले नाशके उत्पन्न होने और बहुत उत्तम कुलाङ्गनाओं के मांग मिटाने । २० । बड़े भयानक और अमर्याद युद्धके वर्तमान

surrounded Yudhishthir from all sides and hid him with arrows as the clouds hide the sun. Shikhandi and others could not bear to see Yudhishthir thus surrounded by the Kauravas and came to his help with their cars and protected him. The Pandavas and Kauravas then fought a dreadful battle that augmented the population of Yam's abode. The Panchals and Pandavas slew the seven hundred car-warriors and checked the Kauravas. 16. A battle like that of your sons and the Pandavas was unseen and unheard of before. When the battle thus raged without any rule and the warriors on both sides were being slain, conchs were blown the warriors roared

तदोत्पाता· सुदारुणाः ॥ २१ ॥ चचाल शब्दं कुर्वाणा सपर्वतवनामही । सदण्डाः सोल्मुका राजन् कीर्यमाणाः समन्ततः । उल्का पेतुर्दिवो भूमावाहत्य रविमण्डलम् । २२ ॥ विष्वग्वाताः प्रादुरासन् नीचैः शर्करवर्षिण । अश्रूणि मुमुचुर्नागा वेपथुं चास्पृशद्भृशम् ॥ २३ ॥ एतान् घोराननादृत्य समुत्पातान् सुदारुणान् । पुनर्युद्धाय सम्मन्त्र्य क्षत्रियास्तस्थुरव्यथाः । रमणीये कुरुक्षेत्रे पुण्ये स्वर्गं यियासवः । २४ ॥ ततो गान्धारराजस्य पुत्रः शकुनिरब्रवीत् । युध्यध्वमग्रतो यावत् पृष्ठतो हन्मि पाण्डवान् ॥ २५ ॥ ततो नः सम्प्रयातानां मद्रयोधास्तरस्विनः । हृष्टाः किलिकिलाशब्दमकुर्वन्तापरे तथा ॥ २६ ॥ अस्मांस्तु पुनरासाद्य लब्धलक्ष्या दुरासदाः । शरासनानि धुन्वन्तः शरवर्षैरवाकिरन् ॥ २७ ॥ ततो हतं परै राजन मद्रराजबलं तदा ॥ दुर्योधनबलं

होनेपर नाशके घोतन करनेवाले महाभयानक उत्पात प्रकटहुये । २१ । पर्वत और वनोंके समेत शब्द करनेवाली पृथ्वी कम्पायमान हुई और हे राजा दण्ड ज्वालाओं समेत चारोंओरको फैलीहुई उल्का । २२ । सूर्यमण्डलको घायल करके स्वर्गसे पृथ्वीपर गिरी ।२३। और कङ्कुर पत्थर बरसानेवाली वायुप्रकटहुई हाथियों ने आंसूडाले और कठिन कम्पन उत्पन्न हुआ । २३ । इन बड़े भयानक और घोर उत्पातों को अनादर करके पीड़ासे रहित स्वर्गके अभिलाषी सभी लोग युद्ध करनेका सलाहकरके पुण्य कुरुक्षेत्रमें नियतहुये । २४ । इसके पीछे गांधार देश के राजाका पुत्र शकुनी यह बोला कि तुम तबतक आगेसे युद्धकरो जबतक कि मैं पीछे की ओरसे पाण्डवों को मारूं । २५ । इसके पीछे चढ़ाई करनेवाले हम लोगोंके मध्य में वेगवान प्रसन्नचित्त मद्रदेशी और अन्य शूरवीरों ने किलकिला शब्द किया । २६ । लक्ष्यके प्राप्त करनेवाले कठिनता से सम्मुखताके योग्य और धनुषोंको चलायमान करनेवाले उन पाण्डवों ने हमको फिर पाकर बाणोंकी वर्षा

and wounded one another in the vital parts. The warriors ran on for victory and bad omens causing fear and grief, making many noble women to become widows, apppeared during that dreadful battle. 21. The earth, with her forests and mountains, shook and meteors fell down from the Sun. A wind storm blew, bringing pieces of stone with it. Elephants shed tears and there was a severe earthquake. Disregarding these dreadful calamities, the warriors, desirous of entering paradise, stood resolutely to fight. Then Shakuni, the son of the king of Gandhar, said, " You many ke p the Pandavas engaged and I shall attack them from rear.25. Then the warriors of Madra among us made a tremendous noise. The Pandav archers again hit us hard with their arrows and seeing the Madra

हृष्ट्वा पुनरासीत् पराङ्मुखम् ॥ २८ ॥ ॥ गान्धारराजस्तु पुनर्वाक्यमाह ततो बली निव र्त्तध्वमधर्मज्ञा युध्यध्वं किं सृतेन वः ॥ २९ ॥ अनीकं दशसाहस्रमश्वानां भरतर्षभ । आसीद्गान्धारराजस्य विमलप्रासयोधिनाम् ॥ ३० ॥ बलेन तेन विक्रम्य वर्त्तमाने जन क्षये । पृष्ठतः पाण्डवानीकमभ्यघ्नन्निशितैः शरैः ॥ ३१ ॥ तदभ्रमिव वातेन क्षिप्यमाणं समन्ततः । अभज्यत महाराज पाण्डूनां सुमहद्बलम् ॥ ३२ ॥ ततो युधिष्ठिरः प्रेक्ष्य भग्नं स्वबलमन्तिकात् । अभ्यचोदयदव्यग्रः सहदेवं महाबलम् ॥ ३३ ॥ असौ सुबल पुत्रो नोजघनं पीड्य दंशितः । सेनां निसूदयत्येष पश्य पाण्डव दुर्मतिम् ॥ ३४ ॥ गच्छ त्वं द्रौपदेयैश्च शकुनिं सौबलं जहि । रथानीकमहं धक्ष्ये पाञ्चालसहितोऽनघ ॥ ३५ ॥ गच्छन्तु कुञ्जराः सर्वे वाजिनश्च सह त्वया । पादाताश्च त्रिसाहस्राः शकुनिं तैर्वृतो जहि ॥ ३६ ॥ ततो गजाः सप्तशताश्चापपाणिभिरावृताः । पञ्च चाश्वसहस्राणि

से आच्छादित किया है राजा फिर राजामद्री सेना शत्रुओं के हाथ में मारी गई उसको देखकर दुर्योधन की सेना फिर मुखफेर चली । २८ । तब गान्धार के राजा पराक्रमी शकुनी ने यह वचनकहा कि हे धर्म्म के न जाननेवाले वीर लोगो लौटो युद्धकरो तुमको भागने से क्या प्रयोजन है । २९ । हे भरतर्षभ राजा गान्धार के शूरवीर जोकि बड़े २ प्रासोंसे कडनेवाले थे उन्हों की घोड़ों वाली दशहजार सेनाथी । ३० । मनुष्योंके नाश वर्त्तमान होनेपर उस सेनासमेत पराक्रम करके तेजधार वाणों से पाण्डवी सेनाको पीछकी ओरसे मारा । ३१ । हे महाराज जैसे कि वायु से हटायाहुआ बादल चारोंओरसे फटजाता है उसीप्रकार पाण्डवोंकी वह बड़ी सेना छिन्नभिन्नहुई । ३२ । उसके पीछे सावधान युधिष्ठिरने अपनी सेनाको सम्मुखसे छिन्न भिन्न देखकर बड़े पराक्रमी सहदेवको प्रेरणाकरी । ३३ । कि यह सुबलका पुत्र हमारी जघन सेनाको पीड़ामान करके नियतहै और सेनाको माररहा है हेपाण्डव तुम इस दुर्बुद्धी को देखो । ३४ । तुम द्रौपदीके पुत्रों समेत जाओ और इस शकुनीको मारो हे निष्पाप मैं धृष्टद्युम्नको साथ लेकर रथकी सेनाका नाशकरूंगा । ३५ । सब हाथी घोड़े और तीन हजार पदाती तेरे साथजायँ उन सब सेनाओं से युक्त होकर तुम शकुनीको मारो।।३६।। इसके पीछे

warriors again slaughtered, Duryodhan's army turned back. "Then Shakuni the prince of Gandhar said, "Come back warriors, fight again. What will you gain by flight? The army of Gandhar, armed with prases, ten thousand strong, attacked the army of the Pandavas from behind. 31 The Pandav army then dispersed like a cloud by the storm of wind. Then wise Yudhishthir, seeing his army disperse, said to Sahadev, "Shakuni is destroying our army, look to him, Pandav. Take the sons of Draupadi with you and slay Shakuni. I with Dhrishtadyumn shall destroy the car warriors. Let all the horsemen elephants and three thousand foot go with

सहदेवश्च वीर्यवान् ॥ ३७ ॥ पादाताश्च त्रिसाहस्रा द्रौपदेयाश्च सर्वशः । रणे ह्यभ्य
द्रवन्त तु शकुनिं युद्धदुर्मदम् ॥ ३८ ॥ ततस्तु सौबलो राजन्नभ्यतिक्रम्य पाण्डवान् ।
जघान पृष्ठतः सेनां जयगृध्नुः प्रतापवान् ॥ ३९ ॥ अश्वारोहास्तु संरब्धाः पाण्डवानां
तरस्विनाम् । प्राविशन् सौबलानीकमभ्यतिक्रम्य तान् रथान् ॥ ४० ॥ ते तत्र सादिनः
शूराः सौबलस्य महद्बलम् । गजमध्ये व तिष्ठन्तः शरवर्षैरवाकिरन् ॥ ४१ ॥ तदुद्यत
गदाप्रासमहापुरुषसेवितम् । प्रावर्तत महद्युद्धं राजन् दुर्मन्त्रिते तव । ४२ ॥ उपारमन्त
ज्याशब्दाः प्रेक्षका रथिनोऽभवन् । न हि स्वेषां परेषां वा विशेषः प्रत्यदृश्यत ॥ ४३ ॥
शूरबाहुविसृष्टानां शक्तानां भरतर्षभ । ज्योतिषामिव सम्पातमपश्यन् कुरुपाण्डवाः
॥ ४४ ॥ ऋष्टिभिर्विमलाभिश्च तत्र तत्र विशाम्पते । सम्पतन्तीभिराकाशमावृतं बह्व
शोभत ॥ ४५ ॥ प्रासानां पततां राजन् रूपमासीत् समन्ततः । शलभानामिवाकाशे

धनुषधारियों से युक्त सातसौ हाथी और पांच हजार घोड़े पराक्रमी सहदेव ।३७।
तीन हजार पदाती और द्रौपदी के पुत्र यह सब मिल २ उस युद्धदुर्मद शकुनी
के सम्मुख गये । ३८ । हे राजा इसके अनन्तर शकुनी को उल्लंघन करके
विजयाभिलाषी प्रतापवान् सहदेव ने पीछे की ओरसे मारा । ३९ । फिर वेगवान्
पांडवों के क्रोधयुक्त अश्वसवार उनरथियोंको उल्लंघनकर शकुनीकी सेनामें पहुँचे
। ४० । वहां युद्धमें नियत उन अश्वसवारों ने शकुनीकी बड़ी सेनाको बाणों
की वर्षा से ढकादिया । ४१ । हे राजा आपकी कुमन्त्रतासे वह युद्ध जारी हुआ
जोकि गदा और प्रास उठानेवाले महात्माओं से सेवितथा जिसमें धनुषों की
प्रत्यञ्चाओंके शब्द बन्दहोगये रथी कुतूहल दर्शीहुये और अपने और दूसरोंकी
मुख्यताभी दृष्टि न पड़ी ।४३। हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ उनकौरव और पांडवोंकी
भुजाओं से छोड़ी हुई शक्तियों का गिरना नक्षत्रों के आकाश से पतन होनेके
समान हुआ ।४४। हे राजा जहां तहां गिरहुये निर्मल दुधारा खड्गों से संयुक्त
आकाश बहुत शोभायमान हुआ । ४५ । हे भरतर्षभ राजा धृतराष्ट्र तब चारों ओर-

you. Slay Shakuni's army with their help. 36. Then the archers with seven hundred elephants, five thousand horses valiant Sahadev, with three thousand foot and the sons of Draupadi, all went together to oppose Shakuni. Shakuni was attacked by Sahadeva's army from the rear. The Pandav warriors dispersed the car-warriors and faced Shakuni's forces. The horsemen covered Shakuni's army with arrows. 41. There was a terrible battle fought with prases and maces of the warriors and all this was the result of your evil policy Then the sounds of the bow-strings ceased; the car warriors were in great distress, and the two sides were not distinguished. The fall of their spears was like that of the fall of stars from the sky. Double-edged swords were seen falling down from air 45. The prases falling down from all sides

तदा भरतसत्तम ॥ ४६ ॥ रुधिरोक्षितसर्वाङ्गा विप्रविद्धाः शिलीमुखैः । हयाः परिपतन्ति
स्म शतशोऽथ सहस्रशः । अन्योऽन्यं संनिपिष्टाश्च समासाद्य परस्परम् ॥ ४७ ॥
आविक्षताः स्म दृश्यन्ते वमन्तो रुधिरं मुखैः । ततोऽभवत्तमो घोरं सैन्ये तु रजसा
वृते ॥४८॥ तानपाक्रमतोऽद्राक्षं तस्माद्देशादरिंदमान् । अश्वान् राजन्मनुष्यांश्च तमसा
संवृते सति ॥ ४९ ॥ भूमौ निपतिताश्चान्ये वमन्तो रुधिरं बहु । केशाकेशि समालग्ना न
शेकुश्चेष्टितुं नराः ॥ ५० ॥ अन्योन्यमश्वपृष्ठेभ्यो विकर्षन्तो महाबलाः । मल्ला इव
समासाद्य निजघ्नुरितरेतरम् । अश्वैश्च व्यपकृष्यन्त बहवोऽत्र गतासवः ॥ ५१ ॥ भूमौ
निपतिताश्चान्ये बहवो विजयैषिणः । तत्र तत्र व्यदृश्यन्त पुरुषाः शूरमानिनः ॥५२ ॥
रक्तोक्षितैश्छिन्नभुजैरपकृष्टशिरोरुहैः । व्यदृश्यत मही कीर्णा शतशोऽथ सहस्रशः
॥ ५३ ॥ दूरं न शक्यं तत्रासीद्गन्तुमश्वेन केनचित् । साश्वारोहैर्हतैरश्वैरावृते वसु-
धातले ॥ ५४ ॥ रुधिरोक्षितसन्नाहैरात्तशस्त्रैरुदायुधैः । नानाप्रहरणैर्घोरैः परस्परवधै-

---

से गिरते हुये बाणों से रूप ऐसेहुये जैसे कि आकाश में शलभाके समूहों के रूप होते हैं रुधिर से लिप्त सम्पूर्ण शरीर और बाणों से घायल हजारों घोड़े चारों ओर से गिर परस्पर सम्मुख होकर चूर्ण होगये । ४७ मुखोंसे रुधिरकी वमनकरते घायल दृष्टिपड़े शत्रुओं के विजय करने पर फिर सेनाकी धूलसे संयुक्त होनेपर घोर अन्धकार हुआ । ४८ । तब अन्धकार से ढकजानेपर उन घोड़ों और मनुष्यों को उस स्थानसे हटाहुआ देखा । ४९ । कितनेही रुधिरकी वमन करतेहुये पृथ्वीपर गिर पड़े । ५० । घोड़ोंकी पीठ से परस्पर खैंचनेवाले बाणों में चिपटे हुये मनुष्य अंगोंकी चेष्टा करनेको समर्थ नहीं हुये मल्लों के समान मिलकर परस्पर में मारा और बहुत से निर्जीव मनुष्य घोड़ों से दूरदूरतक खैंचेगये । ५१ । बहुत से विजयाभिलाषी अपने को शूर माननेवाले मनुष्य जहां तहां पृथ्वीपर पड़ेहुये दिखाईपड़े । ५२ । रुधिरसे लिप्त टूटेभुज केशोंसे रहित हजारों मनुष्यों से आच्छादित पृथ्वी दिखाईपड़ी । ५३ । सवारों समेत मृतक घोड़ों से पृथ्वी के आच्छादित होनेपर घोड़ेकी सवारीसे दूरजाना असंभव होगया । ५४ । रुधिरसे लिप्तसब शरीर

---

looked like flights of locusts. Thousands of horses, wounded by arrows, fell down everywhere and were dashed to pieces. Vomitting blood, and wounded, they fell down everywhere and again the warriors were covered with dust. Horses and men met in darkness and fell down shedding blood. Pinned to the backs of horses, the warriors were unable to move. They slew one another like wrestlers, while many deadbodies were dragged by horses. Many brave warriors lay dead on earth. The earth was covered with dead bodies broken limbs and hairless heads. There was no room for horses to pass over the dead bodies of men and horses. 54. The wounded and bleeding warriors, fighting hard, and using various weapons,

दिनि सुसन्निहते संग्रामे हतभूयिष्ठसैनिक ॥ ५५ ॥ स मुहूर्त्तं ततो युद्ध्वा सौव
लोय विशाम्पते। षट्साहस्रैर्हयैः शिष्टैरपायाच्छकुनिस्तत ॥ ५६ ॥ तथैव पाण्डवा
नीकं रुधिरेण समुक्षितम् । षट्साहस्रैर्हयैः शिष्टैरपायाच्छ्रान्तवाहनम् ॥ ५७ ॥ अश्वा
रोहास्तु पाण्डूनामब्रुवन् रुधिरोक्षिता सुसन्निविष्टा संग्रामे भूयिष्ठं त्यक्तजीविता
॥ ५८ ॥ नेह शक्यं रथैर्योद्धुं कुत एव महागजैः । रथानेव रथा यान्तु कुञ्जराः कुञ्ज
रानपि ॥ ५९ ॥ प्रतियातो हि शकुनिः स्वमनीकमवस्थितः । न पुनः सौबलो राजा
युद्धमभ्यागमिष्यति ॥ ६० ॥ ततस्तु द्रौपदेयाश्च ते च मत्ता महाद्विपाः । प्रययुर्यत्र
पाञ्चाल्यो धृष्टद्युम्नो महारथ ॥ ६१ ॥ सहदेवोऽपि कौरव्यो रजोमेघे समुत्थिते । एकाकी
प्रययौ तत्र यत्र राजा युधिष्ठिर ॥ ६२ ॥ ततस्तेषु प्रयातेषु शकुनिः सौबलः पुन ।
पार्श्वतोऽभ्यहनत् क्रुद्धो धृष्टद्युम्नस्य वाहिनीम् ॥ ६३ ॥ तत पुनस्तुमुलं युद्धं प्राणांस्त्यक्त्वा
समवर्त्तत । तावकानां परेषाञ्च परस्परवधैषिणाम् ॥ ६४ ॥ ते ह्यन्योऽन्यमवेक्षन्त

शस्त्र धनुषप्रादि के उठानेवाले नानाप्रकार के प्रहार करनेवाले घातरूप परस्पर मारने के अभिलाषी युद्धमें सेनाके मनुष्योंके समीपवर्त्ती जिनके कि बहुतसे मनुष्य मारेगये उन लोगोंसमेत युद्ध में एक मुहूर्त्त भर लड़कर वह शकुनी शेष बचेहुये छःहजार घोड़ों समेत हटगया ।५६। उसीप्रकार रुधिर से लिप्त रथकी सवारीवाली पाण्डवीयसेनाभी शेष बचेहुये छः हजार घोड़ों समेत हटगई ५७। बहुत समीपी युद्धमें जीवन के त्यागनेवाले रुधिरसे भरे पाण्डवीय अश्वसवार बोले ।५८। कि यहां जब कि हाथियोंसे लड़ना असंभव है तो बड़े हाथियोंसे लड़ना कैसे संभवहोगा रथ रथोंके और हाथी हाथियोंकेही सम्मुखजायँ ।५९। वह सम्मुख होनेवाला शकुनी सेना में नियतहै राजाशकुनी फिर युद्धको प्राप्त नहीं करेगा ६०। इसके पीछे द्रौपदीके पुत्र और मतवाले बड़े हाथी वहां गये जहां कि पांचालदेशी महारथी धृष्टद्युम्न था ।६१। धूलके बादल उठनेपर कौरव्य सहदेव भी अकेला वहांगया जहांपर राजा युधिष्ठिरथे ।६२। इनके पीछे उनके चढ़ाईहोने पर क्रोधयुक्त शकुनी ने अपने पक्ष में नियत हुई धृष्टद्युम्न की सेनाको मारा ।६३। फिर प्राणोंको त्यागकर परस्पर मारने के अभिलाषी आपके और प्रतिपक्षियों के शूरवीरोंका वह कठिन युद्ध

approached the army of Shakuni, who having some of his warriors dead, removed the remainder which was six thousand in number 56. The Pandav warriors stayed with the remaining six thousand hors At the slaughter of their warriors the Pandav horsemen said, " It is impossible for us to engage with large elephants. Let car warriors and elephants face the elephants Yonder stands Shakuni let him fight no more Then the sons of Draupadi accompanied by mad elephants went to the place where Dhrishtadyumna was Sahadev too, crossed the storm of dust and approached Yudhishthir Then Shakuni destroyed the army of Dhrishtadyumn The battle was very and destructive on both sides and thousands of warriors

तस्मिन् वीरसमागमे । योधा पर्य्यपतन्राजन् शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ६५ ॥ असिभि
श्छिद्यमानानां शिरसां लोकसंक्षये । प्रादुरासीन्महाशब्दस्तालानां पततामिव ॥ ६६ ॥
विमुक्तानां शरीराणां भिन्नानां पततां भुवि । सायुधानाञ्च बाहूनामूरूणाञ्च विशां
पते । आसीत्कटकटाशब्दः सुमहाल्लोमहर्षणः ॥ ६७ ॥ निघ्नन्तो निशितैः शस्त्रैर्भ्रातॄन्
पुत्रान् पितॄनपि । योधाः परिपतन्ति स्म यथामिषकृते खगाः ॥ ६८ ॥ अन्योऽन्यं प्रति
संरब्धाः समासाद्य परस्परम् । अहं पूर्वमहं पूर्वमिति न्यघ्नन् सहस्रशः ॥ ६९ ॥ संघा
तेनासनभ्रष्टैरश्वारोहैर्गतासुभिः । हताः परिपतन्ति स्म शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ७० ॥
स्फुरतां प्रतिपिष्टानामश्वानां शीघ्रचारिणाम् । स्तनतां च मनुष्याणां संनद्धानां
विशाम्पते ॥ ७१ ॥ शक्त्यृष्टिप्रासशब्दस्तु तुमुलः समजायत । भिन्दतां परमर्माणि
राजन् दुर्मन्त्रिते तव ॥ ७२ ॥ श्रमाभिभूताः संरब्धाः श्रान्तवाहाः पिपासिताः । विक्ष
ताश्च शितैः शस्त्रैरभ्यवर्त्तन्त तावकाः ॥ ७३ ॥ मत्ता रुधिरगन्धेन बहवोऽत्र विचेतनाः

वर्त्तमान हुआ हे राजा उस वीरोंकी सम्मुखता में उन्होंने परस्पर देखा सैकड़ों हजारों शूरवीर चारोंओर से दौड़े । ६५ । समर के नाश में खड्गोंसे कटनेवाले शिरोंके ऐसे बड़े शब्द प्रकटहुये जैसे कि गिरते हुये तालफलों के शब्द होते हैं । ६६ । हे राजा कवचोंसे रहित टूटेअंग पृथ्वीपर गिरतेहुये शरीर शस्त्रधारी भुजा और जंघाओं के चरचटानाम शब्द बड़े कठोर और रोमांच खड़े करनेवाले उत्पन्न हुये । ६७ । तीक्ष्णधार शस्त्रों से भाई पिता और पुत्रों को मारते शूरवीर चारों ओरसे ऐसे दौड़े जैसे कि मांस के निमित्त पक्षी । ६८ । परस्पर क्रोधयुक्त एक दूसरे को पाकर प्रथम मैं प्रथम मैं इसप्रकार से कहकर हजारोंने प्रहार किये । ६९ । और कठिन प्रहारों से निर्जीव आसनोंसे च्युत अश्वसवारों के कारण से हजारों घोड़े चारोंओरको दौड़े । ७० । हे राजा फड़कते मर्दन युक्त शीघ्रगामी घोड़ों के और कवचधारी गर्जनेवाले मनुष्यों के और शक्ति प्रास और दुधारे खड्गों के कठोर शब्द वर्त्तमान हुये हे राजा आपके कुविचार में शत्रुके मर्म्मस्थलों के काटने वाले पुरुषोंके बड़े शब्दहुये । ७२ । परिश्रम से दबाये क्रोधयुक्त प्यासे थकीसवारी वाले और तेजबाणों से अत्यन्त घायल आपके शूरवीर सम्मुख वर्त्तमान हुये । ७३ । वहां रुधिर की गन्ध से मतवाले और अचेत बहुत मनुष्यों ने समीप

attacked one another. 65 The sounds of the falling heads were like the fall of palm fruits The sounds of the fall of headless bodies and limbs were also dreadful Slaying fathers, brothers and sons with sharp weapons they rushed against one another like ravenous birds They vied with one another in the attack and thousands of the riderless horses were to be seen rushing hither and thither. 70 The noise from the fall of swift horses, the roars of warriors and of the fall of weapons was dreadful The cries of the warriors, cutting the vital parts of the enemies, was tremendous Your warriors, tired,

अघ्नु परान् स्वकांश्चैव प्रासान् प्रासाननन्तरान् ॥ ७४ ॥ बहवश्च गतप्राणाः क्षत्रिया जयवृद्धिनः । भूमौ चाभ्यपतन्राजन् शरवृष्टिभिराहताः ॥ ७५ ॥ वृकगृध्रशृगालानां तुमुले मोदनेऽहनि । आसीद्बलक्षयो घोरस्तव पुत्रस्य पश्यतः ॥ ७६ ॥ नराश्वकायसं छन्ना भूमिरासीद्विशाम्पते । रुधिरोदकचित्रा च भीरूणां भयवर्द्धिनी ॥ ७७ ॥ असिभिः पट्टिशैः शूलैस्तक्ष्यमाणाः पुनः पुनः । तावकाः पाण्डवेयाश्च नाभ्यवर्त्तन्त भारत ॥ ७८ ॥ प्रहरन्तो यथाशक्ति यावत् प्राणस्य धारणम् । योधाः परिपतन्ति स्म वमन्तो रुधिरं व्रणैः । ७९ । शिरो गृहीत्वा केशेषु कबन्धश्च व्यदृश्यत । उद्यम्य च शितं खड्गं रुधिरेण परिप्लुतम् । ८० । अथोत्थितेषु बहुषु कबन्धेषु जनाधिप । तथा रुधिरगन्धेन योधाः कश्मलमाविशन् ॥ ८१ ॥ मन्दीभूते ततः शब्दे पाण्डवानां महद्बलम् । अल्पावशिष्टै

अनेवाले शत्रुओं समेत अपनेही शूरवीरोंको मारा । ७४ । और विजयाभिलाषीभरे हुये बहुत से क्षत्री वाणों की वर्षा से घायल होकर पृथ्वीपर गिरपड़े । ७५ । भेड़िये गिद्ध और शृगालोंकी प्रसन्नता बढ़ानेवाला आप के पुत्र के देखतेहुये सेना का घोर नाश हुआ । ७६ । हे राजा पृथ्वी मनुष्य और घोड़ों के शरीरों से ढकगई रुधिर रूप जल रखनेवाली महाअपूर्व भयभीतोंका भयबढ़ानेवाली होगई । ७७ । हे भरत वंशी खड्ग पट्टिश और शूलों से वारम्वार घायल पांडव और आपके शूरवीर नहीं लौटे । ७८ । जबतक शरीर में प्राण शेष रहे,तबतक सामर्थ्य के अनुसार युद्ध करतेरहे घावोंसे रुधिरको डालतेहुये शूरवीर चारोंओर को दौड़े ।७९।और धड़ अर्थात रुंड शिरको बालोंसे पकड़कर रुधिरसे भरेहुये तीक्ष्ण खड्गको उठाकर दिखाई दिया । ८० । हे राजा इसके पीछे बहुत रुंडोंके उठनेपर उसप्रकारके रुधिरकी गंध से शूरवीर मूर्च्छित होनेलगे । ८१ उसके पीछे शब्दके न्यून होने पर शकुनी थोड़े शेष बचेहुये घोड़ों समेत पांचाल देशियोंकी बड़ीसेनाके सम्मुख

enraged and thirsty, with tired beasts and wounded by sharp weapons stood ready to fight. Maddened with the scent of blood and insensible, many people slew their own warriors. Desirous of victory many warriors, wounded by arrows, lay dead on earth. 75 Increasing the joy of wolves, vultures and jackals, the destruction of your warriors was great in the presence of your son The earth was covered with the corpses of men and beasts. With the overflow of of blood the ground was dreadful to look at. Wounded again and again by weapons the warriors of both sides did not give way and fought on as long as life endured. Dropping blood from their bodies, the warriors rushed in all directions A headless trunk was seen seizing a head by the hair in one hand and a sword in the other 80. Then many headless bodies rose up and the stench from blood made the warriors lose their senses. When the noise lessoned, Shakuni with a small remnant of his army opposed the large army of the Panchals.

हतुरगश्चापि तस्य सौबल ॥ ८२ ॥ ततोऽभ्यधावंस्त्वरिताः पाण्डवा जयगृद्धिनः । पत्तयश्च नागाश्च सादिनश्चोद्यतायुधाः ॥ ८३ ॥ कोष्ठकीकृत्य चाप्येनं परिक्षिप्य च सर्वशः । शस्त्रैर्नानाविधैर्जघ्नुर्युद्धपारं तितीर्षवः ॥ ८४ ॥ त्वदीयास्तांस्तु संप्रेक्ष्य सर्वतः समभिद्रुतान् । साश्वपत्तिद्विपरथाः पाण्डवानभिदुद्रुवुः ॥ ८५ ॥ केचित् पदातयः पद्भिर्मुष्टिभिश्च परस्परम् । निजघ्नुः समरे शूराः क्षीणशस्त्रास्ततोऽपतन् ॥ ८६ ॥ रथेभ्यो रथिनः पेतुर्द्विपेभ्यो हस्तिसादिनः । विमानेभ्य इव भ्रष्टाः सिद्धाः पुण्यक्षये यथा ॥ ८७ ॥ एवमन्योन्यमायस्ता योधा जघ्नुर्महामृधे । पितॄन् भ्रातॄन् वयस्यांश्च पुत्रानपि तथापरे ॥ ८८ ॥ एवमासीदमर्यादं युद्धं भरतसत्तम । प्रासासिबाणकलिले वर्तमाने सुदारुणे ॥ ८९ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि संकुलयुद्धे त्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

वर्तमान हुआ । ८२ । इसकेपीछे विजयाभिलाषी पांडव शीघ्रही सम्मुख दौड़े शस्त्र उठानेवाले युद्धके अन्तपर पहुँचने के इच्छावान पदाती हाथी और अश्व सवारों ने उसको चारोंओर में सबप्रकार से घेरकर नानाप्रकार के शस्त्रों से घायल किया । ८४ । फिर आपके रथ घोड़े पत्ति और हाथी सबओरसे चढ़ाई करनेवाले उन पांडवों को देखकर सम्मुख पहुँचे । ८५ । और शस्त्रों से कितनेही शूरवीर पदातियोंने युद्ध में चरणघात और मुष्टिकाओं से परस्पर घायल किया और करके फिर गिरपड़े । ८६ । रथी रथपर से और हाथीके सवार हाथी परसे ऐसे गिरपड़े जैसे कि पुण्य फलके क्षीणहोनेसे विमानपर चढ़े हुये सिद्ध स्वर्गसे गिरतेहैं ८७ इस प्रकार महादुःखित शूरवीरोंने परस्पर प्रहार किये और इसीप्रकार अन्य लोगोंने पिता भाई समान वयवाले और पुत्रों कोभी मारा हे भरतर्षभ इसप्रकार प्रासखड्ग और बाणोंसे युक्त बड़ा भयानक युद्ध वर्तमान होनेपर बड़ीही बेमर्यादाहुई ८९ ॥

The Pandavas desirous of victory rushed on and surrounded him with their elephants and horsemen to make an end of him. They wounded him with their weapons. The horse and foot of the Pandavas, seeing him thus surrounded, attacked him on all sides. 85. The foot wounded one another with their fists and kicks and fell down fighting. Warriors fell down from their cars and elephants as sidhas fall down from celestial cars at the expiration of their merits. The warriors attacked one another and slew even their fathers, brothers, sons and friends. Thus they fought with different sorts of weapons and observed no rules. 89.

सञ्जय उवाच । तस्मिन् शब्दे मृदौ जाते पाण्डवैर्निहते बले । अश्वैः सप्तशतैः शिष्टैरुपावर्तत सौबलः ॥ १ ॥ स यात्वा वाहिनीं तूर्णमब्रवीत्त्वरयन् युधि । युध्यध्वमिति संहृष्टः पुन पुनररिन्दमाः ॥ २ ॥ अपृच्छत् क्षत्रियांस्तत्र क्व नु राजा महारथ । शकुनेस्तु वचः श्रुत्वा न ऊचुर्भरतर्षभ । असौ तिष्ठति कौरव्यो रणमध्ये महारथ ॥ ३ ॥ यत्रैतत् सुमहच्छत्रं पूर्णचन्द्रसमप्रभम् । यत्रैते सतनुत्राणा रथास्तिष्ठन्ति दंशिताः ॥ ४ ॥ यत्रैष शब्दस्तुमुलः पर्जन्यनिनदोपमः । तत्र गच्छ द्रुतं राजंस्ततो द्रक्ष्यसि कौरवम् ॥ ५ ॥ एवमुक्तस्तु तैः शूरैः शकुनि सौबलस्तदा । प्रययौ तत्र यत्रासौ पुत्रस्तव नराधिप । सर्वतः संवृतो वीरैः समरेष्वनिवर्तिभिः ॥ ६ ॥ ततो दुर्योधनं दृष्ट्वा रथानीकव्यवस्थितम् । सरथांस्तावकान् सर्वान् हर्षयन् शकुनिस्ततः ॥ ७ ॥ दुर्योधनमिदं वाक्यं हृष्टरूपो विशाम्पते । कृतकार्यमिवात्मानं मन्यमानोऽब्रवीन्नृपम ॥ ८ ॥ जहि राजन्रथानीकमश्वाः सर्वे जिता मया । नात्यक्त्वा जीवितं संख्ये शक्यो

अध्याय २४ ॥

सञ्जय बोले कि-उसशब्दके मृदुहोने और पांडवोंके हाथसे-सेनाके मारेजाने पर शकुनी शेष बचेहुये सातसौघोड़ों समेत हटगया । १ । युद्ध में शीघ्रताकरता हुआ वह शकुनी सेनाके पास शीघ्र पहुँचकर यह बारम्बार वचन बोला कि हे अत्यन्त प्रसन्नचित्त और शत्रुओं के विजय करनेवालो तुम युद्ध करो । २ । और वहां सब क्षत्रियोंसे पूछा कि वह दुर्योधन कहां है हे भरतर्षभ तब वह सत्रीलोग शकुनीके वचनको सुनकर बोले । ३ । कि वह महारथी कौरव युद्धमें वहां वर्त्तमान है जहां वह पूर्णचन्द्रमाके समान उसका छत्र दिखाई देताहै जहां पर कि यह कवचधारी शस्त्रलिये रथीलोग नियत है । ४ । और जहां जहांपर यह बादलकेसमान उत्तम घोरशब्द वर्त्तमानहै हे राजा तुम वहां शीघ्रजाओ जाकर तुम उस कौरव राजको देखोगे । ५ । उन शूरोंके ऐसे वचन सुनकर वह शकुनी वहांगया हेराजा, वहांपर वह आपका पुत्र युद्धमें मुख न-मोड़नेवाले वीरों से चारोंओर को रक्षित था । ६ । वहां रथकी सेना समेत दुर्योधनको नियत देखकर आपके सब रथियोंको

CHAPTER XXIV

Sanjaya said, " When the noise subsided and the army was being destroyed by the Pandavas, Shakuni retreated with seven hundred horse. He came near the warriors and said to them again and again, " Fight cheerfully, my warriors. " He then enquired of the whereabouts of Duryodhan and they said, " He is yonder where you see the moon like umbrella and the warriors are standing with bright armours. He is there where you hear a sound like that of thunder Go there at once and you will see the Kaurav prince " Having heard the words of those warriors, Shakuni went to the place where

जेतुं युधिष्ठिरं ॥ ९ ॥ हते तस्मिन्रथानीके पाण्डवेनाभिपालिते । गजानेतान् हनिष्यामः
पत्तींश्चैवेतरांस्तथा ॥ १० ॥ श्रुत्वा तु वचनं तस्य तावका जयगृद्धिनः । जवेनाभ्यद्रवन्
हृष्टाः पाण्डवानामनीकिनीम् ॥ ११ ॥ सर्वे विक्षिप्ततूणीराः प्रगृहीतशरासनाः ।
शरासनानि धुन्वानाः सिंहनादं प्रचक्रिरे ॥ १२ ॥ ततो ज्यातलनिर्घोषः पुनरासीद्वि
शाम्पते । प्रादुरासीच्छराणां च विमुक्तानां सुदारुणः ॥ १३ ॥ तान् समीपगतान्
दृष्ट्वा जवेनोद्यतकार्मुकान् । उवाच देवकीपुत्रं कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः ॥ १४ ॥ चोद
याश्वानसम्भ्रान्तः प्रविशैतद्बलार्णवम् । अन्तमद्य गमिष्यामि शत्रूणां निशितैः शरैः
॥ १५ ॥ अष्टादश दिनान्यद्य युद्धस्यास्य जनार्दन । वर्तमानस्य महतः समासाद्य
परस्परम् ॥ १६ ॥ अनन्तकल्पा ध्वजिनी भूत्वा ह्येषां महात्मनाम् । क्षयमद्य गता युद्धे

प्रसन्न करता । ७ । प्रसन्नमुख अपने को कृतकृत्य मानता शकुनी राजा दुर्योधन
से यह वचन बोला हे राजा अब तुम रथकी सेनाको मारो मैं सब घोड़े विजय
किये युद्धमें जीवनको त्यागन करके युधिष्ठिर विजय करने के योग्य नहीं है
। ९ । पाण्डवों से रक्षित उस रथकी सेनाके मरनेपर इन हाथी पदाति आदि सब
को मारेंगे विजयाभिलाषी प्रसन्नचित्त आपके पुत्र उसके वचन को सुनकर तीव्रता
से पाण्डवों की सेना के सम्मुख दौड़े । ११ । सब तूणीर बांधे धनुषों को चलाय
मान करते धनुषधारियों ने सिंहनाद किये । १२ । हे राजा इसके पीछे प्रत्यञ्चा
और तलों सहित अच्छे प्रकार से छोड़ेहुये बाणों के फिर महाभयकारी शब्द प्रकट
हुये।१३। कुन्तीका पुत्र अर्जुन उन सम्मुख वर्त्तमान तीव्रतासे धनुष चलानेवालोंको
देखकर श्रीकृष्णजी से यह वचन बोला । १४ । कि आप भ्रान्तिसे रहित होकर
घोड़ों को चलायमान करो और सेनारूपी समुद्र में प्रवेश कीजिये अब मैं तेजधार
बाणों से शत्रुओं के नाश को करूंगा । १५ । हे जनार्दनजी परस्पर सम्मुख
होतेहुये इस महाभारी युद्ध को होतेहुये अब अठारह दिन हुये । १६ । इन

Duryodhan was surrounded and guarded by unflinching warrior. Seeing the prince there, and pleasing the warriors, Shakuni said to Duryodhan, "Slay the army of car warriors, I have conquered the horses. You cannot conquer Yudhisthir without risking your own life. At the destruction of the car-warriors protected by the Pandavas, we shall slay the elephants, foot and others." Your sons, desirous of victory, cheerfully rushed against the army of the Pandavas. Furnished with quivers and moving their bows, the archers raised leonine roars. Then the sounds from bowstrings, beating of palms and arrows were again tremendous. Arjun seeing them equipped with bows, coming towards him, said to Krishna, "Drive the horses carefully and enter the ocean of the army. I shall destroy the enemies with my sharp arrows. 15 The war has been raging for eighteen days,

पश्य दैवं यथाविधम् । १७ ॥ समुद्रकल्पञ्च बलं धार्तराष्ट्रस्य माधव । अस्माना
साद्य सञ्जातं गोष्पदोपममच्युत ॥ १८ ॥ हते भीष्मे तु सन्दध्याच्छिवं स्यादिह
माधव । न च तत् कृतवान् मूढो धार्तराष्ट्रः सुबालिशः ॥ १९ ॥ उक्तं भीष्मेण यद्वाक्यं हितं
पथ्यञ्च माधव । तच्चापि नासौ कृतवान् वीतबुद्धिः सुयोधनः ॥ २० ॥ तस्मिंस्तु
निहते भीष्मे प्रच्युते पृथिवीतले । न जाने कारणं किन्तु येन युद्धमवर्त्तत ॥ २१ ॥
मूढांस्तु सर्वथा मन्ये धार्तराष्ट्रान् सुबालिशान् । पतिते शान्तनौ पुत्रे येऽकार्षुः संयुगं
पुनः ॥ २२ ॥ अनन्तरञ्च निहते द्रोणे ब्रह्मविदाम्वरे । राधेये च विकर्णे च नैवाशाम्यत
वैशसम् ॥ २३ ॥ अल्पावशिष्टे सैन्येऽस्मिन् सूतपुत्रे च पातिते सपुत्रे वै नरव्याघ्रे नैवाशाम्यत
वैशसम् ॥ २४ ॥ श्रुतायुषि हते शूरे जलसन्धे च पौरवे । श्रुतायुधे च नृपतौ नैवा

महात्माओं की असंख्य सेना ने अब युद्ध में नाशको पाया दैव को देखिये
कि कैसा है । १७ । हे अविनाशी माधवजी समुद्रकी समान दुर्योधन की सेना
हमको प्राप्त कर गोपद के समान देखने में आई है माधवजी भीष्मके मरने
पर जो यह सन्धि करलेता तो यहां के सब लोगोंकी कुशल होजाती परन्तु अज्ञान
निर्बुद्धि दुर्योधन ने उसको नहीं माना । १९ । हे माधवजी भीष्मजी ने भी
जो बड़ा हितकारी शुभदायक वचन कहा था इस निर्बुद्धि दुर्योधन ने उस
को भी नहीं किया । २० । कठिन युद्ध में उन भीष्मजी के पृथ्वीपर गिरनेपर मैं
नहीं जानताहूं कि कौनसा कारणहै जिससे कि युद्ध जारीहुआ । २१ । मैं सब
प्रकारसे धृतराष्ट्रके पुत्रोंको अज्ञान और निर्बुद्धि मानताहूं कि जिन्होंने भीष्मजी
के भी गिरनेपर युद्ध किया । २२ । इसके अनन्तर ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ द्रोणा-
चार्य कर्ण और विकर्णके मरनेपर भी विनाशने शान्तिको नहीं पाया । २३ । इस
सेना के थोड़े बाकी रहने और नरोत्तम कर्णके पुत्र समेत गिरानेपर नाशने शान्ति
को नहीं पाया । २४ । वीर श्रुतायुष पौरव जलसिन्धु और राजा श्रुतायुधके मरने

O Janardan, and the numerous army of these great warriors has been destroyed. Look at the working of Destiny. Immortal Madhav, the Ocean like army of Duryodhan coming towards us looks like a small pond. All the warriors would be safe, if Duryodhan had made peace at the fall of Bhism, but the fool paid no heed. Foolish Duryodhan gave no ear to the salutary advice of Bhishm 20 I donot know why the battle was allowed to continue at the fall of Bhishm. I know that the sons of Dhritrashtra are quite foolish as they continued the war at the fall of Bhishm. The battle was not discontinued at the fall of Drona, Karan and Vikarn. It did not cease even when only a small portion of the army was left at the fall of Karan and his son. The hostilities did not cease at the fall of Shrutayush, Paurav, Jalsindhu and Shrutayudh 25 It did not stop at the fall of

शाम्यत वैशसम् ॥ २५ ॥ भूरिश्रवसि शल्ये च शाल्वे चैव जनार्दन । आवन्त्येषु च वीरेषु नैवाशाम्यत वैशसम् ॥ २६ ॥ जयद्रथे च निहते राक्षसे चाप्यलायुधे । बाह्लीके सोमदत्ते च नैवाशाम्यत वैशसम् ॥ २७ ॥ भगदत्ते हते शूरे काम्बोजे च सुदक्षिणे । दुःशासने च निहते नैवाशाम्यत वैशसम् ॥ २८ ॥ दृष्ट्वा च निहतान् शूरान् पृथङ्माण्डलिकान्नृपान् । बलिनश्च रणे कृष्ण नैवाशाम्यत वैशसम् ॥ २९ ॥ अक्षौहिणीं हतां दृष्ट्वा भीमसेनेन संयुगे । मोहाद्वा यदि वा लोभान्नैवाशाम्यत वैशसम् ॥ ३० ॥ को नु राजकुले जातः कौरवेयो विशेषतः । निरर्थकं महद्वैरं कुर्यादन्यः सुयोधनात् ॥ ३१ ॥ गुणतोऽभ्यधिकं ज्ञात्वा बलतः शौर्यतोऽपि वा । अमूढः को नु युध्येत जानन् प्राज्ञो हिताहितम् ॥ ३२ ॥ यन्न तस्य मनो ह्यासीत्त्वयोक्तस्य हितस्य च । प्रशमे पाण्डवैः सार्धं सोऽन्यस्य शृणुयात् कथम् ॥ ३३ ॥ येन शान्तनवो भीष्मो द्रोणो विदुर एव च । प्रत्या

पर भी नाशहोना बन्द नहीं हुआ ।२५। हे जनार्दनजी भूरिश्रवा शल्य शाल्व और दोनों अवन्ति देशके वीर राजालोगों के भी मरनेपर नाशहोना बन्द नहीं हुआ । २६ । जयद्रथ अलायुध राक्षस वाह्लीक सोमदत्त शूर भगदत्त काम्बोज सुदक्षिण और दुश्शासन के मरनेपर भी यह क्षत्रियोंका नाश बन्द नहीं हुआ । २८ । हे कृष्णजी पृथक् मण्डलवाले शूरवीर पराक्रमी राजाओं को युद्धमें मराहुआ देखकर भी नाशबन्द नहीं हुआ । २९ । भीमसेन के हाथसे अक्षौहिणी के प्रधान लोगों को मृतक देखकर मोह और लोभमें नाश बन्दनहीं हुआ । ३० । राजाओं के घराने मुख्यकर कौरवों के घरानेमें उत्पन्नहोकर दुर्योधनके सिवाय कौनपुरुष निरर्थक बड़ी शत्रुता को करेगा । ३१ । गुण बल और शूरता से भी अधिक जानकर हानि लाभको जानता हुआ कौनसा बुद्धिमान् मनुष्य युद्ध करेगा । ३२ । जो तुम्हारे भी हितकारी वचनोंके करने से उस दुर्योधनका चित्त पाण्डवों के साथ सन्धि करने में नहीं हुआ वह फिर दूसरेके वचनको कैसे सुनसक्ताहै । ३३ ।

Bhurishrava, Saalya, Saalwa and the two warriors of Avanti. It did not cease at the fall of Jayadrath, Alayudh the rakshas, Vahlik, Somdatta, brave Bhagdatta, Camboj, Sudakshin and Dushasan. The destruction of the warriors did not cease at the fall of so many kings. He was foolish enough not to stop fight when Bhim had destroyed an akshauhini of good warriors. 30. Born is the family of kings and specially of Kaurav kings, no man, except Duryodhan would contract such a great enmity for nothing. What wise man knowing his enemy to be superior to him in good qualities and strength, would contract enmity ? How could Duryodhan listen to other men, when he was *foolish enough to disregard your advice* to make peace with the Pandavas ? What remedy was left to him, who flatly refused to the advice of Bhishm, Drona and Vidur ! What

ख्याताः शमस्याथ किन्नु तथ्याद्य भेषजम् ॥३४॥ मौढ्यादेव पिता वृद्धः प्रत्याख्यातो जनार्दन। तथा माता हितं वाक्यं भाषमाणा हितैषिणी। प्रत्याख्याता ह्यसत्कृत्य स कस्माद्रोचयेद्वचः ॥ ३५ ॥ कुलान्तकरणो व्यक्तं जात एष जनार्दन। तथास्य दृश्यते चेष्टा नीतिश्चैव विशाम्पते। नैष दास्यति नो राज्यमिति मे मतिरच्युत ॥ ३६ ॥ उक्तोऽहं बहुशस्तात विदुरेण महात्मना। न जीवन् दास्यते भागं धार्त्तराष्ट्रः कथञ्चन ॥ ३७ ॥ यावत् प्राणान्धारयति धृतराष्ट्रोऽपि मानद। तस्माद्युष्मासु पापात्मा प्रचरिष्यति पातकम् ॥ ३८ ॥ न च शक्योऽन्यथा जेतुमृते युद्धेन माधव। इत्यब्रवीत् सदा मां हि विदुरः सत्यदर्शनः ॥ ३९ ॥ तत् सर्वमद्य जानामि व्यवसायं दुरात्मनः। यदुक्तं वचनं तेन विदुरेण महात्मना ॥ ४० ॥ यो हि श्रुत्वा वचः पथ्यं जामदग्न्याद्यथातथम्। अवामन्यत दुर्बुद्धिर्ध्रुवं नाशमुखे स्थितः ॥४१॥ उक्तं हि बहुभिः सिद्धैर्जातमात्रे सुयो

सन्धि के विषय में भीष्म द्रोणाचार्य और विदुरजी को भी जिसने उत्तर दिया अब उसकी कौनसी दवा है। ३४। हेजनार्दनजी जिसने अपनी अज्ञानता से हितकारी वचनों के कहनेवाले वृद्धपिता और माताओं को भी वारम्वार अनादर करके उत्तरदिया वह कैसे दूसरे के वचनों को अंगीकार करसक्ता है। ३५। हे मधुसूदन जी प्रकट है कि यह कुलका नाश करनेवाला उत्पन्नहुआ है विशाम्पते उसी प्रकार इसकी चेष्टा और नीति देखी जाती है कि यह हमको राज्य नहीं देगा हे अविनाशी मेरा यह मत है। ३६। हे बड़ाई देनेवाले भाई मुझसे बहुधा महात्मा विदुरने कहा था कि दुर्योधन कभी अपने जीते जी राज्यका भाग नहीं देगा।३७। दुर्योधन जबतक जीवता है तबतक हम निरपराधियों के साथ पापकर्म करेगा।३८। हे माधवजी यह विना युद्धकिये और किसीप्रकारसेभी विजय करनेके योग्य नहीं है न्याय के देखनेवाले विदुरजीने सदैव मुझसे यही कहा कि।३९। सो अब उसदुरात्माके सब निश्चयको और जो वचन उसमहात्मा विदुरजी ने कहा है उसको जानूंगा। ४०। जिस दुर्बुद्धिने परशुरामजी के सत्य और परिणाम में हितकारी वचनोंको सुनकर अपमान किया इससे निश्चय ज्ञातहोताहै कि वह नाश के सम्मुख नियत हुआ है। ४१। दुर्योधन के उत्पन्न होनेपर बहुत सिद्धलोगों

other man's advice would he hear who foolishly disregarded the advice of his parents? 35. It is clear, O Madhusudan that Duryodhan was born to destroy his own family. It was therefore that he tried to deprive us of our kingdom. Vidur had often told me that Duryodhan would not give us our poperty during his life time. He will continue his hostilities towards us, without any fault of ours, as long as he lives. He cannot be conquered without fighting. Wise Vidur has often told me this I shall now see his revolution and the prediotion of Vidur. 40. From his disregarding the salutary advice of Parashuram, I believe that Duryodhah is bent on

घने । दम प्राप्य दुरात्मानं सर्वं यत्र गमिष्यति ॥ ४२ ॥ तद्दिनं वचनं सैवं मिथ्या किं वै जनार्दन ॥ यं यात्रा हि राजानो दुर्योधनकृतेऽभृशम् । सोऽद्य सर्वांश्च योधान् निहनिष्यामि माधव ॥ ४३ ॥ क्षत्रियेषु हतेष्वद्य शून्ये च शिबिरे कृते । वधाय चात्मनोऽस्माभिः संयुगं रोचयिष्यति ॥ ४४ ॥ तदन्तं हि भवेद्वैरमनुमानेन माधव । एवं पश्यामि वार्ष्णेय चिन्तयन् प्रज्ञया स्वया ॥ ४५ ॥ विदुरस्य च वाक्येन चेष्टया च दुरात्मनः । संयाहि भारतीं वीर यावद्धन्मि शितैः शरैः दुर्योधनं दुरात्मानं वाहिनीं चास्य संयुगे ॥ ४६ ॥ क्षेममद्य करिष्यामि धर्मराजस्य माधव । हत्वैतद्दुर्बलं सैन्यं धार्तराष्ट्रस्य पश्यतः ॥ ४७ ॥ सञ्जय उवाच । अभीषुहस्तो दाशार्हस्तथोक्तः सव्यसाचिना । तद्बलौघममित्राणामभीतः प्राविशद्रणे ॥ ४८ ॥ शरासनवनं घोरं शक्तिकण्टकसंकुलम् । गदापरिघपन्थानं रथनागमहाद्रुमम् ॥ ४९ ॥ हयपत्तिलताकीर्णं गाहमानो महायशाः । व्यरोच

थे कहाथा कि इस दुरात्मा दुर्बुद्धिको प्राप्त होकर बहुत से क्षत्रियों के कुलनाश होजायँगे । ४२ । हे जनार्दनजी उन्होंका वारम्वार कहाहुआ वहवचन अब सत्य होरहा है कि दुर्योधन के कारण से बहुतसे अमूल्य राजाओं का नाश होगया सो हे माधवजी अब मैं युद्ध में सब शूरवीरों को मारूंगा । ४३ । क्षत्रियों के नाश करने और डेरों के जल्दीसे खालीहोने पर अपने मरणके लिये वह दुर्योधन हमारे साथ युद्ध करने का अंगीकार करेगा । ४४ । हे जनार्दनजी अनुमानसेविदित होता है कि शत्रुताका अन्त यही होगा हे श्रीकृष्णजी मैं अपनी बुद्धि से सोचता विदुरजी के वचन और इस दुरात्माके कर्म से ऐसाही देखताहूं हे वीर इस हेतु से आप उस सेना में चलो जबतक युद्धमें तेजबाणों से इस दुरात्मा दुर्योधनको और इसकी सेनाको मारूंगा । ४६ । हे गरुड़ध्वजजी अब मैं दुर्योधन के देखते इस निर्बल सेनाको मारकर धर्मराज का कुशलताको करूंगा । ४७ । सञ्जय बोले कि अर्जुन के इस प्रकार वचन को सुनकर हाथमें रस्सी पकड़नेवाले श्री कृष्णजी ने निर्भयतासे उससेनामें प्रवेशकिया । ४८ । वह साहसी गोविन्दजी बड़ी पताकावाले रथको सवारीसे उस सेनाको मथते हुये घूमने लगे जो कि बाण खड्ग और बाणों से भयानक शक्तिरूपी कांटों से पूर्ण गदा और परिघरूपी मार्ग

destroying himself. Many sadhus predicted at the birth of Duryodhan that he would cause the destruction of many warrior families Those manifold predictions are now coming out true, for so many kshatryas have been destroyed on his account, I shall now slay all the warriors, O Madhav. At the destruction of all his warriors when all the tents are empty Duryodhan will come before us to die and I suppose that the hostilities will then end. Thus I think, the prediction of Vidur will come out to be true and that will be the end of that ill natured fool Take me therefore in the midst of the army so that I may slay Duryodhan's army I shall set the mind of Yudhishthir at ease

रत्न गोविन्दो रथेनातिपताकिना ॥५०॥ ते हयाः पाण्डवा राजन् वहन्तोऽर्जुनमाहवे । दिक्षु सर्वास्वदृश्यन्त दाशार्हेण प्रचोदिताः ॥ ५१ ॥ ततः प्रायाद्रथेनाजौ सव्यसाची परन्तपः । किरञ्छरशतांस्तीक्ष्णान् वारिधारा इवाम्बुदः प्रादुरासीन्महाशब्दः शराणां नतपर्वणाम् ॥ ५२ ॥ इषुभिश्छाद्यमानानां समरे सव्यसाचिना । असज्जन्तस्तनुत्रेषु शरौघाः प्रापतन् भुवि ॥ ५३ ॥ इन्द्राशनिसमस्पर्शा गाण्डीवप्रेषिता शराः । नराञ्नागान् समाहत्य हयांश्चापि विशाम्पते । अपतन्त रणे बाणाः पतङ्गा इव घोषिण ॥५४॥ आसीत् सर्वमवच्छन्नं गाण्डीवप्रेषितैः शरैः । न प्राज्ञायन्त समरे दिशो वा विदिशोऽपि वा ॥ ५५ ॥ सर्वमासीज्जगत् पूर्णं पार्थनामाङ्कितैः शरैः । रुक्मपुंखैस्तैलधौतैः कर्मारपरिमार्जितैः ॥ ५६ ॥ ते दह्यमाना पार्थेन पावकेनेव कुञ्जराः । समासीदन्त कौरव्या

रखनेवाला रथ हाथी रूप बड़े हलवाला घोड़े और पत्तिरूपी लताओं से संयुक्त सेनारूपी वनथा । ५० । हे राजा युद्धमें श्रीकृष्णजी से चलायमान वह श्वेत घोड़े अर्जुनको सवार कियेहुये सब दिशाओं में दिखाई पड़े । ५१ । इसके पीछे शत्रुओंका तपानेवाला अर्जुन सैकड़ों बाणजालों को फैलाता रथकी सवारीसे युद्धमें ऐसे आया जैसे कि जलकी धाराओं को बरसाता बादल आता है युद्ध में अर्जुन के बाणों से ढके हुये शूरवीर और टेढ़े पर्ववाले बाणों के बड़े शब्द प्रकटहुये । ५२ । गांडीव धनुषसे चलाये हुये इन्द्रवज्रकी समान स्पर्शवाले कवचों पर लगतेहुये बाण समूह पृथ्वीपर अच्छे गिरे । ५३ । हे राजा वह बाणहाथीऔर घोड़ों को मारकर पक्षियों के समान युद्धभूमि में गिरपड़े । ५४ । गांडीव धनुषके चलायेहुये बाणोंसे सब पृथ्वी ऐसी ढकगई कि युद्धमें दिशा और विदिशा भी नहीं जानीगई । ५५ । अर्जुनके नामों से अंकित सुनहरी पुंख तेलसे साफ किये हुये और कारीगरके मांजे हुये बाणों से सब जगत पूर्ण होगया । ५६ । अग्निके समान अर्जुनसे भस्म होनेवाले तेज बाणोंसे घायल वन घोररूप हाथियों ने

after slaying thus weakened army 47. Sanjaya said, "Having heard Arjun's words Shree Krishn fearlessly entered the army Entering the army with his huge-bannered car, brave Govind roamed in the midst of the warriors armed with prases, swords, arrows maces and clubs and full of cars, elephants, foot and horse.50. Driven by Sri Krishn, the white horses, carrying Arjun, looked in all directions. Then Arjun the destroyer of foes came on into the field of battle, showering arrows from his car like a cloud pouring forth rain covered with Arjun's arrows, the warriors made a tremendous noise with their arrows. Discharged from the Gandiv bow, the vajra like arrows pierced the armours of the warriors and fell down on earth. Slaying elephants and horses they fell down in the field of battle like birds. The field of battle was covered with arrows dis,

बध्यमान
योधान् च
सुघोषः। भारिद्रुमं शुष्कलतावितानं भृशं समृद्धो ज्वलनः प्रतापी ॥ ५९ ॥ एवं स नारा
चगणप्रतापी शरार्चिरुच्चावचतिग्मतेजाः। ददाह सर्वां तव पुत्रसेनाममृष्यमाणः
स्तरसा तरस्वी ॥ ६० ॥ तस्येषवः प्राणहराः सुमुक्ता नासज्जन् वै वर्मसु रुक्मपुङ्खाः
न च द्वितीयं प्रमुमोच बाणं नरे हये वा परमद्विपे वा । ६१ ॥ अनेकरूपाकृतिभिर्हि
बाणैर्महारथानीकमनुप्रविश्य । स एव एकस्तव पुत्रसेनां जघान दैत्यानिव
वज्रपाणिः ॥ ६२ ॥

इति शल्य पर्वणि शल्य वधपर्वणि अर्जुनपराक्रमे चतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

अर्जुनको त्याग नहीं किया । ५७ । सूर्य के समान प्रकाश मान तेजस्वी धनुषत्राण धारी अर्जुन ने युद्ध में लड़नेवालों को ऐसे भस्म किया जैसे कि, ज्वलित रूप अग्नि सूखे वनको भस्म करता है । ५८ । जैसे कि वनके समीप वनवासियोंसे छोड़ा हुआ कालामार्ग अथवा बड़े शब्द रखनेवाली वृद्धि युक्त प्रतापी अग्नि उस सूखे वनको भस्मकरे जोकि बहुतसे वृक्षों से पूर्ण होकर सूक्ष्म लताओं से आच्छादित होय । ५९ । इसी प्रकार नाराचों से संतप्त करनेवाले बाणरूप छोटी बड़ी ज्वाला रखनेवाले बड़े तेजस्वी वेगवान् अशान्तचित्त अर्जुन ने आपके पुत्रकी सब सेनाको नाशकरदिया । ६० । अच्छे प्रकारसे छोड़ेहुये सुनहरी पुंख जीवनके हरनेवाले उसके बाण कवचोंको भेदकर पारहोगये उसने मनुष्य घोड़े और उत्तम हाथीपर भी एकके सिवाय दूसरे बाणको नहीं मारा । ६१ । उस अकेले ने महा रथियोंकी सेनामें प्रवेश करके बहुत प्रकारके रूपवाले बाणों से आपके पुत्रकी सेनाको ऐसे मारा जैसे कि दैत्य लोगोंको वज्रधारी इन्द्र मारता है ६२ ॥

charged from the Gandiv bow and the directions became invisible.55. The field was full of well rubbed and oiled arrows marked with Arjun's name. Burning as if it were with fire by the sharp arrows, the elephants did not leave Arjun. Glorious like the Sun, the great archer Arjun, consumed the warriors as fire burns a dry forest. The field of battle was like the black path left by foresters after burning a forest full of trees and creepers. Thus Arjun destroyed your warriors with his arrows. 60. The arrows well discharged and destructive of life pierced through the armours. He needed no second arrows to destroy men, horses and elephants. Having entered the army alone, he destroyed your son's warriors with his arrows as Indra the wielder of vajra destroys the Daityas. 62.

सञ्जय उवाच । अस्यतां यतमानानां शूराणामनिवर्तिनाम् । सङ्कल्पमकरोन्मोघं गाण्डीवेन धनञ्जयः ॥ १ ॥ इन्द्राशनिसमस्पर्शानविषह्यान्महौजसः । विसृजन् दृश्यते बाणान् धारा मुञ्चन्निवाम्बुदः ॥ २ ॥ तत् सैन्यं भरतश्रेष्ठ वध्यमानं किरीटिना । संप्रदुद्राव संग्रामात्तव पुत्रस्य पश्यतः ॥ ३ ॥ पितॄन् भ्रातॄन् परित्यज्य वयस्यानपि चापरे । हतधुर्या रथाः केचिद्धतसूतास्तथापरे । भग्नाक्षयुगचक्रेषाः केचिदासन् विशाम्पते ॥ ४ ॥ अन्येषां सायकाः क्षीणास्तथान्ये शरपीडिताः । अक्षता युगपत् केचित् प्राद्रवन् भयपीडिताः ॥ ५ ॥ केचित् पुत्रानुपादाय हतभूयिष्ठबान्धवाः । विचुक्रुशुः पितॄनन्ये सहायानपरे पुनः ॥ ६ ॥ बान्धवांश्च नरव्याघ्र भ्रातॄन् सम्बन्धिनस्तथा । दुद्रुवुः केचिदुत्सृज्य तत्र तत्र विशाम्पते ॥ ७ ॥ बहवोऽत्र भृशं विद्धा मुह्यमाना महारथाः । नि

अध्याय २६ ॥

सञ्जय बोले कि अर्जुनने गाण्डीव धनुषके द्वारा शत्रु धनुषधारी उपाय करनेवाले और मुख न मोड़नेवाले शूरवीरों के संकल्पों को निष्फल करदिया ॥ १ ॥ वह इन्द्रवज्रके समान स्पर्शवाले असह्य महा प्रकाशित बाणों को छोड़ता ऐसे दिखाई देताथा जैसे कि जलधाराओं को छोड़ता बादल दिखाई पड़ता है ॥ २ ॥ हे भरतर्षभ अर्जुन के हाथसे घायल वहसेना आपके पुत्रके देखतेहुये युद्धसे भागी ॥ ३ ॥ कितनेही भाई पिता और समान अवस्था वालों को भी छोड़करभागे कोई मृतक घोड़ेवाले और कोईमृतक सारथीवाले रथ दिखाई पड़े हे राजा कितनेही रथ टूटे ईषादण्ड युग और चक्रवाले हुये ॥ ४ ॥ और दूसरोंकेसायकों ने नष्टताको पाया बहुतेरे बाणोंसे पीड़ावानहुये कितनेही बिना घायलहुये भी भयसे पीड़ित होकर भागे ॥ ५ ॥ और जिनके बहुत भाई बन्धुमारेगये ऐसे बहुतसे मनुष्य पुत्र भाई आदि को लेकरभागे कोई पिताको कोई साथी बान्धव नातेदार और भाइयों को पुकारे ॥ ६ ॥ और हे राजा कितनेही जहां तहां सामान को छोड़कर भागे फिर वहां बहुतसे महारथी कठिन घायल और अचेतहोकर अर्जुन के बाणोंसे घायल और

CHAPTER XXVI

Sanjaya said, "With arrows discharged from the Gandiv bow he made the resolutions of the unflinching warriors futile. Discharging vajra like arrows which were unbearable and bright, he looked like a cloud sending forth rain. Wounded by his arrows, the warriors fled in the presence of your son. Many fled away leaving their fathers brothers, and friends. Some lost their horses and others lost their drivers and had the parts of their cars broken. Others were deprived of arrows and were themselves wounded, while some fled in terror without receiving wounds. 5. Those whose kinsmen were slain, fled away with the rest of their relations. Some called for their fathers; others, their companions and kinsmen. Some fled

न्तु स्म दृश्यन्ते पार्थबाणाहता नराः ॥ ८ ॥ तानन्ये रथमारोप्य मुहूर्तं
मे । विश्रान्तांश्च वितृष्णांश्च पुनर्युद्धाय जग्मिरे ॥ ९ ॥ तानपास्य गताः केचित् पुन
र्युयुत्सवः । कुर्वन्तस्तव पुत्रस्य शासनं युद्धदुर्मदाः ॥ १० ॥ पानीयमपरे पीत्वा
पर्याश्वास्य च वाहनम् । वर्माणि च समारोप्य केचित् भरतसत्तम ॥ ११ ॥ समा
श्वास्यापरे भ्रातॄन् निक्षिप्य शिबिरेऽपि च । पुत्रानन्ये पितॄनन्ये पुनर्युद्धमरोचयन्
॥ १२ ॥ सज्जयित्वा रथान् केचित् यथामुख्यं विशाम्पते । आप्लुत्य पाण्डवानीकं पुन
र्युद्धमरोचयन् ॥ १३ ॥ ते शूराः किङ्किणीजालैः समाच्छन्ना बभासिरे । त्रैलोक्यवि
जये युक्ता यथा दैतेयदानवाः ॥ १४ ॥ आगम्य सहसा केचिद्रथैः स्वर्णविभूषितैः ।
पाण्डवानामनीकेषु धृष्टद्युम्नमयोधयन् ॥ १५ ॥ धृष्टद्युम्नोऽपि पाञ्चाल्यः शिखण्डी

धाम को दिखाई पड़े ।८। बहुतेरे उनको रथपर सवार करके एक मुहूर्त विश्वास
कराके प्यास रहित अच्छेप्रकार तृप्तकरके फिर युद्धके निमित्त भेजे गये
।९। कितने युद्धाभिलाषी लोग उन को छोड़कर आप के पुत्रकी आज्ञा को
मानकर फिर युद्धमें गये । १० । बहुतेरे युद्धदुर्मद जलको पीकर सवारीको आराम
देकर और कितने ही कवचोंको बदलकर युद्धमेंगये । ११ । हे भरतर्षभ कितनेही
अपने भाइयों को डेरेमें छोड़ विश्वासदेकर चलदिये किसीने पुत्रोंको किसीके
पिताओंको डेरेमें छोड़कर युद्धकोही स्वीकारकिया ।१२।और कितनेही शूरवीरों ने
उत्तम रथोंको सजकरके पांडवीसेनामें प्रवेशकरके फिर युद्धको स्वीकार किया
। १३। यह शूर छुद्रघंटिकाओंके जालोंसे युक्त ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि तीनों
लोकोंकी विजय में प्रवृत्त दैत्य और दानव होते हैं । १४ । कितने ही शूरवीरोंने
सुवर्ण से अलंकृत रथोंकी सवारी से पाण्डवोंकी सेनामें आकर धृष्टद्युम्न से युद्ध
किया । १५। पांचालदेशी धृष्टद्युम्न महारथी शिखण्डी और नकुल के पुत्र शता

away leaving their goals. Many warriors wounded and insensible, were seen gasping with the wounds of Arjun's arrows. Some were lifted on cars and again sent to fight after a few moments of respite. Some desirous of fighting left them and went to battle by the order of your son. Some went to fight after drinking water, giving rest to their beasts and changing their armours. Some left their brothers in their tents and went to battle after consoling them. Some left their sons and fathers in the tents and went to fight. Some prepared their cars and entered the Pandav army for the sake of fighting. Those brave warriors, with small bells, looked glorious like Daityas and Danavas desirous of victory over the three worlds. Some warriors, mounted on gold decked cars, entered the Pandav army and fought with Dhrishtadyumna 15 Dhrishtadyumna of Panchal

सञ्जय उवाच । अस्यतां यतमानानां शूराणामनिवर्तिनाम् । सङ्कल्पमकरोन्मोघं गाण्डीवेन धनञ्जयः ॥ १ ॥ इन्द्राशनिसमस्पर्शानविषह्यान्महौजसः । विसृजन् दृश्यते बाणान् धारा मुञ्चन्निवाम्बुदः ॥ २ ॥ तत् सैन्यं भरतश्रेष्ठ वध्यमानं किरीटिना । सम्प्रदुद्राव संग्रामात्तव पुत्रस्य पश्यतः ॥ ३ ॥ पितॄन् भ्रातॄन् परित्यज्य वयस्यानपि चापरे । हतधुर्या रथाः केचिद्धतसूतास्तथापरे । भग्नेषायुगचक्राक्षाः केचिदासन् विशाम्पते ॥ ४ ॥ अन्येषां सायकाः क्षीणास्तथान्ये शरपीडिताः । अक्षता युगपत् केचित् प्राद्रवन् भयपीडिताः ॥ ५ ॥ केचित् पुत्रानुपादाय हतभूयिष्ठबान्धवाः । विचुक्रुशुः पितॄनन्ये सहायानपरे पुनः ॥ ६ ॥ बान्धवांश्च नरव्याघ्र भ्रातॄन् सम्बन्धिनस्तथा । दुद्रुवुः केचि दुत्सृज्य तत्र तत्र विशाम्पते ॥ ७ ॥ बहवोऽत्र भृशं विद्धा मुह्यमाना महारथाः । नि

अध्याय २६ ॥

संजय बोले कि अर्जुनने गाण्डीव धनुषके द्वारा उन धनुषधारी उपाय करने वाले और मुख न मोड़नेवाले शूरवीरों के संकल्पों को निष्फल करदिया। १ । वह इन्द्रवज्रके समान स्पर्शवाले असह्य महा प्रकाशित बाणों को छोड़ता ऐसे दिखाई देताथा जैसे कि जलधाराओं को छोड़ता बादल दिखाई पड़ता है । २ । हेभरतर्षभ अर्जुन के हाथसे घायल वहसेना आपके पुत्रके देखतेहुये युद्धसे भागी । ३ । कितनेही भाई पिता और समान अवस्था वालों को भी छोड़करभागे कोई मृतक घोड़ेवाले और कोईमृतक सारथीवाले रथ दिखाई पड़े हे राजा कितने ही रथ टूटे ईषादण्ड जुआ और चक्रवाले हुये । ४ । और दूसरोंकेसायकों ने नहुतसाके बाण बहुतेरे बाणोंसे पीड़ावानहुये कितनेही बिना घायलहुये ही भयसे पीड़ित होकर भागे । ५ । और जिनके बहुत भाई बन्धुमारेगये ऐसे बहुतसे मनुष्य पुत्र भाई आदि को लेकरभागे कोई पिताको कोई साथी बान्धव नातेदार और भाइयों को पुकारे । ६ । और हे राजा कितनेही जहा तहां सामान को छोड़कर भागे फिर वहां बहुतसे महारथी कठिन घायल और अचेतहोकर अर्जुन के बाणोंसे घायल और

CHAPTER XXVI

Sanjaya said, ' With arrows discharged from the Gaudiv bow he made the resolutions of the unflinching warriors futile. Discharging vajra like arrows which were unbearable and bright, he looked like a cloud sending forth rain. Wounded by his arrows, the warriors fled in the presence of your son. Many fled away leaving their fathers brothers, and friends. Some lost their horses and others lost their drivers and had the parts of their cars broken. Others were deprived of arrows and were themselves wounded, while some fled in terror without receiving wounds 5 Those whose kinsmen were slain, fled away with the rest of their relations, Some called for their fathers, others their companions and kinsmen Some fled

मन्त स्म दृश्यन्ते पार्थबाणाहता नराः ॥ ८ ॥ तानन्ये रथमारोप्य सहवास्याय मुहूर्त कम । विश्रान्ताश्च वितृष्णाश्च पुनर्युद्धाय जग्मिरे ॥ ९ ॥ तानपास्य गताः केचित् पुनरेव युयुत्सवः । कुर्वन्तस्तव पुत्रस्य शासनं युद्धदुर्मदाः ॥ १० ॥ पानीयमपरे पीत्वा पर्याश्वास्य च वाहनम् । वर्माणि च समारोप्य केचिद् भरतसत्तम ॥ ११ ॥ समाश्वास्यापरे भ्रातॄन् निक्षिप्येन शिबिरेऽपि च । पुत्रानन्ये पितॄनन्ये पुनर्युद्धमरोचयन् ॥ १२ ॥ सज्जयित्वा रथान् केचिद् यथामुख्यं विशाम्पते । आप्लुत्य पाण्डवानीकं पुनर्युद्धमरोचयन् ॥ १३ ॥ ते शूराः किङ्किणीजाल- समाच्छन्ना बभासिरे । त्रैलोक्यविजये युक्ता यथा दैतेयदानवाः ॥ १४ ॥ आगम्य सहसा केचिद्रथैः स्वर्णविभूषितैः । पाण्डवानामनीकेषु धृष्टद्युम्नमयोधयन् ॥ १५ ॥ धृष्टद्युम्नोऽपि पाञ्चाल्यः शिखण्डी

भाग लेते दिखाई पड़े । ८ बहुतेरे उनको रथपर सवार करके एक मुहूर्त विश्राम कराके धकावटसे रहित अच्छेप्रकार तृप्तकरके फिर युद्धके निमित्त भेजे गये । ९ । कितने युद्धाभिलाषी लोग उन को छोड़कर आप के पुत्रकी आज्ञा को मानकर फिर युद्धमें गये । १० । बहुतेरे युद्धदुर्मद जलको पीकर सवारोंको आराम देकर और कितनेही कवचोंको बदलकर युद्धमेंगये । ११ । हे भरतर्षभ कितनेही अपने भाइयों को डेरेमें छोड़ विश्वासदेकर चलदिये किसीने पुत्रोंको किसीके पिताओंको डेरेमें छोड़कर युद्धकोही स्वीकारकिया ।१२।और कितनेही शूरवीरों ने उत्तम रथोंको अलंकृतकरके पांडवीसेनामेंप्रवेशकरके फिर युद्धको स्वीकार किया । १३। वह शूर क्षुद्रघंटिकाओंके जालोंसे युक्त ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि तीनों लोकोंकी विजय में प्रवृत्त दैत्य और दानव होते हैं । १४ । कितने ही शूरवीरोंने सुवर्ण से अलंकृत रथोंकी सवारी से पाण्डवोंकी सेनामें आकर धृष्टद्युम्न से युद्ध किया । १५। पांचालदेशी धृष्टद्युम्ने महारथी शिखण्डी और नकुल के पुत्र शता

away leaving their goods. Many warriors, wounded and insensible, were seen gasping with the wounds of Arjun's arrows. Some were lifted on cars and again sent to fight after a few moments of respite. Some, desirous of fighting left them and went to battle by the order of your son. Some went to fight after drinking water, giving rest to their beasts and changing their armours. Some left their brothers in their tents and went to battle after consoling them. Some left their sons and fathers in the tents and went to fight. Some prepared their cars and entered the Pandav army for the sake of fighting. Those brave warriors, with small bells, looked glorious like Daityas and Danavas desirous of victory over the three worlds. Some warriors, mounted on gold decked cars, entered the Pandav army and fought with Dhrishtadyumn 15 Dhrishtadyumn of Panchal

च महारथः । नाकुलिश्च शतानीकां रथानीकमयोधयत् ॥ १६ ॥ पाञ्चालयस्तु तत कुद्धः सैन्येन महता वृतः । अभ्ययावत् सुसंरब्धस्तावकान् हन्तुमुद्यतः ॥ १७ ॥ तत स्तावापतस्तस्य तव पुत्रो जनाधिप । बाणसंघाननेकान् वै प्रेषयामास भारत ॥ १८ ॥ धृष्टद्युम्नस्ततो राजंस्तव पुत्रेण धन्विना । नाराचैरर्द्धनाराचैः क्षिप्रं बाह्वोरुरसि चार्पितः ॥ १९ ॥ सोऽतिविद्धो महेष्वासस्तोत्रार्दित इव द्विपः । तस्याश्वांश्चतुरो बाणैः प्रेषया मास मृत्यवे । सारथेश्चास्य भल्लेन शिरः कायादपाहरत् ॥ २० ॥ ततो दुर्योधनो राजा पृष्ठमारुह्य वाजिनः । अपाक्रामद्धतरथो नातिदूरमरिन्दम ॥ २१ ॥ दृष्ट्वा तु हत विक्रान्तं स्वमनीकं महाबलः । तव पुत्रो महाराज प्रययौ यत्र सौबलः ॥ २२ ॥ ततो रथेषु भग्नेषु त्रिसाहस्रा महाद्विपाः । पाण्डवान् रथिनः पञ्च समन्तात् पर्यवारयन् ॥ २३ ॥ ते वृताः समरे पञ्च गजानीकेन भारत । अशोभन्त नरव्याघ्रा ग्रहा व्याप्ता घने

नीकने रथकी सेनासे युद्ध किया । १६ । इसके पीछे क्रोधयुक्त औरबड़ी सेनासे युक्त मारनेको सन्नद्ध धृष्टद्युम्न आपकेपुत्रों के सम्मुखगया । १७ । फिर उस धृष्टद्युम्नके आनेपर आपकेपुत्र राजा दुर्योधनने बाणोंके बहुतसे समूहोंको चलाया । १८ । हेराजन् इसके अनन्तर आपके धनुषधारी पुत्र से घायलहुये धृष्टद्युम्न ने शीघ्रही प्र[illegible] गरके हाथसे मांजेहुये नाराच अर्द्धनाराच और बत्सदन्त नाम बाणों से दोनों भुजा और छातीपर घायल किया । १९ । चाबुकसे पीड़ित हाथीके समान अत्यन्त घायल उसबड़े धनुषधारीने बाणों से उसके चारोंघोड़ोंको मारडाला और उसके सारथी के शिरको भी भल्लकेद्वारा धड़से अलग किया । २० । फिर शत्रुविजयी राजा दुर्योधन रथ टूटनेसे घोड़ेकीही पीठपर चढ़कर थोड़ीहीदूर हटगया । २१ । हे महाराज फिर आपका बड़ा बलवान् पुत्र सेनाको पराक्रमसे हीनदेखकर वहांगया जहांपरकि शकुनीथा । २२ । तदनन्तर रथोंके टूटनेपर तीनहजार बड़े हाथियोंने पांचों महारथी पांडवों को चारोंओर से घेरलिया । २३ । हे

valiant Sukhandi and Nakul's son Shatanik opposed the car-warriors. Enraged Dhrishtadyumn, desirous of slaying and accompanied by a large army, opposed your sons. Your son Duryodhan discharged many arrows at Dhrishtadyumn. Wounded by your valiant son, Dhrishtadyumn wounded him in return on the arms and breast, with well cleaned arrows. Like a wounded elephant, that great warrior slew his four horses and behead d the driver. 20 Prince Duryodhan the conqueror of foes, being depriv ed of his car, retreated on horse back. Then your valiant son, seeing the army lose heart, went to Shakuni. At the breaking down of cars three thousand elephants surrounded the five warriors on all sides. Surrounded by the army of elephants, the five heroes looked glorious like stars surrounded by clouds. Then the good marksman, Arjun, whose white horses were

रिव ॥ २४ ॥ ततोऽर्जुनो महाराज लब्धलक्षो महाभुज । विनिर्ययौ रथेनैव श्वेताश्व कृष्णसारथि ॥ २५ ॥ तैः समन्तात् परिवृतः कुञ्जरैः पर्वतोपमैः । नाराचैर्विमलैस्तीक्ष्णैर्गजानीकमपोथयत् ॥ २६ ॥ तत्रैकबाणनिहतानपश्याम महागजान् । पतितान् पात्य मानांश्च निर्भिन्नान् सव्यसाचिना ॥२७॥ भीमसेनस्तु तान् दृष्ट्वा नागान्मत्तगजोपमः करेण गृह्य महतीं गदामभ्यपतद्बली । अथाप्लुत्य रथात्तूर्णं दण्डपाणिरिवान्तकः ॥२८॥ तमुद्यतगदं दृष्ट्वा पाण्डवानां महारथम् । वित्रेसुस्तावका सैन्याः शकृन्मूत्रं प्रसुस्रुवुः । आविग्नञ्च बलं सर्वं गदाहस्ते वृकोदरे ॥ २९ ॥ गदया भीमसेनेन भिन्नकुम्भान्रजस्वलान् धावमानानपश्याम कुञ्जरान् पर्वतोपमान् ॥ ३० ॥ प्रधाव्य कुञ्जरास्ते तु भीमसेनगदाहताः । पेतुरार्तस्वरं कृत्वा छिन्नपक्षा इवाद्रयः ॥ ३१ ॥ तान् भिन्नकुम्भान् सुबहून् द्रवमाणानितस्ततः । पतमानांस्तु सम्प्रेक्ष्य वित्रेसुस्तव सैनिकाः ॥ ३२ ॥ युधि

भरतवंशी युद्धमें हाथियों की सेनासे घिरेहुये वह पांचों नरोत्तम ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि बादलों से घिरेहुये ग्रह होते हैं । २४ । इसके पीछे श्वेत घोड़े और श्रीकृष्णको सारथी रखनेवाला लक्ष्यभेदी महाबाहु अर्जुनरथ की सवारी मे बाहर निकला । २५ । चारोंओर पर्वताकार हाथियों से घिरेहुये उस अर्जुनने निर्मल और तीक्ष्ण नाराचों से हाथियों की सेनाका नाशकिया । २६ । वहांपर हमने अर्जुन के एकही बाणमे बड़े हाथियों को घायल मृतक और गिरता हुआ देखा । २७ । फिर मतवाले हाथीके समान पराक्रमी भीमसेन उन हाथियों को देखकर गदाको हाथमेंलेके हाथियों के सम्मुख गया इसके पीछे दण्ड हाथ में रखनेवाले कालके समान शीघ्रस्थसे कूदकर गदा उठानेवाले उसपाण्डवों के महारथीको देखकर आपकी सेनाके लोग भयभीत हुये और विष्ठामूत्र को भी गिरायाँ भीमसेन के गदा हाथ मे लेने से सब सेना व्याकुल हुई । २९ । हमने भीमसेन की गदा से उन पर्वताकार मदझाड़नेवाले हाथियों को टूटेकुंभ और दौड़ताहुआ देखा । ३० । फिर भीमसेनकी गदा से घायल वहहाथी भागे और टूटेपखवाले पर्वतोंके समान शब्द करते पृथ्वीपर गिरपड़े ।३१। आपकी सेनाकेलोग उनटूटे कुंभ इधर उधर से भागने और गिरते हुये बहुतसे हाथियों को देखकर भय

driven by Sri Krishn, came out in his car and destroyed the huge elephants with his sharp arrows. Then we saw huge elephants wounded, dead and fallen with single arrows of Arjun Then Bhimsen full of prowess like a mad elephant, seeing those elephants, opposed them with his mace Seeing the Pandav bearing his mace like the staff of Yam, your warriors were much terrified. All the army was distressed when Bhim took up his mace. Wounded by Bhim's mace, the elephants fled and fell down screaming like winged mountains. 31. Your warriors were terrified to see those elephants wounded and falling down. Enraged Yudhishthir, Nakul and

छित्रेऽपि संक्रुद्धो माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ । गार्ध्रपुत्रैः शितैर्बाणैर्जघ्नतुर्वै गजयोधिनः ॥ ३३ ॥ धृष्टद्युम्नस्तु समरे पराजित्य नराधिपम् । अपक्रान्ते तव सुते हयपृष्ठं समाश्रिते । दृष्ट्वा च पाण्डवान् सर्वान् कुञ्जरैः परिवारितान् ॥ ३४ ॥ धृष्टद्युम्नो महाराज सह सर्वैः प्रभद्रकैः । पुत्रः पाञ्चालराजस्य जिघांसुः कुञ्जरान् ययौ ॥ ३५ ॥ अदृष्ट्वा तु रथानीके दुर्य्योधनमरिन्दमम् । अश्वत्थामा कृपश्चैव कृतवर्मा च सात्वतः । अपृच्छन् क्षत्रियास्तत्र क्व नु दुर्य्योधनो गतः । ३६ ॥ अपश्यन्तो राजानं वर्तमाने जनक्षये । मन्वाना निहतं तत्र तव पुत्रं महारथाः । विषण्णवदना भूत्वा पर्य्यपृच्छन्त ते सुतम् ॥ ३७ ॥ आहुः केचिद्धते सूते प्रयातो यत्र सौबलः ॥ ३८ ॥ अपरे त्वब्रुवंस्तत्र क्षत्रिया भृशविक्षताः । दुर्य्योधनेन किं कार्य्यं द्रक्ष्यध्वं यदि जीवति । युध्यध्वं सहिताः सर्वे किं वो राजा करिष्यति ॥ ३९ ॥ ते क्षत्रियाः क्षतैर्गात्रैर्हतभूयिष्ठवाहनाः । शरैः सम्पीड्यमानाश्च नातिव्यक्तमिवाब्रुवन् ॥ ४० ॥ इदं सर्वं बलं हन्मो येन स्म परि

भीतहुये । ३२ । क्रोधयुक्त युधिष्ठिर और पांडव नकुल सहदेवने भी गृध्रपंख से जटित तीक्ष्ण बाणों से लोगोंको यमलोकमें पहुंचाया । ३३ । धृष्टद्युम्न युद्धमें राजा को पराजय करके और अश्वकी सवारी से आपके पुत्रके हटजाने पर । ३४ । सब पाण्डवोंको हाथियों से घिराहुआ देखकर सबप्रभद्रकों समेत हाथियों के मारने का अभिलाषीहोकर चलदिया । ३५ । और शत्रुविजयी दुर्योधन को रथोंकी सेना में न देखकर उन अश्वत्थामा, कृपाचार्य और यादव कृतवर्म्माने क्षत्रियों से पूछा कि दुर्योधन कहांगया । ३६ । अर्थात मनुष्यों का नाश वर्त्तमान होनेपर वहां आपके पुत्र महारथी राजाको न देखते और मृतकहुआ मानते उनवीरों ने मुख को रूपांतर करके सबसे आपके पुत्रको पूछा । ३७ । कितनेही लोगोंने तो यहकहा कि सारथीके मरनेपर वह वहां गया है जहांपर कि राजा शकुनी है । ३८ । तब अत्यन्त घायल दूसरे क्षत्रीबोले कि दुर्योधन से आपको क्या काम है देखो जो जीवता है सब मिलकर युद्धकरो राजा तुम्हारा क्याकरेगा । ३९ । जिनकी बहुतसी सवारियां मारीगईं वहसत्री घायल अंग बाणोंसे पीडित वहे धीरपनेसे यहबोले । ४० ।

Sahadev, too, slew the warriors with their arrows fitted with vulture feathers. Having vanquished the king, who retreated on horseback, Dhrishtadyumna saw the Pandavas surrounded by elephants and went on with the Panchalas to slay them. 35 Not seeing Duryodhan the destroyer of foes in the midst of warriors Ashwathama, Kripacharya and Kritvarma asked them of his whereabouts. They thought that your son was dead and with altered appearance asked about him. They were told that he had gone to Shakuni. Others much wounded said "What have you to do with Duryodhan who is living? You must fight together, what have you to do with the king?" The kshatriyas much wounded and deprived of their beasts, said gently, ' Let us slay the army with which we are surrounded

घातिताः । एते सर्वे गजान् हत्वा उपायान्ति स्म पाण्डवाः ॥ ४१ ॥ श्रुत्वा तु वचनं तेषामश्वत्थामा महाबलः । भित्त्वा पाञ्चालराजस्य तदनीकं दुरुत्सहम् ॥ ४२ ॥ कृपश्च कृतवर्मा च प्रययुर्यत्र सौबलः । रथानीकं परित्यज्य शूराः सुदृढधन्विनः ॥ ४३ ॥ ततस्तेषु प्रयातेषु धृष्टद्युम्नपुरस्कृताः । आययुः पाण्डवा राजन् विनिघ्नन्तः स्म तावकान् ॥ ४४ ॥ दृष्ट्वा तु तानापततः सम्प्रहृष्टान् महारथान् । पराक्रान्तांस्तथा वीरान्निराशं जीवितं तदा । विवर्णमुखभूयिष्ठमभवत्तावकं बलम् ॥ ४५ ॥ परिक्षीणायुधान् दृष्ट्वा तानहं परिवारितान् । राजन् बलेन द्व्यङ्गेन त्यक्त्वा जीवितमात्मनः ॥ ४६ ॥ आत्मना पञ्चमोऽयुध्यं पाञ्चालस्य बलेन ह । तस्मिन् देशे व्यवस्थाप्य यत्र शारद्वतः स्थितः ॥ ४७ ॥ सम्प्रयुद्धा वयं पञ्च किरीटिशरपीडिताः । धृष्टद्युम्नं महानीकं तत्र नोऽभूद्रणो महान् । जितास्तेन वयं सर्वे व्यपयाम रणात्ततः ॥ ४८ ॥ अथापश्यं सात्यकिं तमुपा

कि हम इस सब सेनाको मारें जिससे कि चारोंओरको घिरेहुये हैं यह सब पांडव हाथियोंको मारकर सम्मुखआये । ४१ । फिर उन्हीं के वचनको सुनकर बड़े पराक्रमी अश्वत्थामा कृपाचार्य कृतवर्मा यह तीनो कठिनता से सम्मुखता के योग्य राजा पांचाल की सेनाको चीरकर वहांगये जहांपर कि शकुनी था अर्थात् यह दृढ़ धनुषधारी शूर रथोंकी सेनाको त्याग करके वहांगये हे राजा इनके चले जानेपर धृष्टद्युम्न को अग्रवर्ती रखनेवाले पांडव आपके शूरवीरों को मारतेहुये वहां आपहुंचे । ४४ । तब उन अत्यन्त प्रसन्न आतेहुये महारथियों को देखकर और उसप्रकार पराक्रम करनेवाले वीरोंको जानकर आपकी सेना जीवन से निराश होकर अत्यन्त विवर्णमुखवाली होगई । ४५ । हे राजा मैं उन नाशवान् सेनाओं को और चारोंओर से घिरेहुओं को देखकर अपने जीवन को त्यागकरके दो अंग रखनेवाली सेनासमेत । ४६ । उसस्थानपर गया जहांपर कि कृपाचार्य वर्त्तमानथे वहां नियतहोकर अपने शरीरसे पांचवें राजा पांचालकी सेना से युद्ध करनेलगा । ४७ । अर्जुनके बाणों से पीड़ामान् हमपांचों पीड़ितहुये वहां धृष्टद्युम्न से हमारा महारौद्र और घोरयुद्धहुआ हम सब उससे पराजय होकर

The Pandavas having slain elephants are coming towards us, 41. Kripacharya Ashwathama and Kritvarma rushed through the army of Panchal and went to the place where Shakuni was. At their departure, the Pandavas led by Dhrishtadyum, came on slaying your warriors. Seeing those powerful warriors coming towards them in fury, your warriors with altered appearance became hopeless of life. [illegible], I became hopeless of life and [illegible] fighting with the Prince [illegible]nded with the arrows of Arjun. There we fought a dreadful fight with Dhrishtadyumn, and were defeated by him. 48. Then I saw Satyaki coming towards us.

यान्तं महारथम् । रथैश्चतुःशतैर्वीरो मामभ्याद्रवदाहवे ॥ ४९ ॥ धृष्टद्युम्नादहं मुक्तः कथञ्चिच्छ्रान्तवाहनात् । पतितो माधवानीकं दुष्कृती नरकं यथा । तत्र युद्धमभूद्घोरं मुहूर्त्तमतिदारुणम् ॥ ५० ॥ सात्यकिस्तु महाबाहुर्मम हत्वा परिच्छदम् । जीवग्राहमगृह्णान्मां मूर्च्छितं पतितं भुवि ॥ ५१ ॥ ततो मुहूर्त्तादिव तद्गजानीकमवध्यत । गदया भीमसेनेन नाराचैरर्जुनेन च ॥ ५२ ॥ प्रतिपिष्टैर्महानागैः समन्तात् पर्वतोपमैः । नातिप्रसिद्धेव गतिः पाण्डवानामजायत ॥ ५३ ॥ रथमार्गं ततश्चक्रे भीमसेनो महाबलः । पाण्डवानां महाराज व्यपाकर्षन् महागजान् ॥ ५४ ॥ अश्वत्थामा कृपश्चैव कृतवर्मा च सात्वतः । अपश्यन्तो रथानीके दुर्योधनमरिन्दमम् । राजानं मृगयामा

सहाते हटमाये । ४८ । इसके पीछे मैंने सम्मुख आनेवाले सात्यकि को देखा वहवीर चारसौ रथियों समेत मेरे सम्मुख दौड़ा । ४९ । और मैं कुछ थकी सवारी वाले धृष्टद्युम्न से छूटा और कृतवर्माकी सेनाकी ओर ऐसे दौड़ा जैसे पापी नरक को जाता है वहांपर एकमुहूर्त्त तक घोरयुद्धहुआ । ५० । फिरमहाबाहु सात्यकिने मेरे घोड़े आदिको मारकर मुझ अचेत और पृथ्वीपर गिरहुये को जीवता पकड़ लिया । ५१ । इसके एक मुहूर्त्तमेंही भीमसेन की गदा और अर्जुन के नाराचोंसे वह हाथियों की सेना नाशवानहुई । ५२ । चारोंओरसे पर्वतोंके समान चूर्णशरीर वाले बड़े हाथियों से पांडवों का मार्ग अविदितसा होगया । ५३ । हे महाराज इसके पीछे हाथियों को हटाते बड़े पराक्रमी भीमसेनने पांडवों के रथमार्गको साफ किया । ५४ । अश्वत्थामा, कृपाचार्य यादव कृतवर्मा रथकी सेनामें उस शत्रु विजयी दुर्योधनको न देखनेवाले इनसब लोगोंने आपके पुत्र महारथी राजा दुर्योधनको निश्चय और खोजकिया । ५५ । और धृष्टद्युम्न को छोड़कर वहांगये

He rushed against me with four hundred warriors and I left Dhrishta dyumn whose beasts were tired. I ran towards the army of Kritvarma like a sinful man falling into hell. There a dreadful battle was fought for some time 50 Then Satyaki slew my horse I fell down senseless on the ground and he seized me alive Then the warriors of our army were destroyed by the arrows of Ajrun and by Bhim's mace. The path of the Pandavas was obstructed by the bodies of elephants Then Bhim dragged aside the elephants and cleared the way for the cars of the Pandavas. Ashwathama, Kripacharya and Kritvarma the Yadav, not seeing Duryodhan in the midst of the warriors, ran on in search of him They left Dhrishta dyumn and went to the place where Shakuni was. They were much

सुस्तम पुत्रं महारथम् ॥ ५५ ॥ परित्यज्य च पाञ्चालान् प्रयाता यत्र सौबलः । राज्ञो ह्यदर्शनसंविग्ना वर्तमाने जनक्षये ॥ ५६ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि संकुलयुद्धे पञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥

सञ्जय उवाच । गजानीके हते तस्मिन् पाण्डुपुत्रेण भारत । वध्यमाने बले चैव भीमसेनेन संयुगे ॥ १ ॥ चरन्तं च तथा दृष्ट्वा भीमसेनमरिंदमम् । दण्डहस्तं यथा क्रुद्धमन्तकं प्राणहारिणम् ॥ २ ॥ समेत्य समरे राजन् हतशेषाः सुतास्तव । अदृश्यमाने कौरव्ये पुत्रे दुर्योधने तव । सोदर्याः सहिता भूत्वा भीमसेनमुपाद्रवन् ॥ ३ ॥ दुर्मर्षणः श्रुतान्तश्च जैत्रो भूरिबलो रविः । जयत्सेनः सुजातश्च तथा दुर्विषहोऽरिहा ॥ ४ ॥ दुर्विमोचननामा च दुष्प्रधर्षस्तथैव च । श्रुतर्वा च महाबाहुः सर्वे युद्धविशारदाः

जहां पर कि शकुनी था यहतब मनुष्यों का नाशहोने पर और राजाको न देखने से व्याकुल हुये ॥ ५६ ॥

अध्याय २६ ॥

संजय बोले कि पाण्डव अर्जुन के हाथसे उस रथकी सेनाके मारने और युद्ध में भीमसेन के हाथसे सेनाके नाशहोनेपर । १ । और क्रोधयुक्त प्राणों के हरनेवाले दंडधारी कालके समान घूमते शत्रुविजयी भीमसेनको, देखकर । २ । मरनेसे शेष बचेहुये आपकेपुत्र युद्ध में, इकट्ठे होकर अपने बड़ेभाई कौरव दुर्योधन के दिखाई न देनेपर सब सगेभाई इकट्ठे होकर भीमसेन के सम्मुख गये । ३ । दुर्मषेण, श्रुतान्त, जयत्र, भूरिवल, रवि जयत्सेन, सुजात, शत्रुहन्ता दुर्वेश, दुर्वि

distressed to see their army destroyed and at not finding the king there." 56.

CHAPTER XXXVI

Sanjaya said, "At the destruction of the car-warriors by Arjun and Bhim and at the sight of Bhim roaming with his mace like the staff of Yam, your remaining sons, coming together and not seeing Duryodhan among them, opposed Bhim in a body. Durmarshan Shrutant, Jayatra, Bhuribal, Ravi, Jayatsen, Sujat, Durvash the destroyer of foes, Durvimochan, Dushpradharsh and brave Shrutarva,

॥ ५ ॥ इत्येते सहिता सर्वा तव पुत्राः समन्ततः । भीमसेनमभिद्रुत्य रुरुधुः सर्वतो दिशम् । ६ ॥ ततो भीमो महाराज स्वरथ पुनरास्थितः । मुमोच निशितान् बाणान् पुत्राणां तव मर्मसु ॥ ७ ॥ ते कीर्य्यमाणा भीमेन पुत्रास्तव महारणे । भीमसेनमपाकर्षन् प्रवणादिव कुञ्जरम् ॥ ८ ॥ ततः क्रुद्धो रणे भीम शिरो दुर्मर्षणस्य ह । क्षुरेण प्रमथ्य आशु पातयामास भूतले । ततोऽपरेण भल्लेन सर्वावरणभेदिना । श्रुतान्तमवधीद्भीमस्तव पुत्र महारथम् ॥ १० ॥ जयत्सेन ततो विद्ध्वा नाराचेन हसन्निव । पातयामास कौरव्य रथोपस्थादरिन्दम । स पपात रथाद्राजन् भूमौ तूर्णं ममार च ॥ ११॥ श्रुतर्वा च ततो भीमं क्रुद्धो विव्याध वै सुत । शतेन गृध्रवाजानां शराणां नतपर्वणाम् ॥ १२॥ ततः क्रुद्धो रणे भीमो जैत्रं भूरिबलं रविम् । त्रीनेतांस्त्रिभिरानर्च्छद्विषाग्निप्रतिमैः शरैः ॥ १३ । ते हता न्यपतन् भूमौ स्यन्दनेभ्यो महारथाः । वसन्ते पुष्पशबला निकृत्ता इव

मोचन, दुष्प्रधर्ष महाबाहु श्रुतर्वा युद्ध में कुशल इन सब आपके पुत्रों ने साथ होकर चारोंओरसे भीमसेनके सम्मुख जाकर सब दिशाओं से रोका । ६ । हे महाराज तब तो भीमसेन फिर अपने रथपर सवारहुये और आपके पुत्रों के मर्म स्थलोंपर तेजधारवाले बाणोंको मारा । ७ । बड़ेयुद्ध में भीमसेनके हाथसे घायल सब आपके पुत्रोंने भीमसेनको ऐसे घेरलिया जैसे कि नाकेस्थान से हाथी को घेरलेते हैं ८ । तदनन्तर क्रोधयुक्त भीमसेन ने दुर्मर्षण के शिर को क्षुरम से काटकर शीघ्रही पृथ्वीपर गिराया फिर भीमसेन ने सब कवचों के काटनेवाले दूसरे भल्लसे आपके पुत्र महारथी श्रुतान्तकोमारा । १० । फिर हँसतेहुये शत्रु विजयीने जयत्सेनको नाराच से घायल करके उस कौरवको भी रथके स्थानसे गिराया हे राजा वह शीघ्रही रथसे गिरतेही मरगया । ११ । इसकेपीछे आपके पुत्र क्रोधयुक्त श्रुतर्वाने गृध्रपक्षसे जटित टेढे पर्ववाले सौबाणों से भीमसेन को घायल किया । १२ । इसके पीछे युद्धमें क्रोधयुक्त भीमसेन ने विष अग्निके समान तीनबाणों से जयत्र भूरिबल और रवि इन तीनोंको घायल किया ।१३। वह युवक

all these, clever in fighting, checked Bhim from all sides. 6. Then Bhim again mounted his car and hit your sons on the vital parts. Wounded by Bhim's arrow your sons surrounded him like an elephant. Then Bhim cut Durmarshan's head with a sharp arrow, and with another armour piercing dart, he slew Srutant. 10. That destroyer of foes, with a smile, wounded Jayatsen with an arrow and made him fall down from his car. He soon fell down dead from his car. Then your son Shrutarwa, much enraged, wounded Bhim with a hundred sharp arrows. Enraged Bhim wounded Jayatra, Bhuribal, and Ravi with three arrows like poison or fire, but they fell down from their cars like blooming kinshuk trees felled in spring. Then Bhim the destroyer of foes wounded and slew Durvi

किंशुका ॥ १४ ॥ ततोऽपरेण तं भल्लेन नाराचेन परन्तपः दुर्विमोचनमाहत्य प्रेषयामास मृत्यवे ॥ १५ ॥ स हतः प्रापतद्भूमौ स्यन्दनाद्रथिनांवरः । गिरेस्तु कूटजो भग्नो मारुतेनेव पादप ॥ १६ ॥ दुष्प्रधर्षं ततश्चैव सुजातञ्च सुतौ तव । एकैकं न्यवधीत् संख्ये द्वाभ्यां द्वाभ्याञ्चमूमुखे । तौ शिलीमुखविद्धाङ्गौ पेततू रथसत्तमौ ॥ १७॥ ततः पतन्तमपरमभिवीक्ष्य सुतं तव भल्लेन पातयामास भीमो दुर्विषहं रणे । सपपात हतो वाहात् पश्यतां सर्वधन्विनाम ॥ १८ ॥ दृष्ट्वा तु निहतान् भ्रातॄन् बहूनेकेन संयुगे । अमर्षवशमापन्नः श्रुतर्वा भीममभ्ययात् ॥ १९ । विक्षिपन् सुमहच्चापं कार्त्तस्वरविभूषितम् । विसृजन् सायकांश्चैव विषाग्निप्रतिमान् बहून् ॥ २० ॥ स तु राजन् धनुश्छित्त्वा पाण्डवस्य महामृधे । अथैनं छिन्नधन्वानं विंशत्या समवाकिरत् ॥ २१ ॥ ततोऽन्यद्धनुरादाय भीमसेनो महारथः अवाकिरत्तव सुतं तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥ २२ ॥ महद्

महारथी रथोंसे ऐसे गिरपड़े जैसे कि वसन्तऋतु में कटेहुये पुष्पित किंशुक के वृक्ष गिरते हैं। १४। इसके पीछे शत्रुसंतापी भीमसेन ने दूसरे भल्लनाम नाराच से दुर्विमोचन को घायल करके मृत्युके वशकिया। १५। वह महारथी मृतक होकर रथसे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि पर्वतपर उत्पन्न होनेवाला वायु से टूटाहुआ वृक्ष गिरताहै।१६। इसके पीछे सेनाके मुखपर दुष्प्रधर्ष और सुजातनाम आपके पुत्रोंको युद्धमें दो२ बाणसे मारा वह उत्तमरथी शिलीमुख बाणों से घायल शरीर होकर पृथ्वीपर गिरपड़े। १७। इसके पीछे भीमसेन ने युद्धभूमि में गिरते हुये आपके पुत्रको देखकर दुर्विषहको भी भल्लसे युद्धमेंगिराया वह मराहुआ सब धनुषधारियों के देखते रथसे गिरपड़ा। १८। युद्धमें एक के हाथसे मरेहुये बहुत भाइयों को देखकर क्रोधमें भराहुआ श्रुतर्वा भीमसेनके सम्मुख गया। १९। सुवर्णसे अलंकृत बड़े धनुषको टंकारता विष अग्निके समान बहुत बाणों को छोड़ता हुआ गया। २०। हे राजा इसने उस बड़े युद्धमें भीमसेन के धनुषको काटकर इसटूटे धनुषवाले को बीस बाणसे घायल किया।२१। इसके पीछे महारथी भीमसेनने दूसरे धनुषको लेकर आपके पुत्रको घायल करके तिष्ठ२वचन कहा। २२। उन दोनों

mochan with another dart. 15 That warrior fell down dead from his car like a tree struck down by the wind from a hill Then he slew your sons Dushpradharsh and Sujat and those good warriors fell down wounded on earth Seeing them fall down, Bhim slew Durvishah, who fell down from his car in the presence of archers Seeing many brothers slain by one, Shrutarva opposed Bhim in a rage Twanging his huge bow and discharging numerous arrows like poison or fire he went before him. 20 He cut Bhim's bow and wounded him with twenty arrows. Valiant Bhim took up another bow and wounded your son with a cry of 'stay, stay.' The battle between them was like that of Jambh and Indra There they covered the sky

सोऽतय युद्ध चित्ररूपं भयानकम् । शक्रस्य समरं पूर्व जम्भस्येव विभो ॥ २३ ॥
तयोस्तत्र शरैर्मुक्तैर्यमदण्डनिभैः शितैः । समाच्छन्ना धरा सर्वा खञ्च सर्वा दिश
स्तथा ॥ २४ ॥ ततः श्रुतर्वा संक्रुद्धो धनुरादाय सायकैः । भीमसेनं रणे राजन् बाह्वो
रुरसि चार्दयत् ॥ २५ ॥ सोऽतिविद्धो महाराज तव पुत्रेण धन्विना । भीमः संचुक्षुभे
क्षुब्धः पर्वणीव महोदधिः ॥ २६ ॥ ततो भीमो रुषाविष्टः पुत्रस्य तव मारिष । सारथिं
चतुरश्चाश्वान् बाणैर्निन्ये यमक्षयम् । २७ । विरथं तं समालक्ष्य विशिखैर्लोमवाहिभिः
अवाकिरदमेयात्मा दर्शयन् पाणिलाघवम् ॥ २८ । श्रुतर्वा विरथो राजन्नाददे खड्गचर्
मणी । अथास्याददतः खड्गं शतचन्द्रञ्च भानुमत् । क्षुरप्रेण शिरः कायात् पातया-
मास पाण्डवः ॥ २९ ॥ छिन्नोत्तमाङ्गस्य ततः क्षुरप्रेण महात्मनः । पपात कायः स रथा
द्वसुधामनुनादयन् । ३० । तस्मिन् निपतिते वीरे तावका भयमोहिता । अभ्यद्रवन्त

का महा अपूर्व और भयकारी युद्ध ऐसा शोभायमान हुआ जैसा कि पूर्वसमय
में जंभ और इन्द्रका युद्ध शोभित हुआ था । २३ । वहां उन दोनों के यमराज
के दण्डके समान तेजवाणों से सब पृथ्वी आकाश और दिशा विदिशा ढक
गई । २४ । हे राजा इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतर्वाने धनुषको लेकर युद्धमें
शायकों से भीमसेनको दोनों भुजाओं समेत छातीपर घायल किया । २५ । हे महा
राज आपके धनुषधारी पुत्रके हाथसे अत्यन्त घायल होकर क्रोधयुक्त वह भीमसेन
ऐसे वेगमें मासहोगया जैसे कि पर्वकाल में समुद्र वेगवान् होजाता है । २६ ।
हे प्रभु इसके पीछे क्रोधसे पूर्ण भीमसेन ने बाणों से आपके पुत्रके सारथी और
चारोंघोड़ों को यमलोक में पहुंचाया । २७ । हस्तलाघव को दिखाते हुये बड़े
साहसी भीमसेनने उसको विरथदेखकर विशिखों से ढकदिया । २८ । हे राजा रथसे रहित
श्रुतर्वाने खड्ग और ढालकोलिया फिर खड्ग और सौ चन्द्रमा रखनेवाली प्रका
शित ढालके धारण करनेवाले इस श्रुतर्वाके शिरको भी भीमसेनने क्षुरप्रकेद्वारा
शरीरसे जुदाकरदिया । २९ । तब उसका शरीरभी पृथ्वी को शब्दायमान करता
रथसे गिरपड़ा । ३० । उसवीरके गिरनेपर भयसे अचेत युद्धके अभिलाषी आप

and directions with their darts like the staff of Yam. Then Srutarva, much enraged wounded Bhim on both arms and breast. 25. Exceedingly wounded by your son, Bhim became furious like the sea at full moon. They slew your son's horses and driver and covered him with his sharp arrows Deprived of car, Shrutarva took shield and sword, but Bhim cut his head also with an arrrw and it fell down on earth with a crash. 30. At the fall of that warrior, your soldiers insensible with fear and desirous of fighting, faced Bhim. He checked the army, advancing like the ocean and armed with arms and armour and they surrounded him on all sides. Then Bhim, surrounded by them, wounded them with his sharp arrows as Indra does asurs. Then

संग्रामे भीमसेनं युयुत्सवः ॥ ३१ ॥ तानापततः पवाद्य हतशेषाद्बलार्णवात् । दारात प्रतिजग्राह भीमसेनः प्रतापवान् । ते तु तं वै समासाद्य परिवव्रुः समन्ततः ॥ ३२ ॥ ततस्तु संवृतो भीमस्तावकैर्निशितैः शरैः । पीडयामास तान् सर्वान् महेन्द्रोऽसुरानिव ॥ ३३ ॥ ततः पञ्च शतान् हत्वा सवरूथान् महारथान् । जघान कुञ्जरानीकं पुनः सप्तशतं युधि ॥ ३४ ॥ हत्वा दशसहस्राणि पत्तीनां परमेषुभिः । वाजिनाञ्च शतान्यष्टौ पाण्डवः स विराजते ॥ ३५ ॥ भीमसेनस्तु कौन्तेयो हत्वा युद्धे सुतांस्तव । मेने कृतार्थमात्मानं सफलं जन्म च प्रभो ॥ ३६ ॥ तं तथा युध्यमानं च विनिघ्नन्तञ्च तावकान् । ईक्षितुं नोत्सहन्ते स्म तव सैन्यानि मारिष ॥ ३७ ॥ विद्राव्य तु कुरून् सर्वांस्तांश्च हत्वा पदानुगान् । दोर्भ्यां शब्दं ततश्चक्रे त्रासयानो महाद्विपान् ॥ ३८ ॥ हतभूयिष्ठयोधा तु तव सेना विशाम्पते । किञ्चिच्छेषा महाराज कृपणा समपद्यत ॥ ३९ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि दुर्मर्षणादिवधे षड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

के शूरवीर लोग युद्धमें भीमसेनके सम्मुखगये । ३१ । मरनेसे शेषबचीहुई समुद्र के समान शीघ्र आनेवाली सेनाके कवच शस्त्रधारी शूरवीरोंको प्रतापवान भीमसेन ने शीघ्रही रोका उन्होंनेभी उसको पाकर चारोंओरसे घेर लिया । ३२ । इसके पीछे घिरेहुये भीमसेनने आपके उन सबशूरवीरों को तीक्ष्णधारवाले बाणों से ऐसे पीड़ामान किया जैसे कि असुरोंको इन्द्र पीड़ावान करता है । ३३ । इसके पीछे युद्धमें पांचसौ कवचधारी महारथियों को मारकर फिर सातसौ हाथियोंकी सेना को मारा । ३४ । वह श्रेष्ठ भीमसेन बाणोंसे दशहजार पत्तियों और आठसौ घोड़ों को मारकर शोभायमान हुआ । ३५ । हे प्रभु कुन्तीके पुत्र भीमसेनने आपके पुत्रों को मारकर अपने को अभीष्ट प्राप्तकरनेवाला और सफलजन्मवाला माना । ३६ । हे श्रेष्ठ आपकी सेनाके लोगोंने उसप्रकार युद्ध करनेवाले और आपके शूरोंके मारनेवाले उस भीमसेनके देखनेको उत्साह नहीं किया । ३७ । फिर सब कौरवोंको भगाकर और उन पीछे चलनेवालोंको मारकर बड़े हाथियों के डरानेवालेने बड़ी भुजाओं से शब्द किया । ३८ । हेमहाराज राजा धृतराष्ट्र फिर आपकी सेना जिस के कि बहुतसे शूरवीर मारेगये वह कुछशेष और दुःखीआकार वर्त्तमानहुई ३९ ॥

slaying five hundred warriors in battle, he put seven hundred elephants to death Having slain ten thousand foot and eight hundred horse, he looked glorious 35 Having slain your sons, Bhim thought that the desire of his heart was accomplished. Your warriors durst not oppose Bhim the slayer of your sons. Having routed the Kauravas and slain their followers, Bhim the terror of elephants made a noise with the beating of his arms Then O king, your army, of which great warriors were slain and few only remained, stood dejected and distressed." 30

सञ्जय उवाच । दुर्य्योधनो महाराज सुदर्शश्चापि ते सुतः । हतशेषौ तदा संख्ये वाजिमध्ये व्यवस्थितौ ॥ १ ॥ ततो दुर्य्योधनं दृष्ट्वा वाजिमध्ये व्यवस्थितम् । उवाच देवकीपुत्र कुन्तीपुत्रं धनञ्जयम् ॥ २ ॥ शत्रवो हतभूयिष्ठा ज्ञातयः परिपालिताः । गृहीत्वा सञ्जयञ्चासौ निवृत्तः शिनिपुङ्गव. ॥ ३ ॥ परिश्रान्तश्च नकुलः सहदेवश्च भारत । योधयित्वा रणे पापान् धार्त्तराष्ट्रान् महानुगान् ॥ ४ ॥ दुर्य्योधनमभित्यज्य त्रय एते व्यवस्थिता । कृपश्च कृतवर्मा च द्रौणिश्चैव महारथः ॥ ५ ॥ असौ तिष्ठति पाञ्चाल्यः श्रिया परमया युतः । दुर्य्योधनबलं हत्वा सह सर्वैः प्रभद्रकैः ॥ ६ ॥ असौ दुर्य्योधन पार्थ वाजिमध्ये व्यवस्थित । छत्रेण ध्रियमाणेन प्रेक्षमाणो मुहुर्मुहुः ॥ ७ ॥ प्रतिव्यूह्य बलं सर्वं रणमध्ये व्यवस्थित । एनं हत्वा शितैर्बाणै. कृतकृत्यो भविष्यसि ॥ ८ ॥ गजानीकं हतं दृष्ट्वा त्वाञ्च प्राप्तमरिन्दम । यावन्न विद्रवन्त्येते तावज्जहि

अध्याय २७ ॥

संजय बोले हे महाराज तब मरनेसे बचेहुये आपके पुत्र दुर्योधन और सुदर्श युद्धमें घोड़ों के मध्यवर्त्ती होकर वर्त्तमानहुये ।१। इसके पीछे देवकीनन्दन श्रीकृष्णजी घोड़ोंके मध्य में दुर्योधन को देखकर कुन्तीके पुत्र अर्जुन से बोले ।२। कि शत्रु बहुत नाशयुक्तहुये और जातवाले हटायेगये ;और यह सात्यकि सञ्जय कोपकड़कर लौटाथे।भरतवंशी नकुल:और सहदेवधृतराष्ट्रकपापी पुत्रों और उनके सब साथियोंसे लड़तेरथकगये ।४। और कृपाचार्य्य कृतवर्मा और महारथी अश्व स्थामा यह तीनों दुर्योधन को त्यागकरके नियतहुये । ५ । बड़ी शोभासे युक्त यह धृष्टद्युम्न दुर्योधनकी सेनाको मारकर सबप्रभद्रकों समेत नियत है । ६ । हे राजा शिरपर धारण कियेहुये छत्र समेत बारम्बार देखता हुआ यह दुर्योधन घोड़ों के मध्यवर्ती । ७ । सब सेनाको अलंकृत करके युद्ध भूमिमें उपस्थित होकर नियत है इसको तीक्ष्ण बाणों से मारकर कृतकृत्य होजायगा । ८ । रथकी सेनाको मृतक और तुझ शत्रुविजयी को वर्त्तमान देखकर जबतक यह लोग नहींभागे तबतक इस

CHAPTER XXVII.

Sanjaya said, "Then your remaining sons Duryodhan and Sudarshan, with their horsemen, stood in the field of battle. Then Shri Krishn the son of Devaki, seeing Duryodhan in the midst of horsemen, said to Arjun, "Many enemies are destroyed and put to flight. Satyaki has brought Sanjaya a captive. Nakul and Sahadev are tired of fighting with the sons of Dhritrashtra and their followers and Kripacharya, Kritvarma and Ashwathama have left Duryodhan Having destroyed Duryodhan's army, Dhrishtadyumn stands with the Prabhadrakas. 6 Under the shade of an umbrella Duryodhan stands among horsemen throwing sidelong glances. Slay him with your sharp arrows to accomplish your purpose. Slay them before they run away at your sight and the

सुयोधनम् ॥ ९ ॥ यातु कश्चित्तु पाञ्चाल्यं क्षिप्रमागम्यतामिति । परिश्रान्तबलस्तात
नैष मुच्येत किल्बिषी ॥ १० ॥ तव हत्वा बलं सर्वं संग्रामे धृतराष्ट्रजः । जितान् पांडु
सुतान् मत्वा रूपं धारयते महत् ॥ ११ ॥ निहतं स्वबलं मत्वा पीडितञ्चापि पांडवैः ।
युद्धमेष्यति संग्रामे वधायैवात्मनो नृपः । एवमुक्तः फाल्गुनस्तु कृष्णं वचनमब्रवीत्
॥ १२ ॥ धृतराष्ट्रसुताः सर्वे हता भीमेन मानद । यावेतावास्थितौ कृष्ण तावद्य न भवि
ष्यतः ॥ १३ ॥ हतो भीष्मो हतो द्रोणः कर्णो वैकर्त्तनो हतः । मद्रराजो हतः शल्यो हतः
कृष्ण जयद्रथः ॥ १४ ॥ हयाः पञ्चशताः शिष्टाः शकुनेः सौबलस्य च । रथानाञ्च शते
शिष्टे द्वे एव तु जनार्दन । दन्तिनाञ्च शतं साग्रं त्रिसाहस्राः पदातयः ॥ १५ ॥
अश्वत्थामा कृपश्चैव त्रिगर्त्ताधिपतिस्तथा । उलूकः शकुनिश्चैव कृतवर्मा च सात्वतः
॥ १६ ॥ एतद्बलमभूच्छेषं धार्त्तराष्ट्रस्य माधव । मोक्षो न नूनं कालाद्धि विद्यते भुवि

दुर्योधनको मारें ९ । कोई धृष्टद्युम्न के पास जाकर उसको जल्दीसे लावे, जबतक वह नहीं आवेगा तबतक यह थकीहुई सेनावाला पापी नहीं छूटेगा ।१०। धृतराष्ट्र कापुत्र युद्धमें आपकी सबसेनाको मारकर पांडवोंको विजय कियाहुआ मानकर बड़े रूपको धारण करता है ११ । वह राजा पांडवोंके हाथसे अपनी सेनाको मराहुआ और पीड़ावान् देखकर युद्धमें अपने मरनेके लिये अवश्य वर्त्तमान होगा यह वचन सुनकर अर्जुन ने श्रीकृष्णजी से यह वचन कहा । १२ । कि धृतराष्ट्रके सब पुत्र भीमसेनही के हाथसे मारेगये हैं हे श्रीकृष्णजी जो यह दोनों नियत हैं वह अब नहीं रहैंगे अर्थात् मारेजायँगे ।१३। भीष्मजी मारेगये, द्रोणाचार्य मारेगये और इसीप्रकार कुंडल कवचका दान करनेवाला कर्णभी मारागया, राजा शल्य और जयद्रथ मारागया हे श्रीकृष्णजी सौबलके पुत्र शकुनी के अभी पांचसौ घोड़े शेष रहगये हैं हे जनार्दनजी उसके सौ रथ कुछ ऊपर सौ हाथी और तीन हजार पदाती शेष रहे हैं । १५ । अश्वत्थामा कृपाचार्य राजा त्रिगर्त उलूक शकुनी और यादव कृतवर्मा । १६ । हे माधव इतनी दुर्योधन की सेना बाकी है

destruction of their army Some one must be sent for Dhrishtadyumn, for Duryodhan, whose army is tired, will not be slain without his help. 10. Duryodhan expects to conquer him by slaying your army; but seeing all his army destroyed he will be prepared to fight." At this Arjun said to Krishn, " All the sons of Dhritrashtra have been destroyed by Bhim and those two who remain out of the whole lot will meet their death in the same manner. Bhishm, Drona and Karan have already been slain as well as Shalya and Jayadrath Five hundred horsemen remain with Shakuni. He has more than a hundred cars, as many elephants, with three thousand foot. 15. Ashwathama, Kripacharya, the king of Trigart, Uluk, Shakuni and Kritvarma the Yadav are the remnants of Duryodhan's warriors.

कस्यचित् ॥ १७ ॥ तथा विनिहते सैन्ये पश्य दुर्य्योधनं स्थितम् । अद्याहनि महाराजो हतामित्रो भविष्यति । न हि मे मोक्ष्यते कश्चित् परेषामिति चिन्तये ॥ १८ ॥ ये त्वद्य समरं कृष्ण न हास्यन्ति रणोत्कटाः । तान् वै सर्वान् हनिष्यामि यद्यपि स्युरमानुषाः ॥ १९ ॥ अद्य युद्धे सुसंक्रुद्धो दीर्घं राज्ञः प्रजागरम् । अपनेष्यामि गान्धारं पातयित्वा शितैः शरैः ॥ २० ॥ निकृत्या वै दुराचारो यानि रत्नानि सौबलः । सभायामहरद्द्यूते पुनस्तान्याहरिष्यहम् ॥ २१ ॥ अद्य ता अपि वत्स्यन्ति सर्वा नागपुरस्त्रियः । श्रुत्वा पतींश्च पुत्रांश्च पाण्डवैर्निहतान् युधि ॥ २२ ॥ समाप्तमद्य वै कर्म सर्वं कृष्ण भविष्यति अद्य दुर्य्योधनो दीप्तां श्रियं प्राणांश्च त्यक्ष्यति ॥ २३ ॥ नापयाति भयात् कृष्ण संग्रामाद्यदि चेन्मम । निहतं विद्धि वार्ष्णेय धार्त्तराष्ट्रं सुबालिशम् ॥ २४ ॥ मम ह्येतदशक्तं वै वाजिवृन्दमरिन्दम । सोढुं ज्यातलनिर्घोषं याहि यावन्निहन्म्यहम् ॥ २५ ॥ एवमु

निश्चयकरके पृथ्वीपर कालसे किसीको बचना नहीं है । १७ । इसीप्रकार सेनाके मरनेपर दुर्योधन को नियत देखो महाराज युधिष्ठिर आजके दिन मृतक शत्रु वालाहोगा शत्रुओं में मेरे हाथसे कोई नहीं बचकर जाता है यह विचारकर हे श्रीकृष्णजी आजके दिन जो यह मदोत्कट लोग युद्ध त्याग नहीं करेंगे तो निश्चय करके चाहे इन में मनुष्यों के विशेष देवता आदिक भी होंगे तौभी इन सबको मारूंगा । १९ । अब युद्धमें अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर मैं तेजबाणोंसे शकुनी को मारकर राजा युधिष्ठिर के बड़े जागरण को दूर करूंगा।२०। निश्चय करके दुराचारी शकुनी के छलसे जिन रत्नोंको सभामें द्यूतके मध्य में लिया है मैं फिर उनको लूंगा । २१ । अब हस्तिनापुरकी सब स्त्रियांभी युद्धमें पांडवों के हाथ से मारे हुये अपने पति और पुत्रों को जानेंगी।२२।हे श्रीकृष्णजी अबही निश्चय करके सबकार्य्य पूर्णहोंगे। अब दुर्योधन अपनी प्रकाशित लक्ष्मी समेत प्राणों को भी त्याग करेगा । २३ । जब कि वह भयभीतताके कारण मेरे युद्ध से नहीं हटता है हे श्रीकृष्णजी बड़े अज्ञानी दुर्योधन को आप मृतकही जानो । २४ । हे शत्रुओं के विजय करनेवाले यह घोड़ों के समूह मेरी मत्यञ्चा और तलके शब्दों के सहने को असमर्थ हैं आप चलिये मैं जबतक इन्हींको मारूं । २५ । हे राजा

Surely none can scape Death on earth. Duryodhan is standing in spite of the great loss. Prince Yudhishthir is sure to be without an enemy to day. None of the enemies shall scape from me. If these warriors donot leave the field of battle to day, they shall be slain even if they have gods among them. I shall now slay Shakuni with my sharp arrows and dispel the nightmare of Yudhishthir. 20 I shall take back from Shakuni the jewels which he took away from Yudhishthir in gambling. The women of Hasthinapur will hear of the death of their husbands and sons. Surely all our work will be accomplished to day. Duryodhan will lose his brilliant gold with his life. If he

सर्वेतु द्राग्वा४८ पाण्डवन मनस्विना । सचोद्यश्वयाञ्जन् दुर्य्योधनवल प्रति ॥ २६ ॥ तदनीकमभिप्रेक्ष्य त्रय सज्जा महारथा । भीमसेनोऽर्जुनश्चैव सहदेवश्च मारिष । प्रययु सिंहनादेन दुर्योधनजिघांसया । २७ ॥ तान् प्रेक्ष्य सहितान् सर्वान् जवेनोद्यतकार्मुकान् । सौवलोऽभ्यद्रवद्युद्धे पाण्डवानाततायिन ॥ २८ ॥ सुदर्शनस्तव सुत भीमसेन समभ्ययात् । सुशर्मा शकुनिश्चैव युयुधाते किरीटिना । सहदेव तव सुतो हयपृष्ठगतोऽभ्ययात् ॥ २९ ॥ ततो हि यत्नत क्षिप्र तव पुत्रो जनाधिप । प्रासेन सहदेवस्य शिरसि प्राहरत्कुशम ॥ ३० ॥ सोपाविशद्रथोपस्थ तव पुत्रेण ताडित । रुधिराप्लुतसर्वाङ्ग आसाविष इव श्वसन् । ३१ ॥ प्रतिलभ्य तत सज्ञा सहदेवो विशाम्पते । दुर्य्योधन शरैस्तीक्ष्णै सक्रुद्ध समवाकिरत् ॥ ३२ ॥ पार्थोऽपि युधि विक्रम्य कुन्तीपुत्रो

वह साहसी अर्जुन के इसप्रकार वचनो को सुनकर श्रीकृष्णजी ने घोडों को दुर्योधन की सेनामें चलायमान किया २८। हे श्रेष्ठ उस सेनाको देखकर तीनों कवच और शस्त्र धारण करनेवाले महारथी भीमसेन अर्जुन और सहदेव सिंहनादों समेत दुर्योधन के मारनेकी इच्छासे चले । २७ । शकुनी तीव्रता पूर्वक सब साथ मिलेहुये उन धनुषों के उठानेवालों को देखकर युद्ध में मारनेका अभिलाषी होकर पाण्डवों के सम्मुख गया । २८ । आपका पुत्र सुदर्शन भीमसेन के सम्मुख गया सुशर्म्मा और शकुनी अर्जुन के साथ युद्ध करनेलगा घोडे की पीठपर सवार आपका पुत्र दुर्योधन सहदेव के सम्मुख गया । २९। हेराजा फिर आपके पुत्रने शीघ्रही उपाय पूर्वक प्राससे सहदेव के शिरपर कठिन प्रहार किया । ३० । आपके पुत्रसे घायल वह सहदेव रथके बैठनेके स्थानपर रुधिरसे लिप्त शरीर और विषेले सर्पकी समान श्वासलेता गिरपडा । ३१ । हे राजा थोडी देर पीछे सहदेवने सचेतताको पाकर बडे क्रोधयुक्त ने तेजवाणों से दुर्योधनको घायल किया । ३२ । कुन्तीके पुत्र अर्जुनने भी युद्धमें पराक्रम करके शूरों के शिरों को

does not run a way with bear from my p esence he is sure to lose his life. The hors m n can not bear the sounds of my bowstring. Let us go and slay them ' 25 Having heard the words of brave Arjun, Sri Krishn drove his horses into the army of Duryodhan Seeing that army, the three warriors, Bhim, Arjun and Sahadev, equipped with arms and armour, went on to slay Duryodhan Seeing the advance of those warriors Shakuni opposed them. Your son Sudarshan opposed Bhim and Arjun fought with Susharma and Shakuni. Duryodhan, on horseback, opposed Sahadev and hit him hard on the head 30 Wounded and bleeding with your son's blow Sahadev sat on his car and fell down sighing like a venomous serpent. He regained consciousness in a short time and wounded Duryodhan with sharp arrows Arjun showed his prowess by cutting off the heads of the

यमत्रयः । शूराणामश्वपृष्ठेभ्यः शिरांसि निचकर्त्त ह ॥ ३३ ॥ तदनीकं तदा पार्थो व्यधमद्भुभिः शरैः । पातयित्वा हयान् सर्वांस्त्रिगर्त्तानां रथान् ययौ ॥३४॥ ततस्ते सहिता भूत्वा त्रिगर्त्तानां महारथाः । अर्जुनं वासुदेवञ्च शरवर्षैरवाकिरन् ॥ ३५ ॥ सत्यकर्माणमाक्षिप्य क्षुरप्रेण महायशाः । ततोऽस्य स्यन्दनस्येषां चिच्छिदे पाण्डुनन्दनः ॥ ३६ ॥ शिलाशितेन च विभो क्षुरप्रेण महायशाः । शिरश्चिच्छेद प्रहसंस्तप्तकाञ्चनभूषणम् ॥ ३७ ॥ सत्येषुमथ चादत्त योधानां मिषतां ततः । यथा सिंहो वने राजन् मृगं परिबुभुक्षितः । ३८ ॥ तं निहत्य ततः पार्थः सुशर्माणं त्रिभिः शरैः । विद्ध्वा तानहनत् सर्वान् रथान्रुक्मविभूषितान् ॥ ३९ ॥ ततः प्रायात्त्वरन् पार्थो दीर्घकालं सुसंभृतम् । मुञ्चन् क्रोधविषं तीक्ष्णं प्रस्थलाधिपतिं प्रति ॥ ४० ॥ तमर्जुनः पृषत्कानां शतेन भरतर्षभ । पूरयित्वा ततो वाहानहनत्तस्य धन्विनः ॥ ४१ ॥ ततः शरं समादाय यमदण्डोपमं

घोड़ोंकी पीठपर काटकर उससेनाको तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे छिन्नभिन्न किया इस प्रकार से वह सब घोड़ोंको गिराकर त्रिगर्त्तदेशी रथियों के सम्मुख गया । ३४ तब उन त्रिगर्त्तदेशियों के रथियों ने इकट्ठे होकर अर्जुन और वासुदेवजी को बाणों की वर्षाओं से ढकदिया । ३५ । फिर बड़े यशस्वीने क्षुरप्रसे सत्यकर्माको गिराकर उसके रथके ईषाको तेजधार क्षुरप्रसे काटा । ३६ । और अकस्मात्ही सुवर्ण के कुण्डलोंसे अलंकृत शिरको भी काटा तब वह आपके शूरवीरों के देखते हुये युद्धमें गिरपड़ा । ३७ । हे राजा जिसप्रकार वनमें भूखा सिंहमृगको मारताहै उसी प्रकार अर्जुनने उसको मारकर तीनबाणों से सुशर्मा को घायल करके । ३८ सुवर्ण के भूषणों से अलंकृत उन सब रथियों को मारा । ३९ । इसके पीछे बहुत कालसे इकट्ठे कियेहुये क्रोधके विषको छोड़ता अर्जुन उसप्रस्थलके राजाके सम्मुख दौड़ा ॥ ४० ॥ हे भरतर्षभ अर्जुनने उसको सौ पृषत्कोंसे घायल करके उस धनुषधारी के घोड़ोंको मारा । ४१ । इसके पीछे हँसतेहुये अर्जुनने यमराज के दण्ड के समान बाणको चढ़ाकर सुशर्माको लक्ष्य बनाकर शीघ्रतासे छोड़ा उस क्रोधयुक्त धनुषधारी

car-warriors and routing your army with his sharp arrows. Having slain the horsemen, he opposed the warriors of Trigart. They covered Arjun and Vasudev with the shower of their arrows. 35. Then he slew Satyakarma with a sharp arrow and cut down the parts of his car. His head adorned with ear-rings soon fell down in the presence of yous warriors. Having slain him as a hungry lion does a deer, Arjun wounded Susharma with three arrows and slew the warriors decked with gold ornaments. Dropping the poison of his long pent up anger, Arjun opposed the King of Prasthal and having wounded him with a hundred arrows, slew his horses too 40. Then Arjun with a smile, having put to his bow a sharp arrow, discharged it at Susharma. The arrow discharged by that enraged warrior, pierced

परम् । सुशर्माणं समुद्दिश्य चिक्षेपाशु हसन्निव ॥ ४२ ॥ स शरः प्रेषितस्तेन क्रोधदीप्तेन धन्विना सुशर्माणं समासाद्य बिभेद हृदयं रणे ॥ ४३ ॥ स गतासुर्महाराज पपात धरणीतले । नन्दयन् पाण्डवान् सर्वान् व्यथयंश्चापि तावकान् ॥ ४४ । सुशर्माणं रणे हत्वा पुत्रानस्य महारथान् । सप्त चाष्टौ च त्रिंशच्च सायकैरनयत् क्षयम् ॥ ४५ । ततोऽस्य निशितैर्बाणैः सर्वान् हत्वा पदानुगान् । अभ्ययाद्भारतीं सेना हतशेषां महारथ ॥ ४६ ॥ भीमस्तु समरे क्रुद्धः पुत्रं तव जनाधिप । सुदर्शनमदृश्यन्तं शरैश्चक्रे हसन्निव ॥ ४७ ॥ ततोऽस्य प्रहसन् क्रुद्धः शिरः कायादपाहरत् । क्षुरप्रेण सुतीक्ष्णेन स हतः प्रापतत्क्षितौ ॥ ४८ ॥ तस्मिंस्तु निहते वीरे ततस्तस्य पदानुगाः । परिवव्रू रणे भीमं किरन्तो विशिखाञ्छितान् ॥ ४९ ॥ ततस्तु निशितैर्बाणैस्तदनीकं वृकोदरः । इन्द्राशनिसमस्पर्शैः समन्तात् पर्यवाकिरत् । ततः क्षणात्तु तान् भीमो न्यहनद्भरतर्षभ ॥ ५० ॥ तेषु तूत्साद्यमानेषु सेनाध्यक्षा महाबलाः भीमसेनं समासाद्य ततो युयुधिरे भारत ॥ ५१ ॥ तांस्तु सर्वान् शरैः राजन्नवाकिरत पाण्डवः । तथैव

के छोड़हुवे बाणने सुशर्माको युद्धमें हृदयपर छेदा । ४३ । हे महाराज फिर वह निर्जीव होकर सब पाण्डवों को प्रसन्न करता और आपके पुत्रोंको पीड़ा देता हुआ पृथ्वीपर गिरपड़ा । ४४ । सुशर्मा को युद्धमें मारकर उस के पैनालीस महारथी पुत्रों को सायकों से यमलोक में पहुँचाया । ४५ । इसके अनन्तर इसके सब अनुगामियों को तेजधार बाणों से मारकर वह महारथी मरने से शेष बचीहुई भरतवंशियों की सेनाके सम्मुख गया । ४६ । और युद्धमें क्रोधयुक्त हँसतेहुये भीमसेन ने सुदर्शन को बाणों से गुप्त करदिया । ४७ । फिर क्रोधभरे हँसतेहुये ने इसके शिरको भी शरीरसे जुदा किया तब वह अत्यन्त तेज क्षुरप्रसे मृतक होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । ४८ । उस वीरके मरनेपर विशिखनाम बाणोंको फैलाते उस के पीछे चलनेवालों ने भीमसेन को घेरलिया । ४९ । इसके पीछे भीमसेनने इन्द्र वज्रके समान स्पर्श तेजधारवाले बाणों से आपकी सेनाको सबओरसे घायल किया हे भरतर्षभ भीमसेन एक क्षणमेंही उस सेनाको मारा । ५० । उनके मरनेपर बड़े पराक्रमी सेनाके प्रधानों ने भीमसेन को पाकर युद्धकिया । ५१ । तब

Susharma on the breast and the latter fell down dead pleasing the Pandavas and grieving your sons. Having slain Susharma, he slew forty five of his sons with his sharp arrows 45. Then he slew all his followers, and opposed the rest of the Kaurava army. Bhimsen, smiling in anger, hid Sudarshan with his arrows and severed his head from the body 47. He cut down his head with a smile and the dead body fell down on earth. At the death of that warrior, his followers surrounded Bhim and hid him with their sharp arrows Then Bhim wounded them with his sharp-edged arrows and slew them in an instant. 50 The chiefs of the army then fought with him at the fall of their soldiers, but Bhim slew them also, Similarly

तावका राजन् पाण्डवेयान् महारथान् । शरवर्षेण महता समन्तात् पर्यवारयन् ॥ ५२ ॥ तदाकुलं तदभूत् सर्वं पाण्डवानां परैः सह । तावकानां च समरे पाण्डवेयैर्युयुत्सताम् ॥ ५३ ॥ तत्र योधास्तदा पेतुः परस्परसमाहताः । उभयोः सेनयो राजन् संशोचन्तः स्म बान्धवान् ॥ ५४ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि संकुलयुद्धे सप्तविंशोऽध्यायः २७॥

सञ्जय उवाच । तस्मिन् प्रवृत्ते संग्रामे नरवाजिगजक्षये । शकुनिः सौबलो राजन् सहदेवं समभ्ययात् ॥ १ ॥ ततोऽस्यापततस्तूर्णं सहदेवः प्रतापवान् । शरौघान् प्रेषयामास पतङ्गानिव शीघ्रगान् । उलूकश्च रणे भीमं विव्याध दशभिः शरैः ॥ २ ॥ शकु

भीमसेनने उन सबकोभी तेजबाणों से घायल किया हे राजा इसप्रकार आपके शूरवीरों ने महारथी पांडवों को बड़ी बाणों की वर्षा से चारोंओरको रोका ५२। पांडवों का और आपके शूरवीरों का वह युद्ध महाव्याकुल करनेवाला हुआ उस समय वहां अपने बान्धवों को सोचते परस्पर घायल दोनों सेनाओं के शूर वीर लड़ाई करनेवाले हुये ५४ ॥

अध्याय २८ ॥

संजय बोले हेराजा मनुष्य हाथी और घोड़ोंके नाशकारी उस युद्धके जारी होनेपर सौबलका पुत्र शकुनी सहदेव के सम्मुखगया । १ । इसके पीछे उस प्रताप वान् सहदेवने शीघ्रही उस आतेहुये के ऊपर पतंगों के समान शीघ्रगामी बाणों के समूहों को चलाया फिर उलूकने दशबाणोंसे युद्ध में भीमसेन को घायल किया । २ । हे राजा फिर शकुनी ने तीनबाणों से घायल करके नब्बे बाणों

your warriors hid the Pandav army with their arrows, and the struggle was severe. Grieved for your kinsmen, the warriors of both sides attacked one another." 54.

CHAPTER XXVIII

Sanjaya said, " At the commencement of the battle which was destructive of elephants, horses and men, Shakuni opposed Sahadev. Glorious Sahadev showered over him arrows like a flight of locusts. Then Uluk wounded Bhim with ten arrows. Then he wounded Sahadev with three arrows and covered him with ninety more. The warriors

भिस्तु महाराज भीमं विव्यधुः शितैः शरैः। सायकानां नवत्या च सहदेवमवाकिरन्
॥ ३ ॥ ते शूरा समरे राजन् समासाद्य परस्परम्। विव्यधुर्निशितैर्बाणैः कङ्कबर्हिण
वाजितैः। स्वर्णपुङ्खैः शिलाधौतैराकर्णात् प्रहितैः शरैः ॥ ४ ॥ तेषां चापभुजोत्सृष्टा शर
वृष्टिर्विशाम्पते। आच्छादयद्दिशः सर्वा धारा इव पयोमुचः ॥ ५ ॥ ततः क्रुद्धो रणे
भीमः सहदेवश्च वीर्यवान्। चेरतुः कदनं संख्ये कुर्वन्तौ सुमहाबलौ ॥ ६ ॥ ताभ्यां
शरौघैश्छन्नं तद्बलं तव भारत। अन्धकारमिवाकाशमभवत्तत्र ह ॥ ७ ॥ अश्वै
र्विपरिधावद्भिः शरच्छन्नैर्विशाम्पते। तत्र तत्र कृतो मार्गो विकर्षद्भिर्हतान् बहून् ॥८॥
निहतानां हयानां च सहैव परियोधिभिः। वर्मभिर्विनिकृत्तैश्च प्रासैश्छिन्नैश्च मारिष ॥९॥
ऋष्टिभिः शक्तिभिश्चैव तोमरैश्च समन्ततः। संछन्ना पृथिवी जज्ञे कुसुमैः शबला इव
॥ १० ॥ योधास्तत्र महाराज समासाद्य परस्परम्। व्यचरन्त रणे क्रुद्धा विनिघ्नन्तः
परस्परम् ॥ ११ ॥ उद्वृत्तनयनै रोषात् संदष्टौष्ठपुटैर्मुखैः। सकुण्डलैर्मही छन्ना पद्म
किञ्जल्कसंनिभैः ॥ १२ ॥ भुजैश्छिन्नैर्महाराज नागराजकरोपमैः साङ्गदैः सतनुत्रैश्च

से सहदेवको ढकदिया। ३। हे राजेन्द्र उन शूरोंने युद्धमें सम्मुख होकर उन कङ्क
और मोरपखों से जटित तीक्ष्णबाणोंसे घायल किया जो कि सुनहरी पुङ्ख शिला
से स्वच्छ हुये कानतक खैंचकर छोड़ेथे ४। उन्हीं के धनुष और भुजासे छोड़ीहुई
बाणवृष्टिने सब दिशाओंको ऐसे ढकदिया जैसे कि जलकी धाराओं से बादल
ढकदेताहै ।५। इसके पीछे युद्ध में क्रोधयुक्त भीमसेन और पराक्रमी सहदेव दोनों
बड़ाभारी युद्धमें प्रलय सा करतेहुये भ्रमण करनेलगे ६ हे भरतवंशी तब आपकी
वह सेना उन्हीं के बाणों से ढकगई जहां तहां आकाश अन्धकाररूप हुआ। ७।
और बाणोंसे ढकेहुये चारोंओर दौड़ते और बहुत मृतकोंको खैंचते हुये घोड़ोंसे
जहांतहां मार्ग संयुक्तहुआ। ८। हे प्रभु असवारोंके साथ मृतक घोड़ों के समूह
टूटे कवच प्रास खड्ग शक्ति और तोमरों से पृथ्वी चारोंओर से ऐसी चित्र
विचित्र हुई जैसे कि पुष्पोंसे शबल युक्त होते हैं। १०। हे महाराज वहां शूरवीर परस्पर
सम्मुखहोकर युद्धमें क्रोधयुक्त परस्पर मारते अनेकप्रकार से भ्रमण करनेलगे ११।
क्रोधसे फैले नेत्र दोनों ओष्ठोंके काटनेवाले कुण्डलधारी कमलकी किंजल्क के
समान मुखों से पृथ्वी ढकगई। १२। हेसमर्थ महाराज गजराजकी सूंडकी समान बाजू

wounded one another with arrows fitted with vulture and peacock feathers and whetted on stone The shower of arrows discharged from their bows covered all directions as clouds pour forth rain. 5 Then Bhim, much enraged, and valiant Sahadev making a havoc, roamed there and your army was hid with their arrows. The sky was dark and the way was obstructed by horses dragging the dead. The ground was covered with all sorts of weapons as woods are by flowers. 10 The warriors roamed hither and thither, slaying one another with arrows. With eyes dilated in anger and with lotus like faces the heads covered the ground. The broken arms, like the trunks of

कबन्धैर्नृत्यमानैश्च छिन्नैर्नृत्यभिचापरैर्युधि । क्रव्यादगणै ॥ १४ ॥ अल्पावशिष्टे सैन्ये तु कौरवेयान् महाहवे यमसादनम् ॥ १५ ॥ एतस्मिन्नन्तरे शूरः सौबलेयः प्रतापवान् । प्रासेन सहदेवस्य शिरसि प्राहरद्दृढम् । स विह्वलो महाराज रथोपस्थ उपाविशत् ॥ १६ ॥ सहदेवं तथा दृष्ट्वा भीमसेनः प्रतापवान् । सर्वसैन्यानि संक्रुद्धो धारयामास भारत ॥ १७ ॥ निर्बिभेद च नाराचैः शतशोऽथ सहस्रशः । विनिर्भिद्याकरोच्चैव सिंहनादमरिन्दमः ॥ १८ ॥ तेन शब्देन वित्रस्ताः सर्वे सहयवारणाः । प्राद्रवन् सहसा भीताः शकुनेश्च पदानुगाः ॥ १९ ॥ प्रभग्नानथ तान् दृष्ट्वा राजा दुर्योधनोऽब्रवीत् । निवर्तध्वमधर्मज्ञा युध्यध्वं किं सृतेन वः ॥ २० ॥ इह कीर्तिं समाधाय प्रेत्य लोकान् समश्नुते । प्राणान् जहाति यो वीरो युधि पृष्ठमदर्शयन् ॥ २१ ॥ बन्द

बन्द कवच खड्ग और फरसा धारण करनेवाली टूटीभुजा । १३ । और युद्ध में टूटेखड़े और नृत्य करते अन्य रुण्डों से पृथ्वी महाघोर और मांसाहारी जीवोंके समूहों से पूर्ण होगई । १४ । फिर थोड़ीसेना शेष रहनेपर पांडवोंने अत्यन्त प्रसन्नहोकर बड़े युद्धमें कौरवों को यमलोक में पहुंचाया । १५ । हेराजा उसीअन्तर में प्रतापवान् सकुनीने प्रास से सहदेवके शिरपर कठिन प्रहार किया हे महाराज उस भारी प्रहारसे वह सहदेव व्याकुल होकर रथके बैठने के स्थानपरही बैठगया । १६ । इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रतापवान भीमसेनने सहदेवको देखकर सब सेनाओं को रोका । १७ । और हजारों शूरवीरों को नाराचों से छेदा फिर उस शत्रुविजयीने उनको छेदकर सिंहनाद किया । १८ । उस शब्दसे सकुनीके सबहाथी घोड़े और हाथियों समेत पृथ्वीपर गिरपड़े और भयभीत होकर अकस्मात भाग । १९ । फिर राजा दुर्योधन ने उन छिन्न भिन्न सेनाओंसे कहा है धर्म के न जाननेवाले शूरवीरों लौटो युद्धकरो युद्धसेभागने में तुम्हारा क्या प्रयोजनहै । २० । जो वीर युद्ध में पीठको न दिखाताहुआ सन्मुख होकर अपने प्राणों को त्याग करताहै वह इसलोक में शुभकीर्तिको पाकर मरनेके पीछे शुभलोकों को भोगताहै

elephants, decked with ornaments and bearing weapons, together with other parts of the body moving in various directions and carnivorous birds were seen here and there over the ground. When a small part of the army was left, the Pandavas, well pleased, sent the Kauravas to the region of Yam. 15. In the mean time glorious Shakuni hit Sahadev hard on the head and the latter sat down on his seat in the car. Then Bhimsen, much enraged at the wounds of Sahadev, checked the army and pierced thousands of warriors with arrows. Then that conqueror of foes pierced him with a roar. The elephants and horsemen fell down on earth with that roar and fled away in terror. Then Prince Duryodhan addressed the routed army saying "Come back warriors and fight. What will you gain by running

मुक्तास्तु ते राज्ञा सौबलस्य पदानुगाः । पाण्डवानाभ्यवर्त्तन्त मृत्युं कृत्वा निवर्त्तनम् ॥२२॥ प्रवल्गितैश्च राजेन्द्र कृतः शब्दोतिदारुणः । क्षुब्धसागरसङ्काशः क्षुभितः सर्वतो भवत् ॥ २३ ॥ तांस्तथापततो दृष्ट्वा सौबलस्य पदानुगान् । प्रत्युद्ययुर्महाराज पांडवा विजयेस्थिताः ॥ २४ ॥ प्रत्याश्वास्य च दुर्धर्षः सहदेवो विशाम्पते । शकुनिं दशभि र्विद्ध्वा हयांश्चास्य त्रिभिः शरैः । धनुश्चिच्छेद च शरैः सौबलस्य हसन्निव ॥ २५ ॥ अथान्यद्धनुरादाय शकुनिर्युद्धदुर्मदः । विव्याध नकुलं षष्ट्या भीमसेनञ्च सप्तभिः ॥ २६ ॥ उलूकोपि महाराज भीमं विव्याध सप्तभिः । सहदेवञ्च सप्तत्या परीप्सन् पितरं रणे ॥ २७ ॥ भीमसेनः समरे विव्याध निशितैः शरैः । शकुनिञ्च चतुःषष्ट्या पार्श्वस्थांश्च त्रिभिस्त्रिभिः ॥ २८ ॥ ते हन्यमाना भीमेन नाराचैस्तैलपायितैः । सहदेवं रणे क्रुद्धाश्छादयन् शरवृष्टिभिः । पर्वतं वारिधाराभिः सविद्युत इवाम्बुदाः ॥ २९ ॥ ततो

॥ २१ ॥ राजाके इसप्रकार कहनेपर शकुनी के वह साथी मृत्युको पीछे करके पाण्डवों के सम्मुख वर्त्तमान हुये । २२ । हे राजा वहां भागने दौड़नेवाले वीरोंने बड़े भयकारी शब्दकिये वह सेना वेगयुक्त सागरके समान सब ओरसे व्याकुल होगई । २३ । हे महाराज इसके पीछे विजयके निमित्त सन्नद्ध पाण्डव शकुनीके उन साथियों को आगे देखकर सम्मुख गये । २४ । फिर अजेय सहदेवने विश्राम लेकर दशबाणोंसे शकुनीको घायल करके तीनबाणोंसे उस के घोड़ोंको घायल किया और हँसतेहुये ने बाणोंसे शकुनीके धनुषको काटा । २५ । इसकेपीछे युद्धमें दुर्मद शकुनी ने दूसरे धनुषको लेकर साठबाण से नकुलको और सातबाण से भीमसेन को घायल किया । २६ । हे राजा जङ्गमें पिता के चाहनेवाले उलूक ने भी सातबाण से भीमसेनको और सत्तरबाण से सहदेव को घायल किया । २७ । भीमसेनने उसको नौबाण से शकुनी को चौंसठबाण से और इधर उधरके पक्षवर्त्ती शूरवीरों को तीन २ बाणोंसे घायल किया भीमसेनके तीक्ष्णनाराचों से घायल और क्रोधयुक्त उन शूरवीरों ने युद्ध में बाणों की वर्षा से सहदेवको ऐसे ढक दिया जैसे कि बिजली रखनेवाले बादल जलकी धाराओं से पहाड़को ढक देते

away | 20. A warrior who does not turn back in battle and dies fighting, gets fame in this world and good regions in the next." Thus addressed by the king, Shakuni's elephants came back. The warriors returned with a great uproar and filled the field of battle, with a sound like that of the swelling surges. The Pandavas desirous of victory, seeing Shakuni's companions there, opposed them. Invincible Sahadev smiling wounded Shakuni with ten arrows and his horses with four. 25. Shakuni taking up another bow, wounded Nakul with sixty arrows and Sahadev with seven. Ulak the son of Shakuni wounded Bhim with *seven arrows and Sahadev with seventy.* Bhim wounded him with nine arrows, Shakuni with sixty four and their followers

रथोपस्थः शूरः सहदेवः प्रतापवान् । उलूकस्य महाराज भल्लेनापाहरच्छिरः ॥३०॥
स जगाम रथाद्भूमिं सहदेवेन पातितः । रुधिराप्लुतसर्वाङ्गो नन्दयन् पाण्डवान् युधि
॥ ३१ ॥ पुत्रन्तु निहतं दृष्ट्वा शकुनिस्तत्र भारत । साश्रुकण्ठो विनिःश्वस्य क्षत्तुर्वाक्य
मनुस्मरन् ॥ ३२ ॥ चिन्तयित्वा मुहूर्तं स बाष्पपूर्णेक्षणः श्वसन् । सहदेवं समासाद्य
त्रिभिर्विव्याध सायकैः ॥ ३३ ॥ तानपास्य शरान्मुक्तान् शरसङ्घैः प्रतापवान् सहदेवो
महाराज धनुश्चिच्छेद संयुगे ॥३४॥ छिन्ने धनुषि राजेन्द्र शकुनिः सौबलस्तदा । प्रगृह्य
विपुलं खड्गं सहदेवाय प्राहिणोत् ॥३५॥ तमापतन्तं सहसा घोररूपं विशाम्पते । द्विधा
चिच्छेद समरे सौबलस्य हसन्निव । ३६ ॥ असिं दृष्ट्वा द्विधा छिन्नं प्रगृह्य महतीं
गदाम् । प्राहिणोत् सहदेवाय सा मोघा न्यपतद्भुवि ॥ ३७ ॥ ततः शक्तिं महाघोरां काल
रात्रिमिवोद्यताम् । प्रेषयामास संक्रुद्धः पाण्डवं प्रति सौबलः ॥ ३८ ॥ तामापतन्तीं

हैं । २९ । हे महाराज इसके पीछे प्रतापवान शूर सहदेव ने इस सम्मुख दौड़ते उलूकके शिरको भल्लसेकाटा । ३० । वह रुधिरसे लिप्तशरीर सहदेवका गिराया हुआ युद्धमें पांडवोंको प्रसन्न करता हुआ रथसे पृथ्वीपर गिरा । ३१ । हे भरतवंशी तब शकुनी अपने पुत्रको मराहुआ देखकर विदुरजीके वचन को स्मरण करता आंसुओं से पूर्णकण्ठ हुवे श्वासलेकर एक मुहूर्ततक चिन्ता करने लगा फिर अश्रुपूरित नेत्रवाले उस शकुनी ने सहदेवको पाकर तीन शायकों से घायल किया । ३३ । हे महाराज प्रतापवान सहदेव ने अपने बाण समूहों से उन छोड़े हुवे बाणों को हटाकर युद्ध में धनुष को काटा । ३४ । हे राजेन्द्र धनुष के टूटनेपर सौबलके पुत्र शकुनी ने बड़े खड्गको लेकर सहदेव के ऊपर चलाया । ३५ । तब हँसते हुवे सहदेव ने उस अकस्मात् आतेहुये शकुनी के घोररूप खड्ग को खण्ड खण्ड करदिया । ३६ । खड्ग को खण्डित देखकर बड़ी गदा को लेकर सहदेवके ऊपर फेंका वह गदा भी निष्फल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी । ३७ । इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त शकुनी ने महाघोर कालरात्रि के समान उठाई हुई घोर शक्तिको सहदेवपर चलाया । ३८ । हंसतेहुये सहदेवने अपने स्वर्ण भूषित बाणोंसे

with three arrows each. Wounded by the sharp arrows of Bhim, the enraged warriors covered him with arrows like rain of clouds. Then Sahadev cut down Uluk's head with a dart. 30. Slain by Sahadev he fell down from the car, pleasing the Pandavas. Seeing his son dead, Shakuni with eyes full of tears and sighing, meditated for some time and then wounded Sahadev with three arrows. Glorious Sahadev checked his arrows with his own and cut his bow. Having dropped his broken bow, Shakuni took up his large sword and hurled it at Sahadev Then Sahadev, with a smile, cut his dreadful sword into pieces. 36. When his sword was cut off, he hurled a mace at Sahadev, but that too, fell down without doing its work. Then Shakuni, much enraged

सहसा शरैः काञ्चनभूषणैः । त्रिधा चिच्छेद समरे सहदेवो हसन्निव ॥ ३९ ॥ सा
पपात त्रिधा छिन्ना भूमौ कनकभूषणा । शीर्यमाणा यथा दीप्ता गगनाद्वै शतह्रदा
॥ ४० ॥ शक्तिं विनिहतां दृष्ट्वा सौबलञ्च भयार्दितम् । दुद्रुवुस्तावकाः सर्वे भये जाते
ससौबलाः ॥ ४१ ॥ अथोत्क्रुष्टं महच्चासीत् पाण्डवैर्जितकाशिभिः । धार्तराष्ट्रास्ततः
सर्वे प्रायशो विमुखाभवन् ॥ ४२ ॥ तान् वै विमनसो दृष्ट्वा माद्रीपुत्रः प्रतापवान् ।
शरैरनेकसाहस्रैर्वारयामास संयुगे ॥ ४३ ॥ ततो गान्धारकैर्गुप्तं पुष्टैरश्वैर्जये धृतम् ।
आससाद रणे यान्तं सहदेवोऽथ सौबलम् ॥ ४४ ॥ स्वमंशमवशिष्टन्तं संस्मृत्य शकुनिं
नृप । रथेन काञ्चनाङ्गेन सहदेवः समभ्ययात् ॥ ४५ ॥ अधिज्यं बलवत् कृत्वा व्याक्षि
पन् सुमहद्धनुः । स सौबलमभिद्रुत्य गार्ध्रपत्रैः शिलाशितैः । भृशमभ्यहनत् क्रुद्धस्तो
त्रैरिव महाद्विपम् ॥ ४६ ॥ उवाच चैनं मेधावी निगृह्य स्मारयन्निव । क्षत्रधर्मे स्थिरो
भूत्वा युध्यस्व पुरुषो भव ॥ ४७ ॥ यत्तदा हृष्यसे मूढ. ग्लहन्नक्षैः सभातले । फलमद्य

उस आतीहुई शक्तिको युद्धमें तीन खण्ड करदिये । ३९ । वह सुवर्ण से अलंकृत
तीन स्थानसे टूटीहुई शक्ति पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ी जैसे कि प्रकाशित गिरने
वाली बिजली आकाश से गिरती है । ४० । शक्तिको टूटी और शकुनीको पीड़ा
मान देखकर भय उत्पन्न होनेपर शकुनी समेत आपके सब शूरवीर भागे । ४१ ।
इसके पीछे विजय से शोभायमान पांडवोंकी ओरका बड़ा शब्दहुआ तब आपके
सब शूरवीर मुख फेरगये । ४२ । माद्रीके पुत्र प्रतापवान ने उनको उदास चित्त
देखकर युद्धमें हजारों बाणों से रोका । ४३ । फिर सहदेवने हृष्टपुष्ट गांधार देशी
घोड़ोंसे रक्षित विजय में प्रवृत्तचित्त युद्धमें वर्त्तमान होनेवाले शकुनी को सम्मुख
पाया ।४४ हे राजा सहदेव उस सम्मुख नियत होनेवाले शकुनीको अपना भाग
स्मरणकरके सुवर्ण के अङ्गवाले रथकी सवारीसे सम्मुखगया । ४५। और बड़े बल
वान् दृढ़ धनुषको चढ़ाकर टंकारा उस क्रोधयुक्त ने शकुनी के सम्मुख जाकर
गृध्रपक्षयुक्त तीक्ष्णबाणों से ऐसे कठिन घायल किया जैसे कि चाबुकों से बड़े
हाथीको घायल करते हैं । ४६ । वह बुद्धिमान उसको रोककर स्मरण कराता
हुआ बोला कि क्षत्रियधर्म्म में नियत और शूरता करके युद्धकरो ४७ हे अज्ञानी

hurled a dreadful spear at him but the latter, with a smile, cut it down into three and its three parts fell down on earth like the bright lightning. Seeing his spear broken and Shakuni wounded, your warriors fled with him. The Pandavas raised cries of victory and your warriors turned their faces. The son of Madri, seeing them dejected, checked them with thousands of arrows. 43. Then he found Shakuni, with the powerful horses of Gandhar, before him, and thinking him to be his own portion, he opposed him with his car and twanged his bow. He wounded Shakuni hard with his arrows as elephatns are wounded with goads 46. He then addressed him as

प्रोदयसे कर्मणस्तस्य दुर्मते । ४८ ॥ निहतास्ते दुरात्मानो ये ऽस्मानवहसन्पुरा दुर्योधन कुलाङ्गार शिष्टस्त्वं मातुल । ४९ ॥ अद्य ते निहनिष्यामि क्षुरेणोन्मथितं शिरः । वृक्षात् फलमिवाविद्य लगुडेन प्रमाथिना ॥ ५० ॥ एवमुक्त्वा महाराज सहदेवो महाबल । सङ्क्रुद्धो नरशार्दूलो वेगेनाभिजगाम ह ॥ ५१ ॥ अभिगम्य तु दुर्धर्षः सहदेवो युधाम्पतिः । विकृष्य बलवच्चापं क्रोधेन प्रदहन्निव । ५२ । शकुनिं दशभिर्विद्ध्वा चतुर्भिश्चास्य वाजिनः । छत्रं ध्वजं धनुश्चास्य छित्त्वा सिंह इवानदत् । ५३ ॥ छिन्नध्वजधनुश्छत्रः सहदेवेन सौबलः । कृतो विद्धश्च बहुभिः सर्वमर्मसु सायकैः ॥ ५४ ॥ ततो भूयो महाराज सहदेवः प्रतापवान् शकुनेः प्रेषयामास शरवृष्टिं दुरासदाम ॥ ५५ ॥ ततस्तु क्रुद्धः सुबलस्य पुत्रो माद्रीसुतं सहदेवं विमर्दे । प्रासेन जाम्बूनदभूषणेन जिघांसुरेकोऽभिपपात शीघ्रम् ॥ ५६ ॥ माद्रीसुतस्तस्य समुद्यतं तं प्रासं सुवृत्तौ

जब सभामें पाशोंके द्युतमें जो तुम प्रसन्नहुये थे हे दुर्बुद्धि अब उस दुष्टकर्म के फलको देखो । ४८ । वह सब दुरात्मा तो मरगये जो पूर्व में हमको हँसते थे वंशके दुर्योधनके कुलके भस्म करनेवाले अङ्गाररूप तुम्हीं हमारे मामाजी शेषरहेहो । ४९ । अब क्षुरप्रसे काटेहुये तेरे शिरको ऐसे जुदाकरूंगा जैसे कि प्रहार करनेवाली लाठी से वृक्षका फल तोड़ते हैं । ५० । हे महाराज अत्यन्त क्रोधयुक्त बड़े पराक्रमी नरोत्तम सहदेवने इसप्रकार कहकर बड़े वेगसे उसको घायल किया । ५१ । बड़े अजेय शूरवीरों के समान क्रोधसे जलते हुये सहदेवने बलवान् धनुषको खैंचकर । ५२ । दशबाणोंमे शकुनीको और चारबाणसे उसके घोडोंको घायल करके उसके छत्र ध्वजा धनुषको काटकर सिंहके समान गर्जनाकी । ५३ । अर्थात वह शकुनी सहदेवके हाथसे टूटे धनुष ध्वजा और छत्रवाला कियागया और बहुत सायकों से सब मर्मस्थलोंपर अत्यन्त घायल हुआ । ५४ । हे महाराज इसके पीछे प्रतापवान् सहदेवने कठिनता से सहने के योग्य बाणों की वर्षा को फिर शकुनी के ऊपर किया । ५५ । तबतो अत्यन्त क्रोधयुक्त और युद्धमें सुवर्ण से जटित प्रासके द्वारा माद्रीनन्दन सहदेवके मारने की इच्छासे शीघ्रही अकेला शकुनी उसके पास

---

follows ' Fight like a kshatrya and you will see the result of your exultation at the game of dice in the court Those wicked men who laughed at us are slain, You are the only destroyer of family uncle, I shall now sever your head from your body like a fruit from a tree " 50 Having said this Sahdev again wounded him hard with his arrows Burning with the excess of anger, Sahadev wounded Shakuni with ten arrows and his horses with four, and having cut down his bow he roared a lionine roar Shakuni's banner and umbrella were severed and he was wounded on the vital parts, The glorious Sahadev again showered arrows over him 55. Then Shakuni

भुजौ रणाग्रे। भल्लैस्त्रिभिर्युगपत् संचकर्त ननाद चोच्चैस्तरसाजिमध्ये॥ ५७॥ तस्याशुकारी सुसमाहितेन सुवर्णपुङ्खेन दृढायसेन। भल्लेन सर्वावरणातिगेन शिरः शरीरात् प्रममाथ भूयः॥ ५८॥ शरेण कार्तस्वरभूषितेन दिवाकराभेन सुसंशितेन हृतोत्तमाङ्गो युधि पाण्डवेन पपात भूमौ सुबलस्य पुत्रः॥ ५९॥ स तच्छिरो वेगवता शरेण सुवर्णपुङ्खेन शिलाशितेन। प्रावेरयत् कुपितः पाण्डुपुत्रो यत्तत् कुरूणामनयस्य मूलम्॥ ६०॥ हृतोत्तमाङ्गं शकुनिं समीक्ष्य भूमौ शयानं रुधिरार्द्रगात्रम्। योधास्त्वदीया भयनष्टसत्त्वा दिशः प्रजग्मुः प्रगृहीतशस्त्राः॥ ६१॥ विप्रद्रुताः शुष्कमुखा विसंज्ञा गाण्डीवघोषेण समं द्रवन्तः। भयार्दिता भग्नरथाश्वनागाः पदातयश्चैव सधार्तराष्ट्राः॥ ६२॥ ततो रथाच्छकुनिं पातयित्वा मुदान्विता भारत पाण्डवेयाः। शङ्खान् प्रदध्मुः समरे प्रहृष्टाः सकेशवाः सैनिकान् हर्षयन्तः॥ ६३॥ तं चापि सर्वे प्रतिपूजयन्तो

गया। ५६। फिर माद्रीके पुत्रने एकसाथ तीनभल्लसे उसके उठाये हुये प्रास और सुन्दरगोल भुजाओंको युद्धके मुखपर काटा और बडे वेगसे युद्धभूमि में उच्चस्वर से गर्जनाकरी। ५७। फिर शीघ्रता करनेवाले सहदेवने सुनहरी पुंख दृढ़ शिलापर घिसेहुये सब कवच आदिसे पारहोनेवाले श्रेष्ठतीक्ष्ण चलायेहुए भल्लसे उसके शिरको शरीर से जुदाकिया। ५८। सुवर्णसे अलंकृत सूर्य के समान प्रकाशमान अच्छेप्रकार चलायेहुये सहदेवके बाणसे युद्धमें कटाहुआ शिर पृथ्वीपर गिरपड़ा। ५९। उस क्रोधयुक्त पांडवों ने सुनहरी पुंख, तेजधार, वेगवान् बाणसे उसके उस कटेहुये शिरको बहुत दूर फेंका जोकि कौरवों के अन्यायका मूलथा। ६०। आपके शूरवीर उस टूटे और पृथ्वीपर पड़ेहुये रुधिरसे लिप्तशरीर शकुनी को देखकर भयसे पराक्रमहीन होकर दिशाओं को भागे। ६१। शुष्कमुख अचेत और गांडीव धनुषके शब्दसे विदीर्ण भयसे पीड़ित टूटे और पायल रथ घोड़े और हाथी वाले पदाती होकर दुर्योधन समेत भागे। ६२। हे भरतवंशी इसके अनन्तर रथसे शकुनी को गिराकर प्रसन्नतायुक्त अत्यन्त हर्षित अन्तःकरण और केशवजी समेत सेनाके लोगों को प्रसन्नकरनेवाले पाण्डवों ने युद्ध

approached Salinder to slay him in his rage with a pras. But Sahadev cut with three arrows, his upraised arms and the pras and roared with a loud roar. Then he severed his head from his body with a very sharp arrow capable of piercing through all armours. Cut asunder by Sahadeva's sharp arrow, Shakuni's head fell down on earth. The enraged Pandavas hurled his head at a great distance as he was the root of all evil 60. Your warriors seeing the blood shed of Shakuni fled away in all directions. The foot soldiers, with parched mouths, insensible, terrified with the sounds of Gandiv bow, with broken cars and wounded beasts, ran away with Duryodhan. Having removed Shakuni's body from the car, the cheerful warriors of

हृष्टा ब्रुवाणाः सहदेवमाजौ । दिष्ट्या हतो नैकृतिको दुरात्मा सहात्मजो वीर रणे त्वयेति ॥ ६४ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि शकुन्युलूकवधे अष्टाविंशोऽध्यायः २८॥

सञ्जय उवाच । ततः क्रुद्धा महाराज सौबलस्य पदानुगाः । त्यक्त्वा जीवितमाक्रन्दे पाण्डवान् पर्यवारयन् ॥ १ ॥ तानर्जुनः प्रत्यगृह्णात् सहदेवजये धृतः । भीमसेनश्च तेजस्वी क्रुद्धाशीविषदर्शनः ॥ २ ॥ शक्त्यृष्टिप्रासहस्तानां सहदेवं जिघांसताम् । सङ्कल्पमकरोन्मोघं गाण्डीवेन धनञ्जयः ॥ ३ ॥ संगृहीतायुधान् बाहून् योधानामभि

शंखोंको बजाया । ६३ । तब सब प्रसन्न लोगोंने युद्धमें उस सहदेवकी पूजन पूर्वक प्रशंसाकरी हे वीर यह छली और दुरात्मा शकुनी भाग्यसेही पुत्र समेत तेरेहाथ से मारागया ६४ ॥

अध्याय २९ ॥

संजय बोले हे महाराज इसके पीछे शकुनी के क्रोधयुक्त साथियों ने जीवन का त्यागकरके पांडवों को चारोंओरसे रोका । १ । सहदेवकी विजयमें प्रवृत्तचित्त अर्जुन और क्रोधयुक्त विषैले सर्प के समान दिखाई देनेवाला तेजस्वी भीमसेन इन दोनों ने उन सब शकुनी के साथियों को रोका । २ । अर्जुन ने गांडीव धनुष के द्वारा शक्ति दुधारे खड्ग और प्रास हाथमें रखनेवाले सहदेवके मारनेके अभिलाषी उन लोगोंका संकल्प निष्फलकिया ।३। और भल्लों से उन सम्मुख दौड़ने

the Pandavas pleased Keshav and others with the blasts of their conchs. They praised Sahadev, saying, "It is by good luck that you have slain deceitful and ill-natured Shakuni and his son." 64.

CHAPTER XXIX

Sanjaya said, "Then the enraged companions of Shakuni, leaving all care for life, checked the Pandavas from all sides. Trying to secure victory to Sahadev, Arjun and Bhim checked Shakuni's followers. With his Gandiv bow, Arjun made futile the attempts of the warriors desirous of slaying Sahadev with their weapons, and cut their heads with his darts. They fell dead on the ground and were on

धावताम् । भल्लैश्चिच्छेद बीभत्सुः शिरांस्यपि धनापि ॥ ४ ॥ ते हताः प्रापतन्त वसुधां विगतासवः । स्फुरन्तो लोकवीराणां प्रहताः सव्यसाचिना ॥ ५ ॥ ततो दुर्योधनो राजा दृष्ट्वा स्वबलसंक्षयम् । हतशेषान् समानीय कुरूनथ शतान् विभो ॥ ६ ॥ कुञ्जरांश्च हयांश्चैव पादातांश्च परन्तप । उवाच सहितान् सर्वान् धार्तराष्ट्र इदं वचः ॥ ७ ॥ समासाद्य रणे सर्वान् पाण्डवान् ससुहृद्गणान् । पाञ्चाल्यं चापि सबलं हत्वा शीघ्रं निवर्तत ॥ ८ ॥ तस्य ते शिरसा कृत्वा वचनं युद्धदुर्मदाः । प्रत्युद्ययू रणे पार्थास्तव पुत्रस्य शासनात् ॥ ९ ॥ तानभ्यापततः शीघ्रं हतशेषान्महारणे । शरैराशीविषाकारैः पाण्डवाः समवाकिरन् ॥ १० ॥ तत्सैन्यं भरतश्रेष्ठ मुहूर्तेन महात्मभिः । अवध्यत रणं प्राप्य त्रातारं नाऽध्यविन्दत । प्रतिष्ठमानन्तु भयान्नावातिष्ठत दंशितम् ॥ ११ ॥ अश्वैर्विपरिधावद्भिः सैन्येन रजसावृते । न प्राज्ञायन्त समरे दिशश्च प्रदिशस्तथा ॥ १२ ॥ ततस्तु पाण्डवानीकान्निःसृत्य बहवो जनाः । अभ्यघ्नंस्तावकान् युद्धे मुहू

वाले शूरवीरोंके शस्त्रधारी भुजाओं समेत शिरोंको भी काटा । ४ । तब वह मृतक निर्जीव होकर पृथ्वी पर गिरपड़े । उन लोकवीर घूमनेवाले अर्जुनके हाथसे सब मारेगये । ५ । इसके पीछे शत्रुओंको तपानेवाला क्रोधयुक्त आपका पुत्र राजा दुर्योधन अपनी सेनाका नाश देखकर मरने से शेष बचेहुये बहुत से रथ हाथी घोड़े और पदातियों के समूहों को इकट्ठाकरके उनसे यह वचन बोला । ७ । कि युद्धमें पाकर मित्र समूहों समेत पांडवों को और सेना समेत धृष्टद्युम्न को भी मारकर शीघ्र लौटो । ८ । युद्धमें दुर्मद वह सब वीर उसके वचन को शिरसे अंगीकार करके पांडवों के सम्मुख गये । ९ । पांडवों ने बड़े युद्ध में विषैले सर्प की समान बाणों से मरने से शेष बचेहुये सम्मुख आनेवालों को घायल किया । १० । हे भरतर्षभ एक मुहूर्तमेंही वह सब सेना युद्ध को पाकर महात्माओं के हाथ से मारीगई और किसी अपने रक्षकको नहीं पाया वह शस्त्रधारी सेना भयभीत होकर नियत नहीं होतीथी । ११ । चारोंओर को दौड़नेवाले घोड़ों कीधूलसे व्याप्त दिशा और विदिशा नहीं जानीगई । १२ । इसके पीछे पांडवीय सेनामें बहुत मनुष्यों ने निकल कर युद्धमें एक मुहूर्तभरमेंही आपकी सेनाके लोगोंको मारा हे भरत

and all slain by Arjun's arrows.5 Then your enraged son, destroyer of foes, seeing the destruction of his warriors, rallied the elephant men, horse and foot, and said, "Slay the Pandavas and their allies including Dhrishtadyumn. The warriors, obeying Duryodhan faced the Pandavas. The Pandavas wounded them with their darts like venomous serpents. 10. All that army was destroyed by them in an instant. Destitute of protectors they ran away for fear. Enveloped with the dust raised by elephants the directions were not visible. Then many persons coming out of the Pandav army, slew your army and annihilated it. The eleven akshauhinis collected by

[illegible] भारत । ततो निःशेषमभवत् तत् सैन्यं तव भारत ॥ १३ ॥ अक्षौहिण्यः समे
तास्तु तव पुत्रस्य भारत । एकादश हता युद्धे ताः प्रभो पाण्डुसृञ्जयैः ॥ १४ ॥ तेषु
राजसहस्रेषु तावकेषु महात्मसु । एको दुर्योधनो राजन्नदृश्यत भृशं क्षतः ॥ १५ ॥
ततो वीक्ष्य दिशः सर्वा दृष्ट्वा शून्यां च मेदिनीम् । विहीनः सर्वयोधैश्च पाण्डवान्
वीक्ष्य संयुगे ॥ १६ ॥ मुदितान् सर्वसिद्धार्थान्नर्दमानान् समन्ततः । बाणशब्दरवांश्च
श्रुत्वा तेषां महात्मनाम् ॥ १७ ॥ दुर्योधनो महाराज कश्मलेनाभिसंवृतः । अपयाने
मनश्चक्रे विहीनबलवाहनः ॥ १८ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । निहते मामके सैन्ये निःशेषे
शिबिरे कृते । पाण्डवानां बले सूत किन्नु शेषमभूत्तदा । एतन्मे पृच्छतो ब्रूहि कुशलो
ह्यसि सञ्जय ॥ १९ ॥ यच्च दुर्योधनो मन्दः कृतवांस्तनयो मम । बलक्षयं तदा
दृष्ट्वा स एकः पृथिवीपतिः ॥ २० ॥ सञ्जय उवाच । रथानां द्वे सहस्रे तु सप्त नाग
शतानि च । पञ्च चाश्वसहस्राणि पत्तीनाञ्च शतं शताः ॥ २१ ॥ एतच्छेषमभूद्राजन्
पाण्डवानां महद्बलम् । परिगृह्य हि यद्युद्धे धृष्टद्युम्नो व्यवस्थितः ॥ २२ ॥ हे कौर

वंशी तब आपकी वह सेना समाप्त होगई । १३ । हे प्रभु आपके पुत्र की
इकट्ठी होनेवाली वह ग्यारह अक्षौहिणी युद्धमें पाण्डव और सृञ्जयों के हाथसे
मारीगई । १४ । हे राजा आपके उन हजारों महात्मा राजाओं में से केवल अकेला
राजा दुर्योधन अत्यन्त घायल दिखाई पड़ा । १५ । इसके पीछे सब दिशाओं को
देखकर और सब शूरवीरों से रहित पृथ्वी को और युद्धमें प्रसन्न पूर्वक
अभीष्ट प्राप्त करनेवाले चारोंओरसे गर्जनेवाले पांडवों को देखकर और उन महा
त्माओं के बाणों के शब्दों को सुनकर । १७ । दुर्योधन मूर्च्छा से युक्त हुआ
फिर सेना और सवारियों से रहित ने हटजाने में चित्त किया । १८ । धृतराष्ट्र बोले
हे सूत मेरी सेनाके मरने और डेरा के खाली करनेपर पांडवों की सेना में क्या
क्या शेषरहा । १९ । और उससमय मेरेपुत्र अभागे दुर्योधनने सेना के नाश
को देखकर अकेलेनेही जो किया उसकोभी कहो । २० । संजय बोले कि दोहजार
सातसौ हाथी पांचहजार घोड़े और दशहजार पदाती । २१ । यह बड़ी सेना
पांडवोंकी बाकीथी जिसको कि धृष्टद्युम्न युद्धमें अलंकृत करके नियतथा । २२ । हे

your's in were thus slain by the Pandavas and Srinjayas. "Prince
[illegible] wounded and alive out of the whole lot
[illegible] in all directions and finding the field
vacant of all warriors and the Pandavas exulting in joy and
twanging their bows, Duryodhan, with a fainting heart intended to
retreat." Dhritrashtra said, "How many warrirs remained with the
Pandavas when all my army was destroyed and the tents were
empty ? Tell me, what it was that my unfortunate son Duryodhan
did then." Sanjaya said, "Two thousands and seven hundred ele-
phants, five thousand horse and ten thousand foot were the rem-
nants of the Pandav army led by Dhrishtadyumn. Prince Duryodhan

तथैव हतो दुर्योधनो नृपः । नापश्यत्समरे कञ्चित्सहायं रथिनां वरः ॥ २३ ॥ नर्दमानान् परांश्चैव स्वबलस्य च संक्षयम् । तथा दृष्ट्वा महाराज एकः स पृथिवीपतिः । हतं स्वहयमुत्सृज्य प्राङ्मुखः प्राद्रवद्भयात् ॥ २४ ॥ गदामादाय तेजस्वी पदातिः प्रस्थितो ह्रदम् ॥ २५ ॥ नातिदूरं ततो गत्वा पद्भ्यामेव नराधिपः । सस्मार वचनं क्षत्तुर्धर्मशीलस्य धीमतः ॥ २६ ॥ इदं नूनं महाप्राज्ञो विदुरो दृष्टवान् पुरा । महद्वैशसमस्माकं क्षत्रियाणाञ्च संयुगे ॥ २७ ॥ एवं विचिन्तयानस्तु प्रविविक्षुर्ह्रदं ततः । दुःखसन्तप्तहृदयो दृष्ट्वा राजा बलक्षयम् ॥ २८ ॥ पाण्डवाश्च महाराज धृष्टद्युम्नपुरोगमाः । अभ्यधावन्त संक्रुद्धास्तव राजन् बलं प्रति ॥ २९ ॥ शक्त्यृष्टिप्रासहस्तानां बलानामभिगर्जताम् । सङ्कल्पमकरोन्मोघं गाण्डीवेन धनञ्जयः ॥ ३० ॥ तान् हत्वा निशितैर्बाणैः सामात्यान् सह बन्धुभिः । रथे श्वेतहये तिष्ठन्नर्जुनो बह्वशोभत ॥ ३१ ॥ सुबलस्य हते

भरतर्षभ इसके पीछे रथियों में श्रेष्ठ अकेले राजा दुर्योधनने युद्धमें किसी साथीको नहीं देखा ।२३। हे महाराज उस अकेले राजाने इसप्रकार गर्जतेहुये शत्रुओंको और अपनी सेनाके नाशको देखकर आपकापुत्र दुर्योधन अपने मृतक घोड़ेको छोड़कर युद्धसे पूर्वकीओर भागा ।२४। और बड़ी तेजस्वी अपनी गदाको लेकर ह्रदको चला ।फिरपैदलही थोड़ादूर जाकर उसने धर्मके अभ्यासी महाबुद्धिमान विदुरजीके वचनको स्मरण किया । २६ । कि निश्चय करके पूर्वसमय में बड़े ज्ञानी विदुरजीने युद्धमें हमलोगों के और अन्य सब क्षत्रियों के नाशको जानलिया था ।२७। हे राजा वह दुर्योधन इसप्रकार अधिक चिन्ताकरता हृदमें प्रवेश करजाने का अभिलाषी सेनाके नाश को देखकर शोक से महादुःखी हुआ । २८ । हे महाराज राजाधृतराष्ट्र इसके पीछे वह सब पाण्डव जिनका अग्रवर्ती धृष्टद्युम्न था अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर आपकी सेनाके सन्मुख दौड़े ।२९। अर्जुन ने गाण्डीव धनुषके द्वारा उन गर्जने वाले शक्ति दुधारा खड्ग और प्रासों को हाथ में रखनेवाले शूरवीरों का सङ्कल्प निष्फल किया ।३०। उन सबको मन्त्री और बान्धवों समेत तीक्ष्ण धारवान बाणोंसे मारकर श्वेत घोड़ेवाले रथ पर अर्जुन बहुत शोभायमान हुआ । ३१ ।

found himself alone without a comrade Seeing the great destruction of the army and the enemies roaring loud, your son Duryodhan left his horzes and went on foot towards the East He went towards a lake armed with his mace. Going forward for some time, he remembered the words of wise Vidur. 26 He then said to himself, "Surely wise Vidur knows of the great destruction of our armies." Thus thinking, Duryodhan, intent on entering the lake, was very sorrowful at the loss of his army. Then all the Pandavas led by Dhrishtadyumn, much enraged, rushed against your army. With his Gandiv bow Aijun made fatile the intentions of the warriors armed with various weapons. 30 Having

पुत्रे सबाजिरथकुञ्जरे । महावनमिव छिन्नमभवत्तावकं बलम् ॥ ३२ ॥ अनेकशतसाहस्रे
बले दुर्य्योधनस्य ह । नान्यो महारथो राजन् जीवमानो व्यदृश्यत ॥ ३३ ॥ द्रोणपुत्रा
दृते वीरात्तथैव कृतवर्मणः । कृपाच्च गौतमाद्राजन् पार्थिवाच्च तवात्मजात् ॥ ३४ ॥
धृष्टद्युम्नस्तु मां दृष्ट्वा हसन् सात्यकिमब्रवीत् । किमनेन गृहीतेन नानेनार्थोऽस्ति जी
वता ॥ ३५ ॥ धृष्टद्युम्नवचः श्रुत्वा शिनेर्नप्ता महारथः । उद्यम्य निशितं खड्गं हन्तु
मामुद्यतस्तदा ॥ ३६ ॥ तमागम्य महाप्राज्ञः कृष्णो द्वैपायनोऽब्रवीत् । मुच्यतां सञ्जयो
जीवन्न हन्तव्यः कथञ्चन ॥ ३७ ॥ द्वैपायनवचः श्रुत्वा शिनेर्नप्ता कृताञ्जलिः । ततो
मामब्रवीन्मुक्त्वा स्वस्ति सञ्जय साधय ॥ ३८ ॥ अनुज्ञातस्त्वहं तेन न्यस्तवर्मा निरा
युधः । प्रातिष्ठं येन नगरं सायाह्ने रुधिरोक्षितः ॥ ३९ ॥ क्रोशमात्रमपक्रान्तं गदा
पाणिमवस्थितम् एकं दुर्य्योधनं राजन्नपश्यं भृशविक्षतम् पाणिमवस्थितम् ॥ ४० ॥

घोड़े हाथी और रथोंसमेत सौबलके पुत्र शकुनीके मरनेपर आपकी सेना टूटेहुये महावन की समान होगई । ३२ । वीर अश्वत्थामा कृतवर्मा गौतम कृपाचार्य और आपके पुत्र राजा दुर्योधन के सिवाय दूसरा जीवता हुआ कोई महारथी देखने में नहीं आया । ३४ । फिर धृष्टद्युम्न मुझको देखकर हँसताहुआ सात्यकी से बोला कि इसके पकड़ने से क्या प्रयोजन है और जीवतहुये से भी कुछभी प्रयोजन सिद्धनहीं है । ३५ । तब महारथी सात्यकी धृष्टद्युम्नके वचनको सुनकर और तेजधार खड्गको उठाकर मेरे मारने को उद्युक्त हुआ । ३६ । तब बड़ेज्ञानी व्यासजीने आकर उससे कहा कि सञ्जय को जीवता छोड़ा इस को कभी न मारना चाहिये।३७।व्यासजीके वचनको सुनकर हाथजोड़के सात्यकी मुझको छोड़कर मुझसे यह वचन बोला । ३८ कि हे सञ्जय तुम कल्याण का साधन करो तब मैं उसकी आज्ञापाकर कवच और शस्त्रोंको त्यागकर रुधिरसे भराहुआ सायंकाल के समय जिधर नगरथा उधरकी ओरको चलदिया एककोस हटजाने बाद गदा हाथमेंलिये नियत अत्यन्त घायल शरीर मैंने राजा दुर्योधन को देखा । ४० । ३

slain them with their kinsmen and followers, Arjun looked glorious on his car drawn by white horses. At the fall of Skakuni and his elephants and cars, your army looked like a forest of broken trees. No warrior of your army was living except Ashwathama, Kritvarma, Kripacharya and your son Duryodhan. Looking at me, Dhrishtadyumn said to Satyaki with a smile, ' It is useless to keep him alive as a captive ' On hearing the words of Dhrishtadyumn, Satyaki was ready to slay me with his sharp sword 36 Then wise Vyas interceded and told him to set me free alive. With joined palms, Satyaki released me, saying, ' You are free Sanjaya. " At this, I left arms and armour and with bleeding body took the way to the city After walking a mile, I saw Duryodhan in his blood stained body holding his mace in his hand. 40 With eyes full of tears he

स तु बाष्पपूर्णाक्षो न शक्नोत्यभिवीक्षितुम् । उपप्रैक्षत मां दृष्ट्वा तदा दीनमवस्थितम् ॥ ४१ ॥ तञ्चाहमपि शोचन्तं दृष्ट्वैका किनमाहवे । मुहूर्तं नाशकं वक्तुं किञ्चिद्दुःखपरिप्लुतः ॥ ४२ ॥ ततोऽस्मै तदहं सर्वमुक्तवान् ग्रहणं तदा । द्वैपायनप्रसादाच्च जीवतो मोक्षमात्मनः ॥ ४३ ॥ मुहूर्तमिव च ध्यात्वा प्रतिलभ्य च चेतनाम् । भ्रातृंश्च सर्वसैन्यानि समपृच्छत मां ततः ॥ ४४ ॥ तस्मै तदहमा चक्षं सर्वं प्रत्यक्षदर्शिवान् भ्रातृंश्च निहतान् सर्वान् सैन्यञ्च विनिपातितम् ॥ ४५ ॥ त्रयः किल रथाः शिष्टास्तावकानां नराधिप । इति प्रस्थानकाले मां कृष्णद्वैपायनोऽब्रवीत् ॥ ४६ ॥ स दीर्घमिव निश्वस्य विप्रेक्ष्य च पुनः पुनः । असौ मां पाणिना स्पृष्ट्वा पुत्रस्ते पर्यभाषत ॥ ४७ ॥ त्वदन्यो नेह संग्रामे कश्चिज्जीवति सञ्जय । द्वितीयं न हि पश्यामि ससहायाश्च पाण्डवाः ॥ ४८ ॥ ब्रूयाः सञ्जय राजानं प्रज्ञाचक्षुषमीश्वरम् ।

राजा उससमय वह अश्रुओं से पूर्णनेत्र मेरी ओर देखनेको समर्थ नहींहुआ इसप्रकार दुःखी नियत मुझको देखकर ठहरारहा । ४१ । और मैंभी युद्ध में शोच करनेवाले उस अकेलेको देखकर बड़े दुःखसे संयुक्त होकर एक मुहूर्त भर भी वार्तालाप करने को समर्थ नहीं हुआ । ४२ । इस के अनन्तर मैंने अपने सब पकड़े जानेका वृत्तान्त उससे कहा और व्यासजीकी कृपासे अपने जीवते हुये छुटजाने को वर्णनकिया । ४३ । इसके पीछे उसने एक मुहूर्त ध्यानकरके सचेतता को पाकर भाइयोंसमेत सब सेनाके लोगों को मुझसे पूछा । ४४ । तब अपने नेत्र से देखनेवाले मैंने सब वृत्तान्त उससे कहा सब भाइयों का मरना और सेनाका नाशहोनावर्णन किया । ४५ । हे राजा निश्चयकरके आपके तीनरथी बाकी हैंयह वृत्तान्त चलतेसमय व्यासजीने मुझसे कहाहै । ४६ । तब लम्बीश्वासा लेकर और बारम्बार शोचकर उस आप के पुत्रने मुझको हाथ से स्पर्शकरके यह वचन कहा । ४७ । कि हे सञ्जय इस युद्धमें तेरे सिवाय अब कोई जीवता नहीं है यहांकिसी दूसरे को नहीं देखताहूं और पांडव सहायतावाले हैं । ४८ । हे सञ्जय अब तुम उस ज्ञानरूपी नेत्र रखनेवाले महाराज धृतराष्ट्र से कहना कि आपका पुत्र दुर्योधन

was hardly able to look at me and waited for my arrival. Seeing him alone and in great distress, I remained tongue-tied for a while, and then I told him of my capture and release by the intercession of Vyas. He regained consciousness after some time and enquired about his brothers and warriors. I told him of the destruction of all of them as I had seen. 45. I told him that I was informed by Vyas that his three warriors had scaped destruction. Then with deep sighs and grief, having touched me with his hand, your son said, " I see, Sanjaya that none except you is alive. I see none on my side, while the Pandavas have friends. Inform my father that his son has entered the lake. Destitute of friends, sons and brothers

दुर्योधनस्तथा सूत प्रविष्टो ह्रदमित्युत ॥ ४९ ॥ सुहृद्भिस्तादृशैर्हीनः पुत्रैर्भ्रातृभिरेव च । पाण्डवैश्च हृते राज्ये को नु जीवति मादृशः ॥ ५० ॥ आचक्षीथाः सर्वमिदं मां च मुक्तं महाहवात् । अस्मिंस्तोयह्रदे सुप्तं जीवन्तं भृशविक्षतम् ॥ ५१ ॥ एवमुक्त्वा महाराज प्राविशत्तं ह्रदं नृपः । अस्तम्भयत तोयञ्च मायया मनुजाधिप ॥ ५२ ॥ तस्मिन् ह्रदं प्रविष्टे तु त्रीन्रथान् श्रान्तवाहनान् । अपश्यं सहितानेकस्तं देशं समुपेयुषः ॥ ५३ ॥ कृपं शारद्वतं वीरं द्रौणिञ्च रथिनां वरम् । भोजञ्च कृतवर्माणं सहितान् शरविक्षतान् ॥ ५४ ॥ ते सर्वे मामभिप्रेक्ष्य तूर्णमश्वानचोदयन् । उपयाय तु मामूचुर्दिष्ट्या जीवसि सञ्जय ॥ ५५ ॥ अपृच्छंश्चैव ते सर्वे पुत्रं तव जनाधिप । कच्चिद्दुर्योधनो राजा स नो जीवति सञ्जय ॥ ५६ ॥ आख्यातवानहं तेभ्यस्तदा कुशलिनं नृपम् । तच्चैव सर्वमाचख्यौ यन्मां दुर्योधनोऽब्रवीत् । ह्रदञ्चैवाहमाचष्ट यं प्रविष्टो नराधिपः ॥ ५७ ॥ अश्वत्थामा तु तद्राजन्निशम्य वचनं मम । तं ह्रदं विपुलं प्रेक्ष्य करुणं पर्य्यदे

हृदमें प्रवेश करगया ॥ ४९ ॥ इसप्रकारके मित्र पुत्र और भाइयों से रहितहुआ पांडवों से राज्यहरण होनेपर मुझसा कौन मनुष्य जीवता रहसक्ता है ऐसे सब वृत्तान्तको और बड़े युद्धमें से छुटाहुआ इस हृदके जलमें गुप्त अत्यन्त घायल जीवता हुआ मुझको कहदेना ॥ ५१ ॥ हे महाराज ऐसा कहकर वह उस बड़े हृदमें प्रवेश करगया वहां हृदमें जाकर राजाने अपनी माया से जलको नियत किया ॥ ५२ ॥ हृदमें उसके प्रवेश करजानेपर मुझ अकेलेने उस स्थानपर आने के अभिलाषी थकी सवारीवाले तीन रथियोंको देखा ॥ ५३ ॥ अर्थात् शारद्वत कृपाचार्य रथियोंमें श्रेष्ठ वीर अश्वत्थामा भोजवंशी कृतवर्मा इनतीनों को बाणों से घायल साथ २ आनेवालोंको देखा ॥ ५४ ॥ उन सबने मुझको देखकर शीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया और समीप आकर मुझसे बोले कि हे सञ्जय तू प्रारब्ध से जीवता है ॥ ५५ ॥ यह कहकर सबने आपके पुत्र राजाको मुझसे पूछा कि हे सञ्जय वह हमारा राजा दुर्योधन जीवता है तब मैंने उस राजाकी कुशलता कही और वह सब बातें भी उनसे कहीं जो दुर्योधनने मुझसे कही थीं और उस हृदको भी बताया जिसमें कि राजा प्रवेश किये हुये था ॥ ५७ ॥ हे राजा अश्वत्थामा ने उस बड़े

and deprived of kingdom by the Pandavas, what person like me can wish for life. 50. Tell him that I have entered the lake much wounded yet alive." Having said this he entered the lake and stopped the motion of water by his own skill. When he had entered water, I saw three warriors coming that way with tired beasts. I saw Kripacharya, Ashwathama and Kritvarma wounded with arrows and coming together. They moved their horses fast at the sight of me and coming close to me they said, "It is by good luck that you are alive. [redacted] Sanjaya" 55 Having said this, they enquired of me about your son, saying "Is our Duryodhan alive?" Then I told them he was alive and repeated before them the words of Duryodhan

वेधयत् ॥ ५८ ॥ अहो धिङ्न स जानाति जीवितास्मान्नराधिपः । पर्याप्ता हि वयं तेन सह योधयितुं परान् ॥ ५९ ॥ ते तु तत्र चिरं कालं विलप्य च महारथाः । प्राद्र

॥ ते तु मां रथमारोप्य कृपस्य सुपरि

॥ ६१ ॥ तत्र गुल्माः हरित्रस्ताः सूर्ये

तव सुक्षयम् ॥ ६२ ॥ ततो वृद्धा महा

प्रययुर्नगरं प्रति ॥ ६३ ॥ तत्र विक्रोश

शब्दः श्रुत्वा तद्बलसंक्षयम् ॥ ६४ ॥

ततस्तु योषितो राजन् क्रन्दन्त्यो वै मुहुर्मुहुः कुरर्य इव शब्देन नादयन्त्यो महीतलम् ॥ ६५ ॥ आजघ्नुः करजैश्चापि पाणिभिश्च शिरांस्युत लुलुञ्चुश्च तदा केशान् क्रोश न्त्यस्तत्र तत्र ह ॥ ६६ ॥ हाहाकारविनादिन्यो विनिघ्नाना उरांसि च । क्रोशन्त्यस्तत्र रुरुदुः क्रन्दमाना विशाम्पते ॥ ६७ ॥ ततो दुर्योधनामात्याः साश्रुकण्ठा भृशातुराः

वचन को सुनकर उस बड़े हृदको देखकर दया से विलाप किया ।५८ कि अहो धिक्कार है कि वह राजा हमको जीवता नहींजानता है उसके साथहोकर हमलोग शत्रुओं से युद्ध करनेको समर्थ हैं । ५९ । वह रथियों में श्रेष्ठ महारथी वहां बहुत देरतक विलापकरके और युद्धमें पांडवोंको देखकर भागे ।६०। मरनेसे बचेहुये वह तीनोंरथी कृपाचार्य के अच्छे अलंकृत रथपर मुझको बैठाकर सेनाके निवास स्थान में आये ।६१। वहां सूर्यके अस्त होनेपर भयभीत होकर सब गुल्म अर्थात् दूत आपके पुत्रों का नाश सुनकर पुकारे ।६२। हे महाराज इसके पीछे स्त्रियोंके रक्षक वृद्ध मनुष्य रानी आदि को लेकर नगरको चले ।६३। वहां उस सेनाके नाशको सुनकर पुकारती और रोतीहुई सब स्त्रियों के बड़े शब्द प्रकटहुये ।६४। हे राजा वारम्वार शब्द करनेवाली उन स्त्रियोंने कुरी पक्षीके समान अपने भारी शब्दोंसे पृथ्वीको शब्द यमान किया ।६५। तब जहां पुकारती हुई स्त्रियोंने उंगलियों और हाथोंसे अपनेशिरोंको पीटा और शिरोंके बालोंको उखाड़ा ।६६। हे राजा वहां हाहाकार करके शब्द करनेवाली और छाती पीटनेवाली रोतीसी पुकारती स्त्रियां रोदन करनेलगीं ।६७। इसके पीछे दुर्योधनके अमात्य जोकि

I pointed to the lake which the king had entered. Hearing my words and looking at the lake, Ashwathama wept for grief, saying, "It is a pity that the king thinks us dead." Accompanied by him, we can fight the foes." Those warriors wept long and then fled away at the sight of the Pandavas. 60. Taking me on their excellent car, they came to the camp, where at the close of the day all the trees were bewailing the fate of your sons. Then the old guards of women accompanied the queen and other women to the city and the women of the city cried out with grief on hearing the news. They screamed like *Kurri* birds and filled the earth with their moans. 65.

राजदारानुपादाय प्रययुर्नगरं प्रति । वेत्रव्यासक्तहस्ताश्च द्वाराध्यक्षा विशाम्पते । ६८॥
शयनीयानि शुभ्राणि स्पर्ध्यास्तरणवन्ति च । समादाय ययुस्तूर्णं नगरं दाररक्षिणः
॥ ६९ ॥ अदृष्टपूर्वा या नार्यो भास्करेणापि वेश्मसु । ददृशुस्ता महाराज जना याम्तीः
पुरं प्रति ॥ ७१ ॥ ताः स्त्रियो भरतश्रेष्ठ सौकुमार्यसमन्विताः । प्रययुर्नगरं तूर्णं हतस्व
जनबान्धवाः ॥ ७२ ॥ आ गोपालाविपालेभ्यो द्रवन्तो नगरं प्रति । ययुर्मनुष्याः
सम्भ्रान्ता भीमसेनभयार्दिताः ॥ ७३ ॥ अपि चैषां भयं तीव्रं पार्थेभ्योऽभूत् सुदारुणम् ।
प्रेक्षमाणास्तदान्योन्यमाधावन्नगरं प्रति ॥ ७४ ॥ तस्मिंस्तथा वर्तमाने विद्रवे भृश
दारुणे युयुत्सुः शोकसम्मूढः प्राप्तकालमचिन्तयत् ॥ ७५ ॥ जितो दुर्योधनः संख्ये
पाण्डवैर्भीमविक्रमैः । एकादशचमूभर्ता भ्रातरश्चास्य सूदिताः ॥ ७६ ॥ हताश्च कुरवः
सर्वे भीष्मद्रोणपुरःसराः । अहमेको विमुक्तस्तु भाग्ययोगाद्यदृच्छया ॥ ७७ ॥ विद्रुतानि

आंसुओं से गद्गद कण्ठ और अत्यन्त दुःखी थे रानी आदि को लेकर नगरको
चलदिये हे राजा हाथमें बेतलिये रक्षक लोग और द्वाराध्यक्ष बहुमूल्य के उज्ज्वल
शयनोंको लेकर शीघ्रतासे नगरको गये । ६९ । हे महाराज जो स्त्रियां महलों में
से प्रथम कभी सूर्य से भी नहीं देखीगईथीं उन स्त्रियों को पुरमें जातेहुये लोगोंने
देखा । ७१ । हे भरतर्षभ वह कोमल शरीरवाली स्त्रियां जिनके स्वजनबान्धव मारे
गये शीघ्रही नगरको चलीं । ७२ । और गोपाल विपाल आदिक सब नगरकी
ओर दौड़े भीमसेन के भयसे पीड़ित और भ्रान्ती से युक्त मनुष्य चले । ७३ ।
उन्होंको भी बड़ा असह्य और कठिनभय उत्पन्नहुआ तब परस्पर देखतेहुये नगर
की ओर दौड़े । ७४ । इसप्रकार उस अत्यन्त भयानक भगोड़के वर्त्तमान होनेपर
अचेत युयुत्सुने समयके अनुसार चिन्ताकरी ७५ कि युद्ध में भयानक पराक्रमवाले
पाण्डवों ने ग्यारह अक्षौहिणी सेनाके स्वामी दुर्योधनको विजयकिया उसके भाई
मारेगये और बहुतसे कौरवलोग जिनकेकि अग्रवर्त्ती भीष्म और द्रोणाचार्य्य थे वहभी
मारेगये मैं अकेला प्रारब्ध और ईश्वरकी इच्छासे बचाहूं । ७७ । सब डेरे आदि

The weeping women beat their heads and tore their hair. They beat their breasts and wept. The attendants of Duryodhan with tears in their eyes and voice choked with grief came to the city with the queen. The guards with staves in their hands, and doorkeepers with clean and precious beds went in haste to the city. The women who were not to be seen even by the Sun in their palaces were seen entering the city by the people. 71. The delicate women whose kinsmen were slain, came to the city in haste. The cowherds too, came back and lost their senses by the fear of Bhim. They ran in terror towards the city looking at each other. During that general flight, Yuyutsu thought in his mind, " The Pandavas of dreadful prowess have conquered Duryodhan the owner

च सर्वाणि शिबिराणि समन्ततः। इतस्ततः पलायन्ते हतनाथा हतौजसः ॥७८॥ अह
तपूर्वा दुःखार्ता भयव्याकुललोचनाः। हरिणा इव वित्रस्ताः प्रेक्षमाणा दिशो दश
॥७९॥ दुर्योधनस्य सचिवा ये केचिद्वशेषिताः। राजदारानुपादाय व्यधावन्नगरं प्रति
॥ ८० ॥ प्राप्तकालमहं मन्ये प्रवेशं तैः सह प्रभो। युधिष्ठिरमनुज्ञाप्य वासुदेवं तथैव
च। एतदर्थं महाबाहुरुभयोः सन्न्यवेदयत् ॥ ८१ ॥ तस्य प्रीतो भवद्राजा नित्यं करु
णवेदिता। परिष्वज्य महाबाहुर्वैश्यापुत्रं व्यसर्जयत् ॥ ८२ ॥ ततः स्वरथमास्थाय
द्रुतमश्वानचोदयत्। समवाहयितव्यांश्चापि राजदारान् पुरं प्रति ॥ ८३ ॥ तैश्चैव सहितः
क्षिप्रमस्तं गच्छति भास्करे। प्रविष्टो हास्तिनपुरं बाष्पकण्ठोऽश्रुलोचनः ॥ ८४ ॥ अप
श्यत महाप्राज्ञं विदुरं साश्रुलोचनम्। राज्ञः समीपान्निष्क्रान्तं शोकोपहतचेतसम् ॥८५॥
तमब्रवीत् सत्यधृतिः प्रणतं त्वग्रतः स्थितम्। अस्मिन् कुरुक्षये वृत्ते दिष्ट्या त्वं पुत्र
जीवसि ॥ ८६ ॥ विना राज्ञः प्रवेशाद्वै किमसि त्वमिहागतः। एतन्मे कारणं सर्वं विस्त ;

के लोग चारोंओर से भागे जिनके स्वामी मारेगये वह कान्ति शोभासे रहित
अपूर्वरूप दुःखसे पीड़ामान भयसे व्याकुल चक्षु इधर उधरसे ऐसे भागते हैं कि
जैसे कि सिंहसे भयभीत मृग दशोदिशाओं को देखतेहुये भागते हैं। ७९।
दुर्योधनके प्रधान और सलाहकार जो कुछ बाकीरहे वह राजकी स्त्रियोंको लेकर
नगरकी ओर दौड़े। ८०। हे प्रभु मैं उनके साथ नगरमें पहुंच जानाही समयके
अनुसार उचित जानताहूं महाबाहु युयुत्सुने युधिष्ठिर और भीमसेनको जतलाकर
इस प्रयोजनको प्रकटकिया। ८१। सदैव दयावान् राजा युधिष्ठिर उसपर प्रसन्न
हुआ तब महाबाहु ने मिलकर उस युयुत्सुको विदा किया उसके पीछे उसने रथपर
सवार होकर शीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया और भागतीहुई राजस्त्रियोंको
पुरमें लेगया। ८३। सूर्य के अस्तहोनेपर आंसुओंसे पूर्णनेत्र और गद्गदकण्ठ
युयुत्सु उन सबको साथलिये, शीघ्रही हस्तिनापुरमें पहुंचा। ८४। और आर्द्रनेत्र
शोकसे व्याकुलचित्त बड़ेज्ञानी राजाको और समीपसे निकलेहुये विदुरजी को
देखा। ८५। वह सच्चे धैर्यवाले विदुरजी उस नम्रीभूत आगे नियत होनेवाले
युयुत्सुसे बोले हे पुत्र इस कौरवों के नाश होनेमें तुम भाग्यसे जीवितेहो। ८६।

of eleven akshauhinis. *His brothers too are slain as well as the* Kauravas who had Bhishm and Dronacharya for their leaders. Fate has kept me alive. 77. The people ran away from the tents. They whose relations were slain, in battle ran away like deer terrified of a lion. The rest of the advisers of Duryodhan went away towards the city with women. 80. To reach with them in the city was the best course in my opinion. Brave Yuyutsu begged leave of Yudhishthir and Bhim. Yudhishthir, who was ever kind hearted, allowed Yuyutsu to go away. Yuyutsu mounted his car and soon brought the women to the city. With eyes full of tears at sunset, and voice choked with grief, Yuyutsu soon brought them to Hasthinapur. Vidur saw him much distressed and said, "You alone

रेण निवेद्य ॥ ८७ ॥ युयुत्सुरुवाच । निहते शकुनौ तात सज्ञातिसुतबान्धवे । हतशेष परीवारो राजा दुर्योधनस्ततः । स्वकं हयमुत्सृज्य प्राङ्मुखः प्राद्रवद्भयात् ॥ ८८ ॥ अपक्रान्ते तु नृपतौ स्कन्धावारनिवासिनः । भयव्याकुलितं सर्वं प्राद्रवन्नगरं प्रति ॥ ८९ ॥ [illegible] वाहनेषु समारोप्य स्त्र्यध्यक्षाः प्राद्रवन् [illegible] सहकेशवमनुः प्रविष्टो हास्तिनपुरं रक्षन् लोकान् प्रधावतान् ॥ ९१ ॥ एतत् श्रुत्वा तु वचनं वैश्यापुत्रेण भाषितम् । प्राप्तकालमिति ज्ञात्वा विदुरः सर्वधर्मवित् ॥ अपूजयदमेयात्मा युयुत्सुं वाक्यकोविदम् ॥ ९२ ॥ प्राप्तकालमिदं सर्वं ब्रुवतो भरतक्षये । अद्य त्वमिह विश्रान्तः श्वोऽभिगन्ता युधिष्ठिरम् ॥ ९३ ॥ एतावदुक्त्वा वचनं विदुरः सर्वधर्मवित् । युयुत्सुं समनुज्ञाप्य प्रविवेश नृपक्षयम् । युयुत्सुरपि तां रात्रिं स्वगृहे न्यवसत्तदा ॥ ९४ ॥ इति ह्रदप्रवेशपर्वणि एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥

राजाके पहुंचने विना तू यहां क्यों आया है इस सब कारणका ब्योरे समेत मुझसे कहो ॥ ८७ ॥ युयुत्सु बोले [illegible] मरनेसे शेष बचेहुये परिवारका [illegible] भयसे पूर्वकी ओर भागगया ॥ ८८ ॥ सेनाके निवासस्थानके लोग राजाके दूर चले जानेपर भयसे व्याकुल होकर सब नगरको भागे ॥ ८९ ॥ इसके पीछे प्रधान अधिकारी और नौकर चाकर लोग राजा दुर्योधन समेत सब भाइयोंकी स्त्रियोंको सवारियों पर बैठाकर सेनासे भागे ॥ ९० ॥ उसके पीछे मैं केशवजी समेत राजा युधिष्ठिर से पूछकर दौड़तेहुये मनुष्यों की रक्षा करताहुआ हस्तिनापुरमें आया ॥ ९१ ॥ युयुत्सू के कहेहुये इस वचनको सुनकर सब धर्मज्ञ बड़े बुद्धिमान विदुरजी ने युयुत्सु की प्रशंसाकरी और यह वचन कहा ॥ ९२ ॥ कि यह सब समय के अनुसार है अब तू यहां रहकर प्रातःकाल युधिष्ठिरके पासजायगा ॥ ९३ ॥ आंसूभरे विदुरजीने इतनी बात कहकर और युयुत्सु से पूछकर राजमहलमें प्रवेश किया युयुत्सु भी उस रात्रिको अपने घर में रहा ॥ ९४ ॥

have scaped from general destruction of the Kauravas. Why have you left the king behind? Pray tell me all that has happened." Yuyutsu said, "At the fall of Shakuni and his followers, Duryodhan left the rest of the warriors and ran away for fear. The people left behind, ran towards the city in consternation. The principal servants brought the women of Duryodhan and his brothers to the city. 90. I asked permission of Keshav and Yudhishthir and have come with the returning men, protecting them in the way." At this Vidur praised the humane action of Yuyutsu and said, "It was proper what you did. Rest here for the night and return to Yudhishthir early in the morning." Having talked with Yuyutsu, Vidur returned to the palace with tears in his eyes, while Yuyutsu remained there for the night." 94.

धृतराष्ट्र उवाच। हतेषु सर्वसैन्येषु पाण्डुपुत्रै रणाजिरे। मम सैन्यावशिष्टास्ते किमकुर्वत सञ्जय॥ १॥ कृतवर्मा कृपश्चैव द्रोणपुत्रश्च वीर्यवान्। दुर्योधनश्च मन्दात्मा राजा किमकरोत्तदा॥ २॥ सञ्जय उवाच। सम्प्राद्रवत्सु दारेषु क्षत्रियाणां महात्मनाम्। विद्रुते शिबिरे शून्ये भृशोद्विग्नास्त्रयो रथाः॥ ३॥ निशम्य पाण्डुपुत्राणां तदा विजयिनां स्वनम्। विद्रुतं शिबिरं दृष्ट्वा सायाह्ने राजगृद्धिनः। स्थानं नारोचयन्स्तत्र ततस्ते ह्रदमभ्ययुः॥ ४॥ युधिष्ठिरोऽपि धर्मात्मा भ्रातृभिः सहितो रणे। हृष्टः पर्यचरद्राजन् दुर्योधनवधेप्सया॥ ५॥ मार्गमाणास्तु सङ्क्रुद्धास्तव पुत्रं जयैषिणः। यत्नतोऽन्वेषमाणास्तु नैवापश्यन् जनाधिपम्॥ ६॥ स हि तीव्रेण वेगेन गदापाणिरपाक्रमत्। तं ह्रदं प्राविशच्चापि विष्टभ्यापः स्वमायया॥ ७॥ यदा तु पाण्डवाः

॥ गदापर्व ॥

अध्याय ३०॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय युद्धभूमि में, पाण्डवों के हाथसे सब सेनाके मरनेपर मेरी उन शेषरचीहुई सेनाओंने कोनसाकर्म किया। १। उससमय पराक्रमी कृतवर्मा, कृपाचार्य, अश्वत्थामा और निर्बुद्धि राजा दुर्योधन ने क्या किया। २। संजय बोले कि महात्मा क्षत्रियों की स्त्रियों के शीघ्र चलेजाने भागजाने और डेरों के खाली होनेपर विजयके अभिलाषी अत्यन्त व्याकुल तीनोंरथियों ने। ३। विजय करनेवाले पाण्डवोंके शब्दोंको, सुनकर और सायकालके समय डेरेको भागाहुआ देखकर वहां निवासको स्वीकार नहीं किया और वहां से चलकर फिर वह ह्रदकेही समीपगये। ४। धर्मात्मा युधिष्ठिर भी भाइयोंसमेत युद्धमें प्रसन्नचित्त दुर्योधन के मारने की इच्छा से चारोंओर को भ्रमण करनेलगा। ५। हे राजा फिर शत्रुनें क्रोधयुक्त आपकेपुत्रके विजयकरनेके अभिलाषी पांडव उसके खोजको करनेलगे विचार पूर्वक उपायसे ढूंढनेवालोंने राजाको नहीं देखा। ६। वह बड़े वेगसमेत गदाहाथमें लेकर दूर चलागया और अपनी मायासे जलको रोककर उस

CHAPTER XXX

GADA PARV

1 Dhritrashtra said, " What did the rest of the warriors, who had escaped destruction from the Pandavas do ? What did valiant Kritvarma, Kripacharya, Ashwathama and foolish Duryodhan do ? " Sanjaya said, "When the women of the warriors had vacated the tents, the three warriors anxious for victory, did not like to stay there to hear the victorious cries of the Pandavas and to see their own camp deserted They went again near the tank Yudhishthir the just and his brothers roamed here and there in search of Duryodhan. 5. Then desirous of conquering your sons, the Pandavas went out in

सर्वे सुपरिश्रान्तवाहनाः ततः स्वशिबिरं प्राप्य व्यतिष्ठन्तः । स सैनिका ॥ ८ ॥ ततः कृपश्च द्रौणिश्च कृतवर्मा च सात्वतः । सन्निविष्टेषु पार्थेषु प्रयाताः तं ह्रदं शनैः ॥ ९ ॥ ते तं ह्रदं समासाद्य यत्र शेते जनाधिपः । अभ्यभाषन्त दुर्धर्षं राजानं सुप्तमम्भसि ॥ १० ॥ राजन्नुत्तिष्ठ युध्यस्व सहास्माभिर्युधिष्ठिरम् । जित्वा वा पृथिवीं भुङ्क्ष्व हतो वा स्वर्गमाप्नुहि ॥ ११ ॥ तेषामपि बलं सर्वं हतं दुर्योधन त्वया । प्रतिविद्धाश्च भूयिष्ठं ये शिष्टास्तत्र सैनिकाः ॥१२॥ न ते वेगं विषहितुं शक्तास्तव विशाम्पते । अस्माभिरभिगुप्तस्य तस्मादुत्तिष्ठ भारत ॥१३॥ दुर्योधन उवाच । दिष्ट्या पश्यामि वो मुक्तानीदृशात् पुरुषक्षयात् । पाण्डुकौरवसम्मर्दाज्जीवमानान् नरर्षभान् ॥ १४ ॥ विजेष्यामो वयं सर्वे विश्रान्ता विगतक्लमाः । भवन्तश्च परिश्रान्ता वयञ्च भृशविक्षताः । उदीर्णञ्च बलं तेषां तेन युद्धं न रोचये ॥ १५ ॥ न त्वेतदद्भुतं

ह्रदमें प्रवेश करगया । ७ । जब सब पांडव बहुतथकी सवारीवाले हुये तब डेरे को पाकर अपनी सेनाके लोगोंसमेत डेरेमें नियतहुये । ८ । इसके पीछे कृपाचार्य, अश्वत्थामा पाण्डवोंके डेरेमें प्रवेशकरने पर बड़ी सावधानी और अलक्षतासे उसह्रदके । ९ । पासगये उन्होंने उस ह्रदको जहांपर कि राजा सोताथा पाकर । १० । जलमें सोनेवाले अजेय राजादुर्योधनसे कहा कि हेराजा उठो हमारेसाथ होकर युधिष्ठिरसे युद्धकरो । ११ । औरउनको विजयकरके पृथ्वीकोभोगो अथवामृतकहोकर स्वर्गको पावो हेदुर्योधन तुमनेभी उन्होंकी सब सेनामारी । १२ । और वहांजो सेनाकेलोग बाकीहैं उनको अत्यन्त घायल किया हे राजा वह आपके वेग सहनेको समर्थ नहीं है । १३ । जबकि तुम हमसे रक्षितहोकर लड़ोगे हे भरतवंशी इस कारण से आप उठो तब दुर्योधन बोला कि प्रारब्धसे इसप्रकारके पाण्डव और कौरवों के मनुष्यों के नाश होनेपर युद्धमे बचे । १४ । और जीवतेहुये तुम नरोत्तमों को देखताहूं विश्राम करनेवाले और थकावटसे रहित हमलोग सब मिलकर विजयकरेंगे आप थकेहुये हैं और हम अत्यंत घायल हैं और उन्होंकी सेना बढ़ीहै इसहेतुसे युद्धको स्वीकार नहीं करताहूं । १५ । हे वीरलोगो यह अपूर्वबात नहीं है जो

search of him, but they could not find him. He had gone away far, armed with his mace, and entered the lake after stopping the motion of water with his skill. The Pandavas much tired, returned to their camp. Kripacharya and Ashwathama approached the lake unseen by the Pandavas. Finding Duryodhan within water, they said to him, " Rise up, king, and come with us to the field of battle. 11. Conquer him to rule over the earth or to gain heaven after death. You too have destroyed a great portion of their army. The rest of their army is much wounded and can no longer withstand your velocity, if you will lead us to fight. Then be up and doing, " Duryodhan said, " It is by good luck that I see you safe after the great destruct.

वीरा यशो महद्दिदं मनः । अस्मासु च परा भक्तिर्न तु कालः पराक्रमे ॥ १६ ॥ विश्रा म्यैकां निशामद्य भवद्भिः सहितो रणे । प्रतियोत्स्याम्यहं शत्रून् श्वो न मेऽस्त्यत्र संशयः ॥ १७ ॥ सञ्जय उवाच । एवमुक्तोऽब्रवीद्द्रौणी राजानं युद्धदुर्मदम् । उत्तिष्ठ राजन् भद्रन्ते विजेष्यामो रणे परान् ॥ १८ ॥ इष्टापूर्त्तेन दानेन सत्येन च जपेन च। शपे राजन् यथा ह्यद्य निहनिष्यामि सोमकान्॥१९॥मा स्म यज्ञकृतां प्रीतिं प्राप्नुयां सज्जनोचिताम् । यदीमां रजनीं व्युष्टां न निहन्मि परान् रणे ॥ २० ॥ नाहत्वा सर्वं पाञ्चालान् विमोक्ष्ये कवचं विभो । इति सत्यं ब्रवीम्येतत्तन्मे शृणु जनाधिप ॥ २१ ॥ तेषु सम्भाषमाणेषु व्याधास्तं देशमाययुः । मांसभारपरिश्रान्ताः पानीयार्थं यदृच्छया ॥ २२ ॥ ते हि नित्यं महाराज भीमसेनस्य लुब्धकाः । मांसभारानुपाजह्रुर्भक्त्या परया विभो ॥२३॥ ते तत्राधिष्ठितास्तेषां सर्वं तद्वचनं रहः । दुर्योधनवचश्चैव शुश्रुवुः

तुम्हारा चित्त बड़ा उत्साहयुक्त है और हममें बड़ी सामर्थ्य है परन्तु पराक्रम का समय नहीं है । १६ । अब मैं एक रात्रि विश्राम करके आप लोगोंके साथ प्रात काल के समय युद्धमें शत्रुओं से लडूंगा इसमें मुझको संशय नहीं है ।१७। संजयबोले कि इसप्रकार दुर्योधनके वचनोंको सुनकर अश्वत्थामाजी उस युद्धदुर्मद राजासेबोले हे राजा उठो ... आशा है हम शत्रुओंको विजयकरेंगे । १८ । हे राजेन्द्र अब मैं यज्ञ वा बावड़ी आदिक सुकर्म दान सत्यता और विजयकी शपथ खाताहूंकि मैं सोमकों को मारूंगा । १९ । मैं यज्ञ करनेवाले सज्जनों के योग्य फलोंकोंको नहीं पाऊं जो इस रात्रिके व्यतीत होनेपर युद्धमें शत्रुओंकोनहींमारूं ।२०। हेसमर्थ सब पांचालोंको बिनामारेहुये कवचको नहीं उतारूंगा यह तुमसे सत्य २ कह ताहूं हेराजा उसको मुझसे सुनो । २१ । उन्हों की वार्त्तालाप करनेकी दशा में मांसके भार से थकेहुये बधिक लोग से उस स्थानपर आये । २२ । हे समर्थ महाराज वह बधिक सदैव बड़ी भक्तिपूर्वक मांसों के भारोंको भीमसेन के पास लातेथे ।२३। परस्पर मिलेहुये और वहांपर वर्त्तमान होनेवाले उन बधिकोंने एकान्त

ion of the *Kauravas* and Pandavas. You can win them no doubt We are yet much tired and wounded and they have still many warriors in their army. I therefore am not prepared to fight. It is no wonder that you still desire to fight; but though we have power, I think it is no time to show our prowess 17. Having rested one night, I shall go with you to fight with the foes." Sanjaya said, "Having heard the words of Duryodhan, Ashwathama again said, "Rise up, king, we shall yet win. I swear by my good deeds that I shall destroy the Somakas. 20 May I not get the fruit of my good deeds, if I donot slay the foes at Sunrise. I shall never put off my armour without slaying them." While they were thus talking together some butchers passed that way. They always supplied meat

सङ्गता मिथः ॥ २४ ॥ तेऽपि सर्वे महेष्वासा अयुद्धार्थिनि कौरवे । निर्बन्धं परमं च
क्रुस्तदा वै युद्धकांक्षिणः ॥ २५ ॥ तांस्तथा समुदीक्ष्याथ कौरवाणां महारथान् । अयु
द्धमनसञ्चैव राजानं स्थितमम्भसि ॥ २६ ॥ तेषां श्रुत्वा च संवादं राज्ञश्च सलिले
सतः । व्याधाऽभ्यजानन् राजेन्द्र सलिलस्थं सुयोधनम् ॥ २७ ॥ ते पूर्वं पाण्डुपुत्रेण
पृष्टा ह्यासन् सुतं तव । यदृच्छोपगतास्तत्र राजानं परिमार्गता ॥ २८ ॥ ततस्ते पाण्डु
पुत्रस्य स्मृत्वा तद्भाषितं तदा । अन्योऽन्यमब्रुवन् राजन् मृगव्याधाः शनैरिदम् ॥ २९ ॥
दुर्योधनं ख्यापयामो धनं दास्यति पाण्डवः । सुव्यक्तमिह नः ख्यातो ह्रदे दुर्योधनो
नृपः ॥ ३० ॥ तस्माद्गच्छामहे सर्वे यत्र राजा युधिष्ठिरः । आख्यातुं सलिले सुप्तं
दुर्योधनममर्षणम् ॥ ३१ ॥ धृतराष्ट्रात्मजं तस्मै भीमसेनाय धीमते । शयानं सलिले
सर्वे कथयामो धनुर्भृते ॥ ३२ ॥ स नो दास्यति सुप्रीतो धनानि बहुलान्युत । किं नो

इमें उन्होंके सब वचन और दुर्योधनके वचनोंको सुना । २४ । तब कौरवके युद्ध
में अनिच्छावान् होनेपर उन सब युद्धाभिलाषी बड़े धनुषधारियोंने भी युद्धके
निमित्त बड़ा हठकिया । २५ । हे राजेन्द्र उन बधिकों ने कौरवों के उन महारथियों
को इसप्रकार देखकर और युद्धसे अनिच्छावान् हृदमें नियत राजाको जानकर
। २६ । उन्होंकी और जल में वर्तमान राजाकी वार्त्तालाप को सुनकर जलमें
नियत दुर्योधनको जाना । २७ । दैवकी इच्छा से समीप [illegible] मे उन बधिकों
से राजा के खोज करनेवाले पाण्डवों ने पूछा आपके पुत्रको । २८ । हे राजा
तब वह मृगोंके मारनेवाले पाण्डवों के वचनको स्मरण करके धीरपने से परस्परमें
यह बोले । २९ । कि जो हम दुर्योधन को बतादेंगे तो पाण्डव हम को धन देंगे
राजा दुर्योधन इस जल में गुप्त है इस हेतुसे हम सब उस जलमें सोनेवाले क्रोधयुक्त
दुर्योधन के प्रकट करने को वहांपर चलें जहां पर कि राजा युधिष्ठिर है । ३१ ।
हम सब इस जल में सोनेवाले धृतराष्ट्र के पुत्रको उस बुद्धिमान् धनवान् भीमसेन
से वर्णन करें । ३२ । इस बातको सुनकर अत्यन्त प्रसन्नचित्त वह भीमसेन हम

to Bhim. They heard their conversation by chance, while they were instigating Duryodhan to fight 25 Seeing the Kaurava warriors there talking with Duryodhan who was then unwilling to fight they knew the latter, to be hidden in the tank. 27 The butchers had been questioned by the Pandavas about your son They remembered those words and said gently with one another, "The Pandavas will give us immense wealth on our giving them an information about Duryodhan, who is lying here hidden in the tank. Let us go away to inform Yudhishthir 31 We shall inform wise and wealthy Bhim of the whereabouts of Duryodhan and he will give us immense wealth Why should we trouble ourselves about getting more flesh " Having thus consulted together, they went with loads of flesh to the camp

मांसेन शुष्केण परिक्लिष्टेन शोषिणा ॥ ३३ ॥ एवमुक्त्वा तु ते व्याधाः संप्रहृष्टा धनार्थिनः । मांसभारानुपादाय प्रययुः शिबिरं प्रति ॥ ३४ ॥ पाण्डवापि महाराज लब्धलक्ष्याः प्रहारिणः । अपश्यमाना समरे दुर्य्योधनं व्यवस्थितम् ॥ ३५ ॥ निकृतेस्तस्य पापस्य ते पारं गमनेप्सवः । चारान् संप्रेषयामासुः समन्तात्तद्रणाजिरे ॥३६॥ आगम्य तु ततः सर्वे नष्टं दुर्य्योधनं नृपम् न्यवेदयन्त सहिता धर्मराजस्य सैनिका । ३७ ॥ तेषां तद्वचनं श्रुत्वा चाराणां भरतर्षभ । चिन्तामभ्यागमत्तीव्रां निशश्वास च पार्थिव ॥३८॥ अथस्थितानां तेषां पाण्डूनां भरतर्षभ तस्माद्देशादपाक्रम्य त्वरिता लुब्धका विभो ॥३९॥ आजग्मुः शिबिरं हृष्टा दृष्ट्वा दुर्य्योधनं नृपम् वार्य्यमाणाः प्रविष्टाश्च भीमसेनस्य पश्यतः ॥ ४० ॥ ते तु पाण्डवमासाद्य भीमसेनं महाबलम् । तस्मै तत् सर्वमाचख्युर्यद्वृत्तं यच्च वै श्रुतम् । ४१ ॥ ततो वृकोदरो राजन् दत्त्वा तेषां धनं बहु । धर्म्मराजाय तत् सर्वमाचचक्षे परन्तपः ॥४२॥ असौ दुर्य्योधनो राजन् विज्ञातो मम लुब्धकैः । संस्तम्भ

को बहुत धन देगा हम को इन सूखे और आघात से उत्पन्न कठिन मांस से क्या काम है । ३३ । तब अत्यन्त प्रसन्नचित्त धनके अभिलाषी वह वधिक इस प्रकार कहकर और मांस के बोझों को लेकर डेरे में गये । ३४ । हे महाराज लक्ष्यको प्राप्त प्रहारकर्त्ता युद्ध में नियत दुर्योधनको न देखनेवाले । ३५ । और उसपापीके छलके अन्तए ...चनेके अभिलाषी उन पांडवों ने भी उस युद्धभूमिमें चारोंओर दूतों को भेजा । ३६ । उसके पीछे धर्म्मराजकी सब सेना के लोगों ने एकसाथ आकर दुर्योधन का गुप्तहोना वर्णनकिया हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ राजा ने दूतों के उस वचनको सुनकर कठिन चिन्ता को पाया और बारम्बार श्वासलिया । ३८ । हे भरतर्षभ समर्थ धृतराष्ट्र इनके पीछे शीघ्रता करनेवाले वह वधिक उस स्थानसे चलकर दुःखीचित्त नियत होनेवाले पांडवों के डेरे को आये और राजा दुर्य्योधन को देखकर प्रसन्नचित्त और रोकेहुये भी भीमसेन के देखतेहुये प्रवेश करगये । ४० । वहां उन्हों ने बड़े बलवान पाण्डव भीमसेनको पाकर वह सब वृत्तान्तको वहां सुनाया भीमसेन से कहा । ४१ । हे राजा इसकेपीछे शत्रु के तपानेवाले भीमसेनने उन्होंको बहुतसा धन देकर वह सब वृत्तान्त धर्मराज से कहा कि । ४२ । हे राजा उस दुर्योधनका पता बधिकों के कहने से मुझको विदितहुआ है

The good Pandav marksmen, not being able to find out Duryodhan and desirous of making an end of his enmity, sent their spies in search of him. 36. The warriors informed Yudhishthir that they could not find Duryodhan and the king was very anxious to hear that news. He sighed again and again In the meantime, the butchers came to the Pandav camp and full of joy at finding out the whereabouts of Duryodhan, they entered the camp, paying no heed to the watchmen's resistence. 40 Then they saw brave Bhim and told him what they had heard, Bhim gave them a rich reward in return and ldto

सलिलं शेते यदर्थं परितप्यसे ॥४३॥ एवमुक्तो भीमसेनस्य प्रियं श्रुत्वा विशाम्पते। अजातशत्रुः कौन्तेयो हृष्टोऽभूत् सह सोदरैः ॥ ४४ ॥ तञ्च श्रुत्वा महेष्वासं प्रविष्टं सलिलं ह्रदम्। क्षिप्रमेव ततोऽगच्छत् पुरस्कृत्य जनार्दनम् ॥ ४५ ॥ ततः किलकिला शब्दः प्रादुरासीद्विशाम्पते। पाण्डवानां प्रहृष्टानां पाञ्चालानाञ्च सर्वशः ॥ ४६ ॥ सिंहनादांस्ततश्चक्रुः क्ष्वेडांश्च भरतर्षभ। त्वरिता क्षत्रिया राजन् जग्मुर्द्वैपायनं ह्रदम् ॥ ४७ ॥ ज्ञातः पापो धार्तराष्ट्रो दृष्टश्चेत्यसकृद्रणे। प्राक्रोशन् सोमकास्तत्र हृष्टरूपाः समन्ततः ॥ ४८ ॥ तेषामाशु प्रयातानां रथानां तत्र वेगिनाम्। बभूव तुमुलः शब्दो दिवस्पृक् पृथिवीपते ॥ ४९ ॥ दुर्योधनं परीप्सन्तस्तत्र तत्र युधिष्ठिरम्। अन्वयुस्ते त्वरायुक्ता राजानं श्रान्तवाहनाः ॥ ५० ॥ अर्जुनो भीमसेनश्च माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ। धृष्टद्युम्नश्च पाञ्चाल्यः शिखण्डी चापराजितः ॥ ५१ ॥ उत्तमौजा युधामन्युः सात्य

वह जल को स्थिर करके सोता है जिसके लिये आप दुःख मानते हो। ४३। हे राजा वह कुन्तीका पुत्र अजातशत्रु युधिष्ठिर भीमसेन के उस प्रियवचनको सुनकर सगे भाइयों समेत बहुत प्रसन्न हुआ। ४४। ह्रदके जलमें प्रवेश करनेवाले बड़े धनुषधारी उस दुर्योधन को सुनकर श्रीकृष्णजी को आगे करके शीघ्रता से वहां पहुँचे। ४५। और अत्यन्त प्रसन्न सब पाण्डव और पांचालों के कलकला शब्द प्रकट हुये। ४६। हे भरतर्षभ इसकेपीछे सिंहनाद और शब्दोंको भी किया हे राजा शीघ्रता करनेवाले क्षत्री व्यासजी के ह्रदको गये। ४७। वहां अत्यन्त प्रसन्नमूर्त्ति सोमक युद्ध में चारोंओर से बारम्बार पुकारे कि पापी दुर्योधनको जानालिया और देखाहै। ४८। हे पृथ्वीनाथ वहां उन शीघ्र चलनेवाले वेगवान रथियोंके कठिन शब्द स्वर्गको स्पर्श करनेवालेहुये। ४९। वह थकी सवारीवाले दुर्योधनके चाहनेवाले बड़ी शीघ्रता करनेवाले सब जहांतहां राजा युधिष्ठिर पीछे चले। ५०। अर्जुन, भीमसेन, पाण्डव नकुल, सहदेव, पांचालदेशका राजा धृष्टद्युम्न अजेय शिखण्डी। ५१। उत्तमौजा, युधामन्यु, महारथी सात्यकी और जो पांचालों

Yudhishthir hearing that Bhim had brought him news of Duryodhan, and that the latter, the cause of so much anxiety, was sleeping under water which he had made motionless. Yudhishthir and his brothers were much pleased to hear the cherished news brought by Bhim. Hearing that Duryodhan had entered the lake, the *Pandavas* led by Shri Krishna, hastened to the place and a great noise was heard of the Pandavas and Panchals near the lake of Vyas as they approached it. 47 The cheerful Somaks raised war cries saying, "We have found out sinful Duryodhan." The noise from the car-warriors rang in the air. The Kshatryas, with tired beasts desirous of seeing Duryodhan followed Yudhishthir in haste. 50 Arjun, Bhim, Nakul, Sahadev, Dhrishtadyumn the prince of Panchals, invincible Shikhandi

शिखण्डी च महारथः। पाञ्चालानाञ्च ये शिष्टा द्रौपदेयाश्च भारत। हयाश्च सर्वे नागाश्च शतशश्च पदातयः ॥ ५२ ॥ ततः प्राप्तो महाराज धर्मराजः प्रतापवान्। द्वैपायनह्रदं ख्यातं यत्र दुर्योधनोऽभवत्। शीतामलजलं हृद्यं द्वितीयमिव सागरम् ॥ ५३ ॥ मायया सलिलं स्तम्भ्य यत्राभूत्ते स्थितः सुतः। अत्यद्भुतेन विधिना दैवयोगेन भारत ॥ ५४ ॥ सलिलान्तर्गतः शेते दुर्दर्शः कस्यचित् प्रभो। मानुषस्य मनुष्येन्द्र गदाहस्तो जनाधिपः ॥ ५५ ॥ ततो दुर्योधनो राजा सलिलान्तर्गतो वसन्। शुश्रुवे तुमुलं शब्दं जलदोपमनिस्वनम् ॥ ५६ ॥ युधिष्ठिरस्तु राजेन्द्र तं ह्रदं सह सोदरैः। आजगाम महाराज तव पुत्रवधाय वै ॥ ५७ ॥ महता शङ्खनादेन रथनेमिस्वनेन च। उद्धुन्वंश्च महारेणुं कम्पयंश्चापि मेदिनीम् ॥ ५८ ॥ यौधिष्ठिरस्य सैन्यस्य श्रुत्वा शब्दं महारथाः। कृतवर्मा कृपो द्रौणी राजानमिदमब्रुवन् ॥ ५९ ॥ इमे ह्यायान्ति हृष्टाः पाण्डवा जितका

के शेष रथी थे वह और द्रौपदी के पुत्र सब घोड़े हाथी और सैकड़ों पदाती पीछे चले। ५२। हे महाराज इसके पीछे प्रतापवान् धर्मराज व्यासजीके उस घोरहृदपर पहुँचे जिसमें कि दुर्योधनथा और जो कि शीतलता युक्त निर्मल जलसे पूर्ण बड़ा प्रिय हृद दूसरे सागरके समान था। ५३। जिसमें आपका पुत्र मायासे जलको रोककर नियतथा हे भरतवंशी वह बड़ी अपूर्व बुद्धिवाला और दैवयोगसे। ५४। जलके मध्यमें वर्त्तमान शूरवीरोंका मारनेवालाथा हे प्रभु महाराज धृतराष्ट्र वह गदाधारी राजा दुर्योधन किसी मनुष्यकोभी मिलना असंभवथा। ५५। उस के पीछे जलके मध्य में वर्त्तमान राजा दुर्योधनने बादलोंकी गर्जनाके समान कठिन शब्दको सुना। ५६। हे राजेन्द्र महाराज फिर राजा युधिष्ठिर अपने सगे भाइयों समेत आपके पुत्र को मारने के लिये उस हृदपर आये। ५७। शंखके और रथनेमियों के बड़े शब्द समेत बड़ीधूल को उड़ाते और पृथ्वी को भी कंपायमान करते आपहुँचे। ५८। महारथी कृतवर्मा, कृपाचार्य और अश्वत्थामा युधिष्ठिरकी सेनाको देखकर राजासे यह वचन बोले। ५९। कि अत्यन्त प्रसन्नचित्त विजयसे शोभा पानेवाले यह सब पांडव आतेहैं तबतक हमको आप आज्ञादें कि हम यहांसे हटजांय। ६०।

Uttamauja, Yudhamanyu, brave Satyaki and the rest of the Panchal warriors, with the sons of Draupadi and elephants, horse and foot, by thousands, followed them. Glorious Yudhishthir thus approached the lake of Vyas in which Duryodhan lay hidden and which was full of clear and cold water like a second ocean. 53. Your son had made its waters motionless by his art and crept within. That destroyer of foes, of extraordinary wisdom, armed with mace, Duryodhan had made himself invisible to all men 55 Hidden within the waters of the lake Duryodhan heard the thundering noise of the warriors of Yudhishthir, with his brothers desirous of slaying your

दिन। अपयास्यामहे तावदनुजानातु नोमवान् ६०॥दुर्योधनस्तु तत् श्रुत्वा तेषां तत्र तरस्विनाम्। तथेत्युक्त्वा ह्रदं तं वै माययास्तम्भयत् प्रभो ॥६१॥ ते त्वनुज्ञाप्य राजानं भृशं शोकपरायणाः। जग्मुर्दूरं महाराज कृपप्रभृतयो रथाः॥ ६२ ॥ ते गत्वा दूरमध्यानं न्यग्रोधं प्रेक्ष्य मारिष। न्यविशन्त भृशं श्रान्ता चिन्तयन्तो नृपं प्रति॥ ६३॥ विष्टभ्य सलिलं सुप्तो धार्त्तराष्ट्रो महाबलः। पाण्डवाश्चापि संप्राप्तास्तं देशं युद्धमीप्सवः॥ ६४॥ कथं नु युद्धं भविता कथं राजा भविष्यति। कथं नु पाण्डवा राजन् प्रतिपत्स्यन्ति कौरवम्॥ ६५॥ इत्येवं चिन्तयानास्तु रथेभ्योऽश्वान् विमुच्य ते। तत्रासाञ्चक्रिरे राजन् कृपप्रभृतयो रथाः॥ ६६॥

इति श्री शल्यपर्वणि ह्रदप्रवेशपर्वणि दुर्योधनान्वेषणे त्रिंशोऽध्यायः॥ ३०॥

हे प्रभु तब उस दुर्योधनने उन वेगवानों के उस वचनको सुनकर और बहुत अच्छा कहकर माया से उस जलको रोकदिया। ६१। हे महाराज फिर शोक से पूर्ण कृपाचार्य आदिक रथी राजाको पूछ कर दूर चलेगये। ६२। हे श्रेष्ठ वह तीनों दूर मार्गपर जाकर एक बड़के वृक्षको देखकर अत्यंत थकेहुये राजाके विषय में सोचते निवासीहुये। ६३। वहां बलवान् दुर्योधन जलको रोककर सोया और युद्धके अभिलाषी पांडव भी उस स्थानपर पहुंचे। ६४। किस प्रकारसे युद्धहोगा और कैसे राजाहोगा और कैसे पांडवलोग उस कौरव दुर्योधनको पावेंगे। ६५। हे राजा इसप्रकार चिन्ता करते उन कृपाचार्य आदिक रथियोंने रथोंसे घोड़ोंको छोड़कर वहां निवास किया ६६॥

Ison, came upon the brink of the lake, raising a storm of dust, making a tremendous noise with their conchs and car wheels and shaking the earth. Brave Kritvarma, Kripacharya and Ashwathama, seeing the army of Yudhishthir coming towards them, said to the prince, "The victorious Pandavas are coming cheerfully this way. Give us therefore permission to retire to some other place." Duryodhan heard their words and replying in the affirmative, again made the waters motionless. 61. Kripacharya and others, having got the king's permission, removed themselves far from the place and stood under the shade of a banyan tree, dejected and careworn on account of Duryodhan. The latter lay under the motionless water, while the Pandavas reached there. Kripacharya and others rested under the tree, thinking about the war, the state of the king and the possibility of the Pandavas finding him," 66.

सञ्जय उवाच । ततस्तेष्वपयातेषु रथेषु त्रिषु पाण्डवाः । तं ह्रदं प्रत्यपद्यन्त यत्र दुर्योधनोऽभवत् ॥ १ ॥ आसाद्य च कुरुश्रेष्ठ तदा द्वैपायनं ह्रदम् । स्तम्भितं धार्तराष्ट्रेण दृष्ट्वा तं सलिलाशयम् । वासुदेवमिदं वाक्यमब्रवीत् कुरुनन्दनः ॥ २ ॥ पश्येमां धार्तराष्ट्रेण मायामप्सु प्रयोजिताम् । विष्टभ्य सलिलं शेते नास्य मानुषतो भयम् ॥ ३ ॥ दैवीं मायामिमां कृत्वा सलिलान्तर्गतो ह्ययम् । निकृत्या निकृतिप्रज्ञो न मे जीवन् विमोक्ष्यते ॥ ४ ॥ यद्यस्य समरे साह्यं कुरुते वज्रभृत् स्वयम् । तथाप्येनं हतं युद्धे लोका द्रक्ष्यन्ति माधव ॥ ५ ॥ वासुदेव उवाच । मायाविन इमां मायां मायया जहि भारत । मायावी मायया वध्यः सत्यमेतद्युधिष्ठिर ॥ ६ ॥ क्रियाभ्युपायैर्बहुभिर्मायामप्सु प्रयोज्य च । जहि त्वं भरतश्रेष्ठ मायात्मानं सुयोधनम् ॥ ७ ॥ क्रियाभ्युपायैरिन्द्रेण निहता दैत्यदानवाः । क्रियाभ्युपायैर्बहुभिर्बलिर्बद्धो महात्मना ॥ ८ ॥ क्रियाभ्युपायैः पूर्वं हि हिरण्याक्षो महासुरः । हिरण्यकशिपुश्चैव क्रिययैव निषूदितौ । वृत्रश्च निहतो

अध्याय ३१ ॥

संजय बोले कि इसके उन तीनों रथियों के दूर चलेजाने पर उन पांडवोंने उस ह्रदको पाया जिसमें कि दुर्योधनथा ॥ १ ॥ कौरवों में श्रेष्ठ तब दुर्योधनसे स्तम्भित कियेहुये उस व्यासह्रदको और जलमें सोनेवाले राजाको देखकर कौरव नन्दन युधिष्ठिर वासुदेवजीसे यहवचन बोले । २ । कि दुर्योधनकी जलमें संयुक्तकी हुई इस मायाको देखो कि जलको रोककर सोताहै इसको मनुष्य से भयनहीं है । ३ । इस दैवीमाया को प्रकट करके जलके मध्य में वर्तमान छल संयुक्त बुद्धि का रखनेवाला यह दुर्योधन मेरेहाथसे अब जीवताहुआ नहीं बचसक्ता । ४ । जो आप वज्रधारी युद्धमें इन्द्रभी इसकी सहायता करें तौभी हे माधवजी युद्धमें इसको सबलोग मराहुआ देखेंगे । ५ । वासुदेवजी बोले कि हे भरतवंशी माया करनेवालेकी इस माया को मायाकेही द्वारा नाशकरो । ६ । मायावी पुरुष मायाहीके द्वारा मारने के योग्य है हे युधिष्ठिर यह सत्य है कि यह राजादुर्योधन बहुत उपाय और कर्मों के द्वारा जलमें मायाको संयुक्त करके सोताहै । ७ । हे भरतर्षभ तुम इस मायात्मा अर्थात् छलीको मारो इन्द्रने भी कर्म और उपायोंके द्वारा दैत्य और दानवोंके

CHAPTER. XXXI

Sanjaya said, "When the three warriors had removed themselves far away, the Pandavas came upon the lake in which Duryodhan lay hidden. Finding the water motionless and Duryodhan lying down under it, Yudhishthir said to Vasudev, "Look at the water made motionless by the art of Duryodhan, who is sleeping within free from all danger of human beings. Deceitful Duryodhan hiding within that water cannot scape death. People will see him dead even if Indra the wielder of vajra come to his help." Vasudev replied,

राजन् क्रिययैव न संशयः ॥ ९ ॥ तथा पुलस्त्यतनयो रावणो नाम राक्षसः । रामेण निहतो राजन् सानुबन्धः सहानुगः । क्रियया योगमास्थाय तथा त्वमपि विक्रम ॥ १० ॥ क्रियाभ्युपायैर्निहतौ पुरा राजन् पुरातनौ । तारकश्च महादैत्यो विप्रचित्तिश्च वीर्यवान् ॥ ११ ॥ वातापिरिल्वलश्चैव त्रिशिराश्च तथा विभो । सुन्दोपसुन्दावसुरौ क्रिययैव निसूदितौ ॥ १२ ॥ क्रियाभ्युपायैरिन्द्रेण त्रिदिवं भुज्यते विभो । क्रिया बलवती राजन् नान्यत् किञ्चिद्युधिष्ठिर ॥ १३ ॥ दैत्याश्च दानवाश्चैव राक्षसाः पार्थिवास्तथा । क्रियाभ्युपायैर्निहताः क्रियां तस्मात् समाचर ॥ १४ ॥ सञ्जय उवाच । इत्युक्तो वासुदेवेन पाण्डवः संशितव्रतः । जलस्थं तं महाराज तव पुत्रं महाबलम् । अभ्यभाषत कौन्तेयः प्रहसन्निव भारत ॥ १५ ॥ सुयोधन किमर्थोऽयमारम्भोऽप्सु कृतस्त्वया । सर्वं

मारा है १८ महात्मा इन्द्रके हाथ से बहुत कर्म और उपायों केही द्वारा राजाबलि बांधागया और बड़े कर्म और उपायों के द्वारा महाअसुर हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु दोनोंभाई मारेगये हेराजा वृत्रासुरभी कर्मोंकेद्वारा निस्सन्देह मारागया । १९ । हे राजा इसीप्रकार पुलस्त्यका पुत्र रावण नाम राक्षस अपने सब भाई साथियों समेत श्रीरामचन्द्रजी के हाथसे मारागया । २० । इसीप्रकार तुम भी कर्मकरने में नियत होकर पराक्रमकरो हे समर्थ राजायुधिष्ठिर उसी प्रकार कर्म और उपायों के द्वारा दोनों प्राचीन राक्षस मेरे हाथ से मारेगये बड़ा दैत्य तारक और पराक्रमी विप्रचित्ति वातापी इल्वल और त्रिशिरा भी मारेगये इसी प्रकार सुन्द उपसुन्द असुरभी कर्मोंहीसे मारेगये हे समर्थ इन्द्रभी कर्म और उपायों के द्वारा स्वर्ग को भोगता है हे राजा युधिष्ठिर कर्म प्रबल है दूसरा कुछ प्रबल नहीं है । २१ । दैत्य दानव राक्षस इसीप्रकार राजालोग कर्म और उपायोंकेही द्वारा मारेगये इस हेतुसे कर्मको अच्छीरीतिसे करो । २२ । संजयबोले हेमहाराज

"Destroy by art the cunning of that deceitful man; It is good to slay the deceitful by deceit. It is true that Duryodhan has made himself secure under water by his artfulness. Destroy him with your skill as Indra had done the Daityas and Danavas. King Bali was bound by Indra's cunningness and the two powerful brothers, Hiranyaksha and Hiranyakashipu were slain with great exertion and skill. Vritrasur too was slain no doubt with great difficulty. Similarly, Ravan the son of Pulastya, with his brothers and kinsmen was slain by Ram Chandra. 10, Act bravely therefore, Yudhishthir, I myself slew the two powerful rakshases of old. The great Daityas Tarak, Viprachitti, Vatapi, Ilwil and Trishira were slain and likewise Sund and Upsund were slain by brave deeds. Indra enjoys the kingdom of heaven as a

हते घातयित्वा स्वकुलस्य विशांपते ॥ १६ ॥ जलाशयं प्रविष्टोद्य वाञ्छन् जीवित मात्मनः । उत्तिष्ठ राजन् युध्यस्व सहास्माभिः सुयोधन ॥ १७ ॥ स ते दर्पो नरश्रेष्ठ स च मानः क्व ते गतः । यस्त्वं संस्तभ्य सलिलं भीतो राजन् व्यवस्थितः ॥ १८ ॥ सर्वे त्वां शूर इत्येव जना जल्पन्ति संसदि । व्यर्थं तद्भवतो मन्ये शौर्यं सलिलशायिनः ॥ १९ ॥ उत्तिष्ठ राजन् युध्यस्व क्षत्रियोसि कुलोद्भवः । कौरवेयो विशेषेण कुले जन्म च संस्मर ॥ २० ॥ स कथं कौरवे वंशे प्रशंसन् जन्म चात्मनः । युद्धाद्भीतस्ततस्तोयं प्रविश्य प्रतितिष्ठसि ॥ २१ ॥ अयुद्धमव्यवस्थानं नैष धर्मः सनातनः । अनार्यजुष्ट मस्वर्ग्यं रणे राजन् पलायनम् ॥ २२ ॥ कथं पारमगत्वा हि युद्धे त्वं वै जिजीविषुः । इमान्निपतितान् दृष्ट्वा पुत्रान् भ्रातॄन् पितॄंस्तथा ॥ २३ ॥ सम्बन्धिनो वयस्यांश्च मातु लान् बान्धवांस्तथा । घातयित्वा कथं तात ह्रदे तिष्ठसि साम्प्रतम् ॥ २४ ॥ शूरमानी

भरतवंशी धृतराष्ट्र वासुदेवजी से समझाये हुये तेजवन्त हँसतेहुये कुन्ती के पुत्र पाण्डव युधिष्ठिरने उस जलमें नियत वर्त्तमान आपके पुत्र से यह कहा कि । १५ । हे दुर्योधन तुमने जलके मध्य में यह आरम्भ कर्म किस निमित्त किया है राजा सब क्षत्रियोंके कुलों को और अपने कुलको मरवाकर । १६ । अब अपने जीवन को चाहताहुआ ह्रदमें घुसाहुआ बैठा है दुर्योधन उठो और हमारेसाथ युद्धकरो । १७ । हे नरोत्तम वह तेरा अभिमान और अहम्भाव कहांगया जो भय भीत होकर तुम जलको रोककर नियत हुयेहो । १८ । सब लोग तुमको सभा में शूर कहते हैं जलमें सोनेवाले आपकी उस शूरताको निरर्थक मानताहूं । १९ । हेराजा उठो युद्धकरो कुलीन क्षत्री और अधिकतर कौरववंशी हो अपने कुल और जन्मको यादकरो । २० । सो कौरवें कुलमें अपने जन्मको कहताहुआ कैसे युद्ध से भयभीत होके जलमें प्रवेश करके नियत है । २१ । युद्धका और राज्यका त्याग अथवा स्वर्ग के निमित्त उपाय न करना यह प्राचीन धर्म नहीं है हे राजा युद्ध से भागना नीचों का कर्म है स्वर्गका देनेवाला नहीं है । २२ । निश्चय करके युद्ध में पारको न पाकर किसरीति तुम जीवन के अभिलाषी हो इन पड़ेहुये पुत्र भाई और पितृकुलों को देखकर । २३ । नातेदार समानवय मामा और बान्धवोंको

result of his exertions and schemes. Action in all-powerful, Yudhisl:thir. Daityas, Danavas as well as kings were slain by action; therefore act well, Yudhishthir," Sanjaya said, "Thus advised by Vasudev, Yudhishthir the son of Kunti, with a smile, said to your son who was hiding within the lake. 15. "Why have you bid yourself within the lake? After bringing about the death of your kinsmen and warriors come out and fight with us. Where is your pride gone? Why are you staying under water? You are famous for yours bravery, but you are making yourself infamous by your cowardice. You are born

न शूरस्त्वं मृषा वदसि भारत । शूरोऽहमिति दुर्बुद्धे सर्वलोकस्य शृण्वतः ॥ २५ ॥ न हि शूराः पलायन्ते शत्रून् दृष्ट्वा कथञ्चन । ब्रूहि वा त्वं यया धृत्या शूर त्यजसि सङ्गरम् ॥ २६ ॥ स त्वमुत्तिष्ठ युध्यस्व विनीय भयमात्मनः । घातयित्वा सर्वसैन्यं भ्रातॄंश्चैव सुयोधन ॥ २७ ॥ नेदानीं जीविते बुद्धिः कार्या धर्मचिकीर्षया । क्षत्रधर्ममपाश्रित्य त्वद्विधेन सुयोधन ॥ २८ ॥ यत्तु कर्णमपाश्रित्य शकुनिञ्चापि सौबलम् । अमर्त्य इव सम्मोहात्त्वमात्मानं न बुद्धवान् ॥ २९ ॥ तत् पापं सुमहत् कृत्वा प्रति युध्यस्व भारत । कथं हि त्वद्विधो मोहात् रोचयेत पलायनम् ॥ ३० ॥ क्व ते तत् पौरुषं तात क्व च मानः सुयोधन । क्व च विक्रान्तता याता क्व च विस्फूर्जितं महत् ॥ ३१ ॥ क्व ते कृतास्त्रता याता किञ्च शेषे जलाशये । स त्वमुत्तिष्ठ युध्यस्व क्षत्रधर्मेण भारत ॥ ३२ ॥ अस्मांस्तु वा पराजित्य प्रशाधि पृथिवीमिमाम् । अथवा

मरवाकर।अब कैसे हृद में नियत है । २४ । अपने को शूर मानता है परन्तु तू शूर नहीं है हे भरतवंशी दुर्बुद्धि सब लोगों के समक्ष में तुम मिथ्या कहतेहो कि मैं शूर हूं । २५ । शत्रुओंको देखकर शूरवीर किसीप्रकार से भी नहीं भागते हैं तुम किस धृति से युद्ध को त्याग करतेहो । २६ । उसको कहो अब तुम उठो युद्धकरो और अपने भयको दूरकरो हे दुर्योधन सब भाई और सेना को मरवाकर युद्ध करो । २७ । और क्षत्रीधर्म में नियत होकर धर्म करनेकी इच्छासे तुमसरीखेराजा को अब जीवनमें बुद्धि न करनी चाहिये । २८ । कर्ण और सौबलके पुत्र शकुनी के आश्रय होकर अपनेको सदैव जीवनेवाला माना इस भूलसे जो तुमने अपने को नहीं जाना हे भरतवंशी बड़ा पाप करा दुःखरूप है सम्मुख होकर युद्ध करो तुमसा राजाहोकर मोहसे किसप्रकार भागने को अङ्गीकार करे । ३० । हे दुर्योधन तेरी वह वीरता और अहंकार कहांगये और वह पराक्रम और बड़ी गर्जना कहां गई । ३१ । तेरी अस्त्रज्ञता कहांगई तड़ाग में क्यों सोता है हे भरतवंशी इस से तुम उठकर क्षत्रीधर्म्म से युद्धकरो । ३२ । हमको विजय करके इस पृथ्वीपर

among kings specially Kaurav kings. Remember your lineage. So
Born among Kauravas why are you hiding under water ? It is not
copmatible with old customs to give up fighting or kingdom and the
deed itself does not lead one to heaven How do you wish to live with
out making an end of fighting ? How are you hiding in the lake, when
so may of your kinsmen lie slain. You call yourself brave, but you
are not so and your saying so is a lie. 25 Brave men donot run away
from enemies, why have you adopted this course ? Rise up and fight
fearlessly Fight when all your men are no more A king like you should
no more wish to live You always relied on Karan and Shakuni. This
was a mistake. You are committing a sin. Fight. Why should a
king be foolish enough to desert the field of battle ? 30 Where are

॥हमाभिर्भूमौ स्वप्स्यसि भारत ॥३३॥एष ते परमो धर्मः सृष्टो धात्रा महात्मना। कुरुष्व यथा तथ्यं राजा भव महारथ ॥ ३४ ॥ सञ्जय उवाच । एवमुक्तो महाराज पुत्रेण धीमता। सलिलस्थस्तव सुत इदं वचनमब्रवीत् ॥ ३५॥ दुर्य्योधनो उवाच । नैतच्चित्रं महाराज यद्भी:प्राणिनमा विशेत् । न च प्राणभयाद्भीतो व्यपयातोऽस्मि भारत ॥ ३६ ॥ अरथश्चानिषङ्गी च निहतः पार्ष्णि सारथिः रथः। एकश्चाप्यगणः संख्ये प्रत्याश्वासमरोचयम् ॥ ३७ ॥ न प्राणहेतोर्न भयान्न विषादाद्विशाम्पते । इदमम्भः प्रविष्टोस्मि श्रमात्त्विदमनुष्ठितम् ॥ ३८ ॥ त्वञ्चाश्वसिहि कौन्तेय ये चाप्यनुगतास्तव । अहमुत्थाय वः सर्वान् प्रतियोत्स्यामि संयुगे॥३९॥ युधिष्ठिर उवाच । आश्वस्ता एव सर्वे स्म चिरं त्वां मृगयामहे । तदिदानीं समुत्तिष्ठ युध्यस्वेह सुयोधन ॥ ४० । हत्वा वा समरे पार्थान् स्फीतं राज्यमवाप्नुहि । निहतो

राज्यकरो अथवा हमारे हाथसे मराहुआ होकर पृथ्वीपर सोवेगा । ३३ । हेमहारथी महात्मा ईश्वर ने यह तेरा उत्तम धर्म्म उत्पन्न किया है इसको विधिपूर्वक करो और राजा होजाओ । ३४ । संजय बोले हे महाराज जलमें नियत और बुद्धिमान धर्मराजके इसप्रकार के वचनों को सुनकर आपका पुत्र यह वचन बोला । ३५ । हे महाबाहु यह अपूर्व बात नहीं है जो जीवधारी में भय प्रवेश होय हे भरतवंशी मैं जीव के भय से डरा हुआ नहीं बैठा हूं । ३६ । रथ और तूणीरसे रहित मृतक सारथी और सायवाला होकर अपने समूह से पृथक् होकर युद्धमें अकेला होकर मैंने इस विश्राम को अङ्गीकार किया । ३७ । हे राजा प्राणोंके कारण भय से और व्याकुलतासे मैं इस जलमें नहीं घुसता हूं मैंने केवल थकावट से यह कर्म्म कियाहै । ३८ । हे कुन्तीके पुत्र तुम विश्रामकरो और जो तेरे ओर पास वालेहैं वह भी विश्रामकरें मैं इस जलसे निकलकर युद्धमें तुम सबसे लडूंगा । ३९ । युधिष्ठिर बोले कि हम विश्राम करचुके हैं और चिलम्बसे तुमको अन्वेषण करते हैं हे सुयोधन इस हेतुसे अब उठो और यहां युद्धकरो । ४० । युद्ध में पांडवों को

your bravery and pride gone, Suyodhan; where are thy prowess and waggery? Where is thy knowledge of weapons? Why are you sleeping in the tank? Come out and fight. You will rule the kingdom if you win us or shall lie dead on earth and be slain by us. Do your duty for which you are created by God and be a king." Sanjaya said, "Having heard the words of Yudhishthir from water your son said, 35. "It is no wonder if one be affected by fear, yet I am not afraid for my life. Deprived of car, quiver, driver, attendants and warriors, I stood in need of some rest 37. I have not entered water for fear of life, it was only exhaustion that prompted me to do so. You and your followers must rest awhile and then I shall come out of the lake to fight." Yudhishthir said, "We have taken rest and

या रणस्माभिर्निर्हतो लोकमधाप्स्यासि ॥ ४१ ॥ दुर्य्योधन उवाच । यदर्थं राज्यमिच्छामि कुरूणां कुरुनन्दन । त इमे निहताः सर्वे भ्रातरो मे जनेश्वर ॥ ४२ ॥ क्षीणरत्नाञ्च पृथिवीं हतक्षत्रियपुङ्गवाम् । नाभ्युत्सहाम्यहं भोक्तुं विधवामिव योषितम् ॥ ४३ ॥ अद्यापि त्वहमाशंसे त्वां विजेतुं युधिष्ठिर। भंक्त्वा पञ्चालपाण्डूनामुत्साहं भरतर्षभ ॥ ४४ ॥ न त्विदानीमहं मन्ये कार्यं युद्धेन कर्हिचित् । द्रोणे कर्णे च संशान्ते निहते च पितामहे ॥ ४५ ॥ अस्त्विदानीमियं राजन् केवला पृथिवी तव । असहायो हि को राजा राज्यमिच्छेत् प्रशासितुम् । ४६। सुहृदस्तादृशान् हत्वा पुत्रान् भ्रातॄन् पितॄनपि भवद्भिश्च हृते राज्ये को नु जीवेत् मादृशः ॥ ४७ । अहं वनं गमिष्यामि ह्यजिनैः प्रतिवासितः । रतिर्हि नास्ति मे राज्ये हतपक्षस्य भारत ॥ ४८॥ हतबान्धवभूयिष्ठा हताश्वा

मारकर श्रादियुक्त राज्यको पाओ अथवा युद्ध में हमारे हाथ से मरकर लोक को पाओगे । ४१ । दुर्योधन बोले हे कौरव नन्दन राजायुधिष्ठिर मैं जिन कौरवों के लिये राज्यको चाहताथा वह सब मेरे भाई मारे गये । ४२ । मैं इस रत्नोंसे रहित मृतक उत्तम क्षत्रियोंवाली विधवास्त्रीके समान पृथ्वी के भोगनेको उत्साह नहीं करताहू । ४३ । हे भरतर्षभ युधिष्ठिर मै अबभी पांडवों समेत पांचालोंके उत्साहों को तोडकर/तेरे विजय करनेको आशाकरताहू । ४४ । अब मैं द्रोणाचार्य कर्ण और भीष्मपितामह के मरनेपर किसीसमय भी युद्धसे अपने कार्यको नहीं मानताहूं । ४५ । हे राजा अब यहसब पृथ्वी तेरीहो अपने साथियोंसे रहित होकर कौनसा राजा राज्यपर राज्यशासन करनेकी इच्छाकरेगा ।४६ उसप्रकारके मित्र पुत्र भाइयों और वृद्धोंको भी मारकर और आपलोगों से राज्यहरण होनेपर मुझसा कौन मनुष्य जीवतारहेगा । ४७ । हे भरतवंशी मैं मृगचर्म को धारण करने वाला होकर वनको जाऊंगा जिसके पक्षवाले लोग मारेगये उस राज्य में मेरी प्रीति नहीं है । ४८ । हेराजा जिसमें बहुत बान्धव घोडे और हाथी आदिक मारे

have been seeking long for you. So you must rise up and fight. 40 Slay the Pandavas and gain kingdom or be slain by us.' Duryodhan said, ' All my brothers and Kauravas for whom I wished to secure the kingdom, are slain and I dare not enjoy the earth widowed of those jewels of warriors. I shall yet crush the pride of the Pandavas and Panchals and hope to win. My mind is never vacant of war after the death of Drona, Karan and Bhishm. Let this earth be yours. What king deprived of his companions shall wish to reign. 46. What person like me shall wish to live after the death of friends, sons, brothers and elders and the deprivation of kidgdom by you? I shall put on deer skins and shall go into forests for I have no hope for the kingdom whose allies are no more. 48 The earth deprived of kinsmen, horsemen and elephant men shall be yours and you will enjoy it without anxiety. I shall go in to exile with deer skins on, for being deprived

हतकुञ्जरा । एषा ते पृथिवी राजन् भुङ्क्ष्वैना विगतज्वर. ॥ ४९ ॥ वनमेव गमिष्यामि वसानो मृगचर्मणी । न हि मे निर्जनस्यास्ति जीवितेद्य स्पृहा विभो ॥ ५० ॥ गच्छ त्वं भुङ्क्ष्व राजेन्द्र पृथिवीं निहतेश्वराम् । हतयोधां नष्टरत्नां क्षीणवप्रां यथासुखम्॥५१॥ सञ्जय उवाच । दुर्योधन तव सुत सलिलस्थं महायशा । श्रुत्वा तु करुणं वाक्यम भाषत युधिष्ठिर. ॥ ५२ ॥ युधिष्ठिर उवाच । आर्तप्रलापान्मा तात सलिलस्थ प्रभा षिथा । नैतन्मनसि मे राजन् वाशितं शकुनेरिव ॥ ५३ ॥ यदि चापि समर्थ स्यास्त्वं दानाय सुयोधन । नाहमिच्छेयमवनिं त्वया दत्तां प्रशासितुम् ॥ ५४ ॥ अधर्मेण न गृह्णीयां त्वया दत्तां महीमिमाम् । नहि धर्मं स्मृतोराजन् क्षत्रियस्य प्रतिग्रह ॥५५॥ त्वया दत्तां न चेच्छेयं पृथिवीमखिलामहम् । त्वान्तु युद्धे विनिर्जित्य भोक्तास्मि वसु धामिमाम् ॥ ५६ ॥ अनीश्वरश्च पृथिवीं कथं त्वं दातुमिच्छसि । त्वयैव पृथिवी राजन् किन्न दत्ता तदैव हि । धर्मतो याचमानानां शमार्थञ्च कुलस्य न. । ५७ ॥ वार्ष्णेयं

गये वहसव पृथ्वी तेरी है इसको तुम विगतज्वरहोकर भोगो । ४९। मैं मृगचर्मोंको धारण करके वनको जाऊंगा हे समर्थ अब जीवनमें पुत्र भाई पुत्रोंसे जुदेहोनेवाले की इच्छानहीं है । ५० । हे राजेन्द्र तुमजाओ और इस पृथ्वीको जिसके स्वामी और शूरवीर मारेगये और जिसमें रत्नोंका नाशहुआ और गढ़ मकोट्टादिक जीर्णहोगये सुखपूर्वक भोगो । ५१ । संजय बोले कि बड़ा यशस्वी युधिष्ठिर ऐसे दीन वचनों को सुनकर उस जल में निवास करनेवाले आपके पुत्र दुर्योधन से बोला । ५२ । हे भाई जलमें नियत तुम पीड़ा के प्रलापों को मतकहो हे राजा पक्षीके समान निवासकरना मेरे चित्तमें नहीं है ।५३। हे सुयोधन जो तुम देनेके निमित्त भी समर्थ हो तौभी मैं तेरी दीहुई पृथ्वीपर राज्यशासन करनेकी इच्छा नहीं करताहूं । ५४ । तेरी दीहुई इस पृथ्वीको अधर्म से नहीं लूंगा दानलेना क्षत्रीका धर्मनहीं कहागया है ।५५। मैं तेरी दीहुईइस सम्पूर्ण पृथ्वीको नहींचाहता तुमको युद्धमें विजय करके इस पृथ्वी को भोगूंगा । ५६ । हे राजा तुम स्वामी न होकर पृथ्वीको कैसे देनाचाहतेहो तुमनेयह पृथ्वी उससमय पर कुलकी शान्ति के लिये धर्मसे मांगनेवाले हमलोगों को क्योंनहींदी ।५७ । प्रथम, बड़ेबलवान

of brothers and sons, I have no desire to live any longer 50 Go away, Prince, and rule over the land whose lords and warriors are slain, jewels destroyed and fortifications become weak and old " Sanjaya said that having heard those humble words, Yudhishthir said to him, " Donot mourn from the midst of water, I donot wish to lead the life of a bird , I would not take the land from you, even if you had the power to give it me. I shall not take the land improperly from you Kshatryas donot receive charity. 55 I donot like to receive the whole earth from your hands, I shall win it. Not being the master of it how do you promise to give it away, Why did you

प्रथमं राजन् प्रत्याख्याय महाबलम् । किमिदानीं ददासीमं कोऽहितं विभ्रमः
। ५८ ॥ अभियुक्तस्तु को राजा दातुमिच्छेद्धि मेदिनीम् । न त्वमद्य महीं दातुमीशः
कौरवनन्दन ॥ ५९ । आच्छेत्तुं वा बलाद्राजन् स कथं दातुमिच्छसि । मां तु निर्जित्य
संग्रामे पालये मां वसुन्धराम् ॥ ६० ॥ सूच्यग्रेणापि यद्भूमिरपि धीयेत भारत । तन्मा
त्रमपि तन्मह्यं न ददाति पुरा भवान् ॥६१॥ स कथं पृथिवीमेतां प्रददासि विशाम्पते
सूच्यग्रं नात्यजः पूर्वं स कथं त्यजसि क्षितिम्॥६२॥एवमैश्वर्यमासाद्य प्रशास्य पृथिवी
मिमाम् । को हि मूढो व्यवस्येत शत्रोर्दातुं वसुन्धराम् ॥ ६३ ॥ त्वन्तु केवलमौर्ख्येन
विमूढो नावबुध्यसे । पृथिवीं दातुकामोऽपि जीवितेन विमोक्ष्यसे ॥ ६४ । अस्मान् वा
त्वं पराजित्य प्रशाधि पृथिवीमिमाम् । अथवा निहतोऽस्माभिर्व्रज लोकाननुत्तमान् ॥६५॥
आवयोर्जीवतो राजन् मयि च त्वयि च ध्रुवम् । संशयः सर्वभूतानां विजये नो भवि

श्रीकृष्णजी को उत्तरदेकर अब तुम क्योंदेतेहो । ५८ । तेरे चित्तकी भ्रान्तिक्या है कौन पराजयहोनेवाला राजा पृथ्वीको देनाचाहै हे कौरवनन्दन अब तुम पृथ्वी के देनेको स्वामी नहींहो न बलसे लेनेको समर्थहो सो कैसे देनाचाहते हो मुझको युद्धमें विजयकरके इस पृथ्वीका पालनकरो । ६० । हे भरतवंशी सुईके अग्रभागभरभी पृथ्वी जो तुमने हमको पूर्वसमय में नहींदी अब उस सब पृथ्वीको कैसे देतेहो । ६१ । प्रथम तो सुईके अग्रभागके भी समान पृथ्वीको नहींदिया अब उस पृथ्वीको कैसे त्यागकरते हो ।६२। इसप्रकारके ऐश्वर्यको पाकरऔर इस पृथ्वीपर राज्यकरके कौनसा अज्ञानी अपने शत्रुको उस पृथ्वी के देनेको निश्चयकरेगा । ६३ । तुम महाअज्ञानीहोकर केवल अज्ञानतासेही सावधान नहींहोते तो पृथ्वीकेदेने का अभिलाषीभी होकर तू जीवताहुआ नहीं बचसक्ता ।६४। तुम हमको विजयकरके इस पृथ्वीपर राज्यकरो अथवा हमारे हाथसे मरकर उत्तम लोकोंको जाओ । ६५ । हे राजा निश्चय मेरे जीवितरहनेपर हमदोनों की इच्छा

---

not give it us when we, having a right to it, asked it of you for the safety of the family? *Having replied Shri Krishn in the negative.* why do you intend to give it now? What nonsense you are talking? What conquered Prince can give away kingdom! You have now no power to give it, nor keep it by force, how do you talk of giving it. You can rule the earth after conquering it from me. 60. You did not like to give us land equal to needle point; how do you talk of giving us the entire land now. How do you wish to leave the land of which *you did not like to part with even equal to the point of a* needle? Who will be so foolish as to give his kingdam to his enemy. You have not even now given up your foolishness. You cannot escape death even if you relinquish your claim to the kingdom. Either rule the

ष्यति ॥ ६६ ॥ जीवितं तव दुष्प्रज्ञ मयि सम्प्रति वर्त्तते । जीवयेयं त्वहं काम न तु त्वं जीवितुं क्षमः॥६७॥ दहने हि कृतो यत्नस्त्वयास्मासु विशेषतः आसीविषैर्विषैश्चापि जले चापि प्रवेशनैः ॥ ६८ ॥ त्वया विनिकृता राजन् राज्यस्य हरणेन च । अप्रियाणाञ्च वचनैर्द्रौपद्याः कर्षणेन च ॥ ६९ ॥ एतस्मात् कारणात् पाप जीवितं ते न विद्यते । उत्तिष्ठोत्तिष्ठ युध्यस्व तत्ते श्रेयो भविष्यति ॥ ७० ॥ एवन्तु विविधा वाचो जययुक्ताः पुनः पुनः । कीर्त्तयन्ति स्म ते वीरास्तत्र तत्र जनाधिप ॥ ७१ ॥

इति शल्यपर्वणि ह्रदप्रवेशपर्वाणि दुर्योधनभर्त्सनेएकत्रिंशोध्यायः ३१समाप्तं ह्रदपर्व

नुसार सब जीवधारियोंको सन्देह होगा ।६६। हे दुर्बुद्धि तेरा जीवन मुझमें वर्त्तमान है मैं जीवता रहूंगा परन्तु तुम जीवते रहनेको समर्थ नहींहो । ६७ । हे राजा तुमने हमारे नाशकरने में बड़े बड़े उपायकिये अर्थात् तुमने हमलोगों को विष धर सर्पोंके विषसे जलके डुबोनेसे और राज्यके छीनलेने निरादर किया अयोग्य अप्रिय वचन और द्रौपदी के खैंचने से पीड़ावान् किया । ६९ । हे पापी इस कारण से तू जीवताहुआ नहीं बचसक्ता उठ उठ युद्धकर इसीसेकल्याण होगा । ७० । हे राजा उनवीरोंने वहां इसप्रकार विजय से युक्त नानाप्रकार के वचनों को वारम्वार कहा ७१ ॥

kingdom after slaying us or be slain by us and go to the region of the good. The world can not be free from anxiety as long as both of us live. 66. Your life depends on me. I shall outlive you. You tried your best to destroy us. You tried to kill us by snake-bite, drowning and deprivation of kingdom. You insulted us by dragging Draupadi. You cannot therefore scape with your life. Rise, rise and fight. Your good lies in this. They talked thus again and again." 71.



घृतराष्ट्र उवाच । एवं सन्तर्ज्यमानस्तु मम पुत्रो महीपति । प्रकृत्या मन्युमान् वीर कथमासीत् परन्तप ॥ १ ॥ न हि सन्तर्जना तेन श्रुतपूर्वा कथञ्चन । राजभावेन मान्यश्च सर्वलोकस्य सोऽभवत्॥२। यस्यातपत्रच्छायापि स्वका भानोस्तथा प्रभा। खेदायैवाभिमानित्वात् सहेत् सैव कथं गिर ॥ ३ ॥ इयञ्च पृथिवी सर्वा सम्लेच्छाटविका भृशम । प्रसादाद्ध्रियतेयस्य प्रत्यक्षं तव सञ्जय॥ ४ ॥ स तथा तर्ज्यमानस्तु पाण्डुपुत्रैर्विशेषत । विहीनश्च स्वकैर्भृत्यैर्निर्जने चावृतो भृशम् ॥ ५ ॥ स श्रुत्वा कटुका वाचो जययुक्ता पुन पुन । किमब्रवीत् पाण्डवेयांस्तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ ६ ॥ सञ्जय उवाच । तर्ज्यमानस्तथा राजन्नुदकस्थस्तवात्मजः युधिष्ठिरेण राजेन्द्र भ्रातृभि सहितेन॥७ ॥ स श्रुत्वा कटुका वाचो विषमस्थो जनाधिपः । दीर्घमुष्णञ्च निश्वस्य सलिलस्थ पुन पुन ॥ ८ ॥ सलिलान्तर्गतो राजा धुन्वन् हस्तौ पुन पुनः

॥ अथ गदायुद्धपर्व अध्याय ३२ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि शत्रुओंका तपानेवाला स्वभावसे क्रोधयुक्त वह मेरा पुत्र वीर राजादुर्योधन इसप्रकार के कठोर वचनोंको सुनकर कैसी दशावाला हुआ । १ । उसने पूर्व में कभीभी निन्दित और अप्रतिष्ठित वचन नहीं सुने वह राजाहोने से सबलोकका माननीय हुआ । २ । जिसके अभिमानसे छत्रकी छाया भी सूर्यके ताप से रक्षाकरनेके कारण दुःखके निमित्त होतीथी वह ऐसेप्रकार के वचनों को कैसे सहसक्ता है । ३ । हे संजय तेरे नेत्रके समक्षमें यह सम्पूर्ण पृथ्वी म्लेच्छ और आटाविकाओं समेत जिसकी प्रसन्नता से सजीवरहतीथी वह अधिकतर पाण्डवों से घुड़काहुआ निर्जनवनमें अपने नौकरों से रहित और शत्रुओंसे घिराहुआ था । ५ । उसने विजय से संयुक्त कटुवचनों को वारम्वार सुनकर पाण्डवों से क्याकहा हे संजय वह मुझसे कहो । ६। संजयबोले हे राजेन्द्र तब भाइयों समेत युधिष्ठिरसे घुड़केहुये जलमें नियत आपके पुत्र आपत्ति में नियत राजादुर्योधन ने । ७ । कटुवचनों को सुना तब वह वारम्वार लम्बी उष्णश्वास लेकर बारम्बार हाथोंको भी कँपाताहुआ जलसे बाहर निकला और युद्धके निमित्त चित्तको

CHAPTER XXXII

Dhritarashtra said, " What was the condition of my son who is naturally of a rash temper, when he heard those harsh words? He had never heard such disrespectful language when he was the lord of, the land and was respected by the subjects, He who in his pride felt uneasy at the heat of the Sun under the shade of an umbrella, could not bear to hear such language. He on whose pleasure depended the life of the world of Mlechas and Atawiks, was insulted in that lonely place by the Pandavas, when he was destitute of servants and surrounded by enemies What did he say on hearing the bitter words of the Pandavas again and again? Tell me all this, Sanjaya, " Sanjaya

मनश्चकार युद्धाय राजानञ्चाभ्यभाषत ॥ ९ ॥ दुर्य्योधन उवाच । यूयं ससुहृदः पार्थाः
सर्वे सरथवाहनाः । अहमेकः परिद्यूनो विरथो हतवाहनः ॥ १० ॥ आत्तशस्त्रै रथोपेतै
र्बहुभिः परिवारितः । कथमेकः पदातिः सन्नशस्त्रो योद्धुमुत्सहे ॥ ११ ॥ एकैकेन तु मां
यूयं योधयध्वं युधिष्ठिर । न ह्येको बहुभिर्वीरैर्न्याय्यो योधयितुं युधि ॥ १२ ॥ विशेषतो
विकवचः श्रान्तश्चापत्समाश्रितः । भृशं विक्षतगात्रश्च श्रान्तवाहनसैनिकः ॥ १३ ॥ न
मे त्वत्तो भयं राजन्न च पार्थाद्वृकोदरात् । फाल्गुनाद्वासुदेवाद्वा पाञ्चालेभ्योऽथ वा
पुनः । १४ ॥ यमाभ्यां युयुधानाद्वा ये चान्ये तव सैनिकाः । एकः सर्वानहं क्रुद्धो वार
यिष्ये युधि स्थितः ॥ १५ ॥ धर्ममूला सतां कीर्त्तिर्मनुष्याणां जनाधिप । धर्मञ्चैवेह
कीर्त्तिञ्च पालयन् प्रब्रवीम्यहम् ॥ १६ ॥ अहमुत्थाय वः सर्वान् प्रतियोत्स्यामि

करके राजा युधिष्ठिर से बोला। ९। हे पाण्डवलोगों तुम सब रथ घोड़े और मित्रों समेतहो और मैं अकेला थकाहुआ विरथ और मृतक सवारीवाला। १०। अकेला अशस्त्र होकर शस्त्रउठानेवाले बहुतसे रथसवार शूरवीरों से संयुक्त आप लोगोंसे कैसे लड़नेका उत्साह करसक्ता हूं। ११। हे युधिष्ठिर तुम एक एक होकर मेरेसाथ युद्धकरो युद्धमें एक मनुष्य बहुतोंके साथ न्याय से लड़नेको योग्यनहीं है। १२। अधिकतर कवच से रहित थका हुआ आपत्ति में फँसा हुआ और अत्यन्त घायल अंग मृतक सवारी सेनावाला। १३। हेराजा मुझको तुमसे भय नहीं है पाण्डव भीमसेन अर्जुन वासुदेवजी और पांचालोंसे भी भयनहीं। १४। नकुल सहदेव सात्यकि से और जो अन्य अन्य आप की सेना के लोग हैं उन से भी भय नहीं है युद्ध में क्रोधयुक्त होकर मैं अकेलाही तुम सब को रोकूंगा। १५। हे युधिष्ठिर अच्छेलोगों की शुभ कीर्त्ति धर्म्म का मूल रखनेवाली है मैं यहां धर्म और कीर्त्तिको पालन करताहुआ यह कहताहूं। १६। कि मैं उठकर तुम

said, "Daunted by Yudhishthir and his brothers, staying under water and fallen in misery, Prince Duryodhan heard the bitter words and heaving deep sighs and with shaking hands, he came out of water and said to Yudhishthir. " Pandavas! you have cars, horses and friends with you, while I am alone, carless and my horses are dead. 10 How I can fight without weapons with you who possess weapons. You must fight with me one by one, it is unjust if many warriors fight with one. Destitute of armour, tired, fallen in trouble, wounded and destitute of carriage. I am not afraid of you nor have I any fear of Bhim, Arjun, Vasudev and the Panchals. I am not afraid of Nakul, Sahadev, Satyaki and other allies of yours. Enraged in battle I shall check you alone 15. The fame of good men has virtue for its root and I rely on dharm when I say that I shall fight with all of you Destitute of car and weapons I shall destroy you

संयुगे । अनुगत्यागतान् सर्वानृतून् संवत्सरो यथा ॥ १७ ॥ अद्य: च सरथान् सादवा नराश्वो विरथोपि सन् । नक्षत्राणीव सर्वाणि सविता रात्रिसंक्षये । तेजसा नाशयिष्यामि स्थिरीभवत पाण्डवाः ॥ १८ ॥ अद्यानृण्यं गमिष्यामि क्षत्रियाणां यशस्विनाम्। बाह्लीकद्रोणभीष्माणां कर्णस्य च महात्मनः ॥ १९ ॥ जयद्रथस्य शूरस्य भगदत्तस्य चोभयोः । मद्रराजस्य शल्यस्य भूरिश्रवस एव च ॥ २० ॥ पुत्राणां भरतश्रेष्ठ शकुनेः सौबलस्य च । मित्राणां सुहृदांचैव बान्धवानां तथैव च ॥ २१ ॥ आनृण्यमद्य गच्छामि हत्वा त्वां भ्रातृभिः सह । एतावदुक्त्वा वचनं विरराम जनाधिप ॥ २२॥ युधिष्ठिर उवाच । दिष्ट्या त्वमपि जानीसे क्षत्रधर्मं सुयोधन । दिष्ट्या ते वर्त्तते बुद्धिर्युद्धायैव महाभुज ॥ २३ ॥ दिष्ट्या शूरोसि कौरव्य दिष्ट्या जानासि सङ्गरम् । यस्त्वमेको हि नः सर्वान् संयगे योद्धुमिच्छसि ॥ २४ ॥ एक एकेन सङ्गम्य यत्ते सम्म

सबके सम्मुख जाकर युद्धमें ऐसे लडूंगा जैसे कि वर्षकी समाप्ति में सब ऋतुओं के सम्मुख होकर वर्षका युद्धहोता है । १७ । अब शस्त्रों से रहित विरथहोकरभी रथ घोड़े रखनेवाले तुम सबको ऐसे नाशकरूंगा जैसे कि रात्रिके समाप्त होनेपर सब नक्षत्रोंको सूर्य नष्टकर देता है हे पांडवलोगो नियत होजाओ मैं तुम सबको अपने तेजसे नाशकरूंगा।१८। अब मैं यशवान क्षत्रियोंकी अऋणताको पाऊंगा हे भरतर्षभ अब तुझ को तेरे सब भाइयों समेत मारकर बाह्लीक द्रोणाचार्य भीष्म महात्माकर्ण शूरजयद्रथ मद्रका राजा शल्य भूरिश्रवा । २० । अपने पुत्र सौबलके पुत्रशकुनी मित्र शुभ चिन्तक और बान्धवों की अऋणताको पाऊंगा । २१ । यह राजा इतना वचन कहकर मौन होगया । २२ । युधिष्ठिर बोले हे सुयोधन तुमभी प्रारब्धसे क्षत्रियधर्मको जानतेहो हे महाबाहु प्रारब्धही से तेरीबुद्धि युद्धके लिये वर्तमानहै । २३ । हे कौरव प्रारब्धसेही शूरहोकर तू युद्ध को जानताहै जो अकेलाही होकर तू हम सबसे लड़ना चाहता है । २४ । जो शस्त्र तुझको अंगीकृत है उसको लेकर चाहे जिस अकेसेही भिड़कर युद्धकर हमसब

as the sun does the stars at day break. I shall be thus free from the debt of warriors. Having slain you and your brothers, I shall avenge the death of Vablik, Drona, Bhishm, Karan, Jayadrath, Shalya, Bhurishrava, my son, Shakuni, friends, well wishers and kinsmen." 21. Having said this, the king became silent. Then Yudhishthir said, "It is fortunate that you know the duties of kshatryas and are firm on it. Fortunately, you know how to fight and are ready for it. You may select any weapon you like and may fight with any warrior you choose and we shall look on your fighting 25. I give you the desire of your heart. You may reign after slaying any one of us five or yourself go to heaven." Duryodhan said, "If you are willing to give me a warrior to fight with, I

तमायुधम् । तदवमादाय युध्यस्व प्रेक्षकास्ते वयं स्थिताः ॥ २५ ॥ अयमिष्टश्च ते कामं वीर भूयो ददाम्यहम् । हत्वैकं भव नो राजा हतो वा स्वर्गमवाप्नुहि ॥२६॥ दुर्योधन उवाच। एकश्चेद्योद्धुमाक्रन्दे शूरोऽद्य मम दीयताम्। आयुधानामियञ्चापि वृता मत्संमता गदा ॥ २७ ॥ हन्तैकं भवतामेकः शक्यं मां योऽभिमन्यते । पदातिर्गदया संख्ये स युध्यतु मया सह ॥२८॥ वृत्तानि रथयुद्धानि विचित्राणि पदे पदे इदमेकं गदायुद्धं भवत्वद्याद्भुतं महत् ॥ २९ ॥ अन्नानामपि पर्य्यायं कर्तुमिच्छन्ति मानवाः । युद्धानामपि पर्य्यायो भवत्वनुमते तव ॥ ३० ॥ गदया त्वां महाबाहो विजेष्यामि सहानुजम् । पाञ्चालान् सृञ्जयांश्चैव येचान्ये तव सैनिकाः । न हि मे सम्भ्रमो जातु शक्रादपि युधिष्ठिर ॥ ३१ ॥ युधिष्ठिर उवाच । उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गान्धारे मां योधय सुयोधन । एक एकेन सङ्गम्य संयुगे गदया बली ॥ ३२ ॥ पुरुषो भव गान्धारे युध्यस्व सुसमाहितः । अद्य

तेरा तमाशा देखने को नियतहैं । २५ । हे वीर अब फिर मैं तेरे इसअभीष्ट को देताहूं हम पांचों में एकको मारकर तेरा राज्यहोय अथवा मरकर तू स्वर्गको पावे । २६ । दुर्योधन बोला कि जो अब युद्धमें लड़ने को एकशूर मुझे देतेहो तो आपके मतसे शस्त्रों में से यह गदाभी चाहीगई । २७ । एकको मारकरही औराज्य के मिलने न मिलने की प्रतिज्ञा है तो तुममें एकशूर, जो मुझको योग्य मानता है वह पदाती होकर गदाके द्वारा युद्धमें मुझसे युद्धकरे । २८ । प्रथम स्थान २पर रथोंके विचित्र युद्ध जारीहुये अब यहां गदाका युद्ध अपूर्व और बड़ा होय। २९ । मनुष्य अन्नोंकी भी रचना को करना चाहते हैं अब तेरी बुद्धिम युद्धों कीभी रचना होय ।३०। हे महाबाहु अब मैं गदासे तुझको तेरे छोटे भाइयों समेत विजय करूंगा पांचाल सृंजीआदि जो अन्य २ तेरी सेनाके लोगहैं उनको भी विजय करूंगा हे युधिष्ठिर कभी इन्द्रसेभी मुझको भय नहीं है । ३१ । युधिष्ठिर बोले हे गान्धारी के पुत्र सुयोधन उठ और मुझसे युद्धकर बलवान् और अकेला युद्धमें गदाकेद्वारा एकके साथ भिड़कर । ३२ । शूरहोजा और हे गान्धारी के पुत्र अच्छी

shall select this mace alone as my weapon 27. As for your promise to give the kingdom after slaying only one, let one of you fight with mace on foot. There have been many wonderful encounters of car-warriors, let us fight a wonderful battle with the mace. Let the fighting and weapon be regulated according to your directions. 30. With my mace I shall conquer you and your younger brothers as well as the Panchals, the Srinjayas and other warriors of your army. I am not afraid even of Indra." "Suyodhan, son of Gandhari," said Yudhishthir, "rise up and fight with me. Be brave and fight with one with your maces. Fight carefully and you cannot scape death even if Indra were to help you." Sanjaya said, "Your son, standing in the midst of water and sighing like a huge snake, could

ते जीवितं नास्ति यद्यिन्द्रोऽपि तवाश्रय ॥ ३३ ॥ सञ्जय उवाच । एतत् स नरशार्दूलो
नामृष्यत तवात्मज सलिलान्तर्गत श्वभ्रे महानाग इव श्वसन् ॥ २४ ॥ तथासौ
वाक्प्रतोदेन तुद्यमानः पुनः पुनः । वचो न ममृषे राजन्नुत्तमाश्वः कशामिव ॥ ३५ ॥
संक्षोभ्य सलिलं वेगाद्गदामादाय वीर्यवान् । अद्रिसारमयीं गुर्वीं काञ्चनाङ्गदभूष
णाम् । अन्तर्जलात् समुत्तस्थौ नागेन्द्र इव निःश्वसन ॥ ३६ ॥ स भित्वा स्तम्भितं
तोयं स्कन्धे कृत्वायसीं गदाम् । उदतिष्ठत पुत्रस्ते प्रतपन्रश्मिवानिव ॥ ३७ ॥ ततः
शैक्यायसीं गुर्वीं जातरूपपरिष्कृताम् । गदां परामृशद्धीमान् धार्तराष्ट्रो महाबल
॥ ४८ ॥ गदाहस्तन्तु तं दृष्ट्वा सशृङ्गमिव पर्वतम । प्रजानामिव संक्रुद्धं शूलपाणि
मिवस्थितम् ॥ ४९ ॥ स गदी भारतो भाति प्रतपन् भास्करो यथा ॥ ४० ॥ तमुत्तीर्णं
महाबाहुं गदाहस्तमरिन्दमम् । मेनिरे सर्वभूतानि दण्डपाणिमिवान्तकम् ॥ ४१ ॥ वज्र
हस्तं यथा शक्रं शूलहस्तं यथा हरम् । ददृशु सर्वपाञ्चालाः पुत्रं तव जनाधिपम

सावधानी से युद्धकरे अब जो इन्द्रभी तेरी सहायताकरें तोभी तेराजीवन नहीं है । ३३ । संजय बोले कि उसनरोत्तम जलके मध्यवर्त्ती सर्पके समान महाश्वास लेते आपके पुत्रने इस बातको नहींसहा । ३४ । हे राजा उसप्रकारके वचनरूपी कोड़ों से घायल उस दुर्योधन ने उन वचनों को ऐसे नहींसहा जैसे कि उत्तम घोड़ा चाबुकको नहीं सहता है । ३५ । वह पराक्रमी वेगसे जलको छिन्नभिन्न करके सुनहरी बाजूबन्दोंसे अलंकृत लोहेकी गदाको लेकर सर्पराज के समान श्वास लेता जलके मध्य में से उठा ।३६। अर्थात् वह आपका पुत्र उस रोकेहुये जलको हटा कर लोहेकी गदा को कन्धेपर रखकर सूर्य्यके समान तपाता हुआ जलसे बाहर निकला । ३७ । उसके पीछे शैक्य में रहनेवाली लोहेकी भारी सुवर्ण जटित गदा को बुद्धिमान् बड़े पराक्रमी दुर्योधनने अपने हाथमें लिया ।३८। शिखर रखनेवाले पर्वतकेसमान गदा हाथमें रखनेवाले उस दुर्योधनको देखकर उसको क्रोधयुक्त नियत होनेवाले शिवजी के समान माना । ३९ । वह भरतवंशी सूर्य्य के समान तपाताहुआ शोभायमानथा । ४० सब जीवोंने उस जलसे बाहर आयेहुये महाबाहु गदा हाथमें लिये शत्रुविजयी दुर्योधन को दण्डधारी यमराज के समान माना ।४१।

not bear this language Wounded by the whips of words, Duryodhan could not bear them as a noble steed cannot bear whip He soon dispersed the water and came out from it sighing like a prince of snakes He came out of water with his iron mace on his shoulder glorious like the Sun. 37. Then he took up his noble mace made in Shaikya, in his hand Seeing Duryodhan rise up like a mountain peak, they found him like enraged Rudra and glorious like the Sun. 40. They took him for Yam the bearer of staff All the people were much pleased to see him and the Pandavas and Panchals clap-

॥ ४२ ॥ तमुत्तीर्णन्तु संप्रेक्ष्य समहृष्यन्त सर्वशः । पाञ्चालाः पाण्डवेयाश्च तेऽन्योन्यस्य तलान्ददुः ॥ ४३ ॥ अवहासन्तु तं मत्वा पुत्रो दुर्य्योधनस्तव । उद्वृत्य नयनं क्रुद्धो दिधक्षुरिव पाण्डवान् । ४४ ॥ त्रिशिखां भ्रुकुटीं कृत्वा सन्दष्टदशनच्छदः । प्रत्युवाच ततस्तान् वै पाण्डवान् सहकेशवान् ॥ ४५ ॥ दुर्य्योधन उवाच । अवहासस्य फलं प्रतिमोक्ष्यथ पाण्डवाः । गमिष्यथ हताः सद्यः सपाञ्चाला यमक्षयम् ।४६॥ सञ्जय उवाच । उत्थितश्च जलात्तस्मात् पुत्रो दुर्य्योधनस्तव । अतिष्ठत गदापाणी रुधिरेण समुक्षितः ॥ ४७ ॥ तस्य शोणितदिग्धस्य सलिलेन समुक्षितम् । शरीरं स्म तदा भाति स्रवन्निव महीधरः ॥४८॥ तमुद्यतगदं वीरं मेनिरे तत्र पाण्डवाः । वैवस्वतमिव क्रुद्धं किङ्करोद्यतपाणिनम् ॥ ४९॥ स मेघनिनदो हर्षान्नर्दन्निव च गोवृषः । आजुहाव ततः पार्थान् गदया युधि वीर्य्यवान् ॥ ५० ॥ दुर्य्योधन उवाच । एकैकेन च मां

सब पांचालो ने आपके पुत्र राजा दुर्योधन को उसप्रकार का देखा जैसे कि वज्रधारी इन्द्र और शूलधारी रुद्रजीको देखते है । ४२ । सबलोग जलसे बाहर निकलनेवाले उसदुर्योधनको देखकर बहुत प्रसन्नहुये और उन पांचाल और पांडवों ने ताली बजाई । ४३ । फिर आपकापुत्र दुर्योधन उनकी ताली बजने को अपनाहास्य मानकर दोनों नेत्रोंको खोलके क्रोधयुक्त पांडवों को भस्म करता हुआसा ।४४। भृकुटीको तीन शिखावाली करके दांतोंकी पंक्तिको काटता केशवजी समेत पांडवोंसे यह उत्तर वचन बोला । ४५ । कि हे पाडवलोगों तुम इस हास्यके फलको पाओगे और पांचालों समेत मुझसे मरकर शीघ्रही यमलोक को जाओगे । ४६ । संजय बोले कि वह जलसे निकलाहुआ आपका पुत्र दुर्योधन रुधिर से युक्त गदा हाथमें लेकर नियत हुआ । ४७ । तब उस रुधिर से युक्त शरीर जलसे आर्द्र उसप्रकारका विदित होताथा जैसे कि झरनाओं से युक्त पर्वत होताहै । ४८ । वहां पांडवोंने उस गदाऊंची करनेवाले वीरको क्रोधयुक्त दंडधारी यमराज के समान माना । ४९ । उसके पीछे प्रसन्नतासे वृषभके समान गर्जनेवाले बादल के समान शब्दायमान पराक्रमी उस दुर्योधन ने गदा के द्वारा युद्धमें पांडवों को बुलाया । ५० । दुर्योधन बोला हे युधिष्ठिर तुम युद्धमें एक २ मेरे

ped their hands Duryodhan was offended at this and with brows contracted in rage gnashing his teeth, thus addressed Keshav and the Pandavas :— (45, " You will reap the reward of it, Pandavas and will soon go to the region of Yam together with the Panchals." Sanjaya said, " Your son, Duryodhan coming out of the lake with bleeding body, looked like a hill with waterfalls The Pandavas looked upon him and his mace as Yam the bearer of staff. Then bellowing like a bull and thundering like a cloud, brave Duryodhan challenged the Pandavas to fight 50. Duryodhan said, " Come to

धयमासीद्रत युधिष्ठिर । न ह्येको बहुभिर्न्याय्यो वीरो योधयितुं युधि ॥ ५१ ॥ विकव चो विशेषेण श्रान्तश्चाप्सु परिप्लुतः भृशं विक्षतगात्रश्च श्रान्तवाहनसैनिकः ॥ ५२ ॥ अवश्यमेव योद्धव्यं सर्वैरेव मया सह । युक्तं न युक्तमित्येतन्नित्यं त्वं चैव वेत्थ ह ॥५३॥ युधिष्ठिर उवाच । मा भूदियं तव प्रज्ञा कदाचिदेव सुयोधन । यदाभिमन्युं बहवो जघ्नुर्युधि महारथाः ॥ ५४ ॥ क्षत्रधर्मं भृशं क्रूरं निरपेक्षं सुनिर्घृणम् । अन्यथा तु कथं हन्युरभिमन्युं तथागतम् ॥ ५५ । सर्वे भवन्तो धर्मज्ञाः सर्वे शूरास्तनुत्यजः । न्यायेन युध्यतां प्रोक्ता शक्रलोकगतिः परा ॥ ५६ ॥ यद्येकस्तु न हन्तव्यो बहुभिर्धर्म एव तु । तदाभिमन्युं बहवो निजघ्नुस्त्वन्मते कथम् ॥ ५७ ॥ सर्वो विमृशते जन्तुः कृच्छ्रस्थो धर्मदर्शनम् । पदस्थः पिहितं द्वारं परलोकस्य पश्यति ॥ ५८ ॥ आमुञ्च कवचं वीर

सम्मुख आओ अकेला वीर बहुतों के साथ युद्धमें लड़नेको न्याय के अनुसार योग्य नहीं है । ५१ । अधिकतर कवचत्यागथकाहुआ जलसे आर्द्रशरीर अत्यन्त घायल अंग मृतक सवारी और सेनाके लोगवाला । ५२ । सबको मेरे साथ अवश्यही लड़ना चाहिये तुम सदैव योग्य और अयोग्य बातों को जानतेहो ।५३। युधिष्ठिर बोले हे सुयोधन यह तेरी बुद्धि नहीं यह बात तब कैसी हुईथी जब कि बहुत से महारथियों ने युद्धमें अकेले अभिमन्युको मारा । ५४ । क्षत्रियधर्म्म अत्यन्त निर्दय और असंबन्धीहै उससमय उस दशावाले अभिमन्युको विपरीत रीति से कैसे मारा । ५५ । आप सब धर्मों के जाननेवाले शूर और शरीरकी प्रीति के त्यागनेवाले थे न्यायसे उत्तम रीतिके युद्ध करनेवालोंकी इन्द्रलोकमें उत्तमगति कही है । ५६ । जो अकेला बहुतों के हाथसे मारनेके योग्य नहीं वही धर्म्महै तो उससमय तेरी बुद्धिसे बहुतसे शूरवीरों ने मिलकर अकेले बालक अभिमन्युको कैसेमारा । ५७ । दुःख में पड़ेहुये सबजीव धर्म्मदर्शन को विचारते हैं और अपने स्थानपर नियत परलोकके द्वारको बन्दमानते हैं । ५८। हे वीर कवचको धारणकरो

me one by one, Pandavas, for the fighting of one with many is unlawful, specially when I am destitute of armour, tired wet, without car and army All men must fight with me, You know what is proper and improper ' Yudhishthir said, " Your policy was not this before when many warriors slew Abhimanyu The works of Kshatryas are very cruel How were you so cruel to Abhimanyu, 55 You know all dharmas, were Brave and not caring for life Those who fight in a just cause, go to the region of Yam. If you think it unjust for a single man to be slain by many, how it was that many warriors slew Abhimanyu People fallen in misery talk of virtue and think that the door of the next world is closed for them Put on your armour, brave man and tie up your hair You may take any other thing that you stand in need of I give you a boon you will yet be king if you

मूर्धजान् बन्धयस्व च । यच्चान्यदपि ते नास्ति तदप्यादत्स्व भारत ॥५९॥ इममेकं च ते कामं वरं भूयो ददाम्यहम् । पञ्चानां पाण्डवेयानां येन युद्धमिहेच्छसि ॥ ६० ॥ तं हत्वा वै भवान्राजा हतो वा स्वर्गमाप्नुहि । ऋते च जीविताद्वीर युद्धे किं कुर्म ते प्रियम् ॥ ६१ ॥ सञ्जय उवाच । ततस्तव सुतो राजन् वर्म जग्राह काञ्चनम् । विचित्रं च शिरस्त्राणं जाम्बूनदपरिष्कृतम् ॥ ६२ ॥ सोऽवबद्धशिरस्त्राणः शुभकाञ्चनवर्मभृत् । रराज राजन् पुत्रस्ते काञ्चनः शैलराडिव ॥ ६३ सन्नद्धः स गदी राजन् सज्जः संग्राममूर्धनि । अब्रवीत् पाण्डवान् सर्वान् पुत्रो दुर्योधनस्तव ॥ ६४ ॥ भ्रातॄणां भवतामेको युध्यतां गदया मया । सहदेवेन वा योत्स्ये भीमेन नकुलेन वा । ६५ ॥ अथवा फाल्गुनेनाद्य त्वया वा भरतर्षभ । योत्स्येऽहं संगरं प्राप्य विजेष्ये च रणाजिरे ॥ ६६ ॥ अहमद्य गमिष्यामि वैरस्यान्तं सुदुर्गमम् । गदया पुरुषव्याघ्र हेमपट्टनिबद्धया ॥ ६७ ॥ गदायुद्धे न मे कश्चित् सदृशोऽस्तीति चिन्तये । गदया वो हनिष्यामि सर्वानेव समा

और शिरके बालोंको बांधो हे भरतवंशी जो दूसरी और कोई वस्तु तेरे पास न होवे उसको भी लो । ५९ । और हे वीर फिर मैं तेरे इस एकमनोरथको देताहूं कि पांचों पांडवों में से जिसकेसाथ तुम लड़ना चाहतेहो ।६०। निश्चय उसको मार कर आप राजाहोगे अथवा मरकर स्वर्गको जाओगे हे वीर युद्धमें जीवन के सिवाय तेरी कौनसी प्रियकारीको करें ।६१। सञ्जयबोले हे राजा इसकेपीछे आप के पुत्रने सुनहरीकवच और जांबूनद सुवर्ण से जटित शिरस्त्राणको लिया । ६२ । तब वह आपकापुत्र शिरस्त्राणको बांधने वाला उज्ज्वल स्वर्णमयी कवच धारण करनेवाला सुवर्ण के पर्वतके समान शोभायमानहुआ । ६३ । हे राजा कवचधारी महा अलंकृत गदाधारी आपकापुत्र दुर्योधन युद्धके मुखपर खड़ा होकर सब पांडवोंसे बोला ।६४। कि आप सब भाइयों में से एकभाई गदालेकर मेरेसाथ युद्ध करे सहदेव भीमसेन अथवा नकुलके साथ युद्धकरूंगा । ६५ । हे भरतर्षभ अथवा अब मैं युद्धको पाकर अर्जुनके साथ वा तेरेसाथ लडूंगा और रणभूमि में तुमको विजय करूंगा ।६६। हे पुरुषोत्तम अब मैं स्वर्णवस्त्रों से मढ़ीहुई गदाकेद्वारा बड़े दुःखसे मिलनेके योग्य शत्रुताके अन्तको पाऊंगा । ६७ । गदायुद्ध में मेरे समान कोई नहीं है यही अपने चित्तमें विचारताहूं सम्मुख आनेवाले तुम सबकोगदा

can slay one of the Pandavas or shall go to heaven after being slain. What can I do more for you ?" 61. Sanjaya said, ' Then your son, O king, put on golden armour and head-protector adorned with gold, and looked glorious like a mountain of gold. Then standing ready to fight, your son said to the Pandavas, " Let one of your [illegible] there come to fight with me with a mace I shall fight with you or Arjun and hope to win you I shall make an end to the enmity by means of my mace I have no equal in fighting with the mace and shall slay any one of you coming before me. You are not justified to fight

गतान् ॥ ६८ ॥ न म समर्था सर्वे वै योद्धुन्यायन केचन । न युक्तमात्मना वक्तुमेव गर्वोद्धत मच । अथ वा सफल ह्येतत् करिष्ये भवता पुरः ॥ ६९ ॥ अस्मिन् मुहूर्ते सत्य वा मिथ्या वैतद्भविष्यति । गृह्णातु च गदां यो वै योत्स्यतेद्य मया सह ॥७० ॥

इति शल्यपर्वणि गदायुद्धपर्वणि युधिष्ठिर दुर्योधन संवादे द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

सञ्जय उवाच । एवं दुर्योधने राजन् गर्जमाने मुहुर्मुहुः । युधिष्ठिरस्य संक्रुद्धो वासुदेवोऽब्रवीदिदम् ॥ १ ॥ यदि नाम ह्ययं युद्धे वरयेत्त्वां युधिष्ठिर । अर्जुनं नकुलं चैव सहदेवमथापि वा । २ ॥ किमिदं साहसं राजंस्त्वया व्याहृतमीदृशम् । ए. मेव मिह त्वाजौ भव राजा कुरुष्विति । ३ ॥ एतेन हि कृता योग्या वर्षाणीह त्रयोदश । आयस

सेही मारूंगा । ६८ । तुमसब न्यायसे मेरेसाथ लडनेको समर्थ नहीं हो इसप्रकार अहंकारसे प्रेरितवचन अपनी ओरसे कहने के योग्य नहीं हूं । ६९ । अथवा आप लोगोंके आगे इस वचनको सफल करूंगा इस मुहूर्त में यह बात सत्यहोय वा असत्यहोय तुममें से वह मनुष्य गदाको हाथमें ले जो कि अब मेरे साथ में लडना चाहता है ७० ॥

अध्याय ३३ ॥

सञ्जय बोले कि हे राजा इसप्रकार वारंवार दुर्योधनके गर्जनेपर युधिष्ठिरके ऊपर क्रोधित होकर वासुदेवजी यह वचन बोले ॥ १ । कि हे युधिष्ठिरजी वह युद्ध में तुमको अर्जुनको नकुलको सहदेवको भी बुलावे । २ । तो क्याहोगा हे राजा तुमने विनाविचारके यह ऐसावचन क्योंकहाकि रणभूमिमें एकको ही मारकर कौरवों

together with me I should not talk of my own praise. I shall prove my words in your presence So let him who wishes to fight with me come before me with his mace 70.

CHAPTER XXXIII

Sanjaya said, " When Duryodhan was thus roaring again and again, Vasudev said in anger to Yudhisthir, " What will you do if he challenges you or Arjun, Nakul and Sahadev? Why did you say that he might become king after slaying one of the Pandavas? He has practised on an iron statue for thirteen years in order to slay

पुरा राजन् भीमसेनजिघांसया । ४ ॥ कथं नाम भवेत् कार्यमस्माभिर्भरतर्षभ ।
साहसं कृतवांस्त्वन्तु ह्यनुक्रोशान्नृपोत्तम ॥ ५ ॥ नान्यमस्यानुपश्यामि प्रतियोद्धारमा
हवे । ऋते वृकोदरात् पार्थात् स च नातिकृतश्रमः ॥ ६ ॥ तदिदं द्यूतमारब्ध
पुनरेव यथा पुरा । विषमं शकुनेश्चैव तव चैव विशाम्पते ॥ ७ ॥ बली
भीमः समर्थश्च कृती राजा सुयोधनः । बलवान् वा कृती वेति कृती राजन् विशिष्यते
॥ ८ ॥ सोऽयं राजंस्त्वया शत्रुः समे पथि निवेशितः । न्यस्तश्चात्मा
सुविषमे कृच्छ्रमापादिता वयम् ॥ ९ ॥ को नु सर्वान् विनिर्जित्य शत्रूनेकेन वैरिणा ।
कृच्छ्रप्राप्तेन च तथा हारयेद्राज्यमागतम् ॥ १० ॥ नहि पश्यामि तं लोके योद्य दुर्योधनं रणे
गदाहस्तं विजेतुं वै शक्तः स्यादमरोऽपि हि ॥ ११ ॥ स कथं वदसे शत्रुं युध्यस्व गदयेति

में राजा होय । ३ । यहां इसने तेरह वर्षतक भीमसेनके मारनेकी इच्छासे लोहेकी मूर्तिपर कृत्यासिद्धकरीहै । ४ । हे भरतर्षभ हमलोगोंकी ओरसे अब कैसे कार्यहो सक्ताहै हे राजेंद्र तुमने दयाकरके विनाविचारे यह कर्मकिया । ५ । मैं युद्धमें उसके सम्मुख लड़नेवाला राजाओंमें से किसी राजाको भी नहीं देखता हूं सिवाय पांडव भीमसेन के कि वहभी अत्यन्त अभ्यास करनेवाला नहीं है । ६ । यह द्यूत फिरभी आपने प्रारम्भकिया जैसा कि पूर्वमें कियाथा हे राजा शकुनिकी और तेरी विषमता है । ७ । भीमसेन बलवान् और समर्थ है राजा दुर्योधन कर्म कर्त्ता है बलवान् और कर्मकर्त्ता अधिक है । ८ । हे राजा इस शत्रुको तुमने सत्य मार्ग में प्रवृत्त किया और अपने को बड़ी आपत्ति में डालकर हम को भी दुःख में संयुक्त किया । ९ । कौन मनुष्य सब शत्रुओंको विजय करके दुःखमें पड़ेहुये अकेले शत्रुकेसाथ मारनेवाले राज्यको हारताहै । १० । मैं लोकमें अब उसपुरुष को नहीं देखताहूं जोकि युद्धमें गदाहाथमें रखनेवाले दुर्योधनके विजय करने को समर्थहो । ११ । भरतवंशी सो तुम किसप्रकार शत्रु से कहते हो कि और हमारे मध्य मेंसे एकको मारकर राजाहो । १२ भीमसेनको पाकर न्यायसे युद्ध करनेवाले हम

Bhim. You have made a mistake in making this promise so rashly. 5. I see no king capable of fighting with him with the exception of Bhim, who is out of practice. You are again gambling like before You are like Shakuni a gambler. Bhimsen is strong and powerful, while Duryodhan is a practical man and therefore the better of the two. You have given advantage to the enemy and thrown yourself and us into difficulty. Who else will give away his kingdom to a helpless enemy after having conquered all his foes? 10. I see none that may be able to slay Duryodhan while he is armed with mace. Why do you urge the enemy to fight with mace and to become king after slaying one of us. It is doubtful for even Bhim to [illegible] Duryodhan. You have said that he may become king after slaying

हि । एकश्च नो निहत्याजौ भव राजेति भारत ॥ १३ ॥ वृकोदरं समासाद्य संशयो विजये हि नः । न्यायतो युद्धमानानां कृती ह्येष महाबलः ॥ १४ ॥ एवं चास्मानिदं वाक्यं भव राजेति वै पुनः । नूनं न राज्यभागेषा पाण्डोः कुन्त्याश्च सन्ततिः । अत्यन्त वनवासाय सृष्टा भैक्षाय वा पुनः ॥ १५ ॥ भीमसेन उवाच । मधुसूदन मा कार्षीर्वि षाद यदुनन्दन । अद्य पारं गमिष्यामि वैरस्य भृशदुर्गमम् ॥ १६ ॥ अहं सुयोधनं संख्ये हनिष्यामि न संशयः । विजयो वै ध्रुवः कृष्ण धर्मराजस्य दृश्यते ॥ १७ ॥ अध्यर्द्धेन गुणेनेयं गदा गुरुतरी मम । न तथा धार्तराष्ट्रस्य मा कार्षीर्माधव व्यथाम् ॥ १८ ॥ अहमेनं हि गदया संयुगे योद्धुमुत्सहे । भवन्तः प्रेक्षकाः सर्वे मम सन्तु जनार्दन ॥ १९ ॥ सामरानपि लोकांस्त्रीन्नानाशस्त्रधरान् युधि । योधयेयं रणे कृष्ण, किमु ताद्य सुयोधनम् ॥ २० ॥ सञ्जय उवाच । तथा सम्भाषमाणन्तु वासुदेवो वृकोदरम् ।

लोगों की विजय में सन्देह है क्योंकि यह बड़ा बलवान दुर्योधन कर्मकर्ता है ।१४। फिर तुमने यह भी कहा है कि हममें से एक को मारकर राजा होमें निश्चय करके पाण्डु और कुन्तीकी सन्तान राज्य भोगनेवाली नहीं है केवल बड़े वनवास और वारम्वार भिक्षा मांगने के अर्थ उत्पन्न करीगई । १५ । भीमसेन बोले हे मधुदैत्यके मारनेवाले यदुनन्दन जी व्याकुलता मतकरो अब उसी कठिन और दुष्प्राप्य शत्रुताके अन्तको पाऊंगा । १६ । अब मैं युद्ध में दुर्योधन को मारूंगा इस में कुछ सन्देह नहीं है हे श्रीकृष्ण जी धर्मराजकी पूर्ण और अवश्य विजय दिखाई देती है । १७ । यह मेरी गदा अर्द्ध भागमें बहुत भारी है ऐसी दुर्योधन की नहीं है हे माधवजी पीड़ामतकरो । १८ । मैं युद्धमें गदासे इसके साथ लड़नेको उत्साह करताहूं हे जनार्दनजी आप सब लोग मेरे युद्धके देखनेवाले रहो । १९ । हे श्रीकृष्ण जी मैं युद्धमें नानाप्रकार के शस्त्रधारी देवताओं समेत तीनों लोकोंसे भी युद्ध करसक्ताहूं तो अब दुर्योधनसे क्योंनहीं करूंगा।२०।फिरप्रसन्नचित्त वासुदेव

one of us. Surely Kunti's sons are not born to rule. They are made to live in exile and to beg their food." Bhim said, "Slayer of Mathu! Yadu Nandan, be not confused. I shall make an end of the enmity. 16. I shall slay Duryodhan in battle without doubt and Yudhishthir's victory is secure. My mace is very heavy in the middle. Duryodhan has no such mace. Be not anxious, Madhav I dare fight with Duryodhan; you must all witness our fight. I can fight against the three worlds including gods, why should I not be able to overcome Duryodhan. " 20. At this Sri Kishn praised Bhim and said, you will no doubt slay Yudhishthir's enemy and will

हृष्टमपूजयामास वचनं चेदमब्रवीत् ॥२१॥ त्वामाश्रित्य महाबाहो धर्मराजो युधिष्ठिरः। निहतारिः स्वकां दीप्तां श्रियं प्राप्तो न संशयः ॥२२॥ त्वया विनिहताः सर्वे धृतराष्ट्रसुता रणे। राजानो राजपुत्राश्च नागाश्च विनिपातिताः ॥२३॥ कलिङ्गा मागधाः प्राच्या गान्धाराः कुरवस्तथा। त्वामासाद्य महायुद्धे निहताः पाण्डुनन्दन ॥२४॥ हत्वा दुर्योधनं चापि प्रयच्छोर्वीं ससागराम्। धर्मराजाय कौन्तेय यथा विष्णुः शचीपतेः ॥२५॥ त्वां च प्राप्य रणे पापो धार्तराष्ट्रो विनङ्क्ष्यति। त्वमस्य सक्थिनी भङ्क्त्वा प्रतिज्ञां पालयिष्यसि ॥२६॥ यत्नेन तु सदा पार्थ योद्धव्यो धृतराष्ट्रजः। कृती च बलवांश्चैव युद्धशौण्डश्च नित्यदा ॥२७॥ ततस्तु सात्यकी राजन् पूजयामास पाण्डवम् ॥२८॥ पाञ्चालाः पाण्डवेयाश्च धर्मराजपुरोगमाः। तद्वचो भीमसेनस्य सर्वे एवाभ्यपूजयन् ॥२९॥ ततो भीमबलो भीमो युधिष्ठिरमथाब्रवीत्। सृञ्जयैः सह तिष्ठन्तं तपन्तमिव भास्करम् ॥३०॥ अहमेतेन सङ्गम्य संयुगे योद्धुमुत्सहे। न हि शक्तो रणे जेतुं मामेष

जी ने चमत्कार वार्ता करनेवाले भीमसेनकी प्रशंसा करी और यह वचन बोले ।२१। हे महाबाहु यह धर्मराज युधिष्ठिर तुम्हारे आश्रित होकर निस्संदेह शत्रुओंके मारनेवाला और अपनी प्रकाशमान लक्ष्मीको प्राप्त हैं ।२२। युद्धमें धृतराष्ट्र के सब पुत्र तेरेही हाथसे मारेगये राजा राजकुमार और हाथीभी गिरायेगये ।२३। हे पाण्डुनन्दन कलिंग मगधपूर्वीय और गान्धारदेशियों समेत कौरवलोग तुझको बड़े युद्धमें पाकर मारेगये ।२४। हे कुन्ती के पुत्र अब तू दुर्योधन को भी मारकर इस सागराम्बरा पृथ्वीको धर्मराज के अर्पण करोगे जैसे कि विष्णुने इन्द्रको सुपुर्द करीथी ।२५। पापी दुर्योधन युद्धमें तुमको पाकर नाशको पावेगा तुम इसकी जंघ को तोड़कर अपनी प्रतिज्ञा का पालन करोगे ।२६। हे भीमसेन यह दुर्योधन सदैव उपाय पूर्वक लड़नेके योग्यहै यह सदैव कर्ममें कर्त्ता बलवान और युद्धमें कुशलहै ।२७। हे राजा इसके पीछे सात्यकी पांचाल और धर्मराज समेत सब पाण्डवों ने उस भीमसेन की प्रशंसाकरी अर्थात सबनेही भीमसेनके उस वचनकी प्रशंसाकरी ।२९। उसके पीछे भयानक पराक्रमी भीमसेन उस सृंजियों समेत नियत सूर्यके समान संतप्त करनेवाले युधिष्ठिर से बोले ।३०। कि मैं युद्ध में

give him his kingdom. The sons of Dhritrashtra were slain by you along with other princes and elephants. Kalingas, Magadhas and Gandhars, with the Kauravas, were slain by you. Having slain Durydhan, you will give the sea girt land to Yudhishthir as Vishnu had done with Indra. (25) Sinful Duryodhan will meet his death in battle and you will fulfil your promise by breaking his thigh. Duryodhan should be fought with carefully, Bhim, for he is powerful and clever in fighting. Then Satyaki with the Panchals and Yudhishthir with the Pandavas praised Bhim. All the people praised him. Then Bhim of dreadful prowess said to Yudhishthir who was glorious

पुरुषाधमः ॥ ३१ ॥ अद्य क्रोधं विमोक्ष्यामि निहितं हृदये भृशम् । सुयोधने धार्तराष्ट्रे खाण्डवेऽग्निमिवार्जुनः ॥ ३२ ॥ शल्यमद्योद्धरिष्यामि तव पाण्डव हृच्छयम् । निहत्य गदया पापमद्य राजन् सुखी भव ॥ ३३ ॥ अद्य कीर्तिमयीं मालां प्रतिमोक्ष्ये तवानघ । प्राणान् श्रियञ्च राज्यञ्च मोक्ष्यतेऽद्य सुयोधनः ॥३४॥ राजा च धृतराष्ट्रोऽद्य श्रुत्वा पुत्रं मया हतम् । स्मरिष्यत्यशुभं कर्म यत्तच्छकुनिबुद्धिजम् ॥ ३५॥ इत्युक्त्वा भरतश्रेष्ठो गदामुद्यम्य वीर्यवान् । उदतिष्ठत युद्धाय शक्रो वृत्रमिवाह्वयन् ॥ ३६ ॥ तदाह्वानममृष्यन् वै तव पुत्रोऽतिवीर्यवान् । प्रत्युपस्थित एवाशु मत्तो मत्तमिव द्विपम् ॥३७॥ गदाहस्तं तव सुतं युद्धाय समुपस्थितम् । ददृशुः पाण्डवाः सर्वे कैलासमिव शृङ्गिणम् ॥ ३८ ॥ तमेकाकिनमासाद्य धार्तराष्ट्रं महाबलम् । वियूथमिव मातंगं समहृष्यन्त पाण्डवाः ॥ ३९ ॥ न सम्भ्रमो न च भयं न च ग्लानिर्न च व्यथा । आसीद्दुर्योधन

इसके सम्मुखहोकर लड़ने को उत्साह करताहूं यह नीच पुरुष युद्धमें मेरे विजय करने को समर्थ नहींहै । ३१ । अब मै हृदय में रक्खेहुये कठिन क्रोधको धृतराष्ट्रके पुत्र दुर्योधन पर ऐसे छोड़ूंगा जैसे कि खाण्डववन में अर्जुनने छोड़ाथा । ३२ । हे पाण्डव अब मैं गदासे पापीको मारकर आपके हृदय में रहनेवाले भल्लको उखाड़ूंगा हे राजा अब प्रसन्न होजाओ । ३३ । हे निष्पाप अब मैं कीर्तिरूपी मालाको आपके कंठमें डालूंगा अब यह सुयोधन राज्यलक्ष्मी समेत अपने प्राणोंको त्यागेगा । ३४ । और राजा धृतराष्ट्र मेरे हाथसे मारेहुये पुत्रको सुनकर उस दुष्ट कर्मको स्मरण करेगा जो कि शकुनी की बुद्धिसे उत्पन्नहुआ । ३५ । हे श्रेष्ठ भरतर्षभ यह कहकर भीमसेन गदाको उठाकर खड़ाहुआ और युद्धके निमित्त उसको ऐसे बुलाया जैसे कि इन्द्रने वृत्रासुरको बुलायाथा । ३६ । आपका बड़ा पराक्रमी पुत्र उसके बुलानेको न सहता हुआ शीघ्रता से ऐसे सम्मुखहुआ जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथीके सम्मुख जाताहै । ३७ । सबपाण्डवों ने गदा हाथ में रखनेवाले और सम्मुखनियत आपके पुत्रको शिखर रखनेवाले कैलासके

like the Sun, " I dare fight against him, for he cannot conquer me 31; I shall discharge my anger at Duryodhan as Arjun had done in the Khandav forest. Having slain that sinner with my mace, I shall remove the dart from your breast Be cheerful, king I shall wear the garland of fame round my neck. Duryodhan will give up his wealth and kingdom along with his life and Dhritrashtra will remember the cruel deeds done by the advice of Shakuni when he hears of his son's death at my hands. " Having said this, Bhim stood up with his mace and challenged him to fight as Indra had done Vritrasur 36 Not bearing the challenge of Bhim, your son faced him as one mad elephant faces another The Pandavas looked on him as on a peak of Kailas The Pandavas were much pleased to see Duryodhan

स्यापि स्थित सिंह इवाहवे ॥ ४० ॥ तमुद्यतगदं दृष्ट्वा कैलासमिव शृंगिणम् । भीम सेनस्तदा राजन् दुर्य्योधनमथाब्रवीत् ॥ ४१ ॥ राज्ञापि धृतराष्ट्रेण त्वया चास्मासु यत् कृतम् । स्मर तद्दुष्कृतं कर्म यद्वृत्तं वारणावते ॥ ४२ ॥ द्रौपदी च परिक्लिष्टा सभा मध्ये रजस्वला । द्यूते यद्विजितो राजा शकुनेर्बुद्धिनिश्चयात् ॥ ४३ ॥ यानि चान्यानि दुष्टात्मन् पापानि कृतवानसि । अनागःसु च पार्थेषु तस्य पश्य महत् फलम् ॥ ४४ ॥ त्वत्कृते निहतः शेते शरतल्पे महायशाः गांगेयो भरतश्रेष्ठः सर्वेषां नः पितामहः ॥ ४५ ॥ हतो द्रोणश्च कर्णश्च हतः शल्यः प्रतापवान् । वैरस्य चादिकर्त्तासौ शकुनिर्निहतो युधि ॥ ४६ ॥ भ्रातरस्ते हताः शूराः पुत्राश्च सहसैनिकाः । राजानश्च हताः शूराः समरे ष्वनिवर्त्तिनः ॥ ४७ ॥ एते चान्ये च निहता बहवः क्षत्रियर्षभाः । प्रातिकामी तथा पापो द्रौपद्याः क्लेशकृद्धतः ॥ ४८ ॥ अवशिष्टस्त्वमेवैकः कुलघ्नोऽधमपूरुषः । त्वामप्यद्य

समानदेखा । ३८ । अपने यूथसे जुदा हाथीके समान अकेले खड़े बलवान् दुर्योधनको पाकर सबपाण्डव अत्यन्तप्रसन्नहुये ३९ । दुर्योधनको व्याकुलतामय ग्लानि और पीड़ा नहींहुई और युद्धमें सिंहकेसमान नियतहुआ । ४० । हे राजा तब भीमसेनने उसगदा उठानेवाले शिखरधारी कैलासके समान दुर्योधनको देखकर यहवचनकहा । ४१ । कि राजाधृतराष्ट्र और तुमने जो हमारे साथकिया व जो वारणावतनगर में किया उसपापकर्म को स्मरणकरो । ४२ । और जो रजस्वला द्रौपदीको सभामें दुःखी किया और जो शकुनिकी बुद्धिके निश्चयसे राजायुधिष्ठिर को द्यूतमें छलसे विजयकिया, और हे दुर्बुद्धी इनके सिवाय जो २ तुमने अन्य पापोंको निरपराधी पाण्डवों के साथकियाहै उसके बड़ेफलको देख।४४। तेरेकारणसे मृतक बड़ेयशवान् गांगेय हमसबके पितामह भरतर्षभ भीष्मजी शरशय्यापर सोते हैं । ४५ । प्रतापवान् शल्य कर्ण और द्रोणाचार्यजी मारेगये, और शत्रुताका आदि कारण यह शकुनि भी युद्धमें मारागया ।४६। और सेनाके लोगों समेत तेरे शूरभाई पुत्रादिक भी मारेगये और युद्धमें परांमुख न होनेवाले शूरवीर राजालोग मारे गये । ४७ । इनकेसिवाय अन्य२ हजारों उत्तमक्षत्रिय मारेगये उसप्रकार द्रौपदी केदुःख का उत्पन्न करनेवाला पापी प्रातिकामी मारागया । ४८ । कुलका नाशकरने

---

standing like an elephant separaetd from its companions Duryodhan was neither afiad nor troubled 40 Then Bhim seeing that mace bearer stand like a hill, said, " Remember what Dhritrashtra and you did to us at Barnavat. Remember the wrongs done to Draupadi and your wrongful deprivation of our kingdom by the help of Shakuni and other wrongs done to the Pandavas; for you will reap the reward of those acts to day. Bhishm the grandfather of great prowess sleeps on the bed of arrows on account of you 45. Glorious Shalya, Karan and Dronacharya, are slain as well as Shakuni the root of all enmity.

हनिष्यामि गदया नात्र संशयः ॥ ४९ ॥ अद्य तेऽहं रणे दर्पं सर्वं नाशयिता नृप। राज्याशा विपुला राजन् पाण्डवेषु च दुष्कृतम् ॥ ५० ॥ दुर्योधन उवाच। किं कथितेन बहुना युध्यस्वाद्य मया सह। अद्य तेऽहं विनेष्यामि युद्धश्रद्धां वृकोदर ॥ ५१ ॥ किं न पश्यसि मां पाप गदायुद्धे व्यवस्थितम्। हिमवच्छिखराकारां प्रगृह्य महतीं गदाम् ॥ ५२ ॥ गदिनं कोऽद्य मां पाप जेतुमुत्सहते रिपुः। न्यायतो युध्यमानस्य देवेष्वपि पुरन्दरः ॥ ५३ ॥ मा वृथा गर्ज कौन्तेय शारदाभ्रमिवाजलम्। दर्शयस्व बलं युद्धे यावत्तत्ते विद्यते ॥ ५४ ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा पाण्डवाः सहसृञ्जयाः। सर्वे सम्पूजयामासुस्तद्वचो विजिगीषवः ॥ ५५ ॥ तं मत्तमिव मातङ्गं तलशब्दैर्नरा नृप। भूयः सहर्षयामासुः

वाला नीचपुरुष अकेला तूही शेष रहगयाहै अब तुझको गदासे निस्सन्देह मारूंगा। ४९। हेराजा अब मैं युद्धमें तेरे सबअहंकार का नाशकरूंगा और। विजयकी बड़ी आशासमेत पांडवोंके साथ तेरे दुष्टकर्मको भी दूरकरूंगा। ५०। दुर्योधन ने कहा हे भीमसेन अधिक वार्त्तालाप करनेसे क्या लाभ है अबतू मेरेसाथ युद्ध कर मैं तेरे युद्धकरने के उत्साह को दूरकरूंगा। ५१। हे पापी हिमाचल के शिखर के समान बड़ी गदाको लेकर गदायुद्ध में नियत होनेवाले मुझको क्या नहीं देखता है। ५२। हेदुष्टात्मा अब कौन शत्रु अथवा देवताओंमें इन्द्रभी न्याय से युद्धकरनेवाले मुझ गदाधारी के मारने का उत्साह करता है। ५३। हे कुन्तीके बेटे जलसे खाली शरदृऋतु के बादल के समान निरर्थक क्यों गर्जता है युद्धमें अपने बलको दिखला जहांतक तुझसे पराक्रम होसके उससबको दिखलाव। ५४। विजयाभिलाषी सब पांडवों ने सृंजियों समेत उसके उसवचनको सुनकर उसवचनकी प्रशंसा करी। ५५। हेराजा मनुष्यों ने उस हाथी के समान मदवाले राजा दुर्योधनको प्रसन्न।

Your brother and sons are slain with your army and unflinching warriors by thousands like Pratikami who was the source of so much trouble to Draupadi. You alone, the curse of the family, remain and I shall surely slay you with my mace. I shall crush your pride and hope of victory as well as your misdeeds done to the Pandavas. 50. Duryodhan said, " What is the use of talking so much; fight with me and I shall remove your desire for fight. Do you not see me standing with my mace like a peak of the Himalayas ? What enemy, including Indra himself, can fight with me ? Why do you roar like a waterless cloud of Winter. Show your prowess as far as you can " The Pandavas and Srinjayas desirous of victory praised his words and pleased Prince Duryodhan with the sounds of their bowstring. The

राजन् दुर्योधने नृपम् ॥ ५६ । बृहंहित कुञ्जरास्तत्र हया हेषन्ति चासकृत् । शस्त्राणि सम्रदीप्यन्ते पाण्डवानां जयैषिणाम् ॥ ५७ ॥

इति शल्यपर्वणि गदायुद्धपर्वणि भीमदुर्योधनवाक्ये त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

सञ्जयउवाच । तस्मिन् युद्धे महाराज सुसम्वृत्ते सुदारुणे । उपविष्टेषु सर्वेषु पाण्डवेषुमहात्मसु॥१॥ततस्तालध्वजो रामस्तयोर्युद्ध उपस्थिते।श्रुत्वातच्छिष्ययो राजन्नाजगाम हलायुधः।२ तदृष्ट्वा परमप्रीता पाण्डवाः सहकेशवाः ।उपगम्य उपसंगृह्य विधिवत् प्रत्यपूजयन् ॥३॥ पूजयित्वा तत पश्चादिदं वचनमब्रुवन्। शिष्ययो कौशलं युद्धे

के शब्दों से फिर गर्जना किया । ५६ । वहां हाथी चिग्घाडे घोडे बारम्बार हींसे और विजय के इच्छावान पांडवों के शस्त्रप्रकाशितहुये ५७ ॥

—※—

अध्याय ३४

संजय बोले हे महाराज उस बडे भयकारी युद्धके वर्तमान होने और सब महात्मा पाण्डवोंके बैठजाने । १ और उनदोनों शिष्यों के युद्ध नियत होनेपर ताल ध्वजाधारी हलधर बल्देवजी भी उसयुद्धको सुनकर आपहुंचे । २ । उनको देखकर केशवजी समेत सब पाण्डव लोग अत्यन्त प्रसन्न हुये उनके समीपजाकर बडे आदर मानसमेत लाकर विधिपूर्वक पूजन किया । ३ । हे राजा पूजन करनेके पीछे सबलोग यहवचन बोले कि हेबल्देवजी युद्धमें दोनों शिष्योंकी सावधानीको

elephants grunted the horses neighed and the weapons of the Pandavas shone bright " 57

—※—

CHAPTER XXXIV

Sanjaya said, " When the battle was raging fiercely the Pandavas sat down and the two warriors stood ready to fight Hearing of that battle *Baldev* the bearer of Palm standard came there The Pandavas with Keshav were much pleased to see him and welcomed him with great respect and said ' See the fight of your two disciples Baladev Looking at the Pandavas Sh[illegible] and

जनमेजय उवाच । पूर्वमेव यदा रामस्तस्मिन् युद्ध उपस्थिते । आमन्त्र्य केशवं यातो वृष्णिभिः सहितः प्रभुः ॥ १ ॥ साहाय्यं धार्त्तराष्ट्रस्य न च कर्तास्मि केशव । न चैव पाण्डुपुत्राणां गमिष्यामि यथागतम् ॥ २ ॥ एवमुक्त्वा तदा रामो यातः शत्रुनिबर्हणः । तस्य चागमनं भूयो ब्रह्मन् शंसितुमर्हसि ॥ ३ ॥ आख्याहि मे विस्तरतः कथं राम उपस्थितः । कथञ्च दृष्टवान् युद्धं कुशलो ह्यसि मे मतः ॥ ४ ॥ वैशम्पायन उवाच । उपप्लव्यनिविष्टेषु पाण्डवेषु महात्मसु । प्रेषितो धृतराष्ट्रस्य समीपं मधुसूदनः । शमं प्रति महाबाहो हितार्थं सर्वदेहिनाम् ॥ ५ ॥ स गत्वा हास्तिनपुरं धृतराष्ट्रं समेत्य च । उक्तवान् वचनं तथ्यं हितञ्चैव विशेषतः ॥ ६ ॥ न च तत् कृतवान् राजा यथाख्यातं हि तत् पुरा । ७ ॥ अनवाप्य शमं तत्र कृष्णः पुरुषसत्तमः । आगच्छत महाबाहुरुपप्लव्यं जनाधिप ॥ ८ ॥ ततः प्रत्यागतः कृष्णो धार्त्तराष्ट्रविसर्जितः । अक्रियायां

अध्याय ३५ ॥

संजय ने कहे कि हे महाराज उस युद्धके वर्तमान होनेपर जब प्रभु बलदेवजी केशवजीसे पूछकर यादवोंके साथ यह कह कर गये । १ । कि हे केशवजी मैं पाण्डवों की और दुर्योधन की सहायता नहीं करूंगा जैसे आयाहूं वैसेही चलाजाऊंगा । २ । तब शत्रुओंके मारनेवाले बलदेवजी ऐसा कहकर चलेगये फिर जनमेजय ने कहा कि हे ब्रह्मन् आप फिर उनके आगमनके वृत्तान्त को मूल समेत वर्णन करने को योग्यहो कैसे सम्मुख वर्त्तमान हुये और कैसे युद्धको देखा हे ब्रह्मन् आप वर्णन करनेमें समर्थहो । ४ । वैशंपायन बोले कि उपप्लव्य स्थानपर महात्मा पाण्डवों के निवास करने पर सब शरीरधारियों के आनन्द के अर्थ सन्धिके निमित्त मधुसूदनजी धृतराष्ट्र के सम्मुख भेजगये हे महाराज श्रीकृष्णजी ने हस्तिनापुर में पहुंच धृतराष्ट्र से मिलकर सत्य २ सबकी वृद्धि करने वाला वचन कहा । ६ । परन्तु बहुतमा कहनेपर धृतराष्ट्रने उसको नहीं किया । ७ । तब यहां पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी सन्धिको न पाकर उपप्लव्य स्थानको आये । ८ । मधुसूदनजी दुर्योधन से बिदाहोकर उपप्लव्य स्थानपर आकर सन्धिके न होनेसे पाण्डवों में यह वचन बोले । १० । हे कालसे मोहितहोकर कौरवलोग मेरे वचनको नहीं करते हैं

CHAPTER XXXV

Sanjaya said,— Janmejaya asked of Vaishampayan the reason of Baldeva's coming back for he had gone away in the beginning of the war and said that he would neither help the Kauravas nor the Pandavas. To Janmejaya's question Vaishampayan made the following reply:—From Upaplavya where the Pandavas were staying, Shri Krishna was sent to Hastinapur to negotiate peace with Dhritarashtra. Shree Krishna met Dhritarashtra but the latter gave no ear to him and the former came back to Upaplavya and said to the Pandavas, ' The

कौरवान् पाण्डवानिदमब्रवीत् ॥ ९ ॥ न कुर्वन्ति वचो मह्यं कुरवः कालचोदिताः ।
निर्गच्छध्वं पाण्डवेयाः पुष्येण सहिता मया ॥ १० ॥ [illegible]
ततः । [illegible] भ्रातरं कृष्णं रौहिणेयो महामनाः [illegible] सर्वं
मधुसूदन । क्रियतामिति तत् कृष्णो नास्य चक्रे वचस्तदा ॥ १२ ॥ ततो मन्युपरीतात्मा
जगाम यदुनन्दनः । तीर्थयात्रां हलधरः सरस्वत्यां महायशाः ॥ १३ ॥ मैत्रनक्षत्रयोगेन
सहितः सर्वयादवैः । आश्रयं भोजस्तु दुर्योधनमरिन्दमम् । युयुधानेन सहितो
वासुदेवस्तु पाण्डवान् ॥ १४ ॥ रौहिणेये गते शूरे पुष्येण मधुसूदनः । पाण्डवेयान्
पुरस्कृत्य ययावभिमुखः कुरून् ॥ १५ ॥ गच्छन्नेव पथिस्थस्तु रामः प्रेष्यानुवाच ह ।
सम्भारांस्तीर्थयात्रायां सर्वोपकरणानि च । आनयध्वं द्वारकायाः अग्नीन् वै याजकां
स्तथा ॥ १६ ॥ सुवर्णं रजतं चैव धेनुर्वासांसि वाजिनः । कुञ्जरांश्च रथांश्चैव खरोष्ट्र
वाहनानि च ॥ १७ ॥ क्षिप्रमानीयतां सर्वं तीर्थहेतोः परिच्छदम् । प्रतिस्रोतः सरस्वत्याः

हे कौरवो तुम मेरे साथ पुष्यनक्षत्रमें यात्रा करो ॥ १० ॥ उसके पीछे सेनाओं के विभक्त होनेपर बलवानों में श्रेष्ठ बड़े साहसी बलदेवजी अपने भाई श्रीकृष्णजीसे बोले ॥ ११ ॥ हे महाबाहु मधुसूदनजी उन्होंकी भी सहायताकरो परन्तु श्रीकृष्णजी ने उनके उस वचनको नहीं किया ॥ १२ ॥ इसके पीछे क्रोधसे पूर्ण चित्त बड़े यशवान् यदुनन्दन बलदेवजी सरस्वती तीर्थकी यात्राकरगये ॥ १३ ॥ अर्थात् अनुराधानक्षत्र के आरम्भमें यादवोंसमेत चलगये फिर शत्रु विजयी कृतवर्मा दुर्योधनसे आकर मिला और सात्यकी समेत वासुदेवजी पांडवों में संयुक्तहुये ॥ १४ ॥ शूर बलदेवजी के जानेपर मधुसूदनजी पुष्य नक्षत्रमें पाण्डवों को आगे करके कौर[illegible] केसम्मुख गये ॥ १५ ॥ फिर चलतेहुये मार्गमें स्थित बलदेवजी ने सेवकों को आज्ञा करीकि तीर्थयात्रा में सब सामान और यज्ञादिकों को लाओ और द्वारकासे अग्नियों सबत यज्ञकरानेवालों को भी लाओ ॥ १६ ॥ सोना चांदी गौ वस्त्र हाथी रथ खच्चर ऊंट आदि सवारियां ॥ १७ ॥ और सबप्रकार के सामान को तीर्थयात्राके

Kauravas urged by Fate donot hear me. You should advance with me in Paushya nakshtra. 10. Then when the armies were being formed into parties, Baldev spoke to Sri Krishn and asked him to help both sides, [illegible]
was enraged at this and [illegible]
taking the Yadavas, w[illegible]
foes sided with Duryod[illegible]
the P[illegible] A[illegible]
Pandavas [illegible] P[illegible] B[illegible] on his
way [illegible] weapons
and [illegible] 16 [illegible] fire

पश्य रामेति पार्थिव ॥ ४ ॥ अब्रवीच्च तदा रामो दृष्ट्वा कृष्णं सपाण्डवम् । दुर्यो धनञ्च कौरव्यं गदापाणिमवस्थितम् ॥ ५ ॥ चत्वारिंशदहान्यद्य द्वे च मे निसृतस्य वै । पुष्येण संप्रयातोऽस्मि श्रवणे पुनरागतः । शिष्ययोर्वै गदायुद्धं द्रष्टुकामोऽस्मि माधव ॥ ६ ॥ ततस्तदा गदाहस्तौ दुर्य्योधनवृकोदरौ । युद्धभूमिगतौ वीरावुभावेव विरेजतुः ॥ ७ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा परिष्वज्य हलायुधम् । स्वागतं कुशलञ्चास्मै पर्यपृच्छद्यथातथम् ॥ ८ ॥ कृष्णौ चापि महेष्वासावभिवाद्य हलायुधम् । सस्वजाते परिप्रीतौ प्रीयमाणौ यशस्विनौ ॥ ९ ॥ माद्रीपुत्रौ तथा शूरौ द्रौपद्याः पञ्च चात्मजा अभिवाद्य स्थिता राजन्रौहिणेयं महाबलम् ॥ १० ॥ भीमसेनोथ बलवान् पुत्रस्तव जनाधिप । तथैव चोद्यतगदौ पूजयामासतुर्बलम् ॥ ११ ॥ स्वागतेन च ते तत्र प्रतिपूज्य नराधिपाः । पश्य युद्धं महाबाहो इति ते राममब्रुवन् । एवमूचुर्महात्मानं रौहिणेयं महा

देखो । ४ । तब बलदेवजी पाण्डवों समेत श्रीकृष्णजी को और हाथमें गदालिये सम्मुख नियत दुर्योधनको देखकर बोले । ५ । कि अब मुझ तीर्थयात्रा करनेवाले के बयालीस दिन व्यतीतहुये पुष्यनक्षत्रमें गयाहूं और पितृलोक संबन्धी श्रवण नक्षत्रमें फिरलौट आयाहूं हेमाधव निश्चय करकेमें अपने शिष्यके गदायुद्धके देखने का अभिलाषी हूं । ६ । इसके पीछे गदा हाथमें रखनेवाले रणभूमि में वर्त्तमान दोनों वीर दुर्योधन और भीमसेन अत्यन्त शोभायमान हुये । ७ । तदनन्तर राजा युधिष्ठिर ने हलधारी बलदेवजी से मिलकर बुद्धिके अनुसार स्वागतपूर्वक उनकी कुशलक्षेमको पूछा । ८ । बड़े धनुषधारी अत्यन्त प्रसन्न प्रीतिमान् श्रीकृष्ण जी और अर्ज्जुनभी नमस्कार कर के मिले । ९ । हेराजा इसीप्रकार शूर नकुल सह देव और द्रौपदी के पांचों पुत्र बड़े बलवान बलदेवजीको नमस्कार कर के नियत हुये । १० । हेराजा इसके पीछे बलवान भीमसेन और आपके पुत्र गदा उठाने वालों ने बलदेवजी का पूजन किया । ११ । वहांपर सब लोग चारोंओर से स्वागत पूर्वक प्रतिष्ठा करके बलदेवजी से बोले कि हे महाबाहु युद्धको देखो इस प्रकार से सब राजाओंने बलदेवजी से कहा । १२ । तब बड़े तेजस्वी बलदेवजीने

the warriors armed with mace, Bildev said, " I have been visiting the holy places for fo ty two days and have returned at this holy time. Surely, O Madhav, I am desirous of looking at the battle of my two disciples" Then both Duryodhan and Bhim, armed with maces, looked glorious. Yudhishter met Baldov and inquired about his health, while Arjun and S ri Krishn bowed down to him. Nakul, Sahad v and the five sons of Draupadi too, saluted brave Baladev. 10, Then brave Bhim and your son, armed with maces saluted Baladev. All men paid their respects to him and said " Look at the battle. Baldev met the *Pandav* and Srinjaya warriors and inquired about their hea th and prosperity and having exchanged greetings with

महारथाः ॥ १३ ॥ परिष्वज्य तदा रामं पाण्डवान् सृञ्जयानपि । अपृच्छत् कुशलं सर्वान् पार्थिवांश्चामितौजसः । तथैव ते समासाद्य पप्रच्छुस्तमनामयम् ॥ १४ ॥ प्रत्यभ्यर्च्य हली सर्वान् क्षत्रियांश्च महात्मनः । कृत्वा कुशलसंयुक्तां संविदं च यथावयः ॥ १५ ॥ जनार्दनं सात्यकिं च प्रेम्णा स परिषस्वजे ॥ १६ ॥ मूर्ध्नि चैतावुपाघ्राय कुशलं पर्यपृच्छत । तौ चैनं विधिवद्राजन् पूजयामासतुर्गुरुम् ॥ १७ ॥ ब्रह्माणमिव देवेशमिन्द्रोपेन्द्रौ मुदा युतौ । ततोऽब्रवीद्धर्मसुतो रौहिणेयमरिन्दमम् ॥ १८ ॥ इदं भ्रात्रोर्महायुद्धं पश्य रामेति भारत ॥ १९ ॥ तेषां मध्ये महाबाहुः श्रीमान् केशवपूर्वजः । न्यविशत् परमप्रीतः पूज्यमानो महारथैः ॥ २० ॥ स बभौ राजमध्यस्थो नीलवासाः सितप्रभः । दिवीव नक्षत्रगणैः परिकीर्णो निशाकरः ॥ २१ ॥ ततस्तयोः संनिपातस्तुमुलो लोमहर्षणः । आसीदन्तकरो राजन् वैरस्य तव पुत्रयोः ॥ २२ ॥

इति शल्यपर्वणि गदायुद्धपर्वणि बलदेवागमने चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

पाण्डव सृञ्जी आदि सब महात्मा राजाओंसे मिलकर उनकी कुशलक्षेम पूछी इस प्रकार उन सबने मिलकर बलदेवजीसे चित्त के आनन्दको पूछा । १४ । फिर बलदेवजीने सब महात्मा क्षत्रियों को नमस्कारादिक करके और अवस्था के अनुसार कुशलक्षेमके शब्दों से युक्त वार्त्तालाप कर के बड़ी प्रीतिपूर्वक श्रीकृष्ण और सात्यकिसे मिलाप किया । १६ । और उन दोनों को मस्तकपर सूंघकर कुशल मंगलको पूछा हे राजा उन दोनोंने भी उन गुरुजीका विधिपूर्वक ऐसे पूजन किया । १७ । जैसे कि प्रसन्नचित्त इन्द्र और उपेन्द्र ब्रह्माजी का पूजन करते हैं इस के पीछे धर्म के पुत्र युधिष्ठिर उन शत्रुविजयी बलदेवजी से बोले । १८ । कि हे बलदेवजी दोनों भाइयों के इस युद्धको देखो । १९ । यह सुनकर केशवजीके बड़े भाई उन महारथियों से प्रतिष्ठापूर्वक पूजित अत्यन्त प्रसन्न महाबाहु श्रीमान् बलदेवजी उन के मध्य में बैठगये । २० । नीलाम्बर गौरवर्ण बलदेवजी राजाओं के मध्य में नियत होकर ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि स्वर्ग में नक्षत्रोंके समूहों से घिराहुआ चन्द्रमा शोभित होता है । २१ । हे राजा इस के पीछे आप के उन दोनों पुत्रोंका युद्ध बड़ा कठिन और रोमहर्षण करनेवाला शत्रुताका अन्त करनेवाला हुआ।२२।

them, affectionately embraced Krshn and Satyaki. He smelled their foreheads and inquired about their health. They too, in their turn respected him like a preceptor and worshipped him as Indra and his younger brother worship Brahma. Then Yudhishthir spoke to Baldev, saying, "Look at the battle of the two cousins" At this, Baldev sat down in the midst of the Pandavas and looked glorious like the moon surrounded by stars. The battle of the two warriors was dreadful and awe inspiring" 22.

जनमेजय उवाच [illegible] आगच्छत केशवं

योगो वृष्णिभिः सहि [illegible] केशव।

नचैव पाण्डु [illegible] यातः शत्रु

निषूदनः। तस्य [illegible] विस्तरतः

कथं राम उपस्थितः। कथञ्च दृष्टवान् युद्धं कुशलो ह्यसि मे मतः॥ ४॥ वैशम्पायन

उवाच। उपप्लव्यनिविष्टेषु पाण्डवेषु महात्मसु। प्रेषितो धृतराष्ट्रस्य समीपं मधुसू

दनः। शमं प्रति महाबाहो हितार्थं सर्वदेहिनाम्॥५॥ स गत्वा हास्तिनपुरं धृतराष्ट्रं

समेत्य च। उक्तवान् वचनं तथ्यं हितञ्चैव विशेषतः॥६॥ न च तत् कृतवान् राजा

यथाख्यातं हि ते पुरा॥७॥ अनवाप्य शमं तत्र कृष्णः पुरुषसत्तमः। आगच्छत महा

बाहुरुपप्लव्यं जनाधिप॥८॥ ततः प्रत्यागतः कृष्णो धार्त्तराष्ट्रविसर्जितः। अ केशव

अध्याय ३५॥

संजय बोले कि प्रथमही उस युद्धके वर्तमान होनेपर जब प्रभु बलदेवजी केशव जीसे पूछकर वृष्णियों के साथ यह कहकर गये। १। कि हे केशवजी मैं पाण्डवों की और दुर्योधन की सहायता नहीं करूंगा जैसे आयाहूं वैसेही चलाजाऊंगा। २। तब शत्रुओंके मारनेवाले बलदेवजी ऐसा कहकर चलेगये फिर जनमेजय ने कहा कि हे ब्रह्मन् आप फिर उनके आगमनके वृत्तांत को मूल समेत वर्णन करने को योग्यहो कैसे सम्मुख वर्तमान हुये और कैसे युद्धको देखा हे ब्रह्मन् आप वर्णन करनेमें समर्थहो। ४। वैशंपायन बोले कि उपप्लव्य स्थानपर महात्मा पाण्डवों के निवास करने पर सब शरीरधारियों के आनन्द के अर्थ सन्धिके [illegible] मधुसूदनजी धृतराष्ट्र के सम्मुख भेजगये हे महाराज श्रीकृष्णजी ने हस्तिनापुर में पहुंच धृतराष्ट्र से मिलकर सत्य२ सबकी वृद्धि करने वाला वचन कहा। ६। परन्तु बहुतसा कहनेपर धृतराष्ट्रने उनको नहीं किया। ७। तब यहां पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी सन्धिको न पाकर उपप्लव्य स्थानको आये। ८। मधुसूदनजी दुर्योधन से विदाहोकर उपप्लव्य स्थानपर आकर सन्धिके न होने से पाण्डवों से यह वचन बोले। ९। कि काल से प्रेरितहोकर कौरवलोग मेरे वचनको नहीं करते हैं

CHAPTER XXXV

Sanjya said, "Janmejaya asked of Vaishampayan the [illegible] of Baldeva's coming back, for he had gone away in the beginning of the war and said that he would neither help the Kauravas nor the Pandavas." To Janmejaya's question Vaishampayan made the following reply:—From Upaplavya, where the Pandavas were staying, Shri Krishn was sent to Hastinapur to negotiate peace with Dhritarashtra. Shree Krishn met Dhritarashtra but the latter gave no ear to him and the former came back to Upaplavya and [illegible] to the Pandavas, "The

प्रस्थाय पाण्डवांश्चेदमब्रवीत् ॥ ९ ॥ न कुर्वन्ति वचो मह्यं कुरवः कालचोदिताः ।
निर्गच्छध्वं यादवा वै पुष्येण सहिता मया ॥ १० ॥ ततो विभज्यमानेषु बलेषु बलिनां
वरः । सौहार्दाद् भ्रातरं कृष्णं रौहिणेयो महामनाः ॥ ११ ॥ तेनापि महाबाहो साहाय्यं
मधुसूदन । क्रियतामिति तत् कृष्णो नास्य चक्रे वचस्तदा ॥ १२ ॥ ततो मन्युपरीतात्मा
जगाम यदुनन्दनः । तीर्थयात्रां हलधरः सरस्वत्यां महायशाः ॥ १३ ॥ मैत्रनक्षत्रयोगेन
सहितः सर्वयादवैः । आश्रयामास भोजस्तु दुर्योधनमरिन्दमम् ॥ युयुधानेन सहितो
वासुदेवस्तु पाण्डवान् ॥ १४ ॥ रौहिणेये गते शूरे पुष्येण मधुसूदनः । पाण्डवेयान्
पुरस्कृत्य ययावभिमुखः कुरून् ॥ १५ ॥ गच्छन्नेव पथिस्थस्तु रामः प्रेष्यानुवाच ह ।
सम्भारांस्तीर्थयात्रायां सर्वोपकरणानि च । आनयध्वं द्वारकाया अग्नीन् वै याजकांस्तथा
॥ १६ ॥ सुवर्णं रजतं चैव धेनुर्वासांसि वाजिनः । कुञ्जरांश्च रथांश्चैव खरोष्ट्र
वाहनानि च ॥ १७ ॥ क्षिप्रमानीयतां सर्वं तीर्थहेतोः परिच्छदम् । प्रतिस्रोतः सरस्वत्याः

हे यादवो तुम मेरे साथ पुष्यनक्षत्रमें यात्रा करो । १० । उसके पीछे सेनाओं के विभक्त होनेपर बलवानों में श्रेष्ठ बडे साहसी बलदेवजी अपने भाई श्रीकृष्णजीसे बोले । ११ । हे महाबाहु मधुसूदनजी उन्होंकी भी सहायताकरो परन्तु श्रीकृष्णजी ने उनके उस वचनको नहीं किया । १२ । इसके पीछे क्रोधसे पूर्ण चित्त बडे यशवान यदुनन्दन बलदेवजी सरस्वती तीर्थको यात्राकरगये । १३ । अर्थात् अनुराधानक्षत्र के प्रारम्भमें यादवोंसमेत चलगये फिर शत्रु विजयी कृतवर्मा दुर्योधनसे आकर मिला और सात्यकी समेत वासुदेवजी पांडवों में संयुक्तहुये । १४ । शूर बलदेवजी के जानेपर मधुसूदनजी पुष्य नक्षत्रमें पाण्डवों को आगे करके कौरवों केसम्मुख गये । १५ । फिर चलतेहुये मार्गमें नियत बलदेवजी ने सेवकों को आज्ञा करीकि तीर्थयात्रा में सब सामान और यज्ञादिकों को लाओ और द्वारकासे अग्नियों समेत यज्ञकरानेवालों को भी लाओ । १६ । सोना चांदी गौ वस्त्र हाथी रथ खच्चर ऊंट आदि सवारियां । १७ । और सबप्रकार के सामान को तीर्थयात्राके

Kauravas urged by Fate donot hear me. You should advance with me in Paushya nakshtra " 10 Then when the armies were being formed into parties, Baldev spoke to Shri Krishn and asked him to help both sides, but Shri Krishn did not hear him. Baldev was enraged at this and went away on a pilgrimage to the Saraswati, taking the Yadavas with him. Then Kritvarma the destroyer of foes sided with Duryodhan and Vasudev with Satyaki sided with the Pandavas. At the departure of Baldev, Shri Krishn led the Pandavas to fight in Pushya nakshatra. 15. Then Baldev on his way ordered his servants to bring all the requisites, with weapons and sacrificial fires from Dwarka to the holy places. He sent for

गच्छध्वं शीघ्रगामिनः ॥१८॥ ऋत्विजश्चानयध्वं वै शतशश्च द्विजर्षभान् । एवं संदिश्य
तु प्रेष्यान् स बलदेवो महाबलः ॥ १९ ॥ तीर्थयात्रां ययौ राजन् कुरूणां वैशसे तदा ।
सरस्वतीं प्रतिस्रोतः समन्तादभिजग्मिवान् ॥ २० ॥ ऋत्विग्भिश्च सुहृद्भिश्च तथान्यै
र्द्विजसत्तमैः । रथैर्गजैस्तथाश्वैश्च प्रेष्यैश्च भरतर्षभ । गोखरोष्ट्रप्रयुक्तैश्च यानैश्च बहुभि
र्वृतः ॥ २१ ॥ श्रान्तानां क्लान्तवपुषां शिशूनां विपुलायुषाम् । देशे देशे तु देयानि
दानानि विविधानि च । अर्चायै चार्थिनां राजन् क्लृप्तानि बहुशस्तथा ॥ २२ ॥ यो
यो यत्र द्विजो भोज्यं भोक्तुं कामयते तदा । तस्य तस्य तु तत्रैवमुपाजह्रुस्तदा नृप ॥२३॥
तत्र स्थिता नरा राजन् रौहिणेयस्य शासनात् । भक्ष्यपेयस्य कुर्वन्ति राशींस्तत्र समन्ततः
॥ २४ ॥ वासांसि च महार्हाणि पर्यङ्कास्तरणानि च । पूजार्थं तत्र क्लृप्तानि विप्राणां
सुखमिच्छताम् ॥ २५ ॥ यत्र यः स्वपते विप्रः क्षत्रियो वापि भारत । तत्र तत्र तु
तस्यैव सर्वं क्लृप्तमदृश्यत २६ । यथासुखं जनः सर्वो याति तिष्ठति वै तदा । यातुकामस्य

निमित्त शीघ्रलाओ और तुम शीघ्रता से चलकर सरस्वती के तटपर आओ । १८ ।
और सैकड़ों उत्तम वेदपाठी याज्ञिक ब्राह्मणों को भी लाओ तब कौरवों के नाश
होनेपर वह बड़े बलवान बलदेवजी इस प्रकारकी आज्ञा अपने नौकरों को देकर
तीर्थयात्राकोगये और चारोंओरके सरस्वती तीर्थोंकी यात्राकरी । २० । ऋत्विज
मित्रवर्ग अन्य श्रेष्ठ ब्राह्मण, रथ, हाथी, घोड़े, नौकर, चाकर बैल खच्चर और
ऊंटोंसे युक्त बहुतसी सवारियों समेत थके थकावटसे पीड़ावान् शरीर बालक,
वृद्ध और आकांक्षा करनेवालों के पूजनकेलिये दानके योग्य नानाप्रकार की
अनेक वस्तुओंको प्रत्येक स्थानपर वर्त्तमानकिया । २२ । हे राजा तब जो जो
ब्राह्मण जहां जहां भोजन करनेकी इच्छा करताथा वहां वहां उसके अभीष्ट
भोजन को वर्त्तमान किया । २३ । हे राजा वहां बलदेवजीकी आज्ञासे जहांतहां
सेवक अहलकार लोग चारोंओर को खानपान के पदार्थोंको करतेथे ।२४ बड़ासुख
चाहनेवाले वेदपाठी ब्राह्मणों के पूजनकेलिये बहुमूल्य वस्त्र पलँग और उनके वस्त्र
तैयार किये । २५ । हे भरतवंशी जहांपर जो ब्राह्मण अथवा क्षत्रियभी जिसवस्तु

gold, silver, cows, clothes, elephants, cars, mules and camels at the bank of the Saraswati. The bands of the Ved knowing Brahmans came there. At the destruction of the Kauravas, Baldev went to visit holy places all round the Saraswati. 20 Sacrificers, friends, Brahmans cars, elephants, horses, servants, oxen, mules and camels, with the old and young came there. The Brahmans everywhere were given whatever they desired. Baldev's servants and attendants supplied articles of food and drink. They furnished the Brahmans with precious beds and clothes. 25 The Brahmans and kshatryas were supplied with every thing they desired. All the people were happy as

यानानि पानानि तृषितानां च ॥२७॥ बुभुक्षितानां च अन्नानि स्वादूनि भरतर्षभ । उपाजह्रुर्न-
रास्तत्र वस्त्राण्याभरणानि च ॥ २८ ॥ स पन्थाः प्रबभौ राजन् सर्वस्यैव सुखावहः ।
स्वर्गोपमस्तदा वीर नराणां तत्र गच्छताम् ॥ २९ ॥ नित्यप्रमुदितोपेतः स्वाद्वभक्ष्यः शुभा-
न्वितः । विपण्यापणपण्यानां नानाजनशतैर्वृतः । नानाद्रुमलतोपेतो नानारत्नविभू-
षितः ॥ ३० ॥ ततो महात्मा नियमे स्थितात्मा पुण्येषु तीर्थेषु वसूनि राजन् । ददौ
द्विजेभ्यः क्रतुदक्षिणाश्च यदुप्रवीरो हलभृत् प्रतीतः ॥ ३१ ॥ दोग्ध्रीश्च धेनूश्च सहस्रशो
वै सुवाससः काञ्चनबद्धशृङ्गीः । हयांश्च नानाविधदेशजातान् यानानि दासांश्च
शुभान् द्विजेभ्यः ॥ ३२ ॥ रत्नानि मुक्तामणिविद्रुमं च शृङ्गी सुवर्णं रजतं सुशुभ्रम् । अय-
स्मयं ताम्रमयं च भाण्डं ददौ द्विजातिप्रवरेषु रामः ॥ ३३ ॥ एवं स वित्तं प्रददौ महात्मा
सरस्वतीतीर्थवरेषु भूरि । ययौ क्रमेणाप्रतिमप्रभावस्ततः कुरुक्षेत्रमुदारवृत्तिः

को चाहताथा वहांपर उसको अभीष्टवस्तु तैयारहुई दिखाई पड़ी । २६। हेभरतर्षभ
उस समय सब लोग बड़े आनन्द और सुखपूर्वक जातेथे और उत्तम उत्तम स्थानों
पर निवास करते जातेथे वहां मनुष्यों ने चलनेवालों की सवारियों को और प्यासों
की पान करनेवाली वस्तुओंको और क्षुधायुक्तों के स्वादिष्ट भोजन वस्त्र और
भूषणों को वर्त्तमान किया । २८ । हेवीर राजा जनमेजय सब चलनेवाले मनुष्यों
का वह मार्ग सबका सुखदायी होकर स्वर्ग के समान शोभायमान हुआ । २९ ।
सदैव प्रसन्न लोगों से संयुक्त स्वादिष्ट भोजन रखनेवाली मंगलकारी मार्ग में
वर्त्तमान दुकानोंसे और बेचने के योग्य वस्तु रखनेवाले नाना प्रकार के सैकड़ों
मनुष्यों से व्याप्त अनेक प्रकारके वृक्ष वल्लियों से युक्त भांतिभांति रत्नों से
अलंकृत था । ३० । हेराजा उसके पीछे महात्मा नियम में नियत चित्त यादवों
में बड़े वीर प्रसन्न चित्त बलदेवजी ने धर्म की वृद्धिके कारण तीर्थों पर ब्राह्मणों
के निमित्त धन और यज्ञकी दक्षिणाको दिया । ३१ । दूध देनेवाली सुन्दर
पोशाक युक्त सुवर्णशृंगी गौवें और नानाप्रकार के देशोंमें उत्पन्न होनेवाले उत्तम
घोड़े सवारियां और शुभ दासोंको ब्राह्मणों के अर्थ दान किया । ३२ । बलदेव
जीने रत्न मोती मणि मूंगा, श्रेष्ठ सुवर्ण, शुद्ध चांदी और लोहे तांबे के पात्रभी
बड़े बड़े उत्तम ब्राह्मणों को दान किये । ३३ । इसप्रकार उस महात्मा ने सरस्वती

they went on in ea e and staid at good places The beasts were provided with fodder and drink and the hungry people were provided with wholesome food and ornaments. 28. The path of those pilgims was like another paradise. Shopkeepers sold delicious food under the shade of trees Then brave Baldev gave wealth to Brahmans He gave them milch cows adorn d with golden horns and clothes, horses of different countries and slaves, jewels and utensils of silver and gold. Thus he distributed much wealth among the Brahmans living on the

॥ ३४ ॥ जनमेजय उवाच । सारस्वतानां तीर्थानां गुणोत्पत्तिं वदस्व मे । फलञ्च द्विपदां श्रेष्ठ कर्मनिर्वृत्तिमेव च ॥ ३५ ॥ यथा क्रमेण भगवन् तीर्थानामानुपूर्वशः । ब्रह्मन् ब्रह्मविदां श्रेष्ठ परं कौतूहलं हि मे ॥ ३६॥ वैशम्पायन उवाच । तीर्थानां विस्तरं राजन् गुणोत्पत्तिञ्च सर्वशः मयोच्यमानं वै पुण्यं शृणु राजेन्द्र कृत्स्नशः ॥ ३७ ॥ पूर्वं महाराज यदुप्रवीर ऋत्विक् सुहृद्विप्रगणैश्च सार्द्धम । पुण्यं प्रभासं समुपाजगाम यत्रोडुराड् यक्ष्मणा क्लिश्यमानः । ३८ ॥ विमुक्तशापः पुनराप्य तेजः सर्वं जगद्भासयते नरेन्द्र । एवन्तु तीर्थप्रवरं पृथिव्यां प्रभासनात्तस्य ततः प्रभासः ॥ ३९ । जनमेजय उवाच । किमर्थं भगवान् सोमो यक्ष्मणा समगृह्यत । कथञ्च तीर्थप्रवरे तस्मिंश्चन्द्रो न्यमज्जत ॥ ४० । कथमाप्लुत्य तस्मिंस्तु पुनराप्यायितः शशी । एतन्मे सर्वमाचक्ष्व विस्तरेण

के उत्तम तीर्थोंपर बहुतसा धनादिया वह अनुपम प्रभाववाले, उत्तम बुद्धीवाले बलदेवजी क्रमपूर्वक कुरुक्षेत्रकोगये । ३४ । जनमेजयबोले हे द्विपादों में श्रेष्ठ वैशम्पायनजी सरस्वती के तीर्थोंके गुण उत्पत्तिफल और यात्राकी विधिकोभी मुझसेकहो । ३५ । हे बह्मवित्तर महाज्ञानी समर्थ वैशम्पायनजी मुझको बडाही उत्साह है आप तीर्थोंको क्रमपूर्वक वर्णन कीजिये । ३६ । वैशम्पायन बोले हे राजेन्द्र राजा जनमेजय तीर्थों के क्रम सर्वगुण और उत्पत्ति को मै सम्पूर्णताके साथ तुझको सुनाताहूं, तू उस धर्मकी वृद्धि करनेवाले माहात्म्यको मनसेसुन । ३७ । हे महाराज प्रथम यादवों में श्रेष्ठ वीर बलदेवजी ऋत्विज मित्र और ब्राह्मणों समेत, उस प्रभासक्षेत्र नाम उत्तम और पवित्र तीर्थकोगये जिसपर कि चन्द्रमा यक्ष्मानामरोगसे दुःखी होकर गयाथा । ३८ । और शापसे निवृत्त होकर तृतीयाके दिनसे सब जगत्को प्रकाशित करताहै इस रीति से उस चन्द्रमाकी अत्यन्त प्रकाशित किरणों से उत्पन्न हुआ वह अत्यन्त उत्तम तीर्थ है और इसी हेतुसे उसकानाम प्रभासक्षेत्र होगया । ३९ । जनमेजय ने पूछा कि भगवान् चन्द्रमाजीको कैसे, यक्ष्मारोग उत्पन्न हुआ और कैसे वहरोग उस अत्यन्त उत्तमतीर्थ के प्रभावसे नष्टहुआ । ४० । वह चन्द्रमा

banks of the Saraswati till he came back to Kurukshetra." Then Janmejaya asked of Vaishampayan "Pray, tell me the origin and greatness of the holy places at the Saraswati-35---I am very anxious to hear about them." Vaishampayan said, "I shall tell you all about those holy places. Hear it attentively First of all, Baldev went to Prabhas where the moon was freed of his illness and curse and now illumines the world. The good and holy place was the outcome of the bright rays of the moon, and was therefore named "Prabhas"." Janmejaya asked, "What was the cause of the moon's disease and how was he cured by Prabhas? 40 How was the moon cured by bathing at Prabhas? Pray tell me this in detail," Vaishampayan

महामुने ॥ ४१ ॥ वैशम्पायन उवाच । दक्षस्य तनया याश्च प्रादुरासन् विशांपते । स सप्तविंशतिं कन्या दक्षः सोमाय वै ददौ ॥ ४२ ॥ नक्षत्रयोगनिरताः संख्यानार्थं च भारत । पत्न्यो वै तस्य राजेन्द्र सोमस्य शुभकर्मणः ॥ ४३ ॥ तास्तु सर्वा विशालाक्ष्यो रूपेणाप्रतिमा भुवि । अत्यरिच्यत तासान्तु रोहिणी रूपसम्पदा ॥ ४४ ॥ ततस्तस्यां स भगवान् प्रीतिं चक्रे निशाकरः । साऽस्य हृद्या बभूवाथ तस्मात्तां बुभुजे सदा ॥ ४५ ॥ पुरा हि सोमो राजेन्द्र रोहिण्यामवसच्चिरम् । ततस्ताः कुपिताः सर्वा नक्षत्राख्या महात्मनः ॥ ४६ ॥ ता गत्वा पितरं प्राहुः प्रजापतिमतन्द्रिताः । सोमो वसति नास्मासु [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

किस प्रकार उस तीर्थमें स्नानकरके फिर शुद्धयुक्त हुआ हे महामुनि! उस सब इतिहास को हमारे सामने वर्णनकरो ॥ ४१ ॥ वैशम्पायन बोले हे राजा दक्षकी जो यह कन्या उत्पन्नहुई उनमें से सत्ताईस कन्या चन्द्रमाको दीं ॥ ४२ ॥ वह कन्या नक्षत्र योगमें अधिकारी होकर उनकी संख्या के निमित्त हुईं राजेन्द्र जो कि उस शुभकर्म करनेवाले चन्द्रमाकी स्त्रियांथीं ॥ ४३ ॥ वह सब दीर्घनेत्रा और स्वरूपमें अनुपमथीं उन सत्ताईसों में रोहिणी स्वरूप और लावण्यतामें सबसे अधिकथी ॥ ४४ ॥ इससे उस भगवान् चन्द्रमाने उसीमें अधिक प्रीतिकी वही उसके चित्तकी प्यारी हुई इसहेतुसे सदैव उसीको भोगा ॥ ४५ ॥ हे राजेन्द्र चन्द्रमा पूर्वसमय में रोहिणीकेही समीप अधिक स्थिरहा इस हेतुसे महात्मा चन्द्रमाकी नक्षत्रनामसे विख्यात वह सब स्त्रियां क्रोधयुक्तहुई ॥ ४६ ॥ और बड़ी सावधानों ने अपने पिता दक्ष प्रजापति के पासजाकर कहा कि चन्द्रमा हमारेपास कभी निवास नहीं करता सदैव रोहिणी को चाहता है ॥ ४७ ॥ हे सृष्टिके स्वामी सो हम सब उचितप्रकार करनेवाली और तपकरने में प्रवृत्त आपके सम्मुख निवास करेंगी ॥ ४८ ॥ तब दक्षप्रजापतिजी उन सबके वचनोंको सुनकर चन्द्रमासे बोले कि तुम सब स्त्रियों में समान भाव से वर्तावकरो इससे तुमको बड़ा अधर्म स्पर्श नहीं करेगा ॥ ४९ ॥ फिर दक्षजी उन

said. "Out his many daughters, Daksh gave twenty seven to Moon and they became nakshtras which indicate time and were wedded to him. They were all of large eyes and beautiful faces, but Rohini surpassed them all in the beauty of her person and was therefore much loved by her husband who spent much of his time in her society 45. The other wives were much exasperated at this conduct and complained of him before their father Daksh saying " Moon remains always with Rohini. We wish to leave him and live with you." Then Daksh told Moon to behave with all his wives alike; that

यथैव बीजानि विविधानि च ॥ ६५ ॥ तेषां क्षये क्षयोऽस्माकं विनास्माभिरिदं जगत्
किम् । इति ज्ञात्वा लोकगुरो प्रसादं कर्तुमर्हसि ॥ ६६ ॥ एवमुक्तस्ततो देवान् प्राह
वाक्यं प्रजापतिः । नैतच्छक्यं मम वचो व्यावर्तयितुमन्यथा ॥ ६७ ॥ हेतुना तु महा-
भागा निवर्तिष्यति कस्मिंश्चित् । समं वर्ततु सर्वासु शशी भार्यासु नित्यशः ॥ ६८ ॥
सरस्वत्या वरे तीर्थे उन्मज्जन् शशलक्षणः । पुनर्वर्धिष्यते देवास्तद्वै सत्यं वचो मम
॥ ६९ ॥ मासार्धं च क्षयं सोमो नित्यमेव गमिष्यति । मासार्धं तु सदा वृद्धिं सत्यमे-
तद्वचो मम ॥ ७० ॥ समुद्रं पश्चिमं गत्वा सरस्वत्यब्धिसङ्गमम् । आराधयतु देवेशं

तब देवता चन्द्रमाके वृत्तान्त को सुनकर दक्षके पास जाकर बोले कि हे भगवन् आप चन्द्रमाके ऊपर प्रसन्न हूजिये और अपने शापको लौटाइये ॥ ६४ ॥ यह चन्द्रमा नाशवान् होकर कुछ शेष बाकीरहा दीखता है हे देवताओं के ईश्वर उसके विनाशवान् होने से सृष्टि भी नाशयुक्त होगई है वीरुध ओषधी और नानाप्रकार के बीजों ने विनाशको पाया ॥ ६५ ॥ उनके नाशसे हमारा नाश है और हमारे बिना जगत् कैसाहोगा हे लोकगुरु इसबात को जानकर आप कृपाकरने के योग्यहो ॥ ६६ ॥ इसप्रकार के देवताओं के वचनों को सुनकर प्रजापतिजी ने देवताओं से यह वचन कहा कि मेरावचन विपरीत करना उचित नहीं है ॥ ६७ ॥ हे महाभागो मेराशाप इसीबहाने से लौटेगा कि चन्द्रमा सदैव सब स्त्रियों में बराबर वर्त्तावकरे ॥ ६८ ॥ हे देवता लोगो सरस्वती के उत्तम तीर्थ में ग्रीवा पर्यन्त जलमें गोते लगानेवालाहोकर फिर शादयुक्त होगा यह मेरावचन सत्य है ॥ ६९ ॥ चन्द्रमा सदैव आधेमास तक क्षीणताको पावेगा और आधेमहीने वृद्धिको पावेगा यह मेरा वचन भी सत्य है ॥ ७० ॥ पश्चिमीय समुद्र के जिस स्थानपर कि सरस्वती समुद्रका मिलापहै वहांपर जाकर देवताओं के ईश्वरका आराधन करके तेजको पावेगा ॥ ७१ ॥ इसकेपीछे वह चन्द्रमा ऋषिकी आज्ञानुसार सरस्वती तीर्थको

longer, pray tell us the dreadful cause of all this and we shall try to cure your malady." Then he told them how he was cursed and became sick. The gods went to Daksh and said, "Be kind to Chandra and revoke your curse. He is decaying, and a very small portion of him is left. All beings perish on account of him; medicines and seeds have perished. We also decay for that reason. How can the world exist without us. Be kind to us, venerable one." 66 Having heard the words of the gods he said, "It is not well to revoke my word. He may be cured of his malady if he behaves with all his wives alike. He must plunge in the waters of the Saraswati in order to be cured of his disease. I tell you the truth. He will decrease for half a month and will increase during the next

ततः कान्तिमवाप्स्यति ॥ ७१ ॥ सरस्वतीं ततः सोमः स जगामर्षिशासनात् । प्रभासं
प्रथमं तीर्थं सरस्वत्या जगाम ह ॥ ७२॥ अमावास्यां महातेजास्तत्रोन्मज्ज्य महाद्युतिः ।
लोकान् प्रभासयामास शीतांशुत्वमवाप च ॥ ७३ ॥ देवास्तु सर्वे राजेन्द्र प्रभासं
प्राप्य पुष्कलम् । सोमेन सहिता भूत्वा दक्षस्य प्रमुखेऽभवन् ॥ ७४ ॥ ततः प्रजापतिः
सर्वा विससर्जाथ देवताः । सोमं च भगवान् प्रीतो भूयो वचनमब्रवीत् ॥ ७५ ॥ माव
मंस्थाः स्त्रियः पुत्र मा च विप्रान् कदाचन । गच्छ युक्तः सदा भूत्वा कुरु वै शासनं
मम ॥ ७६ ॥ स विसृष्टो महाराज जगामाथ स्वमालयम् । प्रजाश्च मुदिता
भूत्वा पुनस्तस्थुर्यथा पुरा ॥ ७७ ॥ एवं ते सर्वमाख्यातं यथा शप्तो
निशाकरः । प्रभासश्च यथा तीर्थं तीर्थानां प्रवरं ह्यभूत् ॥ ७८ ॥ अमा
वास्यां महाराज नित्यशः शशलक्षणः । स्नात्वा ह्याप्यायते श्रीमान् प्रभासे तीर्थ
उत्तमे ॥ ७९ ॥ अतश्चैनं प्रजानन्ति प्रभासमिति भूमिप प्रभां हि परमां लेभे

गये प्रथम सरस्वती तीर्थको जाकर फिर प्रभास क्षेत्रकोगये ॥ ७२ ॥ अमावास्याके
दिन उसमें स्नान करके वह तेजस्वी और उत्तम कान्तिवालेने लोकों को प्रकाशित
किया और किरणोंकी शीतलताको पाया ॥ ७३ ॥ हे राजेन्द्र फिर सब देवता
प्रभास क्षेत्रनाम उत्तम तीर्थको पाकर, चन्द्रमा समेत दक्षजीके सम्मुखहुये
इसके पीछे प्रजापतिजीने, सब देवताओंको विदाकिया फिर प्रसन्नचित्त भगवान्
प्रजापति ऋषि चन्द्रमासे यह वचनबोले ७५ । कि हे पुत्र स्त्रियों का अपमान
और ब्राह्मणों का अपमान तू कभी मतकर मतजाओ और सदैव सावधान होकर
मेरी आज्ञाको करो । ७६ । हे महाराज फिर वनमें विदाहोकर वह चन्द्रमा अपने
लोकको गया और सब पृथिवी प्रसन्न होकर पूर्वकेही समान फिर नियतहुई ।७७।
यह सब चन्द्रमाके शापका और शापसे निवृत्तहोनेका वृत्तान्त और प्रभास तीर्थ
का सब तीर्थोंमें अत्यन्त श्रेष्ठतर होनेका भी उत्तम वृत्तान्त मैंने तुमसे कहा ७८ ।
हे महाराज श्रीमान् चन्द्रमा सदैव अमावास्या के दिन प्रभासनाम उत्तम तीर्थमें
स्नानकरके वृद्धिको पाताहै । ७९ । हे राजा इसहेतुसे इसतीर्थको प्रभासक्षेत्र

half, 70. He will regain his glory by worshipping the Lord of gods at the place where the Saraswati meets the Western sea." Then Chandra went to the Saraswati by the order of the rishi and then went to Prabhas, and having bathed there on Amavasya he regained his glory and his rays became cool again Having got the holy place of Prabhas all the gods again went to Daksh. He dismissed the gods and again turning to Chandra said 75 Never insult women and brahmans. You must obey me in future. Now you may go." Then Chandra came back to his own region and all the world grew like before. I have given you an account of the curse of the moon and the origin of Prabhas Chandra bathes every amavasya at

याचितोऽभितश्च । स्वतं वर्त्स्यति सर्वासु चन्द्रमा मम शासनात् ॥ ५० ॥ विसृष्टास्ता स्तथा जग्मुः शीतांशुभवनं तदा । तथापि सोमो भगवान् पुनरेव महीपते । रोहिण्यां न्यवसत्येव प्रीयमाणो मुहुर्मुहुः ॥ ५१ ॥ ततस्ताः सहिताः सर्वा भूयः पितरमब्रुवन् । तव शुश्रूषणे युक्ता वत्स्यामो हि तवाश्रमे । सोमो वसति नास्मासु नाकरोद्वचनं तव ॥ ५२ ॥ तासां तद्वचनं श्रुत्वा दक्षः सोममथाब्रवीत् । समं वर्तस्व भार्यासु मा त्वां शप्स्ये विरोचन ॥ ५३ ॥ अनादृत्य तु तद्वाक्यं दक्षस्य भगवान् शशी । रोहिण्या सार्धमवसत् ततस्ताः कुपिताः पुनः ॥ ५४ ॥ गत्वा च पितरं प्राहुः प्रणम्य शिरसा तदा । सोमो वसति नास्मासु तस्मान्नः शरणं भव ॥ ५५ ॥ रोहिण्यामेव भगवान् सदा वसति चन्द्रमाः । न त्वद्वचो गणयति न चास्मासु स्नेहमिच्छति । तस्मान्नस्त्राहि सर्वा वै यथा नः सोम आविशेत् ॥ ५६ ॥ तच्छ्रुत्वा भगवान् क्रुद्धो यक्ष्माणं पृथिवीपते । ससर्ज

सबसे बोले कि चन्द्रमा के पासजाओ. चन्द्रमा मेरी आज्ञासे सबके पास बराबर निवास करेगा । ५० । तब उस प्रकारसे विदा की हुई वह सब स्त्रियां शीतांशु चन्द्रमाके भवनको गई हे राजा इसपर भी भगवान चन्द्रमा उसीप्रकार बारम्बार प्रीति करनेवाले होकर रोहिणीकेही पास रहतेथे । ५१ । इसके अनन्तर उन सबों ने फिर अपने पितासे कहा कि हम सब आपकी सेवामें प्रवृत्तहोकर आपकेही पास निवास करेंगी क्योंकि चन्द्रमा हमारे पास निवास नहीं करताहै उसने आपकेभी वचनको नहीं किया । ५२ । दक्षजीने उन सबके उस वचन को सुनकर फिर चन्द्रमासे कहा कि हे अत्यन्त प्रकाशमान तुम स्त्रियों में बराबर वर्ताव करो जो मेरा कहना न करोगे तो मैं तुमको शापदूंगा । ५३ । फिर भगवान चन्द्रमा दक्षके वचनको अनादर करके रोहिणीकेही पास निवासी हुये इस हेतुसे वह स्त्रियां फिर क्रोधयुक्तहुई । ५४ । तब उन्होंने जाकर शिर से प्रणाम करके पिता से कहा कि चन्द्रमा हमारे पास निवास नहीं करता है अब आपही हमारे रक्षकहूजिये । ५५ । भगवान चन्द्रमा सदैव रोहिणी के पासही निवास करते हैं आपके वचनको कुछ नहीं गिनते हैं और हमपर प्रीतिकरना नहीं चाहते हैं इसकारण से हम सब की ऐसी रक्षाकरो जिसके भय से चन्द्रमा हमको अपने पास ठहरावे । ५६ । हे राजा

he might not be accused of injustice, Daksh then ordered his daughters to go to their husband. 50. Thus ordered they all went to the palace of their lord, but again found that he spent much of his time with Rohini. They again went to their father and said, "We shall live with you, for Chandra does not live with us. He does not care to obey your orders." At this Daksh again said to Chandra, "You must behave with all your wives alike. I shall curse you, if you do not obey me." But Chandra paid no heed to the words of Daksh and lived with Rohini. The other wives were again enraged and bowing

रोषात् सोमाय संक्रुद्धो ऽडुपतिमाविशत् ॥ ५७ ॥ स यक्ष्मणाभिभूतात्मा क्षीयताहरहः शशी । यत्नञ्चाप्यकरोद्राजन् मोक्षार्थं तस्य यक्ष्मणः ॥ ५८ ॥ इष्ट्वेष्टिभिर्महाराज विविधाभिर्निशाकरः । न चामुच्यत शापाद्वै क्षयञ्चैवाभ्यगच्छत ॥ ५९ ॥ क्षीयमाणे ततः सोमे ओषध्यो न प्रजज्ञिरे । निरास्वादरसाः सर्वा हतवीर्याश्च सर्वशः ॥ ६० ॥ ओषधीनां क्षये जाते प्राणिनामपि संक्षयः । कृशाश्चासन् प्रजाः सर्वाः क्षीयमाणे निशाकरे ॥ ६१ ॥ ततो देवाः समागम्य सोममूचुर्महीपते । किमिदं भवतो रूपमीदृशं न प्रकाशते । कारणं ब्रूहि नः सर्वं येनेदं ते महद्भयम् ॥ ६२ ॥ श्रुत्वा तु वचनं त्वत्तो विधास्यामस्ततो वयम् । एवमुक्तः प्रत्युवाच सर्वांस्तान् शशलक्षणः ॥ शापस्य कारणञ्चैव यक्ष्माणञ्च तथात्मनः ॥ ६३ ॥ देवास्तथा वचः श्रुत्वा गत्वा दक्षमथाब्रुवन् । प्रसीद भगवन् सोमे शापोऽयं विनिवर्त्यताम् ॥ ६४ ॥ असौ हि चन्द्रमाः क्षीणः किञ्चिच्छेषो हि लक्ष्यते । क्षयाच्चैवास्य देवेश प्रजाश्चापि गताः क्षयम् । वीरुदोषध

क्रोधयुक्त भगवान् दक्षप्रजापति ने उसको सुनकर क्रोधसे यक्ष्मानाम रोगको चन्द्रमा के ऊपर छोड़ा तब वह चन्द्रमामें प्रवेश करगया । ५७ । फिर यक्ष्मा रोगसे ग्रसित शरीर होकर वह चन्द्रमा प्रति दिन क्षीणतासे युक्तहुये । ५८ । हे महाराज जनमेजय चन्द्रमाने नानाप्रकार के यज्ञोंसे पूजनकरके उस यक्ष्मारोगके दूरकरनेके अनेक उपायभी किये परन्तु शाप से निवृत्त नहीं हुआ और सदैव क्षीणताको ही पाया तब चन्द्रमाके क्षीणतायुक्त होनेपर औषधियां पृथ्वीपर उत्पन्न नहीं हुई सब ओरसे सब रस स्वादुओं से रहित और निर्बल हुये और औषधियों का विनाश होनेपर जीवोंका भी नाशहुआ चन्द्रमाके विनाश युक्त होनेपर सब सृष्टिके जीव दुर्बल शरीर हुये । ६१ । इसकेपीछे सब देवताओंने मिलकर चन्द्रमासे कहा कि आपका यह ऐसा रूप कैसे होगया है कि प्रकाश नहीं करता अब जिनसे हमको बड़ाभय है उन सब कारणोंको आप हमसे कहो । ६२ । अब हमसे सब वृत्तान्त कहोगे तब हम सब देवता उसका उपाय करेंगे देवताओं के इन वचनों को सुनकर चन्द्रमाने उनसे अपने शापका कारण और यक्ष्मारोग होनेका सब वृत्तान्त कहा

down to their fathei, they said, " Chandia does not live with us and therefore we seek your protection. 55. He d.sregards your words and lives with Rohini. He bears no love towaids us. Help us and make him keep us with him. " Thus enraged, Daksh sent the disease which entered the body of the moon and he began [illegible] day; He tried to remove the malady by [illegible] but the curse was irrevocable and he bec[illegible] and leaner. Medicines did not grow on earth and the sap in plants became tasteless and weak. At the decay of medicinal herbs people began to perish and their bodies were lean. 61. Then all the gods coming together said to Chandra, " Why is your appearance changed? It sheds light no-

तस्मिन्नुन्मज्य चन्द्रमा ८० ततस्तु चमसोद्भेदमच्युतस्त्वगमद्बली। चमसोद्भेद इत्येव य जना कथयन्त्युत ॥ ८१ । तत्र दत्त्वा च दानानि विशिष्टानि हलायुध । उषित्वा रजनीमेकां स्नात्वा च विधिवत्तदा ॥ ८२ ॥ उदपानमथागच्छत् त्वरावान् केशवाग्रज । आद्य स्वस्त्ययनं चैव यत्रावाप्य महत् फलम् ॥ ८३ ॥ स्निग्धत्वादोषधीनाञ्च भूमेश्च जनमेजय । जानन्ति सिद्धा राजेन्द्र नष्टामपि सरस्वतीम् ॥ ८४ ॥

इति शल्यपर्वणि गदायुद्धपर्वणि बलदेवतीर्थयात्रायां पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५ ।

जानते है चन्द्रमाने उसमे गोते लगाकर बडे प्रकाश को पाया । ८० । इसकेपीछे बलवान और अजेय बलदेवजी उस चमसोद्भेद तीर्थको गये जिसको लोग चमसोद्भेद तीर्थ कहतेहै ।८१ । फिर हलायुध बलदेवजी वह उत्तम दानोंको देकर एक रात्रि निवास कर विधिपूर्वक स्नानकरके।८२।शीघ्रता करनेवाले केशवजीके बडे भाई उस उदपाननाम तीर्थकोगये जहांपर कि बडे प्राचीन और कल्याणकारी उत्तम फलको पाया । ८३ । हे राजेन्द्र जनमेजय औषधियों से और पृथ्वी के स्वच्छता युक्त तथिकण होनेसे सिद्धलोग गुप्तहोनेवाली सरस्वतीकोभी जानते है ८४ ॥

Prabhas and grows. That holy place is so named because the moon regains his glory by bathing there 80 Then valiant Baldev went to Chamastodbhed or Chamsdbhed and having bathed there and stayed there for one night he gave donations. Then the elder brother of Krishn went to Upadan and gained great merit. Thus the sidhas know the Saraswati which is holy and over grown with medicines." 84



वैशम्पायन उवाच । तस्मान्नदीगतश्चापि उदपानं यशस्विनः । त्रितस्य च महाराज जगामाथ हलायुधः ॥ १ ॥ तत्र दत्त्वा बहुद्रव्यं पूजयित्वा तथा द्विजान् । उपस्पृश्य च तत्रैव प्रहृष्टो मुसलायुधः ॥ २ ॥ तत्र धर्मपरो ह्यासीत्त्रितः स सुमहातपाः । कूपे च वसता तेन सोमः पीतो महात्मना ॥ ३ ॥ तत्र चैनं समुत्सृज्य भ्रातरौ जग्मतुर्गृहान् । ततस्तौ वै शशापाथ त्रितो ब्राह्मणसत्तमः ॥ ४ ॥ जनमेजय उवाच । उदपानं कथं ब्रह्मन् कथं च सुमहातपाः । पतितः किं च संत्यक्तो भ्रातृभ्यां द्विजसत्तमः ॥ ५ ॥ कूपे कथं च हित्वैनं भ्रातरौ जग्मतुर्गृहान् । कथं च याजयामास पपौ सोमं च वै कथम् । एतदाचक्ष्व मे ब्रह्मन् श्रोतव्यं यदि मन्यसे ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच । आसन् पूर्वयुगे राजन् मुनयो भ्रातरस्त्रयः । एकतश्च द्वितश्चैव त्रितश्चादित्यसन्निभाः ॥ ७ ॥ सर्वे प्रजापतिसमाः प्रजावन्तस्तथैव च । ब्रह्मलोकजितः सर्वे तप [illegible] ब्रह्मवादिनः ॥ ८ ॥

अध्याय ३६ ॥

वैशम्पायन बोले हे महाराज इस कारण से बलदेवजी यशवान त्रितजी के उदपान तीर्थको जो कि नदी में वर्त्तमान था गये । १ । वहां बहुतसा धन दानपुण्य कर ब्राह्मणों को पूज और उसी तीर्थ में स्नानकरके बलदेवजी अत्यन्त प्रसन्न हुये । २ । वहांपर वह बड़ा तपस्वी त्रित धर्म्मका करनेवाला बड़ा पूर्ण सिद्धहुआ जिस महात्माने कूपमें निवासकरके अमृतको पान किया । ३ । वहां इसको उसके दोनों भाई कूपमें छोड़कर अपनेर घरोंको चलेगये इसके पीछे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ त्रितने उन दोनोंको शापदिया । ४ । जनमेजय बोला हे ब्रह्मन किसप्रकारका कूप था और वह बड़ा तेजस्वी उस कूपमें किसरीतिसे गिरा और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ दोनों भाइयों ने उसको क्यों त्याग किया और दोनों भाई उसको किसप्रकार कूपमेंही छोड़कर घरोंको चलेगये और कैसे अमृत को पानकिया हे ब्रह्मन जो उसको आप मेरे सुननेके योग्य मानते हो तो मुझसे वर्णन करो । ६ । वैशम्पायन बोले हे राजा सतयुगमें तीन भाई मुनिहुये जो कि एक द्वित और त्रितनाम से विख्यात सूर्य के समान तेजस्वीथे । ७ । सब प्रजापति के समान सन्तानवाले

CHAPTER XXXVI

Vaishampayan said, "Then Baldev went to Upadan, a holy place of the Tritasi. There he gave large donations after bathing in it. There had been a famous rishi who drank nectar in the well. His two brothers had left him in the well and Trit had cursed them both." Janmejaya asked, "What sort of a well it was, how the rishi fell in it, why he was deserted by his brothers and how he drank nectar. Tell me all this great brahman, if it be worth my hearing." Vaishampayan said, "There were three brothers in Satyug, known as Ek, Dwit and Trit and glorious like the Sun. They were all possessed of progeny like Prajpati and had conquered the region of Brahm by their

तेषां तु तपसा प्रीतो नियमेन दमेन च। अभवद्गौतमो नित्यं पिता धर्मरतः सदा ॥ ९ ॥ स तु दीर्घेण कालेन तेषां प्रीतिमवाप्य च। जगाम भगवान्स्थानमनुरूपमिवात्मनः ॥ १० ॥ राजानस्तस्य ये ह्यासन् याज्या राजन्महात्मनः। ते सर्वे स्वर्गते तस्मिंस्तस्य पुत्रानपूजयन् ॥ ११ ॥ तेषां तु कर्मणा राजंस्तथा चाध्ययनेन च। त्रितं स श्रेष्ठतां प्राप यथैवास्य पिता तथा ॥ १२ ॥ ततः सर्वे महाभागा मुनयः पुण्यलक्षणाः। अपूजयन्महाभागं यथास्य पितरं पुरा ॥ १३ ॥ कदाचिद्धि ततो राजन् भ्रातरावेकतद्वितौ। यज्ञार्थं चक्रतुश्चिन्तां तथा वित्तार्थमेव च ॥ १४ ॥ तयोर्बुद्धिः समभवत् त्रितं गृह्य परंतप। याज्यान् सर्वानुपादाय प्रतिगृह्य पशूंस्ततः ॥ १५ ॥ सोमं पास्यामहे हृष्टाः प्राप्य यज्ञं महाफलम्। चक्रुश्चैव तथा राजन् भ्रातरस्त्रय एव च ॥ १६ ॥ तथा तु ते परिक्रम्य याज्यान् सर्वान् पशून्प्रति। याजयित्वा ततो याज्यांल्लब्ध्वा तु सुबहून्पशून् ॥ १७ ॥ याज्येन कर्मणा तेन प्रतिगृह्य विधानतः। प्राचीं दिशं महात्मान आजग्मुस्ते महर्षयः ॥ १८ ॥ त्रितस्तेषां महाराज पुरस्ताद्याति हृष्टवत्। एकतश्च द्वितश्चैव पृष्ठतः कालयन्

तपस्याके द्वारा सबलोकको विजय करनेवाले और ब्रह्मवादी थे। ८। धर्ममें प्रीति रखनेवाला उनका पिता गौतम उन्होंके तप, नियम और जितेन्द्रियपने से सदैव प्रसन्न रहता था। ९। फिर वह भगवान गौतमऋषि बहुतकाल पीछे उन्होंकी प्रीति को पाकर अपने योग्य स्थानको गये। १०। हे जनमेजय जो जो राजा उस महात्माके यजमानथे उनसबने उन गौतमजी के स्वर्ग जानेपर उनके पुत्रों को पूजा।११। फिर उनमेंसे उस त्रितने अपने कर्म्म और वेदपाठ आदिक आचरणों से वैसीही श्रेष्ठताको पाया जैसी कि उसके पिताने पाईथी।१२। उसीप्रकार पवित्र लक्षणवाले महाभाग मुनियोंने भी उस महाभाग को ऐसा पूजा जैसे कि पूर्वसमयमें उसके पिताको पूजतेथे। १३। हेराजा इसके अनन्तर किसीसमय एक और द्वितनाम उसके दोनों भाइयोंने यज्ञ के और धनके निमित्त इच्छाकरी।१४। हे शत्रुके तपानेवाले उन दोनोंका यह विचारहुआ कि त्रितको लेकर सब यज मानोंको इकट्ठाकर दक्षिणा में गौवेंलकर।१५। बड़े फलवाले यज्ञको पाकर प्रसन्न होके सोमको पानकरेंगे हे राजा तीनों भाइयों ने वैसाहीकिया। १६। फिर वह तीनों होकर यज्ञके निमित्त यजमानों के पास उसीप्रकार घूमकर यजमानों को यज्ञकराके। १७। उसयज्ञकर्म के द्वारा विधिपूर्वक बहुत से धन और पशुओंको

asceticism, Their father Gautam was much pleased with their asceticism, vows and control. In due time Gautam died 10. His sons were made priests after him Trit was the most respected and was like his father in learning and deeds Other rishis respected him as they did his father After some time his brothers wished to amass wealth by presiding at sacrifices They took Trit with them to the king's sacrifices in order to get wealth and cows. They went to the East to get wealth. Trit led the way and they went on.

पशून् ॥ १९ ॥ तेषां चिन्ता समभवद्दृष्ट्वा पशुगणं महत् । कथं नु स्युरिमा गाव
आवाभ्यां [illegible] विना त्रितम् ॥ २० ॥ तावन्योन्यं समाभाष्य एकतश्च द्वितश्च ह । यदूचु
सुर्मिथः पापौ तन्निबोध जनेश्वर ॥ २१ ॥ त्रितो यज्ञेषु कुशलस्त्रितो वेदेषु निष्ठितः ।
अन्यास्तु बहुला गावस्त्रितः समुपलप्स्यते ॥ २२ ॥ तदावां सहितौ भूत्वा गाः प्रकाल्य
व्रजावहे । त्रितोऽपि गच्छतां काममावाभ्यां वै विनाकृतः ॥ २३ ॥ तेषामागच्छतां रात्रौ
पथि स्थाने वृकोऽभवत् । तत्र कूपोऽविदूरेऽभूत् सरस्वत्यास्तटे महान् ॥ २४ ॥ अथ त्रितो
वृकं दृष्ट्वा पथि तिष्ठन्तमग्रतः । तद्भयादपसर्पन् वै तस्मिन् कूपे पपात ह ॥ २५ ॥
अगाधे सुमहाघोरे सर्वभूतभयङ्करे । त्रितस्ततो महाराज कूपस्थो मुनिसत्तम । आर्त
नादं ततश्चक्रे तौ तु शुश्रुवतुर्मुनी ॥ २६ ॥ तं ज्ञात्वा पतितं कूपे भ्रातरावेकतद्वितौ । वृक
त्रासाच्च लोभाच्च समुत्सृज्य प्रजग्मतुः ॥ २७ ॥ भ्रातृभ्यां पशुलुब्धाभ्यामुत्सृष्टः स

लेकर वह सब महर्षि पूर्वदिशाको गये । १८ । हे महाराज प्रसन्नचित्त त्रित उन्होंके आगेजाताथा और पीछे एक और द्वित यहदोनों पशुओंको हांकतेहुये जातेथे । १९ । उस पशुओंके बड़े समूहको देखकर उनदोनोंको चिन्ताहुई कि इस त्रित के बिनायह गौ किस प्रकारसे हमारी होसक्ती है । २० । हे राजा यह विचारकर एक और द्वितदोनों पापी भाइयोंने परस्पर मिलकर यह वचन कहा उसको समझो कि त्रित यज्ञमें सावधानहै और वेदोंकाभी पूर्णज्ञाता है इससे वह त्रित बहुतसी अन्य गौओं को प्राप्त करलेगा । २२ । इसहेतुसे हमदोनों साथहोकर गौओं को हांकतेहुये चलदें और हम दोनोंसे पृथक् होकर त्रितभी स्वेच्छापूर्वक जाय । २३ । रात्रि में चलनेवाले मार्गमें नियत उनके आगे एक भेड़िया वर्त्तमान हुआ और वहांही सरस्वती के किनारेपर एक बड़ा कूपथा । २४ । इसके अनन्तर त्रित मार्ग में नियत भेड़िये को देखकर बड़ा भयभीतहोकर हटा और उस कूप म गिरपड़ा । २५ । जोकि बड़ा अगाध घोर और सब जीवोंके भयका उत्पन्न करनेवाला था हे महाराज तब मुनियों में श्रेष्ठ कूप में नियत त्रितने पीड़ा के शब्द किये और उन दोनों भाई मुनियोंने भी सुने । २६ । तब एक और द्वित दोनोंभाई उस कूपमें पड़ेहुये त्रितको जानकर भेड़िये के भयसे और लोभसे उसको उसी कूप में पड़ाहुआ छोड़कर चलेगये । २७ । पशुओं को पानेवाले और दोनों भाइयों से,

driving the cows which they had got Being in possession of a large herd of cattle, they thought of depriving Trit of his share of them 20 They said among themselves "Trit is very learned and clever at presiding sacrifices. He will amass much wealth Let us drive away this herd of cattle and leave him behind " Going at night they were met by a wolf in the way where there was a deep well at the bank of the Saraswati Seeing the wolf in his way, Trit moved aside in fear and fell down in the well 25 The well was very deep and dreadful. Trit cried for help from under the well The two brothers,

महातपाः । उदपानं तथा राजन् निर्जले पांसुसंवृते ॥ २८ ॥ त्रित आत्मानमालक्ष्य कूपे
वीरुत्तृणावृते । निमग्नं भरतश्रेष्ठ नरके दुष्कृती यथा ॥ २९ ॥ स बुद्ध्यागणयत् प्राज्ञो
मृत्योर्भीतो ह्यसोमपः । सोमः कथं नु पातव्य इहस्थेन मया भवेत् ॥ ३० ॥ स एवम
भिनिश्चित्य तस्मिन् कूपे महातपाः । ददर्श वीरुधं तत्र लम्बमानां यदृच्छया ॥ ३१ ॥
पांशुग्रस्ते ततः कूपे विचिन्त्य सलिलं मुनिः । अग्नीन् सङ्कल्पयामास होत्रे चात्मान
मेव च ॥ ३२ ॥ ततस्तां वीरुधं सोमं सङ्कल्प्य सुमहातपाः । ऋचो यजूंषि सामानि
मनसाचिन्तयन्मुनिः ॥ ३३ ॥ ग्रावाणः शर्कराः कृत्वा प्रचक्रेऽभिषवं नृप । आज्यञ्च
सलिलञ्चक्रे भागांश्च त्रिदिवौकसाम् ॥ ३४ ॥ सोमस्याभिषवं कृत्वा चकार तुमुलं
ध्वनिम् । स चाविशद्दिवं राजन् स्वनः शैक्षस्त्रितस्य वै । समवाप च तं यज्ञं यथोक्तं
ब्रह्मवादिभिः ॥ ३५ ॥ वर्तमाने तथा यज्ञे त्रितस्य सुमहात्मनः । आविग्नं त्रिदिवं सर्वं

त्यागेहुये उस बड़ेतपस्वी त्रितने उस निर्जल धूलसेयुक्त तृणों से आच्छादित
कूपमें अपनेको इसप्रकार डूबादेखकर जैसे कि पापी नरकमें डूबाहोय । २९ । तब
उस ज्ञानी-मृत्युसे भयभीत और अमृतपान न करनेवाले ने बुद्धि से विचार किया
कि यहां पर, नियतहोकर मैं कैसे अमृतका पानकरसक्ताहूं । ३० । हे भरतर्षभ
राजा जनमेजय उस बड़ेतपस्वी ने उसकूपकेभीतर इसप्रकार निश्चय करके वहां
दैवयोगसे लटकती हुई एकलताको देखा । ३१ । उसके पीछे धूलसे आच्छादित
कूप में मुनिने जलको ध्यान करके अग्नियों को कल्पना करके अपने को होता
कल्पना किया । ३२ । तब उस बड़े तपस्वी मुनिने उस वीरुधको अमृत कल्पना
करके यजुर्वेद और सामवेदकी ऋचाओं को चित्त से ध्यान किया । ३३ । हेराजा
उसने कङ्कड़ोंको खांड़बनाकर चूर्णकिया और जलको घृतबनाकर देवताओं के
भागों को विचार किया । ३४ । और अमृतके यज्ञको करके बड़ी ध्वनिकरी

Ek and Dwit, heard his cries, but being afraid of the wolf as well as under the influence of avarice, they drove their cattle away and left Trit within the well. Deserted by his brothers, Trit found himself within that waterless well, full of dust and weeds, as one fallen in hell. Then he bethought of how he could drink nectar while within that deep well. 30. Having come to this resolution, he saw a creeper hanging within the well
the well full of dust was full
over imaginary fire. Then
be full of nectar and recalled to his mind the hymns of Yaju and Samved. He powdered small stones for sugar and poured water in honour of the gods. He began performing sacrifice of nectar with a

कारणं च न बुध्यते। ततः सुतुमुलं शब्दं शुश्रावाथ बृहस्पतिः । ३६ ॥ श्रुत्वा चैव ब्रवीत् सर्वान् देवान् देवपुरोहितः । त्रितस्य वर्त्तते यज्ञस्तत्र गच्छामहे सुराः ॥ ३७ ॥ स हि क्रुद्धः सृजेदन्यान् देवानपि महातपाः । ३८ । तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य सहिताः सर्वदेवताः । प्रययुस्तत्र यत्रासौ त्रितयज्ञः प्रवर्त्तते ॥ ३९ ॥ ते तत्र गत्वा विबुधास्तं कूपं यत्र स त्रितः । ददृशुस्तं महात्मानं दीक्षितं यज्ञकर्मसु । ४० । दृष्ट्वा चैनं महात्मानं श्रिया परमया युतम् । ऊचुश्चाथ महाभागं प्राप्ता भागार्थिनो वयम् ।४१ ।अथाब्रवीदृषिर्देवान् पश्यध्वं मां दिवौकसः । अस्मिन् प्रतिभये कूपे निमग्नं नष्टचेतसम् । ४२ ॥ ततस्त्रितो महाराज भागांस्तेषां यथाविधि । मन्त्रयुक्तान् समददत्ते च प्रीतास्तदाभवन् ॥ ४३ ॥ ततो यथाविधि प्राप्तान् भागान् प्राप्य दिवौकसः । प्रीतात्मानो ददुस्तस्मै वरान् यान् मनसेच्छति ॥ ४४ । स तु वव्रे वरं देवांस्त्रातुमर्हथ मामितः ॥ ॥ ४५ ॥

हे राजा फिर उस त्रितका वह शब्द स्वर्गमें ऐसे पहुंचा जैसे कि ब्रह्मवादियों से कियाहुआ पहुंचताहै । ३५ । इसरीति से उस यज्ञको प्राप्त होनेवाले महात्मा त्रित के यज्ञके वर्त्तमान होनेपर सब स्वर्ग व्याकुल होगया परन्तु कोई कारण नहीं जानागया उसके पीछे देवताओं के पुरोहित बृहस्पतिजी ने भी उस बड़े शब्दको सुनकर । ३६ । सब देवताओं से कहा कि हे देवताओं त्रितकायज्ञ वर्त्तमान उसमेंचलो । ३७ । वह बड़ा तपस्वी क्रोधयुक्त होकर दूसरे देवताओंकोभीउत्पन्न करसक्ता है । ३८ । उनके उस वचनको सुनकर सब देवता वहां गये जहां त्रितका वह यज्ञ वर्त्तमानथा । ३९ । उन देवताओं ने उस कूपमें जाकर जहां वह यज्ञकर्म्मों में दीक्षित त्रित वर्त्तमानथा उस महात्मा को देखा । ४० । बड़ी शोभासे युक्त उस महात्माको देखकर देवतालोग उस महाभाग से बोले कि भाग के चाहनेवाले हम सब देवता वर्त्तमान है ४१ । इसके पीछे वह ऋषि देवताओं से बोला कि हे देवताओ इस भयकारी कूप में डूबाहुआ बुद्धिसे हीन मुझको देखो । ४२ । हे महा राज इसके अनन्तर त्रितने मन्त्रों से युक्त भागोंको विधिपूर्वक उनके अर्थ दिया तब वह प्रसन्न हुये । ४३ । उसके पीछे विधिपूर्वक मिलेहुये भागों को पाकर प्रसन्न चित्त देवताओंने उसको वह वरदिये जिनको कि वह मनसे चाहताथा । ४४ । तब उसने इन वरोंको मांगा कि हे देवताओं प्रथम तो मुझको इस कूप से निकालो

loud sound which reached heaven 35 Trit disturbed heaven with sacrifice but the gods did not know the reason of the disturbance Then Vrihaspati the priest of the gods said, Trit is performing sacrifice let us go there That sage can create other gods in his rage " At this all the gods went to Trit's sacrifice and saw him within the well Then they said to him, ' We are all present here to receive our shares ' 41 The rishi then said to the gods " Look at me within this well ' Then he gave the gods their due shares and they were gratified and gave him the boons which he desired He asked them of the

यश्चेहोपस्पृशेत् कूपे स सोमपगतिं लभेत् ॥ ४६ ॥ तत्रोर्मिमती राजन्नुत्पपात सरस्वती । तया क्षिप्तः समुत्तस्थौ पूजयंस्त्रिदिवौकसः ॥४७॥ तथेति चोक्त्वा विबुधा जग्मू राजन् यथागताः । त्रितश्चाप्यगमत् प्रीतः स्वमेव निलयं तदा ॥४८॥ क्रुद्धः स तु समासाद्य तावृषी भ्रातरौ तदा । उवाच परुषं वाक्यं शशाप च महातपाः ॥ ४९ ॥ पशुलुब्धौ युवां यस्मान्मामुत्सृज्य प्रधावितौ । तस्माद्वृकाकृती रौद्रौ दंष्ट्रिणावभितश्चरौ ॥ ५० ॥ भवितारौ मया शप्तौ पापेनानेन कर्मणा । प्रसवश्चैव युवयोर्गोलाङ्गूलर्क्षवानराः ॥ ५१ ॥ इत्युक्ते तु तदा तेन क्षणादेव विशांपते । तथाभूतावदृश्येतां वचनात् सत्यवादिनः ॥ ५२ ॥ तत्राप्यमितविक्रान्तः स्पृष्ट्वा तोयं हलायुधः । दत्त्वा च विवि

कर रक्षाकरो । ४५ । फिर यह वरदानकरो कि जो इस कूप में स्नान आचमनकरे वह अमृतपान करनेवाले की गतिको पावे । ४६ । हे राजा उस कूपमें तरङ्गोंकी रखनेवाली सरस्वती ऊपर आई उनसे उछलाहुआ वह ऋषि देवताओं को पूजता हुआ ऊपर नियतहुआ ।४७। हे राजा फिर देवता इसप्रकार से कहकर अपनेलोकों को गये तब प्रसन्नचित्त त्रित भी अपने स्थानको आया । ४८ । क्रोधयुक्त बड़े तपस्वी त्रितने उन दोनों ऋषि भाइयों को पाकर कठोर वचनकहे और शापदिया । ४९ । कि जो तुम पशुओं के लोभमें युक्तहोकर मुझको छोड़कर भागआये उस हेतुसे बगले के समान भयानकरूप चारोंओर को घूमनेवाले और डाढ़ रखनेवाले होंगे । ५० । मेरे शापकेद्वारा इसपापकर्म के कारण से तुम ऐसी दशावालेहोगे और तुम दोनों की सन्तान गोलांगूल रीछ और बन्दर होंगी । ५१ । हे राजा तब उसके इसप्रकार कहनेपर उस सत्यवक्ता के कहतेही वह दोनों इसीक्षण में उस रूपवाले दिखाईपड़े । ५२ । बड़ेपराक्रमी बलदेवजीने वहांभी आचमन और स्नान पूर्वक नानाप्रकार के दान देकर ब्राह्मणोंको पूजकर और नदी में वर्तमान उस

---

the following boons :—" Take me out of this well. 45. His second boon was that the water of the well should have the effect of nectar." The waves of the Saraswati entered the well and tossed by them the rishi came up glorifying the gods. The gods went to their own regions, while he took his way home and finding his two brothers, there he was very angry and said, " Because you left me for the sake of cattle you will roam everywhere like greedy birds and will be furnished with fangs. 50, You will thus be transformed by my curse and your progeny will be monkeys and bears. " At this both the brothers were transformed as he had predicted. Baldev sipped water of the well and having bathed in its waters gave the Brahmans large

दान् दायान् पूजयित्वा च वै द्विजान् ॥ ५३ ॥ उदपानञ्च तं दृष्ट्वा प्रशस्य च पुनः पुनः । नदीगतमदीनात्मा प्राप्तो विनशनं तदा ॥ ५४ ॥

इति शल्यपर्वणि गदायुद्धपर्वणि बलदेवतीर्थयात्रायां षट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

वैशम्पायन उवाच । ततो विनशनं राजन् जगामाथ हलायुधः । शूद्राभीरान् प्रति द्वेषाद्यत्र नष्टा सरस्वती ॥ १ ॥ यस्मात् सा भरतश्रेष्ठ द्वेषान्नष्टा सरस्वती । तस्मात्तदृषयो नित्यं प्राहुर्विनशनेति ह ॥ २ ॥ तच्चाप्युपस्पृश्य बलः सरस्वत्यां महाबलः । सुभूमिकं ततोऽगच्छत् सरस्वत्यास्तटे वरे ॥ ३ ॥ तत्र चाप्सरसः शुभ्रा नित्यकालमतन्द्रिताः । क्रीडाभिर्विमलाभिश्च क्रीडन्ति विमलाननाः ॥ ४ ॥ तत्र देवाः सगन्धर्वाः

कूपको देखकर बारम्बार प्रशंसा करके विनशन तीर्थ को यात्राकिया ५४ ॥

अध्याय ३७ ॥

वैशम्पायन बोले हे राजा इसके अनन्तर बलदेवजी उस विनशन तीर्थ को गये जहां पर कि शूद्राभीरों की शत्रुता से सरस्वती गुप्त होगई । १ । इसहेतुसे ऋषियोंने सदैव से उसको विनशन कहा है बड़े बलवान बलदेवजी वहांभी सरस्वती में स्नान आचमन करके । २ । फिर सरस्वती के उत्तम किनारेपर उस सुरभूमिक तीर्थकोगये जहां कि निर्मलमुख निरालस्य अप्सरागण सदैव स्वच्छ क्रियाओं से क्रीडा करती हैं । ४ । हे राजा वहांपर देवता गन्धर्व हरमहीने में उस

donations. Then he went on towards Binashan " 54.

CHAPTER XXXVII

Vaishampayan said, " Baldev then went to Binashan where the Saraswati had disappeared on account of the enmity of Abhirs and the holy place was so named by the rishis. He sipped water there and having bathed in it, he went on to Subhoomak, situated on the bank of the Saraswati where apsaras of beautiful faces always played. Gods and gandharvas go there every month and were seen in large numbers. 5 The gods and pitars amuse themselves there with flow

मासि मासि जनेश्वर। अभिगच्छन्ति तत्तीर्थं पुण्यं ब्राह्मणसेवितम्॥ ५ ॥ तत्रादृश्यन्त गन्धर्वास्तथैवाप्सरसांगणाः। समेत्य सहिता राजन् यथाप्राप्तं यथासुखम्॥ ६ ॥ तत्र मोदन्ति देवाश्च पितरश्च सवीरुधः। पुण्यैः पुष्पैः सदा दिव्यैः कीर्यमाणाः पुनः पुनः ॥ ७ ॥ आक्रीडभूमिः सा राजन् तासामप्सरसां शुभा। सुभूमिकेति विख्याता सरस्वत्यास्तटे वरे ॥ ८ ॥ तत्र स्नात्वा च दत्त्वा च वसु विप्रेषु माधवः। श्रुत्वा गीतञ्च तद्दिव्यं वादित्राणाञ्च निस्वनम्॥ ९। छायाश्च विपुला दृष्ट्वा देवगन्धर्वरक्षसाम् गन्धर्वाणां ततस्तीर्थमगच्छद्रोहिणीसुतः॥ १०॥ विश्वावसुमुखास्तत्र गन्धर्वास्तपसान्विताः। नृत्यवादित्रगीतञ्च कुर्वन्ति सुमनोरमम्॥११॥ तत्र दत्त्वा हलधरो विप्रेभ्यो विविधं वसु। अजाविकं गोखराष्ट्रं सुवर्णं रजतं तथा॥ १२। भोजयित्वा द्विजान् कामैः सन्तर्प्य च महाधनैः। प्रययौ सहितो विप्रैस्तूयमानश्च माधवः॥ १३ ॥ तस्मात् गन्धर्वतीर्थाच्च महाबाहुररिन्दमः। गर्गस्रोतो महातीर्थमाजगामैककुण्डली। १४॥ तत्र गर्गेण वृद्धेन तपसा भावितात्मना। कालज्ञानगतिश्चैव ज्योतिषाञ्च व्यतिक्रमः॥ १५॥ उत्पाता दारुणाश्चैव शुभाश्च जनमेजय। सरस्वत्याः शुभे तीर्थे विहिता वै

ब्राह्मणोंसे सेवित पवित्र तीर्थको जातेहैं उस स्थानपर अप्सरा और गन्धर्वों के समूह दिखाईपड़े। ५। हे राजेन्द्र वहांपर देवता और पितर साथ मिलकर समय पूर्वक सुखको पाकर वीरुधियों समेत सदैव। ६। पवित्र दिव्य पुष्पोंसे वारम्वार युक्तहोकर क्रीडा करते हैं उन अप्सराओं की यह शुभभूमि है और सरस्वती के उत्तम तटपर सुभूमिका नामसे प्रसिद्ध है। ८। बलदेवजी वहां स्नान करके ब्राह्मणों को धनदेकर उस गीत वाद्योंके शब्दोंको सुनकर।९। गन्धर्व राक्षसों की बड़ी २ छायाओंको देखतेहुये गन्धर्वों के तीर्थको गये। १०। वहां प्रीति से युक्त विश्वावसु नाम गन्धर्व बड़े चित्तरोचक गीत वाद्यों को करते हैं। ११। हल धर भी वहां बहुत से ब्राह्मणों को नानाप्रकार के धनों को देकर भेड़ बकरी गौ खच्चर ऊंट और सुवर्ण चांदी आदि को दानकरके बड़ी प्रसन्नता से उत्तम पदार्थों के द्वारा ब्राह्मणों को भोजन कराके बड़ी दक्षिणाओं से तृप्तकर ब्राह्मणों से स्तूयमान गन्धर्व तीर्थ से चले उसके पीछे बलदेवजी गर्गस्रोत तीर्थको गये। १४। हे जनमेजय वहांपर तपसे शुद्ध अन्तःकरण वृद्ध महात्मा गर्गजीने त्रिकाल ज्ञानकी गति के द्वारा नक्षत्रोंका व्यतिक्रम और अशुभ भय

ers The holy place of apsaras on the Saraswati is named Subhoomi Baldev bathed there and gave wealth to Brahmans He heard the songs of dancing of apsaras there and then went on to the holy place of gandharvas There Vishwavasu was singing his cheerful songs. Baldev gave to brahmans many sheep, goats, cows mules and camels and much gold and silver. He then went to Gargsotta where Garg had explained the movement of stars and the appearance of bad omens 16 That holy place is so named after him Rishis of

महात्मना ॥ १६ ॥ तस्य नाम्ना च तत्तीर्थं गर्गस्रोत इतिस्मृतम् । तत्र गर्गं महाभाग
मृषयः सुव्रता नृप । उपासाञ्चक्रिरे नित्यं कालज्ञानं प्रति प्रभो ॥ १७ । तत्र गत्वा महा
राज बलः श्वेतानुलेपनः । विधिवद्धि धनं दत्त्वा मुनीनां भावितात्मनाम् ॥ १८ ॥
उच्चावचांस्तथा भक्ष्यान् द्विजेभ्यो विप्रदाय स । नीलवासास्ततोऽगच्छच्छङ्खतीर्थं महा
यशाः । १९ ॥ तत्रापश्यन्महाशङ्खं महामेरुमिवोच्छ्रितम् श्वेतपर्वतसङ्काशमृषि
सङ्घैर्निषेवितम् । सरस्वत्यास्तटे जातं नगं तालध्वजो बली ॥ २० ॥ यक्षा विद्याधरा
श्चैव राक्षसाश्चामितौजसः । पिशाचाश्चामितबला यत्र सिद्धाः सहस्रशः ॥ २१ ॥ ते
सर्वे ह्यशनं त्यक्त्वा फलं तस्य वनस्पतेः व्रतैश्च नियमैश्चैव काले कालेस्म भुञ्जते । २२ ।
प्राप्तैश्च नियमैस्तैस्तैर्विचरन्तः पृथक् पृथक् । अदृश्यमाना मनुजैर्व्यचरन् पुरुषर्षभ ।
एवं ख्यातो नरपते लोकेऽस्मिन् स वनस्पतिः ॥ २३ । ततस्तीर्थं सरस्वत्याः पावनं
लोकविश्रुतम् । तस्मिंश्च यदुशार्दूलो दत्त्वा तीर्थे यशस्विनी । स ताम्रायसानि भाण्डानि

कारी उत्पातोंको सरस्वतीके शुभ तीर्थपर निर्दिष्ट किया । १६ । उन्हींके नामसे वह तीर्थ गर्गस्रोतनामसे विख्यात है हे प्रभु राजा जनमेजय वहांपर सुन्दर व्रतवाले ऋषिलोग सदैवकाल ज्ञान के निमित्त महात्मा गर्गऋषि के पास वर्तमान रहते थे । १७ । हे राजा श्वेतचन्दन लगानेवाले बलदेवजी वहां जाकर और शुद्ध अन्तःकरणवाले मुनियोंको धनदेकर । १८ । नानाप्रकार के भोजन के पदार्थ ब्राह्मणों को भोजन कराके बड़े यशवान् नीलाम्बरधारी होकर शङ्खतीर्थ को गये । १९। वहांपर महामेरुपर्वतके समान ऊंचे श्वेतपर्व्वत की समान ऋषियों के समूहों से सेवित महाशङ्खनाम वृक्षको उस ताल ध्वजाधारी बलवान् बलदेव जीने देखा जो कि सरस्वतीके किनारेपर था । २० । जहांपर हजारों सिद्ध यक्ष विद्याधर और बड़े तेजस्वी राक्षस और बड़े बलवान् पिशाचादिकों ने ,उस, वृक्ष के फलोंको व्रत और नियमों समेत समय २ पर भोजन किया । २१ । और उन प्राप्त होनेवाले नियमों से पृथक् विचरनेवाले हुये , हे पुरुषोत्तम वह सब मनुष्यों की दृष्टि से गुप्त भ्रमण करनेवाले हुये हे नरोत्तम इस प्रकार से वह वृक्ष इस लोक में विख्यात हुआ । २२ । इसके पीछे वह यादवों में श्रेष्ठ सरस्वती

---

excellent vows lived with Garg to learn the knowledge of t me Bal dev gave great wealth to the brahmans there and having fed them well, he went to the holy place known as Shankh There he saw Shankh, a tree huge as a mountain attended by large numbers of rishis It was situated on the bank of the Saraswati 20 Thousands of Sidhas yakshas vidyadhars, glorious rakshases and powerful pishaches fed on the fruits of that tree and lived there out of the sight of men Thus the tree is known throughout the world. The best of Yadavas gave there many cows and being praised by brahmans

वस्त्राणि विविधानि च ॥२४॥ पूजयित्वा द्विजांश्चैव पूजितस्तपोधनैः । पुण्यं द्वैतवनं राजन्
जगाम हलायुधः ॥२५॥ तत्र गत्वा मुनीन्दृष्ट्वा नानावेशधरान् बलः । आप्लुत्य सलिले
चापि पूजयामास वै द्विजान् ॥ २६ ॥ तथैव दत्त्वा विप्रेभ्यः परिभोगान् सुपुष्कलान् । ततः
प्रायाद्बलो राजन् दक्षिणेन सरस्वतीम् ॥ २७ ॥ गत्वा चैव महाबाहुर्नातिदूरं महा
यशाः । धर्मात्मा नागधन्वानं तीर्थमागमदच्युतः ॥ २८ ॥ यत्र पन्नगराजस्य वासुकेः
सन्निवेशनम् । महाद्युतेर्महाराज बहुभिः पन्नगैर्वृतम् । ऋषीणां हि सहस्राणि तत्र
नित्यं चतुर्दश ॥ २९ ॥ तत्र देवाः समागम्य वासुकिं पन्नगोत्तमम् । सर्वपन्नगराजान
मभ्यषिञ्चन् यथाविधि । पन्नगेभ्यो भयं तत्र विद्यते न स्म कौरव ॥ ३० ॥ तत्रापि
विधिवद्दत्त्वा विप्रेभ्यो रत्नसञ्चयान् । प्रायात् प्राचीं दिशं तत्र तथा तीर्थान्यनेकशः ।
सहस्रशतसंख्यानि प्रथितानि पदे पदे ॥ ३१ ॥ आप्लुत्य तेषु तीर्थेषु यथोक्तं तत्र
चर्षिभिः । कृत्वोपवासनियमं दत्त्वा दानानि भूरिशः ॥ ३२ ॥ अभिवाद्य मुनींस्तांस्तु

के उन विख्यात पवित्र तीर्थ को जाकर तीर्थपर गौओं को दानकरके तांबे छोहे के वर्तमान और नानाप्रकार के वस्त्रों समेत ब्राह्मणों को पूजकर और आप भी ब्राह्मणों से स्तुतिमान बलदेवजी द्वैतवन में गये । २५ । वहां जाकर बलदेवजी ने नानाप्रकारकी पोशाकधारी मुनियोंको देखकर जलमें स्नानकर ब्राह्मणों को पूज उन ब्राह्मणोंके अर्थ बड़े २ अभीष्ट पदार्थों को दिया फिर बलदेवजी सरस्वती के दक्षिणओर चले । २७ । और थोड़ी दूरजाकर धर्मात्मा अविनाशी ने उस नागधन्वानाम तीर्थकोपाया जहां कि सर्पोंके राजा महातेजस्वी राजावासुकी का स्थान बहुतसे सर्पोंसे व्याप्तथा वहांही चौदहहजार ऋषियोंनेभी निवास कियाथा । २९ । जहां देवताओंने इकट्ठेहोकर सर्पोंमें उत्तम सर्पों के राजा वासुकि को विधिपूर्वक अभिषेक कराया हे कौरव वहां उनको सर्पों से भय नहीं हुआ । ३० । वहांभी ब्राह्मणों के अर्थ रत्नसमूहों को विधिपूर्वक देकर पूर्व दिशा को गये वहां पदपदपर लाखों तीर्थोंको देखा ।३१। और जैसे जैसे ऋषियोंनेकहा उसी उसीप्रकारसे उन तीर्थों में स्नानकर उपवास नियमादिक करके सब प्रकार के दानोंको देके । ३२ । उन तीर्थवासी मुनियोंको दण्डवत् करके मार्गपूछकर वहां

---

went to Dwait forest. There he saw many munis and gave them the objects of their desire. Then he went to the south of the Saraswati and reached the holy place known as Nag-dhanwa, the seat of glorious Vasuki the prince of snakes, where fourteen thousand munis dwelt and where that prince of snakes was anointed by gods. There they had no fear from snakes 30. Having given large donations to brahmans, they went towards the East. On their way they found numerous holy places at every step He observed vows and bathed at the places pointed out by rishis, still going on eastward on the

तत्र तीर्थनिवासिनः । दक्षिणाशां प्रययौ यत्र पूर्वा सरस्वती ॥ ३३ ॥ प्रांमुखी वै निवृत्ते वृष्टिर्वातहता यथा । ऋषीणां नैमिषेयाणामवेक्षार्थं महात्मनाम ॥३४ ॥ निवृत्तान्तां सरिच्छ्रेष्ठां तत्र दृष्ट्वा तु लांगली । बभूव विस्मितो राजन् बलः श्वेतानुलेपनः ॥ ३५ ॥ जनमेजय उवाच । कस्मात् सरस्वती ब्रह्मन् निवृत्ता प्रांमुखी ततः । व्याख्यातुमेतदिच्छामि सर्वमध्वर्युसत्तम ॥ ३६ ॥ कस्मिंश्चित् कारणे तत्र विस्मितो यदुनन्दन । निवृत्ता हेतुना केन कथमेव सरिद्वरा ॥३७॥ वैशम्पायन उवाच । पूर्वं कृतयुगे राजन् नैमिषेयास्तपस्विनः । वर्त्तमाने सुविपुले सत्रे द्वादश वार्षिके ॥ ३८ ॥ ऋषयो बहवो राजंस्तत् सत्रमभिपेदिरे । उषित्वा च महाभागास्तस्मिन् सत्रे यथाविधि ॥३९॥ निवृत्ते नैमिषेये वै सत्रे द्वादशवार्षिके । आजग्मुर्ऋषयस्तत्र बहवस्तीर्थकारणात् ॥ ४० ॥ ऋषीणां बहुलत्वात्तु सरस्वत्या विशाम्पते । तीर्थानि नगरायन्ते कूले वै दक्षिणे तदा ॥ ४१ ॥ समन्तपञ्चकं यावत्तावत्ते द्विजसत्तमाः । तीर्थलोभान्नर

से सरस्वतीके पूर्वमुख होकर । ३३ । फिर ऐसे लौटे जैसे कि वायु से प्रेरितबादल अर्थात् नैमिषवासी महात्मा ऋषियों के दर्शनोंके निमित्तलौटे हे राजा श्वेतचन्दन से लिप्त शरीर हलायुध बलदेवजी वहांपर उस नदियोंमें श्रेष्ठ लौटी हुई सरस्वतीको देखकर अत्यन्त आश्चर्ययुक्त हुये । ३५ । जनमेजय ने पूछा कि हे ब्राह्मण सरस्वती किसहेतुसे पूर्वाभिमुख लौटी है अध्वर्यों में श्रेष्ठमैं इस सब वर्णन को सुना चाहताहूं । ३६ । वहांपर यदुनन्दन बलदेवजी किसकारण से आश्चर्ययुक्त हुये और वह उत्तमनदी किसहेतुसे और किसप्रकार इसरीति से लौटी ।३७। वैशम्पायन बोले कि हे राजा पूर्व सतयुग में नैमिषवासी बहुततपस्वी ऋषि बारहवर्षके बड़े यज्ञके वर्त्तमानहोनेपर । ३८ । उस यज्ञमें आये वह महाभाग उस यज्ञमें विधिपूर्वक निवासकरके । ३९ । नैमिषारण्यमें बारहवर्ष के यज्ञ समाप्त होनेपर तीर्थ के कारण से वहांगये । ४० । हे राजा तब ऋषियों की अधिकताके सरस्वती के दक्षिण तटके तीर्थों कीसंख्या न होसकी ।४१। हे नरोत्तम ब्राह्मण

bank of the Saraswati. Then they turned, as clouds pushed by the wind, to see the rishis of Naimish. He was much astonished to see the turnings of the Saraswati." 35. Janmeyaya said, "Why did the Saraswati turn Eastwards? I wish to hear from you, best of brahmans. What caused the wonder of Baldev at the turning of the Saraswati?" Vaishampayan said, "In Satyug, many rishis of Naimish attended a twelve-year sacrifice which was then being performed They staid there for twelve years and went away at the close of the sacrifice to the holy place there. 40. There was no count of holy places on the right bank of the Saraswati As far as Samant panchak the rishis gathered on the bank of the Saraswati and filled the directions with the sounds of the Vedic hymns The

व्याघ्र नद्यास्तीर समाश्रिता ॥ ४२ । जुहुवता तत्र तेषान्तु मुनीनां भावितात्मनाम् । स्वाध्यायेनातिमहता वभूवु पूरिता दिश ॥ ४३ ॥ अग्निहोत्रैस्ततस्तेषा हूयमानैर्महात्मनाम् । अशोभत सरिच्छ्रेष्ठा दीप्यमानैः समन्तत ॥ ४४ ॥ वालखिल्या महाराज अश्मकुट्टाश्च तापसा । दन्तोलूखलिनश्चान्ये सम्प्रख्यानास्तथापरे ॥ ४५ ॥ वायुभक्षा जलाहारा पर्णभक्षाश्च तापसा । नानानियमयुक्ताश्च तथा स्थण्डिलशायिन ॥ ४६ ॥ आसन् वै मुनयस्तत्र सरस्वत्या समीपत । शोभयन्त सरिच्छ्रेष्ठा गङ्गामिव दिवौकस ॥ ४७ ॥ शतशश्च समापेतुर्ऋषयस्तत्र याजिन । तेऽवकाश न ददृशु सरस्वत्या महाव्रता ॥ ४८ ॥ तता यज्ञोपवीतैस्ते तत्तीर्थं निर्मिमाय वै । जुहुवुश्चाग्निहोत्रांश्च चक्रुश्च विविधा क्रिया ॥ ४९ ॥ ततस्तमृषिसघात निराश चिन्तयान्वितम् । दर्शयामास राजेन्द्र तेषामर्थे सरस्वती ॥ ५० ॥ तत कुञ्जान् बहून् कृत्वा सन्निवृत्ता सरिद्वरा । ऋषीणां पुण्यतपसां कारुण्याज्जनमेजय ॥ ५१ ॥ ततो निवृत्य राजेन्द्र तेषामर्थे सरस्वती । भूय प्रतीच्यभिमुखी प्रसुस्राव सरिद्वरा ॥ ५२ । अमोघागमन कृत्वा तेषां

समन्तपचक है वहांतक नद उत्तम ब्राह्मण तीर्थ के लोभमे नदी के किनारे पर निवासीहुये । ४२ । वहांपर उन हवनकरनेवाले शुद्ध अन्तःकरणवाले मुनियोंके वडे वेदपाठ से दिशा पूर्णहोगई । ४३ । वहांपर उन महात्माओं केकियेहुये प्रकाशित अग्निहोत्रों से वह उत्तमनदी चारोंओर से शोभायमान हुई । ४४ । हे महाराज वालखिल्य अश्मकुट दन्तोलूखली प्रसंख्यान ।४५ वायुभक्षी जलाहारीऔरवृक्षों के पत्ते खानेवाले नानाप्रकार के नियमों से युक्त मैदान में सोनेवाले तपस्वी । ४६ ।मुनिसरस्वती के सम्मुख ऐसे ठहरेहुये थे जैसे कि नादेयों में श्रेष्ठ श्रीगंगा जी को शोभायमान करते देवताहोते हैं ।४७ । यज्ञ से पूजन करनेवाले सैकड़ों ऋषिआये उन बड़ेव्रतवालों ने सरस्वती के अवकाशको नहीं देखा । ४८ । इसके पीछे उन ऋषियोंने यज्ञोपवीतों से तीर्थ को रचकर अग्निहोत्रादिक अनेक प्रकारकी क्रियाओं को किया । ४९ । हे राजेन्द्र इसके पीछे सरस्वतीने उन्हीं की प्रसन्नताके लिये उस निराश चिन्तामे युक्त ऋषि समूहको अपना दर्शन दिया । ५० । हे जनमेजय इसके पीछे वह श्रेष्ठ नदी पवित्र तपकरनेवाले ऋषियोंकीदया से बहुत कुञ्जोंको करके लौटी ।५१। हे राजेन्द्र इसीहेतुसे वह श्रेष्ठ सरस्वतीउनके

banks were illumined by sacrifice Balkhilyas, Asmkoot Dantolukh alis Prasankhyans living on air, water and leaves of plants, vow observing munis, slept on open ground at the bank of the Saraswati as gods embellish the banks of the Ganges, 47, Thousands of rishis, who had come to the sacrifice, did not see the Saraswati They poured libations over the fire here and there Then Saraswati appeared to them 50. The Saraswati turned to them in many winding corners and flowed towards the west for their sake, saying, 'I go back

भूयो प्रेजागमदहम् । इत्युक्त्वं महत्कर्मके तदा राजनमहानदी ॥ ५३ ॥ एवं स कुञ्जो राजन् वै नैमिषीय इति श्रुतः । कुरुक्षेत्रे कुरुश्रेष्ठ कुरुष्व महतीं क्रियाम् ॥ ५४॥ तत्र कुञ्जान् बहून् दृष्ट्वा निवृत्तां च सरिद्वराम् । बभूव विस्मयस्तत्र रामस्याथ महात्मनः ॥ ५५ ॥ उपस्पृश्य तु तत्रापि विधिवद्यदुनन्दन । दत्त्वा दायान् द्विजातिभ्यो भाण्डानि विविधानि च ॥ ५६ ॥ भक्ष्य भोज्यञ्च विविधं ब्राह्मणेभ्य प्रदाय च । ततः प्रायाद्धली राजन् पूज्यमानो द्विजातिभिः ॥ ५७ ॥ सरस्वतीतीर्थवरं नानाद्विजगणायुतम् । बदरेंगुदकाश्मर्य्यप्लक्षाश्वत्थविभीतकैः ॥ ५८ ॥ कक्कोलैश्च पलाशैश्च करीरैः पीलुभिस्तथा । सरस्वतीतीररुहैस्तरुभिर्विविधैस्तथा ॥ ५९ ॥ करूषकवनैश्चैव बिल्वैराम्रातकैस्तथा । अतिमुक्तकषण्डैश्च पारिजातैश्च शोभितम् ॥ ६० ॥ कदलीवनभूयिष्ठं दृष्टिकान्तं मनोहरम् । वाय्वम्बुफलपर्णादैर्दन्तोलूखलिकैरपि ॥ ६१ ॥ तथाश्मकुट्टैर्वानेयैर्मुनिभिर्बहुभिर्वृतम् । स्वाध्यायघोषसंघुष्टं मृगयूथशताकुलम् ॥ ६२ ॥ अहिंस्रैर्धर्म्म

लिये लौटकर फिर पश्चिमाभिमुख जारी हुई । ५३ । और कहा कि मैं तुम्हारे आने को सफल करके फिर जाती हूं यह उस महानदी ने बड़ा अपूर्व कर्मकिया ।५३ । हे राजा इस प्रकार से वह कुंज नैमिषी नामसे प्रसिद्ध है हे कौरवोत्तम तुम इस कुरुक्षेत्रमें बड़ी क्रियाको करो । ५४ । वहां बहुत कुंजों समेत लौटीहुई सरस्वती को देखकर उन महात्मा बलदेवजी को बड़ा आश्चर्यहुआ । ५५ । उस तीर्थमेंभी यदुनन्दन बलदेवजी विधिपूर्वक स्नानकर ब्राह्मणों को नाना प्रकारके दान देकर नानाभक्ष्य भोज्य पदार्थों से ब्राह्मणोंको तृप्त करके और ब्राह्मणोंकोसे पूजितहोकर चले । ५७ । फिर हलधारी बलदेवजी उस सप्तसारस्वत तीर्थ को गये जोकि सरस्वती के तीर्थोंमें श्रेष्ठ नानाप्रकारके पक्षीगणों से युक्त बदरी, इंगुद, काश्मर्य्य प्लक्ष पीपल, विभीतक, कंकोल, पलाश, करील, पीलू और सरस्वती के तीर्थपर उत्पन्न होनेवाले नानाप्रकार के वृक्षों से शोभित । ६० । करूषवन, बिल्व आम्रातक, अतिमुक्तक, अखण्ड और पारिजातकों से शोभित केलोंके बहुतवन रखने वाला प्रिय देखने के योग्य चित्तरोचक वायु जल फल और पत्तों के खानेवाले दांतों के उलूखल रखनेवाले । ६१ । पाषाणपर कूटनेवाले बनवासी बहुतसे मुनियों से युक्त वेदध्वनि से शब्दायमान मृगों के, अनेक यूथों से व्याकुल । ६२ । हिंसा

after making your coming fruitful." The river thus did a wonderful deed. Its turning is known as Naimishi and you will do a great deed in Kurukshetra, Baldav was much astonished to see those windings of the Saraswati, 55. There too, he gave large donations, and food to brahmans who blessed him There he went to Sapt-sarswat, the best of the holy places on the Saraswati, abounding in birds *and over grown with large trees bearing fruits and flowers*, 60 There is a large forest of trees, with good air and water, where many sages,

परमैर्नृभिरधर्मसेवितम् । सप्तसारस्वतं तीर्थमाजगाम हलायुधः । यत्र मङ्कणकः सिद्धस्तपस्तेपे महामुनिः ॥ ६३ ॥

इतिगदायुद्धपर्वणि बलदेवतीर्थयात्रायां सारस्वततीर्थोपाख्याने सप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ।

जनमेजय उवाच । सप्तसारस्वतं कस्मात् कश्च मङ्कणको मुनिः । कथं सिद्धो भगवान् कश्चास्य नियमोऽभवत् । १ । कस्य वंशे समुत्पन्नः किञ्चाधीतं द्विजोत्तमः । एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं विधिवद्द्विजसत्तम ॥ २॥ वैशम्पायन उवाच । राजन् सप्त सरस्वत्यो याभिर्व्याप्तमिदं जगत् । आहूता बलवद्भिर्हि तत्र तत्र सरस्वती ॥ ३ ॥

रहित और धर्मको उत्तम जाननेवाले मनुष्यों से सेवितथा और जहांपर महामुनि सिद्ध मंकणक ने तपस्या करीथी ६३ ॥

अध्याय ३८।

जनमेजय बोले कि सप्तसारस्वत नाम किसहेतुसे हुआ और मङ्कणक नाम मुनि कौनथा और वह समर्थ और सिद्ध कैसेहुआ उसका नियम क्याथा । १ । हे ब्राह्मणोत्तम वह किसके कुल में उत्पन्न होकर क्या क्या पढ़ा था इसको आप विधिपूर्वक मुझसे वर्णन कीजिये । २ । वैशम्पायन बोले हे राजा सात सरस्वती हैं जिनसे कि यह जगत् व्याप्त है बलवानों से बुलाईहुई सरस्वती जहां तहां प्रकट हुई । ३ । उनके नाम यहहैं सुप्रभा, कांचनाक्षी, विशाला मनोरमा, ओघवती,

living on fruits and roots, live. It rings with Vedic hymns and abounds in deer and harmless men, where the sage Mankanak performed his penance." 63.

CHAPTER XXXVIII

Janmejaya said, "Why was Sapt-Saraswat so named, who was Mankanak, how did he become great and what was his rule of conduct? What family did he belong to and what were his acquirements? Pray tell me all this in detail." Vaishampayan said, "There are seven Saraswatis in the world invoked here and there by great men. They are known as Suprabha, Kanchanakshi, Vishala, Manorama, Oghwati /Suru and Vinodaka. 4. During the great sacrifice of Brahma,

सुप्रभा काञ्चनाक्षी च विशाला च मनोरमा । सरस्वती चौघवती सुरेणुर्विमलोदका ॥ ४ ॥ पितामहस्य महतो वर्त्तमाने महामखे । विनते यज्ञवाटे वै संसिद्धेषु द्विजातिषु ॥ ५ ॥ पुण्याहघोषैर्विमलैर्वेदानां निनदैस्तथा । देवेषु चैव व्यग्रेषु तस्मिन् यज्ञविधौ तदा ॥ ६ ॥ तत्र चैव महाराज दीक्षिते प्रपितामहे । यजतस्तस्य सत्रेण सर्वकामसमृद्धिना ॥ ७ ॥ मनसा चिन्तिता ह्यर्था धर्मार्थकुशलैस्तदा । उपतिष्ठन्ति राजेन्द्र द्विजातीस्तत्र तत्र ह ॥ ८ ॥ जगुश्च तत्र गन्धर्वा ननृतुश्चाप्सरोगणाः । वादित्राणि च दिव्यानि वादयामासुरञ्जसा ॥ ९ ॥ तस्य यज्ञस्य सम्पत्त्या तुतुषुर्देवता अपि । विस्मयं परमं जग्मुः किमु मानुषयोनयः ॥ १० ॥ वर्त्तमाने तथा यज्ञे पुष्करस्थे पितामहे । अब्रुवन्नृषयो राजन्नायं यज्ञो महागुणः ॥ ११ ॥ न दृश्यते सरिच्छ्रेष्ठा यस्मादिह सरस्वती । तच्छ्रुत्वा भगवान् प्रीतः सस्माराथ सरस्वतीम् ॥ १२ ॥ पितामहेन यजता आहूता पुष्करेषु वै । सुप्रभा नाम राजेन्द्र नाम्ना तत्र सरस्वती ॥ १३ ॥ तां दृष्ट्वा मुनयस्तुष्टास्त्वरायुक्तां सरस्वतीम् । पितामहं मानयन्तीं क्रतुं ते बहु मेनिरे ॥ १४ ॥ एवमेषा सरित्

सुरेणु, विमोलदका । ४ । ब्रह्माजीका बड़ा यज्ञ वर्त्तमान होने और यज्ञके विस्तृत बाड़ेमें निर्म्मल पुण्याहवाचन के शब्द वेदध्वनियों समेत ब्राह्मणोंके सिद्धहोने और यज्ञ विधिमें देवताओंके सावधान होने । ६ । और वहां ब्रह्माजी के दीक्षित होनेपर सब अभीष्ट वस्तुओं से ऋद्धियुक्त यज्ञकेद्वारा उन ब्रह्माजीको पूजन करते । ७ । धर्म्म अर्थमें कुशल पुरुषोंके मनसे विचारेहुये अर्थ जहां तहां ब्राह्मणों के पास निपतहुये हे राजेन्द्र तब वहां गन्धर्वों ने गाया अप्सरागणों ने नृत्य किया और वेगसेसे दिव्य बाजों को बजाया । ९ । उस यज्ञकी ध्वनि आदिकसे देवता दिकभी प्रसन्नहुये तो मनुष्य कैसे न प्रसन्न होगा ।१०। हे राजा इसीप्रकार पुष्कर जीमें ब्रह्माजी के नियत होने और यज्ञके वर्त्तमान होनेपर ऋषि बोले कि यह यज्ञ बड़े विशेषवाला नहीं है । ११ । इसहेतुसे कि यहां नदियों में श्रेष्ठनदी सरस्वती दिखाई नहीं देती तब भगवान ब्रह्माजीने उनके वचनको सुनकर सरस्वतीको स्मरण किया । १२ । हे राजेन्द्र वहां पुष्करों में यज्ञ करनेवाले ब्रह्माजीजीबुलाई हुई सरस्वती सुप्रभानाम प्रकट हुई । १३ । मुनिलोग उस शीघ्रता से युक्त ब्रह्माजी की प्रतिष्ठा करनेवाली सरस्वतीको देखकर प्रसन्नहुये और उस यज्ञको भी बड़ा माना । १४ । इस प्रकार यह नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वती ब्रह्माजीकी और बुद्धिमान्

when the Vedic hymns were sung by brahmans and the gods partook of Brahma's sacrifice and paid their respect to him, the gandharvas sang and apsaras danced and played musical instruments. Gods and men were pleased with those sounds. 10. When Brahma was performing sacrifice at Pushkar the rishis said, " This sacrifice of yours is not a wonder, because we donot see Saraswati here. " At this Brahma invoked Saraswati and she came there under the name of Suprabha

श्रेष्ठा पुष्करेषु सरस्वती । पितामहार्थं सम्भूता तुष्ट्यर्थञ्च मनीषिणाम् ॥ १५॥ नैमिषे मुनयो राजन् समागम्य समासते । तत्र चित्रा कथा ह्यासन् वेदं प्रति जनेश्वर ॥१६॥ यत्नते मुनयो ह्यासन् नानास्वाध्यायवेदिन । ते समागम्य मुनय सस्मरुर्वै सरस्वतीम् ॥१७॥ सा तु ध्याता महाराज ऋषिभि सत्रयाजिभि । समागताना राजेन्द्र सहायार्थं महात्मनाम् ॥ १८ ॥ आजगाम महाभागा तत्रपुण्या सरस्वती । नैमिषे काञ्चनाक्षी तु मुनीना सत्रयाजिनाम् ॥ १९ ॥ आगता सरिता श्रेष्ठा तत्र भारत पूजिता । गयस्य यजमानस्य गयेष्वेव महाक्रतुम् । २० ॥ आहूता सरिता श्रेष्ठा गययज्ञे सरस्वती । विशाला ता गयेष्वाहुर्ऋषय सशितव्रता ॥२१ ॥ सरित्सा हिमवत्पार्श्वात् प्रसुता शीघ्रगामिनी । औद्दालके तथा यज्ञे यजतस्तस्य भारत ॥ २२ ॥ समेते सर्वत स्फीते मुनीना मण्डले तदा । उत्तरे कोशलाभागे पुण्ये राजन्महात्मन ॥ २३ ॥ उद्दालकेन यजता पूर्वं ध्याता सरस्वती । आजगाम सरित्श्रेष्ठा त देशमृषिकारणात् ॥ २४ ॥ पूज्य

ऋषियोंकी प्रसन्नताके लिये प्रकटहुई तब सब मुनिलोग नैमिषमें इकट्ठेहोकर, बैठगये और वेदके विषयमें अपूर्वकथाहोनेलगीं १६।हेराजा जहांपर अनेक प्रकार की ऋचा जाननेवाले वह मुनि बैठेथे उनमुनियोंने मिलकर सरस्वतीको स्मरण किया। १७। तब यज्ञोंसे पूजन करनेवाले ऋषियों से ध्यानकी हुई धर्मकी वृद्धिका श्रेष्ठ वह महा भाग काञ्चनाक्षी नाम सरस्वती इकठे होनेवाले महात्मा ऋषियों की सहायता के निमित्त वहां नैमिष में आपहुंची और यज्ञसे पूजन करनेवाली मुनियों के आगे प्रकटहुई । १९। । अर्थात् वह नदियोंमें श्रेष्ठ महापूजित नदी वहांपर आई इसके पीछे वह श्रेष्ठ नदी गयदेशमें बड़े यज्ञों से पूजन करनेवाले राजा गयकी बुलाई हुई गयके यज्ञ में प्रकट हुई तेजव्रत ऋषियों ने उस गयकी बुलाईहुई सरस्वती को विशाला कहा । २१ । वह शीघ्र चलनेवाली नदी हिमाचलकी कुक्षसे उत्पन्न हुई है भारतवर्षी इसीप्रकार उस पूजन करनेवाले औद्दालक के यज्ञ में । २२ । सब ओरसे वृद्धिपूर्वक इकट्ठे होनेवाले मुनियों के मण्डल में कोशलदेश के पवित्र भागपर महात्मा । २३ । पूजन करनेवाले औद्दालकसे ध्यान की हुई सरस्वती उस ऋषि के निमित्त से उसदेशमें आपहुची । २४ । जो कि केवल मृगचर्मधारी

The Munis were much pleased at the sight of her and eulogised the sacrifice Thus Saraswati the best of rivers appeared there to please the wise sage who sat in Naimish and told many things about the Vedas. The great rishis, learned in the Vedas, sitting there, invoked the Saraswati and she came to their help by the name of Kanchanakshi 19, Then she was invoked by Prince Gaya at this sacrifice and was called Vishala. This rapid river came out of the Himalayas. Similarly, in the sacrifice of Auddalak the rishis invoked her in the land of Kosal and she came there. 24 It was attended by munis wearing

माना। मुनिगणैर्वल्कलाजिनसंवृतैः । मनोरमेति विख्याता सा हि तैर्मनसा कृता ॥ २५ ॥ सुरेणुर्ऋषभे द्वीपे पुण्ये राजर्षिसेविते ॥ २६ ॥ कुरोश्च यजमानस्य कुरुक्षेत्रे महात्मनः । आजगाम महाभागा सरिच्छ्रेष्ठा सरस्वती ॥ २७ ॥ ओघवत्यपि राजेन्द्र वसिष्ठेन महात्मना । समाहूता कुरुक्षेत्रे दिव्यतोया सरस्वती । २८ ॥ दक्षेण यजता चापि गङ्गाद्वारे सरस्वती । सुरेणुरिति विख्याता प्रसृता शीघ्रगामिनी ॥ २९ ॥ विमलोदा भगवती ब्रह्मणा यजता पुनः । समाहूता ययौ तत्र पुण्ये हैमवते गिरौ ॥ ३० ॥ एकीभूतास्ततस्तास्तु तस्मिंस्तीर्थे समागताः । सप्तसारस्वतं तीर्थं ततस्तत् प्रथितं भुवि ॥ ३१ ॥ इति सप्त सरस्वत्यो नामतः परिकीर्तिताः । सप्तसारस्वतञ्चैव तीर्थं पुण्यं तथा स्मृतम् ॥३२ ॥ शृणु मङ्कणकस्यापि कौमारब्रह्मचारिणः । आपगामवगाढस्य राजन् प्रक्रीडितं महत् ॥ ३३ ॥ दृष्ट्वा यदृच्छया तत्र स्त्रियमम्भसि भारत । स्नायन्तीं रुचिरापाङ्गीं दिग्वाससमनिन्दिताम् । सरस्वत्यां महाराज चस्कन्दे बीजमम्भसि ॥ ३४ ॥ तद्रेतः स तु जग्राह कलशे वै महातपाः । सप्तधा प्रवि-

मुनियों के समूहों से पूजित थी उनके मनसे प्रकटकी हुई वह सरस्वती मनोरमा नाम से प्रसिद्धहुई। २५। यज्ञकरनेवाले महात्मा कुरुके इस कुरुक्षेत्र में जो कि राजऋषियों से सेवित पवित्र और उत्तम द्वीपमें वर्त्तमान है वहां सुरेणु नाम महा भाग सरस्वती आई। २७। हे राजा महात्मा वशिष्ठजी से बुलाई हुई दिव्य जल रखनेवाली ओघवती नाम सरस्वती कुरुक्षेत्र में प्रकटहुई। २८। और गंगाद्वारपर यज्ञ करनेवाले दक्षसे बुलाई हुई शीघ्रगामी सरस्वती सुरेणु नाम से प्रसिद्धहुई। २९। फिर यज्ञकरनेवाले ब्रह्माजीसे बुलाईहुई विमलोदानाम भगवती सरस्वती पवित्र हिमाचल पर्वतपर गई। ३०। फिर सब एकत्रहोकर उस तीर्थपर आईं इसीसे वह तीर्थ इस पृथ्वीपर सप्तसारस्वत नाम से विख्यात हुआ। ३१। यह सातों सरस्वती नामों समेत वर्णनकरीं इस प्रकारसे वह पवित्र तीर्थ सप्त सारस्वत नामसे विख्यात किया गया है। ३२। हे राजा बाल्यावस्था से ब्रह्मचारी नदी के जल में स्नान करनेवाले मङ्कणकनाम ऋषिकेभी उत्तम चरित्रको सुनो। ३३। हेभरत वंशी महाराज किसीसमय वहां दैवइच्छासे जलमें स्नान करनेवाली एक अति मनोहर श्रेष्ठ नेत्रवाली निर्दोष नंगीस्त्रीको देखकर सरस्वती के जलमें इनका वीर्य

deer skins, and invoked by them she was called Manorama. In the sacrifice of Kuru at Kurukshetra, attended by royal sages, holy and good, Saraswati appeared under the name of Surenu. Invoked by Vashisth the Saraswati came under the name of Oghwati, Invoked by Daksh at Gangadwar, Saraswati was known as Surenu. Invoked by Brahma Saraswati appeared as Bimaloda on the Himalayas. 30. They all came together at that holy place and therefore it was known as Sapt-Saraswati. The seven saraswatis and their names are men-

मागन्तु कलसस्थं जगाम ह ॥ ३५ ॥ तत्रर्षयः सप्त जाता जज्ञिरे मरुतां गणाः । वायुवेगो वायुबलो वायुहा वायुमण्डलः । ३६ ॥ वायुज्वालो वायुरेता वायुचक्रश्च वीर्यवान् । एव मेते समुत्पन्ना मरुतां जनयिष्णवः ॥ ३७ ॥ इदमत्यद्भुतं राजन् शृण्वाश्चर्यतरं भुवि । महर्षेश्चरितं यादृक् त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ॥ ३८ ॥ पुरा मङ्कणकः सिद्धः कुशाग्रेणेति विश्रुतम् । क्षतः किल करे राजंस्तस्य शाकरसोऽस्रवत् ॥३९ ॥ स वै शाकरसं दृष्ट्वा हर्षाविष्टः प्रनृत्तवान् । ततस्तस्मिन् प्रनृत्ते वै स्थावरं जङ्गमञ्च यत् । प्रनृत्तमुभयं वीर तेजसा तस्य मोहितम ॥ ४० ॥ ब्रह्मादिभिः सुरै राजन्नृषिभिश्च तपोधनैः विज्ञप्तो वै महादेव ऋषेरर्थे नराधिप । नायं नृत्ये यथा देव तथा त्वं कर्तुमर्हसि ॥ ४१॥ ततो देवो मुनिं दृष्ट्वा हर्षाविष्टमतीव ह । सुराणां हितकामार्थं महादेवोऽभ्यभाषत

गिरपड़ा । ३४ । फिर उस बड़े तपस्वीने, उस वीर्य को कलशमें ,रखदिया फिर कलशमें नियत उस वीर्य ने सातभागों को पाया । ३५ । अर्थात् उसमें वह सात ऋषि उत्पन्नहुये जिन्होंने मरुद्गणों में अवतार लियाथा उनके नाम यहहैं वायुवेग, वायुबल, वायुहा, वायुमण्डल । ३६ । वायुज्वाल, वायुरेता और पराक्रमी वायुचक्र इसप्रकार मरुतोंके यह ऋषि उत्पन्नहुये, ।३७। हे राजेन्द्र पृथ्वीपर बड़े आश्चर्यकारी उस महर्षिके चरित्रको सुनो जो कि तीनोंलोकों में विख्यात है । ३८ । हे राजा निश्चय करके पूर्व समय में मंकणक नाम सिद्ध कुशाग्रों की नोकसे घायल हुआ था तब उसके हाथसे शाकरस टपकाथा यह सुनागया ३९। वह ऋषि अपने हाथमें टपकेहुये शाकरस को देखकर प्रसन्नता से नृत्य करनेलगा हे वीर फिर उसऋषिके नृत्य करनेपर सब संसारके जड़ चैतन्यजीव उसके तेजसे नृत्य करनेलगे । ४० । हे राजा तब ब्रह्मादिक देवता और तपोधन ऋषियोंने महादेवजीसे प्रार्थनाकी कि हेदेवताओंके हेदेवता जैसे यह ऋषि नृत्यको न करे वही आप उपाय करनेको योग्यहो । ४१ । इसके पीछे देवता महादेवजी मुनिको अत्यन्त

tioned here and the holy place is known as Sapt saraswat on account of them. Now hear the exploits of Mankanak : seeing a naked woman of charming appearance and beautiful eyes, his semen dropped down in water. The rishi kept it in a vessel and it was divided into seven portions. 35. The seven rishis who were born among Marutas were the issue and are known as Vayuveg, Vayuval, Vayuha Vayumandal, Vayujwal, Vayureta and Vayuchakra. Now hear more of that rishi's deeds which are known throughout the three worlds. The sage Mankanak pricked his hand with the point of kusha grass and vegetable juice dropped out of the wound. Seeing that sap come out of it, the rishi danced with rapture and all the the movables and immovables of the world did the same. 40. Brahma and other rishis begged Mahadev to stop his dance. For the good of the gods, Mahadev

॥ ४२ ॥ ईर्ष्यो ब्राह्मण धर्मज्ञ किमर्थं नृत्यते भवान् । हर्षस्थानं किमर्थंच तवेदमधिकं
मुने । तपस्विनो धर्मपथे स्थितस्य द्विजसत्तम ॥ ४३ ॥ ऋषिरुवाच । किमपश्यसि
मे ब्रह्मन् कराच्छाकरसं स्रुतम । यं दृष्ट्वाहं प्रनृत्तो वै हर्षेण महता विभो ॥ ४४ ॥ तं
प्रहस्याब्रवीद्देवो मुनिं रागेण मोहितम् । अहं न विस्मयं विप्र गच्छामीति प्रपश्य माम
॥ ४५ ॥ एवमुक्त्वा मुनिश्रेष्ठं महादेवेन धीमता । अंगुल्यग्रेण राजेन्द्र स्वांगुष्ठस्ताडितो
भवत् ॥ ४६ ॥ ततो भस्म क्षताद्राजन्निर्गतं हिमसन्निभम् । तद्दृष्ट्वा व्रीडितो राजन्
स मुनिः पादयोर्गतः ॥ ४७ ॥ मेने देवं महादेवमिदञ्चोवाच विस्मितः । नान्यं देवा
दहं मन्ये रुद्रात् परतरं महत् ॥ ४८ ॥ सुरासुरस्य जगतो गतिस्त्वमसि शूलधृक् ।
त्वया सृष्टमिदं विश्वं वदन्तीह मनीषिणः ॥ ४९ ॥ त्वामेव सर्वं विशति पुनरेव युगक्षये

प्रसन्नता में पूर्ण देखकर देवताओं के प्रियकारी हितके लिये यह वचन बोले
। ४२ । हे धर्मज्ञ ब्राह्मण आप किस निमित्त नृत्य करतेहो हे मुनि आपको इतनी
प्रसन्नता किसहेतुसे हुईहै हे श्रेष्ठ ब्राह्मण धर्ममार्ग में तपस्वीकी प्रसन्नताका कारण
क्या है । ४३ ऋषिबोला हे ब्रह्मन मेरे हाथसे टपकेहुये इस शाकरस को क्या तुम
नहीं देखतेहो हे समर्थ मैं इसी शाकरस को देखकर बड़े आनन्द युक्त होकर
नाचताहूं । ४४ । तब देवता शिवजी उस रागसे मोहित मुनि से अच्छे प्रकार
हँसकर बोले कि हे वेदपाठी मुझको आश्चर्य नहीं होता है तुम मुझको देखो
। ४५ । हे राजेन्द्र उस श्रेष्ठ मुनि से इसप्रकार कहकर बुद्धिमान महादेवजी ने
अंगुली की नोकसे अपने अंगूठे को ताड़ित किया । ४६ । हे राजाउससे बर्फ
के समान श्वेत भस्म निकली उसको देखकर बड़ी लज्जापाकर वह मुनि उनके
दोनों चरणोंपर गिरपड़ा । ४७ । उसने उसको देवताओंका भी देवता महादेव
माना और आश्चर्यित होकर यह वचन बोला कि मैं रुद्रदेवता से उत्तम और बड़ा
दूसरे किसी देवताको नहीं मानताहूं । ४८ । हे शूलधारी तुम देवता असुर आदिक

seeing the rishi dance in glee, asked of him the reason of his so doing saying, "Why do you dance so joyfully, sage? A rishi, walking in the path of virtue has no cause to indulge in this manner." "Do you not see this vegetable sap dropping from my hand? I am dancing for this very reason," said the rishi. Mahadev laughed at this and said, "I see no cause of wonder in this, learned man." Having said this, Mahadev beat his thumb with the end of his fore-finger and a dust white as snow came out of it. The muni much ashamed, fell down at his feet and he knew the god of gods. Then he thus addressed him, saying "I see that no god is greater than you. You are the refuge of all the world, bearer of trident. Wise men say that all the world was created by you and it will unite in you again after pralaya. You

देवैरपि न शक्यस्त्वं परिज्ञातुं कुतो मया ॥ ५० ॥ त्वयि सर्वे स्म दृश्यन्ते भावा ये जगतिस्थिता । त्वामुपासन्त वरदं देवा ब्रह्मादयोऽनघ ॥ ५१ ॥ सर्वस्त्वमसि देवानां कर्त्ता कारयिता च ह । त्वत्प्रसादात् सुराः सर्वे मोदन्तीहाकुतोभयाः । एवं स्तुत्वा महादेवं स ऋषिः प्रणतोऽभवत् ॥ ५२ ॥ यदिदं चापलं देव कृतमेतत् स्मयादिकम् । अतः प्रसादयामि त्वां तपो मे न क्षरेदिति ॥ ५३ ॥ ततो देवः प्रीतमनास्तमृषिं पुनरब्रवीत् । तपस्ते वर्द्धतां विप्र मत्प्रसादात् सहस्रधा । आश्रमे चेह वत्स्यामि त्वया सार्द्धं अहं सदा ॥ ५४ ॥ सप्तसारस्वते चास्मिन् यो मामर्चिष्यते नरः । न तस्य दुर्लभं

समेत सब जगत्की गतिहो तुम से सब जगत् उत्पन्न हुआ है ऐसा इस लोकमें पण्डित लोग कहते हैं । ४९ । प्रलय कालके पीछे फिर यह सब जगत् तुमहीमें लय होता है तुम देवताओंसेही जाननेको योग्य नहीं हो तो मुझ अल्पबुद्धि से कैसे जाननेके योग्यहोगे । ५० । जो प्रकाश रूपभाव जगत्में नियत हैं वह सब आपके रूपमें दिखाई पड़ते हैं हे निष्पाप ब्रह्मादिक देवताओंने भी तुम्हीं वरदाता की उपासना करी है । ५१ । देवताओं के उत्पन्न करनेवाले और सबको कर्म्मों में प्रवृत्त करनेवाले आपही को इसलोक में सब देवता आपकी ही कृपासे निर्भयहोकर आनन्द करते हैं वह ऋषि महादेवजी की इस प्रकार स्तुति करके नम्रहोगया । ५२ । और कहनेलगा कि हे देवता मैंने जो अहंकारादिक चपलताकरी है इसलिये आपको प्रसन्नकरताहूं और यह चाहताहूं कि मेरा तप नाशको न पावे । ५३ । इसके पीछे प्रसन्नचित्त शिवजी उस ऋषि से बोले हे ब्राह्मण मेरी कृपासे तेरातप हजार प्रकार से वृद्धियुक्त होय और मैं इस आश्रम में सदैव तेरे साथ निवास करूंगा । ५४ । जो मनुष्य इस सप्तसारस्वत तीर्थ में मुझको पूजेगा उसको इसलोक और परलोक में कोई दुष्प्राप्य वस्तु नहींहै और निस्सन्देह

are unknowable even by gods, how can a person of small understanding know you? 50. You are the seat of all glory and are praised by Brahma and other gods. You are the creator of gods and you engage all beings in action. All the gods enjoy the world fearlessly by your grace alone." The rishi thus humiliated himself before Mahadev and said, "I have been rash enough before you and therefore I request your pleasure so that the merit of my asceticism may not be destroyed." Shiv was pleased with the rishi and said, "Your asceticism will bear fruit a thousandfold by my grace and I shall live with you. Whoever will worship me at Sapt-saraswat will find nothing difficult to attain and will surely go to the region of Saraswat." This is the

किञ्चिच्चात्र विहितं परत्र वा । सारस्वतश्च ते लोकं गमिष्यन्ति न संशयः ॥ ५५ ॥ एतन्मङ्कणकस्यापि चरितं भूरितेजसः । स हि पुत्रः सुकन्यायामुत्पन्नो मातरिश्वना ॥५६॥

इति गदायुद्धपर्वणि बलदेवतीर्थयात्रायां सारस्वतोपाख्याने अष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

वैशम्पायन उवाच । उषित्वा तत्र रामस्तु संपूज्याश्रमवासिनः । तथा मङ्कणके प्रीतिं शुभामचक्रे हलायुधः ॥ १ ॥ दत्त्वा दानं द्विजातिभ्यो रजनीं तामुपोष्य च । पूजितो मुनिसंघैश्च प्रातरुत्थाय लाङ्गली ॥ २ ॥ अनुज्ञाप्य मुनीन् सर्वान् स्पृष्ट्वा तोयञ्च भारत । प्रययौ त्वरितो रामस्तीर्थहेतोर्महाबलः ॥ ३ ॥ तत औशनसं तीर्थमा

वह सारस्वत लोक में जायगा । ५५ । यह बड़े तेजस्वी मंकणकनाम ऋषिका चरित्र है वह वैठा हुआ इसी सुकन्यामें उत्पन्न हुआ है ५६ ॥

अध्याय ३९ ॥

वैशम्पायन बोले कि हलधारी बलदेवजीने वहां निवासकरके और आश्रम वासियों को अच्छीरीति से पूजकर मंकणकऋषि में शुभ प्रीतिकरी ।१ । हे भरत वंशी बड़े बलवान् हलायुध बलदेवजी ब्राह्मणों को दानदेके उसरात्रि वहां निवासकर बड़े प्रातः काल उठकर मुनियोंके समूहोंसे पूजित होकर । २ । और आपभी सब मुनियों को पूजकर स्नान आचमनकर तीर्थ कोनिमित्त शीघ्र चलदिये । ३ ।

account of the sage Mankanak who was an offspring of Sukanya." 56.

CHAPTER XXXIX

Vaishampayan said, "Having staid there, Baldev paid respect to the people of the hermitage and fixed his mind in Mankanak rishi. He gave donations to brahmans and *after staying there a night*, he greeted the munis and was greeted by them in return. He then sipped water and went on to the visit other holy places. He next visited Kapal-mochan dedicated to Shukra, where Mahodar the muni was freed from the head of the rakshas cut off and flung by Ram and where Shukra had performed penances in the days of yore.

जगाम हलायुधः। कपालमोचनं नाम यत्र मुक्तो महामुनिः॥ ४ ॥महता शिरसा राजन् ग्रस्तजंघो महोदरः। राक्षसस्य महाराज रामाक्षिप्तस्य वै पुरा । तत्र पूर्वं तप स्तप्तं काव्येन सुमहात्मना॥ ५ ॥ यत्रास्य नीतिरखिला प्रादुर्भूता महात्मनः। यत्रस्थ श्चिन्तयामास दैत्यदानवविग्रहम्॥ ६ ॥ तत् प्राप्य च बलो राजंस्तीर्थप्रवरमुत्तमम् । विधिवद्वै ददौ वित्तं ब्राह्मणानां महात्मनाम्॥ ७ ॥ जनमेजय उवाच । कपालमोचनं ब्रह्मन् कथं यत्र महामुनिः। मुक्तः कथञ्चास्य शिरो लग्नं केन च हेतुना॥ ८ ॥ वैशम्पायन उवाच । पुरा वै दण्डकारण्ये राघवेन महात्मना। वसता राजशार्दूल राक्ष सान् शमयिष्यता॥ ९ ॥ जनस्थाने शिरश्छिन्नं राक्षसस्य दुरात्मनः। क्षुरेण शितधा रेण तत् पपात महावने॥ १० ॥ महोदरस्य तल्लग्नं जंघायां वै यदृच्छया। वने विच रतो राजन्नस्थि भित्त्वाऽस्फुरत्तदा॥ ११ ॥ स तेन लग्नेन तदा द्विजातिर्न शशाक ह।

इसके पीछे बलदेवजी शुक्रजी के कपालमोचननाम तीर्थ को गये हे महाराज राजा जनमेजय जहांपर पूर्व्वसमयमें रामचन्द्रजीके फेंकेहुये राक्षसके बड़े शिरसे निगलीहुई जंघ वाले महोदरनाम महामुनि मुक्तहुये वहांपूर्व्वकालमें बड़े महात्माशुक्रजीने तपकिया । ५ । जहांपर उस महात्माकी सम्पूर्ण नीति प्रकटहुई वहांही नियत होकर शुक्रजी ने दैत्य और दानवों के परस्पर विरोधको शोचा । ६ । हे राजा राजाबलिने उस अत्यन्त श्रेष्ठ तीर्थको पाकर विधिपूर्व्वक महात्मा ब्राह्मणों को धन दिया । ७ । जनमेजय ने कहा हे द्विजवर्य्य इस तीर्थका कपालमोचन नाम कैसे हुआ उसमें महामुनि कैसे छूटे उस राक्षसका शिर किसहेतुसे उनकी जंघामेंचिपटा । ८ । वैशम्पायन बोले हे राजेन्द्र पूर्व्वसमय में दण्डक वनमें निवास करनेवाले राक्षसोंके मारने के अभिलाषी महात्मा रामचन्द्रजीने । ९ । जिस स्थान में दुरात्मा राक्षसका शिरकाटा वहां उसवन में तेजधार क्षुरसे काटाहुआ वह शिर उछला । १० । निश्चय करके दैवयोग से वह शिर महोदर की जंघापर चिपटगया अर्थात् वह शिर वनमें घूमनेवाले महोदरके हाड़को छेदकर कुछ चेष्टा करनेलगा

5. There Sukra had expounded his Politics and thought of the war between the gods and Danavas. King *Bali* had given there immense wealth to Brahmans." Janmejaya said, "Why was that holy place called Kapalmochan." Why did the rakshas' head cling to the muni's thigh?" Vaishampayan said, "Staying in Dandak forest in the days of yore, with a desire to extirpate the rakshases magnanimous Ram Chandra cut off the head of a rakshas with a sharp weapon. The head thus cut asunder went up and clung to the thigh of the muni, piercing through his bone and moving the while. 11. With that load clung to his body the muni was unable to visit holy places; but we hear that he moved on though in great

भागिनं तु महाप्राज्ञस्तीर्थान्यायतनानि च ॥ १२ ॥ स पूतिना विस्रवता वेदनार्तो महा
मुनिः । जगाम सर्वतीर्थानि पृथिव्यामिति नः श्रुतम् ॥ १३ ॥ स गत्वा सरितः सर्वाः
समुद्रांश्च महातपाः । कथयामास तत् सर्वमृषीणां भावितात्मनाम् ॥ १४ ॥ आप्लुत
सर्वतीर्थेषु न च मोक्षमवाप्तवान् । स तु शुश्राव विप्रेन्द्रो मुनीनां वचनं महत् ॥ १५ ॥
सरस्वत्यास्तीर्थवरं ख्यातमौशनसं तदा । सर्वपापप्रशमनं सिद्धक्षेत्रमनुत्तमम् ॥ १६ ॥
स तु गत्वा ततस्तत्र तीर्थमौशनसं द्विज । ततः औशनसे तीर्थे तस्योपस्पृशतस्तदा ।
तच्छिरश्चरणं मुक्त्वा पपातान्तर्जले तदा ॥ १७ ॥ विमुक्तस्तेन शिरसा परं सुखम
वापह । स चाप्यन्तर्जले मूर्धा जगामादर्शनं तदा ॥ १८ ॥ ततः स विशिरा राजन्
पूतात्मा वीतकल्मषः । आजगामाश्रमं प्रीतः कृतकृत्यो महोदरः ॥ १९ ॥ सोऽथ गत्वा
श्रमं पुण्यं विप्रमुक्तो महातपाः । कथयामास तत्सर्वमृषीणां भावितात्मनाम् ॥ २० ॥

। ११ । तब वह बड़ाज्ञानी ब्राह्मण उस चिपटे हुये शिरके कारण से तीर्थ और देवालयों के जाने को समर्थ नहीं हुआ । १२ । उस चिपटेहुये दुर्गन्धित शिरके कारण दुःखसे पीड़ामानभी वह महामुनि पृथ्वी के सब तीर्थोंको गया यह हमने सुना है ।१३। उस बड़े तपस्वी ने सब नदियों पर और समुद्रोंपर जाकर यह सब वृत्तान्त शुद्ध अन्तःकरणवाले ऋषियों के सम्मुख जाकर वर्णन किया ।१४। सब तीर्थोंमें स्नान करनेवाले ने उस शिरसे पृथकता को नहीं पाया तब फिर उस ऋषिने मुनियों के बड़े इन वचनों को सुना । १५ । कि सरस्वतीका एकउत्तम तीर्थ औशनस नामसे विख्यात सब पापोंका दूर करनेवाला सिद्धोंका क्षेत्र और श्रेष्ठ तरहै । १६ । उसके पीछे उस ब्राह्मणने उस औशनस तीर्थ में जाकर स्नान किया तब औशनस तीर्थमें स्नान करनेवाले उस ऋषिके चरणको छोड़कर वह शिर जलके मध्य में गिरपड़ा । १७ । उस शिरसे छूटेहुये ने बड़े आनन्द को पाया और उस शिरनेभी जलके मध्य में गुप्तताको पाया । १८ । हेराजा उसके पीछे उस शिर से पृथक् पवित्र शरीर पापोंका लिप्ततासे रहित सुखी और कृतकर्मा होकर वह महोदरऋषि अपने आश्रमको आया वहां उस शिरसे छूटे उस बड़े तपस्वी ने पवित्र आश्रमको जाकर उस सब वृत्तान्तको शुद्ध अन्तःकरणवाले ऋषियों

pain He told of his calamity to the ascetics whom he met at the banks of holy rivers and seas, but the head still clung to his thigh He heard from munis that a holy place on the bank of the Saraswati known as Aushanas was the remover of sins and giver of perfection 16. Then he bathed at Aushanas and the head left his thigh and dropped in water The rishi was pleased at being rid of the head which disappeared in water. Being thus freed from the head as well as his sins, the rishi went to his own hermitage and told other ascetics of his good luck 20 The assembled rishis then gave the

ते श्रुत्वा वचनं तस्य ततस्तीर्थस्य मानद । कपालमोचनमिति नामचक्रुः समागताः
॥ २१ ॥ स चापि तीर्थप्रवरं पुनर्गत्वा महानृषि । पीत्वा पयः सुविपुलं सिद्धिमायात्
तदा मुनिः ॥ २२ ॥ तत्र दत्त्वा बहून् दायान् विप्रान् संपूज्य माधवः । जगाम वृष्णि
प्रवरो रुषङ्गोराश्रमन्तदा ॥ २३ ॥ तत्र तप्तं तपो घोरमार्ष्टिषेणेन भारत । ब्राह्मण्यं लब्ध
वांस्तत्र विश्वामित्रो महामुनिः ॥ २४ ॥ सर्वकामसमृद्धं वै तदाश्रमपदं महत् । मुनि
भिर्ब्राह्मणैश्चैव सेवितं सर्वदा विभो ॥ २५ ॥ ततो हलधरः श्रीमान् ब्राह्मणैः परिवा
रितः । जगाम यत्र राजेन्द्र रुषङ्गुस्तनुमत्यजत् ॥ २६ ॥ रुषङ्गुर्ब्राह्मणो वृद्धस्तपोनित्यश्च
भारत । देहन्यासे कृतमना विचिन्त्य बहुधा तदा ॥ २७ ॥ ततः सर्वानुपादाय तनयान्
वै महातपाः । रुषङ्गुरब्रवीत्तत्र नयध्वं मा पृथूदकम् ॥ २८ ॥ विज्ञायातीतवयसं रुषङ्गुं
ते तपोधनाः । ते वै तीर्थमुपानिन्युः सरस्वत्यास्तपोधनम् ॥ २९ ॥ स तैः पुत्रैस्तदा

से वर्णन किया । २० । हे बड़ाई देनेवाले इसकेपीछे इकट्ठे होनेवाले उन ऋषियों ने उनके वचनको सुनकर उस तीर्थका नाम कपालमोचन रक्खा । २१ । तब उस महर्षिनेभी उस अत्यन्त उत्तम तीर्थको जाकर जलको पान करके बहुत बड़ी सिद्धी को पाया । २२ । वहांभी वृष्णियोंमें श्रेष्ठ हलधर बलदेवजी बहुत दानोंकोदेकर ब्राह्मणोंको पूजकर उस रुषंगों के आश्रम को गये जहांपर आर्ष्टिषेण ने बड़ी घोर तपस्याकरी थी वहांही महामुनि विश्वामित्रने ब्राह्मण वर्णको पाया ।२४। वः बड़ा स्थान सब अभीष्टोंसे वृद्धियुक्त और सदैव मुनि ब्राह्मणों से सेवित है । २५ । हे समर्थ राजेन्द्र इसके पीछे ब्राह्मणों समेत श्री बलदेवजी वहांगये जहां कि रुषंगोंने अपने शरीरोंको त्यागा । २६ । हे भरतवंशी सदैव तप करनेवाले वृद्ध ब्राह्मण शरीरके त्यागने में प्रवृत्त चित्त रुषंगने बहुत प्रकारकी चिन्ता करके अपने सब पुत्रोंको बुलाकर उनसे कहा कि मुझको पृथूदक तीर्थको लेचलो । २८ । उन तपोधन ऋषिकुमारोंने उस तपोधन रुषंगको वृद्ध जानकर सरस्वती के उस तीर्थ पर पहुंचाया जोकि धर्मकी वृद्धिका कारण सैकड़ो तीर्थों से युक्त और वेद पाठियों से सेवितथा । ३० । हे राजा वह बड़ा तपस्वी ऋषियों में श्रेष्ठ रुषंगवहां विधि पूर्वक स्नान करके तीर्थ के गुणों को जानकर अत्यन्त प्रसन्न होकर समीप

name of Kapal-mochan to the holy place. The rishis went to that holy place and gained great perfection. Having visited that holy place and sipped of its water, Baldev gave large donations to Brahmans, and proceeded to the hermitage of Rushangs where Arshtisen had performed a severe asceticism and Vishwamitra become a Brahman. That holy place is the giver of all desires and is visited by Brahmans and munis. 25. Then he, with Brahmans, went to the place where Rushangs had died. The elder Rushang, before dying, had asked his sons to take him to Prathoodak. The rishi's sons obeyed their old father and took

महातेजा जगाम त्रिदिवं मुनिः । एवं सिद्धः स भगवानार्ष्टिषेणः प्रतापवान् ॥ ९ ॥ तस्मिन्नेव तदा तीर्थे सिन्धुद्वीपः प्रतापवान् । देवापिश्च महाराज ब्राह्मण्यं प्रापतुर्महत् ॥ १० ॥ तथा च कौशिकस्तात तपोनित्यो जितेन्द्रियः । तपसा वै सुतप्तेन ब्राह्मणत्वमवाप्तवान् ॥ ११ ॥ गाधिर्नाम महानासीत् क्षत्रियः प्रथितो भुवि । तस्य पुत्रोऽभवद्राजन् विश्वामित्रः प्रतापवान् ॥ १२ ॥ स राजा कौशिकस्तात महायोग्यभवत् किल । स पुत्रमभिषिच्याथ विश्वामित्रं महातपाः ॥ १३ ॥ देहन्यासे मनश्चक्रे तमूचुः प्रणताः प्रजाः । न गन्तव्यं महाप्राज्ञ त्राहि चास्मान्महाभयात् ॥ १४ ॥ एवमुक्तः प्रत्युवाच ततो गाधिः प्रजास्ततः । विश्वस्य जगतो गोप्ता भविष्यति सुतो मम ॥ १५ ॥ इत्युक्त्वा तु ततो गाधिर्विश्वामित्रं निवेश्य च । जगाम त्रिदिवं राजन् विश्वामित्रो भवन्नृपः । न शक्नोति पृथिवीं यत्नवानपि रक्षितुम् ॥ १६ ॥ ततः शुश्राव राजा स राक्षसेभ्यो महाभयम् । निर्ययौ नगराच्चापि चतुरङ्गबलान्वितः ॥ १७ ॥ स यात्वा

भगवान् प्रतापवान आर्ष्टिषेण इस प्रकार से सिद्धहुयो९। हेमहाराज तब उस तीर्थ में प्रतापवान् सिन्धद्वीप और देवापीने बड़े ब्राह्मण भावको पाया । १० । हेतात उसी प्रकार सदैव तप करनेवाले जितेन्द्री विश्वामित्रने अच्छेप्रकार से तपेहुये तपकेद्वारा ब्राह्मण वर्णको पाया । ११ । एकगाधिनाम क्षत्री इस पृथ्वीपर बड़ा विख्यात हुआ उसका पुत्र विश्वामित्रभी बड़ा प्रतापवान हुआ । १२ । हे तात निश्चयकरके वह राजा कौशिक बड़ा बुद्धिमान और अग्रहुआ उस बड़े तपस्वाने विश्वामित्र नाम पुत्रको राज्य पर अभिषेक कराके ।१३। शरीर त्यागमें चित्तको प्रवृत्त किया तब हाथजोड़कर प्रजालोगोंने उससे कहा कि हे बड़े ज्ञानी आपको वन में न जाना चाहिये हमको आप बड़े भयसे रक्षाकरो । १४ । इसके पीछे इस प्रकार से प्रजा के वचनको सुनकर गाधिने प्रजालोगों को उत्तर दिया कि मेरा पुत्र संसार भरेका रक्षकहोगा । १५ । हेराजा राजागाधि ऐसा वचन कहकर और विश्वामित्र को राज्यसिंहासन पर बैठाकर स्वर्गको गया और विश्वामित्र राजा हुये विश्वामित्र भी अनेक उपायों से पृथ्वी की रक्षाकरनेको समर्थ नहीं हुआ । १६ । इस

of their work in a very short time. Having said this, the glorious muni went to heaven. Then glorious Sindh dwip and Devapi became Brahmans. 10. Similarly, Vishwamitra who had control over his organs became a Brahman by means of asceticism He was the son of a famous kshatrya named Gadhi, who was very wise and learned. He installed his son Vishwamitra on his throne and intended to leave the world. The subjects humbly asked him not to go to forests, but to remain there to protect them from danger. But Gadhi said that his son Vishwamitra would be their refuge 15. Having said this, Gadhi left the kingdom to his son and went to heaven Vishwamitra

जनमेजय उवाच । कथमार्ष्टिषेणो भगवान् विपुलं तप्तवांस्तपः । सिन्धुद्वीपः कथं चापि ब्राह्मण्यं लब्धवांस्तदा ॥ १ ॥ देवापिश्च कथं ब्रह्मन् विश्वामित्रश्च सत्तम । तन्ममाचक्ष्व भगवन् परं कौतूहलं हि मे ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच । पुरा कृतयुगे राजन्नार्ष्टिषेणो द्विजोत्तमः । वसन् गुरुकुले नित्यं नित्यमध्ययने रतः ॥ ३ ॥ तस्य राजन् गुरुकुले वसतो नित्यमेव ह । समाप्तिं नागमद्विद्या नापि वेदा विशाम्पते ॥४॥ स निर्विण्णस्ततो राजंस्तपस्तेपे महातपाः । ततो वै तपसा तेन प्राप्य वेदाननुत्तमान् ॥५॥ स विद्वान् वेदयुक्तश्च सिद्धश्चाप्यृषिसत्तमः । तत्र तीर्थे वरान् प्रादात्त्रीनेव सुमहातपाः ॥ ६ ॥ अस्मिंस्तीर्थे महानद्या अद्य प्रभृति मानवः । आप्लुतो वाजिमेधस्य फलं प्राप्स्यति पुष्कलम् ॥ ७ ॥ अद्यप्रभृति नैवात्र भयं व्यालाद्भविष्यति । अपि चाल्पेन यत्नेन फलं प्राप्स्यति पुष्कलम् ॥ ८ ॥ एवमुक्त्वा

अध्याय ४० ॥

जनमेजयने पूछा कि भगवान् आर्ष्टिषेण ने किस प्रकारसे बड़ी तपस्याको किया और सिन्धद्वीप देवापी और विश्वामित्र ने किस प्रकार ब्राह्मण वर्ण को पाया हे भगवन वह सब मुझसे कहो क्योंकि मुझको सुननेका बड़ा उत्साह है । २ । वैशम्पायन बोले हे राजा पूर्व्व सतयुग में द्विजों में श्रेष्ठ आर्ष्टिषेण सदैव वेदपाठ में प्रीति रखनेवाले सदा गुरुकुलमेंही निवास करते रहे । ३ । सदैव गुरुकुलमें निवास करने परभी उस राजऋषि की विद्या और वेदोंने सम्पूर्णताको नहीं पाया । ४ । इसके पीछे उस व्याकुल चित्त तपस्वी ने बड़े तप को तपा तब उस तपकेद्वारा वेदों को पाकर । ५ । उस बुद्धिमान वेदज्ञ सिद्ध ऋषियों में श्रेष्ठ बड़े तपस्वीने उस तीर्थ के अर्थ यह तीन वरदिये । ६ । अर्थात् अबसे लेकर इस महानदीके तीर्थ में स्नान करनेवाला मनुष्य अश्वमेधके बड़े फलको पावेगा । ७ । और अबसे लेकर यहां सर्प से किसीको भय नहींहोगा और थोड़ेही समय में उत्तम फलको पावेगा । ८ । बड़े तेजस्वी मुनि इस प्रकार कहकर स्वर्गकोगये वह

CHAPTER XL

Janamejaya asked, "How did Arshtisen perform a severe asceticism and how were Sindh-dwip, Devapi and Vishwamitra turned into Brahmans? Pray tell me all this Brahman, for I am very anxious to hear it " Vaishampayan said, " In the days of Satyug, Arshtisen passed his whole life at Gurukul in reading the Vedas, but his course was not complete. Then he performed a severe asceticism and acquired a knowledge of the Vedas. 5. That great and learned ascetic granted three boons to the holy place, namely: he who bathes in the holy Mahanadi, will gain the merit of performing Ashwamedh sacrifice; people visiting it will have no fear from snakes and will gain the fruit

महातेजा जगाम त्रिदिवं मुनिः । एवं सिद्धः स भगवानार्ष्टिषेणः प्रतापवान् ॥ ९ ॥ तस्मिन्नेव तदा तीर्थे सिन्धुद्वीपः प्रतापवान् । देवापिश्च महाराज ब्राह्मण्यं प्रापतुर्महत् ॥ १० ॥ तथा च कौशिकस्तात तपोनित्यो जितेन्द्रियः । तपसा वै सुतप्तेन ब्राह्मणत्वमवाप्तवान् ॥ ११ ॥ गाधिर्नाम महानासीत् क्षत्रियः प्रथितो भुवि । तस्य पुत्रोऽभवद्राजन् विश्वामित्रः प्रतापवान् ॥ १२ ॥ स राजा कौशिकस्तात महायोग्यभवत् किल । स पुत्रमभिषिच्याथ विश्वामित्रं महातपाः ॥ १३ ॥ देहन्यासे मनश्चक्रे तमूचुः प्रणताः प्रजाः । न गन्तव्यं महाप्राज्ञ त्राहि चास्मान्महाभयात् ॥ १४ ॥ एवमुक्तः प्रत्युवाच ततो गाधिः प्रजास्ततः । विश्वस्य जगतो गोप्ता भविष्यति सुतो मम ॥ १५ ॥ इत्युक्त्वा तु ततो गाधिर्विश्वामित्रं निवेश्य च । जगाम त्रिदिवं राजन् विश्वामित्रोऽभवन्नृपः । न शक्नोति पृथिवीं यत्नवानपि रक्षितुम् ॥ १६ ॥ ततः शुश्राव राजा स राक्षसेभ्यो महाभयम् । निर्ययौ नगराच्चापि चतुरङ्गबलान्वितः ॥ १७ ॥ स यात्वा

भगवान् प्रतापवान आर्ष्टिषेण इस प्रकार से सिद्ध हुये ।९। हे महाराज तब उस तीर्थ में प्रतापवान् सिन्धुद्वीप और देवापीने बड़े ब्राह्मण भावको पाया । १० । हे तात उसी प्रकार सदैव तप करनेवाले जितेन्द्री विश्वामित्रने अच्छेप्रकार से तपेहुये तपकेद्वारा ब्राह्मण वर्णको पाया । ११ । एक गाधिनाम क्षत्री इस पृथ्वीपर बड़ा विख्यात हुआ उसका पुत्र विश्वामित्रभी बड़ा प्रतापवान हुआ । १२ । हे तात निश्चयकरके वह राजा कौशिक बड़ा बुद्धिमान और प्रबलहुआ उस बड़े तपस्वीने विश्वामित्र नाम पुत्रको राज्य पर अभिषेक कराके ।१३। शरीर त्यागमें चित्तको प्रवृत्त किया तब हाथजोड़कर प्रजालोगोंने उससे कहा कि हे बड़े ज्ञानी आपको वन में न जाना चाहिये हमको आप बड़े भयसे रक्षाकरो । १४ । इसके पीछे इस प्रकार से प्रजा के वचनको सुनकर गाधिने प्रजालोगों को उत्तर दिया कि मेरा पुत्र संसार भरेका रक्षकहोगा । १५ । हेराजा राजागाधि ऐसा वचन कहकर और विश्वामित्र को राज्यसिंहासन पर बैठाकर स्वर्गको गया और विश्वामित्र राजा हुये विश्वामित्र भी अनेक उपायों से पृथ्वी की रक्षाकरनेको समर्थ नहीं हुआ । १६ । इन

of their work in a very short time. Having said this the glorious muni went to heaven. Then glorious Sindh dwip and Devapi became Brahmans. 10 Similarly, Vishwamitra who had control over his organs became a Brahman by means of asceticism. He was the son of a famous kshatrya named Gadhi, who was very wise and learned. He installed his son Vishwamitra on his throne and intended to leave the world. The subjects humbly asked him not to go to forests, but to remain there to protect them from danger. But Gadhi said that his son Vishwamitra would be their refuge 15. Having said this, Gadhi left the kingdom to his son and went to heaven. Vishwamitra

तपसा तु तथा युक्तं विश्वामित्रं पितामहः । अमन्यत महातेजा वरदो वरमस्य तत् ॥ २७ ॥ स तु वव्रे वरं राजन् स्यामहं ब्राह्मणस्त्विति । तथेति चाब्रवीद्ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः । २८ ॥ स लब्ध्वा तपसोग्रेण ब्राह्मणत्वं महायशाः विचचार महीं कृत्स्नां कृतकामः सुरोपमः ॥२९ ॥ तस्मिंस्तीर्थवरे रामः प्रदाय विविधं वसु । पयस्विनीस्तथा धेनुर्यानानि शयनानि च ॥ ३० ॥ अथ वस्त्राण्यलङ्कारं भक्ष्यं पेयञ्च शोभनम् । अददन्मुदितो राजन् पूजयित्वा द्विजोत्तमान् ॥ ३१ ॥ ययौ राजंस्ततो रामो बकस्याश्रममन्तिकात् । यत्र तेपे तपस्तीव्रं दाल्भ्यो बक इति श्रुतम् । ३२ ॥

इतिगदायुद्धपर्वणि सारस्वततीर्थोपाख्याने चत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥



तेजसे सूर्यके समान हुआ ।२६। तब बड़े वरदाता ब्रह्माजीने इस प्रकार तपमें प्रवृत्त विश्वामित्र को और उसके उत्तम तपको स्वीकार किया । २७ । और मांगनेकी आज्ञाकरी तब उसने यह वरमांगा कि मैं ब्राह्मण होजाऊं उस समय सब लोकों के पितामह ब्रह्माजी बोले कि ऐसाही होय ।२८। वह बड़ा यशवान बड़ी तपस्यासे ब्राह्मण वर्ण को पाकर अभीष्ट सिद्धि करनेवाला देवताओंके समान होकर सब पृथ्वीपर घूमा । २९ । बलदेवजी ने उस उत्तम तीर्थपर बहुत प्रकारका धनदेकर दुग्धवती गौ सवारी वस्त्र भूषण भक्ष्य भोजन और पानकी वस्तु यह सब दान कीं हे राजा इस प्रकार से बलदेवजी उन उत्तम ब्राह्मणों को पूजकर समीपही उस बकके आश्रमको गये जहां पर दाल्भ्यबकने कठिन तपस्याको कियाथा यह सुना जाता है ३२ ॥



Saraswati and lived on water, air and leaves of plants and slept in open air. He observed severe vows. The gods stood in his way but could not succeed and Vishwamitra became glorious like the sun. Brahma approved his asceticism and ordered him to ask boons He asked the rank of *Brahmanhood* and Brahma granted his request He became a *Brahman* by his asceticism and roamed on earth like a god. Baldev gave there cows, conveyances, clothes, ornaments and food and proceeded to the neighbouring hermitage of *Vak*, where we hear that Dalbhyvak had performed a severe asceticism. " 32.

दूरमध्वानं वशिष्ठाश्रममभ्ययात् । तस्य ते सैनिका राजंश्चक्रुस्तत्रानयान् बहून् । १८ ॥
ततस्तु भगवान् विप्रो वशिष्ठाश्रममभ्ययात् । ददृशेऽथ ततः सर्वं भज्यमानं महावनम्
॥ १९ ॥ तस्य क्रुद्धो महाराज वशिष्ठो मुनिसत्तमः । सृजस्व शबरान् घोरानिति स्वां
गामुवाच ह ॥ २० ॥ तथोक्ता सासृजद्धेनुः पुरुषान् घोरदर्शनान् । ते च तद्बलमासाद्य
बभञ्जुः सर्वतोदिशम् ॥ २१ ॥ तच्छ्रुत्वा विद्रुतं सैन्यं विश्वामित्रस्तु गाधिजः । तपः
परं मन्यमानस्तपस्येव मनो दधे ॥ २२ ॥ सोऽस्मिंस्तीर्थवरे राजन् सरस्वत्याः समा
हितः । नियमैश्चोपवासैश्च कर्शयन्देहमात्मनः ॥२३॥ जलाहारो वायुभक्षः पर्णाहारश्च
सोऽभवत् । तथा स्थण्डिलशायी च ये चान्ये नियमाः पृथक् ॥ २४ ॥ असकृत्तस्य
देवास्तु व्रतविघ्नं प्रचक्रिरे । न चास्य नियमाद्बुद्धिरपयाति कदाचन ॥ २५ ॥ ततः
परेण यत्नेन तप्त्वा बहुविधं तपः । तेजसा भास्करो गाधिजः समपद्यत ॥ २६ ॥

के पीछे उस राजाने राक्षसोंसे बड़े भयको सुना और चतुरंगिणी सेना समेत नगर से निकला । १७ । और बहुत दूर मार्ग चलकर वसिष्ठजी के आश्रमको गया हे राजा वहां उसकी सेनाके लोगों ने बड़े अन्याय किये । १८ । तब ब्रह्माजीकेपुत्र भगवान् ब्राह्मण वसिष्ठजीने सब महावनको टूटा और बिगड़ा देखा । १९ । तब उसपर क्रोधयुक्त होकर मुनियों में श्रेष्ठ वसिष्ठजीने अपनी गौसे कहा कि घोर शबरों को उत्पन्नकर । २० । उनकी आज्ञासे उसगौने घोर दर्शन वाले मनुष्योंको उत्पन्न किया उन्होंने विश्वामित्रकी सेनाको पाकर सब दिशाओं में छिन्न भिन्न किया । २१ । गाधि के पुत्र विश्वामित्रने उस अपनी भागीहुई सेनाको भागा हुआ सुनकर तपको श्रेष्ठ माननेवाले ने तपही में चित्त किया । २२ । हेराजाउस सावधीने विश्वामित्र ने सरस्वती के उत्तम तीर्थपर नियम और व्रतकद्वारा अपने शरीरको दुर्बल और कृशांग किया । २३ । और जल वायु और पर्त्तोंका आहार करनेवाला हुआ और स्थंडिलशायी अर्थात् मैदान में शयन करनेवाला हुआ । २४। और बहुतसे अनेक पृथक् २ नियमोंको भी वारम्वार किया फिर देवताओं ने उसके व्रतका विघ्नकिया परन्तु इस महात्माकी बुद्धि नियम से पृथक् नहींहुई फिर उत्तम उपायों से बहुत प्रकार के तपको करके वह गाधिका पुत्र

was unable to protect his subjects. He heard that the rakshases were making a great havoc and came out of the city with a large army. He went to the hermitage of Vashisth where his soldiers were very unjust. Vashisth the son of Brahma saw his forest destroyed and in anger ordered his cow to produce Shawars. 20 By his order the cow gave birth to dreadful men who dispersed Vishwamitra's army. Vishwamitra saw that his army was routed by the power of asceticism and thinking that it was the best thing, made up his mind to engage in asceticism. He made his body lean in penances at the bank of the

तपसा तु तथा युक्तं विश्वामित्रं पितामहः । अमन्यत महातेजा वरदो वरमस्य तत् ॥ २७ ॥ स तु वव्रे वरं राजन् स्यामहं ब्राह्मणस्त्विति । तथेति चाब्रवीद्ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः ॥ २८ ॥ स लब्ध्वा तपसोग्रेण ब्राह्मणत्वं महायशाः विचचार महीं कृत्स्नां कृतकामः सुरोपमः ॥२९॥ तस्मिंस्तीर्थवरे राम प्रदाय विविधं वसु । पयस्विनीस्तथा धेनुर्यानानि शयनानि च ॥ ३० ॥ अथ वस्त्राण्यलङ्कारं भक्ष्यं पेयञ्च शोभनम् । अदद्न्मुदितो राजन् पूजयित्वा द्विजोत्तमान् ॥ ३१ ॥ ययौ राजंस्ततो रामो बकस्याश्रमं अन्तिकात् । यत्र तेपे तपस्तीव्रं दाल्भ्यो बक इति श्रुतः ॥ ३२ ॥

इतिगदायुद्धपर्वाणि सारस्वततीर्थोपाख्याने चत्वारिंशोऽध्यायः॥४०॥



तेजसे सूर्यके समान हुआ ।२६। तब बड़े बरदाता ब्रह्माजीने इस प्रकार तपमें प्रवृत्त विश्वामित्र को और उनके उत्तम तपको स्वीकार किया । २७ । और मांगनेकी आज्ञाकरी तब उसने यह वरमांगा कि मैं ब्राह्मण होजाऊं उस समय सब लोकों के पितामह ब्रह्माजी बोले कि ऐसाही होय ।२८। वह बड़ा यशवान बड़ी तपस्यासे ब्राह्मण वर्ण को पाकर अभीष्ट सिद्धि करनेवाला देवताओंके समान होकर सब पृथ्वीपर घूमा । २९ । बलदेवजी ने उस उत्तम तीर्थपर बहुत प्रकारका धनदेकर दुग्धवती गौ सवारी वस्त्र भूषण भक्ष्य भोज्य और पानकी वस्तु यह सब दान की हे राजा इस प्रकार से बलदेवजी उन उत्तम ब्राह्मणों को पूजकर समीपही उस बकके आश्रमको गये जहां पर दाल्भ्यबकने कठिन तपस्याको कियाथा यह सुना जाता है ३२ ॥

Saraswati and lived on water, air and leaves of plants and slept in open air. He observed severe vows. The gods stood in his way but could not succeed and Vishwamitra became glorious like the sun. Brahma approved his asceticism and ordered him to ask boons. He asked the rank of *Brahmanhood* and Brahma granted his request. He became a Brahman by his asceticism and roamed on earth like a god. Baldev gave there cows, conveyances, clothes, ornaments and food and proceeded to the neighbouring hermitage of Vak, where we hear that Dalbhovak had performed a severe asceticism." 32.

वैशम्पायन उवाच । ब्रह्मयोनिपारकीर्णं जगाम, यदुनन्दन । यत्र दाल्भ्यो बको राजन्नाश्रमस्थो महातपा ॥ १ ॥ जुहाव धृतराष्ट्रस्य राष्ट्रं वैचित्रवीर्यिण ।, तपसा घोररूपेण कर्षयन् देहमात्मन । क्रोधेन महताविष्टो धर्म्मात्मा वै प्रतापवान् । २ ॥ पुरा हि नैमिषीयाणा सत्रे द्वादशवार्षिके । वृत्ते विश्वजितोऽन्ते वै पाञ्चालानृषयोऽगमन् । ३ ॥ तत्रेश्वरमयाचन्त दक्षिणार्थं मनीषिण । बलान्वितान् वत्सतरान्निर्व्याधीनेक विंशतिम् ॥ ४ ॥ तानब्रवीद्बको दाल्भ्यो विभजध्व पशूनिति । पशूनेतानह त्यक्त्वा भिक्षिष्ये राजसत्तमम ॥ ५ ॥ एवमुक्त्वा ततो राजन्नृषीन् सर्वान् प्रतापवान् । जगाम धृतराष्ट्रस्य भवन ब्राह्मणोत्तम ॥ ६ ॥ स समीपगतो भूत्वा धृतराष्ट्र जनेश्वरम् । अयाचत पशून् दाल्भ्य स चैन रुषितोऽब्रवीत् ॥ ७ ॥ यदृच्छया मृतान् दृष्ट्वा गास्तदा नृपसत्तम । एतान् पशून्नय क्षिप्रं ब्रह्मबन्धो यदीच्छसि ॥ ८ । ऋषिस्त्वथ वच श्रुत्वा

अध्याय ४१ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि यदुनन्दन बलदेवजी उस ब्रह्मयोनि तीर्थ में संयुक्त तीर्थको गये जहापर अपने आश्रममें नियत बड़े तपस्वी दाल्भोवकने विचित्र वीर्य्यके पुत्र धृतराष्ट्र के देशको हवन किया और घोररूप तपसे अपने शरीरको दुर्बल करता धर्म्मात्मा प्रतापवान् बड़े क्रोधसे पूर्णहुआ । २ । पूर्व्वसमय में नैमिष निवासियों का बारहवर्ष का यज्ञ समाप्त होनेपर विश्वजित यज्ञ के अन्त में ऋषि लोग पाञ्चाल देशों में गये । ३ । उन ज्ञानी ऋषियों ने वहापर दक्षिणाके निमित्त राजासे याचना करी उस राजा ने बलवान् न्यून अवस्था और नीरोग इक्कीस गौओं को दिया । ४ । दाल्भोवक उनसे बोले कि पशुओं को विभाग करो मैं इन पशुओं को छोड़कर उस उत्तम राजा से भिक्षा मागूगा ।५। हे राजाब्राह्मणों में श्रेष्ठ प्रतापवान दाल्भोवक सब ऋषियों से इस प्रकार कहकर धृतराष्ट्र के भवनकोगये ।६। और राजा धृतराष्ट्रके सम्मुख जाकर उससे पशुओंको मांगा ।७। तब उस श्रेष्ठ राजाने दैवयोगसे गौ बैलों को मृतक देखकर बड़े क्रोधपूर्वक उन

CHAPTER XLI

Vaishampayan said, "From Brahmyoni Baldev went to Samyukt where the great ascetic Dalbhovak had given libations of the country of Dhritrashtra and made his body lean in anger At the close of the twelve years' sacrifice, the ascetics of Naimish went to the country of the Panchals. There they asked of the king for some donation, He gave them twentyone young, strong and healthy cows Dalbhovak left his share of the cows to be distributed among his companions and intended to ask for himself of some other king. Glorious Dalbhovak then went to the palace of Dhritrashtra and begged for some beasts. The king, as Fate would have it was chagrined at the death of some

चिन्तयामास धर्मवित् । अहो बत नृशंसं वै वाक्यमुक्तोऽस्मि संसदि ॥ ९ ॥ चिन्त
यित्वा मुहूर्तं तु रोषाविष्टो द्विजोत्तम । मतिं चक्रे विनाशाय धृतराष्ट्रस्य भूपतेः
॥ १० ॥ स उत्कृत्य मृतानां वै मांसानि मुनिसत्तम । जुहाव धृतराष्ट्रस्य राष्ट्रं नरपतेः
पुरा । अवकीर्णे सरस्वत्यास्तीर्थे प्रज्वाल्य पावकम् ॥ ११ ॥ बको दाल्भ्यो महाराज
नियमं परमास्थितः । स तैरेव जुहावास्य राष्ट्रं मांसैर्महातपाः ॥ १२ तस्मिंस्तु विधि
वत् सत्रे संप्रवृत्ते सुदारुणे । अक्षीयत ततो राष्ट्रं धृतराष्ट्रस्य पार्थिव ॥ १३ ॥ ततः
प्रक्षीयमाणं तद्राष्ट्रं तस्य महीपते । छिद्यमानं यथानन्तं वनं परशुना विभो । बभूवा
पहतं तच्चाप्यवकीर्णमचेतनम् । १४ । दृष्ट्वा तथावकीर्णं तु राष्ट्रं स मनुजाधिप ।
बभूव दुर्मना राजंश्चिन्तयामास च प्रभु ॥ १५॥ मोक्षार्थमकरोद्यत्नं ब्राह्मणैः सहितः
पुरा । न च श्रेयोऽध्यगच्छत् स क्षीयते राष्ट्रमेव च ॥ १६ ॥ यदा स पार्थिव खिन्नस्ते

से कहा है ब्रह्मबन्धो जो तू चाहताहै तो इनपशुओंको शीघ्र लेजाओ ८। तब धर्मज्ञ ऋषिने उस प्रकार के वचनको सुनकर बड़ी चिन्ताकरी कि बड़े दुःखकी बात है कि इसने मुझको सभा में ऐसे निर्दय और अनादरता के वचन कहे ।९। तब क्रोध से पूर्ण उस श्रेष्ठ ब्राह्मणने एक मुहूर्तभर चिन्ता करके राजा धृतराष्ट्रके नाश करनेका विचार किया । १० । पूर्वसमय में उस श्रेष्ठ मुनिने मृतक पशुओं के मांसको काटकर राजाधृतराष्ट्रके देशको हवन करादिया सरस्वती के अवकीर्ण तीर्थ में अग्निको प्रज्वलित करके । ११ । वह बड़ा तपस्वी दाल्भ्यबक जो नियम में नियत हुआ और उन मांसखण्डों से उसके देशको होमा ।१२। हे राजा इसके पीछे विधिके अनुसार उस भयानक यज्ञके जारी होनेपर धृतराष्ट्रका देश नाशको प्राप्तहुआ । १३ । और राजाका वह राज्य ऐसा अत्यन्त नाशहुआ जैसे कि फरसेसे कटाहुआ बड़ावन होता है वह सब देश बड़ी आपत्ति में फँसा नाशयुक्त होकर अचेत होगया ।१४। हेराजा वह राजा अपने देशको इस प्रकार नाशयुक्त देखकर महादुःखी चित्त हुआ और बड़ी चिन्ता से युक्त होकर ।१५। उस ने ब्राह्मणों समेत राज्य के आपत्तिसे बचनेके अनेक उपायकिये परन्तु कल्याण

of his cattle and in his rage offered the rishi their dead bodies. The good rishi was for some time lost in meditation and was disgusted at the cruel insult of the king Then he thought of ruining the kingdom of Dhritrashtra. He cut off the bodies of those dead beasts and poured libations of them over fire to ruin the country He kept his fire burning at Avkirn on the bank of the Saraswati and fed it with the pieces of flesh. At the commencement of that dreadful sacrifice, the country was destroyed like a forest cut down by an axe. The people lost their senses at that great calamity The king was much distressed at the devastation of his country and contrived many plans to save it from ruin, but his attempts all failed He inquired of the learned

च विप्रास्तदानघ । यदा चापि न शक्नोति राष्ट्रं मोक्षयितुं नृपः ॥१७॥ अथ वै प्राश्नि-
कास्तत्र पप्रच्छ जनमेजय । ततो वै प्राश्निकाः प्राहुः पशुर्विप्रकृतस्त्वया ॥१८॥ मांसै-
रभिजुहोतीति तव राष्ट्रं मुनिर्बकः । तेन ते हूयमानस्य राष्ट्रस्यास्य क्षयो महान् ॥१९॥
तस्यैतत्तपसः कर्म येन ते ह्यनयो महान् । अपांकुंजे सरस्वत्यास्तं प्रसादय पार्थिव
॥ २० ॥ सरस्वतीं ततो गत्वा स राजा बकमब्रवीत् । निपत्य शिरसा भूमौ प्राञ्जलि-
र्भरतर्षभ । प्रसादये त्वां भगवन्नपराधं क्षमस्व मे ॥२१॥ मम दीनस्य लुब्धस्य मौर्ख्येण
हतचेतसः । त्वं गतिस्त्वञ्च मे नाथः प्रसादं कर्तुमर्हसि ॥ २२ ॥ तन्तथा विलपन्तन्तु
शोकोपहतचेतसम् । दृष्ट्वा तस्य कृपाजज्ञे राष्ट्रं तच्च व्यमोचयत् ॥२३॥ ऋषिः
प्रसन्नस्तस्याभूत् संरम्भञ्च विहाय सः । मोक्षार्थं तस्य राष्ट्रस्य जुहाव पुनराहुतिम्
॥ २४ ॥ मोक्षयित्वा ततो राष्ट्रं प्रतिगृह्य पशून् बहून् । हृष्टात्मा नैमिषारण्यं जगाम
पुनरेव च ॥ २५ ॥ धृतराष्ट्रोऽपि धर्मात्मा सुस्थचेता महामनाः । स्वमेव नगरं राजा

को नहींपाया अर्थात् देशका नाशहोना बन्द नहींहुआ ।१७। हे निष्पाप जनमेजय
जब वह राजा समेत सब ब्राह्मण दुःखीहुये तब सबने प्रश्नोंके बतानेवालों से
पूछा उन लोगोंने कहा कि पशुओंके विषयमें तुमसे अनादर कियाहुआ । १८। एक
मुनि गौओं के मांसों से तेरे देशको होमताहै उससे होमेहुये इस तेरे देश को
बड़ानाश होरहा है । १९ । यह उसीके तपका बड़ा कर्म है जिससे कि तेरा बड़ा
नाश है हेराजा सरस्वती के जलकुञ्जमें उसको प्रसन्नकरो २०। हे भरतर्षभ इसके
पीछे उस राजा ने सरस्वती को जाकर हाथजोड़ शिर से पृथ्वीपर गिरकर उस
बकमुनि से कहा हे भगवन् मैं आपको प्रसन्न करताहूं मेरे अपराध को क्षमा
करो । २१ । मुझ दुःखी लोभी और अज्ञानतासे निर्बुद्धीकी तुम गतिहो तुम मेरे
नाथहो मुझपर कृपाकरने के योग्यहो । २२ । इस प्रकार विलाप करनेवाले शोकसे
निर्बुद्धि उस राजाको देखकर उसके दया उत्पन्न हुई और उस देशके नाश न होने
के लिये फिर अग्निमें आहुतिदी ।२४।इसकेपीछे देशको निर्विघ्नकर बहुतसे पशुओं
को लेकर प्रसन्नहोकर फिर नैमिषारण्यको गये । २५ । और धर्मात्मा सावधान

men the cause of that calamity and was told that the brahman whom he had insulted with regard to beasts, was feeding fire with pieces of flesh to ruin the country. The king was then advised to please the muni who was performing the sacrifice at the bank of the Saraswati. 20. The king went there and with joined palms falling at the feet of the ascetic said, "I beseech you, Bhagwan, pardon my fault committed through avarice and ignorance. Have mercy on me, my lord. 22. The rishi felt mercy at the whining of the king and poured more libations to save the country from ruin. Having made the country free from all calamity, he was gratified with a present of many cattle and returned to Naimish. 25. Glorious king Dhritrashtra too

मनिवेदे महर्द्धिमत् ॥ २६ ॥ तत्र तीर्थे महाराज बृहस्पतिरुदारधीः । असुराणामभा
वाय भवाय च दिवौकसाम् ॥ २७ ॥ मांसैरभिजुहावेष्टिमक्षीयन्त ततोऽसुराः । दैवतै
रपि संभग्ना जितकाशिभिराहवे ॥ २८ ॥ तत्रापि विधिवद्दत्त्वा ब्राह्मणेभ्यो महायशाः ।
वाजिनः कुञ्जरांश्चैव रथांश्चाश्वतरीयुतान् ॥ २९ ॥ रत्नानि च महार्हाणि धनं धान्यं च
पुष्कलम् । ययौ तीर्थं महाबाहुर्यायातं पृथिवीपते ॥ ३० ॥ यत्र यज्ञे ययातेस्तु महाराज
सरस्वती । सर्पिः पयश्च सुस्राव नाहुषस्य महात्मनः ॥ ३१ ॥ तत्रेष्ट्वा पुरुषव्याघ्रो
ययातिः पृथिवीपतिः । आक्रामदूर्ध्वं मुदितो लेभे लोकांश्च पुष्कलान् ॥ ३२ ॥ पुनस्तत्र
च राजस्तु ययातेर्यजतः प्रभो । औदार्यं परमं कृत्वा भक्तिं चात्मनि शाश्वतीम्
ददौ कामान् ब्राह्मणेभ्यो यान् यान् यो मनसेच्छति ॥ ३३ ॥ यो यत्र स्थित एवेह आहूतो
यज्ञसंस्तरे । तस्य तस्य सरिच्छ्रेष्ठा गृहादिशयनादिकम् । षड्रसं भोजनञ्चैव दान
नानाविधं तथा ॥ ३४ ॥ ते मन्यमाना राज्ञस्तु सम्प्रदानमनुत्तमम् । राजानं तुष्टुवुः

-बड़े साहसी भी बड़े वृद्धिवाले राजापुत्र इने भी अपने नगरको मासाकया। २६ हे महाराज उसी तीर्थपर बड़े बुद्धिमान् बृहस्पतिजी ने असुरों के नाश और देवताओं की वृद्धिके निमित्त मांसोंसे यज्ञमें हवनकिया इसहेतुसे असुरों के नाश और देवताओंकी वृद्धिके निमित्त मांसोंसे यज्ञमें हवनकिया इसहेतुसे असुरोंने विनाशको पाया और युद्ध में विजय से शोभायमान देवताओं के हाथ से राक्षस नाशको प्राप्तहुये। २८। बड़े यशस्वी बलदेवजी वहांभी ब्राह्मणों के अर्थ विधिपूर्वक घोड़े हाथी और खच्चरों से युक्त रथ बहुमूल्य रत्न और बहुतसे धनधान्यकोदेकर फिर महाबाहु बलदेवजी ययाति तीर्थ को गये। ३०। हे पृथ्वी नाथ महाराज वहां नहुषके पुत्र महात्मा ययाति के यज्ञ में सरस्वती ने घृत और दूधको बहाया।३१। सब पृथ्वीका स्वामी पुरुषोत्तम ययाति वहां यज्ञको करके प्रसन्नता से ऊपर के उत्तमलोकोंकोगया और श्रेष्ठलोकों को पाया।३२। इसके अनन्तर महाप्रभु राजा ययाति के यज्ञ करतेहुये बड़ी उदारता और सनातन भक्तिको चित्तमें धारण करके ब्राह्मणोंको उन उन अभीष्ट वस्तुओंका दानकिया जो २ इच्छाके समान जैसी २ वस्तुको चाहता था। ३३। यज्ञरचना में बुलाया हुआ जोरपुरुष वहां निवासीथा उस२ पुरुषको उस उत्तम नदीने गृहोंसमेत उत्तम शयनों को दिया षड्रस भोजन

returned to his own country. At the same place, Vrihaspati too, had fed fire with flesh in order to bring about the ruin of Asuras and the advancement of gods. Then the asurs were ruined and slain by the victorious gods. Baldev gave beasts and jewels at this holy place and proceeded to the holy place of Yayati. 30 There Yayati the son of Nahush had at his sacrifice poured butter and milk in the Saraswati. He ascended to heaven after performing that sacrifice. Yayati gave desired objects and wealth to the Brahmans whom he had summoned to assist at his sacrifice and gave the people of the lo-

प्रीता ददुश्चैवाशिषः शुभाः ॥ ३५ ॥ तत्र देवाः सगन्धर्वाः प्रीता यज्ञस्य सम्पदा। विस्मिता मानुषाश्चासन् दृष्ट्वा तां यज्ञसम्पदम् ॥ ३६ ॥ ततस्तालकेतुर्महाधर्मसेतुर्महात्मा कृतात्मा महादाननित्यः। वसिष्ठापवाहं महाभीमवेगं धृतात्मा जितात्मा समभ्याजगाम ॥ ३७ ॥

इति गदायुद्धपर्वणि सारस्वतोपाख्याने एकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ।

पूर्वक अनेक प्रकार के दानदिये । ३४ । राजाके उत्तमयानको स्वीकार करनेवाले उन प्रसन्न-ब्राह्मणोंने शुभ-आशीर्वादों को देकर राजाको प्रसन्न किया ।३५। वहां गंधर्वों समेत सब देवता यज्ञके सामानों से प्रसन्नहुये और सब मनुष्य यज्ञकी उस सामग्री आदिको देखकर आश्चर्यितहुये । ३६ । इसके पीछे तालध्वजाधारी बड़े धर्मध्वज महात्मा शुद्ध अन्तःकरण सदैव बड़े दानी साहसी और धैर्यवान् बलदेव जी वसिष्ठजी के उस भयानक वेगवाले तीर्थ को गये ३७ ॥

---

cality good houses on the bank of the Saraswati and fed them with delicacies. The Brahmans blessed the king after receiving donations. There gods and gandharvas were gratified with libations, and the lookerson were amazed at the grand preparations. Then Baldev virtuous, p[r]eminent, magnanim[ous] and charitable ... of the palm, proceeded to visit



जनमेजय उवाच। वशिष्ठस्यापवाहोसौ भीमवेगः कथ नु सः। किमर्थं च सरिच्छ्रेष्ठा तमृषिं प्रत्यवाहयत् ॥ १ ॥ कथमस्याभवद्वैर कारण किञ्चतत् प्रभो। शंस पृष्टो महाप्राज्ञ न हि तृप्यामि कथ्यति ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच। विश्वामित्रस्य विप्रर्षेर्वसिष्ठस्य च भारत। भृशं वैरमभूद्राजं स्तपस्पर्धाकृत महत् ॥ ३ ॥ आश्रमो वै वशिष्ठस्य स्थाणुतीर्थेभवन्महान्। पूर्वत पार्श्वतस्तस्यासीद्विश्वामित्रस्य धीमत ॥ ४ ॥ यत्र स्थाणुर्महाराज तप्तवान् सुमहत्तपः। यत्रास्य कर्म तद्घोर प्रवदन्ति मनीषिण ॥ ५ ॥ यत्रेष्ट्वा भगवान् स्थाणु पूजयित्वा सरस्वतीम्। स्थापयामास तत्तीर्थं स्थाणु तीर्थमिति प्रभो ॥ ६ ॥ तत्र तीर्थे सुराः स्कन्दमभ्यषिञ्चनराधिप। सैनापत्येन महता सुरारिविनिबर्हणम ॥ ७ ॥ तस्मिन् सारस्वते तीर्थे विश्वामित्रो महामुनि। वशिष्ठं चालयामास तपसोग्रेण तच्छृणु ॥ ८ ॥ विश्वामित्रवशिष्ठौ तावहन्यहनि भारत। स्पर्धां

अध्याय ४२ ॥

जनमेजय बोले कि यह वशिष्ठजीका अपवाह नाम तीर्थ जो भयानक वेग वाला है वह कैसेहुआ और उस उत्तम नदीने उसको कैसे बहाया। १। उसकीशत्रुता कैसेहुई हे प्रभु उसका क्या हेतुहै हे बडेज्ञानी आप मुझसे वर्णन कीजिये मैं उसके सुननेसे तृप्त नहीं होता हूं। २। वैशम्पायन बोले हे भरतवंशी राजा जनमेजय ब्रह्मर्षि वसिष्ठ और विश्वामित्र के तपकी ईर्षा से उत्पन्न होनेवाली बड़ी शत्रुता हुई। ३। शिवजी के तीर्थ पर वशिष्ठजी का बड़ा आश्रम हुआ और पूर्वीय पक्ष में बुद्धिमान विश्वामित्रका आश्रम हुआ। ४। हे महाराज जहांपर शिवजीने उत्तम तपको तपाथा वहांही ज्ञानीलोग इसके घोर कर्म्मको कहते हैं। ५। हे प्रभु जहांपर प्रभु शिवजीने यज्ञ करके सरस्वतीका पूजन कर स्थाणुनाम से प्रसिद्ध उस तीर्थको नियत किया। ६। हे राजा देवताओंने जिस तीर्थपर असुरोंके मारने वाले स्वामिकार्तिकजी को देवताओं के सेनापति के अधिकारपर अभिषेक कराया। ७। उस सारस्वततीर्थ में विश्वामित्र महामुनि ने उग्रतप के द्वारा वासिष्ठजी को

CHAPTER XLII

Janmejaya said, "How Apvah of great velocity became the holy place of Vashishth? How did the river carry him? What was the cause of his enmity? Pray tell me all this, I am not yet satisfied with hearing it." Vaishampayan said, "The enmity between Vashishth and Vishwamitra arose out of their envy of each other's ascitism. Vashishtha's hermitage was Shiva's holy place, while that of Vishwamitra was on the eastern wing. The dreadful deed took place where Shiv had performed asceticism 5. It was the place called Sthanu on account of the sacrifice of Shiv and where the god had made Kartik their leader Vishwamitra brought his rival Vashishth there by

तपः कृतो तीव्रो चक्रतुस्तौ तपोधनौ ॥९॥ तत्राप्यधिकसन्तप्तो विश्वामित्रो महामुनि। दृष्ट्वा तेजो वशिष्ठस्य चिन्तामभिजगाम ह ॥ १०॥ तस्य बुद्धिरियं ह्यासीद्धर्मनित्यस्य भारत । इयं सरस्वती तूर्णं मत्समीपं तपोधनम् ॥ ११ ॥ आनयिष्यति वेगेन वशिष्ठं जपतांवरम् । इहागतं द्विजश्रेष्ठं हनिष्यामि न संशयः ॥ १२ ॥ एवं निश्चित्य भगवान् विश्वामित्रो महामुनिः । सस्मार सरितां श्रेष्ठां क्रोधसंरक्तलोचनः ॥ १३ ॥ सा ध्याता मुनिना तेन व्याकुलत्वं जगाम ह । जज्ञे चैनं महावीर्यं महाकोपञ्च भामिनी ॥ १४ ॥ तत एनं वेपमाना विवर्णा प्राञ्जलिस्तदा । उपतस्थे मुनिवरं विश्वामित्रं सरस्वती ॥ १५ ॥ हतवीरा यथा नारी साभवद्दुःखिता भृशम् । ब्रूहि किं करवाणीति प्रोवाच मुनिसत्तम ॥ १६ ॥ तामुवाच मुनिः क्रुद्धो वशिष्ठं शीघ्रमानय । यावदेनं निहन्म्यद्य तच्छ्रुत्वा व्यथिता नदी ॥ १७ ॥ साञ्जलिन्तु ततः कृत्वा पुण्डरीकनिभेक्षणा । प्राकम्पत

चलायमान किया । ८ । हे भरतवंशी उन तपोधन वसिष्ठजी और विश्वामित्रजीने तपके कारण से उत्पन्न होनेवाली कठिन ईर्षाको प्रतिदिन किया । ९ । वहां भी अत्यन्त दुःखी महामुनि विश्वामित्रने वशिष्ठजी के तेजको देखकर बड़ी चिन्ता को पाया । १० । हे भरतवंशी तब सदैव धर्मपर चलनेवाले उस विश्वामित्र की यह मतिहुई कि यह सरस्वती शीघ्रही उस तपोधन । ११ । और जपकरनेवालोंमें श्रेष्ठ वशिष्ठजीको मेरे सम्मुख लावेगी यहां जब आवेंगे तब उस आयेहुये उत्तम ब्राह्मण को निस्सन्देह मारूंगा । १२ । इस प्रकार उस महामुनि ने क्रोध से रक्तनेत्र विश्वामित्रने निश्चय करके नदियों में श्रेष्ठ सरस्वती को स्मरण किया । १३ । उस मुनिके ध्यान करतेही उस प्रकाशमान सरस्वती ने बड़ी व्याकुलता को पाया और इस बड़े पराक्रमी विश्वामित्रको बड़ा क्रोधयुक्त जाना । १४ । तब इसकेपीछे कम्पायमान रूपान्तरयुक्त हाथजोड़कर सरस्वती इस मुनियों में श्रेष्ठ विश्वामित्रके सम्मुख खड़ी हुई । १५ । और और जैसे कि मृतक वीरोंवाली स्त्री होतीहै उसी प्रकार वह सरस्वतीभी अत्यन्त दुःखीहुई और उस श्रेष्ठ मुनिसे बोली कि कहोंक्या आज्ञा है । १६ । तब क्रोधयुक्त मुनि उससे बोले कि मैं वसिष्ठजी को मारूंगाइससे

means of the Saraswati, for Vishwamitra was much careworn on account of the envy which he felt on account of the greatness of Vashishth 10. Vishwamitra desired that Saraswati should bring Vashishth and then he intended to slay him. Thus with red eyes, Vishwamitra invoked Saraswati. She was much distressed in her mind on account of Vishwamitra's anger. But she came before him with joined hands 15 She came to him like the widow of a warrior slain and said, " What is your wish? " The enraged muni told her that he intended to slay Vashishth and that she should bring him. At this she shook with fear like a creeper shaken by the wind, but the muni ordered her to do his bidding without hesitation She was

मृश भीता वायुनेवाहृता लता । १८ । तथा रूपान्तु तां दृष्ट्वा मुनिराह महानदीम् अविचार्य वशिष्ठन्तमानयस्वान्तिकं मम । १९ सा तस्य वचनं श्रुत्वा ज्ञात्वा पापं चिकीर्षितम् । वशिष्ठस्य प्रभावञ्च जानन्त्यप्रतिमं भुवि । २० ॥ साभिगम्य वशिष्ठन्तमिममर्थमचोदयत् यदुक्ता सरिता श्रेष्ठा विश्वामित्रेण धीमता ॥ २१ । उभयोः शापयो भीता वेपमाना पुनः पुनः । चिन्तयित्वा महाशापमृषिवित्रासिता भृशम् । १२ । तां कृशाञ्च विवर्णाञ्च दृष्ट्वा चिन्तासमन्वितम् । उवाच राजन् धर्मात्मा वशिष्ठो द्विपदांवरः । २३ ॥ वशिष्ठ उवाच । त्राह्यात्मानं सरिच्छ्रेष्ठे वह मां शीघ्रगामिनी । विश्वामित्रः शपेद्धि त्वां मा कृथास्त्वं विचारणाम् । २४ । तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कृपाशीलस्य सा सरित् । चिन्तयामास कौरव्य किं कृत्वा सुकृतं भवेत् ॥ २५ ॥ तस्या श्चिन्ता समुत्पन्ना वशिष्ठो मय्यतीवहि । कृतवान् हि दया नित्यं तस्य कार्यं हितं मया ॥ २६ ॥ अथ कूले स्वके राजन् जपन्तमृषिसत्तम जहुवान कौशिक प्रेष्य सरस्वत्य

शीघ्र उनको लाओ यह वचन सुनकर यह नदी बड़ी पीड़ामान हुइ । १७। वह कमललोचन अत्यन्त भयभीत हाथजोड़कर ऐसे कम्पानहुई जैसे कि वायु से ताड़ित लता होती है । १८ । तब वह मुनि उस प्रकारके रूपवाली नदीसे बोले कि तुम बिना विचार के वशिष्ठजी को मेरे पास लाओ १९। वह उनके वचनको सुनकर और पाप करनेकी इच्छा जानकर पृथ्वीपर वसिष्ठजी के अतुल प्रभाव को जानतीहुई । २० । उस सरस्वतीने वशिष्ठजी के पास जाकर इनबातको कह दिया नदियों में श्रेष्ठ सरस्वती से बुद्धिमान विश्वामित्रने जो कहाथा । २१। उसने और वशिष्ठजीके शापसे भयभीत और वारम्वार कम्पायमान महाशाप को विचार कर ऋषि से अत्यन्त भयभीतथी । २२ । हेराजा द्विपादोंमेंश्रेष्ठ धर्मात्मा वशिष्ठजी उस दुवल विपरीत रूपांतर किये चिन्तासे युक्त सरस्वतीको देखकर यहवचनबोले किहे नदियों में श्रेष्ठ शीघ्रगामिनी तू अपनी रक्षाकर और मुझको शीघ्रलेचल नहीं तो विश्वामित्र तुझको शापदेगा इसमें तू विचार मतकर । २४ । हे कौरवनन्दन उस नदीने इनकरुणास्वाली वशिष्ठजी के वचनोंको सुनकर चिन्ता करी कि कौनसी रीति और उपाय से शुभकर्महोय । २५ । उसको यह चिंता उत्पन्नहुईकि वशिष्ठजीने मुझपर सदैव दयाकरी है मुझको इनका हितकरना योग्य है । २६ हे

much afraid of Vashishth because she knew his greatness 20 She went to him and told him all that she was required to do She was much afraid of the curse of both the rishis. Seeing her shake with fear, Vashishth said, " Think of your own safety and take me to Vishwamitra or he will curse you " At this she thought how to accomplish the deed in the best way. 25 She was all the while thinking of how to requite Vashishth's former kindness to her Yet she was afraid of Vishwamitra's anger Then she broke the bank by

ग्वचिन्तयत् । २७ ।इदमन्तरमित्येव ततः सा सरिताम्वरा । कूलापहारमकरोत् स्वेन वेगेन सा सरित् ॥ २८ ॥ तेन कूलापहारेण मैत्रावरुणिरौह्यत । उह्यमानः स तुष्टाव तदा राजन् सरस्वतीम् ॥ २९ ॥ पितामहस्य सरसः प्रवृत्तासि सरस्वती । व्याप्तञ्चेदं जगत् सर्वं यवैवाम्भोभिरुत्तमैः ॥३०॥ त्वमेवाकाशगा देवी मेघेषुत्सृजसे पयः । सर्वा आपस्त्वमेवेति त्वत्तो वयमधीमहे ॥ ३१ ॥ पुष्टिर्द्युतिस्तथा कीर्त्तिः सिद्धिर्बुद्धिरुमा तथा। त्वमेव सर्वभूतेषु वससीह चतुर्विधा ॥ ३२ ॥ एवं सरस्वती राजंस्तूयमाना महर्षिणा । वेगेनोवाह तं विप्रं विश्वामित्राश्रमं प्रति । न्यवेदयत चाभीक्ष्णं विश्वामित्राय तं मुनिम् ॥ ३३ ॥ तमानीतं सरस्वत्या दृष्ट्वा कोपसमन्वितः । अथान्वैषत प्रहरणं वशिष्ठान्तकरं तदा ॥ ३४ ॥ तन्तु क्रुद्धमभिप्रेक्ष्य ब्रह्मवध्याभयान्नदी । अपोवाह वशिष्ठं तं प्राचीं दिशमतन्द्रिता । उभयोः कुर्वती वाक्यं वञ्चयित्वा तु गाधिजम् ॥३५॥ ततोऽपवाहितं दृष्ट्वा

राजा तब सरस्वती ने अपने तटपर जपहोमादिक करनेवाले ऋषियों में श्रेष्ठ विश्वामित्र को देखकर चिन्ताकरी । २७ । कि यह समयहै इसके पीछे उस नदियों में श्रेष्ठ सरस्वतीने अपने वेगसे किनारेको हटाया । २८ । वशिष्ठजी उसकिनारेके हटानेसे सवार किये गये हेराजा तबउस तटपर सवार ऋषिने सरस्वतीकी प्रशंसाकरी ।२९। कि हे सरस्वती तुम ब्रह्माजीकी नदी से जारीहुईहो और यह सबसंसार तेरेही उत्तम जलोंसे व्याप्त है । ३० । हेदेवी आकाशमें वर्त्तमान होकर तुमही बादलों में अमृतको छोड़तीहो और सबजलभी तुम्हींहो हम तुमसे वेदोंको पढ़ते हैं । ३१ । तुम्हीं पुष्टि द्युतिकीर्ति सिद्धि बुद्धि उमा और वाणी होकर तुम्हीं स्वाहाहो यहजगत् तुम्हारे आधीन है तुम्हीं इन चारों प्रकारके जीवोंमें वासकरतीहो । ३२ । हे राजा इस प्रकार महर्षि से स्तूयमान सरस्वती ने उस ब्राह्मण को वेगसे विश्वामित्रके आश्रम में पहुंचाया और लेजाकर विश्वामित्रसे उनका आना बारम्बार वर्णन किया । ३३ । तब सरस्वती के लायेहुये उसऋषिको देखकर क्रोधयुक्त विश्वामित्र ने वशिष्ठजी के नाश करनेवाले शस्त्रको चाहा । ३४ । सावधान नदीने उस क्रोध

her velocity and carried the piece of land along with Vashisth, who much praised her skill, saying "You are born of Brahma's river and all the world exists in your waters. 30 You pour forth nectar into clouds from heaven and we learn the Vedas from you. You are Pushti, Dyuti, Kirti, Sidhi, Budhi, Uma, Vani and Swaha and all the world depends upon you. You live in the midst of all creatures." Thus praised by him, she took him to the hermitage of Vishwamitra and informed him of his coming. Then he wished for a weapon to slay him. Afraid of the sin of Brahmicide Saraswati carried him further east and thus deceived Vishwamitra of his prey. 35. Then Vishwamitra in anger said, "Because you

वशिष्ठमृषिसत्तमम् । अब्रवीदथ संक्रुद्धो विश्वामित्रो ह्यमर्षण ॥ ३६ ॥ यस्मान्मां त्वं सरिच्छ्रेष्ठ वञ्चयित्वा पुनर्गता । शोणितं वह कल्याणि रक्षोग्रामणीसंयुतम् ॥ ३७ ॥ ततः सरस्वती शप्ता विश्वामित्रेण धीमता । अवहच्छोणितोन्मिश्रं तोयं संवत्सरं तदा ॥ ३८ । अथर्षयश्च देवाश्च गन्धर्वाप्सरसस्तथा । सरस्वतीं तथा दृष्ट्वा बभूवुर्भृशदुःखिताः ॥ ३९ ॥ एवं वशिष्ठापवाहो लोके ख्यातो जनाधिप । आगच्छच्च पुनर्मार्गं स्वमेव सरितां वरा ॥ ४० ॥

इतिगदायुद्धपर्वणि बलदेवतीर्थयात्रायां सारस्वतोपाख्याने द्विचत्वारिंशोऽध्याय ४२॥

युक्त विश्वामित्रको देखकर ब्रह्महत्या के भय से वशिष्ठजीको पूर्वदिशा की ओर बहाया दोनोंके वचनको करनेवाली सरस्वतीने विश्वामित्र को छलकर ऐसा कर्म कर्म किया ३५। तदनन्तर अशान्तचित्त क्रोधयुक्त विश्वामित्रबोले किहे उत्तमनदी जैसे तुम मुझको छलकर चलीगई हो इस हेतुसे हे कल्याणिनि तुम राक्षस गणों के स्वीकृत रुधिरको धारणकरो । ३७ । इसके पीछे बुद्धिमान विश्वामित्रसे शापित सरस्वती ने एक वर्षतक रुधिरयुक्त जलका बहाया । ३८ । इसके अनन्तर ऋषिदेवता अप्सरा और गन्धर्व उसप्रकारकी सरस्वतीको देखकर अत्यन्त दुःखी हुये । ३९ । हे राजा इसप्रकार वशिष्ठजीका अपवाह लोकमें प्रसिद्ध हुआ तब वह श्रेष्ठ नदी फिर अपने मार्गको आई ४० ॥

---

have deceived me, you willl have blood for your water." Thus blood flowed in her bed for a year, to the great grief of Gandharvas and apsaras Thus the flow of Vishsth was known throughout the world and the noble river flowed in her course. 40.



वैशम्पायन उवाच । सा शप्ता तेन क्रुद्धेन विश्वामित्रेण धीमता । तस्मिंस्तीर्थवरे शुभे शोणितं समुपावहत् ॥ १ ॥ अथाजग्मुस्ततो राजन् राक्षसास्तत्र भारत । तत्र ते शोणितं सर्वे पिबन्तः सुखमासते ॥ २ ॥ तृप्ताश्च सुभृशं तेन सुखिता विगतज्वराः । नृत्यन्तश्च हसन्तश्च यथा स्वर्गजितस्तथा ॥३॥ कस्यचित्त्वथ कालस्य ऋषयः सुतपोधनाः । तीर्थयात्रां समाजग्मुः सरस्वत्यां महीपते ॥ ४ ॥ तेषु सर्वेषु तीर्थेषु त्वाप्लुत्य मुनिपुङ्गवाः । प्राप्य प्रीतिं परां चापि तपोलुब्धा विशारदाः ॥ ५ ॥ प्रययुर्हि ततो राजन् येन तीर्थं तदसृग्वहम् । अथागम्य महाभागास्तत्तीर्थं दारुणं तदा ॥ ६ ॥ दृष्ट्वा तोयं सरस्वत्याः शोणितेन परिप्लुतम् । पीयमानञ्च रक्षोभिर्बहुभिर्नृपसत्तम ॥ ७ ॥ तान् दृष्ट्वा राक्षसान् राजन् मुनयः संशितव्रताः । परित्राणे सरस्वत्याः परं यत्नं प्रचक्रिरे ॥ ८ ॥ ते तु सर्वे महाभागाः समागम्य महाव्रताः । आहूय सरितां श्रेष्ठामिदं वचनमब्रुवन् ॥ ९ ॥ कारणं ब्रूहि कल्याणि किमर्थं ते ह्रदो ह्ययम् । एवमाकुलतां यातः श्रुत्वा पास्यामहे वयम् ॥ १० ॥ ततः सा सर्वमाचष्ट यथावृत्तं प्रवेपती । दुःखितामथ तां दृष्ट्वा

अध्याय ४३ ॥

वैशम्पायन बोले कि क्रोधयुक्त बुद्धिमान् विश्वामित्रसे शापित सरस्वती ने उस उत्तम और उज्ज्वल तीर्थपर रुधिर को बहाया । १ । हे भरतवंशी राजा जनमे जय इसकेपीछे वहां राक्षसआये और वह सब रुधिरको पानकरतेहुये सुखपूर्वक रहनेलगे । २ । उस रुधिरपानकरनेसे वह राक्षस स्वर्गके विजय करनेवाले पुरुषोंके समान अत्यन्त तृप्त सुखी और ज्वरों से रहित हर्षयुक्तहुये । ३ । इसकेपीछे तपोधन ऋषि किसीसमय सरस्वती के तीर्थपर तीर्थयात्राको गये । ४ । वह तपकेलोभी पंडित और श्रेष्ठमुनि उनसब तीर्थोंमें स्नानकर श्रेष्ठ प्रीतिको प्राप्तकरके । ५ । वहांसे चलेगये और जिसमार्ग से रुधिरका बहानेवाला तीर्थथा उस भयानक तीर्थ पर भी वह महाभाग सब ऋषि गये वहां रुधिरसे युक्त सरस्वती के जलको बहुत राक्षसों से पान कियाहुआ देखकर और उन राक्षसोंको भी देखकर उन तेजव्रत मुनियों ने सरस्वतीकी रक्षा में बहुत उपाय किया । ८ । अर्थात् वह सब महाभाग बड़े व्रतवाले ऋषि नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वती को बुलाकर यह वचन बोले । ९ । हे कल्याणिनि इस तेरे ह्रदने किसहेतुसे इस महाव्याकुलताको पाया है इसका सब वृत्तान्त वर्णनकरो हम सुनकर इसका निश्चय करेंगे । १० । इसके

CHAPTER XLIII

Vaishampayan said, " Cursed by enraged Vishwamitra, Saraswati flowed blood in her good and pure stream. Rakshases came and drank of the blood. They were happy like those who have conquored paradise and were full of joy. After sometime rishis went to the bank of the Saraswati. The ascetics desirous of bathing came there and seeing the river full of blood and the rakshases drinking at it, they made many plans to purge the river. 8. They invoked Saras-

ऊचुस्ते वै तपोधना. ॥ ११ ॥ कारणं श्रुतमस्माभिः शापश्चैव श्रुतोऽनघ करिष्यामो वयं यत्नं सर्व एव तपोधना. ॥ १२ ॥ एवमुक्त्वा सरिच्छ्रेष्ठामूचुस्तेथ परस्परम् । विमोचयामहे सर्वे शापादेतां सरस्वतीम् ॥ १३ ॥ ते सर्वे ब्राह्मणा राजंस्तपोभिर्नियमैस्तथा । उपवासैश्च विविधैर्यमै. कष्टैस्तथा ॥ १४ ॥ आराध्य पशुपतिं महादेव जगत्पतिम् । अमोक्षयन्त तां देवीं सरिच्छ्रेष्ठां सरस्वतीम् ॥ १५ ॥ तेषान्तु सा प्रभावेन प्रकृतिस्था सरस्वती । प्रसन्नसलिला जज्ञे यथापूर्वं तथैव हि ॥ विमुक्ता च सरिच्छ्रेष्ठा विबभौ सा यथा पुरा ॥ १६ ॥ दृष्ट्वा तोयं सरस्वत्या मुनिभिस्तैस्तथाकृतम् । तानेव शरणं जग्मू राक्षसा क्षुधितास्तदा ॥ १७ ॥ कृत्वाऽञ्जलिं ततो राजन्राक्षसा. क्षुधयार्दिता । ऊचुस्तान्वै मुनीन् सर्वान् कृपायुक्तान् पुन पुन. ॥ १८ ॥ वयं हि क्षुधिताश्चैव धर्माद्धीनाश्च शाश्वतात् । न च न. कामकारोऽयं यद्वयं पापकारिण. ॥ १९ ॥

पीछे उस कम्पित सरस्वती ने सब वृत्तान्त वर्णन किया वह तपोधन ऋषि उस दु.खी को देखकर कहनेलगे ।११। कि हे निष्पाप हमने हेतु और शाप दोनोंसुने हम सब तपोधन ऋषि इसके उपायको विचारकरेंगे । १२ । उस श्रेष्ठ नदीसे ऐसा कहकर फिर ऋषि परस्पर बोले कि हम सब इस सरस्वती को निष्पाप करें ।१३ हेराजा तब उन सब ब्राह्मणों ने तप नियम और नानाकठिन व्रत और जितेन्द्रिय पने से । १४ । पशुओं के स्वामी जगत्पति महादेवजी को आराधनकरके इस नदियों में श्रेष्ठ देवी सरस्वतीको पाप अंशसे मुक्तकिया १५ । वह सरस्वती उन्हीं के प्रभावसे उसीप्रकारके मुख्यरूप और स्वभाववाली हुई जैसी कि पूर्वमें थी शाप से मुक्त वह श्रेष्ठ नदी पूर्वकेही समान शोभायमान हुई । १६ । उन मुनियों से शुद्ध कीहुई उस सरस्वतीको देखकर क्षुधार्त राक्षस उनकी शरण में गये ।१७। हे राजा वह क्षुधासे पीड़ित राक्षस हाथ जोड़कर उन दयावान् मुनियों से बारम्बार यह वचन बोले कि हम क्षुधासे दुःखी होकर सनातन धर्म से रहित हैं यह इच्छा

---

wati and said, " Why are your waters so dirty? pray tell us all about it." 10. Terrified Saraswati told them all that had happened. To this the rishis replied, " We have heard about the curse and its cause and all of us will try to remedy the evil " Having said this to her they consulted among themselves to purge Saraswati of her sins. The great ascetics prayed Mahadev for this purpose and got that best of rivers purged 15 The Saraswati became as pure as she was before and was quite rid of the effect of the curse. At this the hungry rakshases sought the protection of the munis and with joined hands said to them again and again, " Being afflicted with hunger, we can not perform our duties and we have no desire to commit sins. Let us be freed from the effects of our sins. The reasons why we are so

युष्माकञ्च प्रसादेन सुकृतेन च कर्मणा यत् पापं धर्षितेऽस्माकं यतः स्मो ब्रह्मराक्षसाः ॥ २० ॥ योषिताञ्चैव पापेन योनिदोषकृतेन च । एवं हि वैश्यशूद्राणां क्षत्रियाणां तथैव च । ये ब्राह्मणान् प्रद्विषन्ति ते भवन्तीह राक्षसाः ॥ २१ ॥ आचार्यमृत्विजञ्चैव गुरुं वृद्धजनं तथा । प्राणिनो येऽवमन्यन्ते ते भवन्तीह राक्षसाः ॥ २२ ॥ तत कुरुध्वमिहास्माकं तारणं द्विजसत्तमाः । शक्ता भवन्तः सर्वेषां लोकानामपि तारणे ॥ २३ ॥ तेषान्तु मुनयः श्रुत्वा तुष्टुवुस्तां महानदीम् । मोक्षार्थं रक्षसां तेषामूचुः प्रयतमानसाः ॥ २४ ॥ क्षुतं कीटावपन्नञ्च यच्चोच्छिष्टाशितं भवेत् । सकेशमवधूतञ्च रुदितोपहतञ्चयत् । श्वभि संस्पृष्टमाणञ्च भागोऽसौ रक्षसामिह ॥ २५ ॥ तस्माज्ज्ञात्वा सदा विद्वानेतान् यत्नाद्वि वर्जयेत् । राक्षसानामसौ भुङ्क्ते यो भुङ्क्ते ह्यन्नमीदृशम् ॥ २६ ॥ शोधयित्वा ततस्तीर्थं मृषयस्ते तपोधना । मोक्षार्थं राक्षसानाञ्च नदीं तां प्रत्यचोदयन् ॥ २७ ॥ महर्षीणां

के अनुसार प्रवृत्ति नहीं है जो हम पापों को करते हैं । १९ । और आपकी कृपासे पाप कर्म्म से छूटजायँ वह हमारे पाप जिनसे कि हम ब्रह्मराक्षस हैं । २० । और बढ़तेजाते हैं उन सब पापों को सुनो स्त्रियों के उस पापसे जोकि उत्पत्ति स्थान योनिदोषसे सम्बन्ध रखनेवाला है हम ब्रह्मराक्षस होते हैं इस प्रकार वैश्य शूद्र और क्षत्रियोंमें से जो लोग ब्राह्मणों से शत्रुता रखते हैं वह इसलोक में राक्षस होते हैं । २१ । जो लोग गुरु ऋत्विज आचार्य और वृद्ध मनुष्यों समेत सब जीवधारियोंका अपमान करते हैं वह इसलोकमें राक्षस होते हैं । २२ । हे उत्तम ब्राह्मणलोगो आप हमारी रक्षाकरो आप सबलोकोंके भी तारनेमें समर्थ हैं । २३ । मुनियोंने उन्हीं के वचनोंको सुनकर महानदी की स्तुतिकरी और बड़े सावधान उन मुनियोंने उन राक्षसों की मोक्षके निमित्त उससे कहा । २४ । क्षुत कीटयुक्त उच्छिष्टभक्षत केश रखनेवाला त्यागाहुआ नेत्रोंके अश्रुओं से युक्त जो अन्नहो इन कारणों से इसलोकमें त्यागकिया हुआ अन्न राक्षसों का भागहै । २५ । इस हेतुसे बुद्धिमान् मनुष्य अच्छेप्रकार जानकर सदैव ऐसे अन्नों को उपाय पूर्वक त्यागकर जो ऐसेअन्नको खाता है वह राक्षसों के अन्नको खाता है । २६ । इसके पीछे उन तपोधन ऋषियोंने उस तीर्थको पवित्र करके राक्षसों की मोक्षके लिये उस

and why we increase are:— It is mostly due to the defects of child birth in women. "The enemies of Brahmans are also turned into rakshases, likewise those who insult their preceptors and elders. 22. Protect us, Brahmans, you have power to purify all the world." At this the munis begged Mahanadi to become the means of their salvation From that time, impure food as well as its remains are set apart for rakshases. A wise man, knowing this, should always shun from such food, for he who eats it eats the food of rakshases. Then those ascetics made the river pure for the salvation of rakshases. Knowing the desire of the munis

मतं ज्ञात्वा तत. सा सरितांवरा । अरुणामानयामास स्वां तनुं पुरुषर्षभ ॥२८॥ तस्यां ते राक्षसाः स्नात्वा तनूस्त्यक्त्वा दिवं गताः । अरुणायां महाराज ब्रह्मवध्यापहा हि सा ॥ २९ ॥ एतमर्थमभिज्ञाय देवराजः शतक्रतुः । तस्मिंस्तीर्थवरे स्नात्वा विमुक्तः पाप्मना किल ॥ ३० । जनमेजय उवाच । किमर्थं भगवान् शक्रो ब्रह्मवध्यामवाप्तवान् कथमस्मिंश्च तीर्थे वै आप्लुत्याकल्मषोऽभवत् ॥ ३१ ॥ वैशम्पायन उवाच । शृणुष्वै तदुपाख्यानं यथावृत्तं जनेश्वर । यथा बिभेद समयं नमुचेर्वासवः पुरा ॥ ३२ ॥ नमुचिर्वासवाद्भीत सूर्य्यरश्मिं समाविशत् । तेनेन्द्रः सख्यमकरोत् समयं चेदमब्रवीत् ॥ ३३ ॥ न चार्द्रेण न शुष्केण न रात्रौ नापि चाहनि । वधिष्याम्यसुरश्रेष्ठ सखे सत्येन ते शपे ॥ ३४ ॥ एवं स समयं कृत्वा दृष्ट्वा नीहारमीश्वर. । चिच्छेदास्य शिरो राजन्नपां फेनेन वासवः ॥ ३५ । तच्छिरो नमुचेश्छिन्नं पृष्ठतः शक्रमन्वयात । भो मित्रहन्

नदीको प्रवाहमान किया । २७ । हे पुरुषोत्तम फिर उसउत्तम नदीने महर्षियोंका विचार जानकर अपने अरुण नाम शरीरको वहां वर्त्तमान किया । २८ । वह राक्षस उस अरुणामें स्नानकर अपने शरीरको छोड़कर स्वर्गको गये हे महा राज वह तीर्थ ब्रह्महत्याका दूर करनेवाला है । २९ । निश्चय सौयज्ञ करनेवाला देवताओंका इन्द्र इस बातको जानकर उस उत्तम तीर्थ में स्नानकर पापों से निवृत्त हुआ । ३० । जनमेजयने कहा कि हेभगवान् इन्द्रने कैसे ब्रह्महत्याको पाया और कैसे इसतीर्थमें स्नानकरके पापों से छूटा । ३१ । वैशम्पायन बोले हे राजा इस वृत्तान्तको सुनो यह वृत्तान्त जैसाहै और जिस प्रकार इन्द्रने पूर्वसमय में नमुचि की प्रतिज्ञाको भंगकिया । ३२ । अर्थात् इन्द्रसे भयभीत होकर नमुचि सूर्य्य की किरणोंमें प्रवेशकरगया इन्द्रने उससे मित्रताकरी और यह वचन पूर्वक प्रतिज्ञाकरी कि हे असुरोंमें श्रेष्ठ मैं जल थल और रात्रि दिनमें भी तुझको कभी न मारूंगा हे मित्र मैं सत्यतासे तुझसे शपथ खाताहूं । ३४ । हे राजा उस ईश्वर इन्द्रने वचन प्रतिज्ञा करके नीहारको देखकर जलके फेनसे उसके शिरको काटा । ३५ ।

the river assumed a red colour and the rakshases bathing in the waters of Aruna went to paradise. That holy river, O king, removes the sin of Brahmicide and Indra the performer of a hundred sacrifices, knowing this fact, purified himself by bathing there. " 30. Janmejaya said, " How was Indra guilty of slaying a Brahman and how was he purged from sin by bathing there ? " Vaishampayan said, " Hear this account as it happened : in former days Indra broke his promise with Namuchi. Afraid of Indra, he entered the rays of the Sun At this Indra contracted with him a friendship and promised that, he would not slay him during day and night nor on land or water. But Indra broke his promise and cut off Namuchi's head by water foam at the

पापेति ब्रुवाण शक्रममित्रकात् ॥ ३६ ॥ एवं स शिरसा तेन चोद्यमानः पुनः पुनः।
पितामहाय सन्तप्त एतमर्थं न्यवेदयत् ॥ ३७ ॥ तमब्रवील्लोकगुरुररुणायां यथाविधि।
इष्ट्वोपस्पृश देवेन्द्र तीर्थे पापभयापहे ॥ ३८ ॥ एषा पुण्यजला शक्र कृता मुनिभिरेव
च। निगूढमस्यागमनमिहासीत् पूर्वमेव तु ॥ ३९ ॥ ततोऽभ्येत्यारुणां देवीं प्लावयामास
वारिणा। सरस्वत्यारुणायाश्च पुण्योयं सङ्गमो महान् ॥ ४० ॥ इह त्वं यज देवेन्द्र दद
दानान्यनेकशः। अत्राप्लुत्य सुघोरात्त्वं पातकाद्विप्रमोक्ष्यसे ॥ ४१ ॥ इत्युक्तः स सरस्
स्वत्या कुञ्जे वै जनमेजय। ब्रह्मणो वचनाच्छक्रो, यज्ञदयजदनेकशः ॥ ४२ ॥ दत्त्वा
दानान्यनेकानि स्नात्वा तीर्थे शतक्रतुः। इष्ट्वा यथावद्बलभिदरुणायामुपास्पृशत्
॥ ४३ ॥ स मुक्तः पाप्मना तेन ब्रह्महत्याकृतेन ह। जगाम संहृष्टमनास्त्रिदिवं त्रिदशे
श्वरः ॥ ४४ ॥ शिरस्तच्चापि नमुचेस्तत्रैवाप्लुत्य भारत। लोकान् कामदुघान् प्राप्तमक्ष
यान्राजसत्तम ॥ ४५ ॥ वैशम्पायन उवाच। तत्राप्युपस्पृश्य बलो महात्मा दत्त्वा च
दानानि पृथग्विधानि। अवाप्य धर्मं परमार्यकर्मा जगाम सोमस्य महत्सुतीर्थम्

तब वह कटाहुआ नमुचिका शिर समीपमें यह वचन कहता हुआ इन्द्रके पीछे चला कि हे मित्रके मारनेवाले पापी कहां जाता है इस प्रकार उस शिरसे बारम्बार कहेहुये महादुःखी इन्द्रने उस वृत्तान्तको ब्रह्माजीसे निवेदनकिया ।३७। तब लोकके गुरु ब्रह्माजी ने उससे कहा कि हे देवेन्द्र तुम विधिपूर्वक पापों के भयके दूर करनेवाले अरुणा तीर्थपर यज्ञकरके स्नानकरो । ३८ । हे इन्द्र मुनियोंसे रचाहुआ पवित्र जलवाला यह तीर्थहै प्रथम भी इसलोकमें उस तीर्थ की यात्रा गुप्तहोती थी । ३९ । इसकेपीछे इन्द्र ने अरुणादेवीके पास जाकर जलसे अपनेको पवित्रकिया सरस्वती और अरुणा देवीका यह बड़ा पवित्र संगम है । ४० । हे देवेन्द्र यहां तुम यज्ञकरो और बहुत प्रकारके दानोंको दो तुम इस तीर्थ में स्नान करके बड़े घोर पापों से छूटोगे । ४१ । हे जनमेजय ब्रह्माजी के इस वचनकोसुन कर इन्द्रने सरस्वतीके कुञ्जमें यज्ञकरके अरुणामें स्नान किया।४२। ब्रह्महत्याके उस पापसे छुटाहुआ वह प्रसन्नचित्त इन्द्र स्वर्गको गया । ४४ । हे राजाओं में श्रेष्ठ भरतवंशी नमुचि के उस शिरने भी इसी तीर्थ में स्नानकरके अभीष्टोंके प्राप्तकरने वाले अविनाशी लोकों को पाया । ४५ । वैशम्पायन बोले कि महात्मा और बड़े

time of evening. 35 The severed head accused Indra of killing a friend and the latter complained of it before Brahma who advised him to bathe in the Aruna in order to purify himself of the sin. That holy place was so made by munis. Before that time too the holy place was secretly visited. Indra went to Aruna and purified himself at the junction of the Saraswati and Aruna. 40. Indra performed sacrifice there and gave large donations to get rid of the sin. He obeyed Brahma's command and bathed at the junction of the Saraswati and Aruna. Purged of the sin, Indra went to paradise well pleased in his

॥४६॥यत्रायजत्क्रतुमेन सोम साक्षात्पुरा विधिवत् पार्थिवेन्द्र।अत्रिर्धीमान्विप्रमुख्योबभूव होता यस्मिन् क्रतुमुख्ये महात्मा ॥ ४७ ॥ यस्यान्तेभूत् सुमहादानवानां दैतेयानां राक्षसानाञ्च देवैः। यस्मिन् युद्धं तारकाख्य सुतीव्रं यत्र स्कन्दस्तारक वै जघान् ॥ ४८ ॥ सैनापत्यं लब्धवान् देवतानां महासेनो यत्र दैत्यान्तकर्त्ता । साक्षाच्चापि न्यवसत् कार्त्तिकेय सदा कुमारो यत्र स प्लक्षराज ॥ ४९ ॥

इतिगदायुद्धपर्वणि बलदेवतीर्थयात्रायां त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः४३॥

कर्म करनेवाले बलदेवजी उस तीर्थ में भी स्नानकरके अनेक प्रकार के दानोंके देनेसे धर्मके। मालिकके चन्द्रमाके उस बडे तीर्थको गये । ४६ । हे महाराज जहां पर साक्षात् चन्द्रमाने पूर्व्व समय में विधिपूर्वक राजसूययज्ञ कियाथा उस उत्तमयज्ञ में बुद्धिमान ब्राह्मणों में श्रेष्ठ महात्मा अत्रिजी होताहुये । ४७ । जिसतीर्थ के पास दानवदैत्य और राक्षसोंका महायुद्ध देवताओंके साथ हुआ था और जहां तारक नाम कठिन युद्धहुआ जिसमें स्वामिकार्तिकजीने तारक असुरको मारा । ४८ । और जहांपर महासेननाम दैत्यों के नाशकरनेवाले स्वामिकार्तिकजीने देवताओं की सेनापतीको पाया और साक्षात् कुमार कार्त्तिकेयजी स्थितहुये यहांपर वह प्लक्षनाम राजतीर्थ था ४९॥

mind ' Namuchi's head also bathed in that stream and gained good regions. 45 Vaishampayan said " Having bathed at that holy place and gave donations. Baldev proceeded to the holy place where Chandra had performed Rajsuya sacrifice which was presided by Atri. The great war of the Daityas and gods, known as *Tarak*, took place there and Tarak was slain by Kartik the commander in chief of the army of gods. That holy place was known as Plaksh " 49



जनमेजय उवाच । सरस्वत्याः प्रभावोऽयमुक्तस्ते द्विजसत्तम । कुमारस्याभिषेकन्तु ब्रह्मन् व्याख्यातुमर्हसि । यस्मिन् काले च देशे च यथा च वदताम्वर । यैश्चाभिषिक्तो भगवान् विधिना येन च प्रभुः ॥ २ ॥ स्कन्दो यथा च दैत्यानामकरोत् कदनं महत् तथा मे सर्वमाचक्ष्व परं कौतूहलंहि मे ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । कुरुवंशस्य सदृशं कौतूहलमिदं तव । हर्षमुत्पादयत्येव वचो मे जनमेजय ॥ ४ ॥ हन्त ते कथयिष्यामि शृण्वानस्य जनाधिप । अभिषेकं कुमारस्य प्रभावञ्च महात्मनः ॥ ५ ॥ तेजो माहेश्वरं स्कन्नमग्नौ प्रपतितं पुरा । तत् सर्वभक्षो भगवान्नाशकद्दग्धुमक्षयम् ॥ ६ । तेनासीदतिते जस्वी दीप्तिमान् हव्यवाहनः । न चैव धारयामास गर्भं तेजोमयं तदा ॥ ७ ॥ स गङ्गामभिसङ्गम्य नियोगाद्ब्रह्मणः प्रभुः । गर्भमाहितवान् दिव्यं भास्करोपमतेजसम् ॥ ८ ॥ अथ गङ्गापि तं गर्भमसहन्ती विधारणे । उत्ससर्ज गिरौ रम्ये हिमवत्यमरार्चिते

अध्याय ४४ ॥

जनमेजय बोले हेब्राह्मणों में श्रेष्ठ तुमने यह सरस्वती का प्रभाव कहा हेद्विज यदर्थ कुमार के अभिषेक को भी आप कहने को योग्य हो । १ । हे वदतांवर वह प्रभु भगवान् स्वामिकार्त्तिकजी जिसदेश में जिससमय जिसविधि से उत्पन्नहुये और जिन २ देवताओंने इन कुमारजी को अभिषेक किया । २ । और उन्होंने जैसे दैत्योंके बड़े नाशको किया यह सब वृत्तान्त मुझसे कहिये क्योंकि मुझको उस के सुनने की बड़ी उत्कण्ठा है । ३ । वैशम्पायन बोले हे जनमेजय यह तेरा सुनने का उत्साह कौरववंश के योग्य है यह वचन मेरी प्रसन्नता को उत्पन्न करता है । ४ । हे राजा बहुत अच्छा मैं कुमारजी के अभिषेक और प्रभाव को तुझ से कहता हूं । ५ । पूर्वसमय में शिवजी का तेजरूप वीर्य अग्नि में गिरा सब के भस्म करनेवाले भगवान् अग्नि उस अविनाशी के भस्म करनेको समर्थ नहीं हुये । ६ । उस के कारण वह प्रकाशित अग्नि अत्यन्त तेजस्वी हुये परन्तु उस तेजरूप गर्भ को धारण नहीं करसके । ७ । उस प्रभु अग्निने ब्रह्माजीकी आज्ञा से गंगाजी में जाकर उस सूर्य के समान महातेजस्वी दिव्य गर्भको नियतकिया तदनन्तर उस

CHAPTER XLIV

Janamejaya said, " You have informed me with the greatness of Saraswati, now tell me of the installation of the Kumar. Tell me, best of speakers, when and where Kartik was born, who anointed him and how he destroyed the Daityas; for I am very anxious to hear it. " Vaishampayan said, " Your desire to hear this account is worthy of the family of the Kauravas, and it pleases me. I shall tell you of the installation and greatness of this Kumar. 5. The glorious semen of Shiv dropped into fire, but the latter was unable to burn it. Agni became more glorious but could not keep it with him. By Brahma's

॥ ९ ॥ स तत्र ववृधे लोकानावृत्य ज्वलनात्मजः । ददृशुर्ज्वलनाकारं तं गर्भमथ कृत्तिकाः ॥ १० ॥ शरस्तम्बे महात्मानमनलात्मजमीश्वरम् । ममायमिति ताः सर्वाः पुत्रार्थिन्योभिचक्रमुः ॥ ११ ॥ तासां विदित्वा भावं तं मातृणां भगवान् प्रभुः । प्रस्नुतानां पयःषड्भिर्वक्त्रैरपिबत्तदा ॥ १२ ॥ तं प्रभावं समालक्ष्य तस्य बालस्य कृत्तिकाः । परं विस्मयमापन्ना देव्यो दिव्यवपुर्धराः ॥ १३ ॥ यत्रोत्सृष्टः स भगवान् गंगायां गिरिमूर्धनि । स शैलः काञ्चनः सर्वः संवृत्तः कुरुनन्दन ॥ १४ ॥ वर्धता चैव गर्भेण पृथिवी तेन रञ्जिता । अतश्च सर्वे संवृत्ता गिरयः काञ्चनाकराः ॥ १५ ॥ कुमारः सुमहावीर्यः कार्त्तिकेय इति स्मृतः । गांगेयः पूर्वमभवन्महायोगबलान्वितः ॥ १६ ॥ दमेन तपसा चैव वीर्येण च समन्वितः । ववृधेऽतीव राजेन्द्र चन्द्रवत् प्रियदर्शनः ॥ १७ ॥ स तस्मिन् काञ्चने दिव्ये शरस्तम्बे श्रिया वृतः । स्तूयमानः सदा शेते गन्धर्वैर्मुनिभिस्तथा ॥ १८ ॥ तथैनमन्वनृत्यन्त देवकन्याः सहस्रशः । दिव्यवादित्रनृत्यज्ञाः स्तुवत्यश्चारुदर्शनाः ॥ १९ ॥ अन्वास्ते च नदी देवं गंगा वै सरितांवरा । दधार

गर्भके धारण करनेको असमर्थ श्रीगंगाजी ने भी देवताओंसे पूजित सुन्दर हिमालय पर्व्वत पर उसको छोड़ा । ९ । वह अग्निका पुत्र वहांपर अपने तेज से लोकोंको व्याप्त करके बढ़ाहुआ इस के पीछे कृत्तिकाओंने उस अग्निरूप गर्भको देखा । १० । पुत्रकी अभिलाषी वह सब उस अग्निके पुत्र महात्मा ईश्वर को शरस्तम्बपर देख कर यह हमारा है ऐसा कहकर पुकारीं । ११ । तब भगवान् प्रभुने उन दुग्धप्रांत कराने की उत्सुक माताओं के उस भावको जानकर छः मुखों से उन के दूधको पान किया । १२ । दिव्य दुग्धधारी कृत्तिकाओंने उस बालक के अतुल प्रभावको जानकर बड़ा आश्चर्य माना । १३ । हे कौरव्य जहां कि उस पर्वत के मस्तक पर वह कुमार गंगाजी के हाथसे छोड़ा गया था वह सब पर्वत सुवर्ण का होकर शोभायमान हुआ । १४ । उस बढ़नेवाले बालक से पृथ्वीभी रंगोंसे युक्त होगई इस हेतु से सब पर्वत सुवर्ण की खानिहोगये । १५ । बड़ा पराक्रमी कुमार कार्त्तिकेय अर्थात् कृत्तिकाओं का पुत्र कहा गया वह कुमार बड़े योगबलसे युक्त प्रथम गंगाजी के पुत्रहुये । १६ । हे राजेन्द्र अन्तःकरण से जितेन्द्रिय तप पराक्रमसमेत चन्द्रमा के समान अपूर्व दर्शनवाला वह कुमार बहुत बढ़ाहुआ । १७ । वह शोभा से युक्त गन्धर्व और मुनियोंसे स्तुत्यमानहोकर उसदिव्य सुवर्णके शरस्तम्बपर सदैव शयन करताथा।१८।उसीप्रकार दिव्यबाद्य औरनृत्यकेज्ञाता प्रशंसा करनेवाली सुन्दर

order he put it in Ganga, who being unable to keep it left it on the Himalayas. There that child of Agni grew up, filling the world with his glory. The Kritikas saw the glorious child 15. Each of them cried out that the child was hers. Finding them desirous of feeding him on their milk, he assumed a form with six faces and the Kritikas were amazed at his greatness and gave him milk. The child thus left by Ganga on the Himalayas made the mountain golden. The

पृथिवी चैव बिभ्रती रूपमुत्तमम् ॥ २० ॥ जातकर्मादिकास्तत्र क्रियाश्चक्रे बृहस्पतिः । वेदश्चैनश्चतुर्मूर्तिरुपतस्थे कृताञ्जलिः ॥ २१ ॥ धनुर्वेदश्चतुष्पाद् शस्त्रग्रामः ससंग्रहः । तत्रैनं समुपातिष्ठत् साक्षाद्वाणी च केवला ॥ २२ ॥ स ददर्श महावीर्यो देवदेवमुमापतिम् । शैलपुत्र्या सहासीनं भूतसङ्घशतैर्वृतम् ॥ २३ ॥ निकाया भूतसङ्घानां परमाद्भुतदर्शनाः । विकृता विकृताकारा विकृताभरणध्वजाः ॥ २४ ॥ व्याघ्रसिंहर्क्षवदना बिडालमकराननाः । वृषदंशमुखाश्चान्ये गजोष्ट्रवदनास्तथा उलूकवदनाः केचित् गृध्रगोमायुदर्शनाः ॥ २५ ॥ क्रौञ्चपारावतनिभैर्वदनै राङ्कवैरपि । श्वाविच्छल्लकगोधानामजैडकगवां तथा । सदृशानि वपूंष्यन्ये यत्र तत्र व्यधारयन् ॥ २६ ॥ केचिच्छैलाम्बुदप्रख्याश्चक्रोद्यतगदायुधाः । केचिदञ्जनपुञ्जाभाः केचिच्छ्वेताचलप्रभाः । सप्त मातृगणाश्चैव

दर्शनवाली हजारों देवकन्या इसकेपास आकर नृत्यकरनेलगीं । १९ । नदियोंमें श्रेष्ठ श्रीगंगाजीउसके पास नियतहुई और उत्तमरूप को धारण करके पृथ्वीने उसको, धारणकिया ।२०। वहां बृहस्पतिजीने उसकेजातकर्म आदिक क्रियाओंको कियाऔर चारमूर्ति धारण करनेवाला वेदभी हाथजोड़कर इसकेसम्मुख वर्त्तमानहुआ।२१।चार चरण रखनेवाला धनुर्वेद और संग्रहों समेत अस्त्रों के समूह भी इसकेपास आकर वर्त्तमानहुये और वहां साक्षात् केवल वाणी भी उसकेपास वर्त्तमानहुई ।२२। उसने पार्वतीजी समेत पुत्र और जीवधारियोंके अनेक समूहों सहित बड़े पराक्रमी देवताओं के भी देवता शिवजी महाराजको देखा । २३ । अत्यन्त सुन्दर और अपूर्व दर्शनरूप और भूषण रखनेवाले २४। व्याघ्र,सिंह,रीछ बिडाल,मकर बिलावहाथी और ऊंटके समान मुखरखनेवाले ।२५। कोई उलूक,गिद्ध, शृगाल, क्रौंच कपोत और रांकनाम मृगोंके समान मुख रखनेवाले श्वावित, शल्लुक, गोधा, बकरी, भेड़ और बैलोंके समान शरीरों को दूसरे पार्षदोंने जहां तहां धारण किया ।२६। कितनेही पर्वत और बादलके रूप चक्र गदाधारी कितनेही कज्जल समूह के

earth was covered with colours and the mountains had mines of gold within them. The child glorious like the moon soon grew up and lived on the golden mountain praised by gandharvas and munis. Thousands of divine girls danced and sang before him. Ganga the best of rivers stood before him and the earth bore him in a beautiful form. 20. Vrihaspati performed his birth and other ceremonies. The quadruple Vedas too, stood before him with joined hands. The Dhanurved, with four feet, Sangrahas and weapons stood near as well as language. He saw Parvati with son and valiant Shiv the god of gods with his multitudes, who bore the likeness of tigers lions, bears, cats, crocodiles, elephants, camels, 25. owls, vultures jackals, Krauncha, deer, porcupines, goats, sheep and kine. 26. Some

समाजग्मुर्दिदृक्षवः २७ । साध्या विश्वेथ मरुतो वसवः पितरस्तथा । रुद्रादित्यास्तथा सिद्धाभुजगा दानवा खगाः २८ ब्रह्मा स्वयम्भूर्भगवान् सपुत्रः सह विष्णुना । शक्रस्तथाऽभ्ययाद्द्रष्टुं कुमारवरमच्युतम् ॥ २९ । नारदप्रमुखाश्चापि देवगन्धर्वसत्तमाः । देवर्षयश्च सिद्धाश्च बृहस्पतिपुरोगमाः ॥ ३० ॥ पितरो जगतः श्रेष्ठा देवानामपि देवताः । तेपि तत्र समाजग्मुर्यामा धामाश्च सर्वशः ॥ ३१ ॥ स तु बालोपि बलवान् महायोगबलान्वितः । अभ्याजगाम देवेशं शूलहस्तं पिनाकिनम् ॥ ३२ । तमाव्रजन्तमालक्ष्य शिवस्यासीन्मनोगतम् । युगपच्छैलपुत्र्याश्च गङ्गायाः पावकस्य च ॥ ३३ ॥ कं नु पूर्वमयं बालो गौरवादभ्युपैष्यति । अपि मामिति सर्वेषां तेषामासीन्मनोगतम् ॥ ३४ ॥ तेषामेतदभिप्रायं चतुर्णामुपलक्ष्य सः । युगपद्योगमास्थाय ससर्ज विविधास्तनूः ३५ । ततोऽभवच्चतुर्मूर्तिः क्षणेन भगवान् प्रभुः । स्कन्दः शाखो विशाखश्च नैगमेयश्च पृष्ठतः

समान और कोई श्वेत पर्वताकारथे हे राजा सप्तमाताओं समेत साध्य विश्वे देवा, मरुद्गण, अष्टवसु, सब पितर एकादशरुद्र, द्वादशसूर्य, सिद्ध, सर्प दानव, गरुडादिकपक्षी । २८ । और विष्णुजी समेत अपने आप प्रकट होनेवाले भगवान ब्रह्माजी इसीप्रकार इन्द्रभी उस अजेय उत्तम कुमारके देखने को पास आये । २९ । नारदादिक ऋषि, देवता, गन्धर्व देवऋषि सिद्ध जिनके अग्रवर्त्ती बृहस्पतिजी थे और देवताओं के भी देवता जगत् में श्रेष्ठ पितृगण सब याम और धाम यह सबभी आये ।३१। फिर बडे योगबलसे युक्त वह बालक भी शूल और पिनाक धनुषहाथमें रखनेवाले देवताओं के ईश्वर शिवजीके पास गया।३२। उस आतेहुये कुमारको देखकर शिवजीके चित्तमें यह विचार हुआ कि यह बालक एकवारही पार्वती गंगा और अग्नि इन तीनों में से किस के महत्व और गौरव से प्रथम किस के पास जायगा और मेरे पास भी आवेगा या नहीं । ३४ । जब शिवजीके चित्तमें यह ध्यानहुआ उस कुमार ने उन सबके इस अभिप्रायको जानकर एक साथही योगमें नियत होकर नानाप्रकार के शरीरों को उत्पन्न किया । ३५ । इसके पीछे वह भगवान प्रभु क्षणमात्रमेंही चारमूर्त्तिवाला हुआ

were of the shaps of clouds, with descues and maces, others like a mass of soot or white hill, The Sadhyas, with the seven mothers, Vishwedovas, *Marutas*, *Vasus*, *Pitars*, *Rudras*, *Suryas*, *serpents*, *Danavas* garurs, *Brahma* the self create, with Vishnu, Indra and others came to see the prince. Narad and other rishis, gods, gandharvas, divine rishis, sidhas led by Vrihaspati the god of gods, the pitris, Yam and Dham came there 30 The child then came to Shiv the bearer of Pinak. When he was thus coming, Shiv thought within himself whether the child would go to *Ganga*, *Agni* or *himself*. 34 As soon as this thought occured in Shiva's mind, the Kumar knew it and with the power of *yog* assumed different shapes. He split

॥ ३६ ॥ एवं स कृत्वा ह्यात्मानं चतुर्धा भगवान् प्रभुः । ययौ रुद्रस्ततः स्कन्दो जगामा
द्भुतदर्शनः ॥ ३७ ॥ विशाखस्तु ययौ येन देवी गिरिवरात्मजा । शाखो ययौ च भग
वान् वायुमूर्तिर्विभावसुम् । नैगमेयोऽगमद्गङ्गां कुमारः पावकप्रभः ॥ ४० ॥ सर्वे भास्व
रदेहास्ते चत्वारः समरूपिणः । तान् समभ्ययुरव्यग्रास्तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ४१ ॥ हाहा
कारो महानासीद्देवदानवरक्षसाम् । तद्दृष्ट्वा महदाश्चर्यमद्भुतं लोमहर्षणम् ॥ ४२ ॥
ततो रुद्रश्च देवी च पावकश्च पितामहम् । गङ्गया सहिताः सर्वे प्रणिपेतुर्जगत्पतिम्
॥ ४३ ॥ प्रणिपत्य ततस्ते तु विधिवद्राजपुंगव । इदमूचुर्वचो राजन् कार्त्तिकेयप्रिये
प्सया ॥ ४४ ॥ अस्य बालस्य भगवन्नाधिपत्यं यथेप्सितम् । अस्मत् प्रियार्थं देवेश
सदृशं दातुमर्हसि ॥ ४५ ॥ ततः स भगवान् धीमान् सर्वलोकपितामहः । मनसा चिन्त
यामास किमयं लभतामिति ॥ ४६ ॥ ऐश्वर्याणि हि सर्वाणि देवगन्धर्वरक्षसाम् । भूत
यक्षविहङ्गानां पन्नगानाञ्च सर्वशः ॥ ४७ ॥ पूर्वमेवादिदेशासौ निकायेषु महात्मनाम् ।
समर्थञ्च तमैश्वर्ये महामतिरमन्यत ॥ ४८ ॥ ततो मुहूर्तं स ध्यात्वा देवानां श्रेयसि
स्थितः । सैनापत्यं ददौ तस्मै सर्वभूतेषु भारत ॥ ४९ ॥ सर्वदेवनिकायानां ये राजानः

। ३७ । शाख विशाख और नैगमेय नाम मूर्त्तियां उसके पृष्ठभाग से प्रकटहुईं इस
प्रकार उस भगवान् प्रभुने अपने को चार रूपवाला करके । ३८ जिधर रुद्रजीथे
उधरही वह अपूर्वदर्शन स्वामिकार्त्तिकजी गये और जिधर देवी पार्वती थीं उधर
विशाखगया और वायुरूप भगवान् शाख अग्निके पासगया और अग्नि के
के समान प्रकाशित कुमार नैगमेय गंगाजी के पासगये । ४० । वहचारों सूर्य
के समान शरीर रखनेवाले सब एकरूप सावधान उनके पासगये यह आश्चर्यसा
हुआ । ४१ । अपूर्व और शरीरके रोमांच खड़े करनेवाले उस बड़े आश्चर्यको
देखकर देव दानव और राक्षसोंका बड़ा हाहाकारहुआ । ४२ । उसकेपीछे रुद्र देवी
अग्नि और गंगाजी इन सबने जगत्पति ब्रह्माजी को दण्डवत करी । ४३ । और
विधिपूर्वक दण्डवत् करके स्वामिकार्त्तिकजी की प्रसन्नता के अर्थ यह वचन
कहा । ४४ । कि हे देवताओं के ईश्वर भगवान् हमारे हित के लिये इस बालकको
इसके योग्य अधिकार देनेको योग्यहो । ४५ । इसके पीछे लोकों के पितामह
बुद्धिमान् ब्रह्माजी ने चित्त से विचार किया कि इसको कौनसा अधिकार दिया

himself into four bodies, the three forms known as Shakh, Vishakh and Naigameya coming out of his back Having done this, he proceeded towards Shiv Shakh went towards Agni, Vishakh towards Parwati and glorious Naigameya towards Ganga. 40. The four bodies glorious like the sun went in four directions to the amazement of all, who cried in wonder. Then Rudra, Parvati, Agni and Ganga bowed down to Brahma and said for the good of Kartik, " For our sake, give this child a good post. " 45 At this Brahma thought about the matter, for the glorious one was already a preceptor of all

परिष्कृता: । तान् सर्वान् व्यादिदेशास्मै सर्वभूतपितामहः । ५० ॥ ततः कुमारमादाय देवा ब्रह्मपुरोगमाः । अभिषेकार्थमाजग्मुः शैलेन्द्रं सहितास्ततः ॥ ५१ ॥ पुण्यां हैमवतीं देवीं सरिच्छ्रेष्ठां सरस्वतीम् । समन्तपञ्चके या वै त्रिषु लोकेषु विश्रुता ॥ ५२ ॥ तत्र तीरे सरस्वत्याः पुण्ये सर्वगुणान्विते । निषेदुर्देवगन्धर्वाः सर्वे सम्पूर्णमानसाः ॥ ५३ ॥

इतिगदायुद्धपर्वाणि मुनिपुत्रदुर्योधनसंवादे चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४॥

माथ । ४६ । प्रथमही इस तेजस्वीने देवता गन्धर्व राक्षस भूत यक्ष पक्षी और सर्प इन सबके ऐश्वर्यको । ४७ । महात्माओं के समूहों में उपदेश कियाहै इसीसे बड़े बुद्धिमानों ने उसको सब ऐश्वर्यों में समर्थ मानाहै ।४८। इसके पीछे देवताओंकी वृद्धि में नियत देवताओं में श्रेष्ठ ब्रह्माजीने एक मुहूर्त ध्यानकरके उस कुमारको सब जीवधारियों का सेनापति किया । ४९ । और उन सब जीवोंको उनकेआज्ञाकारी होनेकी आज्ञादी जो कि सब देवसमूहोंके राजा प्रसिद्धथे। ५० । इसकेपीछे ब्रह्मादिक सब देवता मिलकर कुमारको लेकर अभिषेक के लिये गिरिराजके समीप । ५१ । धर्मकी वृद्धिके हेतु नदियों में श्रेष्ठ उस हिमाचलकी पुत्री देवीसरस्वती के पास गये जो कि तीनों लोकों में प्रसिद्ध समन्तपंचक देश में है । ५२ । बड़े प्रसन्नचित्त सब देवता गन्धर्वसह सरस्वती के पवित्र पुण्यकारी किनारेपर जाकर बैठगये ५३ ॥

---

beings and could do all. For the good of gods, Brahma thought for a while and appointed him commander of all and ordered them to obey him. Then all the gods coming together took him to the prince of mountains to instal him as commander. They went to goddess Saraswati in the famous country of Samant panchak and sat on its banks 53.



वैशम्पायन उवाच । ततोऽभिषेकसम्भारान् सर्वान् सम्भृत्य शास्त्रतः । बृहस्पतिः समिद्धेऽग्नौ जुहावाग्निं यथाविधि ॥ १ ॥ ततो हिमवता दत्ते मणिप्रवरशोभिते । दिव्य रत्नाचिते पुण्ये निषण्णं परमासने ॥ २ ॥ सर्वमङ्गलसम्भारैर्विधिमन्त्रपुरस्कृतम् । आभि षेचनिकं द्रव्यं गृहीत्वा देवता गणाः ॥ ३ ॥ इन्द्राविष्णू महावीर्यौ सूर्याचन्द्रमसौ तथा । धाता चैव विधाता च तथा चैवानिलानिलौ ॥ ४ ॥ पूष्णा भगेनार्यम्णा च अंशेन च विवस्वता । रुद्रश्च सहितो धीमान् मित्रेण वरुणेन च ॥ ५ ॥ रुद्रैर्वसुभिरा दित्यैरश्विभ्यां च वृतः प्रभुः । विश्वैर्देवैर्मरुद्भिश्च साध्यैश्च पितृभिः सह ॥ ६ ॥ गन्ध र्वैरप्सरोभिश्च यक्षराक्षसपन्नगैः । देवर्षिभिरसंख्येयैस्तथा ब्रह्मर्षिभिर्वरैः ॥ ७ ॥ वैखान सैर्वालखिल्यैर्वाय्वाहारैर्मरीचिपैः । भृगुभिश्चाङ्गिरोभिश्च यतिभिश्च महात्मभिः ॥ ८ ॥ सर्वैर्विद्याधरैः पुण्यैर्योगसिद्धैस्तथा वृतः । पितामहः पुलस्त्यश्च पुलहश्च महातपाः ॥ ९ ॥ अंगिराः कश्यपोऽत्रिश्च मरीचिर्भृगुरेव च । क्रतुर्हरः प्रचेताश्च मनुर्दक्षस्तथैव

अध्याय ४५ ॥

वैशम्पायन बोले इसकेपीछे बृहस्पतिजीने शास्त्रोक्तरीतिसे अभिषेककी सब सामग्रियों को इकट्ठा करके वृद्धियुक्त अग्नि में विधिपूर्वक अग्नि देवताकी आहुतिदी । १ । इसके पीछे देवगणों ने हिमाचल के दिये हुये अत्यन्त उत्तम मणियों से शोभित दिव्य रत्नों से जटित धर्मकी वृद्धिके हेतुरूप उत्तम आसनपर विराजमान को । २ । सब मंगलरूप सामग्रियों समेत विधिपूर्वक मंत्रों के द्वारा अभिषेककी वस्तुओं से अभिषेक कराया । ३ । बड़े पराक्रमी विष्णुजी इन्द्र, सूर्य, चन्द्रमा, धाता, विधाता, अग्नि, वायु । ४ । पूषा, भग, अर्यमा, अंश, विवस्वत और मित्र, वरुण समेत रुद्र । ५ । अष्टवसु सूर्य, दोनों अश्विनी कुमार विश्वे देवा, मरुद्गण, पितृ, साध्यगण । ६ । गन्धर्व, अप्सरा, यक्ष, राक्षस, सर्प असंख्य ब्रह्मऋषि, देवऋषि, ७ । वायुभक्षी, सूर्यांशुको पान करनेवाले वैखानस वालखिल्य ऋषि भृगुवंशी अंगिरावंशी महात्मा यती । ८ । सब विद्याधर औरपवित्र योगवाले सिद्ध पुरुषों समेत ब्रह्माजी पुलस्त्य पुलह बड़ेतपस्वी अङ्गिरा । ९ ।

CHAPTER XLV

Vaishampayan said, " Vrihaspati collected all the materials for installation and poured libations on fire. He was seated on a seat studded with jewels and was sprinkled over with auspicious things and hymns. Vishnu, Indra, Surya, Chandra, Dhata, Vidhata, Agni, Vayu, Poorba, Bhag, Aryama, Ansh, Vivaswati, Maitra, Varun Rudra 5 Vasu, Surya, Ashwinikumars Vishwedevas, Maruttas, Pitris, Sidhdas, Gandharvas, apsaras, yakshas, rakshasas, serpents, numerous Brahmrishis, god rishis, Vaikhanas and Valkhilya rishis living on air and the rays of the sun, of the families of Bhrigu and Augira, Vidyadharas sidhas, Brahma, Pulastya, Pulah, Angira,

च ॥ १० ॥ ऋतवश्च ग्रहाश्चैव ज्योतींषि च विशाम्पते । सरितश्च तथा वेदाश्चैव
सनातनाः ॥ ११ ॥ समुद्राश्च ह्रदाश्चैव तीर्थानि विविधानि च । पृथिवी द्यौर्दिशश्चैव
पादपाश्च जनाधिप ॥ १२ ॥ अदितिर्देवमाता च ह्रीः श्रीः स्वाहा सरस्वती । उमा शची
सिनीवाली तथा चानुमतिः कुहूः ॥ १३ ॥ राका च धिषणा चैव पत्न्यश्चान्या दिवौक
साम् । हिमवांश्चैव विन्ध्यश्च मेरुश्चानेकशृङ्गवान् ॥ १४ ॥ ऐरावतः सानुचरः कला
काष्ठास्तथैव च । मासार्धमासा ऋतवस्तथा रात्र्यहनी नृप ॥ १५ ॥ उच्चैःश्रवा
हयश्रेष्ठो नागराजश्च वासुकिः । अरुणो गरुडश्चैव वृक्षाश्चौषधिभिः सह ॥ १६ ॥
धर्मश्च भगवान् देवः समाजग्मुर्हि सङ्गताः । कालो यमश्च मृत्युश्च यमस्यानुचराश्च ये
॥ १७ ॥ बहुलत्वाच्च नोक्ता ये विविधा देवतागणाः । ते कुमाराभिषेकार्थं समाजग्मु
स्ततस्ततः ॥ १८ ॥ जगृहुस्ते तदा राजन् सर्व एव दिवौकसः । आभिषेचनिकं भाण्डं
मङ्गलानि च सर्वशः ॥ १९ ॥ दिव्यसम्भारसंयुक्तैः कलशैः काञ्चनैर्नृप । सरस्वतीभिः
पुण्याभिर्दिव्यतोयाभिरेव तु ॥ २० ॥ अभ्यषिञ्चन् कुमारं वै सम्प्रहृष्टा दिवौकसः ।

कश्यप, अत्रि, मरीचि, भृगु, क्रतुहर, प्रचेता, मनुदक्ष । १० । सब ऋतु, ग्रह
नक्षत्रादिक प्रकाशित शरीरवाली मूर्त्तिमान नदियां, सनातन वेद हृद, नानाप्रकार
के तीर्थ, पृथ्वी, स्वर्ग दिशा, वृक्ष देवताओंकीमाता, आदिति, ह्री, श्री, स्वाहा,
सरस्वती, उमा, शची, सिनीवाली, अनुमति, कुहू । ११ । राका, धिषणा
और देवताओंकी अन्यअन्य स्त्रियां हिमाचल विंध्याचल और अनेक शिखरधारी
मेरुपर्वत । १४ । साथियों समेत ऐरावतहाथी, कलाकाष्ठा, मास, पक्ष, ऋतु, दिन
रात । १५ । घोड़ों में श्रेष्ठ उच्चैःश्रवा सर्पोंकाराजा वासुकी अरुण गरुड़
औषधियों समेत वृक्ष । १६ । भगवान् धर्म देवता, काल, यम, मृत्यु और जो यम
राज के आगे पीछे चलनेवाले हैं वह सब मिलेहुये वहांआये । १७ । और जोनाना
प्रकारके देवगण बाहुल्यता से नहीं कहेगये वह कुमारके अभिषेकके लिये जहां तहां
से आये । १८ । हेराजा इसकेपीछे उन सब देवताओंने अभिषेककेपात्र और सब
माङ्गलिकवस्तुओं को लिया । १९ । हेराजा अत्यन्त प्रसन्न चित्त देवताओंने दिव्य

Kashyap, Atri, Marichi, Bhrigu, kritahar, Pracheta, Manu, Daksh 10 seasons, constellations, stars, rivers, eternal Vedas, lakes, tirthas Earth, heaven, directions, trees, Aditi the mother of gods, Hri, Shri, Swaha, Saraswati, Uma, Shachi Sainiwali, Anurmati, Kuhu, Raka Dhishana, and other goddesses, Himachal, Vindhya and other mountains, Airavat and his companions, divisions of time, month, fortnight, season, day and night. 15, Uchaishrava the best of horses, ; Vasuki, the prince of snakes, garur, trees with medicinal herbs, Dharm Kal, Yam, Mrityu and his companions and other gods came at the installation of the Kumar. They took vessels and other auspicious articles and with gold vessels and holy waters sprinkled the kumar who was the terror

सेनापतिं महात्मानमसुराणां भयङ्करम् ॥ २१ ॥ पुरा यथा महाराज वरुणं वै जलेश्वरम्
तथाऽभ्यषिञ्चद्भगवान् ब्रह्मा लोकपितामहः ॥ २२ ॥ कश्यपश्च महातेजा ये चान्ये
नानुकीर्त्तिताः । तस्मै ब्रह्मा ददौ प्रीतो बलिनो वातरंहसः । कामवीर्यधरान् सिद्धान् महा
पारिषदान् प्रभुः ॥ २३ ॥ नन्दिसेनं लोहिताक्षं घण्टाकर्णं च सम्मतम् । चतुर्थमस्या
नुचरं ख्यातं कुमुदमालिनम् ॥ २४ ॥ ततः स्थाणुर्महावेगं महापारिषदं प्रभुः । माया
शतधरं कामं कामवीर्यबलान्वितम् । ददौ स्कन्दाय राजेन्द्र सुरारिविनिबर्हणम् ॥२५॥
स हि देवासुरे युद्धे दैत्यानां भीमकर्मणाम् । जघान दोर्भ्यां संक्रुद्धः प्रयुतानि चतुर्दश

सामग्रियों से युक्त और सरस्वती के पवित्ररूप दिव्यजलों से पूर्ण सुवर्णके कलशों से ।२०। उस कुमारको अभिषेक कराया जोकि असुरोंके भयका उत्पन्न करनेवाला महात्मा सेनापतिथा । २१ । हे महाराज पूर्वसमय में जैसे कि जलके स्वामी वरुण को अभिषेक कराया था उसीप्रकार सब लोकके पितामह भगवान् ब्रह्माजी ।२२। और बड़े तेजस्वी कश्यपादिक ऋषि जो लोकमें विख्यात हैं उन सबने मिलकर अभिषेक कराया प्रसन्न प्रभु ब्रह्माजीने इस कुमारके निमित्त बलवान् और वायु के समान शीघ्रगामी इच्छानुसार पराक्रमी सिद्ध महापार्षदोंको दिया । २३ । उन के नाम नन्दिसेन, लोहिताक्ष, घंटाकर्ण इसका चौथा अनुचर कुमुदमाली नाम से प्रसिद्ध ।२४। हे राजेन्द्र उसकेपीछे बड़ेतेजस्वी प्रभु शिवजीने सैकड़ों मायाधारी इच्छानुसार बल पराक्रमी असुरों के नाश करनेवाले महापार्षद कामनाम को स्वामिकार्त्तिक को दिया । २५ । उस क्रोधयुक्तने देवासुर नामयुद्धमें दोनों हाथों से भयकारी कर्म करनेवाले चौदह प्रयुत दैत्योंको मारा । २६ । उसीप्रकार देवता ओंने असुरोंकी करनेवाली अजेय और नैर्ऋत असुरोंसे युक्त विष्णुरूप सेना को उसके निमित्त दिया । २७ । तब इन्द्र समेत सब देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, मुनि और पितरों ने विजय का शब्द किया । २८ । उनके पीछे यमराजने दो अनुचर दिये वह दोनों कालरूप बड़े पराक्रमी और तेजस्वी उन्माथ और प्रमाथ

of asurs. He was anointed like Varun the lord of waters by Brahma the grandfather of all and glorious rishis like Kashyap and others. Brahma gave him powerful companions, named Nandisen, Lohitaksh Ghanta Karan and Kumud mali; lord Shiv gave him hunderds of powerful, asur-destorying attendants with Kam at their head. 25. That dreadful one had slain fourteen powerful rakshases, known as Prayats, in the war of gods and dahavas. Similarly the gods gave him Vaishnavi army capable of destroying asurs. Then the gods with Indra, ghandharvas, yakshes, rakshasas, munis and pitara cried out "Victory." Then Yam presented him two attendants of great prowess known as Unmath and Pramath. Surya gave him Subhraj and

॥ २६ ॥ तथा देवा ददुस्तस्मै सेनां भूतसंकुलाम । देवशत्रुक्षयकरीमजय्यां विष्णु
रूपिणीम् ॥ २७ ॥ जयशब्दं तथा चक्रुर्देवाः सर्वे सवासवाः गन्धर्वयक्षरक्षांसि
मुनयः पितरस्तथा ॥ २८ ॥ ततः प्रादादनुचरौ यमः कालोपमावुभौ । उन्माथश्च प्रमा
थश्च महावीर्यौ महाद्युती ॥ २९ ॥ सुभ्राजो भास्वरश्चैव यौ तौ सूर्यानुयायिनौ ।
तौ सूर्यः कार्त्तिकेयाय ददौ प्रीतः प्रतापवान ॥ ३० ॥ कैलासशृङ्गसङ्काशौ श्वेतमाल्या
नुलेपनौ । सोमोऽप्यनुचरौ प्रादान्मणिस्वमणिमेवच ॥ ३१ ॥ ज्वालाजिह्वं तथा ज्योतिरात्म
जाय हुताशनः । ददावनुचरौ शूरौ परसैन्यप्रमाथिनौ ॥ ३२ ॥ परिघञ्च वटञ्चैव
भीमञ्च सुमहाबलम । दहतिं दहनञ्चैव प्रचण्डौ वीर्य्यसम्मतौ । अंशोऽप्यनुचरान्
पञ्च ददौ स्कन्दाय धीमते ॥ ३३ ॥ उत्क्रोशं पञ्चकञ्चैव वज्रदण्डधरावुभौ । ददाव
नलपुत्राय वासवः परवीरहा । तौ हि शत्रून्महेन्द्रस्य जघ्नतुः समरे बहून् ॥ ३४ ॥
चक्रञ्च विक्रमञ्चैव संक्रमञ्च महाबलम । स्कन्दाय त्रीननुचरान् ददौ विष्णुर्महा
यशा ॥ ३५ ॥ वर्द्धनं नन्दनञ्चैव सर्वविद्याविशारदौ । स्कन्दाय ददतुः प्रीतावश्विनौ

नाम थे । २९ । प्रसन्नचित्त प्रतापवान् सूर्यने सुभ्राज और भास्करनाम उन दोनों
अनुचरों को स्वामिकार्त्तिक के निमित्त दिया जोकि दोनों सूर्य के पीछे चल
नेवाले थे । ३० । चन्द्रमाने भी मणि और सुमणिनाम उन दो अनुचरोंको दिया
जोकि कैलासके शिखरकेरूप श्वेतमाला और चन्दनधारी थे । ३१ । उसी प्रकार
अग्निने भी अपने पुत्रके लिये ज्वालाजिह्व और ज्योति नाम दोनों अनुचर
जो कि शूर और शत्रुकी सेनाके नाशकारी थे उनको दिया । ३२ । अंश देवता
ने भी बुद्धिमान स्वामिकार्त्तिक के अर्थ पांच अनुचर दिये उनके नाम परिघ, वट
बलवान भीम, दहति, दहन यह पांचों अत्यन्त शीघ्रगामी और अंगीकृत पराक्रमी
थे । ३३ । शत्रुविजयी इन्द्रने उस अग्निके पुत्रकेलिये उत्क्रोश, पंचक, वज्र
धारी, दण्डधारी इन चारों अनुचरोंको दिया उन दोनों वज्रधारी और दण्डधारी
ने युद्धमें महाइन्द्रके बहुत शत्रुओं को माराथा । ३४ । बड़े यशवान् विष्णुजी
ने कुमारको बड़ा बलवान चक्र, विक्रमक और संक्रम यह तीन अनुचर दिये ।३५।
वैद्योंमें श्रेष्ठ प्रसन्न चित्त अश्विनीकुमारों ने वर्द्धन और नन्दननाम दो अनुचर

Bhaskar. Chandra gave him two attendants huge like hills and adorned with white sandul and garlands. They are known as Mani and Sumani. 31. Agni gave him two powerful attendants, known as Jwala jivha and Jyoti. Parigh, Vat, Bhim, Dahati and Dahan were presented by Ansh. Vitkrosh, Panchak, Vajradhari and Dandadhari were given him by Indra. The two last named slew many enemies of Indra. Vishnu gave him Chakra, Vikramak and Sankram. The two Ashwinikumars gave him Bardhan and Nandan who know all branches of knowledge. 36. Dhata gave him Kund, Kusum, Kumad,

भरतर्षभ ॥ ३६ ॥ कुन्दश्च कुसुमश्चैव कुमुदश्च महायशाः । डम्बराडम्बरौ चैव
ददौ धाता महात्मने ॥ ३७ ॥ चक्रानुचक्रौ बलिनौ मेघचक्रौ बलोत्कटौ । ददौ त्वष्टा
महामायौ स्कन्दायानुचरावुभौ ॥ ३८ ॥ सुव्रतं सत्यसन्धञ्च ददौ मित्रो महात्मने ।
कुमाराय महात्मानौ तपोविद्याधरौ प्रभ. । सुदर्शनीयौ वरदौ त्रिषु लोकेषु विश्रुतौ,
॥ ३९ ॥ सुप्रभञ्च महात्मानं शुभकर्माणमेव च । कार्त्तिकेयाय सम्प्रादाद्विधाता लोकविश्रुतौ ॥ ४० ॥ पालित्रक कालिकञ्च महामायाविनावुभौ । पूषा च पार्षदौ प्रादात्
कार्त्तिकेयाय भारत ॥ ४१ ॥ बलञ्चातिबलञ्चैव महावक्त्रौ महाबलौ । प्रददौ कार्त्ति
केयाय वायुर्भरतसत्तम ॥४२॥ घसञ्चातिघसञ्चैव तिमिवक्त्रौ महाबलौ । प्रददौ कार्त्ति
केयाय वरुण. सत्यसङ्गर. ॥ ४३ ॥ सुवर्चसं महात्मानं तथैवाप्यतिवर्चसम् ।
हिमवान् प्रददौ राजन् हुताशनसुताय वै ॥ ४४ ॥ कांचनञ्च महात्मानं मेघमालिन
मेव च । ददावनुचरौ मेरुरग्निपुत्राय भारत ॥ ४५ ॥ स्थिरञ्चास्थिरञ्चैव मेरुरेवा

स्वामिकार्त्तिक को दिये वह दोनों भी सब विद्याओं में कुशलथे । ३९ । बड़े यश
वान धाताने उस महात्मा के लिये नीचेलिखेहुये अनुचरदिये कुन्द, कुसुम,, कुमुद
डंवर, अडम्वर । ३७ । त्वष्टाने स्वामिकार्त्तिक को चक्र, अनुचक्र यह दोनों अनु
चर दिये वह दोनों बड़ेमायावी बलमें मतवाले बड़े बलवान मेघोंकी सेना रखनेवाले
थे । ३८ । महामित्रने महात्माकुमारकेनिमित्त सुव्रत और सत्यसंध यहदोनोंअनु
चरदिये जो कि तप और विद्याके धारण करनेवाले महात्माथे । ३९ । विधाताने
महात्मा सुव्रत और शुभकर्म को स्वामिकार्त्तिक के निमित्तदिया जो कि प्रसन्न
मूर्त्तिवरदाता तीनोंलोकमें विख्यात थे ।४०। हेभरतवंशी पूषाने बड़ेमायावी पानीतक
और कालिकनाम पार्षदों को स्वामिकार्त्तिकके अर्थदिया । ४१ । हेभरतर्षभ वायुने
बड़े बलवान् और मुखवाले बल और अतिबलनामको स्वामिकार्त्तिक के ,लिये
दिया । ४२ । सत्यसङ्कल्प वरुणने तिमि मत्स्यके समान मुखरखनेवाले बड़ेबलवान
यम और अतियम नाम अनुचरोंको स्वामिकार्त्तिक के लिये दिया । ४३ । हे
राजा हिमाचलने सुवर्चस और अतिवर्चस नाम अनुचरोंको अग्निके पुत्र
के लिये दिया ।४४। मेरुपर्वत ने महात्मा कांचन और मेघमाली नाम उन अनुचरों
को अग्निके पुत्रकोदिया जोकि बड़ेबल पराक्रम रखनेवालेथे ।४५। विन्ध्याचलने

Dambar and Adambar Twashta gave him Chakra and Anuchakra of great prowess and leaders of the armies of clouds. Mitra gave him two attendants named Subrat and Satyasandh the seat of asceticism and learning. Vidhata gave him Subrat and Shubhkarm 40 Poosha gave him Paritak and Kalik. Vayu gave him powerful attendants named Val and Atival. Varun of true vows gave him Yam and Atiyam Himachal gave him Suvarchas and Ativarchas. Meru gave him. Kanchan and Meghmali. Vindhya gave him Uchring and

परौ ददौ । महात्मनेऽग्निपुत्रायैव महाबलपराक्रमौ ॥ ४६ ॥ उच्छ्रितश्चातिशृंगश्च महा
पाषाणयोधिनौ । प्रददावग्निपुत्राय विभ्यः परिघदावुभौ ॥ ४७ ॥ संग्रहं विग्रहंचैव
समुद्रोऽपि गदाधरौ । प्रददावग्निपुत्राय महापारिषदावुभौ ॥ ४८ ॥ उन्मादं पुष्पदंतश्च
शंकुकर्णं तथैव च । प्रददावग्निपुत्राय पार्वती शुभदर्शना ॥ ४९ ॥ जयं महाजयंचैव
नागौ ज्वलनसूनवे । प्रददौ पुरुषव्याघ्र वासुकिः पन्नगेश्वरः ॥ ५० ॥ एवं साध्याश्च
रुद्राश्च वसवः पितरस्तथा । सागराः सरितश्चैव गिरयश्च महाबलाः ॥ ५१ ॥ ददुः
सेनागणाध्यक्षान् शूलपट्टिशधारिणः । दिव्यप्रहरणोपेता-नाना वेशविभूषितान् ॥ ५२ ॥
शृणु नामानि चान्येषां येऽन्ये स्कन्दस्य सैनिकाः । विविधायुधसम्पन्नाश्चित्राभरणव
र्मिणः ॥ ५३ ॥ शंकुकर्णो निकुम्भश्च पद्मः कुमुद एव च । अनन्तो द्वादशभुजस्तथा
कृष्णोपकृष्णकौ ॥ ५४ ॥ घ्राणश्रवाः कपिस्कन्धः कांचनाक्षो जलन्धमः । अक्षसन्तर्जनो
राजन् कुनदीकस्तमोभ्रकृत ॥ ५५ ॥ एकाक्षो द्वादशाक्षश्च तथैवैकजटः प्रभुः । सहस्र
बाहुर्विकटो व्याघ्राक्षः क्षितिकम्पनः ॥ ५६ ॥ पुण्यनामा सुनामाच सुचक्रः प्रियद
र्शन । परिश्रुतः कोकनदः प्रियमाल्यानुलेपनः ॥ ५७ ॥ अजोदरो गजशिराः स्कन्धाक्ष
शतलोचनः । ज्वालाजिह्वः करालश्च सितकेशो जटी हरिः ॥ ५८ ॥ परिश्रुतः कोक

उच्छ्रित- अतिशृङ्ग नाम बड़े पाषाणोंसे लड़नेवाले दोपार्षदोंको अग्निके पुत्रकोदिया ।४७। समुद्रनेभी गदाधारी संग्रह और विग्रहनाम दोमहापार्षदों को दिया इसीप्रकार उन्माद पुष्पदंत और शंकुकर्ण पार्षदोंको शुभ दर्शन पार्वती जीने दिया।४९।हे पुरुषोत्तम सर्पोंके राजा वासुकी ने जय और महाजय नाम सर्पोंकोदिया ।५०। इस प्रकार साध्य रुद्र वसु पितृ सागर नदियां और बड़े २ बलवान् पर्वतों ने सेना के अध्यक्षोंकोदिया जो कि शूल पट्टिश धारण करनेवाले दिव्य अस्त्र शस्त्रों से युक्त और नानाप्रकार की पोशाकों से अलंकृत थे । ५२ । उन्हीं के नामोंकोभी सुनों और स्वामिकार्त्तिक के अन्य २ सेनाके लोग नाना शस्त्रधारी अपूर्व भूषणों से अलंकृत थे उनकेनाम यह है । ५३ । शंकुकर्ण, निकुंभ, पद्म, कुमुद अनंत, द्वादश भुज, कृष्ण उपकृष्णक, घ्राणश्रवा, कपिस्कंध, कांचनाक्ष, जलन्धम अक्षसंतर्जन कुनदीक, तमोभ्रकृत, एकाक्ष, द्वादशाक्ष, अक्ष एकजटा सहस्रबाहु, विकट, व्याघ्राक्ष, क्षितिकंपन पुण्यनामा, सुनामा, सुचक्र, प्रियदर्शन परिश्रुत कोकनद,

Atishring who fought with stones. Samudra gave him Sangrah and Vigrah and Parvati gave him Unmad, Pushpdant and Shanku karn. The Prince of Snakes gave him Jaya and Mahajaya. .50. Similarly, Sagar, Rudra, Vasu, Pitris, mountains and rivers gave him powerful attendants armed with various weapons and adorned with various dresses. Their names are as follows:—Shankukarn, Nikumbh, Padm, Kumud Anant, Daadushbhuj, Krishn, Upkrishn, Ghranshrava, Kapiskandh, Kanchanaksh, Jalandham, Akshsantarjan, Kundik, Tamobhrakrit, Ekaksh, *Dwadashaksh*, Ekjata, Sahasravahu,

नद कृष्णकेशो जटाधर । चतुर्दंष्ट्रोष्ट्रजिह्वश्च मेघनाद पृथुश्रवा ॥५९॥ विद्युताक्षो धनुर्वक्त्रो जाठरो मरुताशन । उदराक्षो रथाक्षश्च वज्रनामा वसुप्रद ॥ ६०॥ समुद्र वेगो राजेन्द्र शैलकम्पी तथैव च । वृषो मेषप्रवाहश्च तथा नन्दोपनन्दकौ ॥ ६१॥ धूम्र श्वेत कलिङ्गश्च सिद्धार्थो वरदस्तथा । प्रियकश्चैक नन्दश्च गोनन्दश्च प्रतापवान् ॥६२॥ आनन्दश्च प्रमोदश्च स्वस्तिको ध्रुवकस्तथा । क्षेमवाहः सुवाहश्च सिद्धपात्रश्च भारत ॥ ६३ । गोव्रज कनकापीडो महापारिषदेश्वर । गायनो हसनश्चैव बाणः खड्गश्च वीर्यवान् ॥ ६४ । वैताली चातिताली च तथा कथकवार्तिकौ । हसज पङ्कदिग्धाङ्ग समुद्रोन्मादनश्च ह । ६५ ॥ रणोत्कट प्रहासश्च श्वेतसिद्धश्च नन्दक । कालकण्ठ प्रभासश्च तथा कुम्भाण्डको पर. ॥ ६६ ॥ कालकाक्ष शितश्चैव भूतलोन्मथनस्तथा । यज्ञवाह प्रवाहश्च देवयाजी च सोमप ।६७। मज्जालश्च महातेजा क्रथक्राथौ च भारत । तुहरश्च तुहारश्च चित्रदेवश्च वीर्यवान् । ६८ ॥ मधुर सुप्रसादश्च किरीटी च महाबल । वत्सलो मधुवर्णश्च

प्रियमाल्यानुलेपन, अजोदर, गजशिरा, स्कंदाक्ष, शतलोचन ज्वालाजिह्व करालाक्ष शितिकेशी, जटी, हरि, परिश्रुत, कोकनद, कृष्णकेश जटाधर चतुर्दंष्ट्र उष्ट्रजिह्व, मेघनाद पृथुश्रव विद्युताक्ष धनुर्वक्त्र जाठर मरुताशन उदराक्ष रथाक्ष वज्रनाभ वसुप्रद । ६० । समुद्रवेग शैलकंपी वृष मेष प्रवाह नन्द उपनन्दक धूम्र श्वेत कलिन्द सिद्धार्थ वरद प्रियक एकनन्द प्रतापवान गोनन्द आनन्द प्रमोद स्वस्तिक ध्रुवक क्षेमवाहु सुवाहु सिद्धपात्र गोव्रज कनका पीड़नाम महापार्षदोंका ईश्वर गायन हसन वाण पराक्रमी खड्ग वैताली अतिताली कथक वार्तिक हंसज पङ्कदिग्धांग समुद्रोन्मादन । ६५ । रणोत्कट, महास, श्वेतसिद्ध नन्दक कालकण्ठ, प्रभास इसीप्रकार दूसरा कुभाण्डक कालकाक्ष, इसी प्रकार जीवोंको मथन करनेवाला शित यज्ञवाह

Vikat Vyaghra'ksh, Kshitikampan, Punyanama, Suchakra, Pryadarshan, Parishrut, Koknad, Pryamalya'nul pan, Ajod r, Gajshir, Skandaksh, Shatalochan, Jwalajivha, Karalaksh, Sitikeshi, Ja i Hari, Parishrut, Koknad Krishnkesh Jatadhar, Chaturdanshtra, Ushtrajivha, Meghnad, Prathushrav, Vidyutaksh, Dhanurvaktra, Jathar, Marutashan, Udaraksh, Rathaksh, Vajranabh, Vasuprad, 60 Samudraveg, Shailkampi, Vrish, Mesh, Pravah, Nand, Upnandak, Dhumra, Shwet Kalind, Sidharth Barad, Pryak, Eknand, Gonand, Anand, Pramod, Swastik, Dhruvak, kshemvahu, Suvahu, Sidhpatra, Govraj, kanaka, Pidnam, Gayan the lord of Parsnada Hasan, Var, karg, Vaitali, Atitali, Kathal, Vartik, Hansaj, Pank digdhang, Samudronmadan, 65 Ranotkat, Prahas, Shwet sidh, Nandak Kalkant, Prabhas, Kubhandak, Kalakash, Yagyavah, Pravah, Devyaji, Somap, glorious Majjal, Krath Tuha, Chitradev, Madhur, Suprasad valiant Kiriti,

कलसोदर एव च ॥६९॥ धर्मदो मन्मथकर सूचीवक्त्रश्च वीर्य्यवान् । श्वेतवक्त्रश्च चारुवक्त्रश्च पाण्डुर ॥ ७० ॥ दण्डबाहुः सुबाहुश्च रजः कोकिलकस्तथा । अचलः कनकाक्षश्च बालानामपि य प्रभू ॥ ७१ ॥ सञ्चारकः कोकनदो गृध्रपत्रश्च जम्बुक लोहाजवक्त्रो जवन. कुम्भवक्त्रश्च कुम्भकः ॥ ७१ ॥ स्वर्णग्रीवश्च कृष्णौजा हंस वक्त्रश्च चन्द्रभ. । पाणिकूर्चा च शम्बुक पञ्चवक्त्रश्च शिक्षक । चापवक्त्रश्च जाम्बूक खरवक्त्रश्च कुंचक ॥ ७३ ॥ योगयुक्ता महात्मानः सततं ब्राह्मणप्रियाः । पैतामहा महात्मानो महापारिषदाश्च ह ॥ ७४ ॥ यौवनस्थाश्च वृद्धाश्च बालाश्च जनमेजय । सहस्रशः पारिषदाः कुमारमवतस्थिरे। ७५। वक्त्रैर्नानाविधैर्ये तु शृणु तान् जनमेजय। कूर्मकुक्कुटवक्त्राश्च शशोलूकमुखास्तथा। खरोष्ट्रवदनाश्चान्ये वराहवदनास्तथा ॥७७॥ मार्जारशशवक्त्राश्च दीर्घवक्त्राश्च भारत । नकुलोलूक...

मखाह, देवपाली, सोरप, बड़ा तेजस्वी मज्जाल, क्रथ क्राथ तुहर, तुहार, पराक्रमी चित्रदेव मधुर, सुप्रसाद बलवान् किरीटी वत्सल, मधुवर्ण कलशोदर धर्मद, मन्मथकर पराक्रमी सूचीवक्त्र श्वेतवक्त्र, सुवक्त्र चारुवक्त्र पांडुर।७०।दंडबाहु, सुबाहु, रज, कोकिलक अचल कनकाक्ष जोकि बालकोंकाभी प्रभु है संचारक कोकनद गृध्रपत्र जम्बुक लोहाजवक्त्र, जवन, कुम्भवक्त्र कुम्भक स्वर्णग्रीव कृष्णौजा, हंसवक्त्र चन्द्रभ पाणिकूर्चा शम्बुक पंचवक्त्र शिक्षक चापवक्त्र जम्बूक खरवक्त्र कुंचक यह सब योग से संयुक्त सदैव महात्मा ब्राह्मणोंके प्यारे बड़े साहसी ब्रह्माजी के पुत्र पार्षद हैं हे जनमेजय हजारों तरुण बालक और कुमार के पास आकर नियत हुये ।७५। और जोपार्षद नानाप्रकारके मुखरखनेवालेथे उनकोभी सुनो कच्छप और कुक्कुटके समान मुख वाले शशउलूकके समानमुख रखनेवाले गर्दभ, ऊंट, शूकर, मार्जार और शशवक्त्रके समान दीर्घमुख रखनेवालेथे।७२।अबमैं इन सबके शस्त्रोंका वर्णनकरताहूं उनको तुमसुनो

Vatsal, Madhuvarn, Kalasodar, Dharmad, Manmathkar, Suchivaktra, Shwetvaktra, Charuvaktra, Pandur, Dandavahu, Suvahu, Raj, Kokilak, Achal, Kanaksh, Sancharak, Gridhrapatra Jamvuk, Lohajvaktra, Javan, Kumbhvaktra, Kumbhak, Swarngriv, Krishnauja, Hansvaktra, Chandrabh. Panikurcha, Shamvuk, Panchvaktra, Shikshak, Chashvaktra, Jamvook, Kharvaktra, Kunchak, dear to gods and attendants of Brahma's son, young and old, came by thousands and stood near the Kumar. 75 The Parshads were of various shapes and bore the resemblance of tortoises, cocks, hares, owls, asses, camels, hogs, cats and others Now hear an account of the weapons which they bore. They were armed with nooses, with wide open mouths, faces like donkeys, eyes on their faces, blue necks and arms like clubs Others were armed with Sataghnis, discuses

मह. ।८० ॥ पाशोद्यतकराः केचित् व्यादितास्याः खरानना । पृष्ठाक्षा नीलकण्ठाश्च तथा परिघबाहवः ॥ ८१॥ शतघ्नीचक्रहस्ताश्च तथा मुसलपाणय । असिमुद्गरहस्ताश्च दण्डहस्ताश्च भारत ॥८२ ॥ शूलासिहस्ताश्च तथा महाकाया महाबलाः । गदाभुशुण्डिहस्ताश्च तथा तोमरपाणयः ॥ ८३॥ आयुधैर्विविधैर्घोरैर्महात्मानो महाजवाः । महाबलो महावेगा महापारिषदास्तथा ॥ ८४ ॥ अभिषेकं कुमारस्य दृष्ट्वा हृष्टा रणप्रियाः । घण्टाजालपिनद्धाङ्गा ननृतुस्ते महौजस ॥ ८५ । एते चान्येच बहवो महापारिषदा नृप । उपतस्थुर्महात्मानं कार्तिकेयं यशस्विनम् ॥ ८६ ॥ दिव्याश्चाप्यन्तरीक्षाश्च पार्थिवाश्चानिलोपमाः । व्यादिष्टा दैवतैः शूरा. स्कन्दस्यानुचराभवन् ॥ ८७ ॥ तादृशानां सहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानि च । अभिषेक्तु महात्मानं परिवार्योपतस्थिरे ॥ ८८ ॥

इतिगदायुद्धपर्वणि बलदेवतीर्थयात्रायां स्कन्धाभिषेके पंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

।८०।कोई हाथोंसे पाश उठानेवाले,फैलेमुख, गर्धवके समान मुख पृष्ठपर नेत्ररखनेवाले नीलकण्ठ और परिघ शस्त्रकीसमान भुजारखनेवालेथे।८१।कोई शतघ्नीचक्रको हाथमें धारण करनेवाले, मूसल हाथमें रखनेवाले खड्ग मुद्गर और दण्डधारण करने वाले गदा भुशुंडी और तोमर हाथमें रखनेवाले नानाप्रकार के घोर शस्त्रों से युक्त बड़े साहसी और शीघ्रगामी बड़े बलवान वेगवान युद्ध को प्रिय माननेवाले महा पार्षद यह सब कुमार के अभिषेक को देखकर प्रसन्नहुये घण्टा जालसे अलंकृत शरीर बड़ेतेजस्वी वह सब पार्षद नृत्य करनेलगे।८५। और अन्य २ बहुतसे महापार्षदभी यशवान् कीर्तिमान प्रतापी महात्मा स्वामिकार्तिकके पास आकर वर्त्त मानहुये स्वर्ग आकाश और पृथ्वी से सम्बन्ध रखनेवाले वायु के समान यह सब शूरवीर देवताओं के आज्ञावर्त्ती होकर कुमार स्वामिकार्त्तिकजी के अनुचरहुये।८७। उस प्रकारके हजारों करोड़ों किन्तु अर्बुदों पार्षद उस अभिषेक किये हुये महात्मा कुमारके चारोंओरसे परिध रूप होकर उसके समीप वर्त्तमान हुये ८८ ॥

---

clubs, swords, staves, maces, bhushundis, tomara and other dreadful weapons, They loved fighting and were pleased to witness the installation of the Kumar. They danced in glee and rang bells Other attendants too, came to him and stood by. They came from heaven, air and earth. They obeyed the commands of gods and followed Kartik. They numbered hundreds and thousands of millions and formed a circle round him. " 88

वैशम्पायन उवाच । शृणु मातृगणाराजन् कुमारानुचरानिमान् । कीर्त्यमानान्मया वीर सपत्नगणसूदनान् ॥१॥ यशस्विनीनां मातृणां शृणु नामानि भारत । याभिर्व्याप्तास्त्रयोलोकाः कल्याणिभिश्चराचरा. ॥२॥ प्रभावती विशालाक्षी पालिता गोस्तनीतथा। श्रीमती बहुला चैव तथैव बहुपुत्रिका ॥३॥ अप्सुजाता च गोपाली बृहदाम्बालिका तथा । जयावती मालतिका ध्रुवरत्ना भयङ्करी ॥४॥ वसुदामा सुदामा च विशोका नन्दिनी तथा । एकचूडा महाचूडा चक्रनेमिश्च भारत ॥५॥ उत्तेजना जयत्सेना कमलाक्षथ शोभना । शत्रुञ्जया तथा चैव क्रोधना शलभीखरी ॥६॥ माधवी शुभवक्त्रा च तीर्थसेनिश्च भारत । गीतप्रिया च कल्याणी कद्रुरोमामिताशना॥७॥मेघस्वना भोगवती सुभ्रूश्च कनकावती । अलाताक्षी वीर्यवती विद्युज्जिह्वा च भारत ॥८॥ पद्मावती सुनक्षत्रा कन्दरा बहुयोजना । सन्तानिका च कौरव्य कमला च महाबला ।९॥सुदामा बहुदामा च सुप्रभा च यशस्विनी । नृत्यप्रिया च राजेन्द्र शतोलूखल मेखला ॥१०॥

अध्याय ४६ ॥

वैशम्पायन बोले हे वीर राजा जनमेजय अब मुझसे इन माताओं के समूहों को सुनो जोकि शत्रु समूहों को मारनेवाले और कुमारके पीछे चलनेवाले हैं । १ । हे भरतवंशी इन यशवान् माताओं के नामों को सुनो जिन कल्याण रूप नामों से तीनोंलोक विभाग पूर्वक व्याप्त हैं । २ । प्रभावती, विशालाक्षी, पालिता, गोस्तनी, श्रीमती, बहुला, बहुपुत्रका । ३ । अप्सुजाता, गोपाली, बृहदा, अम्बालिका जयावती, मालतिका, ध्रुवरत्ना, अभयंकरी ।४। वसुदामा सुदामा, विशोका, नन्दिनी, एकचूड़ा, महाचूड़ा, चक्रनेमि । ५ ॥ उत्तेजना, जयत्सेना, कमलाक्षी, शोभना शत्रुंजया, क्रोधना, शलभी, खरी । ६ । माधवी, शुभवक्त्रा, तीर्थसेनी, गीतप्रिया, कल्याणी कद्रुरोमा अमिताशना । ७ । मेघस्वना भोगवती सुभ्रू कनकावती अलाताक्षी वीर्यवती विद्युज्जिह्वा । ८ । पद्मावती सुनक्षत्रा कन्दरा बहुयोजना संतानिका कमला महाबला । ९ । सुदामा बहुदामा सुप्रभा यशस्विनी नृत्यप्रिया शतो

CHAPTER XLVI

Vaishampayan said, " hear from me of the groups of mothers, destroyers of foes, who followed Kartik and are spread throughout the three worlds. Their names are – Prabhavati, Vishalakshi, Palita, Gostani, Shreemati, Vahula, Vahuputraka, Apsujata, Gopali, Vrahada, Amvalika, Jayavati, Malatika, Dhruvratna Abhayankari, Vasudama, Sudama, Vishoka, Nandini, Ekchura, Mahachura, Chakranemi, Uttejana, Jayatsena, Kamalakshi, Shobhana, Saatrunjaya, Krodhana Shalabhi, Khari, Madhavi, Shubhvaktra, Tirthseni, Gitprya, Kalyani, Kadruroma Amitashana, Meghswana, Bhogwati, Subhru, Kanakavati Alatakshi Viryavati Vidyujivha Padmavati Sunakshatra Kandara Bahuyojana Santanika Kamala Mahabala Sudama Vahudama

शतघण्टा शतानन्दा भगनन्दाच भाविनी । वपुष्मती चन्द्रशीता भद्रकाली च भारत ॥ ११ ॥ झङ्कारिका निष्कुटिका वामा चत्वरवासिनी । सुमङ्गला स्वस्तिमती वृद्धिकामा जयप्रिया ॥ १२ ॥ धनदा सुप्रसादा च भवदा च जलेश्वरी । एडी भेडी समेडीच वेताल जननी तथा ॥ १३ ॥ कण्डूतिः कालिका चैव देवमित्राच भारत । अम्बुसी केतकी चैव चित्रसेना तथाचला ॥ १४ ॥ कुक्कुटिका शंखलिका तथा शकुनिका नृप । कुण्डारिका कौकुलिका कुम्भिकाथ शतोदरी ॥ १५ ॥ उत्क्राथिनी जलेला च महावेगाच कङ्कणा । मनोजवा कण्टकिनी पघसा पूतना तथा ॥ १६ ॥ केशयन्त्री त्रुटिर्वामा क्रोशनाथ तडित्प्रभा । मन्दोदरी तुहुण्डी च कोटरा मेघवाहिनी ॥ १७ ॥ सुभगा लम्बिनी लम्बा वसुचूडा विकत्थिनी । ऊर्ध्ववेणीधरा चैव पिंगाक्षी लोहमेखला ॥ १८ ॥ पृथुवक्त्रा मधुलिका मधुकुम्भा तथैव च । पक्षालिका मत्कुणिका जरायुर्जर्जरानना ॥ १९ ॥ ख्याता दहदहा चैव तथा धमधमा नृप । खण्ड खण्डा च राजेन्द्र पूषणा मणिकुट्टिका ॥ २० ॥ अमोघा चैव कौरव्य तथा लम्बपयोधरा । वेणुवीणा

लूखलमेखला ।१०। शतघण्टा शतानन्दा भगनन्दा भाविनी वपुष्मती चन्द्रशीता भद्रकाली झंकारिका निष्कुटिका वामा चत्वरवासिनी सुमंगला स्वस्तिमती वृद्धिकामा जयप्रिया । १२ । धनदा सुप्रसादा भवदा एडी भेडी समेडी वेतालजननी कण्डूती कालिका देवमित्रा अंबुसी केतकी चित्रसेना अवला । १४ । कुक्कुटिका संखलिका शकुनिका कुंडारिका कौकुलिका कुंभिका शतोदरी । १५ । उत्क्राथिनी जलेला महावेगा कंकणा मनोजवा कंटकिनी परिघा पूतना । १६ केशयंत्री त्रुटि क्रोशना तड़ित्प्रभा मन्दोदरी तुहुंडी कोटरा मेघवाहिनी । १७ । सुभगा लम्बिनी लम्बा वसुचूडा विकत्थिनी ऊर्ध्ववेणी धरा पिंगाक्षी लोहमेखला । १८ । पृथुवक्त्रा मधुलिका मधुकुंभा पक्षालिका मत्कुणिका जरायु जर्जरानना । १९ । ख्याता दहदहा धमधमा खण्डखण्डा पूषणा मणिकुट्टिका । २० । अमोघा लम्बपयोधरा वेणुवीणाधरा

Suprabha Nityaprya Shatolukhalmekhala Shatghanta Shatananda Bhagnanda Bhawini Vapushmati Chandrashita Bhadrakali Jhankarika Nishkutika Vama Twarvasini Sumangala Swastimati Vridhikama Jayaprya, 12. Dhanada Suprasada Bhavada Eri Bheri Sameri Betal janani *Kanduti* *Kalika* Devamitra Jamvusi *Ketki* Chitrasena Avala Kukkutika Shankhalika Shakuni*ka* *Kundarika* *Kaukulika* *Kumbhika* Shatodari, 15. Ut*k*rathini, Jalela, Mahavega, *Kankana*, Manojava, *Kantakini* Parigha Portna *Keshyantri*, Ghati, *Kraushna* *Taritprabha* Mandodari Tuhundi *Kotara*, Meghvahini Subhaga Lambini Lamba Urdhveni Dhara, Pingakshi, Lohamekhle, Prithuvaktra, Madhurika, Madhukumbha, Yakshalika, Matkunika, Jarayu, Jarjaranana, Khyata Dahdaha, Dhamdhama, Khandkhanda, Pooshna, Marikuttka, Amogha, 20, Lambpayodhara, Venuvinadhara, Pingakshi, Lohamekhala.

चराचैव पिङ्गाक्षी लोहमेखला ॥ २१ ॥ शशोलूकमुखी कृष्णा, खरजंघा महाजवा शिशुमारमुखी श्वेता ,लोहिताक्षी विभीषणा ॥ २२ ॥ जटालिका कामचरी दीर्घजिह्वा बलोत्कटा । कालेहिका वामनिका मुकुटा चैव भारत ॥ २३ ॥ लोहिताक्षी महाकाया हरिपिण्डा च भूमिप । एकत्वचा सुकुसुमा कृष्णकर्णी च भारत ॥२४॥ क्षुरकर्णी चतुष्कर्णी कर्णप्रावरणा तथा चतुष्पथनिकेता च गोकर्णी महिषानना ॥ २५ ॥ खरकर्णी महाकर्णी भेरीस्वनमहास्वना । शङ्ख कुम्भश्रवाश्चैव भगदा च महाबला ॥२६॥ गणा च सुगणा चैव तथा भीत्यथ कामदा। चतुष्पथरता चैव भूतितीर्थान्यगोचरा ॥ २७ ॥ पशुदा वित्तदा चैव सुखदा च महायशा पयोदा गोमहिषदा सुविशाला च भारत ॥ २८ ॥ प्रतिष्ठा सुप्रतिष्ठा च रोचमाना सुरोचना । नौकर्णी मुखकर्णी च वशिरा मन्थिनी तथा । एकवक्त्रा मेघरवा मेघमाला विरोचना । २९ ॥ एताश्चान्याश्च बहवो मातरो भरतर्षभ । कार्त्तिकेयानुया

पिंगाक्षी लोहमेखला । २१ । शशोलूकमुखी कृष्णा खरजंघा महाजवा शिशुमारमुखी, श्वेता लोहिताक्षी विभीषणा । २२ । जटालिका कामचरी दीर्घजिह्वा बलोत्कटा कालेहिका वामनिका मुकुटा । २३ । लोहिताक्षी महाकाया हरिपिण्डा एकत्वचा सुकुसुमा कृष्णकर्णी ।२४।क्षुरकर्णी चतुष्कर्णी कर्णप्रावर्णा चतुष्पथ निकेता गोकर्णी महिषानना ।२५। खरकर्णी महाकर्णी भेरीस्वना महास्वना शङ्ख कुम्भश्रवा भगदा, महाबला । २६ । गणा सुगणा भीति, कामदा चतुष्पथरता, भूतितीर्था, अन्यगोचरा, पशुदा, वित्तदा, सुखदा, महायशा, पयोदा गोमहिषदा. सुविशाला ।२८। प्रतिष्ठा सुप्रतिष्ठा रोचमाना सुरोचना नौकर्णी मुखकर्णी विशारामंथिनी एकवक्त्रा मेघरवा मेघमाला विरोचना । २९ । हे भरतर्षभ यह सब और अन्य बहुतसी माता स्वामिकार्त्तिकके पीछे चलनेवाली नानारूपवाली हजारोंथी । ३० । लंबेनख लम्बेदांत लम्बा मुख रखनेवाली बलवान मधुरवचन तरुणअच्छे

Shasholukmukhi, Krishna, Kharjangha, Mahajava Shishumarmukhi Shweta, Lohitakshi, Vivishana Jatalika Kamchari, Dirghjivha, Valotkata, Kalohika, Vamanika, Mukuta, Lohitakshi, Mahayaka, Haripanda, Ektwacha, Sukusuma, Krishnkarni, Kshurkarni Chatushkarni Karnpravarna Chatushpath, Niketa Gokarni, Mahishanana 25, Kharkarni, Mahakarni Bheriswana Mahaswana Shankh Kumbhshrava, Bhagada, Mahavala, Gana Sugana Bhiti Kamada Chatushpathrata Bhutitirtha, Anyagochara Pashuda Vittada Sukhda Mahayasha Payoda Gomahishda Suvishala Pratishtha Supratishtha Rochmana Surochana Naukarni Mukhkarni Visharamanthini Ekvaktra Meghrava Meghmala, Virochana all these and other mothers followed Kartik by thousands. 30. They had long nails, long teeth, and long mouths

विन्यो नानारूपाः सहस्रशः ॥ ३१ ॥ दीर्घनख्यो दीर्घदन्त्यो दीर्घतुण्ड्यश्च भारत सरला मधुराश्चैव यौवनस्थाः स्वलंकृताः ॥ ३२ ॥ माहात्म्येन च संयुक्ताः कामरूपधरास्तथा । निर्मांसगात्र्यः श्वेताश्च तथा काञ्चनसंनिभाः । कृष्णमेघनिभाश्चान्या धूम्राश्च भरतर्षभ । अरुणाभा महाभागा दीर्घकेश्यः सिताम्बराः ॥ ३३ ॥ ऊर्ध्ववेणीधराश्चैव पिङ्गाक्ष्यो लम्बमेखलाः । लम्बोदर्यो लम्बकर्णास्तथा लम्बपयोधराः ॥ ३४ ॥ ताम्राक्ष्यस्ताम्रवर्णाश्च हर्यक्ष्यश्च तथापराः । वरदाः कामचारिण्यो नित्यं प्रमुदितास्तथा ॥ ३५ ॥ याम्या रौद्रास्तथा सौम्याः कौबेर्योऽथ महाबलाः । वारुण्योऽथ च माहेन्द्र्यस्तथाग्नेय्यः परन्तप ॥ ३६ ॥ वायव्यश्चाथ कौमार्यो ब्राह्म्यश्च भरतर्षभ । वैष्णव्यश्च तथा सौर्यो वाराह्यश्च महाबलाः ॥ ३७ ॥ रूपेणाप्सरसां तुल्या मनोहार्यो मनोरमाः । परपुष्टोपमा वाक्ये तथर्द्ध्या धनदोपमाः ॥ ३८ ॥ शक्रवीर्योपमा युद्धे दीप्त्या वह्निसमास्तथा । शत्रूणां विग्रहे नित्यं भयदास्ता भवन्त्युत ॥ ३९ ॥ कामरूपधरा

अलंकृत । ३२ । महात्मतासे युक्त स्वेच्छाचारी रूप धारण करनेवाली मांससे रहित शरीर श्वेतवर्ण और काञ्चनरूपधारी । ३२ । हे भरतर्षभ इसीप्रकार दूसरीदेवी कृष्ण मेघकी सूरत धूम्रवर्ण अरुणवर्ण महाभाग लम्बेकेश रखनेवाली कोई लम्बी मेखला रखनेवाली लम्बा उदर कान और स्तन रखनेवाली । ३४ । इसीप्रकार दूसरी देवी रक्तनेत्र लालवर्ण पिंगलाक्षी वरदाता इच्छानुसार कर्म कर्ता सदैव प्रसन्न । ३५ । यमराज रुद्र और चन्द्रमा समेत कुबेर से सम्बन्ध रखनेवाले बड़े बलवान् लोग वरुण महाइन्द्र अग्नि । ३६ । वायुकुमार और ब्रह्माजी से सम्बन्ध रखनेवाली देवियां इसीप्रकार विष्णु सूर्य और वाराहजी से सम्बन्ध रखनेवाली बड़ी बलवान् स्वरूपमें अप्सराओं के समान चित्तरोचक मनको प्रसन्न करने वाली वाणीओं में कोकिलाओं के समान धनमें कुबेरकी तुल्य । ३८ । युद्धमें रुद्र इन्द्रके समतुल्य और तेजमें अग्निके सदृशथीं वह सदैव शत्रुओं के युद्धमें भयकी देनेवाली होती हैं । ३९ । उसीप्रकार इच्छानुसार रूपधारण करनेवाली वेगमें वायुके समान ध्यान से बाहर बल पराक्रम रखनेवाली । ४० । वृक्ष चत्वर और निर्जन वनमें

and were powe ful, sweet-voiced, young, well-deckd, roaming at will fleshless, white and gold coloured or of the colour of clouds smoke and red. They had long hair long-belly ear and breasts. Others were of red eyes givers of boons powerful and cheerful. 35 They had connection with Yam, Rudra, Chandra, and Kuver. very powerful, connected with Indra, Vayu, Brahma, Vishnu, Surya and Barah and were beautiful

मेघ जवेबायुसमास्तथा । अचिन्त्यबलवीर्याश्च तथाचिन्त्यपराक्रमाः ॥ ४२ ॥ वृक्षच
त्वरवासिन्यश्चतुष्पथनिकेतनाः । गुहाश्मशानवासिन्यः शैलप्रस्रवणालयाः ॥ ४१ ॥
नानाभरणधारिण्यो नानामाल्याम्बरास्तथा । नानाविचित्रवेशाश्च नानाभाषास्तथैवच
॥ ४२ ॥ एते चान्ये च बहवो गणाः शत्रुभयङ्कराः । अनुजग्मुर्महात्मानं त्रिदशेन्द्रस्य
सम्मते ॥ ४३ ॥ ततः शक्त्यस्त्रमददद्भगवान् पाकशासनः । गुहाय राजशार्दूल विना
शाय सुरद्विषाम् ॥ ४४ ॥ महास्वनां महाघण्टां द्योतमानां सितप्रभाम् । तरुणादित्य
वर्णाश्च पताका भरतर्षभ ॥ ४५ ॥ ददौ पशुपतिस्तस्मै सर्वभूतमहाचमूम् । उग्रां नाना
प्रहरणां तपोवीर्यबलान्विताम् ॥ ४६ ॥ अजेयां स्वगुणैर्युक्तां नाम्ना सेनां धनञ्जयाम्
रुद्रतुल्यबलैर्गुप्तां योधानामयुतैस्त्रिभिः । न सा विजानाति रणात् कदाचिद्विनिवर्ति
तम् ॥ ४७ ॥ विष्णुर्ददौ वैजयन्तीं मालां बलविवर्द्धिनीम् । उमा ददौ विरजसी
वाससी सूर्यसन्निभे ॥ ४८ ॥ गंगा कमण्डलुं दिव्यममृतोद्भवमुत्तमम् । ददौ प्रीत्या

निवास करनेवाली, गुफा और श्मशानवासिनी पर्वतों के झिरनों में निवास कर
वाली । ४१। नानाप्रकार के भूषण और माला रखनेवाली नानाप्रकार के विचित्र
वेष रखनेवाली यह और अन्य२ बहुत से शत्रुसमूहों को भय उत्पन्न कर ने वाली
इस देवराज की आज्ञा से महात्मा कुमार के पीछे चलीं । ४३ । इस के पीछे
भगवान् इन्द्रने शक्ति अस्त्र असुरों के नाशके लिये स्वामिकार्त्तिक को दिये । ४४।
हे भरतर्षभ बड़ेशब्दवान् और बड़े घण्टेवाली प्रकाशित श्वेतप्रभा रखनेवाली, सूर्यके
वर्ण अरुण पताकाको भी दिया । ४५ । पशुपतिजी ने सब जीवोंकी उस बड़ी
सेनाको उन के निमित्त दी जो कि महाउग्र नानाप्रकार के शस्त्रों को धारण करने
वाली तप बल पराक्रम से युक्त अजेय उत्तम गुणवाली धनञ्जय नाम से विख्यात
और रुद्रजी के समान तीन अयुत शूरवीरों से संयुक्त थी वह सेना कभी युद्ध से
मुख फेरना नहीं जानती थी । ४७ । और विष्णुजी ने बलको बढ़ाने वाली
वैजयन्तीमालादी उमादेवी ने सूर्य के समान प्रकाशमान दो दिव्य वस्त्र दिये
श्री गंगाजी ने बड़ी प्रीति से दिव्य और अमृतका उत्पन्न करनेवाला उत्तम

burial grounds and hill water falls. 41. They were adorned with garlands and other ornaments and were the terror of foes. They followed the Kumar by the order of the prince of gods. Then Indra gave him weapons to destroy the foes He also gave the Kumar red banner with bells jingling from it 45. Shiv gave him a large arm which was dreadful possessed of the power of asceticism inconquerable and well qualified known as Dhananjaya composed of thirty thousands of warriors brave like Rudra and unflinching. Vishnu gave him the garland known as Vaijayanti which increased his power and Uma gave him a pitcher of nectar, while Vrihaspati gave him a staff

कुमाराय दण्डञ्चैव बृहस्पतिः ॥ ४९ ॥ गरुडो दयितं पुत्रं मयूरं चित्रबर्हिणम् ॥५०॥ अरुणस्ताम्रचूडञ्च प्रददौ चरणायुधम्। नागन्तु वरुणोराजा बलवीर्यसमन्वितम्॥५१॥ कृष्णाजिनं ततो ब्रह्मा ब्रह्मण्याय ददौ प्रभुः। समरेषु जयञ्चैव प्रददौ लोकभावनः ॥ ५२ ॥ सैनापत्यमनुप्राप्य स्कन्दो देवगणस्य ह। शुशुभे ज्वलितोऽर्चिष्मान् द्वितीय इव पावकः ॥ ५३ ॥ ततः पारिषदैश्चैव मातृभिश्च समन्वितः। ययौ दैत्यविनाशाय ह्लादयन् सुरपुंगवान् ॥ ५४ ॥ सा सेना नैर्ऋती भीमा सघण्टोच्छ्रितकेतना। सभेरीशङ्खमुरजा सायुधा सपताकिनी। शारदी द्यौरिवाभाति ज्योतिर्भिरिव शोभिता॥५५॥ ततो देवनिकायास्ते नानाभूतगणास्तथा। वादयामासुरव्यग्रा शङ्खांश्च पुष्कलान् ॥ ५६ ॥ तुष्टुवुश्च कुमारन्तु सर्वे देवाः सवासवाः। जगुश्च देवगन्धर्वा ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ ५७ ॥ ततः प्रीतो महासेनस्त्रिदशेभ्यो वरं ददौ। रिपून् हन्तास्मि समरे

कमण्डलु दिया और बृहस्पतिजी ने कुमारके अर्थ दण्ड दिया। ४९। गरुड़जीने विचित्र पुच्छवाला सुन्दर मोरदिया। ५०। अरुणने चरणायुधवाला ताम्रचूड़ दिया फिर राजा वरुणने बल पराक्रमसे युक्त नागदिया। ५१। इसके अनन्तर प्रभु ब्रह्माजी ने उस वेदवाह्मणोंके रक्षक कुमार को कृष्ण मृगदिया और युद्धों में विजय को भी दिया। ५२। तब स्वामिकार्तिकजी सब देवगणों के सेनानीपद को पाकर दूसरे प्रज्वलित अग्नि के समान प्रकाशित होकर शोभायमान हुए। ५३। फिर पार्षदों और माताओं से युक्त स्वामिकार्तिकजी उत्तम देवताओंको प्रसन्न करके दैत्यों के नाश करनेके लिये चले। ५४। और राक्षसोंकीभीवह भयानक रूप सेनाघंटे ऊंची ध्वजा भेरी शङ्ख मुरजा शस्त्र और पताका रखनेवाली प्रकाशित शरीरों से शोभायमान शरदऋतु के आकाशको समान प्रकाशमानथी। ५५। इसके पीछे देवताओंके समूह और सावधान नानाप्रकारके जीवसमूहोंने उत्तम भेरी और शङ्खोंको बजाया। ५६। फिर इन्द्रसमेत सब देवताओं ने कुमार स्वामिकार्तिकजी की स्तुतिकी देवगन्धर्वोंने गाया और अप्सराओं के गणों ने नृत्यकिया। ५७। तदनन्तर अत्यन्त प्रसन्नरूप स्वामिकार्तिकजी ने देवताओं के निमित्त यह वरदान दिया कि मैं उन शत्रुओंको मारूंगा जो तुम्हारे मारनेके अभिलाषी

Garur gave him a wonderful peacock of beautiful tail. 50. Arun gave him a Taurachur having feet for weapons. Varun gave him a powerful Nag and Brahma gave him a black deer as well as victory in war. Then Kartik went on with that large army and was glorious like fire. With Parshads and mothers he went on to slay rakshases whose army was dreadful with glorious bodies shining like the stars of heaven and armed with weapons of sorts. 55. Then the groups of gods and other beings blew conchs and drums. Indra and other gods praised Kartik, the gandharvas sang and apsaras danced. Then

ये वो मनसा चिकीर्षितं ॥ ५८ ॥ प्रतिगृह्य वरं देवास्तस्माद्विबुधसत्तमात् । प्रीतात्मानो महात्मानो मेनिरे निहतान् रिपून् ॥ ५९ ॥ सर्वेषां भूतसंघानां हर्षान्नादः समुत्थितः । अपूरयत लोकांस्त्रीन् वरे दत्ते महात्मना ॥ ६० ॥ स निर्ययौ महासेनो महत्या सेनया वृतः । वधाय युधि दैत्यानां रक्षार्थं च दिवौकसाम् ॥ ६१ ॥ व्यवसायो जयो धर्मः सिद्धिर्लक्ष्मीर्धृतिः स्मृतिः । महासेनस्य सैन्यानामग्रे जग्मुर्नराधिप ॥ ६२ ॥ स तया भीमया देवः शूलमुद्गरहस्तया । ज्वलितालातधारिण्या चित्राभरणवर्मया ॥ ६३ ॥ गदामुसलनाराचशक्तितोमरहस्तया । दृप्तसिंहनिनादिन्या विनद्य प्रययौ गुहः ॥ ६४ ॥ तं दृष्ट्वा सर्वदैतेया राक्षसा दानवास्तथा । व्यद्रवन्त दिशः सर्वा भयोद्विग्नाः समन्ततः ॥ ६५ ॥ अभ्यद्रवन्त देवास्तान् विविधायुधपाणयः । दृष्ट्वा च स ततः क्रुद्धः स्कन्दस्तेजोबलान्वितः ॥ ६६ ॥ शक्त्यस्त्रं भगवान् भीमं पुनः पुनरवासृजत् । आदधच्चात्मनस्तेजो हविषेद्ध इवानलः ॥ ६७ ॥ अभ्यस्यमाने शक्त्यस्त्रे स्कन्देनामिततेजसा ।

है । ५८ । तब प्रसन्नचित्त महात्मा देवताओंने उस श्रेष्ठ देवतासे वरप्रदानलेकर शत्रुओंको मराहुआ माना । ५९ । महात्माकी ओरसे वरके देनेपर सबजीव समूहों के प्रसन्नता के ऐसे शब्द उत्पन्नहुये जिनकेमारे तीनोंलोक पूर्णहोगये । ६० । बड़ी सेनासमेत वह स्वामिकार्तिकजी युद्धमें दैत्यों के मारनेको और देवताओं के रक्षाके निमित्त [illegible] । ६१ । हे राजा निश्चय करके धर्म सिद्धी लक्ष्मी धृति [illegible] सेनाके आगे चलीं । ६२ । वह स्वामि कार्तिक देवता भयानक शूल मुद्गर हाथमें रखनेवाले ज्वलित शस्त्रधारी जड़ाऊ भूषण और कवच धारणकरनेवाले । ६३ । गदा मूशल नाराच शक्ति और तोमर धारी दृप्त सिंहके समान गर्जनेवाले सेनाके साथ गर्जतेहुयेचले । ६४ । भयसे महाव्याकुल सबदैत्य दानव और राक्षस चारोंओर सब दिशाओं में भागे । ६५ । नानाप्रकारके शस्त्रों को हाथमें रखनेवाले देवताओं के सम्मुख गये तब तेज बलसे युक्त भगवान् स्वामिकार्तिकजी ने उस सेना को देख बारम्बार क्रोधयुक्त होकर भयानकरूप शक्तिको छोड़ा और अपने तेजको ऐसे धारण किया जैसे कि हव्यसे हविर्युक्त अग्नि तेजको धारण करता है । ६७ । हे महाराज बड़े

---

cheerful *Kartik* gave the gods a boon, saying, " I shall slay your enemies. " At this the gods believed their armies as already slain and cried for joy. *Kartik* then marched to slay the Daityas and to protect the gods 61. Dharm, Sidhi, Lakshmi, Dhriti and Smriti followed *Kartik*, while he marched armed with various weapons and roaring like a lion. The Daityas and Danavas ran for fear. They faced the gods with weapons and *Kartik* hurled his spear again and again in anger and looked glorious like fire. Sparks of fire fell down with his spear and the wind blew as if it were the time of pralaya.

उल्काज्वाला महद्राजन् पपात वसुधातले ॥ ६८ ॥ संह्रादयन्तश्च तथा निर्घाताश्चापि तत्क्षितौ । यथान्तकालसमये सुघोराः स्युस्तथा नृप ॥ ६९ ॥ क्षिप्ता ह्येका यदा शक्तिः सुघोराऽनलसूनुना । ततः कोट्यो विनिष्पेतुः शक्तीनां भरतर्षभ ॥ ७० ॥ ततः प्रीतो महासेनो जघान भगवान् प्रभुः । दैत्येन्द्रं तारकं नाम महाबलपराक्रमम् । वृतं दैत्यैर्महावीर्यैर्बलिभिर्दशभिर्नृप ॥ ७२ ॥ महिषं चाष्टभिः पद्मैर्वृतं सङ्ख्ये निजघ्निवान् । त्रिपादं चायुतशतैर्जघान दशभिर्वृतम् ॥ ७३ ॥ ह्रदोदरं निखर्वैश्च वृतं दशभिरीश्वरः । जघानानुचरैः सार्धं विविधायुधपाणिभिः ॥ ७४ ॥ तत्राकुर्वन्त विपुलं नादं वध्यत्सु शत्रुषु । कुमारानुचरा राजन् पूरयन्तो दिशो दश । ननृतुश्च ववल्गुश्च जहसुश्च मुदा न्विताः ॥ ७५ ॥ शक्त्यस्त्रस्य तु राजेन्द्र ततोऽर्चिर्भिः समन्ततः । दग्धाः सहस्रशो दैत्या नादैः स्कन्दस्य चापरे ॥ ७६ ॥ त्रैलोक्यं त्रासितं सर्वं जृम्भमाणाभिरेव च । प्रध्माप्तादितनादैश्च सनादैर्हता पुरे ॥ ७७ ॥ पताकयावधूताश्च हताः केचित् सुर

तेजस्वी स्वामिकार्त्तिक से शक्ति अस्त्र के छोडनेपर उल्का की ज्वलित अग्नि पृथ्वीपरगिरी । ६८ । इसीप्रकार वायु से व पुके संघट्टनों के शब्द शब्दको उत्पन्न करते ऐसे पृथ्वीपर गिरे जैसे कि प्रलयकाल में बडे घोरशब्द होतेहैं । ६९ । हेभरतर्षभ जब अग्निके पुत्रके हाथसे वह बडी घोर शक्ति छोडीगई । ७० । उस शक्ति से करोडों शक्तियां उत्पन्नहोगई । ७० । उसकेपीछे प्रसन्नचित्त भगवान स्वामिकार्त्तिकजीने बडे बल पराक्रमवाले तारक असुर को मारा । ७२ । हेर ज बलवान आठ पद्म एकलाख शूरवीर दैत्योंसे युक्त महिषासुरको भी कुमारने युद्धमें मारा । ७३ । फिर उस ईश्वर ने एक करोड दैत्यों समेत त्रिपादको और नानाप्रकार के शस्त्रों को हाथमें रखनेवाले दश निखर्व दैत्यों समेत ह्रदोदरको मारा । ७४ । इसप्रकारसे शत्रुओं के मरनेपर दशोंदिशाओं को पूर्णकरते कुमारके साथियोंने बडे शब्दकिये और प्रसन्नहोकर नृत्यकरतेहुये चेष्टाओंको करते प्रसन्नहुये । ७५ । हे राजेन्द्र इसकेपीछे शक्ति अस्त्र के चारोंओर को प्रज्वलित होनेसे तीनोंलोक सब ओरसे भयभीतहुये । ७६ । बहुत से शस्त्रोंसमेत हजारों दैत्य स्वामिकार्त्तिकजी के शब्दों सेही भस्महोगये और कितनेही असुर पताकासे घायल होकर मरगये कितनेही

Millions of spears came out from the spear hurled by *Kartik* 70 Then *Kartikeya* slew Tarak of great prowess. He slew also *Mahisha*sur, and his large and powerful army of asurs. He slew Tripad with a crore of daityas armed with various weapons and slew Hrid and his great army of rakshases. Thus, at the fall of those enemies, the companions of the *Kumar*, filling all the directions made a great noise and danced with glee. 75 The three worlds were terrified with the blaze of the spear, and hundreds and thousands of asurs died with the roar of Lord *Kartik* Others fell down wounded by the canner or

द्विषः । केचिद्घण्टारवत्रस्ता निपेतुर्वसुधातले । केचिच्च प्रहरणैश्छिन्ना विनिपेतुर्गतासुषः ॥ ७८ ॥ एवं सुरद्विषोनेकान् बलवानाततायिनः । जघान समरे वीरः कार्त्तिकेयो महाबलः ॥ ७९ ॥ बाणो नामाथ दैतेयो बलेः पुत्रो महाबलः । क्रौञ्चपर्वतमाश्रित्य देवसंघानबाधत ॥ ८० ॥ तमभ्ययान्महासेनः सुरशत्रुमुदारधीः । स कार्त्ति

[illegible] ञ्च नाद्भुनि

[illegible] लस्कन्धरा

[illegible] । गोलाङ्गूल

[illegible] ॥ विनिष्प

[illegible] ॥ ८५ ॥

[illegible] नरवोत्क्षेत:

[illegible] र. अस्त्रों से

खण्डित अंग मरकर गिरपड़े ।७८। इस प्रकार बलवान वीरपराक्रमी स्वामि कार्त्तिकजीने उन मारनेके अभिलाषी असंख्य दैत्य राक्षसादिकों को मारा ।७९। इसकेपीछे बलिके पुत्र महाबली बाणनाम दैत्यने क्रौंचपर्व्वत में आश्रित होकर देवताओंके समूहोंको पीड़ामान किया। ८०। तब बड़े बुद्धिमान स्वामिकार्त्तिकजी उस देवताओंके शत्रु बाणके सम्मुखगये उसने स्वामिकार्त्तिकजीके भयसे क्रौंच पर्व्वत की शरणली । ८१ । इसकेपीछे बड़े क्रोधयुक्त भगवान स्वामिकार्त्तिक ने क्रौंचपक्षी के समान गर्जनेवाले उस क्रौंचपर्व्वत को अग्निकी दीहुई शक्तिसे घायल किया। ८२। जो कि शालवृक्ष के गुच्छोंमे सबलवर्ण भयानक वानर और हाथीवाला और बहुत उड़नेवाले व्याकुल पक्षियोंवाला बिलसे बाहर दौड़नेवाले सर्पोंवाला । ८३। गोलांगूल भागे रीछोंके समूहों से और कुरंगों के शब्दों से शब्दायमान पृथ्वी और बन रखनेवाला था । ८४। अकस्मात दौड़नेवाले और भागनेवाले शरभ और सिंहों से शोचग्रस्तदशाको प्राप्तहोनेवाला वह पर्व्वत भी शोभायमान हुआ । ८५ । उस पर्व्वतके शिखरपर रहनेवाले विद्याधर उछले और

fell down senseless at the sound of bells, while some died of the wounds of weapons. Thus brave *Kartik* slew an immense army of rakshasas. Then Van, the son of Vali hid himself within Kraunch mountain and from there harassed the army of gods. 80 Wise *Kartik* faced Van the enemy of gods. He hid himself within Kraunch hill but *Kartik* pierced through the hill with the spear presented to him by Agni. The mountain was full of sal trees, dreadful vanars, elephants, birds, snakes, bears, sharabhas and lions. 85. The vidyadharas lying on that hill sprang up and kinnars were disturbed by the fall of the spear. Then, thousands of Daityas, with wonderful ornaments

॥८६॥ततो दैत्य विनिष्पेतु शतशोथ सहस्रशः। मंदीसात् पर्वतश्रेष्ठाद्विविधायुधभूषणाः। तानिजघ्नुरतिक्रम्य कुमारानुचरास्तदा ॥ ८७। स चैव भगवान्क्रुद्धो,दैत्येन्द्रस्य सुतं तदा । सहानुजं जघानाशु वृत्रं देवपतिर्यथा ॥८८ बिभेद शक्त्या क्रौञ्चञ्च पावकिः परवीरहा। बहुधा चैकधा चैव कृत्वात्मानं महाबलः ॥ ८९ । शक्तिः क्षिप्ता रणे तस्य पाणिमेति पुनः पुनः। एवं प्रभावो भगवानतो भूयश्च पावकिः॥९०॥ शौर्याद्द्विगुणयोगेन तेजसा यशसा श्रिया। क्रौञ्चस्तेन विनिर्भिन्नो दैत्याश्च शतशो हताः॥ ९१ ॥ ततः स भगवान् देवो निहत्य विबुधद्विषः। सभाज्यमानो विबुधैः परं हर्षमवाप ह ॥ ९२॥ भिन्ने क्रौञ्चे गिरिवरे चण्डपुत्रे च पातिते। ततो दुन्दुभयो राजन्नेदुः शंखाश्च भारत ॥ ९३ ॥ मुमुचुर्देवयोषाश्च पुष्पवर्षमनुत्तमम्। योगिनामीश्वरं देवं शतशोथ सहस्रशः ॥ दिव्यं गन्धमुपादाय ववौ पुण्यश्च मारुतः। गन्धर्वास्तुष्टुवुश्चैनं यज्वानश्च महर्षयः ॥ ९५ ॥ केचिदेनं व्यवस्यन्ति पितामहसुतं प्रभुम्। सनत्कुमारं सर्वेषां ब्रह्मयोनिं तमग्रजम् ॥ ९६ ॥ केचिन्महेश्वरसुतं केचित् पुत्रं विभावसोः। उमायाः कृत्तिकानाञ्च

शक्तिके संपात शब्दसे पाताल निवासीलोग व्याकुलहुये। ८६ । इसकेपीछे विचित्र भूषण रखनेवाले हजारों दैत्य, अत्यन्त ज्वलितरूप उस उत्तम पहाड़ से बाहर को दौड़े। ८७ । कुमारके पीछे चलनेवालोंने युद्धमें उनको पराजयकरके मारा तब उनक्रोधयुक्त भगवानने भी दैत्यराजके पुत्रको उसके भाईसमेत ऐसेमारा, जैसे कि देवराजने वृत्रासुरको माराथा। ८८ । शत्रुके वीरों के मारनेवाले महाबली अग्निके पुत्रने बहुत रूपवाला और एक रूपवालाकरके शक्तिसे क्रौंच पर्व्वतको घायल किया युद्ध में फेंकी हुई शक्ति वारम्वार उसके हाथ में आतीथी इस के अनन्तर ऐसे प्रभाववाले भगवान् स्वामिकार्त्तिकजी शूरता द्विगुणित योग तेज यश और शोभासे महाप्रभाववाले हुये उनके हाथसे क्रौंच पर्व्वत टूटा और हजारों दैत्य लोग मारेगये। ९१ । उस भगवान् देवता ने असुरों को मारकर सुरों से सेवित होकर बड़े आनन्द को पाया। ९२ । हे भरतवंशी राजा जनमेजय फिर देवताओं के दुन्दुभी और शंख बजे और देवताओं की हजारों स्त्रियों ने उस योनियों के ईश्वर देवता कुमारके ऊपर, पुष्पों की वर्षाको किया। ९४ । और

came out of the hill, but the followers of the kumar vanquished and slew them. The *Kumar* slew him and his brother as India had slain Vritiasur. He broke the *Kraunch* hill into pieces. The spear kurled by him came again and again back into his hand. Lord *Kartik's* bravery, glory, fame and prowess became double. The *Kranuch* moun tain was broken and the Daityas were slain. 91. Having slam the asura the *Kumar* and his army were much pleased. The gods blew their conchs and drums and thousands of goddesses sprinkled flowers over him. The wind blew a fragrant breeze and the gandharvas and

गङ्गायाश्च सदन्नयुत ॥ ९७ ॥ एकधा च द्विधा चैव चतुर्धा च महाबलम । योगिनामीश्वर देव शतशोथ सहस्रश ॥ ९८ ॥ एतत्ते कथित राजन् कार्त्तिकेयाभिषेचनम । शृणुचैव सरस्वत्यास्तीर्थवर्य्यस्य पुण्यताम ॥ ९९ ॥ बभूव तीर्थप्रवर हतेषु सुरशत्रुषु कुमारेण महाराज त्रिविष्टपमिवापरम ॥ १०० । ऐश्वर्य्याणि च तत्रस्थो ददावीशः पृथक् पृथक् । तदा नैर्ऋतमुख्येभ्यस्त्रैलोक्य पावकात्मज ॥ १०१ ॥ एव स भगवांस्तस्मिंस्तीर्थे दैत्यकुलान्तक । अभिषिक्तो महाराज देवसेनापति सुरै ॥१०२। तैजस नाम तत्तीर्थं यत्र पूर्वमपाम्पति. अभिषिक्त सुरगणैर्वरुणो भरतर्षभ ॥ १०३ ॥ तस्मिंस्तीर्थे वरे स्नात्वा स्कन्दञ्चाभ्यर्च्य लाङ्गली । ब्राह्मणेभ्यो ददौ रुक्म ,वासांस्याभरणानि च । १०४॥ उषित्वा रजनी तत्र माधव परवीरहा । पूज्यतीर्थवर तच्च स्पृष्ट्वा तोयच

सुन्दर दिव्य गन्धियोंको लेकर पवित्र वायुचली गन्धर्वों समेत प्रश्न करनेवाले महर्षियों ने स्तुतिकरी । ९९ । कोई इस प्रभुको ब्रह्माजीका वह पुत्र निश्चय करते हैं कि ब्रह्माजी से प्रकट होनेवाले सब के आदिभूत सनत्कुमार नाम हैं । ९६ । कोई महेश्वरजीका पुत्र कोई उमा गंगा अग्नि और कृत्तिकाओंका पुत्र कहते हैं । ९७ । उस योगेश्वर महाबली देवता को एक रूप दो रूप चाररूप और हजारों लाखों रूपवाला कहते हैं । ९८ । हे राजा कार्त्तिकेयजी का यह अभिषेक मैंने तुमसे कहा अब सरस्वती के उत्तम तीर्थ के मूल हेतुरूप वह धर्म की वृद्धि को सुनो । ९९ । हे महाराज कुमारके हाथसे असुरों के मरनेपर वह अत्यन्त उत्तम तीर्थ दूसरे स्वर्ग के समानहुआ । १०० । वहांपर नियत होनेवाले ईश्वर कुमार ने पृथक् २ राज्य शासनों समेत तीनोंलोकों को देवताओं को दिया । १०१ । इस प्रकार उस तीर्थपर दैत्योंके कुलके नाश करनेवाले वह भगवान देव सेनापति देवताओंकी ओरसे अभिषेक कियेगये । १०२ । हेभरतर्षभ वह तीर्थ तैजस नामसे प्रसिद्ध है जिस तीर्थपर जलके स्वामी वरुण देवता देवसमूहों से अभिषेक किये गये । १०३ । बलदेवजी ने उस उत्तम तीर्थपर स्नान करके स्वामिकार्त्तिकजी को पूजकर सुवर्ण वस्त्र और भूषणादिक ब्राह्मणों को दान किये । १०४ । शत्रुके वीरों

---

rishis praised him 95 Some say that he is Sanatkumar the son of Brahma, some call him the son of Ganga some of Agni and others of Kritikas. They attribute to him one, two ,four and million shapes. I have told you the installation of *Kartik*, now hear of the holy *Saraswati*. At the fall of the asurs by *Kartik* the holy place became like another paradise. 100 The *Kumar* distributed the world among gods for the sake of management. The *Kumar* was anointed commander of the divine armies at the bank of the Saraswati. The holy place is known as Taijas where Varun the lord of waters was anointed by gods. Baldev bathed there and having worshipped Kartik gave

सांगकी । हृष्टः प्रीतमनाश्चैव प्रमथन्माधवोत्तमः ॥ १०५ ॥ एतत्ते सर्वमाख्यातं यन्मां त्वं परिपृच्छसि । यथाभिषिक्तो भगवान् स्कन्दो देवैः समागतैः ॥ १०६ ॥

इति गदायुद्धपर्वणि बलदेवतीर्थयात्रायां सारस्वतोपाख्याने षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

जनमेजय उवाच । अत्यद्भुतमिदं ब्रह्मन् श्रुतवानस्मि तत्त्वतः । अभिषेकं कुमारस्य विस्तरेण यथा विधि ॥१॥ यच्छ्रुत्वा पूतमात्मानं विजानामि तपोधन । प्रहृष्टानि च रोमाणि प्रसन्नञ्च मनो मम ॥ २ ॥ अभिषेकं कुमारस्य दैत्यानाञ्च वधं तथा । श्रुत्वा मे परमा प्रीतिर्भूयः कौतूहलं हि मे ॥ ३ ॥ अपाम्पतिः कथं ह्यस्मिन्नभिषिक्तः पुरा सुरैः

के मारनेवाले माधव हलधारी बलदेवजी वहां एकरात्रि निवास करके उस तीर्थ राज महापुण्य तीर्थ को और उसके जल को स्पर्श करके । १०५ । बड़े प्रसन्नचित्त हुये हे राजा जो तुमने पूछा कि कैसे स्वामिकार्त्तिकजीका अभिषेक हुआ वह सब मैंने तुमसे कहा । १०६ ।

अध्याय ४७॥

जनमेजय बोले कि हे द्विजवर्य मैंने कुमारके इस अत्यन्त अपूर्व अभिषेक को विधिपूर्वक मूल समेत सुना । १ । हे तपोधन मैं जिसको सुनकर अपने को पवित्र जानताहूं मेरे शरीरके रोमाञ्च प्रसन्नता से पूर्ण हैं और चित्तभी मेरा अत्यन्त प्रसन्न है । २ । कुमारके अभिषेक और दैत्यों के नाशको सुनकर मुझ को बड़ा आनन्द हुआ । ३ । हे बड़े ज्ञानी श्रेष्ठ वैशम्पायनजी इस तीर्थपर प्राचीन

ornaments to Brahmans. He stayed there one night and having touched of its holy water felt great joy. I have told you, king, all about the installation of Lord Kartik. 106.

CHAPTER XLVII

Janmejaya said, "I have heard thoroughly of the installation of Kumar and I think myself to be the better for it. The hair of my body stand with exultation and my mind is full of glee. I am exceedingly pleased to hear of the Kumar's installation and of the destruction of Daityas. Pray let me know, wise Brahman, how Varun was

तन्मे ब्रूहि महाप्राज्ञः कुशलो ह्यसि सत्तम ॥ ४ ॥ वैशम्पायन उवाच । शृणु राजन्निदं
चित्रं पूर्वकल्पे यथातथम् । आदौ कृतयुगे राजन् वर्तमाने यथाविधि ॥ ५ ॥ वरुणं
देवताः सर्वाः समेत्येदमथाब्रुवन् । यथास्मान् सुरराट् शक्रो भयेभ्यः पाति सर्वदा
॥ ६ ॥ तथा त्वमपि सर्वासां सरितां वै पतिर्भव । वासश्च ते सदा देव सागरे मकरा-
लये ॥ ७ ॥ समुद्रोऽयं तव वशे भविष्यति नदीपतिः । सोमेन सार्द्धं च तव हानिवृद्धी
भविष्यतः ॥ ८ ॥ एवमस्त्विति तान् देवान् वरुणो वाक्यमब्रवीत् । समागम्य ततः
सर्वे वरुणं सागरालयम् ॥ ९ ॥ अपांपतिं प्रचक्रुर्हि विधिदृष्टेन कर्मणा । अभिषिच्य
ततो देवा वरुणं यादसां पतिम् ॥ १० ॥ जग्मुः स्वान्येव स्थानानि पूजयित्वा जलेश्व-
रम् । अभिषिक्तस्ततो देवैर्वरुणोऽपि महायशाः ॥ ११ ॥ सरितः सागरांश्चैव नदांश्चापि
सरांसि च । पालयामास विधिना यथा देवान् शतक्रतुः ॥ १२ ॥ ततस्तत्राप्युपस्पृश्य
दत्त्वा च विविधं वसु । अग्नितीर्थं महाप्राज्ञो जगामाथ प्रलम्बहा ॥ १३ ॥ नष्टो न

समयमें वरुण देवता कैसे देवताओं से अभिषेक करायेगये उसको आप कहिये
क्योंकि आप सर्वज्ञहैं । ४ । वैशम्पायन बोले हे राजा इस अपूर्व वृत्तान्तको जैसे
कि पूर्व कल्पमें हुआ है उस सबको यथार्थतासे सुनो कि सत्युग के प्रारम्भमें । ५ ।
सब देवता वरुण से मिलकर यह वचन बोले कि, जैसे देवराज इन्द्र हमको सदैव
भयों से रक्षित करताहै । ६ । उसीप्रकार तुम भी सब नदियों के स्वामीहो हे देवता
आपका निवास मकरोंके निवासस्थान सागरमें होय यह नदियोंका स्वामी समुद्र
आपके आधीन होगा और आपके वृद्धि क्षय चन्द्रमाके साथहोंगे । ८ । तब
वरुण देवता उन देवताओंसे यह वचन बोले कि ऐसाही होय इसकेपीछे सब
देवताओं ने समुद्रमें निवास करनेवाले वरुण से मिलकर । ९ । वेदोक्त कर्मके द्वारा
वरुणको जलोंका स्वामी किया फिर देवता लोग जलों के स्वामी वरुणको अभि-
षेक कराके । १० । और पूजनादिक करके अपने लोकोंको गये तब देवताओं
से अभिषेक कियेहुये बड़े यशवान् वरुण ने भी । ११ । नदी सागर नद और सरो
वरों को भी विधिसे ऐसे पोषणकिया जैसे इन्द्रदेवताओं को पोषण करता है
। १२ । इसकेपीछे प्रलम्ब के मारनेवाले बड़ेज्ञानी बलदेवजी उस तीर्थ मेंभी स्नान

anointed by gods in the days of yore." Vaishampayan said, "Hear carefully what happened in former days: in the beginning of Sat-yug all the gods came to Varun and said, "You are lord of waters and you should save us from all fear as Indra does. Let your abode be among acquatic animals. The Ocean which is lord of all rivers, will obey your commands, and your rise and fall will depend on the moon." Varun consented and the gods coming together at sea shore anointed him lord of waters. 10. Then they went to their own houses and Varun ruled over the ocean and rivers as Indra does over gods. Baldev bathed at that holy place and having given donations to

दृश्यते यत्र शमीगर्भे हुताशनः । लोकालोकविनाशे च प्रादुर्भूते तदानघ । उपतस्थुः सुरा यत्र सर्वे लोकपितामहम् ॥ १४ ॥ अग्निः प्रनष्टो भगवान् कारणञ्च न विद्महे । सर्वभूतक्षयो मा भूत् सम्पादय विभोऽनलम् ॥ १५ ॥ जनमेजय उवाच । किमर्थं भगवानग्निः प्रनष्टो लोकभावनः । विज्ञातश्च कथं देवैस्तन्ममाचक्ष्व तत्त्वतः ॥ १६ ॥ वैशम्पायन उवाच । भृगोः शापाद्भृशं भीतो जातवेदाः प्रतापवान् । शमीगर्भमथासाद्य ननाश भगवांस्ततः ॥ १७ ॥ प्रनष्टे तु तदा वह्नौ देवाः सर्वे सवासवाः । अन्वैषन्त तदा नष्टं ज्वलनं भृशदुःखिताः ॥ १८ ॥ ततोऽग्नितीर्थमासाद्य शमीगर्भस्थमेव हि । ददृशुर्ज्वलनं तत्र वसमानं यथाविधि ॥ १९ ॥ देवाः सर्वे नरव्याघ्र बृहस्पतिपुरोगमाः । ज्वलनं तं समासाद्य प्रीताभूवन् सवासवाः ॥ २० ॥ पुनर्यथागतं जग्मुः सर्वभक्षश्च सोऽभवत् । भृगोः शापान्महीपाल यदुक्तं ब्रह्मवादिना ॥ २१ ॥ तत्राप्याप्लुत्य मतिमान् ब्रह्मयोनिं जगाम

आचमन करके नानाप्रकार के धनका दानदेकर उस अग्नितीर्थ को गये । १३ । जहांपर कि देवतालोग सबलोकों के पितामह ब्रह्माजीके समीप नियत हुये और कहनेलगे हे भगवन् वहां अग्नि गुप्तहोगये परन्तु इसका हेतु हमनहीं जानते हैं । १४ । शमीगर्भ में वह गुप्तहोनेवाले दिखाई नहीं पड़ते हैं सो हे निष्पाप सब गुप्त प्रकट संसार के नाश प्रकटहोने में सब जीवोंका नाश न होय है समर्थ इस में आप अग्निको उत्पन्न करो । १५ । जनमेजय बोले कि लोकभावन भगवान् अग्नि किस निमित्त गुप्तहुये और किस रीतिसे उनको देवताओं ने जाना यह सबवृत्तान्त आप मुझसे कहिये । १६ । वैशम्पायन बोले कि भृगुजीके शाप से अत्यन्त भयभीत प्रतापवान भगवान् अग्नि जब शमीगर्भ को पाकर अदृश्य हुये । १७ । तब इन्द्र समेत सब देवता अग्निके गुप्तहोनेपर अत्यन्त दुःखी हुये और उस गुप्त होनेवाले अग्नि को अन्वेषण किया । १८ । फिर अग्नि तीर्थ को पाकर शमीगर्भ में नियत होनेवाले अग्निको विधिपूर्वक पूजन करके अग्निको देखा । १९ । हे नरोत्तम इन्द्रसमेत वह सब देवता जिनके अग्रवर्ती बृहस्पतिजी थे उस अग्निको पाकर बहुत प्रसन्न हुये । २० । तदनन्तर अपने लोकों को गये

Brahmans, proceeded to the place consecrated to Agni, where the gods complained before Brahma of the disappearance of Agni and asked him to discover Agni to save the world from ruin.
15. Janmejaya said, " Pray tell me the cause of the disappearance of Agni and also how the gods discovered him ."
Vaishampayan said, " Afraid of the curse of Bhrigu, Agni disappeared and Indra and other gods were much distressed and made a search for him They came to Agni-tirtha and discovered him hidden in Shami. Indra and other gods led by Vrihaspati were much pleased to find out Agni They went back to their own places and again

ह । ससर्ज भगवान् यत्र सर्वलोकपितामह॥२२॥तत्राप्लुत्य ततो ब्रह्मा सह देवैः प्रभुः
पुरा । ससर्ज तीर्थानि तथा देवतानां यथाविधि ॥ २३ ॥ तत्र स्नात्वा च दत्त्वा च
वसूनि विविधानि च । कौवेरं प्रययौ तीर्थं यत्र तप्त्वा महत्तपः धनाधिपत्यं
संप्राप्तो राजन्नैलविलः प्रभुः । २५ ॥ तत्रस्थमेव तं राजन्धनानि निधयस्तथा ।
उपतस्थुर्नरश्रेष्ठ तत्तीर्थं लाङ्गली ततः ॥ २६ ॥ गत्वा स्नात्वा च विधि
वद्ब्राह्मणेभ्यो धनं ददौ । ददृशे तत्र तत्स्थानं कौवेरे काननोत्तमे । पुरा यत्र
तपस्तप्तं विपुलं सुमहात्मना । यक्षराज्ञा कुबेरेण वरा लब्धाश्च पुष्कलाः । २८ ॥ धना
धिपत्यं सख्यं च रुद्रेणामिततेजसा । सुरत्वं लोकपालत्वं पुत्रं च नलकूबरम् ॥ २९ ॥
यत्र लेभे महाबाहो धनाधिपतिरञ्जसा । अभिषिक्तश्च तत्रैव समागम्य मरुद्गणैः

हे राजा वह अग्नि भृगुजी के शापसे सर्वभक्षी हुये उस तीर्थ में भी ब्राह्मणोंके
के कहने से वह ज्ञानी बलदेवजी स्नान करके ब्रह्मयोनि नाम तीर्थको गये जहां
पर कि सब लोकों के पितामह प्रभु भगवान् ब्रह्माजी ने । २२ । संसारकी पूर्व
सृष्टिमें देवताओं समेत उस तीर्थ में स्नान करके ।२३। विधि के अनुसार देवताओं
के तीर्थोंको उत्पन्न किया । २४ । बलदेवजी वहांपर स्नानकर अनेक प्रकार के
धनोंका दानकरके कुबेर तीर्थको गये बड़े तपस्वी प्रभु कुबेरजीने वहां बड़ी तपस्या
करके धनोंकी ईश्वरता को पाया । २५ । हेराजा सब धन और रत्नोंकी खानें उस
तीर्थपर नियत होनेवाले कुबेरजीके पास आकर वर्तमान हुईं हे नरोत्तम हलधारी
बलदेवजीने उस तीर्थपर जाकर । २६ । विधिपूर्वक स्नान करके ब्राह्मणों के
अर्थ धनदिया वहां उन्होंने कुबेरजी के उत्तम वन में उस स्थान को भी देखा
जहांपर यक्षराट् महात्मा कुबेरजी ने बड़ी तपस्यों करके श्रेष्ठ वरों को प्राप्त किया
था । २८ । सब धनों की ईश्वरता बड़े तेजस्वी रुद्रजी के साथ मित्रता देवभाव
लोकपाल का अधिकार और नलकूबर नाम पुत्रको पाया । २९ । हे महा
बाहु वहांही कुबेरजी ने ऊपर लिखेहुये अभीष्टोंको पाकर उसी स्थान में मरुद्गणों

became all-devouring by the curse of Bhrigu. Baldev bathed there and then proceeded to Brahm-yoni where Brahma had bathed in former days and created a holy place for gods. Having bathed there and given donations, Baldev went to the holy place of Kuber where the latter had performed asceticism and become the lord of wealth 25. The mines of all wealth and jewels came there to Kuver. Baldev bathed at that holy place and gave donations to Brahmans. He saw there the holy place in the forest where Kuver had performed asceticism and got boons of becoming lord of wealth, friendship with Rudra, godhood, the post of a lokpal and a son named Nallkuwar. There Kuver got the above boons and was anointed by Marutas 30.

॥ ३० ॥ वाहनञ्चास्य तद्दत्तं हंससंयुक्तं मनोजवम् । विमानं पुष्पकं दिव्यं नैर्ऋतैश्वर्यमेव च ॥ ३१ ॥ तत्राप्लुत्य बलो राजन् दत्त्वा दायांश्च पुष्कलान् । जगाम त्वरितो राम स्तीर्थं श्वेतानुलेपनः ॥ ३२ ॥ निषेवितं सर्वसत्त्वैर्नाम्ना बदरपाचनम् । नानर्तुकफलोपेतं सदा पुष्पफलं शुभम् ॥ ३३ ॥

इति गदायुद्धपर्वणि बलदेवतीर्थयात्रायां सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

समेत अभिषेककोभी प्राप्तकिया ॥ ३० ॥ और उनको नैऋतनाम राक्षसोंका राज्य और वह दिव्य सवारी दीगई जो कि हंसों से सेवित मनके समान शीघ्रगामी पुष्पक विमान है ॥ ३१ ॥ बलदेवजी वहां स्नान करके उत्तमदानोंको देकर शीघ्रही श्वतश्वेतानुलेपन नाम तीर्थको गये ॥ ३२ ॥ जो कि सबप्रकार के जीवोंसे सेवित अत्यन्त शुभ और सदैव फलफूल रखनेवाला बदरपाचन नामहै ॥ ३३ ॥

He was made the ruler of rakshases and got a divine car drawn by swans swift like the mind. Baldev bathed there and having given donations, proceeded to Shwetanulepan-tirth which abounds in all sorts of beings as well as fruits and flowers and is known as Bidarpachan. 33.



वैशम्पायन उवाच । ततस्तीर्थवरं रामो ययौ बदरपाचनम् । तपस्विसिद्धचरितं यत्र कन्या धृतव्रता ॥ १ ॥ भारद्वाजस्य दुहिता रूपेणाप्रतिमा भुवि । श्रुतावती नाम विभो कुमारी ब्रह्मचारिणी ॥ २ ॥ तपश्चचार सात्युग्रं नियमैर्बहुभिर्वृता । भर्ता मे देवराजः स्यादिति निश्चित्य भामिनी ॥ ३ ॥ समास्तस्या व्यतिक्रान्ता बह्व्यः कुरुकुलोद्वह । चरन्त्या नियमांस्तांस्तान् स्त्रीभिस्तीव्रान् सुदुश्चरान् ॥ ४ ॥ तस्यास्तु तेन वृत्तेन तपसा च विशां पते । भक्त्या च भगवान् प्रीतः परया पाकशासनः ॥ ५ ॥ आजगामाश्रमं तस्यास्त्रिदशाधिपतिः प्रभुः । आस्थाय रूपं विप्रर्षेर्वसिष्ठस्य महात्मनः ॥ ६ ॥ सा तं दृष्ट्वोग्रतपसं वसिष्ठं तपतां वरम् । आचारैर्मुनिभिर्दृष्टैः पूजयामास भारत ॥ ७ ॥ उवाच नियमज्ञा च कल्याणी सा प्रियंवदा । भगवन्मुनिशार्दूल किमाज्ञापयसि प्रभो ॥ ८ ॥ सर्वमद्य यथाशक्ति तव दास्यामि सुव्रत । शक्रभक्त्या च ते पाणिं न दास्यामि कथंचन ॥ ९ ॥ व्रतैश्च नियमैश्चैव तपसा च तपोधन । शक्रस्तोषयितव्यो वै मया त्रिभु

अध्याय ४८ ॥

वैशम्पायन बोले कि इसके पीछे बलदेवजी तपस्वी और सिद्धलोगों से सेवित उस बदरपाचन नाम उत्तम तीर्थको गये जहांपर व्रतधारी ॥ १ ॥ भरद्वाज ऋषि की पुत्री रूप में पृथ्वीपर अनुपम कुमारी ब्रह्मचारिणी ॥ २ ॥ बहुत नियमवाली तेजस्विनी श्रुतावतीनाम कन्याने यह निश्चय करके कि देवराज इन्द्र मेरा पतिहोय महाउग्र तप किया ॥ ३ ॥ हे कौरवश्रेष्ठ स्त्रियों समेत उनतीव्र महादुःखसे करनेके योग्य नियमोंके करनेमें उसकन्याके सौवर्ष व्यतीतहुये ॥ ४ ॥ हेराजा भगवान इन्द्र उसके उस चलन भक्ति और तपसे प्रसन्नहुये ॥ ५ ॥ देवराज प्रभुइन्द्र महात्मा ब्रह्मर्षि वसिष्ठजीके रूपको धारण करके उसके आश्रम में आये ॥ ६ ॥ हेभरतवंशी उसनेउन उग्र तपस्वी तपस्वियों में श्रेष्ठ वसिष्ठजी को देखकर मुनियों से सीखेहुये आचारों से उनका पूजनकिया ॥ ७ ॥ और बड़ी नम्र मधुरवाणीसे वह नियम धर्मवाली कल्याणी यह वचनबोली हे प्रभु भगवान मुनियों में श्रेष्ठ आप क्या आज्ञाकरतेहो ॥ ८ ॥ हे सुन्दर व्रतवाले अब मैं इन्द्रके प्रभावसे सामर्थ्य के अनुसार जो आप चाहेंगे सो सब दूंगी परन्तु किसीदशा में भी तुमको अपना हाथ न दूंगी ॥ ९ ॥ हेतपोधन तीनों

CHAPTER XLVIII.

Vaishampayan said, Then Baldev went to Badarpachan, attended by ascetics and sidhas, where the daughter of Bharadwaj, a maiden of matchless beauty, named Shrutavati, had performed severe asceticism to make Indra her spouse. She remained engaged in asceticism for a hundred years. Indra was pleased with her tap, behaviour and devotion. 5. He came to her hermitage in the likeness of Vashishth and she respected him like a rishi. She said to him in a sweet voice, "By the favour of Indra I can give you every

भुवनेश्वरः ॥ १० ॥ इत्युक्तो भगवान् देवः स्मयन्निव निरीक्ष्य ताम् । उवाच नियमं ज्ञात्वा सान्त्वयन्निव भारत ॥ ११ ॥ उग्रं तपश्चरसि वै विदिता मेसि सुव्रते । यदर्थमयमारम्भस्तव कल्याणि हृद्गतः ॥ १२ ॥ तच्च सर्वं यथाभूतं भविष्यति वरानने तपसा लभ्यते सर्वं सर्वं तपसि तिष्ठति ॥ १३ ॥ यानि स्थानानि दिव्यानि विबुधानां शुभानने । तपसा तानि प्राप्याणि तपोमूलं महत् सुखम् ॥ १४ ॥ इह कृत्वा तपो घोरं देहं संन्यस्य मानवाः । देवत्वं यान्ति कल्याणि शृणु चेदं वचो मम ॥ १५ ॥ पञ्च चैतानि शुभगे बदराणि शुभव्रते । पचेत्युक्त्वा तु भगवान् जगाम बलसूदनः ॥ १६ ॥ आमन्त्र्य तां तु कल्याणीं ततो जप्यं जजाप सः । अविदूरे ततस्तस्मादाश्रमात्तीर्थमुत्तमम् । इन्द्रतीर्थे ति विख्यातं त्रिषु लोकेषु मानद ॥ १७ ॥ तस्य जिज्ञासनार्थं स भगवान् पाकशासनः ।

भुवनोंका ईश्वर इन्द्र व्रत नियम और तपस्या के द्वारा मुझसे प्रसन्न करने के योग्य है । १० । हेभरतवंशी इसप्रकार के वचन सुनकर भगवान् देवता मन्दमुसकान करताउसको देखकर और उसके नियमकोजानकर बड़े मधुरवाणीसे यहवचन बोला । ११ । हे सुन्दरव्रतवाली कल्याणिनी मुझको यह सब विदित है जिस प्रयोजन के निमित्त यह कर्मका प्रारम्भ तेरे चित्तमें वर्त्तमान हुआ है और उग्रतप को करती है । १२ । हेसुन्दरमुखी जैसा तेरे चित्त में विचारहुआ है वह सबहोना और जैसा तैंने विचार किया है वह तपस्या के ही द्वारा प्राप्तहोता है हेशुभमुखी जैसे कि देवताओं के दिव्य लोक हैं वह तपसे प्राप्त होनेके योग्य हैं बड़े सुखकामूल तप है । १४ । हेकल्याणिनी इसप्रकार मनुष्य घोर तपस्या करके अपने शरीरको त्याग कर देवभाव को पाते हैं अब तू मेरे वचन को सुन हेसुन्दरव्रत और ऐश्वर्यवाली तू इन पांच बदरीफलों को पकाओ भगवान इन्द्र इतना कहकर चलेगये । १६ । और उस ने भी उस कल्याणी से पूछकर वहां जपको जपा इस के पीछे उस आश्रम से थोड़ी दूरपर वह उत्तम तीर्थ तीनोंलोकों में इन्द्रतीर्थनाम से प्रसिद्धहुआ

thing you desire with the exception of my hand. I am pleasing Indra with my devotion. 10. Indra was pleased with her conduct and with a smile he said to her, "I know all that passes within thy heart and the purpose for which you are performing asceticism. The desire of your heart will be accomplished. Such things are obtainable through asceticism alone. The divine regions are obtainable through asceticism which is the root of all happiness. Through it people become gods when they leave their bodies. Give your mind to what I say and cook these five jujube fruits which I give you." Having said this, Indra went away. 16. He too, performed asceticism in the vicinity and the place was known as Indra-tirth. To test her steadiness he stopped

बदराणामपचन चकारविबुधाधिप. ॥ १८ ॥ ततः प्रयता सा राजन् वाग्यता विगतक्लमा । तत्परा शुचिसम्वीता पावके समधिश्रयत् ॥ १९ ॥ अपचद्राजशार्दूल बदराणि महाव्रता । तस्या पचन्त्या- सुमहान् कालोगात् पुरुषर्षभ। न च स्मतान्यपच्यंत दिनञ्च क्षयमभ्यगात् ॥ २१ ॥ हुताशनेन दग्धश्च यस्तस्या- काष्ठसञ्चय. । अकाष्ठमग्नि सा दृष्ट्वा स्वशरीरमथादहद् । २२। पादौ प्राक्षप्य सा पूर्वं पावके चारुदर्शना। दग्धौ दग्धौ पुनः पादावुपावर्त्तयतानघा ॥ २३ ॥ चरणौ दह्यमानौ च नाचिन्तयदनिन्दिता: । कुर्वाणा दुष्करं कर्म महर्षिप्रियकाम्यया ॥ २४ ॥ न वैमनस्यं तस्यास्तु मुखभेदोथवाभवत् । शरीरमाग्निनादीप्य जलमध्येव हर्षिता॥२५॥तच्चास्या वचन नित्यमवर्त्तत हृदि भारत । सर्वथा बदराण्येव पक्तव्यानीति कन्यका ॥२६॥ सा तन्मनसि कृत्वा तु महर्षेर्वचनं शुभा । अपचद्बदराण्येव न चापच्यन्त भारत ॥ २७ ॥ तस्यास्तु चरणौ

।१७। हे बड़ाई देनेवाले उस देवराज भगवान इन्द्रने उसकी परीक्षाकेलिये बदरफलों का परिपाकहोना बन्द करादिया १८ हेराजा तब वह बड़ीतपस्विनी वार्त्तालाप में चतुर थकावटसे रहित उसमेंही मग्न पवित्र शरीरवालीने अग्निमें लकड़ीरक्खी १९ हे राजाओं में श्रेष्ठ उसबड़े व्रतवाली ने उन बदरफलोंको पकाया । २० । और परिपक्व करतेहुये उस पकानेवालीका बहुत समय व्यतीतहुआ पर वह फल नहीं पके और दिन समाप्तहोगया । २१ । इसका जितना इंधनका ढेरथा वह सब अग्नि में भस्महोगया फिर उसने अग्निको इंधनसे खाली देखकर अपने शरीको भी भस्म करदिया । २२ । प्रथम अपने दोनों चरणोंको अग्निमें डालकर फिर उस निष्पाप ने जलतेहुये चरणोंको आगेआगे बढ़ाना प्रारम्भ किया महर्षिकी इच्छा से कठिन कर्म करनेवाली निर्दोषने जलतेहुये चरणों से कुछभी दुःख से चिन्ता नहीं की ।२४। पैरोंके जलने परभी उसके चित्तमें उदासीनता और रूपान्तरता नहींहुई शरीरको अग्निसे प्रज्वलित करके जलमें वर्त्तमान होनेके समान प्रसन्न थी । २५ । हे भरतवंशी उसका वह वचन वारम्वार हृदयमें वर्त्तमान हुआ कि सब दशा में बदरफल पकाने के योग्य हैं उस शुभकन्याने ।२६। महर्षिके उस वचनको चित्तमें नियत करके बदरफलों को पकाया परन्तु वह नहींपके । २७ । भगवान

the cooking of those fruits She continued to put one stick after another into fire to cook them. 20. Much time was lost but the fruits were not cooked till it was sunset. All her store of fuel was exhausted and then she began to burn her own body. She put her legs within fire and they burnt gradually, yet she was careless of the pangs. Her features did not alter under the trial and she was cheerful as if her body was within water. 25. She remembered Indra's words, to the effect that she should cook them under all conditions. She cooked them on but to no purpose Fire burnt her

वह्निर्ददाह भगवान् स्वयम् । न च तस्या मनो दुःखं स्वल्पमप्यभवत्तदा ॥ २८ ॥ अथ तत् कर्म दृष्ट्वाऽस्याः प्रीतस्त्रिभुवनेश्वरः । ततः सन्दर्शयामास कन्यायै रूपमात्मनः॥२९॥ उवाच च सुरश्रेष्ठस्तां कन्यां सुदृढव्रताम् । प्रीतोऽस्मि ते शुभे भक्त्या तपसा नियमेन च ॥३०॥ तस्माद्योऽभिमतः कामः स ते सम्पत्स्यते शुभे । देहं त्यक्त्वा महाभागे त्रिदिवे मयि वत्स्यसि ॥ ३१ ॥ इदञ्च ते तीर्थवरं स्थिरं लोके भविष्यति । सर्वपापापहं सुभ्रु नाम्ना बदरपाचनम् । विख्यातं त्रिषु लोकेषु ब्रह्मर्षिभिरभिष्टुतम् ॥ ३२॥ अस्मिन् खलु महाभागे शुभे तीर्थवरेऽनघे । त्यक्त्वा सप्तर्षयो जग्मुर्हिमवन्तमरुन्धतीम् ॥ ३३ ॥ ततस्ते वै महाभागा गत्वा तत्र सुसंशिताः । वृत्त्यर्थं फलमूलानि समाहर्तुं ययुः किल ॥ ३४ ॥ तेषां वृत्त्यर्थिनां तत्र वसतां हिमवद्वने । अनावृष्टिरनुप्राप्ता तदा द्वादशवार्षिकी ॥ ३५ ॥ ते कृत्वा चाश्रमं तत्र न्यवसन्त तपस्विनः । अरुन्धत्यपि कल्याणी तपोनित्याऽभवत्तदा ॥ ३६ ॥ अरुन्धतीं ततो दृष्ट्वा तीव्रं नियममास्थिताम् । अथागमत्त्रिनयनः

अग्निने आप उसके पाओंको जलाया तबभी उसके चित्तमें किसी प्रकारसे दुःख का लवलेश नहींहुआ । २८ । इसके पीछे तीनों भुवनका ईश्वर इन्द्र उसके कर्मको देखकर प्रसन्नहुआ और अपना मुख्यरूप कन्याको दिखलाया ।२९। और दृढ़व्रत वाली कन्यासे बोले कि हे शुभे मैं तेरे नियम भक्ति और तपस्या से प्रसन्न हूं । ३० । हे शुभदर्शन अब तेरा अभीष्ट सिद्धहोगा हे महाभाग तू इस शरीर को त्यागकरके स्वर्ग में मेरेसाथ सुखपूर्वक निवासकरेगी । ३१ । हे सुन्दर भृकुटीवाली यह तेरा बदरपाचननाम उत्तम तीर्थ सबपापोंका दूरकरनेवाला लोकमें विख्यात होकर नियतहोगा जो कि तीनोंलोकों में विख्यात और ब्रह्मर्षियों से स्तूयमान है । ३२ । हे महाभाग निष्पाप निश्चय करके इस शुभ और उत्तम तीर्थपर सप्तर्षि अरुन्धतीको त्यागकरके हिमालय पर्व्वतपरगये।३३।इसके पीछे वहबड़े महाभाग तेजव्रतधारी वहां जाकर आजीविका के निमित्त उत्तम फलमूलों के लेनेको वहां ठहरे ।३४। तब उसहिमालयके वनमें उनजीविकाके अभिलाषी ऋषियों के निवास करनेपर बारहवर्षका दुर्भिक्ष वर्तमानहुआ । ३५ । तब वह सातोंतपस्वी वहां आश्रम को बनाकर ठहरे उस समय वह कल्याणिनी अरुन्धती भी सदैव

---

feet but she did not give up her object. Indra was pleased with her devotion and showed himself in his true form, saying, "I am well pleased with thy devotion. 30. Thy desire will be accomplished. After leaving your body you will live happily with me in heaven. This holy place will be respected by all the world as Badarpachan. Here the seven rishis left Arundhati and went up the Himalayas, to perform asceticism and lived there, eating fruits. While they were living there, a twelve years severe famine took place. 35. The seven ascetics continued to live there in a hermitage, while Arundhati was

सुप्रीतो वरदस्तदा ॥ ३७ ॥ ब्राह्मं रूपं ततः कृत्वा महादेवो महायशाः । तामभ्येत्याब्रवीद्देवो भिक्षामिच्छाम्यहं शुभे ॥ ३८ ॥ प्रत्युवाच ततः सा तं ब्राह्मणं चारुदर्शना । क्षीणोऽन्नसञ्चयो विप्र बदराणीह भक्षय ॥ ३९ ॥ ततोऽब्रवीन्महादेवः पचस्वैतानि सुव्रते । इत्युक्ता सापचत्तानि ब्राह्मणप्रियकाम्यया ॥ ४० ॥ अधिश्रित्य समिद्धेऽग्नौ बदराणि यशस्विनी । दिव्या मनोरमाः पुण्याः कथाः शुश्राव सा तदा । अतीता सा त्वनावृष्टिर्घोरा द्वादशवार्षिकी ॥ ४२ ॥ अनश्नन्त्याः पचन्त्याश्च शृण्वन्त्याश्च कथाः शुभाः । दिनोपमः स तस्याथ कालोऽतीतः सुदारुणः ॥ ४३ ॥ ततस्ते मुनयः प्राप्ताः फलान्यादाय पर्वतात् । ततः स भगवान् प्रीतः प्रोवाचारुन्धतीं तदा ॥ ४४ ॥ उपसर्पस्व धर्मज्ञे यथा

तपस्याके करने में प्रवृत्तहुई । ३६ । फिर अरुन्धती को तीव्र नियम में नियतदेख कर अत्यन्त प्रसन्नमूर्ति सबवरों के देनेवाले शिवजी महाराज आपहुंचे । ३७ । अर्थात् बड़े यशवान् देवता महादेवजी ब्राह्मणका रूप धारण करके उसके पृष्ठ भाग में जाकर बोले कि कि हे शुभकी मैं भिक्षा को चाहताहूं ।३८। तबउससुन्दर दर्शनने उस ब्राह्मणको उत्तरदिया कि हे वेदपाठी अनाजकाढेर नाशहुआ यहां आप बदरफलों को भक्षणकरो । ३९ । यहबात सुनकर महादेवजी ने कहा कि हे सुन्दरव्रत तुम इनबदरफलों को पकाओ इस प्रकार शिवजी के वचन को सुन कर उस यशस्विनी ने ब्राह्मण के हितके लिये उन बदरफलों को प्रकाशित अग्नि पर चढ़ाकर पकाया और चित्तरोचक धर्मकी वृद्धि के हेतुरूप दिव्य कथाओं को भी सुनाया उतने अन्तर में वह बारहवर्ष का दुर्भिक्ष समाप्त हुआ ।४२। उस भोजन न करनेवाली और शुभकथा सुनानेवाली अरुन्धती का वह बड़ा भयानक समय एक दिनके समान व्यतीत हुआ । ४३ । इस के पीछे मुनिलोग पर्वतसे फलोंको लेकर आगये इसहेतुसे वह प्रसन्नचित्त भगवान् शिवजी अरुन्धती से बोले । ४४ । कि हे धर्मकी जाननेवाली मैं तेरे धर्मरूपी तप और नियम से प्रसन्नहूं अब तुम प्रथमके समान इन ऋषियोंके पासजाओ । ४५ । तदनन्तर

engaged in performing asceticism. Shiv was pleased with her devotion and himself came to her in the form of a Brahman. He came to her from behind her back and begged alms. 38. The beautiful woman said to him, "Our store of grain is exhausted, you may take plums to eat." At this Mahadev asked her to cook them and she put them on fire. While the plums were thus being cooked, she entertained the guest with religious stories till the twelve years famine had disappeared. 42. She passed the dreadfully long time like a day. Then the munis came down from the hills with fruits and Shiv, much pleased, said to Arundhati, "I am well pleased with thy asceticism." He mentioned the deed to the rishis, saying, "Your

पूर्वमिमानुवाच । प्रीतोऽस्मि तव धर्मज्ञे तपसा नियमेन च ॥ ४५ ॥ ततः सन्दर्शयामास स्वं रूपं भगवान् हरः । प्रोवाच सप्तर्षींस्तत्र तेऽरुन्धत्याश्च चरितं महत् ॥ ४६ ॥ भवद्भिर्हि गिरिपृष्ठे तु यत् समुपार्जितम् । अस्याश्च यत्तपो विप्रा न समं तन्मतं मम ॥ ४७ ॥ अनया हि तपस्विन्या तपस्तप्तं सुदुश्चरम् । अनश्नन्त्या पचन्त्याश्च च समा द्वादश पारिताः ॥ ४८ ॥ ततः प्रोवाच भगवांस्तामेवारुन्धतीं पुनः । वरं वृणीष्व कल्याणि यत्तेऽभिलषितं हृदि ॥ ४९ ॥ साब्रवीत् पृथुताम्राक्षी देवं सप्तर्षिसंसदि । भगवान् यदि मे प्रीतस्तीर्थं स्यादिदमुत्तमम् ॥ ५० ॥ सिद्धदेवर्षिदयितं नाम्ना बदरपाचनम् । तथा ह्यस्मिन् देवदेवेश त्रिरात्रमुषितः शुचिः । प्राप्नुयादुपवासेन फलं द्वादशवार्षिकम् ॥ ५१ ॥ एवमस्त्विति तां देवः प्रत्युवाच तपस्विनीम् । सप्तर्षिभिः स्तुतो देवस्ततो नाकं यथौ तदा ॥ ५२ ॥ ऋषयो विस्मयं जग्मुस्तां दृष्ट्वा चाप्यरुन्धतीम् । अश्रान्तां चाविवर्णां च क्षुत्पिपासासहां सतीम् ॥ ५३ ॥ एवं सिद्धिः परा प्राप्ता अरुन्धत्या विशुद्धया । यथा

भगवान् हरने अपने रूपका अच्छे प्रकारसे दर्शन दिया और उसके बड़े कर्मको ऋषियोंके आगे वर्णन किया ।४६। कि आपलोगों ने हिमवान पर्वत पर जो तप प्राप्तकिया और इसकाभी जो तपहै हे ब्राह्मणो वह तुम्हारा तप इसके तपकी समान मेरी बुद्धि से नहीं है । ४७ । इस तपस्विनी ने बड़ी कठिनतासे करनेके योग्य तपको तपाहै इस भोजन न करनेवाली और बदर पकानेवाली ने बारहवर्ष व्यतीत किये । ४८ । इसके पीछे शिवजी अरुन्धती से फिर बोले कि हे कल्याणिनि जो तेरे हृदय में इच्छाहोय उसवरको मांगो । ४९ । तब वह रक्त और दीर्घ नेत्र रखनेवाली अरुन्धती सप्तर्षियों की सभा में देवता शिवजी से बोली कि हे भग वान् जो आप मुझपर प्रसन्नहैं तो यह तीर्थ अपूर्व होजाय । ५० । अर्थात् सिद्ध देवर्षियोंका प्यारा बदरपाचन नामसे विख्यात होय हे देवेश इस प्रकार से इस तीर्थपर तीनरात्रि निवास करनेवाला पवित्र मनुष्य व्रतके द्वारा बारह वर्षके व्रतके फल को पावे । ५१ । तब देवता ने उस तपस्विनी अरुन्धतीसे कहा कि ऐसाही होय तदनन्तर सप्तर्षियों से स्तूयमान होकर देवता शिवजी स्वर्ग को गये । ५२ । ऋषियों ने भी उस अरुन्धती को देखकर बड़े आश्चर्य को पाया जो कि थकावट से रहित विपरीत रूप और क्षुधा पिपासासे युक्तथी । ५३ । इसरीति से, उस

asceticism on the back of the Himalayas was not equal to that of this woman. 47. She has performed a severe asceticism and passed twelve years in cooking the plums." Then turning again to Arundhati, Shiv said, "Ask any boon you desire." Then she of large and red eyes asked Shiv in the midst of the seven rishis, "If you are kind to me, let this holy place become, matchless. Let this place be known as Badarpachan the favourite resort of sidhas and sages and one residing here three nights, get the merit of observing a twelve years vow."

त्वया महाभागे मदर्थं शंसितव्रते ॥ ५५ ॥ विशेषो हि त्वया भद्रे व्रते ह्यस्मिन् समर्पि-
तः । तथा चेदं ददाम्यद्य नियमेन सुतोषितः ॥ ५६ ॥ अरुन्धत्या वरस्तस्या यो दत्तो
वै महात्मना । तस्य चाहं प्रभावेन तव कल्याणि तेजसा । प्रवक्ष्याम्यपरं भूयो वरमत्र
यथाविधि ॥ ५७ ॥ यस्त्वेकां रजनीं तीर्थे वत्स्यते सुसमाहितः । स स्नात्वा प्राप्स्यते
लोकान् देहन्यासात् सुदुर्लभान् ॥ ५८ ॥ इत्युक्त्वा भगवान् देवः सहस्राक्षः प्रताप-
वान् । स्रुवावतीं ततः पुण्यां जगाम त्रिदिवं पुनः ॥ ५९ ॥ गते वज्रधरे राजंस्तत्र वर्षं
पपात ह । पुष्पाणां भरतश्रेष्ठ दिव्यानां पुण्यगन्धिनाम् ॥ ६० ॥ देवदुन्दुभयश्चापि
नेदुस्तत्र महास्वनाः । मारुतश्च ववौ पुण्यः पुण्यगन्धो विशाम्पते ॥ ६१ ॥ उत्सृज्य तु
शुभा देहं जगामेन्द्रस्य भार्यताम् । तपसोग्रेण तं लब्ध्वा तेन रेमे सहाच्युत ॥ ६२ ॥
जनमेजय उवाच । का तस्या भगवन्माता क्व संवृद्धा च शोभना । श्रोतुमिच्छाम्यहं

अत्यन्त पवित्र अरुन्धती ने बड़ी सिद्धिको पाया है स्तुतिमान व्रतयुक्त महाभाग कल्याणिनि जिस प्रकारसे कि तुमने मेरे निमित्त इसव्रत में अधिकताकरी । ५५ । हे श्रेष्ठ कल्याणिनि इसप्रकारके तेरे नियमसे अत्यन्त प्रसन्न होकर मैं यह पुरुष वर तुझको देताहूं ५६ । महात्मा शिवजी ने जो वर उस अरुन्धती को दिया है कल्याणिनि मैं उसके प्रभाव और तेरे तेजसे यहां विधिपूर्वक श्रेष्ठ वरको फिर कहताहूं । ५७ । अर्थात् जो अत्यन्त सावधान मनुष्य एकरात्रि इसतीर्थ में निवास करेगा वह स्नानके फलसे अपने शरीरको त्यागकर बड़े दुष्प्राप्य लोकों को पावेगा । ५८ । प्रतापवान भगवान इन्द्रदेवता श्रुतावती को यह वचन कहकर अपने पवित्र स्वर्गको गये । ५९ । हे भरतर्षभ राजा जनमेजय वज्रधारी इन्द्रके जाने पर उस स्थान में पवित्र सुगंधित दिव्य पुष्पोंकी वर्षाहुई । ६० । और बड़े शब्दों से देवताओंने दुन्दुभी बजाई और पवित्र सुगन्धवाली शीतल मन्दवायु चली । ६१ । और उस शुभवतीने इन्द्रकी स्त्रीभावको पाया है अजेय बड़ी उग्रतपके द्वारा उसको पाकर उसकेसाथ क्रीड़ा करनेवाली हुई । ६२ । जनमेजय बोला हे भगवन् उसकी

Shiv granted her the boon and being praised by the seven rishis went to heaven.' The rishis were astonished at the conduct of Arundhati who was afflicted with hunger and thirst. Thus Arundhati got a great perfection and observed a vow like you. 55. Being pleased with thy asceticism I give you again the boon which Shiv had granted before, " He who will stay here for one night, will gain regions difficult to attain by others. " Having said this to Shrutvati, Indra went to heaven At the departure of Indra a fragrant breeze blew, the gods beat celestial drums and the air was cold and fragrant. 61. The woman become Indra's wife and lived happily with him " Janamejaya said, " I wish to know the name of her mother and by whom

विप्र परं कौतूहलं हि मे ॥ ६३ ॥ वैशम्पायन उवाच । भरद्वाजस्य विप्रर्षे स्कन्नं रेतो महात्मनः । दृष्ट्वाप्सरसमायान्तीं घृताचीं पृथुलोचनाम् ॥ ६४॥ स तु जग्राह तद्रेतः करेण जपतांवर । तदापतत् पर्णपुटे तत्र सा त्वभवत् सुता ॥ ६५ ॥ तस्यास्तु जातकर्मादि कृत्वा सर्वं तपोधन । नाम चास्याः स कृतवान् भरद्वाजो महामुनिः ॥ ६६ ॥ श्रुतावतीति धर्मात्मा देवर्षिगणसंसदि । स्वे च तामाश्रमे न्यस्य जगाम हिमवद्वनम् ॥ ६७ ॥ तत्राप्युपस्पृश्य महानुभावो वसूनि दत्त्वा च महाद्विजेभ्यः । जगाम तीर्थं सुसमाहितात्मा शक्रस्य वृष्णिप्रवरस्तदानीम् ॥ ६८ ॥

इतिगदायुद्धपर्वणि बलदेवतीर्थयात्रायां सारस्वतोपाख्याने अष्टचत्वारिंशोध्यायः ४८ ।

की माता कौनथी और उसने कहां पोषणपाया है द्विजवर्य्य मुझको सुनने का बड़ा उत्साह है इस लिये उसको आप वर्णन कीजिये । ६३ । वैशम्पायन बोले कि बड़े दिव्यनेत्रवाली एकसमय आतीहुई घृताची अप्सराको देखकर महात्मा ब्रह्मर्षि भारद्वाजजी का वीर्य पतन हुआ । ६४ । और उसजापकों में बड़े श्रेष्ठने अपने गिरेहुये वीर्यको हाथमेंलिया तब एक दोनो में गिरपड़ा उस में वह कन्या उत्पन्नहुई ।६५। उस महामुनि तपोधन भारद्वाज मुनि ने जातकर्मादिक सब क्रियाओं को कर के उसका नामकरणकिया । ६६ । धर्मात्माने देवर्षियों के समूहों की सभामें श्रुतावती उसका नाम रक्खा उसको अपने आश्रम में छोड़कर हिमालय के बनको गये । ६७ । तब वह महानुभाव बल्देवजी वहां भी स्नान आचमन करके बहुतसे उत्तम ब्राह्मणों को धनोंका दान देकर चित्त से बड़े सावधान होकर इन्द्रके पासगये।६८।

she was brought up.' Vaishampayan said, "At the sight of beautiful Ghritachi the apsara, the semen of Brahmrishi Bharadwaj fell down He took it up and kept it in a vessel made of leaves where the girl was born. The muni performed her ceremonies of birth and naming He named her Shrutavati and went to the Himalayas to perform asceticism, leaving the girl in the hermitage. Baldev bathed at the place and sipped of its water He gave there large donations and then went to Indra tirth " 68.

वैशम्पायन उवाच । इन्द्रतीर्थं ततो गत्वा यदूनां प्रवरो बली । विप्रेभ्यो धनरत्नानि ददौ स्नात्वा यथाविधि ॥ १ ॥ तत्र ह्यमरराजोऽसावीजे क्रतुशतेन च । बृहस्पतेश्च देवेशः प्रददौ विपुलं धनम् ॥ २ ॥ निरर्गलान् सजारूथ्यान् सर्वान् विविधदक्षिणान् । आजहार क्रतूंस्तत्र यथोक्तान् वेदपारगैः ॥ ३ ॥ तान् क्रतून् भरतश्रेष्ठ शतकृत्वो महाद्युतिः । पूरयामास विधिवत्ततः ख्यातः शतक्रतुः ॥ ४ ॥ तस्य नाम्ना च तत्तीर्थं शिवं पुण्यं सनातनम् । इन्द्रतीर्थमिति ख्यातं सर्वपापप्रमोचनम् ॥ ५ ॥ उपस्पृश्य च तत्रापि विधिवन्मुसलायुधः । ब्राह्मणान् पूजयित्वा च सदाच्छादनभोजनैः । शुभं तीर्थवरं तस्माद्रामतीर्थं जगाम ह ॥ ६ ॥ यत्र रामो महाभागो भार्गवः सुमहातपाः । असकृत् पृथिवीं जित्वा हतक्षत्रियपुङ्गवाम् ॥ ७ ॥ उपाध्यायं पुरस्कृत्य कश्यपं मुनिसत्तमम् । अयजद्वाजपेयेन सोऽश्वमेधशतेन च । प्रददौ दक्षिणार्थं च पृथिवीं वै ससागराम् ॥ ८ ॥

अध्याय ४९ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि इस के पीछे यादवों में अत्यन्त श्रेष्ठ बलदेवजी ने इन्द्रतीर्थमें जाके उस में विधिपूर्वक स्नानकरके ब्राह्मणों निमित्त धन रत्नादिकका दानकिया । १ । वहां पर उस देवेन्द्रने सौ यज्ञ से पूजन किया था । तब उस ने बृहस्पतिजी को बहुतसा धनदिया था । २ । अर्थात् वहां इन्द्रने अर्गला रहित कपाटों के रखनेवाले नानाप्रकार के धन और दक्षिणा रखनेवाले यज्ञों की वैसी ही तैयारी करी जैसी कि वेदों के पूर्णज्ञाता ऋषियों ने कहीथी । ३ । हेभरतर्षभ बड़े तेजस्वी इन्द्रने उन यज्ञों को सौवार विधिपूर्वक पूर्ण किया इसीहेतुसे उसका नाम शतक्रतु प्रसिद्ध हुआ । ४ । उस के नाम से वह तीर्थ जो कि कल्याणरूप धर्मकी वृद्धिका हेतु सब पापोंसे छुटानेवाला और प्राचीन है इन्द्रतीर्थ नाम से विख्यातहुआ । ५ । मुशलधारी बलदेवजी वहांभी विधिपूर्वक स्नान आचमन करके उत्तम भोजन वस्त्रादि से ब्राह्मणोंको पूजकर ।६। वहांसे उस रामतीर्थको गये जो कि तीर्थोंमें उत्तम और शुभहै और जहांपर महाभाग भार्गवपरशुरामजीने बारम्बार

CHAPTER XLIX

Vaishampayan said, " Then Baldev the best of Yadavas went to the holy place of Indra and having bathed there, gave donations to *Brahmans*. There Indra had performed a hundred sacrifices and given great wealth to Vrihashati. His sacrifices were performed in accordance with the dictates of the rishis who know the Vedas. He performed a hundred sacrifices and was therefore known as Shata-kritu. The holy p'ace where he performed those sacrifices was known as Indra-tirth. 5. Baldev bathed and Sipped water there and having given food and raiments to Brahmans, proceeded to Ram-tirth, the best of holy places where Parashuram performed a hundred Ashwamedhs and gave the whole land, which he had conquered

दत्त्वा च दानं विविधं नानारत्नसमन्वितम् । सगोहस्तिकदासीकं साजाविगतधान्यकम् ॥ १० ॥ पुण्ये तीर्थवरे तत्र देवब्रह्मर्षिसेविते । मुनीश्चैवाभिवाद्याथ यमुनातीर्थमागमत् । ११ ॥ यत्रानयामास तदा राजसूयं महीपते । पुत्रोदितेर्महाभागो वरुणो वै सितप्रभः ॥ १२ ॥ तत्र निर्जित्य संग्रामे मानुषान् देवतास्तथा । गन्धर्वान् राक्षसांश्चैव वरुणः पृथिवीपते ॥ १३ ॥ वरं क्रतुं समाजह्रे वरुणः परवीरहा । तस्मिन्क्रतुवरे वृत्ते संग्रामः समजायत । देवानां दानवानाञ्च त्रैलोक्यस्य भयावहः ॥ १४ ॥ राजसूये क्रतुश्रेष्ठे निवृत्ते जनमेजय । जायते सुमहाघोरः संग्रामः क्षत्रियान् प्रति ॥ १५ ॥ तत्रापि लाङ्गली देव ऋषीनभ्यर्च्य पूजया । इतरेभ्योऽप्यदाद्दानमर्थिभ्यः कामदो विभुः ॥ १६ ॥ वनमाली ततो हृष्टः स्तूयमानो महर्षिभिः । तस्मादादित्यतीर्थं च जगाम कमलेक्षणः ॥ १७ ॥ यत्रेष्ट्वा भगवान् ज्योतिर्भास्करो राजसत्तम । ज्योतिषामाधिपत्यञ्च

उस पृथ्वीको जिसमें, कि उत्तम २ क्षत्री मारेगये विजय करके ।८। मुनियों में श्रेष्ठ उपाध्याय कश्यपजीको आगेकरके सौ अश्वमेधों से पूजनकिया और समुद्रोंसमेत सब पृथ्वी को दक्षिणा में दिया । ९ । नानाप्रकारके रत्न गौ हाथी - घोड़े, दास दासी और भेड़ बकरियों से युक्त बहुत प्रकारके दानोंको देकर वनकोगये । १० । वहां पवित्र और श्रेष्ठ देवर्षियोंके गणोंसे सेवित तीर्थपर मुनियोंको दण्डवत करके यमुना तीर्थपर गये । ११ । हे राजा जहां पर आदिति के पुत्र महाभाग श्वेतवर्ण वरुणने, राजसूययज्ञको प्राप्त किया । १२ । वहां शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले वरुणने राजसूय यज्ञको प्राप्त । १२ । वहां शत्रुओं के वीरों के मारनेवाले वरुणने युद्धमें नरलोकवासी जीव और देवताओं को भी विजय करके उत्तम यज्ञकी तैयारी की । १३ । उस उत्तम यज्ञके जारी होनेपर देवता और दानवों का वह युद्धजारी हुआ जो कि तीनोंलोकके भयको उत्पन्न करनेवाला था । १४ । हे जनमेजय यज्ञों में श्रेष्ठ राजसूय के समाप्त होनेपर, क्षत्रियों में बड़ा घोरयुद्ध जारीहुआ वहां भी अभी वस्तुओं के देने में समर्थ बलदेवजी महर्षियों से स्तुतिमान होकर वहां

after slaying the kshatryas, to Kashyap and other Brahmans. With it he gave away jewels, cows, elephants, horses, slaves, sheep, goats and other things and then went to forest 10 Having bowed down to the munis of the place he proceeded to Yamuna-tirth where Aditi's son Varun had performed a Rajsuya sacrifice after conquering human beings and gods. At the commencement of that sacrifice there ensued a war between the gods and Danavas which was the terror of the three worlds. At the end of that sacrifice there was a dreadful war of kshatryas. Badev gave donations there and being praised by great rishis proceeded to Aditya-tirth where Surya had performed asceticism and become the chief of luminous bodies. Indra and other gods, [illegible] as, Marutas, gandharvas, apsaras Vyas, Shukdev,

प्रभावश्चाप्यपद्यत ॥ १८ ॥ तस्या नद्यास्तु तीरे वै सर्वे देवाः सवासवाः । विश्वेदेवाः समरुतो गन्धर्वाप्सरसश्च ह ॥ १९ ॥ द्वैपायनः शुकश्चैव कृष्णश्च मधुसूदनः । यक्षाश्च राक्षसाश्चैव पिशाचाश्च विशाम्पते ॥ २० ॥ एते चान्ये च बहवो योगसिद्धाः सहस्रशः । तस्मिंस्तीर्थे सरस्वत्याः शिवे पुण्ये परन्तप ॥ २१ ॥ तत्र हत्वा पुरा विष्णुरसुरौ मधुकैटभौ । आप्लुत्य भरतश्रेष्ठ तीर्थप्रवर उत्तमे ॥ २२ ॥ द्वैपायनश्च धर्मात्मा तत्रैवाप्लुत्य भारत । सम्प्राप्य परमं योगं सिद्धिञ्च परमां गतः ॥ २३ ॥ असितो देवलश्चैव तस्मिन्नेव महातपाः । परमं योगमास्थाय ऋषिर्योगमवाप्तवान् ॥ २४ ॥

इतिगदायुद्धपर्वणि बलदेवतीर्थयात्रायां सारस्वतोपाख्याने एकोनपञ्चाशोऽध्याय ४९ ।

से उस आदित्य तीर्थको गये । १७ । हे राजर्षभ जहांपर ज्योतिरूप भगवान् सूर्य ने पूजन करके प्रकाशित पदार्थों के राज्य और भावको पाया । १८ । हे शत्रुसंतापी राजा जनमेजय उस नदी के तटपर इन्द्रादिक सब देवता विश्वे देवा मरुद्गण गन्धर्व अप्सरा । १९ । व्यासजी, शुकदेवजी, मधुदैत्यसंहारी श्रीकृष्ण जी यक्ष राक्षस और पिशाचभी निवासी हुये । २० । यह और अन्य पवित्र तीर्थ सरस्वती के उस कल्याणरूप पवित्र तीर्थपर योग सिद्ध हुये । २१ । हे भरतर्षभ पूर्व समयमें विष्णुजीने मधुकैटभनाम दैत्यको मारकर उस अत्यन्त पवित्र तीर्थ में स्नान करके । २२ । और व्यासजी ने भी वहीं स्नान करके परम योगको पाकर सिद्धी को पाया । २३ । बड़े तपस्वी असित और देवलने भी उस तीर्थपर परम योगमें नियत होकर ऋषि योगको पाया २४ ॥

Shri *Krishn* the destroyer of Madhu, yakshes, rakshases and pishaches had lived 20. There had been thousands of holy ascetics at the bank of the Saraswati. In the days of yore Vishnu slew Madhu-kaitabh and then bathed in the holy waters of the Saraswati. Vyas too, bathed there and got perfection. Asit and Deval, the two great ascetics, bathed there and accomplished asceticism." 24.

वैशम्पायन उवाच । तस्मिन्नेव तु धर्मात्मा वसति स्म तपोधनः । गार्हस्थ्यं धर्ममास्थाय असितो देवलः पुरा ॥ १ ॥ धर्मनित्यः शुचिर्दान्तो न्यस्तदण्डो महातपाः । कर्मणा मनसा वाचा समः सर्वेषु जन्तुषु ॥ २ ॥ अक्रोधनो महाराज तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः । प्रियाप्रिये तुल्यवृत्तिर्यमवत् समदर्शनः । काञ्चने लोष्टभावे च समदर्शी महातपा । देवानपूजयन्नित्यमतिथींश्च द्विजैः सह ब्रह्मचर्यरतो नित्यं सदा धर्मपरायण । ४ ॥ ततोऽभ्येत्य महाराज योगमास्थाय भिक्षुकः । जैगीषव्यो मुनिर्धीमांस्तस्मिंस्तीर्थे समाहितः ॥५॥ देवलस्याश्रमे राजन् न्यवसत् स महाद्युतिः । योगनित्यो महाराज सिद्धिं प्राप्तो महातपा ॥ ६ ॥ तं तत्र वसमानन्तु जैगीषव्यं महामुनिम् । देवलो दर्शयन्नेव नैवायुञ्जत धर्मतः ॥७॥ एवं तयोर्महाराज दीर्घकालो व्यगात् पुरा । जैगीषव्यं मुनिवरं न ददर्शाथ देवलः । ८ ॥ आहारकाले मतिमान् परिव्राड् जनमेजय । उपाति

अध्याय ५० ॥

वैशम्पायनबोले कि पूर्वसमयमें असित और देवल ऋषि जो कि धर्मात्मा और तपरूप धनरखनेवाले गृहस्थ धर्म में नियतहोकर उसी तीर्थपर निवास करनेवाले हुये ।१। यह दोनों ऋषि सदैवधर्मकरनेवाले पवित्र जितेंद्री दण्डके त्यागी महातपस्वी मन वाणी और शरीरसे सबजीवों में समान रहे । २ । क्रोधरहित निन्दास्तुति कोसमान जाननेवाले प्रिय अप्रियमें समान बुद्धिवाले यमराजके समान समदर्शी।३। सुवर्ण लोहको सदृश जानने और देखनेवाले महातपस्वी और देवताओं समेत ब्राह्मण और अतिथियोंको सदैव पूजने ब्रह्मचर्य्य में प्रवृत्त और सदैव धर्म कोही श्रेष्ठ माननेवालेथे ।४। हे राजा इसकेपीछे महाभाग बुद्धिमान सावधान महा तेजस्वी जैगीषव्यनाम मुनि संन्यासी उसतीर्थपर आके योगमें नियतहोकर देवल के आश्रममें बसे हे महाराज वह महातपस्वी सदैव योगमें नियत और सिद्ध था । ६ । देवलने वहां निवास करनेवाले उस महामुनि जैगीषव्यको देखतेही अति-थिधर्म्म से युक्त किया हे महाराज इसीरीति से उन दोनों का बहुतसा समय व्यतीतहुआ देवल ने मुनियों में श्रेष्ठ जैगीषव्य को नहीं देखा । ८ । हे जनमेजय

CHAPTER L

Vaishampayan said, " Asit and Deval, virtuous rishis kept house there. They had control over their organs, were great ascetics and looked equally at all beings in mind, speech and body. Free from anger, they were indifferent to praise and dispraise, friend and foe, and were just like Yamraj. They regarded gold like dross and worshipped guests like gods, observing vow of celibacy and regarding dharma to be the best of all things. Some time after, Jaigishavya, a sanyasi muni, came and settled there to perform asceticism. He was a great ascetic entirely given up to yog. 5 Deval worshipped him as a guest for a long time. Deval did not see him except at the time

...न धर्मज्ञो भैक्ष्यकाले स देवलम् ॥ ९ ॥ स दृष्ट्वा भिक्षुरूपेण प्राप्तं तत्र महामुनिम् ।
गौरवं परमं चक्रे प्रीतिं च विपुलां तथा ॥ १० ॥ देवलस्तु यथाशक्ति पूजयामास भारत
ऋषिदृष्टेन विधिना समा बह्वीः समाहितः ॥ ११ ॥ कदाचित्तस्य नृपते देवलस्य महा
त्मनः । चिन्ता सुमहती जाता मुनिं दृष्ट्वा महाद्युतिम् ॥ १२ ॥ समास्तु समतिक्रान्ता
बह्वीः पूजयतो मम । न चायमलसो भिक्षुरभ्यभाषत किञ्चन ॥ १३ ॥ एवं विगण
यन्नेव स जगाम महोदधिम् । अन्तरीक्षचरः श्रीमान् कलशं गृह्य देवलः ॥ १४ ॥
गच्छन्नेव स धर्मात्मा समुद्रं सरितांपतिम् । जैगीषव्यं ततोऽपश्यद्गतं प्रागेव भारत
॥ १५ ॥ ततः स विस्मयश्चिन्तां जगामाथासितः प्रभुः । कथं भिक्षुरयं प्राप्तः समुद्रे
स्नात एव च ॥ १६ ॥ इत्येवं चिन्तयामास महर्षिरसितस्तदा । स्नात्वा समुद्रे विधिवत्
शुचिर्जप्यं जजाप ह ॥ १७ ॥ कृतजप्याह्निकः श्रीमानाश्रमं च जगाम ह । कलशं
जलपूर्णं वै गृहीत्वा जनमेजय ॥ १८ ॥ ततः स प्रविशन्नेव स्वमाश्रमपदं मुनिः ।

तब वह बुद्धिमान धर्मज्ञ संन्यासी आहार और भिक्षा के समयपर देवल के पासआकर निकटहुआ । ९ । तब देवलऋषिने उस भिक्षुकरूपसे आनेवाले महामुनि को देखकर बड़ी प्रतिष्ठापूर्वक अत्यन्तप्रीति प्रकटकी । १० । हे भारतवंशी । सावधान देवलऋषि ने ऋषियोंकी बताई विधिसे सामर्थ्य के अनुसार बहुत वर्षोंतक उस का पूजनकिया देवयोगसे एकसमयपर देवलऋषिका उस महातेजस्वी मुनिको देखके यह बड़ी चिन्ताहुई । १२ । कि मुझ को इस मुनिका पूजन करतेहुये बहुतवर्ष व्यतीत हुये परन्तु आजतक इस उदासीनकर्म्मी भिक्षुक ने कभी कोईबात नहीं कही । १३ । इस प्रकार विचारकरते वह अन्तरिक्षचारी श्रीमान् देवलऋषि कलश को लेकर महासमुद्र को गये हे भरतवंशी इसकेपीछे नदियों के स्वामी समुद्रको जातेहुये उस धर्मात्माने प्रथम गयेहुये जैगीषव्य को देखा । १५ । उस को वहां देखकर उस बड़े तेजस्वीने आश्चर्य करके चिन्ताकरी कि यह भिक्षुक कैसे समुद्रको आया । १६ । और कैसे इसने स्नान किया तब उस महर्षिने ऐसे चिन्ताकरी और विधिवत् समुद्र में स्नानकरके उस पवित्रने जपको जपा । १७ । जप और संध्या करनेवाले श्रीमान् देवलऋषि । जलसे पूर्ण कलशको लेकर । १८ । अपने आश्रमको आये हे जनमेजय फिर अपने आश्रम स्थान में प्रवेश करतेहुये

of taking food and then he would always treat him with profound respect and love. 10. He served him in this way for many years. One day he thought within himself, " I have been serving the rishi for many years, but he has never said anything. " With this thought in his mind, he went with a vessel to the sea and there he saw Jaigishavya arrived before him. 15. He wondered at his arrival there. He bathed in the sea and said his prayers. When Deval came back with his vessel full of water, he saw Jaigishavya in his own hermitage. But the latter did not speak to him even then and con-

आसीनमाश्रमे तत्र जैगीषव्यमपश्यत ॥ १९ ॥ न व्याहरति चैवैनं जैगीषव्य कथञ्चन काष्ठभूतोऽश्रमपदे वसति स्म महातपाः ॥ २० ॥ तं दृष्ट्वा चाप्लुतं तोये सागरे, सागरोपमम् । प्रविष्टमाश्रमञ्चापि पूर्वमेव ददर्श सः ॥ २१ ॥ असितो देवलो राजंश्चिन्तयामास बुद्धिमान् । दृष्ट्वा प्रभावन्तपसो जैगीषव्यस्य योगजम् ॥ २२ ॥ चिन्तयामास राजेन्द्र तदा स मुनिसत्तमः मया दृष्टः समुद्रे च आश्रमे च कथं स्वयम् ॥ २३ ॥ एवं विगणयन्नेव स मुनिर्मन्त्रपारगः । उत्पपाताश्रमात्तस्मादन्तरिक्षं विशाम्पते । जिज्ञासार्थं तदा भिक्षोर्जैगीषव्यस्य देवलः ॥ २४ ॥ सोऽन्तरीक्षचरान् सिद्धान् समपश्यत् समाहितान् । जैगीषव्यञ्च तैः सिद्धैः पूज्यमानमपश्यत ॥ २५ ॥ ततो सितः सुसंरब्धो व्यवसायी दृढव्रतः । अपश्यद्वै दिवं यान्तं जैगीषव्यं स देवलः ॥ २६ ॥ तस्माच्च पितृलोकं तं व्रजन्तं सोऽन्वपश्यत । पितृलोकाच्च तं यान्तं याम्यं लोकमपश्यत ॥ २७ ॥ तस्मादपि समुत्पत्य सोमलोकमभिप्लुतम् । व्रजन्तमन्वपश्यत स

उस मुनिने वहां आश्रममें बैठेहुए जैगीषव्यको देखा । १९ । और उस समय परभी जैगीषव्यने किसी प्रकार से कुछ नहीं कहा, फिर वह महातपस्वी काठ रूप आश्रम स्थानमें निवासी हुआ । २० । उस देवलऋषि ने उसको समुद्रके समान समुद्रके जलमें स्नान कियाहुआ देखकर प्रथमही आश्रम में बैठाहुआ देखा । २१ । हे राजा तब बुद्धिमान असित देवलने चिन्ता करी । अर्थात् उस मुनियों में श्रेष्ठने जैगीषव्य के योगसे उत्पन्न होनेवाले तपको देखकर बड़ी चिन्ता करी कि मैंने तो इसको समुद्रपर देखाथा अब यह मुझसे प्रथमही इस आश्रममें कैसे आगया । २२ । हे राजा तब वह मन्त्र विद्या में पूर्ण देवलमुनि इसप्रकार विचार करते जैगीषव्य संन्यासीकी परीक्षाके अर्थ उस आश्रमसे ऊपर आकाशकी ओर उछले । २४ । अन्तरिक्षचारी और सावधान सिद्धोंको देखते हुए उस देवलऋषिने जैगीषव्य को उन सिद्धोंसे पूजित और प्रतिष्ठावान् देखा । २५ । तदनन्तर उस क्रोधयुक्त दृढ़ व्रतवाले असितदेवलने वहांसे चलनेवाले जैगीषव्यको देखा । २६ । उस ने वहांसे उसको पितृलोकमें जानेवाला देखा और पितृलोकसे यमलोकमें भी जाने वाला उसको देखा । २७ । और उन लोकों से भी उछलकर चन्द्रलोकमें जाने वाला उस महामुनि जैगीषव्यको देखा फिर अच्छे यज्ञ करनेवालों के शुभलोकोंमें

tinued to live there like a wooden statue. 20. Daval saw him profound like the ocean after bathing in its waters. Asit Daval was amazed at the great power of his asceticism; for he had left him on the sea-shore, but on coming home found him already returned. To test Jaigisharya the Sanyasi, Daval sprang up into air to the region of Sidhas, but saw Jaigisharya there also worshipped by the sidhas. 25. Asit Daval visited the region of pitris, Indra, Yam, Chandra and the holy regions of sacrifices, but found Jaigisharya everywhere. Then he sprang up to the region of Agnihotris where they pour libations

जैगीषव्यं महामुनिम् । लोकाद् समुत्पतन्तन्तु शुभानेकान्तयाजिनाम् ॥ २८ ॥ अग्निहोत्रिणो लोकांस्तत्राप्युत्पपात ह ॥ दर्शञ्च पौर्णमासञ्च, ये यजन्ति तपोधनाः ॥ २९ ॥ तेभ्यः स सन्ददर्शे धीमान् लोकेभ्यः पशुयाजिनाम् । व्रजन्तं लोकममलमपश्यद्देवपूजितम् ॥ ३० ॥ चातुर्मास्यैर्बहुविधैर्यजन्ते ये तपोधनाः । तेषां स्थानं ततो यातं तथाग्निष्टोमयाजिनाम् ॥ ३१ ॥ अग्निष्टुतेन च तथा ये यजन्ति तपोधनाः । तत्स्थानमनुसंप्राप्तमन्वपश्यत देवलः ॥ ३२ ॥ वाजपेयं क्रतुवरं तथा बहुसुवर्णकम् । आहरन्ति महाप्राज्ञास्तेषां लोकेष्वपश्यत ॥ ३३ ॥ यजन्ते राजसूयेन पुण्डरीकेण चैव ये । तेषां लोकेष्वपश्यच्च जैगीषव्यं स देवलः ॥३४॥ अश्वमेधं क्रतुवरं नरमेधं तथैव चे । आहरन्ति नरश्रेष्ठास्तेषां लोकेष्वपश्यत ॥ ३५ ॥ सर्वमेधञ्च दुष्प्रापं तथा सौत्रामणिञ्च ये । तेषां लोकेष्वपश्यच्च जैगीषव्यं स देवलः ॥ ३६ ॥ द्वादशाहैश्च

भी उसको उछलकर जानेवाला देखा ।२८। और वहांसेभी अग्निहोत्रियोंकेलोक को उछले जो तपोधनऋषि अमावस और पूर्णमासीके दिन यज्ञों से पूजन करते हैं ।२९। अथवा पशुओंके यज्ञ करनेवालोंके लोकोंसे निर्म्मल और देवपूजितलोक को जानेवाले मुनिको उस बुद्धिमान देवलने देखा जो तपोधन कि चातुर्मास्य नाम नानाप्रकार के यज्ञोंसे पूजन करते हैं, वहांसे उनके लोकों में और अग्निष्टोम यज्ञकरनेवालों के लोकोंको जानेवाले मुनिकोदेखा ।३१। जो तपोधन अग्नि ष्टुतयज्ञसे पूजन करते हैं उनके जो लोक हैं उस लोक में भी जातेहुये मुनि को देवलऋषिने देखा ।३२। इसीप्रकार बहुत सुवर्णवाले यज्ञोंमें श्रेष्ठ वाजपेय यज्ञको जो बड़े ज्ञानी करतेहैं उनके भी लोकोंमें जातेहुये मुनिको देखा।३३।जोलोग राजसूय और पुण्डरीक यज्ञोंसे पूजन करते हैं उनके लोकोंमेंभी उस जैगीषव्यको देवलने देखा ।३४। इसीप्रकार जो नरोत्तमपुरुष यज्ञोंमें श्रेष्ठ अश्वमेध और नर मेध को करते हैं उनके भी लोकोंमें उसकोदेखा।३५। जो लोग कठिनतासे प्राप्त होनेवाले सर्वमेध और सूत्रामणि यज्ञको करते हैं उनके लोकों में भी देवलने उस जैगीषव्यको देखा ।३६। हे राजा जोलोग द्वादशाह नाम नानाप्रकार के यज्ञोंसे पूजनको करतेहैं उस देवलने उस जैगीषव्यको उनके भी लोकों में देखा ।३७। इस

on the days of full-moon and no-moon 29. He saw Jaigishavya in the region of sacrificers, attended by gods and holy men who worship with four-monthly sacrifices and others. He saw him in many other regions as well as among the performers of Agnishtom sacrifice. He saw him also among the performers of Vajpeya sacrifices as well as those who perform Rajasuya, Pundarik, Ashwamedh, Narmedh and Sarvamedh. 36. He saw him among the performers of Dwadashah sacrifices in the region of Vrihaspati, in Golok, in Brahm sacrifice and other regions. After that Jaigishavya disappeared from his sight. Then Deval

सर्वेषां यजन्ते विविधैर्नृप । तेषां लोकेष्वपश्यच्च जैगीषव्यं स देवलः ॥ ३७ ॥ मित्रा
वरुणयोर्लोकानादित्यानां तथैव च । सलोकतामनुप्राप्तमपश्यत ततोऽसितः ॥ ३८ ॥
रुद्राणां च वसूनां च स्थानं यच्च बृहस्पतेः । तानि सर्वाण्यतीतानि समपश्यत्ततोऽसितः
॥ ३९ ॥ आरुह्य च गवां लोकं प्रयातो ब्रह्मसत्रिणाम् । लोकानपश्यद्गच्छन्तं जैगीषव्यं
ततोऽसितः ॥ ४० ॥ त्रीँल्लोकानपरान् विप्रमुत्पतन्तं स्वतेजसा । पतिव्रतानां लोकांश्च
व्रजन्तं सोऽन्वपश्यत ॥ ४१ ॥ ततो मुनिवरं भूयो जैगीषव्यमथासितः । नान्वपश्यत
योगस्थमन्तर्हितमरिन्दम ॥ ४२ ॥ सोऽचिन्तयन्महाभागो जैगीषव्यस्य देवलः । प्रभावं
सुव्रतत्वञ्च सिद्धिं योगस्य चातुलाम् ॥ ४३ ॥ असितोऽपृच्छत तदा सिद्धान् लोकेषु
सत्तमान् । प्रयतः प्राञ्जलिर्भूत्वा धीरस्तान् ब्रह्मसत्रिणः ॥ ४४ ॥ जैगीषव्यं न पश्यामि
तं शंसत महौजसम् । एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं परं कौतूहलं हि मे ॥ ४५ ॥ सिद्धा
ऊचुः । शृणु देवल भूतार्थं शंसतां नो दृढव्रत । जैगीषव्यः स वै लोकं शाश्वतं ब्रह्मणो
गतः ॥ ४६ ॥ वैशम्पायन उवाच । स श्रुत्वा वचनं तेषां सिद्धानां ब्रह्मसत्रिणाम् ।

के पीछे असित देवलने अदितिके पुत्र मित्रावरुण और सूर्यादिक की सालोक्यता पानेवाले जैगीषव्यको देखा । ३८ । रुद्रों वसुओं और बृहस्पतिजीका जो स्थान है असित देवलने उन सब लोकोंको जैगीषव्य से उल्लंघन किया हुआ देखा । ३९ । इसके पीछे गोलोकको चढ़कर ब्रह्मयज्ञ करनेवालोंके लोकोंको गया, फिर असित देवलने अपने तेजसे तीनोंलोकोंको त्यागकर अन्यलोकों के जाने वाले जैगीषव्यको देखा और पतिव्रताओं के भी लोकों में जानेवाले उस मुनिको देखा । ४१ । तब असित देवलने उस मुनियों में श्रेष्ठ योगमें नियत अन्तर्धान होनेवाले जैगीषव्यको नहीं देखा । ४२ । हे अरिविमर्दी जनमेजय उस महाभाग देवलने जैगीषव्यके प्रभाव व्रतकी उत्तमता और योगकी बड़ी सिद्धी को विचार किया । ४३ । तब असित देवलने लोकों में श्रेष्ठ सिद्धोंसे पूछा उस धार्मिक देवलने हाथ जोड़कर उन ब्रह्मयज्ञ करनेवालों से कहा कि मैं अब उस जैगीषव्य को नहीं देखताहूं उस बड़े तेजस्वी का सब वृत्तान्त वर्णन कीजिये मुझको उनके वृत्तान्त सुननेकी बड़ी उत्कण्ठा है । ४५ । सिद्ध बोले कि हे दृढ़व्रतवाले देवल हम तुमसे इनका वृत्तान्त कहते हैं तुम मनलगाकर सुनो निश्चय करके वह जैगीषव्य सनातन ब्रह्मलोकको गया । ४६ । वैशम्पायन बोले कि वह असित देवल उन ब्रह्मयज्ञ करनेवाले सिद्धों के वचन को सुनकर शीघ्र ऊपर को चला

thought of the great yog power and inquired about him of the sidhas who performed Brahmyajya, with joined hand, "I donot see Jaigishavya. Tell me all about him, for I am very anxious to know." The sidhas said, "Jaigishavya has gone to the region of Brahm." At this Deval began to ascend higher up but could go no further. Then the sidhas said, "You cannot go to the region of Brahm where Jaigish

चलितो देवलस्तूर्णमुत्पपात पपात च ॥४७॥ ततः सिद्धास्त ऊचुर्हि देवलं पुनरेव ह। न देवल गतिस्तत्र तव गन्तुं तपोधन। ब्राह्मणः सदनं विप्र जैगीषव्यो यदाप्तवान् ॥४८॥ वैशम्पायन उवाच। तेषां तद्वचनं श्रुत्वा सिद्धानां देवलः पुनः। आनुपूर्व्येण लोकेभ्यः सर्वानवततार ह ॥ ४९ ॥ स्वमाश्रमपदं पुण्यमाजगाम पतङ्गवत्। प्रविशन्नेव चापश्यज्जैगीषव्यं स देवलः ॥ ५० ॥ ततो बुद्ध्या व्यगणयद्देवलो धर्मयुक्तया। दृष्ट्वा प्रभावं तपसो जैगीषव्यस्य योगजम् ॥ ५१ ॥ ततोऽब्रवीन्महात्मानं जैगीषव्यं स देवलः। विनयावनतो राजन्नुपसर्प्य महामुनिम्। मोक्षधर्मं समास्थातुमिच्छेयं भगवन्नहम् ॥ ५२ ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा उपदेशं चकार सः। विधिं च योगस्य परं कार्याकार्यं च शास्त्रतः ॥५३॥ संन्यासकृतबुद्धिं तं ततो दृष्ट्वा महातपाः। सर्वाश्चास्य क्रियाश्चक्रे विधिदृष्टेन कर्मणा ॥ ५४ ॥ संन्यासकृतबुद्धिं तं भूतानि पितृभिः सह। ततो दृष्ट्वा प्ररुरुदुः कोऽस्मान् संविभजिष्यति ॥ ५५ ॥ देवलस्तु

परन्तु गिरपड़ा। ४७। इसके पीछे वह सब सिद्धलोग देवलसे बोले कि हे तपोधन ब्रह्मलोकमें जानेवाले देवल उस ब्रह्मलोकमें जानेको तेरीगति नहींहै हे वेदपाठी जिसको कि जैगीषव्यने पाया। ४८। वैशम्पायनने कहा कि फिर वह देवल उनसिद्धों के वचन को सुनकर क्रमपूर्वक अपने लोकों को उतरे। ४९। और पक्षी के समान अपने पवित्र स्थान आश्रमको आये आश्रम में प्रवेश करने वाले उस देवलने जैगीषव्य को देखा। ५०। फिर देवलने जैगीषव्य के योगसे उत्पन्न होने वाले तपके प्रभावको देखकर धर्मयुक्त बुद्धिके द्वारा विचार किया। ५१। और नम्रता से झुकेहुये उस देवलने महात्मा महामुनि जैगीषव्य के पास जाकर यह वचन कहा हे भगवन् मैं मोक्षधर्म में नियत होना चाहता हूं। ५२। तब जैगीषव्यने उस के उस वचनको सुनकर उपदेश किया अर्थात् शास्त्र के द्वारा याग और कार्याकार्य की परम विधि को उपदेश किया। ५३। इसके पीछे बड़े तपस्वी ने संन्यासमें प्रवृत्त चित्त उसदेवलको देखकर वेदोक्त कर्मों के द्वारा उसकी सब क्रियाओं को किया। ५४। इसके पीछे पितर लोगोंसमेत सब जीवधारी उस संन्यासमें बुद्धि लगानेवाले देवलको देखकर अत्यन्त रोदन करके कहनेलगे कि हमको कौन अब भागदेगा। ५५। इसप्रकार दशोंदिशाओं में वचन कहनेवाले

avya has gone." Then Deval descended lower and lower like a bird till he came down to his down hermitage and on entering it he saw Jaigishavya again. 50. Then Deval knew the greatness of Jaigishavya and humbly said, "I wish to tread the path of salvation." Jaigishavya then taught him about what was to be done and shunned. He taught him the Vedic ways. The pitars and other beings seeing him engaged in Sanyas wept aloud saying, "Who will give,

चत्वः श्रुत्वा भूताना करुणं तथा । दिशो दश व्याहृतां मोक्षं त्यक्तुं मनोदधे ॥ ५६ ॥
ततस्तु फलमूलानि पवित्राणि च भारत । पुष्पाण्योषधयश्चैव रोरूयन्ते सहस्रशः ॥ ५७ ॥
पुनर्नो देवलः क्षुद्रो नूनं छेत्स्यति दुर्मतिः । अभयं सर्वभूतेभ्यो यो दत्त्वा नावबुध्यते
॥ ५८ ॥ ततो भूयो व्यगणयत् स्वबुद्ध्या मुनिसत्तमः । मोक्षे गार्हस्थ्यधर्मे वा किन्नु
श्रेयस्करं भवेत् ॥ ५९ ॥ इति निश्चित्य मनसा देवलो राजसत्तम । त्यक्त्वा गार्हस्थ्य
धर्मं स मोक्षधर्ममरोचयत् ॥ ६० ॥ एवमादीनि सञ्चिन्त्य देवलो निश्चयात्ततः । प्राप्त
वान् परमां सिद्धिं परं योगञ्च भारत ॥ ६१ ॥ ततो देवाः समागम्य बृहस्पतिपुरो
गमाः । जैगीषव्यं तपश्चास्य प्रशंसन्ति तपस्विनः ॥ ६२ ॥ अथाब्रवीदृषिवरो देवान्
वै नारदस्तथा । जैगीषव्ये तपो नास्ति विस्मापयति योऽसितम् ॥ ६३ ॥ तमेवं वादिनं
धीरं प्रत्यूचुस्ते दिवौकसः । मैवमित्येव शंसन्तो जैगीषव्यं महामुनिम् ॥ ६४ ॥ नातः
परतरं किञ्चित्तुल्यमस्ति प्रभावतः । तेजसस्तपसश्चास्य योगस्य च महात्मनः ॥ ६५ ॥

दुःखित वचनोंको सुनकर देवलने मोक्षके त्याग करनेको चित्त किया । ५६ । हे भरतवंशी फिर पवित्र फलमूल और हजारों औषधियां भी रोदन करनेलगीं । ५७ । कि निश्चयकरके वह नीच और दुर्बुद्धी देवल फिर हमको काटेगा जोकि सब जीवोंको निर्भयता देकर सावधान नहीं होताहै । ५८ । इसके पीछे मुनियों में श्रेष्ठ देवलने अपनी बुद्धि से फिर विचार किया कि मोक्ष और गृहस्थ धर्म इन दोनों में से कौनसा धर्म कल्याणका करनेवाला है । ५९ । हे राजाओं में श्रेष्ठ देवलने चित्तसे निश्चय करके गृहस्थ धर्मको त्यागकर मोक्ष धर्म को स्वीकार किया । ६० । फिर देवलने निश्चयसे उनको और अन्य सब बातोंको विचारकर परमसिद्धी समेत परमयोग को पाया । ६१ । इसके पीछे उन देवताओं ने जिनमें कि अग्रवर्त्ती बृहस्पतिजीथे आकर जैगीषव्यकी और इस तपस्वीके तपकी प्रशंसा करी । ६२ । इसके अनन्तर ऋषियों में श्रेष्ठ नारदजी देवताओं से बोले कि जैगीषव्यमें तप नहींहै जोकि असित को आश्चर्ययुक्त करता है । ६३ । इस प्रकारसे कहनेवाले वह देवता उसवीर से बोले कि ऐसा नहीं है फिर महामुनि जैगीषव्य की प्रशंसा करतेहुये बोले । ६४ । कि प्रभाव में इससे बड़ा और समान भी कोई नहीं

us our share. ?" Hearing such words on all sides Deval thought of forsaking the way to salvation. Flowers and medicinal herbs also wept and said, "Despicable Deval will again cut us down, for he is not careful in saving life." Deval thought again whether to choose Salvation or the life of a householder, but at last he decided to renounce the latter and was engaged in asceticism. 61. Then the gods led by Vrihaspati came and praised Jaigishavya and Dival. Narad said to gods, "Asit is wrongly astonished at the asceticism of Jaigishavya." But the gods would not hear him and praised Jaigishavya, saying, "We see none better than or equal to both." Baldev bathed there

एवं प्रभावो धर्मात्मा जैगीषव्यस्तथासितः । तयोरिदं स्थानवर तीर्थश्चैव महात्मनोः ॥ ६६ ॥ तत्राप्युपस्पृश्य ततो महात्मा दत्वा च वित्तं हलभृद्द्विजेभ्यः । अवाप्य धर्मं परमार्थकर्मा जगाम सोमस्य महत् सुतीर्थम् ॥ ६७ ॥

इति गदायुद्धपर्वणि बलदेवतीर्थयात्रायां सारस्वतोपाख्याने पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

वैशम्पायन उवाच । यत्रेजिवानुडुपती राजसूयेन भारत । तस्मिन्वृत्ते महानासीत् संग्रामस्तारकामयः ॥ १ ॥ तत्राप्युपस्पृश्य बलो दत्वा दानानि चात्मवान् । सारस्वतस्य धर्मात्मा मुनेस्तीर्थं जगाम ह ॥ २ ॥ तत्र द्वादशवार्षिक्यामनावृष्ट्यां द्विजोत्तमान् ।

है इस महात्मा के वेद तप और योग के समान कोई नहीं है । ६५ । धर्मात्मा जैगीषव्य और असित देवलभी ऐसेही प्रभाववाले हैं इन दोनों उत्तम महात्माओं का यह श्रेष्ठ आश्रम और तीर्थ है । ६६ । इसके पीछे वह परमार्थकर्मी महात्मा बलदेवजी इस तीर्थपर भी स्नान आचमनकर ब्राह्मणों को बहुत धन देकर धर्म को पाकर चन्द्रमा के तीर्थको गये ६७ ॥

अध्याय ५१ ॥

वैशम्पायन बोले हे भरतवंशी जहांपर चन्द्रमाने राजसूययज्ञ से पूजनकिया उस तीर्थपर तारकासुर से सम्बन्ध रखनेवाला बड़ा युद्धहुआ । १ । ज्ञानी धर्मात्मा बलदेवजी वहां भी स्नान आचमन करके दानों को देकर सारस्वतमुनि के तीर्थ को गये । २ । जहां पूर्वकालमें सारस्वतमुनि ने बारहवर्षके दुर्भिक्षमें उत्तमब्राह्मणों को वेदपढ़ाया । ३ । जनमेजयने कहा कि बारहवर्षकी अनावृष्टिमें सारस्वतमुनिनेकैसे

---

and having sipped water and given donations to brahmans, proceeded to the holy place of Chandra. 67.

CHAPTER LI

*V*aishampayan said, " The war of Tarak had taken place where Chandra performed Rajsuya sacrifice. Baldev bathed there and having sipped water and given donations, proceeded to the holy place of Saraswat, who taught the Vedas to Brahmans during a twelve years

वेदानध्यापयामास पुरा सारस्वतो मुनिः ॥ ३ ॥ जनमेजय उवाच । कथं द्वादशवार्षिक्यामनावृष्ट्यां तपोधन । ऋषीनध्यापयामास पुरा सारस्वतो मुनिः ॥ ४ ॥ वैशम्पायन उवाच । आसीत् पूर्वं महाराज मुनिर्धीमान्महातपाः । दधीच इति विख्यातो ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः ॥ ५ ॥ तस्यातितपसः शक्रो बिभेति सततं विभो । न स लोभयितुं शक्यः फलैर्बहुविधैरपि ॥ ६ ॥ प्रलोभनार्थं तस्याथ प्राहिणोत् पाकशासनः । दिव्यामप्सरसं पुण्यां दर्शनीयामलम्बुषाम् ॥ ७ ॥ तस्य तर्पयतो देवान् सरस्वत्यां महात्मनः । समीपतो महाराज सोपातिष्ठत भामिनी ॥ ८ ॥ तां दिव्यवपुषं दृष्ट्वा तस्यर्षेर्भावितात्मनः । रेतः स्कन्नं सरस्वत्यां तत् सा जग्राह निम्नगा ॥ ९ ॥ कुक्षौ चाप्यदधद् दृष्ट्वा तद्रेतः पुरुषर्षभ । सा दधार च तं गर्भं पुत्रहेतोर्महानदी ॥ १० ॥ सुषुवे चापि समये पुत्रं सा सरितां वरा । जगाम पुत्रमादाय तमृषिं प्रति च प्रभो ॥ ११ ॥ ऋषिसंसदि तं दृष्ट्वा सा नदी मुनिसत्तमम् । ततः प्रोवाच राजेन्द्र ददती पुत्रमस्य तम्

ऋषियों को पढ़ाया था। वैशम्पायन बोले हे महाराज पूर्वसमयमें बुद्धिमान् ब्रह्मचारी जितेन्द्री, दधीचि नामसे विख्यात मुनि थे । ५ । हे समर्थ उसकी तपस्या से इन्द्र सदैव भयभीत रहताथा और उसको नानाप्रकार के फलों से लुभाता था परन्तु वह किसी फलसेभी नहीं लोभित हुये । ६ । इसके पीछे इन्द्रने उसके लुभाने के लिये दिव्य पवित्र और दर्शनीय अलंबुषानाम अप्सराको उनके पासभेजा । ७ । हे महाराज भकाशमान अप्सरा सरस्वतीपर देवताओंका तर्पण करनेवाले उस महात्माके सन्मुखहुई । ८ । उस दिव्यशरीरवाली अप्सराको देखकर उस शुद्ध अन्तःकरणवाले ऋषिकावीर्य स्खलितहोकर सरस्वती में गिरा उस नदीने उसको धारणकिया । ९ । हे पुरुषोत्तम उसनदीने ऋषिकेवीर्यको अपनी कुक्षि में धारण किया अर्थात् उस नदीने अपने पुत्रार्थ उस गर्भको अपने उदर में धारण किया । १० । हे प्रभु फिर कुछ समय पीछे उस श्रेष्ठ नदीने पुत्रको भी उत्पन्न किया और पुत्रकोलेकर उस ऋषिके पासगई । ११ । हे राजेन्द्र वह नदी ऋषियों कीसभा में उस श्रेष्ठ मुनिको देखकर उनके उस पुत्रको उनको देती हुई यह वचन बोली

famine." Janamejaya said, "How did Saraswat teach them during famine?" Vaishampayan said, "In former days there was a wise rishi of great fame and sanctity, named Dadhichi. Indra was afraid of his asceticism and induced him with various good things. He sent to him a beautiful apsara named Alamvusha. She came before him when he was worshipping gods on the bank of the Saraswati. His semen dropped down in the river as he saw her. Saraswati kept it in her womb for the sake of the muni. 10. After some time she brought forth a son and came to the rishi with him. While presenting the son to the muni before the assembly of ascetics, she said, "This is

॥ १२ ॥ ब्रह्मर्षे तव पुत्रोऽयं त्वद्भक्त्या धारितो मया। दृष्ट्वा तेऽप्सरसं रेतो यत् स्कन्नं प्रागलम्बुषाम् ॥ १३ ॥ तत् कुक्षिणा वै ब्रह्मर्षे त्वद्भक्त्या धृतवत्यहम् । न विनाशमिदं गच्छेत्त्वत्तेज इति निश्चयात् ॥ १४ ॥ प्रतिगृह्णीष्व पुत्रं स्वं मया दत्तमनिन्दितम् । इत्युक्तः प्रतिजग्राह प्रीतिञ्चावाप पुष्कलाम् ॥ १५ ॥ स्वसुतञ्चाप्युपाजिघ्रत् मूर्द्धिन प्रेम्णा द्विजोत्तमः । परिष्वज्य चिरं कालं तदा भरतसत्तम ॥ १६ ॥ सरस्वत्यै वरं प्रादात् प्रीयमाणो महामुनिः । विश्वे देवाः सपितरो गन्धर्वाप्सरसां गणाः । तृप्तिं यास्यन्ति सुभगे तर्प्यमाणास्तवाम्भसा ॥ १७ ॥ इत्युक्त्वा स तु तुष्टाव वचोभिर्वै महानदीम् । प्रीतः परमहृष्टात्मा यथावत् शृणु पार्थिव ॥ १८ ॥ प्रसृतासि महाभागे सरसो ब्रह्मणः पुरा । जानन्ति त्वां सरिच्छ्रेष्ठे मुनयः संशितव्रताः ॥ १९ ॥ मम प्रियकरी चापि सततं प्रियदर्शने । तस्मात् सारस्वतः पुत्रो महांस्ते वरवर्णिनि ॥ २० ॥ तवैव नाम्ना

। १२ । हे ब्रह्मर्षि यह तेरापुत्र है मैने तेरीभक्तिसे अपने में इसको धारण किया पूर्व्वकाल में अलंबुषा अप्सराको देखकर जो तेरावीर्य पतन होगयाथा ।१३। उस को हे ब्रह्मर्षि मैंने भक्तिसे और इस निश्चयसे कि तेरा यहतेज नाशको न पावे इस हेतुसे उस गर्भको अपनी कोखमें धारणकिया । १४ । मेरे दियेहुये इस निर्दोष अपने पुत्रको लो इस प्रकार के सरस्वती के वचन को सुनकर ऋषिने उस पुत्रको लेकर बड़ा आनन्द माना । १५ । तब उस श्रेष्ठ ब्राह्मणने बड़े प्रेमसे अपने पुत्र के मस्तक को सूंघा और बड़ी विलम्बतक उस श्रेष्ठ मुनिने अपने पुत्रको गोद में लेकर । १६ । सरस्वती को यह वर दिया कि हे सुन्दरि ऐश्वर्यवान् पितरों समेत विश्वेदेवा गन्धर्व अप्सराओं के गण तेरे जलसे तृप्तहोकर आनन्द को पावेंगे । १७ । यह कहकर वचनों से भी उस महानदी को प्रसन्न किया हे राजा उस प्रसन्न और अत्यन्त आह्लादचित्त ने जिस प्रकारसे प्रसन्न किया उस को तुम सुनो । १८ । हे महाभाग श्रेष्ठ तुम ब्रह्माजी के सरोवर से निकलीहो हे उत्तम नदी तुमको प्रशंसनीय व्रतवाले मुनिलोग जानते हैं।१९। हेप्रियदर्शने तुम सदैव मेरा प्रियकरनेवाली भी हो हे सुन्दरी इसी हेतु से तेरा पुत्र बड़ा पुत्र सारस्वत नाम होगा । २० । और तेरा पुत्र लोकभावन होकर तेरेही नाम से विख्यात होगा

your son, holy man. For your sake, I kept him within my womb. Your semen fell down at the sight of Alamvusha and I preserved it for your sake. Receive your innocent child. The rishi was much pleased at the sight of his son. 15. He gave a boon to Saraswati, saying "Pitars, Vishwedevas, gandharvas and apsaras will be gratified by your waters." He pleased her by these words and praised her as follows:— You have come out of Brahma's lake, and glorious rishis know you. You have pleased me with your devotion and therefore I shall name your son as Sarasvat. 20. This son of thine will make your name

प्रथित पुत्रस्ते लोकभावन । सारस्वत इतिख्यातो भविष्यति महातपाः ॥ २१ ॥ एष द्वादश वार्षिक्यामनावृष्ट्यां द्विजर्षभान् । सारस्वतो महाभागे वेदानध्यापयिष्यति ॥ २२ ॥ पुण्याभ्यश्च सरिद्भ्यस्त्वं सदा पुण्यतमा शुभे । भविष्यसि महाभागे मत्प्रसादात् सरस्वति ॥ २३ ॥ एवं सा संस्तुता तेन वरं लब्ध्वा महानदी । पुत्रमादाय मुदिता जगाम भरतर्षभ ॥२४॥ एतस्मिन्नेव काले तु विरोधे देवदानवे । शक्र. प्रहरणान्वेषी लोकांस्त्रीन् विचचार ह ॥ २५ ॥ न चोपलेभे भगवान् शक्र प्रहरणं तदा । यद्वै तेषां भवेद्योग्यं वधाय विबुधद्विषाम् ॥ २६ ॥ ततोऽब्रवीत् सुरान् शक्रो न मे शक्या महासुरा । ऋतेऽस्थिभिर्दधीचस्य निहन्तु त्रिदशद्विष. ॥ २७ ॥ तस्माद्गत्वा ऋषिश्रेष्ठो याच्यतां सुरसत्तमाः । दधीचास्थीनि देहीति तैर्वधिष्यामहे रिपून् ॥ २८ ॥ स च तैर्याचितोऽस्थीनि यत्नादृषिवरस्तदा । प्राणत्यागं कुरुश्रेष्ठ चकारैवाविचारयन् । स लोकानक्षयान् प्राप्तो देवप्रियकरस्तदा ॥ २९ ॥ तस्यास्थिभिरथो शक्रः

अर्थात् वह महातपस्वी सारस्वत नामसे प्रसिद्ध होगा । २१ । वह महाभाग सारस्वत बारह वर्षके दुर्भिक्ष में उत्तम ब्राह्मणों को वेदपढ़ावेगा २२। हेशुभ महाभाग सरस्वती तुम मेरी कृपा से सदैव पवित्र नदियों से भी महापवित्र नदी होगी ।२३। हेभरतर्षभ इस प्रकार उस ऋषि से स्तूयमान वह महानदी वरको पाकर बड़े आनन्द पूर्वक अपने पुत्रको लेकर चलीगई । २४ । उसी समय में देवता और दानवों में परस्पर विरोध हुआ। इस हेतुसे इन्द्र ने उनके मारनेवाला अस्त्र बहुत ढूंढ़ा परन्तु ऐसा अस्त्र कोई न मिला जोकि असुरों के मारनेको समर्थ होवे । २५ । तब इन्द्र ने देवताओंसे कहा कि दधीचिऋषि के अस्थिके विना किसी अस्त्र से भी देवताओं के शत्रु महाअसुरों के मारनेको मैं समर्थ नहीं होसक्ता २७ इस कारण से हे उत्तम देवता लोगो उस उत्तम ऋषि से प्रार्थना पूर्वक यह याचना करो कि हे दधीचि आप हमपर कृपाकरके अपने हाड़ोंको दो । २८ । उन आपके हाड़ों से हम अपने शत्रुओं को मारेंगे हे कौरव्य तब इसीप्रकार से उन देवताओं से याचना किये हुये उस महाश्रेष्ठ ऋषि ने श्रेष्ठरीति से विचार किये विनाही

---

famous, for he will be called Saraswat. He will teach the Vedas to brahmans during the twelve year, sacrifice and you will be reckoned the holiest among rivers. " Thus praised by the rishi, Saraswati was much pleased and took her son with her. 24. In the meantime there happened to be a great war between Daityas and gods. Indra searched for a weapon to slay Daityas, but could find none. Then he said to gods, " I can not slay your enemies without making weapons out of the bones of Dadhichi and you must beg of him the favour of granting you his bones to slay your enemies. The gods did as they were directed to do and Dadhichi dying without any hesitation, ascended to the

संभृत्य मनसा हरिः। कारयामास दिव्यानि नानाप्रहरणान्युत ॥ [redacted] ॥ वज्राणि चक्राणि
गदा गुरूंश्च दण्डांश्च पुष्कलान्। स हि तीव्रेण तपसा संभृतः परमर्षिणा ॥ ३२ ॥ प्रजा
पतिसुतेनाथ भृगुणा लोकभावनः। अतिकायः स तेजस्वी लोकसारो विनिर्मितः ॥ ३३ ॥
जज्ञे शैलगुरुः प्रांशुर्महिम्ना प्रथितः प्रभुः। नित्यमुद्विजते चास्य तेजसः पाकशासनः
॥ ३४ ॥ तेन वज्रेण भगवान्मन्त्रयुक्तेन भारत। भृशं क्रोधविसृष्टेन ब्रह्मतेजोभवेन च
॥ ३५ ॥ दैत्यदानववीराणां जघान नवतीर्नव। अथ काले व्यतिक्रान्ते महत्यतिभय
ङ्करे। अनावृष्टिरनुप्राप्ता राजन्द्वादशवार्षिकी ॥ ३६ ॥ तस्यां द्वादशवार्षिक्यामना
वृष्ट्यां महर्षयः ॥ वृत्त्यर्थं प्राद्रवन्राजन्क्षुधार्ताः सर्वतोदिशम् ॥ ३७ ॥ दिग्भ्यस्तान्
प्रद्रुतान्दृष्ट्वा मुनिः सारस्वतस्तदा। गमनाय मतिं चक्रे तं प्रोवाच सरस्वती ॥ ३८ ॥
न गन्तव्यमितः पुत्र तवाहारमहं सदा। दास्यामि मत्स्यप्रवरानुष्यतामिह भारत ॥ ३९ ॥
इत्युक्तस्तर्पयामास स पितॄन्देवतास्तथा। आहारमकरोन्नित्यं प्राणान्वेदांश्च धारयन्

अपने प्राणोंको त्याग किया और अविनाशी लोकोंको पाया । ३० । उसके प्राण त्यागके पीछे अत्यन्त प्रसन्न इन्द्रने उसके हाड़ों से नानाप्रकार के दिव्य अस्त्र शस्त्रों को तैयार करवाया । ३१ । अर्थात् वज्र, चक्र, गदा और ऐसे भारी दण्डों को जोकि उसके उग्र और श्रेष्ठ ये प्रजापती के [redacted] संसारके प्यारे भृगुऋषि से निर्मित बड़े तेजस्वी शरीर धारण करनेवाले संसारमें अद्वितीय पर्वताकार हृष्ट पुष्ट शरीर बड़े करने महात्मा से युक्त भरतवंशी भगवान् इन्द्र ने. उस ब्रह्मतेज से उत्पन्न होनेवाले तेज संयुक्त मन्त्रयुक्त छोड़हुये वज्रसे । ३५ । दैत्य दानवों के बड़े वीरों को मारा हे राजा इसके पीछे अत्यन्त भयकारी बड़े समय के अन्त होनेपर बारहवर्ष का दुर्भिक्ष वर्तमान हुआ । ३६ । उस बारहवर्ष के दुर्भिक्ष में महर्षिलोग क्षुधासे व्याकुल आजीविका के निमित्त दशों दिशाओं को चले गये । ३७ । तब सारस्वत मुनि ने दिशाओं में भागनेवाले उन ऋषियोंको देखकर चलनेका विचार किया उस समय सरस्वती उनसे बोली । ३८ । कि हे पुत्र यहां से तुमको जाना योग्य नहीं है मैं सदैव तेरे आहारके निमित्त उत्तम मछलियों को दूंगी । ३९ । हे भरतवंशी ऐसे माताके वचन सुनकर

---

regions of the good, 30. At his death Indra prepared from his bone various sorts of weapons, such as vajra, discus, mace and staves, and with those huge weapons, slew the enemies of gods. At the close of that war there was a twelve years famine. 35, The rishis left their abodes for want of food. Saraswat too intended to follow their example, but he was stopped by Saraswati, who said, "You need not go anywhere, my son, for I shall always supply you good fish for food. Saraswat obeyed his mother's orders and gratified gods and pitris with that food and kept reading the Vedas and Puranas. 40. He was always

॥ ४० ॥ अथ तस्यामनावृष्ट्यामतीतायां महर्षयः । अन्योन्यं परिप्रपच्छुः पुनः स्वाध्यायकारणात् ॥ ४१ ॥ तेषां क्षुधापरीतानां नष्टा वेदा अभिधावताम् । सर्वेषामेव राजेन्द्र न कश्चित् प्रतिभानवान् ॥ ४२ ॥ अथ कश्चिदृषिस्तेषां सारस्वतमुपेयिवान् । कुर्वाणं संयतात्मानं स्वाध्यायमृषिसत्तमम् ॥ ४३ ॥ स गत्वाचष्ट तेभ्यश्च सारस्वतमतिप्रभम् । स्वाध्यायममरप्रख्यं कुर्वाणं विजने वने ॥ ४४ ॥ ततः सर्वे समाजग्मुस्तत्र राजन्महर्षयः सारस्वतं मुनिश्रेष्ठमिदमूचुः समागताः ॥ ४५ ॥ अस्मानध्यापयस्वेति तानुवाच ततो मुनिः । शिष्यत्वमुपगच्छध्वं विधिवद्धि ममेत्युत ॥ ४६ ॥ तत्राब्रुवन्मुनिगणा बालस्त्वमसि पुत्रक । स तानाह न मे धर्मो नश्येदिति पुनर्मुनीन् ॥ ४७ ॥ यो ह्यधर्मेण वै ब्रूयाद् गृह्णीयाद्वाप्यधर्मतः । हीयेतां तावुभौ क्षिप्रं स्यातां वा वैरिणावुभौ ॥ ४८ ॥ न हाय

उस ऋषि ने इसी प्रकार से देवता और पितरों को तृप्त किया मांस और वेदों को धारण करते । ५० । उस ऋषिने सदैव आहार किया फिर उस दुर्भिक्षके समाप्त होने पर महर्षियों ने वेदज्ञता के कारण परस्पर पूछा । ५१ । हे राजेन्द्र क्षुधार्त्त और चारों ओरको दौड़नेवाले उन सब ऋषियों के वेद बिस्मरण होगये और किसीने नहीं जाना । ५२ । इसके अनन्तर उनमेंसे किसी ऋषिने उस सारस्वत ऋषिको पाया जोकि तीक्ष्ण बुद्धि और वेदपाठ करनेवाले ऋषियों में श्रेष्ठ थे । ५३ । उसने जाकर उस बड़े तेजस्वी देवताके समान निर्जन वनमें वेदपाठ करने वाले सारस्वत ऋषि को उन अपने साथी ऋषियों से वर्णन किया । ५४ । तब वह सब ऋषि मिलकर वहांगये और मिलेहुओं ने मुनियों में श्रेष्ठ सारस्वत मुनिसे यह वचन कहा । ५५ । कि हे मुनि आप हम सब मुनियों को वेद पढ़ाओ तब उस मुनिने उन ऋषियों से कहा कि तुम विधिपूर्वक मेरी शिष्यताको प्राप्तकरो । ५६ । तब वह महामुनियों के समूह यहवचन बोले कि हे पुत्र तुम बालकहो तब वह सारस्वत मुनियों से बोले कि मेराधर्म नाशहोगा । ५७ । निश्चय करके जो अधर्मसे कहे और अधर्मही से लेवे उन दोनोंका शीघ्रही नाशहोताहै अथवा वह दोनों परस्पर शत्रु होजाते हैं । ५८ । यह सुनकर ऋषियोंने वर्षों की आवश्यकता समेत ज्ञान और

supplied with food, and at the end of the famine the rishis were in search of one who knew the Vedas, for being in an unsettled state during the long period, they had all forgotten the Vedas. Some one of them found learned Saraswat and spoke of him to his companions. Then all the rishis came together and asked him to teach Vedas. He promised to teach them the Vedas on condition that they became his disciples. 46. But they said that he was yet a child and he said, "He who practices deception and cheats another is soon destroyed or makes the other his enemy." But I shall deal with you according to

न हैर्न पलितैर्न वित्तेन न बन्धुभिः। ऋषयश्चक्रिरे धर्मं योऽनूचानः स नो महान् ॥ ४९ ॥
एतच्छ्रुत्वा वचस्तस्य मुनयस्ते विधानतः । तस्माद्वेदाननुप्राप्य पुनर्धर्मं प्रचक्रिरे ॥ ५० ॥
षष्टिर्मुनिसहस्राणि, शिष्यत्वं प्रतिपेदिरे । सारस्वतस्य विप्रर्षेर्वेदस्वाध्यायकारणात्
॥ ५१ ॥ मुष्टिं मुष्टिं ततः सर्वे, दर्भाणां तेऽभ्युपाहरन् । तस्यासनार्थं विप्रर्षेर्बालस्यापि,
वशेस्थिताः ॥ ५२ ॥ तत्रापि दत्त्वा वसु रौहिणेयो महाबलः केशवपूर्वजोऽथ । जगाम
तीर्थं मुदितः क्रमेण ख्यातं महद्वृद्धकन्या स्म यत्र ॥ ५३ ॥

इति गदायुद्धपर्वणि बलदेवतीर्थयात्रायां सारस्वतोपाख्याने एकपञ्चाशोऽध्यायः ५१ ॥

वर्षों के कारण से उत्पन्न होनेवाले धर्मको नहीं किया और कहा कि जो शिक्षा आदिक छओं अङ्गों समेत, वेदोंका पढ़नेवाला है, वही हममें बड़ा है । ४९ । ऐसा विचारकर मुनियों ने विधिके अनुसार उस सारस्वत मुनि से वेदोंको पाकर फिर धर्मोंको किया । ५० । साठ हजार मुनियों ने वेद पढ़नेके कारण से उस परम ऋषि सारस्वत की शिष्यता को पाया । ५१ । तदनन्तर वह सब उस परमऋषि के आसन के लिए एक मुट्ठी कुशालाये और उस बालक के अधीनता में नियत हुए । ५२ । इसके पीछे केशवजी के बड़े भाई महाबली बलदेवजी वहांभी धनोंको दान करके क्रमपूर्वक उस प्रसिद्ध तीर्थपर गये जहांपर कि एक बहुत वृद्ध कन्या ठहरीथी । ५३ ।

---

dharm " Then the rishis knew that superiority lay in knowledge and not in years or wealth Thus they learnt the Vedas from him and were again stablished on the right path 50 Sixty thousands of rishis became his disciples. Each of them brought a handful of kusha grass for his seat and obeyed his orders. Baldev gave charity at that holy place and proceeded to the place where a very old maiden had her obode. " 53



जनमेजय उवाच । कथं कुमारी भगवंस्तपोयुक्ता ह्यभूत् पुरा । किमर्थञ्च तप
स्तेपे को वास्या नियमोऽभवत् ॥ १ ॥ सुदुष्करमिदं ब्रह्मंस्त्वत्तः श्रुतमनुत्तमम् ।
आख्याहि तत्त्वमखिलं यथा तपसि सा स्थिता ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच । ऋषिरासी
न्महावीर्य्यः कुणिर्गर्गो महायशाः । स तप्त्वा विपुलं राजंस्तपो वै तपतां वरः ॥ ३ ॥
मनसाथ सुतां सुभ्रूं समुत्पादितवान् विभुः । तां च दृष्ट्वा मुनिः प्रीतः कुणिर्गर्गो
महायशाः । जगाम त्रिदिवं राजन् संत्यज्येह कलेवरम् ॥ ४ ॥ सुभ्रूः सा ह्यथ कल्याणी
पुण्डरीकनिभेक्षणा । महता तपसोग्रेण, कृत्वा आश्रममनिन्दिता । उपवासैः पूजयन्ती
पितॄन्देवांश्च सा पुरा ॥ ६ ॥ तस्यास्तु तपसोग्रेण महान् कालोऽत्यगान्नृप । सा पित्रा
दीयमानापि तत्र नैच्छदनिन्दिता । आत्मनः सदृशं सा तु भर्तारं नान्वपश्यत ॥ ७ ॥
ततः सा तपसोग्रेण पीडयित्वात्मनस्तनुम् । पितृदेवार्चनरता बभूव विजने वने ॥ ८ ॥

अध्याय ५२ ॥

जनमेजय बोले कि हे भगवान् पूर्व समयमें वह कुमारी कैसे तपमें प्रवृत्त हुई, किस निमित्त तपस्याकरी और उसका क्या नियमथा । १ । हे ब्राह्मण मैंतुम से यह महा श्रेष्ठ और बड़े कष्टसे करने के योग्य तप सुना अब उसका यह सब मूल समेत वृत्तान्तकहो जैसे कि वह तपमें प्रवृत्तहुई । २ । वैशम्पायन बोले कि हे राजा बड़े पराक्रमी और यशमान् एक कुणिगर्गनाम ऋषिहुये उन्होंने बड़ी तपस्या करके । ३ । मनसे सुन्दरी पुत्रीको उत्पन्नकिया उस यशस्वी कुणिगर्गमुनि ने उस कन्या को देख और बहुत प्रसन्नहोकर इसलोक में शरीरको त्यागकर स्वर्गको गये । ४ । इसके पीछे वह सुन्दर भृकुटी कमललोचना कल्याणी निर्दोष बड़े भारी उग्रतप के द्वारा परिश्रम कर के व्रतों समेत देवता और पितरों की पूजन करनेवाली हुई । ५ । हे राजा उस उग्रतपमें ही उसका बड़ा समय व्यतीत हुआ और उस पिताके दीहुई निर्दोष ने भी कभी पतिकी इच्छा नहींकी

CHAPTER LII

Janmejaya said, " How was the maiden engaged in asceticism; for what purpose and with what vows I wish to *know* how she was engaged in severe asceticism. " Vaishampayan said, " There was a glorious rishi, named Kunigarg. By the power of asceticism he gave birth to a beautiful girl He was much pleased with her and left the world for heaven. The beautiful maiden worshipped the gods and pritris. 6. She was engaged all her life in performing asceticism and never wished to marry. She dried her body with penances and passed her time in devotion in a wilderness. She thought that with the leanness of her body she had acquired her object of desire. She was ready to die when she was so *feeble* that she could no *longer*

आत्मानं मन्यमानापि कृतकार्यं अभागिनिता । यावत् कर्यन च राजेन्द्र तपसा चैव कर्शिता
॥ ९ ॥ सा नाशकद्यदा गन्तु पदात् पदमपि संयमा । चकार गमने बुद्धिं
परलोकाय वै तदा ॥ १० ॥ मोक्तुकामान्तु तां दृष्ट्वा शरीरं नारदोऽब्रवीत् ।
असंस्कृतायाः कन्यायाः कुतो लोकास्तवानघे ॥ ११ ॥ एवन्तु श्रुतम स्माभिर्दे
वलोके महाव्रते । तपः परमकं प्राप्तं न तु लोकास्त्वया जिता ॥ १२ ॥ तन्नारदवचः
श्रुत्वा साऽब्रवीदृषिसंसदि । तपसोऽर्द्धं प्रयच्छामि पाणिग्राहस्य सत्तम ॥ १३ ॥ इत्युक्ते
चास्या जग्राह पाणिं गालवसम्भवः । ऋषिः प्राक्शृङ्गवान्नाम समयं चेममब्रवीत्
॥ १४ ॥ समयेन तवाद्याहं पाणिं स्प्रक्ष्यामि शोभने । यद्येकरात्रं वस्तव्यं त्वया सह
मयेति वै । तथेति सा प्रतिश्रुत्य तस्मै पाणिददौ तदा ॥ १६ ॥ यथादृष्टेन विधिना

इस हेतुसे कि उसने अपने योग्य पतिको नहीं पाया तब वह बड़े उग्रतप से अपने
शरीरको पीड़ितकरके निर्जन बनमें देवता और पितरों के पूजन में प्रवृत्त हुई
। ८ । हे राजेन्द्र परिश्रम से रहित अपने को अभीष्ट प्राप्त करनेवालीमानकर वह
कन्या बड़ी तपस्यासे जीर्ण शरीरहुई । ९ । जब कि वह अपने चरणों से कहीं
चलनेफिरने को भी समर्थ नहीं हुई तब परलोकके जाने में विधिपूर्वक बुद्धि
की । १० । फिर नारदजी उस शरीर त्यागनेकी इच्छावान कुमारीसे बोले हे
निष्पाप तुम संस्कारसे रहित कन्याके लोक कैसे होसक्ते हैं । ११ । हे महाव्रत हम
ने देवलोक में ऐसा सुनाहै तुमने बड़ी तपस्याकरी परन्तु लोकों को विजय नहीं
किया । १२ । तबतो वह कुमारी नारदजी के इन वचनोंको सुनकर ऋषियों की
सभा में बोली हे उत्तम ऋषि मैं आधे तपकाफल अपने पतिको दूंगी । १३ ।
ऐसा कहनेपर इसके हाथको गालवके पुत्र शृङ्गवान् ऋषि ने पकड़ा और इस
नियमको कहा । १४ । कि हे शोभायमान अब मैं तेरे पाणिको इस प्रतिज्ञा के
साथ ग्रहण करताहूं कि जो तूएकरात्रि मेरे साथ निवासकरे तब उसने कहातथास्तु
ऐसी प्रतिज्ञाकर के उसने अपना पाणि उसके हाथमेंदिया । १६ । गालवके पुत्र
शृङ्गवान्ने वेदोक्त विधिसे अग्निमें हवनकरके उसका पाणिग्रहण करके विवाह
किया । १७ । हे राजा वह स्त्री रात्रि में तरुण दिव्य भूषण और वस्त्रों से अलं-

walk. 10. Seeing her ready to die, Narad said, "How can you enter heaven without Sanskara. I have heard it said among gods that you have performed asceticism but won no regions." At this, she said, in the assembly of munis, "I shall give half the merit of my asceticism to my husband." At this, Shringvan the son of Galav took hold of her hand and promised to marry her on condition that she stayed a night with him. She consented and he married her according to the Vedic rites and poured libations to fire. 17. During that night she became young, adorned with ornaments and dress,

हुत्वा चाग्निं विधानतः । चक्रे च पाणिग्रहणं तस्योग्राहऊ्च गालविः ॥ १७ ॥ सा
रात्रावभवद्राजंस्तरुणी वरवर्णिनी । दिव्याभरणवस्त्रा च दिव्यस्रगनुलेपना ॥ १८ ॥
तां दृष्ट्वा गालविः प्रीतो दीपयन्तीमिव श्रिया । उवास च क्षपामेकां प्रभाते साब्रवी
च्चतम् ॥ १९ ॥ यस्त्वया समयो विप्र कृतो मे तपतांवर । तेनोषितास्मि भद्रन्ते
स्वस्ति तेऽस्तु व्रजाम्यहम् ॥ २० ॥ सानुज्ञाताब्रवीद्भूयो योऽस्मिंस्तीर्थे समाहितः । वत्स्यते
रजनीमेकां तर्पयित्वा दिवौकसः ॥ २१ ॥ चत्वारिंशतमष्टौ च द्वौ चाष्टौ सम्यगाचरेत्
योब्रह्मचर्यं वर्षाणि फलं तस्य लभते सः ॥२२॥ एवमुक्त्वा ततः साध्वी देहं त्यक्त्वा
दिवं गता । ऋषिरप्यभवद्दीनस्तस्या रूपं विचिन्तयन् ॥ २३ ॥ समयेन तपोऽर्द्धञ्च
कृच्छ्रात्प्रतिगृहीतवान् । साधयित्वा तदात्मानं तस्याः स गतिमन्वियात् । २४ ॥ दुःखितो
[illegible] चरितुंमहत् । तथैव
[illegible] व हतं शल्यं हला
[illegible] संग्रामे निहते पाण्ड

[illegible] त्वान् उस लक्ष्मीके
[illegible] के साथ निवासीहुये
[illegible] में श्रेष्ठब्राह्मण तुमने
[illegible] और शुभहोय अब
मैं जाताहूं । २० । तब वहां से निकलकर वह स्त्री फिर बोली जो सावधान पुरुष
इस तीर्थमें देवताओं को तृप्तकरके एकरात्रि निवासकरै । २१ । वह उस फलको
पावै जो कि अट्ठावन वर्षतक श्रेष्ठ रीति से ब्रह्मचर्यको करै । २२ । इसके पीछे
वह पतिव्रता ऐसा कहकर शरीरको त्यागकर स्वर्गको गई और वह ऋषि भी उस
के रूपको सोचताहुआ महा दुखीहुआ । २३ । नियम के कारण से उसका आधा
तप बड़ी कठिनता से लिया और उसने आत्माको साधन करके उस की गतिको
पाया । २४ । हे भरतर्षभ उसके रूप और तेजबल से महा दुःखीने ऐसा किया
इसप्रकार से उसने उस वृद्धकन्या के शुभचरित्र ब्रह्मचर्य और शुभगति को उससे
कहा । २५ । उस स्थानपर नियत होनेवाले बलदेवजी ने शल्य को मृतक हुआ
सुना शत्रुओं के तपानेवाले बलदेवजी ने वहां भी ब्राह्मणों को दान देकर शल्य

with body having divine fragrance. Galava's son, Shringwan lived with that beautiful woman for a night. In the morning she said to him, "I have done my part of the contract and lived with you one night. I am now going away." 20. Having come out in the open air, she said, "He who lives here one night, will gain the merit of remaining in celibacy for fifty eight years." Having said this, the chaste woman left for heaven. The rishi was much grieved for her. He was loath to retain half the merit of her asceticism and made himself worthy of her by purifying his soul. Much grieved at the

प्रेसदा ॥ २७ ॥ समन्तपञ्चकद्वारात्ततो निष्क्रम्य माधवः । पप्रच्छर्षिगणान्राम कुरुक्षेत्रस्य यत् फलम् ॥ २८ ॥ ते पृष्टा यदुसिंहेन कुरुक्षेत्रफलं विभो । समाचख्युर्महात्मानस्तस्मै सर्वं यथातथम् ॥ २९ ॥

गदायुद्धपर्वणि बलदेवतीर्थयात्रायां सारस्वतोपाख्याने द्विपञ्चाशोऽध्यायः ५२ ॥

को पूर्वकहुआ सुना । २७ । इसके पीछे माधव बलदेवजी ने समन्तपञ्चकके द्वारसे निकल कर कुरुक्षेत्रके फलको ऋषियोंसे पूछा । २८ । हे समर्थ उन यादवों में श्रेष्ठ बलदेवके इस वचनको सुनकर उन महात्माओं ने उस कुरुक्षेत्रका ठीक२ फल वर्णन किया । २९ ।

loss, he related all about the old maid. While there, Baldev heard of the death of Shalya. He gave charity to Brahmans. Then he asked the rishis about the merits of Kurukshetra as he came out of Samant panchak. That best of Yadavas was then informed about the merits of Kurukshetra. " 29.



ऋषय ऊचुः। प्रजापतेरुत्तरवेदिरुच्यते सनातनी राम समन्तपञ्चकम्। समीजिरे यत्र पुरा दिवौकसो वरेण सत्रेण महावरप्रदाः॥ १॥ पुरा च राजर्षिवरेण धीमता बहूनि वर्षाण्यमितेन तेजसा। प्रकृष्टमेतत् कुरुणा महात्मना ततः कुरुक्षेत्रमितीह पप्रथे॥ २॥ राम उवाच। किमर्थं कुरुणाकृष्टं क्षेत्रमेतन्महात्मना। एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं कथ्यमानं तपोधनाः॥ ३॥ ऋषय ऊचुः। पुरा किल कुरुं राम कर्षन्तं सततोत्थितम्। अभ्येत्य शक्रस्त्रिदिवात् पर्यपृच्छत कारणम्॥ ४॥ इन्द्र उवाच। किमिदं वर्तते राजन् प्रयत्नेन परेण च। राजर्षे किमभिप्रेतं येनेयं कृष्यते क्षितिः॥ ५॥ कुरुरुवाच। इह ये पुरुषाः क्षेत्रे मरिष्यन्ति शतक्रतो। ते गमिष्यन्ति सुकृतान् लोकान् पापविवर्जितान्॥ ६॥ अवहस्य ततः शक्रो जगाम त्रिदिवं प्रभुः। राजर्षिरप्यनिर्विण्णः कर्षत्येव वसुन्धराम्॥ ७॥ आगम्यागम्य चैवेनं

अध्याय॥ ५३॥

ऋषिबोले हे बलदेवजी यह समन्तपञ्चक ब्रह्माजी की सनातन उत्तरवेदी कही जाती है जहांपर कि बड़े दाता देवताओंने उत्तम यज्ञोंद्वारा अनेकप्रकार से पूजन किया॥ १॥ पूर्वसमय में राजर्षियों में श्रेष्ठ बड़े बुद्धिमान और तेजस्वी महात्मा कुरुने इसक्षेत्र को जोताथा इस हेतु से इसकानाम लोकमें कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध हुआ बलदेवजी बोले हे तपोधन ऋषियो कुरुने इसक्षेत्रको किसहेतुसे जोता मैं इसका सब वृत्तान्त सुना चाहताहूं। ३। ऋषि बोले हे बलदेवजी निश्चय करके पूर्वसमय में इन्द्रने स्वर्गसे यहां आकर उस सदैव सन्नद्ध और जोतनेमें प्रवृत्त चित्त राजा कुरु से इसका [illegible] पूछा इन्द्रने कहा कि हे राजेन्द्र बड़े उपाय समेत आप यह क्याकाम करते हैं हे राजर्षि आपकी इच्छा में क्या करनेकी इच्छाहै जिसके कारण यह पृथ्वी आप जोतते हैं। ५। कुरुबोले हे इन्द्र जो पुरुष इस क्षेत्रमें शरीरको त्यागकरेंगे वह अपने पुण्यसे निष्पापलोकों को जावेंगे। ६। इसके पीछे इन्द्र हंसकर अपने स्वर्ग को चलेगये इसी प्रकार वह राजर्षि दुखी होहोकर

CHAPTER LIII.

The rishis said, "Samantpanchak is called the eternal alter of Brahma, where the gods has performed sacrifices and given donations. Glorious Prince Kuru had tilled the ground in former days and therefore the place was called Kurukshetra." Baldev said, "Why did Kuru plough it? I wish to hear all about it." The rishis said, "Indra came from heaven and asked *Kuru* the reason of his so doing. He said, "What are you doing, Prince; what is your aim, and why do you till the ground?" Kuru replied, "*People* dying here will be cleansed of their sins and will [illegible] to heaven." Indra laughed at this and returned to paradise. The Prince continued to labour with the

भूयो भूयोऽपहस्य च । शतक्रतुरनिर्विण्णः पृष्ट्वा पृष्ट्वा जगाम ह ॥ ८ ॥ यदा तु तप सोग्रेण चकर्ष वसुधां नृप । ततः शक्रोऽब्रवीद्देवान्राजर्षेर्यच्चिकीर्षितम् ॥९॥ एतच्छ्रुत्वा त्वब्रुवन्देवाः सहस्राक्षमिदं वचः । वरेण छन्द्यतां शक्र राजर्षिर्यदि शक्यते ॥ १० ॥ यदि ह्यत्र प्रमीता वै स्वर्गं गच्छन्ति मानवाः । अस्माननिष्ट्वा क्रतुभिर्भागो नो न भविष्यति ॥ ११ ॥ आगम्य च ततः शक्रस्तदा राजर्षिमब्रवीत् । अलं खेदेन भवतः क्रियतां वचनं मम ॥ १२ ॥ मानवा ये निराहारा देहं त्यक्ष्यन्त्यतन्द्रिताः । युधि वा निहताः सम्यगपि तिर्यग्गता नृप ॥ १३ ॥ ते स्वर्गभाजो राजेन्द्र भविष्यन्ति महामते । तथास्त्विति ततो राजा कुरुः शक्रमुवाच ह ॥ १४ ॥ ततस्तमभ्यनुज्ञाप्य प्रहृष्टेनान्तरात्मना । जगाम त्रिदिवं भूयः क्षिप्रं बलनिषूदनः ॥ १५ ॥ एवमेतद्यदुश्रेष्ठ कृष्टं राजर्षिणा पुरा । शक्रेण चाभ्यनुज्ञातं पुण्यं प्राणान् विमुञ्चताम् ॥ १६ ॥ अभ्यावेश सुरश्रेष्ठैः पुण्ये राजर्षिभिः

उसक्षेत्रको जोताकरताथा और इन्द्र बारम्बार इसी प्रकार से पूछ २ और हँस २ कर चलेजातेथे । ८ । जब राजाने उग्रतप से पृथ्वीको जोता तब उस राजर्षि के मनकी इच्छाको इन्द्रने देवताओं से कहा । ९ । देवता यह सुनकर इन्द्रसे यह वचन बोले कि हे इन्द्र जो बनसके तो इस राजर्षि को वर से लुभाना योग्य है १० । जो इस लोकमें मनुष्य यज्ञों से हमको न पूजकर इस क्षेत्र में मरकर स्वर्गको जायेंगे उस दशामें हमारे भागोंकी न्यूनता होगी । ११ । इसके पीछे इन्द्र ने आकर उस राजर्षि से कहा-आपको कष्ट करना योग्य नहीं है मैं कहूं सो कीजिये । १२ । हे राजा जोसावधान मनुष्य यहां निराहार होकर अथवा युद्ध में अच्छीरीति से मरणको पाकर शरीरको त्यागकरेंगे यद्यपि तिर्यक् योनि में भी उनका जन्म होजाय तोभी । १३ । हेबड़े बुद्धिमान् राजेन्द्र वह स्वर्गभागी होंगेइन्द्र केइस वचन को सुनकर राजाकुरु ने इन्द्र से कहा कि ऐसाही होय ।१४। तब तो इन्द्र अत्यन्त प्रसन्न चित्त से उससे पूछ शीघ्रही स्वर्गको गये ।१५। हे यादवों में श्रेष्ठ इस प्रकारसे पूर्वसमय में यह क्षेत्र राजर्षि कुरुसे जोतागयाहै और उसीप्रकार

plough. Indra came to him, put the same question again and again and would return with a laugh. Still the king continued to labour at the field. Then Indra informed the gods with the king's desire and they said, "You should tempt him with a boon if you can. 10. For we shall lose our shares of the sacrifices, if people will die there to go to heaven without performing them." Indra came to the king and said, "You need take so much trouble no longer, if you do what I say. Those wise men who die here fasting in a good cause, shall proceed to heaven." The king consented to Indra's proposal. Indra bade him farewell and returned to heaven. 15. Thus the field was ploughed by Royal Kuru and blessed was ravished by Brahma and other gods through Indra. There is no better place on the face

स्तथा। तावः परतरं पुण्यं भूमेः स्थानं भविष्यति ॥ १७ ॥ इहतप्स्यन्ति ये केचित्तपः
परमकं नराः । देहत्यागेन ते सर्वे यास्यन्ति ब्रह्मणः क्षयम् ॥ १८ ॥ ये पुनः पुण्यभाजो
वै दानं दास्यन्ति मानवाः । तेषां सहस्रगुणितं भविष्यत्यचिरेण वै ॥ १९ ॥ ये चेह
नित्यं मनुजा निवत्स्यन्ति शुभैषिणः । यमस्य विषयं ते तु न द्रक्ष्यन्ति कदाचन ॥२०॥
यक्ष्यन्ति ये च क्रतुभिर्महद्भिर्मनुजेश्वराः । तेषां त्रिपिष्टपे वासो यावद्भूमिर्धरिष्यति
॥ २१ ॥ अपि चात्र स्वयं शक्रो जगौ गाथां सुराधिपः । कुरुक्षेत्रनिबद्धां वै तां शृणुष्व
हलायुध ॥ २२ ॥ पांसवोऽपि कुरुक्षेत्राद्वायुना समुदीरिताः । अपि दुष्कृतकर्माणं
नयन्ति परमां गतिम् ॥ २३ ॥ सुरर्षभा ब्राह्मणसत्तमाश्च तथा नृगाद्या नरदेवमुख्याः ।
इष्ट्वा महार्हैः क्रतुभिर्नृसिंहाः संत्यज्य देहान् सुगतिं प्रपन्नाः ॥ २४ ॥ तरन्तुका
रन्तुकयोर्यदन्तरं रामह्रदानां च मचक्रुकस्य च । एतत् कुरुक्षेत्रसमन्तपञ्चकं प्रजाप

देवताओं ने और ब्रह्मा ने इन्द्रको आज्ञाकरी इससे श्रेष्ठतर धर्म की वृद्धिका हेतु पृथ्वीपर कोई स्थान नहीं होगा । १७ । जो कोई मनुष्य यहां उत्तम तपस्या करेंगे वह सब शरीर को त्यागकर ब्रह्मलोक को जायँगे । १८ । और जो पुण्यात्मालोग यहां धनाधिकका दान करेंगे उन्होंका वह दान थोड़ेही समयमें सहस्रगुना होगा । १९ । और जो भलाचाहनेवाले मनुष्य सदैव यहां निवास करेंगे वह कभी यमराजके देशको नहीं देखेंगे । २० । और जो राजालोग यहां बड़े यज्ञों से पूजन करेंगे उन्होंका निवास स्वर्गमें तबतक होगा जबतक कि यह पृथ्वी नियतहै ।२१। यहां देवताओं के राजा इन्द्रनेभी आप उस गाथाको गाया है जोकि कुरुक्षेत्र से सम्बन्ध रखनेवाली है हे बलदेवजी उसको आप सुनिये । २२ । कि इस कुरुक्षेत्रमें वायु से उड़ाई हुई धूल भी पापी मनुष्य को परमगति देती है ।२३। हे नरोत्तमयहां उत्तम देवता ब्राह्मण और नृगआदिक श्रेष्ठ राजाओंनेभी बड़े पूजित यज्ञों से पूजनकरके अपने अपने शरीरोंको त्यागकर उत्तम गतिको पाया । २४ । तरन्तुक और आरन्तुक परशुरामजी के ह्रद और मचक्रकका जो अन्तरहै यह कुरुक्षेत्र

of earth for the propagation of dharm than Kurukshetra. Those who perform asceticism there, will go to the region of Brahm. A charity given there will multiply a thousand fold in a very short time and the good people living there will never have to see the region of Yam. 20. The kings who perform sacrifices there, will live in paradise as long as the earth lasts. Indra the Prince of gods said a verse about this very place; which runs thus —" The dust of Kurukshetra, blown by the wind, falling on a sinful man, will lead him to salvation. Here gods, brahmans and royal sages like Nrig performed sacrifices and obtained good regions after death. The place bounded by Tarantuk, Arantuk, Parashuram's lake and Machakral

तदुत्तरवेदिरुच्यते ॥ २५ ॥ शिवं महत् पुण्यमिदं दिवौकसां सुसम्मतं सर्वगुणैः समन्वितम् । अतश्च सर्वेऽत्र नृपा हता रणे यास्यन्ति पुण्यां गतिमक्षयां सदा ॥ २६ ॥ इत्युवाच स्वयं शक्रः कुरुक्षेत्रमहोदयम् । तच्चानुमोदितं सर्वं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरैः ॥२७॥

इति गदायुद्धपर्वणि बलदेवतीर्थयात्रायां सारस्वतोपाख्याने त्रिपञ्चाशोऽध्यायः ५३ ॥

समन्तपंचक नाम ब्रह्माजीकी उत्तरवेदी कहीजाती है । २५ । यह कल्याणरूप और धर्मकी बड़ी वृद्धिका कारण देवताओंका अङ्गीकृत और सब गुणों से युक्तहै इस हेतुसे यहाँ सदैव युद्धमें मरेहुये राजालोग पवित्र और अविनाशी गतिको पावेंगे ।२६। तबब्रह्माजीसमेत इन्द्रने आप अपने मुखसे यह वर्णन किया और ब्रह्मा विष्णु महेश्वर इनतीनों ने उस सबको अङ्गीकार किया २७ ॥

---

is called Kurukshetra, Samantpanchak and the altar of Brahma. 25. It is a holy place of great merit and the heroes dying here in battle will attain indestructible state. Brahma and Indra himself said this and Brahma, Vishnu and Mahesh ratified the prediction." 27.



वैशम्पायन उवाच कुरुक्षेत्रं ततो दृष्ट्वा दत्त्वा दायांश्च सात्वतः। आश्रमं सुमहद्
दिव्यमगमज्जनमेजय॥ १॥ मधूकाम्रवणोपेतं प्लक्षन्यग्रोधसंकुलम्। चिरिबिल्वयुतं
पुण्यं पनसार्जुनसंकुलम्॥ २॥ तं दृष्ट्वा यादवश्रेष्ठः प्रवरं पुण्यलक्षणम्। पप्रच्छ तानृ
षीन् सर्वान् कस्याश्रमवरस्त्वयम्॥ ३॥ ते तु सर्वे महात्मान ऊचू राजन् हलायुधम्
शृणु विस्तरतो राम यस्यायं पूर्वमाश्रमः॥ ४॥ अत्र विष्णुः पुरा देवस्तप्तवांस्तप उत्त
मम्। अत्रास्य विधिवद्यज्ञाः सर्वे वृत्ताः सनातनाः॥५॥ अत्रैव ब्राह्मणी सिद्धा कौमारब्रह्म
चारिणी योगयुक्ता दिवं याता तपःसिद्धा तपस्विनी॥६॥ बभूव श्रीमती राजन् शाण्डिल्यस्य
महात्मनः। सुता धृतव्रता साध्वी नियता ब्रह्मचारिणी॥७॥ सा तु तप्त्वा तपो घोरं दुश्चरं स्त्रीज
नेन ह। गता स्वर्गं महाभागा देवब्राह्मणपूजिता। श्रुत्वा ऋषीणां वचनमाश्रमं तं जगाम
ह॥ ८॥ ऋषींस्तानभिवाद्याथ पार्श्वे हिमवतोऽच्युतः। सन्ध्याकार्याणि सर्वाणि निर्व

अध्याय ५४॥

वैशम्पायन बोले हे जनमेजय इसकेपीछे यादव बलदेवजी कुरुक्षेत्र को देख दानादि देकर उस बड़े दिव्य आश्रमकोगये। १। जो कि मधूक और आम्रकेवनों से संयुक्त प्लक्ष और न्यग्रोध नाम वृक्षोंसे व्याप्त चिरबिल्व वृक्षों से संयुक्तपुण्यकारी पनस और अर्जुन नाम वृक्षोंसे संकुलथा। २। यादवों में श्रेष्ठ पवित्र लक्षणवाले बलदेवजीने उस आश्रमको देखकर उन सब ऋषियों से पूछा कि यह अति उत्तम किसका आश्रमहै। ३॥ हेराजा फिर उन सब महात्माओंने बलदेवजी से कहाकि हेबलदेवजी यह जैसे प्रथम जिसका आश्रमहै उसका मूलसमेत सबवृत्तांत सुनो॥४॥ यहां पूर्वसमयमें विष्णु देवताने उत्तमतपको तपाहै और यहांहीं उनके सब सनातन यज्ञभी विधिपूर्वक पूर्णहुये॥ ५॥ इस स्थानमें कौमार ब्रह्मचारिणी ब्राह्मणी सिद्धहुई वह तपसे सिद्ध योगसे संयुक्त तपस्विनी स्वर्गकोगई॥ ६॥ हेराजा महात्मा शांडिल्य ऋषिकी पुत्री श्रीमती व्रतधारिणी पतिव्रता ब्रह्मचारिणीहुई॥ ७॥ ब्रह्मचारिणी होकर वह महाभाग देवता ब्राह्मणोंसे पूजित स्त्रियोंकेसाथ कठिनता से करनेके योग्य घोर तपको तपकर स्वर्गकोगई इसके पीछे महा प्रभाव बलदेवजी ऋषियोंके वचनको सुनकर उस आश्रमको गये॥८॥ और उनऋषियों

CHAPTER LIV

Vaishampayan said to Janamejaya, "Having seen Kurukshetra and given donations there, Baldev went to a hermitage surrounded by various trees. He asked of the rishis about its history and they said, "Here Vishnu had performed asceticism and completed his sacrifices. 5. Here a Brahman maiden got perfection and went to paradise. She was the daughter of Shandliya rishi and observed the vow of celibacy. She performed penances hard to be done even by men, and being respected by gods and Brahmans, went to paradise." Having heard the talk of those rishis, Baldev went to the hermitage.

त्योरुरुहेऽचलम् ॥ ९ ॥ नातिदूरं ततो गत्वा नगंतालध्वजो बली । पुण्यं तीर्थवरं दृष्ट्वा विस्मयं परमं गतः ॥ १० ॥ प्रभावञ्च सरस्वत्याः प्लक्षप्रस्रवणं बलः । सम्प्राप्तः कारपवनं प्रवरं तीर्थमुत्तमम् ॥ ११ ॥ हलायुधस्तत्र चापि दत्त्वा दानं महाबलः ॥ १२ ॥ आप्लुतः सलिले पुण्ये सुशीते विमले शुचौ । अन्तर्पयामास पितॄन् देवांश्च रणदुर्मदः ॥ १३ ॥ तत्रोष्यैकान्तु रजनीं यतिभिर्ब्राह्मणैः सह । मित्रावरुणयोः पुण्यं जगामाश्रममच्युतः ॥ १४ ॥ इन्द्रोऽग्निरर्यमा चैव यत्र प्राक् प्रीतिमाप्नुवन् । तं देशं कारपवनाद्यमुनायां जगाम ह ॥ १५ ॥ स्नात्वा तत्रापि धर्मात्मा परां प्रीतिमवाप्य च । ऋषिभिश्चैव सिद्धैश्च सहितो वै महाबलः । उपविष्टः कथाः शुभ्राः शुश्राव यदुपुङ्गवः ॥ १६ ॥ तथा तु तिष्ठतां तेषां नारदो भगवानृषिः । आजगामाथ तं देशं यत्र रामो व्यवस्थितः ॥ १७ ॥ जटामण्डलसंवीतः स्वर्णचीरो महातपाः । हेमदण्डधरो राजन् कमण्डलुधरस्तथा ॥ १८ ॥ कच्छपीं सुखशब्दां तां गृह्य वीणां मनोरमाम् । नृत्यगीत

को दण्डवत् करके हिमवान् पर्वतके पार्श्वमें सन्ध्याके सबकर्मोंको करके उसपर्वतपर चढ़े ॥ ९ ॥ इसके पीछे तालध्वजधारी पराक्रमी बलदेवजी ने थोड़ी दूर पर्वतपर जाकर धर्मकी वृद्धिके हेतुरूप उत्तम तीर्थको सरस्वती के और प्लक्षनाम झिरनेको देखकर आश्चर्यको पाया और वहांसे चलकर कारपवन नाम अत्यंत उत्तम तीर्थको पाया ॥ ११ ॥ महाबली बलदेवजी वहां भी दानको देकर ॥ १२ ॥ पवित्र शीतल निर्मल और धर्म की वृद्धिके कारणरूप जल में स्नान करनेवाले युद्धदुर्मदने देवता और पितरोंको अच्छेरीतिसे तृप्तकिया ॥ १३ ॥ फिर वह अजेय यती और ब्राह्मणों समेत वहां एकरात्रि निवासकरके मित्रावरुणके पवित्र आश्रमको गये ॥ १४ ॥ इसीरीति कारपवनसे उस यमुना देशकोगये जहांपर कि पूर्व समयमें इन्द्र अग्नि और अर्यमानाम देवताओंने परम प्रीतिको पायाथा ॥ १५ ॥ उस तीर्थमें भी स्नानकर धर्मात्मा बलदेवजी ने परमप्रीतिको पाया ऋषी सिद्धों समेत बैठे हुवे महाबली बलदेवजीने उज्वल कथाओंको सुना उसप्रकार उन लोगोंके बैठेपर भगवान् नारदऋषि उसस्थानपर आये जहांपर बलदेवजी थे ॥ १७ ॥ हे राजा वह जटामण्डल समेत स्वर्णमयी वस्त्रधारी महातपस्वी स्वर्णदण्ड धारी कमंडल हाथमें लिये नृत्यगानमें सावधान देवता ब्राह्मणोंके पूजित ॥ १८ ॥ कलहोंके करनेवाले

He bowed down to the rishis, and having performed evening service there, he ascended the hill. A little higher up he saw the holy place and was astonished at the greatness of the Saraswati and the waterfalls. Further on, he visited the holy place, known as Karapvan. Having given charity and bathed in the pure, cold and holy water, he gratified the pitris. Having stayed there one night, he proceeded to the hermitage of Mitravarun. From Karapvan he went to the place at the Yamuna, where the gods Indra, Agni and Aryama had met in friendship in former days. Baldev was much pleased with

च कुशलो देवब्राह्मणपूजितः ॥ १९ ॥ प्रकर्ता कलहानाञ्च नित्यञ्च कलहप्रियः । तं देशमगमद्यत्र श्रीमान्रामो व्यवस्थितः ॥ २० ॥ प्रत्युत्थाय तु तं सर्वे पूजयित्वा यतव्रतम् । देवर्षिं पर्यपृच्छन्त स यथावृत्तं कुरून् प्रति ॥ २१ ॥ ततोऽस्याकथयद्राजन्नारदः सर्ववेदवित् । सर्वमेतद्यथावृत्तमतीव कुरुसंक्षयम् ॥ २२ ॥ ततोऽब्रवीद्रौहिणेयो नारदं दीनया गिरा । किमवस्थन्तु तत्क्षत्रं ये च तत्राभवन्नृपाः । २३ ॥ श्रुतमेतन्मया पूर्वं सर्वमेव तपोधन । विस्तरश्रवणे जातं कौतूहलमतीव मे ॥ २४ ॥ नारद उवाच । पूर्वमेव हतो भीष्मो द्रोणः सिन्धुपतिस्तथा । हतो वैकर्तनः कर्णः पुत्राश्चास्य महारथाः ॥ २५ ॥ भूरिश्रवा रौहिणेय मद्रराजश्च वीर्यवान् । एते चान्येच बहवस्तत्र तत्र महाबलाः ॥ २६ ॥ प्रियान् प्राणान् परित्यज्य जयार्थं कौरवस्य वै । राजानो राजपुत्राश्च

सदैव कलहप्रिय नारदजी उस चित्तरोचक शब्दवाली अपनी कच्छपी नाम वीणा को लेकर उस देशकोगये जहांपर कि श्रीमान् बलदेवजी नियतथे । २० । बलदेवजीने अभ्युत्थान पूर्वक उस सावधानव्रत देवर्षि नारदजीको सुन्दर रीतिसे पूजकर कौरवोंका वृत्तान्त पूछा । २१ । सर्वधर्मज्ञ नारदजी ने बलदेवजी से कौरवों के बड़े कठिन नाशको वर्णन किया । २२ । तब बलदेवजीने भी खेदयुक्त होकर नारदजीसे कहा कि जो राजालोग वहां वर्तमानथे वह सब क्षत्रियों का समूह कैसा है । २३ । हे तपोधन इसको मैंने पूर्व सुनाहै परन्तु अब ब्योरे समेत सब पूरे२ वृत्तान्त आपसे सुनना चाहताहूं । २४ । नारदजी बोले कि भीष्मजी तो प्रथमही मारेगये इसीप्रकार द्रोणाचार्य और जयद्रथ और पुत्र सहित कर्ण मारे गये । २५ । हे बलदेवजी भूरिश्रवा और पराक्रमी राजामद्र मारेगये इनके विशेष अन्य२ बहुत से ऐसे बलवान् लोगभी । २६ । कौरवोंकी विजय के निमित्त अपने प्यारे प्राणोंको त्यागकर मारेगये, जो कि युद्धोंमें मुख न फेरनेवाले राजा और

bathing there and then sat down to hear religious discourses. When they were thus seated together, Narad the rishi came to them, 17. He wore long locks, golden clothes and had gold staff and ewer in hand. He was skilful in dancing and singing, was respected by gods and brahmans and loved dissentions. He came playing on his lute. Baldev stood up at his sight and having given proper respect to the divine sage, asked of him about the Kauravas. 21. Narad informed him of the great destruction of the Kauravas. Baldev was much grieved to hear the sad news and inquired about the other kings assembled there. Narad said, " Bhishm was the first to fall and then Drona, Jayadrath, Karan and his son were slain. 25. Bhurisliravа and the prince of Madra are slain like other powerful allies of the Kauravas and the princes who were unflinching in fight. Only three persons are alive on the side of Duryodhan. They are Kripacharya

सपरेषामित्रार्दितः ॥ २७ ॥ अवशिष्टाश्च महाबाहो शृणु मे तत्र माधव । धार्तराष्ट्रबले
शेषास्त्रयः समितिमर्दनाः ॥ २८ ॥ कृपश्च कृतवर्मा च द्रोणपुत्रश्च वीर्यवान् । तेपि वै
विद्रुता राम दिशो दश भयात्तदा ॥ २९ ॥ दुर्योधनो हते शल्ये विद्रुतेषु कृपादिषु ।
ह्रदं द्वैपायनम् नाम विवेश भृशदुःखितः ॥ ३० ॥ शयानं धार्तराष्ट्रन्तु स्तम्भिते
सलिले तदा । पाण्डवाः सह कृष्णेन वाग्भिरुग्राभिरार्दयन् ॥ ३१ ॥ स तुद्यमानो बल
वान् वाग्भी राम समन्ततः । उत्थितः स ह्रदाद्वीरः प्रगृह्य महतीं गदाम् ॥ ३२ ॥
स चाप्युपगतो योद्धुं भीमेन सह साम्प्रतम् । भविष्यति तयोरद्य युद्धं राम सुदारु
णम् ॥ ३३ ॥ यदि कौतूहलं तेऽस्ति व्रज माधव मा चिरम् । पश्य युद्धं महाघोरं शिष्य
योर्यदि मन्यसे ॥ ३४ ॥ वैशम्पायन उवाच । नारदस्य वचः श्रुत्वा तानभ्यर्च्य द्विज
र्षभान् । सर्वान् विसर्जयामास येतेनाभ्यागताः सह ॥ ३५ ॥ गम्यतां द्वारकां चेति सोऽन्व

राजकुमारथे । २७ हे महाभाग माधवजी वहां और जीवते बचेहैं उनको भी मुझसे सुनों युद्धमें मर्दन करनेवाले तीनपुरुष जो दुर्योधनकी सेनामें बचे हैं । २८ । अर्थात् कृपाचार्य, कृतवर्मा और पराक्रमी अश्वत्थामा हे बलदेवजी वह तीनोंभी भयभीतहोकर दशों दिशाओं का भाग । २९ । शल्यके मरने और कृपाचार्यादिक तीनों बचेहुवे शूरवीरों के भागजाने पर अत्यन्त दुखी दुर्योधन व्यासजीके द्वैपायननाम ह्रदमें प्रवेश करगया । ३० । वहां श्रीकृष्णजी समेत पाण्डवों ने उसजलमें नियत और शयन करनेवाले दुर्योधन को उग्र वचनोंसे पीड़ावान् किया । ३१ । हे भगवन् बलदेवजी तब वह वीर चारों ओर के दुर्वचनों से पीड़ावान् होकर उस ह्रद से गदाको लेकर उठा । ३२ । सो वह भीमसेनसे सम्मुख लड़नेको गया अब दोनोंका भी महाभयानक युद्धहोगा । ३३ । हेमाधवजी जो आपको उसयुद्धके देखनेको उत्साहहै तो शीघ्रजाओ देर मतकरो आप अपने दोनों शिष्यों के घोरयुद्ध को देखिये । ३४ । वैशम्पायन बोलेकि बलदेवजीने नारदजीके वचनको सुनकर उन उत्तम ब्राह्मणों को अच्छी रीतिसे पूजकर विदाकिया जो उनके साथमें आयेथे । ३५ । और बड़े प्रसन्नचित्त महाओजस्वी बलदेवजी ने साथियोंको आज्ञाकरी कि

Kritvarma and Ashwathama, but they too, ran away for fear. At *the fall of his warriors and the rout of Kripacharya and others,* Duryodhan, much grieved, hid himself in the lake of Vyas. 30. There Shri *Krishn* and the Pandavas wounded Duryodhan with their harsh words and he came out of the lake with his mace to fight with Bhim. The two warriors will now fight a dreadful battle. You must hasten to go to the place if you have a mind to witness the battle of your two disciples." Vaishampayan said that Baldev on hearing the words of Narad sent away the Brahmans who were with him. 35. He ordered his attendants to go to Dwarka and coming down from the hill and

प्राप्तानुगामिनः । सोऽपनीयर्षिवल्लभेष्ठात् सुश्रमस्रवणात् शुभात् ॥ ३६ ॥ ततः प्रीतमना रामः श्रुत्वा तीर्थफलं महत् । विप्राणां सन्निधौ श्लोकमगायदिममच्युतः ॥ ३७ ॥ सरस्वतीवाससमा कुतो रतिः सरस्वतीवाससमाः कुतो गुणाः । सरस्वतीं प्राप्य दिवं गता जनाः सदा स्मरिष्यन्ति नदीं सरस्वतीम् ॥ ३८ ॥ सरस्वती सर्वनदीषु पुण्या सरस्वती लोकसुखावहा सदा । सरस्वतीं प्राप्य जनाः सुदुष्कृतं सदा न शोचन्ति परत्र चेह च ॥ ३९ ॥ ततो मुहुर्मुहुः प्रीत्या प्रेक्षमाणः सरस्वतीम् । हयैर्युक्तं रथं शुभ्रमातिष्ठत परंतपः ॥ ४० ॥ स शीघ्रगामिना तेन रथेन यदुपुङ्गवः । दिदृक्षुरभिसम्प्राप्तः शिष्ययुद्धमुपस्थितम् ॥ ४१ ॥

गदायुद्धपर्वणि बलदेवतीर्थयात्रायां सारस्वतोपाख्याने चतुष्पञ्चाशोऽध्यायः ५४ ॥

कृष्णद्वारका को जाओ पर्वतोंमें महादेव सुन्नाम सुभ दर्शनसे उबरकर । ३६ । और तीर्थके बड़े फलको सुनकर ब्राह्मणोंके सम्मुख इस श्लोक को कहाकि । ३७ । सरस्वतीपर निवास करनेके सिवाय कोई अन्य उत्तमगुण नहीं है सब मनुष्य इस सरस्वतीको पाकर स्वर्गकोगये और सदैव सरस्वती नदीको स्मरणकरेंगे । ३८ । सबनदियों में सरस्वती नदीबड़ धर्मका कारण है सरस्वती सदैव लोकका भला करनेवाली है मनुष्य इस सरस्वती को पाकर सदैवइस लोक और परलोक में पापको नहीं सोचते हैं । ३९ । इसके पीछे शत्रुसंतापी बलदेवजी प्रीतिसे बारम्बार सरस्वती को देखते सुन्दर घोड़ेवाले उज्ज्वल रथपर सवारहुये । ४० । शिष्यों का वर्तमान युद्ध देखने के अभिलाषी वह बलदेवजी उस शीघ्रगामी रथकी सवारीसे उनके सम्मुख जा पहुँचे । ४१ ।

---

having heard the merit of the holy place, he recited the following verse—" There is nothing better than a residence on the bank of the Saraswati who has led many to heaven and they will always remember her. Saraswati is the best of rivers and does good to the world Having got at Saraswati, people would never think of committing sins." Then looking again and again towards Saraswati, Baldev mounted his good car and proceeded to witness the fight of his two disciples " 41.

वैशम्पायन उवाच । एवं तदभवद्युद्धं तुमुलं जनमेजय । यत्र दुःखान्वितो राजा धृतराष्ट्रोऽब्रवीदिदम् ॥ १ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । रामं सन्निहितं दृष्ट्वा गदायुद्ध उपस्थिते । मम पुत्रः कथं भीमं प्रत्ययुध्यत सञ्जय ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । रामसान्निध्यमासाद्य पुत्रो दुर्योधनस्तव । युद्धकामो महाबाहुः समहृष्यत वीर्यवान् ॥ ३ ॥ दृष्ट्वा लाङ्गलिनं राजा प्रत्युत्थाय च भारत । प्रीत्या परमया युक्तः समभ्यर्च्य यथाविधि । आसनं च ददौ तस्मै पर्यपृच्छदनामयम् ॥ ४ ॥ ततो युधिष्ठिरं रामो वाक्यमेतदुवाच ह । मधुरं धर्मसंयुक्तं शूराणां हितमेव च ॥ ५ ॥ मया श्रुतं कथयतामृषीणां राजसत्तम । कुरुक्षेत्रं परं पुण्यं पावनं स्वर्ग्यमेव च । दैवतैरृषिभिर्जुष्टं ब्राह्मणैश्च महात्मभिः ॥ ६ ॥ तत्र वै योत्स्यमाना ये देहं त्यक्ष्यन्ति मानवाः । तेषां स्वर्गे ध्रुवो वासः शक्रेण सह मारिष ॥ ८ ॥ तस्मात् समन्तपञ्चकमितो याम द्रुतं नृप । प्रथितोत्तरवेद्यां वै देवलोके प्रजापतेः ॥ ९ ॥ तस्मिन्महापुण्यतमे त्रैलोक्यस्य सनातने । संग्रामे निधनं प्राप्य ध्रुवं स्वर्गो

अध्याय । ५५ ।

वैशम्पायन बोले हे जनमेजय जिस स्थान पर दुःखी राजा धृतराष्ट्र ने यह वचन कहा कि । १ । हे संजय मेरापुत्र गदायुद्धके वर्तमान होनेपर बलदेवजीको सम्मुख देखकर कैसे युद्धमें प्रवृत्तहुआ और किसप्रकारसे भीमका युद्धहुआ संजयबोले कि आप का पुत्र महाबाहु युद्धाभिलाषी दुर्योधन बलदेवजी की वर्त्तमानता देखकर बहुत प्रसन्न हुआ । ३ । और हे भरतवंशी बड़ी प्रीति से युक्त राजायुधिष्ठिर ने हलधारी बलदेवजीको आयाहुआ देखकर बड़े सत्कार पूर्वक उनको उत्तम आसन दिया और उनके कुशल मङ्गलको पूछा । ४ । तब बलदेवजी ने युधिष्ठिर से बड़ा मधुर धर्म्म से युक्त और शूरोंका हितकारी यह वचन कहा कि । ५ । हे राजाओंमें श्रेष्ठ मैंने ऋषियोंके मुखसे सुनाहै कुरुक्षेत्र धर्म्मकी वृद्धिका बड़ा कारण रूप महापवित्र स्वर्ग का देनेवाला होकर देवता ऋषि और महात्मा ब्राह्मणों से सेवित है । ७ । वहां पर जो युद्ध करनेवाले मनुष्य अपने शरीरको त्याग करेंगे उनका निवास निश्चय करके स्वर्ग में इन्द्रके साथ होगा । ८ । हे राजा इस हेतुसे शीघ्रही यहां से समन्तपंचक को चलें वह देवलोक में ब्रह्माजी की उत्तर

CHAPTER LV

Vaishampayan said that king Dhritrashtra in great grief asked of Sanjaya to describe the attitude of his son in battle in the presence of Baldev, and how he fought with Bhim. Sanjaya said, " Duryodhan was much pleased at the sight of Baldev. Yudhishthir welcomed him with greetings. Then Baldev said to Yudhishthir these sweet and true words.—" I have heard that *Kurukshetra* is a very holy place and resort of gods, rishis and brahmans. 7. Those who die there fighting will live with Indra in paradise. Let us therefore go to Samantpanchak the altar of Brahma, for he who dies there will surely

भविष्यति ॥ १० ॥ तथेत्युक्त्वा महाराज कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः । समन्तपञ्चकं वीर प्रायादभिमुखः प्रभुः ॥ ११ ॥ ततो दुर्योधनो राजा प्रगृह्य महतीं गदाम् । पद्भ्यामम‌र्षाद्‌द्युतिमानगच्छत् पाण्डवैः सह ॥ १२। तथा यान्तं गदाहस्तं वर्मणा चापि दंशितम्। अन्तरीक्षगता देवा साधुसाध्वित्यपूजयन् । वार्त्तिकाश्चारणा ये तु दृष्ट्वा तेहर्षमागता ॥ १३ ॥ स पाण्डवैः परिवृतः कुरुराजस्तवात्मजः । मत्तस्येव गजेन्द्रस्य गतिमास्थाय सोऽव्रजत् ॥ १४। ततः शङ्खनिनादेन भेरीणाञ्च महास्वनैः । सिंहनादैश्च शूराणां दिशः सर्वाः प्रपूरिताः ॥ १५ ॥ प्रतीच्यभिमुखं देशं यथोद्दिष्टं सुतेन ते । गत्वा तु ते परिक्षिप्तं समन्तात् सर्वतो दिशः ॥ १७ ॥ दक्षिणेन सरस्वत्याश्चापरं तीर्थमुत्तमम् तस्मिन् देशे त्वनिरिणे ते तु युद्धमरोचयन् ॥ १८॥ ततो भीमो महाकोटिं गदां गृह्याथ वर्मभृत्। बिभ्रद्रूपं महाराज सदृशं हि गरुत्मतः। ॥ १९ ॥ अवबद्धशिरस्त्राणः सङ्ख्ये,

बेदी प्रसिद्ध है उस अत्यन्त पवित्र तीनों लोकके सनातन तीर्थ पर युद्धमें मरण को पाकर निश्चय स्वर्ग होगा । १० । हे महाराज कुन्ती का पुत्र प्रभु वीर युधिष्ठिर बहुत अच्छा कहकर समन्तपंचक के सम्मुख गया। ११। इसकेपीछे तेजस्वी राजा दुर्योधन क्रोधसे बड़ी गदाको लेकर पांडवों के साथ पदातीही चला। १२ । अन्तरिक्षचारी देवताओं ने उस गदा और कवचधारी दुर्योधनको देखकर धन्य२करके बड़ीप्रशंसाकरी और जो वायुकेसाथ चलनेवाले सिद्ध चारण थे वह भी उसको देखकर प्रसन्नहुये । १३ । वह आपका पुत्र कौरवराज दुर्योधन पांडवोंसे घिराहुआ मतवाले गजराजकीसी चालमें नियत होकर चला । १४ । फिर शङ्ख भेरियोंके बड़ेशब्द और शूरोंके सिंहनादोंसे सब दिशा पूर्णहुईं । १५ । और थोड़ेही समयमें वह नरोत्तम कुरुक्षेत्र में पहुंचे वहां जैसे आपके पुत्रने बतलाया उसी प्रकार जाकर वह पश्चिम ओरका देश चारोंओर सब दिशाओं में युक्त होकर परिधिरूपहुआ । १७ । जोकि सरस्वती के दक्षिण ओरसे दूसरा उत्तमतीर्थ है वहां हरित भूमियुक्त देशमें युद्ध करना स्वीकार करके नियत किया । १८ । इसके पीछे कवचधारी भीमसेन ने बड़ी कोटिवाली गदाको लेकर गरुड़के समान रूपको धारण किया । १९ । युद्धमें शिरस्त्राण और सुवर्णका कवचधारी आपका पुत्र

go to heaven " 10 Yudhishthir consented to this proposal and went towards Samantpanchak Duryodhan followed the Pandavas on foot, enraged and armed with his mace The gods in the air praised him and the sidhas and charans were well pleased. Surrounded by the Pandavas, your son Duryodhan went on like a prince of elephants, and the directions were filled with the sounds of conchs and drums 15. In a short time they entered Kurukshetra led by your son to the west of the country bounded by the Saraswati and selected a green spot. Bhimsen armed with mace and armour looked like garur, while your son protected by helmet and mail looked like

काञ्चन वर्मभृत् । रराज राजन् पुत्रस्ते काञ्चनः शैलराडिव ॥ २० । ततो दुर्य्योधनो राजा गदामादाय धीर्य्यवान् । भीमसेनमभिप्रेक्ष्य गजोगजमिवाह्वयत् ॥ २१ । अद्रि सारमयीं भीमस्तथैवादाय वीर्य्यवान् । आह्वयामास नृपतिं सिंह सिंह यथावने ॥ २२। तावुद्यतगदापाणी दुर्य्योधनवृकोदरौ । संयुगे प्रचकाशेते गिरी सशिखराविव ॥ २३ ॥ तावुभौ समातिक्रुद्धावुभौ भीमपराक्रमौ । उभौ शिष्यौ गदायुद्धे रौहिणेयस्य धीमत ॥ २४ ॥ उभौ सदृशकर्माणौ मयवासवयारिव । तथा सदृशकर्माणौ वरुणस्य महाबली ॥ २५ ॥ वासुदेवस्य रामस्य तथा वैश्रवणस्य च । सदृशौ तौ महाराज मधुकैटभयो र्युधि ॥ २६ ॥ उभौ सदृशकर्माणौ तथा सुन्दोपसुन्दयो । रामरावणयोश्चैव वालिसु ग्रीवयोस्तथा २७। तथैव कालस्य समौ मृत्योश्चैव परन्तपौ। अन्योन्यमभिधावन्तौ मत्ता विव महाद्विपा ॥ २८ । वासितासङ्गमे दृप्तौ शारदीव मदोत्कटौ । उभौ भोधावव दीप्त पन्नगाविव ॥ २९ ॥ अन्योन्यमभिसंरब्धौ प्रेक्षमाणावरिन्दमौ । उभौ भरत भरतशार्दूलौ विक्रमेण समन्वितौ ॥ ३० ॥ सिंहाविव दुराधर्षौ गदायुद्धे परन्तपौ ।

सुवर्णके गिरिराजके समान शोभायमान हुआ । २० । तदनन्तर पराक्रमी दुर्योधन ने गदाको लेकर भीमसेन को देखकर बुलाया जैसे हाथी हाथी को बुलाता है । २१। इसीप्रकार पराक्रमी भीमसेनने गदाको लेकर राजा को ऐसे बुलाया जैसे कि वनमें सिंहको सिंह बुलाताहै । २२ । वह हाथ में गदा उठानेवाले दुर्योधन और भीमसेन युद्ध में ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि दो शिखरधारी पर्वत होते हैं । २३ । वह दोनों अत्यन्त क्रोधयुक्त भयानक पराक्रम गदायुद्ध में बड़े कुशल बलदेवजी के शिष्यथे । २४ । यमराज और इन्द्रकी समान कर्म करनेवाले दोनों महाबली वरुणके समान कर्मकर्त्ता थे ।२५। हे महाराज इसीप्रकार वह दोनों वासु देवजी परशुरामजी कुबेर देवता और मधुकैटभ दैत्योंके समान होकर ।२६। दोनों सुन्द, उपसुन्द, राम रावण और वालि,सुग्रीव के समान कर्म करनेवालेथे ।२७।वैसेही शत्रुओं के तपानेवाले वह दोनों कालमृत्युकी समान मतवाले बड़े हाथियों के समान परस्पर सम्मुख दौड़नेवाले थे । २८ । वह भरतवंशियों में श्रेष्ठ शरदऋतुके मध्य में हथिनीके मिलापमें मत्त अहंकारी मतवाले विजयाभिलाषी हाथियोंके समान थे । २९ । फिर वह दोनों शत्रुसंतापी परस्पर क्रोधयुक्त देखनेवाले और सर्पोंके समान क्रोधके प्रकाशित विषोंके उगलनेवालेथे । ३० । दोनों भरतर्षभ पराक्रमी

a mountain of gold 20 Valiant Duryodhan challenged *Bhim* like an elephant and the latter challenged the former like a lion The two warriors armed with maces looked like peaked mountains. They were both disciples of Baldev in mace fighting and were brave like Yam, Indra or Varun 25 They were brave like Vasudev, *Parashuram*, Kuver Madhu-Kaitabh, Sund and Upsund, Ram and *Ravan*, Vali and Sugreve or Death They fought like two mad elephants. They looked at each other in anger like serpents vomitting venom 30.

मत्ताविव जिगीषन्तौ मातङ्गौ भरतर्षभ ॥ ३१ ॥ नखदंष्ट्रायुधौ वीरौ व्याघ्राविव दुरुत्
सहौ । प्रजासंहरणे क्षुब्धौ समुद्राविव दुस्तरौ ॥ ३२ ॥ लोहिताङ्गाविव क्रुद्धौ प्रतपन्तौ
महारथौ । पूर्वपश्चिमजौ मेघौ वायुना क्षुभितौ यथा ॥ ३३ ॥ गर्जमानौ सुविषमं
क्षरन्तौ प्रावृषीव हि । गदेमयुतौ महात्मानौ दीप्तिमन्तौ महाबलौ ॥ ३४ ॥ ददृशाते
कुरुश्रेष्ठौ कालसूर्याविवोदितौ । व्याघ्राविव सुसंरब्धौ गर्जन्ताविव तोयदौ ॥ ३५ ॥
जहृषाते महाबाहू सिंहौ केसरिणाविव । गजाविव सुसंरब्धौ ज्वलिताविव पावकौ
॥ ३६ ॥ ददृशाते महात्मानौ सशृङ्गाविव पर्वतौ । रोषात् प्रस्फुरमाणोष्ठौ निरीक्षन्तौ
परस्परम् ॥ ३७ ॥ तौ समेतौ महात्मानौ गदाहस्तौ नरोत्तमौ । उभौ परमसंहृष्टावुभौ
परमसम्मतौ ॥ ३८ ॥ सदश्वाविव हेषन्तौ बृंहन्ताविव कुञ्जरौ । वृषभाविव गर्जन्तौ
दुर्योधनवृकोदरौ ॥ ३९ ॥ दैत्याविव बलोन्मत्तौ रेजतुस्तौ नरोत्तमौ । ततो दुर्योधनो

से भरे सिंहों के समान अजेय और गदायुद्ध में कुशलथे । ३१ । दोनों नख दंष्ट्र
रूप शस्त्र रखनेवाले धीर व्याघ्रों के समान दुःखपी उत्सववाले सृष्टि के नाशमें
क्रोधभरे दो समुद्रों के समतुल्यथे । ३२ । जैसे पूर्व पश्चिमकी वायुसे उत्पन्न होने
वाली वायु से चलायमान दोबादल होते हैं उसीप्रकार वह दोनों महारथी भी
क्रोधसंयुक्त होकर दौड़नेवालेथे । ३३ । वर्षाऋतु में कठिन गर्जनाकरते किरणों से
युक्त दोबादलकेसमान तेजस्वी पराक्रमीहोकर महासाहसी । ३४ । कौरवोंमें श्रेष्ठ
वह दोनों उदयहुये दोकालरूपी सूर्यकेसमान अत्यन्त क्रोधी व्याघ्रोंके समान
गर्जनेवाले दोबादलकेरूप दिखाईपड़े । ३५ । केसरी सिंहोंकेसमान महाक्रोधी हा
थियों के समान और ज्वलितअग्नि के समान दोनों महबाहु ने आनन्द को
पाया । ३६ । क्रोधसे चलायमान दोनोंहोठ परस्पर देखनेवाले दोनोंमहात्मा
शिखरधारी पर्वतोंकेसमान दृष्टिगोचरहुये ।३७ वह दोनोंमहात्मा नरोत्तम गदाओं
को हाथमें लेकर सम्मुख हुये दोनों अत्यन्त प्रसन्नचित्त होकर परस्पर अङ्गीकृत
थे । ३८ । वह दुर्योधन और भीमसेन हिंसनेवाले उत्तमघोड़े चिग्घाड़नेवालेहाथी
और हुंकारनेवाले बैलोंके समान दिखाई दिये । ३९ । वह पराक्रमसे मतवाले
दोनों नरोत्तम दैत्यों के समान शोभायमान हुये हे राजा इसके पीछे दुर्योधन ने

They were brave like lions and were skilful in fighting with the mace. Like lions having teeth and nails, they were angry like two seas. They ran like two clouds coming from opposite directions. They were like the two suns of pralaya or like two enraged lions or fire. Biting their lips in anger, they looked like two hills. They faced each other with maces and roared like horses, elephants and bulls. They looked like two daityas. Duryodhan said to Yudhishthir, Krishn and Baldev, "The pride of Panchals, Srinjayas and Kaikaya is ready to fight. You may look on at our fight. Yudhish-

राजन्निदमाह युधिष्ठिरम् ॥ ४० ॥ भ्रातृभिः सहितश्चैव कृष्णेन च महात्मना । रामेणा
मितवीर्येण वाक्यं शौटीर्यसम्मतम् ॥ ४१ ॥ केकयैः सृञ्जयैर्गुप्तः पाञ्चालैश्च महात्
मभिः । इदं व्यवसितं युद्धं मम भीमस्य चोभयोः । ४२ ॥ उपोपविष्टाः पश्यध्वं सहै
भिर्नृपपुङ्गवैः । श्रुत्वा दुर्योधनवचः प्रत्यपद्यन्त तत्तथा ॥ ४३ ॥ ततः समुपविष्टं तत्
सुमहद्राजमण्डलम् । विराजमानं ददृशे दिवीवादित्यमण्डलम् ॥ ४४ ॥ तेषां मध्ये महा
बाहुः श्रीमान् केशवपूर्वजः । उपविष्टो महाराज पूज्यमानः समन्ततः ॥ ४५ ॥ शुशुभे
राजमध्यस्थो नीलवासाः सितप्रभः । नक्षत्रैरिव सम्पूर्णो वृतो निशि निशाकरः ॥ ४६ ॥
तौ तथा तु महाराज गदाहस्तौ सुदुःसहौ । अन्योन्यं वाग्भिरुग्राभिस्तक्षमाणौ व्यव
स्थितौ ॥ ४७ ॥ अप्रियाणि ततोऽन्योन्यमुक्त्वा तौ कुरुसत्तमौ । उदीक्षन्तौ स्थितौ वीरौ
वृत्रशक्रौ यथाहवे ॥ ४८ ॥

इति महाभारतेशल्यपर्वणिगदायुद्धे पञ्चपञ्चाशोऽध्यायः ५५ ॥

महात्मा श्रीकृष्ण और बड़े पराक्रमी बलदेवजी और भाइयोंसमेत नियत युधिष्ठिरसे बड़े अहङ्कारियों के समान यह वचन कहा । ४१ । कि जो बड़ेसाहसी पाञ्चाल सृञ्जी और केकयदेशियों से अपने को बड़ा अहंकारी मानता था उस भीमसेन से मेरा युद्ध निश्चयहुआ । ४२ । हे युधिष्ठिर तुम इन उत्तम राजाओं समेत इस मेरे और भीमसेन के युद्ध को देखो तब युधिष्ठिरने दुर्योधन के वचन को सुनकर वैसाहीकिया । ४३ । इसके अनन्तर वह सब राजमण्डल वहां बैठगया और बैठकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि आकाशमें सूर्यमण्डल शोभित होताहै । ४४ । हे महाराज उन सबके बीच में केशवजी के बड़े भाई महाबाहु श्रीमान् बलदेवजी भी बैठगये । ४५ । उज्ज्वल वर्ण नीलाम्बरधारी बलदेवजी उन राजाओं के मध्यमें ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि रात्रि में नक्षत्रों से संयुक्त पूर्ण चन्द्रमा होताहै ।४६। हे महाराज इसीप्रकार वह दोनों गदा हाथमें लिये कठिनता से सहने के योग्य परस्पर उग्रवचनों से घायल करते नियतहुये । ४७ । अर्थात् वह कौरवों में श्रेष्ठ वहां अयोग्य अप्रिय वचनों को परस्पर कहकर ऊपर को देखते ऐसे नियत हुये जैसे कि युद्धमें इन्द्र और वृत्रासुर नियत हुये थे ४८ ॥

---

thir complied with Duryodhan's req·e·st. The kings' circle, sitting there, looked glorious like the orb of the Sun Keshava's elder brother, Baldev sat in their midst and looked like the moon in the midst of stars. The two warriors, armed with maces, wounded each other with harsh words, and stood in the field of battle like Indra and Vritrasur," 48.

वैशम्पायन उवाच । ततो वाग्युद्धमभवत्तुमुलं जनमे-जय । यत्र दुःखान्वितो राजा धृतराष्ट्रोऽब्रवीदिदम् ॥ १ ॥ धिगस्तु खलु मानुष्यं यस्य निष्ठेयमीदृशी । एकादशचमूभर्त्ता यत्र पुत्रो ममानघ ॥ २॥ आज्ञाप्य सर्वान्नृपतीन् भुक्त्वा चेमां वसुन्धराम् । गदामादाय वेगेन पदातिः प्रस्थितो रणे ॥ ३॥ भूत्वा हि जगतो नाथो ह्यनाथ [illegible] मे सुतः। गदामुद्यम्य यो याति किमन्यद्भागधेयतः ॥ ४ ॥ अहो दुःखं, महद् प्राप्तं पुत्रेण मम सञ्जय । एवमुक्त्वा सुदुःखार्त्तो विरराम जनाधिपः ॥ ५ ॥ सञ्जय उवाच । स मेघनिनदो हर्षान्निनर्दन्निव गोवृषः । आजुहाव तदा पार्थं युद्धाय युधि वीर्यवान् ॥ ६ ॥ भीममाह्वयमाने तु कुरुराजे महात्मनि । प्रादुरासन् सुघोराणि रूपाणि विविधान्युत ॥७॥ ववुर्वाताः सनिर्घाताः पांशुवर्षं पपात च । बभूवुश्च दिशः सर्वास्तिमिरेण समावृताः ॥८॥ महास्वनाः सनिर्घातास्तुमुला लोमहर्षणाः । पेतुस्तथोल्काः शतशः स्फोटयन्त्यो नभस्तल

अध्याय ५६ ॥

वैशम्पायन बोले हे जनमेजय इसकेपीछे प्रथम तो वार्त्तालापकाही कठिन युद्ध हुआ उससमय वहां दुःखित होकर राजा धृतराष्ट्रने यह वचन कहा ।–१। कि निश्चय करके इस मनुष्य शरीरको धिक्कार है जिसकी कि ऐसी दशा है हे निष्पाप जिस स्थानपर ग्यारह अक्षौहिणी का स्वामी मेरापुत्र ।२। सब राजाओंपर शासन करके इस पृथ्वीको भोगकर गदाको लेकर बड़ी तीव्रताले युद्धमें पैदलचला जो मेरा पुत्र जगतका स्वामीहोकर अनाथकेसमान गदाको उठाकर चला इसमें प्रारब्ध से दूसरी बात क्या है । ४ । हे संजय मेरे पुत्रने बड़े दुःखकोपाया दुःखित पीड़ित राजाधृतराष्ट्र इस प्रकार कहकर मौनहोगया । ५ । संजय बोले कि तब प्रसन्नचित्त बैलके समान गर्जते उग्र पराक्रमी बादल के समान शब्दायमान दुर्योधनने पांथ भीमसेन को युद्ध के निमित्त बुलाया हे महात्मा कौरवराज दुर्योधनकी ओरसे भीमसेन के बुलाने पर नानाप्रकार के घोररूप उत्पात जारीहुये । ७ । परस्पर आघात शब्दों समेत वायुचली धूलकी वर्षाहुई सब दिशा अन्धकार से पूर्ण हुई । ८ ।

CHAPTER LVI

Vaishampayan said, "The two heroes first fought a hard contested battle of words. Then Dhritrashtra remarked, "Fie on Manhood, for my son, the lord of eleven akshauhinis, having ruled over all the worldly kings as well as all the land, had to run on foot with mace. His going thus armed cannot but be ascribed to fate. Surely he was in sore trouble." Having said this, Dhritrashtra became silent. 5½ Sanjaya continued, "then bellowing like a bull or thundering like a cloud, Duryodhan challenged Bhim to fight and then various bad omens occurred. The wind blew with a loud roar and a storm of dust darkened the face of the earth, making the hair of the body stand on end, Thousands of meteors fell down from the sky with a crash.

कारा ॥ ९ ॥ राहुश्चाग्रसदादित्यमपर्वणि विशाम्पते । चचाल च, महाराज पृथिवी सवनद्रुमा ॥ १० ॥ वाताश्च वाताः प्रबलानीचैः शर्करवर्षिणः । गिरीणां शिखराण्येव न्यपतन्त महीतले ॥ ११ ॥ मृगा बहुविधाकारा सम्पतन्ति दिशो दश । दीप्ताः शिवाश्चाप्यनदन् घोररूपाः सुदारुणाः ॥ १२ ॥ निर्घाताश्च महाघोरा बभूवुर्लोमहर्षणाः । दीप्तायां दिशि राजेन्द्र मृगाश्चाशुभवेदिनः ॥ १३ ॥ उदपानगताश्चापो व्यवर्धन्त समन्ततः । अशरीरा महानादाः श्रूयन्ते स्म तदा नृप ॥ १४ ॥ एवमादीनि दृष्ट्वाथ निमित्तानि वृकोदरः । उवाच भ्रातरं ज्येष्ठं धर्मराजं युधिष्ठिरम् ॥ १५ ॥ नैष शक्तो रणे जेतुं मन्दात्मा मां सुयोधनः । अद्य क्रोधं विमोक्ष्यामि निगूढं हृदये चिरम् ॥ १६ ॥ सुयोधने कौरवेन्द्रे खाण्डवे पावको यथा । शल्यमद्योद्धरिष्यामि तव पाण्डव हृच्छयम् ॥ १७ ॥ निहत्य गदया पापमिमं कुरुकुलाधमम् । अद्य कीर्तिमयीं मालां प्रतिमोक्ष्या

शरीरके रोमांचोंकी खड़ीकरनेवाली वायुओं के कठिन आघात बड़े शब्दों के करनेवाले हुये पृथ्वीपर पड़ी शब्दायमान सैकड़ों उल्का आकाश से गिरीं । ९ । हे राजा पर्वके विनाही राहुने सूर्यको ग्रसा अर्थात् विनापर्वके ग्रहण पड़ा और पृथ्वी वनके सब वृक्षोंसमेत कम्पायमानहुई । १० । नीचे से कंकड़ पत्थर खैंचनेवाली बड़ी घोर और प्रकाशित वायुचली और पर्वतों के शिखर पृथ्वीपर गिरे ।११। अनेकरूपवाले मृग दशोंदिशाओंको दौड़े और घोररूप ज्वलित भयानक मृग लभी शब्द करनेलगे । १२ । महाघोर निर्घातभी शरीरके रोमांच खड़े करनेवाले हुये हे राजा ज्वलितरूप दिशाओं में अशुभसूचक मृग महाघोर अशुभ के प्रकट करनेवाले हुये । १४ । उस समय कूपों के जलभी चारों ओर को अत्यन्त वृद्धियुक्त हुये आकाशवाणी भी सुनीगई । १५ । भीमसेनने इसप्रकार के उत्पातोंको देखकर अपने बड़ेभाई धर्मराज युधिष्ठिरसे यह वचनकहा ।१५। कि यह अभागा दुर्योधन युद्धमें मेरे विजयकरनेको समर्थ नहीं है अब मैं अपने बहुतकाल के संचित क्रोध को । १६ । कौरवराजा दुर्योधन पर ऐसे छोडूंगा जैसे कि खाण्डव वनमें अग्नि को छोड़ाथा हे पाण्डव अब मैं तेरे हृदय के बड़े शूलको उखाडूंगा । १७ ।

There was an untimely solar eclipse and the earth with her forests shook. 10. The storm of wind brought pieces of stone with it and the peaks of mountains fell down on earth. Quadrupeds scampered in all directions and jackals howled. Dreadful sounds were heard and animals cried out ominously. Wells oozed out and heavenly voices were heard. Having seen such bad omens, Bhim said to Yudhishthir. 15. Wretched Duryodhan cannot overpower me. I shall discharge my long pent up fury over him as Agni did in the Khandav forest. I shall now remove your anxiety. I shall secure the garland of fame for you by slaying Duryodhan with my mace

त्वयि ।१८॥ इत्येवं पापकर्माणं गदया रणमूर्धनि । अद्याहं रात्रवा देह मिर्भत्स्ये गदयानया ॥ १९ ॥ नाय प्रवेष्टा नगरं पुनर्वारणसाह्वयम् ॥ २० ॥ सर्पोत्सर्गस्य शयने विषदानस्य भोजने । प्रमाणकोट्यां पातस्य दाहस्य जतुवेश्मनि ॥ २१ ॥ सभायामव हासस्य सर्वस्वहरणस्य च । वर्षमज्ञातवासस्य वनवासस्य चानघ ॥ २२ ॥ अद्यान्त मेता तु यास्यामि अहं भरतर्षभ । एकाह्ना विनिहत्यैनं भविष्याम्यात्मनोऽनृणः ॥ २३ ॥ अद्यायुर्धार्तराष्ट्रस्य दुर्मतेरकृतात्मनः । समाप्तं भरतश्रेष्ठ मातापित्रोश्च दर्शनम् ॥२४॥ अद्य सौख्यन्तु राजेन्द्र कुरुराजस्य दुर्मते । समाप्तञ्च महाराज नारीणां दर्शनं पुनः ॥ २५॥ अद्यायं कुरुराजस्य शान्तनोः कुलपांसनः । प्राणाञ्श्रियञ्च राज्यञ्च त्यक्त्वा शेष्यति भूतले ॥ २६ ॥ राजा च धृतराष्ट्रोऽद्य श्रुत्वा पुत्रं निपातितम् । स्मरिष्यत्य शुभं कर्म यत्तच्छकुनिबुद्धिजम् । २७॥ इत्युक्त्वा राजशार्दूल गदामादाय वीर्यवान्।

अर्थात् मैं गदासे दुष्कर्मियोंके कुलमें महानीच पापीको मारकर कीर्तिरूप मालाको आपके शरीरमें धारण करूंगा ।१८। अब मैं युद्धमें इस पापकर्मीको मारकर इसके शरीरको इसगदासे खंड खंड करूंगा। १९। यह अब दुबारा हस्तिनापुर नगरमें प्रवेश न करेगा। २०। हे भरतर्षभ अब मैं उनसब आगेलिखे दुःखोंके अन्तको प्राप्तहूंगा जैसे कि शयनपर सर्पका छोड़ना, भोजनमें विषदेना, प्रमाण कोटी में गिराना, लाक्षा गृहमें जलाना, सभामें हास्यकरना सर्वस्वहरना एकवर्ष अज्ञात होकर वनमेंवास । २२ । इन सबदुःखरूपी ऋणोंसे एकहीदिनमें इसको मारकर अऋणहूंगा। २३। हे भरतर्षभ अब दुर्बुद्धी म्लान अन्तःकरणवाले दुर्योधन की आयुर्दा पूर्णहुई माता पिताका दर्शनभी समाप्तहुआ।२४। हे महाराजेन्द्र अब दुर्बुद्धी कौरवराजका सुख और स्त्रियोंका दर्शनभी सम्पूर्णहुआ।२५। अब यह शन्तनु के कुलको कलंक लगानेवाला दुर्योधन लक्ष्मी, राज्य और प्राणोंको त्यागकर पृथ्वी पर सोवेगा।२६। अब राजाधृतराष्ट्रके मरेहुये अपने पुत्रको सुनकर।२६। अपनेउस दुष्टकर्मको यादकरेगा जो कि शकुनीकी बुद्धि से उत्पन्नहुआ है राजाओं में श्रेष्ठ पराक्रमी भीमसेन इसीबातें कहकर गदाको हाथमें लेकर युद्धके निमित्त दुर्योधन को ऐसे बुलाताहुआ सन्मुख नियतहुआ जैसे कि इन्द्र वृत्रासुरको बुलाता

I shall break his body into pieces and he will see Hasthinapur no more 20. I shall avenge my former wrongs—Snake bite, poison ing, throwing in the river, burning of the house, mocking in the court, deprivation of our all, exile and living incognito— all shall be avenged in a single day. His days are numbered. He shall see his parents no more and shall no longer enjoy luxury and the society of women. 25. Duryodhan the curse of S'hantanu's family

यथाविहत वृत्राय शक्रो वृत्रमिवाह्वयत् ॥ २८ ॥ तमुद्यतगदं दृष्ट्वा कैलासमिव शृङ्गिणम् । भीमसेनः पुनः क्रुद्धो दुर्योधनमुवाच ह ॥ २९ ॥ राज्ञश्च धृतराष्ट्रस्य तथा त्वमपि चात्मनः । स्मर तद्दुष्कृतं कर्म यद्वृत्तं वारणावते ॥ ३० ॥ द्रौपदी च परिक्लिष्टा सभामध्ये रजस्वला । द्यूतेन वञ्चितो राजा यत्त्वया सौबलेन च ॥ ३१ ॥ वने दुःखं च यत्प्राप्तमस्माभिस्त्वत्कृतं महत् । विराटनगरे चैव योन्यन्तरगतैरिव । तत्सर्वं यातयाम्यद्य दिष्ट्या दृष्टोऽसि दुर्मते ॥ ३२ ॥ त्वत्कृतेऽसौ हतः शेते शरतल्पे प्रतापवान् । गाङ्गेयो रथिनां श्रेष्ठो निहतो याज्ञसेनिना ॥ ३३ ॥ हतो द्रोणश्च कर्णश्च तथा शल्यः प्रतापवान् । वैरस्याग्नेरादिकर्ता शकुनिः सौबलो हतः ॥ ३४ ॥ प्रातिकामी तथा पापो द्रौपद्याः क्लेशकृद्धतः । भ्रातरस्ते हताः सर्वे शूरा विक्रान्तयोधिनः ॥ ३५ ॥ एते

हुआ निमन्त्र बुलाया । २८ शिखरधारी कैलासके समान उस गदाउठानेवाले दुर्योधन को देखकर क्रोधयुक्त भीमसेनने फिर कहा कि हे दुर्योधन राजाधृतराष्ट्रसमेत तुम अपने उन पापकर्मों को स्मरणकरो जो कि वारणावतनगरमें हुये और सभा में रजस्वला द्रौपदीको दुःख दिया और जो तैंने और शकुनीने राजायुधिष्ठिरको द्यूत में छला और हमसब ने महावनों में जिस तेरे कारण से बड़े२ दुःखों को पाया और योन्यन्तरके समान होकर हमलोगोंने जिस दुःखको विराटनगर में पाया अब मैं उन सब दुःखों के कारण तुमको मारता हूं ।३२। हे दुर्बुद्धी तुमको प्रारब्ध से देखा है और तेरेही कारण से शिखण्डी के हाथसे मारेहुये वह रथियों में श्रेष्ठ श्रीगङ्गाजी के पुत्र प्रतापवान् कौरवों के पितामह भीष्मजी शरशय्यापर सोतेहैं ३३। द्रोणाचार्य कर्ण और प्रतापवान शल्यमारागया और शत्रुताकी अग्निका उत्पन्न करनेवाला सौबलका पुत्र शकुनी मारागया । ३४ । फिर द्रौपदीका क्लेश उत्पन्न करनेवाला पापी प्रातिकामी मारागया ।सिंहके समान युद्धकरनेवाले शूरवीर तेरे सबभाई मारेगये ।३५। तेरेही कारण से यहसब और अन्य बहुतसे राजा मारेगये

---

shall sleep on earth after losing his wealth, kingdom and life. Hearing of his son's death, Dhritrashtra will remember the misdeeds done by the advice of Shakuni." Having said such words, Bhim took the mace in hand and challenged Duryodhan to fight as Indra did Vritrasur. Seeing him with upraised mace, enraged Bhim again said, "You and Dhritrashtra should remember your wicked deeds done at Barnavat 30. You dragged Draupadi into court. You and Shakuni cheated Yudhishthir in gambling and we suffered much hardship of exile for your sake. We lived incognito at Viratnagar; but I shall avenge all wrongs to day. It is by good luck that I have found you. Bhishm sleeps on the bed of arrows slain by Shikhandi on your account. Drona, *Karan* and glorious

चान्येच यद्यो निहतास्त्वत् कृते नृपाः। त्वामद्य निहनिष्यामि गदया नात्र संशयः ॥ ३६ ॥ इत्येवमुच्चै राजेन्द्र भाषमाणं वृकोदरम्। उवाच वीतभी राजन् पुत्रस्ते सत्य विक्रमः ॥ ३७ ॥ किं कत्थितेन बहुना युध्यस्व त्वं वृकोदर। अद्य तेऽहं विनेष्यामि युद्ध श्रद्धां कुलाधम ॥ ३८ ॥ नैव दुर्योधन क्षुद्र केनचित्त्वद्विधेन वै। शक्यस्त्रासयितुं वाचा यथान्यः प्राकृतो नरः ॥ ३९ ॥ चिरकालेप्सितं दिष्ट्या हृदयस्थमिदं मम। त्वया सह गदायुद्धं त्रिदशैरुपपादितम् ॥ ४० ॥ किं वाचा बहुनोक्तेन कत्थितेन च दुर्मते। वाणी सम्पाद्यतामेषा कर्मणा मा चिरं कृथाः ॥ ४१ ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा सर्वे एवाभ्यपूजयन्। राजानः सोमकाश्चैव ये तत्रासन् समागताः ॥ ४२ ॥ ततः सम्पूजितः सर्वैः सम्प्रहृष्टतनूरुहः। भूयो धीरां मतिं चक्रे युद्धाय कुरुनन्दनः ॥ ४३ ॥ तं मत्तमिव मातङ्गं तलशब्दैर्नराधिपाः। भूयः संहर्षयाञ्चक्रुर्दुर्योधनममर्षणम् ॥ ४४ ॥

अब मैं तुझको निस्सन्देह गदासे मारूंगा। ३६। हे राजेन्द्र सत्यपराक्रमी और निर्भय आपकापुत्र इसप्रकार बड़ेउच्चस्वरसे वार्तालाप करनेवाले भीमसेनसे बोला। ३७। कि हे कुलमें महानीच भीमसेन बहुत बातों से क्याप्रयोजन है तुम युद्धकरो अब मैं तेरे युद्धके उत्साहको भंगकरूंगा। ३८। हे नीच मैं दुर्योधन तुझ सरीखे किसीमनुष्य के वचन से डरनेके योग्य नहीं हूं बहुतकाल से चाहता हृदयमें नियत तेरे साथ मेरा यह गदायुद्ध प्रारब्धकेही द्वारा देवताओं से प्राप्तहुआ है। ४०। हे दुर्बुद्धी बहुत वार्तालाप और अपनी प्रशंसाकरने से क्यालाभ है यह वचन कर्मकेही द्वारा प्राप्तकरना योग्यहै विलम्ब मतकरो। ४१। उसके उस वचनकोसुन कर उन राजालोगोंने और सोमकों ने जो वहां इकट्ठे थे उसकी प्रशंसाकी। ४२। इसकेपीछे वह शरीरके रोमरसे प्रसन्न सबसे स्तूयमान वह कौरवनन्दन दुर्योधन युद्धके लिये बुद्धिसेद्वारा फिर धैर्यमें प्रवृत्तहुआ। ४३। राजाओंने क्रोधयुक्त उस दुर्योधन को जो कि मतवालेहाथीके समानथा तलकेशब्दों से फिर प्रसन्न

Shalya are no more as well as Shakuni the root of all evil, Pratikami the distresser of Draupadi and all your brothers, brave as lions. 35. All these and other kings were slain for your sake and I shall surely slay you with my mace." Having heard this, your son of true prowess replied, " Despicable Bhim! what is the use of so much nonsense talk. Fight and I shall satisfy your desire. I cannot possibly fear you. I have long sought an opportunity to fight with you and my long cherished desire is fulfilled by the favour of gods. 40. You can derive no benefit from vaggary, and self praise. Act without further delay ". All the kings and Somakas praised Duryodhan's words. Then Duryodhan praised by all, stood calmly and the kings

स महात्मा महाप्राण गदामुद्यम्य पाण्डव । अभिदुद्राव वेगेन धार्त्तराष्ट्रं वृकोदर ॥ ४५ ॥ बृंहन्ति कुञ्जरास्तत्र हया हेषन्ति चासकृत् । शस्त्राणि चाप्यदीप्यन्त पाण्डवानां जयैषिणाम् ॥ ४६ ॥

इति गदायुद्धपर्वणि गदायुद्धे पंचपञ्चाशोऽध्यायः ५५ ॥

दिया। ४४। महात्मा पांडव भीमसेन अपनी गदाको लेकरतीव्रता से उस बड़े साहसी दुर्योधन के सम्मुख गया।४५। उसके जातेही वहां हाथी चिग्घाड़ साहसी दुर्योधन के सम्मुख गया। ४५। उसके जातेही वहां हाथी चिग्घाड़ वारम्वार घोड़े हींसे और विजयाभिलाषी पांडवों के शस्त्रभी प्रकाशित हुये ४६ ॥

---

cheered him again with a beat of palms. Bhim soon opposed him with his mace At his arrival the horses neighed, the elephants grunted and the weapons of the Pandavas became brilliant ' 46



सञ्जय उवाच । ततो दुर्योधनो दृष्ट्वा भीमसेनं तथागतम् । प्रत्युद्ययावदीनात्मा वेगेन महता नदन् ॥ १ ॥ समापेततुरन्योऽन्यं शृङ्गिणौ गोवृषाविव । महानिर्घातघोषश्च प्रहाराणामजायत ॥ २ ॥ अभवच्च तयोर्युद्धं तुमुलं लोमहर्षणम् । जिगीषतोर्युधान्योऽन्यमिन्द्रप्रह्लादयोरिव ॥ ३ ॥ रुधिरोक्षितसर्वाङ्गौ गदाहस्तौ मनस्विनौ । ददृशाते महात्मानौ पुष्पिताविव किंशुकौ ॥ ४ ॥ तथा तस्मिन्महायुद्धे वर्तमाने सुदारुणे । खद्योतसङ्घैरिव खं दर्शनीयं व्यरोचत ॥ ५ ॥ तथा तस्मिन् वर्तमाने संकुले तुमुले भृशम् । उभावपि परिश्रान्तौ युध्यमानावरिन्दमौ ॥ ६ ॥ तौ मुहूर्तं समाश्वास्य पुनरेव परन्तपौ । अभ्यहारयतामन्योन्यं संप्रगृह्य गदे शुभे ॥ ७ ॥ तौ तु दृष्ट्वा महावीर्यौ समाश्वस्तौ नरर्षभौ । बलिनौ वारणौ यद्वद्वासितार्थे मदोत्कटौ ॥ ८ ॥ समानवीर्यौ संप्रेक्ष्य प्रगृहीतगदावुभौ । विस्मयं परमं जग्मुर्देवगन्धर्वमानवाः ॥ ९ ॥ प्रगृहीत

अध्याय ५७ ॥

संजयबोले कि इसके पीछे बड़ा साहसी दुर्योधन बड़ी तीव्रता से गर्जता उस प्रकार से आतेहुये भीमसेन को देखकर सम्मुख गया । १ । और एकबारगी बैलों के समान परस्पर में दोनों दौड़े और गदाके प्रहारोंके बड़े शब्द उत्पन्न हुये । २ । उन दोनों विजयाभिलाषियों का युद्ध बड़ाकठोर और रोमहर्षण करनेवाला ऐसा हुआ जैसे कि युद्धमें परस्पर विजयाभिलाषी इन्द्र और प्रह्लादका हुआ था । ३ । रुधिरसे लिप्त सब शरीर गदा हाथों में लिये बड़े साहसी दोनों महात्मा फूलेहुये किंशुक वृक्षके समान दिखाई पड़े । ४ । इसप्रकार उस बड़े भयानक घोर युद्धके वर्तमान होनेपर आकाश दर्शनीय होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि वह बीजनों के समूहों से होता है । ५ । इस प्रकार उस कठिनतर संकुल नाम युद्ध के वर्तमान होनेपर वह शत्रुओं के विजय करनेवाले दोनों शूरवीर थकगये । ६ । शत्रुसन्तापी उन दोनों ने एक मुहूर्त्त समाश्वासित होकर शुभगदाओं को पकड़ कर परस्पर विश्राम किया । ७ । फिर उन महापराक्रमी विश्राम कियेहुये नरोत्तमों को हथिनीके लिये मतवाले बलवान हाथियोंके समान । ८ । एकसे पराक्रमी गदा पकड़नेवाले दोनोंको अच्छीरीति से देखकर देवता मनुष्य और गन्धर्वोंने बड़े

CHAPTER LVII

Sanjaya said, " At the advance of Bhim with a loud roar couragous Duryodhan faced him. They attacked each other like two horned bulls and the sounds from the blows of their maces were tremendous. Their battle was severe and dreadful like that between Indra and Prahlad. With bleeding bodies, armed with maces, the two brave warriors looked like k'ashuk trees in bloom. During that dreadful battle the sky looked glorious as if full of glow-worms till the two heroes were tired. They rested themselves for some time to take

गजाविवौ । विस्मयं परमं जग्मुर्देवगन्धर्वमानवाः ॥ ९ ॥ प्रगृहीतगदौ दृष्ट्वा दुर्योधनवृकोदरौ । संशयः सर्वभूतानां विजये समपद्यत ॥ १० ॥ समागम्य ततो भूयो भ्रातरौ बलिनांवरौ । अन्योन्यस्यान्तरं प्रेप्सू प्रचक्रातेऽन्तरंप्रति ॥ ११ ॥ यमदण्डोपमां गुर्वीमिन्द्राशनिमिवोद्यताम् । ददृशु प्रेक्षका राजन् रौद्रीं विशसनीं गदाम् ॥ १२ ॥ आविध्यतो गदां तस्य भीमसेनस्य संयुगे । शब्दः सुतुमुलो घोरो मुहूर्तं समपद्यत ॥ १३ ॥ आविध्यन्तमरिं प्रेक्ष्य धार्तराष्ट्रोऽथ पाण्डवम् । गदामलघुवेगां तां विस्मितः सम्बभूव ह ॥ १४ ॥ चरंश्च विविधान्मार्गान्मण्डलानि च भारत । अशोभत तदा वीरो भूय एव वृकोदरः ॥ १५ ॥ तौ परस्परमासाद्य यत्तावन्योन्यरक्षणे । मार्जाराविव भक्षार्थे ततक्षाते मुहुर्मुहुः ॥ १६ ॥ अचरद्भीमसेनस्तु मार्गान् बहुविधांस्तथा । मण्डलानि विचित्राणि गतप्रत्यागतानि च ॥ १७ ॥ अस्त्रयन्त्राणि चित्राणि, स्थानानि विवि

आश्चर्य को पाया । ९ । गदा पकड़नेवाले उन दुर्योधन और भीमसेन को देखकर विजय होनेमें सब जीवोंको संदेह प्राप्तहुआ । १० । इसके पीछे बलवानों में श्रेष्ठ परस्पर अन्तर चाहनेवाले दोनोंभाई भिड़कर परयन्तर के समान भ्रमण करनेलगे । ११ । हे राजा अवलोकन करनेवालोंने उसरौद्री मारनेवाली भारी और इन्द्रवज्र के समान उठाईहुई यमराजके दण्डकी समान गदाको देखा । १२ । युद्धमें भीमसेनके हाथसे मारतीहुई गदाका एकमुहूर्त बड़ाकठिन और घोरशब्द वर्तमानहुआ । १३ । इसके अनन्तर वह दुर्योधन उस कठिन तीव्रता रखनेवाली, गदाके मारने वाले अपने शत्रु भीमसेन को देखकर आश्चर्ययुक्तहुआ । १४ । हेभरतवंशी उस समय भीमसेन नानाप्रकार के मार्ग और मण्डलोंको घूमताहुआ शोभायमान हुआ । १५ । परस्पर अपनीर रक्षामें सावधान उन दोनोंने अन्योन्य सम्मुखहोकर बारम्बार ऐसे प्रहारकिये जैसे खानेकी वस्तुकालिये दोबिलार परस्पर प्रहारकरते हैं । १६ । भीमसेन एकप्रकार के बहुत से मार्गोंको घूमा फिर सम्मुख तिर्यक् विचित्रमण्डल । १७ । अपूर्व अस्त्रादि बहुत प्रकारके दाहिने बायें प्रहारस्थानोंका

breath. Men, gods and Gandharvas wondered to see them fighting like two mad elephants for the sake of a female They were doubtful about the victory of one over the other. 10. Again the two best of warriors roamed about warding each other's blows. The lookers on beheld the heavy maces, like the vajra of Indra and the staff of Yam. There was an awful noise from the blows of Bhim's mace for some time and Duryodhan wondered at the velocity of his adversary's blows, Bhim, roaming in various ways and circles, looked glorious, 15 Desirous of protecting themselves, each of them hit his adversary, and they fought like two tom cats for the sake of food. Bhim walked right and left, straight and crooked, rushing, dashing down and standing still He stood up at once whenever he fell down

प्रानि च। पं र्दिमोश्च महाराज यञ्जन परिहरम्‌ ॥ १८ ॥ अभिद्रवणमाक्षेपमवस्थानं सविग्रहम्‌ । परिवर्तनसंवर्त्तमवप्लुतमुपप्लुतम्‌ ॥ १९ ॥ उपन्यस्तमपन्यस्तं गदायुद्धविशारदौ एवं तौ विचरन्तौ तु न्यघ्नतां वै परस्परम्‌ । २० ॥ वञ्चयानौ पुनश्चैव चेरतुः कुरुसत्तमौ । विक्रीडन्तौ सुबलिनौ मण्डलानि विचेरतुः ॥ २१ ॥ तौ दर्शयन्तौ समरे युद्धक्रीडां समन्ततः । गदाभ्यां सहसान्योन्यमाजघ्नतुररिन्दमौ ॥ २२ ॥ तौ परस्परमासाद्य दंष्ट्राभ्यां द्विरदौ यथा । अशोभेतां महाराज शोणितेन परिप्लुतौ ॥ २३ ॥ एवं तदभवद्युद्धं घोररूपमसंवृतम्‌ । परिवृत्तेऽहनि क्रूरं वृत्रवासवयोरिव ॥ गदाहस्तौ ततस्तौ तु मण्डलानि विचेरतुः ॥ २४ ॥ दक्षिणं मण्डलं राजन्‌ धार्तराष्ट्रोऽभ्यवर्तत । सव्यन्तु मण्डलं तत्र भीमसेनोऽभ्यवर्तत ॥ २५ ॥ तथा तु चरतस्तस्य भीमस्य रणमूर्धनि । दुर्योधनो महाराज पार्श्वदेशेऽभ्यताडयत्‌ ॥ २६ ॥ आहतस्तु तदा भीमः पुत्रेण तव

छोड़ना बचाना दाहिने बायें करना । १८ । तिरछा व सम्मुख आना गिराना और अचल होना शत्रुके उठनेपर फिर युद्धकरना शत्रुके मारनेको चारोंओर जाना शत्रुके हटजानेका स्थानरोकना प्रहार बचानेकेलिये झककर हटजाना मन्दगति । १९ । समीप जाकर शस्त्रका मारना चारोंओरसे घूमकर रोकना और बलवान होके हाथ से शत्रुको आपन्न करना इन मार्गों में घूमते उस गदायुद्ध में कुशल दोनों ने अनेक प्रकार से परस्पर घायल किया । २० । फिर धोखादेनेवाले होकर वह कौरवोत्तम दोनों भ्रमण करनेलगे और क्रीड़ा करनेवाले वह दोनों पराक्रमी मण्डलोंको घूमे । २१ । युद्धमें चारोंओरसे युद्धकी क्रीड़ाको दिखलाते उन दोनों शत्रुसन्तापियोंने गदाओं से अकस्मात् ऐसे घायल किया । २२ । जैसेकि, दांतोंसेदो हाथी परस्पर घायल करते हैं हे महाराज वह दोनों रुधिर से लिप्तशरीर परस्पर सम्मुखहोकर शोभायमानहुए । २३ इसप्रकार दिवस के अन्तपर वह घोररूप युद्ध सबके समक्ष में ऐसाहुआ जैसे कि वृत्रासुर और इन्द्रका हुआथा । २४ । फिर वह दोनों महाबली गदा हाथोंमें लेके मण्डलों में प्रवृत्तहुये उसमें तुम्हारा दुर्योधन दाहिने मण्डल में वर्त्तमानहुआ और भीमसेन बायें मण्डल में वर्त्तमान हुआ । २५ । हे महाराज इस प्रकार से उस युद्धके मुखपर भीमसेनको घूमते दुर्योधन ने कुक्षि में घायल किया । २६ । हे भरतर्षभ फिर आपके पुत्रसे घायल और उसगदको

and checked his enemy's course or bent low to ward off his opponent's blows. He sent forth blows from before and behind, all round, and the two clever warriors wounded each other. 20. Then the two best of Kauravas sought to deceive one another as it in play. Showing their skill in fighting they wounded each other like two tusked elephants. Their bodies ran out blood. At the close of the day the battle was like that between Indra and Vritrasur. Then the two warriors roamed in circles with their maces. Duryodhan was in the

मार्गे । आविध्य गदां गुर्वी महाकल्पमतिस्फुरत् ॥ २७ ॥ इन्द्राशनिसमां घोरां यम
दण्डमिवोद्यताम् । ददृशुस्ते महाराज भीमसेनस्य तां गदाम् ॥ २८ ॥ आविध्यन्तं गदां
दृष्ट्वा भीमसेनं तवात्मजः । समुद्यम्य गदां घोरां प्रत्यविध्यत वीर्यवान् ॥ २९ ॥ गदा
मारुतवेगेन तव पुत्रस्य भारत । शब्द आसीत् सुतुमुलस्तेजश्च समजायत ॥ ३० ॥ स
सुयोधनः ॥ ३१ ॥ आविद्धा सर्ववेगेन भीमेन महती गदा । धूमं सार्चिषं साग्नि
मुमोचाग्रया महास्वना ॥ ३२ ॥ आधूतां भीमसेनेन गदां दृष्ट्वा सुयोधनः । अद्रिसा
रमयीं गुर्वीमाविध्यन् बह्वशोभत ॥ ३३ ॥ गदामारुतवेगं हि दृष्ट्वा तस्य महात्
मनः । भयं विवेश पाण्डूंश्च सर्वानेव ससोमकान् ॥ ३४ ॥ तौ दर्शयन्तौ समरे युद्ध
क्रीडां समन्ततः । गदाभ्यां सहसान्योन्यमाजघ्नतुररिन्दमौ ॥ ३५ ॥ तौ परस्परमासाद्य

विचार व करते भीमसेनने भारी गदाको घुमाया ॥२७॥ हे महाराज उन लोगोंने इन्द्र
वज्र के समान घोर यमराज के दण्ड के समान उठाई हुई । २८ । भीमसेन की उस
गदा को देखा तब आपके पुत्र गदा उठानेवाले भीमसेन को देखकर उठाई हुई
उस घोर गदाको ताड़ित किया ॥ २९ ॥ हे शत्रुसन्तापी भरतवंशी आपके पुत्रकी गदारूप
वायुकी तीव्रता से कठोर शब्द होकर अग्नि उत्पन्न हुई ॥३०॥ फिर भीमसेनने भी
अपनी गदा से दुर्योधनकी गदाको ताड़ित किया उस समय वह दोनों समान
बलवान् भीमसेन और दुर्योधन नाना प्रकार के मार्ग और मण्डलोंका घूमते हुए
शोभायमान हुए ॥ ३१ ॥ फिर सब वेगसे भीमसेनसे ताड़ित बड़ी गदाने धूम समेत
अग्निको प्रकट करके बड़ी ज्वालाको प्रकाशित किया ॥ ३२ ॥ तब भीमसेन
से कम्पायमान अपनी गदाको देखकर लोहमयी बड़ी भारी गदाको घुमाता हुआ
शोभायमान हुआ ॥ ३३ ॥ उस महात्मा की गदारूपी वायुकी तीव्रता को देखकर
सोमकों समेत सब पाण्डवों को भय उत्पन्न हुआ ॥ ३४ ॥ युद्ध में चारों ओर से युद्ध
क्रीड़ा को दिखाते वह शत्रुसन्तापी गदाओं से अकस्मात् परस्पर घात

right circle and Bhim in the left. 25. Duryodhan then wounded
Bhim in the side. Not caring of the wound, Bhim swung his heavy
mace — The people saw the mace of Bhim upraised like the vajra of
Indra and Duryodhan hit it with his own. The mace of Duryodhan
met with a crash, with the velocity of the wind and fire came out of
it. 30. Bhim too struck a blow on the mace of Duryodhan Turn-
ning in circles they looked glorious. Fire and smoke
came out of Bhim's mace struck with great force. See-
ing his mace shaken by Bhim, Duryodhan swung his iron
one and looked glorious. The Somakas and the Pandavas were
afraid of the velocity of Duryodhan's maces. They dealt blows with
their maces and showed their skill in fighting. 35. Fighting like

वषूाभ्यां द्विरदौ यथा । मशोभेतां महाराज शोणितेन परिप्लुतौ ॥ ३६ ॥ एवं तदभवद्युद्धं घोररूपमसम्वृतम् । परिवृत्तेऽहनि क्रूरं वृत्रवासवयोरिव ॥ ३७ ॥ दृष्ट्वा व्यवस्थितं भीमं तव पुत्रो महाबलः । चरंश्चित्रतरान् मार्गान् कौन्तेयमभिदुद्रुवे ॥ ३८ ॥ तस्य भीमो महावेगां जाम्बूनदपरिष्कृताम् । अभिक्रुद्धस्य क्रुद्धस्तु ताडयामास तां गदाम् ॥ ३९ ॥ सविस्फुलिङ्गो निर्ह्रादस्तयोस्तत्राभिघातजः । प्रादुरासीन्महाराज सृष्टयोर्वज्रयोरिव ॥ ४० ॥ वेगवत्या तया तत्र भीमसेनेन मुक्तया । निपतन्त्या महाराज पृथिवी समकम्पत ॥ ४१ ॥ तां नामृष्यत कौरव्यो गदां प्रतिहतां रणे । मत्तो द्विप इव क्रुद्धः प्रतिकुञ्जरदर्शनात् ॥ ४२ ॥ स सव्यं मण्डलं राजन्नुद्भ्राम्य कृतनिश्चयः । आजघ्ने मूर्ध्नि कौन्तेयं गदया भीमवेगया ॥ ४३ ॥ तया त्वभिहतो भीमः पुत्रेण तव पाण्डवः । नाकम्पत महाराज तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ४४ ॥ आश्चर्यं चापि तद्राजन् सर्वसैन्यान्यपूजयन्

करनेलगे । ३६ । हे महाराज जैसे कि दो हाथी दांतों से युद्ध करते हैं इसीप्रकार वह दोनों परस्पर पाकर रुधिरसे लिप्तहोकर शोभायमानहुये । ३६ । इसप्रकार दिन समाप्त होनेपर वह घोररूप और महा कठिन ऐसा युद्ध हुआ जैसे कि इन्द्र और वृत्रासुर का हुआथा । ३७ । आपका महाबली पुत्र अपने सम्मुख भीमसेन को देखकर अपूर्वतर मार्गों को घूमता कुन्ती के पुत्रके सन्मुख गया । ३८ । तब क्रोधयुक्त भीमसेनने उस क्रोधयुक्त दुर्योधनकी स्वर्ण जटित रत्नोंसे अलंकृत गदा को ताड़ित किया । ३९ । उससमय उन दोनों के संघट्टन से उत्पन्न होनेवाला शब्द स्फुलिंगों समेत ऐसा प्रकटहुआ जैसे कि छोड़ेहुये दो वज्रों के संघट्टन से होताहै ४० । हे महाराज वहां भीमसेनकी गिरतीहुई उस वेगवान् गदासे पृथ्वी अत्यन्त कम्पायमान हुई । ४१ । दुर्योधन ने भी ताड़ित उस गदाको ऐसे नहीं सहा जैसे कि क्रोधयुक्त मतवाला हाथी सम्मुख आनेवाले हाथी को नहीं सहता है । ४२ । ऐसे निश्चय करनेवाले राजा ने बायें मंडल को घूमकर भीमसेन के मस्तक पर भयानक वेगवाली गदा से मस्तकपर घायल किया । ४३ । हे महाराज आप के पुत्रकी उस गदा से घायल पाण्डव भीमसेन कम्पायमान नहीं हुआ वह आश्चर्य सा हुआ । ४४ । हे राजा सब सेना के लोगोंने उसके उस अपूर्व धैर्य की बड़ी

two tusked elephants, their bodies were covered with blood. The battle at the close of the day was like that between Indra and Vritrasur. Your son moved in stranger circle at the sight of Bhim. The latter struck a blow at the jewelled mace of the former! The noise from the two maces was like the meeting of two vajras. 40. The earth shook with the fall of Bhim's mace. Duryodhan did not bear it as one mad elephant does not bear the onslaught of another. Moving in a left circle, he wounded Bhim on the forehead with his mace of dreadful velocity. The latter did not shake with the blow

20533

वज्राभिहतो भीमो नाकम्पत पदात् पदम् ॥ ४५ ॥ ततो गुरुतरीं दीप्तां गदां हेमपरि-
ष्कृताम् । दुर्योधनाय व्यसृजद् भीमो भीमपराक्रमः ॥ ४६ ॥ तं प्रहारमसंभ्रान्तो
लाघवेन महाबलः । मोघं दुर्योधनश्चक्रे तत्राभूद्विस्मयो महान् ॥ ४७ ॥ सा तु मोघा
गदा राजन् पतन्ती भीमचोदिता । चालयामास पृथिवीं महानिर्घातनिस्वना ॥ ४८ ॥
आस्थाय कौशिकान्मार्गानुत्पतन् स पुनः पुनः । गदानिपातं प्रज्ञाय भीमसेनमव-
ञ्चयत् ॥ ४९ ॥ वञ्चयित्वा तथा भीमं गदया कुरुसत्तमः । ताडयामास संक्रुद्धो
वक्षोदेशे महाबलः ॥ ५० ॥ गदया निहतो भीमो मुह्यमानो महारणे । नाभ्यमन्यत
कर्तव्यं पुत्रेणाभ्याहतस्तव ॥ ५१ ॥ तस्मिंस्तथा वर्तमाने राजन् सोमकपाण्डवाः ।
भृशोपहतसंकल्पा न हृष्टमनसोऽभवन् ॥ ५२ ॥ स तु तेन प्रहारेण मातङ्ग इव रोषितः ।
हस्तिवद्धस्तिसंकाशमभिदुद्राव ते सुतम् ॥ ५३ ॥ ततस्तु तरसा भीमो गदया तनयं

सबके साम्हने वो गदासे मस्तकपर घायल होकर भी भीमसेन चरणों से एक
पदमात्र भी कम्पायमान नहीं हुआ।४५। तब भयानक पराक्रमी और भीमसेनने बहुत
भारी सुवर्णसे अलंकृत गदाको दुर्योधन के निमित्त छोड़ा।४६। असम्भ्रान्त
लाघवताके सहित बड़े बलवान दुर्योधनने अपनी हस्तलाघवता से उस प्रहार
को निष्फल किया वह भी महाआश्चर्यसा हुआ।४७। हे राजा फिर भीमसेन
से चलाई हुई वह मेघके समान शब्दायमान गदा पृथ्वी को कंपित करके कौशिक
नाम मार्गों में नियत होकर वारम्वार उछली गदा के गिरने को और भीमसेन
को घबड़ाया जानकर अत्यन्त क्रोधयुक्त महाबली कौरवोत्तम दुर्योधन ने इसप्रकार
गदा से भीमसेनको ठगकर छातीपर घायल किया।५०। तब बड़े युद्धमें आप
के पुत्रकी गदा से घायल और अचेत भीमसेन ने करनेके योग्य कर्मको नहीं
जाना।५१। हे राजा इस प्रकार उसयुद्धके वर्तमान होनेपर सोमक और
पांडव अत्यन्त हतसंकल्प होकर चित्तसे दुःखी हुये।५२। फिर प्रहार से हाथी
के समान क्रोधयुक्त हाथी के समान भीमसेन उस हाथीके समान आपके
पुत्र के सम्मुख गया।५३। अर्थात फिर भीमसेन बड़ी तीव्रता से गदा लेकर

to the amazement of all, and they praised his patience as he did not move an inch by the blow. 45. Bhim then hurled his gold-decked mace at Daryodhan, but the latter fearlessly warded off the blow and the people wondered at his agility. The thundering mace of Bhim pitched again and again on the ground. Seeing his adversary thus disarmed, Daryodhan deceitfully wounded Bhim on the breast. 50] Then wounded by your son's mace and insensible, Bhim did not know what to do. The Sonaks and the Pandavas were much grieved at this state of things. Bhim again encountered your son as one elephant does another and hurled his mace at him and wounded him on the side. Wounded by the blow Daryodhan fell

तव । अभिदुद्राव वेगेन सिंहो वनगजं यथा ॥ ५४ ॥ उपसृत्य तु राजानं गदामोक्ष
विशारदः । आविध्यत गदां राजन् समुद्दिश्य सुतं तव ॥ ५५ ॥ अताडयद्भीमसेनः पार्श्वे
दुर्योधनं तदा । स विह्वलः प्रहारेण जानुभ्यामगमन्महीम् ॥ ५६ ॥ तस्मिन् कुरुकुल
श्रेष्ठे जानुभ्यामवनीं गते । उदतिष्ठत्ततो नादः सृञ्जयानां जगत्पते ॥ ५७ ॥ तेषां तु
निनदं श्रुत्वा सृञ्जयानां नरर्षभ । अमर्षाद्भरतश्रेष्ठ पुत्रस्ते समकुप्यत ॥ ५८ ॥ उत्थाय
तु महाबाहुर्महानाग इव श्वसन् । दिधक्षन्निव नेत्राभ्यां भीमसेनमवैक्षत ॥ ५९ ॥
ततः स भरतश्रेष्ठो गदापाणिरथाद्रवत् । प्रमथिष्यन्निव शिरो भीमसेनस्य संयुगे
॥ ६० ॥ स महात्मा महात्मानं भीमं भीमपराक्रमः । अताडयच्छङ्खदेशे न चचाला
चलोपमः ॥ ६१ ॥ स भूयः शुशुभे पार्थस्ताडितो गदया रणे । उद्भिन्नरुधिरो राजन्
प्रभिन्न इव कुञ्जरः ॥ ६२ ॥ ततो गदां वीरहणीमयोमयीं प्रगृह्य वज्राशनि-तुल्यनि-

आपके पुत्र के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि सिंह बड़ी तीव्रता से वनके हाथीके सम्मुख आता है । ५४ । हे राजा गदा छोड़ने में सावधान भीमसेनने राजाके पास जाकर उस आपके पुत्रको लक्ष्य बनाकर गदाको घुमाया । ५५ । और उस गदा से भीमसेन दुर्योधनको पार्श्व अर्थात् कुक्षिस्थान में घायल किया उस प्रहार से व्याकुल वह दुर्योधन जंघाके बल पृथ्वीपर गिरपड़ा । ५६ । उस कौरव कुलमें श्रेष्ठ दुर्योधनको जंघा के बलसे पृथ्वीपर गिरनेपर सृञ्जियोंके बड़ेशब्द प्रकटहुवे हे राजा वह जगत्पति आपका पुत्र उन सृञ्जियों की गर्जनाओंको सुनकर अधीनी से क्रोध युक्त बड़े सर्प के समान श्वास लेते नेत्रों से भस्म करते महाबाहु दुर्योधन ने उठकर भीमसेनको देखा । ५९ । और गदा हाथमें लेकर भीमसेन के सम्मुख गया युद्धमें भीमसेन के शिरको मर्दन करना चाहते बड़े साहसी और भयानक पराक्रमी राजा दुर्योधनने महात्मा भीमसेनको शंख स्थान में घायल किया परन्तु वह पर्वता कार कंपायमान नहीं हुआ । ६१ । हे राजा युद्ध में गदा से घायल और रुधिर से लिप्त वह भीमसेन मद झाड़नेवाले हाथी के समान फिर शोभायमान हुआ । ६२ । इसके पीछे शत्रुसंतापी अर्जुन के बड़े भाई भीमसेन ने वीरों को मारने वाली वज्रबिजली के समान शब्दायमान लोहेकी गदाको पकड़ कर बड़े उग्र और

down on the ground. The Srinjayas cried at his fall. On hearing their cries your son stood up sighing like a serpent and faced Bhim. Wishing to hit at the head of Bhim, brave Duryodhan of dreadful prowess wounded him on the forehead, but could not shake him. Bhim bleeding and wounded looked like an elephant with juice dropping from. 62 Then, Bhim wounded him with iron mace with a crash like thunder Wounded by the blow, your son fell down like a

स्वनाम् । भ्रामयन्कुसुमित्र वर्णो बलेन विक्रम्य पुनरभ्ययात् ॥ ६३ ॥ स भीम
सेनाभिहतस्तथासमजः पपात सर्वं विपर्यस्तदेहबन्धनः । सुपुष्पितो मारुतवेगताडितो यथा
महारण्ये द्रुमवद्घूर्णितः ॥ ६४ ॥ ततः प्रणेदुर्जहृषुश्च पाण्डवाः समीक्ष्य पुत्रं पतितं
क्षितौ तव । ततः सुतस्ते प्रतिलभ्य चेतनां समुत्पपात द्विरदो यथा ह्रदात् ॥ ६५ ॥ स
पार्थिवो नित्यममर्षी तस्तदा महारथः शिक्षितवत् परिभ्रमन् । अताडयत् पाण्डवम
ग्रतः स्थितम् स विह्वलाङ्गो जगतीमुपास्पृशत् ॥ ६६ ॥ स सिंहनादं विननाद कौरवो
निपात्य भूमौ युधि भीमओजसा । बिभेद चैवाशनितुल्यतेजसा गदानिपातेन शरीररक्ष
णम् ॥ ६७ ॥ ततोऽन्तरीक्षे निनदो महानभूद्दिवौकसामप्सरसां च नेदुषाम् । पपात
चोच्चैरमरप्रवेरितं विचित्रपुष्पोत्करवर्षमुत्तमम् ॥ ६८ ॥ ततः परानाविशदुत्तमं भयं
समीक्ष्य भूमौ पतितं नरोत्तमम् । अहीयमानञ्च बलेन कौरवं निशाम्य भेदं सुदृढस्य

वराहवसे भगुका पतन किया ॥ ६३ ॥ भीमसेनके हाथ से घायल होकर अत्यन्त कंपायमान शरीरसे ओढ़ा आपका पुत्र ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वनमें बड़ा पुष्पित सालका वृक्ष वायु से ताड़ित घूमताहुआ गिरता है ॥ ६४ ॥ इसके पीछे आपके पुत्रको पृथ्वी पर गिराहुआ देखकर सब पाण्डव लोग गर्जे और प्रसन्नहुये फिर आपका पुत्र सचेत होकर ऐसे उछला जैसे कि हदनाम तड़ाग से हाथी उछलता है तब ॥ ६५ ॥ तब नित्य क्रोधयुक्त शिक्षा पायेहुये के समान चारों ओर घूमते उस महारथी राजाने आगे नियत होनेवाले पाण्डव को घायल किया उस व्याकुलने भी पृथ्वी को स्पर्शकिया ॥ ६६ ॥ वह कौरव बलसे भीमसेन को पृथ्वीपर गिराकर सिंहनाद को गर्जा और वज्रके समान बड़ी तेजस्वी गदा के प्रहारसे इसके कवचको तोड़ा ॥ ६७ ॥ इसके पीछे आकाश से गर्जनेवाले देवता और अप्सराओंके बड़े शब्दहुये और देवताओं ने उत्तम पुष्पों कीभी वर्षा करी ॥ ६८ ॥ इसके पीछे पृथ्वीपर पड़ेहुये नरोत्तम को देखकर शत्रुपक्षियों में बड़ाभय उत्पन्न हुआ कौरवको बलसे पूर्ण और भीमसेन के अत्यन्त दृढ़ कवचके टूटनेको देख कर सब अत्यन्त भयभीत हुये ॥ ६९ ॥ इसके पीछे भीमसेन एक मुहूर्त में सचेतता

sal tree struck down by the wind. The Pandavas roared at the fall of your son, but he sprang up in an instant as an elephant does from a lake. 65. He again wounded his adversary with great skill and made him touch the ground. He roared a loud roar as Bhim fell down on the ground and broke through his armour with the mace. The gods and apsaras cried out from the air and showered flowers. The people of the opposite party were much terrified at the breakage of Bhim's armour. Bhim came to him-

[illegible] ॥ ६९ ॥ ततो मुहूर्तादुत्थाय वेगवान् [illegible] विचरन्निव [illegible] । [illegible] शोणितमुखो धैर्येण महता स्थितः ॥ ७० ॥

इति गदायुद्धपर्वणि गदायुद्धे सप्तपञ्चाशोऽध्यायः ५७ ॥

संजय उवाच । समुदीर्णं ततो दृष्ट्वा संग्रामं कुरुमुख्ययोः । [illegible] वासुदेवं यशस्विनम् ॥ १ ॥ अनयोर्वीरयोर्युद्धे को ज्यायान् भवतो मतः । कस्य वा को गुणो भूय एतद्वद जनार्दन ॥ २ ॥ वासुदेव उवाच । उपदेशोऽनयोस्तुल्यो भीमस्तु बलवत्तरः । कृती यत्नपरस्त्वेष धार्तराष्ट्रो वृकोदरात् ॥ ३ ॥ भीमसेनस्तु धर्मेण युध्यमानो न जेष्यति । अन्यायेन तु युध्यन् वै हन्यादेव सुयोधनम् ॥ ४ ॥ [illegible] को पाकर रुधिरसे भरेहुवे अपने मुखको साफ करके धैर्य को [illegible] दोनों नेत्रों से [illegible] अपने को बड़े यत्नसे थांभकर नियत हुआ ७० ॥

अध्याय ५८ ॥

संजय बोले कि इसके पीछे अर्जुन उन कौरवों में श्रेष्ठ भीमसेन और दुर्योधन के युद्ध को देखकर यशमान वासुदेवजी से यह वचन बोला । १ । हे जनार्दन जी इन दोनों वीरोंके युद्धमें आपके विचारसे कौन श्रेष्ठहै अथवा किसमें कौनसा अधिक गुणहै उसको आप कहिये । २ । वासुदेवजी ने कहा दोनों की शिक्षा बराबरहै और भीमसेन अधिक बलवान्है परन्तु यह दुर्योधन भीमसेनसे अधिक अभ्यासी और उपाय करनेवाला है । ३ । भीमसेन धर्म्म से युद्ध करके इसको विजय नहीं करसक्ता और जो अन्यायसे लड़ेगा तो अवश्य दुर्योधन को विजय करेगा । ४ । और यहभी हमने सुना है कि असुरलोगों को देवताओं ने छलसेही

self in an instant and clearing his face of blood stood up with great fortitude. 70.

CHAPTER LVIII.

Sanjaya said, " Then Arjun, seeing the battle of Bhim and Duryodhan, said to Vasudev, " Whom do you think the better of the two warriors, Vasudev? What quality is greater in each of them? " Vasudev said, " They are equal in training. Bhimsen is more powerful, but Duryodhan has better practice. Bhim cannot conque

देवैरसुरा इति नः श्रुतम् । विरोचनस्तु शक्रेण मायया निर्जितः सखे ॥ ५ ॥ मायया
चाक्षिपत्तेजो वृत्रस्य बलसूदनः । तस्मान्मायामयं भीम आतिष्ठतु पराक्रमम् ॥ ६ ॥ प्र
तिज्ञातं तु भीमेन द्यूतकाले धनञ्जय । ऊरू भेत्स्यामि ते संख्ये गदयेति सुयोधनम् ॥ ७ ॥
सोऽयं प्रतिज्ञां तां चापि पारयित्वारिकर्षणः । मायाविनं च राजानं माययैव निकृन्ततु
॥ ८ ॥ यद्येष बलमास्थाय न्यायेन प्रहरिष्यति । विषमस्थस्ततो राजा भविष्यति युधि
ष्ठिरः ॥ ९ ॥ पुनरेव तु वक्ष्यामि पाण्डवेय निबोध मे । धर्मराजापराधेन भयं नः पुनरा
गतम् ॥ १० ॥ कृत्वा हि सुमहत् कर्म हत्वा भीष्ममुखान् कुरून् । जयः प्राप्तो यशश्चाग्र्यं
वैरं च प्रतियातितम् ॥ ११ ॥ तदेवं विजयः प्राप्तः पुनः संशयितः कृतः । अबुद्धि
रेषा महती धर्मराजस्य पाण्डव ॥ १२ ॥ यदेकविजये युद्धं पणितं घोरमीदृशम् । सुयो
धनः कृती वीर एकायनगतस्तथा ॥ १३ ॥ अपि चोशनसा गीतः श्रूयतेऽयं पुरातनः ।
श्लोकस्तत्त्वार्थसहितस्तन्मे निगदतः शृणु ॥ १४ ॥ पुनरावर्तमानानां भग्नानां जीवितै

विजय किया है निश्चय करके उस विरोचनको छलही से इन्द्रने विजय कियाथा
। ५ । और छलही से इन्द्र ने वृत्रासुर को भी विजय किया इसकारण भीमसेन
मायारूप पराक्रम में नियत होकर लड़े । ६ । हे अर्जुन भीमसेन ने द्यूतके समय उस
दुर्योधन से प्रतिज्ञा करीथी कि युद्धमें तेरी जंघाओं को गदासे तोड़ूंगा । ७ । सो
यह शत्रुसन्तापी भीमसेन उस प्रतिज्ञा कोभी पूराकरे छलसेही छली राजा को मारे
। ८ । जो यह बल में नियत होकर न्यायपूर्वक प्रहार करेगा तो राजा युधिष्ठिर
अवश्य आपत्ति में फंसेगा । ९ । हे पाण्डव जो मैं कहताहूं उसको सुनो कि धर्म
राज के अपराधसे हमको फिर भय प्राप्तहुआ । १० । बहुत बड़े कर्मोंको करके
और भीष्मादिक बड़े कौरवों को भी मारकर विजय पूर्वक अत्यन्त उत्तमयश और
शत्रुता के बदलेको प्राप्तकिया । ११ । इस प्रकार की प्राप्तहोनेवाली विजय को फिर
सन्देहसे युक्त किया है अर्जुन धर्मराजकी यह बड़ी निर्बुद्धिता है । १२ । जो विजय
में इस प्रकार के एककेही साथ घोरयुद्धकी प्रतिज्ञाकरी दुर्योधन अभ्यासी वीर
और एकसे विपदावाला है । १३ । और शुक्रजीका कहाहुआ यह प्राचीन औरमुख्य
प्रयोजनसे युक्त श्लोकभी सुना जाता है उसको तुम मुझसेसुनो । १४ । कि लौटकर
आनेवाले पराजित जीवनकी इच्छा करनेवाले और एकाकीपनेमें बंधेहुये मनुष्यों

---

him but with unfair fighting. We hear that the gods conquered asurs with deception. Let *Bhim* fight artfully. He promised at the time of gambling to break Duryodhan's thigh. He should fulfil his promise. Yudhishthir will fall into difficulty, if Bhim fights fairly. We are again in danger by the fault of Yudhishthir. 10. Having slain *Bhishm* and other great Kaurav warriors we have made an end of the enmity; but he has again endangered victory through

विनाम । भेतदयमरिशेषाणामेकायनगता हि ते ॥ १५ ॥ सहसोत्पतितात्मानश्च निराशा जाश्च जीविते । न शक्यमग्रतः स्थातुं शक्रेणापि धनञ्जय ॥ १६ ॥ सुयोधनमिमं भग्न हतसैन्य ह्रद गतम् । पराजितं वनप्रेप्सुं निराशा राज्यलम्भने । कोऽन्वेव सुबुद्धः प्राज्ञः पुनर्द्वन्द्वे सम ह्वयेत् ॥ १७ ॥ अपि नो निर्जितं राज्यं न हरेत सुयोधनः । यस्तेद्द्वादशवर्षाणि गदया कृतनिश्चयः । चरत्यूर्ध्वं च तिर्यक् च भीमसेनजिघांसया ॥ १९ ॥ एनञ्चेन्न महाबाहुरन्यायेन हनिष्यति । एष वः कौरवो राजा धार्तराष्ट्रो भविष्यति ॥ २० ॥ धनञ्जयस्तु श्रुत्वैतत् केशवस्य महात्मनः । प्रेक्षतो भीमसेनस्य सव्यमूरुमताडयत् ॥ २१ ॥ गृह्यसंज्ञां ततो भीमो गदया व्यचरद्रणे । मण्डलानि विचित्राणि यमकानीतराणि च ॥ २२ ॥ दक्षिणं मण्डलं सव्यं गोमूत्रकमथापि च । व्यचरत्पाण्डवो राजन्नरिं सम्मोहयन्निव ॥ २३ ॥ तथैव तव पुत्रोऽपि गदामार्गविशारदः । व्यचरल्लघु

से भयकरना चाहिये क्योंकि वह एकसे चित्तवाले हैं । १५ । हे अर्जुन अकस्मात् चढ़ाई करनेवाले जीवनसे निराश शूरवीरोंके आगे इन्द्रमेंभी नियतहोना सम्भव नहींहै । १६ इस पराजित मृतक सेनावाले ह्रदमें वर्तमान दुर्योधनको कौनसा बुद्धिमान फिर द्वन्द्व युद्धमें बुलावे । १७ । दुर्योधन हमारे विजय किये हुये राज्यको नहीं करसक्ता जो निश्चय करनेवाला दुर्योधन भीमसेनके मारनेकी इच्छासे तेरहवर्षसे गदा के द्वारा ऊंची नीची और तिरछी गतिकरता है ।१९। जो महाबाहु भीमसेन इस प्रकार इसको अन्यायसे नहीं मारेगा तो यह कौरव दुर्योधन तुम्हारा राजाहोगा । २० फिर अर्जुनने महात्मा केशवजीके इस वचनको सुनकर भीमसेनके देखतेहुये बाईं जंघा को ठोंका ।२१। इसके पीछे भीमसेन उस संकेत को पाकर युद्धमें गदाके द्वारा यमक आदिक यद्दतसे विचित्र मण्डलोंको घूमा ।२२। हेराजा पाण्डव भीमसेन शत्रुको अचेत और मोहित करता गोमूत्रकनाम मण्डलों को घूमा । २३ । उसी प्रकार गदामार्ग में सावधान आपका पुत्रभी भीमसेनके मारनेकी इच्छासे तीव्रता

his folly He made a promise to Duryodhan, who is so practiced in mace fighting. We hear a famous verse of Shukra: we should fear those whom we have conquered, for they are bent on revenge 15. Indra also is unable to oppose those who are hopeless of their lives. What wise man would have challenged vanquished Duryodhan? Duryodhan cannot recover the kingdom conquered by us. Surely he has been practising mace for twelve years and cannot be slain by Bhim but with unfair means. Duryodhan will be your king if he is not slain unfairly. 20. At this Arjun looked at Bhim and tapped his left thigh. Bhim understood the sign and turned round in strange circles 22. He ran in zigzag circles, making his opponent insensible; and your son too, clever in the marches of mace fighting, ran in strange ways.

विवश भीमसेनजिघांसया ॥ २४ ॥ आघुन्वन्तौ गदे घोरे चन्दनागुरुरूषिते । वैरस्यान्तं परीप्सन्तौ रणे क्रुद्धाविवान्तकौ ॥ २५ ॥ अन्योन्यं तौ जिघांसन्तौ प्रवीरौ पुरुषर्षभौ । युयुधाते गरुत्मन्तौ यथा नागामिषैषिणौ ॥ २६ ॥ मण्डलानि विचित्राणि चरतोर्नृपभीमयोः । गदासम्पातजास्तत्र प्रजज्ञुः पावकार्चिषः ॥ २७ ॥ समं प्रहरतोस्तत्र शूरयोर्बलिनोर्मृधे । क्षुब्धयोर्वायुना राजन् द्वयोरिव समुद्रयोः ॥ २८ ॥ तयोः प्रहरतोस्तुल्यं मत्तकुञ्जरयोरिव । गदानिर्घातसंह्रादः प्रहाराणां समजायत ॥ २९ ॥ तस्मिंस्तदा सम्प्रहारे दारुणे संकुले भृशम् । उभावपि परिश्रान्तौ युध्यमानावरिन्दमौ ॥ ३० ॥ तौ मुहूर्तं समाश्वस्य पुनरेव परन्तपौ । अभ्यहारयतां क्रुद्धौ प्रगृह्य महतीं गदाम् ॥ ३१ ॥ तयोः समभवद्युद्धं घोररूपमसंवृतम् । गदानिपातै राजेन्द्र तक्षतोर्वै परस्परम् ॥ ३२ ॥ अर्ज्जरीकृतसर्वाङ्गौ रुधिरेणाभिसम्प्लुतौ । ददृशाते हिमवति पुष्पिताविव

से अपूर्व मार्गोंको घूमा । २४ । चन्दन अगरसे युक्त घोर गदाओं को चलायमान करनेवाले, शत्रुताका अन्त चाहते । २५ । परस्पर मारनेके अभिलाषी श्रेष्ठवीर पुरुषोत्तम वह दोनों ऐसे युद्धकरनेवालेहुये जैसे कि सर्पोंका मांस चाहनेवाले दो गरुड़ युद्ध करतेहैं । २६ । वहां विचित्र मण्डलोंके घूमनेवाले राजा दुर्योधन और भीमसेन की गदाओंके प्रहार से उत्पन्न होनेवाली अग्निकी ज्वाला प्रकटहुई ।२७। हे राजा बराबर प्रहार करनेवाले उन पराक्रमी शूरोंका घोरशब्द ऐसा उत्पन्न हुआ जैसेकि वायुके वेगयुक्त दोसमुद्रोंका घोरशब्द होताहै ।२८। मतवालेहाथीके समान बारम्बार प्रहार करनेवाले उन दोनोंके प्रहार करनेसे परस्पर गदाओंके संघट्टनसे बड़ाशब्द उत्पन्न हुआ ।२९। तब उस भयानक घोर व्याकुल युद्धमें लड़नेवाले वह दोनों शत्रुसंतापी थकगये ।३०। अर्थात् शत्रुओं के तपानेवाले क्रोधयुक्त वहदोनों एकमुहूर्त में समाश्वासितहोके दोनों गदाओंको पकड़कर फिर विश्राम युक्तहुये ।३१। हे राजेन्द्र गदाओंके प्रहारोंसे परस्पर प्रहार करनेवाले दोनोंका घोररूप युद्ध सबके देखते हुये हुआ ।३२। फिर युद्धमें चलायमान उन दोनों श्रेष्ठ नेत्रवाले वीरों ने परस्पर ऐसे घायल किया जैसे कि हिमालय पर्वतपर फूलेहुये दो किंशुकके वृक्ष होते हैं । ३३ । भीमसेन से कुछ छिद्र दिखानेपर थोड़ासा प्रसन्न चित्त दुर्योधन

Using their maces, adorned with sandal and agar, and wishing to make an end of enmity, the two heroes fought like two garurs desirous of eating serpents. 26. Sparks of fire came out of their maces. The noise of their fighting was like that of two stormy seas. They fought like mad elephants and made a tremendous noise with their maces. At last they were tired of dreadful fighting. They wounded each other with their maces and looked like two flowering kinshuk trees on the back of the Himalayas. Finding out some weakness in Bhim, Duryodhan rushed at him in great fury, but the

किंशुकौ ॥ ३३ । दुर्योधनस्तु पार्थेन विवरे सम्प्रदर्शिते । ईषदुत्स्मयमानस्तु सहसा प्रससार ह ॥ ३४ ॥ तमभ्याशागतं प्राज्ञो रणे प्रेक्ष्य वृकोदरः । अवाक्षिपद्गदां तस्मै वेगेन महता बली ॥ ३५ ॥ अवाक्षिप्तां तु तां दृष्ट्वा पुत्रस्तव विशाम्पते । अपासर्पत्ततः स्थानात् सा मोघा न्यपतद्भुवि ॥ ३६ ॥ मोक्षयित्वा प्रहारं तं सुतस्तव ससम्भ्रमात् । भीमसेनञ्च गदया प्राहरत् कुरुसत्तम ॥ ३७ ॥ तस्य विष्यन्दमानेन रुधिरेणामितौजसः । प्रहारगुरुपाताच्च मूर्च्छेव समजायत ॥ ३८ ॥ दुर्योधनो न तं वेद पीड़ितं पाण्डवं रणे । धारयामास भीमोऽपि शरीरमतिपीड़ितम् ॥ ३९ ॥ अमन्यत स्थिरं होनं प्रहरिष्यन्तमाहवे । ततो न प्राहरत्तस्मै पुनरेव तवात्मजः ॥ ४० ॥ ततो मुहूर्तमाश्वस्य दुर्योधनमुपस्थितम् । वेगेनाभ्यपतद्राजन् भीमसेनः प्रतापवान् ॥ ४१ ॥ तमापतन्तं सम्प्रेक्ष्य संरब्धममितौजसम् । मोघमस्य प्रहारं तं चिकीर्षुर्भरतर्षभ ॥ ४२ ॥ अवस्थाने मति

अकस्मात् दौड़ा । ३४ । बुद्धिमान बलवान भीमसेनने युद्धमें उस समीप वर्त्तमान दुर्योधन को देखकर बड़ी तीव्रतासे उसके ऊपर गदाकोमारा । ३५ । हे राजा आप का पुत्र उस गदा चलानेवालेको देखकर उस स्थानसे हटगया वह गदा निष्फल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी । ३६ । हे कौरवोत्तम तब आपके पुत्रने बड़ी व्याकुलता समेत उस प्रहारको बिचारकर भीमसेनको गदा से घायल किया । ३७ । रुधिरके चलायमान होने और बड़े प्रहार के गिरनेसे उस बड़े तेजस्वी का मूर्छा होगई ।३८। दुर्योधन ने उस युद्ध में पीड़ावान् भीमसेन को नहीं जाना और भीमसेन ने अत्यन्त पीड़ित शरीरको धारण किया । ३९ । आपके पुत्र ने युद्धमें उसको निश्चल और प्रहार करने का इच्छावान माना इसहेतु से फिर उसपर प्रहार नहीं किया । ४० । हे राजा इसके पीछे प्रतापवान भीमसेन एक मुहूर्त विश्राम करके तीव्रता से सम्मुख वर्त्तमान दुर्योधन के समक्ष में दौड़ा । ४१ । हे भरतर्षभ उस क्रोधयुक्त बड़े तेजस्वी आतेहुये को देखकर उसके उस प्रहारको निष्फल करनेकी इच्छासे ॥ ४२ ॥ बड़े साहसी भीमसेनको छलना चाहते आपके पुत्रने अवस्थान अर्थात् ठहरने में मतिकरके उछलना चाहा ।४३। परन्तु भीमसेनने उस राजाके कर्मकरने की इच्छाको जानलिया और सम्मुख जाकर सिंहके समान गर्जना करके । ४४ ।

former dealt the latter a heavy blow with his mace. 35. Seeing the mace approach him, your son stepped aside and the mace fell down on earth. Then your son wounded his opponent, who became insensible with the heavy blow and loss of blood, but he managed to hide his pain from your son. Seeing him ready to fight, your son did not repeat the blow 40 Having rested awhile, Bhim rushed at your son who wishing to avert his blow thought of springing up. Bhim

कृतवान् पुत्रस्तव महामनाः । इयेषोत्पतितुं राजंश्छलयिष्यन् वृकोदरम् ॥ ४३ ॥ बुबुधे भीमसेनस्तद्राज्ञस्तस्य चिकीर्षितम् । अथास्य समभिद्रुत्य समुत्क्रुश्य च सिंहवत् ॥ ४४ ॥ सृत्या वञ्चयतो राजन् पुनरेवोत्पतिष्यतः । ऊरुभ्यां प्राहिणोद्राजन् गदां वेगेन पाण्डवः ॥ ४५ ॥ सा वज्रनिष्पेषसमा प्रहिता भीमकर्मणा । ऊरू दुर्योधनस्याथ बभञ्ज प्रियदर्शनौ ॥ ४६ ॥ स पपात नरव्याघ्रो वसुधामनुनादयन् । भग्नोरुर्भीमसेनेन पुत्रस्तव महीपते ॥ ४७ ॥ ववुर्वाताः सनिर्घाताः पांसुवर्षं पपात च । चचाल पृथिवी चापि सवृक्षक्षुपपर्वता ॥ ४८ ॥ तस्मिन्निपतिते वीरे पत्यौ सर्वमहीक्षिताम् । महास्वना पुनर्दीप्ता सनिर्घाता भयङ्करी । पपात चोल्का महती पतिते पृथिवीपतौ ॥ ४९ ॥ तथा शोणितवर्षं च पांसुवर्षं च भारत । ववर्ष मघवांस्तत्र तव पुत्रे निपातिते ॥ ५० ॥ यक्षाणां राक्षसानां च पिशाचानां तथैव च । अन्तरिक्षे महानादः श्रूयते भरतर्षभ ॥ ५१ ॥ तेन शब्देन घोरेण मृगाणामथ पक्षिणाम् । जज्ञे घोरतरः शब्दो बहूनां

भीमसेन ने गदाको बड़े वेगवाले उस छलकरके ठगनेवाले और फिर उछलने के अभिलाषी की जंघाओं पर चलाया । ४५ । भयहारी कर्मकर्ता भीमसेनसे चलाई हुई और वज्रके समान चिकनाहटवाली उस गदाने दुर्योधन की दर्शनीय जंघाओं को तोड़ा । ४६ । हे राजा भीमसेनके हाथसे टूटी जंघावाला वह आपका नरोत्तम पुत्र पृथ्वीको शब्दायमान करताहुआ गिरपड़ा । ४७ । उससमय परस्पर संघट्टन करती वायुचलीं धूलकी वर्षाहुई और वृक्ष वन पर्वतोंसमेत पृथ्वी कंपायमानहुई । ४८ । सब राजाओंके स्वामी और सब पृथ्वीके अधिपति उस दुर्योधन के गिरने पर बड़ी शब्दायमान प्रकाशित और परस्पर संघट्टनवाली वायुसमेत बहुतसी उल्काभिरीं । ४९ । और रुधिरसमेत धूलकीभी वर्षाहुई हे भरतर्षभ वहां दुर्योधन के गिरनेपर इन्द्रने वर्षाकरी ।५०। इसी प्रकार बड़ा राक्षस और पिशाचों के भी बड़े शब्द अन्तरिक्ष में सुनाई पड़े । ५१ । उस घोर शब्द से बहुत से पशु पक्षियों के भी बड़े घोरशब्द सब दिशाओंमें उत्पन्नहुये । ५२ । और जो वहां मनुष्योंसमेत घोड़े हाथी आदिकथे उन्होंभी दुर्योधनके गिरनेपर बड़ेशब्द किये

---

knew his intention, and with a leonine roar, dealt a blow at his thigh while he was in the act of springing up 45. The heavy mace broke Duryodhan's thigh and he fell down on earth with a crash Then a storm of wind blew, dust fell down and the earth with her mountains and trees shook. At the fall of prince Duryodhan, meteors fell down with a crash and blood stained dust fell. Indra showered rain at the fall of Duryodhan. 50. The cries of yakshas, pishaches and rakshases were to be heard in the air and the beasts and birds cried out in all directions The sounds of men and beasts were followed by those of conchs and drums at the fall of Duryodhan Subterranean noises were heard and dreadful trunks, arms and feet danced all

सर्वतोदिशम् । ५२ ॥ ये तत्र वाजिनः शेषा गजाश्च मनुजैः सह । मुमुचुस्ते महानादं तव पुत्रे निपातिते । भेरी शङ्खमृदङ्गानामभवच्च स्वनो महान् ॥ ५३ ॥ अन्तर्भूमिगतश्चैव तव पुत्रे निपातिते । बहुपादैर्बहुभुजैः कबन्धैर्घोरदर्शनैः । नृत्यद्भिर्भयदैर्व्याप्ता दिशस्तत्राभवन्नृप ॥ ५४ ॥ ध्वजवन्तोऽस्त्रवन्तश्च शस्त्रवन्तस्तथैव च । प्राकम्पन्त ततो राजंस्तव पुत्रे निपातिते ॥ ५५ ॥ ह्रदा कूपाश्च रुधिरमुद्वेमुर्नृपसत्तम । नद्यश्च सुमहावेगा प्रतिस्रोतोवहाभवन् ॥ ५६ ॥ पुल्लिङ्गा इव नार्यस्तु स्त्रीलिङ्गाः पुरुषाभवन् । दुर्योधने तदा राजन् पतिते तनये तव ॥ ५७ ॥ दृष्ट्वा तानद्भुतोत्पातान् पाञ्चालाः पाण्डवैः सह । आविग्नमनसः सर्वे बभूवुर्भरतर्षभ ॥ ५८ ॥ ययुर्देवा यथाकामं गन्धर्वाप्सरसस्तथा । कथयन्तोऽद्भुतं युद्धं सुतयोस्तव भारत ॥ ५९ ॥ तथैव सिद्धा राजेन्द्र तथा वातिकचारणाः । नरसिंहौ प्रशंसन्तौ विप्रजग्मुर्यथागतम् ॥ ६० ॥

इति गदापर्वणि गदायुद्धे दुर्योधनवधे अष्टपञ्चाशोऽध्यायः ५८ ॥



भेरी शङ्ख और मृदङ्गों के बड़े शब्द हुये । ५३ । आपके पुत्र दुर्योधन के गिरने पर पृथ्वी के भी शब्द हुये सब दिशा बहुत से चरण भुजाओंसे और घोर दर्शन नृत्य करनेवाले भयकारी रुण्डों से पूर्ण होगई । ५४ । ध्वजासमेत शस्त्रधारी वीर भी कम्पायमान हुये । ५५ । हे भरतर्षभ राजा धृतराष्ट्र आपके पुत्र दुर्योधन के गिरनेपर तड़ाग और कूपों ने भी ऊपरको रुधिर बहाया बड़ी शीघ्रगामी नदियां उल्टी बहीं ।५६। स्त्रियां पुरुषों के समान और पुरुष स्त्रियों के समान होगये हे राजा आपके पुत्र दुर्योधन के गिरने पर । ५७ । पांचालों समेत सब पाण्डव उन अपूर्व उत्पातों को देखकर चित्त से व्याकुल हुये । ५८ । इसीप्रकार देवता गन्धर्व और अप्सरा आपके पुत्रों के अपूर्व युद्धको वर्णन करते हुये इच्छानुसार चलेगये । ५९ । और हे राजेन्द्र इसीप्रकार शुद्धवायु के साथ चलनेवाले चारण लोग भी उन दोनों नरोत्तमों की प्रशंसा करते अपने स्थानों को चलेगये ६० ॥

round. The banners of the warriors sho k 55 Lakes and wells gave up blood at the fall of your son and rivers changed their course Women were turned into men and men into women The Pandavas and Panchals were terrified at the sight of those phenomena Gods, ghandharvas and apsaras went away talking of your son's wonderful fight. The charans too flew into air and praised the fighting of the two heroes " 60.

सञ्जय उवाच । तं पातितं ततो दृष्ट्वा महाशालमिवोद्गतम् । प्रहृष्टमनसः सर्वे बभूवुस्तत्र पाण्डवाः ॥ १ ॥ उन्मत्तमिव मातङ्गं सिंहेन विनिपातितम् । ददृशुर्हृष्टरोमाणः सर्वे ते चापि सोमकाः ॥ २ ॥ ततो दुर्योधनं हत्वा भीमसेनः प्रतापवान् । पतितं कौरवेन्द्रं तमुपागम्येदमब्रवीत् ॥ ३ ॥ गौर्गौरिति पुरा मन्द द्रौपदीमेकवाससम् । यत् सभायां हसन्नस्मांस्तदा वदसि दुर्मते ॥ ४ ॥ तस्यावहासस्य फलमद्य त्वं समवाप्नुहि । एवमुक्त्वा स वामेन पदा मौलिमुपास्पृशत् ॥ ५ ॥ तथैव क्रोधसंरक्तो भीमः परबलार्दनः । पुनरेवाब्रवीद्वाक्यं यत्तच्छृणु नराधिप ॥ ६ ॥ येऽस्मान् पुरा प्रनृत्यन्त मूढा गौरिति गौरिति । तान् वयं प्रतिनृत्यामः पुनर्गौरिति गौरिति ॥ ७ ॥ नास्माकं निकृतिर्वह्निर्नाक्षद्यूतं न वञ्चना । स्वबाहुबलमाश्रित्य प्रबाधामो वयं रिपून्

अध्याय ५९ ॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर शाल वृक्षके समान ऊंचे गिरायेहुये उस दुर्योधनको अत्यन्त प्रसन्न चित्त सब पांडवोंने देखा । १ । और रोमहर्षसे प्रसन्नरूप सब सोमकोंने भी सिंहके हाथसे गिरायेहुये मतवाले हाथी के समान दुर्योधनको देखा । २ । इस रीति से प्रतापवान् भीमसेन ने दुर्योधनको मारकर उस गिरायेहुये मृतक प्राय कौरवेन्द्र के पास जाकर यह कहा । ३ । कि हे दुर्मति अभागे जो पूर्व कालमें तुमने सभाके मध्य में हमारा हास्यकरके एकवस्त्रा द्रौपदी से जो हे गौ हे गौ कहा । ४ उस हास्य के फलको अब तुमने पाया यह कहकर उसने अपने वाम पादसे उसके मुकुट को स्पर्शकिया । ५ । इसीप्रकार शत्रुकी सेनाके पीडामान करने वाले क्रोधसे रक्तवर्ण भीमसेन ने इसके पीछे भी जोर वचन कहे उनको भी सुनो । ६ । जो अज्ञानी पूर्व कालमें हेगौ२ ऐसा कहतेहुये हमारे सम्मुख नृत्य करनेवाले हुये उनके सम्मुख अब हम नाचते हैं कि हेगौ२ । ७ । इस रीति से कहा हमारा छलना अग्निका लगाना द्यूतका पांसा और ठगना नहीं है हम अपने भुजबलके आश्रित होकर शत्रुओंको पीड़ा देते हैं । ८ । वह भीमसेन उस बड़ी शत्रुताके

CHAPTER LIX

Sanjaya said ' The Pandavas looked with pleasure at Duryodhan who had fallen like a sal tree and the Somaks were overjoyed to see him fallen down like a mad elephant struck by a lion Having struck down Duryodhan, Bhim went to him and said, 'Foolish wretch! you mocked us in the court by saying 'cow cow' to Draupdi and this is the fruit of that mockery of yours." Having said this, he touched his diadem with his left foot and again said to him these words in anger 'You danced before us, saying cow, cow, and we shall now do the same. We are now avenged for your deceiving us, putting us on fire, gambling and cheating." Having made an end of the enmity, he said to Yudhishthir Keshav, Arjun, Nakul, Saha

॥ ८ ॥ सोऽवाप्य वैरस्य परस्य पारं वृकोदरः प्राह शनैः प्रहस्य । युधिष्ठिरं केशवसृञ्जयांश्च धनंजयं माद्रवतीसुतौ च ॥ ९ ॥ रजस्वलां द्रौपदीमानयन्ये ये चाप्यकुर्वन्त सदस्यवस्त्राम् । तान्पश्यध्वं पाण्डवैर्धार्तराष्ट्रान्रणे हतांस्तपसा याज्ञसेन्याः ॥ १० ॥ ये नः पुरा षण्ढतिलानवोचन् क्रूरा राज्ञो धृतराष्ट्रस्य पुत्राः । ते नो हताः सगणाः सानुबन्धाः कामं स्वर्गं नरकं वा पताम ॥ ११ ॥ पुनश्च राज्ञः पतितस्य भूमौ स तां गदां स्कन्धगतां प्रगृह्य । वामेन पादेन शिरः प्रमृद्य दुर्योधनं नैकृतिकं न्यवोचत् ॥ १२ ॥ हृष्टेन राजन् कुरुसत्तमस्य क्षुद्रात्मना भीमसेनेन पादम् । दृष्ट्वा कृतं मूर्धनि नाभ्यनन्दन् धर्मात्मानः सोमकानां प्रबर्हाः ॥ १३ ॥ तव पुत्रं तथा हत्वा कत्थमानं वृकोदरम् । नृत्यमानं च बहुशो धर्मराजोऽब्रवीदिदम् ॥ १४ ॥ गतोऽसि वैरस्यानृण्यं प्रतिज्ञा पूरिता त्वया । शुभेनैवाशुभेनाथ कर्मणा विरमाधुना ॥ १५ ॥ मा शिरोऽस्य पदा

अन्तको पाकर हँसकर बड़े धीरपने से युधिष्ठिर, केशवजी, अर्जुन, नकुल, सहदेव और सृञ्जियों से यह वचन बोले । ९ । कि जो पुरुष रजस्वला द्रौपदीको लाये और लाकर जिन्होंने सभामें नंगी करनाचाहा उन धृतराष्ट्रके पुत्रों को युद्ध में द्रौपदीके तेजसे और पाण्डवोंके पराक्रमसे हतकहुआ देखो । १० । पूर्वसमय में राजा धृतराष्ट्रके जिन निर्दय पुत्रोंने हमको नंपुसक कहाथा वह सबके सब समूहों और सहायकों समेत हमारे हाथसे मारेगये हम चाहो स्वर्ग होय चाहो नरकहोय । ११ । फिर उसने पृथ्वीपर गिरेहुये राजाके कन्धेपर धरीहुई गदा को मर्दनकर वामपादसे शिरको अच्छे प्रकारसे मलकरके दुर्योधन से कहा । १२ । हे राजा सोमकों समेत श्रेष्ठ महात्माओंने राजा दुर्योधन के मस्तक पर उस प्रसन्नचित्त नीचात्मा भीमसेन के चरणको रक्खाहुआ देखकर अच्छा नहीं माना । १३ । इसप्रकार आप के पुत्रको मारकर वार्तालाप करनेवाले और बहुत रीति से नाचनेवाले भीमसेनसे धर्मराज ने यह वचन कहा । १४ । कि तुमने शत्रुताको समाप्तताको प्राप्तकिया और अपनी प्रतिज्ञा को पूराकिया अब शुभाशुभ कर्मोंसे

dev and the Srinjayas, "Look at the death of those who brought Draupadi into court and wished to deprive her of her dress. 10. The sons of Dhritrashtra who had called us unmanly before, are now lying dead along with their allies and friends. We care not if we go to heaven or hell." Then he trampled down the head and mace of *Duryodhan* with his left foot. The good warriors among Somaks and others did not like to see him touch Duryodhan's head with his foot. Then Yudhishthir said to Bhim who was thus exulting at the death of Duryodhan, "You have made an end of the enmity and fulfilled your promise. Do not now touch his head with your foot. Do not forego dharm. The prince who has fallen down was a brother of ours. You should not thus behave with him. 16. Do not

मर्हीमिं धर्मंस्तऽतिगा भवेत् । राजा ज्ञातिर्हतश्चायं नैतन्न्याय्यं तवानघ ॥१६ ॥ एकादश चमूनाथं कुरूणामधिप तथा । मा स्प्राक्षीर्भीम पादेन राजानं ज्ञातिमेव च ॥ १७ ॥ हत बन्धुर्हतामात्यो भ्रष्टसैन्यो हतो मृधे । सर्वाकारेण शोच्योऽयं नावहास्योऽयमीश्वर. ॥ १८ ॥ विध्वस्तोऽयं हतामात्यो हतभ्राता हतप्रजा । उत्सन्नपिण्डो भ्राता च नैतन्न्याय्यं कृतं त्वया ॥ १९ ॥ धार्मिको भीमसेनोऽसावित्याहुस्त्वां पुरा जना. । स कस्माद्भीमसेन त्वं राजानमधितिष्ठसि ॥ २० ॥ इत्युक्त्वा भीमसेनन्तु साश्रुकण्ठो युधिष्ठिरः । उपसृत्याब्रवीद्दीनो दुर्योधनमरिन्दमम् ॥ २१ ॥ तात मन्युर्न ते कार्यो नात्मा शोच्यस्त्वया तथा । नूनं पूर्वकृतं कर्म सुघोरमनुभूयते ॥ २२ ॥ धात्रोपदिष्टं विषमं नून फलमसंस्कृ-

पृथक् होकर । १५ । चरणसे इसके शिरको मर्दन मतकर धर्म तुझको उल्लंघन करनेवाला न होय हे निष्पाप यह राजा और अपना भाई मारागया यह तेरी बात न्यायके योग्य नहीं है । १६ । हेभीमसेन ग्यारह अक्षौहिणी सेनाके स्वामी कौरवों के राजा अपने भाईको चरणसे मत ठुकराओ ।१७। मृतक भाई मन्त्रीऔर मायायुक्त सेनावाला यह राजादुर्योधन युद्धमें मारागया यह सब प्रकार से शोचने के योग्य है हास्यके योग्य नहीं है । १८ । यह मृतक मन्त्री भाई सन्तान और पिण्डवाला और आपकी नाताको मासहुआ भाई है तुमने यह न्याय के योग्य नहीं किया।१९। पूर्व्व समय में लोगोंने कहाहै कि यह भीमसेन धर्मका अभ्यासी है हे भीमसेन तुम धर्म्मज्ञ होकर इस राजाको किस निमित्त चरणों से ठुकराते हो ।२०। फिर अश्रुओं से पूर्ण राजा युधिष्ठिर भीमसेन से ऐसे वचन कहकर महा दुःखी होकर उस शत्रुविजयी दुर्योधन के पास जाकर यह वचन बोले । २१। कि हे तात तुझको क्रोध न करना चाहिये और अपना भी शोच न करना चाहिये निश्चय करके पूर्व्वका किया हुआ घोरकर्म फलको अवश्य देताहै। २२। हेकौरव्य निश्चय करके ईश्वर रसेविपरीत अशुभ और अपवित्र फलवाला कर्म उपदेश किया गया है जो तुमहमको और हमतुमको मारते हैं । २३ । हे भरतवंशी निश्चयही

touch with your foot the head of your brother who was the lord of eleven akshauhinis. Being deprived of brothers, ministers and army, Duryodhan has been slain in battle He is worthy of being grieved at and not of mockery. He himself as well as his ministers brothers and sons are slain. You have acted unjustly. People say that Bhim is just, why then have you kicked his head ? " Having said this to Bhim, Yudhishthir with eyes full of tears turned to Duryodhan and said, " You need not be grieved, brother You should not feel sorrow for yourself, for it is the fruit of your own former misdeeds. It was a quite unholy deed that you and we have fought together. You have brought on this misery by your avarice, pride and folly. You have brought about the death of our brothes, friends

तव ह्यपराधात्सुमहानस्मान्प्राप्तोऽयं कुलक्षयः ॥ २३ ॥ आत्मनो ह्यपराधेन
महद्व्यसनमीदृशम् । प्राप्तवानसि यल्लोभान्मदाद्बाल्याच्च भारत ॥ २४ ॥
घातयित्वा वयस्यांश्च भ्रातॄनथ पितॄंस्तथा । पुत्रान् पौत्रांस्तथाचार्यांस्ततोसि निधन
गतः ॥ २५ ॥ तवापराधादस्माभिर्भ्रातरस्ते महारथाः । निहता ज्ञातयश्चान्ये दिष्टं मन्ये
दुरत्ययम् । २६ । आत्मा न शोचनीयस्ते श्लाघ्यो मृत्युस्तवानघ । वयमेवाधुना शोच्याः
सर्वावस्थासु कौरव । कृपणं वर्तयिष्यामस्तैर्हीना बन्धुभिः प्रियैः ॥ २७ ॥ भ्रातृणां चैव
पुत्राणां तथा वै शोकविह्वलाः । कथं द्रक्ष्यामि विधवा वधूः शोकपरिप्लुताः ॥ २८ ॥
त्वमेकः सुस्थितो राजन् स्वर्गे ते निलयो ध्रुवः । वयं नारकिकाश्चैव दुःखं प्राप्स्याम
दारुणम् । २९ ॥ स्नुषाश्च प्रस्नुषाश्चैव धृतराष्ट्रस्य विह्वलाः । गर्हयिष्यन्ति नो नूनं
विधवाः शोककर्शिताः ॥ ३० ॥ एवमुक्त्वा सुदुःखार्तो निशश्वास स पार्थिवः । विल
लाप चिरं चापि धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ ३१ ॥

इति गदापर्वणि युधिष्ठिरविलापे एकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९ ॥



अपने अपराध से इस प्रकार के बड़े दुःखको प्राप्त कियाहै जोकि लोभ अहङ्कार
और अज्ञानतासे प्राप्त हुआ है २४ । हमारे भाई समानवय पिता पुत्रपौत्र और
अन्यसब लोगों को मरवाकर आपभी नाशहुआ । २५ । तेरेही अपराधसे तेरे सब
भाई हमारे हाथसे मारेगये और जातवाले भी मारे इससे मैं प्रारब्धकोही कठिनता
से पारहोनेके योग्य मानता हूं । २६ । हे निष्पाप तेरा आत्मा शोचके योग्यनहीं
है तेरी मृत्यु प्रशंसा के योग्यहै परन्तु हे कौरव अब हम सब दशा में शोचके योग्य
हैं । २७ । उन भाइयों से रहित होकर हम दुःखसे अपना जीवन करेंगे और भाई
पुत्रादिकों के शोकसे व्याकुल होंगे । २८ । शोकमें पूर्ण विधवा वधुओं को किस
प्रकारसे देखूंगा हे राजा तुम अकेलेहीको निश्चय तुमको स्वर्गहोगा हमलोग अवश्य
नरकगामी हैं और बड़े कठिन दुःखोंको पावेंगे । २९ । धृतराष्ट्रके पुत्रपौत्रों की
स्त्रियां व्याकुल शोकसे पीड़ित और विधवाहोकर हमारी निन्दाकरेंगी । ३० ।
दुःखसे पीड़ावान वह धर्मका पुत्र राजा युधिष्ठिर इस प्रकार कहकर और श्वासों
को लेकर अत्यन्त पीड़ावान हुआ ३१ ।

fathers, sons, grandsons, others and yourself. 25. All your brothers were slain by us by your own fault. I see that Fate is supreme. You are not worthy of regret innocent one, thy death is praiseworthy, but we are undone. Deprived of our cousins we shall pass our life in misery and shall mourn their death. How shall I be able to look at the widowed women You alone have earned heaven, while we shall fall in hell and misery. The wives of the sons and grandsons of Dhritarashtra will blame us for their widowhood " Having said this Yudhishthir the just was much grieved and heaved long sighs. " 31.

धृतराष्ट्र उवाच । अधर्मेण हतं दृष्ट्वा राजानं माधवोत्तम । किमब्रवीत्तदा सूत बलदेवो महाबलः ॥ १ ॥ गदायुद्धविशेषज्ञो गदायुद्धविशारद । कृतवान्रौहिणेयो यत्तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । ऊर्वोर्निहतं दृष्ट्वा भीमसेनेन ते सुतम् । रामः प्रहरतां श्रेष्ठश्चुक्रोध बलवद्बली ॥ ३॥ ततो मध्ये नरेन्द्राणामूर्ध्वबाहुर्हल युध । कुर्वन्नार्तस्वरं घोरं धिग्धिग्भीमेत्युवाच ह ॥ ४ ॥ अहो धिग्यदधो नाभेः प्रहृतं धर्मविग्रहे । नैतद्दृष्टं गदायुद्धे कृतवान् यद्वृकोदर ॥ ५ ॥ अधो नाभ्या न हन्तव्यमिति शास्त्रस्य निश्चय । अयं त्वशास्त्रविन्मूढः स्वच्छन्दात्संप्रवर्तते ॥ ६ ॥ तस्य तत्तद्ब्रुवाणस्य रोषः समभवन्महान् । ततो लाङ्गलमुद्यम्य भीममभ्यद्रवद्बली ॥ ७ ॥ तस्योर्ध्वबाहोः सदृशं रूपमासीन्महात्मन । बहुधातुविचित्रस्य श्वेतस्येव महागिरेः ॥ ८ ॥

अध्याय ६० ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सूत तब माधवों में श्रेष्ठ बड़े बलवान् बलदेवजी ने अधर्मसे मारेहुये राजाको देखकर क्या कहा ॥१ गदा युद्धमें कुशल माधव बलदेवजी ने जो किया वह सब मुझसे कहो ।२। संजयबोले कि महारुकर्त्ताओंमें श्रेष्ठ बलवान् बलदेवजी भीमसेनके चरणों से घातित आपके पुत्रको देखकर बड़े क्रोधयुक्तहुये । ३ । इसके पीछे राजाओं के मध्य में ऊंची भुजा करनेवाले बलदेवजी पीड़ित शब्दोंमे यह वचन बोले कि हे भीमसेन धिक्कारहै धिक्कारहै धिक्कार है।४।जोयुद्धमें तैंने नाभि के नीचे धर्मके विरुद्ध प्रहारकिया यह गदायुद्ध में कभी नहीं देखाथा जिसको कि हे भीमसेन तुमने किया । ५ । नाभि के नीचे प्रहार करना अधर्म है यह शास्त्रको न जाननेवाला अज्ञान भीमसेन अपनी इच्छासे कर्म करता है ।६ ऐसे अनेक बातों को कहकर उन बलदेवजी का बड़ाक्रोध प्रकट हुआ इसकेपीछे वह महाबली अपने हलको उठाकर भीमसेनके सम्मुखगये । ७ । उस समय उस ऊंची भुजा करनेवाले महात्माकारूप बहुत धातुयुक्त श्वेत पर्वतके समान हुआ ८ । तब नम्रतासे युक्त पराक्रमी केशवजीने बड़े उपायकेद्वारा हृष्ट पुष्ट लम्बी भुजाओं

CHAPTER LX

Dhritrashtra said, " What did Baldev the best of Madhavas do on seeing that the prince was unjustly slain Pray tell me all that he said and did " Sanjaya said, " Baldev the best of warriors seeing that your son was kicked by Bhim, was much enraged With upraised hands and voice choked with anger, he said, ' Fie on Bhim You have acted against rule in striking below the navel You have done an act which is never done by those who fight with the mace 5. It was unjust to do so He has acted wilfully ' Having said this, he showed his anger by rushing at Bhim to strike him with his weapon, and

तमुत्पतन्तं जग्राह केशवो विनयानतः । बाहुभ्यां पीनवृत्ताभ्यां प्रयत्नाद्बलवद्बली ॥ ९ ॥ सितासितौ यदुवरौ शुशुभातेऽधिकं तदा । नभोगतौ यथा राजंश्चन्द्रसूर्यौ दिनक्षये ॥ १० ॥ उवाच चैनं संरब्धं शमयन्निव केशवः । आत्मवृद्धिर्मित्रवृद्धिर्मित्रमित्रोदयस्तथा । विपरीतं द्विषत्स्वेतत् षड्विधा वृद्धिरात्मनः ॥ ११ ॥ आत्मन्यपि च मित्रेषु विपरीतं यदा भवेत् । तदा विद्यान्मनोग्लानिमाशु शान्तिकरो भवेत् ॥ १२ ॥ अस्माकं सहजं मित्रं पाण्डवाः शुद्धपौरुषाः । स्वकाः पितृष्वसुः पुत्रास्ते परैर्निकृता भृशम् ॥ १३ ॥ प्रतिज्ञापालनं धर्मः क्षत्रियस्येति वेत्थ च । सुयोधनस्य गदया भङ्क्तास्म्यूरू महाहवे । इति पूर्वं प्रतिज्ञातं भीमेन हि सभातले ॥ १५ ॥ मैत्रेयेणाभिशप्तश्च पूर्वमेव महर्षिणा । ऊरू भेत्स्यति ते भीमो गदयेति परन्तप ॥ १६ ॥ अतो दोषं न पश्यामि मा क्रुधस्त्वं प्रलम्बहन् । यौनैर्हार्दैश्च सम्बन्धः सह पाण्डवैः ॥ १७ ॥ तेषां वृद्धया

से उछलनेवाले बलदेवजीको बड़े बलसे पकड़ लिया । ९ । तब मृदुस्वभाववालोंमें श्रेष्ठ गौर और श्याम वर्णवाले वह दोनों महात्मा ऐसे अधिक शोभायमान हुये हे राजा जैसे कि दिनके अन्त में वर्तमानहोनेवाले चन्द्रमा और सूर्य शोभितहोते हैं । १० । केशवजी उन क्रोधयुक्त बलदेवजीको शान्त करके यह वचन बोले कि अपनी वृद्धि, शत्रुकानाश, अपने मित्रकी वृद्धि, शत्रुके मित्रका नाश और अपने मित्रके मित्रकी वृद्धि और शत्रुके मित्रके मित्रका नाश यह छ प्रकारकी अपनी वृद्धि है । ११ । जब अपने में और मित्रोंमें अन्तरहोगा तब चित्तग्लानिको पावेगा उससमय कोई अशुभ न होगा पवित्र वीरतावाले पांडव हमारे भाई और मित्र हैं अपनी फूफीके पुत्र हैं उनका शत्रुओं ने अनादर कियाथा । १३ । हम इसलोकमें प्रतिज्ञाके पूरेकरनेको क्षत्रीका धर्म जानते हैं पूर्व समय में भीमसेन ने सभाके मध्य में प्रतिज्ञाकरीथी कि मैं बड़े युद्धमें दुर्योधनकी जंघाओं अपनी गदा से तोडूंगा । १५ । हे शत्रुसंतापी पूर्व में मैत्रेय महर्षि ने इसको शाप दियाथा कि युद्धमें भीमसेन गदा से तेरी जंघाओं को तोड़ेगा । १६ । इस कारणसे दोषको नहीं देखताहूं हे बलदेवजी आप क्रोध न करो पांडवों से हमारी नातेदारी है और मित्रताभी है

in his rage looked like a white hill. Valiant Keshav seized him within his powerful arms. The two great men, black and white, looked like the sun and moon at evening. 10. Having pacified his brother, *Krishn* said, — Success lies in six things — success of self, fall of foe, friend's success, fall of friend's enemy, success of friend's friend and fall of enemy's friends. One making a distinction between friends and self, comes to grief. The Pandavas are your friends and kinsmen; they were insulted by the enemy and a kshastrya likes to accomplish his vows. Bhim had made a vow to break Duryodhan's thigh. 15. He was formerly cursed by Maitreya to the effect that his thigh would be broken by Bhim. I also there-

हि नो वृद्धिर्मा क्रुधः पुरुषर्षभ । वासुदेववचः श्रुत्वा सीरभृत् प्राह धर्मवित् ॥१८॥ धर्मः सुचरितः सद्भिः सह द्वाभ्यां नियच्छति । अर्थश्चात्यर्थलुब्धस्य कामश्चातिप्रसङ्गिनः ॥१९॥ धर्मार्थौ धर्मकामौ च कामार्थौ चाप्यपीडयन् । धर्मार्थकामान् योऽभ्येति सोऽत्यन्तं सुखमश्नुते ॥ २० ॥ तदिदं व्याकुलं सर्वं कृतं धर्मस्य पीडनात् । भीमसेनेन गोविन्द कामं त्वं तु यथात्थमाम् ॥ २१ ॥ कृष्ण उवाच । अरोषणो हि धर्मात्मा सततं धर्मवत्सलः । भवान् प्रख्यायते लोके तस्मात् संशाम्य माक्रुधः ॥ २२ ॥ प्राप्तं कलियुगं विद्धि प्रतिज्ञां पाण्डवस्य च । आनृण्यं यातु वैरस्य प्रतिज्ञायाश्च पाण्डवः ॥ २३ ॥ सञ्जय उवाच । धर्मच्छलमपि श्रुत्वा केशवात् स विशाम्पते । नैव प्रीतिमना रामो वचनं प्राह संसदि ॥ २४ ॥ हत्वा धर्मेण राजानं धर्मात्मानं सुयोधनम् । जिह्मयोधीति लोके

। १७ । उन्होंकीही वृद्धि से हमारी वृद्धि है हे पुरुषोत्तम क्रोध न करो धर्मज्ञ बलदेवजी ने वासुदेवजी के वचनको सुनकर कहा । १८ । कि छःगुणों से अच्छीरीति करके अभ्यास कियाहुआ धर्म कहाहै और दो गुणोंसे हानिको पाताहै वह दोगुण यह हैं कि बड़े लोभीका अर्थ और अति प्रसंगीका काम । १९ । जो पुरुष कामसे धर्म अर्थको अर्थ से धर्म कामको और धर्मसे काम अर्थको पीड़ावान न करता धर्म अर्थ कामको प्राप्त होताहै वह बड़े सुखको पाता है । २० । सो धर्मको पीड़ावान करने से भीमसेन ने यह सब व्याकुलतासे किया है गोविन्द जी तुमने मुझसे अपनी इच्छानुसार कहा है धर्म के अनुसार नहीं कहा है । २१। श्रीकृष्ण जी बोले कि आप इस लोक में क्रोधरहित धर्मात्मा और सदैव धर्म वत्सल विख्यातहो इस हेतुसे आप शान्त हूजिये क्रोध न करिये । २२ । अब आप कलियुगको वर्त्तमान हुआ जानिये और पाण्डवोंकी प्रतिज्ञा को समझो पाण्डवलोग शत्रुता और प्रतिज्ञा की अनृणताको पावें । २३ । संजयबोले हे राजा उन अप्रसन्नमन बलदेवजी ने केशवजी से इस छलसंयुक्त धर्मको भी सुनकर सबके समक्ष में इस वचन को कहा । २४ । कि पाण्डव भीमसेन धर्मात्मा

fore no fault. You should not be angry with the Pandavas who are our kinsmen and friends. Our greatness goes hand in hand with theirs." On hearing the words of Vasudev, he said, "Six virtues are the sign of Dharm. The two things deprecatory to it are excess of avarice and lust. He who practises dharm, arth and kam, without clashing them together, gets happiness. 20 Bhim forsook dharm in his confusion and joy and you also are saying this against its dictates." Shri Krishn said, "You are known throughout the world as virtuous, without anger and friend to the virtuous. Curb your anger and be pacified. Think of the kali age, the vow of the Pandavas and the end of

हिमन् रूपान यास्यति पाण्डवे ॥ २५ । दुर्य्योधनोऽपि धर्मात्मा गतिं प्राप्स्यति शाश्व
तीम् । क्षत्रधर्मा हतो राजा धार्त्तराष्ट्रो नराधिप ॥ २६ युद्धदीक्षां प्रविश्याजौ रण
यज्ञं वितत्य च । हुत्वात्मानममित्राग्नौ प्राप चावभृथं यशः ॥ २७ ॥ इत्युक्त्वा रथमा
रुह्य रौहिणेयः प्रतापवान् । श्वेताभ्रशिखराकारः प्रययौ द्वारकां प्रति ॥ २८ । पाञ्चा
लास्तु सवार्ष्णेया पाण्डवाश्च विशाम्पते । रामे द्वारवतीं याते नातिप्रमनसोऽभवन्
॥ २९ ॥ ततो युधिष्ठिरं दीनं चिन्तापरमधोमुखम् । शोकोपहतसङ्कल्पं वासुदेवोऽब्रवी
दिदम् ॥ ३० । वासुदेव उवाच । धर्मराज किमर्थं त्वमधर्ममनुमन्यसे । हतबन्धोर्यदे
तस्य पतितस्य विचेतसः ॥ ३१ ॥ दुर्य्योधनस्य भीमेन मृद्यमानं शिरः पदा । उपप्रे
क्षसि कस्मात्त्वं धर्मज्ञ सन्नराधिप ३२ ॥ युधिष्ठिर उवाच । न ममैतत् प्रियं कृष्ण
यद्राजानं वृकोदरः । पदा मूर्द्ध्न्यस्पृशत् क्रोधात् न च हृष्ये कुलक्षये ।३३। निकृत्या

राजादुर्योधन को अधर्म से मारकर इस लोक में अधर्मयुद्ध करनेवालाभी प्रसिद्ध होगा
। २५ । धर्मात्मा दुर्योधन भी सनातन गति को पावेगा क्योंकि सत्ययुद्ध करने
वाला राजादुर्योधन मारागया । २६ । युद्धदीक्षाको प्राप्तकर और युद्धभूमि में
युद्धरूपी यज्ञकी रचना करके अपनेको शत्रुरूपी अग्नि में होमकर शुभकीर्त्तिरूपी
यज्ञस्नान को इसने पाया । २७ । श्वेतशिखर और स्वच्छ बादल रूप बलदेव
जी यह कहकर रथपर सवारहोकर द्वारका को चलेगये । २८ । हेराजा बलदेवजी
के द्वारकाजानेपर पांडवोंसमेत सब पांचाल अत्यन्त प्रसन्न नहीं हुये । २९ । इस
केपीछे वासुदेवजी उस दुःखी शोचग्रस्त नीचाशिर करनेवाले शोक से हतसंकल्प
युधिष्ठिरसे यह वचन बोले । ३० । कि हे धर्मराज तुम किस निमित्त अधर्म को
स्वीकार करतेहो हे राजा तुम धर्मज्ञहोकर जो इस मृतक भाइयोंसे अचेत गिरेहुये
दुर्योधन के शिरको भीमसेन के पैरोंसे मर्दन कियाहुआ देखकर निषेध नहीं
करतेहो इसका क्याहेतु है । ३२ । युधिष्ठिरबोले हे श्रीकृष्णजी यह मैं नहीं
चाहताहूं जो भीमसेनने क्रोधसे राजाके शिरको चरणसेछुआ इस कुलके नाश में
मैं प्रसन्न नहीं होताहूं । ३३ । हमलोग धृतराष्ट्र के पुत्रों के छलों से छलेगये इन

enemity." Sanjaya said that having heard the policy of Shree Krishn Baldev could not help remarking, "Having slain virtuous Duryodhan unjustly, Bhim's name will be remembered with injustice. Virtuous Duryodhan will attain the eternal regions because he fought justly and sacrificed his own body on the altar of war." Having said thus, he mounted his car and went away to Dwarka. The Pandavas and Panchals were not happy after his departure. Then addressing Yudhishthir who was plunged in the sea of sorrow, Vasudev said 30. "Why did you for all your virtue, allow Bhim to kick at the head of fallen Duryodhan? Why did you not stop him?" Yudhishthir, [illegible]

निकृता हि वयं पापैर्धार्तराष्ट्रैः । बहूनि परुषाण्युक्त्वा वनं प्रस्थापिताः स्म ह ॥ ३४ ॥ भीमसेनस्य तद्दुःखमतीव हृदि वर्त्तते । इति सञ्चिन्त्य वार्ष्णेय मयैतत् समुपेक्षितम् ॥ ३५ ॥ तस्माद्धत्वा कृतघ्नं लुब्धं कामवशानुगम् । लभतां पाण्डवः कामं धर्मे धर्मेऽपि वा कृते ॥ ३६॥ सञ्जय उवाच । इत्युक्ते धर्मराजेन वासुदेवोऽब्रवीदिदम् । काममस्त्वेतदिति वै कृच्छ्राद्यदुकुलोद्वह ॥ ३७ ॥ इत्युक्तो वासुदेवेन भीमप्रियहितैषिणा । अन्वमोदत तत्सर्वं यद्भीमेन कृतं युधि ॥ ३८ ॥ भीमसेनोऽपि हत्वाजौ तव पुत्रममर्षण । अभिवाद्याग्रतः स्थित्वा सम्प्रहृष्टः कृताञ्जलिः ॥ ३९ ॥ प्रोवाच सुमहातेजा धर्मराजं युधिष्ठिरम् । हर्षादुत्फुल्लनयनो जितकाशी विशाम्पते ॥ ४० ॥ तवाद्य पृथिवी राजन् क्षेमा निहतकण्टका । तां प्रशाधि महाराज स्वधर्ममनुपालय ॥ ४१ ॥ यस्तु कर्त्तास्य वैरस्य निकृत्या निकृतिप्रियः । सोऽयं वै निहतः शेते पृथिव्यां पृथिवीपते ॥ ४२ ॥ दुःशा

लोगोंने बड़े२कठोर और असह्य वचन कहकर हम सबको वनमें भेजाथा । ३४ । वह कठिन दुःख भीमसेन के हृदय में वर्त्तमान है हे श्रीकृष्णजी मैंने यह विचार कर तरहदी है । ३५ । इसहेतुसे पांडव भीमसेन उस निर्बुद्धि लोभी और कामकी आधीनताम वर्त्तमान दुर्योधन को मारकर धर्म से वा अधर्म करके भी प्रयोजन को सिद्ध करसक्ता है । ३६ । संजयबोले कि धर्मराज के इस प्रकार कहनेपर वासुदेव जी इस वचन को दुःखसे बोले कि यह इच्छाकेनुसार होय । ३७ । भीमसेन का प्रिय और हित चाहनेवाले वासुदेवजी के इस प्रकार कहेहुये वचन को सुनकर धर्मराज ने उस सब अपराधको क्षमाकिया जोकि युद्धमें भीमसेन से कियागया था । ३८ । हेराजा युद्धभूमि में आपके पुत्रको मारकर क्रोध से रहित अत्यन्त प्रसन्न हाथ जोड़ेहुये प्रसन्नता से प्रफुल्लितनेत्र विजयसे शोभायमान महातेजस्वीभीमसेनने भी दण्डवत्करके आगे नियतहोकर धर्मराज युधिष्ठिरसे कहा । ४० । कि हे राजा अब निष्कण्टक और क्षेमकारी यह सब पृथ्वी तेरी है हे महाराज इसपरराज्यकरो और अपने धर्म को पालनकरो । ४१ । जो छलों से ही इस शत्रुता का पालन करनेवाला था हे राजा वह मराहुआ इस पृथ्वीपर पड़ाहुआ सोताहै । ४२ ।

had no hand in it nor am I pleased with this destruction of the family We were deceived by the sons of Dhritrashtra and they had sent us into exile with very harsh words The dart of those wrongs rankled in the breast of Bhim and therefore I overlooked the matter 35 He could slay foolish avaricious and covetuous Duryodhan justly or unjustly ' Having heard Yudhishthir's words, Vasudev said in grief " Let it be as you say " Hearing the words of Vasudev the well-wisher of Bhim, Yudhishthir forgave his fault in breaking the rule of war. Thus pardoned, cheerful and with eyes dialated for joy, glorious Bhim respectfully said to Yudhishthir. 40. " The earth, without a thorn, belongs to thee, king, rule over it justly The deceit-

सनप्रभृतय सर्वे ते चोग्रशादिन । राधेय. शकुनिश्चापि निहतास्तव शात्रवः ॥ ४३ ॥
सेयं रत्नसमाकीर्णा मही सवनपर्वता । उपावृत्ता महाराज त्वामद्य निहतद्विषम् ॥४४॥
युधिष्ठिर उवाच । गतो वैरस्य निधन हतो राजा सुयोधन । कृष्णस्य मतमास्थाय
विजितेय वसुन्धरा ॥ ४५ ॥ दिष्ट्या गतस्त्वमानृण्यं मातु कोपस्य चोभयोः।
दिष्ट्या जयसि दुर्धर्षदिष्ट्या शत्रुर्निपातितः ॥ ४६ ॥

इति गदायुद्धपर्वणि बलदेवसान्त्वनायां षष्टितमोऽध्याय ॥ ६० ॥

पालन करनेवालाथा हे राजा वह-मराहुआ इस पृथ्वीपर पड़ाहुआ सोताहै । ४२ ।
और तुमको कठोरवचन कहनेवाले आपके शत्रु कर्ण शकुनि और दुश्शासनादिक
सब भाईभी मारेगये । ४३ । हे महाराज यह रत्नोंसेपूर्ण मृतक शत्रुवाली पृथ्वी
वन पर्वता समेत सब आपको प्राप्तहुई ।४४। युधिष्टिरबोले कि राजामान ध्वर्म
दुर्योधनको अब शत्रुताका अन्तप्राप्तहुआ और श्रीकृष्णजीके विचारमें नियतहोकर
हम सबलोगों ने इस पृथ्वीको विजय किया । ४५ । आपने प्रारब्धसे ही दोनों
माताओं के क्रोधकी उऋणताको पाया है अजेय आप प्रारब्धसेही विजय करतेहो
और प्रारब्धही से यहसब शत्रुमारेगये ४६ ॥

ful enemy lies dead on earth. The enemies who spoke harsh words to you—Karan, Shakuni, Dushasan and his brothers—are all extirpated. You are now the master of all this land together with her forests, hills and mines of jewels and your enemies are no more." Yudhishthir replied, "You have made an end of enmity by slaying Duryodhan, and we have conquered the land by the advice of Shri Krishn. The two mothers will no longer be angry. It is by good fortune alone that you have conquered and slain the enemies." 46.



धृतराष्ट्र उवाच । हत दुर्य्योधन दृष्ट्वा भीमसेनेन संयुगे।पाण्डवा सृञ्जयाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । हत दुर्य्योधन भीमसेनेन संयुगे । सिंहेनेव महाराज मत्त वनगजं यथा॥ २॥प्रहृष्टमनसस्तत्र कृष्णेन सह पाण्डवाः । पांचालाः सृञ्जयाश्चैव निहते कुरुनन्दने ॥ ३ ॥ आविध्यन्नुत्तरीयाणि सिंहनादांश्च नेदिरे । नैतान् हर्षसमाविष्टानिय सेहे वसुन्धरा ॥ ४॥ धनूष्यन्ये व्याक्षिपन्त ज्याश्चाप्यन्ये तथाक्षिपन् । दध्मुरन्ये महाशङ्खानन्ये जघ्नुश्च दुन्दुभी.॥ ५ ॥ चिक्रीडुश्च तथैवान्ये जहसुश्च तथापरे । अब्रुवंश्चासकृद्वीरा भीमसेनमिदं वचः ॥ ६ ॥ दुष्कर भवता कर्म रणेय सुमहत् कृतम् । कौरवेन्द्र रण हत्वा गदयातिकृतश्रमम् ॥ ७ ॥ इन्द्रेणेव हि वृत्रस्य वध परमसंयुगे । त्वया कृतममन्यन्त शत्रोर्वधमिम जना ॥ ८ ॥ चरन्त विविधान्मार्गान् मण्डलानि च सर्वशः । दुर्य्योधनमिम शूर कोऽन्यो हन्याद्वृकोदरात् । ९ ।

अध्याय ॥ ६१

धृतराष्ट्रबोले हे सञ्जय युद्धमें भीमसेन के हाथसे मृतक देखकर पांडव और सृंजियों ने क्या किया । १ । सञ्जय बोले हे महाराज जिसप्रकार सिंहके हाथसे मरेहुये मतवाले जङ्गली हाथीको देखते हैं उसीप्रकार युद्धमें भीमसेन के हाथ से दुर्योधनको मराहुआ देखकर । २ । श्रीकृष्णजी समेत प्रसन्नचित्त पाण्डवपांचाल और सृंजियों ने कौरवनन्दन के मरनेपर । ३ । दुपट्टों को घुमा घुमाकर सिंहनाद किये परंतु पृथ्वीने इनप्रसन्नतासे पूर्ण वीरोंको नहींसका । ४ । किसी किसीने धनुषोंको टङ्कारा किसीने ज्याका शब्दायमान किया बहुतों ने बडे शङ्खोंको बजाया किसनोंने दुन्दुभियोंको बजाया । ५ । इसीप्रकार बहुतेरे क्रीडा करनेवाले हुये और आपके बहुत से शत्रु प्रसन्नमनहुये यह सबवीर वारम्वार भीमसेन से यह वचन बोले । ६ । कि अब युद्धमें तुमने कौरवराजको अपनीगदासे मारकर बडा कठिन कर्म्मकिया । ७ । मनुष्यों ने आपके हाथसे युद्धमें उस शत्रुके मरनेको इसप्रकार का माना जैसे कि इन्द्रके हाथसे वृत्रासुर का मरण हुआ था । ८ । भीमसेन के सिवाय कौनसा मनुष्य उस उसप्रकार के मार्गों समेत घूमने वाले

CHAPTER LXI

Dhritrashtra sa d, " Wl at di l the P n davas and S njayas do at the fall of Duryodhan ?" Sanjaya replied, " S eing Dury dhan slain by Bhim, like a mad el phant slain by a lio , the *Pandavas* and the Panchals, w th Shri Krishn, roared for joy and fluttered their clothes their shouts rang through the air. S me twanged their bowstrings, while others sounded their conchs and drums Many of your enemies played and were cheerful. They said again to Bhim, "You have done a famous deed in slaying the *Kaurav* prince with your mace, you have destroyed him as Indra did Vritrasur. Who else except Bhim could slay valiant Duryodhan ? You

वैरस्य च गतः पारं त्वमिहाग्र्येः स्वकर्मभिः। शासकत्वेन लभ्येन सम्प्राप्तं विजिगीषता ॥१०॥ कुञ्जरेणेव मत्तेन वीर संग्राममूर्धनि। दुर्योधनशिरो दिष्ट्या पादेन मृदितं त्वया ॥११॥ सिंहेन महिषस्येव कृत्वा सङ्गरमद्भुतम्। दुःशासनस्य रुधिरं दिष्ट्या पीतं त्वयानघ ॥१२॥ ये विप्रकुर्वन् राजानं धर्मात्मानं युधिष्ठिरम्। मूर्ध्नि तेषां कृतः पादो दिष्ट्या ते स्वेन कर्मणा ॥१३॥ अमित्राणामधिष्ठानाद्वधाद्दुर्योधनस्य च। भीम दिष्ट्या पृथिव्यां ते प्रथितं सुमहद्यशः ॥१४॥ एवं नूनं हते वृत्रे शक्रं नन्दन्ति बन्दिनः। तथा त्वां निहतामित्रं वयं नन्दाम भारत ॥१५॥ दुर्योधनवधे यानि रोमाणि हृषितानि नः। अद्यापि न विहृष्यन्ति तानि तद्विद्धि भारत। इत्यब्रुवन् भीमसेनं वातिकास्तत्र सङ्गताः ॥१६॥ तान् हृष्टान् पुरुषव्याघ्रान् पञ्चालान् पाण्डवैः सह। ब्रुवतः सदृशं तत्र प्रोवाच मधुसूदनः ॥१७॥ न न्याय्यं निहतं शत्रुं भूयो हन्तुं नराधिपाः।

मारके दुर्योधनको मारसक्ता था। १० । तुमने यहां शत्रुताके अन्तको पाया यह आपका कर्म दूसरों से बड़ी कठिनता से भी करने के योग्य न था। १०। और तुमने युद्धभूमि में मारनेवाले मतवालेहाथी के समान दुर्योधन के शिरको अपने चरणों से मर्दनकिया है निष्पाप तुमने उत्तम युद्धकरके मारनेवालेही दुश्शासन के रुधिर को ऐसे पानकिया जैसे कि भैंसेके रुधिरको सिंह पान करता है। १२। जिन्हों ने धर्मात्मा राजा युधिष्ठिरका अपमान कियाथा उनके शिरपर तुमने अपने कर्मके द्वारा अपना चरण रक्खा। १३। हे भीमसेन मारनेवाले तुम शत्रुओंके ऊपर विराजमान हो और दुर्योधनके मारने से तेरी बड़ी कीर्ति पृथ्वीपर हुई। १४। निश्चय करके वृत्रासुरके मरनेपर बन्दीजनों ने जैसे इन्द्रको प्रसन्न कियाथा हे भरतवंशी उसीप्रकार हम सबभी निश्शत्रु होकर तुमको प्रसन्न करते हैं। १५। दुर्योधनके मरनेसे जो हमारे रोम हर्षितहुये वह अबतक शरीरपर उठेहुये नहीं बैठेहैं हे भरतवंशी इसको सत्य समझो मानो इसप्रकारसे भीमसेनकी प्रशंसाकरते हुये वे वहां स्थान पर वार्तिकजन इकट्ठेहुये। १६। पाण्डवों समेत एकसी बातें करनेवाले उन पुरुषोत्तम पांचालों को देखकर मधुसूदनजी बोले १७ हे राजाओ

have made an end of the enemity; no other man could do a deed like you. 10. You tramp'ed down the head of Duryodhan who was like a mad elephant. You drank Dushasan's blood as a lion does that of a buffalo. You put your brave foot on the heads of those who insulted Yudhishthir. You have conquered your foes by good luck and have become famous by slaying Duryodhan. We adore you as the bards did Indra on slaying Vritrasur. Truly our hairs still stand for joy." While they were thus talking together Madhusudan said 17 "To insult fallen foe is unlawful. The fool was again and again by harsh words. He disregarded the advice of his well wishers and was therefore slain. In spite of the repeated warnings of Vidura

असकृद्वाग्भिरुग्राभिर्निघ्नतो मन्दबुद्धिनः । १८ । तदैवैष हतः पापो यदैव निरपत्रपः लुब्धः पापसहायश्च सुहृदां शासनातिगः १९ । बहुशो विदुरद्रोणकृपगाङ्गेयसृञ्जयैः पाण्डुभ्यः प्रोच्यमानोऽपि पित्र्यमंशं न दत्तवान् ॥ २० ॥ नैष योग्योऽद्य मित्रं वा शत्रुर्वा पुरुषाधम । किमनेनातितीक्ष्णेन वाग्भिः काष्ठसधर्मणा ॥ २१ ॥ रथेष्वारोहत क्षिप्रं गच्छामो वसुधाधिपाः । दिष्ट्या हतोऽयं पापात्मा सामात्यज्ञातिबान्धवः ॥ २२ ॥ इति श्रुत्वा त्वधिक्षेपं कृष्णाद्दुर्योधनो नृपः । अमर्षवशमापन्न उदतिष्ठद्विशाम्पते ॥ २३ ॥ स्फिग्देशेनोपविष्टः स दोर्भ्यां विष्टभ्य मेदिनीम् । दृष्टिं भ्रूसंकटां कृत्वा वासुदेवे न्यपातयत् ॥ २४ ॥ अर्धोन्नतशरीरस्य रूपमासीन्नृपस्य तु । क्रुद्धस्याशीविषस्येव छिन्नपुच्छस्य भारत ॥ २५ ॥ प्राणान्तकरिणीं घोरां वेदनामविचिन्त्य ताम् । दुर्योधनो वासुदेवं वाग्भिरुग्राभिरार्दयत् ॥ २६ ॥ कंसदासस्य दायाद न ते लज्जास्त्यनेन वै । अधर्मेण

मृतक शत्रुको फिर मारना नीतिके विपरीतहै यह निर्लज्ज कठोर वचनोंमे बारम्बार घायलहुआ । १८ । यह पापी इसी हेतुसे मारागया जब कि इसने निर्लज्ज लोभी और पापियोंका साथी होकर शुभचिन्तकों की आज्ञाओं के बिना कर्मोको किया । १९ । इस दुष्टसे बहुधा विदुर, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, भीष्मपितामह, सृंजी और पाण्डवों के प्रार्थना करनेपर भी पिताके विभागको नहीं दिया । २० । यद्यपि यह नीचपुरुष मित्र अथवा शत्रु था तौभी इसका हास्यकरना योग्यनहीं है वचनों से घायल काष्ठके समान इसदुर्योधनसे हमारा क्या प्रयोजनहै । २१ । हे राजाओ शीघ्र रथपर सवारहोजाओ अब यहांसे चलेंगे यह पापात्मा मंत्री भाई और ज्ञातिवालों समेत प्रारब्ध से ही मारागया । २२ । राजादुर्योधन श्रीकृष्णजी से ऐसे निन्दाके वचनोंको सुनकर और क्रोधके आधीन होके दोनों हाथोंसे पृथ्वी को आश्रितहोकर स्फिगनाम अंगके सहारे से बैठगया और अपनी दृष्टिको और भृकुटीको टेढ़ीकरके वासुदेवजी के ऊपर फेंका । २४ । हे भरतवंशी अर्द्धशरीर ऊंचा करनेवाला राजाका रूप दबेहुये क्रोधयुक्त विषैले सर्प के समानहुआ । २५ । प्राणों के नाश करनेवाली महाघोर पीड़ाकोकुछ ध्यान नकरते उस दुर्योधन ने कठोर वचनोंसे वासुदेवजी को अत्यन्त पीड़ावान् किया । २६ । कि

Dronacharya, Kripacharya, Bhishm, Sunjayas and Pandavas, he did not give the latter their patrimony 20 But, whether friend or foe, he should not be laughed at now What shall we gain by insulting him who is already like a block of wood ? As we have slain him and his friends and allies, let us depart from this place." Having heard the words of Krishn, Duryodhan rose upon his hands in anger and looked at him with angry eyes 24. With his body half raised high, he looked like a venomous snake trodden under foot. Disregarding the agonies of death, he spoke harsh words to him, saying " Son of

गदायुद्धे यदहं विनिपातितः । ऊरू भिन्धीति भीमस्य स्मृतिं वितरयन्कथा ॥ २८ ॥ किम् विस्मृतेऽत्रमे यदर्जुनमचोदिथा ॥ २८ ॥ घातयित्वा महीपालानृजुयुद्धान् सह स्रशः । जिह्मैरुपायैर्बहुभिर्न ते लज्जा न ते घृणा ॥ २९ ॥ अहन्यहनि शूराणां कुर्वाणः कदनं महत् । शिखण्डिनं पुरस्कृत्य घातितस्ते पितामहः ॥ ३० ॥ अश्वत्थाम्नः सनामानं हत्वा नागं सुदुर्मते । आचार्यो न्यासितः शस्त्रं तत् किं न विदितं मम ॥ ३१ ॥ स वीरेण नृशंसेन धृष्टद्युम्नेन वीर्यवान् । पात्यमानस्त्वया दृष्टो न चैनं त्वमवारयः ॥ ३२ ॥ वधार्थे पाण्डुपुत्रस्य याचितां शक्तिमेव च । घटोत्कचे व्यंसयत कस्त्वत्तः पापकृत्तमः ॥ ३३ ॥ छिन्नहस्तः प्रायगतस्तथा भूरिश्रवा बली । त्वया निसृष्टेन हतः शैनेयेन महात्मना ॥ ३४ ॥ कुर्वाणश्चोत्तमं कर्म कर्णः पार्थजिगीषया । व्यंसनेनाश्वसेनस्य पन्नगेन्द्रसुतस्य वै ॥ ३५ ॥ पुनश्च पतिते चक्रे व्यसनार्तः पराजितः । पातितः

हे कंसके दासके पुत्र तुझको निश्चय कर के इस से लज्जा नहीं आती है जो मैं गदायुद्ध में भीमसेन के हाथ से अधर्म से गिराया गया । २७ । अर्थात् तैने यह स्मरण कराया कि इसकी जंघाओं को तोड़ो । २८ । सत्ययुद्ध से हजारों राजाओं को मरवा कर यह तुझको क्यों नहीं समझाया जो अर्जुनको बहुतायत से विपरीत उपाय कर्मों से तुझको न लज्जा है न दया है । २९ । प्रतिदिन शूरोंके बड़े नाशके करनेवाले भीष्मपितामह को तुम ने शिखण्डी को आगे करके मरवाया । ३० । हे दुर्बुद्धी अश्वत्थामा के समान हाथी को मारकर आचार्यजी को शस्त्रों से रहित किया गया वह मैंने नहीं जाना । ३१ । वह पराक्रमी तेरेही कारण से इस निर्दयी धृष्टद्युम्न के हाथसे गिरायागया तुमने उसको देखकर निषेध नहीं किया । ३२ । पांडव अर्जुन के मारनेवाली मांगी हुई शक्तिको घटोत्कच के ऊपर फेंकवाकर निष्फल किया तुमसे अधिक पाप करने वाला कौनहै । ३३ । इसी प्रकार हाथटूटाहुआ शरीर त्याग लेकेअर्थ नियम करने वाला पराक्रमी भूरिश्रवा तेरीही आज्ञापाकर महात्मा सात्यकि के हाथ से मारा गया । ३४ । अर्जुनके विजय करने की इच्छासे कर्ण उत्तम कर्म का करनेवाला

Kans' slave! you are certainly not ashamed for your share in my unjust fall by Bhim. Having caused the slaughter of thousands of warriors in the war, you did not say to me what you did to Arjun. You are not ashamed of your many wicked deeds. You caused the death of Bhishm by putting Shikhandi forward. You caused the acharya to give up arms by slaying an elephant of the name of Ashwathama. You did not prevent cruel Dhrishtadyum from slaying him. The spear that should have slain Arjun was made futile, because you contrived to have it discharged on Ghatotkach. Who is more sinful than you? 33. Brave Bhurishrava, with broken arms, was slain by Satyaki through your instigation. Karan would have slain Arjun by the help of Ashwasan the son of the prince of snakes

समरे कर्णश्चक्रव्यग्रोऽग्रणीर्नृणाम् ॥ ३६ ॥ यदि नाऽभ्यापि कर्णश्च भीष्मद्रोणौ च संयुगे । ऋजुना प्रतियुध्येयुर्न ते स्याद्विजयो ध्रुवम् ॥ ३७ ॥ त्वया पुनरनार्येण जिह्ममार्गेण पार्थिवाः । स्वधर्ममनुतिष्ठन्तो वयं चान्ये च घातिताः ॥ ३८ ॥ वासुदेव उवाच हतोऽस्त्वमसि गान्धारे सभ्रातृसुतबान्धवः । सगणः ससुहृच्चैव पापमार्गमनुष्ठितः ॥ ३९ ॥ तवैव दुष्कृतैर्वीरौ भीष्मद्रोणौ निपातितौ । कर्णश्च निहतः संख्ये तवशीलानुवर्तकः ॥ ४० ॥ याच्यमानो मया मूढ पित्र्यमंशं न दित्ससि । पाण्डवेभ्यः स्वराज्यार्थं लोभाच्छकुनिनिश्चयात् ॥ ४१ ॥ विषं ते भीमसेनाय दत्तं सर्वे च पाण्डवाः । प्रदीपिता जतुगृहे मात्रा सह सुदुर्मते ॥ ४२ ॥ सभायां याज्ञसेनी च क्लिष्टा द्यूते रजस्वला । तदैव तावद्दुष्टात्मन् वध्यस्त्वं निरपत्रपः ॥ ४३ ॥ अनक्षज्ञं च धर्मज्ञं सौबलेनाक्षवेदिना ।

हुआ सर्पराज के पुत्र अश्वसेन के दुःख से और फिर रथके चक्रके पृथ्वी में धसजाने की आपत्ति में फंसा हुआ पराजय किया अर्थात् मनुष्यों में श्रेष्ठ रथचक्रके घुमजानेसे व्याकुल चित्त कर्ण युद्धमें गिरायागया ॥ ३६ ॥ जोपिले द्रोणाचार्य, भीष्म, कर्ण और मुझसे भी सत्य २ युद्धकरते तो तुम्हारी विजय कभी नहीं होसक्तीथी । ३७ । और तुम्हारी निर्गुण और कुमार्गी के कारण से अपने धर्म्मपर आरूढ़ होनेवाले राजा लोग और बहुत से अन्य २ लोग वह सबभी मारे गये । ३८ । वासुदेवजी बोले हे गान्धारी के पुत्र पापमार्ग में चलनेवाले तुम अपने भाई पुत्र बान्धव और मित्रोंके समूहों समेत मारेगये हो । ३९ । तेरेही दुष्टकर्म्मोंसे शूरवीर भीष्म और द्रोणाचार्य गिरायेगये और तेरा साथी कर्म कर्ता कर्णभी युद्धमें मारागया । ४० । हे अज्ञानी तुमने लोभ और शकुनी के वचन के निश्चय से मेरे बहुत कहनेपर भी पांडवों के बाप दादोंके राज्य के भागको नहीं दिया । ४१ । तुमने भीमसेन को विषदिया और माता समेत सब पाण्डवोंको । ४२ । लाख घरमें भस्म किया और सभामें द्यूतके मध्य रजस्वला द्रौपदीको दुःखी किया हे कठोरचित्त उसीसमय तुम मारडालनेके योग्य थे । ४३ । जब कि द्यूतविद्या के छलके जाननेवाले शकुनी के द्वारा द्यूतकर्ममें अकुशल धर्मज्ञ युधिष्ठिर को

but he was conquered when his car wheel stuck in mud. It was impossible for you to gain victory, over Drona, Bhishm, Karan and me in fair way. You caused the death of so many kings and warriors." Vasudev said, "You and your kinsmen and friends have been slain by your evil policy. It was through your misdeeds that brave Drona and Bhism were slain like your accomplice *Karan*. 40. You did not give the Pandavas their patrimony in spite of my repeated warnings, on account of avarice and the ill advice of Shakuni. You poisoned Bhim and would have burnt the Pandavas, with their mother, in the house of lac. You insulted Draupadi in the court. You deserved

निकृत्या यत् पराजैषीस्तस्मादसि हतो रणे ॥५४॥ जयद्रथेन पापेन यत् कृष्णा क्लेशिता
वने । यातेषु मृगयाञ्चैव तृणबिन्दोराश्रमम् ॥ ५५ ॥ अभिमन्युश्च यद्बाल एको बहु
भिराहवे । त्वद्दोषैर्निहतः पापस्तस्मात्त्वासि हतो रणे ॥ ५६ ॥ यान्यकार्याणि च स्माकं
कृतानीति प्रभाषसे । वैगुण्येन तवात्यर्थं सर्वं हि तदनुष्ठितम् ॥ ५७ ॥ बृहस्पतेरुशनसो
नोपदेशः श्रुतस्त्वया । वृद्धा नोपासिताश्चैव हितं वाक्यं न ते श्रुतम् ॥ ४८ ॥ लोभेनातिं
बलेन त्वं तृष्णया च वशीकृत । कृतवानस्यकार्याणि विपाकस्तेषु भुज्यताम् ॥ ४९ ॥
दुर्योधन उवाच । अधीतं विधिवद्दत्तं भूः प्रशास्ता ससागरा । मूर्ध्नि स्थितममित्रि
णां कोऽनुस्वन्ततरो मया ॥ ५० ॥ यदिष्टं क्षत्रबन्धूनां स्वधर्ममनपश्यताम् । तदिदं
निधनं प्राप्तं कोऽनुस्वन्ततरो मया ॥ ५१ ॥ देवार्हा मानुषा भोगाः प्राप्ता असुलभा नृपैः
ऐश्वर्यं चोत्तमं प्राप्तं कोऽनुस्वन्ततरो मया ॥ ५२ ॥ ससुहृत्सानुजश्चैव स्वर्गं गन्ता

छलसे विजय कियाथा इन सब कारणों से तू युद्धमें मारागया है । ५४ । आखेटमें पाण्डवके जानेपर तृणबिन्दुके आश्रमके समीप वनमें द्रौपदी को पापी जयद्रथ ने जो दुःखदिया और जो अकेला अभिमन्यु तेरे दोषोंसे युद्धमें बहुतसे शूरवीरों के हाथसे मारागया है पापी तू इन कारणों से युद्धमें मारागया है । ४६ । और हमारे लियेहुये जिन करनेके अयोग्य कर्मोंको कहता है यह सब भी तेरेही दुराचारसे कियेगये हैं । ४७ । तुमने बृहस्पतिजी और शुक्रजीकी शिक्षाको नहीं सुना वृद्धोंका सत्सङ्ग नहीं किया । ४८ । तुमने क्षेमकारक वचनोंको नहीं सुना तुम ईर्षा और लोभके आधीनहोके इन सब दुष्ट कर्मोंको जो तुमने किया है उस के फलको भोगो । ४९ । दुर्योधन ने कहा कि वेदोंको पढ़ा विधिपूर्वक दानदिये सागरों समेत सब पृथ्वीपर राज्य किया और शत्रुओं के मस्तकोंपर नियत हुआ मुझसे अधिक सफल शुभकर्मी कौन है । ५० । अपने धर्मके देखनेवाले क्षत्रियों का जो हितकारी और प्रिय है वही मरण मैंने पाया है मुझसे अधिक शुभकर्मी कौन है । ५१ । मैंने राजाओं से दुष्प्राप्य शरीरके योग्य संसारी सुख ऐश्वर्यको प्राप्त किया और उत्तम राज्यकोष था मुझसे अधिक सुकृती कौन है । ५२ । देमाविनसामें

death when, by the help of deceitful Shakuni, you cheated Yudhishthir who was a novice in gambling. You are justly slain in battle. 44. You are slain in battle for fault for the Jayadrath, who insulted Draupadi during his hunting expedition near the hermitage of Trinvindu, and for your share in securing by the help of many warriors the death of Abhimanyu who was alone.— The shortcomings ascribed to us were the result of your own wickedness. You disregarded the advice of Vrihaspati and Shukra and gave a deaf ear to the advice of old men. You did not hear salutary advice on account of avarice and you are reaping the fruit of your misdeeds." 49. Duryodhan said, "I have read the Vedas, given in charity, ruled over Earth and set my foot at the head of enemies; who can be happier

हमच्युत । एवं विहीनक्कृपणा, शोचन्तो वर्त्तयिष्यथ ॥ ५३ ॥ सञ्जय उवाच । अस्य च वचस्य निधने कुरुराजस्य धीमत. । अपतत् सुमहद्वर्षं पुष्पाणां पुण्यगन्धिनाम् ॥५४॥ अवादयन्त गन्धर्वा वादित्र सुमनोहरम् । जगुश्चाप्सरसो राज्ञो यशः सम्बद्धमेव च ॥५५॥ सिद्धाश्च मुमुचुर्वाचः साधु साध्विति पार्थिव । ववौ च सुरभिर्वायु पुण्यगन्धो मृदु सुख । व्यराजन्त दिश. सर्वा नभो वैदूर्यसन्निभम् ॥ ५७ । अत्यद्भुतानि ते दृष्ट्वा वासुदेव पुरोगमाः । दुर्य्योधनस्य पूजन्तु दृष्ट्वा व्रीड़ामुपागमन् ॥ ५८ ॥ हतांश्चाधर्मत श्रुत्वा शोकार्त्ता. शुशुचुर्हित । भीष्म द्रोण तथा कर्ण भूरिश्रवसमेव च ॥ ५९ ॥ तांस्तु चिन्तापरान् दृष्ट्वा पाण्डवान् दीनचेतस. । प्रोवाचेदं वचः कृष्णो मेघदुन्दुभिनिःस्वन ॥ ६० ॥ नैव शक्योऽतिशीघ्रास्त्रस्ते च सर्वे महारथा. । ऋजुयुद्धेन विक्रान्ता हन्तु युष्माभिराहवे ॥ ६१ ॥ नैव शक्य' कदाचित्तु हन्तु धर्मेण पार्थिव । ते

मैं अपने मित्रवर्ग और सब छोटे भाइयों समेत स्वर्गको जाऊंगा तुम नष्ट संकल्प होकर अपना जीवन करोगे । ५३ । सञ्जय बोले कि उस बुद्धिमान् कौरवराजके इस वचन के समाप्त होनेपर पवित्र सुगन्धित पुष्पों की बड़ी वर्षा हुई । ५४ । और गंधर्वों ने बड़े चित्तरोचक बाजोंका बजाया अप्सराओं ने राजाकी शुभकीर्ति सम्बन्धी गानोंको गाया । ५५ । और सिद्धोंने धन्य २ शब्द किया शीतल मन्द सुगंधित वायु चली सब आकाश दिशाओं समेत वैदूर्य मणिके रंगके समान शोभ यमान हुआ । ५७ । वासुदेवजी जिनमें मुख्य हैं वह सब पांडवादिक उन अपूर्वता और दुर्योधनकी पूजाको देखकर लज्जितहुये । ५८ । भीष्म द्रोणाचार्य कर्ण और भूरिश्रवा को अधर्म से माराहुआ सुनकर शोक से पीड़ित होकर उनवीरोंने शोचकिया । ५९ । बादल और दुन्दभी के समान शब्दवाले श्रीकृष्णजी उन पांडवोंको चिन्तायुक्त और दुःखीचित्त देखकरयह वचन बोले।६०। कि बहुतशीघ्र अस्त्रचलानेवाला यह दुर्योधन औरबहमब पराक्रमी महारथी युद्धमें सत्य युद्धके द्वारा तुम्हारे हाथसे मारनेके योग्य नहीं थे । ६१ । यह राजा दुर्योधन

than I? What death can be b tt r to a kshatriya than mine ? I lived a life of ease, difficult for other kings to obtain, and ruled a va t king dom. My youn ger brothers and I w ll go to heaven, wh le you w l lead a life of m sery " S njaya said that at the close of Duryodhan's speech there was a shower of holy and fragrant fl wers, gandharvas beat musical instruments and ap aras sang songs in praise of the Prince. 55 Siddhas said, "Well done, ' a cold and fragrant breez blew and t e sky shone like lapis lazuli. The Pandavas, headed by Vasudev, were ashamed at the wonderful respect shown to Duryodhan, and were full of sorrow to hear that Bhishm, Drona, Karan and Bhurishrava were unjustly slain by them Seeing the Panda

या भीष्ममुखाः सर्वे महेष्वासा महारथाः ॥ ६२ ॥ मयानेकैरुपायैस्तु मायायोगेन चासकृत् । हतास्ते सर्व एवाजौ भवतां हितमिच्छता ॥ ६३ ॥ यदि नैवं विधं जातु कुर्यां जिह्ममहं रणे । कुतो वो विजयो भूयः कुतो राज्यं कुतो धनम् ॥ ६४ ॥ ते हि सर्वे महात्मानश्चत्वारोऽतिरथा भुवि । न शक्या धर्मतो हन्तुं लोकपालैरपि स्वयम् ॥ ६५ ॥ तथैवायं गदापाणिर्धार्तराष्ट्रो गतक्लमः । न शक्यो धर्मतो हन्तुं कालेनापीह दण्डिना ॥ ६६ ॥ न च वो हृदि कर्त्तव्यं यदयं घातितो रिपुः । मिथ्या वध्यास्तथोपायैर्बहवः शत्रवोऽधिकाः ॥ ६७ ॥ पूर्वैरनुगतो मार्गो देवैरसुरघातिभिः । सद्भिश्चानुगतः पन्थाः स सर्वैरनुगम्यते ॥ ६८ ॥ कृतकृत्याः स्म सायाह्ने निवासं रोचयामहे । साश्वनागरथाः सर्वे विश्रमामो नराधिपाः ॥ ६९ ॥ वासुदेववचः श्रुत्वा तदानीं पाण्डवैः सह । पांचाला

अथवा भीष्मादिक वीर बड़े धनुषधारी महारथी कभी धर्मसे किसीसे भी मारनेके योग्य न थे । ६२ । आपलोगोंके भले चाहनेवाले मैंने बहुतसे उपाय और माया योग के द्वारा रणभूमि में यह सब वारम्वार मारे । ६३ । जो मैं कदाचित् ऐसीमाया को न करता तो तुम्हारी विजय और राज्य धन नहीं प्राप्तहोते।६४। यह चारोंमहात्मा अतिरथी इस पृथ्वीपर साक्षात् लोकपालोंसेभी धर्मकेद्वारा मारनेके योग्य नथे । ६५ । इसीप्रकार यह गदा हाथमेंलिये अश्रमित दुर्योधन दण्डधारी कालसे भी धर्मके द्वारा मारनेके योग्य नथा तुमको चित्तमें इस शत्रुके मारनेका कोई विचार नकरना चाहिये इसीप्रकार बहुतसे शत्रु छलके द्वारा आपसे मारने के योग्यहैं । ६७ । प्राचीन वृद्धलोग और असुरों के मारनेवाले देवता आदि सत्पुरुषों से चलाया हुआ मार्ग है इसी हेतुसे वह सबसे चलाया जाता है । ६८ । तात्पर्य यहहै कि हम सायङ्काल के समय निवासस्थानों में विश्राम किया चाहते हैं हे राजालोगो हम सब घोड़े हाथी और रथोंसमेत विश्रामकरें । ६९ । तब अत्यन्त प्रसन्नचित्त पाण्डवों सहित पांचाल वासुदेवजी के वचन को सुनकर सिंहों के

was in a dejected mood, Shri Krishn said in a voice of thunder. 60. "You could not by fair means slay Duryodhan and his brave warriors. *Prince Duryodhan as well as Bhishm and other warriors could not be* slain by fair means. I your well wisher, slew them in the war by various contrivances. You could not win the kingdom and wealth without my doing so. The four famous warriors were invulnerable even by lokpals in a fair way. 65. Similarly, Duryodhan, armed with mace and untired was inapproachable by the god of death himself. You should not be sorry for his death as well as the death of others whom you slew by unfair means. This is the way that gods, the slayers of asurs, have trodden before this, and others but follow their exampl . We as well as our beasts stand in need of rest for the night." The Panchals and the Pandavas roared like lions on hearing the words of Shri Krishn. The kings blew their conchs and Madhav

महासंहृष्टा विनेदुः सिंहसमवत् ॥ ७० ॥ ततः प्रध्मापयन् शंखान् पाञ्चजन्यञ्च माधवः । हृष्टा दुर्योधनं दृष्ट्वा निहतं पुरुषर्षभ ॥ ७१ ॥

, इति महाभारते गदापर्वणि कृष्णपाण्डवसंवादे एकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

सञ्जय उवाच । ततस्ते प्रययुः सर्वे निवासाय महीक्षितः । शंखान् प्रध्मापयन्तो वै हृष्टाः परिघबाहवः ॥ १ ॥ पाण्डवान् गच्छतश्चापि शिबिरं नो विशाम्पते । महेष्वासोऽन्वगात् पश्चात् युयुत्सुः सात्यकिस्तथा ॥ २ ॥ धृष्टद्युम्नः शिखण्डी च द्रौपदेयाश्च सर्वशः । सर्वे चान्ये महेष्वासाः प्रययुः शिबिराण्युत ॥ ३ ॥ ततस्ते प्राविशन् पार्था हतत्विट्कं हतेश्वरम् । दुर्योधनस्य शिबिरं रङ्गवत्विसृते जने ॥ ४ ॥ गतोत्सवं पुरमिव हृतनागमिव ह्रदम् । स्त्रीवर्षवरभूयिष्ठं वृद्धामात्यैरधिष्ठितम् ॥ ५ ॥ तत्रैतान् पर्युपातिष्ठन्

समूहों के समान गर्जे । ७० । हे पुरुषोत्तम इसके पीछे राजालोग शङ्खों को और माधवजी पांचजन्य शङ्खोंको बजाते दुर्योधन को मृतक देखकर प्रसन्नहुये ७१ ॥

अध्याय ६२

• संजय बोले । कि इसके पीछे परिघके समान भुजारखनेवाले बड़े प्रसन्नचित्त शङ्खोंको बजातेहुये वह सब राजालोग विश्राम करनेके निमित्तचले ॥ १ ॥ हेराजा हमारे डेरोंको जानेवाले पांडवों के पीछे बड़े धनुषधारी युयुत्सु और सात्यकि चले ।२। धृष्टद्युम्न शिखण्डी और द्रौपदी के सब पुत्र और अन्य २ सब धनुषधारी अपने२ डेरोंको गये ।३। इसके पीछे मनुष्यों के भागजाने पर वह सब पाण्डव दुर्योधनके उस डेरे में ,जो कि प्रकाश रहित और मृतक राजावाला था उस में इसरीति से प्रवेशित हुये जैसे कि युद्धभूमि में प्रवेशकरते हैं वह स्थान उत्सव से रहित पुरके समान और जिसका नाग मारागया उस हृदके समान कंचुकि और स्त्री के बड़े समूहों से और वृद्ध मंत्रियों से पूर्ण था ।

...anjanya conch, and all were pleased sent forth a blast ... yodhan." 71.

CHAPTER LXII

Sanjaya said, "Then the great warriors proceeded to take rest for the night, blowing their conchs. Yuyutsu and Satyaki followed them to our camp. Dhrishtadyumna, Shikhandi and the sons of Draupadi, with other warriors moved towards their own tents. Then the Pandavas entered the tent of Duryodhan, which was destitute of light and owner, as if entering a field of battle. They found the place like a gloomy city or like a lake destitute of its elephants. It was full of women and old officers. 5. Duryodhan's servants, in dirty rags,

धुन् दुर्योधनपुरःसराः । कृताञ्जलिपुटा राजन् काषायमलिनाम्बराः ॥ ६ ॥ शिबिरं समनुप्राप्य कुरुराजस्य पाण्डवाः । अवतेरुर्महाराज रथेभ्यो रथसत्तमाः ॥ ७ ॥ ततो गाण्डीवधन्वानमभ्यभाषत केशवः । स्थितः प्रियहिते नित्यमतीव भरतर्षभ ॥ ८ ॥ अव रोपय गाण्डीवमक्षय्यौ च महेषुधी । अथाहमवरोक्ष्यामि पश्चाद्भरतसत्तम ॥ ९ ॥ स्वयं चैवावरोह त्वमेतत् श्रेयस्तवानघ । तच्चाकरोत्तथा वीरः पाण्डुपुत्रो धनञ्जयः ॥ १० ॥ अथ पश्चात्ततः कृष्णो रश्मीनुत्सृज्य वाजिनाम् । अवारोहत मेधावी रथाद्गाण्डीवधन्वनः ॥ ११ ॥ अथावतीर्णे भूतानामीश्वरे सुमहात्मनि । कपिरन्तर्दधे दिव्यो ध्वजो गाण्डीवधन्वनः ॥ १२ ॥ स दग्धो द्रोणकर्णाभ्यां दिव्यैरस्त्रैर्महारथः । अथ दीप्तोऽग्निना ह्याशु प्रजज्वाल महीपते ॥ १३ ॥ सोपासङ्गः सरश्मिश्च साश्वः सयुगबन्धुरः । भस्मीभूतोऽपतद्भूमौ रथो गाण्डीवधन्वनः ॥ १४ ॥ तं तथा भस्मभूतं तु दृष्ट्वा पाण्डुसुताः प्रभो । अभवन् विस्मिता राजन्नर्जुनश्चेदमब्रवीत् ॥ १५ ॥ कृताञ्जलिः सप्रणयं प्रणि

मलिन वस्त्रों के धारण करनेवाले दुर्योधन के लोग परस्पर हाथ जोड़कर उनके पास आकर वर्तमान हुये । ६ । हे महाराज रथियों में श्रेष्ठ पाण्डवलोगों कौरव राज के डेरेको पाकर रथों से उतरे । ७ । हे भरतर्षभ इसके पीछे केशवजी जोकि सदैव पाण्डवों की शुभचिन्तकता में नियत थे गाण्डीव धनुषधारी से बोले । ८ । हे भरतर्षभ इस गाण्डीव धनुषको और दोनों अक्षय तूणीरों उतारो पीछे से मैंभी उतरूंगा । ९ । तुम आप उतरो हे निष्पाप इसमें तेरा कल्याण है यह सुन कर उस वीर अर्जुन ने वैसाही किया । १० । इसके अनन्तर पूर्ण बुद्धिमान् श्रीकृष्णजी घोड़ों की बागडोरों को छोड़कर अर्जुन के रथसे उतरे । ११ । फिर सब जीवों के ईश्वर परमात्मा के उतरने पर अर्जुन की दिव्यध्वजा और हनुमानजी अन्तर्द्धान होगये । १२ । हे महाराज कर्ण और द्रोणाचार्य के दिव्य अस्त्रों से भस्मीभूत वह महान् रथभी अग्निके बिना अग्निके प्रज्वलित अग्निरूप होगया । १३ । पर गिरपड़ा । १४ । उपासङ्ग बागडोर घोड़े और युगन्धुर समेत भस्म होकर पृथ्वी होनेवाले उस अर्जुन के रथको देखकर पाण्डव लोग उस प्रकार से भस्म वचन बोला । १५ । हाथ जोड़कर बड़ी नम्रता से अर्जुनने कहा नेत्र अर्जुन यह

came to them in humble attitude. The Pandav warriors dismounted their cars at the tent of the Kaurav Prince. Vasudev, who was always a well wisher of the Pandavas, said to the wielder of Gandiv, " Remove Gandiv bow and the inexhaustible quivers from the car. Your good lies in your coming down first " Arjun did as he was directed to do 10. Then wise Shri Krishn, leaving the reins of the horses, came down from the car. At the coming down of the lord of all creatures Arjun's celestial banner with the ape disappeared, and hit by the celestial weapons of Karan and Dronacharya, the great car too, began to burn without a thing fire. Arjun's car, with its appar-

पश्यामिवाच च । गोविन्द कस्माद्भगवन्रथो दग्धोऽयमग्निना ॥ १६ ॥ किमेतन्महदा-
श्चर्यमभवद्यदुनन्दन । तन्मे ब्रूहि महाबाहो श्रोतव्यं यदि मन्यसे ॥ १७ ॥ वासुदेव
उवाच अस्त्रैर्बहुविधैर्दग्धः पूर्वमेवायमर्जुन । मदधिष्ठितत्वात् समरे न विशीर्णः पर
तप ॥ १८॥ इदानीन्तु विशीर्णोयं दग्धो ब्रह्मास्त्रतेजसा । मया विमुक्तः कौन्तेय त्वय्यद्य
कृतकर्मणि ॥ १९ ॥ ईषदुत्स्मयमानश्च भगवान् केशवोरिहा । परिष्वज्य च राजान
युधिष्ठिरमभाषत ॥ २० ॥ दिष्ट्या जयासि कौन्तेय दिष्ट्या ते शत्रवो जिताः । दिष्ट्या
गाण्डीवधन्वा च भीमसेनश्च पाण्डव. ॥ २१ ॥ त्वञ्चापि कुशली राजन् माद्रीपुत्रौच
पाण्डवौ । मुक्ता वीरक्षयादस्मात् संग्रामान्निहतद्विष ॥ २२ ॥ क्षिप्रमुत्तरकालानि कुरु
कार्याणि भारत ॥ २३ ॥ उपयातमुपप्लव्यं सह गाण्डीवधन्वना । आनीय मधुपर्कं मां
यत् पुरा त्वमवोचथाः ॥ २४ ॥ एष भ्राता सखा चैव तव कृष्ण धनञ्जयः । रक्षितव्यो

गोविन्दजी यह रथ किस हेतुसे अग्नि के द्वारा भस्म होगया । १६ । हे यदुनन्दन
जी यह क्या बड़ा आश्चर्य हुआ है महाबाहु जो सुनाने के योग्य मुझ को
जानतेहो तो उस सब वृत्तान्तको मूलसमेत मुझसे वर्णनकरो । १७ । वासुदेवजी
बोले हे अर्जुन यह रथ प्रथमही बहुत प्रकार के अस्त्रों से भस्मरूप होगया था हे
शत्रुसंतापी मेरे सवार होनेसे यह पृथ्वीपर नहींगिरा । १८ हे अर्जुन अब मुझ
से पृथक् होनेपर और तेरे कृतकृत्य होने पर यह रथ भस्मीभूत होकर पृथ्वी पर
गिरपड़ा यह ब्रह्मास्त्र के तेज से भस्म हुआ है । १९ । शत्रुओंके मारनेवाले और
मन्द मुसकान करते भगवान केशवजी राजा युधिष्ठिर से मिलकर बोले । २० । हे
राजा युधिष्ठिर तुम प्रारब्धसे शत्रुओंको विजय करतेहो और प्रारब्धसे तेरे सब
शत्रु पराजितहुये प्रारब्धसे ही गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन भीमसेन । २१ । नकुल
सहदेव और आपभी कुशलता युक्तहो अब हे मृतकशत्रुवाले वीरों के नाशकर्त्ता
तुम इस युद्धसे निवृत्तहुते । २२ । हे भरतवंशी अब करनेके योग्य आगेके
को करो । २३ । पूर्व समयमें मधुपर्क निवेदन करके उपप्लव्य ... महाबाहु श्रीकृष्ण जी यह तुम्हारा
जो आपने अर्जुन को साथ लेकर ... आपत्तियों में तुमने रक्षा के योग्य है इस प्रकार आप

tenances and horses, was turned into ashes and fell down on earth. The Pandavas were amazed to see Arjun's car burning. Then Arjun with clasped hands asked of Govind the reason of the combustion of his car and to explain to him the wonderful phenomenon if it was worth his hearing. 17 Vasudev replied, "This car was already turned into ashes by various weapons; but it did not come down to earth because I was sitting on it. Burnt by Brahmastra it fell down when your work was done and I left it." Then the destroyer of foes Keshav said to Yudhishthir "You conquer your foes by good luck and the same good fortune has kept Arjun, Bhim Nakul and Sahadev safe and sound. The war is at an end and you may do the needful. Having made me a present of madhukdark at

महाबाहो सर्वोस्त्रवारिस्पति प्रभो । २५ ॥ तथ चैवं ब्रुवाणस्य तथेत्येवाहमब्रुवम् । स सव्यसाची गुप्तस्ते विजयी च जनेश्वर ॥ २६ । भ्रातृभिः सह राजेन्द्र शूरः सत्यपराक्रम । मुक्तो वीरक्षयादस्मात् संग्रामाल्लोमहर्षणात् ॥ २७ ॥ एवमुक्तस्तु कृष्णेन धर्मराजो युधिष्ठिरः । हृष्टरोमा महाराज प्रत्युवाच जनार्दनम् ॥ २८ ॥ युधिष्ठिर उवाच । प्रमुक्तं द्रोणकर्णाभ्यां ब्रह्मास्त्रमरिमर्दन । कस्त्वदन्य सहेत् साक्षादपि वज्री पुरन्दरः ॥ २९ ॥ भवतस्तु प्रसादेन संशप्तकगणा जिताः । महारणगतः पार्थो यच्च नासीत् पराङ्मुखः ॥ ३० ॥ तथैव च महाबाहो पर्यायैर्बहुभिर्मया । कर्मणामनुसन्ताने तेजसश्च गतिः शुभा ॥ ३१ ॥ उपप्लव्ये महर्षिर्मे कृष्णद्वैपायनोऽब्रवीत् । यतो धर्मस्ततः कृष्णो यतः कृष्णस्ततो जयः । ३२ ॥ इत्येवमुक्ते ते वीराः शिबिरं तव भारत । प्रविश्य प्रत्यपद्यन्त कोषरत्नर्द्धिसञ्चयान् ॥ ३३ ॥ रजतं जातरूपञ्च मणीनथ च मौक्तिकान् । भूष

के कहनेका मैंने अङ्गीकार किया था हे राजा वह सत्यपराक्रमी तेराभाई शूर अर्जुन भाइयों समेत विजयी और रक्षित वीरोंके नाशकारी रोमहर्षण करनेवाले इस महाघोर युद्धसे निकलाहुआ । २७ । हे महाराज श्रीकृष्णजी के इस वचनको सुनकर रोमहर्ष से हर्षित युधिष्ठिरने जनार्दनजी को उत्तर दिया । २८ । कि हे शत्रुओं के विजय करनेवाले द्रोणाचार्य और कर्णके छोड़ेहुये ब्रह्मास्त्रको आप के सिवाय साक्षात् वज्रधारी इन्द्रभी सहने को योग्य नहीं । २९ । आपकीही कृपासे संसप्तकों के समूह विजयकिये जो उस बड़ेभारी युद्धमें अर्जुन कभी पराङ्मुख नहीं हुआ । ३० । हे महाबाहु प्रभु इसीप्रकार मैंने अनेकप्रकार से कर्मोंके विस्तार को और तेजकी गतिको जाना । ३१ । उपप्लव्य स्थानपर व्यास महर्षिने मुझसेकहाथा कि जिधर धर्महै उधरही श्रीकृष्णजी हैं और जिधर श्रीकृष्णजी हैं उधरही विजय है । ३२ । हे भरतवंशी इसप्रकार कहने पर उन वीरोंने आप के डेरेमें प्रवेशकरके खज़ानोंके समूहोंकोपाया चांदी,सोने,मणि और मोतियोंके हार उत्तमभूषण

Upaplavya you entrusted ... and friend Arjun, and you must protect him". Here is your brother I accepted the charge and Arjun, with all his brothers, has come out safe and victorious from the dreadful war so destructive to warriors." 27. Having heard the words of Shri Krishn, Yudhishthir replied, " Conquerer of foes! None, except you—even Indra the wielder of vajra—could bear the Brahmastra discharged by Karan and Dron. The Sansaptaks were overcome by your grace, and Arjun never suffered defeat throughout the great war, 30. I have seen much of your greatness and glory. Vyas said to me at Upaplaya " Krishn goes hand in hand with dharm; and victory follows the footsteps of Krishn." At this, they entered your tent and found heaps of jewels and wealth—silver, gold, precious stones, strings of pearls

भाण्डानि मुख्यानि कम्बलान्यजिनानि च ॥ ३४॥ दासीदासमसंख्येयं राज्योपकरणानि
च । ते प्राप्य धनमक्षय्यं त्वदीयं भरतर्षभ । उदक्रोशन् महाभागा नरेन्द्र विजितारयः
॥ ३५ ॥ ते तु वीराः समाश्वस्य वाहनान्यवमुच्य च । अतिष्ठन्त मुहुः सर्वे पाण्डवाः
सात्यकिस्तथा ॥ ३६ ॥ अथाब्रवीन्महाराज वासुदेवो महायशाः । अस्माभिर्मङ्गला
र्थाय वस्तव्यं शिबिराद्बहिः ॥ ३७ ॥ तथेत्युक्त्वा हि ते सर्वे पाण्डवाः सात्यकिस्तथा ।
वासुदेवेन सहिता मङ्गलार्थं बहिर्ययुः ॥ ३८ ॥ ते समासाद्य सरितं पुण्यामोघवतीं
नृप । न्यवसन्नथ तां रात्रिं पाण्डवा हतशत्रवः ॥ ३९ ॥ ततः संप्रेषयामासुर्यादवं नाग
साह्वयम् । स च प्रायाज्जवेनाशु वासुदेवः प्रतापवान् । दारुकं रथमारोप्य येन राजा
म्बिकासुतः ॥ ४० ॥ तमूचुः संप्रयास्यन्तं शैब्यसुग्रीववाहनम् । प्रत्याश्वासय
गान्धारीं हतपुत्रां यशस्विनीम् ॥ ४१ ॥ स प्रायात्पाण्डवैरुक्तस्तत्पुरं सात्वतांवरः । आस
साद ततः क्षिप्रं गान्धारीं निहतात्मजाम् ॥ ४२ ॥

इति गदायुद्धपर्वणि कृष्णस्य हस्तिनापुरगमने द्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

दुशाले, मृगचर्म, और दासीदास और राज्य के बहुत से सामानों को पाया हे भरतर्षभ महाराज वह महाभाग शत्रुओं के विजयी आपके अनंत धनको पाकर बड़े बलवत्तर से पुकारे । ३५ । वह वीरपाण्डव और सात्यकी सवारियोंको छोड़ कर वारम्बार विश्वासित होकर डेरोंमें निवसहुये । ३६ । हेमहाराज इसके पीछे बड़े यशस्वी वासुदेवजी बोले कि हम लोगों को मङ्गलके निमित्त डेरोंसे बाहर निवास करना चाहिये । ३७ । यह सुनकर वह पांडव और सात्यकि उनकी आज्ञा को मानकर वासुदेवजी के साथ मङ्गल के लिये डेरेसे बाहरगये ।३८। हेराजा फिर वह सब पाण्डव और सात्यकि धर्म्मकी वृद्धिरूप हेतुरूप ओघवती नदीको पाकर वहीं उस रात्रिको बसे । ३९ । इसके पीछे यादव श्रीकृष्णजीको हस्तिनापुर भेजा तब प्रतापवान् वासुदेवजी शीघ्रही तीव्रतासे दारुक के रथपरबैठकर वहां को चले जहां पर राजा धृतराष्ट्र थे । ४० । उससमय पांडवलोग उस यात्रा करनेके [illegible] मृतपुत्रा सुग्रीव नाम घोड़े रखनेवाले श्रीकृष्णजी से [illegible] आज्ञा से संयुक्त ये हुये श्रीकृष्णजी उस पुरको गान्धारी को [illegible] और शीघ्रही उस मृतपुत्रा गान्धारी को पाया ४२ ॥

ornaments, shawls, deer-skins, male and famale slaves and other things They cried out for joy at the sight of so much wealth. The brave Paudavas and Satyaki stayed in the tents without any fear. Then glorious Vasudev said, " Our safety lies in staying out of these tents. " The Pandavas with Satyaki, obeyed his orders and came out They stayed for that night at the bank of the Oghwati. Then Vasudev was deputed to Hastinapur and he was taken to Dhritrashtra on the car driven by Daruk While ready to go on the car drawn by Shaivya and Sugreeve horses, the Pandavas said to him, " You must comfort Gandhari whose sons are slain " Thus directed by them, he went to the city and soon saw Gandhari whose sons were dead. " 42.

जनमेजय उवाच । किमर्थं राजशार्दूल धर्मराजो युधिष्ठिर । गान्धार्याः प्रेषयामास वासुदेव परन्तपम् ॥ १ ॥ यदा पूर्वं गत कृष्ण शमार्थं कौरवान्प्रति । नच तं लब्धवान् कामं ततो युद्धमभूदिदम् ॥ २ ॥ निहतेषु च योधेषु हते दुर्योधने तदा । पृथिव्यां पाण्डवेयस्य निःसपत्ने कृते युधि ॥ ३ ॥ विद्रुते शिबिरे शून्ये प्राप्ते यशसि चोत्तमे । किन्नु तत् कारणं ब्रह्मन् येन कृष्णो गत पुनः ॥ ४ ॥ नचैतत्कारणं ब्रह्मन्नल्पं वै प्रतिभाति मे । यत्रागमदमेयात्मा स्वयमेव जनार्दन ॥ ५ ॥ तत्त्वतो वै समाचक्ष्व सर्वमध्वर्युसत्तम । यच्चात्र कारणं ब्रह्मन् कार्यस्यास्य विनिश्चये ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच । त्वद्युक्तोऽयमनुप्रश्नो यन्मां पृच्छसि पार्थिव । तत्तेऽहं सम्प्रवक्ष्यामि यथावद्भरतर्षभ । ७ ॥ हतं दुर्योधनं दृष्ट्वा भीमसेनेन संयुगे

अध्याय ६१ ॥

जनमेजय बोले हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ धर्मराज युधिष्ठिरने किसहेतुसे शत्रुओं के विजयकरनेवाले वासुदेवजीको गान्धारीके पास भेजा । १ । जब प्रथम श्रीकृष्णजी सन्धिके निमित्त कौरवों के पास गये और अपने अभीष्टको नहीं पाया इसीकारण से यह महायुद्धहुआ । २ । अब शूरवीरोंके मरने और राजा दुर्योधन के घायल होने और इस पृथ्वीपर पांडवों को रणभूमि में निश्शत्रु करने । ३ । मनुष्यों के भागने डेरोंके खालीहोने और उत्तम शुभकीर्त्तिके प्राप्तहोजानेपर ऐसा कौनसा कारण है जिसके हेतुसे श्रीकृष्णजी हस्तिनापुरकोगये । ४ । हे बड़े ज्ञानी ब्राह्मण मुझको यह अल्पकारण नहीं मालूम होता है जय कि बड़े ज्ञानी श्रीकृष्णजी आपगये । ५ । हे अध्वर्यों में श्रेष्ठ इस सब वृत्तान्त को मूलसमेत वर्णन करो । ६ । वैशम्पायन बोले कि हे भरतवंशी जो तूने मुझसे पूछा है यह प्रश्न तेरे पूछनेकेही योग्य है हे भरतर्षभ मैंभी उसको यथार्थही कहताहूं । ७ । हे राजा युद्ध में भीमसेनके ... अधर्मपूर्वक बड़े शूरवीर धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन को

CHAPTER LXIII

Janmejaya said, " Why did Yudhishthir send Vasudev, the destroyer of foes, to Gandhari? Shri Krishn's former mission to the Kauravas for peace was a failure, and the result was the great war. Why did he go again after the slaughter of so many warriors, the fall of Duryodhan, the annihilation of all the enemies of the Pandavas, the evacuation of tents by the rest and the attainment of great fame? I think the reason of his going there this time must be not a trifling one. Pray explain to me all this at length. " Vaishampayan said, " The question that thou hast asked, is worth putting, and I shall tell it to you: seeing the brave son of Dhritrashtra unjustly hit by

युत्कस्य समर्थं राजन् धार्त्तराष्ट्रं महाबलम् ॥ ८ ॥ अन्यायेन हतं दृष्ट्वा गदायुद्धेन
भारत । युधिष्ठिरं महाराज महद्भयमथाविशत् ॥ ९ ॥ चिन्तयानं महाभागां
गान्धारीं तप सान्विताम् । घोरेण तपसा युक्ता त्रैलोक्यमपि सा दहेत्
॥ १० ॥ तस्य चिन्तयमानस्य बुद्धिः समभवत्तदा । गान्धार्याः क्रोधदीप्तायाः
पूर्वं प्रशमनं भवेत् ॥ ११ ॥ साहि पुत्रवधं श्रुत्वा कृतमस्माभिरीदृशम् । मानसेनाग्निना
क्रुद्धा भस्मसान्नः करिष्यति ॥ १२ ॥ एवं विचिन्त्य बहुधा भयशोकसमन्वितः । वासु
देवमिदं वाक्यं धर्मराजोऽभ्यभाषत ॥ १३ ॥ तव प्रसादाद्गोविन्द राज्यं निहतकंटकम् ।
अप्राप्यं मनसापीदं प्राप्तमस्माभिरच्युत ॥ १४ ॥ प्रत्यक्षं मे महाबाहो संग्रामे लोमह-
र्षणे । विमर्दः सुमहान् प्राप्तस्त्वया यादवनन्दन ॥ १५ ॥ त्वयादेव सुरे युद्धे वधार्थं मम

न्याय से विरुद्ध गदायुद्ध में मराहुआ देखकर युधिष्ठिरको बड़ाभय उत्पन्न हुआ । ८ । तपसे युक्त महाभाग गान्धारी से भयभीत और चिन्ताकरताहुआ भय से उद्विग्नचित्तहुआ कि वह घोरतपवाली गान्धारी अपने कोपसे तीनों लोकों को भी भस्मकरसक्ती है । १० । इसहेतुसे उस चिन्ताकरनेवाले युधिष्ठिरका विचारहुआ कि प्रथम क्रोधसे प्रज्वलित गान्धारी के क्रोधकी शान्ती करनी योग्य है । ११ । क्योंकि वह हमारे हाथसे इस प्रकार अपने पुत्रका मरणसुनकर क्रोध से पूर्ण अपने अग्निरूप मनसे हमको भस्मकरेगी । १२ । भय और शोक से युक्त धर्मराजने इस प्रकार की बहुतसी चिन्ता करके वासुदेवजी से यह वचन कहा । १३ । हे अविनाशी गोविन्दजी आपकी कृपासे यह अकण्टक राज्य हमको प्राप्तहुआ जोकि मनसे भी महादुष्प्राप्य था । १४ । हेयादवनन्दन महाबाहु रोमहर्षण करनेवाले युद्ध में मैंने देखा है कि तुमने बड़े युद्धको प्राप्त किया । १५ । तुमने पूर्वसमय के देवासुरोंके युद्ध में असुरोंके मारनेके निमित्त देवताओंकी जिसप्रकार से सहायताकरी और देवताओंके शत्रुमारेगये । १६ । [illegible] सहायता करी है और अपने रथवानी श्रीकृष्णजी उसीप्रकार [illegible]

...bhim's mace, Yudhishthir was in great fear at the thought that with her great ascetic powers Gandhari could burn the three worlds in anger. 10 So he thought of first allaying her anger so that she might not burn them down on hearing of the death of her son. Full of grief and fear, Yudhishthir said to Vasudev, " We have cleared our way to the throne by your grace and achieved a task difficult to be attained by others. I have seen your great prowess in the war. 15 You have helped us as you did the gods in former days and have slain our foes as you did theirs. How could we cross the great ocean of war without your helping Arjun. You suffered for our sake the

रद्विणाम । यथा त्वया गुप्तास्ते हताश्चाद्दिपुधाधिपः ॥ १६ ॥ कृष्ण तथा महाबाहो दृष्व मस्माकमच्युत । सारथ्येन च वार्ष्णेय भवताहि धृतावयम् ॥ १७ ॥ यदि न च भवे नाथ: फाल्गुनस्य महारणे । कथ शक्यो रणे जेतु भवदष बलार्णव ॥ १८ ॥ गदाप्रहारा विपुला परिघैश्च पि ताडनम् । शक्तिभि निदपालैश्च तोमरै. सपरश्वधै ॥ १९ ॥ अस्मत कृते त्वया कृष्ण वाचः सुपरुषा श्रुताः । शस्त्राणाञ्च निपाता वै वज्रस्पर्शोपमा रणे ॥ २० ॥ ते च ते सफला याता हते दुर्योधनेऽच्युत । तत् सर्वं न यथा नश्येत पुनः कृष्ण तथा कुरु ॥ २१ ॥ सन्देह दोला मास नऽद्येत कृष्ण जये सति । गान्धार्याहि महाबाहो क्रोध बुध्यस्व माधव ॥ २२ ॥ सा हि नित्यं महाभाग तपसो ग्रेण कर्षिता पुत्रपौत्रवधं श्रुत्वा ध्रुवं नः सम्प्रदक्ष्यति ॥ २३ ॥ तस्या. प्रसादन वीर प्राप्तकालं मतं मम ॥ २४ ॥ कश्चतां क्रोधताम्राक्षीं पुत्रव्यसनकर्षिताम् । वीक्षितुं पुरुषः शक्तस्त्वा

करोनेसे हमारी रक्षाकरी । १७ । जो तुम बड़े युद्धमें अर्जुन के स्वामी न होते तो इस सेनारूपी समुद्रको कैसे पारहोकर विजयकरते । १८ । हे श्रीकृष्णजी तुमने हमारे कारण से गदा, परिघ, शक्ति, भिन्दिपाल तोमर और फरसोंके बड़े प्रहार । १९ । कठोरवचन और युद्धमें वज्रस्पर्श के समान शस्त्रोंके गिरनेको भी सहा । २० । हेअविनाशी दुर्योधन के मरनेपर आपके कठिन दुःख सफलहुये हे श्रीकृष्णजी अब जिसप्रकार से वह सब आप के उपकार नाश न होयँ वही आपको करना उचितहै । २१ । हे माधवजी विजयी होनेपर भी हमारा चित्त संदेहों मेंहिंडोले के समान झूलताहै हे महाबाहु आप गान्धारी के क्रोधको जानिये । २२ । वह महाभाग यशस्विनी सदैव बड़े तपों से बड़ी पीडवान् है वह अपने पुत्र पौत्रादिकों के नाशको सुनकर अवश्य हमलोगोंको भस्मकरेगी । २३ । हेवीर मेरे विचारमें उसका प्रसन्नकरना समयके अनुसार है । २४ । हे पुरुषोत्तम आपके सिवाय कौन पुरुष उस क्रोधमे रक्तनेत्र और पुत्रोंके शोकसे पीड़ावान् के देखने ... है । २५ । हे शत्रुओं के विजय करनेवाले माधवजी आपसे ज्वलितरूप गान्धारी के क्रोधके दूरकरने ... मतको स्वीकार है क्योंकि

strokes of various weapons whose touch was hard like that of vajra. 20. All your labour has borne fruit at the death of Duryodhan. Now you must do something more so that your former kindness may not become useless. Our minds are in a state of suspense even after gaining victory, for you too, are not ignorant of the rage of Gandhari. She is a powerful ascetic and may burn us down for the death of her sons and grandsons. To cool her anger should be our foremost care in my opinion. Who else, except you, can look at the red angry eyes of Gandhari I..t with the grief of her sons? 25. I request

मूने पुरुषोत्तम ॥ २५ ॥ तत्र ते गमनं प्राप्तं रोचते तव माधव । गान्धार्य्याः क्रोधदी.
साथाः प्रशमार्थं मरिन्दम । त्वंहि कर्त्ता विकर्त्ता च लोकानां प्रभवाप्ययः ॥ २७ ॥ हेतु
कारणसंयुक्तैर्वाक्यैः काल समीरितैः । क्षिप्रमेव महाप्राज्ञ गान्धारीं शमयिष्यसि ॥२८॥
पितामहश्च भगवान् कृष्णस्तत्र भविष्यति । सर्वथा ते महाबाहो गान्धार्याः क्रोधना
शनम् । कर्त्तव्यं सात्वतां श्रेष्ठ पाण्डवानां हितार्थिना ॥ २९. ॥ धर्मराजस्य वचनं
श्रुत्वा यदुकुलोद्वहः । आमन्त्र्य दारुकं प्राह रथः सज्जो विधीयताम् ॥३०॥ केशवस्य
वचः श्रुत्वा त्वरमाणोऽथ दारुकः । न्यवेदयद्रथं सज्जं केशवाय महात्मने ॥ ३१ ॥
तं रथं यादवश्रेष्ठः समारुह्य परन्तपः जगाम हास्तिनपुरं त्वरितः केशवो विभुः ॥ ३२ ॥
ततः प्रायान्महाराज माधवो भगवान्रथी । नागसाह्वयमासाद्य प्रविवेश च वीर्यवान्
॥ ३३ ॥ प्रविश्य नगरीं वीरो रथघोषेण नादयन् । विदितो धृतराष्ट्रस्य सोऽवतीर्य
रथोत्तमात् ॥ ३४ ॥ अभ्यगच्छददीनात्मा धृतराष्ट्रनिवेशनम् ॥३५॥ पूर्वञ्चाभिगतं

तुम्हीं सबसृष्टि के कर्त्ता नाशकर्त्ता और उत्पत्ति के हेतुरूपहोकर अविनाशीहो।२७।
हे महाबाहु तुमकार्यकारण से युक्त समयके अनुसार वचनों से शीघ्रही गान्धारीको
शान्तकरोगे । २८ । वहां हमारे पितामह भगवान व्यासजीभीहोंगे हे यादवेन्द्र
पांडवों के हितकी बात तुमको करनी योग्य है यादवेन्द्रजीने धर्मराजके वचनको
सुनकर दारुकको बुलाकर कहा कि रथ तैयारकरो । ३० । इसके पीछे केश वस
के वचनको सुनकर शीघ्रता करनेवाले दारुकने रथको तैयार करके महात्मा के हवों
जीके पास वर्त्तमान किया । ३१ । फिर यादवेन्द्र शत्रुसंतापी केशवजी उसरथ त्पन्न
सवारहोकर शीघ्रही हस्तिनापुरकोगये । ३२ । और बड़े पराक्रमी और साहसी के
श्रीकृष्णजी हस्तिनापुरमें पहुंचे और रथकेशब्दों से शब्दको उत्पन्नकर वह वीर
श्रीकृष्णजी नगर में प्रवेश करके धृतराष्ट्रके जानेहुये उत्तम रथसे उतरकर धृतराष्ट्र
के महल में पहुँचे । ३५ । उन जनार्दन केशवजीने वहां पूर्वसे गयेहुये और बैठेहुये
ऋषियों में श्रेष्ठ व्यास महर्षिजी को देखा व्यासजीके और राजाके भी चरण

you to go there to appease Gandhari's anger; for you are the creator and destroyer of the world. You are the indestructible cause of creation. You will soon appease her anger by your argument. You will find our grandfather Vyas there and may do what is proper. On hearing the words of Yudhishthir, the lord of the Yadavas ordered Daruk to make his car ready. Daruk prepared the car and informed Keshav that it was ready. He mounted it and hastened to Hasthinapur. He soon reached there, making a noise with the rumbling of his wheels as he entered the city. Then he came down from the car and entered the palace of Dhritrashtra. There he saw Vyas the best of maharshis already come there. Keshav touched the feet

तत्र सोऽपश्यदृषिसत्तमम् । पादौ प्रपीड्य कृष्णस्य राज्ञश्चापि जनार्दनः ॥ ३६ ॥ अभ्य
वादयदव्यग्रो गान्धारीं चापि केशवः । ततस्तु यादवश्रेष्ठो धृतराष्ट्रमधोक्षजः ॥ ३७ ॥
पाणिमालम्ब्य राजेन्द्र सुस्वरं प्ररुरोद ह । स मुहूर्तमिवोत्सृज्य बाष्पं शोकसमुद्भवम्
॥ ३८ ॥ प्रक्षाल्य वारिणा नेत्रे ह्याचम्य च यथाविधि । उवाच प्रश्रितं वाक्यं धृतराष्ट्र
मरिन्दमः ॥ ३९ ॥ न तेऽस्त्यविदितं किञ्चिद्भूतभव्यस्य भारत । कालस्य च यथावृत्तं
तत्ते सुविदितं प्रभो ॥ ४० ॥ यतितं पाण्डवैः सर्वैस्तव चित्तानुरोधिभिः । कथं
कुलक्षयो न स्यात्तथा क्षत्रस्य भारत ॥ ४१ ॥ भ्रातृभिः समयं कृत्वा क्षान्तवान् धर्म
वत्सलः । द्यूतच्छलजितैः शुद्धैर्वनवासोऽभ्युपागतः ॥ ४२ ॥ अज्ञातवासचर्या च नाना
वेशसमावृतैः । अन्ये च बहवः क्लेशास्त्वशक्तैरिव नित्यदा ॥ ४३ ॥ मया च स्वयमा
गम्य युद्धकाल उपस्थिते । सर्वलोकस्य सान्निध्ये ग्रामांस्त्वं पञ्च याचितः ॥ ४४ ॥
त्वया कालोपसृष्टेन लोभतो न प्रदापिताः । तवापराधान्नृपते सर्वं क्षत्रं क्षयं गतम्

को स्पर्श करके । ३६ । सावधान केशवजी ने गान्धारीको भी दण्डवत्की हेराजा
इसके पीछे यादवेन्द्र श्रीकृष्णजी । ३७ । धृतराष्ट्र को हाथसे पकड़कर बड़े शब्द
से रोदन करनेलगे और एक मुहूर्त तक शोकजनित अश्रुपातों को कर के । ३८
जलसे दोनों नेत्रोंको धोकर विधिपूर्वक आचमन करके समय के अनुसार धृतराष्ट्र
से वचन कहा । ३९ । कि हे भरतवंशी बीतेकाल के वृत्तान्तों को आप अच्छी
प्रकारसे जानतेहो समयका जैसा जो कुछ वृत्तान्तहै वह सब आपको विदितहै
। ४० । हे भरतवंशी तेरे चित्तके समान कर्मकर्ता सब पाण्डवों से जो यह कुलका
और सब क्षत्रियों का नाशहुआ वह कैसे न होय अवश्यही होना उचित था क्योंकि
धर्मवत्सल युधिष्ठिरने प्रतिज्ञा करके क्षमाकरी और छलद्यूत से पराजित पवित्रात्मा
पाण्डवों को वनवास हुआ । ४२ । इन लोगोंने नानावेषों को धारण करके अज्ञात
वासचर्या आदिक अनेक प्रकारके क्लेशोंको असमर्थों के समान पाया । ४३ । मैंने
आपयुद्धके सन्मुख होनेमें स्वयं आपके पास आकर सबलोगोंके सम्मुखमें पाँचगाँव
तुमसे माँगे । ४४ । परन्तु कालसे प्रेरित होकर तुमने लोभसे अपने पुत्रों को

of Vyas, Dhritrashtra and Gandhari. Then holding the blind king by the hand, he wept loud. Having wept for some time, he washed his eyes with water and having sipped water, said to Dhritrashtra, " You know well of the three divisions of time. 40. The great destruction of the warriors by the Pandavas was inevitable. Yudhishthir overlooked the wrongs and yet he was cheated at dice and sent into exile. They assumed various disguises and suffered much to live unknown. I myself came to you on the eve of battle and begged of you to give them five villages, but urged by Fate and avarice, you

॥ ४५ ॥ भीष्मेण सोमदत्तेन बाह्लीकेन कृपेणच । द्रोणेन च सपुत्रेण विदुरेण च धीमता । याचितस्त्वं शमं नित्यं न च तत् कृतवानसि ॥ ४६ ॥ कालोपहतचित्तो हि सर्वो मुह्यति भारत । यथा मूढो भवान् पूर्वमस्मिन्नर्थे समुद्यते ॥ ४७ ॥ किमन्यत् कालयोगाद्धि दिष्टमेव परायणम् । मा च दोषान्महाप्राज्ञ पाण्डवेषु निवेशय ॥ ४८ ॥ अल्पोप्यतिक्रमो नास्ति पाण्डवानां महात्मनाम् । धर्मतो न्यायतश्चैव स्नेहतश्च परंतप ॥ ४९॥ एतत् सर्वन्तु विज्ञाय ह्यात्मदोषकृतं फलम् । असूयां पाण्डुपुत्रेषु न भवान् कर्तुमर्हति ॥ ५०॥ कुलं वंशश्च पिण्डश्च यच्च पुत्रकृतं फलम् । गान्धार्यास्तव चैवाद्य पाण्डवेषु प्रतिष्ठितम् ॥ ५१ ॥ त्वञ्चैव कुरुशार्दूल गान्धारी च यशस्विनी । मा शुचो नरशार्दूल पाण्डवान् प्रति किल्बिषम् ॥ ५२ ॥ एतत् सर्वमनुध्यात्वा आत्मनश्च व्यतिक्रमम् । शिवेन पाण्डवान् पाहि नमस्ते भरतर्षभ ॥ ५३ ॥ जानासि च महाबाहो

निषेध नहीं किया हे राजा आपके अपराध से सब क्षत्रियों क समूहों का नाशहुआ । ४५ । भीष्म, सोमदत्त, बाह्लीक, कृपाचार्य पुत्रसमेत द्रोणाचार्य और बुद्धिमान् विदुरजी ने सन्धिके निमित्त आपसे बारम्बार प्रार्थना करी परन्तु तुमने उनमें से किसीके भी वचनको नहीं किया । ४६ । हे भरतवंशी काल से घायल चित्त सब मनुष्य ऐसे अचेत होजाते हैं जैसे कि पूर्वसमय में इस प्रयोजनके वर्त्तमान होनेपर आप अज्ञानहुये । ४७ । कालयोग से दूसरी क्याबात है निश्चय प्रारब्धही सबसे प्रबलहै हे बड़ेज्ञानी आप पाण्डवों में दोषोंको न लगाओ ।४८। महात्मा पाण्डवों में थोड़ीसी भी अमर्यादा नहीं है हे शत्रुसंतापी आप अपनेही अपराधसे उत्पन्न होनेवाली इन सब बातोंको जानकर धर्मन्याय और प्रीति से । ४९ । पाण्डवों के गुणोंमें दोष लगानेकेयोग्य नहीं हो । ५० । कुल वंश पिण्ड और जो पुत्रहोनेका धर्मफलहै वह सब आपका और गान्धारीका पांडवों में नियत है । ५१ । हे कौरव्य नरोत्तम आप और यशस्विनी गांधारी पाण्डवोंके अपराधों को मतविचारो ।५२। अपनी ही इससब अमर्यादगी को ध्यानकरके अपने कल्याण वचनोंसे पाण्डवोंकी रक्षा करो हे भरतर्षभ आपको नमस्कार है । ५३ । हेमहाबाहु प्रीति और स्वभावसे

did not put down your sons and the destruction of all the great warriors was the result. 45. Bhishm, Somdat, Vahlik, Kripacharya, Drona and his son, and wise Vidur repeatedly asked you to contract peace, but you did not mind them. People become insensible like you by the vicissitude of Time. Surely Time and Fate are very powerful. You need not find fault with the Pandavas, wise Prince. They never acted against law. You must think of your own faults and justice and love before finding fault with them. 50. They are of your own blood and are dutiful sons to you and Gandhari You and glorious Gandhari should overlook their faults. Thinking of your own transgressions,

धर्मराजस्य या त्वयि । भक्तिर्भरतशार्दूल स्नेहश्चापि स्वभावतः ॥ ५४॥ एतच्च कदनं कृत्वा शत्रूणामुपकारिणाम । दह्यते स दिवारात्रौ न च शर्माधिगच्छति ॥ ५५ ॥ त्वाञ्चैव नरशार्दूल गान्धारीञ्च यशस्विनीम् । स शोचन् नरशार्दूलो न शान्तिमधिगच्छति ॥ ५६ ॥ ह्रिया परमयाविष्टो भवन्तं नाधिगच्छति पुत्रशोकाभिसन्तप्तं बुद्धिव्याकुलितेन्द्रियम ॥ ५७ ॥ एवमुक्त्वा महाराज धृतराष्ट्रं यदूत्तमः । उवाच । परमं वाक्यं गान्धारीं शोककर्शिताम ॥ ५८ ॥ सौबलेयि निबोध त्वं यत्त्वां वक्ष्यामि सुव्रते । त्वत्समा नास्ति लोकेऽस्मिन्नद्य सीमन्तिनी शुभे ॥ ५९ ॥ जानासि च यथा राज्ञि सभायां मम सन्निधौ । धर्मार्थसहितं वाक्यमुभयोः पक्षयोर्हितम्॥६०॥ उक्तवत्यसि कल्याणि न च ते तनयैः कृतम् ।६१ ॥ दुर्य्योधनस्त्वया चोक्तो जयार्थी परुषं वचः । शृणु मूढ वचो मह्यं यतो धर्मस्ततो जयः ॥६२॥तदिदं समनुप्राप्तं

धर्मराजकी जो आपमें भक्तिहै उसको आप जानतेहो ।५४। वह युधिष्ठिर अवज्ञा करनेवाले क्षत्रियोंका नाशकरके अहर्निश जलताहै और कल्याणको नहीं पाता है ।५५। हे नरोत्तम वह पुरुषोत्तम तुमको और यशस्विनी गान्धारीको शोचताहुआ शान्तिको नहीं पाता है ।५६। और बड़ी लज्जामेंयुक्त वह युधिष्ठिर तुम्हारेपास भी नहीं आताहै जोकि पुत्रशोक से दुःखी व्याकुलबुद्धि और इन्द्रियवालेहो ।५७। हे महाराज इस प्रकारसे श्रीकृष्णजी राजा धृतराष्ट्र से कहकर शोक से महापीड़ित गान्धारी से यह वचन बोले ।५८। कि हे सौबलकी पुत्री जोअब मैं तुम से कहूं उसको सुनकर चित्तसे समझो हे शुभे अब इसलोक में तेरे समान कोई भी नहीं है ।५९। हे रानी मैं जानताहूं जैसे कि सभाके मध्य मेरेसमक्ष में तुमने धर्मअर्थ से युक्त दोनों ओरका हितकारी वचन कहाथा हे कल्याणी तेरे पुत्रोंने उसको नहीं किया ।६१। औरतुमने दुर्योधन से भी यह कठोरवचन कहे कि हे अज्ञानी मेरे वचनको सुन जिधर धर्म है उधरही विजयहै ।६२। सो हे राजपुत्री

you should protect them by your good words; I bow to you. You know the love and devotion of Yudhishthir towards you. Having destroyed the Kshatryas, he does not find rest night and day. He is always sorrowful for your sake and that of Gandhari. He does not come to you for shame, for you are distressed with the grief of your sons." Having said this to Dhritrashtra, Krishn turned towards Gandhari, who was in great grief, and said, "Hear my words, daughter of Suval, and ponder them well. I remember how you gave salutary advice to your sons, but they did not hear you. 61. You said to Duryodhan those harsh words, "Hear me fool: victory accompanies dharm." Your words have come out true and therefore you should

तव वाक्यं नृपात्मजे । एवं विदित्वा कल्याणि मा स्म शोके मनः कृथाः ॥ ६३ ॥
पाण्डवानां विनाशाय मा ते बुद्धिः कदाचन । शक्ता चासि महाभागे पृथिवीं सचरा
चराम् । चक्षुषा क्रोधदीप्तेन निर्दग्धुं तपसो बलात् ॥ ६४ ॥ वासुदेववचः श्रुत्वा गांधा-
री वाक्यमब्रवीत् । एवमेतन्महाबाहो यथा वदसि केशव ॥ ६५ ॥ आधिभिर्दह्यमानाया
मतिः सञ्चलिता मम । सा मे व्यवस्थिता श्रुत्वा तव वाक्यं जनार्दन ॥ ६६ ॥ राज्ञ
स्त्वन्धस्य वृद्धस्य हतपुत्रस्य केशव । त्वं गतिः सह तैर्वीरैः पाण्डवैर्द्विपदांवर ॥ ६७॥
एतावदुक्त्वा वचनं मुखं प्रच्छाद्य वाससा । पुत्रशोकाभिसन्तप्ता गान्धारी प्ररुरोद ह
॥ ६८॥ तत एनां महाबाहुः केशवः शोककर्शिताम् । हेतुकारणसंयुक्तैर्वाक्यैराश्वासयत्
प्रभुः ॥ ६९॥ समाश्वास्य च गांधारीं धृतराष्ट्रं च माधवः । द्रौणिसङ्कल्पितं भावमनु
बुध्यत केशवः ॥ ७० ॥ ततस्त्वरित उत्थाय पादौ मूर्ध्ना प्रणम्य च । द्वैपाय

वह तेरा कहाहुआ वचन वर्तमानहुआ है कल्याणी इस प्रकारसे जानकर शोकमें चित्त मतकरो । ६३ । पाण्डवों के नाशके लिये तेरी बुद्धि कभी मतहोव हेमहाभाग तुम क्रोधसे ज्वलित नेत्रोंकी अग्नि और तपके बलसे इस सब जड़ चैतन्यों समेत पृथ्वीको भस्म करनेके समर्थ हो ।६४। गान्धारी वासुदेवजी के वचनको सुनकर बोली कि हे महाबाहु केशवजी यह ऐसेही है जैसे कि आप कहते हो । ६५ । परन्तु चित्तके अनेक दुःखोंसे मुझ जलनेवाली की बुद्धि चलायमान हुई है हे जनार्दन केशवजी आपके वचनों को सुनकर अब वह मेरी बुद्धि स्थिरहुई । ६६। हे द्विपादोंमें श्रेष्ठ तुम वीर पांडवोंके साथ इस अन्धे वृद्ध और मृतसन्तान राजा की गतिहो । ६७ । वह गांधारी इतना कहके अपने मुखको वस्त्रसे ढककर पुत्र शोक से दुःखी होकर बहुत रोदन करनेलगी । ६८ । इस के पीछे महाबाहु केशव ने उस शोकपीड़ित गांधारीको हेतुकारण संयुक्त वचनों के द्वारा विश्वास कराया ।६९ । माधवजी ने उस धृतराष्ट्र और गांधारीको विश्वास देकर अश्वत्थामा के हृदय के विचारको जाना । ७० । तबतौ केशवजी शीघ्रही मस्तक से व्यासजी

---

not give yourself up to grief. Let your mind never think of the destruction of the Pandavas though you can destroy the three worlds by your angry eyes."64 Having heard the words of Vasudev Gandhari said, You are right, Vasudev, My mind wavered with the excess of grief; but your words have set it at rest. You and the Pandavas are the refuge of this blind old king." Having said this, she covered her face with cloth and wept long and bitterly. Krishn consoled her again with his arguments. Having consoled the royal pair, he knew what was passing in the mind of Ashwathama. He soon touched the feet of Vyas with his forehead and again said to Dhritrashtra, " I bow to

नस्य राजेन्द्र तत कौरवमब्रवीत् ॥ ७१ ॥ आपृच्छे त्वा कुरुश्रेष्ठ मा च शोकं मन. कृथा । द्रौणेः पापोऽस्त्यभिप्रायस्तेनास्मि सहसोत्थित ॥ ७२ ॥ पाण्डवानां वधे रात्रौ बुद्धिस्तेन प्रदर्शिता । एतत् श्रुत्वा तु वचन गान्धार्या सहितोऽब्रवीत् । ७३ । धृतराष्ट्रो महाबाहु केशव केशिसूदनम । शीघ्र गच्छ महाबाहो पाण्डवान् परिपालय ॥ ७४ ॥ भूयस्त्वया समेष्यामि क्षिप्रमेव जनार्दन । प्रायात्ततस्तु त्वरितो दारुकेण सहाच्युत ॥ ७५ ॥ वासुदेवे गते राजन् धृतराष्ट्रं जनेश्वरम् । आश्वासयदमेयात्मा व्यासो लोक नमस्कृत ॥ ७६ ॥ वासुदेवोऽपि धर्मात्मा कृतकृत्यो जगाम ह । शिविरं हास्तिनपुराद् दिदृक्षु. पाण्डवा नृप ॥ ७७ ॥ आगम्य शिविरं रात्रौ सोऽभ्यगच्छत पाण्डवान् । तच्च तेभ्य । समाख्याय सहितस्तैः समाहित. ॥ ७८ ।

इति गदापर्वणि धृतराष्ट्रगान्धारीप्रबोधने त्रिषष्टोऽध्यायः ६३ ॥

के चरणों को दण्डवत् करके फिर कौरवराज धृतराष्ट्रसे बोले ७१ कि हे कौरवों में श्रेष्ठ तुम को मैं नमस्कार करताहूं आप शोकमें चित्त मतकरो अश्वत्थामा का पाप रूप चित्त हुआहै इ।हेतुसे मै शीघ्रता से उठाहूं ७२। उसने रात्रिके समय पाण्डवोंके मारने का विचार पक्का प्रकट किया है महाबाहु धृतराष्ट्र गान्धारी समेत इस वचन को सुनकर केशी दैत्य के मारनेवाले केशवजी से बोले । ७३ । हे महाबाहु आप शीघ्रजाओ और पाण्डवों की रक्षाकरो । ७४ । हे जनार्दनजी मैं फिर आप से शीघ्र मिलूंगा इसके पीछे अविनाशी केशवजी शीघ्रही दारुक समेतगये । ७५ । हे राजा वासुदेवजी के जानेपर बडे बुद्धिमान् और लोकमान्य व्यासजी ने राजा धृतराष्ट्र को विश्वास कराया । ७६ । धर्मात्मा वासुदेवजी भी समाप्तमनोरथ होकर पांडवों के देखनेकी इच्छासे हास्तिनापुर से डेरेको गये । ७७ । और रात्रि के समय डेरे को पाकर पांडवों के पासगये और वह सब वृत्तान्त उनसे कहकर उन समेत सावधान हुये ७८ ॥

---

you best of *Kauravas*, donot indulge in grief Ashwathama is bent on mischief and therefore I am in a hurry He intends slaying the Pandavas at night " To this Dhritrashtra and Gandhari replied, " Make haste, brave man, and protect the Pandavas. We shall soon see you again " Then *Krishn* went away with Draul At his departure Vyas too, consoled the king Being successful in his mission, Vasudev hastened to the camp and reaching there at nightfall went directly to the Pandavas and told them what had happened " 78.

धृतराष्ट्र उवाच । अधिष्ठितः पदा मूर्द्धि भग्नसक्थो महीगतः । शौटीर्यमानी पुत्रो मे किमभाषत सञ्जय ॥१॥ अत्यर्थं कोपनो राजा जातवैरश्च पाण्डुषु व्यसनं परमं प्राप्तः किमाह परमाहवे ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि यथा वृत्तं नराधिप । राज्ञा यदुक्तं भग्नेन तस्मिन् व्यसन आगते ॥ ३ ॥ भग्नसक्थो नृपो राजन् पांसुना सोऽवगुण्ठितः । यमयन् मूर्द्धजांस्तत्र वीक्ष्य चैव दिशो दश ॥४॥ केशान् नियम्य यत्नेन निःश्वसन्नुरगो यथा संरम्भाश्रुपरीताभ्यां नेत्राभ्यामभिवीक्ष्य माम् ॥५॥ बाहू धरण्यां निष्पिष्य मुहुर्मत्त इव द्विपः । प्रकीर्णान्मूर्द्धजान् धुन्वन्दन्तैर्दन्तानुपस्पृशन् । गर्हयन् पाण्डवं ज्येष्ठं निःश्वस्येदमथाब्रवीत् ॥६॥ भीष्मे शान्तनवे नाथे कर्णे चास्त्रभृतां वरे । गौतमे शकुनौ चापि द्रोणे चास्त्रभृतां वरे ॥ ७ ॥ अश्वत्थाम्नि तथा शल्ये शूरे च कृतवर्मणि इमामवस्थां प्राप्तोऽस्मि कालो हि दुरतिक्रमः ॥ ८ ॥ एकादशचमूभर्त्ता सोऽहमेतां दशां

अध्याय ॥ ६४ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय पाँवसे मस्तकपर दबायेहुये टूटी जंघा पृथ्वीपर गिरे हुये मेरे अहङ्कारी पुत्रने क्या कहा । १ । अत्यन्त क्रोधयुक्त और पाण्डवों के साथ शत्रुता करनेवाले बड़े संकटको प्राप्त राजाने बड़े युद्ध में क्या किया । २ । सञ्जय बोले हे राजा जैसा वृत्तान्त है उससब वृत्तान्त को मैं कहताहूं अर्थात् उस दुःखके प्राप्तहोनेपर टूटे अंगवाले राजानें जो कहाहै उसको आप सुनिये । ३ । हे राजा टूटी जंघा धूलसे लिप्त शिरके केश बाँधनेवाले उस राजाने वहां दशों दिशाओं को देखकर । ४ । सर्पकी समान श्वासलेतेहुये ने उपायसे वालोंको बाँधकर क्रोध और अश्रुओंसे पूर्णनेत्रोंसे मुझको देखकर । ५ । मतवाले हाथीके समान अपनी भुजाओंको बारम्बार मलकर बिखरेहुये बालोंको कँपाते दाँतों से दाँतोंको दबाते और युधिष्ठिरकी निन्दाकरते दुर्योधनने श्वासलेकर यह कहा । ६ । कि शांतनुके पुत्र भीष्मजी, शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ कर्ण, कृपाचार्य, शकुनि, महाअस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, शल्य और शूर कृतवर्मा के नाशहोनेपर मैंने इस दशाको पाया निश्चयकरके काल बड़ेदुःखसे उल्लंघनकेयोग्यहै । ८ । जो कि ग्यारह अक्षौ

CHAPTER LXIV

Dhritrashtra said, " What did my proud son, with broken thigh, say when he was kicked on the head ? What did he do at that insult ? " Sanjaya said, " Hear, O king, what he said : with broken thigh and besmeared with dust he tied the hair of his head and looked in all directions. Hissing like a serpent and adjusting his hair, with eyes full of tears, he looked towards me, 5. Rubbing his arms, shaking his dishevelled hair, gnashing his teeth and blaming Yudhishthir, he sighed and said, " I have been reduced to this condition at the fall of Bhishm, Karan, Kripa, Shakuni. Drona, Ashwathama, Shalya and

गतः। कालं प्राप्य महाबाहो न कश्चिदति वर्त्तते ।९॥ आख्यातव्यं मदीयानां येऽस्मिन् जीवन्ति संयुगे। यथाहं भीमसेनेन व्युत्क्रम्य समयं हतः ॥ १० ॥ बहूनि सुनृशंसानि कृतानि खलु पाण्डवैः। भूरिश्रवसि कर्णे च भीष्मे द्रोणे च श्रीमति ॥ ११ ॥ इदञ्चाकीर्त्तिजं कर्म नृशंसैः पाण्डवैः कृतम्। येन ते सत्सु निर्वेदं गमिष्यन्ति हि मे मतिः॥१२॥ का प्रीतिः सत्त्वयुक्तस्य कृत्वोपाधिकृतं जयं। को वा समयभेत्तारं बुधः सम्मन्तुमर्हति ॥ १३ ॥ अधर्मेण जयं लब्ध्वा कोनुहृष्येत पण्डितः। यथा संहृष्यते पापः पाण्डुपुत्रो वृकोदरः ॥ १४॥ किन्नु चित्रमतस्त्वद्य भग्नसक्थस्य यन्मम। क्रुद्धेन भीमसेनेन पादेन मृदितं शिरः। १५ ॥ प्रतपन्तं श्रिया जुष्टं वर्त्तमानञ्च बन्धुषु। एवं कुर्य्यान्नरो यो हि स वै सञ्जय पूजितः ॥ १६ ॥ अभिज्ञौ युद्धधर्मस्य मम माता पिता च मे। तौ हि सञ्जय दुःखार्त्तौ विज्ञाप्यौ वचनान्मम ॥ १७ ॥ इष्टं भृत्या भृताः सम्यग् भूः प्रशास्ता

होनी सबोंके मुझ स्वामी ने भी इसदशाको पाया है महाबाहु कोई मनुष्य कालको उल्लंघन नहीं करसक्ताहै। ९। अब तुम उन मेरे शूरवीरों का वर्णन करो जो इसयुद्धमें जीवते हैं जिसप्रकार नियमको उल्लंघनकर भीमसेनके हाथसे मारा गयाहूं। १०। इससे विदितहोताहै कि पांडवोंकीओरसे बहुतनिर्दयकर्म किये गये हैं निर्दय पांडवोंकीओरसे अपकीर्त्तिसे उत्पन्न होनेवाला यह कर्म भूरिश्रवा, कर्ण, भीष्म और श्रीमान द्रोणाचार्य के भी साथमें कियागया। ११। इसहेतुसे वह सब पाण्डव वैराग्ययुक्त सत्पुरुषोंमें अपमानको पावेंगे छलसे प्राप्तहोनेवाली विजय को करके पराक्रमी पुरुषकी कौनसी प्रसन्नताहै१२कौनबुद्धिमान् समयके त्यागीका अपराध करनेको योग्यहै और कौनसा पंडित अधर्मसे विजयको पाकर ऐसे प्रसन्नहोगा।१३।जैसाकि पापी भीमसेन प्रसन्न होताहै।१४। क्याइससे अपूर्वक्या है जो मुझ टूटीजंघावालेके शिरको क्रोधयुक्त भीमसेनने चरणों से मर्दनाकिया।१५। सन्तप्तकरनेवाले लक्ष्मी से सेवित बान्धवोंके मध्य में वर्तमान पुरुषको जो मनुष्य ऐसीदशावाला करे है संजय वही पूजित है। १६। मेरे माता पिताभी धर्म्मयुद्ध

Kritvarma Surely Time is hard to surpass, when the lord of eleven akshauhinis has come to this state. None can overstep Time. Pray tell me of my warriors who are living. From the just treatment of me by Bhim, I am sure that the Pandavas have done many cruel deeds, They were unjust to Bhurishrava, Karan. Bhishm and Drona. 11. They will be surely looked down by good people. What pleasure can come out of unfair victory! What wise man will thus insult a king and exult at his own wickedness as Bhim has done? What can be more strange than his crushing down my head after breaking my thigh? 15. He who punishes him in the midst of his brothers is worthy of respect. My parents know justice in war and

ससागरा । मूर्ध्निस्थितममित्राणां जीवतामेव सञ्जय ॥ १८ ॥ दत्ता दाया यथाशक्ति मित्राणाञ्च प्रियं कृतम् । अमित्रा बाधिताः सर्वे कोनु स्वन्ततरो मया॥ १९ ॥ मानिता बान्धवाः सर्वे वश्यः सम्पूजितोजनः । त्रितयं सेवितं सर्वं कोनु स्वन्ततरो मया ॥२०॥ आज्ञप्तं नृपमुख्येषु मानः प्राप्तःसुदुर्लभः।आजानेयैस्तथा यातं कोऽनुस्वन्ततरो मया॥२१॥ अधीतं विधिवद्दत्तं प्राप्तमायुर्निरामयम् । स्वधर्मेण जिता लोकाः कोनुस्वन्ततरो मया ॥ २२ ॥ दिष्ट्यानाहं जितः संख्ये परान्प्रेष्यवदाश्रितः । दिष्ट्या मे विपुला लक्ष्मी मृते त्वन्यं गता विभो ॥ २३ ॥ यदिष्टं क्षत्रबन्धूनां स्वधर्ममनुतिष्ठताम् । निधनं तन्मया प्राप्तं कोनुस्वन्ततरो मया॥ २४ ॥ दिष्ट्या नाहं परावृत्तो वैरात् प्राकृतवज्जितः। दिष्ट्या नाविमतिं काञ्चिद्भजित्वा तु पराजितः ॥ २५ ॥ सुप्तं वाथ प्रमत्तं वा यथा हन्याद्विषेण वा । एवं व्युत्क्रान्तधर्मेण व्युत्क्रम्य समयं हतः ॥ २६ ॥ अश्वत्थामा महाभागः कृतवर्मा च सात्वतः । कृपः शारद्वतश्चैव वक्तव्यावचनान्मम ॥ २७ ॥ अधर्मेण

को अच्छीरीतिसे जानतेहैं हे संजय वहदोनों दुःखोंमेरे वचनोंसे जतलानेके योग्यहैं । १७ । अच्छेप्रकार यज्ञादिककिये प्रजापालनकिया और समुद्रों समेत सब पृथ्वीपर राज्यकिया हे संजय जीवते शत्रुओं के मस्तकपर नियतहुआ ।१८।सामर्थ्य के अनुसार दानकिये मित्रोंका हितकिया सबशत्रु पीड़ामान् किये मुझ से अधिक सुकर्मी कौनहै।१९।सबबान्धवों की प्रतिष्ठाकरी और अपने आश्रित कार्यकर्त्ताओंको प्रसन्नकिया धर्म अर्थ कामादिक सब सेवनकिये मुझ से अधिक सुकर्मी सुकृती कौनहै । २० । उत्तम २ राजाओंपर आज्ञाकरी बड़े दुःखसे प्राप्तहोनेवाली आज्ञा से उत्पन्नहोनेवाली प्रतिष्ठाको पाया आजानेय प्रकारवाले घोड़ों के द्वारा सवारीकी मुझसे अधिक सुफलवाला कौनहै । २१ । वेदपढ़कर विधिपूर्वक दान किया नीरोग आयुर्दापाई अपने धर्मसे लोक प्राप्तकिये मुझसे अधिक सुकर्मी कौनहै । २२। मैं प्रारब्ध से युद्ध में विजयवाला नहीं हुआ और दूसरे प्रभु मराब्धसे ही जो मेरी बड़ी लक्ष्मीथी वह मेरे मरनेपर दूसरे को प्राप्तहुई । २३ । अपने धर्मपर चलनेवाले क्षत्रियोंका जो हित और प्रिय है वह मरण मैंने पाया मुझसे विशेष शुभकर्मी कौनहै । २४ । मैं प्रारब्धहीसे साधारण मनुष्यकी शत्रुता से नहीं हटा और प्रारब्धसेही किसी अपमानको पाकर पराजय नहींहुआ । २५ । जैसे कि सोतेहुये को नशेसे अचेतको अथवा विषपान कियेहुयेको कोई मारताहै इसीप्रकार धर्म्म के त्यागनेवालेने नियमको त्यागकर मारा ।२६। महाभाग अश्वत्थामा यादव

must be informed. I performed sacrifices ruled over a vast kingdom, crushed my enemies, gave charity, did good to friends and punished foes, who can be happier than I ? I respected my kinsmen, pleased my ministers and passed a happy life, who can be more fortunate than I ? 20. I ruled over great kings, gained respect and rode over horses of Aajneya breed; who can be luckier than I ? I read the Vedas, gave charity; lived a healthy life and secured good regions by dharm; who

प्रवृत्तानां पाण्डवानामनेकशः। विश्वासं समयघ्नानां यूयं न गन्तुमर्हथ ॥२८॥ वातिकांश्चाब्रवीद्राजा पुत्रस्ते सत्यविक्रमः। अधर्माद्भीमसेनेन निहतोऽहं यथा रणे ॥ २९ ॥ सोऽहं द्रोणं स्वर्गगतं कर्णशल्यावुभौ तथा। वृषसेनं महावीर्यं शकुनिञ्चापि सौबलम् ॥ ३० ॥ जलसन्धं महावीर्यं भगदत्तञ्च पार्थिवम्। सोमदत्तिं महेष्वासं सैन्धवञ्च जयद्रथम् ॥ ३१ ॥ दुःशासनपुरोगांश्च भ्रातृनात्मसमांस्तथा। दौःशासनिञ्च विक्रान्तं लक्ष्मणञ्चात्मजावुभौ ॥ ३२ ॥ एतांश्चान्यांश्च सुबहून् मदीयांश्च सहस्रशः। पृष्ठतोऽनुगमिष्यामि सार्थहीन इवाध्वगः ॥ ३३ ॥ कथं भ्रातृन् हतान् श्रुत्वा भर्त्तारञ्च स्वसा मम। रोरूयमाणा दुःखार्त्ता दुःशलासा भविष्यति ॥ ३४ ॥ स्नुषाभिः प्रस्नुषाभिश्च वृद्धो राजा पितामह। गान्धारीसहितश्चैव कां गतिं प्रतिपत्स्यते ॥ ३५ ॥ नूनं लक्ष्मणमाताऽपि हतपुत्रा हतेश्वरा। विनाशं यास्यति क्षिप्रं कल्याणी पृथुलोचना ॥ ३६ ॥ यदि

कृतवर्मा, शारद्वत कृपाचार्य मेरे वचन से कहने के योग्य हैं ।२७। कि अनेकप्रकार के अधर्म के कर्त्ता नियमोंके त्यागनेवाले पांडवों का विश्वास आपको करना उचित नहीं है ।२८। आपका पुत्र सत्यपराक्रमी राजादुर्योधन वातिक नाम सिद्धों से बोला कि जैसे मैं अधर्मकी रीतिसे भीमसेन के हाथ से मारागया।२९। सो मैं स्वर्गवासी द्रोणाचार्य, कर्ण, शल्य, महात्मा वृषसेन, सौबलका पुत्र शकुनि महापराक्रमी जलसिन्ध, राजाभगदत्त, बड़े धनुर्धारी सोमदत्त, सिन्धका राजा जयद्रथ, उसीप्रकार आत्मा के समान दुश्शासनादिक भाई, पराक्रमी दुश्शासनका पुत्र और लक्ष्मण इन दोनों पुत्रों के और अन्य २ हजारों अपने शूरवीरों के पीछे ऐसे जाऊंगा जैसे कि अपने साथी समूह से पृथक् विदेशी जाता है । ३३ । मेरी बहिन दुश्शला भाइयों समेत अपने पतिको मराहुआ सुनकर रोती हुई कैसी महा दुःखी होगी । ३४ । मेरा वृद्ध पिता राजाधृतराष्ट्र पुत्र पौत्रोंकी स्त्रियों और गान्धारी समेत किसगति को पावेगा । ३५ । निश्चय करके मृतक पुत्र और

can be more virtuous than myself ? It was Fate that did not give me success in battle and would give my great wealth to another at my death; but I have secured the death of a kshatrya; who can be more virtuous than me? It was by Fate that I did not give up enmity: but I suffered no dishonourable defeat and received the death blow like one who is in a state of unconsciousness or has been poisoned. I was hit against rule. 26. Ashwathama, Kritvarma and Kripacharya must know this. They should never trust the Pandavas who have forsaken dharm." Then turning towards the sidhas who live upon air your son Duryodhan said, "Slain unjustly by Bhim, I shall follow Drona, *Karan*, Shalya, Vrishasen, Shakuni the son of Suval, brave Jalsandh, king *Bhagdatta*, Somdatta, Jayadrath the king of Sindh Dushasan and other brothers, Dushasan's son, Lakshman and thousands of my warriors to heaven like a stranger who is left behind by

जानाति चार्वाकः परिव्राड्वाग्विशारदः । करिष्यति महाभागो ध्रुवं सोपचितिं मम ॥ ३७ ॥ समन्तपञ्चके पुण्ये त्रिषु लोकेषु विश्रुते । अहं निधनमासाद्य लोकान् प्राप्स्यामि शाश्वतान् ॥ ३८ ॥ ततो जनसहस्राणि बाष्पपूर्णानि मारिष । प्रलापं नृपतेः श्रुत्वा व्यद्रवन्त दिशो दश ॥ ३९ ॥ ससागरवना घोरा पृथिवी सचराचरा । चचालाथ सनिर्ह्रादा दिशश्चैवाविलाभवन् ॥ ४० ॥ ते द्रोणपुत्रमासाद्य यथावृत्तं न्यवेदयन् । व्यवहारं गदायुद्धे पार्थिवस्य च पातनम् ॥ ४१ ॥ तदाख्याय ततः सर्वे द्रोणपुत्रस्य भारत । ध्यात्वाच सुचिरं कालं जग्मुरार्त्ता यथागतम् ॥ ४२ ॥

इति गदापर्वणि दुर्य्योधनविलापे चतुः षष्टोध्यायः ६४ ॥

पतिवाली लक्ष्मण की माता जोकि कल्याणी और बड़े नेत्रवाली है वहभी शीघ्रही नाश को पावेगी । ३६ । जो ब्राह्मणरूपधारी संन्यासी वार्त्तालाप में सावधान चार्वाकनाम राक्षस इसबात को जानेगा तो वह महाभाग अवश्य मेरा बदला पांडवों से लेगा । ३७ । मैं इस पवित्र और तीनोंलोकों में विख्यात स्यमन्तपंचकमें मृत्युको पाकर प्राचीन लोकोंको पाऊंगा ।३८। हे श्रेष्ठ इस के अनन्तर अश्रुओं से पूर्णनेत्र हजारों मनुष्य राजाके उस विलापको सुनकर दशों दिशाओं को भागे । ३९ । पृथ्वी समुद्र वन और जड़चैतन्य जीवोंसमेत घोररूप शब्दायमान होकर कॉपनेलगी और दिशा सबप्रभासे रहितहुई । ४० । उन्होंने अश्वत्थामा को पाकर जैसा वृत्तान्तथा सब वर्णनकिया हे भरतवंशी वह सब गदायुद्धके व्यवहारको और दुर्य्योधन के गिराने को अश्वत्थामाजी के सम्मुख वर्णन करके बड़ी देरतक ध्यान करके पीड़ावान होकर अपने २ स्थानोंको चलेगये ४२ ।

his countrymen. 33. *My sister Dushala* must be lamenting the death of her brothers and husband. To what state my old father Dhritrashtra, his sons' wives and Gandhari will be reduced? 36, Surely, Lakshman's mother of large eyes, whose husband and son are dead, will soon die. The rakshas Charvak, living in the disguise of a Sanyasi Brahman, will surely avenge my death. Having died at holy *Samantpanchak*, I am sure to get the ancient regions." Then thousands of people with tears in their eyes, ran away in all directions on hearing the lamentations of the prince. *The* earth with her forests and movable and immovable creation, shook with a rumbling noise and the directions became destitute of light. They informed Ashwatthama with what had happened. Having informed Ashwatthama with the events of the mace fighting, they stood *long* in meditation and then wended their ways." 42.

सञ्जय उवाच । वार्तिकानां सकाशात्तु श्रुत्वा दुर्योधनं हतम् । हतशिष्टास्ततो राजन् कौरवाणां महारथाः ॥ १ ॥ विनिर्भिन्नाः शितैर्बाणैर्गदातोमरशक्तिभिः । अश्वत्थामा कृपश्चैव कृतवर्मा च सात्वतः ॥ २ ॥ त्वरिता जवनैरश्वैरायोधनमुपागमन् । तत्रापश्यन्महात्मानं धार्त्तराष्ट्रं निपातितम् ॥ ३ ॥ प्रभग्नं वायुवेगेन महाशालं यथा वने । भूमौ विचेष्टमानं तं रुधिरेण समुक्षितम् ॥ ४ ॥ महागजमिवारण्ये व्याधेन विनिपातितम् । विवर्त्तमानं बहुशो रुधिरौघपरिप्लुतम् ॥ ५ ॥ यदृच्छया निपतितं चक्रमादित्यगोचरम् । महावातसमुत्थेन संशुष्कमिव सागरम् ॥ ६ ॥ पूर्णचन्द्रमिव व्योम्नि तुषारावृतमण्डलम् । रेणुध्वस्तं दीर्घभुजं मातङ्गसमविक्रमम् ॥ ७ ॥ वृतं भूतगणैर्घोरैः क्रव्यादैश्च समन्ततः । यथा धनं लिप्समानैर्भृत्यैर्नृपतिसत्तमम् ॥ ८ ॥ भ्रुकुटीकृतवक्त्रान्तं क्रोधादुद्वृत्तचक्षुषम् । सामर्षं तं नरव्याघ्रं व्याघ्रं निपतितं यथा ॥ ९ ॥ ते तं दृष्ट्वा महेष्वासा भूतले पातितं नृपम् । मोहमभ्यागमन् सर्वे कृपप्रभृतयो रथाः ॥ १० ॥ अव

अध्याय ६५ ।

संजय बोले हे राजा मरनेसे शेषबचे कौरवोंके तीनों महारथी अश्वत्थामा, कृपाचार्य और यादव कृतवर्मा दूतों के मुखसे राजा दुर्योधन को मरा, हुआ सुनकर शीघ्रगामी घोड़ोंकी सवारीसे बड़े शीघ्रही रणभूमि में आये वहां आकर गदा, तोमर, शक्ति और तेजबाणों से अत्यन्त घायल गिरायेहुये महात्मा दुर्योधनको ऐसे देखा जैसे कि बड़े वनमें वायु के वेगसे गिरेहुये बड़े शालके वृक्ष को देखते है उसको पृथ्वीपर तड़फता रुधिरसे लिप्त ऐसा देखा । ४ । जैसे कि वनमें व्याधके हाथसे गिरायेहुये बड़े हाथीको देखते हैं बहुतप्रकार से रूपान्तर रुधिरसमूह से लिप्त । ५ दैव इच्छासे गिरेहुये सूर्यकी किरणों में घूमनेवाले चक्र की समान बड़े वायु के वेगसे उठेहुये घोर समुद्रके तुल्य । ६ । आकाश में शीत युक्त मंडलवाले पूर्णचन्द्रमा के सदृश धूलसे लिप्त लम्बी भुजावाले हाथी के तुल्य पराक्रमी । ७ । चारों ओर भूत प्रेतों से व्याप्त और मांसभक्षी जीवसमूहों से युक्त देखा जैसे कि धनके अभिलाषी सेवकों से घिरेहुये उत्तम राजाको देखते हैं । ८ । टेढ़ी भृकुटीवाले क्रोधसे फैले नेत्र क्रोधमें पूर्ण नरोत्तमको ऐसे देखा जैसे कि गिरेहुये व्याघ्रको देखते हैं । ९ । उन कृपाचार्यआदिक सब रथियोंने उस बड़े धनुषधारी पृथ्वीपर गिरेहुये राजाको देखकर बड़े मोहको पाया । १० । रथोंसे

CHAPTER LXV

Sanjaya said, " The three remaining warriors of the Pandavas, Ashwathama, Kripacharya and Kritvarma the Yadav, having heard from the people about the fall of Duryodhan, came on swift horses in the field of battle. There they saw Duryodhan wounded by mace tomar, spear and swift arrows, like a huge sal tree struck down by the wind in a large forest. They saw him blood stained and smarting with pain, like a large elephant destroyed by hunters. With altered

तीर्य्य रथेभ्यश्च प्राद्रवन्नाजसन्निधौ । दुर्य्योधनञ्च सम्प्रेक्ष्य सर्वे भूमावुपाविशन् ।११।
ततो द्रौणिर्महाराज वाष्पपूर्णेक्षणः श्वसन् । उवाच भरतश्रेष्ठं सर्वं लोकेश्वरेश्वरम्
॥ १२ ॥ न नून विद्यते सत्यं मानुषे किञ्चिदेव हि । यत्र त्वं पुरुषव्याघ्र शेषे पांशुषु
रूषित ॥ १३ ॥ भूत्वा हि नृपतिः पूर्वं समाज्ञाप्य च मेदिनीम् । कथमेकोऽद्य राजेन्द्र
तिष्ठसे निर्ज्जने वने ॥ १४ ॥ दुःशासन न पश्यामि नापि कर्णं महारथम् । नापि तान्
सुहृदः सर्वान् किमिदं पुरुषर्षभ ॥ १५ ॥ दुःखं नूनं कृतान्तस्य गतिं ज्ञातुं कथञ्चन ।
लोकानाञ्च भवान् यत्र शेते पांशुषु रूषितः ॥ १६ ॥ एष मूर्द्धाभिषिक्तानामग्रेगत्वा
परन्तप । स तृणं ग्रसते पांशुं पश्य कालविपर्य्ययम् ॥१७। क्व तेतदमलं छत्रं व्यजनं
क्व च पार्थिव । सा च ते महती सेना क्व गता पार्थिवोत्तम ॥ १८ ॥ दुर्विज्ञेया गतिर्
नूनं कार्य्याणां कारणान्तरे । यद्वै लोकगुरुर्भूत्वा भवानेतां दशां गतः ॥ १९ ॥ असूया

उतरकर राजाके सम्मुखगये और दुर्योधनको देखकर सब पृथ्वीपर बैठगये। ११
हे महाराज इसके पीछे अश्रुओंसे पूर्ण नेत्र श्वासाओंको लेतेहुये अश्वत्थामाजी उस
सब राजाओंके महाराज भरतर्षभ दुर्योधनसे बोले। १२। हेपुरुषोत्तम निश्चयकरके
इस नरलोक में कोई सत्यबात वर्त्तमान नहीं है जहांकि आप सरीके लोग धूलमें
लिप्त होकर सोतेहैं। १३। हे राजेन्द्र तुम पूर्वकाल में राजा होकर पृथ्वीपर राज्य
शासनकरके अब कैसे निर्जन वनमें नियतहो। १४। मैं दुश्शासन महारथी कर्ण
और उन सब सुहृदों को भी नहीं देखताहूं हेभरतर्षभ यह क्या बातहै। १५।
निश्चय करके किसी दशामें भी काल और लोकों की गति जाननी कठिनहै जहां
कि धूलसे लिप्त आप सोतेहो। १६। यह शत्रुओंका तपानेवाला राजाओंके आगे
चलकर धूलको कठिनता से स्पर्श करताहै इस विपरीत समय को देखो। १७। हे
राजा वह तेरा निर्मलछत्र व्यजन और तेरी बड़ी भारी सेना कहाँगई।१८। निश्चय
करके शुभरूप होने पर परिणाम दुःख से जाननेके योग्यहै जो लोकगुरु होकर
आपने इस दशाको पाया। १९। सबइन्द्रसे ईर्षाकरनेवाले आपके कठिन दुःखको

appearance and blood stained body, he was like a wheel rolling in the rays of the sun, or like the ocean agitated by the wind, or like the cool full moon, dust-stained, with long arms, of the prowess of an elephant, surrounded by spirits, goblins and flesh-eating animals, like a king surrounded by avaricious attendants. 9 With contracted brow, and eyes dilated in anger, they found the prince like a fallen tiger. Kripacharya and other warriors were stupefied at the sight of the king 10 They came down from their cars and sat down beside him. Then with tears in his eyes Ashwathama thus addressed him
'Surely there are no respectable people left on the face of the earth when people like you lie in dust. Having ruled over a vast kingdom, how is it that you are here in a desolate wood. I donot see Dushasan, Karan and other friends of yours. 15 It is always difficult to know the course of Time, when we see you lying on dust. This destroyer

सर्वमर्त्येषु ध्रुवं श्रीश्चललक्ष्यते । मत्तो व्यसनं दृष्ट्वा शक्रविस्पर्द्धिनो भृशम् ॥ २० ॥
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा दुःखितस्य विशेषतः । उवाच राजन् पुत्रस्ते प्राप्तकालमिदं वचः
॥ २१ ॥ विमृज्य नेत्रे पाणिभ्यां शोकजं वाष्पमुत्सृजन् । कृपादीन् स तदा वीरान् सर्वा
नेव नराधिप ॥ २२ ॥ ईदृशो मर्त्यधर्मोऽयं धात्रा निर्द्दिष्ट उच्यते । विनाशः सर्वभूतानां
कालपर्य्यायमागतः ॥ २३ ॥ सोऽयं मां समनुप्राप्तः प्रत्यक्षं भवतां हि यः । पृथिवीं पाल
यित्वाहमेतां निष्ठामुपागतः ॥ २४ ॥ दिष्ट्या नाहं परावृत्तो युद्धे कस्याञ्चिदापदि ।
दिष्ट्याहं निहतः पापैश्छलेनैव विशेषतः ॥ २५ ॥ उत्साहश्च कृतो नित्यं मया दिष्ट्या
युयुत्सता । दिष्ट्या चास्मि हतो युद्धे निहतज्ञातिबान्धवः ॥ २६ ॥ दिष्ट्या च वोऽहं
पश्यामि मुक्तानस्माज्जनक्षयात् । स्वस्तियुक्तांश्च कल्यांश्च तन्मे प्रियमनुत्तमम् ॥२७॥
मा भवन्तोऽनुतप्यन्तां सौहृदान्निधनेन मे । यदि वेदाः प्रमाणं वो जिता लोका मयाक्षया

देखकर सब मनुष्यों में लक्ष्मी का रूप विनाशवान् दिखाई देताहै ।२०। संजय ने कहा हे राजा आपका पुत्र दुर्योधन उस महाखेदभरे अश्वत्थामाके उस वचनको सुनकर हाथों से अपने दोनों नेत्रोंको साफकरके शोकके आंसुओंको छोड़ता उन सब कृपचार्यादिक वीर से समयके अनुसार यह वचन बोला । २२ । कि यह ऐसालोक ईश्वरसे उपदेश कियाहुआ धर्म कहा जाताहै सब जीवोंके नाश ने विपरीतही विपरीत समयको प्राप्तकिया । २३ । वही अब मुझकोभी प्राप्तहुआ है जोकि आपलोगों के समक्षमें वर्त्तमानहै मैंने पृथ्वीका पोषणकरके इस दशाको पाया ।२४। मैं प्रारब्धसे किसी आपत्ति में भी रणसे पराङ्मुख नहीं हुआ देवैसे मैं प्रारब्धसे मुख्य करके पापियों के छलसे मारागयाहूं । २५ । युद्धका अभिलाषी होकर मैंने प्रारब्ध से उत्साह किया और ज्ञाति बान्धवों समेत युद्ध में मारागया । २६ । मैं प्रारब्धसे ही इस मनुष्यों के नाशसे रहित कल्याणयुक्त आपलोगों को देखताहूं यह मरण मेरा बड़ा प्रियतम अभीष्टहै । २७ । जो आपको वेदप्रमाण

of foes and leader of kings, could not bear the touch of dust; look at the vicissitude of Time. Where are your umbrella and large army gone, *Prince ? Surely the end is* always hidden; for being respected by the world you are reduced to this state. Being a rival to Indra, you have fallen in great trouble and from this we conclude that the prosperity of all men is transitory." Sanjaya said, " Having heard the pitiful words of *Ashwathama*, Duryodhan cleared his eyes of the tears of grief and thus addressed Kripacharya and others :—" The worldly books and the Vedas say that the times are changed at the destruction of creatures. The same is the case with me, as you see. Having *ruled over the earth, I am reduced to this strait. I never turned face* in any battle, yet I was hit by deceit. 25. *Being* desirous of fighting, I dared do the deed and was slain along with my warriors and

॥ २८ ॥ मन्यमानः प्रभावञ्च कृष्णस्यामिततेजसः । तेन न च्यावितश्चाहं क्षत्रधर्मात् स्वनुष्ठितात् ॥ २९ ॥ स मया समनुप्राप्तो नास्मि शोच्यः कथञ्चन । कृतं भवद्भिः सदृशमनुरूपमिवात्मनः । यतितं विजये नित्यं दैवन्तु दुरतिक्रमम् ॥ ३० ॥ एतावदुक्त्वा वचनं बाष्पव्याकुललोचनः । तूष्णींबभूव राजेन्द्र रुजासौ विह्वलो भृशम् ॥ ३१ ॥ तथा दृष्ट्वा तु राजानं बाष्पशोकसमन्वितः । द्रौणिः क्रोधेन जज्वाल यथा वह्निर्जगत्क्षये ॥ ३२ ॥ स तु क्रोधसमाविष्टः पाणौ पाणिं प्रपीड्य ह । बाष्पविह्वलया वाचा राजानमिदमब्रवीत् ॥ ३३ ॥ पिता मे निहतः क्षुद्रैः सुनृशंसेन कर्मणा । न तथा तेन तप्यामि तथा राजंस्त्वयाद्य वै ॥ ३४ ॥ शृणु चेदं वचो मह्यं सत्येन वदतः प्रभो । इष्टापूर्तेन दानेन धर्मेण सुकृतेन च ॥ ३५ ॥ अद्याहं सर्वपाञ्चालान् वासुदेवस्य पश्यतः । सर्वोपायैर्हि नेष्यामि प्रेतराजनिवेशनम् । अनुज्ञान्तु महाराज! भवान्मे दातुमर्हति ॥ ३७ ॥ इति श्रुत्वा तु वचनं द्रोणपुत्रस्य कौरवः । मनसः प्रीतिजननं कृपं वचनमब्रवीत् । ३८॥

है तो यहांपर आपलोग मित्रतासे मेरे मरनेमें दुःखीमतहो क्योंकि मैंने अविनाशी लोक विजय किये । २८ । मैं बड़े तेजस्वी श्रीकृष्णजी के प्रभाव को माननेवाला हुआ इस हेतुसे मैं अच्छी रीतिसे कियेहुये क्षत्रियधर्म से नहीं गिराया गया हूं । २९ । वह मैंने अच्छी रीतिसे प्राप्तकिया मैं कभी शोचके योग्य नहीं हूं आप लोगों ने अपने योग्य कर्म किये और सदैव विजय में उपाय किये परन्तु दैव दुःखसे उल्लंघनके योग्य है । ३० । हे राजेन्द्र इतना वचन कहकर आंसुओं से व्याकुलनेत्र अत्यन्त खेदयुक्त वह राजा दुर्योधन मौन होगया । ३१ । फिर अश्वत्थामाजी इसप्रकार राजाको शोक और अश्रुओं से संयुक्त देखकर क्रोधमें ऐसे प्रज्वलित हुये जैसे कि प्रलयकाल में सृष्टि के नाश करने को अग्नि प्रज्वलित होती है । ३२ । उसक्रोध भरेने हाथों को मीड़कर अश्रुओं से नेत्रोंको भरकरवड़े आकुलित वचनोंके द्वारा राजा से यह वचन कहा । ३३ । कि नीचोंके अत्यन्त निर्दयकर्म से मेरापिता मारागया उससे ऐसा दुःख नहीं पाताहूं जैसे कि अब इस तेरी दशाको देखकर क्लेशित होताहूं हे प्रभु कुछ सत्यता पूर्वक कहनेवाले और कूप बावी तड़ाग यज्ञ दान धर्म और अपने पुण्यकी शपथखाने वाले के इस वचन को सुनो कि अब मैं सब उपायों से सब पांचालों को वासुदेवजी के देखते हुये यमलोक में पहुंचाऊंगा हे महाराज आप मुझे आज्ञा देने को योग्यहो

friends. It is fortunate that I see you alive and am happy at my death bed. You should not feel sorrow for me, if you believe the Vedas, for I have won the eternal regions." On account of glorious *Krishn*, I was unfairly hit I am well satisfied and am not worthy of being sorry for. You have done your part well and tried to conquer, Fate is insurpassable." 30. Having said this, with eyes full of tears in the excess of grief, he became silent. Seeing him so moved with grief, Ashwathama was enraged like the fire of pralaya. He rubbed his hands and with eyes full of tears, said to the king, "My father was killed by the cruel deeds of those wretches, but I felt no grief, for, him as I do at the sight of your distress I swear by my good deeds,

आचार्य्यं शीघ्र कलसं जलपूर्णं समानय । ३७ तद्वचनमाज्ञाय राज्ञो ब्राह्मणस त्तमः। कलसंपूर्णमादाय राज्ञोन्तिकमुपागमत्॥३९॥तमब्रवीन्महाराज पुत्रस्तवविशाम्पते ममाज्ञया द्विजश्रेष्ठ द्रोणपुत्रोऽभिषिच्यताम् । सैन्यापत्येन भद्रन्ते मम चेदिच्छसि प्रियम् ४० ॥ राज्ञो नियोगाद्योद्धव्यं ब्राह्मणेन विशेषतः । वर्तता क्षत्रधर्मेण ह्येवं धर्मविदो विदुः ॥ ४१ ॥ राज्ञस्तु वचनं श्रुत्वा कृपः शारद्वतस्ततः । द्रौणिं राज्ञो नियोगेन सेना पत्येऽभ्यषेचयत् ॥ ४२ ॥ सोऽभिषिक्तो महाराज परिष्वज्य नृपोत्तमम् । प्रययौ सिंहनादेन दिशः सर्वा निनादयन् ॥ ४३ ॥ दुर्योधनोऽपि राजेन्द्र शोणितौघपरिप्लुतः । तां निशां प्रतिपेदेथ सर्वभूतभयावहाम् ॥ ४४ ॥ अपक्रम्य तु ते तूर्णं तस्मादायोधनान्नृप । शोकसंविग्नमनसश्चिन्ताध्यानपराभवन्॥४५॥समाप्तं गदायुद्धपर्व।समाप्तञ्च शल्यपर्व।

। ३७ । कौरवराज दुर्योधन अश्वत्थामा के इस वचनको जो कि मन के हर्षका बढ़ाने वाला था सुनकर कृपाचार्य्य से यह बोला हे आचार्य जी शीघ्रही जलपूर्ण कलश को लाओ । ३८ । वह ब्राह्मणों में श्रेष्ठ आचार्यजी राजा के उस वचनको जानकर पूर्ण कलश को लेकर राजा के पासगये । ३९ । तब हेमहाराज राजा धृतराष्ट्र आपका पुत्र आचार्यजी से बोला कि हे ब्राह्मण श्रेष्ठ आपका कल्याण होय जो आप मेरा हित चाहतेहो तो मेरी आज्ञा से अश्वत्थामा को सेनापति के अधिकार पर अभिषेक कराओ । ४० । मुख्यकर क्षत्रियधर्म्म पर कर्म करनेवाले ब्राह्मण को राजाकी आज्ञा से लड़ना चाहिये यह धर्मज्ञ लोगोंका कहाहुआ और जानाहुआ है । ४१ । इस के पीछे शारद्वत कृपाचार्य्य ने राजा के वचन को सुनकर उसकी आज्ञा से अश्वत्थामा को सेनापति के अधि कारपर अभिषेक कराया । ४२ । हे महाराज वह अभिषेक कियाहुआ अश्वत्थामा उस श्रेष्ठ राजा से मिलकर सब दिशाओं को सिंहनाद से शब्दायमान करता चला । ४३ । इसके अनन्तर रुधिरसे लिप्त दुर्योधनने भी उस सब जीवोंकी भय कारिणी रात्रिको मासकिया । ४४ । और वह तीनों महारथी भी रणभूमिसे हटकर शोकसे व्याकुलचित्त चिन्तायुक्त होकर ध्यान में डूबगये ४५ ॥

that I shall slay the Panchals in the presence of Vasudev, and I ask ... to do so." Hearing the cheerful words of Ashwa- ... Kripacharya, "Bring a pitcher full of ... the king and brought water near him. Then your son ordered him to install Ashwathama on the post of the commander in chief, with a sprinkling of water 40 "For" said he; "A brahman in particular should fight by the order of the king. This is the opinion of wise men." Then Kripacharya installed Ashwathama on the post of the commander as the king had directed, Thus installed Ashwathama embraced the king and went on filling the directions with his war cry. Duryodhan, stained in blood, remained there during that night, while the three warriors were plunged in grief and betook themselves rather away from the field of battle."45.

महाभारत

का

सौप्तिक व स्त्री पर्व

श्रीवेदव्यास रचित संस्कृतमूल

॥ हिन्दी और अंग्रेजी अनुवादसहित ॥

THE MAHABHARAT

SAUPTIKPARV

The Sanskrit text of Maharshi Vyas
with complete English and Hindi translations



जिसको

रामकृष्ण कम्पनी मुरादाबाद ने



"तत्त्वप्रभाकर प्रेस में" छपकर प्रकाशित किया।

Published by
Ram Krishna & Co. of Moradabad

पुस्तक मिलने का पता—
रामकृष्ण कम्पनी
मुरादाबाद।

To be had of the publisher
Ram Krishna & Co.
Moradabad.

सूचीपत्र शल्य व गदा पर्व

Index to Shalya and Gada Parv

कर्णपर्व का सूचीपत्र

Index to Karan Parv





महाभारत

सौप्तिक पर्व

नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वतीञ्चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

सञ्जय उवाच । ततस्ते सहिता वीराः प्रयाता दक्षिणामुखाः । उपास्तमनवेलायां शिबिराभ्याशमागताः ॥१॥ विमुच्य वाहांस्त्वरिता भीताः समभवंस्तदा । गहनं देशमासाद्य प्रच्छन्ना न्यविशन्त ते ॥ २ ॥ सेनानिवेशमभितो नातिदूरमवस्थिताः । निकृत्ता निशितैः शस्त्रैः समन्तात् क्षतविक्षताः । दीर्घमुष्णञ्च निःश्वस्य पाण्डवानेवाचिन्तयन् ॥ ३ ॥ श्रुत्वा च निनदं घोरं पाण्डवानां जयैषिणाम् अनुसारभयाद्भीताः प्राङ्मुखाः प्राद्रवन् पुनः ॥ ४ ॥ ते मुहूर्त्तं ततो गत्वा श्रान्तवाहाः पिपासिताः । नामृष्यन्त महे

अध्याय १ ॥

श्रीनारायण नरोंमें उत्तम नरको और सरस्वती देवीको नमस्कार करके जय नाम महाभारत इतिहासको वर्णन करताहूं सञ्जयबोलेइसके पीछे वहवीर एकसाथही दक्षिण ओरको चले और सूर्य्यास्तके समय डेरोंके पास आये ।१। तब वहशीघ्रही रथोंको छोड़कर भयभीत हुये और घनदेशको पाकर गुप्त निवासी हुये ।२। अपनी सेना के निवासस्थान से कुछ थोड़ेही अन्तरपर नियत हुये तेजशस्त्रोंसे छूटेअंग चारोंओर से घायल उन वीरोंने लम्बी और उष्णश्वासा लेकर पांडवोंकी चिन्ताकरी ।३। फिर विजयाभिलाषी पांडवों के घोर शब्दको सुनकरपीछा करनेके भयसे भयभीत होकर पीछेकी ओरको चलदिये ।४। वह सब एकमुहूर्त चलकर तृषार्त्त और थकीसवारी वाले सह न सके वह बड़े धनुषधारी क्रोध और अशान्तताके आधीन

SAUPTIK PARV II.

CHAPTER I.

Having bowed down to Narayan, to the best of males and to, Saraswati, let us speak of the history of the Victory. Sanjaya said: "Then the warriors went together southwards and approached the camp at sunset. They came down from their cars in terror and entered a dense forest a short distance from their camp. With wounded bodies and deep sighs, they thought of the Pandavas. Then hearing the dreadful uproar of the victorious Pandavas, they receded further

स्वासा. क्रोधामर्षवशङ्गताः । राज्ञो वधेन सन्तप्ता मुहूर्त्तं समवस्थिताः ॥५॥ धृतराष्ट्र उवाच । अश्रद्धेयमिदं कर्म कृतं भीमेन सञ्जय । यत् स नागायुतप्राणः पुत्रो मम निपातित. ॥ ६ ॥ अवध्यः सर्वभूतानां वज्रसंहननो युवा । पाण्डवैः समरे पुत्रो निहतो मम सञ्जय ॥ ७ ॥ न दिष्टमभ्यतिक्रान्तुं शक्यं गावल्गणे नरैः । यत् समेत्य रणे पार्थैः पुत्रो मम निपातितः ॥ ८ ॥ अद्रिसारमयं नूनं हृदयं मम सञ्जय । हतं पुत्रशतं श्रुत्वा यन्न दीर्णं सहस्रधा ॥ ९ ॥ कथं हि वृद्धमिथुनं हतपुत्रं भविष्यति । न ह्यहं पाण्डवेयस्य विषये वस्तुमुत्सहे ॥१०॥ कथं राज्ञः पिता भूत्वा स्वयं राजा च सञ्जय प्रेष्यभूत. प्रवर्त्तेयं पाण्डवेयस्य शासनात् ॥११॥ आज्ञाप्य पृथिवीं सर्वां स्थित्वा मूर्द्धनि सञ्जय । कथमद्य भविष्यामि प्रेष्यभूतो दुरन्तकृत् ॥ १२ ॥ कथं भीमस्य वाक्यानि श्रोतुं शक्ष्यामि सञ्जय । येन पुत्रशतं पूर्णमेकेन निहतं मम ॥ १३ ॥ कृतं सत्यं वच

और राजा के मारेजाने से दुःखी चित्त होकर एक मुहूर्त्ततक नियत हुये । ५ । धृतराष्ट्र बोले हे संजय भीमसेनने यह कर्म श्रद्धाके अयोग्य किया जो दसदश हजार हाथीके समान मेरे पुत्रको मारा । ६ । हे संजय वह मेरापुत्र जो कि सब जीवोंसे अवध्य वज्रके समान दृढ शरीरवालाथा युद्धमें पांडवोंके हाथसेमारागया।७। हे गोल्गणके पुत्र संजय मनुष्यों से प्रारब्ध उल्लंघन करनेके योग्य नहीं है जो मेरा पुत्र पांडवों के सन्मुख होकर मारागया । ८ । हे संजय निश्चय करके मेरा हृदय पत्थर है जो सौपुत्रों को मृतक सुनकर भी विदीर्ण नहीं होता । ९ । मृतक पुत्रवाला वृद्धों का मिथुन किसप्रकार से रहेगा मैं पांडवों के देश में निवास करने को विचार नहीं करताहूं । १० । हे संजय मैं राजाका पिता आप राजा होकर पांडवोंका आज्ञावर्त्ती होकर सेवकके समान कैसे कर्मकरूंगा । ११ । हेसंजय पृथ्वी पर राज्यशासन करके और सब राजाओं के मस्तकपर नियतहोकर कैसे उसकी आज्ञाका पालनकरूंगा जितने कि मेरे पुत्रोंका एक पूरा सैकड़ा मारडाला । १२ । हे संजय वचन को न करनेवाले उस मेरे पुत्रने महात्मा विदुरजी के वचनको सत्यकिया है संजय कठिन नाश करनेवालेका मैं कैसे आज्ञावर्त्तीहूंगा और किस

for fear of chase. But they could not go very far with their feeble bodies and tired beasts, and had to stop again. The great warriors, enraged, dissatisfied and sorrowful at the fall of their prince, staid there for a while." Dhritarashtra said, "It grieves me to hear that Bhim slew my son who was like a myriad of elephants. 6 He was unslayable by others, with body hard as vajra, yet he was slain by the Pandavas. Fate is surely insurmountable, for my son fell down before the Pandavas. Surely my heart is hard as it does not break on hearing the news of the death of my hundred sons How can an old pair live without sons! I donot think that I shall live with the Pandavas. Being a king and father of a king, how can I obey the Pandavas? 11. Having ruled over kings and kingdom, I cannot obey him who destroyed my hundred sons My son has proved the prediction of Vidur

स्तस्य विदुरस्य महात्मनः । अकुर्वता वचस्तेन मम पुत्रेण सञ्जय ॥ १४ ॥ अधर्मेण हते तात पुत्रे दुर्योधने मम । कृतवर्मा कृपो द्रौणिः किमकुर्वत सञ्जय ॥ १५ ॥ सञ्जय उवाच । गत्वा तु तावका राजन्नातिदूरमवस्थिताः । अपश्यन्त वनं घोरं नानाद्रुमलताधृतम् ॥ १६ ॥ ते मुहूर्त्तन्तु विश्रम्य लब्धतोयैर्हयोत्तमैः । सूर्यास्तमनवेलायां समासेदुर्महद्वनम् ॥ १७ ॥ नानामृगगणैर्जुष्टं नानापक्षिगणावृतम् । नानाद्रुमलताच्छन्नं नानाव्यालनिषेवितम् ॥ १८ ॥ नानातोयैः समाकीर्णं नानापुष्पोपशोभितम् । पद्मिनीशतसंछन्नं नीलोत्पलसमायुतम् ॥ १९ ॥ प्रविश्य तद्वनं घोरं वीक्षमाणाः समन्ततः । शाखासहस्रसंछन्नं न्यग्रोधं ददृशुस्ततः ॥ १० ॥ उपेत्य तु तदा राजन् न्यग्रोधं ते महारथाः । ददृशुर्द्विपदां श्रेष्ठा श्रेष्ठं ते वै वनस्पतिम् ॥ २१॥ तेऽवतीर्य रथेभ्यश्च विप्रमुच्य च वाजिनः । उपस्पृश्य यथान्यायं सन्ध्यामन्वासत प्रभो ॥ २२ ॥ ततोऽस्तं पर्वतश्रेष्ठ

प्रकार से भीमसेनके वचन सुननेको समर्थहूंगा । १४ । हे संजय अधर्म से मेरे पुत्र दुर्योधनके मरनेपर कृतवर्मा कृपाचार्य और अश्वत्थामाने क्या किया । १५ । सञ्जय बोले हे राजा आपके वीर थोड़ीदूर जाकर नियतहुये और नानाप्रकार के वृक्ष लताओंसे संयुक्त घोरवनको देखा ।१६। उन्होंने जल पीनेवाले उत्तम घोड़ों समेत एक मुहूर्त्त विश्रामकरके सूर्यास्तके समय एक ऐसे वनको पाया । १७ । जो कि नानाप्रकार के मृगसमूहोंसे सेवित भांतिभांतिके पक्षीगणोंसे व्याप्त और बहुत प्रकारके वृक्ष लतादिकोंसे भराहुआ बहुत भांतिके सर्पोंसे सेवित ।१८। नानाप्रकार के जलों से युक्त बहुत भेदके पुष्पोंसे शोभित सैकड़ों कमलनियों से पूर्ण और नीले कमलों से संयुक्तथा । १९ । इसकेपीछे चारोंओरको देखते उन वीरोंने उस तत्र वनमें प्रवेश करके हजारों शाखाओं से युक्त वटके वृक्षको देखा ।२०। हे राजा फिर उन नरोत्तम महारथियों ने वटवृक्षको पाकर उस उत्तम वृक्ष के नीचे जाकर अपने२ रथों से उतरकर घोड़ोंको छोड़ा और न्यायके अनुसार स्नानादिक करके वहसब अपनी २ संध्यावंदन में प्रवृत्तहुये । २२ । इस के पीछे पर्वतों में उत्तम

by his waywardness. How can I obey that great destroyer? How shall I be able to hear Bhim's voice? What did Kritvarma Kripacharya and Ashwathama do, when my son was unjustly slain?" 15 Sanjaya said, " Your warriors stood at a short distance and saw the forest of large trees and creepers. They watered their horses and having rested themselves for a while, they found the evening come upon them in a part of the forest abounding in deer, birds, trees, creepers, serpents, water, flowers and lotus lakes. Wandering in various directions they came under a large banyan tree. 20. They came down from their cars and left their horses. They made ablutions and performed evening service. In the meantime the sun disappeared and the night, nourisher of all beings, prevailed. "It was a stari

मन्नप्राप्ते दिवाकरे। सर्वस्य जगतो धात्री शर्वरी समपद्यत ॥ २३ ॥ ग्रहनक्षत्रताराभिः प्रकीर्णाभिरलंकृतम् । नभोंऽशुकमिवाभाति प्रेक्षणीयं समन्ततः ॥ २४ ॥ इच्छया ते प्रव लगन्ति ये सत्वा रात्रिचारिणः । दिवाचराश्च ये सत्वास्ते निद्रावशमागताः ॥ २५ ॥ रात्रिञ्चराणां सत्वानां निर्घोषोऽभूत् सुदारुणः । क्रव्यादाश्च प्रमुदिता घोरा प्राप्ता च शर्वरी ॥ २६ ॥ तस्मिन्रात्रिमुखे घोरे दुःखशोकसमन्विताः । कृतवर्मा कृपो द्रौणिरुपो पविविशुः समम् ॥ २७ ॥ तत्रोपविष्टाः शोचन्तो न्यग्रोधस्य समीपतः । तमेवार्थमति क्रान्तं कुरुपाण्डवयोः क्षयम् ॥ २८ ॥ निद्रया च परीताङ्गा निषेदुर्धरणीतले । श्रमेण सुदृढं युक्ता विक्षता विविधैः शरैः ॥ २९ ॥ ततो निद्रावशं प्राप्तौ कृपभोजौ महारथौ । सुखोचितावदुःखार्हौ निषण्णौ धरणीतले ॥ ३० ॥ तौ तु सुप्तौ महाराज श्रमशोकसमन्वितौ । महार्हशयनोपेतौ भूमावेव ह्यनाथवत् ॥३१॥ क्रोधामर्षवशं प्राप्तो द्रोणपुत्रस्तु भारत । नैव स्म स जगामाथ निद्रां सर्प इव श्वसन् ॥ ३२ ॥ न लेभे स तु निद्रां वै

अस्ताचल में सूर्य्य के पहुंचने पर सब जगत् की धात्री रात्रि वर्त्तमान हुई पूर्ण ग्रह नक्षत्र और ताराओं अलंकृत चारोंओर से दर्शनीय आकाश स्वर्ण बिन्दुओं से जटित वस्त्रके समान शोभायमान हुआ । २४ । जो रात्रि में घूमनेवाले जीवहैं वहसब नींद के स्वाधीन वर्त्तमान हुये फिर रात्रि में घूमनेवाले जीवों के शब्द भयानकहुये मांसभक्षी राक्षस अत्यन्त प्रसन्न हुये और घोररात्रि वर्त्तमानहुई । २६ । रात्रिके उसघोर मुखमें दुःखशोकसे संयुक्त कृतवर्मा कृपाचार्य्य और अश्वत्थामा बराबर समीप बैठे उस वटके सम्मुख कौरव और पाण्डवों के होनेवाले नाश को शोचते । २८ नींदसे पूर्णशरीर और परिश्रमसे अत्यन्त संयुक्त नानाप्रकारके बाणों से घायल पृथ्वीपर बैठ गये । २९ । इसकेपीछे दुःखके अयोग्य और सुखके योग्य पृथ्वीपर बैठेहुये महारथी कृतवर्मा और कृपाचार्य नींदके वशीभूतहुये ।३०। हे महाराज थकावट और शोकसेयुक्त पूर्वसमयमें बहुमूल्य शयनोंपर सोनेवाले वह दोनों अनाथोंके समान पृथ्वीपर सोगये । ३१ । हे भरतवंशी क्रोध और अशान्ती में वर्त्तमान और सर्पोंके समान श्वासलेते अश्वत्थामाजी ने निद्राको नहींपाया ३२ शोकसे ज्वलितरूप उस वीरने निद्राको नहींपाया तबउस महाबाहुने उस घोरदर्शन

night and the sky looked as if spangled with gold dots. Sleep prevailed over creatures and the night rovers made a hideous noise. Carnivorous rakshasas were glad at the prospect of that dreadful dark night. 26. Merged in grief and sorrow, Kritvarma Kripacharya and Ashwathama sat together Thinking of the great destruction of the Kauravas and Pandavas, tired and sleepy, they sat wounded with arrows. Kritvarma and Kripacharya, unaccustomed to bear such hardships, lay on the ground 30. Full of grief and tired, the two great warriors, accustomed to sleep on precious beds, slept on bare earth like helpless ones. Enraged and dissatisfied, sighing like serpents,

दह्यमानो हि मन्युना । वीक्षाञ्चक्रे महाबाहुस्तद्वनं घोरदर्शनम् ॥ ३३ ॥ वीक्षमाणो वनोद्देशं नानासत्त्वैर्निषेवितम् । अपश्यत महाबाहुर्न्यग्रोधं वायसैर्वृतम् ॥ ३४ ॥ तत्र काकसहस्राणि तां निशां पर्यणामयन् । सुखं स्वपन्ति कौरव्य पृथक् पृथगुपाश्रयाः ॥ ३५ ॥ सुप्तेषु तेषु काकेषु विस्रब्धेषु समन्ततः । सोऽपश्यत् सहसायान्तमुलूकं घोरदर्शनम् ॥ ३६ ॥ महास्वनं महाकायं हर्य्यक्षं बभ्रुपिङ्गलम् । सुदीर्घघोणानखरं सुपर्णमिव वेगितम् ॥ ३७ ॥ सोऽथ शब्दं मृदुं कृत्वा लीयमान इवाण्डजः । न्यग्रोधस्य ततः शाखां प्रार्थयामास भारत ॥ ३८ ॥ सन्निपत्य तु शाखायां न्यग्रोधस्य विहङ्गमः । सुप्तान् जघान सुबहून् वायसान्वायसान्तकः ॥ ३९ ॥ केषाञ्चिदच्छिनत् पक्षान् शिरांसि च चकर्त्त ह । चरणांश्चैव केषाञ्चिद्बभञ्ज चरणायुधः । क्षणेनाहन्त्य बलवान् येऽस्य दृष्टिपथे स्थिताः ॥ ४० ॥ तेषां शरीरावयवैः शरीरैश्च विशाम्पते । न्यग्रोधमण्डलं सर्वं

वनकोदेखा । ३३ । कि नानाप्रकार के जीवों से सेवित वनके कोणको देखते महाबाहुने वटके वृक्षको काकों से संयुक्त देखा । ३४ । हे कौरव उस वृक्षपर हजारों काकोंने रात्रिमें निवास किया और भयकुर निवासी होकर सुख से निद्रा युक्तहुये । ३५ । चारोंओरसे उन विश्रब्ध काकोंके सोजानेपर उन अश्वत्थामाजी ने अकस्मात् आनेवाले घोरदर्शन उलूकको देखा । ३६ । जो कि बड़ाशब्द बड़ा शरीर पीतनेत्र पिङ्गलवर्ण बहुत लम्बे नख और ऊंची नाक रखनेवाला गरुड़ के समान तीव्रगामी था । ३७ । हे भरतवंशी उस गुप्त आनेवाले के समान पक्षी ने मृदुशब्द करके वटकी शाखाको चाहा । ३८ । काकोंके कालरूप उसपक्षीने वट वृक्षकी शाखापर गिरकर मिलनेवाले बहुत से काकोंको मारा । ३९ । चरणरूपी शस्त्रधारीने कितनोंही के पक्षसमेत शिरोंकोकाटा और कितनोंहीके चरणोंको काटा उस बलवान्ने अपने सम्मुख दीखनेवाले अनेक काकों को एक क्षणमात्र में काटा । ४० । हे राजा उनके शरीरों के अंग और शरीरों से वटके वृक्षका मंडल सब ओरसे ढकगया । ४१ । इसके पीछे वह उलूक उनकाकोंको मारकर प्रसन्नहुआ वह शत्रुओंका मारनेवाला इच्छाके समान शत्रुओं को मारकर प्रसन्नहुआ । ४२ ।

Ashwathama could find no sleep That brave warrior did not sleep for grief and looked on at the dreadful forest. Looking at the various creatures of the forest, he saw a great number of crows on the banyan tree sleeping soundly and composedly in their nests. 35, While the crows were thus sleeping, Ashwathama saw an ill omened owl creeping towards them, With ominous sound, large, yellow body, yellow eyes, long claws and hooked beak, it flew fast like a garur. It flew softly and stealthily to a branch of the banyan tree and killed many crows. Having claws for weapons, it cut off the heads and wings of some and feet of others. It destroyed many of the crows in a moment. 40. The parts of their bodies covered the circular ground beneath

सञ्छिन्नं सर्वतोऽकरोत् ॥ ४१ ॥ हत्वा तु तान्वायसान्स कौशिको मुदितोऽभवत्। प्रतिकृत्य यथाकामं शत्रूणां शत्रुसूदनः ॥ ४२ ॥ तद्दृष्ट्वा सोपधं कर्म कौशिकेन कृतं निशि। तद्भावकृतसंकल्पो द्रौणिरेकोऽन्वचिन्तयत् ॥ ४३ ॥ उपदेशः कृतोऽनेन पक्षिणा मम संयुगे। शत्रूणां क्षपणे युक्तः प्राप्तकालश्च मे मतः ॥ ४४ ॥ नाद्य शक्या मया हन्तुं पाण्डवा जितकाशिनः। बलवन्तः कृतोत्साहा लब्धलक्षाः प्रहारिणः ॥ ४५ ॥ राज्ञः सकाशे तेषां तु प्रतिज्ञातो वधो मया। पतङ्गाग्निसमां वृत्तिमास्थायात्मविनाशिनीम् ॥ ४६ ॥ न्यायतो युध्यमानस्य प्राणत्यागो न संशयः। छद्मना तु भवेत्सिद्धिः शत्रूणां च क्षयो महान् ॥ ४७ ॥ तत्र संशयितादर्थाद्योऽर्थो निःसंशयो भवेत्। तं जना बहु मन्यन्ते ये च शास्त्रविशारदाः ॥ ४८ ॥ यच्चाप्यत्र भवेद्वाच्यं गर्हितं लोकनिन्दितम्। कर्त्तव्यं तन्मनुष्येण क्षत्रधर्मेण वर्त्तता ॥ ४९ ॥ निन्दितानि च

रात्रिमें उलूकके कियेहुये उस छलयुक्त कर्मको देखकर उस छलमें संकल्पकरनेवाले अकेले अश्वत्थामाजीने विचारकिया। ४३। कि इस पक्षीने युद्धमें मुझको उपदेश कियाहै मेरे मतसे शत्रुओंका नाशकारी समय वर्त्तमानहुआ। ४४। अब विजयसे शोभापानेवाले पराक्रमी कृतोत्साह लक्ष्यके प्राप्त करनेवाले और प्रहारकरनेवाले पाण्डव मेरे हाथ से मारने के योग्य नहीं हैं। ४५। औरमैंने राजाके सम्मुख उन सबके मारनेकी प्रतिज्ञाकरीहै पतंग और अग्निकेसमान अपने नाशकरनेवाली वृत्ति में प्रवृत्तहोकर युद्ध न्याय से लड़ने वालेका निश्चय प्राणत्यागहोगा और छलकरके बड़ी सिद्धिसमेत शत्रुओं का बड़ानाशहोगा। ४७। इसहेतुसेजो संशयात्मक अर्थके निस्संशयात्मक अर्थहोना योग्यहै जो विद्यावान् मनुष्यहैं वह इसको बहुत मानते हैं। ४८। ऐसे स्थानपर जो वचनचाहै गर्हित और लोकनिन्दितभी होवैं वह क्षत्रियधर्ममें प्रवृत्तहोनेवाले मनुष्यको अवश्यकरना योग्यहै ४९। अशुद्ध अन्तःकरणवाले पाण्डवोंने ऐसे छलसे भरेहुये कर्मकिये जोकि गर्हित और पदपदपर निन्दित हैं इस विषय में पूर्व समयमें न्यायके देखनेवाले धर्मका विचारकरनेवाले मुख्यबातके ज्ञाता लोगोंके कहेहुये मुख्य प्रयोजन रखनेवाले श्लोक सुनेजाते हैं। ५१। शत्रुओं के थकजाने पृथक् होने और भोजनकरने चलेजाने और प्रवेशहोनेपर शत्रुकी सेनाको मारना चाहिये। ५२। जो सेना आधीरात्रिकी निद्राकेसमय निद्रासे पीड़ित और

---

the tree. The owl was much pleased at the destruction of its enemies, the crows. Seeing the deceitful work of the owl at night, Ashwatha ma thought within himself " The bird has taught me. I think the death of the enemies is not far off. The victorious Pandavas cannot be slain by open warfare and I have made a vow to the king to slay them My case will surely be like that of an insect falling in fire, if I fight honestly with them I can destroy them in great numbers by deceit and wise men will not find fault with me. I must act upon pernicious proverbs. The deceitful Pandavas have performed various wicked deeds and we have many verses to the effect that we should slay enemies and their warriors when they are tired, dispersed engaged in eating

सर्वाणि कुत्सितानि च वदे । सोपधानि कृतान्येन पाण्डवैरकृतात्मभिः। ५० अस्मिन्नर्थे पुरा गीता श्रूयन्ते धर्मचिन्तकैः । श्लोका न्यायमवेक्षद्भिस्तत्त्वार्थास्तत्त्वदर्शिभिः ॥५१॥ परिश्रान्ते विदीर्णे वा भुञ्जाने चापि शत्रुभिः। प्रस्थाने वा प्रवेशे वा प्रहर्त्तव्यं रिपोर्बलम् ॥ ५२ ॥ निद्रार्त्तमर्द्धरात्रे च तथा नष्टप्रणायकम् । भिन्नयोधं बलं यच्च द्विधा युक्तञ्च यद्भवेत् ॥ ५३ ॥ इत्येव निश्चयं चक्रे सुप्तानां निशि मारणे। पाण्डूनां सह पाञ्चालैर्द्रोणपुत्रः प्रतापवान् ॥ ५४ ॥ स क्रूरां मतिमास्थाय विनिश्चित्य मुहुर्मुहुः। सुप्तौ प्राबोधयत्तौ तु मातुलं भोजमेव च ॥५५। तौ प्रबुद्धौ महात्मानौ कृपभोजौ महाबलौ । नोत्तरं प्रतिपद्येतां तत्र युक्तं ह्रिया वृतौ ॥ ५६ ॥ स मुहूर्त्तमिव ध्यात्वा बाष्पविह्वलमब्रवीत् । हतो दुर्य्योधनो राजा एकवीरो महाबलः । यस्यार्थे वैरमस्माभिरासक्तं पाण्डवैः सह ॥५७॥ एकाकी बहुभिः क्षुद्रैः राहवे शुद्धविक्रमः । पातितो भीमसेनेन एकादशचमूपतिः ॥ ५८ ॥ वृकोदरेण क्षुद्रेण सुनृशंसमिदं कृतम् । मूर्द्धाभिषिक्तस्य शिरः पादेन परिमृद्नता ॥ ५९ ॥ विनदन्ति च पाञ्चालाः क्ष्वेडन्ति च हसन्ति

नाश युक्त प्रधान पृथक् २ शूरोंवाली और दोभाग होनेवाली होय । ५३ । उसपर प्रहार करना चाहिये प्रतापवान अश्वत्थामाने इसप्रकार पांचालों समेत रात्रिके समय सोतेहुये पांडवों के मारने का निश्चय किया । ५४ । उसने निर्दयी बुद्धि में नियतहोकर बारम्बार निश्चयकरके अपने मामा और और भोजवंशी कृतवर्म्मा इन दोनों सोनेवालोंको जगाया । ५५ । तब उनजगनेवाले महात्मामहाबली लज्जायुक्त कृपाचार्य्य और कृतवर्म्माने एकमुहूर्त्तभर ध्यानकरके आंशुओंसे व्याकुल नेत्रहोकर यह वचनकहा कि बड़बड़ा बलवान एकवीर राजा दुर्योधन मारागया जिसके हेतुसे हमारी शत्रुता पाण्डवों के साथ हुई । ५७ । युद्धमें बहुत नीचों समेत ग्यारह अक्षौहिणी सेनाका स्वामी बड़े पवित्र पराक्रम वाला अकेला दुर्योधन भीमसेनके हाथ मारागया । ५८ । महाराजाधिराजका शिर जो पैरों से मर्दनकिया यह नीच भीमसेनने बड़ा निर्दय कर्म्मकिया । ५९ । पांचाल देशी गर्जते हैं क्रीड़ा करते हैं हँसते हैं सैकड़ों शङ्खों को बजातेहैं और प्रसन्नचित्त दुन्दभियों को भी

and walking or otherwise at a disadvantage. One may attack an enemy at midnight or when they are divided "Thus glorious Ashwathama thought of slaying the Pandavas and with this view awakened his uncle and Kritvarma. 55. The two heroes on awakening shed tears and said after meditation—" Brave Duryodhan for whom we made the Pandavas our enemy, is slain The lord of eleven akshauhinis has fallen in fighting with Bhim He did a wicked deed in touching the king's head with his feet. The Panchals are exulting, laughing and sounding their conchs and drums The sounds of their musical instruments fill the air. We hear the neighing of their horses, the grunt of their elephants and the leonine roars of

च । धमन्ति शङ्खान् शतशो हृष्टा घ्नन्ति च दुन्दुभीन् ॥ ६०॥ वादित्रघोषस्तुमुलो विमिश्रः शङ्खनिस्वनैः । अनिलेनेरितो घोरो दिशः पूरयतीव ह ॥ ६१ ॥ अश्वानां हेषमाणानां गजानाञ्चैव बृंहताम् । सिंहनादश्च शूराणां श्रूयते सुमहानयम् ॥ ६२ ॥ दिशं प्राचीं समाश्रित्य हृष्टानां गच्छतां भृशम् । रथनेमिस्वनाश्चैव श्रूयन्ते लोमहर्षणाः ॥ ६३॥ पाण्डवैर्धार्तराष्ट्राणां यदिदं कदनं कृतम् । वयमेव त्रयः शिष्टा अस्मिन्महति वैशसे ॥ ६४ ॥ केचिन्नागशतप्राणाः केचित् सर्वास्त्रकोविदाः । निहताः पाण्डवेयैस्ते मन्ये कालस्य पर्ययम् ॥ ६५ ॥ एवमेतेन भाव्यं हि नूनं कार्येण तत्त्वतः । यथा ह्यस्येदृशी निष्ठा कृते कार्येऽपि दुष्करे ॥ ६६ ॥ भवतोस्तु यदि प्रज्ञा न मोहादपनीयते । व्यापन्नेऽस्मिन्महत्यर्थे यन्नः श्रेयस्तदुच्यताम् । ६७॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणिमन्त्रणायां प्रथमोऽध्यायः १ ॥

बजाते हैं । ६० । शङ्खोंके शब्दोंसेयुक्त वायुसे चलायमान बाजों के घोरशब्द दिशाओंको पूर्णकरते हैं । ६१ । हींसते घोड़े और चिंघाड़ते हाथियोंके बड़ेशब्द और शूरवीरोंकेभी यह सिंहनाद सुनेजातेहैं ।६२। पूर्वदिशामें नियत होकरअत्यन्त प्रसन्नचित्त जानेवालों के रथ नेमियोंके शब्द जो कि रोमांचके खड़े करनेवाले हैं वहभी सुनेजाते हैं । ६३ । पांडव लोगोंने धृतराष्ट्रके पुत्रोंका जो यह नाशकिया है इसबड़ेभारी नाशमें हम तीनशेष हैं । ६४ । कितनेही सौ हाथीके समान पराक्रमी और कितनेही सबशस्त्र विद्याओं में कुशल थे वह पाण्डवों के हाथसे मारेगये मैं समयकी विपरीतता को मानताहूं । ६५ । निश्चय करके इस प्रकारके इसनेही कर्म मूलसमेत विचार करनेके योग्यहैं जैसे कि कठिन कर्मके करनेपर भी ऐसीदशा है । ६६ । आपकी बुद्धि यदि मोहने दूर नहीं तो इसबड़े प्रयोजनके वर्तमान होनेपर जो हमारा हितकारी और भलाहै उसको कहो ६७ ।

---

their warriors. 62. We hear the rumbling of their car wheels. The Pandavas have destroyed all our warriors except us three. Some of them had the strenght of a hundred elephants and clever in fighting. The times are changed no doubt. 65. Surely we must give our thought to all these things; for we are reduced to this condition in spite of our great efforts. Let us know please, what is best to be done under the circumstances, if your intellect be not confounded with distress." 67.

कृप उवाच । श्रुतन्ते वचनं सर्वं यद्यदुक्तं त्वयाविभो । ममापि तु वचः किञ्चिच्छृणुष्वाद्य महाभुज ॥ १ ॥ आबद्धा मानुषाः सर्वे निबद्धाः कर्मणोर्द्वयोः । दैवे पुरुषकारे च परं ताभ्यां न विद्यते ॥ २ ॥ न हि दैवेन सिध्यन्ति कार्याण्येकेन सत्तम । न चापि कर्मणैकेन द्वाभ्यां सिद्धिस्तु योगतः ॥ ३ ॥ ताभ्यामुभाभ्यां सर्वार्था निबद्धा ह्यधमोत्तमाः । प्रवृत्ताश्चैव दृश्यन्ते निवृत्ताश्चैव सर्वशः ॥ ४ ॥ पर्जन्यः पर्वते वर्षन् किन्नु साधयते फलम् । कृष्टे क्षेत्रे तथा वर्षन् किं न साधयते फलम् ॥ ५ ॥ उत्थानञ्चाप्यदैवस्य ह्यनुत्थानञ्च दैवतम् । व्यर्थं भवति सर्वत्र पूर्वकस्तत्र निश्चयः ॥ ६ ॥ सुवृष्टे तु यथा दैवे सम्यक् क्षेत्रे च कर्षिते । बीजं महागुणं भूयात्तथा सिद्धिर्हि मानुषी ॥ ७ ॥ तयोर्दैवं विनिश्चित्य स्ववशेनैव प्रवर्त्तते । प्राज्ञाः पुरुषकारेतु वर्त्तन्ते दाक्ष्यमास्थिताः ॥ ८ ॥

अध्याय २ ॥

कृपाचार्य्य बोले हे समर्थ जो तुमनेकहा वह तुम्हारा सबवचन सुना हे महाबाहु अब मेरे कुछ वचनकोभी सुन । १ । कि प्रारब्ध और उद्योग इन दोनोंके कर्मों में सब बँधेहुये हैं इनदोबातों से कुछ अधिक वर्त्तमान नहीं है । २ । हे श्रेष्ठ अकेले दैव सेही समारके कार्य्य पूरेनहीं होते हैं और न केवल उद्योगही से सिद्ध होते है इसदशामें दोनों के मिलनेसेही कार्य्यकी पूर्णता होतीहै । ३ । सबछोटे बड़े प्रयोजनइन्हीं दोनों बातोंसे बँधेहुयेहैं और सब कार्य्यजारी होकर पूर्णहोते दिखाई पड़ते है । ४ । पर्व्वतपर वर्षा करनेवाला पर्ज्जन्य किस फलको सिद्ध नहीं करता है उसीप्रकार जोतेहुये खेतमें भी किसफलको प्राप्त नहीं करताहै । ५ । प्रारब्ध को श्रेष्ठ माननेवाले उद्योग और उद्योगसे रहित प्रारब्ध भी निष्फल होताहै इन दोनोंको सर्वत्र निश्चयकरते हैं । ६ । जैसे कि अच्छेप्रकार दैवकेवर्षने और खेतके जोतनेपर बीज बड़े गुणवाला होताहै उसीप्रकार मनुष्यों का भी अभीष्ट सिद्धकरना है । ७ । इनदोनोंमें दैव बलवान् है कि वह आपही बिना उपायके फलदेनेको प्रवृत्तहोताहै इसीप्रकार सावधान और ज्ञानी मनुष्य अच्छा निश्चयकरके उपाय में प्रवृत्तहोत हैं । ८ । हे नरोत्तम मनुष्य के सबकर्म उन दोनोंसेही जारी और पूरेहोते

CHAPTER II

Kripacharya said ' I have heard all that you said, now hear me all men are bound by Fate and prowess, and by nothing more. All works are neither performed by *Fate* alone nor by prowess both must be united to accomplish deeds All small and large works depend upon those two things and we see their continuation and end The rain falls on mountains and fields and gives fruits at both places 5 Fate and prowess are fruitless without each other, this is an admitted fact Human enterprises depend upon fate as the hopes of a cultivator do on rain, Fate, however, is more powerful as it can give fruit without toil Wise men engage in doing things after deep thought

ताभ्यांसर्वेहिकार्यार्थामनुष्याणांनरर्षभ।विचेष्टन्तस्मदृश्यते निवृत्तास्तु तथैवच॥९॥कृतः
पुरुषकारश्च सोपि दैवेन सिध्यति। तथास्य कर्मणः कर्तुरभिनिर्वर्तते फलम्॥१०॥उत्था
नन्तु मनुष्याणां दक्षाणां दैववर्जितम्। अफलं दृश्यते लोके सम्यगप्युपपादितम्॥११॥
तत्रालसा मनुष्याणां ये भवन्त्यमनस्विनः। उत्थानन्ते विगर्हन्ति प्राज्ञानांतन्न रोचते
॥१२॥ प्रायशो हि कृतं कर्म नाफलं दृश्यते भुवि। अकृत्वा च पुनर्दुःखं कर्म दृश्येन्महा
फलम् ॥१३॥ चेष्टामकुर्वंल्लभते यदि किंचिद्यदृच्छया। यो वा न लभते कृत्वा दुर्दशौ
तावुभावपि ॥ १४ ॥ शक्नोति जीवितुं दक्षो नालसः सुखमेधते। दृश्यन्ते जीवलोके
स्मिन् दक्षाः प्रायो हितैषिणः ॥ १५ ॥ यदि दक्षः समारम्भात् कर्मणां नाश्नुते फलम्।
नास्य वाच्यं भवेत् किंचिल्लब्धव्यं वाधिगच्छति ॥ १६॥ अकृत्वा कर्म यो लोके फलं
विन्दति विष्ठितः। स तु वक्तव्यतां याति द्वेष्यो भवति प्रायशः ॥ १७ ॥ एवमेतदनादृत्य

देखनेमें आते हैं। ९। जो उपाय कियाहै वहभी दैवसे ही सिद्ध होताहै इसीप्रकार इन कर्मवालोंका कर्म्म सफल होताहै। १०। सावधान चतुर मनुष्योंका अच्छे प्रकार से कियाहुआ भी उद्योग जो दैवसे रहितहै वह लोकमें निष्फल दिखाई देता है। ११। मनुष्यों में जो लोग आलसी और असाहसी होतेहैं वह उद्योगको बुराकहते हैं उसको बुद्धिमानलोग अच्छा नहीं मानतेहैं। १२। बहुधा कियाहुआ कर्म्म इस पृथ्वीपर निष्फल दिखाई देताहै फिर दुःखदाताहै और कर्मको न करके बड़े फलको देखताहै। १३। कर्मको न करके दैवयोगसे जो कुछ पाताहै और जो कर्म करके भी फलको नहीं पाताहै वह दोनों दुर्लभहैं। १४। सावधान और निरालस्य मनुष्य जीवता रहनेको समर्थ होताहै और आलस्य युक्त मनुष्य सुखसे वृद्धि नहीं पाताहै इस जीवलोक में कर्म करनेमें सावधान लोग बहुधा वृद्धिके चाहनेवाले दिखाई देतेहैं। १५। जो कर्ममें सावधान मनुष्य प्रारम्भ कर्म से कर्म फलको नहीं भोगताहै उसकी कुछ निन्दा नहीं होतीहै जो प्राप्तहोनेके योग्यअभीष्ट को नहीं पाता है। १६। और जो कर्म को न करके लोक में फलको पाता है वह निन्दित होताहै और बहुधा शत्रु होता है। १७। जो मनुष्य इस प्रकार से इसको

The works of men are accomplished by both. Enterprises become successful by the help of providence. 10. The work of wise men when well performed can bear no fruit without God's blessing. The lazy and unenterprising speak ill of work and are therefore depised by the wise. A work done often bears no fruit and the mind is thereby afflicted. The fruit of work, by providence alone or by prowess alone is difficult to attain A careful and earnest worker is able to live, while a lazy person finds life a difficulty. 15. He who does not get the fruit of actions by Fate, is not to be blamed; but he who gets the fruit without work, creates enemies. He who works contrary to this principle creates difficulties: this is the opinion of wise men. A work becomes fruit

वर्तते यस्त्वतोऽन्यथा । स करोत्यात्मनोऽनर्थान्नैष बुद्धिमतां नयः ॥ १८ ॥ हीनं पुरुषकारेण यदि दैवेन वा पुनः । कारणाभ्यामथैताभ्यामुत्थानमफलं भवेत् ॥ १९ ॥ हीनं पुरुषकारेण कर्म त्विह न सिध्यति । दैवतेभ्यो नमस्कृत्य यस्त्वर्थान् सम्यगीहते । दक्षो दाक्षिण्यसम्पन्नो न स मोघैर्विहन्यते ॥ २० ॥ सम्यगीहा पुनरियं यो वृद्धानुपसेवते । आपृच्छति च यः श्रेयः करोति च हितं वचः ॥ २१ ॥ उत्थायोत्थाय हि सदा प्रष्टव्या वृद्धसम्मताः । ते स्म योगे परं मूलं तन्मूला सिद्धिरुच्यते ॥ २२ ॥ वृद्धानां वचनं श्रुत्वा योऽभ्युत्थानं प्रयोजयेत् । उत्थानस्य फलं सम्यक् तदा स लभतेऽचिरात् ॥ २३ ॥ रागात् क्रोधाद्भयाल्लोभात् योऽर्थानीहेत मानवः । अनीशश्चावमानी च स शीघ्रं भ्रश्यते श्रियः ॥ २४ ॥ सोऽयं दुर्योधनेनार्थो लुब्धेनादीर्घदर्शिना । असमर्थ्य समारब्धो मूढत्वादविचिन्तितः ॥ २५ ॥ हितबुद्धीननादृत्य सम्मन्त्र्यासाधुभिः सह । वार्यमाणोऽक

निरादर करके इसके विपरीत कर्म करता है वह अपने अनर्थोंको उत्पन्न करताहै यह बुद्धिमानों की नीति है । १८ । फिर जब उद्योग अथवा दैवसे रहितहो तबइन दोनों हेतुओंसे उपाय निष्फलहोता है । १९ । इसलोक में उपायसे रहित किया हुआ कर्म सिद्ध नहीं होताहै जो मनुष्य देवताओंको नमस्कार करके अच्छीरीतिसे प्रयोजनों को चाहता है वह आलस्यसे रहित और सावधानी से संयुक्तहै कर्म की निष्फलता से नाशको नहीं पाताहै । २० । फिर अच्छेकर्मकी इच्छा यहहैजो वृद्धोंका सेवनकरता है जो अपने कल्याणको पूछताहै और उनके हितकारी वचनों को करताहै सदैव उठ२ कर वृद्धों के अङ्गीकृत पुरुष पूछने के योग्य है वहपुरुष अभीष्ट सिद्धकरने में बड़े तेजहैं और मूलरखनेवाली सिद्धी कहेजातेहैं।२१। जो मनुष्य वृद्धों के वचनों को सुनकर उपाय में प्रवृत्तहोता है वह थोड़ेही समय में उपायके फलको अच्छीरीति से पाता है जो मनुष्य रागक्रोध भय और लोभ से अभीष्टों को चाहता है वह अजितेन्द्रिय और अपमान करने वाला शीघ्रही लक्ष्मीसे रहितहोकर नाशहोताहै ।२४। सो इसलोभी और अदूरदर्शी दुर्योधनने अज्ञानतासे यह बिना विचाराहुआ असमर्थ कर्म प्रारम्भ किया और निषेध करनेवाले शुभचिन्तकों को अनादर करके नीचोंकी सलाह से वह गुणवान

less without the help of providence or prowess. One cannot accomplish work without earnestness and the blessing of heaven. 20 One doing work successfully, should ask the opinion of old men. The advice of old men lays a safe foundation for work. One doing a work with the advice of old men, accomplishes it with but little trouble. He who, being avaricious and resentful, wishes to accomplish his work, soon becomes despised and loses wealth. The avaricious and careless Duryodhan began his work foolishly and gave no heed to the advice of old men. He made the Pandavas his enemies. An ill natured man cannot be patient and gets into trouble by the ill success of

द्वैरं पाण्डवैर्गणवत्तरे. ॥ २६ ॥ पूर्वमप्यतिदुःशीलो न धैर्यं कर्तुमर्हति । तपत्यर्थे विपन्नेहि मित्राणां न कृतं वच. ॥ २७ ॥ अनुवर्त्तामहे यत्तु वयं तं पापपूरुषम् । अस्मानप्य नयस्तस्मात्प्राप्तोयं दारुणो महान् ॥ २८ ॥ अनेन तु ममाद्यापि व्यसनेनोपतापिता । बुद्धिश्चिन्तयतः किंचित् स्वं श्रेयो नावबुध्यते॥२९॥ मुह्यता तु मनुष्येण प्रष्टव्या सुहृदो जना । तत्रास्य बुद्धिर्विनयस्तत्र श्रेयश्च पश्यति ॥ ३० ॥ ततोस्य मूलं कार्याणां बुद्ध्या निश्चित्य वै बुधा । ते पृष्टा यथा ब्रूयुस्तत्कर्त्तव्यं तथा भवेत् ॥ ३१ ॥ ते वयं धृतराष्ट्रञ्च गान्धारीञ्च समेत्यह । उपपृच्छामहे गत्वा विदुरञ्च महामतिम् ॥ ३२ ॥ ते पृष्टास्तु वदेयुर्यत् श्रेयो न समनन्तरम् । तदस्माभि पुन कार्यमिति मे नैष्ठिकी मति. अनारम्भात्तु कार्याणां नार्थः सम्पद्यते क्वचित् ॥ ३३॥ कृते पुरुषकारे च येषां कार्यं न सिध्यति । दैवेनोपहतास्ते तु नात्र कार्या विचारणा ॥ ३४ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणि कृपसंवादे द्वितीयोऽध्यायः २॥

पांडवों से घातकारी । २६ । बड़ा दुःस्वभाव मनुष्य प्रथमही धैर्यकरनेके योग्य नहीं है और अभीष्ट के पूरे न होनेपर दुःखी होताहै कि मैंने अपने मित्रोंका वचन नहीं किया । २७ । हमलोग उसपापी पुरुषके पीछे चलते हैं इसहेतु से हमको भी यह भयकारी अनीतिप्राप्तहुई ।२८। अबतक इसदुःखसे तपायेहुये मुझचिन्ता करने वालेकी बुद्धि अपने कुछ कल्याणको नहीं जानती है । २९ । और अचेत मनुष्य से सुहृज्जन पूछनेके योग्यहैं उनमें उनकी बुद्धि और नम्रताहै और उसीमें कल्याणको देखता है ।३०। इसस्थानपर पूछेहुये वह ज्ञानीलोग इसके कार्योंके मूलोंको बुद्धिसे निश्चयकरके जैसे कहें वैसा करना चाहिये और वह उसीप्रकार से होगा । ३१ । हम सबलोग जाकर धृतराष्ट्र गान्धारी और बड़ेज्ञानी विदुरजीसे मिल करके पूछें वह हमारे पूछने पर जो कहें वह निस्सन्देह हमारा कल्याण है । ३२ । वहीहमको फिर करना चाहिये यह मेरा दृढ़मत है कार्यों के प्रारम्भ किये बिना कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होताहै । ३३ । फिर उपाय करनेपर भी जिनका कार्यपूरा नहीं होताहै वह निस्सन्देह दैवके मारेहुये हैं ३४ ॥

his enterprise by not hearing to friends. We have fallen in this distress by following that sinful man I donot know yet how to secure our safety. An unwise man's good and safety lies in seeking the advice of his friends 30. He should act upon the advice of wise men. We should seek the advice of Dhritrashtra and Gandhari We should go to wise Vidur also. These persons will show us the way how to proceed. Our safety lies in doing this and I am resolved to do so Nothing is gained without pains and surely they who fail are afflicted by Fate " 31

सञ्जय उवाच। कृपस्य वचनं श्रुत्वा धर्मार्थसहितं शुभम्। अश्वत्थामा महाराज दुःखशोकसमन्वितः ॥ १ ॥ दह्यमानस्तु शोकेन प्रदीप्तेनाग्निना यथा। क्रूरं मनस्ततः कृत्वा तावुभौ प्रत्यभाषत ॥ २ ॥ पुरुषे पुरुषे बुद्धिर्या या भवति शोभना। तुष्यन्ति च पृथक् सर्वे प्रज्ञया ते स्वया स्वया ॥ ३ ॥ सर्वो हि मन्यते लोक आत्मानं बुद्धिमत्तरम्। सर्वस्यात्मा बहुमतः सर्वात्मानं प्रशंसति ॥ ४ ॥ सर्वस्य हि स्वका प्रज्ञा साधुवादे प्रतिष्ठिता। परबुद्धिं च निन्दन्ति स्वां प्रशंसन्ति चासकृत् ॥ ५ ॥ कारणान्तरयोगेन योगे येषां समा मतिः। अन्योन्येन च तुष्यन्ति बहु मन्यन्ति चासकृत् ॥ ६ ॥ तस्यैव तु मनुष्यस्य सा सा बुद्धिस्तदा तदा। कालयोगे विपर्यासं प्राप्यान्योन्यं विपद्यते ॥ ७ ॥ विचित्रत्वात् चित्तानां मनुष्याणां विशेषतः। चित्तवैक्लव्यमासाद्य सा सा बुद्धिः प्रजायते ॥ ८ ॥ यथा हि वैद्यः कुशलो ज्ञात्वा व्याधिं यथाविधि। भेषजं कुरुते योगात्

अध्याय ३ ॥

सञ्जय बोले हे महाराज तब अश्वत्थामाजी कृपाचार्य के उस वचनको जो कि अत्यन्त शुभ और धर्म अर्थसे संयुक्तथा सुनकर दुःख शोकसे संयुक्त। १। ज्वलित अग्निरूप के समान शोकसे प्रज्वलित होकर चित्तको निर्दय करके उन दोनोंसे बोले। २। कि पुरुष पुरुषमें जोर बुद्धि होतीहै वही श्रेष्ठहै वहसब पृथक् पृथक् अपना २ बुद्धिमें मग्न रहते हैं। ३। और सब लोकके मनुष्य अपने २ को बड़ा बुद्धिमान् मानते हैं सबकी बुद्धि बहुत अङ्गीकृत है और सब अपनी २ प्रशंसा करते हैं। ४। सबकी निजबुद्धि अपनी उत्तमताके वर्णनमें नियतहै दूसरेकी बुद्धिकी निन्दा करते हैं और अपनी बुद्धिकी वारम्वार प्रशंसा करते हैं। ५। सभा में अन्य २ कारणों के वर्त्तमान होने से जिनलोगों की बुद्धि एकसी है वह परस्पर प्रसन्नहोते हैं और वारम्वार अपने को बहुत मानते हैं। ६। उसी उसी मनुष्यकी वह वह बुद्धि जब समयके योगसे विपरीतता को पातीहै वे परस्पर विनाशको पाते हैं। ७। मुख्यकर मनुष्यों के चित्तकी विचित्रता से चित्त की व्याकुलता को पाकर वह बुद्धि उत्पन्न होती है। ८। हे प्रभु इसीप्रकार बड़ा सावधान वैद्य बुद्धिके अनुसार रोगको जानकर औषधी देनेके द्वारा रोगकी निवृत्ती के लिये

CHAPTER III

Sanjaya said, "Hearing the salutary advice of Kripacharya, Ashwatthama, in excess of grief said to the two warriors "Every man thinks himself wise and but and [illegible] different from others All men do what pleases them and praise their own wisdom They praise themselves and blame others 5 Those who are of the same opinion in an assembly live happily, but when they are disunited they meet their destruction. A difference of opinion rises out of the fickleness of mind. A wise physician cures diseases by useful medicine Men try to accomplish their work by their own wisdom and

प्रज्ञामार्गमिति स्थितम् । ९ ॥ एवं कार्यस्य योगार्थं बुद्धिं कुर्वन्ति मानवाः, प्रज्ञया हि
स्वया युक्तास्तां च निन्दन्ति मानवाः ॥ १० । अन्यया यौवने मर्त्यो बुद्ध्या भवति
मोहितः । मध्येऽन्यया जरायान्तु सोऽन्यां रोचयते मतिम् । ११ । व्यसनं वा महाघोरं
समृद्धिं वापि तादृशीम् । अवाप्य पुरुषो भोज कुरुते बुद्धिवैकृतम् ॥ १२ । एकस्मिन्नेव
पुरुषे सा सा बुद्धिस्तदा तदा । भवत्यकृतप्रज्ञत्वात् सा तस्यैव न रोचते ।१३॥ निश्चित्य
तु यथाप्रज्ञं यां मतिं साधु पश्यति । तया प्रकुरुते भावं सा तस्योद्योगकारिका ॥ १४ ॥
सर्वो हि पुरुषो भोज साध्वेतदिति निश्चितः । कर्तुमारभते प्रीतो मारणादिषु कर्मसु
॥ १५ । सर्वे हि युक्तिमास्थाय प्रज्ञाञ्चापि स्वकां नराः । चेष्टन्ते विविधां चेष्टां हित
मित्येव जानते । १६ ॥ उपजाता व्यसनजा येयमद्य मतिर्मम । युवयोस्तां प्रवक्ष्यामि
मम शोकविनाशिनीम् ॥ १७ । प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा कर्म तासु विधाय च । वर्णे

चिकित्सा करताहै । ९ । इसीप्रकार मनुष्यभी अपने काम पूरे करने के लियेबुद्धि को करतेहैं और अपनी बुद्धिसे युक्त मनुष्य उसकीनिन्दा करते हैं । १० । मनुष्य तरुणाईमें एक अन्य बुद्धिसे और सम्पूर्ण अवस्थाके मध्यमें अन्य बुद्धिसे मोहित होताहै वह वृद्धावस्थामेंभी अन्यही बुद्धिको स्वीकार करता है । ११ । हे कृतवर्मा मनुष्य बड़े घोरदुःखको अथवा उसीप्रकारके ऐश्वर्यकोभीपाकर बुद्धिको विपरीत करता है । १२ । एकही मनुष्य में वह बुद्धिसमय पर उत्पन्न होती है और समर्थ न होनेपर उसको नहीं अच्छी लगती है । १३ । और बुद्धिके अनुसार निश्चय करके जिस विचारको अच्छीरीति से देखताहै उसीप्रकार का उत्साह करता है वह बुद्धि उसके उपायकी करनेवाली है । १४ । हे भोजवंशी कृतवर्मा सबके मनुष्य यह निश्चय करनेवाला है कि मेरा विचार अच्छा है और प्रसन्नचित्त होकर मारने आदिक में कर्म करना प्रारम्भ करताहै । १५ । सब मनुष्य अपनी और चतुरताको ही जानकर नानाप्रकारके कर्म करते हैं और यही जानतेहैं कि यह मेरा हितकारी कर्म है।१६। अबमेरे दुःखसे उत्पन्न होनेवाला जोवहविचार पैदाहुआहै उस अपने शोक दूर करनेवाले विचार को मैं तुम दोनों से कहता हूं । १७ । ब्रह्माजी ने सृष्टिको उत्पन्न करके और उनमें कर्मको नियत करके हर

blame the wisdom of others. 10 Man's wisdom is of one sort in youth and of another in middle or old age. His intellect deteriorates in distress and excess of joy. One's own opinion is not always the same. It alters at times. He sets his mind to do the work he thinks best. Every man thinks his own opinion to be the best and engages him in actions. 15. People do work according to their own wisdom. Now hear my opinion which I have formed in my distress. *Brahma* created the world and made various attributes prominent in various orders. For instance, the tendency to read the Vadas among brahmans, prowess among kshatryas, trade among Vaishyas and service

वर्णे समावेश एकैकं गुणमाग्गुणम् ॥ १८ ॥ ब्राह्मणे वेदमग्र्यन्तु क्षत्रिये तेज उत्तमम् दाक्ष्यं वैश्ये च शूद्रेच सर्ववर्णानुकूलताम् ॥ १९ ॥ अदान्तो ब्राह्मणोऽसाधुर्निस्तेजाः क्षत्रियोऽधमः । अदक्षो निन्द्यते वैश्यः शूद्रश्च प्रतिकूलवान् ॥ २० ॥ सोऽस्मिजातः कुलश्रेष्ठे ब्राह्मणानां सुपूजिते । मन्दभाग्यतयास्म्येतं क्षत्रधर्ममनुष्ठितः ॥ क्षत्रधर्मं विदित्वाहं यदि ब्राह्मण्यं संश्रितः । प्रकुर्यां सुमहत् कर्म न मे तत् साधुसम्मतम् ॥ २२ ॥ धारयंश्च धनुर्दिव्यं दिव्यान्यस्त्राणि चाहवे । पितरं निहतं दृष्ट्वा किं नु वक्ष्यामि संसदि ॥ २३ ॥ सोऽहमद्य यथाकामं क्षत्रधर्ममुपास्य तम् । गन्तास्मि पदवीं राज्ञः पितुश्चापि महात्मनः ॥२४॥ अद्य स्वप्स्यन्ति पाञ्चाला विश्वस्ता जितकाशिनः । विमुक्तयुग्यकवचा हर्षेण च समन्विताः जय मत्वात्मनश्चैव श्रान्ता व्यायामकर्षिता ॥ २५ ॥ तेषां निशि प्रसुप्तानां सुस्थानां शिबिरे स्वके । अवस्कन्दं करिष्यामि शिबिरस्याद्य दुष्करम् ॥ २६ ॥ तानावस्कन्द्य शिबिरे प्रेतभूतान् विचेतसः । सूदयिष्यामि विक्रम्य

एक वर्णमें दिखाएया रखनेवाला एक २ गुणधारण किया । १८ । ब्राह्मणमें श्रेष्ठ वेद क्षत्रियमें श्रेष्ठ पराक्रम वैश्यमें श्रेष्ठ सावधानी कर्म और शूद्रमें श्रेष्ठ सब वर्णों का आज्ञाकारी होना कहाहै । १९ । अजितेन्द्रिय ब्राह्मण निकृष्ट पराक्रमसे रहित क्षत्रिय निकृष्टकार्य्य में असावधान वैश्य निकृष्ट और सब वर्णों की आज्ञाका न करने वाला शूद्र निकृष्ट होकर निन्दाकिया जाताहै । २० । सो मैं ब्राह्मणों के बड़ेपूजित उत्तमकुलमें उत्पन्नहुआहूं और अभाग्यतासे क्षत्रियधर्मका कर्मकर्त्ता हुआ हूं ।२१। जो मैं क्षत्रियधर्म को जानकर और ब्राह्मणोंके शमदमादिगुणोंमें नियतहोकर बड़े कर्मको करूं वह मेरा कर्म साधुओं से अंगीकृत नहीं २२ मैं युद्धमें दिव्यधनुष और अस्त्रों को धारण करता पिताको मृतक देखकर सभामें क्या कहूंगा । २३ । अब मैं अपनी इच्छा के अनुसार उस क्षत्रिय धर्म्म की उपासना करके राजा दुर्योधन और महात्मा पिता के भी मार्ग को पाऊंगा । २४ । अब पांचाल देशी विजयसे शोभित बड़े विश्वस्त सवारी और कवचों से जुदे होकर प्रसन्नतायुक्त सोते हैं वह थकेहुये परिश्रम से पीड़ावान् अपनी विजयको मानकर शयन करेंगे । २५ । अपने डेरों में सुखसे नियत और सोनेवाले उन पांचालदेशियों के डेरों के उस नाशको करूंगा जोकि कठिनतासे करनेके योग्यहै । २६ । अबउन अचेत

among shudras. A brahman having no control over senses, a kshatrya destitute of prowess, a vaishya without trade and a disobedient shudra are despised. 20. I am born in a noble brahman family and have been doing the work of a kshatrya. I shall not now be respected among brahmans, if I do their work. I shall not be able to show my face in court without avenging the death of my father. I shall tread the path of Duryodhan and my father and do the work proper to a kshrtrya. The Panchals and their beasts are now sleeping soundly after their great victory. They are destitute of armours and are

मघवानिव दानवान् ॥ २७ ॥ अद्य तान्सहितान् सर्वान् धृष्टद्युम्नपुरोगमान् । सूदयिष्यामि विक्रम्य कक्षं दीप्त इवानलः । निहत्य चैव पांचालान्शान्तिं लब्धास्मि सत्तम ॥२९॥ पाञ्चालेषु चरिष्यामि सूदयन्नद्य संयुगे । पिनाकपाणिः संक्रुद्धः स्वयं रुद्रः पशुष्विव ॥३०॥ अद्याहं सर्वपांचालान्निहत्य च निकृत्य च अर्दयिष्यामि संग्रामे पाण्डुसुतांस्तथा ॥ ३१ ॥ अद्याऽहं सर्वपाञ्चालैः कृत्वा भूमिं शरीरिणीम् । प्रहृत्यैकैकशस्तेषु भविष्याम्यनृणः पितुः ॥ ३२ ॥ दुर्योधनस्य कर्णस्य भीष्मसैन्धवयोरपि । गमयिष्यामि पाञ्चालान् पदवीमद्य दुर्गमाम् ॥ ३३ ॥ अद्य पाञ्चालराजस्य धृष्टद्युम्नस्य वै निशि । नचिरात् प्रमथिष्यामि पशोरिव शिरो बलात् ॥ ३४॥ अद्य पाञ्चालपाण्डूनां शयितानात्मजान्निशि । खड्गेन निशितेनाजौ प्रमथिष्यामि गौतम ॥ ३५ ॥ अद्य पाञ्चालसेनां तां निहत्य निशि सौप्तिके कृतकृत्यः सुखी चैव भविष्यामि महामते ३६

इतिश्री सौप्तिकपर्वणि द्रौणिमन्त्रणायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ४ ॥

मृतकरूप पांचाल देशियोंको डेरे में पराजयकरके और पराक्रम करके ऐसे मारूंगा जैसे दानवों को इन्द्र मारताहै । २७ । अब उन धृष्टद्युम्न आदिक सब पांचालों को एक साथही ऐसे मारूंगा जैसे कि ज्वलित अग्नि सूखे वनको हे श्रेष्ठ मैं युद्धमें पांचालों को मारकर शान्तीको पाऊंगा । २९ । अबमैं युद्धमें पांचालों को मारता पांचालोंको के बीच में ऐसाहूंगा जैसे कि पशुओंको मारते पशुओं के मध्य में क्रोधयुक्त पिनाक धनुषधारी आप रुद्रजीहोते हैं । ३० । अब अत्यन्त प्रसन्न सब पांचालोंको मारकाटकर इसीप्रकार से युद्धमें पांडवोंकोभी पीड़ावान करूंगा । ३१ । अब मैं पृथ्वीको सब पांचालोंके शरीरोंसे पूर्णकरके प्रत्येकको मारकर पिताके ऋणसे अऋणहूंगा । ३२ । अब मैं पांचालोंको दुर्योधन कर्ण भीष्म और जयद्रथ के कठिन मार्ग में पहुंचाऊंगा । ३३ । अब मैं रात्रिके समय थोड़ीदेर में पांचालोंके राजाधृष्टद्युम्न के शिरको ऐसेमथूंगा जैसे कि पशुकेशिरको मर्दन करते है । ३४ । हे कृपाचार्य्य जी अब में पांचाल देशियों के और पाण्डवों के सोतेहुये पुत्रोंको रात्रिकेसमय युद्धभूमिमें तेजखड़गसे मथूंगा । ३५ । हे बड़े बुद्धिमान अब मै रात्रिके युद्धमें उस पांचालकी सेनाको मारकर कृतकृत्य होकर सुखीहूंगा ।३६।

lying within their t nts. I shall destroy them in their camp and shall do a difficult deed 1 shall now slay them as Indra does the danavas. 1 shall destroy them as fire does dry forest. 1 shall roam among them as Shiv the wielder cf Pinak roams among animals. 30. Having slain the Panchals, I shall destroy the Pandavas. Having destroyed the Panchals, 1 shall be free from the debt of my father. 1 shall cut off the head of Dhrishtadyumn of Panchal like that of a beast. 1 shall cut off the sleeping sons of the Panchals and Pandavas with my sharp swo d 1 shall satisfy my rage by slaying the army of Panchal at night." 36.

कृप उवाच । दिष्ट्या ते प्रतिकर्त्तव्ये मतिर्यातेयमच्युत । न त्वा वारयितुं शक्तो वज्रपाणिरपि स्वयम् ॥ १ ॥ अनुयास्यावहे त्वां तु प्रभाते सहितावुभौ । अद्य रात्रौ विश्रमस्व विमुक्तकवचध्वजः ॥ २ ॥ अहं त्वामनुयास्यामि कृतवर्मा च सात्वतः । परानभिमुखं यान्तं रथावास्थाय दंशितौ ॥ ३ ॥ आवाभ्यां सहितः शत्रून् श्वो निहन्ता समागमे । विक्रम्य रथिनां श्रेष्ठ पाञ्चालान् सपदानुगान् ॥ ४ ॥ शक्तस्त्वमसि विक्रम्य विश्रमस्व निशामिमाम् ॥ चिरं ते जाग्रतस्तात स्वप तावन्निशामिमाम् ॥ ५॥ विश्रान्तश्च विनिद्रश्च स्वस्थचित्तश्च मानद । समेत्य समरे शत्रून् वधिष्यसि न संशयः ॥ ६ ॥ न हि त्वां रथिनां श्रेष्ठ प्रगृहीतवरायुधम् । जेतुमुत्सहते कश्चिदपि देवेषु वासव ॥७ ॥ कृपेण सहितं यान्तं गुप्तञ्च कृतवर्मणा । को द्रौणिं युधि संरब्धं योधयेदपि देवराट् ॥ ८ ॥ ते वयं निशि विश्रान्ता विनिद्रा विगतज्वराः । प्रभातायां रजन्यां वै निहनि

अध्याय ॥ ४ ॥

कृपाचार्य बोले कि प्रारब्धसे बदलालेने में तेरी अविनाशी बुद्धि उत्पन्नहुई है आप इन्द्रभी तेरे रोकनेको समर्थ नहीं है । १ । हमदोनों एकसाथही प्रातःकाल के समय तेरेपीछे चलेंगे अब रात्रिमें कवच और ध्वजासे पृथक् होकर विश्राम करो । २ । मैं और यादव कृतवर्मा अलंकृत रथोंपर सवार होकर तुझ शत्रुओंके सम्मुख जानेवाले के पीछे चलेंगे । ३ । हे रथियों में श्रेष्ठ प्रातःकाल के समय तुम हम दोनों केसाथ सम्मुखतामें पराक्रम करके शत्रु पाञ्चालों को उनके साथियों समेत मारोगे । ४ । तुम पराक्रम करके मारने को समर्थ हो इसरात्रिमें विश्रामकरो हे तात तुझको जागतेहुये बहुत विलम्ब हुई अब तक इसरात्रि में शयनकरो । ५ । विश्रामयुक्त शयन से सावधान चित्त तुम युद्ध में शत्रुओं को पाकर मारोगे हे बड़ाई देनेवाले इसमें संशय नहीं है । ६ । देवताओं के मध्य में इन्द्रभीतुझ रथियों में श्रेष्ठ उत्तम शस्त्रधारी के विजय करने को उत्साह नहीं करता है । ७ । कृतवर्मा से रक्षित और कृपाचार्य के साथ जानेवाले युद्धमें क्रोधयुक्त अश्वत्थामा से इन्द्र भी युद्धनहीं करसक्ता । ८ । हम रात्रिमें विश्रामयुक्त शयन करनेवाले तापसे

CHAPTER IV

Kripacharya said, ' It is by Fate that you are resolved to take revenge, even Indra can not deter you from your purpose. Both of us together, will follow you in the morning, let us set aside our armour and banner and take rest for the night. Kritvarma, the Yadav, and I will follow you, destroyer of foes. Tomorrow you, accompanied by us, will destroy your Panchal foes. You have the power to slay Take rest during the night, for you have not slept yet. 5. With your mind fresh after repose, you will slay the foes without doubt. Even surrounded by gods, Indra cannot conquer you, brave warriors ! rotected by Kritvarma and followed by Kripacharya enraged Ashwa

स्याम शात्रवान् ॥ ९ ॥ तव ह्यस्त्राणि दिव्यानि मम चैव न संशयः । सात्वतोपि महे
ष्वासो नित्यं युद्धेषु कोविदः ॥ १० ॥ ते वयं सहितास्तात सर्वान् शत्रून् समागतान् ।
प्रसह्य समरे हत्वा प्रीतिं प्राप्स्याम पुष्कलाम् । विश्रमस्व त्वमव्यग्रः स्वपस्वेमां निशां
सुखम् ॥ ११ ॥ अहञ्च कृतवर्मा च त्वां प्रयान्त नरोत्तमम् । अनुयास्याव सहितौ
धन्विनौ परतापनौ । रथिनं त्वरयायान्तं रथमास्थाय दंशितौ ॥१३ ॥ स गत्वा शिविरं
तेषां नाम विश्राव्य चाहवे । ततः कर्त्तासि शत्रूणां युध्यतां कदनं महत् ॥१४ ॥ कृत्वाच
कदनं तेषां प्रभाते विमलेऽहनि । विहरस्व यथा शक्रः सूदयित्वा महासुरान् ॥ १५ ॥
त्वं हि शक्तो रणे जेतुं पाञ्चालानां वरूथिनीम् । दैत्यसेनामिव क्रुद्धः सर्वदानवसूदन
॥ १६ ॥ मया त्वां सहितं संख्ये गुप्तञ्च कृतवर्मणा । न सहेत विभुः साक्षाद्वज्रपाणि
रपि स्वयम् ॥ १७ ॥ न चाहं समरे तात कृतवर्मा न चैव [redacted] । अनिर्जित्य रणे पाण्डून्
व्यपयास्याव कर्हिचित् ॥ १८ ॥ हत्वा च समरे क्रुद्धान् पाञ्चालान् पाण्डुभिः सह ।

रहित प्रातःकाल शत्रुओं के लोगोंको मारेंगे । ९ । तेरे और मेरे दिव्यअस्त्रहैं और
बड़ा धनुषधारी यादव कृतवर्मा भी युद्धोंमें निस्सन्देह सावधान है । १० । हेतात
हम तीनों एकसाथ मिलेहुये सब शत्रुओं को हठसे युद्ध में मारकर उत्तम आनन्द
को पावेंगे तुम सावधान होकर विश्रामकरो और इस रात्रिमें सुखपूर्वक शयनकरो
। ११ । मैं और कृतवर्मा धनुषधारी शत्रुओं के तपानेवाले कवचधारी दोनों एक
साथ रथपर सवार होकर तुझ शीघ्र चलनेवाले नरोत्तम रथी के पीछे चलेंगे ।१२।
इसके पीछे तुम उन्होंके डेरोंमें जाकर युद्ध में नामको सुनाकर युद्ध करनेवाले
शत्रुओं का बड़ाभारी नाश करोगे । १४ । प्रातः काल के समय उनका नाशकर
के ऐसे विहारकरो जैसे कि महा असुरों को मारकर इन्द्र विहार करता है । १५ ।
तुम युद्धमें पाञ्चालों की सेनाके विजय करनेको ऐसे समर्थहो जैसे कि सब दानवों
का मारनेवाला क्रोधयुक्त इन्द्र दैत्योंकी सेनाको मारकर विहार करताहै । १६ ।
वज्रधारी समर्थ साक्षात् इन्द्रभी तुझ मेरेसाथी कृतवर्मा से रक्षित को युद्धमें नहीं
सहसक्ताहै । १७ । हे तात मैं और कृतवर्मा युद्धमें पाण्डवों को विजय किये विना
कभी लौटकर नहीं आवेंगे । १८ । हम सब युद्धमें क्रोधयुक्त पांचालों समेत पांडवों

Varma is irresistible in battle even by Indra. We shall slay our foes in the morning when our fever has abated after repose at night. You and I possess divine weapons and Kritvarma, the great Yadav archer, is clever in fighting. We three, united together, are sure to destroy our foes. Take care to sleep for the night. Kritvarma and I, cased in armour, will follow your car. You will slay them tomorrow as Indra does asurs. 15. You can slay the *Panchal* warriors as Indra does the asurs. Even Indra cannot *resist you* protected and accompanied by me and Kritvarma as you shall be in fight. *Kritvarma* and I will never return without conquering the Pandavas in battle,

निवर्त्तिष्यामहे सर्वे हता वा स्वर्गगा वयम् ॥ १९ ॥ सर्वोपायैः सहायास्ते प्रभाते वय
माहवे । सत्यमेतन्महाबाहो ब्रवीमि तवानघ ॥ २० ॥ एव मुक्तस्ततो द्रोणिर्मातुलेन
हितं वचः । अब्रवीन्मातुल राजन् क्रोधसंरक्तलोचनः ॥ २१ ॥ आतुरस्य कुतो निद्रा
नरस्यामर्षितस्य च । अर्थांश्चिन्तयतश्चापि कामयानस्य वा पुनः ॥ २२ ॥ तदिदं सम
नुप्राप्तं पश्य मेद्य चतुष्टयम् । यस्य भागश्चतुर्थो मे स्वप्नमह्नाय नाशयेत् ॥ २३ ॥ किं
नाम दुःखं लोकेऽस्मिन् पितुर्वधमनुस्मरन् । हृदयं निर्दहन्मेद्य रात्र्यहानि न शाम्यति
॥ २४ ॥ यथा च निहतः पापैः पिता मम विशेषतः । प्रत्यक्षमपि ते सर्वं तन्मे मर्माणि
कृन्तति ॥ २५ ॥ कथं हि मादृशो लोके मुहूर्त्तमपि जीवति । द्रोणो हतेति यद्वाचः
पाञ्चालानां शृणोम्यहम् ॥ २६ ॥ धृष्टद्युम्नमहत्वाजौ नाहं जीवितुमुत्सहे । स मे पितु
र्वधाद्वध्यो पाञ्चाला ये च सङ्गताः ॥ २७ ॥ विलापो भग्नसक्थस्य यस्तु राज्ञो मया

को मारकर लौटेंगे अथवा मरकर स्वर्गको जायँगे । १९ । हे निष्पाप [redacted] प्रातः-
काल युद्धमें सब उपायों से तेरे सहायकहैं हे महाबाहु मैं यह तुझसे सत्यर ही
कहताहूं । २० । हे राजा मामाजी के ऐसे हितकारी वचनोंको सुनकर क्रोधसे
रक्तनेत्र अश्वत्थामाने मामाजीको उत्तरदिया ।२१। किरोगी क्रोधयुक्त धनादिकके
शोचकरनेवाले और कामी इनलोगोंको निद्रा कहांसे होसक्तीहै । २२ ।अब यहमेरा
क्रोध चौथाई उत्पन्न हुआहै वह चौथाई क्रोध दिनके अर्थ शयनका नाशकरताहै
। २३ । इसलोकमें क्या दुःखहै कि पिता के मरण को स्मरणकरता और जलता
हुआ मेरा हृदय अब दिन रात्रि शान्तिको नहीं पाताहै । २४ । मुख्य करके जैसे
प्रकारसे मेरा पिता पापियों के हाथसे मारागया, यहसब आपके नेत्र गोचर है वह
मेरे मर्म्मों को काटताहै । २५ । लोक में मुझसा मनुष्य एकमुहूर्त्त भी कैसेजीसक्ता
है जोमैं पाञ्चालोंका वचन सुनताहूं कि द्रोणाचार्य्य मारेगये । २६ । मैं धृष्टद्युम्न
को न मारकर जीवते रहनेको उत्साह नहींकर सक्ताहूं वहमेरे पिताके मारनेसे काटने
के योग्यहै और जो पांचालदेशी इकट्ठे हैं वह सबभी वध्यहैं । २७ । इसकेविशेष

We shall return after slaying the Pandavas and the Panchals or shall go to paradise. Believe me, brave man, we shall help you in tomorrow's battle." Hearing the good advice of his uncle, Ashwathama replied in anger, "How can one find sleep over anger, loss of wealth and love sickness ! It is only a fourth part of my rage developed; but it is enough to destroy my sleep at night. It is a small thing that I find no rest by night or day as I remember the death of my father. You have seen how my father was slain by those sinful men and it cuts me to the quick. 25. One like me cannot live in the world when one hears from the Panchals that Dronacharya is slain. I cannot live without slaying Dhrishtadyumn. He and his followers deserv death by taking part in the slaughter of my father. Besides, whose heart will not burn at Duryodhan's lamentations that I have heard ?

श्रुतः । स पुनर्हृदयं कस्य क्रूरस्यापि न निर्दहेत् ॥ २८ ॥ कस्य ह्यकरुणस्यापि नेत्राभ्या
मश्रु नाव्रजेत् । नृपतेर्भग्नसक्थस्य श्रुत्वा तादृग्वचः पुनः ॥ २९ ॥ यश्चायं मित्रपक्षो
मे मयि जीवति निर्जितः । शोकं मे वर्धयत्येव वारिवेग इवार्णवम् । एकाग्रमनसो मेऽद्य
कुतो निद्रा कुतः सुखम् ॥ ३० ॥ वासुदेवार्जुनाभ्यां हि तानहं परिरक्षितान् । अविषह्य
तमान्मन्ये महेन्द्रेणापि मातुल ॥ ३१ ॥ न चास्मि शक्तः संयन्तुं कोपमेतं समुत्थितम् ।
न तं पश्यामि लोकेऽस्मिन् यो मां कोपान्निवर्तयेत् । इति मे निश्चिता बुद्धिरेषा साधु
मताच मे ॥ ३३ ॥ वार्त्तिकैः कथ्यमानस्तु मित्राणां मे पराभवः । पाण्डवानाञ्च विजयो
हृदयं दहतीव मे ॥ ३४ ॥ अहन्तु कदनं कृत्वा शत्रूणामद्य सौप्तिके । ततो विश्रमिता
चैव स्वप्ता च विगतज्वरः ॥ ३५ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणि मन्त्रणायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

जो मैंने टूटी जंघावाले राजाका विलापसुना वह किस निर्दयके भी चित्तको नहीं भस्म करेगा । २८ । फिर टूटी जंघावाले राजाके उसप्रकारके वचनों को सुनकर कौनसे निर्दय मनुष्य के अश्रुपात नहीं होंगे । २९ । मेरेजीवतेहुये जो यह मेरामित्र पक्ष विजयकिया यह मेरे शोकको ऐसे बढ़ाताहै जैसे जलकावेग समुद्रको बढ़ाताहै अब मेराचित्त एकाग्रहै निद्रा और सुख कहां है । ३० । हे श्रेष्ठ मैं वासुदेवजी और अर्जुनसे रक्षित उनलोगों को महाइन्द्रसे भी सहने के योग्य नहीं जानताहूं । ३१ । और इस उठेहुये क्रोधकेभी रोकनेको समर्थ नहींहूं मैं इसलोकमें ऐसा किसीकोभी नहीं देखताहूं जो मुझको मेरेक्रोधसे रहित करसके इसीप्रकार साधुओं की अंगीकृत इसमेरी बुद्धिकोभी कोईनहीं लौटासक्ता । ३३ । मेरे मित्रोंकीपराजय और पाण्डवोंकी विजय जो दूतोंने वर्णनकरी वह मेरे हृदयको भस्मकररही है। ३४। अब मैं रात्रिके युद्धमें शत्रुओंका नाशकरके फिर तापसे रहितहोकर विश्राम करके शयन करूंगा ३५ ॥

Who will not shed tears after hearing that prince with the broken thigh. The defeat of my friends during my life time increases my grief like a surge's swell My mind is made up and I can have no repose 30 Protected by Vasudev and Arjun they are irresistible even by Indra. I cannot check my rising anger. - None can check my anger or turn me from my purpose The news of my friend's defeat and enemies' victory burns my breast. I shall be able to find rest after slaying my enemie at night. " 35

कृप उवाच । शुश्रूरपि दुर्मेधाः पुरुषोऽनियतेन्द्रियः । नालं वेदयितुं कृत्स्नौ धर्मार्थौ
इति मे मतिः ॥ १॥ तथैव तावन्मेधावी विनयं यो न शिक्षते । न च किञ्चन जानाति
सोऽपि धर्मार्थनिश्चयम् ॥ २ ॥ चिरं ह्यपि जडः शूरः पण्डितं पर्युपास्य ह । न स धर्मान्
विजानाति दर्वी सूपरसानिव ॥ ३ ॥ मुहूर्त्तमपि तं प्राज्ञः पण्डितं पर्युपास्य ह । क्षिप्रं
धर्मान् विजानाति जिह्वा सूपरसानिव । शुश्रूषुस्त्वेव मेधावी पुरुषो नियतेन्द्रियः ।
जानीयादागमान् सर्वान् ग्राह्यञ्च न विरोधयेत् ॥ ५ ॥ अनेयस्त्ववमानी यो दुरात्मा
पापपूरुषः । दिष्टमुत्सृज्य कल्याणं करोति बहु पापकम् ॥ ६ ॥ नाथवन्तं तु सुहृदः प्रति
षेधन्ति पातकात् । निवर्त्तते तु लक्ष्मीवान्नालक्ष्मीवान्निवर्तते ॥ ७ ॥ यथा ह्युच्चावचै
र्वाक्यैः क्षिप्तचित्तो नियम्यते । तथैव सुहृदां शक्यो न शक्यस्त्ववसीदति ॥ ८ ॥ तथैव

अध्याय ५ ॥

कृपाचार्य्य बोले कि दुर्बुद्धी और अजितेन्द्रिय मनुष्य सुननेका अभिलाषी भी सम्पूर्ण धर्म अर्थ के जाननेको समर्थ नहीं है यह मेरा मत है । १ । इसीप्रकार शास्त्रों के स्मरण रखनेवाली बुद्धिकास्वामी पुरुष जबतक नीतिको नहीं सीखताहै तबतक वहभी धर्म अर्थके निश्चयको नहीं जानताहै । २ । अत्यन्त अज्ञान शूरवीर मनुष्य बहुत कालतक भी पण्डित के पास वर्त्तमान सेवाकरके धर्मोंको ऐसेनहीं जानताहै जैसे कि व्यञ्जनके स्वादुको चम्मच नहींजानताहै । ३ । ज्ञानी पुरुष एक मुहूर्त्तभी उसपंडितके पास बैठकर शीघ्रही ऐसे धर्मोंको जानताहै जैसे कि दाल आदिके स्वादुको जिह्वा जानलेती है । ४ । बुद्धिमान जितेन्द्रिय और सेवाकरने वाला पुरुष सब शास्त्रोंको जानताहै और ग्राह्य वस्तुओं से विरोध नहीं करताहै । ५ । जो दुर्बुद्धी और पापी पुरुष है वह सच्चेमार्ग में पहुँचाने के योग्य नहीं है वह उपदेश कियेहुये कल्याणको त्यागकरके बहुतसे पापों को करता है । ६ । फिर शुभचिन्तक लोग सनाथ पुरुषको पापसे निषेध करतेहैं और धनकास्वामी उसपाप से लौटताहै परन्तु धनरहित पुरुष नहींलौटताहै । ७ । जैसेकि विषयोंमें प्रवृत्तचित्त पुरुष नानाप्रकारके वचनोंसे आधीन किया जाताहै उसीप्रकार शुभचिन्तक मित्रसे समझाने के योग्यहै और जो योग्य नहीं है वह पीड़ापाताहै । ८ । इसी प्रकार

CHAPTER V.

Kritvarma said, "I think that one having no control over passions cannot be benefited by advice even if one be willing to hear, and the same is the case with one who has read the shastras but no Politics. A foolish warrior cannot learn his duties in the society of learned men as the spoon does not know the flavour of things, but a wise man learns it in an instant as the tongue does the flavour. A wise and obedient pupil having control over passions learns all the books and is willing to acquire useful things. 5. An unwise and sinful man cannot go in the right path and commits many sins by disregarding the

सुहृदं प्राज्ञं कुर्वाणं कर्म पापकम् । प्राज्ञाः संप्रतिषेधन्ति यथा शक्ति पुनः पुनः ॥ ९ ॥
स कल्याणं मनः कृत्वा नियम्यात्मानमात्मना । कुरु मे वचनं तात येन पश्चान्न तप्स्यसे ॥ १० ॥
न वधः पूज्यते लोके सुप्तानामिह धर्मतः । तथैवापास्तशस्त्राणां विमुक्तरथवाजिनाम्
॥ ११ ॥ ये च ब्रूयुस्तवास्मीति ये च स्युः शरणागताः । विमुक्तमूर्धजा ये च ये चापि
हतवाहनाः ॥ १२ ॥ अद्य स्वप्स्यन्ति पाञ्चाला विमुक्तकवचा विभो । विश्वस्ता
रजनीं सर्वे प्रेता इव विचेतसः ॥ १३ ॥ यस्तेषां तदवस्थानां द्रुह्येत पुरुषोऽनृजुः । व्यक्तं
स नरके मज्जेदगाधे विपुलेऽप्लवे ॥ १४ ॥ सर्वास्त्रविदुषां लोके श्रेष्ठस्त्वमसि विश्रुत ।
न च ते जातु लोकेऽस्मिन् सुसूक्ष्ममपि किल्बिषम् ॥ १५ त्वं पुनः सूर्यसङ्काशः श्वोभूत
उदिते रवौ । प्रकाशे सर्वभूतानां विजेता युधि शात्रवान् ॥ १६ ॥ असम्भावितरूपं हि
त्वयि कर्म विगर्हितम् । शुक्ले रक्तमिव न्यस्तं भवेदिति मतिर्मम ॥ १७ ॥

ज्ञानीलोग पापकर्म करनेवाले बुद्धिमान् मित्रको सामर्थ्य के अनुसार वारम्वार निषेध करते हैं । ९ । कल्याण में चित्त करके और मनसे बुद्धिको आधीनता में करके मेरे वचनको कर जिसके कारणसे पीछे दुःखी नहो । १० । इस लोकमें सोनेवाले मनुष्यों का मारना और इसीप्रकार शस्त्र रथ और घोड़ों से रहित मनुष्योंका मारना धर्मसे प्रशंसा नहींकिया जाताहै । ११ । जो कहे कि मैं तेरा हूं जो शरणागत होय जो खुलेहुये केश होय और जो मृतक सवारी वालाहै । १२ । हे समर्थ इन सबका मारना भी निषेध हैं कवच से रहित मृतकके समान अचेत विश्वास युक्त सब पाञ्चाल लोग सोतेहैं । १३ । जो कुटिलपुरुष उसदशावाले उन पांचाल देशियोंसे शत्रुताकरेगा वह अथाह विना नौकावाले नरकरूपी समुद्र में डूबेगा । १४ । तुम लोकके सब अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ विख्यातहो इसलोकमें कभी तुमसे छोटासा भी पाप नहीं हुआ । १५ । फिर सूर्यके समान तेजस्वी तुम प्रातःकाल के समय सूर्योदय होने और सब जीवोंके प्रकट होनेपर युद्धमें शत्रुओं के लोगोंको विजय करोगे । १६ । मेरे मतसे तुममें ऐसा निकृष्ट और निषिद्ध कर्म ऐसा असम्भवहै जैसेकि श्वेतरङ्गवालावस्त्र रक्तवर्ण-होना असम्भवहै । १७ । अश्वत्थामा

lessons taught to him. Well wishers turn a man from sin, but it is the fortunate who follows their advice. It is the duty of faithful friends to offer advice, but he who does not hear it falls into difficulty. Similarly, wise men hinder a wise friend from falling into evil ways. You should carefully listen to my advice so that you may not fall into difficulty. To slay a sleeping, unarmed and carless man is not commendable like that of a refugee or of one with dishevelled hair or of one whose beast in dead. The Panchals are sleeping without armour like dead men. He who slays them in that state, will fall into bottom less perdition. You are a famours warrior of the world and have never committed a sin. 15. You can slay your foes in day light

अश्वत्थामोवाच । एवमेतद्यथात्थ त्वं मातुलेह न संशयः तैस्तु पूर्वमयं सेतुः शतधा विदलीकृतः ॥ १८ ॥ प्रत्यक्षं भूमिपालानां भवतां चापि सन्निधौ । न्यस्तशस्त्रो मम पिता धृष्टद्युम्नेन पातितः ॥ १९ ॥ कर्णश्च पतिते चक्रे रथस्य रथिनां वरः । उत्तमे व्यसने सन्नो हतो गाण्डीवधन्वना ॥ २० ॥ तथा शान्तनवो भीष्मो न्यस्तशस्त्रो निरायुधः । शिखण्डिनं पुरस्कृत्य हतो गाण्डीवधन्विना ॥ २१ ॥ भूरिश्रवा महेष्वासस्तथा प्रायगतो रणे । क्रोशतां भूमिपालानां युयुधानेन पातितः ॥ २२ ॥ दुर्योधनश्च भीमेन समेत्य गदया रणे । पश्यतां भूमिपालानामधर्मेण निपातितः ॥ २३ ॥ एकाकी बहुभिस्तत्र परिवार्य महारथैः । अधर्मेण नरव्याघ्रो भीमसेनेन पातितः ॥ २४ ॥ विलापो भग्नसक्थस्य यो राज्ञः परिश्रुतः । वार्तिकानां कथयतां स मे मर्माणि कृन्तति ॥२५ ॥ एवमधार्मिकाः पापाः पाञ्चाला भिन्नसेतवः । तानेवं भिन्नमर्यादान् किं भवान्

बोले हे मामाजी जैसा आप कहते हैं वह निस्सन्देह वैसाही है परन्तु प्रथम उन पाण्डवोंनेही इस धर्मरूपी पुलको तोड़ाहै । १८ । शस्त्र त्यागनेवाला मेरापिता राजाओं के समक्षमें आपलोगों के भी देखतेहुवे धृष्टद्युम्न के हाथसे गिरायागया । १९ । रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण रथ चक्रके पृथ्वीमें घुसजानेपर बड़े दुःखमें डूबाहुआ वह अर्जुनके हाथसे मारागया । २० । इसीप्रकार शस्त्र त्यागनेवाले धनुष आदिकसे रहित शान्तनुके पुत्र भीष्मजी भी शिखंडीको आगेकरके अर्जुनके हाथसे मारेगये । २१ । इसीप्रकार युद्धमें शरीर त्यागने के निमित्त बैठाहुआ भूरिश्रवा राजाओं के पुकारतेहुवे सात्यकीके हाथसे मारागया । २२ । दुर्योधन गदासमेत भीमसेनके सम्मुख होकर राजाओंके देखते अधर्मसे मारागया । २३ । वहां अकेला नरोत्तम बहुत रथियोंसे घिरकर अधर्म युक्त भीमसेनके हाथसे गिरायागया । २४ । मैंने दूतोंके मुखसे टूटी जंघावाले राजाका जो विलाप सुना वह मेरे मर्मस्थलों को काटताहै । २५ । इस प्रकारसे पांचालदेशी लोग अधर्मी और पापी हैं जिनका कि धर्मका पुल टूट गयाहै आप इसप्रकारसे उन बे मर्यादवालोंकी निन्दा नहीं करतेहो

You should keep aloof from such a heinous sin as the white is from thored." To this Ashwathama replied," You speak the truth uncle. But the Paandavas have already broken the bridge of virtue. My father, who had laid aside his weapons, was slain by Dhrishtadyumn in your own presence. Karan the bravest of warriors was slain by Arjun when the wheel of his car was stuck in mud. 20. Similarly Bhishm the son of Shantanu, without arms and weapons, was slain by Arjun led by Shikhandi. In the same manner, Bhurishrava, who had exposed himself to death in the field of battle, was slain by Satyaki in spite of the remonstrations of all the warriors. Duryodhan was unjustly hit by Bhim in the presence of all the kings. He received an unfair blow when he was alone and the enemy surround

धिगिति ॥ २६ ॥ पितृहन्तृनहं हत्वा पाञ्चालान्निशि सौप्तिके । काम कीटः पतंगो वा जन्म प्राप्य भवामि वै ॥ २७ ॥ त्वरे चाहमनेनाद्य यदिदं मे चिकीर्षितम् । तस्य मे त्वरमाणस्य कुतो निद्रा कुतः सुखम् ॥ २८ ॥ न स जातः पुमांल्लोके कश्चिन्न स भविष्यति । यो मे व्यावर्त्तयेदेतां वधे तेषां कृतां मतिम् ॥ २९ ॥ सञ्जय उवाच । एवमुक्त्वा महाराज द्रोणपुत्रः प्रतापवान् । एकान्ते योजयित्वाश्वान् प्रायादभिमुखः परान् ॥ ३० ॥ तमब्रूतां महात्मानौ भोजशारद्वतावुभौ । किमयं स्यन्दनो युक्तः किञ्च कार्यं चिकीर्षितम् ॥ ३१ ॥ एकसार्थंप्रयातौ स्वस्त्वया सह नरर्षभ । समदुःखसुखौ चापि नावां शङ्कितुमर्हसि ॥ ३२ ॥ अश्वत्थामा तु संक्रुद्धः पितुर्वधमनुस्मरन् । ताभ्यां तथ्यं तदाचख्यौ यदस्यात्मचिकीर्षितम् ॥ ३३ ॥ हत्वा शतसहस्राणि योधानां निशितैः शरैः । न्यस्तशस्त्रो मम पिता धृष्टद्युम्नेन पातितः ॥ ३४ ॥ तं तथैव हनिष्यामि न्यस्तवर्माण

। २६ । मैं रात्रिके समयमेंभी युद्धमें अपने पिताके मारनेवाले पांचालोंको मारकर जन्मपाकर चाहे कीट पतङ्गभी होजाऊं । २७ । और मैं इसीहेतुसे शीघ्रता करताहूं कि जो यह मेरे कर्मकरने की इच्छाहै उसपुर शीघ्रता करनेवालेको कहां निद्रा और सुखहै । २८ । वह पुरुष लोकमें न पैदा हुआहै न होगा जो कि उन पांचाल देशियोंके मारनेमें यह मति फेरकर मुझको लौटावे । २९ । संजय बोले हे महाराज प्रतापवान् अश्वत्थामाजी इसप्रकार कहकर और एकान्त में घोड़ोंको जोड़कर शत्रुओं के सम्मुखगये । ३० । बड़े साहसी कृतवर्मा और कृपाचार्यजी दोनों उससे कहनेलगे कि किसनिमित्त रथको जोड़ाहै और क्या कर्म्मकरना चाहते हो । ३१ । हे नरोत्तम तेरे साथ हम दोनों चलेंगे एकसा सुखदुःखवाले हमदोनोंपर तुमको सन्देहकरना उचित नहीं है । ३२ । पिताके मरणको स्मरणकरते अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामाजी ने अपने मनका यह सत्य सत्य विचार उनसे वर्णन किया जो उसके चित्तमें करनेकी इच्छाथी । ३३ । तेजधारोंसे लाखों शूरवीरोंको मारकर शस्त्रोंका त्यागनेवाला मेरा पिता युद्धमें धृष्टद्युम्न के हाथसे मारागया । ३४ । निश्चय करके

ed him in large numbers. The lamentations of the king, with broken thigh, reported to me by the informers, break my heart! Why do you not blame the Panchals who are so lawless and sinful! I shall avenge my father's death by slaying the Panchals at night, though I have to be born among reptiles. I am therefore in a hurry to work and can find no rest. No earthborn man can turn me from my resolution of slaying the Panchals." Sanjaya continued, "Having said this, Ashwathama began putting his horses to the car, 30. Brave Kritvarma and Kripacharya said to him, "Why have you prepared your car and what will will you do? We must go along with you. Have no suspicion of us who are your partners in weal and woe."

मद्य वै । पुत्रं पाञ्चालराजस्य पापं पापेन कर्मणा ॥ ३५ ॥ कथञ्च निहतः पापः पाञ्चाल्यः पशुवन्मया । शस्त्रेण विजितांल्लोकान्नाप्नुयादिति मे मतिः ॥ ३६ ॥ क्षिप्रं सन्नद्धकवचौ सखड्गावात्तकार्मुकौ । मामास्थाय प्रतीक्षेतां रथवर्यौ परन्तपौ ॥ ३७ ॥ इत्युक्त्वा रथमास्थाय प्रायादभिमुखः परान् । तमन्वगात् कृपो राजन् कृतवर्मा च सात्वतः ॥ ३८ ॥ ते प्रयाता व्यरोचन्त परानभिमुखास्त्रयः । हूयमाना यथा यज्ञे समिद्धा हव्यवाहनाः ॥ ३९ ॥ ययुश्च शिबिरं तेषां संप्रसुप्तजनं विभो । द्वारदेशन्तु संप्राप्य द्रौणिस्तस्थौ महारथः ॥ ४० ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणिप्रभृतिशिबिरगमने पञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

मैं इसीप्रकार इसपापी धर्मके त्यागनेवाले राजा पांचाल के पुत्र धृष्टद्युम्नको पापकर्म्म से मारूंगा । ३५ । मेरे हाथसे पशुके समान माराहुआ धृष्टद्युम्न किसीप्रकार से भी शस्त्रोंसे विजय कियेहुये लोकों को नहीं पावेगा यह मेरामतहै । ३६ । कवचधारी खड्ग और धनुषके उठानेवाले शत्रुविजयी उत्तम रथ रखनेवाले तुम दोनों सवारहोकर मेरा मार्गदेखो । ३७ । हेराजा वह अश्वत्थामा यह कहकर रथपर सवारहोकर शत्रुओंके सम्मुखगये कृपाचार्य्य और यादवकृतवर्मा उसके पीछेचले । ३८ । शत्रुओं के सम्मुख जानेवाले वह तीनोंऐसे शोभायमानहुये जैसेकि यज्ञमें आवाहनकीहुई वृद्धियुक्त अग्निहोतीहै । ३९ । हेसमर्थ फिरवह उनके उनडेरोंमें गये जिसके मनुष्य अच्छी रीतिसे सोरहेथे और महारथी अश्वत्थामा द्वार स्थानको पाकर नियतहुये ४० ॥

Remembering his father's death, Ashwathama, much enraged, disclosed to them the scheme that he had formed in his mind, saying, "Having slain millions of warriors with his sharp arrows, my father laid aside his weapons and was slain by Dhrishtadyumn; I shall therefore slay the sinful son of the king of Panchal, Dhrishtadyumn, with unfair means. 35. Slain by me like a beast, he will no longer attain the regions open to those who do fighting. This is my opinion. Cased in armour and armed with swords and bows, you will wait for my return, destroyers of foes!" Having said this, Ashwathama mounted his car and proceeded to face the enemies. Kripacharya and Kritvarma the Yadav followed him. The three warriors going towards the enemies, looked glorious like fire. They went to the camp of the sleeping warriors and Ashwathama stopped at the entrance." 40.

धृतराष्ट्र उवाच । द्वारदेशे ततो द्रौणिमवस्थितमवेक्ष्य तौ । अकुर्वतां भोजकृपौ किं सञ्जय वदस्व मे ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । कृतवर्माणमामन्त्र्य कृपञ्च स महारथः। द्रौणिर्मन्युपरीतात्मा शिबिरद्वारमासदत् ॥ २ ॥ तत्र भूतं महाकायं चन्द्रार्कसदृशद्युतिम् । सोऽपश्यत् द्वारमावृत्य तिष्ठन्तं लोमहर्षणम् ॥ ३ ॥ वसानञ्चर्म वैयाघ्रं महारुधिरविस्रवम् । कृष्णाजिनोत्तरासङ्गं नागयज्ञोपवीतिनम् ॥ ४ ॥ बाहुभिः स्वायतैः पीनैर्नानाप्रहरणोद्यतैः । बद्धाङ्गदमहासर्पं ज्वालामालाकुलाननम् ॥ ५ ॥ दंष्ट्राकरालवदनं व्यादितास्यं भयानकम् । नयनानां सहस्रैश्च विचित्रैरभिभूषितम् ॥ ६ ॥ नैव तस्य वपुः शक्यं प्रवक्तुं वेश एव च । सर्वथा तु तदालक्ष्य स्फुटेयुरपि पर्वताः ॥ ७ ॥ तस्यास्यान्नासिकाभ्यान्तु श्रवणाभ्याञ्च सर्वशः । तेभ्यश्चाक्षिसहस्रेभ्यः प्रादुरासीन्म हार्चिषः ॥ ८ ॥ तथा तेजोमरीचिभ्यः शङ्खचक्रगदाधराः । प्रादुरासन् हृषीकेशाः

अध्याय ६ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय इसकेपीछे उनदोनों कृतवर्मा और कृपाचार्य ने द्वार स्थानपर अश्वत्थामाको नियत देखकर क्या किया उसको मुझसे वर्णनकरो । १ । संजयबोले कि वह महारथी अश्वत्थामा कृतवर्मा और कृपाचार्य को पूछकर क्रोध से पूर्णशरीर डेरे के द्वारपरगया । २ । उसने वहां जाकर एक जीवको देखा जो कि बड़े शरीर वाला चन्द्रमा और सूर्य के समान प्रकाशमान द्वारपर नियत रोम हर्षण करनेवाला । ३ । व्याघ्र चर्मधारी बड़े रुधिरको गिरानेवाले कृष्ण मृगचर्म का ओढनेवाला नागोंका यज्ञोपवीत रखनेवाला । ४ । बहुतलम्बी स्थूल और नानाप्रकारके शस्त्रों के धारण करनेवाले भुजाओं से बड़े सर्पका बाजूबन्द बांधने वाला ज्वाल समूहों से व्याप्त मुख । ५ । दंष्ट्राओं से भयानक महा भयकारी फैले हुयेहजारों विचित्र नयनोंसे शोभायमानथा । ६ । उसका शरीर और पोशाकवर्णन के योग्य नहीं जिसको कि देखकर सब दशामें पर्वतभी फटजायँ । ७ । उसके मुख नाक कान और हजारों नेत्रोंसे बड़ी २ ज्वाला निकलतीथीं । ८ । इन ज्वालाओं

CHAPTER VI

Dhritrashtra said, " What did Kripacharya and Kritvarma do on seeing Ashwathama stand at the entrance? " Sanjaya said, " Having talked with them he went at the entrance of the camp and saw there a being glorious like the sun and the moon. He was dreadful to look at, with a tiger's hide, blood thirsty, clothed with the skin of a black antelope, serpents for sacred thread, with long and muscular arms, with a huge serpent tied at his arm, attended by luminous bodies, with dreadful mouth and teeth and thousands of dreadful and wonderful eyes. His body and attire were dreadful beyond the power of speech. Sparks of fire came out from his mouth, nose, ears and thousands of his eyes and thousands of Janardans, adorned with conch discus and mace, were to be seen amid those sparks. Seeing that dreadful being thus stationed, Ashwathama fearlessly hid him with

शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ९ ॥ तदत्यद्भुतमालोक्य भूतं लोकभयङ्करम् । द्रौणिरव्यथितो
दिव्यैरस्त्रवर्षैरवाकिरत् । द्रौणिमुक्ताञ्छरांस्तांस्तु तद्भूतं महदग्रसत् ॥ १० ॥ उदधेरिव
वार्योघान् पावको वडवामुखः । अग्रसत्तांस्तदा भूतं द्रौणिना प्रहिताञ्छरान् ॥ ११ ॥
अश्वत्थामा तु संप्रेक्ष्य शरौघांस्तान्निरर्थकान् । रथशक्तिं मुमोचास्मै दीप्तामग्निशिखा
मिव ॥ १२ ॥ सा तमाहत्य दीप्ताग्रा रथशक्तिरदीर्यत । युगान्ते सूर्यमाहत्य महो
ल्केव दिवश्च्युता ॥ १३ ॥ अथ हेमत्सरुं दिव्यं खड्गमाकाशवर्चसम् । कोशात् समु
द्ववर्हाशु बिलाद्दीप्तमिवोरगम् ॥ १४ ॥ ततः खड्गवरं धीमान् भूताय प्राहिणोत्तदा ।
स तदासाद्य भूतं वै विलयं नकुलवद्ययौ ॥ १५ ॥ ततः स कुपितो द्रौणिरिन्द्रकेतुनिभां
गदाम् । ज्वलन्तीं प्राहिणोत्तस्मै भूतं तामपि चाग्रसत् ॥ १६ ॥ ततः सर्वायुधाभावे
वीक्ष्यमाणस्ततस्ततः । अपश्यत् कृतमाकाशमनाकाशं जनार्दनैः ॥ १७ ॥ तदद्भुततमं

के प्रकाश से शङ्ख चक्र गदाधारी हजारों श्रीकृष्ण प्रकट थे । ९ । उसबड़े अपूर्व सब सृष्टिके भयकारीको देखकर पीड़ासे रहित अश्वत्थामाने उसको दिव्य अस्त्रों की वर्षासे ढकदिया उस बड़े तेजरूपने अश्वत्थामाके छोड़हुये बाणोंको निगला ।१०। जैसे कि वड़वामुखनाम अग्नि समुद्रके जलसमूहों को निगलताहै उसी प्रकार उस तेजरूपने अश्वत्थामाके चलायेहुये बाणोंको निगला । ११ । फिर अश्वत्थामा ने उन अपने बाणसमूहों को निष्फल देखकर ज्वलित अग्निके समान प्रकाशित शक्तिको छोड़ा । १२ । वह प्रकाशमान रथ शक्ती उसको घायल करके ऐसे फटगई जैसे कि प्रलय के समय आकाश से गिरीहुई बड़ी उल्का सूर्य्यको घायलकरके फटजाती है । १३ । इसके पीछे सुवर्णकी मूठ आकाशवर्ण दिव्य खड्ग को ऐसेशीघ्रतापूर्वक मियानसे निकाला जैसे कि बिलसे प्रकाशित सर्पकोनिकालतेहैं । १४ । इसके पीछे बुद्धिमान्ने उत्तम खड्गको उस तेजरूपके ऊपर चलाया वह उस तेजरूपको पाकर उसके शरीरमें ऐसे चलागया जैसेकि नौला बिवरमें घुसजाता है । १५ । इसके पीछे उस क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने इन्द्रध्वजाके समान उसज्वलित रूप गदाको ऊपर चलाया उस तेजरूपने उसको भी निगला । १६ । इसके पीछे

his celestial weapons, but he swallowed all the arrows. 10. He recevied all the arrows within himself as the ocean fire soaks the waters of the ocean. Seeing his arrows fruitless, Ashwathama discharged at him a Javelin bright as fire. But the Javelin broke upon him like the meteor of pralaya after striking the sun. Then he drew out his gold-handled sword from the scabbard, like a serpent from its hole. He threw the sword at the wonderful being and it entered his body like a mungoose in a hole. 15. Then Ashwathama hurled at him his mace, but that too, disappeared. When all his weapons were thus exhausted, he looked all round and saw the whole sky full of Shri-Krishn. Destitute of arms, Ashwathama, seeing that miracle;

दृष्ट्वा द्रोणपुत्रो निरायुधः । अब्रवीदतिसन्तप्तः कृपवाक्यमनुस्मरन् ॥ १८ ॥ श्रुत्वा
मप्रियं पथ्यं सुहृदां न शृणोति यः । स शोचत्यापदं प्राप्य यथाहमतवर्त्य तौ ॥ १९ ॥
शास्त्रदृष्टानविद्वान् यः समतीत्य जिघांसति । स पथः प्रच्युतो धर्मात् कुपथे प्रतिहन्यते
॥ २० ॥ गोब्राह्मणनृपस्त्रीषु सख्युर्मातुर्गुरोस्तथा । हीनबालजडान्धेषु सुप्तभीतोत्थि
तेषु च ॥ २१ ॥ मत्तोन्मत्तप्रमत्तेषु न शस्त्राणि निपातयेत् । इत्येवं गुरुभिः पूर्वमुपदिष्टं
नृणां सदा ॥ २२ ॥ सोऽहमुत्क्रम्य पन्थानं शास्त्रदृष्टं सनातनम् । अमार्गेणैवमारभ्य
घोरामापदमागतः ॥ २३ ॥ तामापदं घोरतरां प्रवदन्ति मनीषिणः । यदुद्यम्य महत्
कृत्यं भयादपि निवर्तते ॥ २४ ॥ अशक्यञ्चैव तत कर्तुं कर्म शक्तिबलादिह । न हि
दैवाद्गरीयो वै मानुषं कर्म कथ्यते ॥ २५ ॥ मानुष्यं कुर्वतः कर्म यदि दैवान्न सिध्यति ।
स पथ प्रच्युतो धर्माद्विपदं प्रतिपद्यते । प्रतिघातं ह्यविज्ञानं प्रवदन्ति मनीषिणः । यदा
रभ्य क्रियां काञ्चिद्भयादिह निवर्तते ॥ २७ ॥ तदिदं दुष्प्रणीतेन भयं मां समुपस्थि

सब शस्त्रोंके नाशवान होने पर जहां तहां देखनेवाले अश्वत्थामाने आकाशको श्री-
कृष्णसे पूर्ण देखा । १७ । शस्त्रोंसे रहित अश्वत्थामा उस बड़े चमत्कारको देखकर
अत्यन्त दुःखी और कृपाचार्य्य के वचन को स्मरण करते बोले । १८ । कि जो
पुरुष अप्रिय और परिणाम में शुभदायक मित्रोंके वचनोंको नहीं सुनताहै वह आप
त्तिको पाकर ऐसे शोचता है जैसे कि मैं दोनोंको उल्लंघनकर अर्थात् उनके विरुद्ध
कर्म करके जो अज्ञानी शास्त्रों को उल्लंघन करके मारना चाहताहै वह धर्म्म से
च्युत होनेवाला है इसहेतुसे कुमार्गमें माराजाता है । २० । गौ ब्राह्मण राजा स्त्री
मित्र माता गुरु निर्बल विचित्र अन्धे सोनेवाले भयभीत उठेहुये मदमें उन्मत्त रो
गादिकों से अचेत और भूतादिकके आवेशसे मतवाले मनुष्यपर शस्त्र नहीं चलावे
। २२ । इसप्रकार पूर्वमें बड़े २ लोगोंके उपदेश होतेथे सो मैंने शास्त्रके बतायेहुये
सनातन मार्गको उल्लंघन करके कुमार्ग से कर्मका आरम्भ करके घोर आपत्तिको
पाया ।२३। बुद्धिमान् लोग उस आपत्तिको घोर कहतेहैं जोबड़े कर्म्मको आरम्भकरके,
भयसे मुखको फेरताहै । २४ । यहां वह कर्म्म सामर्थ्य और बलसे करने के योग्य
नहीं मनुष्य का कर्म्म दैवसे बड़ा नहीं कहाजाताहै । २५ । कर्म करनेवालेका जो

remembered the words of Kripacharya and said to himself, " He who does not give ear to the unpleasant but salutary advice of his friends, falls into misery and feels remorse like myself and is destroyed by falling into bad ways. Let no one lay hand on the cow, brahman, king, woman, friend, mother, preceptor, feeble, mad, blind, sleep, intoxicated sick and ghost-riden. 22. Thus I have set at nought the precepts of old men and have fallen into difficulty by acting against the teachings of scriptures. A calamity is termed the worst by wise men, where one beginning a great work has to recede from it. Here the work I have to do is not to be accomplished by physical power, for human

मम । न हि द्रोणसुतः संख्ये निवर्तेत कथंचन ॥ २८ ॥ इदं च सुमहद्भूतं दैवदण्डमिवोद्यतम् । न चैतदभिजानामि चिन्तयन्नपि सर्वथा ॥ २९ ॥ ध्रुवं येयमधर्मेण प्रवृत्ता कलुषा मतिः । तस्याः फलमिदं घोरं प्रतिघाताय दृश्यते ॥ ३० ॥ तदिदं दैवविहितं मम संख्ये निवर्तनम् । नान्यत्र दैवादुद्यन्तुमिह शक्यं कथंचन ॥ ३१ ॥ सोऽहमद्य महादेवं प्रपद्ये शरणं प्रभुम् । दैवदण्डमिमं घोरं स हि मे नाशयिष्यति ॥ ३२ ॥ कपर्दिनं देवदेवमुमापतिमनामयम् । कपालमालिनं रुद्रं भगनेत्रहरं हरम् ॥ ३३ ॥ स हि देवोऽत्यगाद्देवांस्तपसा विक्रमेण च । तस्माच्छरणमभ्येमि गिरिशं शूलपाणिनम् ॥ ३४ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि महाभूतदर्शने द्रौणिचिन्तायां षष्ठोऽध्यायः ६ ॥

मनुष्य कर्म दैवसे सिद्ध नहीं होताहै वह धर्ममार्ग से च्युत होकर आपत्ति को प्राप्त होताहै । २६ । ज्ञानी पुरुष भयिज्ञानको अविज्ञान कहते हैं जो इसलोक में किसीकार्यको प्रारम्भ करके फिर भयसे छोड़ देताहै सो अन्यायसे यह भय मेरे सम्मुखमें नियत हुआ द्रोणाचार्यका पुत्र युद्धमें किसी दशामेंभी मुख फेरनेवाला नहींहुआ । २८ । और यह बड़ा तेजरूप उत्पन्न दैवदण्डके समान सन्नद्धहै मैं सब प्रकारसे विचारता हुआभी इसको नहीं जानताहूं २९।निश्चयकरके जोमेरी यह पाप बुद्धि अधर्ममें प्रवृत्तहै उसका यह महाभयकारी फल घातकेलिये प्रकटहै ।३०। यह मेरा युद्ध में मुखका फेरना दैवका रचाहुआ है यहां किसी दशामें भी कोई बात उपाय करने के योग्य नहीं । ३१ । सो मैं अबसमर्थ और शरणकेयोग्य महादेवजी की शरणागत होताहूं वही मेरे इस घोर देव दण्डका नाश करैगा । ३२ । जो कि कपर्दी, देवताओं केभी देवता, उमापति, उपाधि से रहित कपालों की माला रखनेवाले रुद्र, भगनेत्र के मारनेवाले हर । ३३ । उस देवताने तप और पराक्रम से देवताओं को उल्लंघन किया इसहेतुसे मैं उस गिरीश और शूल धारी की शरण प्राप्त होताहूं ॥ ३४ ॥

---

work cannot supersede a divine one. 25 He whose work is not blessed by God, falls from the path of virtue into misery. It is a folly in the opinion of wise men. I am now in the danger of giving up my enterprise. Dronacharya's son never turned face in any battle. This glorious form is standing before me an embodiment of divine wrath, and I cannot gauge it in spite of my efforts. Surely this is the fruit of my own evil intention. 30. This defeat is ordained by god for me, and I can devise no remedy for it. I shall now seek refuge of almighty Mahadev and he will remove this divine chastisement. He is the god of gods and Har, who surpassed all the gods in asceticism and prowess. I shall therefore seek refuge of Girish the bearer of trident. 34

सञ्जय उवाच ।५८। स चिन्तयित्वा तु द्रौणिपुत्रो विशाम्पते । अवतीर्य्य रथोपस्था देवेशं प्रणतः स्थित ॥ १ ॥ द्रौणिरुवाच । उग्रं स्थाणुं शिवं रुद्रं सर्वमीशानमीश्वरम् । गिरिशं वरदं देवं भव भावनमीश्वरम् । २ ॥ शितिकण्ठमजं शक्रं दक्षक्रतुहरं हरम् । विश्वरूपं विरूपाक्षं बहुरूपमुमापतिम् ॥ ३ ॥ श्मशानवासिनं दृप्तं महागणपतिं विभुम् । खट्वाङ्गधारिणं रुद्रं जटिलं ब्रह्मचारिणम् ॥ ४ ॥ स्तुतं स्तुत्यं स्तूयमानममोघं कृत्तिवाससम् । विलोहितं नीलकण्ठमसह्यं दुर्निवारणम् ॥ ५ ॥ शुक्रं ब्रह्मसृजं ब्रह्म ब्रह्मचारिणमेव च । व्रतवन्तं तपोनिष्ठमनन्तं तपतांगतिम् ॥ ७ ॥ बहुरूपं गणाध्यक्षं त्र्यक्षं पारिषद्प्रियम् । धनाध्यक्षं क्षितिमुखं गौरीहृदयवल्लभम् ॥ ८ ॥ कुमारपितरं पिंगं गोवृषोत्तमवाहनम् । तनुवाससमत्युग्रमुमाभूषणतत्परम् ॥ ९ ॥ परं परेभ्यः परमं परं यस्मान्न विद्यते इष्वस्त्रोत्तमभर्त्तारं दिगन्त देशरक्षिणम् ॥ १० ॥ हिरण्यकवचं देवं चन्द्रमौलि

अध्याय ७ ॥

संजय बोले हे राजा वह अश्वत्थामा इसप्रकार अनेकप्रकार विचार करके रथ के बैठनेके स्थानसे उतरकर नम्रता पूर्वक देवेशके सम्मुख नियत हुआ । १ । अश्वत्थामा बोले कि मैं अत्यन्त शुद्धचित्त से अज्ञानियों के कठिन कर्म्मो करके शिवजीको पूजन करताहूं जोकि उग्र, स्थाणु, शिव, रुद्र, सर्व्व, ईशान, ईश्वर, गिरीश, वरद, देवभवभावन, ईश्वर । २ । शितिकण्ठ, अज, शुक्र, दक्ष क्रतुहर, हर विश्वरूप, विरूपाक्ष, बहुरूप, उमापति । ३ । श्मशानवासी, दृप्त, महागणपति, विभु खट्वाङ्गधारी, रुद्र, जटिल, ब्रह्मचारी । ४ । स्तुत स्तुत्य स्तूयमान, अमोघ, कृत्तिवासस, विलोहित, नीलकण्ठ, असह्य, दुर्निवारण । ५ । इन्द्र, ब्रह्मसृज, ब्रह्म, ब्रह्मचारी, व्रतवन्त, तपोनिष्ठ, अनन्त, तपतांगति । ७ । बहुरूप, गणाध्यक्ष, त्रिनेत्र, पारिषद्प्रिय, धनाध्यक्ष, क्षितिमुख, गौरीहृदयवल्लभ । ८ । कुमारपितर, पिंग, नन्दीवाहन, तनुवासस, अत्युग्र, उमाभूषणतत्पर । ९ । परसेपरे जिससे कि उत्तम श्रेष्ठ नहीं है उत्तमबाण अस्त्रोंके स्वामी दिगन्त देशरक्षिण । १० ।

CHAPTER VII

Sanjaya said, "Having reflected well, Ashwathama came down from his car and stood humbly before the god of gods. He said, "With a pure and concentrated mind, with a work difficult to be done by the ignorant, I worship the great Sthanu, Shiv, Rudra, Sharv, Ishan, Ishwar, Girish, Barad, Devbhav-bhavan, Ishwar, Shitikanth, Aj, Shukra, Dakshkrituhar, Har, Vishwarup Virupaksh, Umapati, Shmashanvasi, Dript, Mahaganpati, Vibhu, Khatwangdhari, Rudra, Jatil, *Brahmchari*, Stut, Stutya, Stooyaman, Amogh, *Krativasas*, Bilohit, Nilkanth, Asahya, Durnivaran, Indra, *Brahm*, Bratvant, Taponishth, Anant, Taptargit, *Vahurup*, Ganadhyaksh, *Trinetra*, Parishad-priya, Dharadhyaksh, *Kshitimukh*, Gauri-hridayavallabh, *Kumarpitar*, *Ping*, Nandivahan, Tanuvasas, Atyugra, Umabhushan-

विभूषणम् । प्रपद्ये शरणं देव परमेण समाधिना ॥ ११ ॥ इमां चेदापदं घोरां तराम्यद्य सुदुस्तराम् । सर्वभूतोपहारेण यक्ष्येहं शुचिना शुचिम् ॥ १२ ॥ इति तस्य व्यवसितं ज्ञात्वा योगात् कर्मणः । पुरस्तात् काञ्चनी वेदी प्रादुरासीन्महात्मनः ॥ १३ ॥ तस्यां वेद्यां तदा राजंश्चित्रभानुरजायत । दिशो विदिशः खंच ज्वालाभिरभिपूरयन् ॥ १४ ॥ दीप्तास्यनयनाश्चात्र नैकपादशिरोभुजाः । रत्नचित्राङ्गदधराः समुद्यतकरास्तथा ॥ १५ ॥ द्विपशैलप्रतीकाशाः प्रादुरासन्महागणाः । श्ववराहोष्ट्ररूपाश्च हयगोमायुगोमुखाः ॥ १६ ॥ नानावादित्रहासिनस्त्रैलोक्यं कुर्वन्ति । सह्लादयन्तस्ते विद्यमदंष्ट्राः प्रभवयु: ॥ १७ ॥ संस्तुवन्तो महादेवं भाः कुर्वाणा सुवर्चसः । विवर्धयिषवो द्रौणेर्महिमानं महात्मनः । जिज्ञासमानास्तत्तेजः सौप्तिकञ्च दिदृक्षवः ॥ १८ ॥ भीमोग्रपरिघालातशूलपट्टिशपाणयः । घोररूपाः समाजग्मुर्भूतसङ्घाः समन्ततः ॥ १९ ॥ जन

हिरण्यकवच, सृष्टिरक्षक, देव चन्द्रमौलि विभूषण ऐसे देवताके उत्तम समाधि से शरणागत होताहूं । ११ । अब जो इसघोर कठिन आपत्तिसे उत्तीर्णहोजाऊं उस दशामें इन शिवजी का मैं सर्वभूत बलि से पूजन करूंगा । १२ । उस शुभकर्मी महात्मा के निश्चयको योगसे जानकर आगे से स्वर्णमयी वेदी प्रकटहुई । १३ । हे राजा तब उस वेदी में अग्नि देवता प्रकट हुए उसने दिशा विदिशाओं को और आकाशको अपनी ज्वालाओंसे पूर्णकिया उस स्थानपर प्रकाशित मुख और नेत्र रखनेवाले बहुतसे चरण शिर और भुजावाले रत्नजटित बाजूबन्दधारी ऊंचा हाथ करनेवाले । १५ । द्वीप और पर्वतकेस्वरूप बहुगण प्रकटहुये जोकि कुत्ता बाराह और ऊंटकी सूरत घोड़े बैल और शृगाल के समान मुख रखनेवाले । १६ । सब लोकको भयभीत करते बड़े प्रकाशको उत्पन्नकरते महादेवजी की स्तुति करते बड़े तेजस्वी उस अश्वत्थामाके सम्मुखगये । १७ । महात्मा अश्वत्थामाकी महिमा के बढ़ानेके अभिलाषी और उसके तेजको जानना चाहते रात्रियुद्ध देखनेके उत्कण्ठित । १८ । ऐसे भयानक और उग्र प्रभाववाले शूल पट्टिश शस्त्रोंको हाथमें रखनेवाले घोररूप भूतगण चारोंओरसे आपहुंचे । १९ । जोकि अपने दर्शनसे तीनों लोकोंके

tatpar, above all and best fal, possessor of good weapons, Digat & Deshiakshin, 10. Hiranyakavach, Srishtirakshak, Dev, Chandramauli, I bow to you with all my heart. I shall worship Shiv with the offering of my whole body, to get rid of this trouble." With these thought in the mind of that virtuous man, a gold altar stood before him. Then god Agni, appearing on that alter, illumined the sky and the directions. There also appeared glorious faces and eyes, with many feet, heads, jewelled arms upraised, 15 huge bodies like hills and isles, having the appearances of dogs, hogs, camels, horses, oxen and jackals, terrifying all the world, diffusing light and praising Mahadev. They all came before Ashwathama, to glorify him as well as to know his strength and desirous of seeing the battle at night

मधुमंत ये क्रम ऐडे कनकस्वाति दयानत् । भयं द्रौणिरपि व्यथां न चकार महाबल
॥ २० ॥ तत सोऽद्येन मनसा द्रौणिरग्र प्रतापवान् । उपहार महामन्युरुपहारमथात्मना
हरद्व ॥ २१ ॥ ते रुद्र गौद्रकर्माणं रौद्रैः कर्मभिरच्युत । अभिष्टुत्य महात्मानमित्युवाच.
कृताञ्जलि ॥ २२ ॥ द्रौणिरुवाच । इममात्मानमद्याहं जातमाङ्गिरसे कुले । स्वग्नौ
भगवन् प्र तू जुहोम्येष वलिनं ॥ २३ ॥ भव भक्त्या महादेव परमेण समाधिना।
अस्यामापदि विश्वात्मन्नुपाकुर्मि तवाग्रतः ॥ २४ ॥ त्वयि सर्वाणि भूतानि सर्वभूतेषु
चासि वै । गुणानां हि प्रधानानामैकत्वं त्वयि तिष्ठति ॥ २५ ॥ सर्वभूताश्रय विभो
हविर्भूतमवस्थितम । प्रतिगृहाण मां देव यद्यशक्याः परे मया ॥ २६ ॥ इत्युक्त्वा द्रौणि
रास्थाय तां वेदीं दीप्तपावकाम । सत्त्वस्थानं तमात्मानं कृष्णवर्त्मन्युपाविशत् ॥ २७ ॥

भयको उत्पन्नकरें उनको देखकर महाबली अश्वत्थामाजी ने भी पीड़ा नहीं की । २० । इसके पीछे बड़े क्रोधयुक्त प्रतापवान अश्वत्थामाने सोमदेवता से सम्बन्ध रखनेवाले मन्त्रके द्वारा शरीररूप भेंटको अर्पण किया । २१ । हाथ जोड़ेहुये अश्वत्थामा उम्र रुद्र कर्मवाले अजेय महात्मा रुद्रजी को उनके रुद्रकर्मों से स्तुति करके यह वचन बोले । २२ । हे भगवन् अब मैं अंगिरावंश में उत्पन्न होनेवाले इस शरीरको आत्मरूपी अग्निमें हवन करताहूं मुझ बलिरूप को आप अंगीकार करिये । २३ । हे विश्वात्मन महादेवजी मैं इस आपत्तिमें आप की भक्ति और परम समाधि से आपके आगे अर्पण करताहूं । २४ । सबजीव आप में हैं और निश्चय करके सबजीवों में आपही हैं और आप में प्रधान गुणों की एकत्वता भी नियतहै । २५ । हे सब जीवोंके रक्षास्थान समर्थ देवता मुझ नियत हव्य रूपको स्वीकारकरो जो शत्रु मुझसे अजेय हैं । २६ । अश्वत्थामाजी यह कहकर और शरीरकी प्रीतिको त्यागकरके उस वेदीपर जिसपर अग्नि प्रकाशितथी चढ़कर अग्निमें प्रवेश करगये । २७ । साक्षात् भगवान महादेवजी हंसतेहुये बस ऊंचे हाथ

They bore dreadful arms and weapons and gathered there from all sides. They could terrify the three worlds with their appearances but Ashwathama remained firm there. Then glorious Ashwathama in great rage, with incantations of hymns relating to Som, offered his own body. 21 Having praised Rudra of dreadful prowess, with clasped hands, he said, "I, born in the family of Angira, offer a sacrifice of my own body. Pray accept me as such. I offer, myself, with full devotion, at this time of distress. All beings live in you and you are surely within all beings. You are the seat of all virtue. 25. Refuge of all beings, accept me as a victim of sacrifice, if I cannot conquer my foes." Having said this, Ashwathama gave up all love for his own body and ascended the altar of burning fire. Seeing him thus enter fire with upraised arms, Shiv said to him with a smile, "I,

तमुद्यतमुदीक्ष्येत्थं दृष्ट्वा ह्यविकल्पाहितात्मनम् । अब्रवीद्भगवान् साक्षान्महादेवो हसन्निव
॥ २८ ॥ सत्यशौचार्जवत्यागैस्तपसा नियमेन च । क्षान्त्या भक्त्या च धृत्या च
बुद्ध्या च वचसा तथा ॥ २९ ॥ यथावदहमाराद्धः कृष्णेनाक्लिष्टकर्मणा । तस्मादिष्ट
तमः कृष्णादन्यो मम न विद्यते ॥ ३० ॥ कुर्वता तस्य सम्मानं त्वां च जिज्ञासता
मया । पाञ्चालाः सहसा गुप्ता मायाश्च बहुशः कृताः ॥ ३१ ॥ कृतस्तस्यैव सम्मानः
पाञ्चालान् रक्षता मया । अभिभूतास्तु कालेन नैषामद्यास्ति जीवितम् ॥ ३२ ॥ एवमुक्त्वा
महात्मानं भगवानात्मनस्तनुम् । आविवेश ददौ चास्मै विमलं खड्गमुत्तमम् ॥ ३३ ॥
अथाविष्टो भगवता भूयो जज्वाल तेजसा । वेगवांश्चाभवद्युद्धे देवसृष्टेन तेजसा ॥ ३४ ॥
तमदृश्यानि भूतानि रक्षांसि च समाद्रवन् । अभितः शत्रुशिबिरं यान्तं साक्षा
दिवेश्वरम् ॥ ३५ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणि शिबिरप्रवेशे सप्तमोऽध्यायः ७ ॥

चेष्टारहित इसप्रकार नियत देखकर बोले । २८ । मैं जिसप्रकार पुण्यकर्मा श्रीकृष्णजी की सत्यता पवित्रता सरलता त्याग तप नियम शान्ति भक्ति धैर्य बुद्धि और वचन से आराधन कियागया और उस श्रीकृष्ण से अधिकतम मेरा कोई प्रिय नहीं है । ३० । हे तात तुझको जाननेके अभिलाषी श्रीकृष्णजी का मान करनेवाले मैंने अकस्मात् पांचालदेशियों की रक्षाकरी और बहुतसी माया प्रकटकीं । ३१ । पांचालदेशियों के रक्षाकरनेवाले मैंने उन श्रीकृष्णजी का मानकिया परन्तु अब वह पांचालदेशी काल से पराजय हुये हैं इससे अब इन का जीवन नहीं है । ३२ । भगवानने उस महात्मा से ऐसा कहकर अपने शरीरको उसमें प्रवेश किया और उसको बहुत निर्म्मल और उत्तम खड्ग दिया । ३३ । फिर भगवान्के प्रवेशित शरीरसे अश्वत्थामाजी तेजसे ज्वलित अग्निरूप हुये और देवताके दिये हुये तेजसे युद्धमें वेगवान्हुये ३४ साक्षात् ईश्वरकेसमान शत्रुके डेरे में जानेवाले उन अश्वत्थामाजीके पीछे दृष्टिसे गुप्त जीव और राक्षस चारों ओरसे चले ॥ ३५ ॥

was worshipped with truth, holiness, straightforwardness, resignation, tap, vows, devotion, patience and wisdom of Shri Krishn, who does things with the greatest ease, and surely I hold none dearer than him. Desirous of knowing these and wishing to keep the prestige of Shri Krishn, I protected the Panchals and produced many illusions, I had regard to the prestige of Shri Krishn in protecting the Panchals. But the Panchals are conquered by Time and their days are numbered." Having said this, Bhagwan entered his body and made him the present of a good sword. Then Ashwathama became glorious like fire and endued with divine energy was ready to fight. Going like Ishwar himself into the enemy's camp, Ashwathama was followed by invisible beings and rakshases." 35.

धृतराष्ट्र उवाच । तथा प्रयाते शिविरं द्रोणपुत्रे महारथे । कच्चित् कृपश्च भोजश्च भयार्त्तौ न न्यवर्त्तताम् ॥ १ ॥ कच्चिन्न वारितौ क्षुद्रै रक्षिभिर्नोपलक्षितौ । असह्यमिति मन्वानौ न निवृत्तौ महारथौ ॥ २ ॥ कच्चिदुन्मथ्य शिविरं हत्वा सोमकपाण्डवान् । दुर्य्योधनस्य पदवीं गतौ परमिकाम् रणे ॥ ३ ॥ पाञ्चालैर्निहतौ वीरौ कच्चिन्न स्वपतां क्षितौ । कच्चित्ताभ्यां कृतं कर्म तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ ४ ॥ सञ्जय उवाच तस्मिन् प्रयाते शिविरं द्रोणपुत्रे महात्मनि । कृपश्च कृतवर्मा च शिविरद्वार्य्यतिष्ठताम् ॥ ५ ॥ अश्वत्थामा तु तौ दृष्ट्वा यत्नवन्तौ महारथौ । प्रहृष्टः शनकै राजन्निदं वचनमब्रवीत् ॥ ६ ॥ यत्तौ भवन्तौ पर्य्याप्तौ सर्वक्षत्रस्य नाशने । किं पुनर्योधशेषस्य प्रसुप्तस्य विशेषतः ॥ ७ ॥ अहं प्रवेक्ष्ये शिविरं चरिष्यामि च कालवत् । यथा न कश्चिदपि वां जीवन्मुच्येत मानवः । तथा भवद्भ्यां कार्य्यं स्यादिति मे निश्चिता मतिः ।८। इत्युक्त्वा

अध्याय ८ ॥

धृतराष्ट्र बोले डेरे में महारथी अश्वत्थामा के जानेपर भयसे पीड़ामान कृपाचार्य्य और कृतवर्मा तो लोटकर नहीं चलेआये । १ । कहीं नीच रक्षकों से तो नहीं रोकेगये और क्या उनलोगों ने उनको नहींदेखा दोनों महारथी रात्रिके युद्ध को असह्य जानकर तो नहीं लौटे २ डेरेको मथकर और युद्धमें सोमक पाण्डवों को मारकर दुर्य्योधन की उत्तम पदवीको प्राप्तकिया । ३ । क्या वह दोनोंवीर पांचाल देशियों के हाथ से मृतक होकर पृथ्वीपर शयन करनेवाले तो नहीं हुये अथवा कोई उनदोनों ने कर्म भी किया हे सञ्जय वह सब मुझसे कहो ।४। सञ्जय बोले कि डेरे में उस महात्मा अश्वत्थामा के जानेपर कृपाचार्य्य और कृतवर्मा डेरे के द्वारपर नियतरहे । ५ । हे राजा फिर अश्वत्थामाजी उनदोनों महारथियों को उपाय करनेवाला देखकर बड़े प्रसन्न होकरयह वचन बोले । ६ । उपाय करनेवाले आप सब क्षत्रियों के नाश करने को समर्थ हो मुख्यकर शेष बचे और सोतेहुये शूरवीरों के मारनेको फिर क्यों नहीं समर्थहोगे । ७ । मैं डेरेमें प्रवेश करूंगा और कालकेसमान घूमूंगा इस द्वारपर आनेवाला कोईमनुष्य भी जैसे प्रकार जीवता न जानेपावे वैसाही आपको करना योग्यहै यह मेरा दृढ़ विचारहै । ८ । अश्वत्थामा

CHAPTER VIII

Dhritrashtra said, " Did Kripacharya and Kritvarma turn back out of fear, when Ashwathama had entered the camp? Were they afraid of the night attack and so turned back? Did they obey Duryodhan by destroying the Somaks and the Pandavas in their camp? Were the two warriors slain by the Panchals? Did they perform any thing? If so tell it to me, Sanjaya " 4 Sanjaya said, " Kripacharya and Kritvarma kept standing at the entrance, while Ashwathama entered the camp. Seeing them thus standing, Ashwathama was much pleased and said " You can destroy all the warriors by your prowess

प्राविशत् द्रौणि पार्थानां शिबिरं महत्। अद्वारेणाऽभ्यवस्कन्द्य निद्रायं भयमात्मनः ॥९॥ स प्रविश्य महाबाहुरुद्देशज्ञश्च तस्य ह। धृष्टद्युम्नस्य निलयं शनकैरभ्युपागमत् ॥१०॥ ते तु कृत्वा महत् कर्म श्रान्ताश्च बलवद्रणे। प्रसुप्ताश्चैव विश्वस्ताः समेता परिचारिताः ॥ ११ ॥ अथ प्रविश्य तद्वेश्म धृष्टद्युम्नस्य भारत। पाञ्चाल्यं शयने द्रौणिरपश्यत् सुप्तमन्तिकात् ॥ १२ ॥ क्षौमावदाते महति स्पर्ध्यास्तरणसंवृते। माल्यप्रवरसंयुक्ते धूपैश्चूर्णैश्च वासिते ॥ १३ ॥ तं शयानं महात्मानं विस्रब्धमकुतोभयम्। प्राबोधयत् पादेन शयनस्थं महीपते ॥ १४ ॥ सम्बुध्य चरणस्पर्शादुत्थाय रणदुर्मदः। अभ्यजानदमेयात्मा द्रोणपुत्रं महारथम् ॥ १५ ॥ तमुत्पतन्तं शयनादश्वत्थामा महाबलः। केशेष्वालम्ब्य पाणिभ्यां निष्पिपेष महीतले ॥ १६ ॥ स बलात्तेन निष्पिष्टः साध्वसेन च भारत। निद्रया चैव पाञ्चाल्यो नाशकच्चेष्टितुं तदा ॥ १७ ॥ तमाक्रम्य पदा राजन्

जी शरीरके भयको त्यागकर अन्धकारमें घुसकर पाण्डवोंके बड़े डेरे में पहुंचे ।९। उसके स्थानोंके जाननेवाले ने सुगमता से धृष्टद्युम्नके डेरेको पाया । १० । वह लौट सम्मुख होकर युद्धमें चारोंओर,दौड़नेवाले युद्धमें महाकठिन,कर्म्मों को करके बहुत श्रमित होकर सोगये थे हे भरतवंशी इसके पीछे अश्वत्थामाजी ने उस धृष्ट द्युम्न के उस स्थान में प्रवेशकरके शयनपर सोतेहुये धृष्टद्युम्न को समीपसे देखा । ११ । हे राजा स्वच्छ अत्यन्त अलसी से तैयार बहुमूल्य बिस्तरोंसे युक्त बड़ी उत्तम मालाओं से अलंकृतधूप चन्दन चूरेआदिसे सुगन्धित बड़े शयनपर सोनेवाले विश्वासी और निर्भय उस महात्मा धृष्टद्युम्न को चरणघात से जगाया । १४ । युद्धमें दुर्म्मद धृष्टद्युम्न ने चरणके घावसे जागकर बड़े बुद्धिमानने महारथी अश्व त्थामा को पहचाना । १५ । बड़े पराक्रमी अश्वत्थामाने उस शयनसे उछलनेवाले धृष्टद्युम्न को हाथोंसे बालों के द्वारा पकड़ कर पृथ्वी पर रगड़ा । १६ । हेभरत बड़ा उस बल से उस धृष्टद्युम्नका रगड़ाहुआ वह धृष्टद्युम्न भय और निद्रासे चेष्टा करने को समर्थ नहीं हुआ । १७ । हे राजा पैरोंसे उसका कण्ठ और छातीपर

why shall you be not able to slay these remaining few who are sleeping. I am about to enter the camp and to roam there like Death and I charge you not to let any one pass alive out of this entrance." Ashwathama fearlessly entered the camp by another way, and well acquainted with all its parts, he easily found the tent of Dhrishtadyumn. 10. All the warriors were asleep after the toils of the day Ashwathama entered the tent of Dhrishtadyumn and viewed him from a short distance. With a kick he awakened Dhrishtadyumn who was sleeping a sound and fearless sleep on a capacious bed, soft and precious, well-decked with garlands and sandal powder. Awakening at the blow of the kick, wise and valiant Dhrishtadyumn recognised Ashwathama. He jumped up from his bed and Ashwa-

कण्ठे चोरसि चोभयोः । नदन्तं विस्फुरन्तं च पशुमारममारयत् ॥ १८ ॥ तुदन्नखैस्तु स द्रौणिं नातिव्यक्तमुदाहरत् । आचार्य्यपुत्र शस्त्रेण जहि मा मा चिरं कृथाः । त्वत्कृते सुकृताँल्लोकान् गच्छेयं द्विपदांवर ॥ १९ ॥ एवमुक्त्वा तु वचनं विरराम परन्तपः । सुतः पाञ्चालराजस्य आक्रान्तो बलिना भृशम् ॥ २० ॥ तस्याव्यक्तां तु तां वाचं संश्रुत्य द्रौणिरब्रवीत् । आचार्य्यघातिनां लोका न सन्ति कुलपांसन । तस्माच्छस्त्रेण निधनं न त्वमर्हसि दुर्मते ॥ २१ ॥ एवं ब्रुवाणस्तं वीरं सिंहो मत्तमिव द्विपम् । मर्मस्वभ्यवधीत् क्रुद्धः पादाष्ठीलैः सुदारुणैः ॥ २२ ॥ तस्य वीरस्य शब्देन मार्य्यमाणस्य वेश्मनि । भूतमेवाऽध्यवस्यन्तो न स्म प्रव्याहरन् भयात् ॥ २३ ॥ तन्तु तेनाभ्युपायेन गमयित्वा यमक्षयम् । अध्यतिष्ठत तेजस्वी रथं प्राप्य सुदर्शनम् ॥ २४ ॥ स तस्य भवनाद्राजन् निष्क्रम्य नादयन्दिशः । रथेन शिबिरं प्रायाज्जिघांसुर्द्विषतो बली ॥ २५ ॥

दबाकर पुकारते और चेष्टाकरने को पशुकी भांति मारा । १८ । फिर नखों से पीड़ावान् करते उस धृष्टद्युम्नने धीरे अश्वत्थामासे कहा हे आचार्य के पुत्र मुझसे शस्त्रसे मारो विलम्ब मतकरो हे द्विपादों में श्रेष्ठ मैं आपके कारण से पवित्र लोकों को पाऊं । १९ । शत्रुओंका तपानेवाला बलवान् से कठिन दबाहुआ राजा पाञ्चालका पुत्र इस प्रकार के वचन को कहकर मौनहो गया । २० । इस के पीछे अश्वत्थामा उसके उस धीरे से कहेहुये वचन को सुनकर बोले हे कुलकलंकी गुरुके मारनेवाले के लोकनहीं है इसहेतुसे तुम शस्त्रसे मरने के योग्य नहींहो हेदुर्बुद्धी।२१। जैसे कि सिंह मतवाले हाथी की ओरको गर्जता है उसीप्रकार उस वीरसे इसप्रकार कहतेहुये क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने कठिन एड़ियोंसे मर्मस्थलोंपर घायल किया ।२२। उस मरनेवाले वीरके शब्दों से महलमें वह स्त्रियां भूतको निश्चय करनेवाली होकर भयसे नहीं बोलीं । २३ । वह तेजस्वी उस उपायसे उस वीरको यमलोकमें पहुँचा कर और सुन्दर दर्शन रथको पाकर नियतहुआ । २४ । हे राजा वह समर्थ और बलवान् अश्वत्थामा उसके डेरेसे निकलकर दिशाओं को शब्दायमान करते शत्रुओं के मारने के अभिलाषी रथकी सवारीके द्वारा डेरेको गये । २५ । इसके पीछेउस

thama caught him by the hair of his head and brought him down on the ground. Dashed to the ground Dhrishtadyumna was unable to move out of fear and sleep. He crushed the neck and breast of the struggling and crying prince with his feet and wanted him to kill like a beast. Scratching with his nails, Dhrishtadyumna said to him gently, "kill me with a weapon, son of acharya, and make no delay so that I may attain good regions by your grace best of men!" Hard pressed by the enemy, the valiant Panchal prince became silent. 20. Having heard the slowly uttered words of the prince, he said, "There are no good regions for despicable preceptorcides and therefore you donot deserve to die with a weapon." Having said with a leonine

अपक्रान्ते ततस्तस्मिन् द्रोणपुत्रे महारथे सहितैः रक्षिभिः सर्वैः प्रणेदुर्योषितस्तदा ॥ २६ ॥ राजानं निहतं दृष्ट्वा भृशं शोकपरायणाः । व्याक्रोशन् क्षत्रिया सर्वा धृष्टद्युम्नस्य भारत ॥ २७ ॥ तासान्तु तेन शब्देन समीपे क्षत्रियर्षभाः । क्षिप्रञ्च समनह्यन्त किमेतदिति चाब्रुवन् ॥ २८ ॥ स्त्रियस्तु राजन् वित्रस्ता भारद्वाजं निरीक्ष्य ताः । अब्रुवन् दीनकण्ठेन क्षिप्रमाद्रवतेति वै ॥ २९ ॥ राक्षसो वा मनुष्यो वा नैनं जानीमहे वयम् । हत्वा पाञ्चालराजानं रथमारुह्य तिष्ठति ॥ ३० ॥ ततस्ते योधमुख्याश्च सहसा पर्यवारयन् स तानापततः सर्वान् रुद्रास्त्रेण व्यपोथयत् ॥ ३१ ॥ धृष्टद्युम्नञ्च हत्वा स तांश्चैवास्य पदानुगान् । अपश्यच्छयने सुप्तमुत्तमौजसमन्तिके ॥ ३२ ॥ तमप्याक्रम्य पादेन कण्ठे चोरसि तेजसा । तथैव मारयामास विनर्दन्तमरिन्दमम् ॥ ३३ ॥ युधामन्युश्च संप्राप्तो

महारथी अश्वत्थामाके हटजानेपर सब स्त्रियां अपने रक्षकों समेत पुकारीं हे भरतवंशी राजाको मराहुआ देखकर अत्यन्त दुःखी सब क्षत्रिय जोकि धृष्टद्युम्नके नौकरथे पुकारे । २७ । फिर उन्हीं के शब्दों से सम्मुखही उत्तम क्षत्रिय तैयारहुये और बोले कि यह क्या बातहै । २८ । हे राजा वह भयभीत स्त्रियां अश्वत्थामा को देखकर दुःखी कंठ से बोलीं कि शीघ्रभागो । २९ । यह राक्षसहोय अथवा मनुष्य होय हम इसको नहीं जानती हैं वह राजा पांचाल को मारकर रथपर नियतहै । ३० । उसके पीछे उन उत्तम शूरोंने अकस्मात् चारोंओरसे घेरलिया उसने उन सब चढ़ाई करनेवालों को रुद्र अस्त्र से मारा । ३१ । फिर उसने सब साथियों समेत धृष्टद्युम्नको मारकर समीपही शयनपर सोनेवाले उत्तमौजसको देखा । ३२ । उसको भी पराक्रमसे कण्ठ और छाती को दबाकर उस पुकारनेवाले शत्रुविजयी को उसी प्रकार से मारा । ३३ । और युधामन्यु उसको

roar, enraged Ashwathama wounded his vital parts with his hard feet. The women of the household heard the cries of the prince, but kept quiet for fear of a goblin. Having slain the brave prince he approached his car and drove in it to slay the other men of the camp. 25. At the departure of Ashwathama the women and the attendants saw Dhrishtadyumn slain and cried out for grief. The warriors awoke at their cries and asked the reason of it. The terrified women who had seen Ashwathama, said in grief, " We donot know whether he was a rakshas or man, but surely he has slain the Panchal prince and got upon his car. Make haste to slay him. " Then the warriors surrounded Ashwathama on all sides and he slew them all with the weapon of Rudra. 31. Having slain Dhrishtadyumn and his followers he saw Uttamaujas sleeping hard by and slew him in the sameway by his feet. Thinking that he was slain by a rakshas, Yudhamanyu came there and wounded Ashwathama on the breast with

मत्वा तं रक्षसा ग्रस्तम् । गदामुद्यम्य वेगेन हृदि द्रौणिमताडयत् ॥ ३४ ॥ तमभिद्रुत्य
जग्राह क्षितौ चैनमताडयत् । विस्फुरन्तञ्च पशुवत्तथैवैनममारयत् ॥ ३५ ॥ तथा स
वीरो हत्वा तं ततोऽन्यान् समुपाद्रवत् । संसुप्तानेव राजेन्द्र तत्र तत्र महारथान् ॥३६॥
स्फुरतो वेपमानांश्च शमितेव पशून्मखे । ततो निस्त्रिंशमादाय जघानान्यान् पृथग्जनान्
॥३७॥ भागशो विचरन्मार्गानसियुद्धविशारदः । तथैव गुल्मे सम्प्रेक्ष्य शयानान्मध्यगौल्मि
कान् । श्रान्तान्न्यस्तायुधान् सर्वान् क्षणेनैव व्यपोथयत् ॥ ३८॥ योधानश्वान् द्विपांश्चैव
प्राच्छिनत् स वरासिना । रुधिरोक्षितसर्वाङ्गः कालसृष्ट इवान्तकः ॥३९॥ विस्फुरद्भिश्च
तैर्द्रौणिर्निस्त्रिंशस्योद्यमेन च । आक्षेपेण तथैवासेस्त्रिधा रक्तोक्षितोऽभवत् ॥ ४० ॥ तस्य
लोहितसिक्तस्य दीप्तखड्गस्य युध्यतः । अमानुष इवाकारो बभौ परमभीषणः ॥ ४१ ॥

राक्षस के हाथमें मृतक मानकर आया और वेगसे गदा को उठाकर अश्वत्थामा को हृदय पर घायल किया । ३४ । गदाके आघात से घायल होकर भी अश्वत्थामा युद्धमें कम्पायमान नहीं हुआ और उस के सम्मुख जाकर उसको भी पशुके समान मारा । ३५ । वह वीर उसको इसप्रकार से मारकर जहां तहां सोनेवाले दूसरे महारथियों की ओरगया । ३६ । क्रोधयुक्त ने समीपही पांचाल देशी वीरोंको दबाकर फड़कते और कांपतेहुओं को ऐसेमारा जैसे कि यज्ञमेंमारने वाला पशुओंको मारताहै । ३७ । इसके पीछे भागक्रमसे मार्गोंको घूमते खड्ग युद्धमें कुशल अश्वत्थामाने खड्गको लेकर पृथक्२ अन्य लोगों को मारा इस प्रकार गुल्म नाम सेनाके भागमें सोनेवाले मध्यस्थ और थकेहुये उन सब गुल्ममें वर्त्तमान लोगों को एक क्षण भरमें मारा । ३८ । रुधिर से लिप्त सब शरीर काल सृष्टि में अन्तक के समान अश्वत्थामा ने शूरवीर घोड़े और हाथियों को मारा वह अश्वत्थामा तीनप्रकार से रुधिर में लिप्त हुए उन चेष्टा करनेवालों से खड्ग चलानेवालों से और खड्ग के कम्पायमान होनेसे । ४० । उस रुधिर से रक्त वर्ण प्रकाशित खड्ग भारी युद्ध करनेवाले बड़े भयके उत्पन्न करनेवाले अश्वत्थामा का रूप अमानुष दिखाई पड़ा । ४१ । हे कौरव जो जाग उठे वह भी शब्द से अचेतहुये और

his mace. The latter did not shake with the blow of the mace and slew his adversary like a beast. 35 Having slain him in this manner he proceeded towards other warriors who were sleeping. He slew the sleeping Panchala hosts as beasts at a sacrifice. Then he entered other divisions and slew the warriors with his sword. He extirpated the armless and sleeping warriors in an instant. With his body drenched in blood and looking dreadful like death himself, he slew horses and elephants also. Bleeding from head to foot with the blood of the slain, his own wounds and the droppings of his sword, he was dreadful to behold with his drawn sword and was superhuman in appearance. Those who awoke with the noise, became insensible at the dreadful sight. Thinking him to be a rakshas, the warriors

ते स्वजाग्रत कौरव्य तेन शब्देन मोहिताः। निरीक्ष्यमाणा अन्योन्य दीनाँ दृष्ट्वा प्र वि
व्यथुः॥ ४२॥ तद्रूपं तस्य ते दृष्ट्वा क्षत्रियाः शत्रुकर्शन। राक्षसं मन्यमानास्तं नय
नानि न्यमीलयन्॥ ४३॥ स घोररूपो व्यचरत् कालवच्छिबिरे ततः। अपश्यद्द्रौपदी
पुत्रानवशिष्टांश्च सोमकान्॥४४॥ तेन शब्देन वित्रस्ता धनुर्हस्ता महारथाः। धृष्टद्युम्नं
हतं श्रुत्वा द्रौपदेया विशाम्पते। अवाकिरञ्छरव्रातैर्भारद्वाजमभीतवत्॥ ४६॥ ततस्तेन
निनादेन सम्प्रबुद्धाः प्रभद्रकाः। शिलीमुखैः शिखण्डी च द्रोणपुत्रं समार्दयत्॥ ४७॥
भारद्वाजः स तान् दृष्ट्वा शरवर्षाणि वर्षतः। ननाद बलवान्नादं जिघांसुस्तान्महारथा न्
॥४८॥ ततः परमसंक्रुद्धः पितुर्वधमनुस्मरन्। अवरुह्य रथोपस्थात्त्वरमाणोऽभिदुद्रुवे॥४९॥
सहस्रचन्द्रं विमलं गृहीत्वा चर्म संयुगे। खड्गं च विपुलं दिव्यं जातरूपपरिष्कृतम्।
द्रौपदेयानभिद्रुत्य खड्गेन व्यचरद्बली। ५०। ततः स नरशार्दूलः प्रतिविन्ध्यं महाहवे।

एक दूसरे को देखकर पीड़ावान् हुये । ४२ । उस शत्रु विजयी के उस रूपको देखकर-उस को राक्षस मानते उन क्षत्रियों ने अपने नेत्रों को बन्द कर लिया ।४३। इसके पीछे डेरेमें कालके समान घूमते हुये उस घोररूपने शेष बचे हुये द्रौपदी के पुत्र और सोमकों को देखा। ४४। हे राजा उस शब्दसे भयभीत धनुष हाथमें लिये द्रौपदीके पुत्रों ने धृष्टद्युम्नको मराहुआ सुनकर निर्भय के समान बाणोंके समूहोंसे अश्वत्थामाको ढक दिया । ४६ । इसके पीछे उस शब्दसे प्रभद्रक नाम क्षत्रिय जागउठे शिखण्डीने शिलीमुख बाणोंसे अश्वत्थामाको पीड़ामान किया । ४७ । वह अश्वत्थामा बाणोंकी वर्षा करनेवाले उनवीरों को देखकर उन महारथियों को मारनेका अभिलाषी बड़ा बलवान् शब्दको गर्जा फिर पिताके मरण को स्मरणकरता अत्यन्त क्रोधयुक्त रथसे उतर कर शीघ्रही सम्मुखगया । ४९ और युद्धमें हजार चन्द्रमाओं के चित्रोंसे चित्रित निर्मल ढालको लेकर सुवर्ण से निर्मित दिव्यखड्गको पकड़कर द्रौपदी के पुत्रोंके सम्मुख जाकर बलवान्ने सबको खड्गसे घायल किया । ५० । हे राजा इसके पीछे उस नरोत्तमने बड़ेयुद्धमें प्रीत

shut their eyes. Roaming in the camp, he saw the sons of Draupadi and the Somaks. Terrified at the outcry and hearing that Dhrishtadyumna was slain, the sons of Draupadi came out with their weapons and fearlessly covered Ashwathama with their arrows. 46. Thus the Prabhadraks awoke at the noise and Sikhandi wounded Ashwathama with his sharp arrows. Seeing those warriors shower their arrows and desirous of slaying them, he roared with all his might, and remembering the death of his father, he at once came down from his car and faced them. He took up his many-mooned shield and bright gold-handled sword and wounded all the sons of Draupadi. 50. Then that best of men wounded Prativindhya on the side and he fell down dead on the ground. Glorious Sutsom

कुक्षिदेशेऽवधीद्राजन्स हतो न्यपतद्भुवि ॥ ५१ ॥ खड्गेन चिच्छेद द्रौणिम् [illegible]
प्रतापवान्। पुनश्चासिं समुद्यम्य द्रोणपुत्रमुपाद्रवत् ॥ ५२ ॥ सुतसोमस्य सासिं
बाहुं छित्त्वा नरर्षभः। पुनः स्वाहनत् पार्श्वे स भिन्नहृदयोऽपतत् ॥ ५३ ॥ नाकुलिस्तु
शतानीको रथचक्रेण वीर्यवान्। दोर्भ्यामुत्क्षिप्य वेगेन वक्षस्येनमताडयत् ॥ ५४ ॥
अताडयद्द्विजस्तं तु रथचक्रे विसर्जिते। स विह्वलो ययौ भूमिं ततोऽस्यापाहरच्छिरः
॥ ५५ ॥ श्रुतकर्मा तु परिघं गृहीत्वा समताडयत्। अभिद्रुत्य यथा द्रौणिं सव्ये सफलके
भृशम् ॥ ५६ ॥ स तु तं श्रुतकर्माणमास्ये जघ्ने वरासिना। स हतो न्यपतद्भूमौ विमूढो
विकृताननः ॥ ५७ ॥ तेन शब्देन वीरस्तु श्रुतकीर्तिर्महारथः। अश्वत्थामानमासाद्य
शरवर्षैरवाकिरत् ॥ ५८ ॥ तस्यापि शरवर्षाणि चर्मणा प्रतिवार्य सः। सकुण्डलं शिरः
कायाद्भ्राजमानमपाहरत् ॥ ५९ ॥ ततो भीष्मनिहन्तारं सह सर्वैः प्रभद्रकैः। अहनत्सर्वतो

विन्ध्यको कुक्षि स्तनपर घायल किया वह मरकर पृथ्वी पर गिरपड़ा । ५१ । प्रतापवान् श्रुतसोम भाईने अश्वत्थामाको छेदकर खड्गको उठाके अश्वत्थामा के सम्मुख गया । ५२ । नरोत्तम अश्वत्थामाने श्रुतसोम की भुजाको खड्ग समेत काट कर कुक्षिपर घायल किया वहभी दुःखातुर होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । ५३ । फिर नकुलके पुत्र पराक्रमी शतानीकने रथ चक्रको दोनों भुजाओं से घुमाकर वेगसे उसकी छातीपर घायलकिया । ५४ फिर उस ब्राह्मणने चक्र काटने वाले शतानीक का घायल किया वह व्याकुल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा इसके पीछे उस के शिर को काटा । ५५ । फिर श्रुतकर्मा परिघको लेकर और दौड़कर अश्वत्थामा के सम्मुख गया और उसने उसकी वाम कुक्षिपर कठिन घायलकिया । ५६ फिर उस अश्वत्थामाने उत्तम खड्गसे उस श्रुतकर्माको मुखपर घायलकिया वह व्याकुल और अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । ५७ । फिर उसशब्दसे महारथी श्रुतकीर्ति ने अश्वत्थामा को पाकर बाणोंकी वर्षासे ढकदिया । ५८ । उस अश्वत्थामाने उस की बाणवृष्टिको ढालपर रोककर कुण्डलधारी प्रकाशित शिरको शरीरसे जुदा

pierced Ashwathama with a prass and faced him with the drawn sword. But he cut down his sworded arm and wounded him on the rib, making him fall down with the wound. Then Nakul's son, glorious Shatanik hurled a car wheel with both hands and hit him on the breast, but the brahman slew Shatanik also. 55. Then Shrutkarma faced him with a club and hit him hard on the left side. Ashwathama wounded him on the face and he fell down on earth disfigured and senseless. Shrutkarma then sent forth a shower of arrows over Ashwathama; but the latter took it on the shield and severed his adversary's glorious head, decked with ear-rings, from the body. Then with various weapons he wounds Shikhandi and the Prabhadrakas and pierced the former between the two eye brows with sharp arrows

वीर नानाप्रहरणैर्बली शिलीमुखेन चाप्लुत भ्रुवोर्मध्ये समार्पयत् ॥ ६० ॥ स तु क्रोध
समाविष्टो द्रोणपुत्रो महाबलः । शिखण्डिनम् समासाद्य द्विधा चिच्छेद सोऽसिना
॥ ६१ ॥ शिखण्डिनं ततो हत्वा क्रोधाविष्टः परन्तप । प्रभद्रकगणान् सर्वानभिदुद्राव
वेगवान् । यच्चशिष्टं विराटस्य बलं तु भृशमाद्रवत् ॥ ६२ ॥ द्रुपदस्य च पुत्राणां
पौत्राणां सुहृदामपि । चकार कदनं घोरं दृष्ट्वा दृष्ट्वा महाबल ॥ ६३ ॥ अन्यान
न्यांश्च पुरुषानभिसृत्याभिसृत्य च । न्यकृन्तदसिना द्रौणिरसिमार्गविशारद ॥ ६४ ॥
कालीं रक्तास्यनयनां रक्तमाल्यानुलेपनाम् । रक्ताम्बरधरामेकां पाशहस्तां कुटुम्बिनीम्
॥ ६५ ॥ ददृशु कालरात्रिं ते गायमानामवस्थिताम् । नराश्वकुञ्जरान् पाशैर्बद्ध्वा घोरे
प्रतस्थुषीम् ॥ ६६ ॥ हरन्तीं विविधान् प्रेतान् पाशबद्धान् विमूर्द्धजान् । तथैव च सदा
राजन्न्यस्तशस्त्रान् महारथान् ॥ ६७ ॥ स्वप्ने सुप्तान्नयन्तीं तां रात्रिष्वन्यासु मारिष ।

। ५९ । उसके पीछे उस पराक्रमीने सब ओरसे नानाप्रकार के शस्त्रों के द्वारा वीर
शिखण्डीको सब प्रभद्रकों समेत घायल किया उस शिखण्डी ने दूसरे शिलीमुखसे
दोनों भ्रकुटियों के मध्यमें घायलकिया । ६० । फिर क्रोधसेपूर्ण उस बडेबलवान्
अश्वत्थामा ने शिखण्डी को पाकर खड्गसे दोखण्ड करदिया । ६१ । फिर क्रोधसे
पूर्ण शत्रुओंका तपानेवाला उस बडे वेगवान शिखण्डी को मारकर प्रभद्रकों के
सब समूहों के सन्मुख गया और राजा विराटकी जो सेना शेष थी उसपर भी
चढ़ाई करनेवाला हुआ । ६२ । बड़े बलवान् ने देख देखकर द्रुपदके पुत्र पौत्र
और मित्रों काभी घोर नाशकिया । ६३ । खड्ग मार्ग में कुशल अश्वत्थामाने
अन्य लोगों केभी सन्मुख जाजाकर उनको खड्ग से काटा । ६४ । उनलोगों ने
रक्तनेत्र रक्तमाला चन्दनसे अलङ्कृत लाल पोशाकधारी पाशहाथमें लडके बालोंके
रखनेवाली अकेलीकाली । ६५ । गातीहुई नियत कालरात्रिको देखा हे राजा
मनुष्य घोडे और हाथियोंको पाशोंसे बांधकर जानेके अभिलाषी घोररूप । ६६ ।
बालों के पृथक् पाशों में बँधेहुये बहुतप्रकारके मृतकों के लेजानेवाले और इसी
प्रकार अन्य रात्रियों में । ६७ । स्वप्नावस्था में सदैव वैसाही सोतेहुये महारथियों

60. Then in his rage he cut Shikhandi into two with his sword. Having slain him, he faced the Prabhadraks and attacked the remnant of the Panchal warriors. He selected the sons and grand sons of Drupad from among them and destroyed them with great force. Clever in swordsmanship he cut them down with his sword. They saw the black Death with red eyes red garlands adorned with sandal and red dress, noose in hand and accompanied by her offspring singing songs. The warriors had often seen her in their dreams, carrying the dead warriors and beasts in her noose and accompanied by Aswatama. They had from the beginning of the war seen her accompanied by Ashwatama in their dreams. With leaning rears

ददृशुर्योधमुख्यास्ते प्रन्तं द्रौणिञ्च सर्वदा ॥ ६८ ॥ यतः प्रभृति संग्रामः कुरुपाण्डव सेनयोः। ततः प्रभृति तां कन्यामपश्यन् द्रौणिमेव च ॥ ६९ ॥ तांस्तु दैवहतान् पूर्वं पश्चाद्द्रौणिर्न्यपातयत्। त्रासयन् सर्वभूतानि विनदन् भैरवान्रवान् ॥ ७० ॥ तदनुस्मृत्य ते वीरा दर्शनं पूर्वकालिकम्। इदं तदित्यमन्यन्त दैवेनोपनिपीडिताः ॥ ७१ ॥ ततस्तेन निनादेन प्रत्यबुध्यन्त धन्विनः। शिबिरे पाण्डवेयानां शतशोऽथ सहस्रशः ॥ ७२ ॥ सोऽच्छिनत् कस्यचित् पादौ जघनञ्चैव कस्यचित्। कांश्चिद्भिनद् पार्श्वेषु कालसृष्ट इवान्तकः ॥ ७३ ॥ अत्युग्रप्रतिपिष्टैश्च नदद्भिश्च भृशातुरैः। गजाश्वमथितैश्चान्यैर्मही कीर्णाभवत् प्रभो ॥ ७४ ॥ क्रोशतां किमिदं कोऽयं कः शब्दः किन्नु किं कृतम्। एवं तेषां तदा द्रौणिरन्तकः समपद्यत ॥ ७५ ॥ अपेतशस्त्रसन्नाहान् संरब्धान् पाण्डुसृञ्जयान्। प्राहिणोन्मृत्युलोकाय द्रौणिः प्रहरतां वरः ॥७६॥ ततस्तच्छब्दवित्रस्ता उत्पतन्तो भयातुराः। निद्रान्धा नष्टसंज्ञाश्च तत्र तत्र निलिल्यिरे ॥ ७७ ॥

लेजानेवाली उस कालीको और उस मारनेवाले अश्वत्थामाको उत्तम शूरवीरों ने सदैव देखा ॥ ६८ ॥ जबसे कि कौरवीय और पाण्डवीय सेनाका युद्ध जारीहुआ तबसे लेकर उस कन्याको औरअश्वत्थामा को स्वप्न में देखा। ६९। युद्धमें सब जीवधारियों को डराते और भयानक शब्दोंको गर्जते अश्वत्थामा ने प्रथम दैव से हतेहुये उन लोगोंको पीछेसे गिराया। ७०। दैवसे पीड़ित उन वीरोंने उसपूर्व समयके देखेहुये स्वप्नको स्मरणकरके माना कि यह वही बातहै। ७१। इसके पीछे पाण्डवोंके डेरेमें वह सैकड़ों और हजारों धनुषधारी उस शब्दसे जागउठे ७२ कालसे प्रवृत्त मृत्युके समान उस अश्वत्थामाने किसीके पैरोंको काटा किसी के जघन को और कितने ही को कक्षिपर छेदा। ७३। हे प्रभु कठिन मर्दन कियेहुये शब्द करनेवाले मतवाले हाथी और हाथी घोड़ों से मथेहुये अन्य मनुष्यों से यह पृथ्वी आच्छादित होगई। ७४। जो लोग कि इसप्रकार से पुकारते थे कि यह क्याहै कौनहै कैसाशब्द होरहाहै उन सब लोगोंको प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ अश्वत्थामाने पाण्डवोंके नातेदार और सृंजीलोग जो कि शस्त्र और कवचों से रहित थे उनकोभी यमलोकमें भेजा। ७६। इस के पीछे उस शब्द से भयभीत उछलते और भयसे पीड़ावान् निद्रासे अंधे अचेतहोकर वहलोग जहां तहां गुप्त होगये। ७७। और ऊरुस्तम्भ मूर्छासे निर्बल भयभीत कठोर शब्द करते

Ashwathama slew the warriors whose days were numbered. 70. The warriors, afflicted by Fate, remembered their dreams and realised them. Then hundreds and thousands of archers awoke in the Pandav camp with that noise, but Ashwathama, like an embodiment of Death, cut their feet, thighs and ribs. The ground was covered with the shrieking mad elephants and corpses of men crushed by elephants and horses. Ashwathama slew the Srinjis and other allies of the Pandavas who were asking in wonder, "Who is it! What is this noise &c!" Then afraid of the weapons and blind with sleep,

ऊरुस्तम्भगृहीताश्च कश्मलाभितौजसः । विनदन्तो भृशं त्रस्ताः समासीदन परस्परम्
॥ ७८ ॥ ततो रथं पुनर्द्रौणि रास्थितो भीमनिस्वनम् । धनुष्पाणिः शरैरन्यान् प्रैषयद्वै
यमक्षयम् ॥ ७९ ॥ पुनरुत्पततश्चापि दूरादपि नरोत्तमान् । शूरान् संपततश्चान्यान्
कालरात्र्यै न्यवेदयत् ॥ ८० ॥ तथैव स्यन्दनाग्रेण प्रमथन् स विधावति । शरवर्षैश्च
विविधैरवर्षच्छात्रवांस्ततः ॥ ८१ ॥ पुनश्च सुविचित्रेण शतचन्द्रेण चर्मणा ॥ तेन
चाकाशवर्णेन तथाचरत् सोऽसिना ॥ ८२ ॥ तथा स शिबिरं तेषां द्रौणिराहवदुर्मदः ।
व्यक्षोभयत राजेन्द्र महाह्रदमिवद्विपः ॥ ८३ ॥ उत्पेतुस्तेन शब्देन योधा राजन् विचे
तसः । निद्रार्ताश्च भयार्ताश्च व्यधावन्त ततस्ततः ॥ ८४ ॥ विस्वरं चुक्रुशुश्चान्ये
बह्वबद्धं तथावदन् । न च स्म प्रत्यपद्यन्त शस्त्राणि वसनानि च ॥ ८५ ॥ विमुक्तकेशा
श्चाप्यन्ये नाभ्यजानन् परस्परम् । उत्पतन्तोऽपतञ्छ्रान्ताः केचित्तत्राभ्रमंस्तथा ॥ ८६ ॥

हम पीड़ावान हुये ।७८। इसके पीछे धनुष हाथमें लिये अश्वत्थामा ने भयकारी रथपर सवार हो कर बाणोंसे अन्य मनुष्यों को भी यमलोक में पहुंचाया । ७९ । फिर दूर से उछलते नरोत्तम आतेहुये दूसरे शूरोंकोभी कालरात्रि के आधीनकिया उसी प्रकार रथकी नोकसे मथता हुआ वह दौड़ताथा इस के पीछे बहुत प्रकार की बाणवृष्टियों से शत्रुओं के मनुष्योंपर वर्षा करने लगा । ८१ । फिर बड़ी विचित्र सूर्य चन्द्रमा रखनेवाली ढाल और उस आकाशवर्ण खड्ग के द्वारा भ्रमण करनेलगा । ८२ । हे राजेन्द्र उस युद्धमें दुर्मद अश्वत्थामाने उन्हों के डेरेको भी ऐसे छिन्न भिन्न किया जैसे कि हाथी बड़े हृदको करदेता है । ८३ । हेराजा उस शब्दसे अचेत शूरवीर उठे और निद्रा और भयसे पीड़ावान होकर इधरउधर को दौड़े । ८४ । इसीप्रकार असभ्य वचन कहतेहुये अन्यलोग बड़े शब्दसे पुकारे और शस्त्र और वस्त्रोंको नहीं पाया । ८५ । बहुत से खुलेहुये बालवाले मनुष्योंने परस्पर नहीं पहचाना तब वहां उछलतेहुये कितनेही मनुष्य थककर गिरपड़े को और कितनेही भ्रमण करनेलगे । ८६ । कितनही लोगोंने विष्ठाकोछोड़ा

people hid themselves here and there. We *too*, were terrified and riveted to the spot where we stood Then Ashwathama slew other warriors with the arrows shot from his car. He slew those whom he saw coming near. 80. He ran his car among them, showering arrows and crushing them under wheels. Then he roamed with his shield studded with suns and moons, carrying the bright sword in his hand. He upset their camp as an elephant does a lake. The warriors awoke with the noise and ran away here and there in their sleep and fear. Others uttered obscene words, but could not get their arms and armour in the hurry of the moment. 85. Others with dishevelled hair did not know one another. Some fell down with exhaustion, while others ran here and there. Some dropped urine. Elephants

पुरीषमसृजन् केचित् केचिन्मूत्रं प्रसुस्रुवुः । बन्धनानि च राजेन्द्र सञ्छिद्य तुरगा द्विपाः ॥ ८७ ॥ समं पर्य्यपतंश्चान्ये कुर्वन्तो महदाकुलम् । तत्र केचिन्नरा भीता व्यलीयन्त महीतले । तथैव तान्निपतितानपिंषन् गजवाजिनः ॥ ८८ ॥ तस्मिंस्तथा वर्त्तमाने रक्षांसि पुरुषर्षभ । हृष्टानि व्यनदन्नुच्चैर्मुदा भरतसत्तम ॥ ८९ ॥ स शब्दः पूरितो राजन् भूतसंघैर्मुदा युतैः । अपूरयद्दिशः सर्वा दिवं चातिमहास्वनः ॥ ९० । तेषामार्त्तस्वरं श्रुत्वा वित्रस्ता गजवाजिनः । मुक्ताः पर्य्यपतन् राजन् मृद्नन्तः शिबिरे जनान् ॥ ९१ ॥ तैस्तत्र परिधावद्भिश्चरणोदीरितं रजः । अकरोच्छिबिरे तेषां रजन्यां द्विगुणं तमः ॥ ९२ ॥ तस्मिंस्तमसि सञ्जाते प्रमूढाः शिबिरे जनाः । नाजानन् पितरः पुत्रान् भ्रातॄन् भ्रातर एव च ॥ ९३ ॥ गजा गजानतिक्रम्य निर्मनुष्या हया हयान् । अताडयंस्तथाभञ्जंस्तथामृद्नंश्च भारत ॥ ९४ ॥ ते भग्नाः प्रपतन्तश्च निघ्नन्तश्च परस्परम् । न्यपातयंस्तथा चान्यान् पातयित्वा तथापिषन् ॥ ९५ ॥ विचेतसः सनिद्राश्च तमसा चावृता नराः ।

कितनोंही मूत्रका करदिया हे राजेन्द्र हाथीघोड़े बन्धनोंको तोड़कर । ८७ । चारों ओरको दौड़े और कोई महाव्याकुलता उत्पन्न करनेवालेहुये वहांकितनेही भयभीत आदमी पृथ्वीपर सोगये उसीप्रकार उन पड़ेहुओं को हाथी और घोड़ों ने मर्दन किया । ८८ । हे भरतर्षभ पुरुषोत्तम इसप्रकार उस नाशके वर्त्तमान होनेपर राक्षस लोग प्रसन्न होकर बड़े शब्दसे गर्जे । ८९ । हे राजा प्रसन्नचित्त जीवोंके समूहों से किया वह शब्द सर्वत्र व्याप्त होगया उसबड़े शब्दने सबदिशा और आकाशको पूर्णकिया । ९० । उन्होंके पीड़ित शब्दोंको सुनकर भयभीत और बन्धनोंसे छुटे हाथीघोड़े डेरेमें मनुष्यों को खूंदते मर्दन करते चारोंओर को दौड़े । ९१ । वहांउन चारोंओर दौड़नेवालों के चरणों से उठीहुई धूलने रात्रिकेसमय उन्होंके डेरोंमें दूने अन्धकारको उत्पन्न किया । ९२ । उस अन्धकार के उत्पन्न होनेपर मनुष्य सब ओरसे अज्ञान हुये पिताओंने पुत्रोंको नहीं जाना भाइयों ने भाइयों को नहींजाना । ९३ । हाथियों ने हाथियोंको सवारों से रहित घोड़ोंने घोड़ोंकोदबाकर घायल और टूटे भगकिया उसीप्रकार मर्दन करते परस्पर मारतेहुये वहसब घायल गिर पड़े इसीप्रकार अन्योंको भी गिराकर मर्दन किया । ९५ । अचेत निद्रासे युक्त

and horses broke their ropes and ran in all directions. Some men lay on earth out of fear and were crushed down by elephants and horses. During that destruction the rakshases roared dreadfully. There was a hubbub all round and the noise spread through all directions. 90. At the sounds of their wailings, elephants and horses broke their ropes and ran away crushing and trampling the men in their way. The dust raised by their feet made the night doubly dark. People lost their senses in that darkness. Fathers did not know their sons and brothers did not recognise brothers. Elephants wounded elephants and the riderless horses wounded and crushed horses. 95 Insensible with sleep and darkness, they slew one

जघ्नुः स्वानेव तत्राथ कालेनाभिप्रचोदिताः ॥ ९६ ॥ त्यक्त्वा द्वाराणि च द्वास्थास्तथा गुल्मानि गौल्मिकाः । प्राद्रवन्त यथाशक्ति कांदिशीका विचेतसः ॥ ९७ ॥ विप्रनष्टाश्चतेऽन्योन्यं नाजानन्त तथा विभो । क्रोशन्तस्तात पुत्रेति दैवोपहतचेतसः ॥ ९८ ॥ पलायतां दिशस्तेषां तानप्युत्सृज्य बान्धवान् । गोत्रनामभिरन्योन्यमाक्रन्दन्त ततो जनाः ॥ ९९ ॥ हाहाकारञ्च कुर्वाणाः पृथिव्यां शेरते परे । तान् बुद्ध्वा रणमध्येऽसौ द्रोणपुत्रो न्यपातयत् ॥ १०० ॥ तत्रापरे बध्यमाना मुहुर्मुहुरचेतसः । शिविरान्निष्पतन्ति स्म क्षत्रिया भयपीडिताः ॥ १०१ ॥ तांश्च निष्पततस्त्रासाच्छिबिराज्जीवितैषिणः । कृतवर्मा कृपश्चैव द्वारदेशे निजघ्नतुः ॥ १०२ ॥ विशस्त्रयन्त्रकवचान्मुक्तकेशान् कृतांजलीन् । वेपमानान् क्षितौ भीतांश्चैव कांश्चिन्नमुञ्चताम् ॥ १०३ ॥ नामुच्यत तयोः कश्चिन्निष्क्रान्तः शिबिराद्बहिः । कृपस्य च महाराज हार्दिक्यस्य च दुर्मतेः ॥ १०४ ॥ भूयश्चैव

अन्धकारसे घिरे और कालसे प्रेरित लोगोंने वहां उनको मारा । ९६ । इसीप्रकार द्वारपाल द्वारोंको और गुल्मवाले लोग गुल्मोंको त्यागकर के भयभीत और अचेत होकर सामर्थ के अनुसार भागे । ९७। और परस्पर नाश होगये इसीप्रकार एक ने दूसरेको नहीं पहँचाना अपने बान्धवों को छोड़कर दिशाओं को भागते उन लोगों के मध्यमें से दैवसे व्यथित चित्त मनुष्य पुकारे हे पिता हे पुत्र इसके पीछे लोगोंने गोत्र और नामोंसे परस्पर पुकारा । ९९ । और कितने ही हाहाकार कर के पृथ्वीपर गिरपड़े इस अश्वत्थामा ने युद्धमें उनको जानकर रोका । १०० । और बहुत से क्षत्रिय बारंबार घायल और अचेत और भयसे पीड़वान् होकर डेरे बाहरगये । १०१ । उन भयभीत जीवन के इच्छावान डेरे से निकलने वालों को कृतवर्मा कृपाचार्य ने द्वारस्थानपर मारा । १०२ । जिनके यन्त्र और कवच गिर पड़े वह खुलेहुये बाल हाथ जोड़े पृथ्वीपर कम्पायमान और भयभीत थे । १०३ । उनमेंसे किसीकोभी नहीं छोड़ा डेरेसे बाहरनिकलनेवाला कोईभी मनुष्य उनदोनोंके हाथमें बचकर नहीं गया हे महाराज अश्वत्थामा प्रिय करने के अभिलाषी उन

another. The door keepers and camp soldiers deserted their posts and ran away with all their might. They destroyed one another without seeing. Leaving their kinsmen, they dispersed in all directions and called out for fathers and sons in confusion. They announced their clans and names. Some fell down on earth with cries of dismay and Ashwathama checked them in their flight. 100, Many warriors, wounded and insensible with fear tried to go out of the camp to save their lives; but they were slain by Kritvarma and Kripacharya who were stationed at the entrance. The warriors, destitute of arms and armour, with dishevelled hair and clasped hands, lay on earth, trembling with fear. None of those who tried to scape from the camp for their lives, were able to scape from Kripacharya and Kritvarma. To please Ashwathama, they set fire to camp from

चिक्षिपुस्ते द्रोणपुत्रस्य तामिपम् । त्रिषु देशेषु दत्त्वा शिविरस्य हुताशनम् ॥ १०५ ॥
ततः प्रकाशे शिविरे खड्गेन पितृनन्दनः । अश्वत्थामा महाराज व्यचरत्कृतहस्तवत्
॥ १०६ ॥ कांश्चिदापततो वीरानपरांश्चैव धावतः । व्ययोजयत खड्गेन प्राणैर्द्विजवरोत्तम ॥ १०७ ॥ कांश्चिद्योधान् स खड्गेन मध्ये संछिद्य वीर्यवान् ।
अपातयद्द्रोणपुत्रः संरब्धास्तिलकाण्डवत् ॥ १०८ ॥ विनदद्भिर्भृशायस्तै-
र्नराश्वद्विरदोत्तमैः । पतितैरभवत्कीर्णा मेदिनी भरतर्षभ ॥ १०९ ॥
मानुषाणां सहस्रेषु हतेषु पतितेषु च । उदतिष्ठन् कबन्धानि बहून्युत्थाय चापतन्
॥ ११० ॥ सायुधान् साङ्गदान् बाहून्विचकर्त्त शिरांसि च । हस्तिहस्तोपमानूरून्
हस्तान् पादांश्च भारत ॥ १११ ॥ पृष्ठच्छिन्नान् शिरश्छिन्नान् पार्श्वच्छिन्नांस्तथा परान्
स महात्मा करोद्द्रौणिः कांश्चिच्चापि पराङ्मुखान् ॥ ११२ ॥ मध्यदेशे नरानन्यांश्चिच्छेद

कृपाचार्य्य और दुर्बुद्धी कृतवर्माने डेरोंके तीनोंओर अग्निलगादी । १०५ । फिर डेरों के प्रज्वलित और प्रकाशित होनेपर पिताको प्रसन्न करनेवाला, अश्वत्थामा हस्तलाघवीके समान खड्गको लेकर घूमनेलगा । १०६ । कितनेही आनेवाले और दौड़नेवाले वीरोंको खड्गकेद्वारा प्राणोंसे रहितकिया और ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ पराक्रमी अश्वत्थामा ने कितनेही शूरवीरों को खड्गके द्वारा मध्यसे काटकर क्रोध युक्तने तिलकाण्ड के समान गिराया । १०८ । हे भरतर्षभ अत्यन्त घायल गर्जते गिरते मनुष्य घोड़े और हाथियों से पृथ्वी आच्छादितहुई ।१०९। हजारों मनुष्यों के मरने और गिरने,पर बहुत रुण्ड उठे और उठकर गिरपड़े । ११० । शस्त्र और बाजूबन्द रखनेवाली भुजाओं समेत शिरको काटा और हाथीकी सूंडके समान जंघाओं को और हाथ पैरों को काटा । १११ । हे भरतवंशी टूटी पीठकुक्षि और शिरवाले अन्य लोगों को गिराया उस महात्मा अश्वत्थामा ने कितने ही मनुष्यों को मुखफेरनेवाला किया । ११२ । किसीको कान से स्थानपर औरकिसी को कटिस्थानपर काटा किसी को कन्धे के स्थान पर घायल करके शिरको शरीर में प्रवेश किया । ११३ । इसप्रकार उस के घूमते और बहुत आदियों को मारते

all sides. 105 When the camp was thus illumined, Ashwathama, the joy of his father roamed dexterously with his sword. He killed the coming and running warriors with his sword. He cut some in the middle and others into piecemeal The ground was covered with men and beasts, wounded, crying and falling down. At the fall of thousands of men, headless bodies rose and fell down again. 110. He cut down the jewelled hands and heads as well as thighs like the trunks of elephants and hands and feet. He cut asuder the backs, sides and heads of others Many warriors turned back from Ashwathama. He cut the ears and trunks of some and wounded others on the shoulders making their heads enter their bodies. While he was thus roaming and killing, the night became dreadful to behold. The

शाम्यांश्च कर्णतः । अन्यदेशे नि हत्य न्यान कायेप्रावेशयच्छिदः ॥११३ ॥ एवं विचरतस्तस्य
निघ्नतः सुबहून् रिपून् । तमसा रजनी घोरा बभौ दारुणदर्शना ॥ ११४ ॥ किञ्चित्
प्राणैश्च पुरुषैर्हतैश्चान्यैः सहस्रशः । बहुना च गजाश्वेन भूरभूद्भीमदर्शना ॥ ११५ ॥
यक्षरक्षः समाकीर्णे रथाश्वद्विपदारुणे । क्रुद्धेन द्रोणपुत्रेण संछिन्नाः प्रापतन् भुवि
॥ ११६ ॥ भ्रातॄनन्ये पितॄनन्ये पुत्रानन्ये विचुक्रुशुः । केचिदूचुर्न तत् क्रुद्धै र्धार्तराष्ट्रैः
कृतं रणे ॥११७॥ यत्कृतं नः प्रसुप्तानां रक्षोभिः क्रूरकर्मभिः असान्निध्याद्धि पार्थानामिदं नः कदनं
कृतम् ॥ ११८ ॥ न देवासुरगन्धर्वैर्नयक्षैर्न च राक्षसैः । शक्यो विजेतुं कौन्तेयो गोप्ता
यस्य जनार्दनः ॥ ११९ ॥ ब्रह्मण्यः सत्यवाग्दान्तः सर्वभूतानुकम्पकः । न च सुप्तं प्रमत्तं
वा न्यस्तशस्त्रं कृताञ्जलिम् । धावन्तं मुक्तकेशं वा हन्ति पार्थो धनञ्जयः ॥१२० ॥ तदिदं
नः कृतं घोरं रक्षोभिः क्रूरकर्मभिः । इति लालप्यमानाः स्म शेरते बहवो जनाः ॥१२१॥
स्तनतां च मनुष्याणामपरेषां च कूजताम् । ततो मुहूर्तात् प्राशाम्यत् स शब्दस्तुमुलो

हुये अन्धकार से वह रात्रि घोर रूप महाभयानक दर्शन देखनेमें आई । ११४ । कुछ कण्ठगत प्राणवाले कुछ मृतक हजारों मनुष्य हाथी और घोड़ोंसे पृथ्वी भयानकरूप देखनेमें आई । ११५ । यक्ष राक्षसों से संयुक्त रथ घोड़े और हाथियोंसे भयानक रूप पृथ्वीके होनेपर क्रोधयुक्त अश्वत्थामाके हाथसे घायलहोकर पृथ्वीपर गिरपड़े । ११६ । कोई भाइयोंको कोई पिताओं को और पुत्रोंको पुकारते था और कितने ही बोले कि यह क्रोधयुक्त धृतराष्ट्रके पुत्रोंने भी यह कर्म कियाथ जो कि निर्दयी राक्षसोंने हम सोनेवालों के साथ कियाहै पांडवों के वर्त्तमान न होने से यह हमारा नाशकिया । ११८ । वह अर्जुन असुर गन्धर्व यक्ष और राक्षस से भी विजय करनेके योग्य नहीं है जिसके कि रक्षक श्रीकृष्णजीहैं । ११९ । वह अर्जुन वेद ब्राह्मणों का रक्षक जितेन्द्रिय और सब जीवधारियोंपर कृपाकरनेवाला है वह पाण्डव अर्जुन सोनेवाले मतवाले अशस्त्र हाथ जोड़नेवाले खुले केश और भागनेवाले मनुष्योंको नहीं मारताहै । १२० । निर्दयी राक्षसों ने हमारा यह नाशकिया इसप्रकार विलाप करतेहुये बहुतसे मनुष्य पृथ्वीपर सोगये । १२ ।

ground looked dreadful with the dying and dead men and beasts. 115 Full of yakshes, rakshases, cars, horses and elephants, cut down by Ashwathama the ground was dreadful to behold. Some called out their brothers, fathers and sons, while others said, "The rakshases have done the same with the sleepers as the sons of Dhritrashtra did in daylight in the presence of the Pandavas. Having Shri Krishn for his protector, Arjun is invincible by asurs, gandharvas, yakshes and rakshases. Arjun is the protector of the Vedas and brahmans has control over his organs and is merciful to all beings. He does not slay the sleeping mad and weaponless, nor those who seek refuge with dishevelled hair and joined hands. 120. The cruel

महान् । १२२ ॥ शोणितव्यतिषिक्तायां वसुधायाञ्च भूमिप । तद्रजस्तुमुलं घोरं क्षणेनान्तरधीयत ॥ १२३ । सवेष्टमानानुद्विग्नान्निरुत्साहान्सहस्रशः । न्यपातयन्नरान् क्रुद्धः पशून् पशुपतिर्यथा ॥ १२४ ॥ अन्योन्यं संपरिष्वज्य शयानान् द्रवतोऽपरान् । संलीनान् युध्यमानांश्च सर्वान् द्रौणिरपोथयत् । १२५ ॥ दह्यमानान् हुताशेन वध्यमानाश्च तेन ते । परस्परं तदा योधा अनयन्यमसादनम् ॥ १२६ ॥ तस्या रजन्यास्त्वर्द्धेन पाण्डवानां महद्बलम् । गमयामास राजेन्द्र द्रौणिर्यमनिवेशनम् ॥ १२७ । निशाचराणां सत्त्वानां रात्रिः सा हर्षवर्द्धिनी । आसीन्नरगजाश्वानां रौद्री क्षयकरी भृशम् ॥१२८ ।तत्रादृश्यन्त रक्षांसि पिशाचाश्च पृथग्विधाः । खादन्तो नरमांसानि पिबन्तः शोणितानि च ॥ १२९ । कराला पिङ्गला रौद्राः शैलदन्ता रजस्वलाः । जटिला दीर्घसक्थाश्च पञ्चपादा महोदराः । १३० ॥ पश्चादङ्गुलयो रूक्षा विरूपा भैरवस्वनाः ।

इसकेपीछे एक मुहूर्तमेंही पुकारते और गर्जतेहुये अन्य मनुष्यों का वह बहुतबड़ा शब्द बन्दहोगया । १२२ । हे राजा रुधिरसे पृथ्वीके भरजानेकार तरहोनेपर वह घोर और कठिनधूल एकक्षणमेंही दूरहोगई । १२३। उसक्रोधयुक्तने चेष्टाकरनेवाले व्याकुल और उत्साह रहित हजारों मनुष्योंको ऐसे गिराया जैसे कि पशुओं को रुद्रजी गिराते हैं । १२४ । उस अश्वत्थामाने पृथ्वीपर गिरेहुये मनुष्योंको परस्पर मिलकर भागनेवालों को और छिपनेही [redacted] युद्धकरनेवालों को अत्यन्त मारडाला । १२५ । तब अग्निसे जलनेवाले और उस अश्वत्थामाके हाथसे घायल उन शूरवीरों ने परस्पर यमलोकमें पहुँचाया । १२६। हेराजा अश्वत्थामाने अर्द्धरात्रि के अर्द्धभागमें पाण्डवों की बड़ी सेनाको यमलोक में पहुँचाया । १२७ । वह रात्रि राक्षसों की प्रसन्नता बढ़ानेवाली मनुष्य घोड़े और हाथियों का भय उत्पन्नकरनेवालीकर महाकठिन नाशकारी हुई । १२८ । वहां पृथक् २ प्रकार के पिशाच राक्षस मनुष्यों के मांसको खाते और रुधिर को पीतेहुये दिखाई पड़े । १२९ । जोकि कराल पिङ्गल वर्ण पर्वताकार दांत रखनेवाले धूलसे लिप्त जटाधारी लम्बे शङ्ख पांच पैर और बड़ा उदर रखनेवाले । १३० । पीछेकी ओर उँगलियां रखने

rakshases have destroyed us." Thus crying and lamenting, many warriors lay on earth. After some time, the noise of men and beasts subsided and the ground being well drenched with blood, the storm of dust had disappeared. Enraged Ashwathama had slain thousands of warriors as Rudra does beasts. He extirpated the men fallen on the ground as well as those who were running away or fighting from a hiding place 125. Harming by fire and wounded by Ashwathaman, the brave warriors slew one another. Ashwathama destroyed the great Pandav army during that midnight which gave pleasure to rakshases and fear and destruction to men and beasts. Pishaches and rakshases were seen eating the flesh of men and drink-

20533

घण्टाजालावसक्ताश्च नीलकण्ठा विभीषणाः ॥ १३१ ॥ सपुत्रदारा ''सक्रूरा सुदुर्दृशा । सुनिर्घृणा । विविधानि च रूपाणि तत्रादृश्यन्त रक्षसाम् ॥ १३२॥ पीत्वा च शोणितं हृष्टा प्रानृत्यन् गणशः परे । इदं परमिदं मेध्यमिदं स्वाद्विति चाब्रुवन् ॥ १३३ ॥ मेदो मज्जास्थिरक्तानां वसानाञ्च भृशाशिनः । परमांसानि खादन्तः क्रव्यादा मांसजीविनः ॥ १३४ ॥ वसाञ्चैवापरे पीत्वा पर्यधावन् विकुक्षिकाः । नानावक्त्रास्तथा रौद्राः क्रव्यादाः पिशिताशिनः । १३५ ॥ अयुतानि च तत्रासन्प्रयुतान्यर्बुदानि च । रक्षसां घोररूपाणां महतां क्रूरकर्मणाम् ॥ १३६ ॥ मुदितानां वितृप्तानां तस्मिन्महति वैशसे । समेतानि बहून्यासन् भूतानि च जनाधिप ॥ १३७ ॥ प्रत्यूषकाले शिबिरात् प्रतिगन्तुमियेष सः ॥ १३८॥ नृशोणितावसिक्तस्य द्रौणेरासीदसित्सरुः । पाणिना सह संश्लिष्ट एकीभूत इव प्रभो ॥ १३९॥ दुर्गमो पदवीं गत्वा विरराज जनक्षये । युगान्ते सर्वभूतानि

वाले रूपे कुरूप भयानक शब्दवाले घण्टाजाल से युक्त नीलकण्ठ भयउत्पन्न करनेवाले पुत्र स्त्रियोंको साथ रखनेवाले निर्दयी दुर्दर्शन और दया स रहित थे वह राक्षसों के रूपभी अनेक प्रकारके देखनेमें आये । १३२ । कोई रुधिरको पान करके प्रसन्न चित्त होकर नृत्य करने लगे और कहते थे कि यह उत्तमहै यहपवित्रहै यह स्वादुहै । १३३ । भेजा मज्जा अस्थि और रुधिरको अच्छीरीतिसे भक्षण करनेवाले रुधिरसे अच्छे प्रकार तृप्तहुये मांससे जीवनेवाले वह राक्षस अन्यलोगोंके मांस खानेसे तृप्तहुये।१३४।इसीप्रकार नानाप्रकारके मुखरखनेवाले कोई उग्ररूप मांसभक्षी बड़ा उदर रखनेवाले राक्षस मज्जा को पान करके चारोंओर को दौड़े । १३५ । वहां निर्दय रूपी भयानकरूप बड़े राक्षसोंकी संख्या हजारों किरोड़ों और अर्बुदों थी । १३६ । हे राजा उसबड़ेनाश प्रसन्न चित्त अत्यन्त तृप्त राक्षसोंकी यासंख्या थी और बहुतसे भूतगण भी इकट्ठेहुये । १३७ । उसने प्रातःकालके समय उसडेरे से निकलनाचाहा । १३८ । मनुष्यों के रुधिरों से लिप्त अश्वत्थामा का खड्ग हाथसे चिपटाहुआ एकरूप होगया हे प्रभु वह अश्वत्थामा दुःखसे मिलनेवाले मार्गमें जाकर मनुष्योंके नाशमें ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि प्रलयकाल में सबजीवों को

ing their blood They I ad dieadf il forms, yellow colou , huge teeth dust stained hai, long conchs five fee , la ge b lly, t es t irned backward, dieadful visage, with bells an : nct , blue th oats, dieadful women, accompanied by women and sons, cruel, bad looking unmeiciful and of various f rms. 132 Some felt joy at drinking bl od and danced, saying, " It is go d, l oly and delicious ." They ate flesh, fat and bones and were satisfied with di nking blo d S me dreadful cannibals, with la ge bellies, fed on fat and ran hith r and t ither 135 The cruel and dreadful rakshasas were millions in number, which was augmented by g blins With his arm and sword of the same hue, Ashwathama wished to go out of the camp in the morning and

भस्म कृत्वेव पावकः ॥ १४० ॥ यथाप्रतिज्ञं तत्कर्म कृत्वा द्रौणायनिः प्रभो । दुर्गमां पदवीं गच्छन् पितुरासीद्गतज्वरः ॥ १४१ । यथैव संसुप्तजने शिबिरे प्राविशन्निशि तथैव हत्वा निःशब्दे निश्चक्राम नरर्षभ ॥ १४२ ॥ निष्क्रम्य शिबिरात्तस्मात्ताभ्यां सङ्गम्य वीर्यवान् । आचख्यौ कर्म तत् सर्वं हृष्टः संहर्षयन् विभो ॥ १४३ ॥ तावप्याचख्यतुस्तस्मै प्रियं प्रियकरौ तदा । पाञ्चालान् सृञ्जयांश्चैव विनिकृत्तान् सहस्रशः । प्रीत्या चोच्चैरुदक्रोशंस्तथैवास्फोटयंस्तलान् ॥ १४४ ॥ एवंविधा हि सा रात्रिः सोमकानां जनक्षये । प्रसुप्तानां प्रमत्तानामासीत् सुभृशदारुणा ॥ १४५ ॥ असंशयं हि कालस्य पर्यायो दुरतिक्रमः । तादृशा निहता यत्र कृत्वास्माकं जनक्षयम् ॥ १४६ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । प्रागेव सुमहत्कर्म द्रौणिरेतन्महारथः नाकरोदीदृशं कस्मान्मत्पुत्रविजये धृतः ॥ १४७ ॥ अथ कस्माद्धते क्षुद्रे कर्मेदं कृतवानसौ । द्रोणपुत्रो महेष्वासस्तन्मे शंसितुमर्हसि ॥ १४८ ॥ सञ्जय उवाच । तेषां नूनं भयान्नासौ कृतवान् कुरुनन्दन । असान्नि

भस्मकरके अग्नि शोभायमानहोताहै । १४० । हे प्रभुवर अश्वत्थामा प्रतिज्ञा के अनुसार उस कर्मको करके पिताके दुष्प्राप्य मार्गको प्राप्तकरता तापसे रहितहुआ ।१४१। वह नरोत्तम जैसे कि रात्रिमें सोनेवाले लोगोंके समान डेरेमें पहुँचा उसीप्रकार मारकर डेरेके निःशब्द होनेपर डेरेसे बाहर निकला।।१४२।उस डेरेसे निकल उनदोनों से मिलकर प्रसन्न और प्रसन्न करते उस पराक्रमीने उनसब कर्मको वर्णन किया है समर्थ तबउन विजय करनेवालों ने उस प्रिय वचनको उससे वर्णन किया कि हमने डेरेसे निकलनेवाले हजारोंपांचाल और सृञ्जियोंको मारा वह प्रसन्नता समेत बड़े उच्चस्वरसे पुकारे और हाथकी तालियोंको बजाया । १४४ । सोते और अचेत सोमकों के नाशमें वहरात्रि इसप्रकारकी कठिन और भयकारी हुई । १४५ । निस्सन्देह समयकी लौट पौट दुःखसे उल्लंघनकरनेके योग्यहै जहां कि उस प्रकार के वीर हमारे मनुष्योंका नाश करके मारेगये । १४६ । धृतराष्ट्र बोले कि मेरे पुत्रकी विजयमें प्रवृत्तचित्त महारथी अश्वत्थामाने प्रथमही इस प्रकारके कठिन कर्म को कैसे नहींकिया । १४७ । उपनीच दुर्योधनके मरनेपर उसमहात्मा अश्वत्थामा ने किसहेतुसे उस कर्मको किया यह सब मुझसे कहने को योग्यहो । १४८ । संजय

looked glorious like the fire of pralaya. 140. Having done the deed to avenge his father's death, he felt cheerful. He left the camp as noiseless as it was when he entered it at midnight. He met his two friends and cheered them by relating his exploits. They also told him the cherished news of their own victory and slaughter of thousands of Panchals and Srunjayas. They shouted for joy and clapped their hands. The sleeping Somaks had been slaughtered during that dreadful night. 145. Surely the changes of Time are hard to be passed over; for those who had slain our men were themselves slain." Dhritrashtra said, " Why did Ashwathama not do a deed like this though he was intent on my son's victory? Why did he do it at the

ध्यात्वेदं पार्थानां केशवस्य च धीमतः । सात्यकेश्चापि कर्मेदं द्रोणपुत्रेण साधितम् ॥ १४९ ॥ को हि तेषां समक्षं तान् हन्यादपि मरुत्पतिः । एतदीदृशकं वृत्तं राजन् सुप्तजने विभो ॥ १५० ॥ ततो जनक्षयं कृत्वा पाण्डवानां महात्ययम् । दिष्ट्या दिष्ट्येति चान्योन्यं समेत्योचुर्महारथाः ॥ १५१ ॥ पर्य्यष्वजत तौ द्रौणिस्ताभ्यां संप्रतिनन्दितः । इदं हर्षात्तु सुमहदाददे वाक्यमुत्तमम् ॥ १५२ ॥ पाञ्चाला निहताः सर्वे द्रौपदेयाश्च सर्वशः । सोमका मत्स्यशेषाश्च सर्वे विनिहता मया ॥ १४३ ॥ इदानीं कृतकृत्याः स्म याम तत्रैव मा चिरम् । यदि जीवति नो राजा तस्मै शंसामहे प्रियम् ॥ १५४ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि पांचालादिवधेऽष्टमोऽध्याय ८॥



बोले हे कुरुनंदन निस्संदेह उस अश्वत्थामाने उन पाण्डवों के भयसे इस कर्मको नहीं किया पाण्डव केशवजी और सात्यकि के वर्त्तमान नहोनेपर अश्वत्थामाने इस कर्म का साधन किया । १४९ । उन्हीं के समक्षमें कोई मनुष्य तो क्या इन्द्रभी नहीं मारसक्ताथा हे राजा रात्रिके समय मनुष्यों के सोने पर ऐसा वृत्तान्त हुआ । १५० । फिर पाण्डवों के लोगोंका कठिन नाश करके वह महारथी परस्पर मिलकर बोले कि दिष्ट्या दिष्ट्या अर्थात् मुबारक मुबारकहोय । १५१ । इसके पीछे प्रसन्न कियाहुआ अश्वत्थामा उन दोनोंसे स्नेह पूर्वक मिला और प्रसन्नतासे इस उत्तम और बड़े वचनको बोला कि सब पाञ्चाल और द्रौपदी के पांचों पुत्र मारेगये शेष बचेहुये सब सोमक और मत्स्य देशभी मेरे हाथसे मारेगये । १५३ । अबहम कार्य कृत्य हैं वहांही चलें विलम्ब मतकरो जो हमारा राजा जीवताहै हम उससे चलकर वर्णन करें । १५४ ।



fall of Duryodhan? Pray tell me all this." Sanjaya said, "Surely, he did not do it before for fear of the *Pandavas*. He was able to perform it in the absence of the Pandavas, Keshav and Satyaki. Not even Indra can cope with those personages. He did it when the warriors were asleep. 150. Having destroyed the Pandav wrriors, the three heroes congratulated one another. Ashwathama embraced the two men joyfully and said, " The Panchals and the five sons of Draupdi are slain like the Somaks and Matsyas. We are now happy. Let us go and inform the king without delay, if he be yet alive."154.

सञ्जय उवाच । ते हत्वा सर्वपाञ्चालान् द्रौपदेयांश्च सर्वशः । आगच्छन् सहिताः तत्र यत्र दुर्योधनो हतः ॥ १ ॥ गत्वा चैनमपश्यन्त किञ्चित्प्राणं जनाधिपम् । ततो रथेभ्य प्रस्कन्द्य परिवव्रुस्तवात्मजम् ॥ २ ॥ तं भग्नसक्थं राजेन्द्र कृच्छ्रप्राणम चेतनम् । वमन्तं रुधिरं वक्त्राद् अपश्यन् वसुधातले ॥ ३ ॥ वृतं समन्ताद् बहुभिः श्वापदैर् घोरदर्शनैः । शालावृकगणैश्चैव भक्षयिष्यद्भिरन्तिकात् ॥ ४ ॥ निवारयन्तं कृच्छ्रात् तान् श्वापदांश्च चिखादिषून् । विचेष्टमानं मह्यां च सुभृशं गाढवेदनम् ॥ ५ ॥ तं शयानं तथा तथा दृष्ट्वा भूमौ स्वरुधिरोक्षितम् । हतशिष्टास्त्रयो वीराः शोकार्ताः पर्यवारयन् । अश्वत्थामा कृपश्चैव कृतवर्मा च सात्वतः ॥ ६ ॥ तैस्त्रिभिः शोणितादिग्धैर्निश्वसद्भिर् महारथैः । शुशुभे संवृतो राजा वेदी त्रिभिरिवाग्निभिः ॥ ७ ॥ ते तं शयानं संप्रेक्ष्य राजानमतथोचितम् । अविषह्येन दुःखेन ततस्ते रुरुदुस्त्रयः ॥ ८ ॥ ततस्तु रुधिरं हस्तै

अध्याय ९ ॥

संजय बोले कि वह तीनों सब पञ्चाल और पांचो द्रौपदी के पुत्रों कोमार कर एकसाथही वहां गये जहां कि घायल दुर्योधन था । १ । और जाकर कुछ शेष प्राणवाले राजाको देखा इनके पीछे रथोंसे उतरकर आपके पुत्रको मध्यवर्त्ती किया । २ । हे राजेन्द्र उन्होंने उस टूटी जंघ और प्राणों से पीड़ावान अचेतऔर मुखसे रुधिर डालनेवाले राजाको पृथ्वीपर देखा । ३ । भयानक दर्शनवाले बहुतसे हिंसजीवोंसे युक्त और समीप से भक्षण करने के अभिलाषी शृगाल आदिकके समूहोंसे घिरहुये । ४ । खानेके अभिलाषी भेड़िया आदिकको कष्ट से रोकनेवाले पृथ्वी पर चेष्टा करनेवाले कठिन पीड़ावान् । ५ । रुधिर से लिप्त उस प्रकार पृथ्वीपर सोनवाले राजादुर्योधनको देखकर मरनेसे शेषरहे शोकसे पीड़ावान् तीनोंवीरों ने चारोंसे उसको व्याप्तकिया अर्थात् अश्वत्थामा, कृपाचार्य और यादव कृतवर्मा । ६ । रुधिरसे लिप्त श्वासलेनेवाले तीनों महारथियों से संयुक्त वह राजा ऐसे शोभायमान हुआ जैसेकि तीनों अग्नियोंसे वेदी शोभायमान होताहै । ७ । इस के पीछे वहतीनों उसदशाके अयोग्य पृथ्वीपर पड़ेहुये राजाको देखकर असह्य दुःख समेत रोदन करनेलगे । ८ । फिर युद्धभूमि में सोनेवाले उस राजाके मुखसे रुधिर

CHAPTER IX

Sanjaya said, "Having slain the five sons of Draupadi, the three warriors went to the place where Duryodhan was lying wounded. They saw him at the point of death and went to him from their cars. They found him lying on earth, with his thigh broken, insensible in the agonies of death and blood coming out from his mouth many a dreadful beast of prey and jackal, wishing to devour his body, surrounded him. Seeing Duryodhan incapable of keeping wolves and other animals at a distance, the three warriors, Ashwathama, Kripacharya and Kritavarma came round him. Accompanied by the three bloody

मुखाद्विमृज्य सर्वशः । रणे राज्ञः शोचन्तः कृपणं पर्य्यदेवयन् ।९। कृप उवाच । न दैवस्यातिभारोऽस्ति यदयं रुधिरोक्षितः । एकादशचमूभर्ता शेते दुर्योधनो हतः ॥१०॥ पश्य चामीकराभस्य चामीकरविभूषिताम् । गदां गदाप्रियस्येमां समीपे पतितां भुवि ॥ ११ ॥ इयमेनं गदा शूरं न जहाति रणे रणे । स्वर्गायापि व्रजन्तं हि न जहाति यशस्विनम् ॥१२॥ पश्येमां सह वीरेण जाम्बूनदविभूषिताम् । शयानां शयने हर्म्ये भार्य्यां प्रीतिमतीमिव ॥ १३ ॥ योऽयं मूर्द्धावसिक्तानामग्रे यातः परन्तप । स हतो ग्रसते पांशून् पश्य कालस्य पर्य्ययम् ॥ १४॥ येनाजौ निहता भूमौ शेरते निहता द्विषः । स भूमौ निहतः शेते कुरुराज परैरयम् ॥ १५ ॥ भयान्नमन्ति राजानो यस्य स्म शतसङ्घशः । स वीरशयने शेते क्रव्याद्भिः परिवारितः ॥ १६ ॥ उपासन्त द्विजाः पूर्वमर्थहेतोर्यमीश्वरम् । उपासते च तं ह्यद्य क्रव्यादा मांसहेतवः ॥ १७ ॥ सञ्जय उवाच । तं शयानं कुरुश्रेष्ठं ततो

को अपने हाथों से सफाकरके करुणापूर्वक विलाप किया । ९ कृपाचार्य्य बोले कि दैवको बड़ाभार नहीं है जो यह ग्यारह अक्षौहिणी सेनाका स्वामी राजा दुर्योधन रुधिर से लिप्त घायल हुआ पृथ्वीपर सोताहै । १० । इस सुवर्णके समान प्रकाशमान सुवर्ण जड़ित राजाकी गदाको पृथ्वीपर सन्मुख पड़ीहुई देखो । ११ । यहगदा प्रत्येक युद्धमें इस शूरको त्याग नहीं करती अर्थात् स्वर्ग जानेवाले यशमानको नहीं त्यागकरती । १२ । सुवर्ण से अलंकृत वीरकेसाथ सोनेवाली इस गदाको ऐसे देखो जैसे कि महलमें सोनेवाली प्रीतिमान् भार्य्याको देखते हैं ।१३। जो यह शत्रुका तपानेवाला मूर्द्धाभिषिक्तों के आगे प्रधानहुआ वह घायल होकर पृथ्वीकी धूलिको स्पर्श करताहै समयकी विपरीतता को देखो । १४ । जिसके हाथसे युद्धभूमिमें मारेहुये शत्रु पृथ्वीपर सोनेवाले हुये वह मृतकशत्रुवाला यह कौरवराज शत्रुओं के हाथसे माराहुआ सोताहै । १५ । हजारों राजाओं के समूह जिसके भयसे झुकते थे, वह मांसभक्षी जीवों से घिराहुआ वीर पृथ्वीपर सोता है । १६ ब्राह्मणों ने धनकेनिमित्त जिस ईश्वरकी उपासनाकी अब उसको मांसभक्षी मांसखानेकेलिये प्रशंसाकरते हैं । १७ । सञ्जयबोले कि हे भरतर्षभ उसकेपीछे

warriors, the king looked like an altar over which the three fires preside ? They wept to see the king lying in that deplorable condition. They wiped blood from his mouth with their hands and wept. Kripacharya said, "We have not much to thank Fate for. Prince Duryodhan, the lord of eleven akshauhines of army lies bleeding here on earth. 10 Here lies his golden mace which never left the dying prince. It is lying with him like an affectionate wife. This leader of kings lies here on earth. Look at the changes of Time! Having slain his foes the Kaurav Prince lies here struck by the enemy. 15, He to whom thousands of the kings bowed, sleeps on earth surrounded by beasts of prey. He who was praised by Brahmans for the sake of his wealth is now attended by flesh eating animals for the sake of his flesh." 17.

भरतसत्तम । सद्वश्वत्थामा समालोक्य करुणं पर्यदेवयत् ॥ १८ ॥ आहुस्त्वां राजशार्दूल मुख्यं सर्वधनुष्मताम् । धनाध्यक्षोपमं युद्धे शिष्यं संकर्षणस्य च ॥ १९ ॥ कथं विवरमद्राक्षीद्भीमसेनस्तवानघ । बलिनः कृतिनो नित्यं स च पापात्मवान्नृप ॥ २० ॥ कालो नूनं महाराज लोकेऽस्मिन् बलवत्तरः । पश्यामो निहतं त्वाऽद्य भीमसेनेन संयुगे ॥ २१ ॥ कथं त्वां सर्वधर्मज्ञं क्षुद्रः पापो वृकोदरः । निकृत्य हतवान् मन्दो नूनं कालो दुरत्ययः ॥ २१ ॥ धर्मयुद्धे ह्यधर्मेण समाहूयौजसा मृधे । गदया भीमसेनेन निर्भग्ने सक्थिनी तव ॥ २३ ॥ अधर्मेण हतस्याजौ मृद्यमानं पदा शिरः । य उपेक्षितवान् क्षुद्रं धिक्तमस्तु युधिष्ठिरम् ॥ २४ ॥ युद्धेष्वपवदिष्यन्ति योधा नूनं वृकोदरम् । यावत् स्थास्यन्ति भूतानि निकृत्या ह्यसि पातितः ॥ २५ ॥ ननु रामोऽब्रवीद्राजंस्त्वां सदा यदुनन्दनः । दुर्योधनसमो नास्ति गदया इति वीर्यवान् ॥ २६ ॥ श्लाघते त्वां हि वार्ष्णेयो

अश्वत्थामाने उस कौरवों में श्रेष्ठ सोतेहुये दुर्योधन को देखकर दयासे करुणा विलाप किया । १८ । हे राजाओं में श्रेष्ठ तुमको सब धनुषधारियों में प्रथम बलदेवजीका शिष्य और युद्धमें कुबेरकेसमान वर्णन कियाहै । १९ । हे पापोंसे रहित भीमसेनने कैसे तेरे छिद्रको देखा है राजा उस पापात्माने तुझ बलवान् और सदैव कर्मकरनेवाले को मारा । २० । हे महाराज निश्चय करके इस लोकमें काल बड़ा पराक्रमी है कि हम तुमको युद्धमें भीमसेनके हाथ से मराहुआ देखते हैं । २१ । क्रोधयुक्त अज्ञानी पापी भीमसेनने किसप्रकार से तुझ सबधर्मों के ज्ञाताको छलसे मारा निश्चय काल दुःखसे उल्लंघनके योग्य है । २२ । धर्मयुद्ध में बुलाकर फिर युद्धमें अधर्मसे साथ भीमसेनकीगदा और पराक्रम से तेरी दोनों जंघाटूटीं । २३ । जिसने युद्धभूमि में अधर्म से घायल शिरपांव से मर्दन युक्तको देखकर ध्यान नहीं किया उस क्रोधयुक्त युधिष्ठिरको धिक्कारहै । २४ । निश्चयकरके शूर वीरलोग युद्धोंमें जबतक पृथ्वी वर्त्तमानहै तब तक भीमसेन की निन्दाकरेंगे क्योंकि तुम छलसे मारेगयेहो । २५ । हे राजा निश्चयकरके यदुनन्दन पराक्रमी बलदेवजी ने सदैव तुमसे कहाकि गदायुद्धकी विद्यामें दुर्योधनके समान कोई नहीं है । २६ ।

Sanjaya continued, "Ashwathama felt pity on the Kaurav prince and wept for grief, saying, "You were the foremost of Baldeva's disciples and were a famous warrior like Kuver. How was Bhim able to discern a weakness in you? How did he slay you? Surely *Time* is very powerful in this world as we see you slain by Bhim. How did enraged, foolish and sinful Bhim slay you by deceit? Surely Time is hard to be over-topped. 22. Challenged to a fair fight, he unfairly broke your thighs. Fie on Yudhishthir, who saw you unjustly struck down and looked on the indignity when your head was being touched by foot. Surely brave men will always speak ill of *Bhim* for slaying you unjustly. 25. Baldev always spoke of you that you had no

राजन् संसत्सु भारत। सुशिष्यो मम कौरव्यो गदायुद्ध इति प्रभो ॥ २७ ॥ यां गतिं
क्षत्रियस्याहुः प्रशस्तां परमर्षयः। हतस्याभिमुखस्याजौ प्राप्तस्त्वमसि तां गतिम् ॥ २८॥
दुर्योधन न शोचामि त्वामहं पुरुषर्षभ। हतपुत्रौ तु शोचामि गान्धारीं पितरं च ते
॥ २९ ॥ भिक्षुकौ विचरिष्येते शोचन्तौ पृथिवीमिमाम्। धिगस्तु कृष्णं वार्ष्णेयमर्जुनं
चापि दुर्मतिम् ॥३० ॥ धर्मज्ञमानिनौ यौ त्वां वध्यमानमुपेक्षताम्। पाण्डवाश्चापि
ते सर्वे किं वक्ष्यन्ति नराधिप। कथं दुर्योधनोऽस्माभिर्हतः इत्यनपत्रपाः ॥ ३२ ॥ धन्य
स्त्वमसि गान्धारे यस्त्वमायोधने हतः। प्रायशोऽभिमुखः शत्रून् धर्मेण पुरुषर्षभ ३२॥
हतपुत्रा हि गान्धारी निहतज्ञातिबान्धवा। प्रज्ञाचक्षुश्च दुर्धर्षः कां गतिं प्रतिपत्स्यते
॥ ३४ ॥ धिगस्तु कृतवर्माणं मां कृपं च महारथम्। ये वयं न गताः स्वर्गं त्वां पुरस्कृत्य
पार्थिवम् ॥ ३५ ॥ दातारं सर्वकामानां रक्षितारं प्रजाहितम्। यद्वयं नानुगच्छामस्त्वां

हे भरतवंशी राजा दुर्योधन वह बलदेवजी सभाओं में तुम्हारी प्रशंसा करते हैं कि यह कौरव गदायुद्ध में मेरा शिष्य है । २७ । महर्षियों ने युद्धभूमि में सम्मुख करनेवाले क्षत्रीकी जिसगतिको उत्तम कहा तुम उसीगतिको प्राप्त हो । २८ हे पुरुषोत्तम दुर्योधन मैं तुमको नहीं सोचताहूं तेरेपिताको और गान्धारीको सोचता हूं जिनके कि सबपुत्र मारेगये । २९ । इन पृथ्वीको सोचते वह भिक्षुकरूप होकर इस पृथ्वीपर विचरेंगे यादव श्रीकृष्णजी को और दुर्बुद्धी अर्जुनकोभी धिक्कारहोय । ३० । आपको धर्मज्ञ जानते जिनदोनों ने तेरे घायल होनेको ध्यान नहींकिया हे राजा वह लज्जारहित और सब पाण्डवभी कहेंगे कि हमारे हाथ से दुर्योधन किसप्रकार से मारागया । ३१ । हे पुरुषोत्तम दुर्योधन तुम धन्यवाद के योग्य जो तुम बहुधा धर्म से शत्रुओं के सम्मुख होकर युद्धभूमि में मारेगये । ३२ । जिसके जाति बान्धव और पुत्र मारेगये वह गान्धारी और ज्ञानचक्षु रखनेवाला अजेय धृतराष्ट्र दोनों किस गतिको पावेंगे । ३४ । कृतवर्मा को मुझको और महारथी कृपाचार्य को धिक्कारहोय जो [illegible] तुम राजा को आगेकर के स्वर्गको नहीं गये । ३५ । जो हम तुम सब अभीष्ट के देने

equal in mace fighting. He praised you in courts and was proud of having you for his disciple. You have died fighting and this sort of death is recommended by wise men for a kshatrya. I donot regret your death, Duryodhan, but I mourn for your father and Gandhari who have lost all their kingdom and will roam like beggars. Fie on Krishn and Arjun who call themselves virtuous and yet disregarded the injury done to you. How can the shameless Pandavas boast of slaying you; I congratulate you, Duryodhan for your securing a warrior's end. 33. To what state will Gandhari and blind Dhritrashtra be reduced who have lost all their kinsmen! Fie on Kritvarma, on me and on Kripacharya, for we did not follow you to

धिगस्मान्पुरुषाधमान् । ३६ कृपस्य तव वीर्येण मम चैव पितुश्च मे । सभृत्यानां नर
व्याघ्र रत्नवन्ति गृहाणि च । ३७ ॥ भवत्प्रसादादस्माभिः समित्रैः सह बान्धवैः ।
अवाप्ता क्रतवो मुख्या बहवो भूरिदक्षिणाः ॥ ३८ ॥ कुतश्चापीदृशं पापाः प्रवर्तिष्यामहे
वयम् । यादृशेन पराक्रान्तस्त्वं गतः सर्वपार्थिवान् ॥ ३९ । वयमेव त्रयो राजन् गच्छन्तं
परमां गतिम् । यद्वै त्वां नानुगच्छामस्तेन तप्यामहे वयम् ॥ ४० ॥ स्वर्गहीनाः हीनार्थाः
स्मरन्तः सुकृतस्य ते । किन्नाम तद्भवेत् कर्म येन त्वां न व्रजाम वै ॥ ४१ ॥ दुःखं नूनं
कुरुश्रेष्ठ चरिष्याम महीमिमाम् । हीनानां नस्त्वया राजन् कुतः शान्तिः कुतः सुखम्
॥ ४२ गत्वैतांस्तु महाराज समेत्य त्वं महारथान् । यथाज्येष्ठं यथाश्रेष्ठं पूजयेर्वचनान्
मम ॥ ४३ आचार्यं पूजयित्वा च केतुं सर्वधनुष्मताम् । हतं मयाद्य शंसेथा धृष्टद्युम्नं
नराधिप । ४४ । परिष्वजेथा राजानं बाह्लीकं सुमहारथम् । सैन्धवं सोमदत्तञ्च

वाले रक्षक और संसारके प्रियकर्त्ता के पीछे नहीं जाते है हम नीच मनुष्योंको
धिक्कार है । ३६ हे नरोत्तम नौकरों समेत कृपाचार्य के मेरे और मेरे पिताके
रत्नजटित स्थान आपही के पराक्रम से हुये है । ३७ । मित्र और बान्धवों समेत
हम लोगों ने आपकी कृपासे बहुत दक्षिणावाले अतिउत्तम बहुत यज्ञ प्राप्तकिये ३८
हम पापी कहां से ऐसे मार्गपर कर्मकर्त्ता होंगे जिस मार्गसे कि तुम सब जीवों को
आगेकरके गये । ३९ । हे राजा जोहमतीनों तुझ परमगति पानेवाले के पीछे नहीं
जातेहैं उस हेतु से हम भस्म होते है । ४० । स्वर्ग और अभीष्टोंसे रहित हमलोग
उन राजाओंको और तेरे शुभकर्म को स्मरण करते जिसहेतुसे आपके पीछे नहीं
आते है वह हमारा कौन कर्म्म होगा । ४१ । हे कौरवों में श्रेष्ठ राजा दुर्योधन निश्चय
करके हम सब महादुःखी होकर इस पृथ्वीपर विचरेंगे तुझसे पृथक् होकर हमलोगों
को कहांसे शान्ती और सुख प्राप्त होनेका है । ४२ । हे महाराज तुम जाकर और
महारथियों से मिलकर मेरे वचनसे वृद्धता और उत्तमताके विचारसे पूजन करना
। ४३ । हे राजा सब धनुषधारियों के ध्वजारूप आचार्य जी को पूजकर अब
मेरे हाथसे मरे हुये धृष्टद्युम्नको वर्णन करना । ४४ । और बड़े महारथी राजा

heaven. Fie on us who donot accompany you, our benefactor and protector! My father, Kripacharya and I owe our greatness to you We and our friends were able to perform rich sacrifices by your grace How can sinful men like us follow the path that you have trodden! We burn with grief because we donot follow you to heaven. 40. Destitute of heaven and cherished desires, we are undone because we donot follow you Duryodhan, best of Kauravas! surely we are reserved to lead a life of misery and can have no peace without you Pay my respect to the departed warriors when you meet them, king Inform Dronacharya the best of archers that I have slain Dhrishtadyumn Convey my greetings to Vahlik Jayadrath, Somdatta, Bhuri-

समसमेव च ॥ ४५ ॥ तथा पूर्वगतानन्यान् स्वर्गं पार्थिवसत्तमान् । अस्मद्वाक्यात् स्वजय पृच्छेथास्त्वमनामयम् । ४६ । सञ्जय उवाच । इत्येवमुक्त्वा राजान मग्न सक्थमचेतनम् । अश्वत्थामा समुद्वीक्ष्य पुनर्वचनमब्रवीत् । ४७ ॥ दुर्योधन जीवसि चेत् वाक्यं श्रोत्रसुखं शृणु । सप्त पाण्डवत शेषा धार्तराष्ट्रास्त्रयो वयम् ॥ ४८ ॥ ते च भ्रातरः पञ्च वासुदेवोऽथ सात्यकिः । अहं च कृतवर्मा च कृपः शारद्वतस्तथा ॥ ४९ ॥ द्रौपदेया हताः सर्वे धृष्टद्युम्नस्य चात्मजाः । पाञ्चाला निहताः सर्वे मत्स्यशेषश्च भारत । ५० ॥ कृतं प्रतिकृतं पश्य हतपुत्रा हि पाण्डवाः । सौप्तिके शिबिरं तेषां हत नरवाहनम् ॥ ५१ ॥ मया च पापकर्मासौ धृष्टद्युम्नो महीपते । प्रविश्य शिबिरं रात्रौ पशुमारेण मारितः ॥ ५२ ॥ दुर्योधनस्तु तां वाचं निशम्य मनसः प्रियाम् । प्रतिलभ्य पुनश्चेत इदं वचनमब्रवीत् ॥५३॥ न मेऽकरोत्तद्गाङ्गेयो न कर्णो न च ते पिता । यत्त्वया

बाह्लीक, जयद्रथ, सोमदत्त और भूरिश्रवासे मिलना । ४५ । उसी प्रकार स्वर्ग में प्रथम जानेवाले अन्य २ उत्तम राजाओं को मेरे वचनसे मिलकर कुशल मङ्गल को पूछना । ४६ । सञ्जय बोले कि अश्वत्थामाजी उस अचेत और टूटी जंघावाले राजाको इसप्रकार कहकर और सम्मुख देखकर फिर वचन को बोले । ४७ । हे दुर्योधन तुम जीवतेहो कानोंके सुखदायी वचनोंको सुनो कि पाण्डवोंके सात और दुर्योधनके हमतीन बचबचेहैं । ४८ । वह पांचोंभाई केशवजी और सात्यकि हैं उसीप्रकार मैं कृतवर्मा और तीसरे शारद्वत कृपाचार्यजी शेषहै । ४९ । हे भरत वही द्रौपदीके सब पुत्र धृष्टद्युम्नके सब पुत्र पांचाल और शेष बचेहुये सब मत्स्य देशी मारेगये । ५० । बदलेके कर्म को देखो और पाण्डव असन्तान हैं रात्रि के युद्धमें मैंने उन्होंका डेरा सब मनुष्योंसमेत नाश करदिया । ५१ । हे राजा मैंने रात्रि में डेरेमें प्रवेश करके यह पापकर्त्ता धृष्टद्युम्न पशुके समान मारा । ५२ । दुर्योधन उस चित्तके प्रियवचनको सुनकर और सचेतहोकर यहवचन बोला ५३

shrava and other warriors when you meet them in heaven ' 46 Sanjaya continued, ' Having thus talked with the wounded king in this strain, Ashwathama again said, ' Hear what is pleasing to the ear O king, if you are yet alive seven on the side of the Pandavas and three of us are the only men alive—the five brothers, Keshav and Satyaki on their side, and Kritvarma, Kripacharya and I on yours. All the sons of Draupdi, with Dhrishtadyumna and his sons, all the Panchalas and the rest of the Matsyas are slain 50 See the work of revenge The Pandavas are childless for I destroyed all their camp at night I entered the camp at night and slew sinful Dhrishtadyumna like a beast " Having heard this cheerful news and coming to consciousness, Duryodhana said, " Neither Bhishm nor Karan nor your father did for me the thing which was done by you with the help of Kripacharya and Kritvarma. The despicable general and Shikhandi have

कृपभोजाभ्यां सहितेनाद्य ते कृतम् ॥ ५४ ॥ स च सेनापतिः क्षुद्रो हतः सार्द्धं शिख-
ण्डिना । तेन मन्ये मघवता सममात्मानमद्य वै ॥ ५५ ॥ स्वस्ति प्राप्नुत भद्रं वः स्वर्गे
नः सङ्गमः पुनः । इत्येवमुक्त्वा तूष्णीं स कुरुराजो महामनाः ॥ ५६ ॥ प्राणानुदसृजद्वीरः
सुहृदां दुःखमुत्सृजन् । आक्रामत दिवं पुण्यां शरीरं क्षितिमाविशत् ॥ ५७ ॥ एवं ते
निधनं यातः पुत्रो दुर्योधनो नृप । अग्रे यात्वा रणे शूरः पश्चाद्विनिहतः परैः ॥ ५८ ॥
तथैव ते परिष्वक्ताः परिष्वज्य च ते नृपम् । पुनः प्रेक्षमाणाः स्वकानारुरुहू रथान् ॥ ५९ ॥
इत्येवं द्रोणपुत्रस्य निशम्य करुणां गिरम् । प्रत्यूषकाले शोकार्त्तः प्राद्रवन्नगरं प्रति
॥ ६० ॥ एवमेष क्षयो वृत्तः कुरुपाण्डवसेनयोः । घोरो विशसनो रौद्रो राजन् दुर्म-
न्त्रिते तव ॥ ६१ ॥ तव पुत्रे गते स्वर्गे शोकार्त्तस्य ममानघ । ऋषिदत्तं प्रनष्टं तद्दिव्यद-
र्शित्वमद्य वै ॥ ६२ ॥ वैशम्पायन उवाच । इति श्रुत्वा स नृपतिः पुत्रस्य निधनं तदा ।
निःश्वस्य दीर्घमुष्णञ्च ततश्चिन्तापरोऽभवत् ॥ ६३ ॥ इति दुर्योधनप्राणत्यागे नवमोऽध्यायः

कि मेरा वह कर्म न भीष्मजी ने न कर्णने और न आपके पिताने किया, जो अब कृपाचार्य और कृतवर्मासमेत तुमने किया । ५४ । वहनीच सेनापति शिखण्डी समेत मारागया उसहेतु से मैंने आपको इन्द्रके समान मानताहूं । ५५ । कल्याण को पाओ तुम्हारा भलाहोय और स्वर्ग में हमारा तुम्हारा फिर मिलापहोगा यहबड़ा साहसी कौरवराज इसप्रकार कहकर मौनहुआ । ५६ । और मित्रोंकेदुःखको उत्पन्न करते उसधीर ने अपने प्राणोंको त्यागकर पवित्र स्वर्गको गया और शरीरपृथ्वीपर रहा । ५७ । हेराजा इसप्रकार आपकेपुत्र दुर्योधनने मरणको पाया वहशूर युद्धमें प्रथमजाकर फिर शत्रुओं के हाथमें मारागया । ५८ । उसीप्रकार उनसेमिलेहुये वे लोग फिर मिलकर राजाको वारम्वार देखते अपनेअपने रथोंपर सवारहुये । ५९ ।

इसप्रकार अश्वत्थामाके करुणारूप वचनोंको सुनकर शोकसे पीड़ित वहतीनों प्रातः कालके समय नगरकी ओर शीघ्रगामी चले । ६० । हेराजा आपके कुमन्त्रहोनेपर इसप्रकार कौरव और पाण्डवोंका यहघोर और भयकारी मारनेवाला नाश वर्त्तमान हुआ । ६१ । हेनिष्पाप शोकसेपीड़ित आपके पुत्रकेस्वर्गजानेपर अब व्यासऋषिका दियाहुआ यह दिव्यदर्शन और दिव्यनेत्र विनाशमान हुये । ६२ । वैशम्पायनबोले कि तबवह राजाधृतराष्ट्र पुत्रकेमरणको सुनकरलम्बी और उष्ण श्वासाओंकोलेकर महाचिन्तायुक्तहुआ ६३ ॥

been slain and therefore I am as happy as Indra. May you be blessed we shall meet again in heaven." Having said this the brave *Kaurav* prince resumed silence. 56. Causing grief to his friends, he left this world for heaven and left his body lying there. Thus your son died O king. The three warriors left him there and rode their cars. Having heard the pitiable talk of Ashwathama, they rode towards the city at day break. 60. All this great destruction was brought about by your own evil policy, king. At the death of your son, the divine eyes, given me by Vyas, and their power disappeared." Vaishampayan said that on hearing of his son's death, king Dhritrashtra heaved long and hot sighs and was plunged in the ocean of grief. 63.

॥ अथ ऐषिकपर्वारम्भः ॥

वैशम्पायन उवाच । तस्यां रात्र्यां व्यतीतायां धृष्टद्युम्नस्य सारथिः । शशंस धर्मराजाय सौप्तिके कदनं कृतम् ॥ १ ॥ सूत उवाच । द्रौपदेया हता राजन् द्रुपदस्यात्मजैः सह । प्रमत्ता निशि विश्वस्ताः स्वपन्तः शिबिरे स्वके ॥ २ ॥ कृतवर्मणा नृशंसेन गौतमेन कृपेण च । अश्वत्थाम्ना च पापेन हतं वः शिबिरं निशि ॥ ३ ॥ एतैर्नरगजाश्वानां प्रासशक्तिपरश्वधैः । सहस्राणि निकृन्तद्भिर्निःशेषं ते बलं कृतम् ॥ ४ ॥ छिद्यमानस्य महतो वनस्येव परश्वधैः । शुश्रुवे स महान् शब्दो बलस्य तव भारत ॥ ५ ॥ अहमेको वशिष्टस्तु तस्मात् सैन्यान्महीपते । मुक्तः कथञ्चिद्धर्मात्मन् व्यग्रस्य कृतवर्मणः ॥ ६ ॥ तच्छ्रुत्वा वाक्यमशिवं कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । पपात मह्यां दुर्धर्षः पुत्रशोकसमन्वितः ॥ ७ ॥ तं पतन्तमभिक्रम्य परिजग्राह सात्यकिः । भीमसेनोऽर्जुनश्चैव माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ ॥ ८ ॥ लब्धचेतास्तु कौन्तेयः शोकविह्वलया गिरा । जित्वा शत्रून् जितः

अध्याय ॥ १० ॥

वैशम्पायनबोले कि उस रात्रिके व्यतीत होनेपर धृष्टद्युम्नके सारथीने युद्धमें होनेवाले नाशको धर्मराजके सम्मुख वर्णनकिया । १ । सारथी बोला हे राजाराजे के समय अपने डेरे में सोनेवाले विश्वासयुक्त अचेत सोतेहुये द्रौपदी के पुत्र द्रुपद के पुत्रों समेत मारेगये । २ । निर्दयी कृतवर्मा गौतम कृपाचार्य्य और पापी अश्वत्थामाके हाथसे रात्रिके समय आपका डेरा नाशहुआ । ३ । प्रास शक्ति और फरसोंसे हजारों मनुष्य घोड़े और हाथियों को मारनेवाले इन तीनों से आपकी सेना मारीगई । ४ हे भरतवंशी फरसोंसे कटेहुये बड़ेवनकी समान आपकी सेना के बड़ेशब्द सुनेगये । ५ । हे बड़ेहाथी केवल मैंभी अकेला उस सेनामेंसे बचा हूं हे धर्मात्मा मैं उस दुष्ट कृतवर्मा से किसीप्रकार करके बचगया । ६ । कुन्तीका पुत्र अजेय युधिष्ठिर उस दुःखशोक के वचनको सुनकर पुत्रशोक से युक्त होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । ७ । उसको भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेव ने उस गिरते हुये राजाको पकड़ लिया । ८ । फिर सचेत होकर शत्रुओंका विजय करनेवाला

CHAPTER X

Vaishampayan said, "At the close of that night, Dhrishtadyumna's car driver brought the news of the great destruction to Yudhishthir. He said, "Sleeping soundly in their tents last night, the sons of Drupad and Draupadi were all slain by cruel Kripacharya and Kritvarma, who destroyed your camp by night. The three warriors slew your men and beasts with their weapons. Your army was cut with battle axes like a large forest. 5. I managed somehow to scape from Kritvarma and am the only man alive out of that great force." Yudhishthir the son of Kunti became insensible with grief on hearing that sad news. Bhim, Arjun, Nakul and Sahadev saved the king from

पश्चात् पर्य्यदेवयदार्त्तवत् ॥ ९ ॥ दुर्विदा गतिरर्थानामपि ये दिव्यचक्षुषः । जीयमाना जयन्त्यन्ये जयमाना वयं जिताः ॥ १० ॥ हत्वा भ्रातॄन् वयस्यांश्च पितॄन् पुत्रान् सुहृद्गणान् । बन्धूनमात्यान् पौत्रांश्च जित्वा सर्वान् जिता वयम् ॥ ११ ॥ अनर्थो ह्यर्थसङ्काशस्तथानर्थोऽर्थदर्शनः । जयोऽयमजयाकारो जयस्तस्मात् पराजयः ॥ १२ ॥ यज्जित्वा तप्यते पश्चादापन्न इव दुर्मतिः । कथं मन्येत विजयं ततो जिततरः परैः ॥ १३ ॥ येषामर्थाय पापं स्याद्विजयस्य सुहृद्वधैः । निर्जितैरप्रमत्तैर्हि विजिता जितकाशिनः ॥ १४ ॥ कर्णि नालीकदंष्ट्रस्य खड्गजिह्वस्य संयुगे । चापव्यात्ताग्ररौद्रस्य ज्यातलस्वननादिनः ॥ १५ ॥ क्रुद्धस्य नरसिंहस्य संग्रामेष्वपलायिनः । ये व्यमुच्यन्त कर्णस्य प्रमादात्त इमे हताः ॥ १६ ॥ रथह्रदं शरवर्षोर्मिमन्तं रत्नाचितं वाहनवाजियुक्तम् । शक्त्यृष्टिमीनध्वजनागनक्रं शरासनावर्त्तमहेषुफेनम् ॥ १७ ॥ संग्रामचन्द्रोदयवेगवेलं द्रोणार्णवं ज्यातलने

युधिष्ठिर शोकसे व्याकुल दुःखसे पीड़ावान् के समान विलाप करनेलगा । ९ । अर्थों की गति दुःखसे जानने के योग्यहै जो दिव्यचक्षु रखनेवालेहैं उनको भी अन्यलोग पराजित होकर विजय करते हैं विजय करनेवाले हमलोग विजय किये गये । १० । भाई समान अवस्थावाले पिता पुत्र मित्रवर्ग बान्धव मन्त्री और पोतों समेत सबको मारकर भी हम दूसरों से विजय कियेगये । ११ । निश्चयकरके अनर्थ अर्थरूप है उसीप्रकार अनर्थ अर्थको दिखलाने वाला है यहविजय पराजयरूपहै इसहेतु से विजयही पराजयहै । १२ । जो दुर्बुद्धी विजयकरके पीछे आपत्तिमें बँधे हुये के समान दुःखी होता है वह किस प्रकार विजय को माने उस हेतु से शत्रु के हाथसे अत्यन्त पराजितहै । १३ । मित्रोंके नाशसे विजयका पाप जिनके निमित्त होय पराजितहुये चतुर सावधान मनुष्योंकरके विजयसेशोभायमान आदमी विजय कियेगये । १४ । युद्धमें कर्णिनालीक नाम बाणों के समान डाढ़ रखनेवाले खड्गकी समान जिह्वा धनुषके समान चौड़ामुख रुद्ररूप महाउच्चा और तलके समान शब्द-वाले । १५ । क्रोधयुक्त युद्धों में मुख न फेरनेवाले नरोत्तम कर्णके हाथसे जो बचे वहसब शूरवीर असावधानतासे मारेगये । १६ । रथरूप ह्रद बाण वृष्टिरूप तरङ्ग वाले रत्नोंसे पूर्ण घोड़े और सवारियों से युक्त शक्ति वा दुधारे खड्गरूप मछली ध्वजा रूप सर्प और नक्र धनुषरूप भँवर बड़े बाणरूपी फेण रखनेवाले । १७ । युद्धरूप

falling down. He began to lament the great losses coming to himself. "The ways of the world are difficult to understand: the conquerers are conquered by the conquered. 10 Having slain our kinsmen, friends, and advisers, we are at last conquered by the enemy. Surely our success is a loss and victory is turned in to defeat. The foolish conquerer who mourns like a miserable man, is really not a conquerer but one conquered by the enemy. The wise conquered the conquerers who had sinned in slaying their friends. The warriors having hard arrows for fangs, swords for tongues, bows for wide mouths, sounds of

मिघोषम । ये तेरुरुच्चावचशस्त्रनौभिस्ते राजपुत्रा निहताः प्रमादात् ॥ १८ ॥ नहि प्रमा
दात् परमोऽस्ति कश्चिद्वधो नराणामिह जीवलोके । प्रमत्तमर्था हि नरं समन्तात् त्यज
न्त्यनर्थाश्च समाविशन्ति ॥ १९ ॥ ध्वजोत्तमाग्रोच्छ्रितधूमकेतुं शरार्चिषं कोपमहास
मीरम । महाधनुर्ज्यातलनेमिघोषं तनुत्रनानाविधशस्त्रहोमम् ॥ २० ॥ महाचमूकक्षदवा
भिपन्नं महाहवे भीष्ममयाग्निदाहम् । ये सेहुरात्तायुधतीक्ष्णवेगं ते राजपुत्रा निहताः प्रमा
दात् ॥ २१ ॥ नहि प्रमत्तेन नरेण शक्यं विद्या तपः श्रीर्विपुलं यशो वा । पश्याप्रमादेन
निहत्य शत्रून् सर्वान्महेन्द्रं सुखमेधमानम् ॥ २२ ॥ इन्द्रोपमान् पार्थिवपुत्रपौत्रान् पश्या
विशेषेण हतान् प्रमादात् । तीर्त्वा समुद्रं वणिजः समृद्धाः सन्ना कुनद्यामिव हेलमानाः
॥ २३ ॥ अमर्षितैर्ये निहताः शयाना निःसंशयं तेऽपि दिवं प्रपन्नाः । कृष्णान्तु सोचामि
कथं नु साध्वी शोकार्णवे साद्य विनाशयतीति ॥ २४ ॥ भ्रातॄंश्च पुत्रांश्च हतान्निशम्य

चन्द्रोदय तीव्रता रूप किनारेवाले ज्यातल और नेमियोंके शब्दवाले द्रोणाचार्यरूपी
समुद्रको जिनराजकुमारों ने नानाप्रकारके शस्त्ररूपी नौकाओंके द्वारातरा [redacted] प्रमाद
से मारेगये । १८ । इस जीवलोक में मनुष्यों के मरणका कारण प्रमत्ततासे अधिक
कोईनहीं है प्रमत्त मनुष्य को धनादिक चारोंओर से त्याग करते हैं और निर्धनता
रूप अनर्थ प्रवेश होते हैं । १९ । उत्तमध्वजाकी नोकमूरत ऊँचाई रखनेवाली बाणरूप
ज्वालावाली क्रोधरूप वायुकी तीव्रता रखनेवाली बड़े धनुष की ज्यातल और नेमी
के शब्द से युक्त कवच और नानाप्रकार के शस्त्ररूप हवन रखनेवाली बड़ी सेना
रूप दावानल से संयुक्त खड़े हुए शस्त्ररूप कठिन तीव्रतावाली
भीष्मरूप अग्निकी भस्मताको जिन राजकुमारोंने बड़े युद्धमें सहा वह सब अचेत
तासे मारेगये । २१ । प्रमत्त मनुष्यको विद्या तप धन और उत्तमकीर्त्ति नहीं प्राप्त
होसक्ती है सावधानी से सब शत्रुओं को मारकर उत्तम वृद्धि पानेवाले महाइन्द्रको
देखो । २२ । इन्द्रके समान राजाओंके पुत्र पौत्रादिकों को अत्यन्त अचेततासे ऐसे
मराहुआ देखो जैसे कि धनकी वृद्धिवाला व्यापारी समुद्र को तरकर छोटी नदी में
डूबजाय । २३ क्रोधयुक्त पुरुषों ने जो सोते वीरोंको मारा वह निसन्देह स्वर्गको गये

bowstrings and clapping hands for noise, who never turned back from battle and who escaped death from Karna have been destroyed by want of wakefulness. Having cars for lakes, showers of arrows for waves, horses for trees, javelins and swords for fish, banners for serpents and crocodiles, bows for eddies, arrows for hoods, battle field for moonshine, dexterity for banks and loud sounding with claps and bowstrings, the warriors who crossed the ocean of Drona with the boats of their weapons, have been slain by want of wakefulness. Insensibility kills most of the people in this world. Wealth leaves an insensible man and penury overtakes him. Having tall standards, arrows like flames, dexterous like a storm of wind, noisy with the sounds of bowstrings, armed with

पञ्चालराजं पितरं च वृद्धम्। ध्रुवं विसंज्ञा पतिता पृथिव्यां सा शेष्यते शोककृशाङ्ग
यष्टिः ॥ २५ ॥ तच्छोकजं दुःखमपारयन्ती कथं भविष्यत्युचिता सुखानाम् । पुत्रक्षय
भ्रातृवधप्रणुन्ना प्रदह्यमानेव हुताशनेन । २६ । इत्येवमार्त्तः परिदेवयन् स राजा कुरूणां
नकुलं बभाषे । गच्छानयैनामिह मन्दभाग्यां समातृपक्षामिति राजपुत्रीम् ॥ २७ ॥ माद्री
सुतस्तत् परिगृह्य वाक्यं धर्मेण धर्मप्रतिमस्य राज्ञः । ययौ रथेनालयमाशु देव्याः
पाञ्चालराजस्य च यत्र दाराः ॥ २८ ॥ प्रस्थाप्य माद्रीसुतमाजमीढः शोकार्दितस्तैः
सहितः सुहृद्भिः । रोरूयमाणः प्रययौ सुतानामायोधनं भूतगणानुकीर्णम् । २९ । स तत्
प्रविश्याशिवमुग्ररूपं ददर्श पुत्रान् सुहृदः सखींश्च । भूमौ शयानान् रुधिरार्द्रगात्रान्

मैं द्रौपदी को शोचताहूं अब वह पतिव्रता निर्भयहोकर किसप्रकार से शोचरूपी समुद्रमें डूबगई । २४ । भाई बेटे और वृद्ध पिता राजा पांचाल को मृतक सुनकर निश्चय करके अचेत होकर पृथ्वीपर गिरेगी शोकसे कृशांग यष्टिशरीर वह द्रौपदी शुष्क होरहीहै । २५ । सुखोंके योग्य वह द्रौपदी पुत्र और भाइयोंके मरनेसे व्याकुल अग्निसे जलतीहुईके समान उस शोकजन्य दुःखसमुद्र से पारन होकर कैसी दशावाली होगी । २६ । इसप्रकार विलाप करता वह कौरवराज युधिष्ठिर नकुल से बोला जाओ उन मन्दभागिनी राजपुत्री को उसके मातृपक्षियों समेत यहां लाओ । २७ । नकुल धर्मरूप राजाके वचनको धर्मसे अङ्गीकार करके रथकी सवारी से देवी द्रौपदी के उस स्थान कोगया जहांपर राजा पांचाल कीभी स्त्रियां थीं। २८ । नकुलको भेजकर शोकसे पीड़ावान् रोदनकरते युधिष्ठिर उन सुहृदोंसमेत पुत्रोंकी युद्ध भूमिको गया जाकि भूतगणोंसे युक्तथा । २९ । उसने उस कल्याण

a m an l ar m or an ı killing enemies as fire does a forest, the warriors who scaped death f o n Bhishm have been destroyed by sleep. 21. A s mo ossman cannot acquire knowledge, asceticism, wealth and fame. Look at Indra who destroyed all his foes by his carefulness, India, like princes and warriors have been destroyed by want of vigilance like an avaricious merchant who crosses the ocean but sinks own in a small river. The sleeping warriors slain by angry men have surely gone to heaven; but I am anxious for Draupadi who has fallen into the ocean of grief. She will lose her senses on hearing of the death of her brothers and sons. Her body already lean with grief will become dry. 25. Unworthy of bearing sorrows, she will burn with the fire of grief on hearing of the death of her brothers and sons " Thus lamenting, Yudhishthir ordered Nakul to fetch hapless Draupadi and the women of her mother's household. Nakul rode a car and went to the place where Draupadi and the women of Panchal were. Having sent Nakul that way, Yudhishthir with tears in his eyes, went to visit the place

विभिन्नदेहान् महोगसमागान् । ३० ॥ स तांस्तु दृष्ट्वा भृशमार्तरूपो युधिष्ठिरो धर्मभृतां वरिष्ठः । उच्चैः प्रचुक्रोश च कौरवाग्र्यः पपात चोर्व्यां सगणो विसंज्ञः ॥३१ ।

इति सौप्तिकपर्वणि ऐषीकपर्वणि युधिष्ठिरानुतापे दशमोऽध्यायः । १० ॥



वैशम्पायन उवाच । स दृष्ट्वा निहतान् संख्ये पुत्रान् पौत्रान् सखींस्तथा । महादुःखपरीतात्मा बभूव जनमेजय ॥ १ । ततस्तस्य महान् शोकः प्रादुरासीन्महात्मनः । स्मरतः पुत्रपौत्राणां भ्रातृणां स्वजनस्य च । २ ॥ तमश्रुपरिपूर्णाक्षं वेपमानमचेतनम् । सुहृदो भृशसंविग्नाः सान्त्वयाञ्चक्रिरे तदा । ३ ॥ ततस्तस्मिन् क्षणे काले रथेनादित्यवर्चसा । नकुलः कृष्णया सार्द्धमुपायात् परमार्त्तया । ४ । उपप्लव्यं गता सा तु

और उसरूप युद्धभूमि में प्रवेशकरके पुत्र सुहृद और मित्रोंको पृथ्वीपर सोते रुधिरसे लिप्त अंग टूटे शरीर और टूटे शिर देखा । ३ । वह धर्मधारियों में और कौरवोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर उनको देखकर अत्यन्त पीड़ावान् सूरत उच्चस्वरसे पुकारे और साथियों समेत अचेत होकर पृथ्वीपर गरपड़ा । ३१ ॥



अध्याय ११ ॥

वैशम्पायन बोले हे राजा जनमेजय वह युधिष्ठिर युद्धमें मरेहुये उन पुत्रपौत्र और मित्रों को देखकर बड़े दुःखसे पूर्णचित्त हुआ । १ । इसके पीछे बेटे पोतेभाई और अपने मनुष्योंका स्मरण करतेहुवे उस महात्मा को बड़ाशोक उत्पन्न हुआ । २ । तब अत्यन्त व्याकुल सुहृदोंने उस अश्रुओंसे पूर्ण कम्पायमान और अचेत राजा को विश्वास कराया । ३ । इसके पीछे समर्थ नकुल बड़ी पीड़ावान् द्रौपदी समेत सूर्यके समान प्रकाशमान रथकी सवारीसे एकक्षणमें सम्मुख आया । ४ । तब

where his sons and kinsmen lay dead. He found them sleeping on earth with bodies and heads wounded and bleeding. Yudhishthir the best of Kauravas and righteous men gave a loud cry and fell down senseless with his companions." 31

CHAPTER XI

Vaishampayan said to Janmejaya, "Seeing the sons, grandsons and friends slain in battle, Yudhishthir felt much grief. He remembered the departed sons, grandsons, cousins and other people and his mind was full of sorrow. His sorrowful friends consoled him. Nakul

श्रुत्वा सुमहदप्रियम् । तदा विनाशं पुत्राणां सर्वेषां व्यथिताभवत् ॥ ५ ॥ कम्पमानेव
कदली वातेनाभिसमीरिता । कृष्णा राजानमासाद्य शोकार्त्ता न्यपतद्भुवि ॥ ६ ॥ बभूव
वदनं तस्याः सहसा शोककर्षितम् । फुल्लपद्मप्रकाशाक्ष्यास्तमोग्रस्त इवांशुमान् ॥ ७ ॥
ततस्तां पतितां दृष्ट्वा संरम्भी सत्यविक्रमः । बाहुभ्यां परिजग्राह समुत्पत्य वृको
दर ॥ ८ ॥ सा समाश्वासिता तेन भीमसेनेन भाविनी । रुदती पाण्डवं कृष्णा सहभ्रा
तरमब्रवीत् ॥ ९ ॥ दिष्ट्या राजन्नवाप्येमामखिलां भोक्ष्यसे महीम् । आत्मजान् क्षत्र
धर्मेण श्रुत्वा शूरान्निपातितान् ॥ १० ॥ दिष्ट्या त्वं पार्थ कुशली मत्तमातङ्गगामिनम् ।
अवाप्य पृथिवीं कृत्स्नां सौभद्रं न स्मरिष्यसि ॥ ११ ॥ आत्मजान् क्षत्रधर्मेण श्रुत्वा
शूरान्निपातितान् । उपप्लव्ये मया सार्द्धं दिष्ट्या त्वं न स्मरिष्यसि ॥ १२ ॥ प्रसुप्तानां
वधं श्रुत्वा द्रौणिना पापकर्मणा । शोकस्तपति मां पार्थ हुताशन इवाशयम् ॥ १३ ॥

उपप्लवी स्थानपर वर्त्तमान वह द्रौपदी सब पुत्रों के अप्रियवध शब्दको सुनकर बड़ी
पीड़ावानहुई । ५ । पवनसे चलायमान केले के समान कंपायमान वह द्रौपदी राजा
को पाकर शोकमें शोकसे पीड़ित होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी । ६ । उस प्रफुल्लित
पद्म पलाश के समान नेत्रवाली द्रौपदीका मुख अकस्मात् शोक में ऐसे पीड़ावान
हुआ जैसे कि अँधेरे से दकाहुआ सूर्य होताहै । ७ । इसके पीछे क्रोधयुक्त सत्य
पराक्रमी भीमसेनने दौड़कर उस गिरीहुई द्रौपदीको पकड़लिया । ८ । भीमसेन
से विश्वासित उस रानी तेजस्वनी द्रौपदीने भाइयों सने युधिष्ठिरसे यह वचन कहा
। ९ । हे राजा तुम निश्चयकरके क्षत्रीधर्म से मारे पुत्रोंको यमराजके लिये देकर
प्रारब्धसे इस सम्पूर्ण पृथ्वीको भोगोगे । १० । हे राजा तुम प्रारब्धसे कुशलहो
और सब पृथ्वीको पाकर मतवाले हाथीके समान चलनेवाले अभिमन्यु को स्मरण
नहीं करोगे । ११ । तुम क्षत्रीधर्मसे गिरायेहुये शूरपुत्रों को सुनकर प्रारब्धसे मुझ
समेत तुम उनको उपप्लवी स्थानपर स्मरण नहीं करोगे । १२ । हे राजा पापकर्मी
अश्वत्थामाके हाथसे सोतेहुओं के मारने से शोक मुझको ऐसे तपाताहै जैसे कि
स्थानको अग्नि संतप्त करताहै । १३ । अब जो युद्धमें तेरे हाथसे उस पापकर्मी

brought sorrowful Draupadi in the car. She was in great distress on hearing of the death of her sons. 5. Shaking like a plantain tree moved by the wind, she fell down on earth and was insensible with grief. Her lotus like face became suddenly changed like the sun covered with darkness. Enraged Bhimsen at once ran and took up fallen Draupadi. Consoled by him, she said to Yudhishthir and his brothers, "Having caused your sons to be slain in battle, you are sure to rule the kingdom. 10 It is by good luck that you are safe. Will you not remember Abhimanyu, who used to walk like an elephant, when you will rule over the world! Will you not remember the fall of your brave sons at Upaplavya! Ashwathama's destruction of the sleepers burns me like fire. I shall sit on this very place and

तस्य पापकृतो द्रौणेर्न चेदद्य त्वयामृधे । ह्रियते सानुबन्धस्य युधि विक्रम्य जीवितम्
॥ १४ ॥ इहैव प्रायमासिष्ये तन्निबोधत पाण्डवाः । न चेत् फलमवाप्नोति द्रौणिः
पापस्य कर्मणः ॥ १५ ॥ एवमुक्त्वा ततः कृष्णा पाण्डवं प्रत्युपाविशत् । युधिष्ठिरं
याज्ञसेनी धर्मराजं यशस्विनी ॥ १६ ॥ दृष्ट्वोपविष्टां राजर्षिः पाण्डवो महिषीं प्रियाम्
प्रत्युवाच स धर्मात्मा द्रौपदीं चारुदर्शनाम् ॥ १७ ॥ धर्म्ये धर्मेण धर्मज्ञे प्राप्तास्ते
निधनं शुभे । पुत्रास्ते भ्रातरश्चैव तान्न शोचितुमर्हसि ॥ १८ ॥ स कल्याणि वनं दुर्गं
दूरं द्रौणिरितो गतः । तस्य त्वं पातनं संख्ये कथं ज्ञास्यसि शोभने ॥१९॥ द्रौपद्युवाच।
द्रोणपुत्रस्य सहजो मणिः शिरसि मे श्रुतः । निहत्य संख्ये तं पापं पश्येयं मणिमाहृतम्।
राजन् शिरसि तं कृत्वा जीवेयमिति मे मतिः ॥ २० ॥ इत्युक्त्वा पाण्डवं कृष्णा राजानं
चारुदर्शना । भीमसेनमथाभ्येत्य परमं वाक्यमब्रवीत् ॥ २१ ॥ त्रातुमर्हसि मां भीम

अश्वत्थामा का उसके साथियों समेत जीवन हरण नहीं किया जाता है तो इसी स्थानपर शरीर त्यागने के निमित्त आसन बिछाकर बैठूंगी हे पाण्डव जो अश्वत्थामा इस दुष्टकर्म्म के फलको नहीं पाताहै तो निश्चय इसी मेरीबात को जानों । १५ । इसके पीछे वह द्रुपदकी पुत्री यशवन्ती कृष्णा धर्म्मराज युधिष्ठिर से ऐसा कहकर आसन पर बैठगई । १६ । उस धर्मात्मा राजर्षि पाण्डवने उस सुन्दर दर्शन प्यारी पटरानी द्रौपदी को शरीर त्यागने के निमित्त आसन पर बैठाहुआ देखकर यह उत्तर दिया । १७ । कि धर्मोंकी जाननेवाली शुभ द्रौपदी यह तेरे पुत्र और भाई धर्मरूप मरणको प्राप्तहुये उनका शोचकरना तुमको योग्य नहीं है । १८ । हे कल्याणी वह अश्वत्थामा यहांसे दुर्गम्य दूर वनको गया है शोभायमान तुम युद्ध में उस के मरने को कैसे जानोगी । १९ । द्रौपदी बोली कि मैंने शरीर के साथ उत्पन्न होनेवाला मणि अश्वत्थामा के शिर पर सुनाहै युद्धमें उस पापीको मारकर लायेहुये उस मणिको देखूंगी । २० । हे राजा उसको आपके शिर पर धारण कर के जीऊंगी यह मेरा मतहै वह सुन्दर दर्शन द्रौपदी राजा से इसप्रकार कह कर । २१ । फिर भीमसेन के पास आकर उत्तम वचनको बोली हे समर्थ तुमक्षत्री

de, if sinful Ashwat[illegible]ama and his accomplices [illegible] in I shall prove my words true, if Ashwathama is not punished. 15. Having said this to Yudhishthir, Draupadi took her seat there. Seeing his beautiful and dearest queen ready to give up her life, he said, " Your sons and brothers have died a glorious death and you must not deplore their loss. Ashwathama has entered far away into an impregnable forest : how will you know that he is dead." Draupadi said, " I hear there is a gem on Ashwathama's head, born with his body and I wish to see it as a proof of his death. I shall live to see it put on your head." Having said this to the king, she turned towards Bhim and asked his help in her emergency, saying, " You must slay

क्षत्रधर्ममनुस्मरन् । जहि तं पापकर्माणं शम्बरं मघवानिव २२ ॥ न हि ते विक्रमे तुल्य पुमानस्तीह कश्चन । श्रुतं तत् सर्वलोकेषु परमव्यसने यथा ॥ २३ ॥ द्वीपोऽभूस्त्वंहि पार्थानां नगरे वारणावते।हिडिम्बदर्शनेचैव तथा त्वमभवो गतिः॥२४॥तथाविराटनगरे कीचकेन भृशार्दिताम् ।मामप्युद्धृतवान्कृच्छ्रात्पौलोमीं मघवानिव॥२५॥यथैतान्यकृथाः पार्थःमहाकर्माणि वैपुरा । तथा द्रौणिममित्रघ्न ।विनिहत्य सुखीभव॥२६।तस्या बहुविधं दुःखं निशम्य परिदेवितम । न चामर्षत कौन्तेयो भीमसेनो महाबलः ॥ २७। स काञ्चनविचित्राङ्गमारुरोह महारथम । आदाय रुचिरं चित्रं समार्गणगुणं धनुः॥ २८ ॥ नकुलं सारथिं कृत्वा द्रोणपुत्रवधेधृतः । विस्फार्य सशरंचापं तूर्णमश्वानचोदयत ॥ २९ ते. हयाः पुरुषव्याघ्र चोदिता वातरंहसः । वेगेन त्वरिता जग्मुर्हरयः शीघ्रगामिनः ॥३०॥ शिबिरात् स्वाद्गृहीत्वा स रथस्य पदमच्युतः । द्रोणपुत्ररथस्याशु ययौ वेगेन वीर्यवान् ॥ ३१ ॥ ऐषीकपर्वणि द्रौणिवधार्थं भीमगमने एकादशोऽध्यायः

धर्मको स्मरण करतेहुये मेरी रक्षाकरने के योग्यहो । २२ । उस पापकर्मी को ऐसे मारो जैसे कि इन्द्रने शम्बर को माराथा यहां कोई दूसरा पुरुष आपके पराक्रमके समान नहीं है । २३ । सब लोकों में सुना गयाहै कि जिसप्रकार वारणावत नगरके मध्यमें महाआपत्ति में तुम पाण्डवोंके रक्षक हुये । २४ । इसीप्रकार हिडम्ब राक्षस के देखने में तुम गतिहुये इसीप्रकार विराटनगर में कीचक के भयसे पीड़ावान् मुझ कोभी तुमने दुःखसे ऐसे छुड़ाया । २५ । जैसे कि पुलोमकीपुत्री इन्द्राणी को दुःख से छुड़ायाथा हे पाण्डव जैसेकि पूर्वसमयमें तुमने इनकर्मोंको कियाहै । २६ । इसी प्रकार उस मारनेवाले अपने शत्रु अश्वत्थामाको मारकर सुखीहो उसके विलाप कियेहुये बहुत प्रकारके दुःखको सुनकर । २७ । बड़े बलवान् पाण्डव भीमसेन ने नहीं सहा और स्वर्णमयी बड़े उत्तम रथपर सवारहुआ । २८ । बाण और पंचासमेत सुन्दर महाऊ धनुषको लेकर नकुलको सारथीकरके अश्वत्थामाके मारने में सन्नद्ध होनेवालेने । २९ । बाणसमेत धनुषको टङ्कारकरशीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया हे पुरुषोत्तम वह सधेहुये वायुके समान वेगवान् । ३० । शीघ्रगामी हरिजातके घोड़े तीव्रतासे जल्द चलदिये वह अजेय महापराक्रमी भीमसेन अपने से रथके चिह्नको लेकर तीव्रतासे अश्वत्थामाके रथकी ओर आधिचला ३१ ॥

the great sinner as Indra had done Shamvar. There is no man equal to you in prowess. I have heard how you protected all the Pandavas at Barnavat. You protected them from Hidimb. You relieved me from the fear of Kichak at Barnavat. 25. Slay Ashwathama as slow others and make me happy like the queen of Indra." Bhim " not bear to hear her lamentations and rode his gold car. He armed himself with jewelled bow and arrows and having made Nakul the driver of his car, he proceeded to slay Ashwathama. The swift horses of Hari breed drew his car as fast as wind and Bhima followed the marks made by Ashwathama's car." 31.

वैशम्पायन उवाच । तस्मिन् प्रयाते दुर्धर्षे यदूनामृषभस्ततः । अब्रवीत् पुण्डरीकाक्षः कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् ॥ १ ॥ एष पाण्डव ते भ्राता पुत्रशोकपरायण. । जिघांसुर्द्रौणिमाक्रन्दे एक एवाभिधावति ॥ २ ॥ भीमः प्रियस्ते सर्वेभ्यो भ्रातृभ्यो भरतर्षभ । तं कृच्छ्रगतमद्य त्वं कस्मान्नाभ्युपपद्यसे ॥ ३ ॥ यत्तदादिष्ट पुत्राय द्रोणः परपुरञ्जयः । अस्त्रं ब्रह्मशिरो नाम दहेत पृथिवीमपि ॥ ४ ॥ तन्महात्मा महाभाग. केतुः सर्वधनुष्मताम् प्रत्यपादयदाचार्यः प्रीयमाणो धनञ्जयम् ॥ ५ ॥ तं पुत्रोऽप्येक एवैनमन्वयाचदमर्षणः । ततः प्रोवाच पुत्राय नातिहृष्टमना इव ॥६॥ विदितं चापलं ह्यासीदात्मजस्य महात्मन. । सर्वधर्मविदाचार्यः सोऽन्वशात् स्वसुतं ततः ॥ ७ परमापद्गतेनापि न स्म तात त्वया रणे । इदमस्त्रं प्रयोक्तव्यं मानुषेषु विशेषत ॥ ८ ॥ इत्युक्तवान् गुरुः । पुत्रं द्रोणः पश्चादुक्तवान् । न त्वं जातु सतां मार्गे स्थातेति पुरुषर्षभ ॥ ९ ॥ स तदाज्ञाय दुष्टात्मा

अध्याय १२ ॥

वैशम्पायन बोले कि उस अजेय भीमसेनके प्रस्थान करनेपर यादवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर से बोले ।१। हे पांडव पुत्रके शोकसे पूर्ण यह तेरा भाई युद्धमें अश्वत्थामा के मारनेका अभिलाषी अकेलाही दौड़ताहै।२। हे भरतर्षभ यह भीमसेन सबभाइयों से अधिक तुमको प्याराहै अबतुम उस आपत्ति में फँसहुये को क्यों नहीं रक्षाकरतेहो ।३। अब शत्रुओं के पुरके विजय करनेवाले द्रोणाचार्य ने ब्रह्मशर अस्त्रका पुत्रको उपदेश किया जो पृथ्वीको भी भस्मकरसक्ता है ४ । सब धनुषधारियोंके ध्वजा रूप महात्मा महाभाग प्रसन्नचित्त आचार्यजी ने वह अस्त्र अर्जुनको बतलाया क्रोधयुक्त अकेले पुत्रने भी इसअस्त्र को चाहा जो कि उससे अत्यन्त प्रसन्नचित्त नहीं थे इसहेतु से उन्हों ने उस दुर्बुद्धी पुत्रकी चपलता जानकर सिखलातो दिया परन्तु सर्व धर्मज्ञ आचार्य जी ने उस पुत्र को शिक्षापूर्वक आज्ञादी ।७। कि हे पुत्र युद्ध में बड़ी आपत्ति में फँसने परभी तुझको भी यह अस्त्र छोड़ने के योग्यनहीं है चार विशेषकर मनुष्यों के ऊपर तो कभी नछोड़ना । ८ । यह कहकर फिर पुत्रसे यह वचन कहा कितुम अभी सत्पुरुषों के मार्ग में नियत नहीं होगे । ९ । हे पुरुषोत्तम युधिष्ठिर तब दुष्ट

CHAPTER XII

Va'shampayan said " At the departure of invincible Bhim, Shree Krishn the best of Yudavas said to Yudhishthir, " Full of grief to his son's death, your brother is going alone to slay Ashwathama. Why do you not protect Bhim who is dearer to you than all other brothers? Ashwathama has learnt from his father Dronacharya the use of *Brahmshar* weapon which is capable of destroying all the world. When the acharya taught that weapon to Arjun, Ashwathama the only son of the acharya, was much enraged, and wished to learn it. He was not pleased with this conduct of his son. He

पितुर्वचनमप्रियम् । निराशः सर्वकल्याणैः शोकात् पर्यचरन्महीम् ॥ १० ॥ ततस्तदा
कुरुश्रेष्ठ वनस्थे त्वयि भारत । अवसद्द्वारकामेत्य वृष्णिभिः परमार्चितः ॥ ११ ॥ स
कदाचित् समुद्रान्ते वसन् द्वारवतीमनु । एक एकं समागम्य मामुवाच हसन्निव ॥ १२ ॥
यत्तदुग्रं तपः कृष्ण चरन् सत्यपराक्रमः । अगस्त्याद्भारताचार्यः प्रत्यपद्यत मे पिता
॥ १३ ॥ अस्त्रं ब्रह्मशिरो नाम देवगन्धर्वपूजितम् । तदद्य मयि दाशार्ह यथा पितरि मे
तथा ॥ १४ ॥ अस्मत्तस्तदुपादाय दिव्यमस्त्रं यदूत्तम । ममाप्यस्त्रं प्रयच्छ त्वं चक्रं रिपु
हणं रणे ॥ १५ ॥ स राजन् प्रीयमाणेन मयाप्युक्तः कृताञ्जलिः । याचमानः प्रयत्नेन
मत्तोऽस्त्रं भरतर्षभ ॥ १६ ॥ देवदानवगन्धर्वमनुष्यपतगोरगाः । न समा मम वीर्यस्य
शतांशेनापि पिण्डिताः ॥ १७ ॥ इदं धनुरियं शक्तिरिदं चक्रमियं गदा । यद्यदिच्छसि
चेदस्त्रं मत्तस्तत्तद्ददानि ते ॥ १८ ॥ यच्छक्नोषि समुद्यन्तुं प्रयोक्तुमपि वा रणे तद्गृ

अन्तः करणवाला पिताके अप्रिय वचन को जानकर सब कल्याणों से निराश होकर शोकसे पृथ्वीपर घुमा । १० । द्वारका में आकर यादवों से परमपूजित होकर बसा वह एकसमय द्वारकाके सम्मुख समुद्रके पास निवास करताहुआ अकेला ही हँसकर मुझ से बोला । १२ । कि हे श्रीकृष्णजी बड़े तपको करते भरतवंशियों के आचार्य सत्यपराक्रमी मेरे पिताने जो उस ब्रह्मशिरनाम अस्त्रको जो कि देवता और गन्धर्वों से पूजित है अगस्त्यजीसे पाया है श्रीकृष्णजी अब वह वैसेही मेरे भी पासहै जैसे कि पिताके पासहै । १४ । हे यादवों में श्रेष्ठ तुम उस दिव्य अस्त्र को मुझसे लेकर मुझको भी वह चक्रअस्त्रको जो कि युद्धमें शत्रुओं का मारनेवाला है । १५ । हे भरतर्षभ राजा युधिष्ठिर वह हाथ जोड़कर बड़े उपाय पूर्वक मुझ से अस्त्र मांगनेवाला हुआतब मुझ प्रसन्नचित्त ने उससे कहा कि देवता दानव, गंधर्व मनुष्य, पक्षी, सर्प यह सब मिलकर भी मेरे पराक्रम के सोलहवें भाग के समान नहीं हैं । १७ । यह धनुष है यह शक्ति है यह चक्र है यह गदा है इनमें से जिस अस्त्र को तुम मुझ से चाहते हो उसको मैं तुमको देताहूं । १८ । जिसको तुमउठा

---

taught him the use of it, but warned him never to use it, specially against human beings, even at the time of great emergency. He also foretold at the same time that his son would never be firm on the path of the righteous. Ill-natured Ashwathama, finding that his father was not well-disposed towards him, roamed restlessly through out the world. 10. He staid at Dwarka and was respected by the Yadavas. *One day he met me alone near the sea shore in the* vicinity of Dwaraka and said to me with a smile " My glorious father learnt from *Agastya* the use of Brahmshar which is respected by gods and gandharvas, and I have shared the knowledge of it with my father. I shall teach you all about it, if you will give me your foe-destroying discus. " 15. With joined palms he asked me to

ग्राह्यं विना युद्धेन यन्मे दातुमभीप्ससि ॥ १९॥ स सुनाभं सहस्रारं वज्रनाभमयस्मयम् ।
ययाचे चक्रं महाभागो मत्तः स्पर्धन्मया सह ॥ २० ॥ गृहाण चक्रमित्युक्तो मया तु तद
नन्तरम् । जग्राहोत्पत्य सहसा चक्रं सव्येन पाणिना ॥ २१ ॥ न चैवमशकत् स्थानात्
सञ्चालयितुमच्युत । अथैनं दक्षिणेनापि गृहीतुमुपचक्रमे ॥ २२ ॥ सर्वयत्नेन तेनापि
गृह्णन्नेवमिदं ततः । ततः सर्वबलेनापि यदैनं न शशाक ह ॥ २३ ॥ उद्धर्तुं वा चाल
यितुं द्रौणिः परमदुर्मनाः । कृत्वा यत्नं परिश्रान्तः संन्यवर्तत भारत ॥ २४ ॥ निवृत्तम
नसं तस्मादभिप्रायाद्विचेतसम् । अहमामन्त्र्य सम्विग्नमश्वत्थामानमब्रुवम् । २५ ॥ यः
सदेवमनुष्येषु प्रमाणं परमं गतः । गाण्डीवधन्वा श्वेताश्वः कपिप्रवरकेतनः ॥ २६ ॥
यः साक्षाद्देवदेवेशं शितिकण्ठमुमापतिम् । द्वन्द्वयुद्धे पराजिष्णुस्तोषयामास शङ्करम्
। २७ । यस्मात् प्रियतरो नास्ति ममान्यः पुरुषो भुवि । नादेयं यस्य मे किञ्चिदपि

सक्ते हो और युद्ध में चक्रभी सक्ते हो आप जिस अस्त्रको मुझे देना चाहते हो उसके बिना दियेही इनमें से जो चाहो सो लो । १९ तब मुझ से ईर्षा करनेवाले उस महाभाग ने सुन्दर नाभि और हजार आरा रखने वाले वज्रनाभ लोहमयी चक्र को मुझ से मांगा । २० । तब मैंने भी उसी समय कह दिया कि चक्रको लो। तब उस ने उठकर अकस्मात् बायें हाथ से चक्र को पकड़ लिया । २१ । परन्तु उसको स्थानपर से हटाने को समर्थ नहीं हुआ फिर दक्षिण हाथ से भी उस को पकड़ना प्रारम्भ किया । २२ । इसके पीछे अनेक उपायोंसे भीउसको उठा न सका । २३ । फिर बड़ा दुःखीचित्त अश्वत्थामा जब कि सब पराक्रम करने से भी उसके उठाने और हटानेको भी समर्थ नहीं हुआ और सब उपायोंको करके थककर अलग होगया तब मैंने उस अभिप्राय से चित्त उठानेवाले विमन और व्याकुल अश्वत्थामासे यह वचन कहा । २५ । कि जिस गांडीव धनुष श्वेत घोड़े और हनुमानजीकी ध्वजा रखनेवाले अर्जुनने देवता और मनुष्यों के मध्यमें बड़े प्रमाणको पाया और जिसने पूर्वसमयमें साक्षात् भगवान देवताओं के

give him my weapon. I was pleased with him and said, "Gods, gandharvas, men, birds and serpents, all put together, are not equal to even the sixteenth part of my prowess. Here are my bow, Shakti discus and mace. Select whichever of those you like and I shall give it to you. Take whichever of these you can bear and wield, without giving me anything in return." Bearing malice against me, he asked of me my discus with a good nave and a thousand spokes, entirely made of iron, which I call my vajra. 20. Of course I at once gave him permission to take it away. He held it by the his left hand, but could not move it from its place. Then he used his right hand also but for all his efforts could not lift it up. He was much troubled in his mind when he could not lift and move it. Being tired, he stood aloof. Seeing that he was hopeless, heartless and

दारा सुतास्तथा ॥ २८ ॥ तेनापि सुहृदा ब्रह्मन् पार्थेनाक्लिष्टकर्मणा । नोक्तपूर्वमिदं वाक्यं यत्त्वं मामभिभाषसे ॥ २९ ॥ ब्रह्मचर्यं महद्घोरं तीर्त्वा द्वादशवार्षिकम् । हिमवत्पार्श्वमभ्येत्य यो मया तपसार्जितः ॥ ३० ॥ समानव्रतचारिण्यां रुक्मिण्यां योऽन्वजायत । सनत्कुमारस्तेजस्वी प्रद्युम्नो नाम मे सुतः ॥ ३१ ॥ तेनाप्येतन्महद्दिव्यं चक्रमप्रतिमं मम । न प्रार्थितमभून्मूढ यदिदं प्रार्थितं त्वया ॥ ३२ ॥ रामेणातिबलेनैतन्नोक्तपूर्वं कदाचन । न गदेन न साम्बेन यदिदं प्रार्थितं त्वया ॥ ३३ ॥ द्वारकावासिभिश्चान्यैर्वृष्ण्यन्धकमहारथैः । नोक्तपूर्वमिदं जातु यदिदं प्रार्थितं त्वया ॥ ३४ ॥ भारताचार्यपुत्रस्त्वं मानितः सर्वयादवैः । चक्रेण रथिनां श्रेष्ठ कन्नु तात युयुत्ससे ॥ ३५ ॥ एवमुक्तो मया द्रौणिर्मामिदं प्रत्युवाच ह । प्रयुज्य पूजां भवते योत्स्ये कृष्ण त्वयेत्युत ॥ ३६ ॥

ईश्वर शितिकण्ठ उमापति शंकरजी को द्वन्द्वनाम युद्ध में प्रसन्न किया जिससे अधिक इस पृथ्वीपर मेरा दूसरा कोई प्रिय नहीं है ॥ २८ ॥ स्त्री और पुत्रादिकभी उसको देनेके अयोग्य नहीं हैं हे ब्राह्मण उस सुगमकर्मी मेरेमित्र अर्जुन नेभी प्रथम मुझसे यह वचन नहीं कहा जो तुमने मुझसे कहा है ॥ २९ ॥ मैंने हिमालयकी कुक्षिमें नियत होकर बारहवर्ष बड़े घोर ब्रह्मचर्यको करके तपकेद्वारा जिसको प्राप्तकिया ॥ ३० ॥ और जो सदैव व्रतकरनेवाली रुक्मिणी में उत्पन्नहुआ तेजस्वी सनत्कुमार प्रद्युम्न नाम मेरेपुत्र नेभी इस बड़े दिव्य और युद्धमें अनुपम चक्रकी इच्छा नहींकी है अज्ञान जिसको तैंने मांगाहै ॥ ३२ ॥ उसको कभी हमारे बड़े बलदेवजी ने भी नहीं मांगाथा जो तैंने मांगा है वह गद और साम्ब ने भी नहीं मांगा और अन्य वृष्णी अन्धकवंशी द्वारकावासी महारथियोंने भी पूर्व में इस को कभी नहीं मांगा ॥ ३४ ॥ तुम भरतवंशियों के आचार्य के पुत्रहो और सब यादवों से प्रतिष्ठितहो हे रथियों में श्रेष्ठ तात तुम चक्रसे किसके साथ युद्ध करोगे ॥ ३५ ॥ मेरे इस वचनको सुनकर अश्वत्थामा ने मुझको यह उत्तरदियाकि हे श्रीकृष्णजी मैं आपका पूजनकरके आपही के साथ लडूंगा ॥ ३६ ॥ मैंने देवता

distressed, I said to him 27 The wielder of Gandiv bow and possessor of white horses and ape banner, Arjun, who is of well tried prowess among gods and men, he who pleased Sankar the Lord of Uma and god of gods himself in a duel, than whom I hold none dearer in the world and whom I would give away my wife and son, even that one-working Arjun never told me the thing that you have. He whom I got after a severe asceticism in a Himalayan cave, and who is born of ever vow observing Rukmini, even that glorious son of mine, Pradyumna never had any desire to possess this matchless discus which you were foolish enough to ask of me. 32 I was never requested to part with it by Baldev, Gada, Samv or any other warriors of Dwarka. You, the son of the acharya respected by

प्रार्थितं ते मया चक्रं देवदानवपूजितम् । अजेयः स्यामिति विभो सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥ ३७ ॥ त्वत्तोऽहं दुर्लभं काममनवाप्यैव केशव । प्रतियास्यामि गोविन्द शिवेनाभिवदस्व माम् ॥ ३८ ॥ एतत् सुभीमं भीमानां वृष्णीनामृषभेण त्वया धृतम् । चक्रमप्रतिचक्रेण भुवि नान्योऽभिपद्यते ॥ ३९ ॥ एतावदुक्त्वा द्रौणिर्मां युग्यानश्वान् धनानि च । आदायोपयया काले रत्नानि विविधानि च ॥ ४० ॥ स संरम्भी दुरात्मा च चपलः क्रूर एव च । वेद चास्त्रं ब्रह्मशिरस्तस्माद्रक्ष्यो वृकोदरः ॥ ४१ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि ऐषीकपर्वणि कृष्णयुधिष्ठिरसंवादे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥



और दानवोंसे पूजित आपके चक्रकी याचनाकरीहै और हेसमर्थ मैं आपसे सत्य २ कहताहूं कि मैं अजेयहूं ॥३७ हेकेशवजी आपसे दुष्प्राप्य मनोरथको न पाकर चला जाऊंगा हे गोविंदजी आपमुझको कल्याण के साथ नमस्कारकरो ॥३८॥ मुझउत्तम और अनुपम चक्रवाले ने यह भयानक रूपोंका भी भयानक चक्रधारणकियाहै पृथ्वीपर दूसराइसको नहीं पासक्ताहै ॥ ३९ अश्वत्थामा इसप्रकार मुझसे कहकर और समयपर मुझसे घोडेधन और अनेकप्रकार के रत्नोंको लेकर हस्तिनापुरको चलागया ४० वह क्रोधयुक्त दुर्बुद्धी चालाक और निर्दयीहै और ब्रह्मशरअस्त्रको जानताहै भीमसेन इससे रक्षाके योग्यहै ॥ ४१ ॥



all the Yadavas, whom would you u e the weapon to fight with ? " 35 To this question of m ne he made the following reply, " I would worship and fight with you, Krishn It was there fore that I asked of you the weapon. I say truly that I am invincible. I came to you on a bootless mission Bless me Govind, and bid me good bye. You possess a dreadful and matchless weapon such as none else in the world has, " Having said this to me, Ashwathama accepted from me a present of horses and wealth in precious stones and went away to Hasthinapore. He is rash, ill nature l, revengeful and cruel and knows the use of Brahmshar, and therefore Bhim is worthy of being protected from him, " 41.



वैशम्पायन उवाच। एवमुक्त्वा युधां श्रेष्ठः सर्वयादवनन्दनः। सर्वायुधवरोपेतमारुरोह रथोत्तमम्॥१॥ युक्तं परमकाम्बोजैस्तुरगैर्हेममालिभिः। आदित्योदयवर्णस्य धुरं रथवरस्य तु॥२॥ दक्षिणामवहच्छैब्यः सुग्रीवः सव्यतोऽभवत्। पार्ष्णिवाहौ तु तस्यास्तां मेघपुष्पबलाहकौ॥३॥ विश्वकर्मकृता दिव्या रत्नधातुविभूषिता। उच्छ्रितेव रथे माया ध्वजयष्टिरदृश्यत॥४॥ वैनतेयः स्थितस्तस्यां प्रभामण्डलरश्मिवान्। तस्य सत्यवतः केतुर्भुजगारिरदृश्यत॥५॥ अन्वारोहद्धृषीकेशः केतुः सर्वधनुष्मताम्। अर्जुनः सत्यकर्मा च कुरुराजो युधिष्ठिरः॥६॥ अशोभेतां महात्मानौ दाशार्हं स्यन्दने स्थितौ। रथस्थं शार्ङ्गधन्वानमश्विनाविव वासवम्॥७॥ तावुपारोप्य दाशार्हः स्यन्दनं लोकपूजितम्। प्रतोदेन जवोपेतान् परमाश्वानचोदयत्॥८॥ ते हयाः सहसोत्पेतुर्गृहीत्वा स्यन्दनोत्तमम्। आस्थितं पाण्डवेयाभ्यां यदूनामृषभेण च॥९॥ वहतां शार्ङ्ग

तेरहवां अध्याय १३ ॥

वैशम्पायन बोले कि युद्धकर्त्ताओंमें श्रेष्ठ और सब यादवोंके प्रसन्न करने वाले श्रीकृष्णजी इसप्रकार कहकर उस उत्तम रथपर सवार हुये जोकि उत्तम अस्त्र शस्त्रों से युक्त स्वर्णमयी मालाधारी काम्बोजदेशी घोड़ोंसे जुड़ाहुआथा और जिसके उत्तमधुर उदयहुये सूर्य के स्वरूपथे ।१। शैब्यनाम घोड़ेने दक्षिणचक्रको उठाया और सुग्रीव नाम घोड़ा बाईंओर हुआ और उस रथके पार्श्ववाहक मेघपुष्पबलाहक नामघोड़ेहुये ३ विश्वकर्म्मा के बनाईहुईरत्न और धातुसे अलंकृत दिव्यऔर ऊंची यष्टी रथकी ध्वजापर मायाके समान दिखाईपड़ी।४। प्रकाश मण्डलरूप किरण रख नेवाले गरुड़जी उस ध्वजामें नियतहुये उस सत्यवक्ताकी ध्वजारूपहुआ दिखाईपड़े ५ उसके पीछेसब धनुषधारियोंकी ध्वजा केशवजी सत्यकर्मीअर्जुन और कौरवराज युधिष्ठिररथपर सवारहुए ।६। समीप वर्त्तमान दोनों महात्माओंने रथपर सवार शार्ङ्ग धनुषधारी श्रीकृष्णजीको ऐसे शोभायमान किया जैसे किदोनों अश्विनीकुमारोंने इन्द्रको शोभित कियाथा ।७। श्रीकृष्णजीने उन दोनोंको उस पूजित रथपर बैठाकर शीघ्रतासे संयुक्त उत्तम घोड़ोंको चाबुक से ताड़ित किया ।८। पाण्डव और यादवों

CHAPTER XII

Vaishampayan said, "Shri Krishn the best of warriors and joy of the Yadavas, having spoken as above, rode the good car furnished with arms and weapons, decked with gold chaplets and drawn by excellent horses of Camboj breed. It shone like the rising Sun. Shaivya, Sugrov, Meghpushp and Valahik were the four horses that drove the car. The standard, made by Vishwakarma himself, was composed of metals and precious stones, and the figure of garur adorned the banner. 5. Such was the car in which sat Keshav, Yudhishthir and Arjun. The two heroes sitting by the wielder of Sharang bow, looked like the Ashwinkumars with Indra in the middle. When the trio were seated in the car, Shri Krishn drove the horses fast as

ध्वजानामश्वानां शीघ्रगामिनाम् । प्रादुरासीन्महान् शब्दः पक्षिणां पततामिव । १० ॥
ते समार्च्छन्नरव्याघ्राः क्षणेन भरतर्षभ । भीमसेनं महेष्वासं समनुद्रुत्य वेगिताः ॥११॥
क्रोधदीप्तं तु कौन्तेयं द्विपदर्थे समुद्यतम् । नाशक्नुवन् वारयितुं समेत्यापि महारथाः
॥ १२ ॥ स तेषां प्रेक्षतामेव श्रीमतां दृढधन्विनाम् । ययौ भागीरथीकच्छं हरिभिर्भृश
वेगितैः । यत्र स्म श्रूयते द्रौणिः पुत्रहन्ता महात्मनाम् ॥ १३ ॥ स ददर्श महात्मानमुद
कान्ते यशस्विनम् । कृष्णद्वैपायनं व्यासमासीनमृषिभिः सह ॥ १४ ॥ तं चैव क्रूरक
र्माणं घृताक्तं कुशचीरिणम् । रजसा ध्वस्तमासीनं ददर्श द्रौणिमन्तिके ॥ १५ । तमभ्य
धावत् कौन्तेय प्रगृह्य सशरं धनुः । भीमसेनो महाबाहुस्तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ॥१६॥
स दृष्ट्वा भीमधन्वानं प्रगृहीतशरासनम् । भ्रातरौ पृष्ठतश्चास्य जनार्दनरथे स्थितौ
॥ १७ ॥ व्यथितात्माभवद्द्रौणिः प्राप्तं चेदममन्यत । स तद्दिव्यमदीनात्मा परमास्त्रमचिं

तब श्रीकृष्णजी से सवारी युक्त उत्तम रथको वह घोड़ेलेकर अकस्मात् उड़े ।९।
श्रीकृष्णजीको लेचलनेवाले शीघ्रगामीघोड़ोंके ऐसे बड़ेशब्दहुये जैसेकि उड़तेहुये
पक्षियोंके शब्दहोतेहैं ।१०। हे भरतर्षभ उन वेगवान् नरोत्तमोंनेबड़े धनुषधारीभीमसेन
की ओर चलकर क्षणभरमेंही उसकोपाया ।११। वह महारथी मिलकरभी उसक्रोधसे
प्रकाशितऔर शत्रुसे युद्धकरने को सन्नद्ध भीमसेनके रोकनेको समर्थनहींहुये ।१२।
वह भीमसेन उन दृढ़धनुषधारी श्रीमान् भाइयों और श्रीकृष्णजी के देखतेहुये अत्य
न्तशीघ्रगामी घोड़ोंके द्वाराश्रीगंगाजी के तटपर गये जहांकि महात्माओंके पुत्रोंके
मारनेवाले अश्वत्थामा सुनेगयेथे ।१३। उस भीमसेनने जलके समीप महात्मा यशवान्
व्यासजी को ऋषियों समेत बैठाहुआ देखा । १४ । और उस निर्दयकर्मा घृतसे
भीगेहुए शरीर वड़े चीरधारी धूलसे लिप्त शरीर अश्वत्थामाको भी समीप बैठाहुआ
देखा । १५ । वह कुन्तीकापुत्र महाबाहु भीमसेन धनुषबाणको लेकर उसके सन्मुख
दौड़ा और तिष्ठ२ वचन कहा । १६ । वह अश्वत्थामा धनुषधारी भीमसेनको देख
कर और पीछे श्रीकृष्णजी के रथपर नियत दोनों भाइयोंको देखकर चित्त से

the wind. The noise of the swift horses resembled that of a flight of of birds. 10 They soon overtook Bhim, but could not stop or keep him back from his purpose of fighting with the enemy. He continued moving on within sight of his glorious brothers and Sri Krishn till he reached near the bank of the Ganges where Ashwathama the slayer of the sons of the Pandavas was reported to be. Bhimsen saw Vyas and other rishis seated near water, Ashwathama too, with his body rubbed over with ghee and dust, sat near them 15. Valiant Bhim the son of Kunti, taking up his bow and arrow ran towards him, saying, "Stay, stay" Seeing Bhim armed with bow and arrow and followed by Shri Krishn and the two brothers, Ashwathama was much distressed and lost all hope for his life. The brave man remembered

तयत् १८ ॥ अग्राह च स चेषीकां द्रौणिः सव्येन पाणिना । स तामापदमासाद्य दिव्य मस्त्रमुदैरयत् ॥ १९ ॥ अमृष्य माणस्ताञ्छूरान् दिव्यायुधधरान् स्थितान् । अपाण्डवा येति रुषा व्यसृजद्दारुणं वचः ॥ २० ॥ इत्युक्त्वा राजशार्दूल द्रोणपुत्रः प्रतापवान् । सर्वलोकप्रमोहार्थं तदस्त्रं प्रमुमोच ह ॥ २१॥ ततस्तस्यामिषीकायां पावकः समजायत प्रधक्ष्यन्निव लोकांस्त्रीन् कालान्तकयमोपमः ॥ २२ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि ऐषिकपर्वणि ब्रह्मशिरोऽस्त्रत्यागे त्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥



पीड़ितहुये और मृत्युको वर्त्तमानजाना उस महासाहसीने उस दिव्य महा उत्तम अस्त्रको स्मरण किया । १८ । और बायेंहाथसे एक सींकको पकड़ा और उस आपत्ति को प्राप्त होकर दिव्य अस्त्रको पढ़ा । १९ । और दिव्यशस्त्रधारण करनेवाले वाले उन शूरों को न सहकर उस अश्वत्थामा ने क्रोधसे भयकारी वचन को कहा कि यह अस्त्र मैं पाण्डवोंके नाश के निमित्त छोड़ताहूं । २० । हे राजेन्द्र प्रतापवान् अश्वत्थामा ने यह कहकर सब लोक के बड़े मोहके निमित्त उस अस्त्रको छोड़ा । २१ । इसके पीछे उस सींकमें काल और यमराजके समान तीनोंलोकों को भस्मकरनेवाली अग्नि उत्पन्नहुई ॥ २२ ॥

the divine weapon. He took up a piece of broom and pronounced over it the aphorism. Unable to bear the sight of those warriors, he uttered dreadful words in his rage, saying, "I discharge this weapon for the destruction of the Pandavas." Having said, this glorious Ashwathama discharged the weapon to stupefy the world. Then deadly sparks began to come out of that broom." 22.



वैशम्पायन उवाच। इङ्गितेनैव दाशार्हस्तमभिप्रायमादितः। द्रौणेर्बुद्ध्वा महाबाहुरर्जुनं प्रत्यभाषत॥ १॥ अर्जुनार्जुन यद्दिव्यमस्त्रं ते हृदि वर्तते। द्रोणोपदिष्टं तस्यायं कालः संप्रति पाण्डव॥ २॥ भ्रातॄणामात्मनश्चैव परित्राणाय भारत। विसृजैतत्त्वमप्याजावस्त्रमस्त्रनिवारणम्॥ ३॥ केशवेनैवमुक्तस्तु पाण्डवः परवीरहा। अवातरद्रथात्तूर्णं प्रगृह्य सशरं धनुः॥ ४॥ पूर्वमाचार्यपुत्राय ततोऽनन्तरमात्मने। भ्रातृभ्यश्चैव सर्वेभ्यः स्वस्तीत्युक्त्वा परन्तपः॥ ५॥ देवताभ्यो नमस्कृत्य गुरुभ्यश्चैव सर्वशः। उत्ससर्ज शिवं ध्यायन्नस्त्रमस्त्रेण शाम्यताम्॥ ६॥ ततस्तदस्त्रं सहसा सृष्टं गाण्डीवधन्वना। प्रजज्वाल महार्चिष्मद्युगान्तानलसंनिभम्॥ ७॥ तथैव द्रोणपुत्रस्य तदस्त्रं तिग्मतेजसः। प्रजज्वाल महाज्वालं तेजोमण्डलसंवृतम्॥८॥ निर्घाता बहवश्चासन्पेतुरुल्का

अध्याय १४॥

वैशम्पायन बोले कि महाबाहु श्रीकृष्णजी ने प्रथमही से उस अश्वत्थामा के उस मनके विचारको जानकर अर्जुन से कहा। १। कि हे पाण्डव अर्जुन जो द्रोणाचार्य का उपदेश किया हुआ वह दिव्य अस्त्र वर्तमानहै उसका यह समय वर्तमान हुआ है। २। हे भरतवंशी तुमभी इस युद्धभूमि में अपनी और अपने भाइयोंकी रक्षाके लिये अस्त्रके रोकनेवाले उस अस्त्रको छोड़ो। ३। इसके पीछे शत्रुओंके वीरोंका मारनेवाला और केशवजीसे इसप्रकार कहाहुआ पाण्डव अर्ज्जुन धनुषबाण को लेकर शीघ्रही रथसे उतरा। ४। वह शत्रुओं का तपानेवाला प्रथम गुरुपुत्र के लिये फिर अपने और सब भाइयों के अर्थ भलाहोय यह कहकर। ५। देवता और सब गुरुओंके अर्थ नमस्कार करके शिवजीको ध्यान करते हुये अर्जुन ने उस अस्त्रको छोड़ा और कहा कि अस्त्र से अस्त्र शान्तहोय। ६। इसके पीछे अकस्मात् गांडीव धनुषधारी से छोड़ाहुआ और प्रलयकालकी अग्नि के समान बड़ाप्रकाशित अस्त्र ज्वलितरूप हुआ। ७। और उसीप्रकार बड़े तेजस्वी अश्वत्थामा काभी वह अस्त्र ज्वलित रूपहुआ जो कि तेजमण्डल से युक्त बड़ी ज्वाला रखने वाला था। ८। परस्पर वायुके संघट्टों के बड़े शब्दहुये हजारों उल्कापातहुये

CHAPTER XIV

Vaishampayan said, "Knowing already the evil intentions of Ashwathama, Sri Krishn said to Arjun, " This is the time to discharge the weapon given you by Dronacharya. Discharge it to check the weapon of your adversary in order to protect yourself and your brothers." Thus urged by Keshav, Arjun the destroyer of foes, came down at once from the car with his bow and arrow. 4 Saying, "Safety to the son of acharya and the Pandav brothers," he bowed down to his preceptor and mediatating on Shiv, he discharged his weapon, saying, " To mitigate the effect of the weapon, |" Discharged suddenly by the wielder of Gandiv, the weapon shone like fire- Ashwa-

सहस्रशः । महद्भयञ्च भूतानां सर्वेषां समजायत ॥ ९ ॥ सशब्दमभवद्व्योम ज्वाला
मालाकुलं भृशम । चचाल च मही कृत्स्ना सपर्वतवनद्रुमा ॥ १० ॥ ते त्वस्त्रतेजसी
लोकांस्तापयन्ती व्यवस्थिते । महर्षी सहितौ तत्र दर्शयामासतुस्तदा ॥ ११ ॥ नारदः
सर्वभूतात्मा भरतानां पितामहः । उभौ शमयितुं वीरौ भारद्वाजधनञ्जयौ ॥ १२ ॥ तौ
मुनी सर्वधर्मज्ञौ सर्वभूतहितैषिणौ । दीप्तयोरस्त्रयोर्मध्ये स्थितौ परमतेजसौ ॥ १३ ॥
तदन्तरमनाधृष्यावुपगम्य यशस्विनौ । आस्तामृषिवरौ तत्र ज्वलिताविव पावकौ
॥ १४ ॥ प्राणभृद्भिरनाधृष्यौ देवदानवसम्मतौ । अस्त्रतेजः शमयितुं लोकानां हितकाम्यया ॥ १५ ॥ ऋषी ऊचतुः । नानाशस्त्रविदः पूर्वे येऽप्यतीता महारथाः । नैतदस्त्रं
मनुष्येषु तैः प्रयुक्तं कथञ्चन । किमिदं साहसं वीरौ कृतवन्तौ महात्ययम् ॥ १६ ॥

सौप्तिकपर्वणि ऐषिकपर्वणि अर्जुनास्त्रत्यागे चतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

और जबजीवों को बड़ाभय उत्पन्नहुआ । ९ । शब्दायमान आकाश ज्वाला
मालाओं से व्याप्तहुआ पर्वत वन और वृक्षों समेत पृथ्वी कम्पायमानहुई । १० ।
इसप्रकार वहदोनों प्रकाश लोकोंको तपातेहुयेनियतहुये तबवहां उनदोनों महर्षियोंने
एकसाथ दर्शनकिया । ११ । सबजीवों के आत्मारूप नारदजी और भरतवंशियोंके
पितामह व्यासजी यहदोनों महात्मा वीर अश्वत्थामा और अर्जुन के शान्त करनेको
उपस्थितहुये । १२ । सबधर्मोंके ज्ञाता और सबजीवों के हितकारि बड़े तेजस्वी वह
दोनों मुनि बड़ेप्रकाशित उनदोनों अस्त्रोंके मध्यमें नियतहुये । १३ । उससमय वह
यशस्वी पराक्रमी और अग्निके समान प्रकाशित दोनों उत्तमऋषि वहांजाकर नियत
हुये । १४ । वह जीवमात्रोंसे अजेय देवता और दानवों के अंगीकृत दोनों ऋषि
लोकों की वृद्धिकी इच्छासे अस्त्रोंका तेजशान्त करतेहुये मध्यमें नियतहुये । १५ ।
और बोलेकि नानाप्रकार अस्त्रोंकेज्ञाता सब महारथी जो पूर्वसमयमेंभी उत्पन्नहुये
उन्होंने भी इसअस्त्रको कभीकिसी मनुष्यपर नहीं छोड़ा हेवीरलोगो तुमने इसबड़े
विनाशकारी साहसको क्योंकिया १६ ॥

thama's weapon too looked like a mass of fire. There was a severe storm of wind and meteors fell down with a crash, causing fear to life. The sky was covered with flames of fire and the Earth with her trees shook. 10. Thus the two lights stood side by side heating the world. The two great rishis Narad and Vyas came there to appease the wrath of Ashwathama and Arjun. Knowing all dharm and wishing good to the world, the two glorious rishis stood in the midst of the two weapons, glorious and invincible, bright as fire. Cooling the fury of both the weapons, invincible by all beings, the two rishis respected by gods and gandharvas, stood there and said, "The former warriors who knew the use of all sorts of weapons, never discharged this weapon against human beings. Why have you committed this rashness brave men?" 16.

वैशम्पायन उवाच । दृष्ट्वैव नरशार्दूल तावग्निसमतेजसौ । संजहार शरं दिव्यं
त्वरमाणो धनञ्जयः ॥ १ ॥ उवाच भरतश्रेष्ठ तावृषी प्राञ्जलिस्तदा । प्रयुक्तमस्त्रमस्त्रेण
शाम्यतामिति वै मया ॥ २ ॥ संहृते परमास्त्रेऽस्मिन् सर्वानस्मानशेषतः । पापकर्मा ध्रुवं
द्रौणिः प्रधक्ष्यत्यस्त्रतेजसा ॥ यदत्र हितमस्माकं लोकानां चैव सर्वथा । भवन्तौ देवस
ङ्काशौ तथा सम्मन्तुमर्हथः ॥ ४ ॥ इत्युक्त्वा संजहारास्त्रं पुनरेव धनञ्जयः । संहारो
दुष्करस्तस्य देवैरपि हि संयुगे ॥ ५ ॥ विसृष्टस्य रणे तस्य परमास्त्रस्य संग्रहे ।
अशक्तः पाण्डवादन्यः साक्षादपि शतक्रतुः ॥ ६ ॥ ब्रह्मतेजोद्भवं तद्धि विसृष्टमकृतात्
मना । न शक्यमावर्तयितुं ब्रह्मचारिव्रतादृते ॥ ७ ॥ अचीर्णब्रह्मचर्यो यः सृष्ट्वावर्त
यते पुनः । तदस्त्रं सानुबन्धस्य मूर्धानं तस्य कृन्तति ॥ ८ ॥ ब्रह्मचारी व्रती चापि दुरावा

अध्याय १५ ॥

वैशम्पायन बोले हे नरोत्तम शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने अग्नि के समान प्रकाशित उन ऋषियों को देखकर दिव्यबाण को संहार करलिया अर्थात् लौटा लिया । १ । हे भरतर्षभ तब वह अर्जुन हाथजोड़कर उनऋषियों से बोलाकि मैंने यह समझकर अस्त्रको प्रकटकिया है कि यह अस्त्र इसअस्त्र से शांतहोय । २ । इस उत्तम अस्त्रके लौट आनेपर निश्चयकरके पापकर्मी अश्वत्थामा इसतेज अस्त्रसे हम सबको भस्मकरेगा । ३ । यहांपरसदैव हमारा और लोकोंका जोहित है उसको देवतारूप आपलोग उसीप्रकार से अङ्गीकार करने के योग्यहो । ४ । अर्जुनने इस प्रकारसे फिर अस्त्रको लौटाया युद्ध में देवताओं सेभी उसका फिरलौटाना कठिन है । ५ । पांडव अर्जुनके सिवाय युद्धमें साक्षात् इन्द्रभी उस छोड़ेहुये परम अस्त्र के लौटानेको समर्थ नहीं है । ६ । ब्रह्मचारीका व्रतरखनेवाले पुरुषके सिवाय ब्रह्म तेजसे उत्पन्न छोड़ाहुआ अस्त्र अजितेन्द्रिय से कभी लौटाने के योग्य नहीं है । ७ । ब्रह्मचर्य न करनेवाला जो पुरुष अस्त्रको छोड़कर फिर लौटाता है वह अस्त्र साथियों समेतउस छोड़नेवालेके मस्तकको काटताहै । ८ । ब्रह्मचारी व्रत करनेवाला

CHAPTER XV

Vaishampayan said, " Seeing the two rishis glorious like fire, Arjun recalled his divine arrows. And with joined palms he said to them, " I discharged my weapon to appease the other. Surely Ashwathama will burn us with his weapon, for I have recalled mine own. You will do what is good to us and to the world, divine sages." Thus Arjun recalled the weapon and did a deed which was difficult to be achieved by gods. 5. None except Arjun, not even Indra himself, could recall that weapon when once discharged. None except a Brahmachari could do the glorious deed; for the weapon kills the man who recalls it, if he is not a *Brahmachari*. Arjun the Brahmachari recalled the weapon in spite of having so much to revenge for. For Arjun was the

समवाप्य तत् । परमव्यसनार्त्तोऽपि नार्जुनोऽस्त्रं व्यमुञ्चत ॥ ९ ॥ सत्यव्रतधरः शूरो ब्रह्मचारी च पाण्डवः । गुरुवर्त्ती च तेनास्त्रं सञ्जहारार्जुनः पुन ॥ १० ॥ द्रौणिरप्यथ संप्रेक्ष्य तावृषी पुरतः स्थितौ । न शशाक पुनर्घोरमस्त्रं संहर्त्तुमोजसा ॥ ११ ॥ अशक्तः प्रतिसंहारे परमास्त्रस्य संयुगे द्रौणिर्दीनमना राजन् द्वैपायनमभाषत ॥१२॥ उत्तमव्यसनार्तेन प्राणत्राणमभीप्सुना । मयैतदस्त्रमुत्सृष्टं भीमसेनभयान्मुने ॥ १३ ॥ अधर्मश्च कृतोनेन धार्त्तराष्ट्रं जिघांसता । मिथ्याचारेण भगवन् भीमसेनेन संयुगे ॥ १४ ॥ अतः सृष्टमिदं ब्रह्मन् मयास्त्रमकृतात्मना । तस्य भूयोऽद्य संहारं कर्त्तुं नाहमिहोत्सहे ॥ १५॥ विसृष्टं हि मया दिव्यमेतदस्त्रं दुरासदम् । अपाण्डवायेति मुने वह्नितेजोऽनुमन्त्र्य वै ॥ १६ ॥ तदिदं पाण्डवेयानामन्तकायाभिसंहितम् । अद्य पाण्डुसुतान् सर्वान् जीविता द्भ्रंशयिष्यति ॥ १७ ॥ कृत पापमिद ब्रह्मन्रोषाविष्टेन चेतसा । वधमाशास्य पार्थानां

और बड़े दुःखसे पीड़ावान् अर्जुन नेभी उस दुष्टआचारको पाकर उस अस्त्रको नहीं छोड़ा । ९ । पाण्डव अर्जुन सत्याव्रत करनेवाला शूर ब्रह्मचारी और गुरु भक्त था इसहेतुसे उसने उस अस्त्रको फिर लौटालिया । १० । इसके पीछे अश्वत्थामा भी अपने आगे नियतहुये दोनों ऋषियोंको देखकर अपने बलसे वसघोर अस्त्र के फिर लौटानको समर्थ नहीं हुआ । ११ युद्धमें उसपरमअस्त्रके लौटानेमें असमर्थ बड़े दुःखीचित्त अश्वत्थामाने व्यासजीसे कहा । १२ । कि हेमुनि बड़ी आपत्तिसे पीड़ावान् और प्राणोंकी रक्षाका अभिलाषी होकर मैंने भीमसेनके भयसे उस अस्त्र को छोड़ा । १३ । हे भगवन के मारनेके अभिलाषी और दुराचारी इस भीमसेनने युद्धमें अधर्मकिया । १४ । मे ब्राह्मण इसहेतु से मुझ अज्ञानी ने इस अस्त्रको छोड़ाहै अब फिर उसके लौटानेको उत्साहनहीं करताहूं । १५ । हे मुनि मैंने पांडवों के नाशके अर्थ ब्रह्मतेजको धारणकरके इसकठिनता से सहनेके योग्य अस्त्र को छोड़ा । १६ । यह अस्त्र पाण्डवों के नाशके लिये बहुतहै अब यह अस्त्र सब पांडवों को जीवनसे रहित करेगा । १७ । हेब्राह्मण क्रोधसे पूर्णचित्त और युद्धमें पाण्डवों के मारने के अभिलाषी मुझ अस्त्र छोड़नेवाले ने यह पाप किया ।१८। व्यासजी बोले

observer of true vows, brave and devoted to his preceptor, and therefore he could recall the weapon. 10. For the sake of those rishis Ashwathama too, tried his best to recall his weapon, but was not successful in his attempt. Failing in his attempt, he said to Vyas with a distressed mind, "Being hard pressed and afraid of Bhim, I discharged the weapon to save my life. Bhim had sinned against Duryodhan and slain him unfairly. I therefore discharged the weapon, but am now unable to recall it. 15. I discharged it to slay all the Pandavas in my anger. It is sufficient to slay the Pandavas and will surely deprive them of life. Surely I have committed this sin to slay the Pandavas " Vyas said, "Arjun discharged the Brahmahar by way of retaliation and not to slay you. He discharged it to mitigate the effect

मयास्त्रं सृजता रणे ॥ १८ ॥ व्यास उवाच । अस्त्रं ब्रह्मशिरस्तात विद्वान् पार्थो धन
ञ्जयः । मत्सृष्टवान्न रोषेण न नाशायतवाहवे ॥ १९ ॥ अस्त्रमस्त्रेण तु रणे तव संशम
यिष्यता । विसृष्टमर्जुनेनेदं पुनश्च प्रतिसंहृतम् ॥२०॥ ब्रह्मास्त्रमप्यवाप्यैतदुपदेशात् पितु
स्तव । क्षत्रधर्मान्महाबाहुर्नाकम्पत धनञ्जयः ॥ २१ ॥ एवं धृतिमतः साधोः सर्वास्त्र
विदुषः सतः । सभ्रातृबन्धोः कस्मात्वं वधमस्य चिकीर्षसि ॥ २२ ॥ अस्त्रं ब्रह्मशिरो
यत्र परमास्त्रेण वध्यते । समाः द्वादश पर्जन्यस्तद्राष्ट्रं नाभिवर्षति ॥ २३ ॥ एतदर्थं
महाबाहुः शक्तिमानपि पाण्डवः । न विहन्त्यस्तदस्त्रन्तु प्रजाहितचिकीर्षया ॥ २४ ॥
पाण्डवास्त्वञ्च राष्ट्रञ्च सदा संरक्ष्यमेव हि । तस्मात् संहर दिव्यं त्वमस्त्रमेतन्महा
भुज ॥२५॥ अरोषस्तव चैवास्तु पार्थाः सन्तु निरामयाः । न ह्यधर्मेण राजर्षिः पाण्डवो
जेतुमिच्छति ॥ २६ ॥ मणिञ्चैव प्रयच्छैभ्यो यस्ते शिरसि तिष्ठति । एतमादाय ते
प्राणान् प्रति दास्यन्ति पाण्डवाः ॥ २७ ॥ द्रौणिरुवाच । पाण्डवैर्यानि रत्नानि यच्चा

हेतात बुद्धिमान् पाण्डव अर्जुनने युद्धमें जो ब्रह्मशिरनाम अस्त्र छोड़ा वह क्रोधसे छोड़ा तेरे नाशकेलिये नहीं छोड़ा । १९ । युद्धमें तेरे अस्त्रको अपने अस्त्र से शान्त करनेके अभिलाषी अर्जुनने वहअस्त्र छोड़करभी फिर लौटालिया । २० । वह महा बाहु अर्जुन तेरे पिताके उपदेशसे ब्रह्मअस्त्रको भी पाकर क्षत्रियधर्म से कम्पायमान नहीं हुआ । २१ । इस प्रकार धैर्यवान् साधु सब अस्त्रों के ज्ञाता सत्पुरुष इस अर्जुनका मारना भाई बंधुओं समेत किसलिये तुमकरना चाहते हो । २२ । जिस देशमें ब्रह्मशिर अस्त्र परमअस्त्रके द्वारा दूरकियाजाताहै उस देशमें बारहवर्षतक इन्द्र जलको नहीं बरसाताहै । २३ । महाबाहु समर्थ पांडव संसार के जीवमात्रों की वृद्धिकी अभिलाषासे इसी निमित्त उस अस्त्रको अपने अस्त्रसे दूरनहीं करता ।२४। पांडव देश और तुमभी सदैव रक्षा के योग्यहो हे महाबाहु इसहेतुसे तुम इस दिव्य अस्त्रको लौटाओ तेराक्रोध दूरहोय और पाण्डवोंकी कुशल होय यह राजऋषि पांडव अधर्मसे विजयकरना नहीं चाहताहै । २६ । अबतुम उस मणिको दे दो जो तेरे शिरपर नियतहै पांडव उसको लेकर तुझको प्राणदान देंगे । २७ । अश्वत्थामा बोले कि पाण्डवों ने जो रत्न और कौरवोंने जो अन्यधन इसलोक में प्राप्त किया

of your weapon and has recalled it. 20 Having got the knowledge of *Brahmshar* from your father, Arjun did not deviate from his duty. Why do you desire to slay him and his brothers. Indra does not bring forth rain for twelve years when one Brahmshar is destroyed by another. Valiant Arjun does not use his weapon for that purpose, though he has the power to do so. The *Pandavas*, the country and you are worthy of protection and you must recall your weapon 25 Subdue your wrath and let the Pandavas live, They do not like to gain victory by unfair means. Give the *Pandavas* your head jewel and they will spare your life in return." Ashwathama said, " My

स्यत् कौरवैर्द्धनम्। यथास्थितं तेभ्योयं मणिर्मम विशिष्यते ॥ २८ ॥ यमाबध्य भयं नास्ति शस्त्रव्याधिक्षुधाश्रयम्। देवेभ्यो दानवेभ्यो वा नागेभ्यो वा कथञ्चन ॥ २९ ॥ न च रक्षोगणभयं न तस्करभयंतथा। एवं वीर्यो मणिरयं नमे त्याज्यः कथञ्चन ॥३०॥ यत्तु मे भगवानाह तन्मे कार्यमनन्तरम्। अयं मणिरयञ्चाहमीषिका तु पतिष्यति ॥ ३१ ॥ गर्भेषु पाण्डवेयानाममोघं चैतदुद्यतम्। न च शक्तोस्मि भगवन् संहर्तुं पुनरुद्यतम् ॥ ३२ ॥ एतदस्त्रमतश्चैव गर्भेषु विसृजाम्यहम्। न च वाक्यं भगवतो न करिष्ये महामुने ॥ ३३ ॥ व्यास उवाच। एवं कुरु न चान्या तु बुद्धिः कार्या त्वयानघ। गर्भेषु पाण्डवेयानां विसृज्यैतदुपारम। ३४॥ वैशम्पायन उवाच। ततः परममस्त्रन्तु द्रौणिरुद्यतमाहवे। द्वैपायनवचः श्रुत्वा गर्भेषु प्रमुमोच ह। ३५॥

इति सौप्तिकपर्वणि ब्रह्मशिरोस्त्रत्यागे पाण्डवगर्भप्रवेशोनाम पञ्चदशोऽध्यायः १५।

उन्होंसे यह मेरामणि पृथक् है। २८। जिसको बांधकर किसी दशा मेंभी शस्त्ररोग और क्षुधासम्बन्धी कोई भयनहीं होताहै इस बांधनेवाले को देवता दानव और सर्पोंसेभी भयनहीं है। २९। न राक्षसों के समूहों का और न चोरों का भयहै इस प्रकार से यह उत्तम मणि है और किसी दशामेंभी मुझ से त्याग करने के योग्य नहीं है। ३०। और जो भगवान ने मुझको आज्ञा करीहै वह शीघ्रही मुझको करनी उचितहै यह मणि है यह मैं हूं परन्तु यह सीक। ३१। पांडवों के गर्भोंपर गिरेगी क्योंकि यह उद्यत अस्त्र सफल है हे भगवन् इस प्रकट होनेवाले अस्त्रको मैं फिर नहीं लौटा सक्ता हूं। ३२। मैं इसहेतु से इस अस्त्र को पांडवों के गर्भोंपर छोड़ता हूं हे महामुनि आपके वचनों को अवश्य करूंगा। ३३। व्यासजी बोले हे निष्पाप इसी प्रकार करो तुमको दूसरी बुद्धि न करना चाहिये इस अस्त्रको पांडवों के गर्भोंपर छोड़कर युद्धसे निवृत्तहो। ३४। वैशम्पायन बोले इसके पीछे अश्वत्थामाजी के वचन व्यासजी के वचन को सुनकर युद्धमें सन्नद्ध परम अस्त्रको गर्भोंपर छोड़ा ३५॥

jewel *forms* no part of the wealth of the Kauravas and Pandavas. The possessor of it is never oppressed by weapons, sickness or hunger. He is never in *fear of gods, danavas* and serpents. The possessor of it has no fear of rakshases or thieves and I donot wish to part with it under any condition. 30 I am however bound to do your bidding. My jewel and myself are at your disposal. *But* this piece of broom shall fall on the pregnant women of the Pandavas; for this weapon can not fail to do its work nor I have power to recall it. I shall do your bidding, great rishis. My weapon shall fall on pregnant women of the Pandavas," *Then* Vyas said, " Do it as you have said. Let your weapon fall on the pregnant woman and cease fighting. " Vaishampayan said, " Thus ordered by Vyas, *A*shwathama, let his weapon fall on pregnant women " 35.

वैशम्पायन उवाच। तदाज्ञाय हृषीकेशो विसृष्टं पापकर्मणा । हृष्यमाण इदं वाक्यं द्रौणिं प्रत्यभ्यभाषत ॥ १ । विराटस्य सुतां पूर्वं स्नुषां गाण्डीवधन्वनः । उपप्लव्यगतां दृष्ट्वा व्रतवान् ब्राह्मणोऽब्रवीत् ॥ २ ॥ परिक्षीणेषु कुरुषु पुत्रस्तव भविष्यति । एतदस्य परिक्षित्त्वं गर्भस्थस्य भविष्यति । ३ । तस्य तद्वचनं साधोः सत्यमेतद्भविष्यति । परिक्षिद्भविता ह्येषां पुनर्वंशकरः सुतः ॥ ४ ॥ एवं ब्रुवाणं गोविन्दं सात्वतां प्रवरं तदा । द्रौणिः परमसंरब्धः प्रत्युवाचेदमुत्तरम् ॥ ५ ॥ नैतदेवं यथात्थ त्वं पक्षपातेन केशव । वचनं पुण्डरीकाक्ष न च मद्वाक्यमन्यथा । ६ । पतिष्यति तदस्त्रं हि गर्भे तस्या मयोद्यतम् । विराटदुहितुः कृष्ण यां त्वं रक्षितुमिच्छसि ॥ ७ ॥ भगवानुवाच । अमोघः परमास्त्रस्य पातस्तस्य भविष्यति । स तु गर्भो मृतो जातो दीर्घमायुरवाप्स्यति ॥ ८ ॥

अध्याय १६ ॥

वैशम्पायन बोले तब श्री कृष्णजी पापकर्म करनेवाले अश्वत्थामा के छोड़ हुये उस अस्त्रको जानकर प्रसन्नहोकर अश्वत्थामा से यह वचनबोले । १ । कि पूर्व समयमें नियमवान ब्राह्मणने विराटकी पुत्री अर्जुनकी पुत्रवधू उत्तराको जोकि उपप्लव्य स्थानपर वर्त्तमानथी उससे यह कहा । २ । कि कौरवों के नाशवान् होने पर तेरापुत्रहोगा इस गर्भस्थ बालकका इसीहेतुसे परीक्षितनाम होगा । ३ । उस साधु का यहवचन सत्यहोगा परीक्षितपुत्र फिर उन्हीं के वंशका चलानेवाला होगा । ४ । तब अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने यादवों में अत्यन्त श्रेष्ठ इसप्रकार कहनेवाले गोविंदजीको यह उत्तर दिया ।५। हेकमललोचन केशवजी यहइसप्रकार नहीं है जैसे कि तुमने पक्षपातीहोकर यहवचन कहाहै मेरा वचन मिथ्या नहींहै।६। हे श्रीकृष्णजी मेरा चलाया हुआ वह अस्त्र उस उत्तराके गर्भपर गिरेगा जिसको कि तुम रक्षा किया चाहतेहो ।७ श्रीभगवान् बोले कि उस परम अस्त्रका गिरना सफलहोगा और मराहुआ गर्भ जीकर बड़ी अवस्थाको पावेगा सब ऋषिलोग तुझको नीचपुरुष पापी और वारम्वार पापकर्मात्मा और बालकके जीवन कानाश

CHAPTER XVI

Vaishampayan said, "Shri Krishn was pleased when he knew the fate of Ashwathama's weapon, and he said to him, "Formerly, a vow observing Brahman said to Uttara the wife of Arjun's son, "Thy son will be born after the destruction of the Kauravas and will be named Parikshit." The words of this sage will yet be true for Parikshit will be the perpetuator of the line of the Pandavas." Ashwathama was much enraged at this remark and said "This can not be, lotus-eyed Keshav! Your words are bia-sed. It shall be as I have predicted: my weapon shall fall on the womb of Uttara whom you wish to protect." Shri Krishn said, "It is true that the weapon shall do its work, but the dead child will be brought back to

त्वान्तु कापुरुषं पापं विदुः सर्वे मनीषिणः । असकृत्पापकर्माणं बालजीवितघातकम् ।
तस्मात्त्वस्य पापस्य कर्मणः फलमाप्नुहि ॥ ९ ॥ त्रीणि वर्षसहस्राणि चरिष्यसि महीमिमाम् ।
मिमाम् । अप्राप्नुवन् क्वचित् । कश्चित् संविदं जातु केनचित् ॥ १० ॥ निर्जनानस
द्धायस्त्वंदेशान् प्रविचारिष्यसि । भविता न हि ते क्षुद्र जनमध्येषु संस्थितिः ॥ ११ ॥
पूयशोणितगन्धी च दुर्गकान्तारसंश्रयः । विचरिष्यसि पापात्मन् सर्वव्याधिसमन्वितः
॥ १२ ॥ वयः प्राप्य परिक्षित्तु वेदव्रतमवाप्य च । कृपाच्छारद्वताच्छूरः सर्वास्त्राण्युपल
प्स्यते ॥ १३ ॥ विदित्वा परमास्त्राणि क्षत्रधर्मव्रतेस्थितः । षष्टिं वर्षाणि धर्मात्मा वसुधां
पालयिष्यति ॥ १४ ॥ इतश्चोर्ध्वं महाबाहुः कुरुराजो भविष्यति । परीक्षिन्नाम नृपतिर्मिषतस्ते
दुर्मते ॥ १५ ॥ अहं तं जीवयिष्यामि दग्धं शस्त्राग्नितेजसा । पश्य मे तपसो वीर्यं सत्यस्य च
नराधम ॥ १६ ॥ व्यास उवाच । यस्मादनादृत्य कृतं त्वयास्मान् कर्म दारुणम् । ब्राह्म
णस्य सतश्चैव यस्मात्ते वृत्तमीदृशम् ॥ १७ ॥ तस्माद्यद्देवकीपुत्र उक्तवानुत्तमं वचः ।

करनेवाला जानेंगे उस कारणसे तुम इस पापकर्म के फलको पाकर तीनहजार दिव्य वर्षतक इस पृथ्वीपर घूमोगे तुम एकाकी कहीं कुछ न पाते और कभी किसीके साथ परस्पर वार्त्तालाप न करते निर्जन देशों में घूमोगे हे नीच तेरा निवास मनुष्यों में नहीं होगा । ११ । पीप और रुधिरकी गन्धि से युक्त दुर्गम्य महावनों में निवास करेगा हे पापात्मा सब बीमारियों से संयुक्त होकर घूमेगा । १२ । शूरपरीक्षित अवस्था और वेदव्रतको पाकर कृपाचार्य से सब अस्त्रों को पावेगा । १३ । फिर परमअस्त्रों को पाकर क्षत्रिय व्रतमें नियत धर्मात्मा साठवर्षतक पृथिवी की रक्षा करेगा । १४ । इसके पीछे वह महाबाहु कौरवराजहोगा हे दुर्बुद्धी तेरे देखते परीक्षितनाम राजा होगा । १५। मैं उस शस्त्रकी अग्नि से भस्म हुये को अपने तेज से जिलाऊंगा हे नीच मेरे सत्य और तपके बलको देखो व्यास जी बोले जो तुमने हमको अनादर करके यह भयकारी कर्म किया और तुझ सत्पुरुष ब्राह्मणका ऐसा चलन हुआ इनदोनो कारणों से श्रीकृष्णजी ने जो श्रेष्ठ

life and will live long. All the rishis will call you sinful and slayer of infants, and as a punishment of your wickedness you will roam for three thousand divine years. You will be shunned by all men and will pass your days in desolate places out of the reach of man, 11. Your wound will give forth a bad smell and you will be beset with all sorts of diseases. Valiant Parikshit will live long and will learn the use of weapons from Kripacharya. He will rule the earth for sixty years as king of the Kauravas and you will see him. 15. I shall resuscitate the burnt child by my glory and you shall see the power of my truth and asceticism." 16. Vyas said, "Because you did this dreadful deed in spite of us, and bore a conduct like that, you will be reduced to the condition fore told

मन्ये साधयन्ते तज्ञापि क्षत्रधर्मस्त्वयाश्रितः ॥ १८ ॥ अश्वत्थामोवाच । सहैव भवता
ब्रह्मन् स्थास्यामि पुरुषेष्विह । सत्यवागस्तु भगवानयञ्च पुरुषोत्तमः ॥ १९ ॥ वैश
म्पायन उवाच । प्रदायाथ मणिं द्रौणिः पाण्डवानां महात्मनाम् । जगाम विमनास्तेषां
सर्वेषां पश्यतां वनम् ॥ २० ॥ पाण्डवाश्चापि गोविन्दं पुरस्कृत्य हतद्विषः । कृष्णं द्वैपा
यनञ्चैव नारदञ्च महामुनिम् ॥ २१ ॥ द्रोणपुत्रस्य सहजं मणिमादाय सत्वराः ।
द्रौपदीमभ्यधावन्त प्रायोपेतां मनस्विनीम् ॥ २२ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततस्ते पुरुष
व्याघ्राः सदश्वैरनिलोपमैः । अभ्ययुः सह दाशार्हाः शिबिरं पुनरेव हि ॥ २३ ॥ अवतीर्य
रथेभ्यस्तु त्वरमाणा महारथाः । ददृशुर्द्रौपदीं कृष्णामार्त्तामार्त्ततराः स्वयम् ॥ २४ ॥
तामुपेत्य निरानन्दां दुःखशोकसमन्विताम् । परिवार्य व्यतिष्ठन्त पाण्डवाः सहके
शवाः ॥ २५ ॥ ततो राज्ञाभ्यनुज्ञातो भीमसेनो महाबलः । प्रददौ तं मणिं दिव्यं वचन
ञ्चेदमब्रवीत् ॥ २६ ॥ अयं भद्रे तव मणिः पुत्रहन्ता जितः स ते । उत्तिष्ठ शोकमुत्

वचन कहाहै निस्सन्देह वहीदशा तेरी होनेवाली है तुम क्षत्रियधर्ममें नियतहो ।१८। अश्वत्थामा बोले हे ब्राह्मण मैं इसलोकके मनुष्यों में आपके साथ नियत हूंगा यह भगवान् पुरुषोत्तम सत्यवक्ताहैं । १९ । वैशम्पायनबोले कि फिर उदासमन होकर अश्वत्थामा महात्मा पाण्डवों को मणि देकर उन सबके देखते हुये वनको गये । २० । और जिनकेशत्रु मारेगये वह पाण्डव गोविंदजी और व्यासजी महामुनि नारदजीको आगे करके । २१ । और अश्वत्थामा के शरीरके साथ उत्पन्न होने वाली मणिको शीघ्रही उस मनस्विनी और शरीर त्यागनेके निमित्त नियम करनेवाली द्रौपदीकी ओर दौड़े । २२ । वैशम्पायन बोलेकि इसके अनन्तर वह पुरुषोत्तम पांडव श्रीकृष्णजी समेत वायुके समान शीघ्र घोड़ोंके द्वारा फिर डेरे को गये । २३ । आप पीड़ावान् और शीघ्रता करनेवाले महारथियों ने रथों से उतर कर प्रसन्न मनवाली द्रौपदीको पीड़ावान् देखा । २४ । वह पाण्डव केशव जी समेत उस अप्रसन्न और दुःखशोकसे युक्त द्रौपदी के पास जाकर उस को घेरकर बैठगये । २५ । इसके पीछे राजाकी आज्ञानुसार महाबली भीमसेन ने उस दिव्य मणिको दिया और मणिदेकर यह वचन कहा । २६ । हे कल्याणी यह तेरा मणिहै और वह तेरेपुत्रों का मारनेवाला विजय किया गया शोकको छोड़

by Krishn. You have become a Kshatrya. " Ashwathama said, " I would stay in the world with you but Shr Krish n is truthful. " Vaishampayan said that with a dejected mind, Ashwathama gave the Pandavas his jewel and went away to the forest in the presence of all. 20 The Pandavas being rid of their enemies, ran towards Draupadi, led by Govind, Vyas and Narad, and with the jewel got from Ashwathama. They rode their swift cars and went to their camp. They found Draupadi in great distress and sat round her. 25. Then by the permission of the king, brave Bhim Presented the jewel to Draupa-

सृज्य क्षत्रधर्ममनुस्मर ॥ २७ ॥ प्रयाणे वासुदेवस्य शमार्थमसितेक्षणे । यान्युक्तानि त्वया भीरु वाक्यानि मधुघातिनि ॥ २८ ॥ नैव मे पतयः सन्ति न पुत्रा भ्रातरो न च नैव त्वमिति गोविन्द शममिच्छति राजनि ॥ २९ ॥ उक्तवत्यसि तीव्राणि वाक्यानि पुरुषोत्तमम् । क्षत्रधर्मानुरूपाणि तानि त्वंस्मर्तुमर्हसि ॥ ३० ॥ हतो दुर्योधनः पापो राज्यस्य परिपन्थिकः । दुःशासनस्य रुधिरं पीतं विस्फुरतो मया ॥ ३१ ॥ वैरस्य गत मानृण्यं न स्म वाच्या विवक्षताम् । जित्वा मुक्तो द्रोणपुत्रो ब्राह्मण्याद्गौरवेण च ॥ ३२ ॥ यशोऽस्य पातितं देवि शरीरन्त्ववशेषितम् वियोजितश्च मणिना न्यासितश्चायुधं भुवि ॥ ३३ ॥ द्रौपद्युवाच । केवलानृण्यमाप्तास्मि गुरुपुत्रो गुरुर्मम । शिरस्येतं मणिं राजा प्रतिबध्नातु भारत ॥ ३४ ॥ तं गृहीत्वा ततो राजा शिरस्येवाकरोत्तदा । गुरोरुच्छिष्ट मित्येव द्रौपद्या वचनादपि ॥ ३५ ॥ ततो दिव्यं मणिवरं शिरसा धारयन् प्रभुः ।

करउठो और क्षत्रियधर्मको स्मरणकर । २७ । हे श्यामलोचन सन्धिकेअर्थ वासुदेवजीके यात्रा करनेपर तुमनेजो यहवचन उनश्रीकृष्णजीसे कहेथे किहे गोविन्दजी राजाको सन्धिका अभिलाषी होनेपर मेरेपति पुत्र भाई और तुम चारोंमें-से कोई नहींहो । २९ । तुमने क्षत्रियधर्म्मके योग्य वीरताके वचन पुरुषोत्तमसे कहेथे उनके स्मरण करनेको योग्यहो । ३० । राज्यका शत्रुपापी दुर्योधन मारागया मैंने उस कटेहुये दुश्शासनका रुधिर पिया । ३१ । शत्रुताकी अऋणताको पाया हमवार्त्तालापकरनेके अभिलाषी पुरुषोंकी निन्दाके योग्यनहींहैं अश्वत्थामा पराजितहोकर ब्राह्मणवर्णकी वृद्धतासे छोड़ागया । ३२ । हेदेवी उसको वह पतितहुआ शरीरशेषहै उसकोमणिसे जुदाकिया और उसके सबशस्त्रभी पृथ्वीपर गिरपड़े । ३३ । द्रौपदी बोली हेनिर्दोषमैंने अऋणताको पायागुरूका पुत्रमेरागुरुहै भरतवंशी राजायुधिष्ठिर इस मणि को शिरपर बांधे । ३४ । तबराजा युधिष्ठिरने यह समझकर कि गुरुपुत्र की धारण कीहुई यह वस्तु है और द्रौपदीका वचनहै ऐसाजानकर उसमणिको

di, saying, "This is your jewel, good woman. The slayer of your sons has been conquered. Give up your sorrow and rise up, remembering the kshatrya duty. When Vasudev was going to the mission of peace, you said, to him, " Don't make peace with them as long as you and my husbands, sons and brothers are alive. " You spoke then like a kshatrya woman and must remember it. 30. Our enemy Duryodhan has been slain and I have drunk Dushasan's blood. We have made an end of the enemy and are not to blame. Ashwathama has been defeated and is no longer a brahman. He has been excommunicated. The jewel has been taken away from his person and his weapons have fallen. " Draupadi said, " I have had my revenge. The guru's son is my guru. Tie this jewel on your head, king. " Yudhishthir, knowing that it was a thing used by his preceptor's son and

शुशुभे स तदा राजा सचन्द्र इव पर्वत ॥ ३६ ॥ उत्तस्थौ पुत्रशोकार्त्तातत कृष्णा मनस्विनी। कृष्णञ्चापि महाबाहुं परिपप्रच्छधर्मराट् ॥ ३७ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि ऐषिकपर्वणि द्रौपदी सान्त्वने षोडषोऽध्यायः १६ ॥



वैशम्पायन उवाच। हतेषु सर्वसैन्येषु सौप्तिके तै रथैस्त्रिभि। शोचन् युधिष्ठिरो राजा दाशार्हमिदमब्रवीत् ॥ १ ॥ कथ नु कृष्ण पापेन क्षुद्रणाक्तृतकर्मणा। द्रौणिना निहताः सर्वे मम पुत्रा महारथा ॥ २ ॥ तथा कृतास्त्रा विक्रान्ता सहस्रशतयोधिन। द्रुपदस्यात्मजाश्चैव द्रोणपुत्रेण पातिता. ॥ ३ ॥ यस्य द्रोणो महेष्वासो न प्रादादाहवे मुखम्। निजघ्ने रथिनां श्रेष्ठं धृष्टद्युम्न कथं नु स ॥४॥ किं नु तेन कृतं कर्म तथायुक्तं

लेकरशिरपर धारणकिया। १५। इसकेपीछे दिव्यमणिको धारण करताहुआ प्रभु राजा युधिष्ठिर चन्द्रमासेयुक्त पर्वतकेसमान शोभायमानहुआ। १६। फिर पुत्रों के शोकसे पीडित मनस्विनी द्रौपदी उठखडीहुई और महाराज धर्मराजनेभी श्रीकृष्ण जीसे पूछा ३७ ॥

अध्याय ॥ १७ ॥

वैशंपायनबोले कि जो रात्रिके युद्धमें उनतीनों रथियों के हाथसे सबसेना के लोगों के मरने पर शोच करतेहुये राजा युधिष्ठिरने श्रीकृष्णजी से यह वचनकहा। १। कि हे श्रीकृष्णजी इसपापी नीच और निष्फल कर्मवाले अश्वत्थामा के हाथ से मेरे सब महारथी पुत्र कैसे मारेगये। २। उसीप्रकार अस्त्रज्ञ महापराक्रमी लाखों से युद्ध करनेवाले द्रुपदके पुत्र अश्वत्थामाके हाथसे गिराये गये। ३। बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य ने जिसके युद्धमें मुख नहीं किया उस रथियों में श्रेष्ठ धृष्टद्युम्नको उसने कैसे मारा। ४। हे नरोत्तम उसने इसप्रकारका कौनसा योग्य

that Draupadi requested him to wear it, put the jewel on his head Having worn it on his head, Yudhishthir looked glorious like a hill over which the moon shines. Full of sorrow for her sons' grief, Draupadi stood up and Yudhishthir thus addressed Shri Krishn." 37,

CHAPTER XVII

Vaishampayan said, "At the slaughter of all the warriors by the three heroes, Prince Yudhishthir, in great grief, said to Shri Krishn, "How were all my brave sons slain by despicable Ashwathama the sinful wretch who did that useless deed? Similarly, the sons of Dru-

नरर्षभ । यदेकः समरे सर्वानवधीन्नो गुरोः सुतः ॥ ५ ॥ भगवानुवाच । नूनं स देवदे
वानामीश्वरेश्वरमव्ययम् । जगाम शरणं द्रौणिरेकस्तेनावधीद्बहून् ॥ ६ ॥ प्रसन्नो हि
महादेवो दद्यादमरतामपि । वीर्यञ्च गिरिशो दद्याद्येनेन्द्रमपि शातयेत् ॥ ७ ॥ वेदाहं
हि महादेवं तत्त्वेन भरतर्षभ । यानि चास्य पुराणानि कर्माणि विविधानि च ॥ ८ ॥
आदिरेष हि भूतानां मध्यमन्तश्च भारत । विचेष्टते जगच्चेदं सर्वमस्यैव कर्मणा ॥ ९ ॥
एवं सिसृक्षुर्भूतानि ददर्श प्रथमं विभुः । पितामहोऽब्रवीच्चैनं भूतानि सृज माचिरम्
॥ १० ॥ हरिकेशस्तथेत्युक्त्वा भूतानां दोषदर्शिवान् । दीर्घकालं तपस्तेपे मग्नोऽम्भसि
महातपाः ॥ ११ ॥ सुमहान्तं ततः कालं प्रतीक्ष्यैनं पितामहः । स्रष्टारं सर्वभूतानां ससर्ज
मनसापरम् ॥ १२ ॥ सोऽब्रवीत् पितरं दृष्ट्वा गिरिशं मग्नमम्भसि । यदि मे नाग्रजो

कर्म किया जो अकेले गुरुपुत्रने हमारे सब पुत्रादिकोंको युद्धमें मारा ।५ श्रीभगवान्
बोले कि निश्चय करके! अश्वत्थामा उस अविनाशी शिवजी के शरण में गया
जोकि बडे देवताओंके ईश्वरों काभी ईश्वरहै उस हेतुसे अकेलेने बहुतों को मारा
। ६ । महादेवजी प्रसन्नहोकर देवभागको भी देसक्ते हैं और उसपराक्रमकोभी वह
गिरीश देसक्ताहै जिसके द्वारा इन्द्रकोभी नाशकरे । ७ । हे भरतर्षभ मैं महादेवजी
को मूलसमेत जानता हूं और उनके जो नानाप्रकार के प्राचीन कर्म्म हैं उनको
भी श्रेष्ठ रीतिसे जानताहूं । ८ । हे भरतवंशी यह शिव सब जीवधारियोंका आदि
मध्य और अन्तहै और सब संसार इसी के प्रताप से चेष्टा करता है । ९ । इस
प्रकार सृष्टिकी उत्पत्ति करनेके अभिलाषी समर्थ त्रिगुणात्मक ईश्वरने सबके आदि
तमोगुणरूप रुद्रजी को देखकर कहाकि जीवोंकी उत्पत्ति में विलम्ब न करो १०
तब बडे तपस्वीजीवोंके दोष जाननेवाले शिवजीने अङ्गीकार करके जलमें डूबकर
बहुतकालतक तपकिया इसकेपीछे ईश्वरने बहुतकालपर्यन्त उनकी प्रतीक्षाकरके सब
जीवोंकेस्वामी रजोगुणरूप प्रजापतिको मनसे उत्पन्न किया । १२ । वह जलमें

pad who could slay hundreds of thousands, were destroyed by him How could he slay Dhrshtadyumn whom even Drona could not oppose By what deed he had power over my sons and others,"

Shree Bhagwan (Krishn) said, "Surely, Ashwathama sought the protection of immortal Shiv the lord of gods, and was therefore able to slay so many. Mahadev, when pleased, can give godhood. He can give a prowess capable of destroying Indra. I know Mahadev and his deeds done in the days of yore He is the beginning, the middle and the end of all creation. All the world lives by his glory. Desirous of creating the world the almighty Ishwar asked Rudra to create all beings without delay. 10. Shiv took the work on himself and remained long merged in water to perform asceticism. Ishwar waited long for him and then created Prajapati from his thought

स्थम्भसतः स्रष्टारमन्यं प्रजाः ॥ १३ ॥ तमब्रवीत् पितानास्ति त्वदन्यः पुरुषोऽग्रजः ।
स्थाणुरेष जले मग्नो विस्रब्धः कुरु वै कृतम् ॥ १४ ॥ स भूतान्यसृजत् सप्त दक्षादींश्च
प्रजापतीन् । यैरिमं व्यकरोत् सर्वं भूतग्रामं चतुर्विधम् ॥ १५ ॥ ताः सृष्टमात्राः क्षुधिता
प्रजाः सर्वाः प्रजापतिम् । बिभक्षयिषवो राजन् सहसा प्राद्रवंस्तदा ॥ १६ ॥ स भक्ष्य
माणस्त्राणार्थी पितामहमुपाद्रवत् । आभ्यो मां भगवांस्त्रातु वृत्तिरासां विधीयताम्
॥ १७ ॥ ततस्ताभ्यो ददावन्नमोषधीः स्थावराणि च । जङ्गमानि च भूतानि दुर्बलानि
बलीयसाम् ॥ १८ ॥ विहितान्नाः प्रजास्तास्तु जग्मुः सृष्टा यथागतम् । ततो ववृधिरे
राजन् प्रीतिमत्यः स्वयोनिषु ॥ १९ ॥ भूतग्रामे विवृद्धे तु तुष्टे लोकगुरावपि । उदति
ष्ठज्जलाज्ज्येष्ठः प्रजाश्चेमा ददर्श स ॥ २० ॥ बहुरूपाः प्रजाः सृष्टा विवृद्धाश्च स्वते

डूबेहुये शिवजीको देखकर अपने पितासे बोलाकि जो मुझसे प्रथम उत्पन्न होने वाला दूसरा नहीं है इसहेतुसे मैं सृष्टिको उत्पन्न करताहूं । १३ । ब्रह्माजीने कहा तेरे सिवाय दूसरा पुरुष प्रथमसृष्टि नहीं है यह शिवजी जलमें डूबेहुये हैं विश्वास करनेवालीसृष्टिको उत्पन्नकरो।१४।उसने दक्षादिसात प्रजापतियोंको उत्पन्न किया और सबजीवोंकोभी उत्पन्नकिया जिनकेद्वारा इसचारप्रकारकी खानवाले जीव समूहोंको उत्पन्न किया । १५ । हे राजा तबवह सबसृष्टि उत्पन्नहोतेही क्षुधासे महाआर्त्त होकर प्रजापति के भक्षण करनेकी इच्छासे दौड़े । १६ । वह प्रजापति अपनी रक्षाके निमित्त पितामह के पासगया और कहा कि हे भगवन् उनलोगोंसे मेरी रक्षाके लिये उनकी जीविका विचारकरो । १७ । इसकेपीछे पितामहनेउनकी जीविका के लिये अन्न औषधी और स्थावरजीवदिये और बलवान लोगोंके अर्थ चेष्टाकरनेवाले और निर्बल जीवदिये ।१८।वह उत्पन्न होनेवाली सृष्टि जिनके अर्थ अन्न विचार कियागयाथा अपने स्थानों को गई हे राजा इसकेपीछे अपने उत्पत्ति स्थान माता और पिता आदिक में प्रीति करनेवाले वह प्रजापति लोग वृद्धियुक्त हुये फिर जीवसमूहों के वृद्धिपाने और लोकगुरुके भी प्रसन्नहोनेपर वह महापुरुष जलसेउठे और उन सृष्टियों को देखा । २० । बहुत रूपवाली सृष्टिके लोग उत्पन्न

Seeing Shiv merged in water, he said to his father, "Because I am the first-created being, I shall bring forth all creatures." Brahma said, "Really there is no other being born before you, for Shiv is merged in water; you may bring forth all creatures. So he brought forth the seven Prajapatis, Daksh and others, who brought forth creatures of four sorts 15, All the creatures, as they were born, became oppressed with hunger and ran towards the Prajapati to eat him up He sought protection of Brahma and asked him to provide them food Then the grandfather created food, medicines and other plants as well as weaker creatures for the use of the stronger Having got food, they went to their own places. The Prajapatis loving their parents, multiplied in

प्रजा । सुक्रोधः भगवान्रुद्रो लिङ्गं स्वस्याप्यविध्यत ॥ २१ ॥ तत प्रविद्धं तथा भूमौ
तथैव प्रत्यतिष्ठत । तमुवाचाव्ययो ब्रह्मा वचोभिः शमयन्निव ॥ २२ ॥ किं कृतं सलिले
सर्व चिरकालस्थितेन ते । किमर्थश्चैतदुत्पाद्य लिंगं भूमौ प्रवेशितम् ॥ २३ ॥ सोऽब्रवीत्
जातसंरम्भस्तथा लोकगुरुर्गुरुम् । प्रजाः सृष्टाः परेणेमाः किं करिष्याम्यनेन वै
॥ २४ ॥ तपसाधिगतं चान्नं प्रजार्थं मे पितामह । ओषध्य परिवर्तेरन् यथैव सततं
प्रजाः ॥ २५ ॥ एवमुक्त्वा स सक्रोधो जगाम विमना भवः । गिरेर्मुञ्जवतः पादं तप
स्तप्तुं महातपाः ॥ २६ ॥

इतिश्री सौप्तिकपर्वाणि ऐषीकपर्वणि कृष्णयुधिष्ठिर संवादे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥



होकर अपने तेजसे वृद्धियुक्तथे तब भगवान् रुद्रजी क्रोधयुक्तहुये और अपने लिंगको भीकाटकर पृथ्वीपर इसनिमित्त गिराया । २१ । वह जैसेटूटा उसीप्रकार पृथ्वीपर निपतहुआ वचनोंसे शान्त करते अविनाशी ब्रह्माजी बोले । २२ । हे रुद्रजीबहुत काल पर्यन्त आपने जलमें निवास करके क्याकिया और किसनिमित्त इसलिंगको उखाड़कर पृथ्वी में नियत कियाहै । २३ । वह लोकगुरु महाक्रोधित होकर गुरु से बोले कि यह सब सृष्टि उत्पन्न होगई है अब मैं इसलिंगसे क्याकरूंगा । २४ । हे पितामह मेरे तपने प्रजाके निमित्त अन्न प्राप्तहुआ और औषधी सदैव अपने रूपान्तरको करतीरहैंगी जिससे कि सृष्टि सदैव होतीरहै । २५ । वह विमन और क्रोधयुक्त बड़े तपस्वी रुद्रजी इसप्रकारसे कहकर मुंजवत पहाड़के समीप तपकरनेको गये २६ ।

large numbers. When the creatures were thus increasing and Brahma was pleased in his mind, Shiv came out of water and saw the creation 20 He saw the world full of creatures and being much enraged cut asunder his male organ and dropped it on the earth. It stood up erect as soon as it was cut down. Then wishing to appease his wrath Brahma said, " What have you done by staying so long under water and why have you cut and erected this organ of yours ? " Then Shiv gave him the following reply in anger, " The world has been created (in spite of me). What shall I do with this thing ? The food has been created by my own asceticism and medicinal herbs will contiue to change forms and give nourishment to the world " Having said this, the great ascetic, dejected in mind, went to perform asceticism near Munjwat hills. " 26

भगवानुवाच। ततो देवयुगेतीते देवा वै समकल्पयन्। यज्ञं वेदप्रमाणेन विधिव
द्यष्टुमप्सवः॥ १॥ कल्पयामासुरथ ते साधनानि हवींषि च। भागार्हा देवताश्चैव
यज्ञियं द्रव्यमेव च॥ २॥ ता वै रुद्रमजानन्त्यो याथातथ्येन देवताः। नाकल्पयन्त
देवस्य स्थाणोर्भागं नराधिप॥ ३॥ सोऽकल्प्यमानेभागे तु कृत्तिवासा मखेऽमरैः।
ततः साधनमन्विच्छन् धनुरादौ ससर्ज ह॥ ४॥ लोकयज्ञ क्रियायज्ञो गृहयज्ञ
सनातनः। पञ्चभूतमयोयज्ञो नृयज्ञश्चैवपञ्चमः॥५॥ लोकयज्ञैर्नृयज्ञैश्च कपर्दी विदधेधनुः।
धनुःसृष्टमभूत्तस्य पञ्चकिष्कुप्रमाणतः॥ ६॥ वषट्कारो भवज्ज्यातुधनुषस्तस्य भारत। यज्ञा
ङ्गानि च चत्वारि तस्य संहनेऽभवन्॥ ७॥ ततः क्रुद्धो महादेवस्तदुपादाय कार्मु
कम्। आजगामाथ तत्रैव यत्र देवाः समीजिरे॥ ८॥ ममात्तकार्मुकं दृष्ट्वा ब्रह्मचा
रिणमव्ययम्। विव्यथे पृथिवी देवी पर्वताश्च चकंपिरे॥९॥ न ववौ पवनश्चैव नाग्नि

अध्याय १८॥

श्रीभगवान् बोले कि सतयुगके अन्त होनेपर विधिके पूजनकरनेके अभिलाषी देवताओं ने वेदके प्रमाणसे यज्ञको विचार किया। १। फिर उन्हों ने सब साधनों को घनेवों को भागके योग्य देवताओं को और यज्ञकी द्रव्योंको कल्पना किया। २। हे राजा मूलसमेत रुद्रजी को न जाननेवाले उन देवताओं ने देवता रुद्रजी के भागको विचार नहीं किया।३। यज्ञमें देवताओंसे भागका विचार न करने पर यज्ञके नाशको चाहनेवाले उन रुद्रजीने प्रथम धनुषको उत्पन्न किया। ४। लोक यज्ञ, क्रियायज्ञ, गृहयज्ञ, पञ्चभूत नरयज्ञ, इन चारप्रकार के यज्ञों में यहसब जगत् नियत है। ५। रुद्रजीने लोकयज्ञ और नरयज्ञों से धनुषको तैयार किया उनका उत्पन्न कियाहुआ धनुष मार्गमें पांच हाथहुआ। ६। हे भरतवंशी उसधनुष की प्रत्यंचा वषट्कार प्रत्येक वासनारूपहुआ यज्ञोंके चारों अंग उसकी दृढ़तारूपहुये।७। उसके पीछे क्रोधयुक्त महादेवजी उसधनुषको लेकर वहां गये जहांपर कि देवता लोग यज्ञ कररहेथे। ८। उस धनुष उठानेवाले अविनाशी ब्रह्मचारी को देखकर पृथ्वी देवी पीड़ित हुई और पर्वत कम्पायमान हुये। ९। वायु नहीं चली और

CHAPTER XVIII

Shree Bhagwan said, 'At the end of Satyug the gods intended to perform a sacrifice according to the Vedic rites in honour of Brahma. They collected all materials and set apart gods' portions. Not knowing Rudra well, they dedicated nothing to him. At this, Rudra created the bow to destroy the sacrifice of gods. The world exists by four sorts of Sacrifices known as lok-yagya, kriya-yagya, griha-yagya and Panchbhut nar-yagya. 5. Rudra prepared the bow from lok and nar yagyas. It was five cubits in length. Its string was made of Vashatkar and was exceedingly strong. Armed with that bow Rudra went to the place of sacrifice. The earth and mountains shook at the sight of that immortal Brahmchari armed

जज्वाल चैधितः। व्यभ्रमच्चापि संविग्नं दिवि नक्षत्रमण्डलम् ॥१०॥ न बभौ भास्करश्चापि सोमः श्रीमुक्तमण्डलः। तिमिरेणाकुलं सर्वमाकाशञ्चाभवद्वृतम् ॥११॥ अभिभूतास्ततो देवा विषयान्न प्रजज्ञिरे। न प्रत्यभाच्च यज्ञः स देवतास्त्रेसिरे तदा ॥१२॥ ततः स यज्ञं विव्याध रौद्रेण हृदि पत्रिणा। अपक्रान्तस्ततो यज्ञो मृगो भूत्वा सपावकः ॥१३॥ स तु तेनैव रूपेण दिवं प्राप्य व्यराजत। अन्वीयमानो रुद्रेण युधिष्ठिर नभस्तले ॥१४॥ अपक्रान्ते ततो यज्ञे संज्ञा न प्रत्यभात् सुरान्। नष्टसंज्ञेषु देवेषु न प्राज्ञायत किञ्चन ॥१५॥ त्र्यम्बकः सवितुर्बाहू भगस्य नयने तथा। पूष्णश्च दशनान् क्रुद्धो धनुष्कोट्या व्यशातयत् ॥१६॥ प्राद्रवन्त ततो देवा यज्ञाङ्गानि च सर्वशः। केचित्तत्रैव घूर्णन्तो गतासव इवाभवन् ॥१७॥ स तु विद्राव्य तत्सर्वं शितिकण्ठो ऽवहस्य च। अवष्टभ्य धनुष्कोटिं रुरोध विबुधांस्ततः ॥१८॥ ततो वाग्‌मरैरुक्ता

वृद्धियुक्त अग्नि ज्वलित नहीं हुई और स्वर्गमें व्याकुल नक्षत्रमण्डल भ्रमण करने लगे। १०। सूर्य और शोभायमान चन्द्रमण्डल भी प्रकाशमान नहीं हुये सब आकाश अन्धकार से व्याप्त हुआ। ११। इसके पीछे व्याकुल देवताओंने विषयोंको नहीं जाना तब वह यज्ञ गुप्त हुआ और देवता भयभीत हुये। १२। इसके पीछे उन्हों ने यज्ञको रुद्रबाणसे हृदयपर घायल किया इसके पीछे वह यज्ञ मृगरूप होकर अग्निसमेत भागगया। १३। हे युधिष्ठिर फिर वह उसीरूपसे स्वर्गको पाकर आकाशमें शोभायमान हुआ फिर कालात्मा रुद्रजीसे पीछा किया हुआ वह यज्ञ फलके भोगके पीछे स्वर्गसे पतित हुआ १४ इसके पीछे यज्ञके भागनेपर देवताओंका ज्ञान प्रकट नहीं हुआ और देवताओंके अचेत होनेपर कुछनहीं जानागया। १५ त्र्यम्बक परमेश्वरने सविता अर्थात् यज्ञ करनेवाले के शरीर की भुजाओंको और भगके नेत्रोंको पूषाके दाँतोंको पूर्वोक्त धनुषकी कोटि से गिराया। १६। इसके पीछे देवता और यज्ञके सब अङ्गभागे और कितनेही वहां घूमतेहुये निर्जीवके समान हुये। १७। उन रुद्रजी ने उस सब यज्ञको मन्त्रोंसमेत भगाकर हँसकर धनुषकी कोटिको निष्कर्म करके देवताओंको रोका अर्थात् लोक और शरीरकी स्थितिसे पृथक्किया। १८। इसके

with bow. The wind did not blow, fire ceased to burn and stars began to turn round restlessly. 10. The sun and the moon lost their splendour and the sky became dark. The gods did not know what to do in their terror-stricken state and the sacrifice vanished. Rudra pierced the sacrifice with his arrow and it fled away with Agni in the likeness of a deer. It stood in the sky in that shape, chased by Rudra it fell down again at the lapse of its merits. The gods lost their senses and did not know what to do. Parmeshwar cut the arms of Savita, the eyes of Bhag and the teeth of Poosha with the point of his bow. 16. The gods scampered in terror, while some became motionless like inanimate things. Shiv with a smile checked the gods and removed his h.w.tring. Separated from the string the bow

यथा तस्य धनुर्ज्यां च्छिन्नत् । अथ तत् सहसा राजन् छिन्नज्यं व्यस्फुरद्धनुः॥१९॥ ततो
विधनुषं देवा देवश्रेष्ठमुपागमन् । शरणं सह यज्ञेन प्रसादञ्चाकरोत्प्रभुः ॥ २० ॥ ततः
प्रसन्नो भगवान् स्थाप्य कोपं जलाशये । स जलं पावको भूत्वा शोषयत्यनिशं प्रभो
॥ २१ ॥ भगस्य नयने चैव बाहू च सवितुस्तथा । प्रादात् पूष्णश्च दशनान् पुनर्यज्ञांश्च
पाण्डव ॥ २२ ॥ ततः सुस्थमिदं सर्वं बभूव पुनरेव हि । सर्वाणि च हवींष्यस्य देवा
भागमकल्पयन् ॥ २३ ॥ तस्मिन् क्रुद्धेऽभवत् सर्वमस्वस्थं भुवनं प्रभो । प्रसन्ने च पुनः
स्वस्थं प्रसन्नोऽस्य च वीर्यवान् ॥ २४ ॥ ततस्ते निहताः सर्वे तव पुत्रा महारथाः ।
अन्ये च बहवः शूराः पाञ्चालाः सपदानुगाः ॥ २५ ॥ न तन्मनसि कर्तव्यं न च
तद्द्रौणिना कृतम् । महादेवप्रसादः स कुरु कार्यमनन्तरम् ॥ २६ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि ऐषिकपर्वणि कृष्णयुधिष्ठिरसंवादे अष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

पीछे देवताओंकी कहीहुई वाणीने उनकेधनुषकी प्रत्यञ्चाको जुदाकिया हेराजा
फिर प्रत्यञ्चासे जुदा वह धनुष अकस्मात् कुछ चलायमानहुआ । १९ । इसके
पीछे यज्ञसमेत सब देवता उस देवताओं में श्रेष्ठ और धनुषसे रहित ईश्वरकीशरण
में गये और प्रभुने कृपाकरी । २० । इसकेपीछे भगवानक्रोध त्रिगुणरूपको समुद्र
अज्ञानचित्तमें नियतकरके प्रसन्नहुये हेसमर्थ वहक्रोध अकस्मात् अग्निहोकर जलको
पान करताहै । २१ । हे पाण्डव फिर भग देवताके नत्रों को और सविताकी
भुजाओं को पूषा के दांतोंको और यज्ञोंको दिया अर्थात् सात्विकयज्ञ जारीहुआ
।२२।उसके पीछे यह सब जगत् फिर स्थिरचित्त हुआ और देवताओंने सब हव्यों
को उसका भाग नियत किया अर्थात् सब कर्म ईश्वरार्पण किये गये । २३ । हे
प्रभु युधिष्ठिर उसके क्रोधयुक्त होनेपर सब संसार व्याकुलहुआ और प्रसन्न होनेपर
फिर स्थिर हुआ वह पराक्रमी शिवजी उसके ऊपर प्रसन्नहुये । २४ । उस कारण
से आपके यह सब महारथी पुत्र और धृष्टद्युम्न के पीछे चलनेवाले बहुतसे अन्य
शूरवीर मारेगये । २५ । यह चित्तमें नहींधारण करना चाहिये उसको अश्वत्थामा ने
नहीं किया अर्थात् सब ईश्वरके आधीनहै शोक न करना चाहिये महादेवजी की
प्रसन्नतासे निस्सन्देह श्री घ्रतापूर्वक करनेके योग्य कर्मोंको करो । २६ ॥

suddenly jumped a little Then all the gods with the sacrifice sought refuge of Shiv and he was merciful. 20. Then he placed his anger in the ocean of ignorant minds. It eats the mind as fire does water. Then he restored the limbs of gods and the sacrifice began. Then the world became satisfied and the gods set apart his share. The world was agitated with his anger and was restored to equilibrium at his pleasure. Shiv was pleased with Ashwathama and therefore he could slay Dhrishtadyumn and your sons. It was not the work of Ashwathama but that of Shiv and therefore you should not be sorry, " 26.





महाभारत

॥ अथ जलप्रादानिकपर्व ॥



नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम्
देवीं सरस्वतीञ्चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

जनमेजय उवाच हते दुर्य्योधने चैव हते सैन्ये च सर्वशः । धृतराष्ट्रो महाराज श्रुत्वा किमकरोन्मुने ॥ १ ॥ तथैव कौरवो राजा धर्मपुत्रो महामनाः । कृपप्रभृतयश्चैव किमकुर्वत ते त्रय ॥ २ ॥ अश्वत्थाम्नः श्रुतं कर्म शापादन्योन्यकारितात् । वृत्तान्त मुत्तरं ब्रूहि यदभाषत सञ्जयः ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । हते पुत्रशते दीनं छिन्न

अथ स्त्रीपर्व।

अध्याय ॥ १ ॥

श्रीनारायण और नरोत्तम नर को और सरस्वती देवीको नमस्कार करं के फिर जयनाम इतिहास को वर्णन करता हूं जनेमजय बोले कि हे मुनि दुर्योधन के मरने और सब सेनाके नाश होजाने पर महाराज धृतराष्ट्र ने सुनकर क्या किया । १ । उसीप्रकार धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर ने और उन कृपाचार्यादिक तीनों ने क्या किया । २ । आपके कहने से अश्वत्थामा का कर्म सुना परस्पर शाप देनेसे पीछेका जो वृत्तान्त संजय ने कहाहै उसको आप मुझसे वर्णन कीजिये । ३ । वैशम्पायन बोले कि सौ पुत्रों के मरने पर टूटी शाखाओं के वृक्ष समान

STRIPARV
CHAPTER I

"Having bowed down to Narayan, Nar the best of male beings and goddess Saraswati, let us undertake the history of the great victory. Janmejaya said, " What did Dhritrashtra do at the death of Duryodhan and the destruction of all the army ? What did Yudhishthir and the three warriors, Kripacharya and others do ? I have heard of the deed of Ashwathama; what was the state of things after he was cursed! " Vaishampayan said " At the death of his hundred sons,

शाखाभिरिव द्रुमम् । पुत्रशोकाभिसन्तप्तं धृतराष्ट्रं महीपतिम् । ध्यानमूकत्वमापन्नं चिन्तया समभिप्लुतम् ॥ ४ ॥ अभिगम्य महाप्राज्ञः सञ्जयो वाक्यमब्रवीत् । किं शोचसि महाराज नास्ति शोके सहायता ॥ ५ ॥ अक्षौहिण्यो हताश्चाष्टौ दश चैव विशाम्पते । निर्जनेयं वसुमती शून्या संप्रति केवला ॥ ६ ॥ नानादिग्भ्यः समागम्य नानादेश्या नराधिपाः । सहितास्तव पुत्रेण सर्वे वै निधनं गताः ॥ ७ ॥ पितॄणां पुत्रपौत्राणां ज्ञातीनां सुहृदां तथा । गुरूणां चानुपूर्व्येण प्रेतकार्याणि कारय ॥ ८ ॥ वैशम्पायन उवाच । हतपुत्रो हतामात्यो हतसर्वसुहृज्जनः । पपात भुवि दुर्धर्षो वाताहत इव द्रुमः ॥ ९ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । हतपुत्रो हतामात्यो हतसर्वसुहृज्जनः । दुःखी नूनं भविष्यामि विचरन् पृथिवीमिमाम् ॥ १० ॥ किं नु बन्धुविहीनस्य जीवितेन ममाद्य वै । लूनपक्षस्य इव मे जराजीर्णस्य पक्षिणः ॥ ११ ॥ हृतराज्यो हतबन्धुर्हतचक्षुश्च वै तदा । न भ्राजिष्ये

दुःखी और पुत्रशोक से पीड़ावान् ध्यान मौनता युक्त चिन्तामें डूबेहुये पृथ्वी के स्वामी महाराज धृतराष्ट्र के पास जाकर संजयने यह वचन कहा हे महाराज क्या सोचते हो शोकमें सहायता नहीं होसक्ती है । ५ । हे राजा अठारह अक्षौहिणी सेना मारीगई अब यह पृथ्वी सेना के लोगों से और राजाओं से रहित होकर मित्रों से विहीन है । ६ । क्योंकि नानादेशके राजाओं ने बहुत दिशाओं से आकर सबने आपके पुत्र के साथ नाशको पाया । ७ । अब आप अपने पुत्र पौत्र ज्ञाति सुहृद और सब कौरवोंके क्रिया कर्मको कराइये ८ वैशम्पायनबोले कि पुत्र पौत्रादिकों के मरने से पीड़ावान् बड़ा अजेय धृतराष्ट्र उस शोक कारी वचन को सुनकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वायुसे कठिन वृक्ष गिरपड़ताहै । ९ । धृतराष्ट्रबोलेकि जिसके पुत्र मंत्री और सब सुहृज्जनमारेगये ऐसा मैं होकर सम्पूर्ण पृथ्वीपर विचरूंगा १० अब कटे पक्षवाले पक्षी के समान वृद्धदशामें बुड्ढे बान्धवोंसे रहित के जीवन से क्या प्रयोजनहै हे महाभाग राज्य सुहृज्जन और नेत्रों से रहित मैं ऐसा शोभित नहींहूंगा जैसेकि बिना किरण वाला सूर्य्य अशोभित

Dhritarashtra, full of grief, like a tree destitute of all branches, was sitting in deep meditation and silence. Sanjaya came to him and said, "What are you thinking about, Emperor? Grief can be of no help. 5. Eighteen akshauhinis have been destroyed and the earth has become destitute of warriors, princes and friends. Princes of different lands came here and were destroyed with your son. You have now to perform the funeral rites of your sons, grandsons and other Kauravas." Dhritarashtra fell down on the earth like a tree uprooted by wind and said, "I shall now roam on the earth destitute of sons, friends and advisers. 10. What is the use of living like a featherless bird in my old age? Destitute of kingdom, friends and eyes, I shall look inglorious like the sun without his rays. I did not act upon the advice

महाप्राज्ञ क्षीणरश्मिरिवांशुमान् ॥ ११ ॥ न कृतं सुहृदां वाक्यं जामदग्न्यस्य जल्पतः । नारदस्य च देवर्षेः कृष्णद्वैपायनस्य च ॥१२॥ सभामध्ये च कृष्णेन यत् श्रेयोऽभिहितं मम । अलं वैरेण ते राजन् पुत्रः संगृह्यतामिति । तच्च वाक्यमकृत्वाहं भृशं तप्यामि दुर्मतिः ॥१४॥ न हि श्रोतास्मि भीष्मस्य धर्मयुक्तं प्रभाषितम् । दुर्योधनस्य च तथा वृषभस्येव नर्दतः ॥ १५ ॥ दुःशासनवधं श्रुत्वा कर्णस्य च विपर्ययम् । द्रोणसूर्य परागञ्च हृदयं मे विदीर्यते ॥ १६ ॥ न स्मराम्यात्मनः किञ्चित् पुरा सञ्जय दुष्कृतम् । यस्येदं फलमद्येह मया मूढेन भुज्यते ॥ १७ ॥ नूनं व्यपकृतं किञ्चिन्मया पूर्वेषु जन्मसु । येन मां दुःखभागेषु धाता कर्मसु युक्तवान् ॥ १८ ॥ परिणामश्च वयसः सर्वबान्धवक्षयश्च मे । सुहृन्मित्रविनाशश्च दैवयोगादुपागतः । कोऽन्योऽस्ति दुःखिततरो मत्तोऽन्यो हि पुमान् भुवि ॥ १९ ॥ तन्मामद्यैव पश्यन्तु पाण्डवाः संशितव्रतम् । विवृतं ब्रह्मलोकस्य दीर्घमध्वानमास्थितम् ॥ २० ॥ वैशम्पायन उवाच । तस्य लालप्यमानस्य बहुशोकं

होताहै १२ परशुरामजी देवर्षिनारदजी और व्यासजी इन शुभचिन्तकोंके कहे हुये वचनोंको नहींकिया । १३ । सभाके मध्यमें भी कृष्णजीने मेरेकल्याणका करने वाला यह वचन कहाथा कि हेराजा शत्रुताकोत्यागो और अपने पुत्रको बन्धन में डारो उनके वचनोंको भी न करके मैं दुर्बुद्धी अब कठिन दुःखको पाताहूं और धर्म्मसे संयुक्त भीष्मजी केभी वचनको मुझ अभागे ने नहीसुना राजाओंमें दुर्योधनका नाश दुःशासन का मरण कर्णका विपरीत मरण और द्रोणाचार्यरूप सूर्य के ग्रहणको सुनकर मेरा हृदय फटता है । १६ । हेसंजय पूर्वसमयके कियेहुवे अपनेकुछ पापों को नहींजानताहूं जिनके किफलको अब मैं दुर्भागी भोग रहाहूं । १७ । निश्चय कर के मैंने पूर्व जन्मों में बड़े पाप किये हैं जिसके कारण से ईश्वर ने मुझको दुःख उत्पन्न करनेवाले कर्म्मो में प्रवृत्त किया । १८ । मेरी अवस्थाका अन्तिम भाग पुत्र पौत्रादिकों का नाश और सुहृद बंधुओं का मरना दैवयोगसे है दूसरी रीतिसे नहीं है इस लोकमें मुझसे अधिक दुखी दूसरा कौन पुरुष है । १९ । हे तेजवत वह सब पाण्डव लोग मुझको उस ब्रह्मलोक के मिलने और बड़े मार्गमें नियतहुये को देखेंगे । २० । वैशम्पायन बोले सञ्जयसे वस

of Parashuram, Narad and Vyas, my well wishers. Krishn told me to give up enmity and to casts my son in prison, but I did not act up on his advice and have fallen into this trouble. I did not give ear even to the advice of Bhishm. My heart breaks to hear of the death of Duryodhan, Dushasan, Karan and Drona. 16 I donot know for what sins of my previous life I am being punished. Surely I have committed grievous sins for which I have fallen into this misery. The great destruction of kinsmen and friends in my old age could not be caused but by Fate. Who can be more full of misery than me? The Pandavas will now see me preparing for the next world. " 20 Vai-

विलम्बतः । शोकापहं नरेन्द्रस्य सञ्जयो वाक्यमब्रवीत् ॥ २१ ॥ शोकं राजन् व्यपनुद श्रुतास्ते वेदनिश्चयाः । शास्त्रागमाश्च विविधा वृद्धेभ्यो नृपसत्तम । सृञ्जये पुत्रशोकार्ते यदूचुर्मुनयः पुरा ॥ २२ ॥ यथा यौवनजं दर्पमास्थिते ते सुते नृप । न त्वया सुहृदां वाक्यं श्रुतमर्थवतां हितम् । स्वार्थश्च न कृतः कश्चिल्लुब्धेन फलगृद्धिना ॥ २३ ॥ असिनैवैकधारेण स्वबुद्ध्या तु विचेष्टितम् । प्रायशोऽवृत्तसम्पन्नाः सततं पर्युपासिताः ॥ २४ ॥ यस्य दुःशासनो मन्त्री राधेयश्च दुरात्मवान् । शकुनिश्चैव दुष्टात्मा चित्रसेनश्च दुर्मतिः । शल्यश्च येन वै सर्वं शल्यभूतं कृतं जगत् ॥ २५ ॥ कुरुवृद्धस्य भीष्मस्य गान्धार्या विदुरस्य च । द्रोणस्य च महाराज कृपस्य च शरद्वतः ॥ २६ ॥ कृष्णस्य च महाप्राज्ञ नारदस्य च धीमतः । ऋषीणां च तथान्येषां व्यासस्यामिततेजसः । न कृतं तेन वचनं तव पुत्रेण भारत ॥ २७ ॥ अल्पबुद्धिरहंकारी

विलाप करनेवाले और अनेक प्रकारसे शोकके विस्तार करनेवाले राजाधृतराष्ट्र के शोकका दूर करनेवाला वचन कहा कि । २१। हेराजा शोकका दूरकरो तुमने बहुतसे धर्मके निश्चय सुनेहैं हे राजाओं में श्रेष्ठ तुमने वृद्धों से भी अनेक प्रकारके शास्त्र सुने हैं कि पूर्वसमयमें पुत्रके शोकसे राजासृञ्जय के पीड़ावान् होनेपर मुनियोंने जो कहा । २२ । और जिसप्रकार तरुणता के अहंकारमें आपके पुत्रदुर्योधन के नियत होनेपर ऋषियोंने जोकहा उसको भी सुना । २३ । जोतुमने वार्त्तालाप करनेवाले अपने शुभचिन्तकोंके वचनोंको नहीं अंगीकार किया लोभी और हतबुद्धी होकर तुमनेकोई अपना प्रयोजन नहींकिया । २३। आपने केवल एकधाररखनेवाली तलवार के समान अपनी ही बुद्धिसे सब कर्णकिये और बहुधा दुराचारी लोगोंको सलाहकार करने के निमित्त समीप रक्खा २४ दुश्शासन दुर्बुद्धी कर्ण बड़ा दुष्टात्मा शकुनी दुर्मति चित्रसेनऔर शल्य जिसके मन्त्रीहैं जिस शल्यने सब जगत्को शालरूप किया । २५ । हे महाबाहु महाराज भरतवंशी धृतराष्ट्र आपके उस पुत्रने कौरवोंके वृद्धभीष्म पितामह, गान्धारी, विदुर, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, श्रीकृष्णजी बुद्धिमान् नारदजी और बड़ेतेजस्वी व्यासजी आदिअन्य २. ऋषियोंका भीवचन नहींकिया जोकि निर्बुद्धी अहंकारी सदैव युद्धको करता निर्दयी अभयपराक्रमी

shampayan said, that Sanjaya consoled the monarch in the following words:—" Cease your grief, king You have heard many religious precepts from old men as well as that which the munis said to Srinjaya who was oppressed with grief for his son. You also heard the talk of the sages about your son Duryodhan's pride. You did not attend to the advice of your well wishers and have therefore thrown yourself into misery. Like an edged sword you were self-willed and kept company with wicked men like Dushasan, Karan, Shakuni, Chitrasen and Shalya the thorn of the world. Your son gave no ear to the advice of old *Bhishm*, Gandhari, Drona, *Kripa*, Shri *Krishn*, wise Narad, glorious Vyas and other sages. He was unwise, proud, war-

नित्यं युद्धमिति ब्रुवन्। क्रूरो दुर्मर्षणो नित्यमसन्तुष्टश्च वीर्यवान् ॥२८॥ श्रुतवानसि,
मेधावी सत्यवांश्चैव नित्यदा। न मुह्यन्तीदृशा सन्तो भवादृशाः ॥ २९ ॥ न धर्मः सत्
कृतः कश्चिन्नित्यं युद्धमिति ब्रुवन्। क्षपिताः क्षत्रियाः सर्वे शत्रूणां वर्द्धितं यशः ।३०।
मध्यस्थो हि त्वमप्यासीर्नेक्षमं किञ्चिदुक्तवान्। धुरन्धरेण त्वया भारस्तुलया न समं
धृतः ॥ ३१ ॥ आदावेव मनुष्येण वर्त्तितव्यं यथाक्षमम्। यथा नातीतमर्थं वै पश्चात्ता
पेन युज्यते ॥ ३२। पुत्रगृद्ध्या त्वया राजन् प्रियं तस्य चिकीर्षितम्। पश्चात्तापमिमं
प्राप्तो न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ ३३ ॥ मधु यः केवलं दृष्ट्वा प्रपातं नानुपश्यति। स
भ्रष्टो मधुलोभेन शोचत्येवं यथा भवान् ॥ ३४ ॥ अर्थान्न शोचन् प्राप्नोति न शोचन्
विन्दते फलम्। न शोचञ्छ्रियमाप्नोति न शोचन् विन्दते परम् ॥ ३५ ॥ स्वयमुत्पाद
यित्वाग्निं वस्त्रेण परिवेष्टयन्। दह्यमानो मनस्तापं भजते न स पण्डितः ॥३६॥ त्वयैव

और सदैव असान्ततासे असंतुष्टथा। २८। तुम सदैव शास्त्रज्ञ और शास्त्रके स्मरण रखनेवालेबुद्धि के स्वामी और सत्यवक्ताहो ऐसे आप सरीखे बुद्धिमान सन्तलोग मोहको नहींपातेहैं। २९। सदैव युद्धको कहनेवालेने कोई उत्तम और शुभकर्म्म नहीं किया सब क्षत्रियोंका नाशकिया और शत्रुओंका यशबढ़ाया ।३०। तुमभी सबके मध्यस्थहुये परन्तु कोई उचितबात नहींकही हेअजेय तुमने स्नेह और प्रीतिकी तुला कोसमान नहीं रक्खा। ३१। प्रारम्भमेंही मनुष्यको उचितकर्म्म करना इसनिमित्त योग्यहै जिससे किभूतकालका प्रयोजन पश्चातापसे युक्त नहोय। ३२। हेराजा तुमने पुत्रकी प्रीति से पुत्रका हित और प्रिय करना चाहताथा फिर पीछेसे इस दुःखकोपाया तुम शोचने के योग्य नहींहो ।३३। जोपुरुष केवल शहदको देखकर अपने गिरनेको नहीं देखता है वह शहदके लोभसे गिराहुआ ऐसे शोचता है जैसे किआप शोचतेहैं। ३४। शोचताहुआ पुरुष न मनोरथको पाताहै न फलको पाता है न कल्याणकोपाताहै और न ब्रह्मको पाताहै। ३५। जोपुरुष अपनेआप अग्निको उत्पन्न करके वस्त्रसे ढकता और जलता हुआ चित्त के दुःखको धारण करताहै वह पण्डित नहींहै। ३६ पुत्रकेसाथ तुम्हारे वचनरूपवायुसे प्रेरित लोभरूपी घृतसेसींचा

loving, invincible, brave and unsatisfied. You are learned, wise and truthful. People like you need not be fatuous. He loved fighting and never did any good. He caused the destruction of warriors and increased the fame of enemies. 30. You presided the councils, but never said what was proper. Your words were always biassed on account of fondness. One should always do what is proper from the outset in order to avoid the pangs of remorse. You have fallen into misery because you were so fond of your son and are there ore not worth pitying. An avaricious man, who climbs up a tree for the sake of honey and falls down from a great height, feels remorse like you. Such a one reaps no secular or religious benefit. 35 He is

सहुतेनायं वाक्यवायुसमीरितः । लोभाज्येन च संसिक्तो ज्वलितः पार्थपावकः ॥ ३७॥
तस्मिन् समिद्धे पतिताः शलभा इव ते सुताः । तान् वै शराग्निनिर्दग्धान्न त्वं शोचि-
तुमर्हसि ॥ ३८ ॥ यच्चाश्रुपातात् कलिलं वदनं वहसे नृप । अशास्त्रदृष्टमेतद्धि न प्रशं-
सन्ति पण्डिताः ॥ ३९ ॥ विस्फुलिङ्गा इव ह्येतान् दहन्ति किल मानवान् । जहीहि मन्युं
बुद्ध्या वै धारयात्मानमात्मना ॥ ४० ॥ एवमाश्वासितस्तेन सञ्जयेन महात्मना ।
विदुरो भूय एवाह बुद्धिपूर्वं परन्तप ॥ ४१ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि धृतराष्ट्राश्वासने प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

हुआ यह पाण्डवरूप अग्निरूप प्रज्वलित हुआ है ॥ ३७ । उस अत्यन्त वृद्धियुक्त अग्निमें आपके पुत्र शलभनाम पक्षियोंके समान गिरे तुम बाणोंकी अग्निसे भस्महोकर उनपुत्रोंके शोचकरनेको योग्य नहींहो । ३८ । हे प्रभु जो तुम अश्रुपातोंसे क्लिन्न मुखको धारणकरतेहो यह शास्त्रके विपरीत है पण्डितलोग इसकी प्रशंसा नहींकरतेहैं।३९। निश्चयकरके यह आँसू अग्निके स्फुलिङ्गों के समान मनुष्योंको भस्मकरतेहैं यहांतुम बुद्धिसे शोकको त्यागकरके अपने चित्तको स्वाधीन करो । ४० । वैशम्पायन बोले कि उन महात्मा संजय से इसप्रकार विश्वास दियागया इसके पीछे बुद्धिसे युक्त विदुरजी यह वचन बोले ॥ ४१ ॥



not a wise man who himself makes fire and is burnt by it as he hides it with his cloth. The wind of your affectionate words to your son fed by the ghee of your avarice, caused the inflamation of the fire of Pandavas. Your sons fell down in its rising flames like moths and were burnt. You need not feel any sorrow for them. Your washing the face with tears is irreligious and unpraiseworthy. Surely these tears burn people like flames of fire. Curb your grief by your wisdom and control yourself." Vaishampayan said, "Thus consoled by Sanjaya, the king was thus addressed by Vidur in the following words.—



वैशम्पायन उवाच ॥ ततोऽमृतसमैर्वाक्यैर्ह्लादयन् पुरुषर्षभम् । वैचित्रवीर्यं विदुरो यदुवाच निबोध तत् ॥१॥ विदुर उवाच । उत्तिष्ठ राजन् किं शेषे धारयात्मानमात्मना । एषा वै सर्वसत्त्वानां लोकेश्वर परा गतिः ॥ २ ॥ सर्वे क्षयान्ता निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्रयाः । संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तञ्च जीवितम् । ३॥ यदा शूरञ्च भीरुञ्च यमः कर्षति भारत । तत् किं न योत्स्यन्ति हि ते क्षत्रियाः क्षत्रियर्षभ ॥ ४ ॥ अयुध्यमानो म्रियते युध्यमानश्च जीवति । कालं प्राप्य महाराज न कश्चिदतिवर्तते ॥ ५ ॥ अभावादीनि भूतानि भावमध्यानि भारत । अभावनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥ ६॥ न शोचन्मृतमन्वेति न शोचन् म्रियते नरः । एवं सांसिद्धिके लोके किमर्थमनुशोचसि ॥ ७ । कालः कर्षति भूतानि सर्वाणि विविधान्युत । न कालस्य प्रियः

अध्याय ॥ २ ॥

वैशम्पायन बोले अमृतरूपी वचनों से पुरुषोत्तम धृतराष्ट्रको प्रसन्नकरके विदुरजी ने जोकहा उसको सुनो । १ । विदुरजीबोले हेराजा उठो क्यों सोतेहो बुद्धिसे मनकोआधीन करो सब जड़ चैतन्य जीवोंका यही निश्चयहै ।२। किसब सृष्टिसमूह अन्तमें नाशहोनेवालेहैं सब उदयहोनेवाले ऐश्वर्य अन्तमें पतनहोनेवालेहैं मिलने वाले अन्तमें जुदेहोनेवालेहैं और जीवनभी अन्तमें मरणरूपहोनेवालाहै । ३ । हे भरत वंशी अब यमराज शूरवीर और भयभीतोंको आकर्षण करताहै तो हेक्षत्रियोंमेंश्रेष्ठ फिर वह क्षत्रिय क्या नहींयुद्धकरतेहैं । ४ । युद्धको न करता मरताहै और लड़ता हुआ जीवता रहताहै हे महाराज कालको पाकर कोई उसको उल्लंघन नहीं करता । ५ । हे भरतवंशी सबजीव प्रारम्भमें ही अभावरूप हैं मध्य में भावरूपहैं और मरनेपर अभावरूप हैं ऐसे स्थानपर कौन विलाप है । ६ । शोचताहुआ मृतक के पीछे नहीं जाता है शोचताहुआ मनुष्य नहीं मरता है इस प्रकार लोकमें किस निमित्त शोच करतेहो । ७ । हेकौरवोंमें श्रेष्ठ यहकाल नाना प्रकारके सबजीवोंको आकर्षण करताहै कालका कोई प्याराहै न शत्रुहै । ८ । हे

CHAPTER II

Vaishampayan said, " Consoling Dhritarashtra with his nectarlike words, Vidur said, " Rise up, king why do you sleep ? Control yourself, for this is the goal of all beings. Every created being dies and every rise has a fall. Those who meet have to suffer separation, and life ends in death. Why should kshatriyas shun war when death overtakes the bold and the coward ? A nonfighting man dies, while fighting man lives; who can escape death 5. When all the beings donot exist in the beginning and end, and only exist in the middle, why then should one weep for them ? Why do you lament when you know that one who laments does not follow the dead. Death over-

कञ्चिच्छ्रेष्ठ्यः कुरुसत्तम ॥ ८ ॥ यथा वायुस्तृणाग्राणि संवर्तयति सर्वशः । तथा कालवशं यान्ति भूतानि भरतर्षभ ॥ ९ ॥ एकसार्थप्रयातानां सर्वेषां तत्र गामिनाम् । यस्य कालः प्रयात्यग्रे तत्र का परिदेवना ॥ १० ॥ न चाप्येतान् हतान् युद्धे राजन् शोचितुमर्हसि । प्रमाणं यदि शास्त्राणि गतास्ते परमां गतिम् ॥ ११ ॥ सर्वे स्वाध्यायवन्तो हि सर्वे च चरितव्रताः । सर्वे चाभिमुखाः क्षीणास्तत्र का परिदेवना ॥ १२ ॥ अदर्शनादापतिताः पुनश्चादर्शनं गताः । न ते तव न तेषां त्वं तत्र का परिदेवना ॥ १३ ॥ हतोऽपि लभते स्वर्गं हत्वा च लभते यशः । उभयं नो बहुगुणं नास्ति निष्फलता रणे ॥ १४ ॥ तेषां कामदुघाँल्लोकानिन्द्रः सङ्कल्पयिष्यति । इन्द्रस्यातिथयो ह्येते भवन्ति पुरुषर्षभ ॥ १५ ॥ न यज्ञैर्दक्षिणावद्भिर्न तपोभिर्न विद्यया । स्वर्गं यान्ति तथा मर्त्या यथा शूरा रणे हताः ॥ १६ ॥ शरीराग्निषु शूराणां जुहुवुस्ते शराहुतीः । हूयमानाञ्छरांश्चैव सेहुस्तेजस्विनो

भरतर्षभ जैसेकि वायु सबतृणकी नोकोंको उलटपलटकरता है उसी प्रकार सबजीव कालके आधीन होतेहैं । ९ । एकसाथ आनेवाले और वहां जानेवाले सबजीवोंके मध्यमें जिसके आगे कालजाताहै उसमें कौन विलाप करताहै । १० । हेराजा युद्धमें मृतकहुये इनवीरोंके शोचकरनेकोभी योग्यनहींहो इसमें शास्त्रका प्रमाणहै किउन्होंने परमगतिकोपाया सब वेदपढ़नेवाले और सब अच्छे प्रकारसे व्रतकरनेवाले यहसब सम्मुखहोकर विनाशवानहुये इसमें किसबातका विलाप करनाहै । १२ । दृष्टिसे कि आनेवाले ब्रह्मसे उत्पन्नहुये और फिर उसी दृष्टिसे न आनेवालेको पाया यह न आपकेहैं न आप उनकेहैं तब कैसा विलापहै । १३ । मृतकभी स्वर्गको पाताहै और मारकरभी जिसको पाताहै हमलोगोंको यहदोनों बहुतगुणवालेहैं युद्धमें निष्फलता नहीं है । १४ । इन्द्र देवता उनके मनोरथों के प्राप्तकरनेवाले लोकोंको विचार करेंगे हेपुरुषोत्तम यह सब शूरवीर लोग इन्द्रके अतिथीहोतेहैं । १५ । मनुष्य दक्षिणा वालेयज्ञ तप और विद्या से उस प्रकार स्वर्गको नहीं पातेहैं जैसे कियुद्ध में मृतक उन शूरवीर तेजस्वियों ने पायाहै जिन्होंने शरीररूपी अग्नियोंमें बाणरूप आहुति-

takes all. He has no friends or enemies. All beings are upset by *death like the blades of grass by the wind. Why do you grieve when* all men have to die? 10. You need not lament those who died in war, for according to our religious books they have gone to heaven. Those who read the Vedas and observe vows have to die, what is therefore to lament for! They came from eternity and were merged in *Brahm.* They and you did not belong to one another, why do you weep then? Both those who die or are slain in war are alike to us, there is nothing disadvantageous in fighting. Indra will decide the fate of the warriors, they are to be his guests. 15. Not even those who perform [illegible], get such regions as are obtained by those who die fighting. A kshatrya has no easier way to

मिथः ॥ १७ ॥ एवं राजंस्तथाप्यस्मिन् स्वर्गपथानमुत्तमम । न युद्धादधिकं किंचित् क्षत्रियस्येह विद्यते ॥ १८ ॥ क्षत्रियास्ते महात्मानः शूराः समितिशोभनाः । आशिषं परमां प्राप्ता न शोच्याः सर्व एव हि ॥ १९ ॥ आत्मानमात्मनाश्वास्य मा शुचः पुरुषर्षभ । नाद्य शोकाभिभूतस्त्वं कार्यमुत्स्रष्टुमर्हसि ॥ २० ॥ माता पितृसहस्राणि पुत्रदारशतानि च । संसारेष्वनुभूतानि कस्य ते कस्य वा वयम् ॥ २१ ॥ शोकस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानि च । दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति न पण्डितम् ॥ २२ ॥ न कालस्य प्रियः कश्चिन्न द्वेष्यः कुरुसत्तम । न मध्यस्थः क्वचित् कालः सर्वं कालः प्रकर्षति ॥ २३ ॥ कालः पचति भूतानि कालः संहरते प्रजाः । कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः ॥ २४ ॥ अनित्यं यौवनं रूपं जीवितं द्रव्यसञ्चयः । आरोग्यं प्रियसंवासो गृध्येदेषु न पण्डितः ॥ २५ ॥ न जानपदिकं दुःखमेकः शोचितुमर्हसि । अप्यभावेन युज्येत तच्चास्य

णोंको होमा और परस्पर होमेहुये बाणोंको सहा । १७ । हेराजा उसप्रकार से स्वर्गके उत्तम मार्गको तुमसे कहताहूं इसलोकमें क्षत्रियका कुछ कर्म युद्धसे अधिक नहीं वर्त्तमानहै । १८ । युद्धमें शोभायमान उन महात्मा शूर क्षत्रियोंने बड़े अभीष्ट फलको पाया सबही शोचके अयोग्य हैं । १९ । हेकुरुपोत्तम तुम ज्ञानसे अपनेको विश्वासदेकर शोचमतकरो शोकसे विजय कियेहुये तुम करनेके योग्यकर्मके छोड़ने को योग्य नहींहो । २० । हजारों माता पिता और सैकड़ोंपुत्र स्त्री संसारमें प्राप्तकिये गये किसके और हम किसके । २१ । प्रति दिन शोकके हजारों स्थान और आनन्द के सैकड़ोंस्थान अज्ञान में प्रवेश करतेहैं ।२२। हेकौरवोत्तम कालका कोई प्याराहै न शत्रुहै वह काल किसी स्थानपरभी मध्यस्थ नहींहै काल सबको खैंचताहै । २३ । काल जीवमात्रों को पकाताहै और कालही सृष्टिको मारताहै कालही सोनेवालोंके मध्य में जागताहै और कालही दुःखसे उल्लंघनके योग्य है । २४ । तरुणाईरूप वृद्धता धनसमूह और नीरोगतापूर्वक निवास यहसब विनाशवानहैं पण्डित इनमें प्रवृत्त नहीं होताहै । २५ । अकेले तुम सब दुनियाभरे के दुःख

heaven than dying in battle. All the warriors slain have got good regions and are not worth lamenting for. Donot give yourself up to grief, but do what is necessary. We make thousands of fathers, mothers, sons and wives in this world and then sever our connection from them. A foolish man is beset with thousands of pleasures and pains every day. Death observes neither friendship nor enmity, but overtakes all. Time makes all beings ripe and then kills them. He is awake when all beings are asleep and is difficult to be overcome. Youth, age, wealth and health are all perishable; a wise man does not set his mind on any one of them. You need not feel sorrow for all the world, for one who dies never comes back to us. We should not feel sorry for those who have died bravely; it is better not to

न निवर्त्तते ॥ २६ ॥ अशोचन् प्रतिकुर्वीत यदि पश्येत् पराक्रमम् । भैषज्यमेतद्दुःखस्य
यदेतन्नानुचिन्तयेत् ॥ २७ ॥ चिन्त्यमानं हि न व्येति भूयश्चापि प्रवर्द्धते । अनिष्टसंप्रयो
गाच्च विप्रयोगात् प्रियस्य च ॥ २८॥ मनुष्या मानसैर्दुःखैर्युज्यन्ते येऽल्पबुद्धयः नार्थो
न धर्मो न सुखं यदेतदनुशोचसि ॥२९॥ न च नापैति कार्य्यार्थात्त्रिवर्गाच्चैव हीयते
अन्यामन्यां धनावस्थां प्राप्य वैशेषिकीं नराः॥३०॥ असन्तुष्टाः प्रमुह्यन्ति संतोषं यान्ति
पण्डिताः । प्रज्ञया मानसं दुःखं हन्याच्छारीरमौषधैः । एतज्ज्ञानस्य सामर्थ्यं न बालैः
समतामियात्॥३१॥शयानञ्चानुशेते हि तिष्ठन्तं चानुतिष्ठति।अनुधावति धावन्तं कर्मपूर्व
कृतंनरम्॥३२॥यस्यांयस्यामवस्थायांयत्करोतिशुभाशुभमातस्यांतस्यामवस्थायांतत्फलं
समुपाश्नुते ॥३३॥ येन येन शरीरेण यद्यत् कर्म करोति यः। तेन तेन शरीरेण तत्तत्
फलमुपाश्नुते ॥ ३४ ॥ आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः । आत्मैव ह्यात्मनः

के शोचनेके योग्य नहीं होजो अभाव मिलताहै उसका वह फिर लौटकर नहीं
आताहै । २६ । जोपराक्रम से नाशको पावे उसको शोचताहुआ मनुष्य उसकी
चिकित्साको नहीं करता है दुःखका यह इलाजहै जो उसको न विचार करे ।२७।
चिन्ता कियाहुआ दूर नहीं होताहै और फिर फिर अधिक बढ़ताहै अप्रियके मिलने
और प्रियके वियोगमें । २८ । आदमी बड़े २ चित्त के दुःखसे संयुक्तहोतेहैं
जोकि निर्बुद्धी हैं यह न अर्थहै नधर्महै न सुखहै जोतुम शोच करतेहो । २९ । वह
करनेके योग्य प्रयोजनसे जुदाहोता है और धर्मअर्थ काम इनतीनों वर्गोंसे च्युतहोता
है मनुष्य अन्य २ मुख्य धनादिक दशाको पाकर । ३० । इस
में असंतुष्ट लोग मोहको पाते हैं पण्डित सन्तोषको पातेहैं चित्तके दुःखको ज्ञानसे
और शरीरके दुःखको औषधोंसे दूरकरना चाहिये यही ज्ञानकी सामर्थ्य है और
किसीप्रकार की कोई सामर्थ्य नहींहै ।३१।पूर्वजन्ममें कियाहुआ कर्म सोतेहुये मनुष्य
केसाथसोताहै और बैठनेवालेके पासनियतबैठाहोताहै और दौड़तेहुयेकेपीछेदौड़ता
है।३२। जिस जिस दशामें जिस शुभाशुभ कर्मको करता है उसी उसी दशा में उस
फलको पाताहै । ३३ । जो जीव जिस शरीर से जिस २ कर्म्मको करताहै उसी
शरीर से उस उस कर्म्मके फलको भोगताहै । ३४ । आत्मामें आत्माही उसका बन्धु

think of them. Grief does not abate by brooding over it; it increases if we think of our dear ones. The fool is beset with many sorrows; your sorrow is useless and irreligious. It deters us in our duties and deprives us of all ends. A dissatisfied man is avaricious, while a learned man is satisfied. We should remove mental griefs with wisdom and maladies with medicine. 31. An act done in a former life sleeps, sits and runs with the doer. We reap the fruit of our deeds in the same conditions as when we did them. We suffer the punishments of our deeds in bodies like those in which we did them.

साक्षी कृतस्यापकृतस्य च ॥ ३५ ॥ शुभेन कर्मणा सौख्यं दुःखं पापेन कर्मणा । कृतं लभति सर्वत्र नाकृतं भुज्यते क्वचित् ॥३६॥ न हि ज्ञानविरुद्धेषु बहुपायेषु कर्मसु । मूलघातिषु सज्जन्ते बुद्धिमन्तो भवद्विधाः ॥ ३७ ॥

इति श्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि धृतराष्ट्राश्वासने द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । सुभाषितैर्महाप्राज्ञ शोकोऽयं विगतो मम । भूय एव तु वाक्यानि श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥ १ ॥ अनिष्टानां च संसर्गादिष्टानां च विवर्जनात् । कथं हि मानसैर्दुःखैः प्रमुच्यन्ते तु पण्डिताः ॥२॥ विदुर उवाच । यतो यतो मनो दुःखात् सुखाद्वा विप्रमुच्यते । ततस्ततो नियम्यैतच्छान्तिं विन्देत वै बुधः ॥ ३ ॥ अशाश्वतमिदं सर्वं

है और आत्माही आत्माका शत्रुहै आत्माही आत्माके शुभ अशुभ कर्मोका साक्षी है । ३५ । शुभकर्मसे सुखको और अशुभकर्म्म से दुःखको सर्वत्र पाताहै किसी स्थान में भी विनाकियेहुये को नहीं भोगताहै । ३६ । आपकी समान बुद्धिमान् मनुष्य उनकर्मोंमें प्रवृत्त नहीं होते हैं जोकि ज्ञानके विपरीतबहुत पापरखनेवाले औरमोक्षके नाशकरनेवाले हैं ३७ ॥

अध्याय ३ ॥

धृतराष्ट्रबोले हे बड़े ज्ञानी तुम्हारे इन उत्तम वचनों से मेराशोक निवृत्तहुआ परन्तु हेनिष्पाप मैं मूलसमेत इनवचनों को फिर सुना चाहताहूं । १ । पंडितलोगसे अप्रियके योग और प्यारोंके वियोगसे उत्पन्न होनेवाले चित्तके दुःखों से कैसे छूटतेहैं । २ । विदुरजी बोले कि जिस जिस उपायसे दुःख अथवा सुखसेभी निवृत्त होताहै बुद्धिमान मनुष्य उसीउपायसे इस चित्तको स्वाधीन करके शान्ती को पावे । ३ । हेनरोत्तम यह सब जो ध्यानमें आताहै विनाशवानहै यह संसार केलेके समानहै इसका सार पदार्थ वर्तमान नहींहै । ४ । जब ज्ञानी और मूर्ख धनी और

The soul is its own friend, enemy and witness. 35. It gets happiness as a resulo of good deeds and sorrow for wicked ones. One cannot suffer without doing. Wise men like you donot engage in doing foolish, sinful and wicked deeds that debar the door from heaven." 37.

CHAPTER III

Dhritrashtra said, "My grief is gone away by your good words, wise man. I wish to hear your words once more in detail. How can wise men get rid of the unpleasant feeling arising out of the meeting of enemies and separation of friends?" Vidur said, "A wise man should alienate his mind from the things which cause pleasure or pain. The world we see round us is mortal; it has no kernel like

विस्रयमाने नरर्षभ । कदलीसंनिभो लोकः सारोह्यस्य न विद्यते ॥ ४ ॥ यदा प्राज्ञाश्च मूढाश्च धनवन्तोथ निर्धना । सर्वे पितृवनं प्राप्य स्वपन्ति विगतज्वराः ॥ निर्मांसैरस्थिभूयिष्ठैर्गात्रैः स्नायुनिबन्धनैः ॥५॥ किं विशेषं प्रपश्यन्ति तत्र तेषां परेजनाः । येन प्रत्यवगच्छेयुः कुलरूपविशेषणम् ॥ कस्मादन्योन्यमिच्छन्ति विप्रलब्धधियो नराः ॥७॥ गृहाणीव हि मर्त्यानामाहुर्देहानि पण्डिताः । कालेन विनियुज्यन्ते सत्वमेकन्तु शाश्वतम् यथाजीर्णमजीर्णं वा वस्त्रं त्यक्त्वातु पूरुषः । अन्यद्रोचयते वस्त्रमेवं देहाः शरीरिणाम् ॥ ९ ॥ वैचित्रवीर्य वासं हि दुःखं वा यदि वा सुखम । प्राप्नुवन्तीह भूतानि स्वकृतेनैव कर्मणा ॥ १० ॥ कर्मणा प्राप्यते स्वर्गः सुखं दुःखमथभारत । ततो वहति तं भारमवशः स्ववशोऽपि वा ॥ ११ ॥ यथा च मृण्मयं भाण्डं चक्रारूढं विपद्यते । किञ्चित्प्रक्रियमाणं वा कृतमात्रमथापि वा ॥ १२ ॥ छिन्नं वाप्यवरोप्यन्तमवतीर्णमथापि वा

निर्द्धनी कालसे मरणको पाकर तापसे रहित सोतेहैं उस स्थानपर दूसरे मनुष्य निर्मांस अथवा बहुत अस्थिरखनेवाले अंगनाड़ी और स्नायुओंसे अधिककिस वस्तुको देखतेहैं जो उससमय कुल और रूप विशेषणको नहीं पावें बहुछल करनेवालेमनुष्य किसहेतुसे परस्पर इच्छाकरते हैं ॥ ७ पण्डितोंने शरीर धारियोंके देहको ग्रहों के समान कहाहै वहकालसे मिलतेहैं अर्थात् नाशकोपातेहैं केवलएक जीवात्माही अविनाशीहै । ८ । जिसप्रकार मनुष्य पुराने कपड़ेको त्यागकरके नवीन कपड़ेको अङ्गीकार करताहै इसी प्रकार शरीरधारियोंके शरीर हैं ।९। हेधृतराष्ट्रसब मनुष्य अपने कियेहुये कर्मसे मिलने के योग्य दुःख अथवा सुखको पातेहैं ।१०। हे भरतवंशी सब सुख और दुःख अपने कर्म से प्राप्त होतेहैं उसहेतुसे यह स्वतन्त्र अथवा अस्वतन्त्र भी उस भारको उठाताहै । ११ । और जैसेमट्टीकापात्र रूपको पाकर टूटताहै कोई बनता कोई बनाहुआ ।१२। अवेपर रक्खाहुआ वा अवेसे गिरकर टूटनेवाला आर्द्र शुष्क वा पकताहुआ ।१३। अवेसे उताराहुआ उठायाहुआ वा काममें लायाहुआभी टूटजाताहै इसी प्रकार शरीर धारियोंके शरीरहैं ।१४। गर्भमें नियत जन्म लेनेवाला

plantain. When the wise and fool, wealthy and poor find rest in death, we find nothing left of them except a heap of bones. Family greatness and beauty are of no avail after death; why should people desire to gain their object by deceit. Wise men say that the bodies of men are like constellations which come together at times and then disappear; the soul alone is immortal. Bodies are like clothes which we cast off when old and and put on new ones. Our pleasures and pains are the results of our actions. 10. Man is not indepent when he has to suffer pleasure or pain as a result of his former deeds. Our bodies are like earthen pots which assume shapes and break down in the course of preparation, after preparation and at all other stages. They break down after being burnt in a kiln, in transit or in use

आर्द्रं वाप्यथ वा शुष्कं पच्यमानमथापि वा ॥ १३॥ अवताप्यमानमापाकादुद्धृतस्यापि भारत। अथवा परिभुञ्जानमेव देहाः शरीरिणाम् ॥ १४॥ गर्भस्थो वा प्रसूतो वा प्यथ वा दिवसान्तरः। अर्द्धमासगतो वापि मासमात्रगतोऽपि वा ॥ १५ ॥ संवत्सरगतो वापि द्विसंवत्सर एव वा। यौवनस्थोऽथ मध्यस्थो वृद्धो वापि विपद्यते ॥ १६ ॥ प्राक्कर्मभिस्तु भूतानि भवन्ति न भवन्ति च। एवं सांसिद्धिके लोके किमर्थमनुतप्यसे ॥१७॥ यथा तु सलिलेराजन् क्रीडार्थमनुसन्तरन्। उन्मज्जेच्च निमज्जेच्च किञ्चित् सत्त्वं नराधिप॥१८। एवं संसारगहने उन्मज्जननिमज्जने। कर्मभोगेन बध्यन्ते क्लिश्यन्ते येऽल्पबुद्धयः ॥ १९ ॥ ये तु प्राज्ञाः स्थिताः सत्त्वे संसारान्तगवेषिणः। समागमज्ञा भूतानां ते यान्ति परमां गतिम् ॥ २० ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनोदने तृतीयोऽध्यायः ॥ ३



रा थोड़ी अवस्थावाली अर्द्धमास एकमास ।१५। एकवर्ष वा दोवर्षकी अवस्था रख नेवाला तरुण मध्यस्थ और वृद्धभी नाशको प्राप्त ।१६। सबजीव अपनेपिछले जन्मोंके कर्मोंसे उत्पन्न होतेहैं और नाशको पातेहैं इसरीति के स्वाभाविक धर्मरख नेवाले लोकमें किसहेतुसे दुःखी होतेहैं ।१७। हेराजा जैसेकिकोई जीव क्रीड़ाके निमित्त जलमें घूमताहुआ डूबता और उछलताहै।१८। उसीप्रकार महर्षीलोग अपने बड़े ज्ञानकेद्वारा उसप्रकार के दुर्गम संसार से पारहुये लोकिक्ना बकलना इनदो गुणोंका रखनेवालाहै ।१९। जोजीवोंकी उत्पत्तिके जाननेवाले संसार के अन्तके खोजनेवाले सब ज्ञानी नियतहैं वह परम गतिको पातेहैं ॥ २० ॥



So our bodies die in wombs, after birth, at the age of a fortnight, a month, a year, two years, in youth, middle, or old age. 16. People die and are born again as a result of their own deeds; why should we be sorry for those who are naturally mortal. Sages and rishis cross the ocean of the world like an animal which floats or sinks down in water at pleasure. Those wise men who seek to know the beginning and end of the world, reach the sublime goal." 20.



धृतराष्ट्र उवाच । कथं संसारगहनं विज्ञेयं वदतांवर । एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं तत्त्वमाख्याहि पृच्छतः ॥ १ ॥ विदुर उवाच । जन्मप्रभृति भूतानां क्रियासर्वोपलक्षयं । पूर्वमेवेह कलले वसते किञ्चिदन्तरम । ततः स पञ्चमेऽतीते मासे वा समकल्पयत् ॥ २ ॥ ततः सर्वांगसंपूर्णो गर्भो वै स तु जायते । अमेध्यमध्ये वसति मांसशोणितलेपने ॥३॥ ततस्तु वायुवेगेन ऊर्ध्वपादो ह्यध शिराः। योनिद्वारमुपागम्य बहून् क्लेशान् समृच्छति ॥ ४ । योनिसंपीडनाच्चैव पूर्वकर्मभिरन्वितः । तस्मान्मुक्तः स संसारात् न्यान् पश्यत्युपद्रवान् । ग्रहास्तमुपगच्छन्ति सारमेया इवामिषम् ॥ ६ ॥ ततः प्राप्तोत्तरे काले व्याधयश्चापि तं तथा । उपसर्पन्ति जीवन्तं बध्यमानं स्वकर्मभिः ॥ ७ ॥ तं बद्धमिन्द्रियैः पाशैः सङ्गस्वादुभिरावृतम । व्यसनान्यपि वर्तन्ते विविधानि नराधिप ॥ ८ ॥ बाध्यमानश्च तैर्भूयो नैव तृप्तिमुपैति सः । तदा नावैति चैवायं प्रकुर्वन् साध्वसाधु वा।

अध्याय ॥ ४ ॥

धृतराष्ट्र बोले हेवक्ताओं में श्रेष्ठ किस रीति से यह संसाररूपी वन जानने के योग्यहै मैं इसको सुना चाहता हूं आप मुझसे वर्णन कीजिये । १ । विदुरजी बोले कि जन्मसे लेकर जीवधारियोंकी सब क्रिया दिखाई देतीहैं इसलोक में प्रथम कलल अर्थात् एकरात्रि निवास करनेवाले गर्भमें जीवात्मा निवास करता है परन्तु कुछ अन्तर है । २ । इसके पीछे पांचवांमास व्यतीत होनेपर उस चैतन्यका प्रादुर्भाव विचार किया अर्थात् एकरात्रि निवासमें चैतन्यकी संज्ञामात्र होतीहै परन्तु पांचवें महीने में उसका पूर्ण प्रादुर्भाव होजाताहै मांस रुधिरसेलिप्त अपवित्र स्थानमें निवासकरता है । ३ । फिर वह अपानरूप वायुकी तीव्रतासे ऊंचेपैर नीचे शिरवाला योनिके द्वारको पाकर बड़े कष्टों को पाताहै । ४ योनीकी पीड़ा और पिछलेकर्मों से युक्त उस द्वारसे छूटकर संसारके दूसरे उपद्रवों को देखताहै । ५ । और ग्रह उसके पास ऐसे आतेहैं जैसे कि मांसकेपास कुत्ते आते हैं । ६ । हेशत्रुसंतापी इसके पीछे उसीसमय रोगभी उसकेपास आतेहैं इसीसे जीवताहुआ अपनेकर्मोंसे पीड़ावान होताहै । ७ । हेराजा इन्द्रियोंके पाश बन्धनों में बंधेहुये संग और स्वादु से संयुक्त उसशरीर धारीके पास नानाप्रकारके व्यसन अर्थात् आपत्तियां वर्तमानहोतीहैं । ८ । फिर उन सबसेपीड़ित होकर यह जीवतृप्तिको नहीं पाताहै इसीसे

CHAPTER IV

Dhritrashtra said, " How can we know the wilderness of the world ? Pray tell me all about it. " Vidur said, " From the beginning we discern the work of living beings. They live for sometime in the womb and are then surrounded by impurities of flesh and blood. They live there with their heads downwards and their feet up and are in a miserable plight till they come out of the womb. Coming out of one difficulty, they have to encounter others in the world. Evils press on him as dogs do a piece of flesh. Diseases come to him during his

तथैव परिरक्षन्ति ये ध्यानपरिनिष्ठिता: ॥ ९ ॥ अर्थं न बुध्यते ताव द्यमलोकमथागतम्। यमदूतैर्विकृष्यंश्च मृत्युं कालेन गच्छति ॥ १० ॥ वाग्धीनस्य च यन्मात्रमिष्टानिष्टं कृतं मुखे। भूय एवात्मनात्मानं वध्यमानमुपेक्षते ॥ ११ ॥ अहो विनिकृतो लोको लोभेन च वशीकृतः। लोभक्रोधभयोन्मत्तो नात्मानमवबुध्यते ॥ १२ ॥ कुलीनत्वे च रमते दुष्कुलीनान् विकुत्सयन्। धनदर्पेण दृप्तश्च दरिद्रान् परिकुत्सयन् ॥ १३ ॥ मूर्खानिति परानाहनात्मानं समवेक्षते। दोषान् क्षिपति चान्येषां नात्मानं शास्तुमिच्छति ॥ १४ ॥ यदा प्राज्ञाश्च मूर्खाश्च धनवन्तोथ निर्धनाः। कुलीनाश्चाकुलीनाश्च मानिनोथाप्यमानिनः ॥ १५ ॥ सर्वे पितृवनं प्राप्ता स्वपन्ति विगतज्वराः। निर्मांसैरस्थिभूयिष्ठैर्गात्रैः स्नायुनिबन्धनैः ॥ १६ ॥ विशेषं न प्रपश्यन्ति तत्र तेषां परे जनाः। येन प्रत्यवगच्छेयु कुलरूपविशेषणम् ॥ १७ ॥ यदा सर्वसमं न्यस्ताः स्वपन्ति धरणीतले। कस्मादन्योन्यमिच्छन्ति

शुभाशुभ कर्मों को करताहै और उनका त्यागनेवाला नहीं होताहै इसी प्रकार जो पुरुष ईश्वरकेध्यानमें मग्नहै वह अपने को तबतक चारोंओरसे रक्षा करतेहैं जबतक यह जीव मिलनेवाले यमलोक को नहीं जानताहै यमदूतों से आकर्षित कालसे मृत्युको पाता है। १० । उस मौनका जो पाप पुण्य है वह दूसरे के द्वारा मुखमें कियाहुआ होताहै फिरभी विषयोंमें आसक्तहोकर अपनेको पतनहुआ नहीं ध्यानकरताहै। ११ । आश्चर्यहै कि यहसंसार नीच लोभके आधीनतामें वर्त्तमानक्रोध मोह और धनकेमदसे अचेतहोकर आत्माको नहीं जानताहै। १२। दुष्ट कुलवालोंकी निन्दाकरता अपने कुलकी प्रशंसा करता हुआ रमता है दरिद्रियोंकी निन्दा करता धनके गर्वसे अहंकारीहै। १३। दूसरों को मूर्ख कहता है और अपनेको अच्छीरीति से नहीं देखताहै दूसरोंको शिक्षा करता है परन्तु अपनेको शिक्षा करना नहींचाहताहै। १४। जब ज्ञानी और मूर्ख धनी और निर्द्धनी कुलीन अकुलीन अहंकारी और निरहंकारीभी सब पितृवन (यमलोक) में वर्त्तमान विगत ज्वर होकर सोतेहैं और वहांपर दूसरे मनुष्य उन्होंके निर्मांस बहुत से अस्थिवाले अंग और नाड़ीबन्धनोंसे अधिक कुछ नहीं देखतेहैं औरजो कुल और रूपकी मुख्यताको नहीं पातेहैं। १७। जब वह सबभी शरीरत्याग कियेहुए पृथ्वीपर सोतेहैं तब दुर्बुद्धी मनुष्य इस

lifetime. Then he is in danger of evil desires and other calamities. Beset with so many difficulties, he is not satisfied with anything and does good and evil deeds. But those who meditate on God, protect themselves from all sides as long as they are not summoned by death. 10. One fallen low on account of evil desires, does not see his fall.. It is a wonder that people forget themselves on account of avarice pride, anger and other passions. They give themselves praise and blame others, they speak ill of the poor in the pride of their wealth. They call others fools and donot look towards themselves; they preach-others and themselves remain in the dark. Great and lowly, proud and humble all go to the region of Yam and nothing is left of them but a

प्रलब्धमिह दुर्बुधाः॥१८प्रत्यक्षञ्च परोक्षञ्च योनिशम्य श्रुतिं त्विमाम्। अध्रुवे जीवलोके
ऽस्मिन् यो धर्ममनुपालयन्। जन्मप्रभृति वर्त्तेत प्राप्नुयात् परमां गतिम् ॥ १९ ॥ एवं
सर्वं विदित्वा वै यस्तत्त्वमनुवर्त्तते। स प्रमोक्षयते सर्वान् पन्थानो मनुजाधिप ॥ २० ॥
धृतराष्ट्र उवाच। यदिदं धर्मगहनं बुद्ध्या समनुगम्यते। एतद्विस्तरशः सर्वं बुद्धि

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रादानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनोदने चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

मार्गं प्रशंस मे ॥ १। विदुर उवाच। अत्र ते वर्त्तयिष्यामि नमस्कृत्वा स्वयम्भुवे। यथा
संसारगहनं वदन्ति परमर्षयः ॥ २ ॥ कश्चिन्महति संसारे वर्त्तमानो द्विजः किल।
वनं दुर्गमनुप्राप्तो महत्क्रव्यादसङ्कुलम् ॥ ३ ॥ सिंहव्याघ्र [illegible] महारव

लोक में किस हेतु से परस्पर छलकिया चाहतेहै। १८। यहबात देखीऔर सुनी है
जो इस श्रुतिको सुनकर इस विनाशवान् जीवलोकमें धर्मकापालन करताहुआ जन्मसे
लेकर मरण [illegible] करताहै वह परमगतिको पाता है जोकिइसप्रकार सबकोजानता
[illegible] स्थापना करता है। २०।

अध्याय ५ ॥

धृतराष्ट्रबोले किजो यह दुष्प्राप्य धर्मबुद्धिकेद्वारा अच्छेप्रकारसे प्राप्त होताहै
इसहेतुसे अब बुद्धिमार्गको ब्योरे समेत मुझसे कहो। १। विदुरजी बोले किइस
स्थानपर ब्रह्माजी के अर्थनमस्कार करकेयह विषय तुमसे कहताहूं जैसे कि महर्षि
लोग इस संसाररूपी घन बनको कहते हैं। २। निश्चयकरके इस बड़े संसार में कोई
द्विज मांसभक्षी जीवों से पूर्ण उस दुर्गम्य वनमें पहुँचाजो किबड़े शब्दवाले भयानक
रूप मांसभक्षी महाभयकारी सिंह व्याघ्र हाथी औररीछोंकसमूहोंसे चारोंओरको व्याप्त

---

heap of bones. Why should foolish men practise deceit with their fellow creatures when they see that so many men endowed with wealth and beauty lie dead on earth. We see and hear that he who leads a virtuous life in this mortal world, gains the highest goal. He who knows all this is a worshipper of Brahm." 20.

CHAPTER V

Dhritrashtra said, "Because this difficult dharm can be known by wisdom alone, pray tell me the way to wisdom." Vidur said, "Having bowed down to Brahma, I shall tell you how great sages cross the vast forest of the world.— A man entered a forest full of wy

समन्तात् संपरिक्षिप्तं मृत्योरपि भयप्रदम् ॥ ४॥ तदस्य दृष्ट्वा हृदयमुद्वेगमग
मत् परम् । अभ्युच्छ्रयश्च रोम्णां वै विक्रियाश्च परन्तप ॥ ५ ॥ स तद्वनं व्यनुसरन् संप्र
धावन्नितस्ततः । वीक्षमाणो दिशः सर्वाः शरणं क्व भवेदिति ॥ ६॥ स तेषां छिद्रमन्वि
च्छन् प्रद्रुतो भयपीडितः । न च निर्याति वै दूरं न च तैर्विप्रयुज्यते ॥ ७ ॥ अथापश्य
द्वनं घोरं समन्ताद्वागुरावृतम् । बाहुभ्यां संपरिक्षिप्तं स्त्रिया परमघोरया ॥ ८ ॥ पञ्च
शीर्षधरैर्नागैः शैलैरिव समुन्नतैः । नभस्स्पृशैर्महावृक्षैः परिक्षिप्तं महावनम् ॥ ९ ॥ वन
मध्ये च तत्राभूदुदपानः समावृतः । वल्लीभिस्तृणछन्नाभिर्गूढाभिरभिसंवृतः ॥ १० ॥
पपात स द्विजस्तत्र निगूढे सलिलाशये । विलग्नश्चाभवत्तस्मिन् लतासन्तानसंकुले
॥ ११ ॥ पनसस्य यथा जातं वृन्तबद्धं महाफलम् । स तथा लम्बते तत्र ऊर्ध्वपादो
ह्यधःशिराः ॥ १२ ॥ अथ तत्रापि चान्योऽस्य भूयो जात उपद्रवः । कूपमध्ये महानागम

मृत्युकोभी भयका देनेवाला था ।४। उसको देखकर इसका हृदय महाव्याकुल हुआ कम्प और
रोमांचोंसे शरीर व्याप्त हुआ । ५ । वह उस वन में अच्छेप्रकार घूमताहुआ
इधर उधर को दौड़ा और सब दिशाओं को देखताथा कि मेरा रक्षास्थान कहां
होगा । ६ । इसप्रकार वह भयसे पीड़ावान् छिद्रों को देखता भागा वह नतो दूर
जाता ७। न वनसे बचता था इसके पीछे उसने चारों ओरको पाशयुक्त घोर वनको देखा
वह पाश बड़ीघोररूप स्त्रीकी भुजाओं से पकड़ा हुआथा ८ । और वहवन पांच शिर
रखनेवाले पर्वतों के समान ऊंचे सर्पोंसे और आकाशको स्पर्श करनेवाले बड़ेवृक्षों
से चारों ओरको संयुक्तथा । ९ । उस वनके मध्य में एक कूप अन्धकार से पूर्ण
तृणसे ढकी हुई दृढ़वल्लियोंसे संयुक्तथा वह द्विज उस गुप्त कूपमें गिरपड़ा और
लताओंके फैलावसे पूर्ण उस कूपमें छिपगया । ११ । जैसे कटहल वंशमें उत्पन्न
होनेवाला बड़ा फल आशा में लगाहुआ होताहै उसी प्रकार वह द्विज ऊंचेपैर नीचे
शिरवाला होकर उसमें लटका । १२ । फिर उसी प्रकारसे उसका दूसरा उपद्रव

beasts of prey, where lions, tigers, elephants and bears were present in large numbers sufficient to terrify even death. His heart was much troubled at the sight of them and the hair of his body stood on end 5 He ran in all directions to seek a place of refuge in the forest. He ran on much terrified looking for holes. He did not go far out of the place, for he saw a dreadful net spread all round and held by a dreadful woman. The place was full of five headed serpents huge as mountains and tall trees touching the sky. There was a dark well in the middle of the forest covered with grass and creepers. 10. He fell down in that well and was hid under creepers like a fruit among the branches of a tree He lay suspended there head downwards. He met another calamity there, for at the bottom of it there was a power

पश्यत महानलम् । कूपवीनाहवेलायामपश्यतमहागजम् । १३ ॥ षड्वक्त्रं कृष्णश पञ्च द्विषट्कपदचारिणम् । क्रमेण परिसर्पन्त वल्लीवृक्षसमावृतम् ॥१४॥ तस्य चापि प्रशाखासु वृक्षशाखावलम्बित । नानारूपा मधुकरा घोररूपा भयावहा. । आसते मधु संवृत्य पूर्वमेव निकामजा ॥ १५ ॥ भूयो भूय समीहन्ते मधूनि भरतर्षभ । स्वादनीयानि भूतानां यैर्बालो विप्रकृष्यते । १६ ॥ तेषां मधूनां बहुधा धारा. प्रस्रवतेतदा । आलम्बमान स पुमान् धारां पिबति सर्वदा॥१७॥ न चास्य तृष्णा विरता पिबमानस्य सङ्कटे । अभीप्सति तदा नित्यमतृप्त स पुन पुन. । १८ ॥ न चास्य जीविते राजन् निर्वेद समजायत । तत्रैव च मनुष्यस्य जीविताशा प्रतिष्ठिता । कृष्णा श्वेताश्च तं वृक्ष कुट्टयन्ति च मूषिका १९ ॥ व्यालैश्च वनदुर्गान्ते स्त्रिया च परमोग्रया । कूपाध

भी उत्पन्नहुआ किकूपके मध्यम बड़े बलवान् सर्पको देखा और मुखबंधनकूप के किनारेपर ऐसेबड़े हाथीको देखा॥१३ जोकिछःमुखवाला और बारह चरण सेचलने वाला श्वेत श्यामवर्ण क्रमसेचलनेवाला सेकड़ाहलऔर वल्लियोंसे ढकाहुआथा ।१४। इस के पीछे बड़ी शाखाओं पर लटकनेवाले नाना प्रकार का रूपरखनेवाले श्वेतवर्ण घोर और बड़ेभयके उत्पन्न करनेवाले और प्रथमही पत्वनाकर सन्तानके द्वारा वृद्धि पानेवाले भौंरे शहदको इकट्ठा करके निवास करतेहैं । १५ । हेभरतर्षभ वह भौंरे बारम्बार जीवधारियों के स्वादिष्टरसों की इच्छाकरतेहैं जिन्होंसे बालक आकर्षण कियेजातेहैं । १६ । उन रसोंकी बड़ी धारा सदैव गिरतीहै तब लटकताहुआवह जीव सदैव धाराओं को पानकरताहै ।१७ संकटमें भी इस पानकरनेवाले की इच्छापूर्णनहींहुई वह अतृप्तहोकर सदैव बारम्बार उसको चाहताहै । १८ । हेराजा जीवन में उसकी अप्रीति नहीं उत्पन्नहुई उसीमें मनुष्य के जीवनकी आशा नियतहै श्वेत कृष्ण रंगवाले चूहे (रात्रि दिन)उस वृक्षरूपी आयुर्दाको काटतेहैं । दुर्गम्य वनकेपास बहुतसे सर्प और बड़ी उग्रस्त्री (वृद्धावस्था) और कूपके नीचे सर्प (मृत्यु) और कूपके मुखपर हाथी (पूर्ण-

ful serpent, while at the mouth of it he saw a huge elephant with six mouths, twelve feet, black and white colour and covered with t ees and creepers 14, Then he saw hanging on a large bow a hive of humming bees which gathered in large numbers and multiplied, making honey 15. They sit on tasteful things such as please children. A stream of sweet matter dropped from the hive and the man suspended there drank of it. Fallen in such trouble he remains unsatisfied. He is not tired of life and is yet hopeful. White and black mice, day and night, are gnawing away the roots of the tree of his life, There are numerous serpants in the forest, with the dreadful woman, the serpent below at the bottom of the well, and the elephant at the mouth, 20, There is a great fear of the fall of the tree on

...श्च मार्गेण योनाहं कुञ्जरेण च ॥ २० ॥ वृक्षप्रपाताच्च भयं मूषिकेभ्यश्च पञ्चमम्। मधुलोभान्मधुकरैः षष्ठमाहुर्महद्भयम् ॥ २१ ॥ एवं स वसते तत्र क्षिप्तः संसार सागरे। न चैव जीविताशायां निर्वेदमुपगच्छति ॥ २२ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनोदने पंचमोऽध्यायः ॥ ५॥

धृतराष्ट्र उवाच। अहो खलु महद्दुःखं कृच्छ्रवासश्च तस्य ह। कथं तस्य रतिस्तत्र तुष्टिर्वा वदतांवर ॥ १ ॥ स देशः क्व नु यत्रासौ वसते धर्मसङ्कटे। कथं वा स विमुच्येत नरस्तस्मान्महाभयात् ॥ २ ॥ एतन्मे सर्वमाचक्ष्व साधु चेष्टामहे तदा। कृपा मे महती जाता तस्याभ्युद्धरणेन हि ॥ ३ ॥ विदुर उवाच। उपमानमिदं राजन् मोक्षविद्भिरुदाहृतम्। सुकृतं विन्दते येन परलोकेषु मानवः ॥ ४ ॥ उच्यते यत्तु कान्तारं महासं

वर्प) और इसके गिरने से भयहै और चूहोंसे पांचवां भयहै और शहदके लोभसे छटेभयका कहाहै । २१ । इसप्रकार संसार सागरमें पड़ाहुआ यह जीव वर्त्तमान होताहै और जीवनकी आशामें वैराग्यको नहीं पाताहै ॥ २२ ॥

अध्याय ६ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि बड़ाआश्चर्य है कि निश्चय बड़ादुःखहै और उसकी स्थिति भी दुःख रूपहै हेवक्ताओंमें श्रेष्ठ उसमें उसकी प्रीति और तृप्ति किसप्रकार से है १ वहदेश कहांहै जिसमें यह जीव धर्मसंकटमें निवास करता है और वह मनुष्य उस बड़े भयसे कैसे छूटेगा । २ । यह सब मुझसे कहो यह बहुत अच्छाहै तब हमकाम में लावेंगे निश्चय उससे छुड़ाने के लिये मेरे ऊपर बड़ीकृपा उत्पन्न हुई है। ३ । विदुरजी बोले हे राजा मोक्ष चाहनेवाले पुरुषों ने यह दृष्टांत वर्णन कियाहै जिस से कि मनुष्य परलोक में सुन्दर गतिको पाता है ।४ । जो वह महावन कहाजाता

---

account of the mice and the consequent loss of the stream of honey. Thus lies man in the ocean of the world and yet he does not sever his mind from the hope of life " 22.

CHAPTER VI

Dhritrashtra said, " I am much amazed to hear that man, although he is beset with so many troubles does not like to sever his connection from the world Pray explain this. Where is the place the soul lives in and how can man get rid of the fear? Pray tell me all. It is

सार एव सः । वनं दुर्गं हि यच्चैतत् संसारगहनं हि तत् ॥५॥ ये च ते कथिता व्याला
व्याधयस्ते प्रकीर्तिताः । या सा नारी बृहत्काया अधितिष्ठति तत्र वै ॥६॥ तामाहुस्तु
जरांप्राज्ञा वर्णरूपविनाशिनीम् । यस्तत्र कूपो नृपते स तु देहः शरीरिणाम् ।७। यस्तत्र
वसतेऽधस्तान्महाहिः काल एव सः । अन्तकः सर्वभूतानां देहिनां सर्वहार्यसौ ॥ ८ ॥
कूपमध्ये तु या जाता वल्ली यत्र स मानवः । प्रताने लम्बते सा तु जीविताशा शरीरि
णाम् ।९। स यस्तु कूपवीनाहे तं वृक्षं परिसर्पति । षड्वक्त्रः कुञ्जरो राजन् स तु
संवत्सरः स्मृतः ।१०। मुखान्यृतवो मासाः पादा द्वादश कीर्तिताः । ये तु वृक्षं निकृ
न्तन्ति मूषिकाः पन्नगास्तथा । ११ । रात्र्यहानि तु तान्याहुर्भूतानां परिचिन्तकाः । ते
ये मधुकरास्तत्र कामास्ते परिकीर्तिताः ॥१२॥ यास्तु ता बहुशो धाराः स्रवन्ति मधुनि

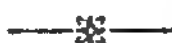
है वही महा संसार है और जो यह दुर्गम्यवन है वही संसारवन है । ५ । जो सर्प
सुने से वह रोग हैं वहां बड़े शरीरवाली जो स्त्री निवास करती है । ६ । उसको
ज्ञानियोंने वर्णरूपकी नाश करनेवाली वृद्धावस्था कहा है हे राजा वहांजो कूपहै
वह शरीरधारियोंका शरीरहै । ७ । और जो वहांसर्प उस कूपके भीतर निवास
करताहै वहीकाल है यह सब भूतोंका नाशकरनेवाला और जीवधारियोंका हरने
वालाहै । ८ । और कूपकेमध्य में जोवल्ली उत्पन्नहुई वह मनुष्य उसके विस्तार
में लटकताहै वही शरीरधारियोंके जीवनकी आशा है । ९ । और कूपके मुखपर
छःमुखवाला हाथी उसकी शाखाओं के चारोंओर चेष्टा करताहै वहीपूर्ण वर्षहै
। १० । उस के छः मुखऋतु और बारह चरण महीने कहेहैं उसी प्रकार जो चूहे
वृक्षको काटतेहैं । ११ । उनको विचारवान् पुरुषों ने दिन रात्रि कहाहै उनमें जो
भौंरे हैं वह नाना इच्छा कहीहैं । १२ । और जोवह शहदकी बहुतसी धारा

---

good to hear and beneficial." Vidur said, "This precept is given by those who wish to gain salvation and a good state in the next world. The forest mentioned above is the world. 5. The serpents are diseases, the large-sized woman is the old age which removes beauty of person; the well is the body and the large serpent at the bottom is Death which destroyes all. The creeper in the middle of the well, supporting the man, is the hope of life. The six-headed elephant moving round the tree is the year. 10. Its six mouths are the seasons; the twelve feet are the months; the mice which eat away the roots of the tree are days and nights and the black bees are the worldly desires The stream of honey is the sap of desires in

स्वम् । तांस्तुकामरसान् विद्यात्र तज्जन्ति मानवाः ॥ १३ ॥ एवं संसारचक्रस्य परिवृत्तं विदुर्बुधाः । येन संसारचक्रस्य पाशांश्छिन्दन्ति वै बुधाः ॥१४॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनयने षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । अहोऽभिहितमाख्यानं भवता तत्त्वदर्शिना। भूयः एव तु मे हर्षः श्रुत्वा वागमृतं तव ॥१॥ विदुर उवाच शृणु भूय प्रवक्ष्यामि मार्गस्यैतस्य विस्तरम्। यच्छ्रुत्वा विप्रमुच्यन्ते संसारेभ्यो विचक्षणाः । २ । यथा तु पुरुषः राजन् दीर्घमध्वान मास्थितः। क्वचित् पर्यावश्रमाच्छ्रान्तः कुरुते वासमेव च ॥३॥ एवं संसारपर्याये गर्भवासेषु भारत । कुर्वन्ति दुर्बुधा वास मुच्यन्ते तत्र पण्डिताः ॥४॥ तस्माद्ध्वानमेवे

गिरतीहै उनको काम रसजानो जिसमें मनुष्य डूबतेहैं।१३।जिन्होंने इसप्रकार संसार चक्रकी गतिकोजानाहै निश्चय करके वहमनुष्य संसार चक्रके पाशको काटते हैं १४।

अध्याय ७ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे महात्मातत्त्वदर्शी आपने मोक्ष देनेवाली कथा कही उसको आप फिर मुख्यता समेत कहो मैं सुनना चाहता हूं । १ । विदुरजी बोले सुनो मैं फिर उस मार्ग के क्रमको कहताहूं जिसको सुनकर ज्ञानीलोग संसारसे छूटतेहैं ।२। हे राजा जैसे कि बड़े मार्गमें नियत मनुष्य जहां तहां थककर निवास करता है । ३ । हे भरतवंशी इसीप्रकार अज्ञानी मनुष्य संसारमें गृहरूप गर्भ में वारम्वार निवास को करताहै । ४ । और ज्ञानीलोग शीघ्र जातेहैं इस हेतुसे शास्त्रज्ञ लोगों



which men are drowned Those who know the course of the wheel of the world, cut away the bonds " 14



CHAPTER VII

Dhritrashtra said," You have pointed out the way to salvation. Pray explain it once more. I wish to hear of it." Vidur said, " Hear once more the account of the way leading to salvation. A foolish man stays in various births like one staying at different stages when tired in a journey. One endowed with gyan crosses this dense forest of the world sooner. Wise men have no desire to move with

तमाहुः शास्त्रविदो जनाः । तत्तत् संसारगहनं वनमाहुर्मनीषिणः ॥ ५ ॥ सोऽयं लोके समावर्त्तो मर्त्यानां भरतर्षभ । चराणां स्थावराणाञ्च न गृध्येत्तत्र पण्डितः ॥ ६ ॥ शारीरा मानसाश्चैव मर्त्यानां ये तु व्याधयः । प्रत्यक्षाश्च परोक्षाश्च ते व्यालाः कथिता बुधैः ॥ ७ ॥ क्लिश्यमानाश्च तैर्नित्यं वार्य्यमाणाश्च भारत । स्वकर्मभिर्महाव्यालैर्नोद्विजन्त्यल्पबुद्धयः ॥ ८ ॥ यद्यपि तैर्विमुच्येत व्याधिभिः पुरुषो नृप । आवृणोत्येव तं पश्चाज्जरा रूपविनाशिनी ॥ ९ ॥ शब्दरूपरसस्पर्शैर्गन्धैश्च विविधैरपि । मज्जमानं महापङ्के निरालम्बे समन्ततः ॥ १० ॥ संवत्सरर्त्तवो मासाः पक्षाहोरात्रसन्धयः । क्रमेणास्योपलुम्पन्ति रूपमायुस्तथैव च ॥ ११ ॥ एते कालस्य निधयो नैतान् जानन्ति दुर्बुधाः । धात्राभिलिखितान्याहु सर्वं भूतानि कर्मणा ॥ १२ ॥ रथः शरीरं भूतानां सत्त्वमाहुस्तु सारथिम् । इन्द्रियाणि हयानाहुः कर्म बुद्धिश्च रश्मयः ॥ १३ ॥

ने इसको मार्ग कहाहै और जिन ज्ञानियों ने जिस संसारको घनवन कहाहै हे पुरुषोत्तम यह इस स्थावर और जङ्गमजीवोंका चलायमान चक्र है पण्डित उसकी इच्छा नहीं करताहै । ६ । शरीरधारियों के शरीर और चित्तसे सम्बन्ध रखने वाले जो रोगहैं उनको ज्ञानी लोग गुप्त और प्रकट रूप सर्प कहते हैं । ७ । हे भरतवंशी निर्बुद्धी मनुष्य उन्होंने दुःखपाने वाले और व्याकुल होकरभी अपने कर्म रूपी सर्पोंसे व्याकुलताको नहींपाते हैं हे राजा जब मनुष्य उन रोगोंसेभी छूटता है तब उस पुरुषको रूपकी विनाश करनेवाली जरामवस्था दबालेती है । ९ । जोकि शब्द, रूप, रस, स्पर्श और नानाप्रकार की गन्धियों से भी निराधार बड़ी कीचमें चारोंओरसे डूबाहुआ है पूर्ण वर्ष छःऋतु बारह महीने दोनों पक्ष दिनरात और उनकी सन्धियां यह सब क्रमपूर्वक उसके रूप और अवस्थाको लोप करतेहैं ।११। यह कालकी निधि है दुर्बुद्धी लोग इनको नहीं जानते हैं सब जीवोंको उनके कर्म से ईश्वरका लिखाहुआ कहा है । १२ । शरीरधारियोंका देहरथहै चित्त सारथी है इन्द्रिय घोड़े हैं और कर्म्मबुद्धी उस रथकी बागडोर है । १३ । जो पुरुष उन कनेवाले घोड़ोंके पीछे दौड़ताहै वह इस संसारचक्रमें चक्रके समान घूमता है।१४।

the wheel which moves the living and lifeless creatures. The diseases which attack living beings have been called serpents by the wise. The fool, though attacked by them is not distressed in his mind, and when he is freed from such diseases, old age overtakes him. He is stuck in a deep mire, and days, nights, fortnights, seasons and years decrease the period of his life. 10. Foolish men donot know the treasure of time. It is said that God gives beings the reward of their deeds. The body of beings is a car; anxiety is its driver; organs of senses are its horses and wisdom is its trace. He who runs after the horses, turns round with the wheel. He who curbs them with wis-

तेषां हयानां यो वेगं धावतामनुधावति । स तु संसारचक्रेऽस्मिन् चक्रवत् परिवर्त्तते ॥ १४ ॥ यस्तान् संयमते बुद्ध्या संयतो न निवर्त्तते । स तु संसारचक्रेऽस्मिन् चक्रवत् परिवर्त्तिते ॥ १५ ॥ ये तु संसारचक्रेऽस्मिन् चक्रवत् परिवर्त्तते । भ्रममाणा न मुह्यन्ति संसारे न भ्रमन्ति ते । संसारे भ्रमतां राजन् दुःख मेतद्धि जायते ॥ १६ ॥ तस्मादस्य निवृत्त्यर्थं यत्नमेव चरेद्बुधः । उपेक्षा नात्र कर्त्तव्य शतशाखः प्रवर्त्तते ॥ १७ ॥ यतेन्द्रियो नरो राजन् क्रोधलोभनिराकृतः । सन्तुष्टः सत्यवादी यः सोऽशान्तिमधिगच्छति ॥ १८ ॥ याम्यमाहू रथं ह्येनं मुह्यन्ते येन दुर्बुधा मनुतप्तुलमेवेतद् दुःखं भवति भारत ॥ १९ ॥ साधुः परमदुःखानां दुर्विगेषज्यमाचरेत् ज्ञानौषधमवाप्येह दूरपारं महौष धम् ॥ २० ॥ न विक्रमो न चाप्यर्थो न मित्रं न सुहृज्जनः तथोन्मोचयते दुःखाद्यथात्मा स्थिरसंयमः ॥ २१ ॥ तस्मान्मैत्रं महारथाय शील

जो जितेन्द्रिय उनको बुद्धिसे आधीन करताहै वहचक्रके समान घूमनेवाले इस संसार चक्रमें लौटकर नहीं आताहै ।१५। वह संसार में भी घूमते हैं परन्तु घूमतेहुये मोहको नहीं पाते हैं वही दुःख संसार के घूमनेवालों के लिये भी उत्पन्न होताहै ।१६। इस हेतुसे ज्ञानीको उचितहै कि इस संसार से छूटनेका उपायकरे इसमें कभीभूल और देर नकरनी चाहिये नहींतो सैकड़ों शाखावाला वृक्ष वृद्धिको पाताहै ।१७। हे राजा जो पुरुष जितेन्द्रिय क्रोध लोभसेरहित सन्तोषी और सत्यवक्ताहै वहशांती को पाताहै ।१८। हे भरतवंशी यहभी कहाहै कि पश्चात्ताप करनेसे दुखहोताहै ज्ञानी बड़े दुखोंकी औषधी ज्ञानको ही समझे ।१९। इसलोकमें जितेन्द्रिय मनुष्य बड़ी दुष्प्राप्य ज्ञानरूपी महाऔषधीको पाकर दुःखरूपी बड़ेरोगको उससे काटे ।२०। घोर दुःखसे वैसे नतो पराक्रम छुड़ाताहै नधन मित्रऔर सुहृद्गण छुड़ातेहैं जैसे कि जितेन्द्रियात्मा छुड़ाताहै ।२१। हे भरतवंशी इसकारण से सबजीवोंकी प्रीतिमें नियत होकर सुन्दर प्रकृतिको पाकर जितेन्द्रियपन,त्याग और सावधानीको प्राप्तकरे यह तीनोंब्रह्मके घोड़ेहैं ।२२। हे राजा जोउरूप मृत्यु के भयको त्यागकरके

dom, does not come back. 15. He turns with the wheel, but does not lose senses with it. A wise man should try to release himself from the world without idleness and mistake or there shall be raised from it a tree having hundreds of branches. He who has control over senses, who is free from avarice, and who is satisfied and truthful, gets peace of mind. Remorse gives pain and gyan is the medicine of all pains. One having control over organs, having got the great medicine of giyan, should cut away all disease with it. 20. Neither prowess, nor wealth or friends give relief from trouble as does the control over senses. Let one therefore love all the world with control of senses, resignation and carefulness which are the horses of Brahm. He who gives up all fear

मापद्य भारत । दमस्त्यागोऽप्रमादश्च ते त्रयो ब्रह्मणो हयाः ॥ २२ ॥ शीलरश्मिसमा युक्त स्थितो यो मानसे रथे । त्यक्त्वा मृत्युभय राजन् ब्रह्मलोक स गच्छति ॥ २३ ॥ अभय सर्वभूतेभ्यो यो ददाति महीपते । स गच्छति पर स्थान विष्णोः पद्मनाभषम ॥ २४ ॥ न तत् क्रतुसहस्रे नोपवासैश्च नित्यशः । अभयस्य हि दानेन यत् फल प्राप्नुयान्नर ॥ २५ ॥ नह्यात्मन प्रियतर किञ्चित् भूतेषु निश्चितम् । अनिष्ट सर्वभूतानां मरण नाम भारत । तस्मात् सर्वेषु भूतेषु दया कार्य्या विपश्चिता ॥ २६ ॥ नानामोहसमायुक्ता बुद्धिजालेन संवृता । असूक्ष्मदृष्टयो मन्दा भ्राम्यन्ते तत्र तत्र ह । सुसूक्ष्मदृष्टयो धीरा व्रजन्ति ब्रह्मसात्मताम ॥ २७ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनोदने सप्तमोध्यायः ॥ ७

शीतल किरणोंसे युक्त चित्तरूपी रथपर नियतहै वह ब्रह्मलोकको पाताहै । २३ । और जो पुरुष सबजीवों को निर्भयता देताहै वह सर्वव्यापी परमेश्वर के उस उत्तम स्थानको प्राप्त है जोकिमायाकी उपाधियों से रहित है । २४ । मनुष्यजो निर्भयता देने से फलपाताहै वहहजारोंयज्ञ और सदैव व्रतोंके भीकरने से नहीं पासक्ताहै।२५। जीवोंमें आत्मा से अधिक कोई प्यारा नहींहै हेभरतवंशी सबजीवोंका अप्रिय मरण नामहै इसहेतुसे ज्ञानीको सबजीवोंपर दयाकरना चाहिये । २६ । नानाप्रकारके मोहसे युक्त अज्ञान के जालसे ढकेहुवे अल्पदृष्टी निर्बुद्धी मनुष्य जहांतहां घूमतेहै हेराजा सूक्ष्मदृष्टिवाले ज्ञानी सनातनब्रह्मको पातेहै ॥ २७ ।

of death and stands on the car of mind with cold rays gets the region of Brahm. He who relieves others from fear, goes to the region of the Omnipresent who is free from all blemishes A merit which such a man gets is not obtainable by thousands of sacrificices and vows. 25 Nothing is dearer than self, and nothing is more adverse than death therefore one should be merciful to all Foolish men, in the Meshes of ignorance roam here and there, while gyanis obtain the region of *Brahm* " 27



वैशम्पायन उवाच। विदुरस्य तु तद्वाक्यं निशम्य कुरुसत्तमः।पुत्रशोकाभिसंतप्तः
पपात भुवि मूर्छितः॥ १॥ तं तथापतितं भूमौ निःसंज्ञं प्रेक्ष्य बान्धवाः। कृष्णद्वैपाय
नश्चैव क्षत्ता च विदुरस्तथा। सञ्जयः सुहृदश्चान्ये द्वाःस्था ये चास्य सम्मताः॥२॥
जलेन सुखशीतेन तालवृन्तैश्च भारत। पस्पृशुश्च करैर्गात्रं वीज्यमानाश्च यत्नतः।
अन्वासन् तु चिरं कालं धृतराष्ट्रं तथागतम्॥ ४॥ अथ दीर्घस्य कालस्य लब्धसंज्ञो
महीपतिः। विललाप चिरं कालं पुत्राधिभिरभिप्लुतः॥ ५॥ धिगस्तु खलु मानुष्यं
मानुष्यंच परिग्रहम्। यतो मूलानि दुःखानि सम्भवन्ति मुहुर्मुहुः॥ ६॥ पुत्रनाशेऽर्थ
नाशे च ज्ञातिसम्बन्धिनामपि। प्राप्यते सुमहद्दुःखं विषाग्निप्रतिमं विभो॥ ७॥ येन
दह्यन्ति गात्राणि येन प्रज्ञा विनश्यति। येनाभिभूतः पुरुषो मरणं बहु मन्यते॥ ८॥
तदिदं व्यसनं प्राप्तं मया भाग्यविपर्ययात्। तस्यान्तं नाधिगच्छामि ऋते प्राणविप

अध्याय। ८।

वैशम्पायन बोले किराजाधृतराष्ट्र विदुरजी के इसवचनकोसुनकर पुत्रशोक से दुःखी और मूर्छावान होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा। १। सब बान्धव व्यासजी विदुरजी सञ्जय अन्य सुहृद् द्वारपाल और जो२ उसके अङ्गीकृत थे उन सबने उस प्रकार पृथ्वीपर पड़ेहुये अचेत उस धृतराष्ट्र को देखकर सुखदाई शीतल जलसे छिड़का और पंखोंसे हवाकरी और उपायों से चैतन्य करतेहुये उन लोगोंने हाथोंसे शरीर को स्पर्श किया इसके पीछे उसदशावाले धृतराष्ट्रको बहुत देरतक विश्वासकराया। ४। फिर बहुत देरके पीछे सचेतताको पानेवाले वह पुत्रशोक से युक्त राजा धृतराष्ट्र बहुत देरतक विलाप करनेवाला हुआ। ५। निश्चय करके मनुष्योंमें जन्म को और नरलोकों में परिग्रहको धिक्कारहै जिससे कि दुखकामूल वारम्वार उत्पन्न होताहै। ६। हे समर्थ पुत्र धन ज्ञानवाले और नातेदारों का भी नाश होताहै।७। जिससे सबअंग भस्महोकर बुद्धिकाभी नाशहोताहै और जिससे भयभीत मनुष्य मरणको बहुत मानताहै। ८। सोयह दुख प्रारब्धके विपरीततासे मैंने पायाहै प्राण त्यागके सिवाय उसके अन्तको अन्य किसी प्रकारसे नहींपाताहूं। ९। मैं उसी प्रकारकरूंगा हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ व्यासजी देखो उसधृतराष्ट्र ने बड़े ब्रह्मज्ञानी महात्मा

CHAPTER VIII

Vaishampayan said, "Having heard the words of Vidur, Dhritrashtra fell down on earth senseless for the grief of his sons. All the kinsmen with Vyas,, Vidur, Sanjaya and other friends sprinkled cold water over him and fanned him. They tried their best to bring him to consciousness and touched his body with their hands, consoling him all the while. Then coming to consciousness, he lamented long the death of his sons 5. "Fie on me and on my manhood," cried he, "for all this is a source of trouble. The destruction of sons, wealth and kinsmen is like poison or fire. Limbs of the body burn with

चरेयात् । ९ ॥ तच्चैवाहं करिष्यामि अद्यैव द्विजसत्तम ॥ इत्युक्त्वा तु महात्मानं पितरं ब्रह्मवित्तमम् ॥ १० ॥ धृतराष्ट्रोऽभवत्तूष्णीं शोकञ्च परमं गतः । अभूच्च तूष्णीं राजासौ ध्यायमानो महीपते ॥ ११ ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कृष्णद्वैपायनः प्रभुः । पुत्रशोकाभिसन्तप्तं पुत्रं वचनमब्रवीत् ॥ १२ ॥ व्यास उवाच । धृतराष्ट्र महाबाहो यत्त्वां वक्ष्यामि तच्छृणु । श्रुतवानसि मेधावी धर्मार्थकुशलः प्रभो ॥ १३ ॥ न तेऽस्त्यविदितं किञ्चिद्वेदितव्यं परन्तप । अनित्यतां हि मर्त्यानां विजानासि न संशयः ॥ १४ ॥ अध्रुवे जीवलोके च स्थाने चाशाश्वते सति । जीविते मरणान्ते च कस्माच्छोचसि भारत ॥ १५ ॥ प्रत्यक्षं तव राजेन्द्र वैरस्यास्य समुद्भवः । पुत्रं ते कारणं कृत्वा कालयोगेन कारितः ॥ १६ ॥ अवश्यं भवितव्ये च कुरूणां वैशसे नृप । कस्माच्छोचसि तान् शूरान् गतान् परमिकां गतिम् ॥ १७ ॥ जानता च महाबाहो विदुरेण महात्मना ।

पितासे यह कहकर अचेतनाको पाकेबड़े शोकको पाया अर्थात् वह राजा धृतराष्ट्र ध्यानकरताहुआ मौनहोगया । ११ । प्रभु व्यासजी उसके उसवचनको सुनकर पुत्रशोकसे दुखी अपने पुत्रसे यह वचन बोले । १२ । हेमहाबाहु धृतराष्ट्र जोमैंकहूं उसको सुनो तुम शास्त्रज्ञ और शास्त्रोंके स्मरण रखनेवाले बुद्धिके स्वामी औरधर्म अर्थमें भी कुशलहो । १३ । हे शत्रुओंके तपानेवाले तुझमें कोई बात अज्ञात नहीं है हे बड़े ज्ञानी तुम जीवधारियों की अनित्यताको जानते हो हे भरतवंशी इस विनाशवान् जीवलोकमें विनाशवान निवास स्थान के होनेपर जीवन और मृत्युमें किस निमित्त सोचते हो । १५ । हे राजेन्द्र इस शत्रुता की प्रत्यक्षता आपके दृष्टिगोचर है कालयोगसे आपके पुत्रका कारण बनाकर सबमारेगये ।१६। हेराजा कौरवोंको अवश्य भावी नाश होनेपर उत्तमगति पानेवाले वीरों को किस हेतुसे शोचतेहो । १७ । हेमहाबाहु राजाधृतराष्ट्र मैंने और बुद्धिमान् विदुरने भी सबप्रकार से सन्धिमें उपाय किया । १८ । बहुतकालतक उद्योग करनेवाले किसी जीवसेभी दैवका रचाहुआ मार्ग मेरेमतमें बन्दकरने के योग्यनहीं है । १९ । मैंने अपने नेत्रों के सम्मुखमें देवताओंका गोकार्य सुना मैं उनको उसीप्रकारसे कहताहूं जिससे कि तेरी स्थिर बुद्धिहोय । २० । थकावट से रहित में एकसमय बड़ी शीघ्र

grief and wisdom is destroyed, causing one to desire for death. I have got through all this trouble by the vicissitude of *Time* and see no relief except in death. I shall die, Vyas." 10. Having said this to Vyas, Dhritrashtra again fainted and became silent. Vyas was much affected with his sorrow and said, "Hear me, Dhritrashtra, for your are learned and wise and have experience of the world. *Nothing is hidden from you, destroyer of foes.* You know the mortal nature of beings. Why do you grieve at death? 15. You know of the enmity. All men were slain on account of your son. But the destruction of

भाविनं संचिन्त्य तेन शोकं न्वति जनेश्वर ॥ १८ ॥ न च दैवकृतो मार्गः शक्यो भूतेन केन चित् । घटतापि चिरं कालं नियन्तुमिति मे मतिः ॥ १९ ॥ देवतानां हि यत् कार्य्यं मया प्रत्यक्षतः श्रुतम् । तत्तेहं संप्रवक्ष्यामि कथं स्थैर्य्यं भवेत्तव ॥ २० ॥ पुराहं त्वरितो यातः सभामैन्द्रीं जितक्लमः । अपश्यं तत्र च तदा समवेतान् दिवौकसः ॥ २१ ॥ नारदप्रमुखांश्चापि सर्वान् देवर्षयोनघ । तत्र चापि मया दृष्टा पृथिवी पृथिवीपते ॥ २२ ॥ कार्य्यार्थमुपसंप्राप्ता देवतानां समीपतः । उपगम्य तदा धात्री देवानाह समागतान् ॥२३॥ यत् कार्य्यं मम युष्माभिर्ब्रह्मणः सदने तदा । प्रतिज्ञातं महाभागास्तच्छीघ्रं संविधीयताम् ॥ २४ ॥ तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा विष्णुर्लोकनमस्कृतः । उवाच वाक्यं प्रहसन् पृथिवीं देवसंसदि ॥२५॥ धृतराष्ट्रस्य पुत्राणां यस्तु ज्येष्ठः शतस्य वै । दुर्योधन इति ख्यातः स ते कार्य्यं करिष्यति ॥२६॥ तञ्च प्राप्य महीपालं कृतकृत्या भविष्यसि । तस्यार्थे पृथि

ताके इन्द्रकीसभा में मया और सब इकट्ठेहुये देवताओंको देखा । २१ । हेराजा वहांपर मैंने नारदादिक सब देवऋषियों को और पृथ्वीकोभी देखा । २२ । यह सब मिलकर अपनेकार्यके निमित्त इन्द्रादिक देवताओंके सम्मुख वर्त्तमानहुये तब पृथ्वी ने समीपजाकर उन इकट्ठे देवताओंसे कहा । २३ । कि हेमहाभाग देवता लोगो आप लोगोंने ब्रह्मलोकमें जिस मेरेकार्य्य करनेकी प्रतिज्ञाकी है उसको शीघ्र करो । २४ । लोकपूजित विष्णुभी देवसभामें उसके उसवचनको सुनकर हँसतेहुये उस पृथ्वीसेयह वचन बोले । २५ । धृतराष्ट्र के सौ बेटोंमें बड़ा बेटादुर्योधन नामसे प्रसिद्ध है वह तेरा कार्य्य करेगा । २६ । उस राजाको पाकर अभीष्ट प्राप्तकरेगी उसके पीछेकुरुक्षेत्रमें इकट्ठेहोनेवाले और शस्त्रोंसे प्रहार करनेवाले राजालोग परस्पर मारेंगे हे देवी इसके पीछेयुद्ध में तेरे भारकानाशहोगा । २८ । हे शोभा वान शीघ्र अपनेस्थानको जावो और सृष्टिको धारण करो । २९ । हेराजाओंमें

---

the Kauravas was unavoidable; why do you grieve for those who have got good regions? I as well as Vidur tried our best to make peace. The decrees of Fate cannot be annulled by any human effort. For your satisfaction I tell you what I myself saw in the assembly of gods. 20. Once I went to the court of Indra without being tired. There I saw Narad and other rishis as well as our Earth. All the gods were assembled there for their respective businesses. She then approached the gods and thus addressed them, " Make haste, O gods, to fulfil the premise you made regarding me in the region of Brahm. Vishnu, respected by the world, said to her with a smile, " Duryodhan the eldest son of Dhritrashtra will do thy work. 26. You will gain your object through him : the assembled kings will fight at Kurukshetra and shall relieve you of your burden. Go to your place and keep on supporting the world. " Your son Duryodhan was born

क्षीपालाः कुरुक्षेत्रे समागताः ॥२७॥ अन्योन्यं घातयिष्यन्ति हतैः शस्त्रैः प्रहारिणः। ततस्ते
विदितं देवि भारतस्य युधे नाशनम् ॥ २८ ॥ गच्छ शीघ्रं स्वकं स्थानं लोकं
धारय शोभने ॥२९॥ य एष ते सुतो राजन् लोकसंहारकारणात्। कलेरंशः समुत्पन्नो
गान्धार्या जठरे नृप ॥ ३० ॥ अमर्षी चपलश्चापि क्रोधनो दुष्प्रसादनः। दैवयोगात्
समुत्पन्ना भ्रातरश्चास्य तादृशाः ॥ ३१ शकुनिर्मातुलश्चैव कर्णश्च परमः सखा।
समुत्पन्ना विनाशार्थं पृथिव्यां सहिता नृपाः ॥ ३२ ॥ यादृशो जायते राजा तादृशोऽस्य
जनो भवेत्। अधर्मो धर्मतां याति स्वामी चेद्धार्मिको भवेत् ॥ ३३ ॥ स्वामिनो गुण
दोषाभ्यां भृत्याः स्युर्नात्र संशयः। दुष्टं राजानमासाद्य गतास्ते तनया नृप ॥ ३४ । एत
मर्थं महाबाहो नारदो वेद तत्त्ववित्। आत्मापराधात् पुत्रास्ते विनष्टाः पृथिवीपते। मा
तान् शोचस्व राजेन्द्र न हि शोकेऽस्ति कारणम् ॥ ३५ ॥ न हि ते पाण्डवाः स्वल्पम्
पराध्यन्ति भारत। पुत्रास्तव दुरात्मानो यैरियं घातिता मही ॥ ३६ ॥ नारदेन च भद्रन्ते

श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र संसारके नाशके कारण से यह तेरापुत्र कलियुग अंश गान्धारी
में उत्पन्न हुआथा। ३० जोकि अशान्त चपल क्रोधका अभ्यासी और दुखसे
पराजय होनेवालाथा दैवयोगसे उसकेभाईभी उसी प्रकारके उत्पन्न हुये। ३१।
और मामा शकुनी और बड़ामित्रकर्ण और बहुतसे राजालोग संसारके नाशके नि-
मित्त उत्पन्नहुये। ३२ जैसा राजा उत्पन्न होताहै उसीप्रकार के उसकेआदमी भी
उत्पन्नहोतेहैं जोस्वामी धर्मका अभ्यासी होताहैउस दशामें अधर्म भी धर्मताको
पाताहै। ३३। स्वामियोंके गुण दोषों से निस्सन्देह उसीप्रकार के नौकर चाकर
होंगे हेराजा तेरे पुत्र दुष्टराजाको पाकर इस संसार सेगये हे महाबाहु नारदजी
इसप्रयोजनको मुख्यता समेत जानतेहैं हेभरतवंशी तेरे पुत्र अपने अपराधसे नष्टहुए
उनका शोचमतकर। ३५। पाण्डव थोड़ाभी अपराध नहींकरते जिन्होंकेहाथसेयह
सब संसार मारागया। ३६। तेरा भलाहोय प्रथमही राजसूययज्ञमें नारदजीने यु-
धिष्ठिरकी सभामें वर्णन कियाथा। ३७। कि हे कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिर कुछकाल पीछे
कौरव और पाण्डव परस्पर सम्मुख होकर नाशको पावेंगे जो तेरे करने के योग्य

of *Kali* and Gandhari to destroy the world. 30. He was dissatisfied, rash and invincible. His brothers too, were of his mind. His uncle Shakuni, his friend Karan and other princes too were born to destroy the world. The Subjects are like him, while, they speedily take to his bad habits. Thy sons departed from the world for the fault of thy son who was their king. Narad knows this well. Thy sons were destroyed by their faults. Be not grieved for them, 35. The Pandavas have committed no fault in destroying the world. Narad had foretold it at the Rajsuya sacrifice of Yudhishthir that the *Kauravas* and

पूर्वमेव न संशयः। युधिष्ठिरस्य समितौ राजसूये निवेदितम् ॥ ३७ ॥ पाण्डवाः कौरवाश्चैव समासाद्य परस्परम्। न भविष्यन्ति कौन्तेय यत्ते कृत्यं तदाचर॥ ३८॥ नारदस्य वचः श्रुत्वा तदाशोचन्त पाण्डवाः। एवं ते सर्वमाख्यातं देवगुह्यं सनातनम् ॥ ३९॥ कथं ते शोकनाशः स्यात् प्राणांश्च धारय। स्नेहञ्च पाण्डुपुत्रेषु ज्ञात्वा दैवकृतं विधिम् ॥४०॥ एष चार्थो महाबाहो पूर्वमेव मया श्रुतः। कथितो धर्मराजस्य राजसूये क्रतूत्तमे ॥ ४१॥ यतितं धर्मपुत्रेण मया गुह्ये निवेदिते। अविग्रहे कौरवाणां दैवन्तु बलवत्तरम् ॥ ४२॥ अनतिक्रमणीयो हि विधी राजन् कथञ्चन। कृतान्तस्य तु भूतेन स्थावरेण जङ्गमेन च ॥ ४३॥ भवान् धर्मपरो यत्र बुद्धिश्रेष्ठश्च भारत। मुह्यते प्राणिनां ज्ञात्वा गतिञ्चागतिमेव च ॥ ४४॥ त्वान्तु शोकेन सन्तप्तं मुह्यमानं मुहुर्मुहुः। ज्ञात्वा युधिष्ठिरो राजा प्राणानपि परित्यजेत् ॥ ४५॥ कृपालुर्नित्यशो वीरस्तिर्य्यग्योनिगतेष्वपि। स कथं त्वयि राजेन्द्र कृपां वै न करिष्यति ॥ ४६॥ मम चैव नियोगेन विधेश्चाप्यनिवर्त्तनात्। पाण्डवानाञ्च कारुण्यात् प्राणान्धारय भारत ॥ ४७॥ एवं ते वर्त्तमा

है उसको कर। ३८। तब पांडवोंने नारदजी के वचनको सुनकर शोच कियायह देवताओंकी गुप्त और सनातन बातें मैंने तुमसे कहीं। ३९। अबतू अपने प्राणों पर दया और पाण्डवोंपर प्रीतिकर जिससे दैवके कर्मको जानकर तेरा शोक दूरहोय। ४०। हेमहाबाहु यहबात मैंने प्रथमही सुनीथी जो किधर्मराजके उत्तम राजसूयज्ञ में कही गईथी। ४१। मुझने गुप्त बातके कहनेपर धर्मके पुत्रनेकौरवों के युद्ध नहोने में उपाय किये परन्तु दैव बड़ा प्रबलहै। ४२। हेराजा कालकी रची हुई जो सनातन विधिहै वह इसलोकमें किसी जीवधारी से उल्लंघन करने के योग्य नहीं है। ४३। हेभरतवंशी धर्म्मात्मा आप प्राणियों की गति और अगतियोंको भी जानकर इनमें अचेत होतेहो धर्म्मात्मा। ४४। राजा युधिष्ठिर तुमको शोक से दुखी और वारवार अचेत होनेवाला जानकर अपने प्राणोंको भीत्याग करसक्ता है। ४५। वह धैर्यवान सदैव पशु पक्षियोंपरभी दयाका करनेवालाहै हेराजेन्द्र वह तुमपर कैसेकृपानहीं करेगा। ४६। हे भरतवंशी मेरी आज्ञासे दैवके उल्लंघन न होने से और पाण्डवोंकी दयासे प्राणों को धारण करो। ४७। इसप्रकार लोक में

the Pandavas would be destroyed by the hand of each other, and the Pandavas were sorry for it. I have told you that secret of gods Now feel mercy on your own life and love the Pandavas so that your grief may abate by the knowledge that it was the work of God 40. I was already aware of the words told at the Rajsuya sacrifice of Yudhishthir. Knowing this secret from me, Yudhishthir tried to make peace, but the working of Fate is powerful. It can not be annulled by any one. You lose your senses, though you know the course of living beings. Knowing you in such distress of mind, Yudhishthir may lose his life 45. He is merciful to beasts and

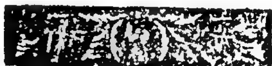
नस्य लोके कीर्तिर्भविष्यति । धर्मार्थः सुमहांस्तात तप्त स्याच्च तपश्चिरात् ॥ ४८ ॥
पुत्रशोकं समुत्पन्नं हुताशं ज्वलितं यथा । प्रज्ञाम्भसा महाराज निर्वापय सदा सदा
॥ ४९ ॥ वैशम्पायन उवाच । तत् श्रुत्वा तस्य वचनं व्यासस्यामिततेजसः । मुहूर्त्तं
समनुध्याय धृतराष्ट्रोऽभ्यभाषत ॥ ५० ॥ महता शोकजालेन प्रणुन्नोऽस्मि द्विजोत्तम ।
नात्मानमवबुध्यामि मुह्यमानो मुहुर्मुहुः ॥ ५१ ॥ इदन्तु वचनं श्रुत्वा तव दैवनियोग
जम् । धारयिष्याम्यहं प्राणान् यतिष्ये न तु शोचितुम् ॥ ५२ ॥ एतत् श्रुत्वा तु वचनं
व्यासः सत्यवतीसुत । धृतराष्ट्रस्य राजेन्द्र तत्रैवान्तरधीयत ॥ ५३ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनयनेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥



तुम वर्त्तमान रहनेवालेकी कीर्त्ति होगी और हेतात बड़ा धर्म और बहुतकालतक
तपाहुआ तप प्राप्तहोगा । ४८ । हेमहाराज ज्वलितरूप अग्निके समान उत्पन्न होने
वाले पुत्रशोकको ज्ञानरूपी जलसे शान्त करनेके योग्यहो । ४९ । वैशम्पायन बोले
किधृतराष्ट्र उन बड़ेतेजस्वी व्यासजी के इस वचनको सुनकर एक मुहूर्त्त अच्छे
प्रकार ध्यानकरके कहा । ५० । किहे द्विजोत्तम मैं बड़े शोक जालसे कठिन दकाहुआ
बारम्बार अचेत होता सचेतता में नहीं आताहूं । ५१ । दैवकी आज्ञासे उत्पन्न
होनेवाले आपके इसवचनको सुनकर मैं प्राणोंको धारण करूंगा और शोच करनेमें
प्रवृत्त नहीं हूंगा । ५२ । हेराजेन्द्र सत्यवती के पुत्र व्यासजी धृतराष्ट्रके इसवचनको
सुनकर उसीस्थानमें अन्तर्द्धान होगये । ५३ ॥

birds, why should he not be kind to you? Having regard to my words, the power of Fate and pity towards the *Pandavas*, you should sustain your life. You will thus be famous in the world and will attain great merit. You should quench the fire of your grief by the water of wisdom." Vaishampayan said that having heard the words of glorious Vyas, Dhritrashtra thought for some time and said, 50 "I am too much pressed by grief and again and again lose my senses, but I shall live to obey you and shall not plunge in grief." Having heard those words, Vyas disappeared then and there." 53.



जनमेजय उवाच । गते भगवति व्यासे धृतराष्ट्रो महीपतिः । किमचेष्टत विप्रर्षे तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥ १ ॥ तथैव कौरवो राजा धर्मपुत्रो महामनाः । कृपप्रभृतयश्चैव किमकुर्वत ते त्रयः ॥ २ ॥ अश्वत्थाम्नः श्रुतं कर्म शापश्चान्योन्यकारितः । वृत्तान्तमुत्तरं ब्रूहि यदभाषत सञ्जयः ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । हते दुर्योधने चैव हते सैन्ये च सर्वशः । सञ्जयो विगतप्रज्ञो धृतराष्ट्रमुपस्थितः ॥ ४ ॥ सञ्जय उवाच । आगम्य नानादेशेभ्यो नानाजनपदेश्वराः । पितृलोकं गता राजन् सर्वे तव सुतैः सह ॥ ५ ॥ पुत्राणामथ पौत्राणां पितृणाञ्च महीपते । आनुपूर्व्येण सर्वेषां प्रेतकार्याणि कारय ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वा वचनं घोरं सञ्जयस्य महीपतिः । गतासुरिव निश्चेष्टो न्यपतत् पृथिवीतले ॥ ७ ॥ तं शयानमुपागम्य पृथिव्यां पृथिवीपतिम् । विदुरः सर्वधर्मज्ञ इदं वचनमब्रवीत् ॥८॥ उत्तिष्ठ राजन् किं शेषे मा शुचो भरतर्षभः ।

अध्याय ९ ॥

जनमेजय बोले हे ब्रह्मर्षे भगवान् व्यासजी के जानेपर राजा धृतराष्ट्र ने क्या किया वह मुझसे कहनेको योग्यहो । १ । उसीप्रकार धर्मपुत्र बड़े साहसी राजा युधिष्ठिर और कृपाचार्यादिक तीनोंने क्या किया अश्वत्थामा का कर्मसुना और परस्पर दियाहुआ शाप सुना अब आप उस पूर्व वृत्तान्तको कहिये जिसको सञ्जयने कहाहै । ३ । वैशम्पायन बोले कि दुर्योधन के और सब सेनाके मरनेपर अचेत सञ्जय धृतराष्ट्र केपास आये । ४ । हे राजा सब राजा नाना देशोंसे आकर आपके पुत्रों समेत पितृलोकको गये ५ । हेराजा पुत्र पौत्र और पिता आदिक जो रणभूमि में मरेहैं उनसब के कर्मोंको क्रमपूर्वक करावो । ६ । वैशम्पायन बोले कि राजाधृतराष्ट्र सञ्जयके उसघोर वचनको सुनकर निर्जीवके समाननिश्चेष्टहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । ७ सब धर्मोंके ज्ञाता विदुरजी उस पृथ्वीपर सोनेवाले राजाके पास आकर इस वचनको बोले । ८ । हे भरतर्षभ लोकेश्वर राजाधृतराष्ट्र उठोशोच

CHAPTER IX

Janmejaya said, " What did Dhritrashtra do at the departure of Vyas ? Pray tell me all that he as well as brave Yudhishthir and the three warriors, Kripacharya and others did. I have heard the exploits of Ashwathama and the mutual curses, pray tell me what happened next as you heard it from Sanjaya." Vaishampayan said, " At the destruction of Duryodhan and his army Sanjaya came to Dhritrashtra and said, " All the princes who had come here from various countries have gone to the region of Yam; perfrom the obsequies of your sons, grand-sons and elders who died in the war." Vaishampayan says that on hearing the heart rending words of Sanjaya, Dhritrashtra fell down on the earth like and inanimate thing. 7· Vidur the virtuous came to him and said, " Rise up Dhritrashtra and be not grieved. This is the

नस्य लोके सुकीर्त्तिर्भविष्यति । धर्मार्थः सुमहांस्तात तप्तं स्याच्च तपश्चिरात् ॥ ४८ ॥
पुत्रशोकं समुत्पन्नं हुताशं ज्वलितं यथा । प्रज्ञाम्भसा महाराज निर्वापय सदा सदा
॥ ४९ ॥ वैशम्पायन उवाच । तत् श्रुत्वा तस्य वचनं व्यासस्यामिततेजसः । मुहूर्त्तं
समनुध्याय धृतराष्ट्रोऽभ्यभाषत ॥ ५० ॥ महता शोकजालेन प्रणुन्नोऽस्मि द्विजोत्तम ।
नात्मानमवबुध्यामि मुह्यमानो मुहुर्मुहुः ॥ ५१ ॥ इदन्तु वचनं श्रुत्वा तव दैवनियोग
जम् । धारयिष्याम्यहं प्राणान् घटिष्ये न तु शोचितुम् ॥ ५२ ॥ एतत् श्रुत्वा तु वचनं
व्यासः सत्यवतीसुत । धृतराष्ट्रस्य राजेन्द्र तत्रैवान्तरधीयत ॥ ५३ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनयनेऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥



तुम्हें वर्त्तमान रहनेवाली कीर्ति होगी और हेतात बड़ा धर्म और बहुतकालतक तपाहुआ तप प्राप्त होगा । ४८ । हेमहाराज ज्वलितरूप अग्निके समान उत्पन्न होनेवाले पुत्रशोकको ज्ञानरूपी जलसे शान्त करनेके योग्यहो । ४९ । वैशम्पायन बोले कि धृतराष्ट्र उन बड़ेतेजस्वी व्यासजी के इस वचनको सुनकर एक मुहूर्त्त अच्छे प्रकार ध्यानकरके कहा ।५०। कि हे द्विजोत्तम मैं बड़े शोक जालसे कठिन दबाहुआ बारम्बार अचेत होता सचेतता में नहीं आताहूं । ५१ । दैवकी आज्ञासे उत्पन्न होनेवाले आपके इसवचनको सुनकर मैं प्राणोंको धारण करूंगा और शोच करनेमें प्रवृत्त नहीं हूंगा । ५२ । हेराजेन्द्र सत्यवती के पुत्र व्यासजी धृतराष्ट्र केइसवचनको सुनकर उसीस्थानमें अन्तर्द्धान होगये । ५३ ॥

birds, why should he not be kind to you ? Having regard to my words, the power of Fate and pity towards the *Pandavas*, you should sustain your life. You will thus be famous in the world and will attain great merit. You should quench the fire of your grief by the water of wisdom. " Vaishampayan said that having heard the words of glorious Vyas, Dhritrashtra thought for some time and said. 50 " I am too much pressed by grief and again and again lose my senses, but I shall live to obey you and shall not plunge in grief. " Having heard those words, Vyas disappeared then and there. " 53.



जनमेजय उवाच । गते भगवति व्यासे धृतराष्ट्रो महीपतिः । किमचेष्टत विप्रर्षे
तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥ १ ॥ तथैव कौरवो राजा धर्म्मपुत्रो महामनाः । कृपप्रभृतय
श्चैव किमकुर्वत ते त्रयः ॥ २ ॥ अश्वत्थाम्नः श्रुतं कर्म शापश्चान्योन्यकारितः । वृत्तो
त्तरं ब्रूहि यदभाषत सञ्जयः ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । हते दुर्योधनेचैव हते
सैन्ये च सर्वशः । सञ्जयो विगतप्रज्ञो धृतराष्ट्रमुपस्थितः ॥ ४ ॥ सञ्जय उवाच ।
आगम्य नानादेशेभ्यो नानाजनपदेश्वराः । पितृलोकं गता राजन् सर्वे तव सुतैः सह
॥ ५ ॥ पुत्राणामथ पौत्राणां पितृणाञ्च महीपते । आनुपूर्व्येण सर्वेषां प्रेतकार्य्याणि
कारय ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वा वचनं घोरं सञ्जयस्य महीपतिः । गता
सुरिव निश्चेष्टो न्यपतत् पृथिवीतले ॥ ७ तं शयानमुपागम्य पृथिव्यां पृथिवीपतिम्।
विदुरः सर्वधर्मज्ञ इदं वचनमब्रवीत् ॥८॥ उत्तिष्ठ राजन् किं शेषे मा शुचो भरतर्षभः ।

अध्याय ९ ॥

जनमेजय बोले हे ब्रह्मर्षि भगवान् व्यासजी के जानेपर राजा धृतराष्ट्र ने
क्या किया वह मुझसे कहनेको योग्यहो । १ । उसीप्रकार धर्मपुत्र बड़े साहसी
राजा युधिष्ठिर और कृपाचार्यादिक तीनोंने क्या किया अश्वत्थामा का कर्मसुना
और परस्पर दियाहुआ शाप सुना अब आप उस पूर्व वृत्तान्तको कहिये जिसको
सञ्जयने कहाहै । ३ । वैशम्पायन बोले कि दुर्योधन के और सब सेनाके मरनेपर
अचेत सञ्जय धृतराष्ट्र केपास आये । ४ । हे राजा सब राजा नाना देशोंसे आकर
आपके पुत्रों समेत पितृलोकोंको गये ५ । हेराजा पुत्र पौत्र और पिता आदिक
जो रणभूमि में मरेहैं उनसब के कर्मोंको क्रमपूर्वक करावो । ६ । वैशम्पायन बोले
कि राजाधृतराष्ट्र सञ्जयके उग्रघोर वचनको सुनकर निर्जीवके समाननिश्चेष्टहोकर
पृथ्वीपर गिरपड़ा । ७ सब धर्मोंके ज्ञाता विदुरजी उस पृथ्वीपर सोनेवाले राजाके
पास आकर इस वचनको बोले । ८ । हे भरतर्षभ लोकेश्वर राजाधृतराष्ट्र उठोशोच

CHAPTER IX

Janmejaya said, " What did Dhritrashtra do at the departure of Vyas ? Pray tell me all that has as well as brave Yudhishthir and the three warriors, Kripacharya and others did I have heard the exploits of Ashwathama and the mutual curses, pray tell me what happened next as you heard it from Sanjaya, " Vaishampayan said, " At the destruction of Duryodhan and his army Sanjaya came to Dhritrashtra and said, " All the princes who had come here from various countries have gone to the region of Yam; perfrom the obsequies of your sons, grandsons and elders who died in the war. " Vaishampayan says that on hearing the heart rending words of Sanjaya, Dhritrashtra fell down on the earth like and inanimate thing. 7. Vidur the virtuous came to him and said, " Rise up Dhritrashtra and be not grieved. This is the

एषा वै सर्वसत्त्वानां लोकेश्वर परा गतिः ॥९॥ क्षत्रियास्ते महात्मानः शूराः समितिशोभनाः । आशिष परमां प्राप्ता न शोच्याः सर्व एव हि ॥ १० ॥ आत्मनात्मानमाश्वास्य मा शुचः पुरुषर्षभ । नाद्य शोकाभिभूतस्त्वं कार्य्यमुत्सृष्टुमर्हसि ॥ ११ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रादानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकप्रनोदने नवमोऽध्यायः ॥ ९

वैशम्पायन उवाच । विदुरस्य तु तद्वाक्यं श्रुत्वा तु भरतर्षभ । युज्यतां यानमित्युक्त्वा पुनर्वचनमब्रवीत ॥ १॥ क्षिप्रमानय गान्धारीं सर्वाश्च भरतस्त्रियः । वधू कुन्तीमुपादाय याश्चान्यास्तत्र योषितः ॥ २ ॥ एवमुक्त्वा स धर्मात्मा विदुरं धर्मवित्तमम् । शोकविप्रहतज्ञानो यानमेवान्वपद्यत ॥ ३ ॥ गान्धारी पुत्रशोकार्त्ता भर्त्तुर्वचनचोदिता सह कुन्त्या यतो राजा सह स्त्रीभिरुपाद्रवत् ॥ ४ ॥ ताः समासाद्य राजानं भृशा

मतकरो सब जीवधारियों की यही परमगति है । ९ । उन महात्मा शूर और युद्धको शोभा देनेवाले क्षत्रियों ने परमगति को पाया वह सब शोचके योग्य नहीं हैं १० हे पुरुषोत्तम बुद्धि से चित्तको विश्वास देकर शोच मतकरो अब शोकमें डूबेहुयेतुम करनेके योग्य जलदानादिक क्रियाके त्यागनेके योग्य नहींहो । ११ ।

अध्याय १० ॥

वैशम्पायन बोले कि पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र विदुरजी के उस वचन को सुनकर सवारी तैयार करो यह कहकर फिर वचनको बोले । १ । वधू कुन्ती आदि अन्य सबस्त्रियोंको लेकर गान्धारी समेत सब भरतवंशियों की स्त्रियों को शीघ्र लाओ । २ । वह धर्मात्मा शोकसे हतचित्त बुद्धिमान धृतराष्ट्र बड़े धर्मवान् विदुरजी से इस प्रकार कहकर सवारीपर सवार हुये । ३ । पति के वचनसे चलायमान शोकसे पीड़ित गान्धारी कुन्ती और अन्य सब स्त्रियों समेत वहां गयीं जहां राजाधृतराष्ट्रथे । ४ । अत्यन्त शोकयुक्त वह स्त्रियां राजाको पाकर परस्पर वार्तालाप करकेचढ़ि

end of all the living beings. The great warriors, who have gone to heaven, are not worth sorrow. Curb yourself with wisdom and be not grieved. Don't leave the obsequies undone on account of your grief." 11

CHAPTER X

Vaishampayan said that on hearing the words of Vidur, Dhritarashtra ordered his men to make carriages ready and to bring Kunti and other women with Gandhari and the women of the family.

शोकसमन्विताः । आयस्याम्बोऽभ्यगमत्पु· रुग प्रशयुच्चुक्रुशुस्तदा ॥५। ताः समाश्वा-
सयन् क्षत्ता ताभ्यश्चार्त्ततरः स्वयम् । अश्रुकण्ठीः समारोप्य ततोऽसौ निर्ययौ पुरात्
॥ ६ ॥ ततः प्रणादः संजज्ञे सर्वेषु कुरुवेश्मसु । आकुमारं पुरं सर्वमभवच्छोककर्षितम्
॥ ७॥ अदृष्टपूर्वा या नार्यः पुरा देवगणैरपि । पृथग्जनेन दृश्यन्ते तास्तदा निहतेश्वराः
॥ ८ ॥ प्रकीर्य केशान् सुशुभान् भूषणान्यवमुच्य च । एकवस्त्रधरा नार्यः परिपेतुर
नाथवत् ॥ ९ ॥ श्वेतपर्वतरूपेभ्यो गृहेभ्यस्तास्त्वपाक्रमन् । गुहाभ्य इव शैलानां
पृषत्यो हतयूथपाः ॥१०॥ तान्युदीर्णानि नारीणां तदा वृन्दान्यनेकशः । शोकार्त्तान्यद्र
वन् किशोरीणामिवाङ्गने ॥ ११ ॥ प्रगृह्य बाहून् क्रोशन्त्यः पुत्रान् भ्रातॄन् पितॄनपि ।
दर्शयन्तीव ता ह स्म युगान्ते लोकसंक्षयम् ॥ १२ ॥ विलपन्त्यो रुदन्त्यश्च धावमाना

और बड़े उच्चस्वर से पुकारीं । ५। उन स्त्रियोंसे अधिक पीड़ावान् उन विदुरजी ने आंसुओं से पूर्ण उन स्त्रियों को अच्छी रीति से विश्वास कराया और पालकियों में बैठाकर बाहरचले । ६ । इसके पीछे कौरवों के सब स्थानों में बड़ाशब्द उत्पन्न हुआ और सब नगर लड़कों से लेकर शोकसे पीड़ावानहुआ । ७ । पूर्व समयमें जो स्त्रियां देवसमूहों से भी नहीं देखीगईं थीं वह सब विधवा स्त्री अन्य२ मनुष्यों से भी देखीगईं । ८ । शिरके बालोंको फैलाकर और सुन्दर भूषणों को उतार कर एक वस्त्र रखनेवाली स्त्रियां अनाथ के समान बाहर निकलीं वह स्त्रियां श्वेत पर्वतों के समान घरों से ऐसे निकलीं जैसे कि पहाड़ों की गुफाओं मे ऐसी हिरणी निकलें जिनके कि यूथप हिरण मारेगये हों । १० । हे राजा तब उन स्त्रियों के बड़े समूह शोकसे पीड़ावान् ऐसे चले जैसे कि घोड़ियों के बच्चे मैदान में निकलते हैं । ११ । भुजाओं को पकड़ कर पिता भाई और पुत्रों को भीपुकारती हुई मलयकालीन संसार के नाशकी दिखलानेवाली हुईं । १२ । विलाप करते रोते जहां तहां दौड़ते शोकसे हतज्ञान उन स्त्रियोंने करने के योग्य कर्मको

After this he mounted his car. Summoned by Dhritrashtra, Gandhari, Kunti and other women came there. The sorrowful women went on talking and crying. 5. More full of grief than those women and with tears in his eyes, he consoled them and made them ride on palanquins There were great lamentations in the houses of the Kauravas and the city people, young and old, showed signs of grief. The women, who were not visible even to gods, came out in the presence of all men in their widows' words. They went on with dishelleved hair, destitute of ornaments, with only one cloth on the body, like those having no guardians. They came out of their white houses like a herd of female deer whose stag is slain. 10 They went on crying like foals Calling out the names of fathers, brothers and sons, they made a great noise. Crying out and running hither

स्ततस्ततः । शोकेनाभ्याहतज्ञानाः कर्त्तव्यं न प्रजज्ञिरे ।१३। ब्रीडां जग्मुः पुरा याः स्म सखीनामपि योषितः । एकवस्त्रा निर्लज्जा श्वश्रूणां पुरतोऽभवन् ॥ १४ ॥ परस्परं सुसूक्ष्मेषु शोकेष्वाश्वासयन्स्त्रियः । ता शोकविह्वला राजन्नुपैक्षन्त परस्परम् ॥ १५ ॥ ताभिः परिवृतो राजा रुदतीभिः सहस्रशः निर्ययौ नगराद्दीनस्तूर्णमायोधनं प्रति॥१६॥ शिल्पिनो वणिजो वैश्याः सर्वे कर्मोपजीविनः : ते पार्थिवं पुरस्कृत्य निर्ययुर्नगराद्बहिः । १७ ॥ तासां विक्रोशमानानामार्त्तानां कुरुसंक्षये । प्रादुरासीन्महान् शब्दो व्यथयन् भुवनान्युत । १८ ॥ युगान्तकाले संप्राप्ते भूतानां दह्यतामिव । अभावः स्यादयं प्राप्त इति भूतानि मेनिरे । १९ ॥ भृशमुद्विग्नमनसस्ते पौरा कुरुसंक्षये ।प्राक्रोशन्त महाराज स्वनुरक्तास्तदा भृशम् । २० ।

इति स्त्रीपर्वाणि जलप्रदानिकपर्वाणि धृतराष्ट्रस्य पुरान्निर्याणे दशमोऽध्यायः१०



नहीं जाना । १३ । पूर्वसमय में जिन स्त्रियोंने सखियों की भी लज्जाको पायाथा वह एक वस्त्र रखनेवाली बिना पर्देवाली स्त्रियां सासों के आगे चलीं । १४ । हेराजा जिन्होंने बहुत थोड़े शोकों में परस्पर विश्वास कराया था उन शोकसे व्याकुल स्त्रियोंने परस्परदेखा । १५ । उन रोनेवाली हजारों स्त्रियों से घिराहुआ महा दुःखी धृतराष्ट्र नगरसे चलकर शीघ्रही मैदानमेंगया । १६ । शिल्पी व्यापारी वैश्य और सब कर्मों से निर्वाह करनेवाले यह सब राजाको आगे करके नगरसे बाहर निकले । १७ कौरवोंके नाशमें उन पीड़ावान् औरपुकारनेवालों के बड़ेशब्द सब भवनोंको पीड़ावान करते प्रकटहुये । १८ । जैसे किप्रलयकाल वर्त्तमान होनेपर भस्महोनेवाले जीवोंका नाशहोताहै उसीप्रकार इस नाशका भीहोना जीवोंने माना । १९ । हेमहाराज इस कौरवों के नाशहोनेपरअत्यन्त व्याकुल चित्त बड़े प्रीतिमान् वह पुरवासी कठिनतासे पुकारे ॥ २० ॥

---

and thither, they did not know what to do Those women who were abashed even before their playmates, now went on unveiled before their mothers-in-law. They who were companions in their grief now looked at one another. 15 Surrounded by thousands of weeping women, Dhritrashtra went out in open air. Artisans, merchants, traders and others followed their king Lamenting the destruction of the Kauravas, their noise was heard far and wide. They thought that the great destruction of the warriors had been like that of pralaya. The citizens lamented the great destruction of the Kauravas and cried with a great noise. " 20.

वैशम्पायन उवाच। क्रोशमात्रं ततो गत्वा ददृशुस्ते महारथान्। शारद्वतं कृप द्रौणिं कृतवर्माण मेव च ॥१॥ ते तु दृष्ट्वैव राजानं प्रज्ञाचक्षुरमीश्वरम्। अश्रुकण्ठा विनिश्वस्य रुदन्तमिदमब्रुवन् ॥ २ ॥ सुतस्तव महाराज कृत्वा कर्म सुदुष्करम्। गतः सानुचरो राजञ्छक्रलोकं महीपतिः ॥ ३ ॥ दुर्योधनबलान्मुक्ता वयमेव त्रयो रथाः। सर्वमन्यत् परिक्षीणं सैन्यं ते भरतर्षभ ॥ ४ ॥ इत्येवमुक्त्वा राजानं कृप शारद्वतस्तदा। गान्धारीं पुत्रशोकार्तामिदं वचनमब्रवीत् ॥ ५ ॥ अभीता युध्यमानास्ते घ्नन्तः शत्रुगणान् बहून्। वीरकर्माणि कुर्वाणाः पुत्रास्ते निधनं गताः ॥ ६ ॥ ध्रुवं सम्प्राप्य लोकांस्ते निर्मलान् शस्त्रनिर्जितान्। भास्वरं देहमास्थाय विचरन्त्यमरा इव ॥ ७ ॥ न हि कश्चिद्धि शूराणां युध्यमानः पराङ्मुखः। शस्त्रेण निधनं प्राप्तो न च कश्चित् कृताञ्जलिः ॥ ८ ॥ एतां तां क्षत्रियस्याहुः पुराणाः परमां गतिम्। शस्त्रेण निधनं संख्ये तन्न शोचितु

अध्याय ।११।

वैशम्पायन बोले कि फिर एककोश जाकर उन कृपाचार्य अश्वत्थामा और कृतवर्मा महारथियोंकोदेखा। १ वह शोकके अश्रुओंसे पूर्णकण्ठ से रोदन करतेज्ञान रूप नेत्र रखनेवाले अपनेस्वामी राजाको देखतेही बहुत श्वास लेकर यहवचन बोले। २। हेमहाराज राजाधृतराष्ट्र आपका पुत्र बड़े कठिन कर्म्मको करके साथियों समेत इन्द्रलोकको गया। ३। हेभरतर्षभ दुर्योधनकी सनामें से हम तीन रथीबचहैं शेषपूर्व आपकीसेना नाशहोगई। ४ इसके पीछे शारद्वत कृपाचार्य राजासे यह कहकर पुत्र शोकसे पीड़ावान् गान्धारी से यह वचन बोले कि निर्भय युद्ध करनें वाले शत्रुओं के बहुत समूहोंको मारनेवाले वीर लोगों के कर्मो को करके तेरेपुत्रोंने मरणकोपाया।६।निश्च य करकेवहशस्त्रोंसे विजयीकियेहुये निर्मल लोकोंको पाकर और प्रकाशमान शरीरमें नित्य वहांकर देवताओंके समान विहारकरतेहैं ७ उनशूरोंमें कोईशूर वीर मुखफेरनेवाला नहीं हुआ किन्तु शस्त्रों से मरणको पाया और हाथ जोड़कर किसीने भी नाश को नहींपाया। ८। प्राचीन वृद्धों ने

CHAPTER XI

Vaishampayan said, "After going away a mile, Kripacharya, Ashwathama and Kritvarma met one another. With their voice choked with tears, they saw the blind king and said to him with sighs "Your son, O king, has gone to the region of Indra along with his companions. Out of that large army we three are only alive, the rest are destroyed." Then Kripacharya said to sorrowful Gandhari, "Thy sons died after doing brave deeds and slaying many foes. 6. Surely they have got pure regions and roam there in luminous bodies like gods. None of them turned back from fight. They all died by weapons and none supplicated for life Such kind of death has been called the best by the wise and therefore you should not be grieved

शुमर्हसि ।९॥ न चापि शत्रवस्तेषामृध्यन्ते पाण्डवाः । शृणु यत्कृतमस्माभि रश्वत्थामपुरोगमैः ॥ १० ॥ अधर्मेण हतं श्रुत्वा भीमसेनेन ते सुतम् । सुप्तं शिबिरमा विश्य पाण्डूनां कदनं कृतम् ।११॥ पाञ्चाला निहताः सर्वे धृष्टद्युम्नपुरोगमाः । द्रुप दस्यात्मजाश्चैव द्रौपदेयाश्च पातिताः ॥ १२ ॥ तथा विशसनं कृत्वा पुत्रशत्रुगणस्य ते प्राद्रवाम रणे स्थातुं न हि शक्यामहे त्रयः ॥ १३ । ते हि शूरा महेष्वासाः क्षिप्रमे ष्यन्ति पाण्डवाः । अमर्षवशमापन्ना वैरं प्रतिजिहीर्षवः । १४ ॥ राजंस्त्वमनुजानीहि धैर्यमातिष्ठ चोत्तमम् । निधनं गच्छ चापि त्वं क्षात्रं धर्ममवेक्ष्य च ॥ १५ ॥ इत्येव मुक्त्वा राजानं कृत्वा चाभिप्रदक्षिणम् । कृपश्च कृतवर्मा च द्रोणपुत्रश्च भारत ॥ १६॥ अवेक्षमाणा राजानं धृतराष्ट्रं मनीषिणम् । गङ्गामनुमहात्मानस्तूर्णमश्वानचोदयन् ॥१७॥

ने इसप्रकार युद्धमें शस्त्रों से क्षत्रिय के मरनेको परमगति कहा है इस हेतुसे वह शोचकरनेके योग्य नहीं हैं ९ । हे राजा इन्होंके शत्रु पाण्डवभी वृद्धियुक्त नहीं हैं अश्वत्थामा आदिक हमलोगों ने जो किया उसको सुनो । १० । अधर्मके साथ भीमसेनके हाथ से तेरे पुत्रको मराहुआ सुनकर हमलोगों ने सोतेहुये लोगों से युक्त डेरेको पाकर पाण्डवीय शूरवीरोंका नाश किया । ११ । सब पांचाल जिनका अग्रवर्ती धृष्टद्युम्नथा उन सबको मारा राजाद्रुपद के और द्रौपदी के सब पुत्रोंको भी मारा । १२ । इसरीति से हम युद्ध में तेरेपुत्र के शत्रुसमूहों का नाश करके भागे हैं इस हेतुसे हम तीनों यहां नियत होने को समर्थ नहीं हैं । १३ । वह शूरवीर पांडव महाधनुषधारी क्रोधके आधीन शत्रुताका बदला लेने के अभिलाषी हमारी खोज में शीघ्रता से आते हैं । १४ । हे राजा तुम आज्ञादो और बड़े धैर्य में नियत हो प्रारब्ध के अन्तपर होनेवाली मृत्युको और शुद्ध क्षत्रिय धर्मको भी विचारो । १५। हे भरतवंशी कृपाचार्य्य कृतवर्मा और अश्व- त्थामा इन तीनों ने इस प्रकार राजा से कहकर और प्रदक्षिणा करके । १६ ।

---

for them. Their enemies the Pandavas too, are not increasing. "Hear what we did to them. 10. Hearing that your son was unjustly slain by Bhim, we destroyed the camp of the sleepers. All the Panchals headed by Dhrishtadyumn, all the sons of Drupad and Draupadi were slain by us. Having slain the enemies of your son, we have fled from before them and therefore can stay here with you no longer. The Pandavas seek revenge and are coming after us. Let us go, king. Be comforted, thinking of death and the holy duties of kshatryas." 16 Having said this, the three warriors went round the king and then moved their horses towards the Ganges, looking again and again at the king. 17. Going far away from that

अपक्रम्य तु ते राजन् सर्वे एव महारथाः । आमन्त्र्यान्योन्यमुद्विग्नास्त्रिधा ते प्रययुस्तदा ॥ १८ ॥ जगाम हास्तिनपुरं कृपः शारद्वतस्तदा । स्वमेव राष्ट्रं हार्दिक्यो द्रौणिर्व्यासाश्रमं ययौ ॥ १९ ॥ एवं ते प्रययुर्वीरा वीक्षमाणाः परस्परम् । भयार्ताः पाण्डुपुत्राणामागस्कृत्वा महात्मनाम् ॥ २० ॥ समेत्य वीरा राजानं तदा त्वनुदिते रवौ । विप्रजग्मुर्महाराज यथेच्छकमरिन्दमाः ॥ २१ ॥ समासाद्य वै द्रौणिं पाण्डुपुत्रा महारथाः । व्यजयन्त रणे राजन् विक्रम्य तदनन्तरम् ॥ २२ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

बुद्धिमान राजापुत्रराष्ट्र को देखते अपने घोड़ों को गंगाजी की ओर चलायमान किया । १७ । हे राजा तब वह महारथी दूर जाकर परस्पर विदाहोकर व्याकुल चित्त तीनों तीन ओरको चलदिये । १८ । उनमें से शारद्वत कृपाचार्य्य हस्तिनापुरको और कृतवर्मा अपने देशको और अश्वत्थामाव्यासजी के आश्रम को गये । १९ । इसरीतिसे वह वीर उन महात्मा पांडवोंका अपराध करके भयसे पीड़ावान परस्पर देखते हुये चलदिये । २० । वह शत्रुविजयी महात्मा वीर सूर्योदयसे पूर्वही इच्छानुसार चलदिये । २१ । हे राजा कृतवर्मा और कृपाचार्य्य से अश्वत्थामा के जुदेहोनेपर उनमहारथी पांडवों ने द्रोणाचार्य के पुत्रको पाकर और पराक्रम करके युद्धमें विजय किया २२ ॥

---

place, the three warriors took leave of one another, Kripacharya going towards Hasthinapur, Kritvarma to his own country and Ashwathama to the hermitage of Vyas. Thus they went away in different directions for fear of the Pandavas whom they had so offended. They went on their ways before day break. On the separation of *Kripacharya* and *Kritvarma* from Ashwathama, the Pandavas had met the son of Drona and conquered him."



वैशम्पायन उवाच । हतेषु तेषु सैन्येषु धर्मराजो युधिष्ठिरः । शुश्रुवे पितरं वृद्धं
निर्यान्तं नागसाह्वयात् ॥ १ ॥ सोऽभ्ययात् पुत्रशोकार्तः पुत्रशोकपरिप्लुतम् । शोच-
मानं महाराज भ्रातृभिः सहितस्तदा ॥ २ ॥ अन्वीयमानो वीरेण दाशार्हेण महात्मना ।
युयुधानेन च तथा तथा चैव युयुत्सुना ॥ ३ ॥ तमन्वगात् सुदुःखार्ता द्रौपदी शोकक-
र्षिता । सह पाञ्चालयोषिद्भिर्यास्तत्रासन् समागताः ॥ ४ ॥ स गङ्गामनुवृन्दानि स्त्रीणां
भरतसत्तम । कुररीणामिवार्तानां क्रोशन्तीनां ददर्श ह ॥ ५ ॥ ताभिः परिवृतो राजा
क्रोशन्तीभिः सहस्रशः । ऊर्ध्वबाहुभिरार्ताभी रुदतीभिः प्रियाप्रियैः ॥ ६ ॥ क्व नु धर्म-
ज्ञता राज्ञः क्व नु साद्यानृशंसता । यदावधीत् पितॄन् भ्रातॄन् गुरून्पुत्रान् सखीनपि ॥७॥
घातयित्वा कथं द्रोणं भीष्मं चापि पितामहम् । मनस्तेऽभून्महाबाहो हत्वा चापि जय-
द्रथम् ॥ ८ ॥ किं नु राज्येन ते कार्यं पितॄन् भ्रातॄन् अपश्यतः । अभिमन्युं च दुर्धर्षं

अध्याय १२ ॥

वैशम्पायन बोले कि सब सेनाओं के मरनेपर धर्मराज युधिष्ठिरने हस्तिना पुरसे निकलेहुये अपने वृद्धपिताको सुना ।१। हे महाराज सब पुत्रशोकसे पीड़ामान वह युधिष्ठिर भाइयों समेत उस पुत्रशोक से पूर्ण बड़ी चिन्तावाले धृतराष्ट्र की ओरचला । २ । महात्मावीर श्रीकृष्णजी सात्यकी और युयुत्सु इनतीनों समेत चला ।३। और बड़े दुःखसे पीड़ित शोकमें डूबीहुई द्रौपदी पांचालदेशकी उनस्त्रियों समेत जो वहां आतीथीं उनके पीछे चली । ४ । हे भरतर्षभ उसने गंगाजीके समीप कुररी पक्षी के समान पीड़ितहोकर पुकारती हुई स्त्रियों के समूहों को देखा । ५ । उन पुकारनेवाली ऊपरको हाथ महापीड़ित इनप्रिय अप्रिय वचनों समेत रोनेवाली हजारों स्त्रियों से वह राजाधृतराष्ट्र घिराहुआ था कि अब राजा युधिष्ठिरकी वह दया और धर्मज्ञता कहां है जो पिता भाई मित्र और गुरुओं के पुत्रोंको मरवाया । ७ । हे महाबाहु द्रोणाचार्य भीष्मपितामह और जयद्रथको भी मरवाकर तेराचित्त कैसाहुआ । ८ । हे भरतवंशी पिता भाई और द्रौपदी के पुत्र और अजेय अभि-

CHAPTER XII

Vaishampayan said, "At the destruction of the armies Yudhishthir heard that old Dhritrashtra had come out, and himself distressed with grief, he went towards him, with Shree Krishn, Satyaki and Yuyutsu. *Merged* in excessive grief, Draupadi followed the Panchal women She saw the group of women crying like a foal near the Ganges. Dhritrashtra was surrounded with the women who were thus lamenting — "Yudhishthir has slain fathers, brothers, friends and preceptor's sons, where is his justice gone? 7. How does he feel after getting Drona, Bhishm and Jayadrath killed. How will he rule when fathers, brothers, and the sons of Draupadi and Abhimanyu are no more?" Yudhishthir entered the bevy of those lamenting

द्रौपदेयांश्च भारत ॥ ९ ॥ क्रोशन्तीं तां महाबाहु क्रोशन्तीं कुररीमिव । अभ्यवन्दत पितरं ज्येष्ठो धर्मराजो युधिष्ठिर ॥ १० ॥ ततोऽभिवाद्य पितरं धर्मेणामित्रकर्षणाः न्यवेदयन्त नामानि पाण्डवास्तेपि सर्वश ॥ ११ ॥ तमात्मजान्तकरणं पिता पुत्रवधार्दित । अप्रीयमाण शोकार्त्तं पाण्डवं परिषस्वजे ॥ १२ ॥ धर्मराजं परिष्वज्य सान्त्वयित्वा च भारत । दुष्टात्मा भीममन्वैच्छन् दिधक्षुरिव पावक ॥ १३ ॥ स कोपपावकस्तस्य शोकवायुसमीरितः । भीमसेनमयं दावं दिधक्षुरिव दृश्यते ॥ १४ ॥ तस्य संकल्पमाज्ञाय भीमं प्रत्यशुभं हरि । भीममाक्षिप्य पाणिभ्यां प्रददौ भीममायसम् ॥ १५ ॥ प्रागेव तु महाबुद्धिर्बुद्ध्वा तस्येङ्गितं हरि । संविधानं महाप्राज्ञस्तत्र चक्रे जनार्दन ॥ १६ ॥ तं गृहीत्वैव पाणिभ्यां भीमसेनमयस्मयम् । बभञ्ज बलवान्राजा मन्यमानो वृकोदरम् ॥ १७ ॥ नागायुतबलप्राण स राजा भीममायसम् । भङ्क्त्वा विमथितोरस्क सुस्राव रुधिर

मन्युको न देखनेवाले तुझको राज्य से कौनप्रयोजन है । ९ । हे महाबाहु धर्मराज युधिष्ठिर ने कुररी पक्षी के समान पुकारनेवालीउन स्त्रियोंको उल्लंघन करके ताऊजीको दण्डवत्करी । १० । इसके पीछे शत्रुओं के विजयकरने वालों ने नमस्कार करके अपने नामको कहा और उनसब पांडवोंने भी अपना२ नाम वर्णन किया । ११ । पिता और पुत्रोंके मरनेसे पीडावान और अप्रसन्न शोकदुःखी धृतराष्ट्र अपने पुत्रोंके नाश करनेवाले उनयुधिष्ठिर से स्नेह पूर्वक मिला । १२ । हे भरत वहां धर्मराजसे मिलकर और विश्वास देकर फिर जलानेवाले अग्निके समान दुष्टात्मा ने भीमसेनको चाहा । १३ । शोकरूप वायुसे चलायमान उसके क्रोधकी वह अग्नि भीमसेनरूपी वनको जलाने की अभिलाषिणी दिखाई पडी । १४ । हे राजा हरिने भीमसेनके विषय में उसके अशुभ संकल्पको जानकर प्रथमही सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी ने वह मूर्त्ति मँगालीथी । १५ । बड़े बुद्धिमान श्रीकृष्णजीने प्रथमही उसकीचेष्टासे प्रकटहोनेवाले वृत्तान्त को जानकर और भीमसेनको हाथोंसे रोककर लोहेका भीमसेन धृतराष्ट्र के हाथ में देदिया । १६ । उस लोहेके भीमसेन को हाथोंसे पकड़ कर उसको भीमसेन मान कर बलवान् राजा ने तोडडाला । १७ । साठ हजार हाथी के बल समान उस बलवान् राजाने लोहे के भीमसेन को तोड़

Indus and prostrated himself before Dhritrashtra. 10 He announced his own name and so did the other Pandavas. Grieved for the death of his sons unhappy Dhritrashtra received Yudhishthir the destroyer of his sons affectionately. After embracing him, the enraged prince desired to embrace Bhim Fanned by the wind of grief, the fire of his rage seemed to consume the forest of Bhim's body Being aware of his evil intentions, wise and easy-working *Krishn* had already sent for an iron statue. 15 Knowing what was going to happen, wise Shri *Krishn* held Bhim back with his hands and gave the iron Bhim into the arms of Dhritrashtra. Thinking the statue to be

मुखात् ॥ १८॥ ततः पपात मेदिन्यां तथैव रुधिरोक्षितः। प्रपुष्पिताग्रशिखरः पारिजात इव द्रुमः ॥ १९ ॥ प्रत्यगृह्णाच्च तं विद्वान् सूतो गावल्गणिस्तदा। मैवमित्यब्रवीच्चैनं शमयन् सान्त्वयन्निव ॥ २० ॥ स तु कोपं समुत्सृज्य गतमन्युर्महामनाः। हा हा भीमेति चुक्रोश नृपः शोकसमन्वितः ॥ २१ ॥ तं विदित्वा गतक्रोधं भीमसेनवधार्दितम्। वासुदेवो वरः पुंसामिदं वचनमब्रवीत् ॥ २२॥ मा शुचो धृतराष्ट्र त्वं नैष भीमस्त्वया हतः। आयसी प्रतिमा ह्येषा त्वया राजन्निपातिता ॥ २३॥ त्वां क्रोधवशमापन्नं विदित्वा भरतर्षभ। मयापकृष्टः कौन्तेयो मृत्योर्दंष्ट्रान्तरं गतः ॥ २४ ॥ न हि ते राजशार्दूल बले तुल्योऽस्ति कश्चन। कः सहेत महाबाहो बाह्वोर्विग्रहणं नरः ॥ २५ ॥ यथान्तकमनुप्राप्य जीवन् कश्चिन्न मुच्यते। एवं बाह्वन्तरं प्राप्य तव जीवेन्न कश्चन ॥ २५॥ तस्मात् पुत्रेण या तेऽसौ प्रतिमा कारितायसी। भीमस्य सेयं कौरव्य तवैवोपहृता मया ॥ २७ ॥

कर धृतपक छातीने मुख से रुधिरको गिराया । १८ । इस के पीछे इसी प्रकार रुधिरसे भराहुआ पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि प्रफुल्लितनोक शाखा वाला पारिजातनाम वृक्ष गिरता है । १९ । तब बुद्धिमान् संजय ने उसको पकड़लिया और शान्तिपूर्वक विश्वास कराताहुआ उससे बोला कि इस प्रकार मतकरो । २० । फिर वह बड़ा साहसी क्रोधसे पृथक् और रहितहोकर शोकसे युक्त राजा हाय भीमसेन यह शब्द कहके पुकारा । २१ । उसको भीमसेनके मारनेसे पीड़ावान और क्रोधसे रहित जानकर पुरुषोत्तम वासुदेवजी इन वचनको बोले । २२ । हे समर्थ धृतराष्ट्र शोचमत करो यह भीमसेन तुम्हारे हाथसे नहीं मारागया तुमने यह लोहेकी मूर्त्तिगिराई है । २३ । हे भरतर्षभ तुमको क्रोधके वशीभूत देखकर मृत्यु की दाढ़ में गयाहुआ भीमसेन मैंने खैंचा । २४ । हे राजाओं में श्रेष्ठ कोई तेरे समान बलवान् नहीं है हेमहाबाहु कौन मनुष्य तेरी भुजाओं के पकड़ने को सह सक्ता है । २५ । जैसे कि मृत्युको प्राप्त होकर कोई जीवता नहीं छूटता है इसीप्रकार तेरी भुजाओं के मध्यको पाकर कोई जीवता नहीं रहसक्ता है । २६ । हे कौरव जिस हेतुसे आपके पुत्रने भीमसेन की जो यह लोहेकी मूर्त्ति बनवाई वही मूर्त्ति मैंने तेरे पास वर्त्तमान करी । २७ । हे राजेन्द्र पुत्रशोक से दुःखी तेरा चित्तधर्म से

Bhim, the powerful king broke it into pieces, though in doing so he cut his breast and dropped blood from the mouth. He fell down on earth bleeding like a blooming tree. Wise Sanjaya held him, saying gently, "You should not do so." 20. The brave king, when his anger was gone, was filled with remorse for slaying *Bhim*. Seeing that he was no longer in an angry mood but felt grief for *Bhim*, Vasudev said, "Be not grieved, Dhritrashtra. You have not slain Bhim and only broken an iron statue. Seeing you in angry mood, I dragged Bhim out of the jaws of death. You are unequalled in strength; none could come out safe from the grasp of your arms 25.

पुत्रशोकाभिसन्तापाद्धर्मादपहृतं मनः। तदा राजेन्द्र तेन त्वं भीमसेनं जिघांससि ॥ २८॥ न चैतत्ते क्षमं राजन् हन्यास्त्वं यद्वृकोदरम्। न हि पुत्रा महाराज जीवेयुस्ते कथञ्चन ॥ २९ ॥ तस्माद्यत् कृतमस्माभिर्मन्यमानैः क्षमं प्रति। अनुमन्यस्व तत् सर्वं मा च शोके मनः कृथाः ॥ ३०॥

इति श्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि आयसभीमभंगे द्वादशोऽध्यायः १२



वैशम्पायन उवाच। तत एनमुपातिष्ठन् शौचार्थं परिचारिकाः। कृतशौचं पुनश्चैनं प्रोवाच मधुसूदनः ॥ १ ॥ राजन्नधीता वेदास्ते शास्त्राणि विविधानि च। श्रुतानि च पुराणानि राजधर्माश्च केवलाः ॥ २ ॥ एवं विद्वान् महाप्राज्ञः समर्थः सन् बलाबले। आत्मापराधात् कस्मात् त्वं कुरुषे कोपमीदृशम् ॥ ३ ॥ उक्तवांस्त्वां तदैवाहं भीष्मद्रोणौ

पृथक् हुआया उस हेतुसे तुम भीमसेन को मारना चाहते थे ।२८। हे राजा यह आपको योग्य नहीं है जो तुम भीमसेन को मारा चाहतेहो क्योंकि आपके पुत्र आयुर्दापूर्ण होजानके कारण से किसी दशा में भी जीवते नहीं रहसक्ते थे ।२९। इस हेतुसे सन्धिको अंगीकार करनेवाले हम लोगों ने सन्धि के विषय में जो कर्म्म किया उस सबको ध्यानकरो शोकमें चित्तमें मतकरो ३० ॥

अध्याय १३ ॥

वैशंपायन बोले कि इस के अनन्तर नौकरलोग स्नान कराने के निमित्त इस के पास आकर वर्त्तमान हुये मधुसूदनजी इस स्नानसे निवृत्त होनेवाले राजा से बोले कि हे राजा तुम ने वेद और नाना प्रकार के शास्त्र पढ़े पुराणों समेत शुद्ध राजधर्मों को सुना। २ इस प्रकार पंडित और बड़े ज्ञानी बलाबल में समर्थ

None can scape with life from your deadly clutches. I made use of the iron statue of Bhim made by Duryodhan. Grieved for your son you had deviated from the path of right and wished to slay Bhim. This was not worthy of you, for your son had his days numbered and could live no longer. Think of our exertions, which we did in bringing about peace, and grieve no more." 30.



CHAPTER XIII

Vaishampayan said, "Then servants came to Dhritrashtra to help him in bathing, and when he had done bathing, *Shri Krishn* thus addressed him, "You have learnt religious books and learnt the duties of kings.

च भारत । विदुर. सञ्जयेनच त्वन्तु राजन तत् कृथाः ॥ ४ ॥ स वार्य्यमाणो नास्मा
कमकार्षीर्वचनं तदा । पाण्डवानधिकं जानन् बले शौर्य्ये च कौरव ॥ ५ ॥ राजा
हि यः स्थिरप्रज्ञः स्वयं दोषानवेक्षते । देशकालविभागज्ञ परं श्रेयः
स विन्दति ॥ ६ ॥ उच्यमानस्तु यः श्रेयो गृह्णाति न हिताहिते । आपदः समनुप्राप्य
स शोचत्यनये स्थितः ॥ ७ ॥ ततोऽन्यवृत्तमात्मानं समवेक्षस्व भारत । राजंस्त्वं ह्यवि
धयात्मा दुर्योधनवशे स्थितः ॥ ८ ॥ आत्मापराधादापन्नस्तत् किं भीमं जिघांससि ।
तस्मात् संयच्छ कोपं त्वं स्वमनुस्मृत्य दुष्कृतम् ॥ ९ ॥ यस्तु तां स्पर्द्धया क्षुद्रः पाञ्चा
लीमानयत् सभाम् स हतो भीमसेनेन वैरं प्रतिजिहीर्षता ॥ १० ॥ आत्मनोऽतिक्रमं
पश्य पुत्रस्य च दुरात्मनः । यदनागसि पाण्डूनां परित्यागः परन्तप ॥ ११ ॥ वैशम्पा
यन उवाच । एवमुक्तः स कृष्णेन सर्वं सत्यं जनाधिप । उवाच देवकीपुत्रं धृतराष्ट्रो
महीपतिः ॥ १२ ॥ एवमेतन्महाबाहो यथा वदसि माधव । पुत्रस्नेहस्तु धर्मात्मन् धैर्यान्मां

होकर तुम अपने अपराधमें पने क्रोधको किस निमित्त करतेहो हे भरतवंशी तभी मैंने भीष्मने द्रोणाचार्यने और संजयने भी तुमसे कहाथा परन्तु हेराजा तुमने उस वचनको नहीं किया ।४ । हे कौरव उससमय पांडवोंको वल और वीरतामें अधिक जानते और वारम्वार निषेध कियेहुये भी तुमने हमारे वचनको नहीं किया ।५ । जो नियत बुद्धि राजा आप दोषों समत देशकालके विभाग को विचारता है वह परम कल्याण को पाता है ।६। हित अनहित में समझाया हुआ जो पुरुष कल्याण वचनको अंगीकार नहीं करता है वह अनीतिमें नियत आपत्तिको पाकर शोचता है । ७ । हे राजा इस हेतुसे विपरीत चलनेवाले अपने को देखो वृद्धोंके वचनों से विपरीत चित्तवाले तुम दुर्योधन की आधीनता में नियत हुये ।८। और अपनेही अपराधसे आपत्ति में फसे हो तुम भीमसेनको क्यों मारना चाहतेहो इस हेतुसे तुम अपने क्रोधको दूरकरो और अपने दुष्ट कर्मोंको स्मरण करो । ९ । जिस नीच ने ईर्षा से उस द्रौपदी को सभा में बुलाया वह शत्रुता का बदला लेने के अभिलाषी भीमसेन के हाथ से मारागया । १० । अपनी और अपने दुरात्मा पुत्रकी अमर्यादगी को देखो जो तुमने निरपराधी पांडवों का त्याग किया । ११ । वैशम्पायन बोले हेजनमेजय श्रीकृष्णजी के इसप्रकार के सत्य वचनों सुनकर उस राजा धृतराष्ट्र ने देवकी नन्दनसे कहा । १२ । कि हे महाबाहु माधवजी जो आप कहते हैं

Being so learned and powerful, you should not have indulged in anger You did not act upon the advice given you by Bhishm, Drona, Sanjaya and myself. You knew the great strength of the Pandavas and yet you were obdurate. 5. Happy is the king who acts according to the requisition of time and place, but he who does not mind the advice of his faithful friends, falls into trouble. You acted wrongly in as much as you disregarded the counsel of old men and were controlled by Duryodhan. You brought misery on yourself. Why do you wish to

समत्वालयम् ॥ १३ ॥ दिष्ट्या तु पुरुषव्याघ्रो बलवान् सत्यविक्रम । त्वद्गुप्तो नागमत् कृष्ण भीमो बाह्वन्तरं मम ॥ १४ ॥ इदानीं त्वहमेकाग्रो गतमन्युर्गतज्वरः मध्यमं पाण्डवं वीरं द्रष्टुमिच्छामि माधव ॥ १५ ॥ हतेषु पार्थिवेन्द्रेषु पुत्रेषु निहतेषु वै । पाण्डुपुत्रेषु वै शर्म प्रीतिश्चाप्यवतिष्ठते ॥ १६ ॥ ततः स भीमं च धनञ्जयं च माद्र्याश्च पुत्रौ पुरुषप्रवीरौ । पस्पर्श गात्रैः प्ररुदन् सुगात्रानाश्वास्य कल्याणमुवाच चैनान् ॥ १७ ॥

इति श्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि धृतराष्ट्रक्रोधनिबोधने त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥



यह सब यथार्थ है परन्तु बड़ा बलवान् पुत्रकी प्रीति ने मुझको धैर्यसे पृथक् कर दिया । १३ हे श्रीकृष्णजी प्रारब्धकी बातहै कि तुमसे रक्षित बलवान् सत्य पराक्रमी भीमसेन ने मेरी भुजाके मध्यको नहीं आया । १४ । हे माधवजी अब सावधान क्रोध से रहित चिन्ताज्वर में मझले वीर पाण्डवको देखा चाहता हूं बड़ा राजाओं के और पुत्रों के मरनेपर मेरे सुख और प्रीति पांडवों में नियत होते हैं । १६ । इसके पीछे बहुत रोतहुये उस राजा ने उन सुन्दर अंगवाले भीमसेन अर्जुन और पुरुषों में बड़े वीर नकुल और सहदेव को भी अंगों से स्पर्श किया और उन्होंको विश्वास देकर कल्याण के वचन कहे १७ ॥

slay Bhim ! Remove your anger and recall your wicked deeds. Bhim only revenged the wrong done to Draupadi in the court by that despicable son of yours. 10 Look at your transgressions and those of your son in ousting the Pandavas " Vaishampayan says that on hearing the words of Shri Krishna, Dhritrashtra th is addressed him," You are right, Madhav, but it was the paternal love which took away my constancy. It was by good luck that you guarded Bhim and saved him from coming within the grasp of my arms I am now quite free from anger and wish to see him At the fall of the kings and sons my love is concentrated in the Pandavas " Then with tears in his eyes, the king touched the bodies of Bhim, Arjun Nakul and Sahadev. He spoke to them kindly and blessed them " 17

वैशम्पायन उवाच । धृतराष्ट्राभ्यनुज्ञातास्ततस्ते कुरुपुङ्गवाः । अभ्ययुर्भ्रातरः सर्वे गान्धारीं सहकेशवाः ॥ १ ॥ ततो ज्ञात्वा हतामित्रं धर्मराजं युधिष्ठिरम् । गान्धारी पुत्रशोकार्त्ता शप्तुमैच्छदनिन्दिता ॥ २ ॥ तस्याः पापमभिप्रायं विदित्वा पाण्डवान् प्रति । ऋषिः सत्यवतीपुत्रः प्रागेव समबुध्यत ॥ ३ ॥ स गङ्गायामुपस्पृश्य पुण्यगन्धि पयः शुचि । तं देशमुपसम्पेदे परमर्षिर्मनोजवः ॥ ४ ॥ दिव्येन चक्षुषा पश्यन् मनसानुद्धतेन च । सर्वं प्राणभृतां भावं स तत्र समबुध्यत ॥ ५ ॥ स स्नुषामब्रवीत् काले कल्यवादी महातपाः । शापकालमवाक्षिप्य शमकालमुदीरयन् ॥ ६ ॥ न कोपः पाण्डवे कार्यो गान्धारि शममाप्नुहि । वचो निगृह्यतामेतत् शृणु चेदं वचो मम ॥ ७ ॥ उक्तास्यष्टादशाहानि पुत्रेण जयमिच्छता । शिवमाशास्व मे मातर्युध्यमानस्य शत्रुभिः

अध्याय । १४ ।

वैशम्पायन बोले कि इसके पीछे धृतराष्ट्र से आज्ञा लेकर वह कौरव पांडव भाई केशवजी समेत गान्धारी के पासगये ।१। इसके पीछे पुत्रों के शोकसे पीड़ावान निर्दोष गान्धारी ने उन मृतक शत्रुवाले युधिष्ठिर को पास आया हुआ जानकर शाप देना चाहा । २। व्यासऋषि प्रथमही पांडवों के विषयमें उसके पाप रूप चित्तके विचारको जानकर सावधानहुये ।३। और चित्त के समान शीघ्रगामी होकर वह महर्षी श्रीगंगाजी के पवित्र और सुगन्धित जलमें स्नान आचमनकरके उस स्थानपर आ पहुंचे और दिव्य नेत्रयुक्त अपने चित्तसे देखते उस ऋषि ने वहां सब जीवों के चित्तके वृत्तान्तको जाना । ५ । शापके समयको निरादर करके कालकी शान्तिको वर्णन करते वह महातपस्वी कल्पवादी ऋषि पुत्रवधू से बोले । ६। कि हे गान्धारी पांडव के ऊपर क्रोध न करना चाहिये अपने शाप वचनको रोककर इसमेरे वचनको सुनो । ७। अठारह दिनतक विजयके अभिलाषी पुत्रने कहाहै कि हे माता शत्रुओं के साथ युद्ध करनेवाले को शुभ आशीर्वाद

CHAPTER XIV

Vaishampayan said, " Then by Dhritrashtra's permission the Pandav brothers with Keshav, went to Gandhari. Distressed with grief for her sons, she intended to curse Yudhishthir. Knowing of her evil intention towards the Pandavas, Vyas made haste, after bathing in and sipping the water of the Ganges, he came there. With his divine eye he saw through the minds of those who were present there. 5. Speaking ill of curses and recommending peace of mind, he said to Gandhari, " Donot let your anger fall on the Pandav. Donot curse him, but hear me; during the eighteen days of war, your son desirous of victory asked you to bless him, but on all occasions you said that victory should fall on the side of dharm. I can never think that your words to him

। ८ ॥ सा तथा याच्यमाना त्वं काले काले जयैषिणा । उक्तवत्यसि गान्धारि यतो
धर्मस्ततोजयः ॥ ९ ॥ चाप्यतीतां गान्धारि वाचं ते वितथामहम् । स्मरामि भाषमाणा
यास्तथा प्रणिहिता ह्यसि ॥१०॥ विग्रहे तुमुले राज्ञां गत्वा परमसंशयम् । जितं पाण्डु
सुतैर्युद्धे नूनं धर्मस्ततोऽधिकः ॥ ११ ॥ क्षमाशीला पुरा भूत्वा साद्य न क्षमसे कथम् ।
अधर्मं जहि धर्मज्ञे यतो धर्मस्ततो जयः ॥ १२ ॥ त्वञ्च धर्मं परिस्मृत्य वाचञ्चोक्तां मन
स्विनि । कोपं संयच्छ गान्धारि मैवं भूः सत्यवादिनि ॥ १३ ॥ गान्धार्युवाच । भगव
न्नाभ्यसूयामि नैतानिच्छामि नश्यतः । पुत्रशोकेन तु बलान्मनो विह्वलतीव मे ॥ १४ ॥
यथैव कुन्त्या कौन्तेया रक्षितव्यास्तथा मया । तथैव धृतराष्ट्रेण रक्षितव्या यथा मया
॥ १५ ॥ दुर्योधनापराधेन शकुनेः सौबलस्य च । कर्णदुःशासनाभ्याञ्च वृत्तोऽयं
कुरुसंक्षयः ॥ १६ ॥ नापराध्यति बीभत्सुर्न च पार्थो वृकोदरः । नकुलः सहदेवो वा

दो । ८ । हे गान्धारी उस विजयाभिलाषी से समय २ पर प्रार्थनाकरी हुई तुमने कहाहै कि जिधर धर्म है उधरही विजय है । ९ । हे गान्धारी मैं पूर्व समय में तुम्हें दुर्योधन के शुभ आशीर्वाद से प्रसन्न करनेवाले के कहेहुये वचन को मिथ्या स्मरण नहीं करताहूं तुम उस प्रकारकी समाधि धारण करनेवाली हो ।१०। इसी से राजाओं के कठिन युद्ध में पारको पाकर पांडवों ने युद्धमें निस्सन्देह विजयको पाया निश्चय करके उधरही धर्म अधिक है । ११ । पूर्वसमय में ऐसी क्षमावान होकर अब किस हेतुसे तू क्षमा नहीं करती है हे धर्मकी जाननेवाली अधर्म को त्यागो जिधर धर्म्म है उधरही विजय है ।१२। हे मनस्विनी सत्यवक्ता गान्धारी अपने धर्मको और कहेहुये वचनको स्मरण करके कोपकोरोको और इस दशा वाली मतहो । १३ । गान्धारीने कहा हे भगवन मैं गुणमें दोषनहीं लगातीहूं और उनका नाशवान होना नहीं चाहतीहूं । १४ । परन्तु पुत्रशोकसे मेराचित्त अत्यन्त व्याकुल होताहै ।१४। जिसप्रकार पांडव कुन्तीसे रक्षा के योग्यहैं उसीप्रकार मुझ से भी हैं और जैसे मुझसे रक्षा के योग्य हैं उसीप्रकार धृतराष्ट्र से हैं ।१५। दुर्योधन शकुनी कर्ण और दुश्शासन के अपराधसे यह कौरवों का नाश हुआ । १६ । इस

were wrong. 10. The Pandavas were victorious, no doubt, according to thy predictions and dharm must be on their side. Being ever merciful, why do you withhold your pardon? Give up injustice. Victory has fallen on the side of justice. Remembering your own words, you should not behave thus, truthful Gandhari," She said, "I do not find fault, where there is none, and do not want their destruction. My mind however is distressed with grief for my sons. They deserve as much protection from me as from Kunti. The Pandavas equally deserve protection from Dhitrashtra. 15 The great destruction of the Kauravas was brought about by Duryodhan, Shakuni, Karna and Dushasan. The Pandavas have done no wrong. The Kauravas

देव जातु युधिष्ठिरः ॥१७॥ युध्यमानाहि कौरव्याः कृतमन्योपरस्परम्। निहताः सहिताश्चान्यैस्तत्र नास्त्यप्रियं मम ॥ १८ ॥ किन्तु कर्माकरोद्भीमो वासुदेवस्य पश्यतः। दुर्योधनं समाहूय गदायुद्धे महायशाः ॥ १९ ॥ शिक्षयाभ्यधिकं ज्ञात्वा चरन्तं बहुधा रणे। अधो नाभ्या प्रहृतवान् तन्मे कोपमवर्धयत् ॥ २० ॥ कथं नु धर्मं धर्मज्ञैः समुद्दिष्टं महात्मभिः। त्यजेयुराहवे शूराः प्राणहेतोः कथञ्चन ॥ २१ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि गान्धारीसान्त्वनायां चतुर्दशोऽध्यायः १४॥

मैं अर्जुन भीमसेन नकुल सहदेव और युधिष्ठिरका भी कुछ अपराध नहीं है ।१७। यह परस्पर युद्ध करनेवाले अहंकारी कौरव एकसाथ अन्य, २ लोगोंके हाथ से मारेगये यह मेरा अप्रिय नहीं है । १८ परन्तु वासुदेवजी के देखत हुये भीमसेन ने कैसा कर्मकिया कि बड़े साहसी ने गदायुद्धमें दुर्योधनको बुलाकरके और शिक्षामें अधिक जानकर युद्धमें अनेक रीतिसे घूमनेवाले को । २० । नाभिकेनीचे घायल किया इन बातको सुनकर मैंने कोपको बढ़ाया । २१ । वह शूरवीर युद्धमें प्राणों के अर्थ किसी दशामें भी धर्मको नहीं त्यागता है जोकि धर्मज्ञ महात्माओंसे उपदेश किया गया है ॥ २२ ॥

fell down fighting in the pride of their power. But why did Bhim do such a deed in the presence of Vasudev? He challenged Duryodhan to fight with the mace and then struck him below the navel. This was the cause of my anger. A well-advised warrior never sets aside justice under any circumstances." 21.



वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वा वचनं तस्या भीमसेनोऽथ भीतवत् । गान्धारीं प्रत्
युवाचेदं वचः सानुनयं तदा ॥ १ ॥ अधर्मो यदि वा धर्मस्त्रासात्तत्र मया कृतः । आत्मानं
त्रातुकामेन तन्मे त्वं क्षन्तुमर्हसि ॥ २ ॥ न हि धर्मेण पुत्रस्ते पातितोऽसौ महाबलः । न
शक्यः केनचिद्धन्तुमतो विषममाचरम् ॥ ३ ॥ अधर्मेण जितः पूर्वं तेन चापि युधिष्ठिरः ।
निकृताश्च सदैव स्म ततो विषममाचरम् ॥ ४ ॥ सैन्यस्यैको ऽवशिष्टोऽयं गदायुद्धेन वीर्य्य
वान् । मां हत्वा न हरेद्राज्यमिति चैतत्कृतं मया ॥ ५ ॥ राजपुत्रीं च पाञ्चालीमेक
वस्त्रां रजस्वलाम् । भवत्या विदितं सर्वमुक्तवान्यत् सुतस्तव ॥ ६ ॥ सुयोधनमसं
गृह्य न शक्या भूः ससागरा । केवला भोक्तुमस्माभिरतश्चैतत्कृतं मया ॥ ७ ॥ तच्चाप्य
प्रियमस्माकं पुत्रस्ते समुपाचरत् । द्रौपद्या यत् सभामध्ये सव्यमूरुमदर्शयत् ॥ ८ ॥
तत्रैव वध्यः सोऽस्माकं दुराचारोऽम्ब ते सुतः । धर्मराजाज्ञया चैव स्थिता स्म समयेतदा

अध्याय १५ ।

वैशम्पायन बोलेकि तब भीमसेन उसके उसवचनको सुनकर भयभीतके समान नम्रता के साथ गांधारी से यह वचनबोला । १ । हे माता धर्महोय वा अधर्महोय अपने शरीरकी रक्षाके अभिलाषी मैंने भय से यहां ऐसाकिया आपउस मेरे अपराध को क्षमाकरने के योग्यहो । २ । यह बड़ा बलवान् आपका पुत्र धर्म युद्ध केद्वारा किसी के साथ लड़ने के योग्य नहींथा इस हेतुसे मैंने विपरीत कर्म किया । ३ । पूर्व समयमें उस दुर्योधन ने अधर्म के द्वारा युधिष्ठिर को विजय किया और हम सदैव ठगेगये इस कारण से मैंने विपरीत कर्मकिया । ४ । सेना के मध्यमें अकेला शेष बचाहुआ यह पराक्रमी कदाचित् गदा युद्धसे मुझको मारकर राज्यको नलेले इस हेतुसे मैंने यह कर्मकिया । ५ । आपको सब विदित है कि आपके पुत्रने एका वस्त्रा रजस्वला राजपुत्री द्रौपदीसे जो वचन कहाथा इसमें दुर्योधनको बिनामारे हुवे सागरों समेत निष्कण्टक पृथ्वी हमसे भोगने के योग्य नहींथी इन बातोंको विचार कर मैंने यह कर्मकिया । ७ उसीप्रकार आपके पुत्र ने हमारे अप्रियका भी किया जो सभाके मध्यमें द्रौपदीको वामजांघा दिखलाई । ८ । तबही वह

CHAPTER XV

Vaishampayan said, that on hearing the words of Gandhari, Bhim humbly spoke to her, saying, " Whether it be justice or injustice, I did it in self-defence, and I ask your pardon, mother. Your powerful son could not be overcome in a just fight and therefore I did an unjust deed. Formerly Duryodhan conquered Yudhishthir unjustly and we were cheated again and again: this was the reason of my acting against rule. I did it lest he might slay me and take our kingdom, in spite of the destruction of all his army 5. You know well how Duryodhan dragged Draupadi and we did not think it worth our while to enjoy the kingdom without slaying him. He had dis-

॥ ९ ॥ वैरमुद्दीपितं राज्ञि पुत्रेण तव तन्महत् । क्लेशिताश्च वने नित्यं तत एतत् कृतं
मया ॥ १० ॥ वैरस्यास्य गतः पारं हत्वा दुर्य्योधनं रणे । राज्यं युधिष्ठिरः प्राप्तो वयञ्च
गतमन्यवः ॥ ११ ॥ गान्धार्य्युवाच । न तस्यैव वधस्तात यत् प्रशंससि मे सुतम् । कृत
वांश्चापि तत् सर्वं यदिदं भाषसे मयि ॥ १२ ॥ हताश्वे नकुले यत्तद्वृषसेनेन भारत ।
अपिबः शोणितं संख्ये दुःशासनशरीरजम् ॥ १३ ॥ सद्भिर्विगर्हितं घोरमनार्य्यजनसेवि
तम् । क्रूरं कर्माकरोस्तस्मात्तदयुक्तं वृकोदर ॥ १४ ॥ भीम उवाच । अन्यस्यापि
पातव्यं रुधिरं किं पुनः स्वकम् । यथैवात्मा तथा भ्राता विशेषो नास्ति कश्चन ॥ १५ ॥
रुधिरं न व्यतिक्रामद्दन्तोष्ठादम्ब मा शुचः । वैवस्वतस्तु तद्वेद हस्तौ मे रुधिरोक्षितौ
॥ १६ ॥ हताश्वं नकुलं दृष्ट्वा वृषसेनेन संयुगे । भ्रातॄणां सम्प्रहृष्टानां त्रासः सञ्जनितो
मया ॥ १७ ॥ केशपक्षपरामर्शे द्रौपद्या द्यूतकारिते । क्रोधाद्यदब्रुवञ्चाहं तच्च मे

आपका दुराचारी पुत्र हमारे हाथसे मारडालने के योग्यथा परन्तु उस समय हम
लोग धर्मराजकी आज्ञासे नियममें नियत हुये । ९ । हे रानी आपके पुत्र ने ब
बड़ी शत्रुता प्रकटकी और सदैव वनमें दुखी किये इस हेतुसे मैंने यह किया १०
युद्धमें दुर्योधन को मारकर अब उस शत्रुता के अन्तको पाया युधिष्ठिर ने ..
को पाया और क्रोधसे रहित हुये । ११ । गान्धारी बोली हे तात जो मेरेपुत्र
विषयमें कहताहै यह केवल उसकोही नहीं मारा किन्तु इसकोभी किया जो
सब मुझसे कहताहै । १२ । हे भरतवंशी भीमसेन वृषसेनके हाथसे नकुल के
मरनेपर युद्धमें तुमने दुश्शासन के शरीरसे उत्पन्न होनेवाले रुधिरको पिया । १३
यह तुमने सत्पुरुषों से निन्दित निर्दय कर्म किया वह अयोग्यथा । १४ ।
बोला कि जब दूसरेका भी रुधिर न पीना चाहिये फिर अपना कैसे पानकरसक्ता
है जैसा अपना आत्माहै वैसाही भाई है कोई मुख्यता नहीं है । १५ । हे माता
रुधिर ओठोंसे नीचे नहीं गया यमराज उसको जानते हैं केवल रुधिरसे भरे
दोनों हाथ थे हे माता शोच मतकर । १६ । युद्धमें वृषसेनके हाथसे मृतक
नकुल को देखकर मैंने प्रसन्नचित्त भाइयों का भय उत्पन्न किया । १७ । धूत

pleased us by showing his thigh to Draupadi. We should
slain him there and then, but we had not Yudhishthir's
I did it because your son gave us much trouble by sending us
exile. 10. We have made an end of the enmity by slaying D
dhan Yudhishthir has got the kingdom and we are free from anger.
Gandhari said " You have not only slain my son of whom you
so much, but done more: when Nakul's horses were slain by V
you drank Dushasan's blood, a deed of cruelty unworthy of good
men. " Bhim said, " How can one drink his own blood, when he
not that of others. A brother and self are the same. The
did not go beyond my lips, I call Yamraj to witness. My hands

वर्त्तते ॥ १८ ॥ तत्राप्रति ... ॥ १९ ॥ न मामर्हसि गान्धारि दोषेण परिशङ्कितुम् । अनिगृह्य पुरा पुत्रानस्मास्वनपराधिषु । अधुना किं तु दोषेण परिशङ्कितुमर्हसि ॥ २० ॥ गान्धार्युवाच । वृद्धस्यास्य शतं पुत्रान्निघ्नंस्त्वमपराजित । कस्मान्न शेषयेः कञ्चिद्येनाल्पमपराधितम् । सन्तानमावयोस्तात वृद्धयोर्हृतराज्ययोः ॥ २१ ॥ कथमन्धद्वयस्यास्य यष्टिरेका न वर्जिता ॥ २२ ॥ शेषे ह्यवस्थिते तात, पुत्राणामन्तके त्वयि । न मे दुःखं भवेदेतत् यदि त्वं धर्ममाचरेः ॥ २३ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वा तु गान्धारी युधिष्ठिरमपृच्छत । क्व स राजेति सक्रोधा पुत्रपौत्रवधार्दिता ॥ २४ ॥ तामभ्यगच्छद्राजेन्द्रो वेपमानः कृताञ्जलिः । युधिष्ठिर इदञ्चैनां मधुरं वाक्यमब्रवीत् ॥ २५ ॥ पुत्र

कारण द्रौपदी के शिरके बाल पकडेजाने पर मैंने क्रोधमें जो कहा वह मेरे हृदय में वर्त्तमान है । १८ । हे रानी मैं उस प्रतिज्ञा को पूरा न करके बराबर तबतक क्षत्रिय धर्म से च्युत होजाता इस हेतुसे मैंने उसकर्मको किया । १९ । हे गान्धारी पूर्व समयमें हमारे निरपराधी होनेपर पुत्रों को शासन न करके अब मुझको दोषों से शंकाकरने के योग्य नहीं हो जो अब हमारे ऊपर दोषों की शंकाकरती हो । २० । गान्धारी बोली कि इस वृद्धके सौ पुत्रोंके मारनेवाले तुझ अजेय ने किस हेतुसे एक कोभी बाकी नहीं छोड़ा जिसने कि थोड़ा अपराध किया था हे तुमनो कि राज्य से हीन और वृद्ध हम दोनोंकी सन्तान रूप कहलाता । २१ । इस अंधे की एक लाठीभी तैने कैसे नहीं छोड़ी । २२ । हे पुत्र पुत्रों में किसी के भी बाकी रहनेपर तुझ पुत्रोंके नाशकर्त्ता में मेरा यह दुःख नहीं होता जो तुम धर्मको करते । २३ । वैशम्पायन बोले क्रोधयुक्त और पुत्र पौत्रों के मरने से पीड़ावान् गान्धारी ने इस प्रकार कहकर युधिष्ठिर के विषय में पूछा कि धर्मराज कहां है । २४ । कम्पायमान हाथ जोड़कर युधिष्ठिर उसके पास गये और वहां इस मधुर बचन को बोले । २५ । हे देवी मैं युधिष्ठिर तेरे पुत्रका मारनेवाला और संसारके

were stained with blood and therefore you should not be angry. 19. Seeing Nakul's horses slain by Vrishasen, I excited fear among brothers. I remembered the words I spoke in anger, when Draupadi was dragged by the hair of her head on account of gambling. Without fulfilling my vow, I should have lost my kshatryahood and therefore I did it. Not having rebuked your sons for persecuting us without fault, you should not now find fault with us." Gandhari said, "You did not leave even one son, out of a hundred, that might have been the staff of our old age and that was less sinful. We are now destitute of our kingdom and sons. I should not be so unhappy, if you had spared only one son of mine" Having said this to Bhim, Gandhari asked where Yudhishthir was. At this, Yudhishthir with

हत्वा नृशंसोऽहं तव देवि युधिष्ठिरः । शापार्हः पृथिवीनाशे हेतुभूतः शपस्व माम्
न हि मे जीवितेनार्थो न राज्येन धनेन वा । तादृशान् सुहृदो हत्वा मूढ स्यास्य सुहृ
द्द्रुहः ॥ २७ ॥ तमेव वादिनं भीतं सन्निकर्षगतं तदा । नोवाच किञ्चिद्गान्धारी निःश्वा
सपरमा भृशम् ॥ २८ ॥ तस्यावनतदेहस्य पादयोर्निपतिष्यतः । युधिष्ठिरस्य नृपतेर्धर्मज्ञा
दीर्घदर्शिनी ॥ २९ ॥ अङ्गुल्यग्राणि ददृशे देवी पट्टान्तरेण सा । ततः स कुनखी भूतो
दर्शनीयनखो नृपः ॥ ३० ॥ तद्दृष्ट्वा चार्जुनोऽगच्छद्वासुदेवस्य पृष्ठतः । एवं सञ्चेष्ट
मानांस्तानितश्चेतश्च भारत । गान्धारी विगतक्रोधा सान्त्वयामास मातृवत् ॥ ३१ ॥
तया ते समनुज्ञाता मातरं वीरमातरम् । अभ्यगच्छन्त सहिताः पृथां पृथुलवक्षसः
॥ ३२ ॥ चिरस्य दृष्ट्वा सा पुत्रान् पुत्राधिभिरभिप्लुता । बाष्पमाहारयद्देवी वस्त्रेणा
वृत्य वै मुखम् ॥ ३३ ॥ ततो बाष्पं समुत्सृज्य सह पुत्रैस्तदा पृथा । मातृस्नेहात् शस्त्रौ

नाशका मूल निर्दयी होकर शापके योग्य हूं मुझको शाप दे । २६ । उस प्रकार के सुहृज्जनों को मारकर मुझ अज्ञानी सुहृदों से शत्रुता करनेवाले को जीवन और राज्यमें कौन प्रयोजन है तब कठिन श्वासा लेनेवाली गान्धारी उस इस प्रकार बोलने वाले भयभीत समीप पहुंचनेवाले से कुछ नहीं बोली । २८ । उस धर्मज्ञ दूरदर्शी देवीने उस झुके शरीर चरणों में गिरने के अभिलाषी राजा युधिष्ठिर की हाथ की उँगलियों की नोक को पट्टान्तर के भीतर से देखा उस से दर्शन के योग्य नख वाला वह राजा युधिष्ठिर कुनखी होगया । ३० । अर्जुन उसको देखकर वासुदेवजी के पीछे चलागया हे भरतवंशी इस प्रकार इधर उधर से चेष्टा करनेवाले उन पांडवों को क्रोधरहित गान्धारी ने माता के समान विश्वास कराया । ३१ । उसकेहुये आज्ञा पायेहुये वह बड़े वक्षस्थलवाले पांडव एक साथही उन वीरों को उत्पन्न करनेवाली कुन्तीमाता के पास गये । ३२ । पुत्रों के विषयमें चिन्ता से खेदयुक्त उस देवी ने बहुत कालके पीछे अपने पुत्रोंको देखकर वस्त्र से मुखको ढककर अश्रुपात किये ३३। इसकेपीछे कुन्तीने पुत्रोंसमेत

a trembling body went to her and said in a sweet voice, " Here I am, Yudhishthir the destroyer of your sons and the root of the destruction of the wo ld Curse me, for I deserve it. 26. Having destroyed friends, why should I live to rule the kingdom ?" Heaving deep sighs, Gandhari gave no reply to Yudhishthir who had approached her in great fear. She looked from behind her veil at the finger nails of Yudhishthir, who was kneeling at her feet, and the beautiful nails were destroyed. 30. At this Arjun crept behind Shree Krishn. Gandhari curbed her anger and consoled the terrified Pandavas like a mother. They took leave of her and went to *Kunti*. Seeing her sons after a long time, distressed *Kunti* covered her face under cloth and wept. With eyes full of tears, she saw them covered with scars of

शरौघैश्चापरिविक्षतान् ॥ ३४ ॥ सा तानेकैकशः पुत्रान् संस्पृशन्ती पुनः पुनः । अन्वशोचत दुःखार्ता द्रौपदीं च हतात्मजाम् । रुदन्तीमथ पाञ्चालीं ददर्श पतितां भुवि ॥ ३५ ॥ द्रौपद्युवाच । आर्ये पौत्राः क्व ते सर्वे सौभद्रसहिता गताः न त्वां तेऽद्याभिगच्छन्ति चिरं दृष्ट्वा तपस्विनीम् । किन्नु राज्येन वै कार्यं विहीनायाः सुतैर्मम ॥ ३६ ॥ तां समाश्वासयामास पृथा पृथुललोचना । उत्थाप्य याज्ञसेनीं तु रुदतीं शोककर्शिताम् ॥ ३७ ॥ तयैव सहिता चापि पुत्रैरनुगता नृप । अभ्यगच्छत गान्धारीमार्तामार्ततरा स्वयम् ॥ ३८ ॥ तामुवाचाथ गान्धारी सह वध्वा यशस्विनीम् । मैवं पुत्रीति दुःखार्ता पश्य मामपि दुःखिताम् ॥ ३९ ॥ मन्ये लोकविनाशोऽयं कालपर्यायचोदितः । अवश्यभावी संप्राप्तः स्वभावाल्लोमहर्षणः ॥ ४० ॥ इदं तत् समनुप्राप्तं विदुरस्य वचो महत् । असिद्धानुनये कृष्णे यदुवाच महामतिः ॥ ४१ ॥ तस्मिन्नपरिहार्येऽर्थे व्यतीते च विशेषतः ॥

अश्रुपातों को करके उनको बाणसमूहों से बहुतप्रकार करके घायल देखा । ३४ । उन पुत्रों को पृथक् २ स्पर्शकरके दुःखसे पीड़ावान उस कुन्तीने मृतक पुत्र वाली द्रौपदी को सोचा और पृथ्वीपर पड़ी रोवतीहुई द्रौपदीको देखा । ३५ । द्रौपदी बोली हे आर्य्ये तेरे सब अभिमन्यु समेत पौत्र कहांगये अब वह बहुत काल से दुःख तपस्विनीको देखकर तेरे पास नहीं आते हैं मुझ पुत्रों से रहित को राज्य से कौनसा प्रयोजन है । ३६ । द्रौपदी के इस वचन को सुनकर बड़े नेत्र वाली कुन्ती ने उसको विश्वास कराया अर्थात् उस शोक पीड़ित रोदन करनेवाली द्रौपदी को उठाकर उसको और सब पुत्रों को साथलेकर बड़ी पीड़ावान कुन्ती गान्धारी के पास गई । ३८ । वैशम्पायन बोले कि तब गान्धारी वधू समेत आनेवाली कुन्ती से बोली हे बेटी इस प्रकार न करना चाहिये तू मुझ दुःखीको भी देख मैं मानतीहूं कि यह संसारका नाशसमयकी विपरीततासे प्रकटहुआ है । ४० । और रोमांच खड़ा करनेवाली अवश्य होनेहार स्वभाव से वर्त्तमान हुई यह विदुरजी का यह बड़ा वचन सम्मुखआया । ४१ । जिसको कि उस बड़े बुद्धिमानने श्रीकृष्णकी विनती से निष्फल होनेपर कहाथा इस अपरिहार्य्यार्थमें

wounds. She touched them one by one and was grieved for Draupadi whom she saw lying on earth. 35. Draupadi said, " Where are Abhimanyu and other grandsons of yours? They have come to see you. What shall I do with the kingdom without my sons? "Having heard the words of Draupadi, large-eyed *Kunti* consoled her. She took her sons and Draupadi to Gandhari. Vaishampayan says that Gandhari thus spoke to *Kunti* and her daughter-in-law:—" You should not do so daughter. Look at me. I think this great destruction was brought about by the vicissitude of time. 40. All this was sure to happen as Vidur had foretold when he saw Shri *Krishna's* counsel go for nothing. Donot be sorry for that which was inevit-

शुचो न हि शोच्यास्ते सङ्ग्रामे निधनं गताः । ४१ ॥ यथैव त्वं तथैवाहं को वामाश्वासयिष्यति । ममैव ह्यपराधेन कुलमग्र्यं विनाशितम् ॥ ४२ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकपर्वणि पृथापुत्रदर्शने

पञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

समाप्तं च जलप्रदानिकपर्व ॥

॥ अथ स्त्रीविलापपर्व ॥

वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वा तु गान्धारी कुरूणामवकर्त्तनम् । अपश्यत्सत्र विशुद्धदूरादिव्येन चक्षुषा ॥ १ ॥ पतिव्रता महाभागा समानव्रतचारिणी । उग्रेण तपसा युक्ता सततं सत्यवादिनी ॥ २ । वरदानेन कृष्णस्य महर्षेः पुण्यकर्मणः । दिव्य ज्ञानबलोपेता विविधं पर्यदेवयत् ॥ ३ ॥ ददर्श सा बुद्धिमती दूरादपि यथान्तिके ।

अर्थात् निरुपाय, और व्यतीत होनेवाली बातमें शोच मत कर ।४१। युद्ध में मरने वाले वह वीर शोचके योग्य नहीं हैं जैसी मैंहूं वैसीही तूहै हमदोनोंको कौन विश्वास करावेगा मेरेही अपराध से इस उत्तम कुलका नाशहुआ ४२ ॥

—※—

अध्याय १६ ॥

वैशम्पायन बोले कि इसप्रकार वहांपर बैठीहुई गांधारी ने दिव्यनेत्रों से कौरवों के सब बड़े भारी नाशको देखा । १ । उस पतिव्रता महाभाग एकसा व्रत करनेवाली बड़े तपसे सयुक्त सदैव सत्यवक्ता । २ । पवित्रकर्मी व्यास महर्षी के वरदान के द्वारा दिव्य ज्ञानबल से संयुक्त ने बहुत प्रकारका विलाप किया । ३ । उस बुद्धिमतीने दूरसे ही समीपके समान नरवीरों की उस रणभूमि को जाके शरीर केअपूर्व

able. The warriors who were slain in battle are not lamentable. I am like you. Who will console both of us. The great destruction was brought about by my own fault." 43.

—※—

CHAPTER XVI

Vaishampayan said, "Having said this, Gandhari saw with her divine eyes the great destruction. She saw all by the divine wisdom granted her by Vyas and was much grieved. She saw before her

रणाजिरं नृवीराणामद्भुतं लोमहर्षणम् ॥ ४ ॥ अस्थिकेशपरिस्तीर्णं शोणितौघपरिप्लुतम् । शरीरैर्बहुसाहस्रैर्विनिकीर्णं समन्ततः ॥ ५ ॥ गजाश्वरथयोधानामावृतं रुधिराविलैः । शरीरैरशिरस्कैश्च विदेहैश्च शिरोगणैः ॥ ६ ॥ गजाश्वनरनारीणां निःस्वनैरभिसंवृतम् । सृगालबककाकोलकङ्ककाकनिषेवितम् ॥ ७ ॥ रक्षसां पुरुषादानां मोदनं कुररराकुलम् । अशिवाभिः शिवाभिश्च नादितं गृध्रसेवितम् ॥ ८ ॥ ततो व्यासाभ्यनुज्ञातो धृतराष्ट्रो महीपतिः । पाण्डुपुत्राश्च ते सर्वे युधिष्ठिरपुरोगमाः ॥ ९ ॥ वासुदेवं पुरस्कृत्य हतबन्धुं च पार्थिवम् । कुरुस्त्रियः समासाद्य जग्मुरायोधनं प्रति ॥ १० ॥ समासाद्य कुरुक्षेत्रं ताः स्त्रियो निहतेश्वराः । अपश्यन्त हतांस्तत्र भ्रातॄन् पुत्रान् पितॄन् पतीन् ॥ ११ ॥ क्रव्यादैर्भक्ष्यमाणान् वै गोमायुबलवायसैः । भूतैः पिशाचै रक्षोभिर्विविधैश्च निशाचरैः ॥ १२ ॥ रुद्राक्रीडनिभं दृष्ट्वा तदा विशसनं स्त्रियः । महार्हेभ्योऽथ यानेभ्यो

रोमहर्षण करनेवाला थी देखा ॥ ४ ॥ अर्थात् अस्थिकेश चर्बी से युक्त रुधिर समूह से पूर्ण हजारों शरीरों से चारों ओर को आच्छादित । ५ । हाथी घोड़े रथ और सवारों के रुधिर समूह से युक्त शरीरों से पृथक् शिरों के समूहों से पूर्ण । ६ । हाथी घोड़े मनुष्य और स्त्रियों के शब्दों से व्याप्त सृगाल, बक, काकोल, कंक और कागों से सेवित । ७ । मनुष्य के खानेवाले राक्षसों की प्रसन्न करनेवाली कुररनाम पक्षियों से सेवित सृगालों के अशुभ शब्दों से शब्दायमान और गिद्धों से सेवित थी । ८ । इसके पीछे व्यासजी से आज्ञा पाया हुआ राजा धृतराष्ट्र और वह सब पाण्डव जिनका अग्रवर्ती युधिष्ठिर था । ९ । वासुदेवजी को और जिसके बन्धु मारेगये उस राजा को आगेकर सब कौरवीय स्त्रियों को साथ लेकर युद्धभूमि में गये । १० । वहां विधवा स्त्रियों ने कुरुक्षेत्र को पाकर उन मृतक भाई पुत्र पिता और सुहृदों को देखा । ११ । जोकि कच्चे मांस खानेवाले सृगाल, काग भूत, पिशाच, राक्षस और नानाप्रकार के निशाचरों से खायेहुये थे । १२ । रुद्रजी के क्रीड़ास्थान के समान

mind's eye the fatal field of battle lying far from that place. She saw covered with bones, hair, fat, blood and thousands of corpses, with elephants, horses, cars and the blood of horsemen whose heads were cut asunder. Full of the cries of elephants, horses, men and women, abounding in jackals, crows and vultures, pleasing to the man-eating rakshases, resounding with the sounds of the birds of prey and jackals. Then by the order of Vyas, king Dhritrashtra and the Pandavas led by Yudhishthir, with Vasudev and the women went to the field of battle. 10. The widowed women saw there the slain brothers, sons, fathers and friends eaten by jackals, crows, rakshases and night-rovers. Seeing the place like the pleasure ground of Rudra, the crying women came down from their cars. The women of the family of Bharat,

विक्रोशन्त्यो रिपेतिर ॥ १३ ॥ अदृष्टपूर्वं पश्यन्त्यो दुःखार्ता भरतस्त्रियः । शरीरेष्व स्खलन्नन्या न्यपतंश्चापरा भुवि ॥ १४ ॥ श्रान्तानाञ्चाप्यनाथानां नासीत् काचन चेतना । पाञ्चालकुरुयोषाणां कृपणं तदभून्महत् ॥ १५ ॥ दुःखोपहतचित्ताभिः समन्तादनुनादितम् । दृष्ट्वायोधनमत्युग्रं धर्मज्ञा सुबलात्मजा ॥ १६ ॥ ततः सा पुण्डरीकाक्षमामन्त्र्य पुरुषोत्तमम् । कुरूणां वैशसं दृष्ट्वा दुःखाद्वचनमब्रवीत् ॥ १७ ॥ पश्यैताः पुण्डरीकाक्ष स्नुषा मे निहतेश्वराः । प्रकीर्णकेशाः क्रोशन्तीः कुररीरिव माधव ॥ १८ ॥ अमूस्त्वभिसमागम्य स्मरन्त्यो भरतर्षभान् । पृथगेवाभ्यधावन्त पुत्रान् भ्रातॄन् पितॄन् पतीन् ॥ १९ ॥ वीरसूभिर्महाबाहो हतपुत्राभिरावृतम् । क्वचिच्च वीरपत्नीभिर्हतवीराभिरावृतम् ॥ २० ॥ शोभितं पुरुषव्याघ्रैर्भीष्मकर्णाभिमन्युभिः । द्रोणद्रुपदशल्यैश्च ज्वलद्भिरिव पावकैः ॥ २१ ॥ काञ्चनैः कवचैर्निष्कैर्मणिभिश्च महात्मनाम् ।

निवास स्थानको देखकर पुकारती हुई स्त्रियां बहुमूल्य सवारियों से उतरीं । १३ । भरतवंशियों की स्त्रियां दुःख से पीडामान पूर्व में कभी न देखेहुये उसनाशको देखकर कोई शरीरों पर गिरीं और कोई पृथ्वीपर गिरनेवालीहुईं । १४ । पांचाल और कौरवोंकी उन अनाथ और थकीहुई स्त्रियों को कुछ चेतनहीं रहा यह बड़ा दुःख हुआ । १५ । वह धर्मज्ञ गान्धारी दुःखितचित्त स्त्रियों से चारोंओरको शब्दायमान बड़ी भयानकरूप युद्धभूमिको देखकर । १६ । फिर पुरुषोत्तम श्री कृष्णजी को समक्ष में करके इस वचन को बोली । १७ । हे कमललोचन माधव जी इन विधवा शिरके बालों को फैलानेवाली कुररी के समान पुकारनेवाली मेरी पुत्रवधुओं को देखो । १८ । यह स्त्रियां पृथक् २ पुत्र भाई पिता और सुहृदोंको मिलती पतियों के गुणोंको याद करती पृथक् २ दौड़नेवाली हैं । १९ । हे महाराज यह रणभूमि वीरोंके उत्पन्न करने वाली और मृतक पुत्रवाली स्त्रियों से संयुक्त है कहीं उनवीरों की स्त्रियों से संयुक्त है जिनके कि वीर भर्ता मारेगये । २० । कहीं ज्वलित अग्नि के समान पुरुषोत्तम कर्ण, भीष्म अभिमन्यु द्रोणाचार्य, द्रुपद और शल्य से शोभायमान है । २१ । महात्माओं के स्वर्णमयी कवच निष्कमणि बाजूबन्द केयूर और मालाओं से अलंकृत । २२ ।

much distressed at the unwonted scene of destruction fell down on the *corpses* or bare earth. The helpless women of the *Panchals* and *Kauravas* lost their senses with the excess of grief. 15. Virtuous Gandhari seeing the ground made dreadful by the presence of the crying women thus addressed Shri Krishn — "Look at my widowed daughters-in-law crying loud with dishevelled hair. They are lamenting for their sons, brothers, fathers, kinsmen and husbands. *The field of battle is full of women whose sons and husbands are dead.* Here and there are lying glorious *Karan*, *Bhishm*, *Abhimanyu*, *Drona*, *Drupad* and *Shalya*. The golden armours, ornaments, diadems and

अङ्गदैर्हस्तकेयूरैः स्रग्भिश्च समलंकृतम् ॥ २२ ॥ वीरबाहुविसृष्टाभिः शक्तिभिः परिघै
रपि । खड्गैश्च विविधैस्तीक्ष्णैः सशरैश्च शरासनैः ॥ २३ ॥ क्रव्यादसंघैः सहितैस्तिष्ठद्भि
र्विविधैः क्वचित् । क्वचिदाक्रीडमानैश्च शयानैरपरैः क्वचित् ॥ २४ ॥ एतदेवंविधं
वीर संपश्यायोधनं विभो । पश्यमाना हि दह्यामि शोकेनाहं जनार्दन ॥ २५ ॥ पाञ्चा
लानां कुरूणाञ्च विनाशे मधुसूदन । पञ्चानामिव भूतानामहं वधमचिन्तयम् ॥ २६ ॥
तान् सुपर्णाश्च गृध्राश्च विकर्षन्त्यसृगुक्षितान् । निगृह्य कवचेषूग्रा भक्षयन्ति सहस्रशः
॥ २७ ॥ जयद्रथस्य कर्णस्य तथैव द्रोणभीष्मयोः । अभिमन्योर्विनाशञ्च कश्चिन्तयि
तुमर्हति ॥ २८ ॥ शयनान्युचिताः सर्वे मृदूनि विमलानि च । विपन्नास्तेऽद्य वसुधां विवृ
तामधिशेरते ॥२९॥ इति दुःखतरं किं नु केशव प्रतिभाति मे । नूनमाचरितं पापं मया
पूर्वेषु जन्मसु ॥ ३० ॥ या पश्यामि हतान् पुत्रान् पौत्रान् भ्रातॄंश्च केशव । एवमार्त्ता
विलपती ददर्श निहतं सुतम् ॥३१ ॥

इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि स्त्रीणां युद्धभूमिदर्शने षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

वीरोंकी भुजाओं से छोड़ी हुई शक्ति परिघ और नानाप्रकार के तीक्ष्ण खड्ग बाणों समेत धनुषों से सुशोभित हैं । २३ । प्रसन्नचित्त कहीं साथ निवास करनेवाले कहींक्रीड़ा करनेवाले कहीं सोनेवाले और कहीं मांसभक्षी राक्षसों से संयुक्त हैं । २४ । हे समर्थ वीर श्रीकृष्णजी इसप्रकार की रणभूमि को देखोमैं इसको देखकर शोकमें भस्महुई जाती हूं । २५ । हे मधुसूदनजी मैंने पाञ्चाल और कौरवों के नाशमें पांचो तत्वोंके भी नाशको ध्यान कियाहै । २६ । रुधिरसे भरे गरुड़ और गिद्ध उनको खैंचते हैं और हजारों गिद्ध चरणोंसे पकड़कर उनको भक्षण करते हैं । २७ । कौन मनुष्य जयद्रथ, कर्ण, द्रोणाचार्य, भीष्म और अभिमन्यु से नाशकी चिन्ताकरने के योग्यहै । २८ । जो सब पूर्वसमय में कोमल शय्यों पर सोते थे अब वह मृतकहोकर इसविस्तृत भूमि पर सोते हैं । २९ । इससे अधिक कौनसा दुःख मुझको दिखाई देताहै निश्चय करके विदित होता है कि मैंने पूर्व जन्ममें पाप कियाथा । ३० । हे माधवजी जो मैं पुत्र भाई और पिताओंको मृतक देखतीहूं इसप्रकार पीड़ावान् विलाप करनेवालीने मृतकपुत्रकोदेखा ३१

garlands of the warriors are lying pell mell with the spears, clubs, swords, arrows and bows. 23. Those who lived, played and slept together are now surrounded by birds of prey. I am burning with grief at the sight of this battle field. 25 I see the destruction of the five elements with that of the Kauravas and Panchals Vultures and garurs are dragging the blood stained bodies and eating their flesh Who could think of the slaughter of Jayadrath Karan, Drona, Bhishm and Abhimanyu! Those who slept on soft beds are now lying dead on bare earth. What trouble can be greater to me than this! Surely I committed a sin in my former birth that I see sons, brothers and fathers lying dead here." Thus lamenting she saw the dead body of her son. 31.

वैशम्पायन उवाच । ततो दुर्य्योधनं दृष्ट्वा गान्धारी शोकमूर्छिता । सहसा न्यपतद्भूमौ छिन्नेव कदली वने ॥ १ ॥ सा तु लब्ध्वा पुनः संज्ञां विक्रुश्य च पुनः पुनः । दुर्य्योधनमभिप्रेक्ष्य शयानं रुधिरोक्षितम् ॥ २ ॥ परिष्वज्य च गान्धारी कृपणं पर्य्यदेवयत् । हा हा पुत्रेति शोकार्त्ता विललापाकुलेन्द्रिया ॥ ३ ॥ वारिणा नेत्रजेनोरः सिञ्चन्ती शोकतापिता । समीपस्थं हृषीकेशमिदं वचनमब्रवीत् ॥ ४ ॥ उपस्थितेऽस्मिन् संग्रामे ज्ञातीनां संक्षये विभो । मामयं प्राह वार्ष्णेय प्राञ्जलिर्नृपसत्तमः । अस्मिन् ज्ञातिसमुद्धर्षे जयमम्बा ब्रवीतु मे ॥ ५ ॥ इत्युक्ते जानती सर्वमहं स्वव्यसनागमम् । अब्रवं पुरुषव्याघ्र यतो धर्मस्ततो जयः ॥ ६ ॥ इत्येवमब्रुवं नैनं पूर्वं शोचाम्यहं सुतम् । धृतराष्ट्रं तु शोचामि कृपणं हतबान्धवम् ॥ ७ ॥ अमर्षणं युधां श्रेष्ठं कृतास्त्रं युद्धदुर्मदम् । शयानं वीरशयने पश्य माधव मे सुतम् ॥ ८ ॥ योऽयं मूर्द्धाभिषिक्तानामग्रे याति परन्तपः ।

अध्याय १७ ॥

वैशम्पायन बोले कि शोकसे पीड़ावान गांधारी दुर्योधनको मरा हुआ देखकर अकस्मात् ऐसे पृथ्वीपर गिरपड़ी जैसे कि वनमें टूटाहुआ केलेका वृक्षहोता है । १ । फिर उसने सचेतताको पाकर पुकारकर और विलाप करके उस पृथ्वीपर पड़ेहुये रुधिरसे लिप्त दुर्योधनको देखकर । २ । हृदयसे लगाया और दुःखका विलाप किया शोकसे पीड़ावान् महाव्याकुल चित्त हायपुत्र हायपुत्र इसरीतिसे विलाप करनेवाली । ३ । अपनी छातीको नेत्रोंके जलसे सींचती महादुःखी उस गान्धारीने समीप वर्त्तमान श्रीकृष्णजी से यह वचन कहा । ४ । कि हे समर्थ इस युद्धके और जातवालों के नाशके वर्त्तमान होनेपर इस हाथ जोड़नेवाले महाराज दुर्योधनने मुझसे यह कहा कि हे माता जातवालों के युद्ध में मेरी विजयको कहो । ५ । हे पुरुषोत्तम उसके ऐसा कहनेपर मैं अपने सब दुःख के आगमन को जानतीहुई बोली कि जिधर धर्म्म है उधरही विजय है । ६ । हे प्रभु मैंने पूर्व्व समय में इस प्रकार कहाथा मैं इसको नहीं शोचती हूं मैं धृतराष्ट्रका शोच करती हूं जो दीन और बांधव रहित है । ७ । हे माधवजी इस अशान्त और मस्त्रज्ञ युद्ध दुर्मद और शूर वीरों में श्रेष्ठ मेरे पुत्रको वीरों के शयनपर सोता देखो । ८ । जो यह शत्रुसंतापी

CHAPTER XVII

Vaishampayan said, "Seeing the corpse of Duryodhan, Gandhari fell down on earth with grief like a plantain tree cut down in a forest. When she regained conciousness, she wept bitterly and embraced the blood stained corpse of Duryodhan, lying in great grief and saying "Alas son!" Washing her breast with tears of grief, she said to Krishna, "At the commencement of the great war, Duryodhan asked my blessing with joined hands to gain victory over his kinsmen. 5. I knew the great grief which was in store for me and replied that

सोऽयं पांसुषु शेतेऽद्य पश्य कालस्य पर्ययम् ॥ ९ ॥ ध्रुवं दुर्योधनो वीरो गतिं न सुलभां गतः । तथा ह्यभिमुखः शेते शयने वीरसेविते ॥ १० ॥ यः शेते महाबाहुर्बलवान् सत्यविक्रमः । सिंहेनेव द्विपः संख्ये भीमसेनेन पातितः ॥ ११ ॥ विदुरं ह्यवमन्यैष पितरं चैव मन्दभाक् । बालो वृद्धावमानेन मन्दो मृत्युवशं गतः । १२ । इदं कृच्छ्रतरं पश्य पुत्रव्यापि वधान्मम । यदिमाः पर्युपासन्ते हतान् शूरान् रणे स्त्रियः ॥ १३ ॥ कथं नु शतधा नेदं हृदयं मम दीर्यते । पश्यन्त्या निहतं पुत्रं पुत्रेण सहितं रणे ॥ १४ ॥ यदि चाप्यागमाः सन्ति यदि वा श्रुतयस्तथा । ध्रुवं लोकानवाप्तोऽयं नृपो बाहुबलार्जितान् ॥ १५ ॥

इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धार्या दुर्योधनदर्शने

सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

महाराजाओं के भी अग्रगामी होकर चलताथा अब वह इस पृथ्वीकी रजमें सोता है समयकी विपरीतताको देखो ।९। निश्चय करके वीर दुर्योधनने दुष्प्राप्यगतिको पाया इस प्रकार सम्मुख वीरों से सेवित शयनपर सोता है ।१०। युद्धमें भीमसेनके हाथसे गिरायाहुआ यह सत्य पराक्रमी बलवान् महाबाहु ऐसे सोताहै जैसे कि सिंहके हाथसे माराहुआ हाथी सोताहै ।११। यह अभागा अज्ञान निर्बुद्धी विदुरजी समेत पिताकोभी अपमानकरके वृद्धोंकी अवज्ञासे मृत्युके आधीनहुआ ।१२। पुत्रके मरनेसेभी अधिक इस मेरे दुःखको देखो जो यह स्त्रियां युद्धभूमि चारोंओर से मृतकशूरोंके पास नियत हैं ।१३। युद्धमें पौत्र समेत मरेहुये अपने पुत्रको मुझ देखनेवाली का [illegible] हृदय कैसे सौटुकडे नहीं होताहै ।१४। जो शास्त्र और श्रुतियां सत्य हैं तो निश्चय करके इस राजाने अपने भुजबलों से प्राप्त लोकों को पाया ।१५।

victory should fall on the side of Dharma. I said this before and therefore I donot grieve for him. I grieve for Dhritrashtra who is helpless and has lost all his kinsmen. This dissatisfied prince, brave in war and best of warriors, my son lies here in the field of battle. This great destroyer of foes, who used to lead kings, now sleeps on dust. Look at the change of time. Surely brave Duryodhan has secured regions unattainable by others, and now lies here before me on the bed of warriors 10. Slain by *Bhim*, this great warrior of true prowess sleeps like an elephant slain by a lion. This unfortunate and unwise fool disregarded the advice of Vidur and his father, and met his death for disobeying his elders. A grief greater than that of my son's death overwhelms me, when I see these women round the bodies of the dead warriors. Why does my heart not break into a hundred pieces at the sight of my son and grandson lying dead together? Surely this prince has got good regions with the strength of his arms, if our religious books and the Vedas are right " 15.

गान्धार्युवाच । पश्य माधव पुत्रान्मे शतसंख्याञ्जितक्लमान् । गदया भीमसेनेन भूयिष्ठं निहतान्रणे ॥ १ ॥ इदं दुःसहतरं मेऽद्य यदिमा मुक्तमूर्धजाः । हतपुत्रा रणे बालाः परिधावन्ति मे स्नुषाः ॥ २ ॥ प्रासादतलचारिण्यश्चरणैर्भूषणान्वितैः । आपन्ना यत्स्पृशन्तीमा रुधिरार्द्रां वसुन्धराम् ॥ ३ ॥ गृध्रानुत्सारयन्त्यश्च तथा गोमायुवायसान् । शोकेनार्ता विघूर्णन्त्यो मत्ता इव चरन्त्युत ॥ ४ ॥ एतां पश्य मे पार्थिवसुतामेतां लक्ष्मणमातरम् । राजपुत्रीं महाबाहो मनो न व्युपशाम्यति ॥ ५ ॥ अन्याश्चान्यासु ... कापाताकुण्डलमुखं । ... बन्धोः शिरः कृष्ण गृहीत्वा पश्य तिष्ठतीम् ॥ ६ ॥ पूर्वजातिकृतं पापं मन्ये नाल्पमिवानघ । एताभिरनवद्याभिर्मया चैवाल्पमेधया ॥ ७ ॥ कुवलयपत्रश्यामानि पुण्डरीकाक्ष योषिताम् । अनवद्यानि वक्त्राणि तापयत्येव रश्मिवान् ॥ ८ ॥ एष दुःशासनः शेते शूरेणामित्रघातिना । पीतशोणितसर्वाङ्गो भीमेन युधि पातितः ॥ ९ ॥ गदया भीमसेनेन पश्य माधव मे सुतम् । द्यूतक्लेशाननुस्मृत्य द्रौपद्या

अध्याय १८ ॥

गान्धारी बोली हे माधव जी युद्धों परिश्रम रहित मेरे सौ पुत्रों को भीमसेन की गदा से कठिन घायल हुए देखो । १ । अब यह मेरा बड़ा दुःख है जो खुले केश मृतक पुत्रवाली मेरी पुत्रवधू बाला युद्ध भूमिमें मेरे चारों ओर दौड़ती हैं । २ । भूषणों से अलंकृत चरणों से महलोंमें फिरनेवाली स्त्रियां अपनी आपत्तिमें फँसकर इस रुधिर से आर्द्र पृथ्वीको स्पर्श करती हैं यह कठिनतासे उनके ऊपर बैठेहुये गिद्ध शृगाल और काकोंको उड़ातीहैं और दुःखसे पीड़ावान् मतवालों के समान घूमती हैं । ४ । हे महाबाहु इस राजपुत्री लक्ष्मण की माताको देखकरमेरा चित्त शान्तीको नहीं पाताहै । ५ । हे श्रीकृष्णजी शरीर सेजुदे सुन्दर कुण्डलऔर वेणी रखनेवाले अपने बांधवके शिरको पकड़कर नियत होनेवाली अन्य स्त्रियोंको देखो । ६ । हे निष्पाप इन निर्दोष स्त्रियोंसे और मुझ निर्बुद्धी से पिछले जन्ममें किया हुआपाप थोड़ा नहीं है । ७ । कमललोचन स्त्रियोंके मुख जोकि फूले कमल के समान और निर्दोष हैं उनको दुःख रूप सूर्य संतप्त कररहा है । ८ । शत्रुओं के मारनेवाले शूर भीमसेनके हाथ से युद्धमें गिरायाहुआ रुधिर से लिप्त सर्वाङ्ग

CHPTER XVIII

Gandhari continued, " Look at my hundred sons destroyed by Bhim's mace O Madhav, My youthful daughters-in-law running on the field of battle with dishevell'ed-hair enhance my grief. They who used to tread the palace ground with their ornamented feet, touch the bloody soil of the field of battle, and unable to keep away the jackals and crows, they are running a mad race. My mind is deprived of peace at the sight of Lakshman's mother, 5. Other women are hold ing up the jewelled heads of their kinsmen. These innocent women and I have committed no small sin in our former life. The lotus like

चोदितेन च ॥ १० ॥ उक्ताह्यनेन पाञ्चाली सभायां द्यूतनिर्जिता । प्रियं चिकीर्षता भ्रातुः कर्णस्य च जनार्दन ॥ ११ ॥ सहैव सहदेवेन नकुलेनार्जुनेन च । दासभार्यासि पाञ्चालि क्षिप्रं प्रविश नो गृहम् ॥ १२ ॥ ततोऽहमब्रुवं कृष्ण तदा दुर्य्योधनं नृपम् । मृत्युपाशपरिक्षिप्तं शकुनिं पुत्र वर्जय ॥ १३ ॥ एष दुःशासनः शेते विक्षिप्य विपुलौ भुजौ । निहतो भीमसेनेन सिंहेनेव महागजः ॥ १४ ॥ अत्यर्थमकरोद्रौद्रं भीमसेनोऽत्यमर्षणः । दुःशासनस्य यत् क्रुद्धोऽपिबच्छोणितमाहवे ॥ १५ ॥

इति श्रीस्त्रीविलापपर्वणि गान्धारी विलापे अष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

यह दुश्शासन सोताहै । ९ हे माधवजी द्यूतके दुःख को स्मरण करके द्रौपदी की प्रेरणापूर्वक भीमसेन की गदा से मृतक हुये मेरे पुत्रको देखो । १० । हे जनार्दनजी कर्णका और भाई दुर्योधन के प्रिय करनेकी अभिलाषा इस दुश्शासन ने सभाके मध्य में द्यूत में पराजित द्रौपदी से यह वचन कहे ११ । कि हे द्रौपदी तू सहदेव नकुल और अर्जुन समेत दासीहुई शीघ्र हमारे घरों में प्रवेश करो । १२ । हे श्रीकृष्णजी उस समय मैंने राजा दुर्योधन से कहा कि हे पुत्र मृत्युकी फांसी में बँधे हुये शकुनिको निषेध करो । १३ । जैसे कि बड़ाहाथी सिंहसे माराजाताहै उसी प्रकार भीमसेनके हाथसे मृतक यह दुश्शासन भुजाओं को फैलाकर सोताहै ।१४। अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन ने बड़ा भयकारी कर्म्म किया जो क्रोधयुक्तने युद्धमें दुश्शासन के रुधिर को पान किया १५ ।

---

faces and eyes of these innocent women are being burnt by the sun of grief. Slain by Bhim the destroyer of foes and bleeding in all the parts of his body, Dushasan lies here. He was killed by the mace of Bhim who remembered the wrongs done to Draupadi at the occasion of gambling. Desirous of pleasing Karan and Duryodhan he said to Draupadi who was won in gambling, "You as well as Sahadev, Nakul and Arjun are made slaves Nakehasta to go in to our house. 12. I then warned Duryodhan to keep back Shakuni who was tied in death's string. Dushasan lies here with outstretched arms like a huge elephant slain by a lion. Bhim did a very cruel deed in his anger as he drank Dushasan's blood in the field of battle." 15

—卐—

गान्धार्युवाच । एष माधव पुत्रो मे विकर्णः प्राज्ञसम्मतः । भूमौ विनिहतः शेते भीमेन शतधा कृतः ॥ १ ॥ गजमध्येगतः शेते विकर्णो मधुसूदन । नीलमेघ परिक्षिप्तः शरदीव निशाकरः ॥ २ ॥ अस्य मांसाभिलिप्सून् गृध्रानेषा तपस्विनी । वारयन्ती निशं बाला न च शक्नोति माधव ॥ ३ ॥ युवा वृन्दारकः शूरो विकर्णः पुरुषर्षभ । सुखोचितः सुखार्हश्च शेते पांसुषु माधव ॥ ४ ॥ कर्णिनालीकनाराचैर्भिन्नमर्माणमाहवे । अद्यापि न जहात्येनं लक्ष्मीर्भरतसत्तमम् ॥ ५ ॥ एष संग्रामशूरेण प्रतिज्ञां पालयिष्यता ॥ दुर्मुखोऽभिमुखः शेते हतोऽरिगणहा रणे ॥ ६ ॥ एतस्याद्यमुखे सौम्य श्यामा नैवोपपद्यते । स कथं दुर्मुखोऽमित्रैर्हतो विबुधलोकजित् ॥ ७ ॥ चित्रसेनं हतं भूमौ शयानं मधुसूदन । धार्तराष्ट्रमिमं पश्य प्रतिमानं धनुष्मताम् ॥ ८ ॥ तं चित्रमाल्याभरणं युवत्यः शोककर्शिताः । क्रव्यादसंघैः सहिता रुदत्यः पर्युपासते ॥ ९ ॥ युवा वृन्दारको नित्यं प्रवर

अध्याय १९ ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी यह ज्ञानियोंका अङ्गीकृत भीमसेनके हाथसे सैकड़ों खण्डकिया हुआ मेरा पुत्र विकर्ण इस पृथ्वी पर सोताहै । १ । हे मधुसूदनजी वह विकर्ण मरेहुये हाथियों के मध्य में ऐसे सोता है जैसे कि नीले बादलों से घिरा हुआ शरद्ऋतुका चन्द्रमा होताहै । २ हेमाधवजी उसकी तपस्विनी बाला भार्या मांसके अभिलाषी गिद्ध और कागोंको हटाती है परन्तु हटाने को समर्थ नहीं होती है । ३ । हेपुरुषोत्तम माधवजी तरुण देवतारूप शूरवीर सुखपूर्वक निवास करने वाला विकर्ण पृथ्वीकी धूलपर सोताहै । ४ । युद्धमें कर्णी नालीक और नाराच नाम बाणोंसे टूटे मर्मस्थलोंवाले भरतर्षभ इस विकर्णको अबभी शोभानहीं छोड़तीहै । ५ । युद्धमें शत्रुओंके समूहोंका मारनेवाला सम्मुख रहनेवाला यह दुर्मुख इसयुद्ध भूमिमें वीरप्रतिज्ञा पूरीकरने के अभिलाषी भीमसेन के हाथसे मृतक होकरसोताहै । ६ । हे स्वामी युद्धके मुखपर जिसकी सम्मुखता करनेवाला कोईनहीं वह देव

CHAPTER XIX

Gandhari continued, " Here lies, O Madhav, wise Vikarn cut into hundreds of parts by Bhim. He lies slain among elephants like the the winter moon surrounded by clouds. His good youthful wife is trying to keep away crows and vultures from his body, but finds it a difficult task to perform. The youthful, godlike warrior Vikarn, who lived a life of ease, sleeps on dust. The wealth of beauty does not leave him, although he has received arrow wounds in all his vital parts. 5, Valiant Durmukh the destroyer of foes fell a prey to the brave vow of Bhim How was invincible Durmukh, the winner of divine regions, slain by foes? Look at the dead figure of the great archer Chitrasen lying on the ground. The lamenting women and a troop of flesh eaters are standing by his body decked with garlands

शोणितेऽधिवितः । विविंशतिरसौ शेते ध्वस्तः पांशुषु माधव ॥ १० ॥ शरसंकृत्तवर्माणं वीरं विशसने हतम् । परिवार्यासते गृध्राः परिविंशतिविंशतिम् ॥ ११ ॥ प्रविश्य समरे वीरः पाण्डवानामनीकिनीम् । स वीरशयने शेते पुनः सत्पुरुषोचिते ॥ १२ ॥ दुःसहस्यैतदाभाति शरीरं संवृतं शरैः । गिरिरात्मरुहैः फुल्लैः कर्णिकारैरिवावृतः ॥ १३ ॥ शातकौम्भ्या स्रजा भाति कवचेन च भास्वता । अग्निनेव गिरिः श्वेतो गतासुरपि दुःसहः ॥ १४ ॥

इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारीविलापे एकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

लोकका विजय करनेवाला दुर्मुख किसप्रकार शत्रुओंके हाथसे मारागया । ७ । हे मधुसूदनजी इस धूसरा छूके पुत्र धनुषधारी पृथ्वीपर सोनेवाले चित्रसेनकी मृतक मूर्तिको देखो । ८ । शोकसे पीड़ित रोनेवाली स्त्रियां मांसभक्षियों के समूहों समेत वस्त्रजड़ाऊ माला और भूषण रखनेवाले चित्रसेनके पास नियतहैं । ९ । हेमाधवजी यह तरुण सदैव उत्तम स्त्रियोंसे सेवित देवतारूप विविंशती धूलमें पड़ासोताहै ।१०। हे श्रीकृष्णजी देखो कि गिद्ध इस बाणों से टूटेकवच वीर विविंशति को बड़ी रणभूमि में घेरकर बैठे हैं । ११ । वहशूर युद्धमें पाण्डवों की सेनामें प्रवेश कर के सत्पुरुषों के योग्य वीरसय्या परसोताहै । १२ । दुस्सहका यह शरीर बाणोंसेयुक्त ऐसा शोभायमानहै जैसे कि अपने ऊपर वर्त्तमान कर्णिकार के पुष्पोंसे व्याप्त पर्वत होताहै । १३ । यह मृतकभी दुःखसे सहने के योग्य स्वर्णमाला और प्रकाशित कवचसमेत ऐसे प्रकाश मानहै जैसे कि अग्निसे श्वेतपर्वत प्रकाशितहोता है । १४।



and other ornaments. The youthful Vivinshati of god like form, who always enjoyed the society of good women, lies here on dust. 10. Vultures are standing round his body of which the armour is broken asunder by arrows. Having entered the Pandav army, that great warrior lies dead on the warlike bed. The body of Dussah, pierced through by arrows, looks glorious like a hill overgrown with the blooming Karnikara. With his gold garland and bright armour his body looks glorious like a white hill illumined by fire. " 14.



भिन्नचर्माणं विद्धगोधिराटमसितेक्षणाः । न शक्नुवन्ति विहगा विनिर्वर्तयितुमातुराः ॥९॥ उत्तरं चाभिमन्युञ्च काम्बोजञ्च सुदक्षिणम् । शिशूनेतान् हतान् पश्य लक्ष्मणञ्च सुदर्शनम् । आयोधनशिरोमध्ये शयानं पश्य माधव ॥ १० ॥

इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारीवाक्ये विंशोऽध्यायः २० ॥



गान्धार्युवाच । एष वैकर्त्तनः शेते महेष्वासो महाबलः । ज्वलितानलवत् संख्ये संशान्तः पार्थतेजसा ॥ १ ॥ पश्य वैकर्त्तनं कर्णं निहत्यातिरथान् बहून् । शोणितौघपरिक्लिन्नं शयानं पतितं भुवि ॥ २ ॥ अमर्षी दीर्घरोषश्च महेष्वासो महारथः । रणे विनि

घायल होते विराटको देखकर पक्षियों के हटानेको समर्थ नहीं होती हैं । ९ उत्तर, अभिमन्यु काम्बोज, सुदक्षिण और सुन्दर दर्शन लक्ष्मण इन सब मृतक बालकोंको देखो हे माधवजी इन सब को युद्धभूमि में सोता हुआ देखो १० ॥



अध्याय २१ ॥

गान्धारी बोली यह बड़ा धनुषधारी महारथी कर्ण सोताहै यह अर्जुन के तेज से युद्धमें ज्वलित अग्निके समान शान्त होगया । १ । बहुतसे रथियोंको मारकर पृथ्वीपर पड़ा सोताहै और रुधिरसेलिप्त शरीर सूर्यके पुत्र कर्णको देखो । २ । यह अप्रसन्नचित्त महाक्रोधी बड़ा धनुषधारी शूरवीर युद्धमें अर्जुन के हाथ से मारा हुआ सोता है । ३ । मेरे महारथी पुत्र पांडवोंके भयसे जिसको अग्रवर्ती करके

women try to scare them away, but their attempt is futile. Look at Uttar, Abhimanyu, Camboj, Sudakshin and beautiful Lakshman. All these youthful boys are lying dead, O Madhav." 10.



CHAPTER XXI

Gandhari said, "Here lies the great archer *Karan*, quenched like fire, slain in battle by Arjun. Look at the blood stained body of *Karan* the son of *Surya* who lies dead on earth after slaying many warriors. There lies slain by *Arjun* he who led the *Kauravas* to fight like an elephant chief leading his herd. He was slain by Arjun

हतः शेते शूरो गाण्डीवधन्वना ॥३॥ यं स्म पाण्डवसन्त्रासान्मम पुत्रा महारथाः। प्रायुध्यन्त पुरस्कृत्य मातङ्गा इव यूथपम् ॥ ४ ॥ शार्दूलमिव सिंहेन समरे सव्यसाचिना। मातङ्गमिव मत्तेन मातङ्गेन निपातितम् ॥ ५ ॥ समेताः पुरुषव्याघ्र निहतं शूरमाहवे। प्रकीर्णमूर्धजाः पत्न्यो रुदन्त्यः पर्युपासते ॥ ६ ॥ उद्विग्नः सततं यस्मात् धर्मराजो युधिष्ठिरः। त्रयोदशसमा निद्रां चिन्तयन्नाध्यगच्छत ॥७॥ स भूत्वा शरणं वीरो धार्त्तराष्ट्रस्य माधव। भूमौ विनिहतः शेते वातरुग्ण इव द्रुमः ॥ ८ ॥ पश्य कर्णस्य पत्नीं त्वं वृषसेनस्य मातरम्। लालप्यमानां करुणं रुदतीं पतितां भुवि ॥ ९ ॥ आचार्यशापोऽनुगतो ध्रुवं त्वां यदग्रसच्चक्रमिदं धरा ते। ततः शरेणापहृतं शिरस्ते धनञ्जयेनाहव शत्रुमध्ये ॥ १० ॥ हा हा धिगेषा पतिता विसंज्ञा समीक्ष्य जाम्बूनदबद्धकक्ष्यम्। कर्णं महाबाहुमदीनसत्त्वं सुषेणमाता रुदती भृशार्ता ॥ ११ ॥ सा वर्त्तमाना पतिता पृथिव्यामुत्थाय दीना पुनरेव चैषा। कर्णस्य वक्त्रं परिजिघ्रमाणा रोरूयते पुत्रवधाभितप्ता॥१२॥

इती स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारी वाक्ये एकविंशोध्यायः २१ ॥

अच्छे प्रकार ऐसे युद्ध करनेवाले हुये जैसे कि हाथी अपने प्रधान हाथी को अग्रवर्ती करके उत्तम युद्ध करते हैं। ४। वह युद्ध में अर्जुन के हाथ से ऐसे गिराया गया है कि सिंहसे शार्दूल और मतवाले हाथी से मतवालाहाथी गिराया जाता है। ५। हे पुरुषोत्तम यह बिखरेहुयेबाल रोदन करती इकट्ठी स्त्रियां इस युद्ध में मरेहुये शूरके चारोंओर नियत हैं। ६। सदैव जिससे व्याकुल भयभीत और चिंता करके धर्म्मराज युधिष्ठिरने तेरह वर्षतक निद्रा को नहीं पाया। ७। वहवीर दुर्योधनका रक्षाश्रयहोकर ऐसेमराहुआ पृथ्वीपरसोताहै जैसेकि वायुसे टूटाहुआवृक्ष होताहै। ८। तुम कर्णकी स्त्री वृषसेनकीमाता पृथ्वीपर गिरी रोदन करतीहुई और शोककीवार्त्ता करनेवाली को देखो ९ निश्चय करके. गुरुका शाप तुझको प्राप्तहुआ जो पृथ्वी ने इस तेरे रथचक्रको दबालिया इससे पीछे युद्धको शोभा देनेवाले अर्जुन के बाण से तेराशिर काटागया।१०। हायरधिक्कार यह रोदन करती अत्यन्त पीड़ावान् शूरसेनकी माता इस सुवर्ण के बाजूबन्दसे अलंकृत बड़े पराक्रमी महाबाहु कर्णको देखकर अचेत पड़ी है। ११ । यह पृथ्वीपर पड़ीहुई महादुःखी उठकर कर्णके मुखको सूंघती पुत्रके मरण शोकसे दुःखी रोती है १२ ॥

like a tiger slain by a lion or an elephant slain by an elephant. Lamenting women, with dishevelled hair, srround him. 6. He by whose fear Yudhishthir found no repose by day or night for thirteen years, lies here like a tree struck down by the wind. Look at Karan's wife, Vrishasen's mother, lamenting, crying and lying down on earth. Surely it was the preceptor's curse which made the earth grasp thy car wheel and Arjun's arrows to cut off thy head. 10. Alas! Shursen's mother lies insensible at the sight of Karan. She smells Karan's mouth and weeps for the death of her son. 12.

गान्धार्युवाच । आवन्त्यं भीमसेनेन भक्षयन्ति निपातितं । गृध्रगोमायवः शूरं बहुबन्धुमबन्धुवत् ॥ १ ॥ तं शृगालाश्च कङ्काश्च क्रव्यादाश्च पृथग्विधाः । तेन तेन विकर्षन्ति पश्य कालस्य पर्य्ययम् ॥ २ ॥ शयानं वीरशयने वीरमाक्रन्दकारिणम् । आवन्त्यं सहिता नार्यो रुदन्त्यः पर्युपासते ॥ ३ ॥ प्रातिपेयं महेष्वासं हतं भल्लेन वाह्लिकम् । प्रसुप्तमिव शार्दूलं पश्य कृष्ण मनस्विनम् ॥ ४ ॥ अतीव मुखवर्णोऽस्य निहतस्यापि शोभते । सोमस्येवाभिपूर्णस्य पौर्णमास्यां समुद्यतः ५ ॥ पुत्रशोकाभितप्तेन प्रतिज्ञां परिरक्षता । पाकशासनिना संख्ये वार्द्धक्षत्रिर्निपातितः ॥ ६ ॥ एकादश चमूर्भित्वा रक्ष्यमाणं महात्मना । सत्यं चिकीर्षता पश्य हतमेनं जयद्रथम् ॥ ७ ॥ सिन्धुसौवीरभर्त्तारं दर्पपूर्णं मनस्विनम् । भक्षयन्त्यशिवा गृध्रा जनार्दन जयद्रथम् ॥ ८ ॥ यदा कृष्णामुपादाय प्राद्रवत् केकयैः सह । तदैव वध्य पाण्डूनां जनार्दन जयद्रथः

अध्याय २२ ।

गान्धारी बोली कि गिद्ध और शृगाल भीमसेनके गिराये हुये राजा अवन्तीको जोकि शूरवीर और बहुत बान्धव रखनेवाले भाइयों से रहितके समान खातेहैं । १ । शृगाल कंक और काकआदिक अनेक मांसभक्षी उसको खैंचतेहैं समयकी विपरीतताको देखो ।२ । युद्ध करनेवाले शूरवीर शय्यापर सोनेवाले राजा अवन्तीके पास रोनेवाली स्त्रियां नियत हैं । ३ । हे श्रीकृष्णजी इस बड़े धनुषधारी और भल्ल से मृतकवनीपवंशी वाह्लीक को शार्दूलके समान सोताहुआ देखो । ४ । इस मरेहुये काभी मुखका वर्ण ऐसा शोभायमानहै जैसे कि पूर्णमासीका पूर्ण चन्द्रमाहोताहै ।५। पुत्रशोकसे दुःखी और प्रतिज्ञाको पूरा करनेवाले इन्द्रके पुत्र अर्जुन से युद्धमें जयद्रथ गिरायागया । ६ । प्रतिज्ञाको सत्य करनेके अभिलाषी अर्जुनने ग्यारह अक्षौहिणी सेनाको हटाकर महात्मासे रक्षित इस जयद्रथको मारा । ७ । हे जनार्दनजी देखो इस सिन्धुसौवीर देशके स्वामी अहंकारी साहसी जयद्रथको शृगाल और गिद्ध खातेहैं । ८ । हे जनार्दनजी जब यह जयद्रथ केकय देशियों समेत द्रौपदीको

CHAPTER XXII

Gandhari continued, " Vultures and jackals are eating the dead body of the prince of Avanti. Jackals and birds of prey drag his body. This is the change of tim ! Women are weeping by the dead body of the prince. *The great archer Vahlik of the family of Pratip* sleeps like a tiger. His face looks like the full moon. 5. Jayadrath lies slain by Arjun, who slew him to fulfil his vow while he was protected by eleven akshauhinis. Look at Jayadrath's body which is being dragged by jackals and vultures. He deserved death at the hands of the Pandavas, when he, in company with the people of *Kaikaya*, seized Draupadi. They spared his life then out of their

॥ ९ ॥ दुःशलां मानयद्भिस्तु तदा मुक्तो जयद्रथः । कथमद्य न तां कृष्ण मानयन्ति स्म
ते पुनः ॥ १० ॥ सैषा मम सुता बाला विलपन्ती सुदुःखिता । आत्मनात्मानमा
क्रोशति च पाण्डवान् ॥ ११ ॥ किं नु दुःखतरं कृष्ण परं मम भविष्यति । यत् सुता
विधवा बाला स्नुषाश्च निहतेश्वराः ॥ १२ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारीवाक्ये द्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥



पकड़ कर भागनेमें पाण्डवोंके हाथसे मारने के योग्यथा । ९ । उस समय दुश्शला के माननेवाले पाण्डवों के हाथसे जयद्रथ बचाथा हे श्रीकृष्ण अब उन पाण्डवों ने उस बहनोई को कैसे नहीं माना । १० । वह मेरी पुत्री बालक दुखी विलाप करती और पांडवोंको पुकारती और अपने शरीरको घायल करती है । ११ । हे श्रीकृष्ण जी इससे अधिक मेरा और कौनसा दुःख होगा जो बालक पुत्री विधवा; मृतक पति वाली है । १२ ।



regard for Dushala [Gandhari's daughter married to Jayadrath]. Why did they not spare him this time? My young daughter is weeping for him and wounding herself. What grief can be greater to me than the sight of my widowed daughter? 12.



गान्धार्य्युवाच । एष शल्यो हत शेते स क्षात्कुलमातुल । धर्मज्ञ तात धर्मराजेन संयुगे ॥ १ ॥ यस्त्वया स्पर्द्धते नित्य सर्वत्र पुरुषर्षभ । स एष निहत शेते मद्रराजो महारथ ॥ २ ॥ येन संगृह्णता तात रथमाधिरथेर्युधि ।जयार्थं पाण्डुपुत्राणां तथा तेजोवध कृत ॥ ३ ॥ हा हा धिकपश्य शल्यस्य पूर्णचन्द्रसुदर्शनम । मुख पद्म पलाशाक्ष काकैरादष्टव्रणम ॥४ ॥ युधिष्ठिरेण निहतं शल्यं समितिशोभनम । रुदन्त्य पर्युपासन्ते मद्रराजकुलस्त्रिय ॥ ५॥ एष शैलालयो राजा भगदत्त प्रतापवान् । गजाकुशधर श्रेष्ठ शेते भुवि निपातित ॥ ६ ॥ यतेन इविलपार्थस्य युद्धमासीत् सुदारुणम । लोमहर्षणमत्यर्थं शक्रस्येव हि ना यथा ॥ ७ ॥ योधयित्वा महाबाहुरथ पार्थं धन ञ्जयम । संशय गमयित्वाच कुन्तीपुत्रेण पातित ॥ ८ ॥ यस्य नास्ति समो लोके

अध्याय २१ ॥

गान्धारी बोली हे तात युद्धमें धर्मज्ञ धर्मराजसे माराहुआ साक्षात् नकुलका मामा यह शयन होताहै । १ । हे पुरुषोत्तम जो कि सदैव सर्वत्र तेरेसाथ ईर्षाकर ताथा वह बडा बलवान पराक्रमी मद्रकाराजा सोताहै । २ । युद्धमें कर्णके रथको पकडनेवाले जिन शल्यने पांडवोंकी विजय के निमित्त कर्णके तेजको क्षीणकिया । ३ । दुःखका स्थानहै और धिक्कार है कि शल्यके मुखको काकोंसे काटा हुआ देखो जोकि पूर्ण चन्द्रमाके समान सुन्दर दर्शन कमल पत्राम के समाननेत्रधारी और हास्ययुक्ता । ४ । राजा मद्रके कुलकी रोदन करनेवाली स्त्रियां इस युधिष्ठिर के हाथसे मरेहुये युद्धके शोभादेनेवाले शल्यके चारोंओर नियतहैं । ५ । यह पहाड़ी श्रीमान प्रतापवान् भगदत्त हाथीका अंकुश हाथमें रखनेवाला और पृथ्वीपर पड़ा हुआ सोता है । ६ । निश्चय करके इसकेसाथ पांडवोंका युद्ध बहुआ जो कि रोम भयकारी अत्यन्त कठिन शूर्मावोंका खड़ा करने वालाथा और इन्द्र औरवृत्रासुरके युद्ध के समान था । ७ । यह महाबाहु पांडव अर्जुन से युद्ध कर के और संशयको उत्पन्न करके कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरसे गिरायागया । ८ । लोकमें जिसकी

CHAPTER XXIII

Gandhari said, " Slain by Yudhishthir, here lies Shalya the maternal uncle of Nakul. The valiant king of Madra who always bore enmity towards you, is dead. He who drove Karna's car and diminished his glory for the sake of the Pandavas, has been slain. It is a matter of great grief that crows are eating away his beautiful face. The women of his family are lamenting his death. 5. Bhagdatta the glorious hill king sleeps with elephant's hook in his hand. His battle with the Pandavas was like that of Indra and Vritrasur. Having fought with Arjun, he was slain by Yudhishthir. Here lies Bhishma

शौर्य्ये धैर्य्ये च कश्चन । स एष निहतः शेते भीष्मो भीष्मकृदाहवे ॥९॥ पश्य शान्त
नवं कृष्ण शयानं सूर्य्यवर्चसम् । युगान्त इव कालेन पतितं सूर्य्यमम्बरात् ॥१०॥
एष तप्त्वा रणे शत्रूञ्छस्त्रतापेन वीर्य्यवान् । नरसूर्य्योऽस्तमभ्येति सूर्य्योऽस्तमिव केशव
॥११॥ शरतल्पगतं वीरं धर्मे देवापिना समम् । शयानं वीरशयने पश्य शूरनिषेविते
॥१२॥ अतूलपूर्णगाङ्गेयस्त्रिभिर्बाणैः समन्वितम् । उपधायोपधानाग्र्यं दत्तं गाण्डीव
धन्वना ॥१३॥ पालयानः पितुः शास्त्रमूर्ध्वरेता महायशाः । एष शान्तनवः शेते
माधवाप्रतिमो युधि ॥१४॥ धर्मात्मा तात धर्मज्ञः पारम्पर्य्येण निर्णये । अमर्त्य इव
मर्त्यः सन्नेष प्राणानधारयत् ॥१५॥ स्वयमेतेन शूरेण पृच्छ्यमानेन पाण्डवैः । धर्मज्ञ
नाहवे मृत्युराख्यातः सत्यवादिना ॥१६॥ धर्मेषु कुरवः कं नु परिप्रक्ष्यन्ति माधव ।

शूरता और बलपराक्रमके समान कोई नहीं है युद्धमें भयकारी कर्म्म करनेवाले यह
भीष्मजी आसन्नमृत्यु होकर सोतेहैं । ९ । हे श्रीकृष्णजी इससूर्य्यके समान तेजस्वी
सोनेवाले भीष्मजी को ऐसे देखो जैसे कि प्रलयकाल में कालसे प्रेरित आकाश से
गिराहुआ सूर्य्य होताहै । १० । हे केशवजी यह पराक्रमी नररूप सूर्य्य युद्ध में
शस्त्रोंके तापसे शत्रुओंको सन्तप्तकरके ऐसा अस्तंगत होताहै जैसे कि अस्ताचलपर
वर्त्तमान सूर्य्य होताहै । ११ । इस वीर्य्यको च्युत न करनेवाले अजेय शरशय्यापर
वर्त्तमान शूरवीरों से सेवित वीरशय्यापर सोनेवाले भीष्म को देखो । १२ । यह
गङ्गाजी के पुत्र पङ्खसे रहित तीनबाणों से बने अर्जुन के दियेहुये तकियेको शिरके
नीचे धरकर । १३ । पिताके आज्ञानुसारी ब्रह्मचारी महातपस्वी युद्ध में अनुपम
भीष्मजी सोते हैं । १४ । हे तात सब बातों के जाननेवाले नररूप होकर इस
धर्मात्माने ब्रह्मज्ञानके बलसे देवताओंकेसमान प्राणोंको धारणकियाहै पाण्डवोंसे पूछे
हुये इस शूरधर्म्मवान् सत्यवक्ता ने आप अपनी मृत्युको युद्धमें बतलादिया । १६ ।
हे माधवजी इस देवताके समान नरोत्तम देवव्रत भीष्म के स्वर्गवासी होनेपर कौरव
लोग धर्मों के विषय किससे पूछेंगे । २० । जोकि अर्जुनका विजेता और सात्यकी

the matchless warrior of the world. He is lying here like the sun fallen down at Pralaya. Having slain numerous warriors, he declines like a setting sun. 11. He is lying on the field of battle slain by Arjun. He observed a vow of celibacy and asceticism for his father's sake. This wise and virtuous being is sustaining his life by the power of the knowledge of Brahm, like a god. 15. Asked by the Pandavas this truthful man pointed them out the manner of his death. Whom will the Kauravas consult in the matter of dharm, when Devabrat Bhishm is dead? Look at Dronacharya, the preceptor of Arjun, Satyaki and all the Kauravas, lying on earth. He was master of the knowledge

गते देवव्रते स्वर्गं देवकल्पे महर्षभे ॥ १७ ॥ अर्जुनस्य विनेतारमाचार्यं सात्वकेस्तथा
तं पश्य पतितं द्रोणं कुरूणां द्विजसत्तमम् ॥ १८ ॥ अस्त्रं चतुर्विधं वेद यथैव त्रिदशे
श्वरः । भार्गवो वा महावीर्यस्तथा द्रोणोपि माधव ॥ १९ ॥ यं पुरोधाय कुरव आह्वय
न्ते स्म पाण्डवान् । सोयं शस्त्रभृतां श्रेष्ठो द्रोणः शस्त्रैः परिक्षतः ॥ २० ॥ धनुर्मुष्टिर
शीर्णश्च हस्तावापश्च माधव । द्रोणस्य निहतस्यापि दृश्यते जीवितो यथा ॥ २१ ॥ वेदा
यस्माच्च चत्वारः सर्वास्त्राणि च केशव । अनपेतानि वै शूराद्यथैवादौ प्रजापतेः ॥ २२ ॥
वन्दनार्हाविमौ तस्य बन्दिभिर्वन्दितौ शुभौ । गोमायवो विकर्षन्ति पादौ शिष्यशता
र्चितौ ॥ २३ ॥ द्रोणं द्रुपदपुत्रेण निहतं मधुसूदन । कृपी कृपणमन्वास्ते दुःखोपहत
चेतना ॥ २४ ॥ तां पश्य रुदतीमार्तां मुक्तकेशीमधोमुखीम् । हतं पतिमुपासन्तीं
द्रोणं शस्त्रभृतां वरम् ॥ २५ ॥ अग्नीनाहृत्य विधिवच्चितां प्रज्वाल्य सर्वशः । द्रोण

का गुरु है उसकौरवों के उत्तमगुरु द्रोणाचार्य को पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखो । १८ ।
हे माधवजी जैसे कि देवताओं के ईश्वर इन्द्र और बड़े पराक्रमी भार्गव परशुराम
जी चारोंप्रकारके अस्त्रोंके ज्ञाता हैं उसीप्रकार द्रोणाचार्य भी जानतेथे । १९ । कौर-
वोंने जिसको अग्रवर्ती करके पांडवों को बुलाया वह पृथ्वीपर मराहुआ ऐसे सोता
है जैसे कि निर्ज्वलित अग्नि होती है । २० । हे माधवजी मृतक द्रोणाचार्य की
धनुषकी मुष्टि और युद्धके हस्तत्राण बिना जुदेहुये रणभूमि में ऐसे दिखाई पड़ते
हैं जैसे कि जीवतेहुये के होते हैं । २१ । हेकेशवजी चारों वेद और सब अस्त्र जिस
शूरसे ऐसे पृथक् नहींहुये जैसे कि आदिमें प्रजापती जीसे जुदेनहीं हुयेथे । २२ ।
उनके उन दोनों चरणोंको शृगाल खैंचते हैं जोकि दंडवत् के योग्य और बन्दी-
जनोंसे स्तूयमान अतिशुभ होकर सैकड़ों शिष्योंसे पूजितथे । २३ । हे मधुसूदनजी
यह दुःखसे पीड़ितबुद्धि कृपी इस धृष्टद्युम्नके हाथ से मृतक द्रोणाचार्य के पास
बड़ादुखी निमग्न है २४ । उसरोदन करनेवाली पीड़ावान् खुलेकेश नीचा शिरकिये
शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अपने पति द्रोणाचार्य के समीप नियमको देखो । २५ ।
सामग ब्राह्मण विधिपूर्वक अग्नियों को धारण करके सब ओरसे चिताको अग्निसे
प्रज्वालितकरके द्रोणाचार्यको उसमें रखकर सामवेदके तीनमन्त्रोंको गातेहैं।२६।दूसरे

of weapons like Indra or Parashuram. He, under whose leadership the Kauravas challenged the Pandavas, lies on earth like quenched fire. 20. Holding his bow in his guarded hand, he looks like one living. The four Vedas and the weapons did not leave him as they did not leave Prajapati. His feet, venerated by hundreds of disciples and praised by bards, are being dragged by jackals. Kripi, much distressed laments the death of Drona slain by Dhrishtadyumna. She is standing by him with downcast head and dishevelled hair. Having put the body of Dronacharya on the funeral pile, the Brahmans set fire to it with

माद्यायगायन्तिश्रीणिसामानि सामगाः ॥२६॥ सामभिस्त्रिभिरन्तस्थैरनुशंसन्ति चापरे। अग्नावग्निमिवाधाय द्रोणं हुत्वा हुताशने ॥ २७ ॥ गच्छन्त्यभिमुखा गंगां द्रोणशिष्या द्विजातयः। अपसव्यां चितिं कृत्वा पुरस्कृत्य कृपीं तदा ॥ २८ ॥

इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारी वाक्ये त्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥



गान्धार्युवाच । सोमदत्तसुतं पश्य युयुधानेन पातितम् । वितुद्यमानं विहगैर्बहुभिर्माधवान्तिके ॥ १ ॥ पुत्रशोकाभिसन्तप्तः सोमदत्तो जनार्दन । युयुधानं महेष्वासं गर्हयन्निव दृश्यते ॥ २ ॥ असौ हि भूरिश्रवसो माता परमदुःखिता । आश्वासयति

शिष्य अग्निमें अग्निको धारण करके और द्रोणाचार्यको अग्निमें हवनकरके अन्तमें नियत होकर तीन साममन्त्रोंको गातेहैं । २७ । द्रोणाचार्यके शिष्य यह ब्राह्मण चिताको दाहिण करके और कृपीको आगे करके श्रीगंगाजीके सम्मुखजातेहैं २८॥



अध्याय २४ ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी सम्मुखही सात्यकी के हाथ से गिरायेहुये और बहुत से पक्षियों से घिरेहुये सोमदत्त के पुत्रको देखो। १ । हे जनार्दनजी पुत्रशोक से दुःखी सोमदत्त मानों बड़े धनुषधारी सात्यकी की निन्दाकरता हुआ दिखताहै । २ । यह भूरिश्रवाकी माता निर्दोष दुःखसे पूर्ण अपने पति सोमदत्त को मानो विश्वास करातीहै । ३ । कि हे महाराज प्रारब्ध से इस भरतवंशियों के भयानक

the hymns of the Samved. Other disciples pour libations into fire and sing the three hymns of the Samved in the end. Having burnt his body, his disciples follow *Krpi to the Ganges.*" 28.



CHAPTER XXIV

Gandhari continued, "Yonder lies Somdatta's son slain by Satyaki and surrounded by numerous birds. The great archer Somdatta is looking as if in contempt of Satyaki. Bhurishrava's mother is lamenting as though she were consoling Somdatta her husband in these words—" It is lucky, king, that you donot see the great des

भर्त्तारं सोमदत्तमनिन्दिता ॥ ३ ॥ दिष्ट्या नैनं महाराज दारुणं भरतक्षयम् । कुरु
सक्रन्दनं घोरं युगान्तमनुपश्यसि ॥ ४ ॥ दिष्ट्या यूपध्वजं वीरं पुत्रं भूरिसहस्रदम् ।
अनेकक्रतुयज्वानं निहतं नाथ पश्यसि । ५ ॥ दिष्ट्या स्नुषाणामाक्रन्दे घोरं विलापितं
बहु । न शृणोषि महाराज सारसीनामिवार्णवे ॥ ६ ॥ शल्यं विनिहतं संख्ये भूरिश्रवस
मेव च । स्नुषाश्च विधवाः सर्वा दिष्ट्या नाथद्य पश्यसि ॥ ७ ॥ एता विलप्य बहुल
भर्त्तुः शोकेन कर्षिताः । पतन्त्यभिमुखा भूमौ कृपणं तव केशव ॥ ८ ॥ बीभत्सुरतिबी
भत्सं कर्मेदमकरोत् कथम् । प्रमत्तस्य यदच्छैत्सीद्बाहुं शूरस्य यज्वनः ॥९॥ ततः पापतरं
कर्म कृतवानपि सात्यकिः । यस्मात् प्रायोपविष्टस्य प्राहार्षीत् संशितात्मनः ॥ १० ॥
किं नु वक्ष्यसि संसत्सु कथासु च जनार्दन । अर्जुनस्य महत् कर्म स्वयं वा स किरीट
वान् ॥ ११ ॥ गान्धारराजः शकुनिर्बलवान् सत्यविक्रमः । निहतः सहदेवेन भागिने
येन मातुल ॥ १२ ॥ यः पुरा हेमदण्डाभ्यां व्यजनाभ्यां स्म वीज्यते । स एष पक्षिभिः
पक्षैः शयान उपवीज्यते ॥१३॥ मायया निकृतिप्रज्ञो जितवान् यो युधिष्ठिरम् । सभायां

नाशको और कौरवों के घोर प्रलयकाल के समान रोदन करने को तुम नहीं
देखतेहो । ४ । और आरम्भमें इन हजारों दक्षिणा देनेवाले बहुत यज्ञोंसे पूजन
करनेवाले यूप ध्वजाधारी मृतक पुत्रको नहीं देखते हो ।५। हे महाराज प्रारब्धसे
रणभूमि में इन पुत्रवधुओं के घोर विलापको ऐसे नहीं देखतेहो जैसे कि समुद्रपर
सारसियों के शब्द होते हैं । ६ । अब यहां युद्धमें मृतक भूरिश्रवा और शल्यको
और पुत्रवधुओं को नहीं देखतेहो । ७ । हे केशवजी दुःखकी बातहै कि पतिशोक
मे पीड़ावान यह स्त्रियां दुःखका विलाप करके सम्मुख पृथ्वीपर गिरती हैं । ८ ।
हे अर्जुन तुमने बीभत्सुनामहो यह निन्दितकर्म कैसे किया जो यज्ञकरनेवाले अचेत
शूरकी भुजाको काटा । । ९ । सात्यकिने भी उससे अधिक पापकर्म किया कि
शरीर त्यागने के निमित्त नियम करनेवाले तीक्ष्णबुद्धिका शिरकाटा । १० । हे
जनार्दनजी सत्पुरुषों के मध्य में और कथाओं में अर्जुन के इस बड़े कर्मको क्या
कहोगे अथवा आप अर्जुनही क्या कहैगा । ११ । यह बलवान और सत्यपराक्रमी
शकुनी गान्धारदेशका राजा मामा अपने भानजे सहदेव के हाथमे मारागया ।१२ ।
जोकि पूर्वसमय में सवर्ण दण्डीवाले पंखोंसे वायुकियाजाताथा वह अब सोता

truction of the Kauravas and a weeping and crying like that of pralaya. It was by good luck that you did not see the death of your warrior son who had performed many sacrifices with large donations. 5 It is by good luck that you donot hear the lamentations of your daughters-in-law crying like cranes. You donot see the dead bodies of Bhurishrava and Shalya and the women weeping over them. It is very hard to see these widowed women fall on earth with grief. Arjun is called Bibhatsu and yet he committed the grievous sin of cutting the arm of an insensible and non-observing warrior. Satyaki did a greater

विपुलं राज्यं स पुनर्जीवितं जितः ॥ १४ ॥ यथैव मम पुत्राणां लोकाः शस्त्रजिता विभो । एवमस्यापि दुर्बुद्धे लोकाः शस्त्रेण वै जिताः ॥ १५ । कथञ्चनायं तत्रापि पुत्रान्मे भ्रातृभिः सह । विरोधयेदृजुप्रज्ञाननृजुर्मधुसूदन ॥ १६ ॥

इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारीवाक्ये चतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥



हुआ पक्षियों के परों से वायु कियाजाताहै । १३ । जिस शकुनीने सभा में माया से जीवते युधिष्ठिर को और बड़े राज्यको विजय किया अन्त में वह पराजित हुआ । १४ । हे मधु जैसे कि मेरे पुत्रों के लोकशस्त्रों से विजयहुये उसीप्रकार इस दुर्बुद्धीकेभी लोकशस्त्रों से विजय होगये । १५ । हे मधुसूदनजी यह कुटिलबुद्धी वहां भी मेरे सत्य बुद्धिवाले पुत्रोंको कहीं भाइयों समेत विरोधी न करे १६ ॥



fault in as much as he beheaded the wise warrior who had resigned himself to death. 10. What will you say, Vasudev, about this deed of Arjun's in the assemblies of good men ? This powerful Shakuni of true prowess, the king of Gandhar was slain by Sahadev the son of his sister-in-law. He who was served with gold handled fans, is now being fanned by the wings of birds. He who deceitfully won Yudhishthir and his great kingdom, was at last conquered. He won good regions by means of arms like my sons. I fear he will spread quarrel among my well-meaning sons in the other world too."61.



मागधाय्युंघाघ* । काम्बोजं पश्य दुर्धर्षं काम्बोजास्तरणोचितम् । शयानमृष भस्कन्धं हतं पांसुषु माधव ॥ १ ॥ यस्य क्षतजसंदिग्धौ बाहू चन्दनरूषितौ । अवेक्ष्य कृपणं भार्या विलपत्यतिदुःखिता ॥ २ ॥ शयानमभितः शूरं कालिङ्गं मधुसूदन । पश्य दीप्ताङ्गदयुगप्रतिबद्धमहाभुजम् ॥ ३ ॥ मागधानां मधिपतिं जयत्सेनं जनार्दन । परिवार्य्य प्ररुदिता मागध्यः पश्य योषितः ॥ ४ ॥ अस्य गात्रगतान् बाणान् कार्ष्णिबाहु प्रवर्तितान् । उद्धरन्त्यसुखाविष्टा मूर्छमानाः पुनः पुनः ॥ ५ ॥ आसां सर्वानवद्या नामातपेन परिश्रमात् । प्रम्लाननलिनाभानि भान्ति वक्त्राणि माधव ॥ ६ ॥ द्रोणेन निहताः शूरा शेरते रुचिराङ्गदा । धृष्टद्युम्नसुताःसर्वे शिशवो हेममालिनः ॥ ७ ॥ तथैव निहताः शूराः शेरते रुचिराङ्गदाः । द्रोणेनाभिमुखाः सर्वे भ्रातरः पञ्च केकयाः ॥ ८ ॥ द्रोणेन द्रुपदं संख्ये पश्य माधव पातितम् । महाद्विपमिवारण्ये सिंहेन महता

अध्याय २५ ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी इस मृतक और पृथ्वीकी धूलपर सोनेवाले काम्बोज के राजा को देखो जोकि अजेय उत्तम स्कन्धयुक्त होकर काम्बोज देशी उत्तम पुरुषों के योग्यहै । १ । यह भार्या जिसकी बधिर भरी चन्दन से लिप्त भुजा को देखकर महाव्याकुली होकर दुःखका विलाप करती है । २ । हेमधुसूदनजी इस सोनेवाले शूरवीर राजा कलिङ्ग को चारोंओर से देखो जिसकी बड़ी भुजा महाशोभित बाजूबन्दों के जोड़े से अलंकृत है । ३ । हे जनार्दनजी स्त्रियां सब ओरसे इस जयत्सेन राजा मगधको घेरकर अत्यन्त रोदन करती हुई व्याकुलहैं ।४। यह बारम्बार अचेत और दुःखसे पूर्ण स्त्रियां अभिमन्यु के भुजबलसे मारे और उसके अंगों में लगेहुये बाणोंको निकालती हैं । ५ । हेमाधवजी इन सब निर्दोष स्त्रियोंके मुख धूप और परिश्रम से ऐसे दिखाई पड़ते हैं जैसे कि कुम्हलाये हुये कमल होते हैं । ६ । धृष्टद्युम्न के सब पुत्र बालक सुवर्णकी माला और सुन्दर बाजूबन्द रखनेवाले शूरवीर द्रोणाचार्य के हाथसे मरे हुये सोतेहैं । ७ । उसीप्रकार सुन्दर बाजूबन्द रखनेवाले केकयदेशी पांचों शूर भाई सम्मुखतामें द्रोणाचार्य के हाथसे मरेहुये सोते हैं । ८ । हे माधवजी युद्धमें द्रोणाचार्य के हाथसे गिराये हुये

CHAPTER XXV

Gandhari said, " Look at the king of Camboj who is lying dead on dust O Madhav. He was an excellent warriors of broad shoulders like the good soldiers of Camboj. His wife is weeping at his bleeding arm pasted with sandal Look O Madhusudan, at the dead warrior king of *Kaling* whose long arms are decked with a briliant pair of armlets. Women are weeping round Jayatsen, the king of Magadh and extract the arrows shot by the powerful arms of Abhimanyu all through his body. 5. The faces of all these women look like with-

हतम ॥ ९ ॥ पाञ्चालराज्ञो विमलं पुण्डरीकाक्ष पाण्डरम । आतपत्रं समाभाति शरदीव निशाकर ॥ १० ॥ एतास्तु द्रुपदं वृद्धं स्नुषा भार्य्या सुदुःखिता । दग्ध्वा गच्छन्ति पाञ्चाल्यं राजानमपसव्यतः ॥ ११ ॥ धृष्टकेतुं महेष्वासं चेदिपुंगवमंगना । द्रोणेन निहतं शूरं हरन्ति हतचेतस ॥ १२ ॥ दाशार्हपुत्रजं वीरं शयानं सत्यविक्रमम । अङ्के चाधाय रुदन्त्येताश्चेदिराजं वराङ्गनाः ॥ १३ ॥ विन्दानुविन्दावावन्त्यौ पतितौ पश्य केशव । हिमान्ते पुष्पितौ शालौ मरुता गलिताविव ॥ १४ ॥ मत्स्याः पाण्डवाः कृष्ण सर्वे एव त्वया सह । ये मुक्ता द्रोणभीष्माभ्यां कर्णात् वैकर्त्तनात् कृपात् ॥१५॥ दुर्योधनात् द्रोणपुत्रात् सैन्धवाच्च महारथात् । सोमदत्ताद्विकर्णाच्च शूराच्च कृतवर्मणः ॥ १६ ॥ ये हन्युः शस्त्रवेगेन देवानपि नरर्षभा. त इमे निहताः सर्वे पश्य कालस्य पर्य्ययम् ॥ १७ ॥ तथैव निहता कृष्ण मम पुत्रास्तरस्विन । यत्रैवाकृतकामस्त्वमुपप्लव्यं

द्रुपद को ऐसे देखो जैसे कि वनमें बडे सिंहसे मारेहुये बड़े हाथी को देखते हैं।९। राजा द्रुपदका श्वेत निर्मल छत्र ऐसे प्रकाशमानहै जैसे कि शरदऋतुमें चन्द्रमा होताहै । १० । यह दुःखी भार्य्या और पुत्रवधू पांचालके वृद्ध राजा द्रुपदकोदाह देकर दाहिनी ओरमें जातीहैं । ११ । अचेत स्त्रियां द्रोणाचार्य के हाथसे मारेहुये इस महात्मा शूर चंदेरके राजा धृष्टद्युम्नको उठातीहैं । १२ । हे श्रीकृष्णजी राजा चंदेरी की यह उत्तम स्त्रियां इस सत्य पराक्रमी वीर मैदान में सोनेवाले अपने पौत्र को बगल में लेकर रोती हैं । १३ । हे श्रीकृष्णजी इन अवन्ति देशके राजा बिन्दानुविन्दको ऐसेदेखो जैसे कि हिमऋतुके अन्तपर वायुमें गिरायेहुये दोपुष्पित शालवृक्षोंको देखते हैं १४ । हे श्रीकृष्णजी सब पांडव आपके साथ मारनेके अयोग्य है जो कि द्रोणाचार्य भीष्म, कर्ण और कृपाचार्य से भी बचेहुये हैं दुर्योधन अश्वत्थामा, सिन्धु का राजा जयद्रथ, विकर्ण, सोमदत्त और शूर कृतवर्मासे भी बचे । १६ । जो नरोत्तम शस्त्रों की तीक्ष्णता से देवताओंकोभी मारसक्तेथे

---

ered lotus flowers on account of toil and the heat of the Sun. All the youthful sons of Dhrishtadyumn, slain by Dronacharya, are sleeping here on earth. Similarly, the five Kaikaya brothers, slain by Drona, sleep in death. Drupad, slain by Drona in battle, looks like a great elephant slain by a lion in a forest. His white umbrella shines like the moon in winter. 10. His distressed wife and daughter-in-law have burnt Drupad the old king of Panchal and are going away. The insensible women lift up the king of Chanderi who was slain by Drona. The women of Chanderi have taken up their brave grandson in their arms and are weeping over him. Look at Vind and Anuvind the two princes of Avanti lying down like two flowering sal trees uprooted by the wind at the end of winter. The Pandavas as well as you, O Krishn,

गतः पुनः ॥ १८ ॥ आपगेयेन पुत्रेण प्राज्ञेन विदुरेण च । तदैवोक्तास्मि मा स्नेहं कुरुष्वात्मसुतेष्विति ॥ १९ ॥ तयोर्न दर्शनं तात मिथ्या भवितुमर्हति । अचिरेणैव पुत्रा मे भस्मीभूता जनार्दन ॥२० । वैशम्पायन उवाच । इत्युक्त्वा न्यपतद्भूमौ गान्धारी शोकमूर्छिता । दुःखोपहतविज्ञाना धैर्यमुत्सृज्य भारत ॥ २१ ॥ ततः कोपपरीताङ्गी पुत्रशोकपरिप्लुता । जगाम शौरिं दोषेण गान्धारी व्यथितेन्द्रिया । २२ ॥ गान्धार्युवाच । पाण्डवा धार्तराष्ट्राश्च दग्धाः कृष्ण परस्परम् । उपेक्षिता विनश्यन्तस्त्वया कस्माज्जनार्दन ॥ २३ ॥ इच्छतोपेक्षितो नाशः कुरूणां मधुसूदन । यस्मात्त्वया महाबाहो फलं तस्मादवाप्नुहि ॥ २४ ॥ पतिशुश्रूषया यन्मे तपः किञ्चिदुपार्जितम् । तेन त्वां दुरवां

यह सब इस युद्धमें मारेगये इस विपरीत समयको देखो । १७ । हे श्रीकृष्णजी मेरे वेगवान् पुत्र तभी मारेगये जब कि तुम अपने अभीष्ट बातों से रहित उपप्लव्य स्थानको लौटकरगये । १८ । उसी समय मुझको भीष्म पितामह और ज्ञानी विदुरजी ने समझायाथा कि अपने पुत्रों पर प्रीति मतकरो । १८ । उन दोनोंकी वह दूरदर्शिता मिथ्याहोनेके योग्यनहीं थी इसीसे हे जनार्दनजी मेरे पुत्र थोड़ेही दिनोंमें नाश होगये । २० । वैशम्पायन बोले हे भरतवंशी वह गान्धारी यह सब कहकर शोकसे मूर्च्छावान् दुःख से व्याकुल बुद्धि धैर्यको त्यागकर पृथ्वीपर गिर पड़ी । २१ । फिर क्रोधसे पूर्ण शरीर पुत्रशोक में डूबी असावधान इन्द्रिय गान्धारीने श्रीकृष्णजी को दोषलगाया । २२ । गान्धारी बोली हे श्रीकृष्णजी पांडवों के और धृष्टद्युम्नके पुत्रादिक सब परस्पर भस्महुये हे जनार्दन तुमने किसहेतु से इन विनाशहोनेवालों को त्याग किया । २३ । हे महाबाहु मधुसूदनजी जिसकारण

---

are indestructible as you escaped death from the hands of *Dronacharya*, *Bhishm*, *Karan*, *Kripacharya*, *Duryodhan*, Jayadrath, Vikarn Somdat and valiant *Kritvarma*. The heroes, who could slay even gods with their sharp and powerful weapons, have died in this war; the times are so changed. 17. I held my sons as dead from the time you returned from your useless mission of peace to Upaplavya. Bhishm the grandfather and wise Vidur told me then that I should love my sons no more. Their foresight could not go wrong, O Janardan, and therefore my sons were slain." 20 Vaishampayan says that having talked as above, Gandhari lost her senses and patience with grief and fell down on earth. Then with his body full of rage and her organs out of control, she blamed Shri *Krishn*, saying, " The sons of the Pandavas and Dhrishtadyumn were all slain at once. Why did you leave them in the lurch? You will be punished for your wilfully looking at the destruction of the *Kauravas* By the virtue of the asceticism which I have performed in attending on my husband

येन शप्स्ये चक्रगदाधरः ॥ २५ ॥ यस्मात् परस्परं घ्नन्तो ज्ञातयः कुरुपाण्डवाः । उपेक्षितास्ते गोविन्द तस्माज्ज्ञातीन् वधिष्यसि ॥ २६ ॥ त्वमप्युपस्थिते वर्षे षट्त्रिंशे मधुसूदन । हतज्ञातिर्हतामात्यो हतपुत्रो वनेचरः ।कुत्सितेनाभ्युपायेन निधनं समवाप्स्यसि ॥ २७ ॥ तवाप्येवं हतसुता निहतज्ञातिबान्धवाः । स्त्रियः परिपतिष्यन्ति यथैता भरतस्त्रियः ॥ २८ ॥ वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वा तु वचनं वासुदेवो महामनाः । उवाच देवीं गान्धारीमीषदभ्युत्स्मयन्निव ॥ २९ ॥ संहर्ता वृष्णिचक्रस्य नान्यो मद्विद्यते । जानेऽहमेतदप्येवं चीर्णं चरसि सुव्रते ॥ ३० ॥ अवध्यास्ते नरैरन्यैरपि वा देव

से तुमहृदयवान ने जान बूझकर कौरवों का नाश होनेदिया इसहेतु से तुमभी उसके फलको पाओगे । २५ । पतिकी सेवा करनेवाली मैंने जो कुछ तपसाध किया उस दुष्प्राप्य तपके द्वारा तुमचक्र गदाधारी को शापदेतीहूं । २६ । हे गोविन्दजी जो कि तुमने परस्पर जातवालेको मारनेवाले कौरव और पांडवोंको नहीं रोका इसहेतुसे तुम भी अपनी जातवालों को मारोगे ।२६ । हेमधुसूदनजी तुमभी छत्तीसवांवर्ष वर्ष वर्तमान होनेपर मरेहुये मंत्री पुत्रज्ञातिवाले वनमें फिरनेवाले अज्ञातरूप लोकोंमेंउस अनाथ के समान निन्दित उपायसे मरणको पावोगे । २७ । इसीप्रकार तेरीस्त्रियां भी जिनके पुत्रबान्धव और ज्ञातिवाले मारेगये ऐसे चारोंओरको दौड़ेंगी जैसे कि यह भरतवंशियोंकी स्त्रियां दौड़ती हैं । २८ । वैशम्पायनबोले कि बड़े साहसी वासुदेवजी इसरोस वचनको सुनकर मंदमुसकान करतेहुये उस देवी गांधारीसे बोले हे क्षत्रियाणी मैं जानताहूं कि तू मेरे कर्म के समान कर्मकोभी अपने तपके नाशक लिये करतीहै यादवलोग दैवसेही नाशको पावेंगे इसमें संदेह नहींहै । ३० । हेशुभ स्त्री यादवलोग अन्य मनुष्य देवता और दानवोंसेभी अवध्यहैं परस्पर विनाश को

I curse you. Because you did not stop the mutual carnage of the Kauravas and the Pandavas, you will destroy your own kinsmen too. After thirty six years your ministers, sons and kinsmen being slain, and you hiding in a forest will die an ignominious death. The women of your family will run here and there like these Kaurav women," Vaishampayan says that brave Vasudev smiled slowly at the words of Gandhari, and said, "I know, Kshatrya woman that you have done a deed like mine to destroy the merit of your asceticism. The Yadavas are sure to die at God's will. They are indestructible by the gods and Danavas and therefore they shall die

सूत्तवे: । परस्परकृतं नाशं यतः प्राप्स्यन्ति यादवाः ॥ ३१ ॥ इत्युक्तवति दाशार्हे पाण्डवास्त्रस्तचेतसः । बभूवुर्भृशसंविग्ना निराशाश्चापि जीविते ॥३२॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारीवाक्ये पंचविंशोऽध्यायः २५ ॥



भगवानुवाच । उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गान्धारि मा च शोके मनः कृथाः । तवैव ह्यपराधेन कुरवो निधनं गताः ॥ १ ॥ यत्त्वं पुत्रं दुरात्मानमीर्षुमत्यन्तमानिनम् । दुर्योधनं पुरस्कृत्य दुष्कृतं साधु मन्यसे ॥ २ ॥ निष्ठुरं वैरपुरुषं वृद्धानां शासनातिगम् । कथमात्मकृतं दोषं मय्याधातुमिहेच्छसि ॥ ३ ॥ मृतं वा यदि वा नष्टं योऽतीतमनुशोचति । दुःखेन लभते दुःखं द्वावनर्थौ प्रपद्यते ॥ ४ ॥ तपोऽर्थीयं ब्राह्मणी धत्त गर्भं गौर्वोढारं

पावेंगे । ३१ । श्रीकृष्ण जी के इस प्रकार कहने पर पाण्डवलोग भयभीत चित्त अत्यन्त व्याकुल और जीवनमें निराशा युक्तहुये । ३२ ।



अध्याय २६ ॥

श्रीभगवान् बोले हे गान्धारी उठो उठो शोकमें चित्तको मतकरो तेरेअपराध से कौरवोंने नाशको पाया । १ । जो उस दुर्बुद्धी अत्यन्त अहङ्कारी ईर्षा करनेवाले दुर्योधनको अग्रवर्त्ती करके अपने दुष्ट कर्मको अच्छा मानतीहै । २ । जो कि कठोर वचन शत्रुताको प्रिय जाननेवाले मनुष्य और वृद्धोंकी आज्ञाके विपरीत विरुद्धकर्म करनेवाला था यहां तू अपने किये हुये दोषको कैसे मुझमें लगाना चाहती । ३ । जो मृतक अथवा विनाशयुक्त व्यतीत समय को सोचती है और दुःखसे दुःखकोपातीहै अर्थात् आदि अन्तके दोनों दुखोंको पाती है । ४ । ब्राह्मणी तपके निमित्त उत्पन्न

fighting with one another." The Pandavas were terrified at these words of Shri Krishn and lost all hope of life in their distress." 32.



CHAPTER XXVI

Shri Krishn said to Gandhari, "Rise up and do not give your self up to grief. The Kauravas were destroyed by your own fault. You made proud and envious Duryodhan headstrong and yet call your wicked deed good. He loved enmity and despised the advice of old men, and yet you wish to lay your own fault on my shoulders. You grieve at this great destruction and are doubly distressed. A Brahman

धावितारं तुरंगी । शूद्रा दासं पशुपालञ्च वैश्या यथार्थिनं क्षत्रिया राजपुत्री ॥ ५॥ वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वा वासुदेवस्य पुनरुक्तं वचोऽप्रियम् । तूष्णीं बभूव गान्धा शोकव्याकुलचेतना ॥ ६ ॥ धृतराष्ट्रस्तु राजर्षिर्निगृह्याबुद्धिजं तमः ॥ पर्यपृच्छ धर्मात्मा धर्मराजं युधिष्ठिरम् । जीवतां परिमाणज्ञः सैन्यानामपि पाण्डव । हतानां यदि जानीषे परिमाणं वदस्व मे ॥ ८ ॥ युधिष्ठिर उवाच दशायुतानामयुतं सहस्राणि विंशतिः । कोट्यः षष्टिश्च षट्चैव येऽस्मिन् राजन् मृधे हताः ॥ ९ ॥ अलक्ष्याणां वीराणां सहस्राणि चतुर्दश । दश चान्यानि राजेन्द्र शतं षष्टिश्च पञ्च च ॥ १० धृतराष्ट्र उवाच । युधिष्ठिर गतिं कान्ते गताः पुरुषसत्तमाः । आचक्ष्व मे महाबाहो सर्वज्ञो ह्यसि मे मतः ॥ ११ ॥ युधिष्ठिर उवाच । यैर्हुतानि शरीराणि हृष्टैः परमसंयुगे देवराजसमांल्लोकान् गतास्ते सत्यविक्रमाः ॥ १२ ॥ ये त्वहृष्टेन मनसा मर्तव्यमिति

होनेवाले गर्भको धारण करती है गौ भार लेचलने वालेको घोड़ी दौड़ानेवाले को शूद्रा दास को वैश्या पशुपालको राजपुत्री क्षत्रिया युद्धके अभिलाषी गर्भको । ५। वैशम्पायन बोले कि शोकसे व्याकुल नेत्र गान्धारी वासुदेवजी के उस अप्रियप्रीत द्वारा कहेहुये वचनको सुनकर मौनहोगई । ६ । फिर राजऋषि धृतराष्ट्रने अज्ञान से उत्पन्न होनेवाले मोहको रोककर धर्मज्ञ राजा युधिष्ठिर से पूछा । ७ । कि हे पांडव तुमजीवतीहुई सेनाकी संख्याके जाननेवाले हो और जोमृतक शूरवीरों की संख्याको जानते हो तो मुझसे कहो । ८ । युधिष्ठिर बोले हे राजा इस युद्धमें दश करोर बीसहजार शूरवीर मारेगये । ९ । हे राजेंद्र दृष्टि न आनेवाले वीरों कीसंख्या चौबीस हजार एकसौ पैंसठ है । १० । धृतराष्ट्रबोले हे पुरुषोत्तम महाबाहु युधिष्ठिर उन्होंने किस गतिको पाया वह मुझसे कहो मेरे विचारसे तुम सब बातों के जानने वाले हो । ११ । युधिष्ठिर बोले जिन प्रसन्न चित्तों ने बड़े युद्धमें अपने शरीरका नाश किया वह सत्य पराक्रमी इन्द्रलोकके समान लोकोंको गये ।१२ । हे भरतवंशी जो अप्रसन्न चित्तसे युद्धमें लड़तेहुये मारेगये वह गन्धर्व लोकको गये । १३ । और

woman produces offspring for asceticism, a cow to carry load, a mare to produce a runner, a shudra woman produces a slave, a Vaishya woman produces one who rears beasts; but a kshatrya woman produces fighting men." Vaishampayan says that on hearing these words of Vasudev, repeated again and again and unpleasant to hear Gandhari distressed with grief, became silent. Then Dhritrashtra the royal sage, checking his passions, which were the outcome of ignorance asked of Yudhishthir the wise the number of the warriors slain, and Yudhishthir said that the dead warriors amounted to ten crores and twenty thousands and that twenty four thousands, one hundred and sixty five were invisible. Dhritrashtra then questioned about

भारत । युध्यमाना हताः संख्ये ते गन्धर्वैः समागताः ॥ १३ ॥ ये च संग्रामभूमिष्ठा
याचमानाः पराङ्मुखाः । शस्त्रेण निधनं प्राप्ता गतास्ते गुह्यकान्प्रति ॥ १४ ॥ पीड्यमाना
परैर्वैतु ह्रियमाना निरायुधाः । ह्रीनिषेधा महात्मानः परानभिमुखा रणे ॥ १५ ॥ छिद्य
मानाः शितैः शस्त्रैः क्षत्रधर्मपरायणाः । गतास्ते ब्रह्मसदनं हता वीराः सुवर्चसः
॥ १६ ॥ ये तत्र निहता राजन्नन्तरायोधनं प्रति । यथाकथञ्चित्ते राजन् संप्राप्तास्त्
उत्तरान् कुरून् ॥ १७ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । केन ज्ञानबलेनैवं पुत्र पश्यसि सिद्धवत् ।
तन्मे वद महाबाहो श्रोतव्यं यदि मन्यसे ॥ १८ ॥ युधिष्ठिर उवाच । निदेशाद्भवतः
पूर्वं वने विचरता मया । तीर्थयात्राप्रसङ्गेन संप्राप्तोऽयमनुग्रहः ॥ १९ ॥ देवर्षिर्लोमशो
दृष्टस्ततः प्राप्तोऽस्म्यनुस्मृतिम् । दिव्यं चक्षुरनुप्राप्तं ज्ञानयोगेन वै पुरा ॥ २० ॥ धृत
राष्ट्र उवाच । येऽनाथाश्च जनस्यास्य सनाथा ये च भारत । कच्चित्तेषां शरीराणि

रणभूमि में निपत याचना करते पराङ्मुख होकर शस्त्रोंसे मारेगये वह गुह्यकों के
लोकोंको गये । १४ । जो पराय्यमान अत्यन्त लज्जासे युक्त और बड़े साहसी युद्धमें
शत्रुओं के सम्मुख शत्रुओं के हाथसे गिरके क्षत्रिय धर्मको उत्तम माननेवाले तेज
धारों से मारेगये वह निस्संदेह ब्रह्मलोकको गये । १६ । हे राजा जोमनुष्य यहां
रणभूमि के मध्यमें जिस किसी प्रकारसे मारेगये वह उत्तर कौरवदेशको गये । १७।
धृतराष्ट्र बोले हे पुत्र तुम सिद्धोंके समान किस ज्ञानबल से इस प्रकार देखते हो हे
महाबाहु वह मुझसे कहो जो मेरे सुनने के योग्यहै । १८। युधिष्ठिर बोले कि
पूर्वसमय में आपकी आज्ञानुसार वनमें घूमनेवाले मैंने तीर्थयात्रा के योगसे इस अ.
नुग्रहको प्राप्त किया । १९ । देवऋषि लोमशऋषि देखे उनसे इस मनुस्मृतिको
पाया और निश्चयकरके पूर्वसमयमें ज्ञान योगसे दिव्य नेत्रों को पाया । २० ।
धृतराष्ट्र बोले हे भरतवंशी क्या तुम नाथ और सनाथ लोगों के शरीरोंको विधि
के अनुसार दाह करोगे । २१ । जिन्हों का संस्कार करने के योग्य नहीं हैं

their fate hereafter, and Yudhishthir said, " Those who died cheerfully have gone to the rigion of India; those who were cheerless, joined the Gandharvas; those who begged for mercy and turned back, were turned into Guhyakas, those who were deprived of their weapons and yet faced the enemy and were slain, have surely gone to the regions of Brahma. All these who died in this field of battle, under any circumstance, have gone to the country of Uttar-Kurus. " Dhritrashtra then asked him how he could see all that like siddhas, and Yudhishthir said, " Roaming by your order in forests, I got this faculty by visiting holy places. I saw Lomash, the divine sage and got from him the knowledge as well as divine sight. " 20. Dhritrashtra then said, " Will you burn those bodies which have none to look after? We should save the bodies from being dragged and eaten

दह्यन्ति विधिपूर्वकम् ॥ २१ ॥ न येषां सन्ति कर्त्तारो न च येऽत्राहिताग्नयः । वयञ्च कस्य कुर्य्याम बहुत्वात्तात कर्मणः ॥२२। यान् सुपर्णाश्च गृध्राश्च विकर्षन्ति ततस्ततः। तेषान्तु कर्मणा लोका भविष्यन्ति युधिष्ठिर ॥ २३ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तो महाप्राज्ञः कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । आदिदेश सुधर्माणं धौम्यं सूतञ्च सञ्जयम् ॥ २४ ॥ विदुरञ्च महाबुद्धिं युयुत्सुञ्चैव कौरवम् । इन्द्रसेनमुखांश्चैव भृत्यान् सूतांश्च सर्वशः ॥ २५ ॥ भवन्तः कारयन्त्वेषां प्रेतकार्य्याण्यनेकशः । यथा चानाथवत् किञ्चिच्छरीरं न विनश्यति ॥ २६ ॥ शासनाद्धर्मराजस्य क्षत्ता सूतश्च सञ्जयः । सुधर्मा धौम्यसहित इन्द्रसेनादयस्तथा ॥२७॥ चन्दनागुरुकाष्ठानि तथा कालीयकान्युत । घृतं तैलञ्च गन्धांश्च क्षौमाणि वसनानि च ॥ २८ ॥ समाहृत्य महार्हाणि दारूणाञ्चैव सञ्चयान् । रथांश्च मृदितांस्तत्र नानाप्रहरणानि च ॥ २९ ॥ चिताः कृत्वा प्रयत्नेन यथामुख्यान्नराधिप । दाहयामासुरव्यग्रा विधिदृष्टेन कर्मणा ३० ॥ दुर्योधनञ्च राजानं भ्रातॄंश्चास्य

और यहां जिनकी अग्नि नियत नहीं है हे तात कर्मों की अधिकता से हम किसका क्रिया कर्मकरें जिन्होंको सुवर्ण अर्थात् गरुड़ और गिद्ध इधर उधर से खैंचते हैं हे युधिष्ठिर क्रियाकर्म से उन्हों के लोकहोंगे । २३ । वैशम्पायन बोले हे महाराज इस वचनको सुनकर कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरने दुर्योधन के पुरोहित सुधर्मा,धौम्यऋषि सूत संजय बड़े बुद्धिमान विदुरजी, कौरव युयुत्सु इन्द्रसेनादिक भृत्य और सब सूत । २५ । इन सबलोगोंको आज्ञाकरी कि आप सबलोग इन्हों के सब प्रेतकार्यों को करो जिससे कि कोई शरीर अनाथ के समान नाशको न पावे । २६ । धर्मराजकी आज्ञा से विदुर सूतसंजय सुधर्मा और धौम्य पुरोहित समेत इन्द्रसेन और जयने । २७ । चन्दन, अगुरु, काष्ठ और कालीयक घृत तेल, सुगन्धित बहुमूल्य क्षौमवस्त्र । २८ । लकड़ियों के ढेर और वहां पर टूटेहुये रथ और नानाप्रकार के शस्त्रोंको इकट्ठा करके । २९ । सावधानों ने बड़े उपायों से चिताओंको बनाकर मुख्य २ राजाओंको शास्त्र विहित कर्मों के द्वारा दग्ध किया । ३० । राजा दुर्योधन उसके सौ भाई शल्य राजाशल भूरिश्रवा । ३१

away by the birds of prey and should burn them in accordance with the religious rites. 23. Vaishampayan said that on hearing Dhritrashtra's words, Yudhishteer asked Sudharma the priest of Duryodhan, Dhaumya, Sanjaya, wise Vidur, Yuyutsu the Kaurav and Indrasen and other servants and drivers to perform the funeral rites and let no corpse be destroyed for want of care. 26. By Yudhishtir's order Vidur, Sanjaya, Sudharma, Dhaumya the priest, Indrasen and Jaya collected sandal, agar wood, ghee, oil, perfumes, clothes, heaps of fuel, broken cars and weapons. They then made funeral piles and burnt over them the bodies of chief kings with religious rites. 31. Prince Duryodhan with his hundred brothers, Shalya

शताधिकान् । शल्यं शलञ्च राजानं भूरिश्रवसमेव च ॥ ३१ ॥ जयद्रथञ्च राजान
मभिमन्युञ्च भारत । दौःशासनिं लक्ष्मणञ्च धृष्टकेतुञ्च पार्थिवम् ॥ ३२ ॥ बृहन्तं
सोमदत्तञ्च सृञ्जयांश्च शताधिकान् । राजानं क्षेमधन्वानं विराटद्रुपदौ तथा ॥ ३३ ॥
शिखण्डिनञ्च पाञ्चाल्यं धृष्टद्युम्नञ्च पार्षतम् युधामन्युञ्च विक्रान्तमुत्तमौजसमेव च
॥ ३४ ॥ कौशल्यं द्रौपदेयांश्च शकुनिञ्च सौबलम् । अचलं वृषकञ्च भगदत्तञ्च पार्थि
वम् ॥ कर्णं वैकर्तनञ्चैव सहपुत्रममर्षणम् । केकयांश्च महेष्वासांस्त्रिगर्तांश्च महारथान्
॥३६॥ घटोत्कचं राक्षसेन्द्रं बकभ्रातरमेव च । अलम्बुषं राक्षसेन्द्रं जलसन्धञ्च पार्थि
वम् ॥३७॥ अन्यांश्च पार्थिवान् राजन् शतशोऽथ सहस्रशः । घृतधाराहुतैर्दीप्तैः पावकैः
समदाहयन् ॥ ३८ ॥ ये चाप्यनाथास्तत्रासन्नानादेशसमागताः । तांश्च सर्वान् समा
नाय्य राशीन् कृत्वा सहस्रशः ॥ ३९ ॥ चित्वा दारुभिरव्यग्रो प्रभूतैः स्नेहपाचितैः ।
दाहयामास विदुरो धर्मराजस्य शासनात् ॥ ४० ॥ कारयित्वा क्रियास्तेषां कुरुराजो
युधिष्ठिरः । धृतराष्ट्रं पुरस्कृत्य गङ्गामभिमुखोऽगमत् ॥ ४१ ॥

इति स्त्रीपर्वणि श्राद्धपर्वणि युद्धमृतानामौर्ध्वदैहिके षड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

राजाजयद्रथ,अभिमन्यु दुश्शासन के पुत्र लक्ष्मण राजा धृष्टकेतु । ३२ । बृहन्त सोम
दत्त सैकड़ों सृंजयदेशी, राजा क्षेमधन्वा, विराट द्रुपद । ३३ । शिखण्डी धृष्टद्युम्न
पराक्रमी युधामन्यु उत्तमौजस कौशल्य द्रौपदीके पुत्र सौबलका पुत्र शकुनी,
अचल वृषक राजा भगदत्त । ३५ । क्रोधयुक्त सूर्य्य का पुत्र कर्ण पुत्रों समेत बड़े
धनुषधारी केकयदेशी महारथी त्रिगर्त्तदेशी । ३६ । राक्षसाधिप घटोत्कच बकका
भाई राक्षसोंकाराजा अलम्बुष राजा जलसिन्ध इनको और अन्यहजारों राजा३७।
ओंको घृत की धाराओं से होमीहुई प्रकाशमान अग्नियों से अच्छे प्रकारसे दाह
किया । ३८ । वहांपर नानाप्रकार के देशोंसे आनेवाले जो अनाथ भी थे उन
सबको इकट्ठा करके ।३९। सीधे वृद्धियुक्त तेल से संयुक्त लकड़ियों की चिताओं
से विदुरजीने राजाकी आज्ञानुसार उन सबको दाह किया कौरवराज युधिष्ठिर
उन्होंकी क्रियाओंको कराके धृतराष्ट्रको आगे करकेश्रीगङ्गाजी के सम्मुख गये ४१

Shal, Bhurishrava, Joyadrath, Abhimanyu, Dushasan's sons, Lakshman, Dhrishtaketu, Vrihant, Somdatta, the Srinjayas, Kshemdhanwa, Virat, Drupad, Shikhandi, Dhrishtadyumn, valiant Yudhamanyu, Uttamaujas, Kosals, the sons of Drupad, Shakuni the son of Suval, Achak, Vrishak, king Bhagdatta, 35. rash Karan the son of Surya, the Kaikaya warriors and their sons the warriors of Trigart, Ghatotkach the prince of rakshases, Vak's brother Alamvush, Prince Jalsandh and other great warriors by thousands were burnt with libations of ghee. Other warriors from different countries, having no freinds, were collected together and burnt with libations of oil by Vidur. Having p rformed their funeral ceremonies, Yudhishthir and Dhritrashtra went to the Ganges. 41.

वैशम्पायन उवाच । ते समासाद्य गंगान्तु शिवां पुण्यजनोचिताम् । ह्रदिनीं च प्रसन्नां महारूपां महावनाम् ॥ १ ॥ भूषणान्युत्तरीयाणि वेष्टनान्यवमुच्य च ततः पितॄणां पौत्राणां भ्रातॄणां स्वजनस्य च ॥२॥ पुत्राणामार्य्यकाणाञ्च पतीनाञ्च कुरुस्त्रियः । उदकं चक्रिरे सर्वा रुदन्त्यो भृशदुःखिताः । सुहृदाञ्चापि धर्मज्ञाः प्रचक्रुः सलिलक्रियाः ॥ ३ ॥ ततः कुन्ती महाराज सहसा शोककर्शिता । रुदती मन्दया वाचा पुत्रान् वचनमब्रवीत् ॥ ४ ॥ यः स शूरो महेष्वासो रथयूथपयूथपः । अर्जुनेन हतः संख्ये वीरलक्षणलक्षितः ॥ ५ ॥ यं सूतपुत्रं मन्यध्वं राधेयमिति पाण्डवाः । यो व्यराजच्चमूमध्ये दिवाकर इव प्रभुः ॥ ६ ॥ प्रत्ययुध्यत यः सर्वान् पुरा वः सपदानुगान् । दुर्योधनबलं सर्वं यः प्रकर्षन् व्यरोचत ॥ ७ ॥ यस्य नास्ति समो वीर्य्ये पृथिव्यामपि कश्चन । यो वृणीत यशः शूरः प्राणैरपि सदा भुवि ॥ ८ ॥ सत्यसन्धस्य शूरस्य संग्रामेष्वपलायिनः । कुरु

अध्याय २७ ।

वैशम्पायन बोले कि उन्होंने कल्याणरूप पवित्र जनों से पूर्ण श्रीगङ्गाजी को और बड़ी रूपवान् स्वच्छजल रखनेवाली ह्रदिनीको पाकर । १ । उत्तरीयवस्त्र और पगड़ी आदि को उतारकर पिता भाई पौत्र स्वजनपुत्र और नानाओं के जलदानोंको किया । २ । अत्यन्त दुःखी रोनेवाली सब कौरवीय स्त्रियोंने अपने पतियोंको जलदान किया । ३ । तब शोकार्त कुन्ती अकस्मात् अपने पुत्रोंसे यह वचन बोली । ४ । किमैं वह बड़ा धनुषधारी महारथी वीरोंके चिह्नों से चिह्नित युद्ध में अर्जुनके हाथ से विजय हुआ । ५ । हे पाण्डव तुम जिसको सूत और राधाका पुत्र मानते हो और जो समर्थ सूर्य के समान सेनाके मध्य में विराजमान हुआ प्रथम जिसने तुम सब समेत तुम्हारे साथियों से युद्ध किया और जो दुर्योधनकी सब सेनाको खैंचता शोभायमान हुआ जिसके बलके समान सम्पूर्ण पृथ्वीपर कोई राजा नहींहै और जिस शूरने सदैव इसपृथ्वीपर शुभ कीर्त्ति को प्राणोंसे भी अधिक चाहा उस सत्यप्रतिज्ञ युद्ध में पराङ्मुख न होनेवाले । शुभकर्मी अपने भाई

CHPTER XXVII

Vaishampayan said, "Going to the Ganges, the best of rivers and waters, they put off their clothes and offered water to the manes of their elders, sons, kinsmen and friends. The lamenting Kaurav women offered water to the manes of their husbands. Then Kunti, distressed with grief, said to her sons, 'The great archer defeated by Arjun, known to you as the son of Sut and Radha, who shone like the sun in the field of battle, the foremost of your opponents, who led the Kaurav forces, who was the strongest of the princes of the world, who preferred fame to life, was your truthful and invincible brother and therefore you must offer water to his

रुदकं तस्य भ्रातुरक्लिष्टकर्मणः ॥९॥ स हि वः पूर्वजो भ्राता भास्करान्मय्यजायत। कुण्डली कवची शूरो दिवाकरसमप्रभः ॥१०॥ श्रुत्वा तु पाण्डवाः सर्वे मातुर्वचनमप्रियम्। कर्णमेवान्वशोचन्त भूयश्चार्ततराभवन् ॥११॥ ततः स पुरुषव्याघ्रः कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः। उवाच मातरं वीरो निःश्वसन्निव पन्नगः ॥१२॥ यस्येषुपातमासाद्य नान्यस्तिष्ठेद्धनञ्जयात्। भवत्याः स कथं पुत्रो देवगर्भः पुराभवत् ॥१३॥ अहो भवत्या मन्त्रस्य ग्रहणेन वयं हताः। निधनेन हि कर्णस्य पीडिताः स्म सबान्धवाः ॥१४॥ अभिमन्योर्विनाशेन द्रौपदेयवधेन च। पाञ्चालानां च नाशेन कुरूणां पतनेन च ॥१५॥ ततः शतगुणं दुःखमिदं मामस्पृशद्भृशम्। कर्णमेवानुशोचन् हि दह्याम्यग्नाविवाहितः ॥१६॥ एवं विलप्य बहुलं धर्मराजो युधिष्ठिरः। विनदन् शनकै राजा चकारास्योदकं प्रभुः ॥१७॥ तत आनाययामास कर्णस्य सपरिच्छदाः। स्त्रियः कुरुपतिर्धीमान्

कर्ण का जलदान करो।९। यह तुम्हारा बड़ाभाई सूर्यदेवता से मुझमें उत्पन्न हुआ था वह शूर कुण्डल कवचधारी और सूर्य के समान तेजस्वी था। १०। सब पांडव माता के उस अप्रिय वचनको सुनकर कर्णको शोचतेहुये फिर पीड़ावान् हुये। ११। इसकेपीछे सर्प के समान श्वासलेता वह कुन्तीका पुत्र पुरुषोत्तम वीर युधिष्ठिर अपनी मातासे बोला। १२। अर्जुन के सिवाय दूसरा मनुष्य जिसकी बाणवृष्टी को पाकर सन्मुख नियत नहीं हुआ वह देवकुमार पूर्वसमय कैसे आपका पुत्र हुआ। १३। दुःखकी बात है कि आपके भेद गुप्त करने से हम बान्धवों समेत कर्ण के मरनेसे हम बान्धवों समेत कर्ण के मरने से पीड़ावान् हुये। १४। अभिमन्यु द्रौपदी के पुत्र पांचालों के नाश और कौरवों के गिरने से भी हम पीड़ावान् हुये परन्तु उनसबसेभी सौगुने इस दुःखने अब मुझको दबाया है मैं कर्णकोही शोच तादुआ मानों अग्नि में नियत होकर जलता हूं। १६ हे राजा इसप्रकार धर्मराज युधिष्ठिरने बहुत विलाप करके धीरे २ बहुतरोदन किया इसके पीछे उसप्रभुने उसका जलदान किया। १७। इसके पीछे उस बुद्धिमान कौरवपति युधिष्ठिरने भाई के प्रेमसे

---

manes. He was the offsp ing of Surya and myself, born with armour and ear-rings and glorious l ke the Sun." 10. Hearing these unwelcome words of their mother all the brothers were much grieved for Karan. Yudhishthir then said to his mother, "How could he, whose shower of arrows none but Arjun could oppose, be your son? Alas! we are undone by your keeping the matter a secret and have to suffer the pangs of Karan's death. We are distressed for the death of Draupadi's sons and Panchals; but hundred times greater has been Karan's death. I burn for Karan's death." 19 Thus Yudhishthir wept much for Karan's death and offered water to his manes. Then for fraternal love he sent for all the women of

भ्रातु प्रेत्य युधिष्ठिर ॥१८॥ स ताभिः सह धर्मात्मा प्रेतकार्यमनन्तरम् । कारयामास सविशादाकुलेन्द्रिय ॥१९॥

इति स्त्रीपर्वणि श्राद्धपर्वणि कर्णस्य गूढपुत्रत्वकथने सप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

॥ समाप्तं च श्राद्धपर्व समाप्तं च स्त्रीपर्व ।

कर्णकी सब स्त्रियों को परिवारसमेत बुलालिया ॥१८॥ तबधर्मात्मा बुद्धिमान धर्मराज युधिष्ठिरने उन्हीं के साथ निःसन्देह विधिपूर्वक प्रेतक्रियाको किया ॥१९॥

इति स्त्री पर्व समाप्त ॥

Karan's family and joined with them in performing his funeral ceremonies ' 19



सौप्तिक व स्त्रीपर्वका सूचीपत्र INDEX TO STRI AND SAUPTIK PARV

सौप्तिकपर्व — Sauptik Parv

स्त्रीपर्व — STRI PARV